ज्यादाश्यक्य।



गर्षि जिक्करेषशायन खनी उग्

শ্রীল শ্রীপৃজ্ঞাপাদ শ্রীধরম্বামিক্ত ভাবার্থদীপিকা টীকা শ্রীল শ্রী পৃজ্ঞাপাদ সনাতন গোম্বামি ক্ত বৈষ্ণবৃতোষ্ণী টিপ্পনী শ্রীল শ্রীপৃজ্ঞাপাদ জীবগোম্বামি কৃত ক্রমসন্দর্ভ শ্রীল শ্রীপৃজ্ঞাপাদ বিখনাধ চক্রবর্তিকৃত সারার্থদর্শিনী টীকা সমেতঃ

শ্রীরামনারায়ণ বিদ্যারত্ব কৃতান্বাদ সমেতঞ্চ ত্রিপুরাধীশ্বর শ্রীমন্মহারাজ বীরচন্দ্র বর্মমাণিক্যস্য দম্পূর্ণ সাহায্যেন স্লাং বিনা বিভারত্বাং।

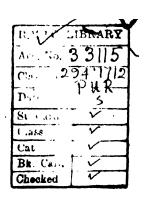
म ग म क कि



पूर्निमावाम ,

বহরক্ষুর,—রাধারমণযন্ত্র শীর্ষামনারারণ বিদ্যারছেন প্রকাশিতং স্বত্তিতক ।

मित्रकत, चानिन ।



नगयकरक्षत्र स्ठीপত।

विदय। गुड़ी। একাদশ ঋণ্যায়ে--ৰুক্ষাৰনে ৰালকগণসহ ৰংগ পালন কৰিছে প্রথম অধারে-ক্ষেবকীপুত্র ছইতে আপনার মৃত্রে কথা করিতে শ্রীকৃষ্ণকর্ত্ক বংসামূর ও বকাম্বর বধ বর্ণন। শ্রবণ করিয়া ভীভচিত্ত কংস্কর্ত্ক ঐ দেবকীর ছন্ন গর্ভ বধ। बिडीत अधारत-कश्यवध निमित्र स्ववकीत शर्ल खश्यान् पामन व्यथारित-:व्यवाद्यरवत्र व्यक्षतत्र वशूः शतन**नृत्**क वरमः পালের গিলন এবং 🚨 কৃষ্ণক স্তৃক ভাৰার গলদেশ রোধে বন বর্ণন। ভুরির স্থাবিভাৰ এবং একাদিকর্ভৃক উাহার স্তব তথা দেবকীর जरत्रांग्य व्यथारव-अवा निक्र मात्रा वात्रा शांतरम अवर ज्ञीत चथारत-छगवान् इतित मिज तरण चतः **উ**ष्ठव, बाराकार्य क्राय क्रिया छ। क्राया मर्खक्र में स्वेश मिक्क नवरमन মাতা ণিতা কর্ত্ক জনীয় বৃত্তি এবং ভীতি বগত: গোকুলে গৰ্বাক্ত অবিকৃত্ত পূৰ্ব্যৰ্থ আচরণ করেন। দীন্ত করণ। हर्जू क्र्याद्य-इक्कि वाका खबरन कश्त्रत अधिनत छत्र हर्कृष्म व्यथारत-व्यक्ष् क वर्षात्मत् व्याद्रण निष्ठत कविरष्ठ न। এরং চুর্বত্রিদিগের কুমত্রণায় বালকাদি হিংপার প্রবৃত্তি। পারার ব্রহ্মার মোছ এবং ভৎকর্ত্ত আক্রকের ভতি। পঞ্স অধাত্তে-পুত্তের জাভোৎসৰ করিয়া নদের মধুরায त्रक्षम ज्ञाराह्य-- श्रीकृष कर्जुक (श्रष्ट्रतान्त क्रिडिक क्रिडिक গ্রন এবং ভণার ব্রুদেব সহ সমাগ্যোৎসব। ধেত্মকাত্মর মর্দান এবং কোলিবের বিষ্ **ধ্ইতে গোপ বালক্দিগের** वर्षे प्रधारक-नेपा त्रश्रामत्वत्र वारका खट्डा छाडाागमन कानीय ग्रंबद मिश्र मर्था भूडला ब्रांक्यी मर्गत अवर मज्न विवतन বোড়ল অণ্যাল্লে—বমুনাছদে 😂 🛊 কর্তৃক কালির নিএছ खन्दर विक्रम नर्वन । এবং ৩ৎ পত্নীদিগের তাবে ভাষার প্রতি 👼 👼 🐃 র কর্মণা। 🗇 मश्चव क्यारिय-- शत्रत्व संकत्हारिक्ष्यन, ज्वीवर्क्टक क्याः-সপ্তদশ অধ্যারে-নাগালর হইতে কালিয়ের নির্গমন এবং ८क्रमत क्रवर मुभ महा विश्रव्यत्नर्गम् विकृष की का करतन। ভগবান কর্তৃক স্বছাধিত আছে ও সুপ্তবন্ধুগণকে দাবানল হইতে পরিতাণ বর্ণন। आहेत प्रशासि-क्रिक्टफह नावकवन धनः वालाकीण क्रू-चहेश्य चथार्य - वनस्थार वाक्रिक जीव नमस क्रीक्ष हर्ष्ट्रा छत्रा बृहक्ष्माख्रियारा विषक्ष तिक्रान वर्गत । 🕶র্কে ব্লন্ডল্ল দ্বারা প্রেল্যাক্সরের র্ধ এবং কালিয়ের ফণাগ্রে সানদে নৃত্য করত প্রলম্বের কল্পে বল্দেবের আর্রাংণ বর্ণ। · नवने अमारके हुतीदिक इस छरनिक हरेरक णांशिल সলোগা ভাতা এক্ট্ৰ গ্ৰহণ ক্ষাৰ জ্বাৰ জ্বাৰ ক্ষাৰ্থকে ব্যাৰ্থ্য বিশ্বতা থানি উনবিংশ অধায়ে—য়িক্স কর্তৃক মৃক্কারণ্যে তাবিট গোপ क्षत्र करवन, क्षत्रहास्त्रक के शामिक्ष्य शिव्हकत वक्षत करः ও গোকুলদিগকে অর্ণাগ্নি হইতে তংপান ছারা রকা কর্ণ जीवात देनविष्क निमे प्रनीत निषत । विश्न व्यवप्राय-वर्ष ७ नवर अकृत लाका वर्गन व्युद्ध लाग क्ष्यः व्यवादाः दुव्यक्षायतं स्वाद्यनं निरात्वाननं सुब्द् व्यक्ति ও बनाम्ब मृद श्रिक्षक आवृष्ट् कागीन कीका वर्गन्। कर्क वक्ताक्तिक गांव अवः छाशांतिरगत प्रता शांतर भूतिक

विवत्र । शृंधा । পৃংক্তি। . धक्रिक विश्न व्यक्षारिय-भवर कांगीन व्रमा वृत्तावरन ख्रीकृत्कव व्यादम धावः छमीत्र वरनीश्वनि अवत्। त्यात्विवित्यत् शान दर्गन। षाविश्म व्यक्षारम-- वज्रहत्रण नौना बात्रा (भागकश्रादमत क्षार्ज জীকুকের বরদান, তদনত্তর বঞ্জশালার গমন বর্ণন। खार्याविश्म व्यक्षारम्— इन्मृक्क त्राभानम् बाता रखनीकिन দিগের নিকট অল্লযাক্রা এবং ভদীর পদ্মীগণের প্রতি অনুপ্রহ হেডু তাহাদিগকে অতুতাপিত করণ বর্ণন। ठङ्किःम व्यक्षारिय—८६ङ् ध्वमर्यनशृक्षक देख्यक निरातश করিয়া জীকুষ্ণ কর্ত্তক গোবর্দ্ধন মহোৎসবের প্রবর্ত্তন (আরম্ভ বর্ণন)। भक्षविः भ काशास्त्र-(कांश वगड: हेस कर्ड़क अस्विनाभार्ष বারি বর্ষণ এবং শ্রীকৃষ্ণ কর্তৃক সিরি ধারণ পুরংসর গোকুল রকা বর্ণন। ষ্ড বিংশ অধ্যায়ে—শ্রীক্লফের অন্তত কর্ম দর্শনে বিশ্নিত গোপদিগের নিকটে নন্দ কর্তৃক গর্ম কথিত ভদীয় ঐখর্য্য বর্ণন। সপ্তবিংশ অধাায়ে—শ্রীক্বফের অন্তুত প্রভাব অবলোকন कतित्रा खन्नछि ও खत्तस कर्डक अखिराक गर्हारमव। अहे। विश्म अशार्य--- वक्नानम इटेर्ड नन्मानम्न এवः (গांश-निरगत्र देवकुष्ठे पर्नन। উনতিংশ অধায়ে—রাসবিহারার্থ গোপীগণসহ উক্তি প্রত্যক্তি এবং রাসারত্তে শ্রীক্লফের অন্তর্দ্ধান রূপ কৌতুকের বর্ণন। ত্রিংশ অধ্যায়ে—বিশ্বছ সম্ভপ্তগোপীগণ কর্ত্তক অতি দীর্ঘ निनात्र উत्राहवर यस यस समानु संक श्रीकृष्णाद्यमा। একতিংশ অধ্যায়ে---নিরাশ হইয়া ট্রীক্তংগুর গান করিতে করিতে পুলিনে আগমনপুর্বক গোপীগণ কর্ত্তক জীকুষ্ণ গমনের ত্রার্থনা বর্ণন। चाजिः म व्यवादय-- वित्रहालान अवत्व प्रशक्त हरेत्रा बीक्रक्त আবির্ভাব এবং প্রেম বিহবল গোপীগণের প্রতি সাম্বরা বর্ণন। ত্রবারিংশ অধাারে--গোপীমগুলীর মধাগত হইয়া জীক্তকর •यगूनावन् मण्डीय किल बादा क्यामीगरात्र महिछ विहास वर्गन । চভুদ্রিংশ অধাারে--- চপবান কর্তৃক পর্পত্রন্ত নলের তথা व्यक्तिराज्ञानान रहेट विमाधित स्वर्गातत्र साहन धरा मुख्यहर एत बुध ।

বিষয়। नुहीं। शःकिं। शक्तिश्म व्यवादन चिक्क वेमेंग्रेंन केतिर्ग रंगाकूनरवाविद-शनकर्कक्ष्याद्भारक छन् खन-शान बीता छै: वि विनवी भेने वर्गन । यहै जिल्ले क्येशारियं - क्येतिष्टे वर्थ अवैश मात्रम वार्टकी त्रामकक्केटक वदरमव शूर्य कानिया करन कर्डक छतीय वर्षत्र मर्जनी उ कीन्य-गार्थ कर्जातंत्र शिक्त कारमंग। मश्रकिःम व्यशासि-- श्रीकृषं कर्ड्कं क्लिनियम वेदर छविदार कर्य चाता नातम वहेंदन खंड हेईबा शदब त्यामाञ्चत्र नंदरात । कही जिल्ल कर्यार्थ - कर्ज़र्टवर्त त्रीं क्नांगर्यने वेदर शक्तिक কর্তৃক তাঁহার সন্মান বর্ণন। ৬৯৪ উনচ্বারিংশ অধ্যারে—অক্ররের সহিত ত্রীক্লের মধুরা यांका, शालींगरनतं (बंदमीकि जनः येमूनांत्रं खेळ्टतंत्रत्रे विकृत्नाक हर्षातिः म व्यक्षारम् - श्रीकृष्टक शतमः जैनेत मानिया मखन নিপ্তণি ভেদে অকুর কর্তৃক তব বর্ণন। একচন্বারিংশ অধাায়ে— শ্রীক্তকের মথুরাপুর দর্শন, व्यादम कामीन बन्नक वध, ज्ञा जुडे हहेबा ज्ञाबा अ श्रमाग মালাকরের প্রতি বর দান বর্থন। १৪৮ হাচত্বারিংশ অধ্যায়ে – কুক্তাকে ঋজু অগাৎ বক্লাঙ্গ নষ্ট ক্রিয়া সর্বান্ধর্ব, ধ্যুর্ভঙ্গ, রক্ষক্দিগের বধুত্তথা কংসের অরিষ্ট (মৃত্যু চিহ্ন) দর্শন ও রঞ্চোৎস্বাদি বর্ণন। ज्यत्र महाज्ञात्र मा व्यक्षारा नाम कार्या व्यक्त রঙ্গ প্রবেশ এবং চানুর নামক অন্তুরের সহিত সম্ভাবণ বর্ণন। চতুল্ডমারিংশ অধ্যায়ে---মল কংসাদির মন্দ্রন, কংস্থোবিৎ-দিগের প্রতি আখাদ প্রদান এবং রামক্রঞ কর্ত্ত পিড় মাড় ও পিতার) সাত্না এবং উত্রাসেনাভিবেক তথা ওকনিবাস ইইচ্ছে গৃহাগমন বর্ণন। विविधातिश्य विधारिय-विविधाति अस्ति । उपीय वाका बाता शक्कि कर्डक यरमामा मेरमन्ने ट्लीकॉनरनामने। मश्रहवाबिश्म विधारम-श्रीकृकारम्य केदवकर्क्क शांशी-দিগের প্রভি ভন্ধ প্রবাধ এবং তাহাদের পাজাক্রমে পুরী প্রস্থান বর্ণদ ।

जहारुवातिश्म क्रमारिन-कूलात निहु विश्वत अवर क्रांस्त्र

गुँटर गमनभूक्तक छमीव सरनावश भू । क्तिया छन्---

मिर्गत क्षणि नाष्ट्रना वर्गन ।

विषय ! পৃহা। উনপঞ্চাশত্তম অধ্যায়ে--অক্রের ইতিনাপুর গমনের পর একশত অট সংখ্যক স্ত্রীক্তে সমূত্ত কোটি কোটি পুতাদির বিশ্বাহ স্রাভূপুত্র পাওবদের অভি ধৃতরাষ্ট্রের বৈষম্য ব্যবহার দর্শন করত বিষষ্টিতম অধ্যাবে—উহার সহিত রুম্মাণ অনিক্লের অন্ত 270 প্রভাগিমন বর্ণন। विवादर वान यानव यू:क श्रीकृष्ण भवतरक क्या कृतिया वानुताकात भक्तांनरूम व्यक्तारिय-व्यतानक कर्य नर्मे प्रभाव प्रश्निमीश এবং কপট দানৰ বধান ছর রাজা জরাসভের জয় বর্ণন। বাহ সকল ছেগন করেন। विवष्टिका व्यथारिय---वान-यामन यूटक मारहण खद्र oदश क्रम् একপঞ্চাশতম অধ্যাবে—জীক্ত কর্তুক মুচুকুন্দের দৃষ্টি দারা কর্তৃক বাণ বাহচ্ছেতা হরির স্বতি। ১১১৬ ধবনের বধ তথা মুচুকুন্দ কর্তৃক স্বতৃ হইরা তাঁহার প্রতি চতু:বৃষ্টিতম অধ্যায়ে--- শ্ৰীকৃষ্ণ নৃগরাজকে শাঁপ হুইভে মোচন করেন ও এক্ষম্বহরণ দোষ উতিক ছারা রাজগণকে শিক্ষা দেন অমুকন্পা। - বিপঞ্চাশক্তম অধান্ত্রে—ভীতবং হইরা ধাবমান হওত হারকা এবং বিভৃতি মদোরত যহগণকে নৃগোদার পাদকে অমুণাদন शमन এবং दाक्रण मूट्य कविनीत সংবাদ শুনিয়া তদপ্রমাদন। >>00 भक्षवष्टि उम काशारिय--- वनारमव (शाकुरन शमन भूतः मत्र ८शामी-ত্রিপঞ্চাশত্তম অধ্যায়ে---অভুতকর্মা জীক্তম বিষ্ঠনগরে গমন-গণের সহিত রমণ করত মৃত্তা বশতঃ কালিকী ব্যুনাকে शृक्षक माळावरणत्र ममक रहेएछ अञ्जिनीएक रतन करतन। আকর্ষণ করেন। >>8€ বট্ৰষ্টিতম অধ্যাৰে--- মক্ত কাণীতে পদন করিয়া পৌঞ্ক **Бजु: भ्रक्शांबर व्यक्तांदर — இक्क विश्रक त्राक्शांकिशदक अ**य এবং ভাহার মিত্র কাশীরাম্বকে বধ করিয়া স্থদক্ষণকে বধ করেন ক্রিয়া ও ক্সিকে বিরূপ ক্রিয়া । নজ প্রীতে গিয়া ক্সিণীর मश्रवष्टिकम व्यवारय---वनदाम मनगढ रहेश। देववक भर्काटक পাণি গ্রহণ করেন। ন্ত্রীগণের সহিত ক্রীড়া করত মহাথল ছিবিদ বানরকে বদ করেন **পक्षभक्षां ज्ञा का**शांत्र — ज्ञीकृष्य हरेट खेश्रास्त्र ज्ञा ७ ও শহর কর্তৃক তাঁহার অপহরণ এবং শহরকে বণ করিয়া পত্নীর १४८६ স্হিত ভাঁহার স্বাপ্যন। অট্ৰটিভম অধ্যায়ে—যুদ্ধে কৌরব কর্তৃক সাম্ব কর হইলে ষট্পঞ্চাশত্তম অধাায়ে—- 🖺 ক্লঞের মিথাাভিযোগে মণিহরণ তাঁহার মোচনের নিমিত্ত বলদেনের হস্তিনা বিকর্ষণ বর্ণন। भूर्यक कार्यवात्मत्र अ महास्मिष्टत क्यो ध्वांशि, यमस्त यस मात्र গ্রহণ ও ক্তমন্তক হরণাদি ছারা অর্থের অনর্থতা কণন। উন্সপ্ততিভ্য অধায়ে--নারদ প্রতি গৃহে শীক্তকের গার্হয়া দেখিয়া বিশ্বিত চিত্তে তাব করত গমন করেন, এই বর্ণন। मश्राभाषाम व्यवहारम--- माठवर्षात वर्ष भूनताम श्रीकृत्कत ভ্রণ: উপস্থিত হয়, ভাহাতে আফ্রিফ অফুর কর্ত্ক আনীত মণি গপ্ততিতম অধ্যায়ে— <u>একু</u> কেন্ত্র দৈনন্দিন কর্ম উপলক্ষে হইতে স্বীয় অপ্যশ মার্চ্ছন করেন। मृত ও নারদের কার্যো কার্যামন্ত্র বিচার, জগদীখরের আহিক 3.24 स्रात्राज्ञन हित्रक एमिश्रा यथाक्राय गातामत खेल्कि वर्गम । चहेनेकानेका अथारम-श्रीकृष्ण कानिमी, भिवद्रमा, नजा, ভট্রতিথ সিক্ষণা এই পঞ্চ ক্তার পাণি গ্রহণ করেন এবং পর্য একদপ্ততিভাশ সাধাারে—উদ্বের সম্রণার আক্লিকের ইক্স ভপৰিনী কালিলীকে বিবাহ করিবার নিমিত্ত প্রিরার আবাস প্রত্যে গমন এবং ভলিবন্ধন পাঞ্চবদিপের প্রমোৎসব বর্ণন। हेस शहर शबन करत्र । উনৰটিভম অধ্যাধে--ভগণান্ ছরি ভূমিনম্মন নরকার্রকে দ্বিপপ্ততিম অধ্যায়ে—রাজা যুধিটির কর্তৃক্ক নিবেদিত হইয়া वध क्रिया फनास्फ नश्य नश्य क्या ७ वर्ग श्रेटिक भारिकाछ শ্রীকৃষ্ণ হর্জন জনাগন্ধকে ভীম দারা বধ করেন, এই বর্ণন। इत्र करत्रन, भरत्र डीहारमञ्ज लानि श्रहण कत्रिया शृश्यक्त छोत्र उहामित्तव गृहर् नेवन करते । - > ०० ব্যিবপ্ততিক অধ্যারে—**ই ক্রফ** অধ্যক্ত রাজগণকে মোচন বৃষ্টিতম অধারে — বিরুদ্ধ পরিহাস দারা ক্রমিণীর কোপ পূর্বক রাজযোগ্য ভোগ খালা পরিভৃত্ত ক্ষিত্র নিজ রূপ দর্শন জন্মাইরা পরে এেম কলতে ভারতে সাধনা করেন। সেই দিয়া তাঁহাবিগকে স্ব স্থ দেশে প্রেবণ করিক্ষের।

हकू:मश्रक्तिकम् व्यक्षारिय—विवर्गन पत्रिः अविकृत परक्र विश्-

একৰ্টিভ্ৰ অধ্যাৱে—আফ্ৰৈকের প্রণৌতাদি সভাচ অনিক্ল বিবাহে ব্যৱাম কর্তৃক কমি বধ এবং বেছিল সহত্র

প• कि । विषय । 7811 পূঠা। ত্রানীভিত্র অধারে-জীরুকের কথা প্রান্ত ভ্রমীয়া ভার্যা-ভাৰ ও ঐ বজে অগ্ৰ পুঞ্চ প্ৰদক্ষে দৈ চারাল শিশুপানের বধ >46> গণ ৰ ৰ উত্তাহ বিষয় ট্রৌপদীব নিকট ক্রীর্ত্তন করেন, এই প্রভৃতি বর্ণন। পঞ্চপ্রতিত্ব অধ্যায়ে—রাজা বুধিষ্টিবের যক্তাবভূগ সম্ভয় ও 7069 स्टित स्व वर्णाः इत्राधित्व सन्धन वर्गन । **इड्डबणी** जिल्हा व्यक्तारय--मूनिशल्ब मर्माशस 24.26 यस्कारमाङ् এवः वसुग्रतनतः क्षेत्रांन । ১৯৭৪ क्षेत्रश्रक्तिजन **चनारिय-द्रकि** माचमदाबुद्ध द्यामारमन गरा পঞ্চাশীতিভ্রম অধ্যায়ে—বলদেব এবং শ্রীক্লক পিভা মাভা প্রাহার খারা প্রাচ্যুদ্রের রণ হইতে অপসরণ বর্ণন। কর্ত্তক প্রাধিত চইয়া পিতাকে ,জান ও মাতাকে সৃত পুত্র সকৰ 3296 धाराम भूक्तक ७५काम छेनाएन करत्रम । স্থাস্থতিত্য অণ্যায়ে—শ্ৰীকৃষ্ণ আগ্নমনপূৰ্বক বিশিষ 2029 একার নামা অর্থাৎ কাপটা প্রায়ণ সাহকে বধ করিয়া ভাছার वज्नीिक्षम अधारिय-वर्ञ्यन मञ्ज महकारत कुकलारक পেতি-बास চূর্ণ করেন,,এই বর্ণন। ১২৮৩ হরণ করেন এবং জ্রীকৃষ্ণ মিণিলায় গমন করত স্বীয় ভক্ত স্বাস্থা অষ্ট্রপঞ্জিতম অধ্যাদ্ধে-দশ্ববক্ত ও বিদ্রথকে বধ করিয়া वहनाचे 'अ अंग्डरमय अक्रिमरक महम्बि ध्वमान करत्रन । 🕽 ক্রক পুরী মধো রমণ করেন এবং বলচেব কর্তৃক হতের জাগ " विग्रे इत्। मधीनीविक्य व्यवादिश---गांत्रायन मात्रम मचाम ७ द्वम कर्डक উনাশীভিতম অধাামে-- বিজগণের তুটার্থে বরুলকে বধ नाताहरणत मध्न वहेटल निर्श्वण भवाष खन्छ । कतिया छीर्व कीनामि बाता वनामवं एक सर्थाः (श्रीतामिक स्का। 2809 জনিত পাঁপ হুইতে মুক্ত হয়েন, এই বৰ্ণন। অষ্টাশীভিত্তম অধাায়ে--বিকৃতভের মুক্তিও মত দেবভা ٥ অদীতিত্ব অধানে —অধাকাজনী ও গৃহাগত ঞীদাস নামক অক্টের বিভূতি প্রাণ্ডি কগন। ১৫১৮ আশ্বণকে পূদা করত শ্রীকৃষ্ণ গুরুগৃহে রাসকথা বিজ্ঞাসা खेतनविक्रित्र ऋथारत—(कान् (प्रवृक्ता प्रश्की, धक्रविवर्त 2025 क्टबर्स शहे वर्गम । সংশয়ানস্তর পরীকা করিবা ভুগু মুনিগণের নিকট বিষ্ণুয় উং-একারীভিত্ম অধাারে—ভগবান জীলাম ত্রান্ধণের পুথুক >600 कृष्टेजा वर्गन करत्रन । ভাগুর ভৌক্ষন করিয়া ত্রীহাকে ইক্স চলভি সম্পত্তি দান করেন। নবভিতৰ অধ্যাৱে-পুনর্কার সংক্ষেপে রক্ষলীলা ও তাহার রিভাঙা এবং ষত্বংশের আনস্তা বর্ণন। 🐪 🧸 দাশীভিতৰ আধাবে---কুকক্ষেত্রে গমন করিয়া ত্রীগ্রহণে র্কিগণকে দেখিরা নৃগভিগণ পরস্পাব রক্ষকথা করেন এবং **जीन मुनाउन जुल खीवानाः शतिहतः। ঞ্জিকও কুকলেজে গনন করেন, এই বর্ণন।** 2692

>080

এধরতামি ট্রকা।

ওঁ নমঃ কৃষ্ণার। বিশ্বস্থানি নবলকণ লক্ষিতং। প্রকৃষ্ণাখ্যং পরং ধান জগদ্ধান নমানি তং। দশনে দশনং লক্ষ্যাশ্রিতাশ্রবিগ্রহং। ক্রীজ্নত্তুলাভোধী পরানন্দ মুদীর্বাতে। দশনে কৃষ্ণাংকীর্তিবিতানায়াহ্বণাতে। ধর্মানি নিমিন্তন্ত্ব
নিরোধা হ্রটভূভূদাং। প্রাকৃতাদি চভূদ্ধা বা নিরোধঃ সভূ বর্ণিতঃ। তত্তং প্রসন্ধতঃ সৃষ্টি সংহারাদি নিরূপগৈঃ। কৃতা নবতি
রধ্যায়া দশনে কৃষ্ণকীর্ত্তরে। আবৈগ্রন্ত্র্বির্ধ্যাবৈ ব্লি প্রার্থনিরাবনেঃ। ভারং হর্ত্তুংহরের্জন্ম সপ্রসন্ধা নিরূপাতে। গোকুলে
মপুরায়াঞ্চ দারবত্যাং ততঃ ক্রমাৎ। কৃষ্ণলীলা ত্রিধা প্রোক্তা তত্ততেদৈ বনেকধা। সপঞ্চ বিংশতাধ্যাবৈ ব্রহ্দুন্দাবনাদির্। গোকুলে
বসতো লীলা বর্ণতে স্বর্ত্বরা। একেন বসুনা বারিণাক্র বেণ ক্বতা ভতিঃ। একাদশভি রাখ্যাতা লীলা মধুপুরে ক্বতা। শেবৈ
দ্বিব্বতী লীলা ত্রিশ্রণাদি বর্ণতে। এবং নবতিরধ্যায়া দশনে বিশ্লাধ্কাঃ।

শ্রীরন্দাবনচন্দ্রায় নমঃ।

বৈষ্ণবতোষণী।

এমিনাদনগোপালং বৃদ্দারণ্যপুরন্দরং। এীগোবিন্দং প্রপদ্যেইং দীনাত্ত্রইকারকং ॥ বন্দে একিঞ্চটৈতন্যং ভগবস্তং কুপার্বং। প্রেমভক্তিবিতানার্থং গৌড়েম্ববততার यः॥ ঐীমাধবপুরীং বন্দে যতীক্রং শিষাসংযুতং। লোকেম্মুরিতো যেন রুঞ্চতিক স্ত্রাজিবুপ:॥ 🕮 ভাগবতসিদ্ধার্থী টীকা দৃষ্টিরদায়ি থৈ:। শ্রীধরস্বামিপাদাং স্তান্বলে ভক্তেয়করক্ষকান্। ভট্টাচার্য্যং সার্বভৌমং বিদ্যাবাচম্পতীন গুরুন। বন্দে বিদ্যাভূষণঞ্চ গৌড়দেশ বিভূষণং॥ বন্দে জ্ঞাপরমানন্দং ভট্টাচার্য্যং রসালয়ং। রামভন্তং তথা বাণী-বিলাসঞ্চোপদেশকং॥ নমামি জ্রীমদহৈতাচার্য্যং জ্রীবাসপণ্ডিতং। নিত্যানন্দাবধৃতক জ্রীগদাধর পণ্ডিতং। দামোদর স্বরূপাদীন্ বলে হৈতন্যপার্ষদান্। যেষাং পাদরজঃ স্পর্শাদধ্যোপ্যন্তমো ভবেৎ। শ্রীবাস্থদেবদভঞ্গ শ্রীগোবিলং মুকুলকং। মুরারি গুপুমন্তাংশ্চ বলে চৈতন্যসেবকান্। বৃন্ধাবনপ্রিয়ান্ বলে শ্রীগোবিন্দপদাশ্রিতান্। শ্রীমৎ কাশীশ্বরং লোকনাথং শ্রীয়ঞ্চাসকং। স্বামি-পালৈন্ঘদ্যক্তং ঘদ্যক্তঞাক্ত ইং কচিৎ। টিপ্পনী দশমে তত্র সেয়ং বৈষ্ণ বতোষণী ॥ বৈষ্ণবাপরিতোষঃ স্থান্থত্র যত্র তত ততঃ। লেখ্যং বৈষ্ণব সিদ্ধান্ত দাক্ষিণ্যেনৈব কিঞ্ন॥ এ মিস্তাগবতবাক্ত ভক্তোকপুরুষার্থিনাং। নাভেদবাদ ইত্যেষ নালেথি ক্ষম্যতামিদং। পূর্ব্ব পূর্ববেচ ব্যাথ্যা পূর্বপক্ষতয়া মতা। স্ব্রান্তিমা তু বিজেয়া অসিদ্ধাততয়া মতা॥ যেষাং প্রোৎসাহনেনামি প্রত্তোহতায় সাহদে। তে দীনামুগ্রহব্যগ্রা: শরণ: মম বৈঞ্বা:॥ রাধাপ্রিয়প্রেমবিশেষপুটো গোপালভটো রঘুনাথদান:। স্থাতামুভৌ যত্র স্কৃত্পহায়ে কো নাম সোহর্থো ন ভবেৎ স্থাসিকঃ। জীমটেচত জ রুণ জ প্রীতৈ ও প্রতে হিবলং। ভূয়াদিদং যদাদেশ বলেনৈব বিলিপ্যতে॥ স্বয়ং বিলিখিতং কিঞ্চিৎ কিঞ্চিদেঘাগ্যৈ বিলিখিতং। ছিদ্রং যদন্তি ভচ্চাত্র শোধ্যং বৈষ্ণবপণ্ডিতৈ: । শ্রীচৈতন্য কুপাব্যক্ত শ্ৰীকৃক্তপ্ৰেমলিপাছে:। স্মাগ্ৰস্থিতৃং শক্ষা দেয়ং বৈক্ষ ৰতোষণী ॥ শ্ৰীমন্তাগৰতং যদ্ধি স্বাহ্ সাহ পদে পদে। তম্ম প্ৰতিপদ ৰ্যাখ্যা কাৰ্য্যা তৎ প্ৰতিপত্তয়ে ॥ আদ্য: পাঠোহত গৌড়ীয়ো হিতীয়ো হলেধি কাশিক:। নানান্যদেশপুন্তীনাং টীকানাঞ্চাহ্বাদত:॥ পুরা মহাপুরাণত দশ প্রোক্তানি যানি হি। লক্ষণান্যথিলে স্কল্পে তানি সন্তি তরোরিব। তত্র প্রাধান্যতঃ স্কল্পে দশমেহত নিজ-প্যতে। আশ্রেষা ভগবান্ ক্রফঃ স্বপূর্ণত্ব প্রকাশকঃ ॥ তত্ত্ব যদ্যপি সামান্যাকারেণাশ্রয় কক্ষণং। তথাপি ক্লফ এব স্থান্ত পর্য্য-বসায়িতা ॥ বন্ধণোহি প্রতিষ্ঠাহমিতি তদ্ণী: সভাং মতা। আত্মারামাশ্চ মুনর ইত্যাদি সচিবা চ দা। পরিভাষাচ তত্ত ভাদেতে চাংশেতি হতগী:। তদেতি বৃত্তং ভাবি ব্রহ্ম স্তবময় স্বরং॥ অথাত পরিতাধেরং জ্ঞাতব্যা যদ্যপেক্যতে। মৃশং স্টীকমন্ধাদ্যৈ পরি-চ্ছেদ্যং সটিপ্লনি ॥ অঙ্গা বাক্যান্ত এবাত্তা দেয়াঃ পদ্যান্ততো নতু। বছপলৈয়ক বাক্যন্তে গৰ্ভান্ধা বিদ্যন্তকাঃ ॥ যশ্মিন্ বাক্যে নাতি টীকা তদপ্যক্ষেন যোজ্যে । টীকা তদঙ্খন্যা বা তদঙ্কান্ত যুতাপি বা॥ তদ্যুত্তন্ত পূৰ্কান্ক সল্লিধে) পৃথগাচরে । বিধিরেবং গৌড়কাশ্রো ও জ্জরাদৌ যথা মতি। এক পদ্যান্যবাক্যতে সংখ্যা শব্দান্ত কান্তকাঃ। যথার্দ্ধকং যুগ্মকঞ ত্রিকমিত্যাছ্যদাহতিরিতি॥

শ্রীকৃষ্ণের লীলা তিন প্রকার ব্রহ্ণলীলা, মথুরালীলা এবং শ্রুকালীলা। দশমক্ষে নকাই অধ্যায়ে ক্ষেলীলা কীর্তিত হয়, তদ্মধ্যে প্রথমাদি চারি অধ্যায়ে ব্রহ্মার প্রার্থনায় অবনির ভার হরণার্থ ভগবান্ হরির জন্ম। অপর পাঁচ অধ্যায় অবধি উনচল্লিশ অধ্যায় পর্যাস্ত ব্রহ্মলীলা, চল্লিশ অধ্যায় ব্যায় ক্লিমধ্যে অকুর কর্তৃক হরির স্তুতি, একচল্লিশ অধ্যায় অবধি একান অধ্যায় পর্যাস্ত একাদশ অধ্যায়, পর্যানীলা এবং বারান অবধি নকাই অধ্যায় পর্যাস্ত উনচল্লিশ অধ্যায়ে হারকালীলা কীর্ত্তন ॥ ০ ॥

গ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তি কৃত দশুমক্ষন্ধ টীকা প্রারম্ভে বন্দনা।

নিত্যানশা কৃষ্ণতৈতন্যচক্রোহদৈতঃ পৃথ্যামেধ্য়ন্ প্রেমিদর্ং। তপ্তত্ত্বং ত্তেময়ংশ্চেতমুন্মাং ধিমন ভূমাৎ স্থৈঃ কুপারশ্মিলেশৈঃ॥১॥ শ্রীমদগদাধর নমো নৃহরে নমন্তে শ্রীরাম রায় নম এব নম: স্বরূপ। প্রীরপ সাহগ নমোহত্ত নমোহত তুড়াং প্রীমৎসনাচন নমোহত্ত নমো নমোহত্ত ॥ ২ ॥ শীমন্তাগবতীয় দিব্যদশমকরামৃতান্তোনিধৌ ধেলন্ যা অকরোক, তৈ রসক্লৈরার্জাংস্ট্রানপি। চক্রে যদ্য মহন্ত মীলিতমহঃ শ্রীরূপবিখ্যাপিতৈঃ দর্কেদ্ শ্যন্ত এব নাটকবরে দাশ্চর্যমেতদ্যখা॥ ৩॥ ৰক্তং পারমহংস্য পদ্ধতিমিহ ব্যক্তিং গতানাং হি যং সিদ্ধানাং ভ্রনে বভূব সনকাদীনাং তৃতীয়ং পুরা। সাঙ্গং ভক্তিরদং রহস্ত মধুনা ভক্তেনু সঞ্চার্যন্দেকঃ সোহ্বত্তার বিশ্বগুর্বে গুলার তেন্দ্র নমঃ ॥ ৪ ॥ ব্যাপা বৈষ্ণ ৰতোষণী প্ৰকটিতা যেনৈৰ যন্তা রসঃ প্ৰাপ্য্যাতিচমংক্তীঃ সহৃদয়াৰাহ্লাদয়ন্ ভাজতে। তশাদ্তিকণা অদীয় ম্থতো যে নিঃস্তাঃ স্বাদিতাভানাচিতা ক্তর্থেয়ানি জম্বিত্যাশা বরীবর্ত্তি মে॥ ৫॥ গোপালভট্ট রঘুনাথ পদাজ্ঞরেণূন্ এলোকনাথচরণানথ জীবপাদান্। বন্দে যদীয় করণা স্বরদীর্ঘিকায়াং সাতোধতাঘতভিরীহিত্যাপ্রুমীশে॥ ৬॥ তমশ্হর দৃশাং বৈ ন : ক্বতে ভাবার্থদীপিকা। ক্বতা ক্বপালবত্তে হত্র আধিরস্বামিনো গতিঃ॥ १॥ ব্যাগ্যা লেখন তদীয়া যা ভক্তচিত্ত প্রমোদনী । কাচিৎ প্রভ্নাং কাচিত্র শ্রীমাল্যুক ক্রপোদিতা ॥ ৮ ॥ প্রণম্য প্রীপ্তকং ভূম: প্রীকৃষণ করুণার্বং। লোকনাথং ব্রুগচকু: প্রীকৃষণ তমুপাশ্রমে॥ ১॥ গোপরামাজনপ্রাণপ্রেরদেইতিপ্রভৃষ্ণবে। জনীয় প্রিয়নাস্যায় মাং মনীয়মহং দদে॥ ১০॥ দশমেহস্ক্রমপ্রাপ্তং নিরোধং পরিহায় যে। আশ্রমং বক্তি মুনিরাট্ তেনেদং প্রতিপদ্যতে ॥ ১১॥ প্ৰথমঃ পীঠতাং ক্ষম্বৰ্যং চর্ণযুগ্মতাং। চতুৰ্থাদি কটা নাভি বকোদোযুগ্ৰহঠতাং॥ ২২॥ দাদলৈকাদশং শীর্ষ ভালাদিদ্বমগাৎ ক্রমাৎ। শ্রীভাগবত ক্লফত দশমো মঞ্ হাস্ততাং॥ ১৩॥ ধ্যেয়সর্বাঙ্গম্থাং यक्तामाः नाष्ट्रश्र সংস্থিতি:। যথা তথা এবাং ক্লেনে। নৈবাত্তে স্থাতুমর্থতি ॥ ১ এ ॥ অত: এলেশমে বন্ধপরমাত্মাদি নাম ভাক্। আশ্রোবর্গতে ক্লো নবলকণ লক্ষিত: ॥ ১৫॥ न्नेनाञ्चवर्डिनामभूतीयांनीनाः कर्त्यापिछ।। नवस्य नगर्य नाकांनीनरेनाव कर्त्याहार्र्छ॥ ১৬॥ সচেখবো গোপএব কৃষ্ণ: পূর্ণতমোত্রজে। পুরুষয়ে পূর্ণতবং পূর্ণ: ক্ষন্তির উচ্যতে ॥ ১৭ ॥ এবং স্থলস্য ত্রৈবিধ্যাল্লীলাস্য ত্রিবিধোদিতা। বাল্যাদিতত্তদালম্বি ভক্তভেদাৎ সহস্রধা॥ ১৮॥ আদ্যৈঃ পঞ্চ ভিরধ্যারৈ র্জন্মপ্রাসঙ্গিকথা। জন্মচাস্য ততো বাল্যলীল। নবভিরীরিতা॥ ১৯॥ ষড় ভিঃ পৌগওলীলান্ত কৈশোবরস চর্চ্চিতা। ততঃ কৈশোরলীলোনবিংশত্যা ব্রজমণ্ডলে॥ ২০॥ একেন স্ততিরক্তৃরক্তেকাদশভিস্তত:। । লীলা স্যান্মাপুরীশেরৈ হবিরকারাং নিরূপিতা ॥ ২১ ॥ তদেবং দশমেহধ্যাদৈর্ম বত্যা বর্ণিতা হরে: । লীলা নিত্যকিশোরস্য নিথিলাক্ষিণী ক্ষিতৌ ॥ ২২ ॥ ত এতু প্রথমে খোত্বক্রোরাগতিমাধুবী। দেবাজ্ঞাকাশবাক্ কংগাদেবক্যাঃ ষট্স্তাত্যয়:॥ ২৩ ॥



দশমক কঃ।

প্রথমোহগায়:।

ওঁ নমঃ কুঞায়।

প্রীরাজোবাচ।

ক্রথিতো বংশবিস্তারো ভবতা সোমসূর্য্যয়ে। রাজ্ঞাক্ষোভয়বংশ্যানাং চরিতং পরমাত্তুতং ॥১॥

ত্রীধরস্বাণী।

ত্ত্র তু প্রথমে কংসং স্বমৃত্যুং দেবকীস্থতাং। প্রজা তীতোহবধী রুদ্যাং ষ্টার্চানিতি বর্ণাতে। রুফাবতারচরিত প্রবাস্ত-নির্ভিঃ। উক্তাস্থ্যদেনৌংস্ক্যান্তালা পৃচ্ছতি তং পুনঃ॥ • ॥

কথিতো বংশবিস্তার ইতি # > n

বৈষ্ণবতোষণী।

শ্রীযুক্তো রাজা শ্রীরাজেতি শ্রীশব্পপ্রয়োগোহত্র শ্রীক্ষণীলারস্তেহতিশয়েন প্রেল্পা বিরাজমানহাং । টজতাবং সমাসাত্তবিধের-নিত্যত্বাং। রাজোবাচেতি পাঠস্ত সাধারণঃ॥ • ॥

সর্ব্ধ কথৈকমূলং খ্রীক্লফচরিতং বিভারেণ শ্রোত্ং বজুঃ গ্রীবাদরারণেঃ প্রহর্ষণার্থং তহক্তমভিনন্দতি কথিত ইতি সার্দ্ধকেন। কথিতঃ প্রান্ততক্তম কথা প্রক্রেনাপ্যক্তঃ নতুদ্দেশমাত্রেণে তার্থা। ত্রাপি বংশানাং বিভারঃ প্রত্যকং প্র পৌল্লাদি প্রপঞ্চো

ক্ৰমসন্ধৰ্ভঃ।

ওঁ নম: এক্সঞার। দশমে ক্রমসলতে সক্তাণাং সমাজ্তিঃ। ক্রিয়তে যদ্ধিদেশেন স নেহন্ন্যপতে প্তিঃ। অথ দশমক্ষ্কস্য ক্রমসল্লভঃ। নবমে দাশক্ষ্ক সম্বন্ধি দশলক্ষণাত্সারেণ বংশ বংশাাক্চরিত দারা দ্বিতীয় সম্বন্ধি তদস্সারেণ তত্রপ মরস্তর কথা

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

বাচয়িতব্যেষ্থেৰ্ ৰঞ্কংসাহং বৰ্দমিতৃং তহ্জমতিনন্দতি কথিত ইতি ব্ৰহ্মপ্ৰাৰাথ স্থ্যাথ ব্ৰহ্মপোত্ৰখেন ব্ৰহ্মাংশছেন মনোহধিষ্ঠাতৃত্বেন স্বয়ং ভগবদলীকৃত্বংশ্যতাক্ষেন চ সোমস্যাভ্যহিত্যাৎ পূৰ্বনিপাতঃ। স্বায়স্ত্ৰমনো ভবংশ্যানাঞ্চ প্ৰমাছ্ত-

অপিচ প্রথমাধ্যায়ে দেবকীপুত্র হইতে আপনার মৃত্যুর কথা প্রাবণ করিয়া ভীতচিত্ত কংসকর্তৃক এ দেবকীর হয় গর্ম্ক বধ।। ।।

রাক্সা পরীক্ষিৎ প্রবর্গোৎস্ক্র প্রকাশ পূর্বক মুনিবর শুকদেবকে জিজাসা করিলেন ব্রক্ষান্!

যদোশ্চ ধর্মশীলদ্য নিতরাং মৃনিদত্তম। তত্তাংশেনাবতীর্ণদ্য বিঞোবীর্ঘাণি শংস নঃ।। ২।।

धीधत्रवामी।

অংশেনেতি প্রতীত্যতিপ্রায়েশেকং ॥ ২॥

বৈষ্ণৰভোষণী ৷

ভবতেতি পরমাদরাং। সোমস্থ পূর্বনিপাত ক্তরংশে সাক্ষাং শ্রীভগবদবতরপেনাভার্টিতরাং। উভর বংখ্যানাং চক্রপ্র্যবংশোরবানাং দিখিল্লাদি চরিতক্ষ কথিতং। পরমং অন্ত্তং বিশ্বরাবহং। শ্রীপ্রারবংক কৃৎস্থাদীনাং উর্বাণীপরিপ্রত্তে ক্রারোহণাদিনাত্যন্তানিকিক্সাং। যদ্যপি স্বারস্ত্ব মধাদিবংশ তবংখ্যচরিতান্তপি তৃতীয়স্করাদৌ কথিতানি সন্তিত্বগাপি সোম প্র্যারোরিতি উভর বংখ্যানানিতি সর্বাবতার শ্রেষ্ঠনোঃ শ্রীবছনাথ রঘুনাথরোত্তর তর সম্বর্ধাং॥ ১॥

ষদোশ্চ বংশ বিস্তার স্তবংশ্রানাং চরিতং পরমাস্কৃতং নিতরাং সম্যক্তয়া কথিতং তত্র হেতুং ধূর্মশী লস্তেতি ধর্মোহত্র ওপবস্তক্তি লক্ষণঃ। ধর্মোনত্তিকৃৎপ্রোক্ত ইতি শ্রীভগবহুকে:। শ্রীঘদো উচ্চিনিষ্ঠিৎমেকাদশস্করে প্রবর্ত্তন বক্ষাতে। অতএবোক্তং শ্রীকৃতী-দেব্যা বদোং প্রিয়ন্তাঘবার ইতি। পৃথক্ষেন তন্তোক্তিম্বন্ধনে শ্রীষহুদেবাবতরণেন সর্বতঃ শ্রৈষ্ঠ্যাৎ। ক্রমেণাভীইপ্রশ্লেচ্ছাতশ্চ। মৃনিমৃ সন্ উত্তর্ম: মৃনিসভ্যয়: শ্রীভগবত্তক্তঃ সন্তরঃ শ্রীকৃষ্ণে রতঃ সন্তম তথে পদান্ধরোঃ প্রেম বিশেষবানিত্যেবং সম্বোধনেন ক্ষিতে কথেয় চ সমর্থতোক্তা॥

অভীইমাহ তত্ত্বতার্দ্ধকেন ধর্মশীলখাদেব তত্ত্ব বদোর্ব্ধশেহবতীর্ণন্ত শ্রীগোলোকাখ্য নিজ পরম লোকাং শ্বরং প্রপঞ্চেহতিব্যক্তিমাগতত্ত্ব অংশনেতি। প্রীধরস্বামিচরপৈরের ব্যাখ্যাতং। তত্ত্ব প্রতীতিঃ নাধারণ জনানামের জ্বেরা। নাহং প্রকাশং সর্বস্বা বোগন্যারা সমারত ইতি প্রীভগবলগীতাতঃ। তত্ত্বাংশেনাবতীর্ণন্তেতি অসর্ব্ধ প্রবোধ শ্বভাবত্তেতার্থং যদ্বা অংশেন প্রীবৃদ্দেবেন সহেতি। তত্তাপি বীর্য্যাণি শংস্থানীতি ভাবং। অর্থান্তরে। দর্শরামাস লোকং শ্বং গোপানাং তমসং পরং। কৃষ্ণঞ্চ তত্ত্ব জ্বলোভিঃ ত্বুমানং স্থাবিশ্বিতা ইত্যনেন স্বর্চু নিরপমিয়ামাণব্যাখ্যাবিশেষময়বচনেন কৃষ্ণস্ক ভগবান্ স্বয়মিত্যনেন চ বিরোধাপত্তেঃ। উক্তঞ্চ ব্রহ্মণা শ্বংহিতারাং। গোলোকনামি নিজধানি তলেচ তত্ত্ব দেবী মহেশ হবিধামস্থ তেরু তেরু। তে তে প্রভাব নিচরা বিহিতাশ্য বেন গোবিক্ষমাদি প্রক্ষং তমহং ভজামীতি ॥ রামাদিমূর্তিব্ কলা নিরমেন তিষ্ঠরানাবতারমকরোত্বনের কিন্ত। কৃষ্ণং শবং সম্বত্তবং পরমং প্রমান যো গোবিক্ষমাদিপ্রকৃষং তমহং ভজামি॥ তত্র তত্ত্ব সন্কেহান্ত্ব নিরহ্রতাণি বিক্ষোং সর্ব্ব বাণকতরা পরিপূর্ণতা পর্য্যবসানত্ত স্বয়ং ভগবতঃ প্রক্রমন্তেত্বর্গং। নোহশ্মান প্রতি বীর্য্যাণি মহাপ্রভাবমন্নচরিতানি শংস স্বতিবং সোহকর্ষং বর্ণন্ব ইতি প্রক্রমন্ত্রতানান্ত পরম পরমান্তত্বং স্বচিতং। ন ইতি বহুত্বং তচ্চুপ্রধ্বান্ত্রনো বহুমানাং। স্বসন্ধিনামপেক্ষরা বা সাচ ক্রপা বিনরেনের বা। বহা নোহশ্যাকং পাণ্ডবানাং যো বিস্কৃত্বত ইত্যাত্মন স্তন্ধিন্ ভক্তিক স্তবীর্য প্রবণে লাল্যাচ স্থিতি॥ ম ।

ক্রমসন্দর্ভ:।

ভেদ ষারা দশমপদার্থমধিগত্য তস্যুচ ভদত্তে নিজাতীই শ্রীকৃষ্ণরপত্ব পর্যালোচনেন স্থাবিশেষমূপালজ্য তথাছবদন ভদকণ-বিশিষ্টেংত্র কথা ষারা সাক্ষান্তমেবাধিগল্প: ঔৎকঠ্যেন পৃচ্ছতি। কথিত ইত্যাদিভিঃ। তল্ত সার্ধেন তদস্বাদঃ। তল্পেত্যর্দ্ধেনাভীই বিজ্ঞপ্তিঃ॥ ১॥ স্থাপেন শ্রীবলদেবেন সহ॥ ২। ৩॥

ঐবিশ্বনাথচক্রবন্তী।

চরিআণাং চতুর্থানিযু কথিতত্বেংপি তস্য বংশো ন পর্বাবদান মধুরঃ। সোমস্থারোর্বংশন্ত প্রক্রিকরাম চরিআন্তিমন্তাং পর্বাবদান মধুরঃ। সোমস্থারোর্বংশন্ত প্রক্রিকরাম চরিআন্তিমন্তাং পর্বাবদান মধুরঃ। সোমস্থারোর্বংশন্ত বিভাগিত ব

তত্রাবতীর্ণায় বীর্যাণি কথম। ক্সা অংশেন বিক্লোধা **বংশেন হৈকুঠে বিক্লুভকতি যদৈচকাংশো বিক্লুভস্য পূর্ণভেতার্থ:।**

যথা। অংশেন শংস। সামজ্যেন বক্তৃং ন কস্যাপি শক্তিরিতি ভাবঃ॥ ২॥

আপনি অনুগ্রহ করিব। চন্দ্রবংশ ও সূর্য্যবংশের বিস্তৃত বিবরণ বলিয়াছেন, অপর ঐ ছই বংশে যে সকল নরপতি জন্মগ্রহণ করেন, তাঁহাদের পরমাশর্য্য চরিত্রও ক্ষতিত ইইরাছে।। ১।।

পরে ধর্মশীল অহী স্থা যতুরও বংশাবলী বর্ণন করিলেন, সম্প্রতি ঐ বংশে স্পংশ (বল্মেণ) সহ স্থাবতীর্ণ ভগবাৰ বিষ্ণুর বাধ্য (কর্মা) সকল বর্ণন করুর ॥ ২ ॥ অবতীৰ্য্য যদোৰ্বংশে ভগৰান্ ভূতভাবনঃ। কৃতৰান্ যানি বিশ্বাস্থা তানি নো ৰদ বিস্তরাৎ ॥৩॥ নিত্ততবৈক্লপণীয়মানান্তবৌষধাচ্ছোত্ত মনোহভিরাষাৎ।

अध्वयामी।

নম্ উক্তানি জাতো গতঃ পিতৃগৃহাৎ ধক্ষমেধিতার্থ ইত্যাদিনা স্ত্যং পুন বিভারেণ বদেত্যাহ অবতীর্ব্যেতি ভূতানি ভাবরতি পাল্রতীতি তথা ॥ ৩ ॥

অত্র লোকে ত্রিবিধা জনা: মুক্তা মুমুক্ষবো বিষয়িণক তেষাং মধ্যেছত্র ন কন্তাপ্যলং প্রত্যন্ত ইত্যাহ নিবৃত্ততর্বৈরিতি। গত-

ৰৈক্ষৰভোষণী।

নমু সর্কাণ্যপি তক্ত কর্মাণি পরমান্ত্তানি ইতি চেত্তর্হি তানি সর্কাণ্যের কথরেত্যাহ অবতীর্য্যেতি অবতার প্রয়োজনমূদিশতি ভগবান্ সক্রৈশ্বর্য পূর্ণোহপি কুপরা ভূতানি সর্কাণ্যের ভাবরতি পালরতীতি তথা সং। যতো বিশ্বামা চেতনাদি শক্তিপ্রেরক্ষেন স্থভাবতএব হিতকারী পরম শ্বরূপ্ষেন প্রেমবিশেষ পর্য্যবসানরূপ্শেত্তার্থং। আতো বানি যাবস্তি কর্মাণি তানি সর্কাণ্যের বদ সংক্ষীপ্তর। তত্ত্বচ বিস্তরাৎ বিশ্বরেণ প্রয়োজনাদি নির্দেশন নতু পূর্ববৎ সংক্ষেপেণেতার্থং। ইত্যসম্ভবেহপি লালস্বরৈবাক্তং॥ ৩॥

নচ বিস্তবেণ তত্র শ্রুতে মম তৃথিরাশকেত্যাশরেনাহ। নিবৃত্ত তবৈষ্ঠ কৈরপুগপ অধিকং সর্কোপরিতনত্বন বা গীরমানাদিতি পরম ফলকেন সদোপগানাং পরমানন্দময়ত্বং। তত্র মুক্তাঃ জানিচর ভক্তাঃ অভাবভক্তাশেচতি বৈবিধ্যে প্রজীবন্ধকাঃ আথি-সালোক্যাদয়শেচতি চতুর্বিধা জেরাঃ। ভবৌষধাদিতি অর্থান্মুক্লণাং সর্বত্বংথ নিবর্তকত্বং। শ্রোত্র মনোহভিরামাদিতি। শব্দ মাত্রেণ শ্রোত্রাণি অর্থেন মনাংসি চাভিতো রময়ভীতি তথা তত্মাদিতি পারিশেষ্যাবিষরেচ্ছ্ নামপি স্থপ্রদত্বং তথা ভক্তীজ্বনাং তৃ উত্তরদ্বমধিকং প্রথমক যথোচিতং জ্যোমিতি। চতুর্থোহপ্যধিকারী কর্মাঃ। এবং সাধ্যত্বং সাধনত্বক। অতঃ সদা সর্বস্বেত্ব অ্যুত্র উত্তরঃ রোকো বলোবত্ব তত্ত প্রভিগ্রতো গুণানাং নির্ভিশর নিত্য সত্য স্বাভাবিকানস্তানামৌদার্থ্য বাংসল্যাদীনাং অন্তর্বাদঃ

ক্রমসন্দর্ভ:।

নিরুত্তেতি সামান্যত তথ প্রশংসা। পিতেত্যাদিতি বিশেষত ইতি জ্বেয় নিরুত্তর্বৈ: ॥ ৪ ॥

ঐবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

নমু জাতোগতঃ পিতৃগৃহাৰ জনেধিতার্থ ইত্যাদিনা অংশেনোজান্যের সতাং সামস্তোন তথীর্ব্যাণি সংক্ষিপ্তী কৃত্যাপি বজুমশক্যান্যের। ছয়াছংশেন যাত্মজানি তান্যপি সংক্ষিপ্তিকৃত্য শ্লোকাভ্যামুজান্যতো বছভিঃ শ্লোকৈন্তান্যের বিস্তৃতী কৃত্য ক্রহীত্যাহ
অবতীর্য্যেতি। ভূতানি ভাববন্ধি প্রেমবন্ধি করোতীতি প্রয়োজনমুক্তং নূলোকং রময়ামাস মুর্ব্যা সর্ব্যাঙ্গ রমায়েতি। অবিভ্প্তদূশাং
নূণামিতি স্বমূর্ত্যা লোকলাবণ্য নির্ম্মুক্ত্যেতাদিত্যক্তবৈধাবগ্যাৎ। যতো বিশ্বাত্মা দেহ জীবাভ্যাং সকাশাদপি পরমান্ধা প্রেমাশাদী
ভবিত্মহ ত্যেবেতি ব্রম্বত্তৰাক্তে ব্যক্তী ভবিষ্যতি। বিস্তরাৎ অন্ধাদি মন্ধবৃদ্ধি শ্লগম্যার্থং বিস্তরং শন্ধবাহল্যং প্রাপ্রয়েত্যর্থং।
বিস্তব্যে বিগ্রহোব্যাসং সচ শন্ধ্য বিস্তব্য ইত্যমরঃ ॥ ৩ ॥

শ্রীধরস্থামিতিঃ শ্রীমৎপ্রাস্থৃতিশ্ব সনাতনৈঃ। ঋজুবান্তাক মুদ্দিষ্টেং ভূজিব্যোহ্ মুণ্!দদে। অন্মদাদয়স্ব সংসাররোগপ্রতাঃ
পরমভাগালকৈ ভিন্ক্শিরোমণিতিত্তা ভবড়িদার্থিমানাৎ ক্লফলীলামৃত মহৌবদাৎ কথা বিরতা তবড়িমহ্সীত্যাহ
নির্ভেতি ভবৌষধাৎ সংসার ব্যাধেরৌষধ রূপাৎ নির্ভতবৈ র্বদেব নিষেব্য বিগত ভূফাবাাধিতি তৃট্টেব সংসারত্তমানুকৈ
ক্রানাদিভ্যোপি উপ আধিক্যেন গীরমানাৎ ভো ভো বর্ষামব এতছিবেবৈয়ব নিরাময় ভূবুতেত্যুটেচ রুপদিশ্যমানাৎ অন্যোষধবন্ধাস্য

হে মুনিসত্তম! যদিও আপনি নবমক্ষের শেষে ভগবানের কার্য্য সংক্ষেপে বর্ণন করিয়াছেন, তথাচ ভগবান্ বিশাল্পা বিষ্ণু, যিনি সকল ভূতের পালন করিতেছেন, তিনি যত্বংশে অবতীর্ণ হইয়া যে ক্যা ক্রিয়াছেন তৎসমুদায় বিস্তারিত করিয়া আমাদের নিকট কীর্ত্তন করুন॥ ০॥

ত্রকন্! ইংলোকে তিন প্রকার সমুষ্য আছে মৃক্ত, মৃস্কু এবং বিষয়ী। পইহাদের মধ্যে কোন প্রকার সমূষ্যেরই হরিচরিতে প্রবণে অলংশ্রুদ্ধি হয় না অর্থাৎ এই পর্যান্তই অধিক আর শুনিব না

ক উত্তমঃপ্লোকগুণাযুবাদাৎ পুমান্ বিরক্ষ্যেত বিনা পশুম্বাৎ ॥ ৪ ॥ পিতামহা মে সমরেহমরঞ্জারৈর্দেবব্রতাদ্যাতি রুপৈন্তিমিক্সিলঃ।

श्रीधतवागी।

ভূকৈমু কৈরপীতার্গঃ। মুমুকুণাময়মেবোপায় ইতাহি ভবৌধধাদিতি। বিষয়িশাং প্রমেট বিষয়েইয়মেবেতাছে শ্রোক্র মনোইভি রামাদিতি। অপগতা ভক্ যক্ষাৎ তমাস্থানং হস্তীতি অপভগ্র অক্ষাৎ পশুঘাতিন ইতি বা ॥ ৪ ॥

কিঞাশংকুলদৈৰতং একিকঃ অভন্তংকথৈৰ নিতাং শোতৰা। ইত্যাশ্যেনাহ পিতামহা ইতি। অমৱান্জয়ন্তি যে তৈঃ।

বৈষ্ণবতোষণী ৷

অথ ত্রিক:। তত্র মরাতৃ বিশেষতো নিজকুলৈকগতে: শ্রীক্লঞ্চ্য কথা দদা অবশ্রশ্রোতব্যেত্যাশ্যেনাহ পিতেতি অমরঞ্ধেরিতি

ক্রমসন্দর্ভঃ ।

পিতেতি তদ্যাদাধানণ প্রবয়নাহ। বংসপদ্মিব ক্ষত্তেতি। ততস্তরণসাধনতাদেব তদ্য প্রব**ত্তং নতু বহন সাম্যাদ**পীতি ভাবঃ।

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

কটাদি বসষ্মিতাহে শ্রের ননঃ স্থেপ্রনাং শ্রেরিনান্তে প্রান্ত দেবিবাধং পীরত ইতি ভাবঃ। পশুঃ স্বর্গস্থাভিনাষী ক্ষ্মী তত্মাবিনা সূত্র বির্জ্যেত নাতঃ। যতুক্তং তৈর্বিনিকাত্তে প্রন্ধা বির্ধাহরিমেধসঃ। কথায়ামিত্যাদি যথা আরু বক্ত্পোত্রো কভয়ো বেবানন্দ ইত্যাহ নির্ত্তি। উত্তমংশ্লোকত্ত গুণানামস্থাদাংগুরোম্থাদাকর্ণ পশ্চাদস্থীর্তনাং কঃ প্রমান্ বক্তা বির্ল্গেত ন কোহপি যতো নির্ব্তার্ধ কপগীয়মানাং। ক্লফত্ত গুণানামস্থীর্ত্তনমণি উপ সর্বাধিকোন গীয়তেকিঃ প্রস্থানাখাননমিতি ভবাদৃশো বক্তা তেরামাস্বাদকো হপীতি ভাবঃ অরু বর্তমান প্রয়োগাদাধিকারাচকোপশন্দোসাল্ল নির্ব্তার্ধশন্দেন গুলাভ্রান গুলালার ত্তানিনঃ। তেরাং নিদিধ্যাসনত্তাব শাস্থতিক স্থাতিদ্ধে ন বস্থাবিনাত । তবিং গুণাস্বাদং প্রাণা কং থলু মান্নঃ সাংসারিক শ্রোতা বির্জ্যেত যতো ভবৌষধাং স্বয়োরের বিরাগাভাবে হেতুঃ শ্রোত্রমনোইভির্যামাং কথিজন্ধনাদিক কামন্যা যদি ক্ষ্মী বক্তা শ্রোতা বা ভাজদা স বির্জ্যেদেবেত্যাহ পশুমাধিনা ॥ ৪॥

মংকুল দৈবতত্ত্বনাপি কৃষ্ণস্য কথা মম শ্রোতব্যেত্যাশ্যেনাহ পিতামহা ইতি অমরান্ অমন্তীতি তৈ:। দেববতোভীম:।

বলিয়া বিরক্তি উৎপন্ন হয় না। ফলতঃ উত্তমংশ্লোক ভগবানের গুণামুবাদ মুক্তজন কর্তৃক সর্বাদাই পরিগীত হয়, আর তাহা সংসার বিনাশের মহোষধ, ইহাতে মুমুক্ষু পুরুষদিগের তাহাই মোকের উপায়, আর ভগবলগুণামুবাদ শ্রোত্র ও মনের আনন্দ জনক, ইহাতে বিষয়িদিগেরও ভাহাই পরম বিষয়। অতএব আত্মবাতা অথবা পশুঘাতী ব্যতিরেকে কোন্ব্যক্তি ভাহাইইতে বিরত হইবে?॥৪॥ অধিকন্ত ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ আমাদের কুলদেবতা, অত্যাব ভাহার কথা নিতাই জোতবা। হে

ছুরত্যয়ং কৌরবলৈন্যদাপরং ফুছাতরন্ বংশপদঃ আ ম**ংগ্রদাঃ** #কা

ट्यांगाख्यविश्रं केमिनः मनत्रः मखानवीकः क्रुक्तभाववानाः।

अध्रयामी।

দেবত্রতো ভীম্ম: তদালৈরতিরথৈ জিমিলিলতুলৈয় ছ্রিত্যরং কৌরবদৈশুলাগরং বংলপদমিবাত্যরং ক্সা ভূচ্ছীক্সভাতরন্য यः শ্রীকৃষ্ণ এব প্লবো বেবাং তে তহা বীর্যাণি বদুষ্থেতি ভৃতীয়েণাবরঃ ॥ ৫ ॥

न त्करनः পाश्रुवात्नवादक्ः हेमः मम्भनीतमि या बिक्ववानिजाह त्नोगाञ्चविश्वहेमिछि। त्योरनवस्थात्ना अकात्वन

বৈঞ্চবতোষণী।

মহাদৌর্যামুক্তং। দেববতেতি ইচ্ছামৃত্যুভাদি হেতু বহানিয়ন নির্চা পরম ছর্জারখং। স আন্যাং শ্রেটো বেবাং অতিরধানাং তৈঃ ইতি তংপাল্যখন তেষামপি ছর্জারখং। অতএব ছরতারং ছব্ডারমণি। অতিরধনক্ষণং মহাতারতে। একাদল সহপ্রাণি বোধরেক্ষন্ত ধবিনাং। অন্ধ্র শন্ত্র প্রবীশন্ত মহারধ ইতি শৃতঃ। অমিতান্ বোধরেক্ষন্ত সংপ্রোক্ষোহতিরথস্ত স ইতি। কৌরবাণাং ছর্ব্যোধনাদীনাং নৈজনেব সাগারঃ অতিবিত্তীর্ণখাদিনা তং। শ্রেতি প্রসিদ্ধো। বং মবা ইতি প্রবারণসাধনং তং সাধনক্ষে তক্ত ল বহিত্র ভুল্যখেন বোচ্লক্ষণখং কিন্তু প্রভাব বিশেষেপ বিলক্ষণযোক্ষাহ্য বংসপদ্যবি ক্ষেত্রিত অনারাসেনেব তর্গাং ॥ ৫॥

বিশেবতো মম জীবনপ্রদশ্চ শ্রীকৃষ্ণ এবেতাছে জৌণীতি বিশেষেণ গ্লাইং দক্ষমণি ব্রদ্ধান্তভানসনিষার্যভাব দাহকতমন্বাত।
ইদমিতি ক্ষাত্তরীপহঁব বাবর্তিং বহা প্রত্যক্ষরিতার্থং। ইতি তক্র সংশরে। নিরক্তঃ। কুর্বাদীনাং সন্তানবীজমিতি তৎ করণারাং
হেতুঃ নৈব খদেহে শ্রীতিহেতুক। অতত্তেহাং দর্কেবামণি কুলক্ষরদোবনির্দ্ধনে বংশাধর্মণ ক্ষিত ইতি ভাবঃ। পাওবানাং
কুলছেহণি পৃথগুক্তি ভেষাং তক্র বিশেষাপেক্ষরা। অতএব কুরবক্তদক্ত এব ব্রাহ্মণরিব্রাক্ষাদিবং। ইতি তেবাং বসভানাভাব উক্তঃ তেন শ্রীক্তগবতঃ পরমকারূল্যমেবাভিপ্রেতং। ছুটানাং সম্পানাশাং। প্রকারাভ্রেণ তেবামণি বীজরক্ষরা পরণোক্তহিতাচরণাক্ত। প্রারশ্চকাদানক্ত সার্ক্ষিক্তাং ক্ষান্তচক্র ইত্যুক্তং গোপনন্ত গদ্বৈব। অন্ততেকঃ খণানা নীহারবিব ভাকর ইতি
প্রথবে প্রোক্তহাং। বতঃ তক্তবাংসব্যান ব্যপ্রক্রা রক্ষণার্থং চক্রক্ষ পৃহীতং চকারান্যাত্রক্রক কুণোপেতার্থং। গর্ভরক্ষা তক্তেহ-

ক্রমসন্দর্ভ:।

যেন সহায়েন প্লব উৎপুতি র্বেবাং তাদৃশা বা ॥ ৫ ॥

দ্রৌণীতি অন্ততভ্রঃ স্বগদর্মেত প্রথমোকদানাত্তগদদ্রপি জেরং ॥ ৬ ॥

পূর্ব্ব পূর্ব্বোক্ত বহিন্দুখানপি প্রবর্ত্তরন্ সকৌ কুকমাহ বীর্য্যাণীতি। অথিলদেহভালাং অনিরতানাং জীবানাং নিরমং বিনৈব তেবাং কেবাঞ্চিদিছেকাদিছেন ত্র্বিটদেহ ত্যাগানাং ভীন্নাদীনাং মৃত্যুং দেহত্যাগং কুর্বতঃ কেবাঞ্চিং জগবছিরোধিছেন ত্র্বিট মোকাণাং কংসাদীনামমৃতং মোক্ষমপি চকারাং পূতনাদীনাং ভক্তিমপি কুর্বতো যানি তদ্য ভাদৃশানি বীর্ব্যাণি প্রজ্বাচরিভানি ববেত্যর্থঃ। তত্ত্ব হেডু:। বিক্লোক্ত ত্রীণি রুপাণি প্রক্রাথ্যানীত্যক্তদিশা প্রক্রত্তিঃ প্রমাণ্যদি ভেদেন কালক্রণৈশ্যক্তবিভিচ হিত্তেয়তি।

ঐবিশনাপচক্রবর্তী।

তিমিলিলভূল্যা:। ভ্রত্যন্ন: ভূলারমণি বৎসপদমিব ক্কন্বা অতরন্ যতো বং শ্রীকৃষ্ণ এব প্রবো বেষাং তে বং সমাপ্রিতা ইত্যর্থ:। ত্যাহি সমাপ্রিতা বে পদপর্যপ্রমিত্যত্ত ভ্রামুধির্বৎসপদমিতি ভস্য বীর্ষ্যাণি বদস্বেতি ভূতীরেনাম্বর: ৪ ৫ ৪

ৰনেকরকক্ষেলাপি তৎকথা অবশ্বপ্রোভাবেত্যাই জৌণ্যন্তেশ বিপ্লুইং দগ্ধং ইদমিতি তর্জন্যা অবক্ষঃ ম্পূশতি। আন্তচক্র-চক্র-

ব্ৰহ্মন্! আমার পিতামহ পাশুৰগণ বাঁহাকে তরণি পাইয়া বংগ পাদের তুল্য তুল্ফ করত সমরে কৌরব সৈন্য সাধর, যাহা ডিছিলিল সূদৃল অমর্ল্লয়ি ভীল প্রভৃতি অতিরথ সমূহে অতিশর ভীষণ হইরাছিল, ভাহা অনারামে পার হইরাছিলেন ॥ কা

অপর তিনি রয়: কেবল পাওরগণকেই রকা করিয়াছিলেন এমন নতে, আমার এই শরীর, যাহা একবে কুল ও পাওবদিধের সম্ভানের নিদান বুইরাছে, মাতৃপর্ত ক্রধ্যে ক্রোপনক্ষন অথখানার জন্মাত্র

জুগোপ কৃকিং গত **আভচ্চেন মাতৃন্য কে কং পরবং গভারতি ৮৩** ৮ বীর্যাণি তদ্যাথিলদেহভাতামন্তর্ক্**হিং পুরুষ কালক্ষণিট**

व्यथत्रवामी।

দ্ধ্যমিদং মচ্ছরীরং কুরুণাং পাখবানাঞ্চ সন্তানস্য নিদানং মে শ্রম মাষ্ট্রং কুন্দৌ প্রবিষ্টো বে। ধৃতচক্রো ভূগোপ ॥ ৬॥

অবিল দেহতাজাং সর্ব্যাদিনাং অন্তল্চ বহিল্চ পূর্ণবর্ষণে গ কাল্রাপৈল্চ অংশাভিপ্রারেণ বহুবচনং। মৃত্যুং সংসারং উত্ত বৈশ্ববাহে বিশ্বী।

ক্তাপি রক্ষণাৎ। অক্সথা পত্যকুষরণমেক তক্তা অভীষ্টমিতি। অত স্তৎ কথারাং বিরক্ত্যা শীনতরা মক্তুর্ভজ্ঞতাপি প্রসজ্যেতেতি শ্লোক-দ্বর তাৎপর্য্যং॥ ৬॥

মন্ত্ৰ মতাং নিবৃত্ত তৰ্বাণীনামুপাদের এব তকা পাস্থাকালঃ তথা ভববিধানাং নিজবুৰভোখনৌ কিত তৰিমুখজনাশহরা গোপরিত্-মিয়াত ইত্যাশকা প্রয়েতি অকেনে তানপি প্রবর্তমন্ প্রার্থনতে বীর্জানীতি দেহভাকাং জীবানাং অমৃতং মরণাদ্যনেকহংথরহিতং প্রমম্পুরং য়। दৈর্থবোকং জীক্ষপাদাকথেম বা প্রমন্তের দলতঃ। চকারাবক্তদশ্যশেকিং। বছক ভরাক্তি প্রকাশয় हेलार्थः जारायाशमञ्जाया हेलापिया कारे। यस च इसरहरूसका मरहत्का मरहत्कपरमिल वा व्यव्यामिकार्थनवकार वक्तृमहीनीलि जायः। হে বিষয়িতি তানি সর্বাণি ছয়া আয়ন্ত এবৈতি ভাবে ৮ অন্তৎ শ্রীষামিপাইদ ব্যাখ্যাত্তকেব ৮ ভাবভাবং কথা প্রকালিনা অন্তর্গ জীলাং म्यायहर्गाय क्रांनग्रहः वहवारक दिवप् होनाः कानकाभन मृद्राः मनाकि क्षः अववचीरात्रेन क्रहोति । अथना अवर्गिक गानि পুত্রর কালরে। রূপানি তৈ:। অত শ্রুবণ্টিনা অভাক্তিতঃ মন্তিঃ পুক্ষদা প্রতিপ্রতেঃ ক্রেণঃ প্রক্রিকিঃ পরমানকং তদতা-ক্ষেত্ৰ কাৰ্ম্যা মুঠেগৰ্মছ: স্থিতিৰ্ক্ষাদিক্তি বিবিধ হঃশং কিন্ধা ক্ষম্ভব্যক্তিকামূতং বহিমন্তক সৃষ্ট্যুৰণি প্ৰবছত ইত্যৰ্থঃ। মায়নৈক মহস্যস্য <u>এরিছ প্রাক্তর মহায়ন্তর। প্রাক্তীক্তমা স্কতো মহাব্যাচারশীলকে প্রকৃতি ধর্মাতীভবাং। বরা ভাতৃশ মহাব্য প্রকাশিকরা মারমাপামস্থ-</u> याद्भ सञ्चारनाक्षाक्षीक्छ क्मानि गाकार क्षेत्रकृषादास्य क्ष्मकः क्ष्मरमाध्यानिरेवधर्गक्रकनेताः। यहा माहा नया। सामानिर ক্লপারাঞ্জে বিশ্বপ্রকাশাং। জনা মন্ত্রসম্ভ মনুষ্যাকারং প্রকটরতং। যন্ত ছারা স্রাচ্ছাবরীক্জারিতি জিকাওশেষাং নারা ব্যুদ্ধ জান্মিতি নিৰ্ঘটাত ডক্তাং আনাব্যাম্ম্পি শহ্বাস্থ নৱাছতি প্রএম্বাৎ তক্রপডেনৈত স্কুরতঃ। অথবা অথিক দেহতালাং অনিমতালাং জীবানাং নিমমং বিনৈব তেবাং কেষাঞ্চিকৈচ্ছিকাদি মৃত্যুত্বেন ছৰ্বটদেহপাতানাং প্ৰীভীম দ্ৰোণাদীনাং মৃত্যুং দেহ-পাতং কুর্ব্বতঃ। কেষাঞ্চিত্তগবদ্বিরোধিত্বেন ছর্ঘটমোক্ষাণাং কংসাদীনাং অমৃতং মোক্ষমপি চকারাৎ পৃতনাদীনাং পরম ভব্জগতিমপি কুর্বতো যানি তস্য তাদৃশানি বীর্য্যাণি স্বচ্ছন্দচরিতানি বদন্ত। তত্র হেতুঃ বিষ্ণোন্ত ত্রীণি রূপাণি পুরুষাধ্যানীত্যাত্মক দিশা পুরুষ-ক্লপৈ: পরমাণাদি ভেদেন কালক্লপৈশান্তর্বহিশ্চ স্থিতদ্যের্থ:। ততশ্চ তেধামন্তর্বহিশ্চ বেচ্ছাত্মক্লমের সম্পাদিতং যন্তদ্মুক্তমেরেতি-

ক্রমসন্দর্ভ:।

তওতেবা মন্তর্কাহিল্য ক্ষেত্রাক্তরপমের সম্পাদিভমিত্যর্থ:। তদেবং তস্য মরাকৃতি পরব্রহ্মণ: প্রাকৃত মহুব্যতরা প্রতীতিক্ত মার্থরবে-ত্যাহ। সারামহুদ্দদেশতি দ তত প্রবন্ধ্তবর্ষ্যাদি দৃষ্ট্যাশি নিজ্ঞিতিষিভি তদেকশরশাপত্তিসম্পাদকানি তবীর্ঘ্যাশি শ্রোতব্যান্যে-বেভি॥ १॥ ৮॥

ঞীবিশ্বনাথচক্রবন্তী।

ধারী। অন্ততেজঃ বগদয়া নীহার্মিব গোপতিরিতি প্রথমোক্তে র্গনবৈদ জ্গোপ চ কারামাজুরক্ষঞ্জ্যোপ ॥ ৬ ॥,

 প্রয়ন্ত্রি মৃত্যুমৃত্যুত্র বাধানসুম্বার বন্ধ বিষ্কৃ । ৭ আছিল ১৮ বিজ্ঞান বিষ্কৃ । ৭ আছিল ১৮ বিজ্ঞান বিষ্কৃ । বিশ্ব বিশ্ব বিষ্কৃ । বেৰজ্যা প্রতিষ্কৃত্র ক্রেই বেলাজ্য বিষ্কৃ । ৮ ॥ ক্রোমৃত্বলা ভগবান পিছুর্বেছালু জং গতঃ । ক বাসং জ্ঞান্তিকিঃ সাকং ক্ল্ডবান্ সাম্বতাং পতিঃ ॥১

श्रिश्वयामी।

জিপি অমৃতমণি প্রযক্ত বিব্যাণি বদক্ষ জহি। অরং ভাব: কন্তবামি রূপেণান্তদৃষ্টিনাং মৃক্তিং বহিদৃষ্টিনাঞ্চ কাল রূপেণ মৃত্যুং দদাতি যতঃ অতোহন্তদৃষ্ট্যা তদীব্যাণ্যেব শ্রোভব্যানীতি ॥ १॥

নমু বলং গদং সারণঞ্চ ছর্মাদং বিপুলং ধ্রবং। বহুদেবস্ত রোহিণ্যাং কৃতাদীমূদপাদরৎ ইতি রোহিণ্যা ন্তনরো রাম: প্রোক্ত:। বহুদেবস্ত দেবস্তা নাইপুল্রানজীজনৎ। কীর্ত্তিমন্তং স্কর্মেনমূদারধী:। ঋজুং সম্মর্দনং ভদ্রং সম্বর্ধনহীখরং। অন্তন্ত ত্যোরাসীং স্থানেব হরি: কিলেতি। পুনর্দেবক্যা গর্ভসম্বন্ধ ন্তদৈবক্তা দর্ভন্ত ইত্যাক্ষেপ:॥৮॥

কশাদিতি ভগবভ: কংসভয়শঙ্কয়া অসম্ভবাদিত্যর্থ:॥ ৯॥

বৈষ্ণবতোষণী।

ভাব:। অন্তং সমানং। এবং মুদ্রামৃতপ্রদানেনৈশ্বর্য় বিশেষাৎ তথা তাদৃশ মন্ত্রাতরা মাধুর্যবিশেষাৎ তথা অধারি স্ব স্কর্পন্ত স্যৈব সতঃ প্রপঞ্চে পুরুষাদি রূপেণ স্বর্মপিচাভিব্যক্তে:। একসৈয়বাবভারিত্বাবভারতারভাভ্যাং বৈচিত্র্যাভদা পুর্কমাহাত্মশ্রুবেও স্বকৌতুক বিশেষোহণি দর্শিত:॥ १॥

ভত্র বিশেষং পৃদ্ধতি রোহিণ্যা ইতি চতুতিঃ সঙ্কণ ইতি জ্ঞীদেবকীপুত্রেষু সঙ্ক্রণমহীকরমিতি সঙ্ক্রণাধ্যরা বং প্রোক্তঃ ম এব রামো বুলাবুয়া রাম: সএব রোহিণীপুত্রতেন ত্বরা প্রোক্ত ইত্যর্থ ইতি জেলো নিরস্তঃ ॥ ৮॥

মুকুলো মৃক্তিদাতেতি কংসস্য মুক্তিং দাজুং পুর্য্যায়েব স্থাত্বং বোগ্যোন ব্রহ্মে গন্ধমিতি ভাবা । অংশান্তর্মধীন নবমাধান্দী জেয়ে। যথা প্রােদরাদিথাদেব মৃক্তিপ্রথং কুংসিতং বন্ধাং স মৃক্তাঃ তং প্রেমানলাং দলাভীতি প্রেমেণ মুক্তােশ ব্রদ্ধােব্যক্তমর্গতি কিন্তু কং গ্রুং ব্যাজার্থমুদভাবয়দিতার্থ অস্য চোত্তরত্বেন হেতুং পিতরে এতি ত্বাবতা কংসভয়োতাকনমেবােক্রেঃ। পিত্রিতি স্বস্বস্থা কন্মান্ত্রবা দ্ট্যা ভগবত্তক দৃষ্টা তুনলাং স্বপ্রমাদার প্রােগাঞ্চ উদারধীরিতি মুনীক্রেণ বন্ধান্ত। কিদিলিটে হানে। জ্ঞাতয়োহত গোপা যাদবাশ্চ ততাে বহ্বনং পরিত্যজ্ঞা গোপৈঃ সমং কত্র বাসং ক্রবান্ তথা মধ্রাং পরি-

ক্রমসন্দর্ভঃ।

কন্মাদিতি অত্ত রাজ্ঞা জন্মান্নরণ দৃষ্ট্যা পিতুরিভূয়ক্তং নতু ভাবতত্ত্ব দৃষ্ট্যা। তথাতু নন্দঃ স্বপুত্রমাদান প্রোথ্যাগত ইত্যদিক্তং মুনিনা বক্ষাতে। তত্ত্ব ভাব গৈয়ৰ মুধ্যত্তেন ত্রজেশএব মুধ্যপিতেতি ক্ষণ্যনতে বিবৃতং। ক কথস্ত্তে বৃন্ধাবনে শ্বারকানগরেচ। জ্ঞাতিভিঃ

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবন্তী। বর্ত্তমান সামীপ্যে বর্ত্তমানবন্তং। কিয়া লীলায়া নিতাপ জ্ঞাপনার্থং বর্ত্তমান প্রয়োগঃ। মায়য়া স্বরূপেণৈর মহুধাস্য। স্বরূপ-ভূত্যা নিত্য শক্ত্যা মায়াথ্য়া যুতঃ। স্মতো মায়াময়ং বিষ্ণুং প্রবদন্তি মনীধিণ ইতি মাধ্বভাষ্যপ্রমাণিত শ্রুতঃ॥ ৭॥

অৰ বিশেষং পৃচ্ছতি রোহিণ্যা ইতি চতুর্জিঃ। প্রোক্তো নবমন্ধন্ধে। সম্বর্ধন মহীখন মিতি দেবকীপুঠেছপি তবৈয়ৰ সহ-র্ধান্ত দেবক্যা গর্জ সম্বন্ধক উক্তঃ স কুডো ঘটত ইত্যাকেপঃ॥৮॥

শিত্ৰিখনেৰস্য গেহাৰুলং মহাক্মং গতঃ। ব্ৰজং গতোহপি পিতৃৰ নিস্য গেহাৎ জাতিভিগোপৈঃ সাকং ক বাসং স্কৃতবান্॥ ৯॥

ব্যক্তি অন্তর্গ তি, তাহাদিগকে অন্তর্ধামিরপে মুক্তি দিতেছেন, আর যাহারা বহিদ্ স্তি তাহাদিগকে সংলারি করিতেছেন, অতএব অন্তর্গ প্রিক তদীয় বীষ্য প্রাক্ত করাই কর্তবদ, তে বিশ্বন্ প্রদিতে আক্তাহার বিশ্বনা প্র

শালে প্রাপনি একবার ক্রিকেন্ সমর্থ রাম প্রেটিশীতনয় আবার উচ্চিতেই দেককীয় গর্ভ সমূত বিনয়ানুর্বামি করিমেন, ক্রিকেন্স মারি গেড্ডেম ক্রিটের্মেক কি একারে রোহিণীতনয়ের পুন-কারে কেন্দ্রীটার্ক্ত নামার ইক্সাছিলাণ এক ক্রিটিশীত নামার

আর তগবান্ রুক্তাকি কারণে বিভাল খৃহাহইবার একে গর্মন কিরেন ? অপর সাম্বরণতি সেই

ব্রজে বসন্ কিমকরোমধুপুর্য্যাঞ্চ কেশবঃ। আতরকাবধীৎ কংসং মাতুরজাতদর্হণং।
দেহং মাসুষমাপ্রিত্য কতি বর্ষাণি বৃষিত্রিতঃ। যদুপুর্য্যাং সহাবাৎসীং পত্নাঃ কত্যভবন্ এভোঃ।
ক্রেদ্যান্ত সর্বং মে মুনে কুফাবিচেষ্টিতং। বক্তুমুর্হনি সর্বজ্ঞানায় বিবৃতং ॥ ১০ ॥

श्रीधत्रवामी ।

মাতৃত্ৰ তিরং কংসং তত্মাৎ বধানহং অভা সাক্ষাৎ কত্মানবধীৎ ॥ ১० ॥

देवकदाजावनी।

ত্যজ্য বাদনৈ সমং যত্র তস্য বুলাবনাধ্যস্য **বারকাধাস্যত বৈশিষ্ট্যমূ**চ্যতামিত্যর্থ: সাহতাং ভব্তানাং পতিঃ পাণক ইতি স্বভক্তপালনার্থং তৈঃ সহ বাসত্তহচিত লীলাগোগ্য এবাসীদিভি ভাবঃ। অত্যোত্তরং তত্র তত্র শ্রীমহ্পনন্দবাক্যং শ্রীভগবন্ধাক্যঞ্চ দৃশ্যং এবমূত্তর্ত্তাপি ॥ ১॥

কিক ত্র তর কৃতং সর্বাং কথয়েতাহ ব্রন্ধ ইতি হাত্যাং। বৃহহনে বৃন্দাবনে ব্রন্ধে। মথুরাথ্যায়াং হারকাথ্যায়াক মধুনাং
প্র্যামিতি তত্তহাস সময়েহক্তর কৃতমণি তর ডবৈর পর্যবসায়িতং কো ব্রন্ধা ঈশো ক্ষণ্ড: তৌ বয়তে স্থমহিয়া ব্যাপ্রোতীতি। কিছা
অন্তার্থেব: তৌ সেবকোন্তমতরা বিদ্যেতে যস্য ইতি পরমেশ্বরতোকা। অভন্তরান্ত্তাতের কর্মাণি সন্তবক্তীতি ভাব:। কিং
কিমিতাবহীদিতি বিশেষণ ভেদেনার্থভেদাং পূর্বেশৈবায়য়:। কন্মাদিতি টীকাচ তহ্যাথ্যৈর। কন্মাদিতি পাঠে টীকা স্পাইর
অন্ধা ব্রেমেবেতার্থ: ॥ সাম্বাং মহুব্যালারং পরম ক্ষন্তাং দেহমাপ্রিত্য প্রকটিরত্য সচিদানন্দ্রনম্বেন তস্য নিত্যহাং। যহুপ্র্যাঃ
শ্রীহারকায়াং কতীতি প্রাকট্যসহন্ধীনি কিয়ন্তি বর্ষাণি মর্যাদীক্তত্যতার্থ:। মধুপ্র্যামিতি পাঠে পূর্ববিং। বাং পত্রা অভবন্
তাং কতি। কিয়তীমাং ভাগুলং ভাগাজাত্যিত্যর্থ: ॥ অহো তত্তহিশেরা ময়ানভিজ্ঞেন কতি প্রইব্যাঃ দ্বরা স্বয়্রমেব সর্ব্বে কথাস্তামিত্যাহ এতদিতি স্ট সক্তচাস্ট্রদি। কৃষ্ণত্য সর্ব্বমননং তাং ত্রাহ স্ক্রেতি তদ্ভিরিক্তমণি ন জানাসীত্যর্থ: ॥ ২০ ॥

क्रममण्डः।

গ্রীগো**টপ র্যাদবৈক্ত পূর্ব্ব**রাপি জ্ঞাতীন্ বো জ্রষ্ট্রেব্যামো বিধার স্থ্যদিত শ্রীকংসম্পনোক্তে: ॥ ৯ ॥
দেহমিতি **যামুবং মামুবী**রং দেহং লোকং ॥ ১ • ॥

জীবিশ্বনা থচক্রবর্তী।

মধুনাং প্র্যাং মধুরারাং বারকারাঞ্চ। মাতৃত্রতিরং কংসং কল্পাদবধীৎ অতদর্গং মাতৃলভাৎ বধানহং। বৃক্কিতিঃ সহ কতি বর্ধাপি অবাৎসীৎ। বর্ধাপি কথভ্তানি মাতৃষং দেহমাপ্রিতা বর্ত্তমানানীত্যর্থ:। ততক্ষ মাতৃষ্যানেন কতি বর্ধাণীত্যর্থ: ফলিতঃ। পরমান্ধা নরাকৃতি রিতি নরাকৃতি পরং ব্রদ্ধ ইতি পূচং পরং ব্রদ্ধ মন্থ্যনিক্ষিত্যাদিভি মন্থ্যভাসোর স্বন্ধপ লক্ষণভাৎ ব্যাখ্যান্তরং ন ঘটতে॥ > • ॥

ভগবান্ জ্ঞাতিগণের সহিত কোণায় বাদ করিরাছিলেন ? # ১

বেমান্! ভগবান্ কেশব ব্ৰহ্ম ও মধুপুরে বাসু করিবার সময় কি কি করিয়াছিলেন ? কংস, তাঁহার জননীর ভাতা, বধ মোগ্য নহে, কি নিমিত তাহাকে সাক্ষাৎ বধ করেন ? অপর ভগবান্ মন্ত্রাকৃতি পরম হন্দর দেহ প্রকটন করিয়া কত বৎসক বৃত্পুরে বৃষ্ণিদিপের সহিত বাস করিয়াছিলেন ? এবং তাঁহার কতগুলি পত্নী হইয়াছিল ? হে মুনে! আপনি সর্ব্বন্ধ এই সকল এবং অক্তাক্ত বিক্তি সমুদায় বিস্তার পূর্বাক বলিতে যোগ্য হয়েন, আমি শ্রমানিত হইয়া অবণ করিব ৷ ১০ ৷

৯

নৈযাতিছঃসহা কুনাং ভ্যক্তোনমপি বাধতে। পিৰস্তং সকুধাস্তোজচ্যতং ছরিকথামৃতং ॥ ১১ ॥ শ্রীসৃত উবাচ ॥

এতরিশ্ব্য ভৃগুনন্দন সাধ্বাদং বৈরাস্কিঃ স ভগবান্ধ বিষ্ণুরাতং।

श्रिश्त्रचानी ।

নৈবেতি ত্যক্তোদক্স্যাপি মম জীবনং হ্বরক্থাসূত্পাননিমিন্তং তত্ত্পর্যে সদ্যএব জীবনং ন স্যাদিত্যর্থ: ॥ ১১ ॥ এতং সাধুবাদং সমীচীনং প্রশ্ন: । ভাগবতপ্রধান: ভাগবতেবু শ্রেষ্ঠ: ॥ ১২ ॥

देवस्वदकावनी।

অহো তগৰয়া পূর্বং মহাস্থভাব বিপ্রাণরাধজন্তাত্বতাপ হংশবিষ্ঠতঃ প্রাণানাং ত্যাজকতরা লক্ষং বেনৈবাদক্ষণি ত্যুক্ষং কিছনেন কথায়তেনৈব তে রন্দিভাঃ অলপাধুনৈব মংপ্রাণা নির্বালনীতাচাহ নেতি অতি হংসহা অতিহন্দ্রে গৈব নতু বেছরা সহৈতি মুনিগলে দর্প নিক্ষেপ হেতু মধীর তৃক্ষাবং সর্কানর্থ বৃদ্যণি সেতার্থঃ। ত্যাপোবা অনশনোখা ত্যাপি হেতুবিশেষভাজ্যোদক্ষণি উন্নক্ষণি তাজবন্ধমিতার্থঃ। তালুল তৃক্ষাণি সহিত্তেতি বিবন্ধিতং। সালি মাং ন বাধতে তরা পীড়াং নাল্লভবামীতার্থঃ। বহা অতৈঃ রতিহংসহালি মাং সদা বিবিধ তোপেন মুন্থতরালমণি তত্ত্বত তাজোনমিণ ন বাধতে। নঞঃ সর্কাণে নির্দেশঃ নিবেষস্যাত্যার বিবন্ধরা। তত্ত্ব হেতুঃ হরেঃ সর্ক্ষ হংশ হর্স্য তগবতঃ কবৈবাসূতং সংসারবিশ্বরণাদিনা পরম নাদক্ষাম্পুর্তর্যভাল। তং পিবতং প্রমাসক্র্যা সেবমানমিত্যর্থঃ। অতঃ ক্ষ্ণামাত্র নির্দ্রন্ধর ত্যাঃ। কিমান্তর্যাসিক তাবঃ। এবং প্রেসিকাম্পুত্রতর্যভাল। তং পিবতং প্রমাসক্র্যা সেবমানমিত্যর্থঃ। অতঃ ক্ষ্ণামাত্র নির্দ্রন্ধর ত্যাঃ। বহা পানে প্রবর্তমানমাত্রং তদারভ্তমারত্যেত্রর্থ কিং প্রমাপ্তরোধনি পানাবিচ্ছেদ উক্ত:। অতর্ভবিচ্ছেলোহ্স্তিত ইতি ভাবঃ। বহা পানে প্রবর্তমানমাত্রং তদারভ্রমারত্যেত্রর্থ কিং প্রমান্ধ্রা ক্রন্ধরণাং পিবত ইতি ভাবঃ। কিক্ষ তব মুধ্নেবাজ্যাক্ষ স্ক্রাকার্ছাদিনা তন্মাৎ পর্যামোদ মুক্তাৎ পাত্রাৎ ক্রিভাগ্তাং নির্দিত। প্রত্যাহ্রাক্র্যালাক্ষিক্ষ বিশ্ববাদ্যাং। তাদুগভ্রোকং যহদমূত্রের প্রবৃত্তি ত্রভবন্ধ্যনি প্রহিরিক্থামূত্রের ক্রবতী্তি এবং প্রীপরীক্ষিতো পাচরাগবাজিক্ষিতা ॥ ১১ য়

তাদৃশ তছ্ক্যা পরমন্ত্রীতঃ সন্ শ্রীবাদরারণিঃ প্রবক্তঃ প্রবৃত্ত ইত্যাহ এতমিতি স্বিদৃশং। তৃগুনন্দনেতি শৌনকসংবাধনং। প্রহর্ষোদরাং। অধ তং প্রশ্নানস্করমেব স পরমানির্কচনীরমাহাম্যঃ বতো বৈরাস্কিঃ বেদব্যসনাং ব্যাস কল্প সর্কবেদতম্বক্ত

क्रममञ्जः।

নৈবেতি শ্রীপরীক্ষিতো গাঢ়রাগব্যক্তিঃ ত্যক্তোদমণীতি . উদক্মণি ত্যক্তবন্তমিতার্থঃ সম্যক্॥ ১১। ১২। ১৩। ১৪ ॥

শ্লীবিশ্বসাথচক্রবর্তী।

কুণাভ্যাব্যাকুলছং কণং বিপ্রাম্যেতি মাবাদীরিত্যাহ নৈষেতি। যা কুং ব্রন্ধণ্যমপি মাং মুনিগলে সর্পং ন্যথাপরদিতি ভাবং ত্যক্তোদং সম্প্রতি ভূ তাক্তবস্মপি তস্যা অপি বাথাভাবে হেতুঃ পিবস্তমিতি। বর্তমান নির্দেশেন কণমণি পানবিগমে সৈব বিবেকহারিণী কুণা প্রান্তবিষ্যতীতি জ্ঞাপরতি। অত্যান্তোক্তাদেন কথামৃত্যা মধুষমারোপিতং। তেন্দ তস্য মাদক্ত মতিব্যক্তা বস্য মন্তবাদেব বিপ্রশাপাদি সর্বহংসহ হংথ বিশারকত্বং ধ্বনিতং। বহা। অমৃতপদেন মুথাভোক্ষা চক্রমারোপিতং। তেন্দ মুখসাক্ষেত্রতা ক্রমারোপিতং। তেন্দ মুখসাক্ষেত্রতা স্বান্তবাদ কর্মারাদিকত্বং সর্বপ্রোত্তন তমোহারিত্বং বস্যাট চকের্বান্তবাদ ব্যক্তিব্য কথারাং গাছাসভিক্রোতিতা ॥ >> ॥

হে ভূখনন্দ্রন নৌরক। কলো জনিব্যমাণানামণি কল্পবং সংসারছঃবং হতীতি তং। বছা কলিরপং কল্পবং হতীতি বিজ্বাত

যদিও আমি প্রায়োপবেশনার্থ উদক পর্যান্ত পরিজ্ঞাগ করিয়াছি তথাচ আপনকার মুখান্তোজ বিনিগতি হ্রিকথায়ত পান করাতে এই চুঃসহ ক্ষা আমাকে কিঞ্চিয়াত্রও ক্লেশ দিতে সমর্থ হইতেছে না।
ফলতঃ জল পান পর্যান্ত পরিত্যাগ করিলেও কেবল হ্রিকথায়ত পাম নিমিত্ত আমার জীবন বর্তমান
রহিয়াছে, তাহার উপরম হইলে সদাই জীবন বিনক্ত হইবে অতএব বলিতে আজ্ঞা হউক ॥ ১১ ॥
সূত কহিলেন হে ভ্রুনশন। এই সমন্ত স্মীচীন প্রম প্রবণ ক্রিরা পরম ভাগবত ভগবান্ ভক-

প্রভার্ক্য কৃষ্ণছরিছেং কলিফল্মধনং ব্যাহর্ড বারভজ্ঞাগর্ভপ্রধানঃ ॥ ১২ ॥ প্রান্তক উবাচ ॥

সম্যায়বসিতা বৃদ্ধিন্তৰ রাজনিক্তম। বাহুদেৰ কথায়ান্তে ফজাতা নৈটিকী রডিঃ।

औरत्रवामी।

ব্যবসিতা ক্লতনিশ্চরা। বৎ বতো বুৰে: ॥ ১৩॥

दिक्वदङावनी।

পরম সংকর লবঃ পূত্রঃ। তগবান্। উৎপত্তিং প্রলয়কৈব ভূতানামাগতিং গতিং। বেতি বিদ্যামবিদ্যাক স বাচ্যো তগবানিতি বিশুপুরাণাৎ। কিছা ভগবৎ ভাগবভরোঃ সমানাদরশীমন্তেন। সাধবে হৃদয়ং মহুং সাধুনাং হৃদয়ংমিতি রীত্যাচাতেদাভিপ্রায়াং। বিশ্বুমা গর্মে প্রনিষ্টের বিশ্বের হৃদয়ং মহুং সাধুনাং হৃদয়ংমিতি রীত্যাচাতেদাভিপ্রায়াং। বিশ্বুমা গরে প্রবিশ্বের বিশ্বিধ রাছয়া মন্দ্রায়া। রুক্ত সর্বাচিত্রাক্রকায় ভগবতকরিতং। কিন্ধ করে মংক করঃ মুহতরং পালং তদপি। বছা কর্পণাগরেতাঃ করেরণি কিং পুনস্তৎ কালীন জনক করেরং দোরং। বছা কিং তহুং কিং ফর্লং কিং বা সাধন-মিত্যাদি বিশ্বুম ক্রিঃ করে এব কর্ময়ং শ্রাম্বালির্ছারণাতি তদগীত তথা তং। প্রতিক্রমারণাদিনৈর তরাহাত্ম বিজ্ঞানাদেশবক্রমেন্থনির্ভার। বছা কলিক অভএব কর্ময়ক মর্ক্ত্রংখ্যুলক পালং সংদার ছঃখনের ইন্তুতি সর্বাহাত্ম বিশ্বুমান করিছার কলিক অভএব ক্রমক মর্ক্ত্রংখ্যুলক পালং সংদার ছঃখনের ইন্তুতি সর্বাহাত্ম বিশ্বুমান করিছার কলিক করের ক্রমক কর্মানির্দির নির্দালিত। বিশ্বুমান করিছার করিলান্ত ভাগবততি ভাগবতা এব প্রভাগবত শাস্ত্রমের বা প্রধান প্রেচং পরমান্ত্রনাদিতি ভাবঃ অথবা ভাগবতকের করিলান্ত করিলান্ত

ব্যাহর্জু মারভতেত্যুক্তাপি প্রীশুক উবাচেতি পুনঃ পৃথক্ত্বতা বচনং। শ্রোতৃণামুকার্থাবিষ্টানামবধাপনার্থং তেষাং বক্ষামাণ কাবশৌৎস্ক্রেক্স্ কৃতিবদিশি নাজীতি। এবমক্স্রাণি জ্ঞেয়ং। ডক্স্ প্রীশুক ইতি প্রেমভরোদ্যেন শুক্তবন্ধপুরভাষণাং। তথাচ বন্ধ-ইন্তর্কে জ্ঞানং প্রতি প্রীক্ষধবাকাং। ব্যাস্ ঘণীয়তনয়ঃ শুক্তবন্ধাকাং ক্রতে বচো ভর্তু ভক্ষুক এব নাম্নেতি। এবমগ্রেপৃয়হং। বক্তু শ্রোজোরভোগ্ন প্রীণনেনৈন কথায়াং রনো জারেত ইতি রাজ্ঞঃ প্রাণ্ডিনক্লতি সমাগিতি ঘাতাং। সম্যায়্রিসভা সমাঙ্ নিশ্চয়া। বাস্পেবস্য সর্বৈশ্র্য প্রাকট্যার্থং বস্পেবাজ্ঞাতস্য কথায়াং ভচ্ছারণে ইত্যর্থঃ। নৈষ্টিকী পরমকার্ছাং প্রাহার প্রতিঃ প্রীতৃৎক্রত যুক্তমেবৈত্যাশরেন সম্বোধ্যতি রাজর্বয়া ভরতাদ্যান্তের্ সন্তমেতি মুনিসভ্যতি বং। বদ্যপি সামান্ততো ভগবংকথা শ্রবণেন মূহঃ প্রেয়া বিবলীভবত্তং রাজানমবধাপরিতৃং স্থানে স্থানে তৎ স্বোধনং তথাপি তত্তৎ প্রস্করণাৎ ক্রাপি ক্রিলেবো ব্যাখ্যায়তেয় অভ্যন্ত্রাহং মুনয়োহণি তদকথন ভদশ্রবণাদি হেতু মলতঃ শোধিতা ইত্যাশরেন সামান্তত আহ বাস্প্রেবিত। তন্তমাঃ প্রকৃত্তি তাস্যারোৎকর্বব্যাপনেন তন্নিষ্ঠার্থা কথায়াঃ প্রমোহণি ত্রীন্ ত্রিবিধান্ হি নিশ্চিতং। পূক্ষানিতি তেবামের প্রাথান্তা। বজ্লায়ং প্রার্বিস্কৃত্রমা ত্রপ্রেক্ত্রমান্ত্রমান্ত সন্তম্মতে কিমুত তরাং বজ্ম ভূমিৎ প্রাক্তবং। আছকং। আছ তাবত্তক্ষমদি যত আন্তর্মান্তর্কাণবাং বজ্বত্বপ্রাতৃন্দি তন্ত্র বজ্বঃ প্রত্ত্বং। কিমুততরাং বজ্ম ভূমিৎ প্রাক্তবং। ক্রিকানমেন্তর্কায় স্বার্বান্ত্র বা তাক্ষ্য। প্রই স্থান্তর্কায় স্বার্বান্ত্র বা তাক্ষ্য। প্রই স্থান্তর্কায় স্বার্বান্ত্র বা তাক্ষ্য। প্রই স্থান্ত্রা স্বান্তর্বান্ত্র বা তাক্ষ্য। প্রই স্থান্ত্রাহ্ন স্বান্ত্রাহ্ন স্বান্তর্বান্ত্র বা তাক্ষ্য। প্রই স্থান্ত্রাহ্ন স্বান্তর্বান্ত্র বা তাক্ষ্য। প্রই স্থান্ত্রাহ্ন স্বান্তর্কার বিত্তান্ত্র বা তাক্ষ্য। প্রই স্থান্ত্র বা তাক্ষ্য। প্রই স্থান্তন্ত্র বা তাক্ষ্য। প্রই স্থান্তন্ত্র বা তাক্ষ্য। প্রই স্থান্তন্ত্র বা তাক্ষ্য। প্রিক্রান্তন্ত্র বা তাক্ষ্য। প্রই স্থান্তন্ত্র বা তাক্ষ্য। প্রই স্থান্তন্ত্র বা তাক্ষ্য। প্রই স্থান্তন্ত্র বা তাক্ষ্য। প্রই স্থান্তন্ত্র বা তাক্ষ্যান্তন্ত্র বা তাক্ষ্যান্তন্ত্র বা তাক্ষ্যান্তন্ত্য বা তাক্ষ্যান্তন্ত্র বা তাক্ষ্যান্তন্ত্র বা তাক্ষ্যান্তন্ত্র বা ক্রান্তন্ত্র বা বাল্যান্তন্ত্র বা ক্রান্তন্ত্র বা ক্রান্তন্ত্র ব

ঞীবিশ্বনাশগতকবৰ্তী।

বিশেষণমণি ভাগবতের প্রধান ইতি পুংস্থমারং। যদা ভাগবতা এব মান্যম্বেন প্রধানানি যদ্য স:॥ ১২॥
সম্যায়বদিতা সম্যন্ত্রিক্ষা। যদবতোবুদ্ধে: রাজবিসভ্যমতি। ভো মহামানদ মুনিসভ্যমতি হলা সংখাধিতারভাঙ্গণি হয়ি

দেব প্রত্যাচন পূর্বক ইলিকলুমনাশক কৃষ্ণচ্ছিত্র বর্ণন ক্রিতে আত্তর করিলেন ॥ ১২ ॥

শুকদৈব কহিলেন হে রাজ্য বি সভম ! তোমার কৃতি স্বাক্থকারে কৃতনিশ্চয়া হইয়াছে। বোধ-হর সেই কারণেই তোমার বাস্তবেবের কথায় নৈঞ্জিনী রভি জ্ঞানা থাকিবে। বাহুদেবকথাপ্রশ্নঃ পুরুষাংস্ত্রীন্ পুনাতি ছি। বস্তারং প্রচ্ছক্ত জ্যোজুং স্কাশন্দিলং যথা ॥১৩ ভূমিদ্ প্রনৃপব্যাক্ত দৈত্যানীকণতাযুহতঃ। আজান্তা ভূমি ভাষান ব্যাপাশামণা যথে ॥ ১৪॥ গ্রে ভূমিল্ মুখী থিলা রুপন্তী করুবং বিভোঃ। উপন্থিতান্তিকে ভৌশ্ব ব্যাসনং সমবোচত।

शिवत्रकामी ।

তত্র তাবং প্রথমং ভগবদৰতারকারণমাহ ভূমিরিত্যাদিভি ন'বভি: শ্লোকৈ:। দৃপ্তা নৃপব্যাকা বে দৈত্যা তেবাসনীকশতানাম-যুহৈত বে৷ ভূরিভার তেনাক্রান্তা ॥ ১৪ ॥ •

বিভারম্ভিকে উপস্থিতা সতী ॥ ১৫ ॥

বৈষ্ণৰতোৰণী।

নীয়ং তেন সেক্তারং প্রথমতঃ পুনাতি। ততো বক্তৃ স্থানীয়ং সিচ্যমানঞ্চ। ততঃ শ্রোভৃত্থানীরাম্বন্ধিকতরা সিচ্যমানসন্ধিনো ছিপি তথেত্যর্থঃ। তথাটেচকাদশে। প্রতেহম্পতিতো ধ্যাত আদৃতো বাস্ক্রমাদিতঃ। সদ্যঃ পুনাতি সন্ধ্রে দেব বিশ্বক্রহে ইন্দিরীতি ৮ ১ পা তত্র তাবস্তগ্রদ্বতারে প্রসিদ্ধং কারণমাই ভূমিরিতি দৃংগ্রেতি দর্পক্ষতাবনির্দেশাং স্থানাস্থানবিবেকাভাবেক বিদ্বাদিন জ্ঞাপক্ষং দৈত্যত্ব লক্ষণং। শতাযুতৈরিতি অপরিচ্ছেদ্যায়ং। শরণং যথে আশ্রিতবজী ॥ ১৪ ॥

কথং তদাহ গৌরিতি। গোরপেতি রুপাবিশেষ জননার্থং। ততাপি থিছা ছাখিতা। অততাৰ করণং আর্কেশাদিসংস্ক্রং যথাজাতথা কদন্তী কলন্তীতি কচিৎ পাঠঃ। অততাবাশুমুখী অশ্ব্যাপ্তাননা। তথাচ প্রিক্রিশ্রাণ হরিকেশনাঃ। থেদাং করণ ভাষিণীতি। বিভোরিতি ভগবদাবেশেন জগবৈভবযোগাৎ অতত্তমৈ তং প্রতি বাসনং নিজয়ংখং সম্যাপ্তক্রতী। শেষিতি পাঠে সীরং। তদিশেষং শ্রীবিষ্ণুপ্রাণে। তৎ সাম্প্রতিমিনে দৈত্যাঃ কালনেনি প্রোগমাঃ। মর্ত্যানেরং সমাপ্রত্বহর্তীণং প্রজাঃ। কালনেমির্হতো যোহসৌ বিষ্ণুনা প্রভবিষ্ণুনা। উগ্রসেনস্কতঃ কংসঃ সভ্তঃ স্বাস্থারঃ। জরিটো বেয়কঃ কেণী প্রশাষ্থান ভার

শ্ৰীবিশ্বনাপচক্রবর্তী।

রাজত্বমধিক মন্তীতি জ্ঞাপরতি। শ্লেবেণ তুরাজদন্তাদিত্বাৎ তং ধ্বীণাং সন্তমানাং চ রাজা প্রীকৃষ্ণপ্রিরতমত্বাদেব যতে। জন্মমরণ-কালয়ো ব্রন্ধতেকোহণি বাধী কলোষীত্যর্থমণ্যস্তরুপচিক্ষেপ॥

তংশাদস্পিলং জ্রীশালপ্রামাণিচরণামৃতং জীন্ পুরুষান্ সেক্তারং সিচ্যমানং তছভর স্পিনশ্চ পুরুষান্ । যথ গলা যথা জীন্ উদ্মধ্যাধোনোকান্ পুনাতি তথৈব বক্তাশীন্ জীন্ পুরুষান্ যথাপুর্কং শৈষ্ঠাং ॥ ১৩ ॥

তত্ত্ব তাবস্কাবদবতারে প্রসিদ্ধং কারণমাহ ভূমিরিতি দৃপ্ত নৃপব্যাকাঃ দিতিবংশদাভাবেছপি কর্মণৈব বে দৈত্যা স্তেষামনীকশতানামব্তৈরো ভূরিভারস্তেনাক্রান্তা ব্রহ্মাণং স্থমেক্সমূদ্দিন্তিমেব নতু সত্যলোকস্থং ক্লঞ্চাবতারাদতিপূর্ব্ধমেব ক্রুমিনা রেবভ্যাঃ কন্যান্তাঃ সম্প্রদানপ্রস্নার্থং তত্ত্ব গতবতা তেন সহিত এব ক্লণানস্তরং ব্রহ্মা তং প্রভ্যাহ সম্প্রভাবতীর্ণার বলদেবার কন্যা দীরতামিত্যত স্তস্য তক্মধ্যে ক্লীরোদতীরাগমনং ন বৃত্তং। ক্লগাম ধরণী মেরোঃ সমাকে তিদিবৌকসামিতি প্রাশরেণাপ্রস্তং॥ ১৪॥

তত্বপথাৰ্ব্য অথ জগামেত্যথ শক্ষাধিক্যাদিদং লভ্যতে। বিশ্বস্টিবেৰ মৎকৰ্ম্মণালনং তু বিক্লোবেৰ কৰ্ম। সচ বিশু: কীরান্তিই ইতি

হে রাজন্। রাহ্দেবকথার প্রশ্ন তদীয় পাদোদ্ধক গদাসলিলের ন্যায় প্রশ্নকর্তা, বক্তা ও জ্বোতা তিবিধ পুরুষকেই পবিত্র করে॥ ১৩॥

তে স্বহার্যক্ষ । অন্নিজনে দৃশু নরপ্রজিকানে বস্কুতর বৈত্য উৎপদ হইলে পর তাহাদের অসংখ্য শেলার কুরিকাকে এই ফুদ্দি আক্রাক্তা ক্রিয়া আকার নিকট শর্মাপক ইয়েন ॥ ১৪ ॥ •

ধরণী থিমা ও অঞ্জেখনী ৰ্ইন্ন গাম্পিক্লা ধারণপূর্কক করণমারে নিবেদন করিতে ২ সেই নিজুর (,জনার) সসীপে উপস্থিত। ইইয়া স্থাপনার নিপদ নিবেদন করিয়াছিলেন। ত্রনা ঐ বৃত্তান্ত স্থাগত ज्ञा ভতুপথার্ব্যাথ সহদেবৈত্তরা সহ। জগাম সত্তিনয়ন স্ত্রীরং ক্ষীরপয়োনিধেঃ।
তত্ত্ব গল্পা অপলাথং দেবজেবং রুষাকিপিং। পুরুষং পুরুষসূক্তেন উপভত্তে সমাহিতঃ ॥ ২৫॥
গিরং সমাধে পগণে সমীরিতাং নিশম্য বেধা গ্রিদশাসুবাচ হ ।

ञ्चैथत्रवामो ।

পৌৰবীং পুৰুষদ্য ভগৰতো গাং ৰাচং যে মন্ত: আগু পুণুত মাচিরং অবিলম্বিতং ভবৈৰ বিধীয়তাঞ্চেতি ॥ ১৬ ॥

বৈশ্ববতোষণী।

সংখ্যাভূমুৎসহে। অক্ষোহিণ্যোহি বহলা দিৰাম্ভিধরাঃ, স্থরাঃ। মহাবলানাং দৃপ্তানাং দৈত্যেক্রাণাং মমোপরি। ভঙ্রি ভার-পীড়ার্ভা নশক্রোম্যমরেররাঃ। বিভর্তু মাত্মানমহমিতি বিক্ষাপ্যামি বং। ক্রিরতাং তক্মহাভাগা মম ভারাবতারণং। যথা রসাতলং নাহং পচ্ছেব্যতিবিহ্নলা।ইতি ॥

অধানভাহ সধ্য এবেতার্থ:। কাজাবতার হেতৃপঞ্চাদে মাল্লাস্থানক:। ঝিনরনেন সহিত ইতি তক্ত পৃথপ্ততি র্গাবংপ্রিরতাবেশন তক্ত বিশেষতঃ নাহাব্যাপেকরা। ক্লীরাজিতীরে গমনং তক্তহতগবজ্ঞপত্তের বিক্ষেন পালকরাং পাল্লোন্তরথতে তথা ব্যাখ্যানাং। বিক্ ক্লীরাজিবলির ইতি বৃহৎ সহলনামন্তোক্রে বিক্লামগণপাঠাত। তক্ত তীর এব গখা নতু তক্তত্য খেতলীপাথ্য ঞ্জিলবং প্রামিতি তক্তাপি বৌর্শভামভিপ্রেতং। তচ্চ মোক্ষর্থে নারার্থীরে ব্যক্তমের অক স্থানে স্থানে দর্শরিব্যমণ বচনামুসারেণ প্রক্রিবঃ জ্ঞো। প্রথবতঃ পর্ষ পোলোকাধিরাতা স্বয় তগবান্ বাস্ত্রেবাখ্যঃ প্রথমবৃহঃ প্রক্রাঃ তদীর বিত্তীর বৃহত্ত সম্বর্পতাং-শাংলঃ কারপার্থবাদ্যী মহৎপ্রইপুক্রঃ সোহপি সক্র্যাখ্যঃ। তদীর চতুর্গ্রেজানিকজস্যাংশো গর্জ্যেদ্যারী অনম্ভনোটি ক্রমাঞ্পরাক্ষাব্যাব্যের কারপার্থবাদী বিষ্কৃত্ত প্রথমবিবরত্বা্যব্রকাশেবেকৈক ব্রন্তান্ত্রিত প্রথম সোহপানিকজ্ঞান্তঃ ত্রামান্ত্রিক ব্যামার্থিত বিশ্বতি বিশ্বত তি। তৃতীরবৃহস্য প্রহার্যাংশাংশঃ প্রহার্ম্ত হিরণাগর্জেবামীতি। কচিত্ব প্রমন্তোবােক মধ্যবর্তী প্রক্রাপরপর্যায়ঃ প্রীগোবিলঃ। বাহ্যবেশান্তর তদাব্রণ দেবতা ইতি তেল ইতি ॥ পুক্রমিতি মহৎপ্রইমহাপুক্র তেলাভিপ্রারেণ। অতঃ পুক্রম্তেনৈবােপতত্ব ভক্ত্যা তুরার। তেন চ স্বতি ত্র্যা মহিবিশের স্ক্রার্থং বেদ প্রমাণকতা জ্ঞানার্থি। স্মাহিত স্তনেক্চিতঃ সন্। কুডঃ জগতাং নাথং বিশেষতক্ত দেবানাং দেবং পূজাং জগৎপালনার্থং দেবৈঃ স্বত্যাঘিতি ভারঃ। কিন্ত বর্ষতি কামান্ আকক্ষারতি ক্লেশানিতি ব্রাক্পিত্বং ইতি প্ররোজনকোদিইং॥ ১৫ ॥

স্মাধৌ তৃত্রাপি গগণে সমীরিতাং অদৃষ্ট ৰক্তৃকামিত্যর্থ:। ইত্যদৃশ্বমানেন শ্রীভগবতোক্তাং সমাধৌ শ্রুছেতি পরমাদৃশ্বছফুকুং অগ্রে শ্রীরুক্তাবনাদৌ তস্যাপি পরমাংশিন: স্বরং ভগবতঃ এক্তিক্ষস্য তৃদ্য তাদৃশক্রীড্রা তৃদানীস্কনানাং ভাগাবিশেব বোধনার্থং।

ক্রমসন্দর্ভঃ।

ব্রছেতি কীরাকেন্তীরগমনং তল্যেব বিষ্ণুত্বন পালক্ষাৎ। ভূথেব পালোভ্রথতে প্রতিপাদিতং বিষ্ণু: কীরাকিমন্দির ইতি

ঞ্চীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

তবৈষ্ পাছেদং নিবেদনীয় মিতি প্রামমর্শ। ততো জগামেতি। তত্র কার্যাছর মুপস্থিতং পৃথীপালনং দৈত্যসংহরণঞ্চ তত্র প্রথ-মার্থং ব্যেক্তং বা আজ্ঞাপয়েৎ দ্বিতীয়ার্থং কদ্রং বেতি দেবসাহিত্যং ত্রিনন্তন সাহিত্যঞ্চ কৃতং॥

জগন্ধাথমিতি তত্র গমনে ন্যার:। • "দেবদেবমিতি স্বেষাং বিজ্ঞাপনেচাধিকার:। ব্যাকশিমিতি বর্বতি কামান্ আকশ্পরতি-ক্লেশ্যনিতি প্রয়োজনঞ্জেকং॥ ১৫॥

ে ৰহাধৌ তত্ৰাশি গগণে সমীৱিতামিতি কীরোদনাথভাশি বন্ধশাপি। হর্ন তদর্শন্বমতিব্যক্ত্য তদাদি। পর্বাংশিনঃ সাক্ষাৎ। প্র-

হুইয়া পৃথী, দেববৃদ্দ তথা ভগবান জিলোচন সহ কীরনমুদ্রের তীরে গ্রাৰ করিলেন, তথার গিয়। সমাহিত (তদেকারা) চিতে পুরুষসূক্ত ছারা দেবদেব জগবাধ, ব্যাক্ষি সর্বাক্ষি বর্ক ও সর্বা-ক্লেশ নিবারক) পরমপুরুষ জগবানের উপাসনার প্রস্ত হইলেন ॥ ১৫ ॥

্ ক্ষিয়ৎক্ষণ পরেই এক ক্ষাকাশবাণী জক্ষার শ্রবণ গোচর ক্ষ্য। ক্ষাহা শুনিয়া দেবতাদিগতে

গাং পৌরুষীং মে শৃণুতামরাঃ পুন বিধীয়তামান্ত তথৈব মাচিরং ॥ ১৬ ॥ পুরৈব পুঃসাবধ্যতাধরান্তরো ভবন্তিরংশৈ র্যন্ত্রপজন্যতাং। স যাবতুর্ব্যা ভরমীশ্বরেশ্বরঃ স্বকালশক্ত্যা ক্ষপয়ংশ্চরেকুবি।

शिभवत्यामी।

বিজ্ঞাপনাৎ পুরেব পুংসা ঈশবেণ অবধৃতো জ্ঞাত:। ধরারা অরন্তাপ:॥ ১৭॥

देवकवरकावनी ।

হ ক্টং হর্ষে বা। পৌরুষীং স্বর্যুং তদ্ধাপণ পুরুষেণোক্তামিতি। তেবাং তস্যাং বিশাসার্থং। আওতর কোলাহণং পরিত্যক্ষ্য পুণুত। হে অমরা ইতি তদৈবামরত্বং নাম সিদ্ধোদিতি ভাবং ॥ ১৬ ॥

তস্য পুরুষসৈত্র বাচমস্থবদতি পুরেতি চতুর্ভি:। পুংসা যস্যাহমংশাংশ তেনাদিপুরুষণে অয়ং ভগবতা শ্রীরুক্ষেন পুরৈবাবধৃত ইতি তদ্বিজ্ঞাপদার্থং যুমং প্রমানেনালং তথাহমপি তদ্বে তা উচ্চুবণার্থং অয়ং নাবিভূতি ইতি ভাব:। অংশৈ নিজ্ঞালেবাংশৈ সহ উপজন্যভাং। এতে হি যাদবাং সর্ব্ধে মদ্যাণা এব ভাবিনি। সর্বাদা মংপ্রিয়া দেবি মন্ত্র্ল্য গুণশালিন ইতি পাল্ল কার্ত্তিকমাহাত্মানীত্যা নিত্য তৎপার্ধদানাং যদ্নাং পুত্র পৌশ্রাদি রূপেণ জনিত্বা নিকটে স্থীয়তামিত্যর্থ:। মহুত্বিতি তৎসন্ধানিমাপি পাণ্ডবাদীনাং তদন্ত ভাবাৎ। এযামেব স্বর্গ গমনং অধিকারান্তেচ তৎপ্রাপ্তি ক্রেরা। ঈশরাণাং বিরাদাদ্যন্ত্র্যামিণামন্দাদীনামপীশ্বরং সর্ব্বাংশী। তথাচ ব্রহ্মসংহিতায়াং। ঈশবং পরমং রুক্তং সচিদানক বিগ্রহং। অনাদিরান্তির্গোবিন্দং সর্ব্বারণ কারণং ॥ যদৈয়ক নিশ্বসিত কালমথাবলম্য জীবন্তি লোমবিলজা জগদগুনাপাং। বিষ্ণুম্হান্ স ইহ যস্য কলাবিশেবো গোবিন্দমাদিপুক্ষং তমহং ভলামীতি। বাধ্যাস্যতে চ তৈঃ অণাহমংশভাগেনেত্যাদৌ নারায়ণোহল মিত্যাদৌচ যস্যাংশাংশাংশভাগেনেত্যাদৌচ। ততঃ সদ্যং সর্ব্ধং ক্রন্ত্র্ণ্য ক্রাকাহিপি স্বকালক্ত্যা যদা যৎকর্ত্ত্র্ণ্য হুল্লেত তদৈব তৎ করোতীতি যথাকালমিত্যর্থ:। স্ব শব্দেন কালস্যাপি তদধীনতোক্তা। মাবৎ ভূবি চরেৎ প্রকটো বর্ত্তেত্যর্থ:। অন্যদা তত্তিরত্য প্রির্জননং সহ নিত্যং শ্রীবৃন্দাবনাদে তদপ্রকৃত্ত্রণ বিশেষত্বন নির্ক্রণরিষ্যমাণ বিচিত্র ক্রীড়াং কুর্বতোহপি তভানৈয়রদৃশ্যন্ত। তথাচ ক্রান্দে। বংসৈর্বংসভরীভিন্দ সরামো বালকৈর্ত্ত:। বুন্ধাবনান্তর-

ক্ৰমসন্ধৰ্ভ:।

বৃহৎ সহস্রনারি গুণাবতার বিষ্ণুনামবর্গেচ দৃষ্টং। গিরমিত্যাদি তারং॥ ১৫। ১৬॥

হরেং প্রিরচিকীর্বয়েতি নাত্র শ্রীরামলক্ষণবদ্যথাক্রমং। কিন্তু তস্য বন্ধিততা হানার তেনারন ইবায়নামূগতয়েচ তক্ত-সৌহৃদবিশেষ এবায়মিতি ভাবং। অতো ভক্তিথেদাচ্যতাগ্রজ ইত্যত্রাণি থেদং শ্রীকৃষ্ণদৈয়ে জেরং তদংশে থেদং পরামূশ্য

ঐবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

বোত্তমদ্য ক্লঞ্চদ্যাথ্যে প্রাপঞ্চিক লোক্ষাত্র দৃশুদ্বে তদীয় ক্লপাতিশয় এব হেতু ব্যক্তিতঃ। পৌক্ষীং পুক্ষদ্য ক্ষীরোদনাথদ্য গাং বাচং॥ ১৬॥

পুরুষত বাচমেবামুবদতি পুরৈবেতি চতুর্ভি: বিজ্ঞাপনাৎ পূর্ব্বমেব। পুংসা রুষ্ণ: স্বরং সমতবং পরম: পুমান্ ব ইত্যকুসারাৎ বরং ভগবতা জ্রীক্ষেনেত্যর্থ:। অবধৃত: জ্ঞাত:। অংশৈস্তদংশভূত পার্থদৈ রুদ্ধব সাত্যক্যাদিভি: সহ মিলিতীভূর মহ্বিভ্যুপ লক্ষণং কুরুবিপি। ক্ষীরোদনাথাদয়ো বয়মীখরা অব্যাক্ষপীখর:॥

স্থবজ্ঞির তথপ্রিমাংশভূতায়া উপেক্রাদি মবস্তরাবতার দ্বির স্থাএব তথপ্রিয়াণাং সধ্যার্থঃ কৃতচর তত্তক্র প্রভাববশাৎ পৃথস্কৃতাতথপ্রিয়সংখ্যা তবস্ত । যত্তক্র্তননীলমণো । নিভাপ্রিয়াণামংশাস্ত যা জাতা দেববোনয়ঃ । তা অংশিনীনামেবাসাং প্রিয়সংখ্যা
২তবন্ বন্ধে ইতি॥

যথোধন পূর্বক কহিলেন হে অমরগণ ! পরম পুরুষ ওগবানের যে বাক্য শুনিতে পাইলাম আমার নিকট অবণ কর এবং অবিলয়ে তজ্ঞপ বিধান কর ॥ ১৬ ॥

পৃথিবীর যে সন্তাপ হইতেছে ইহা আমাদের নিবেদনের পৃত্তেই পরম পুরুষ ভগৰানের বিদিও হইয়াছে, তোসরা মহবংশে অংশে অন্মগ্রহণ করিয়া তাবৎ কাল থাক, ঈশরদিগেরও ঈশর সেই হরি: বহুদেবগৃহে দাক্ষান্তগৰান্ পুরুষঃ পরঃ। জনিষ্যতে তৎপ্রিয়ার্খণে সম্ভবস্তমরন্ত্রিরঃ। বাহুদেবকলানন্তঃ সহস্রবদনঃ স্বরাট্। অগ্রতো ভবিতা দেবো হরেঃ প্রিয়চিকীর্ধয়া॥ ১৭॥ বিফোমায়া ভগবতী যয়া সংমোহিতঃ জগৎ। আদিউ। প্রভুনাংশেন কার্য্যার্থে সংভবিষ্যতি॥

वीभन्नमी।

८ त्वकी गर्ड मक्क्षेन विद्याना स्मार्ट नामि कार्या दिया विद्या कर कि विद्या कि । ১৮ ॥

देवकवरकावनी।

গতঃ দদা **জ্ঞাজি সাধ্**ব ইতি। বক্ষাতে চ। মধুবা ভগৰান্যত্ত নিতাং দল্লিছিতো হিরিরিতি। একাদশান্তেচ দারকামধিক্লত্য নিতাং দলিছিতত্তত্ত ভগৰান্ মধুত্দন ইতি ॥

ঈশরেশবন্ধনের বদন্তিস্থাসমবতারে ঈদৃশ লীলা কৈবলামেবান্তরকং প্রয়োজন মিত্যাহ বস্থানেবেতি। গৃহ ইতি জীববৎ পিতৃঃ সকাশাছংপত্তি নিরিস্তা যতঃ পরং পুরুষঃ যন্দানা উৎকৃষ্টো নান্তি স এব ভগবান্ প্রকট সক্রৈশ্য্য যুক্তঃ সন্ সাক্ষাৎ স্বয়মেব জনিষ্যতে প্রায়ুভবিষ্যতি অতন্তস্য প্রিয়ার্থং পরিচর্য্যা প্রীত্যুৎপাদনায়। যন্ত্য্য প্রিয়া প্রীকৃষ্ণিয়াল্যঃ শ্রীরাধাদ্যাশ্চ তাসাং দাস্তার্থং অতএব সম্যান্তবন্ধ উত্তম প্রকারেণ জারস্তামিত্যর্থঃ। যন্ত্য সম্ভবন্ধ যোগ্যা ভবন্ধিতি বর্প্রদানং। তথাপি জনন এব তাৎপর্যাং॥

অপ্রতো ভবিতা জ্যোষ্ঠা ল্রাতা ভবিষ্যতীত্যর্থ:। অত ল্রাভুত্বে যোগ্যতামাহ বাস্কদেবস্য দার কাদি প্রসিদ্ধ চতুর্ যুহপ্রধানস্য শ্রীকৃষ্ণস্য কথা অংশঃ সকর্বণরাং। অতএবানস্তঃ অপরিচ্ছিন্নঃ অতঃ স এব শেষাথোনাংশেন সহস্রবদনঃ প্রীকৃষ্ণগুণগানেছ্রেতি ভাবঃ। তথাচ বক্ষাতে। যন্মৈ বাজত ইতি জ্বাট্ জ্বতঃ পতে ইতি ব্যাখ্যাতঞ্চ তৈঃ। একাংশেন শেষাথোনেতি। অতঃ ক্ষেম্ব অন্ধ্রণেশ শ্রীভুগবিংত বাজত ইতি জ্বাট্ জ্বতঃ বিদান্য স্থাত্মশক্ত ইতি তাবঃ। দেবঃ তদগ্রজ্বাং স্ক্তরাং সর্বেবাং প্রা ইত্যর্থ:। নম্ব শ্রীলন্ধাণবদসৌ কনিষ্ঠতামেবার্ছতি নতু জ্বোষ্ঠতং তত্রাহ হরেঃ প্রেরচিকীর্ষয়েতি তস্য ব্রিত্তা হানার তেনাম্ম ইব তস্যান্ধানাস্থাতবেচ শ্রীকৃষ্ণদেবস্যতু ভক্তসৌন্দ বিশেষ এবার্যমিতি ভাবঃ। অতো বৃহৎসহন্ত্রনামন্তোত্রে শ্রীবলদেব নামন্ত পূর্বা ভক্তিংপাচ্যুতাগ্রন্থ ইত্যত্রাপি থেদঃ শ্রীকৃষ্ণদৈয়েব ক্রেয়ঃ পূর্বাইতীর্ণো লক্ষণপ্রাধীনত্ব শ্রীরঘূনাথ ইব বৈরঃ হংথমুরীকর্ত্বং নাযং পূর্বাণিতি স্বাভন্ত্রেণ হরেঃ প্রথং কর্ত্ব্যিচ্ছয়েত্যর্থঃ। অতঃ শ্রীলক্ষণস্যাপি তদ্বংখ নিবারণাশক্তবেনৈব ভক্তেট থেদো জ্বোঃ। হণোরতি তাদুশ মেহেন তস্য মনোহরণাথ। ১৭॥

वित्का विश्वतान इन्न जनवाज भागाचा मेकिः चाज এव जनवजी मर्स्समिक्य कृता। जनवजी बरमव मर्ममन् जारमव कार्या वित्मव

ক্রমসন্দর্ভঃ।

নিজাংশে তুন কদাচিদপি করে ঘটরতীত্যর্থ:। অথবা জ্যেষ্ঠে সতি শ্রীরবুনাথ ইব লহ্মণপরাধীনত্বেন বৈরং ছংধমুরীকর্জুং নায়ং শকুরাদিতি স্বাভজ্ঞোণ হবে: সূথং কর্ত্ত্মিজ্যেত্যর্থ:। অথ লহ্মণস্যাপি তদুংথ নিবারণাশক্রত্বেনৈব ভজ্জেণী বেদো জ্ঞের:॥১৭।১৮।১৯।২০।২১।২২।২৩।২৪।২৫।২৬।২৮।২৮।২১।৩১।৩১।৩২।৩১।৩৪॥

ত্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

স্বেন ত্রাত্রা ক্লেন্সন সহ রাজত ইতি স্বরাট্ দেবো বলদেব:। অগ্রত: প্রথমমাবির্ভবিষ্যতি। য এবাংশেন সহস্রোবদনোহনতঃ যথৈকাংশেন বিশ্বতা জগতী জগতঃ পত্তে ইতি বক্ষ্যমাণাৎ যোহনস্কো বাস্থদেবস্য কলা॥ ১৭॥

কিংশ ঘণীলা পরিকরাণাং ভক্তামাং ভক্তবিষাং কংগাদীনাঞ্চ মোহনার্থং যোগমায়াং মায়াঞ্চাদিশদিত্যাহ বিফোর্মারা বোগস্থীয় কাল শক্তি হারা ধরার ভার হরণ করত বাবৎ ভূতলে প্রকটরপে অবস্থিত হয়েন। কর্থাৎ বহুদেবের গৃহে পরমপুরুষ সাক্ষাৎ ভগবান্ শীক্তই জন্মগ্রহণ করিবেন। তাঁছার প্রিয়ার্থ অমর স্ত্রীগণ উৎপম হউন। হে দেববৃন্দ। বাহুদেবের অংশ সহস্রেবদন স্বরাট্ অনস্তদেশ ভগবানের প্রিয়াক্ষরিষার বাসনায় ক্রের উৎপন্ধ হইবেন। ১৭।

অপর যে জাৰতী বিক্ষায়ায় জগৎ সমোহিত হয়, জিনিও প্রভু কর্তৃক আদিকী হইয়াছেন,

শ্রীমন্তাগবতম্।

3¢

ঞ্জিক উবাচ।

ইত্যাদিশ্রামরগণান্ প্রজাপতিপতি বিছু:। আখাস্যত মহীং গীর্ডিঃ স্বধাম পরমং যথো॥ ১৮॥

देवस्थवरङावनी ।

দারা লক্ষয়তি যয়েতি চিচ্ছ কিব্যাবর্ধিতা। তগবলিচ্ছয়া সমাগ্ভবিষ্যতি। অগ্রথা শ্রীযশোদাদিমোহনাশকে:। কার্য্যার্থ ইতি শ্রীযশোদাদমোহনাশকে:। কার্য্যার্থ ইতি শ্রীযশোদাদমোহনাশকে:। কার্য্যার্থ ইতি শ্রীযশোদাদমোহনাশকে:। কার্য্যার্থ ইতি শ্রীযশোদাদমোহনাদি কার্য্যার প্রগোপ্যার্থ সক্ষেত্র কার্যার প্রত্ত্ত্বা অত তথা কর্ত্তেতাহ প্রভুনা সাক্ষাৎ ক্লফেনৈবাদিষ্টেতি। নমুষ্যা সম্মোহিতং ক্লগদিত্যুক:। তর্হি তথা তার ক্লমনা অন্মাদৃশামপি সম্মোহ: সম্ভবেদিত্যতাহ প্রশোদনিত ক্লাশেন ভগবদংশেন। তদিচ্ছাদিরপেণ সম্বলিতা অতন্তদিচ্ছান্সারেণ মোহ্যিষ্যতীতি ভাব:॥

ইতি শ্রীবিষণাদেশান্ত্রাদ প্রকারেণ আদেশে। যোগ্যতামাহ প্রজাপতীনাং মরীচ্যাদীনামপি পতিঃ যতো বিভুঃ। উক্তার্থমেবেনং ল্লেষেণ ভগবদবতার সাধনাদিদানীমেব প্রজান ঃ তং পতীনাঞ্চ পালক বং বি ভূ যঞ্চ সিদ্ধমিতি। পীর্ভিঃ ছমেব ধ্যাসি অচিরামধুর প্রদি ভূ বিভা ভবিষ্যসীত্যাদিভিঃ। পরমং সভ্যলোক বর্তীতি বিদ্যুস্থত এতা মৃত্তিমন্ত্রেদাদি নিজ পরিবারাণাং সাক্ষাং শ্রীভগব দ্বতার বার্ত্রয় সন্ত্রোষণার্থং॥ ১৮॥

শীবিশ্বনাগচক্রবর্ত্তী।

মায়াং সমাদিশদিত্যবিমোক্তে:। প্রভুনা রু:ফন আদিষ্টা সতী অংশেন সহ স্বাংশভূতবহিরক্ষমায়াসহিতৈৰ কার্যার্থে প্রাত্ত-ভবিষ্যতি। যন্ন জর্গৎ সংমোহিতং স্বাংশভূত মারুরেত্যর্থ:। যন্ধা জগৎ জ্ঞপ্রাক্তরং প্রাকৃতঞ্চ স্বেন স্বাংশেন চ সংমোহিতং মান্নান্ন। र्यात्रमात्राःभक्तः हुष्टेः नात्रनुपक्षतार् अर्थः । सा तर्यात् । कानार्व्यका त्रत्र कालः देनव पूर्वा कत्राक्रिका । या त्रता त्रत्रमा मिक ম হাবিঞুস্তরপিণী। যন্তা বিজ্ঞানমাত্রেণ পরাণাং পরমাল্পন:। মৃত্তি দেবদেবদ্য প্রাপ্তি উবতি নান্যণা। একেয়ং প্রেমদর্শ্বত স্বভাবা গোকুলেশ্বরী। অনয়া স্থলভোক্তর আদিদেবোহ্ধিলেশ্বরং। অভা আব্বিকাশক্তি স্হামায়াধিলেশ্বরী। যয়া মুগ্ধং জ্ঞাৎসর্কাং সুর্ব্ধে দেহাভিমানিন ইতি। এলা একবিধৈৰ একানংশাপরপর্য্যারেত্যর্থ:। কার্য্যারে ইতি। কার্য্যমত দ্বিবিং প্রথমং দেবকী সপ্তম গর্ভাকর্ষণ যশোদা স্থাপনাদ। তদ্ধি যোগমায়ায়া এব কার্য্যং নতু মায়ায়া:। স্থানিয়ন্ত ব্যভ্জাবাদ্ধিশে প্রভুত্বা-ভাবাৎ। যশোদাস্বাপনস্য রাজসত্বাভাবাচ্চ। যদুক্তং। ব্যতীত্য কুর্য্যমপি সংশ্রিতানাং তাং পঞ্চমীং প্রেময়ীমবস্থাং। ন সম্ভবত্যেব হরিপ্রিয়াণাং স্বথো র্জোর্ভিবিজ্জিতো ৷ ইতি। তাদুশ সিদ্ধতকের মারায়াঃ প্রভবিত্মশকার্চিচ। দ্বিতীরং তু দেবকীক্ষাণা-क्रार्थि वरक्रमवस्मनः जन्नामामा এव कार्याः । कृ त्वार्थमामामा सामुन इक्षेटलात्कम् उन्छ। स्रप्नुत्वारामिव देनव क्रमहस्रामाकान म्रभू उ বিদ্ধাবাসিন্যাদি রূপেণ বহুনাম নিকেতে বহুনামা বভুব হ। যহুক্তং বয়মের মায়য়া। বৈবস্বতেহ স্তরে প্রাপ্তে অষ্টাবিংশতিমে মুগে।, নৰ্লগোপগৃহে জাতা যশোদাগৰ্ভদন্তবা তভত্তী নাশ্মিষ্যামি বিদ্ধাচলনিবাসিনাতি। তথা রাদ্দীলাদি সিদ্ধার্থ ভগবং প্রেরদীনাং পতি শ্বশাদিমোহনং যোগ ারারা এব কার্যাং নতু মারারাঃ। তেখাং ভগবদৈম্থাদর্শনাং। মারামোহিতত্বে তদৈম্থ্যস্যাৰশ্যস্তাৰাং। যোগমায়ামুৰ।। এত ইতি ততোজেক। তুৰ্য্যাধনাদি শাৰাণ্যস্তৱৰু বিশ্বল্পাক্ত্বাহনাদিও मात्रत्रा जैसूर्यरमाहनः (यागमात्रव्यक्ति व्यवस्थित के यक्तु वारमन्त्रानि महात्थ्यमवनाः श्रीयरमानाननानीनाः विश्वस्य वक्रमत्नाकानि नर्भ-नाष्ट्र वारमणामि जावाधिकारचटेनचर्याञ्चारनर्भामः समारमटेवचर्यानसूमकानलकनः स्माहनर् ठर न स्वानमाममा नानि मायमा किञ्च প্রেম্এব স স্বভাব: যা পলু ভগবদৈ মর্থাকান মার্ণুন্ চিনায় মমতা রস নয়। জীক্ষাং নিবধা প্রভিক্ষণং তল্মিন্ সেহাধিকাম্ংপানয়ন্ **তলাধুয়াখাদ মহোদধে ভক্ত**জনং নিমজ্জয়তীতাদাধারণপুক্তপুজাপ্যো ভ্রত্তত এর তত্তো*ক্ত বৈ*ঞ্বীণ বাতনোলাবাং প্রঞ সেহস্থীং বিশ্বিতি পুত্রস্থেদ্যয়সং বাংস্লা এেমোৎসাধারশং লক্ষণং। মোহন্দ্রেন সায়া সাধর্ম্মান্দ্রায়ামিতি ॥

ইতি শ্রীবিষ্ণাদেশাসুবাদ প্রকারেণ ॥ ১৮ ॥

দেবকীর গর্ত্ত সংকর্ষণ ও যশোদাযোহনাদি কার্য্য নিমিত যশোদার গর্ত্তে অংশে উৎপন্ন হইবেন।
তক্তেবে কহিলেন প্রজাপতিদিগের পতি বিভূ ক্রন্ধা দেবতাদিগকে এই প্রকার আনেশ্য করিয়া
এবং ধরাকে সান্থনা বাক্যে আখাস দিয়া শীয় ধামে গমন করিলেন। ১৮॥

শ্রসেনো যত্পতি র্যথুরামাবসন্ পুরীং। মাথুরাঞ্রদেনাংশ্চ বিষয়ান্ বুভুজে পুরা। রাজধানী ততঃ সাভূৎ সর্ব্যাদব ভূতুজাং। মথুরা ভগবান্ যত্তা নিজ্যং সমিহিতো হরিঃ ॥ ১৯॥ তত্তান্ত কহিচিছে রির্বস্থাদবং কতোদহং। দেবক্যা সূর্য্যা সার্দ্ধং প্রয়াণে রথমাক্ত্ৎ॥ ২০॥

धीधत्रयाभी।

ভোজেক্রকনাগারেহ্বতারার প্রভাব কথনমাহ শ্রসেন ইত্যাদি বাবদধ্যার স্মাপ্তি। মধুরাং আব্দন্মধুরায়াং বসন্ বিষ্যান্দেশান্ণ ১৯॥ সুধ্যয়া নবোঢ্যা প্রয়াণে প্রায়াণ্ডিং ॥ ২০ ॥

देवस्थवरकायनी ।

শ্রীমধুরায়াং ভগবদবতরণং বক্ষায়াদৌ তৎ কারণমাহ শ্রসেন ইতি ছাভ্যাং। মধুরাং মধ্যতেত্ জগৎ সর্বং বন্ধজানেন যেন বা। তৎসারভূতং যদ্যস্থাং মধুরা সা নিগদ্যতে ইতি আথব্দিকি গোপালতাপনী শ্রুতৌ যেন ব্রন্ধ জ্ঞানেন বা শব্দা সম্ক্রমার্থছাজ্জিবোগেন বা সর্বং জগন্মধ্যতে তজ্জ্ঞানিনাং তদ্ধকিযোগিনাঞ্চ বিলাপ্যতে তদ্বৎ প্রসিদ্ধং জ্ঞানাদি দ্বং স্বয়ং ভগবৎ শ্রীকৃষ্ণ নিষ্ঠ্বাৎ সারভূতং যদ্যাং বর্ততে সা মধুরা নিগদ্যত ইত্যর্থজ্ঞান্ত্রা সর্বাতি সর্বং ওজ্ঞানি ত্রা ত্রাপি পুরীং তন্মধ্যক্ত কমল কর্ণিকাশিতাং মাধুরার্থুরামপ্রলম্বলনঃ তদ্দিণ ভাগান্ধগতান্ শ্রসেনাংশ্চ তত্ত্রাকৈর প্রসিদ্ধান্ বৃভূজ্কে উপবৃভূজ্জে পুরেতি ত্র্যান্ত্রার প্রসিদ্ধান বিদ্যান্ত্রাক্ষাক্ত নির্মান্ত্র ক্ষাক্তির তালিকান্ত্র প্রস্তিত্ব স্বর্ম পূর্বাক্রমের নব্যক্ষে ॥

ততন্ত্বদারত্য সা স্থপ্রসিদ্ধা অনির্বাচনীয় মাহাত্মা বা রাজধানীতি ষ্যাতিশাপেহপি শ্রুদেনাদীনাং মহাপ্রত্যুবছেন রাজগ্ল ভস্য ব্যুবহারত্বাৎ ভূভ্জামিত্যপ্যক্তং। দর্বেষামেব তেবাং রাজধানী তত্র কৈমৃত্যমাহ যত্র ষস্যাং ভগবান্ স্বর্গং ভগবদ্ধা বিলক্ষণ দর্বেশ্বর্যাযুক্তঃ। তথা হরিঃ বিলক্ষণ রূপ গুণলীলা মাধুর্য্যেণ সর্ব্ধ মনোহরো যং স শ্রীক্রফোহপি সন্নিহিতঃ তত্রত্যানাং নিকটে তিইতীত্যর্থঃ। তত্রচ বুথুরেত্যের হেতু জ্রেরঃ তয়া তস্যাপি মনোবিলাড্নাং। নিত্যমিতি কালাদি দোষেণাস্থাকৈবাস্ত্র্দানং নিরন্তং। অস্যাশ্চ নিত্যম্বানীতং। যথাচ পাল্মে নির্বাণখণ্ডে শ্রীক্তগবদ্বাক্যং। অহো ন জানস্তি নরা ছ্রাশয়াঃ পুরীং মদীয়াং প্রমাং সনাতনীং। স্বরেক্ত নাগেক্ত মুনীক্ত সংস্তৃতাং মনোর্মাং তাং মথুরাং প্রাকৃতিমিতি তথাচ গোপালোত্ররতাপনী শ্রুতিঃ। তাসাং মধ্যে সাক্ষাভুক্ত গোপাল পুরীহীতি। কিঞ্চ। তদপ্যতে শ্লোকাঃ। প্রাপ্য মথুরাং পুরীং রম্যাং সদা ব্রক্ষাদি সেবিতাং। শৃত্য চক্র বিভি। তিতী রামানিক্ত প্রত্যুক্ত ক্রিণ্যা সহিতো বিভূবিতি। ত্রিভী রামানিভিঃ শক্ত্যা ক্রিণ্যেত্যম্বয়ঃ। এবং বৈকুণ্ঠলোকাদপ্যংকর্ষঃ স্থিতঃ। অতএবোক্তং পাল্পে পাতালথণ্ডে। অহো মধুপুরী ধন্তা বৈকুণ্ঠাচ্চ গরীয়নীতি। তলেবমেক্স্য স্বয়ং ভগবত আম্পদ্বাদেগালোকাদীনামেকাত্মকতৈব জ্বেরা॥ ১৯॥

তত্ত্বৈৰ কংসকারাগারে প্রীভগবতো জন্ম বক্তুং তং প্রসঙ্গমারভতে তস্যাবিত্যাদিনা। তু ভিয়োপক্রমে। তদ্যাং মথ্রাপ্র্যাং কর্ষিচিৎ চিরকালে। প্রয়াণে বিবাহানস্তরং নিজগৃহে গত্তং ॥ ২০॥

এ বিশ্বনাথচক্রবর্তী।

বহুদেব গৃহে জন্ম বক্ষ্যং জ্বত্পযোগিনীং কথামাহ শুর ইতি। বিষয়ান্ দেশান্॥

নিতাং সন্নিহিত ইত্যনেন স্বয়ং ভগবান্ পরিপূর্ণঃ রুঞ্জন স্বধামনি সদা বর্ত্তমান এবাবিভূমি প্রপঞ্চ গোচরী ভবতি নতু কুত শিক্ষাদিতা আগতঃ বিতরতীতি বাজিতং। কিঞা তদাবিভাব সময়ে বৈকুঠ স্বেত্তীপাদিতাক্তনংশা আগতা তন মিলিতী ভবন্তি লীলান্তে তএব প্রন্তন তত বাক্লীতি তেষামেৰ বৈকুঠাদিভ্যোহ্বতরণং বৈকুঠাদ্যারোহণং চেতি প্রসিদ্ধি জেমি। প্রাৰ্বিরেশোমহদংশ যুক্তোহ্বোলিলা আতো ভগবানু র্ধাধিরিত্যাদিয়ু তৃতীয়ে তথা ব্যাধ্যানাং ॥ ১৯ ॥

স্বারা নবোচ্যা প্রয়াণে বিবাহোত্তর দিবসে নিজ্পৃহং প্রবাস্থা। ২০॥

হে রাজন্! পূর্বেকালে যতুপতি শুরদেন রাজা মধুরাপুরীতে বাদ করিয়া মধুরা এবং শ্রদেন প্রভৃতি বছতর দেশ ভোগ করিয়াছিলেন, অতঁএব ঐ মধুরা নগরী তদবধি সমুদায় যাদব স্পৃতির রাজধানী হয়। তথায়,ভগবান হরি সর্বদা সিরিহিত আছেন ॥ ১৯॥

শূরকংশীয় বহুদের ক্লোম সময়ে ঐ মথুরা নগরে বিবাহ কলিয়া নর্বোঢ়া দেবকীর সহিত স্থীয় গৃছে।
পূনুনার্থ রথারোহণ করিলেন ॥ ২০ ॥

উত্তাদেনস্থতঃ কংসঃ স্বস্থং প্রিয়চিকীর্বয়া। রশ্মীন্ হয়ানাং জগৃছে রোক্র রথশতৈর্তঃ ॥২১॥
চতুঃশতং পারিবর্হং গজানাং হেমমালিনাং। অশ্বানামযুতং সার্জং রথানাক ত্রিবট্ শতং।
দাসীনাং স্থকুমারীণাং দ্বে শতে সমলস্কতে। ছহিত্রে দেবকঃ প্রাদান্থানৈ ছ হিতৃবৎসলঃ।
শন্থ ভূর্য মুদঙ্গানি নেতু ছ নুভয়ঃ সমং। প্রয়াণপ্রক্রমে তাত বরবধ্বোঃ স্থমঙ্গলং॥ ২২॥
পথি প্রতাহিণং কংসমাভাষ্যাহাশরীরবাক্। অস্থাস্থামক্রমোগর্ভো হস্তা যাং বহদেহবুধ॥ ২০॥

औरत्रवामीा

রশ্মীন্ প্রগ্রহান্॥ ২১॥ পারিবর্হং উপস্করং॥ ২২॥

আভাষ্য রে রে কংসেতি সংবোধ্য হস্তা হনিষ্যতি॥ ২৩॥

বৈষ্ণবতোষণী।

ত্রাপাগ্রদেনস্য স্থত ইতি। নিকটস্বস্থ জ্ঞাপনার্থং তচ্চ পুনক্তকং নিন্দা স্বচনার্থং জ্ঞাদ্ধিংসয়া কংসনায়া প্রসিদোহিপি কসি-ধাতোঃ শাতনার্থবাং। হয়ানাং রশ্মীন্ জগ্রাহ স্বয়মেব সার্থামকরোদিত্যর্থঃ। জগৃহে ইতি কচিৎ পাঠঃ। স্বস্থদে বিক্যাং ভয়া ইতি পাঠে সএবার্থঃ। তথাচ দ্বিরূপকোষে ভয়ীচ ভগিনী চৈবেতি ইতি তস্যামমুষ্য মহাস্বেহঃ স্থাচিতঃ। এতদাদিকং সর্বাং কংসম্য বক্ষামাণ লুক্টেইয়া অত্যন্ত থলত্ব জ্ঞাপনার্থং॥২১॥

কিঞ্চ তাদৃশ মহোৎসবে তাদৃশং ক্রোয্যাং ন কিল সম্ভবেদিতি বিবাহোৎসবং ত্রিভির্কাণ্যন্ আদাব্পদ্ধরপ্রদানমাহ চভুরিতি ব্যাকেন। হেয়াং মালা মাল্যাং পঙ্কির্কা তদ্বতাং। এতদগ্রেহপাদুবর্তাং। ত্রিবট্শতং তত্তৎ প্রকারভেদেন সমবর্গত্রদাত্মকারীদশ শতমিত্যর্থং। স্ক্রমারীণাং নবযৌবনানামিত্যর্থং। সম্যাবিচিত্রোভ্রমবন্ধ ভূষণাদিনা যথাবিধ্যলন্ধতে। প্রকর্মেণ পরম শ্রদ্ধানিনা আদাং। যানে প্রয়াণ সময়ে। যানৈরিতি পাঠে শিবিকাদিভির্কিশিষ্টে তান্তান্ধতে ইত্যর্থং॥

সমং যুগপং। যদা অন্যনাধিকং যথা স্যাৎ। স্থান্ধ শোভনভভগনি যথা স্যান্তথা নেছ: স্বয়মবাদ্যন্ত। এতচ ভাবিশুভলক্ষণং হে তাতেতি শ্রীভগবদবতারাসন্ধতাদি জাত হর্ষ দর্শনেন বাৎসল্যোদ্দীপনাৎ সন্দেহ বচনং। তাতোহস্কস্প্যে পিত্রীতি নানার্থদ্বাৎ। তাবদিতি পাঠঃ কচিৎ সচ বাক্যাল্কারে॥ ২২॥

ক্রমসন্দর্ভঃ।

প্রগ্রহিণং গৃহীতাখণাশং। ন লক্ষিতং শরীরং যন্তামিতি মধ্য পদলোপঃ সা চাসে বাক্ চেত্যশরীরবাক্ সৈবাহেত্যপচারাৎ শিলাপ্ত্রস্য শরীরমিতি বং। যদ্বা বক্ষ্যমাণ মর্থমাহ ইতি জ্বেরং। গর্জেহিং তথাচ বিশ্বঃ। গর্জেজিণে হর্তকে ক্কাবিত্যাদি প্ত্র-শব্দ মন্ত্রক্যা গর্জ শব্দ প্রয়োগশ্চাগ্রে ক্তারাং দৃষ্টারাং কংসভ্ত সন্দেহাভাবার। নয়সে যা ভর্তৃগৃহং প্রাপরসি। বহস ইতি পাঠে স্ক্রার্জি বাহনবন্ধহসীতি শ্লেষঃ। অবুধ হে মুর্থেতি শক্র জনমিত্রীবহনাৎ স্বমরণাজ্ঞানাচ্চ। কংসোহয়ং প্রাদেবক্যাং মিগ্রতাংশে সমৃত্ত-

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্ত্তী।

ভগ্না ইত্যপি পঠি:। ভগ্নীং ভগিনীং চেতি দ্বিরূপকোব:। রশ্মীন্ প্রগ্রহান্॥ ২১ ॥

পারিবর্ছ : উপস্থরং। যানে প্রয়াণসময়ে॥ ২২॥

প্রতিষিং গৃহীতাশ্বপাশং। আভাষ্য অরে কংসেতি সংবোধ্য পুত্র ইত্যস্ক । গর্তপদোপন্যাসোহ ইন্যাং ক্রায়াং দৃষ্টায়ামণি কংসম্ভ সন্দেহাভাবায়। দেবক্যাং অজনন্যামতিলেহবস্তং কংসং কথং ভগবান্ হন্যাদিতি • চিন্তাব্যপ্রাণাং দেবানাং তস্যাং কংস-স্যাপরাধোৎপাদনার্থমিয়মাকাশেহদৃষ্টশরীরাণাং ভেবাং বাণী ক্রেয়। স্বস্থমনি আনকল্প্ভিবেবং স্বস্থাবি ভগবদবতার স্চকং

উপ্রায়েনের পুত্র কংস ভগিনীর (দেবকীর) প্রিয় কামনায় সেই রপের জামরজ্ম গ্রহণ করিল এবং শত শত স্বর্ণময় রপে পরিবৃত হইয়া রপ চালাইয়া চলিল॥ ২১॥

হে রাজন্! দেবকীর পিতা দেবক অতিশয় ছহিত্বৎসল ছিলেন, তিনি প্রয়াণকালে কন্যাকে বর্ণমালায় অলঙ্কত চারিশত হন্তী, পঞ্চদশ সহত্র অশ্ব, অফীদশ শত রথ এবং বিবিধ ভূষণে ভূষিত ছুই-শত অকুমারী দাসী যৌতুক দিরীছিলেন। হে তাত! বর বধুর প্রয়াণ আরম্ভ ইইবা মাত্র তাহাদের বস্পাধি প্রক্রোরে ভূরি ২ শন্ধ ভূষ্য মুদল এবং জুলুভি ধ্বনি হুইল। ২২।

त्म बाहा रेडक, तरम अर त्रीम अर्थ पृक्षक गमन कतिए थाकिएन, श्री मरश अन्तीतिनी वानी

ইত্যুক্তঃ স খলঃ পাপো ভোজানাং কুলপাংসনঃ। ভগিনীং হস্তমারক্কঃ খড়গপাণিঃ কচেছগ্রহীৎ ॥২৪॥ তং জগুলিতকর্মাণং নৃশংসং নিরপত্রপং। বহুদেবো মহাভাগ উবাচ পরিসাম্বয়ন্।

औधत्रश्वाभी।

कुलभारमनः कूलम्यमः। व्यात्रक छैल्यूकः करह दक्षभवस्त ॥ २८ ॥

নৃশংসং ক্রুরং। মহাভাগ ইত্যয়ং ভাবঃ স্বজন্মনি হর্ষেণ দৈবতৈরানকত্বসূতি ঘোষেণাক্ষতাবি ভগবদবতারেণ শক্য প্রতীকারতা

বৈষ্ণবতোষণী।

ইতি শ্রীভগবদবতারে শৈথিল্যশঙ্করা তৎ কারণোথাপনার্থং ব্যগ্রাণাং দেবানামাকাশবাণীয়ং জ্ঞেয়া। শ্রীভগবৎ সম্বন্ধিনং দেবক্যাদি-কন্ধ নাসে বিহস্তং শক্ষোতীতি নিশ্চয়ার্থশ্চাত্র জ্ঞেয়ঃ॥ ২৩॥

ইত্যুক্ত ইতি यद्दाबाद्धिरोप নতু তদর্থ বিচারণাদিনেত্যর্থ:। যতঃ থলঃ নতু সম্ভাবযুক্তঃ পাপঃ তন্মূর্তিত্বারকুতনিং পাপাচ্ছস্ক-মানশ্চ। যতে। জন্মত এব ভোজানাং কুলস্থাপি দূষকঃ কিমৃত স্বস্ত। অতএব হস্তমারকঃ। আদিকর্মণি কর্ত্তরি ক্তঃ। সদ্যঃ প্রবৃত্তঃ। অহো তত্তাপি নগুপ্তবিষাদিনা কিন্তু থক্টাপাণিঃ। তত্ত্বাপি নচ বস্তাদি সাবরণাং ন বিগর্ধিত স্পৃষ্টাং কিন্তু কচেছগুহীং॥ ২৪॥

জুগুন্সিতেতি ভগিনীবধে প্রবৃত্তে:। নৃশংসং সদ্য ন্তাদৃশ সেহত্যাগাং। নিরপত্রপং তাদৃশোৎসবে সর্ব্ধ লোকাগ্রেহতান্তবিক-শোদ্যমাং। এবং তক্ত মহাদ্বশেষ্ট্র পুন: পুন নিন্দা। মহাভাগ ইতি তৈর্ব্যাধ্যাতমেব তত্র স্বস্ত বস্থদেবক্ত জ্বন্ধনি হর্ষেণ দৈবতৈর্য আনকত্বশুভিবোৰ ন্তেন স্চিতো যঃ স্বস্থাবস্থদেবান্তারী ভগবদবতার ন্তেন হেতুনা স্বস্থাৎ শক্য প্রতীকারতা সম্ভবতীতি। তত্রচেতি শব্দক্ত এতৎ প্রকার ইত্যর্থ:। তেন চৈতৎ স্বমহা ভাগদং প্রীবস্থদেবো জানাতীতি ক্রোড়ীক্রিয়তে। যদ্ধ মহাভাগ ইত্যয়ং ভাবঃ ইতি প্রীশুকদেবন প্রবিশ্বদেবস্থায়মভিপ্রায়োহভিপ্রেত ইত্যর্থ:। অয়মুক্তো হেতু:। অতএব পরিসাম্বয়ন্ তচ্চ তৈ ব্যাধ্যাতং। যদ্ধ সাম্বর্ধকং সামা যুক্তিভেদেন স্বেহোৎপাদনেনাক্রমেণ প্রবোধয়ন্। তত্র পঞ্চবিধং সাম ভেদশ্চ দ্বিবিধঃ। তথা চোক্তং। সম্বন্ধ লাভা বৃপক্কতাভেদৌ গুণকীর্ত্তনং। সাম পঞ্চবিধং ভেদো দৃষ্টাদৃষ্ট ভয়ং বচ ইতি॥

তত্রাদৌ সামা প্রবোধয়তি শ্লাঘনীয়েতি ভবানিত্যাদরাৎ স্তিয়ং তত্রাপি ভগিনীং তত্ত্রাপি তদ্বিবাহোৎসবে কথং হস্তাৎ অপিতৃ

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

মাত্রাদি মুগাৎ শ্রুতবতো বস্থদেবস্য তদর্থ নিশ্চয়ার্থং। বস্থদেব মুখাৎ শ্রোষ্যস্ত্যা দেবক্যাশ্চ হস্ত মংকুক্ষৌ ভগবান্ জনিষ্যত ইত্যাননন্দার্থং মরীচিস্থতানাং ষধ্যাং কংসহস্তবধেন শাপোদ্ধারার্থঞ। ২৩ ॥

কুলং পাংস্থং করোজীতি কুলপাংসনঃ কুলদ্বণ ইতার্থঃ। আরক্ষ ইত্যাদি কর্ত্তরি কর্মণি চেতি ক্রঃ। কচে২গ্রহীদিতি যেনৈব বামহন্তেন ভগিন্যাঃ প্রীত্যতিশরার্থং রথবাহকাম্বপাশং জগ্রাহ তেনৈব হল্তেন সহসা তলৈব ভগিন্যা বধার্থং তস্যাঃ কেশপাশং জগ্রাহ। এবং প্রতাদং ত্যক্ত্বা দক্ষিণপাণিনা বড়াং জগ্রাহেত্যহো ধলজনম্বেহস্য লোক লজ্জা ধর্মভ্য নিরপেক্ষমেব ঘাতুকত্বনিতি ভাবঃ ॥ ২৪ ॥

নৃশদং জুরং। মহাভাগ ইতি স্বসান্ধাদেব স্বভার্যাং হস্কং প্রবৃত্তমণি তং প্রতি ক্রোধান্ত্দয়াৎ ধৈর্য্য গান্তীর্য্য ক্রমা চাতুর্যাদিগুণ-সমুজ্বাচ্চ। যদা নমু তাদুশো মহাজুরঃ কথং তদ্য সাম্বনং শৃণুয়ান্তএছি মহাভাগ ইতি ভাগ্যবতো জ্নদ্য প্রাতিক্ল্যং ব্যাম স্পাদি-রূপি নৈব করোতীতি ভাবং॥

সম্মলাভাব্পক্তাভেনে গুণকীর্ত্তনমিতি প্রথমং পঞ্চিবিং সামাহ শাদনীয়েতি গুণকীর্ত্তনং ভোলেতি সম্মান্ত ভিনিমিত্ত-তাহাকে সম্মোধিয়া বলিলেদ আরে কংস ! আরে অবুধ ! (মূর্থ) তুই যাহাকে বহন করিতেছিস্ ইহার অফীন গার্ত্তার হস্তা হইবেক ॥ ২৩ ॥

এই কথা শুনিবামাত্র ভোজদিগের কুলদূষণ সেই খল পাপিষ্ঠ কংস তৎক্ষণাৎ ভগিনীর প্রাণ বধার্থ উদ্যত হইল এবং খঙ্গাহত হইয়া দেবকীর কেশবদ্ধে গ্রহণ করিল ॥ ২৪॥

মহতিাগ বস্থদেব আপনার জন্ম কালীন দেবতাদের হর্ষহেতু ভূরি ভূরি ফুল্ফুভির শব্দেই জন্মিয়া ছিলেন আমা হইতে ভগবানের অবতার হইবেক তাহাতেই ইচ্নার প্রতিকার সম্ভবিবে অতএব ঐ श्लोचनीय्रश्चनः भूदेवर्षनान् ट्लाक्ष्यमञ्जदः। म कथः छितनीः हन्ताः खिय्रम्बाह পর্বাণি ॥ ২৫॥ মৃত্যুর্জন্মবতাং বীর দেহেন সহ জায়তে। অদ্য বান্ধশতান্তে বা মৃত্যুহর্ব প্রাণিনাং গ্রুবঃ॥ ২৬॥

ञीधत्रश्वामी।

সম্ভবিষ্যতীতি পরিসাম্বয়ন্ স্বত্যা রূপাবিষয়ম্বেনোপপত্তিভিশ্চ সামমার্গেণ সম্বোধয়ন্ ॥ ২৫ ॥

মরণভ্যেন হন্মীতি চেৎ তথাপি মরণস্যাপরিহরণীয়ন্বাৎ দেহান্তরক্তচ অবগ্রস্তাবিদ্বাৎ তত্ত্রাপিচ ভোগ প্রেমাম্পদন্তাদীনাম-বিশেষাৎ তদ্ভয়েন পাপাচরণমযুক্তমিত্যভিপ্রেত্যাহ মৃত্রুর্জন্মবতামিত্যাদি। দেহেন সহেতি বিধানা লগাটে লিখিতদাং ইতি তথাপি কাল বিলম্বার্থং হন্মীতি চেত্তত্তাহ অন্য বেতি অবশ্রস্তাবিনি মরণে বিলম্মাত্রায় পাপাচরণমযুক্তমিতি ভাব: ॥ ২৬॥

বৈষ্ণবতোষণী।

হত্তং নৈবাহতীত্যর্থ:। অন্তথা শৌর্যাশসোহানি:। তত্র শাবনীয়েতি গুণকীর্ত্তনং। ভোজেতি সম্বন্ধ:। ভগিনীমিত্যভেদ:। কথং হত্যাদিতি স্ত্রীবধনিবৃত্তা যশোলাভ:। উদ্বাহেতি সন্ততিবৃদ্ধোপকার:। শ্লেষেণ শ্রৈরে শাবনীয়া: তেভ্যো গুণো গৌণ: নিক্ট ইত্যর্থ:। যত্ত্ব ভোজা অপি ভদ্রা: কিন্তু তেম্ব্যেটবকাকী পাপিষ্ঠ ইতি কিম্বদন্ত্যা তেমাং যশস্বর:। স কথং ভগিনীং তন্মাত্রং হত্যাৎ। অপিতৃ সর্ক্যিপি স্বকূলং হত্যাদেবেত্যর্থ:॥ ২৫॥

যুক্তিভি: বট্লোক্যা প্রবোধন্ন আদৌ মৃত্যোরপরিহার্যান্থমাহ মৃত্যুরিতি। তথাচোক্তং। জাতদাহি ধ্বনো মৃত্যু ধ্বং জন্ম মৃত্যাচ ইত্যাদি। হে বীরেতি প্রোৎসাহন সন্ধোধনং। শ্লেবেণ অত্রতু বীরন্ধং নাস্তীত্যর্থ:। যদ। যুদ্ধমাত্রে সমর্থ: নতু বিচারাদাবিতি। কথং দেহেন দহ জান্নত ইতি জ্ঞান্তে। তত্রাহ অদ্যবেতি অবশ্রুং যৎ কার্য্যোৎপাদকং যং তত্ত্ তদস্তর্ভূ ত্মেবেত্যর্থ:। বা শঙ্কাজ্যাং পিক্ষোর্দ্ বোরারিপ প্রাধান্তঃ বোধাতে। বৈ এতং প্রসিদ্ধান্তেত্যুথ:॥ ২৬॥

শ্রীবিশ্বনাপচক্রবর্তী।

ভেদঃ। স্বংস্ক্ জননা অপি দ্বিষা অবধেন ধার্মিকত্ব যশোলাভ: মম স্বভার্যা প্রাপ্তা পরোপকার: দ্বিরং তত্রাপি ভগিনীং তত্রা-পুষোহপর্কাণি তত্রাপি ভবান্ মহাযশস্বীতি হননে ঐহিকং ছর্ষশং পারত্রিকং নরকঞেতি দৃষ্টাদৃষ্টভয়লক্ষণোদ্বিধা ভেদশচ দর্শিতঃ। বাস্তবার্থস্থ বিপরীত লক্ষণয়া। যথা প্লাঘনীয়েব্ মধ্যে গুণঃ ন্নঃ। ভোকাঃ কলহবদ্বেন প্রেসিদ্ধা স্তেবাং যশঃ কলহাধিক্যং স কথ্যেকাং ভগিনীং হন্যাৎ অপিতৃ সর্ক্ষেব কুলং॥ ২৫॥

তদপ্যনিবৃত্তং তং যুক্তা প্রবোধমন্ ভো রাজন্ মৃত্যুভ্রেনেমাং হংসি চেং স মৃত্যুরপরিহার্যা এবেত্যাহ মৃত্যুরিতি বস্তুত্তাবজ্জী-বানাং জন্মমৃত্যু নৈব জঃ। তদপি দেহেন ছ্লদেহ সম্বন্ধেনৈব হেতুনা জন্মবতাং দ প্রসিদ্ধোহন্দপ্রমেব মৃত্যুর্জারতে। কৃদা আদ্য বা অন্ধণতান্তে বা। বা শন্ধ: ভ্যাং দর্কবিধ কালনিশ্চয়াভাবে অন্ধ শত্মধ্যে বেত্যুর্থ:। তত্র প্রমাণমাহ মৃত্যুব্ব ইতি। জাত্সাহি ধ্বো মৃত্যুর্জবং জন্মমৃত্যুত্ত। তত্মাদপরিহার্ব্যেহর্থেন সং শোচিত্মহ্সীতি শাস্ত্রং আরম্ভি হে বীরেতি স্বং তু তত্মাদ্বিভেতুং নৈবাহ্সীতি ভাবং॥ ২৬॥

নির্ম জ্বকে ঐরপ গর্হিত কর্মে উদ্যত দেখিয়া স্তুতি এবং রূপাস্পদত্ব হেতু যুক্তি দারা সাস্থনা করত কহিলেন, অহে বার! ভূমি ভোজবংশের যশক্ষর, শ্রগণ তোমার গুণের শ্লাঘা করিয়া থাকে, ভূমি কি প্রকারে অবলা ভগিনীকে উদাহ পর্বে বধ ক্ষরিবে ? ॥ ২৫॥

হে বীর ! তুমি কি মরণ ভয়ে ইহার প্রাণবধ করিতে উদ্যত হইতেছ ? আমার কথা শুন, জন্ম-বিশিষ্ট ব্যক্তিদিণের দেহের সঙ্কেই মৃত্যু জন্মিয়া থাকে, কারণ, বিধাতা তাহা লগাটে লিখিয়া দেন, আদ্য হউক বা শত বংসর পরেই হউক, প্রাণিদের মৃত্যু নিশ্চরই হইবেক, অতএব মৃত্যু ভয়ে পাপাচ-রণ মৃক্ত হয় না, তাৎপর্যা এই যে অবশ্যস্তাবি মরণে বিলয়মাত্রার্থ পাপ করা বুক্ত নহে॥ ২৬॥ দেহে পঞ্জমাপন্নে দেহী কর্মান্ত্রগোহবশঃ। দেহান্তরমন্ত্রপাপ্য প্রাক্তনং ত্যজ্জতে বপুঃ ১২৭॥ ব্রজং ন্তিষ্ঠন্ পদৈকেন যথৈবৈকেন গছতে। যথা তৃণজ্জোতিকবং দেহী কর্মগতিং গতঃ॥ ২৮॥ ব্যথা পশ্যতি দেহনীদৃশং মনোর থেনাভিনিবি ফচেতনঃ।

প্রীধরস্বামী।

কিঞ্চ অন্মিন্ দেহে গতেহণি দদি দেহাস্তরং ন স্যাৎ তদা যুজ্যেত পাপেনাপি তৎপালনং নতু তদতীত্যাহ দেহে পঞ্জমাপত্র ইতি আপত্মপ্রায়ে কর্মবশাদয়ত্বত এব প্রথমং দেহান্তরং প্রাপ্য পশ্চাৎ পূর্কং বপুত্যজতি ॥ ২৭ ॥

অত্ত দৃষ্টাস্তঃ ব্রন্ধন্নিতি। একেন অগ্রতো নিহিতেন পদা তিষ্টন্ ভূবমবষ্টভা দেহং বিভ্রৎ পশ্চাদন্যেন পূর্ব্ধ প্রদেশাহুৎপাট্য পুরে। নিহিতেন পচ্ছতি যথা তদ্বৎ। অত্তচ স্বীকার পরিত্যাগৌ নাত্যস্ত ভিগ্ন বিষয়াবিতি স্পষ্টং দৃষ্টাস্তান্তরমাহ যথা ভূণজলোকৈতি সাহি ভূণাস্তরমবষ্টভা পূর্ব্ব ভূণং তাজতি এবং কর্ম্ম পথে বর্তমানো জীবোহপি॥ ২৮॥

দেহ বিষয়াবেব স্বীকারপরিত্যাগৌ দর্শয়িত্বং দৃষ্টাস্তান্তরমাহ স্বপ্ন ইতি দৃষ্টং রাজাদি দর্শনং শ্রুতং ইন্দ্রাদি শ্রুবণং তাভ্যামাহিতা

देवकवरणायगी।

নমু সত্যং মৃত্যুর্ভবিতৈব কিন্তু দেহাভাবেন ভোগাসিদ্ধা কঞ্চিৎকালং ভোগার্থং দেহ রক্ষা যুক্তৈব তত্রাহ দেহ ইতি পঞ্চদমিতি পঞ্চভূতৈরারক্বত্বেন কদাচি বিক্রেদাপত্তিক ঘটতৈবেতি ভাবঃ। দেহীতি দেহান্তিরত্বেন তক্ত নাশো নিরক্তা দেহান্তর প্রাপ্তের্বিত ভাবঃ বিক্রেদায় কর্মান্ত্র্য ইতি কর্ম্মণামবশ্রভোগ্যত্বাৎ। নচ তত্র প্রয়াসোহক্ষীত্যাহ অবশঃ কর্ম্মবশাৎ স্বত্তএব তৎসিক্ষেরিতি ভাবঃ অমু ত্যজত ইত্যবয়ঃ। আত্মনে পদমার্বং॥ ২৭॥

দেহীতি নিতাবোণে মত্বৰ্ণীর: । জলুকেতি ষঠত্বরমধ্যং পাঠোবছত্ত ॥ ২৮ ॥
স্থপ্ন ইতি তৈরবধারিতং তত্ত দর্শয়িতৃং স্বাহভাবেন সাধ্য়িতৃমিতার্থ:। হি এব তদেব এবং দেহাদাত্মনো ভিন্নতং যোজিত

শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

দেহপ্রাপ্তি ত্যাগাবের জীবস্য জন্মমৃত্য তৌ ত্বাবশ্যকাবেবেত্যাহ দেহে পঞ্চত্বং মৃত্যুং আগরে আপরপ্রায়ে দেহান্তরং প্রাণ্য অন্থ-পশ্চাৎ প্রাক্তনং বপুস্তাজতি নচ বিষয় ভোগসাধনমেব দেহো মে নজ্জাতীতি বিষীদিত্মহ সীত্যাহ কর্মান্ত্র্য ইতি যদি তব স্ক্র্যভোগাদৃষ্টমন্তি তহি তবৈত্ব প্রাপ্তবেষ্ট কর্মান্ত্র্য কর্মান্ত্র্য ইতি যদি তব স্ক্র্যভোগাদৃষ্ট্রমন্তি তহি তবৈত্ব প্রাপ্তবেষ্ট কর্মান্ত্র্য নিক্র্যভাগিকার কর্মান্ত্র্য তি ক্রান্ত্র্য বিষয়ে বিভিন্ন ক্রেন্ত্র ক্রেন্ত্র ক্রিক্তি দোতিতং ॥ ২৭ ॥

উত্তরদেহ প্রাপ্তানস্তরমেব পূর্বদেহত্যাগে দৃষ্টাস্তঃ। ব্রজন্ গস্তা পুরুষঃ যথা একেনাগ্রতো নিহিতেন পদা উত্তরপ্রদেশে তিষ্ঠন্নেব পূর্বপ্রদেশাহংপাট্য পুরোনিহিতেনৈকেন গছেতি নতু যুগপদ্যভ্যামেব পদ্তাং পুর্বপ্রদেশং পরিত্যক্তার উত্তরং প্রদেশং গছেতীত্যর্থঃ। অত্র প্রাপ্তিভ্যাগৌ বস্তুতঃ পৃথিব্যা একস্যা এবেত্যপরিত্যান্ দৃষ্টাস্তাস্তরমাহ যথা তৃণজলৌকেতি । সাহি তৃণাম্তরমবষ্টভাবে পূর্বং তৃণং ত্যজতি জনুক্তি যদ্ভাররমবাহিশি পাঠো জ্বেয়ঃ॥ ২৮॥

জীবতাপি দেহে প্রতিদিনং দেহপ্রাপ্তিত্যাগাবমূভবেন দর্শন্তি। স্বপ্নে যথা ঈদৃশং জাগ্রন্দেহ তুল্যং দেহং পশ্যতি। স্বপ্নং বিনাপি

অপিচ এই দেহ গত হইলে যদি পুনরায় দেহান্তর না হয়, তাহা হইলেও বা পাপ করিয়া দেহের পালন করা উচিত হয়, দেহান্তর প্রাপ্তির অসম্ভাবনামাত্রও নাই, এই দেহপঞ্জ প্রাপ্ত হইবামাত্র দেহী স্থীয় কর্ম বশতঃ অবশ হইয়া অুত্রে দেহান্তর প্রাপ্ত হয় পরে তাহার পূর্ব্ব দেহ ত্যাগ হয়॥ ২৭॥

হে বীর! এই বিষয়ে দৃষ্টান্ত দেখ যেমন গমনকারী পুরুষ অত্যে নিহিত এক পদে ভূমি আপ্রর পূর্বক দেহ ধারণ করিয়া পরে অন্য পদকে পূর্ব স্থান হইতে উত্তোলন পুরঃসর সম্মুখে নিহত করিয়া গমন করে, আর যেমন ত্ণজলোকা ত্ণান্তর অবস্থান করিয়া পশ্চাহ পূর্বক তৃণ পরিত্যাপ করে, কর্ম পথে বর্তমান জীবও দেই রূপে দেহান্তর প্রাপ্ত হইয়া থাকে ॥ ২৮॥

হে বীর। জাগ্রদ্দায় রাজাদি দর্শন ও ইস্তাদি শ্রেবণ জন্য সংস্কার মনোমধ্যে সাহিত হইটো

দৃষ্ট শ্রুতাভ্যাং মনসাত্ত ভিষ্করন্ প্রাণাতে তৎ কিম্পিছপক্ষতিঃ ॥ ২৯ ॥
যতো যতো ধাবতি দৈবচোদিতং মনো বিকারাত্মকমাপ পঞ্জ।
গুণেরু মায়ারচিতেরু দেহুদো প্রাণানানঃ সহ তেন জায়তে ॥ ৩০॥

औधत्रश्वामी।

সংস্কারেণ মনসা তদেবাছচিন্ত্রয়ন্ ঈদৃশং স্বাঞ্জন্ ইশ্তসদৃশং দেহং রাজাদি রূপং কিমপি অনিরুক্তং পশুতি কণান্তরেচ তদেবাহমিতি প্রপদ্যতে মন্ততে ততণ্ট জাগ্রদ্ধোদপগতস্থৃতি র্ভবিতি প্রধান নথেতি। জাগ্রত্যেরং দর্শমিতৃং দৃষ্টান্তান্তরমাহ মনোরথেনেতি অত্যাপি দৃষ্ট শ্রতাভ্যামিতি সর্বং বোজাং তথাচ বক্ষাতি জন্তোর্বৈ ক্যাচিদ্ধেতোর্গতি রত্যন্তবিশ্বতিঃ। জন্মত্বাশ্বতরা প্ংসং সর্বভাবেন ভ্রিদ। বিষয়স্বীরুতিং প্রান্ত র্পা স্বপ্ন মনোরথং। স্বপ্নং মনোরথঞ্চেছ্ন্ প্রাক্তনাং ন স্বরত্যসাবিত্যাদি তহদত্রাপি কর্মবশাৎ দেহান্তরং প্রাণ্য প্রাক্তনাং বপু স্তাক্তীতি॥ ২৯॥

নম্থ বিচিত্র দেহস্য হেত্নাং কর্মণাং ক্বতথাৎ দেহবিশেষপ্রাপ্তে কিং কারণমিত্যত আহ যতো যত ইতি। দেহস্য পঞ্চত্ব-সময়ে পঞ্চস্থ গুণেষু ভূতেষু মায়ারচিতেষু মায়য়। নানা দেহ রূপেণ রচিতেষু মায়ে দৈবেন ফলাভিমুখেন কর্মণা চোদিতং নানা বিকারাফ্রকং মনো বং যং দেহং দেবতির্য্যাদি রূপং প্রতি ধাবতি ধাবত সৎ যালক্রপ মাপ অভিনিবেশেন প্রাপ্তং তত্র তত্র অসৌ দেহী জারতে। নম্থ মনসং কর্ম্বাং তদের জায়তাং নত্বকর্তা আছা ইত্যত আহ প্রপদ্যমান ইতি তদেবাহমিতি প্রপদ্যমান ত্তেন সহ জায়ত ইতি॥ ৩০॥

বৈষ্ণবতোষণী।

মপি। স্বপ্নে মনোরণেচ দেহাভিমান পরিত্যাগেন দেহাস্তরাভিনিবেশেনাত্মনো দেহাৎ পৃথক্তামূভবাৎ এবং কর্মবশাদেহাস্তরং প্রাটপ্যব প্রাক্তনং দেহং তাজতীতি দেহপ্রাবশ্বকতা দৃঢ়ীক্বতা॥ ২৯॥

নম্থ সতাং ভবিতা দেহমাত্রং কিন্তু পুনারাজদেহোছতিছ্বট স্তত্তাহ যতে। যত ইতি দৈবেনটোদিতমিতি তদর্থং প্রামান্তরং নিরস্তং অসৌ অবিবেকী দেহাদের্ভিলোইপীতি বা প্রপদ্যমানঃ মহুমানঃ অতঃ কর্মণ এব প্রবল্বাৎ প্রীদেবকাা জন্মান্তর পুরাদ্যপ্যাকাশবাণ্যাদিষ্টো মৃত্যু স্বানিবার্য্য এবেতি মহাহার্যতিপ্রাপক্ষীদৃশং পাপকর্ম ত্যক্ত্ব। তাদৃশ নিজপ্রাচীন কর্ম দন্দেহে সতি সম্প্রতাপি পুনরিতোছিপি বিভৃতিমন্বপৃঃ প্রাপ্তরে মার্কণ্ডেয়বদস্য মৃত্যুরপি কিন্তংকালনিবারণায় বা সংকর্মের ক্রিয়তামিতি ভাবঃ। জন্মান্তরেতাত্ত্র শ্রীহরিবংশাক্ত বড়গের্ড সাদৃশ্যং স্ক্রেয়ং॥ ৩০॥

बी विश्वनाथहक्कवर्खी।

দর্শরতি মনোরথেন মনোরথেচেত্যর্থ:। কঃ পশ্যতীত্যত আহ অভিনিবিষ্টা অভিনিবেশবতী চেতনা যস্য স:। যশ্বা মনোরথেন বিষয়বাঞ্রা চিত্তাভিনিবেশাধিক্যবান্ পুরুষ: স্বপ্নে ঈদৃশং দেহং পশ্যতি অভিনিবেশ প্রকারমাহ দৃষ্টং রাজাদি শ্রুতং ইক্রাদি তাভ্যামভ্যন্তাভ্যাং জনিত সংস্কারবতা মনসা অহচিত্তয়ন্ তৎকিমপি রাজাদিরপমের প্রপদ্যতে রাজাত্য়চিত বিষয়ভোগবন্দেহ-মান্ধানং প্শ্যতীত্যর্থ:। অপশ্বতিঃ বাস্তব দেহ শ্বরণশূন্য:॥২১॥

নহ দৃষ্টঃ প্রতশ্চ বিষয়ো দৈবপ্রেরিতেন মনসা স্মর্থ্যমাণস্থান্মনস এবাস্ত। ততো ভিল্পেনাস্থানা স্ব ভোগার্থং স্কর্থং লভ্যতাং তত্তাহ যত ইতি পঞ্চস্থ বিষয়ের মধ্যে যতো যতো যত্তা যত্তা বিকারাস্থাকং মনো ধাবতি ধাবচ্চ সং আপতস্তঃ বিষয়মেব প্রাপ্তঃ ভবতি। অসৌ দেহী জীবঃ তেন বিষয়াভিনিবিষ্টেন মনসা সহ সাহিত্যাদ্ধেতোত্তঃ বিষয়ং প্রপদ্যমানো জারতে ভূগানো ভবতীত্যর্থ: ॥ ৩ • ॥

নিবিষ্ট চিত্ত হইয়া সেই মনের দারা ঐ দৃষ্ট শ্রুত বিষয় চিন্তা করিতে করিতে লোকে যজ্ঞপ জাগ্র-দশায় দৃষ্ট ও শ্রুত বিষয়ের সদৃশ অনির্বাচনীয় রাজাদি রূপ স্বপ্নে ও মনোরথ যোগে দর্শন করে তাহাতে জাগ্রদেহ হইতে তাহার স্মৃতি অপগত হইয়া যায়, সেই রূপ জীব কর্মা বশতঃ দেহান্তর প্রাপ্ত হইয়া প্রাক্তন শরীর পরিত্যাগ করে॥ ২৯॥

হে বীর! দেহের পঞ্চ সময়ে নানা বিকারার্ত্ত মনঃ ফলাভিমুখ কর্মকর্তৃক প্রেরিত হইয়া
মায়া বারা নানা দেহ রূপে রচিত পঞ্চুতের মধ্যে যে যে দেহ অর্থাৎ দেব অথবা তির্যুক্ ইত্যাদির
প্রতি ধাবমান হওত অভিনিষেশ বারা যে যে রূপ প্রাপ্ত হয়, সেই সেই রূপেই দেহী ক্লমগ্রহণ
করিয়া থাকে। যদিও ঐ বিষয়ে মনই কর্তা তথাচ আমিই সেই মনঃ এইরূপ প্রতিপন্ন হওয়াতে
ক্লীবই মনের সহিত উৎপন্ন হয়॥ ৩০॥

জ্যোতির্ধ থৈবোদকপার্থিবেশ্বদঃ সমীরবেগাসুগতং বিভাব্যতে। এবং স্বমায়ারচিতেশ্বসো পুমান্ গুণেয়ু রাগাসুগতো বিমৃহতি ॥ ৩১ ॥ তত্মার কন্সচিদ্যোহমাচরেৎ স তথাবিধঃ। আত্মনঃ কৈমমন্বিচ্ছন্ ড্যোগ্ধু বৈর্ব পরতো ভয়ং ॥৩২॥

গ্রীধরস্বামী।

নমু সত্যং ভবিষ্যত্যের কিমপি দেহমাত্রং তথাপ্যস্যাতিপ্রিয়স্য রাজদেহস্য রক্ষণার্থমকার্য্যমপি ক্রিয়ত ইতি চেন্তত্রাহ ক্যোতি-রিতি অদশ্চন্দ্রাদি স্ব্যোতিঃ উদক যুক্তেরু পার্থিবেরু ঘটাদিরু যথা উদকেরু পার্থিবেরু তৈল ম্বতাদিরুর্চ প্রতিবিশ্বদেন স্থিতঃ সমীরস্য বায়ো র্বেগমমূগতং কম্পাদি যুক্তং প্রতীয়তে যথা এবং স্বাবিদ্যা রচিতেরু দেহেরু অসে রাগেণামূগতঃ প্রবিষ্টো মুহ্ছতি অভিনিবেশং প্রাপ্রোতি। অয়ং ভাবঃ আত্মনস্তাবদেহাদ্যধ্যাদেন জন্ম উক্তং সহ তেন জায়ত ইতি তত্ত্বান্যোন্য ধর্মাধ্যাসাৎ যথা দেহাদি ধর্মাঃ কার্শ্যাদয় আত্মনি প্রতীয়স্তে এবমাম্বধর্মাঃ প্রেমাম্পদস্বাদয়েছিপি দেহাদিশ্বিতি রাজ শৃকর দেহয়ো বিশেষাভাবাদ্ ব্যর্থো মৃত্যু-প্রতীকার ইতি.॥ ৩১ ॥

এবমুক্তং সামোপায়মুপসংহরন্ভেদমাহ তত্মাদিতি। পরত ইতি জহুমাণাৎ তৎসম্বন্ধিন ক যমাদিপি ইহামুত্রচ ভয়মিতি ভেদো

বৈষ্ণবতোষণী।

কিঞ্চ দেহাভিনিবেশেহয়মবিদ্যাময় এবেত্যাহ জ্যোতিরিতি। আদঃ নিকম্পত্বেন বস্থিতমপি। মায়া ভূগবন্মায়া তদ্মৈব রচি-তেরু॥ ৩১॥

নমু যতো যত ইত্যত্রাভিপ্রেতং তাদৃশং কর্ম ছফরং তণা তাদৃশং জ্ঞানঞ্চেরতোহন্তি তর্হি কথং ভবানস্যা দেহরক্ষার্থং প্রবত্ততে তাদৃশাস্থামূভব জ্ঞানাভাবাদিতি চেৎ মমাপি তদভাবাং স্বদেহ রক্ষার্থেহিয়ং প্রবদ্ধা যুক্ত এবেত্যাশক্ষাহ তত্মাদিতি। যত্মাং সংক্রির প্রেয়ং সাধনং যত্মাদেহাবেশোহপ্যাবিদ্যক এব তত্মাৎ স তথাবিধং পূর্বোক্তপ্রকারান্তয়োঃ কৃত্ত্যাগো কর্ত্তমুশক বৃরপি তদ্বিপরীতং পরজাহন্ত ন কুর্যাং। কিমর্থং আন্ধানঃ কেমমনিচ্ছন্ ইহামূত্রচান্ধনং কেমার্থমিত্যর্থঃ। যতঃ ড্রোয়্রতি এবং দৃষ্টাদৃষ্ট ভয় প্রদর্শনেন দ্বিবিধা ভেদঃ। অত্র প্রীকৃষ্ণ কথারন্তে আন্ধান্তানান্য বৈরাগ্যাকার্য নিবৃত্তি কথনানি বহিম্পানামন্যাবেশ নিবা-

ত্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

তত্ত্বদ মনঃ সহিত্যা জীবদা মনো ধর্মপ্রাপ্তিং সদৃষ্টাস্তমাহ। জ্যোতিশ্বন্ধ্যাদিকিরণঃ উদকেষ্ পার্থিবের্ তৈলম্বতাদিষ্ট প্রতিবিষক্ষপেণ স্থিতং সমীরবেগাস্থাতং সং বিভাবতে বিবিধং কম্পবশাদীর্ঘহ্রাদিকপং ভাবতে ভাবিতং ভবতি এবমেব সে স্থীরাদ্ধ তে মায়া রচিতাক্ষেতি স্বমায়ারচিতান্তের্ গুণের্ দেহের্ পুমান্ জীবঃ রাগাস্থাতঃ রাগো বিষয়ভোগেচ্ছালক্ষণো মনো ধর্ম স্তম্পতা বিমৃত্তি তদীয় বিষয়ভোগেচ্ছাব্যাপ্যো তবতি তেন স্বমণি তথাভূত এব জীবঃ স্বীয় বিষয়স্থভোগদিদ্ধার্থং বনেতাং হংসি তদ্বার্থমেব দেহ নাম্পেহণি স্বদীয় ভাতাদৃষ্ট্যানশ্বর্থান্দেহাস্তর্গ্য স্থলভন্নাচ তত্রৈব তে ভোগঃ দেংস্যতি স্তীব্ধের্ প্রভাত দেহাস্তরে ছঃখমেব ভোক্তব্যং স্যাৎ কিঞ্চ কর্মণঃ প্রবলম্বাদাকাশবাণ্য্নিটো মৃত্যুদেবকী ক্ষান্তর প্রাদপ্যবশ্যংভাবীত্যতোবরং মৃত্যু প্রতীকারার্থং মার্কণ্ডেরেনের সংক্রেম্ব ক্রিয়তামিতি দ্যোতিতং॥ ৩১ ॥

স তথাবিধঃ অবিদ্যার্তঃ দ্রোধুর্দ্রোহকর্তুঃ পুংদঃ পরতো যমাদিতো যন্ত্রান্তরং তন্ত্রাদিতি ভেদো দর্শিতঃ॥ ৩২ ॥

যদি বল পরে কোন্ প্রকার দেই ইইবে তাহার নিশ্চয় নাই এক্ষণে রাজদেই রক্ষা করা উচিত, তদর্থ কার্য্য করাতে দোষ কি ? তাহাতে বক্তব্য এই যে চন্দ্রাদি জ্যোতিঃ যদ্রপ জলে এবং তৈল মৃতাদি-পার্থিব পদার্থে প্রতিবিষ্মিত ইইলে বায়ুবেগের অনুগত ইইয়া কম্পাদি মুক্ত বলিয়া প্রতীত হয়, সেই রূপ এই জীব অবিদ্যা রচিত দেহে রাগ বশতঃ প্রবিষ্ট ইইয়া অভিনিবেশ প্রাপ্ত হয়। ফলতঃ দেহা-ধ্যাদ হেতুই আত্মার জন্ম কথিত ইইয়াছে অন্যান্য ধর্মের অধ্যাদ হেতুক বেমন আত্মাতে দেহ ধর্ম কৃশহাদি প্রতীয়মান ইয় রপ আত্মধর্ম প্রেমাস্পদ্যাদিও দেহাদিতে প্রতীয়মান ইয়য়া থাকে, য়তরাং রাজদেহ ও শুকর দেহ ছই সমান, তাহার য়ত্য প্রতীকার চেকী অপ্রয়েজন ॥ ৩১ ॥

অতএব যে ব্যক্তি আপনার কল্যাণ ইচ্ছা করৈ তাহার পক্ষে কাহারও জোহাচরণ কর্ত্তব্য নহে,

এষা তবাসুজা বালা কৃপণা পুত্রিকোপমা। হস্তং নার্হদি কল্যাণীমিমাং ছং দীনবৎসলঃ॥ ৩০॥ প্রীশুক উবাচ॥

এবং স সামভির্ভেদৈশ্চোদ্যমানোহপি দারুণঃ। ন ন্যবর্ত্ত কৌরব্য পুরুষাদানসুত্রতঃ॥ ৩৪॥ নির্বান্ধং তস্ত্র তং জ্ঞাত্বা বিচিন্ত্যানকছুন্দুভিঃ। প্রাপ্তং কালং প্রতিব্যোচুমিদং তত্রাশ্বপদ্যত॥ ৩৫

দৰ্শিত: "৷৷ ৩২ ৷৷

পুন: সামাহ এবেতি পুত্রিকোপমা দারুম্মী বা অচেতন প্রায়া। ৩৩।

চোদ্যমান ইত্যুপদিশ্রমান: বয়ং দারুণ: পুনশ্চ পুরুষাদান্ দৈত্যান্ অরুস্ত: ॥ ৩৪ ॥

আনকল্লুভিরিতি নহাভাগ ইতাত্রোক্তাভিপ্রায়ং প্রতিব্যোচ্ংু প্রতিকর্তু মিত্যর্থঃ। ইদং বক্ষ্যমাণং অপত্যার্পণং অয়পদ্যত জাতবান ॥ ৩৫ ॥

বৈষ্ণবতোষণী।

त्रवारमाभिष्टिनी जि भाख श्राद्याक नश्च रक्ष्यः। এवः मर्ख्य ॥ ०२ ॥

অত্যত্তা সংস্কৃতিসামৈবোচিতমিতি পুন ন্তদেবাহ এবেতি নবোঢ়া ক্পণা ভয়েন রোদনাদিপরেত্যর্থ: দীনস্বভাবা বা পুত্রি-কোপমা পুত্রীতুলোতি সেহং জনরতি। যদা পুত্রিলিক। সদৃশী অচেতনা ভদাভজানভিজ্ঞেত্যর্থ:। ইমামেনাং অতএব কল্যাণীং নিরপরাধামিতার্থ:। বিশেষণানামেষামূত্তরোন্তরং কল্যাণীত্বে শৈষ্ঠ্যমূত্য:। দীনবংসল ইতি শ্লেষেণ দীনং মৃতপ্রায়ং বংসমেব লাতি বিপ্রেভ্যো দদাতি। যদা দীনাদপি বংসমিপ লাতি গৃহ্ণাতীতি। ইমাং স্বংহন্তং নার্হসি কাকা কিন্তর্যক্তেবেতার্থ ইতি নিন্দেব॥ ৩৩॥

পুরুষাদা রাক্ষ্যা অঘাদয় ভানতুরতঃ তেবাং পরিতঃ স্থিতানাং মতমতুস্ত ইত্যর্থঃ। ভক্ষকেরু সামাদীনাং বৈষ্ণ্যং যুক্তমে-বেতি ভাবঃ। সামাদিভিরপাত্রতে বিশ্ববেদ সংখাধয়তি হে কৌরব্যেতি ॥ ৩৪ ॥

ইদং বিচিন্ত্যেদমন্বপদ্যতেত্যন্ত্রয়:। ভূয়ন্তং হননার্থং নির্ব্বন্ধং আগ্রহং জ্ঞান্তা বৃদ্ধা বিচিন্ত্য বিচার্য্য কালং সময়ং মৃত্যুং বা প্রতিব্যাচ্থুং বঞ্চায়ত্ত্মিত্যর্থঃ। তত্ত্ব তদানীং সদ্যএবেত্যর্থঃ। অন্তপদ্যত উপায়ন্ত্রেন মনসা নিশ্চিতবানিত্যর্থঃ॥ ৩৫॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

নিৰ্ব্বন্ধনিতি। অৰপদ্যত উপায়ত্বেন মনসা বিচারিতবানিতার্থ:॥ ৩৫ ॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

তদপ্যনির্ত্তং তমত্য প্রতিভিরিতি ন্যায়েন পুনঃ সামাহ এষেতি। পুলিকোপমা অনুকম্পনীয়পুত্রীতৃল্যা পুত্রলিকাবস্তবে-নাচেতনা বা বাস্তবার্থেতৃ শিরশালনে নঞ্দীনাদতি দরিভাদপি বংসমপি রাজকরত্বেন লাসি গৃহদ্সীত্যর্থ:॥ ৩০ ॥

(ठामामान उपिमामानः। श्रुक्वामान् देमञान्॥ ७८ ॥

আলকছলুভিরিতি মজ্জন্মনি দেবৈ ছ'লুভিবাৰনাদিদমমঙ্গলং ন মে ভবিষ্যতীতি নিশ্চিন্নন্ প্রতিব্যোদুং যাপরিছং ইদং অৱপদ্যত প্রামমর্শ ॥ ৩৫ ॥

কারণ দ্রোহ করিলে তাহা হইতে এবং তৎ সম্পর্কীয় লোক হইতে ভয় এবং পরকালে যম হইতে যম্মণার সম্ভাবনা আছে ॥ ৩২ ॥

হে বীর! তোমার অমুদ্রা এই অবলা অতি দীনা, দারুমুয়ী পুত্রলিকার স্থায় অচেতনপ্রায়া, তুমি দীনবংসল এই নিরপরাধার হত্যা করা তোমার যোগ্য হয় না॥ ৩৩॥

তকদেব কহিলেন ছে কোরব্য ! কংস একে অতি নির্দয় তাহাতে আবার দৈত্যদিগের অনুগামী হইয়াছিল অতএব যদিও ঐ প্রকার সাম ও ভেদ বচন দারা উপদিষ্ট হইল তথাপি ভগিনীহত্যার উদ্যম হইতে নিয়ত হইল না ॥ ৩৪॥

তাহার ঐ বধ বিষয়ে আগ্রহ অবগত হইয়া বহুদেব উপায় চিন্তা করিতে লাগিলেন। ভাবিয়া দে সময়ের প্রতীকারার্থ একটা উপার দেখিতে পাইলেন ॥ ৩৫ ॥ . মূজুয়র্ श्क्रिण তো পোছো যাবৰ ক্ষি, বলোদরং। যদাদো ন নিবর্তেত নাপরাধোহন্তি দেছিনঃ ॥৩৬ প্রদায় মৃত্যুবর পুত্রান্ মোচয়ে রূপণামিমাং। স্থতা মে যদি জায়েরন্ মৃত্যুবরা ন ব্রিয়েত চেৎ।

গ্রিধরস্বাদী।

নত্ব ধলোহয়ং এতর **মজেতেত্যাশব্যাহ ব্**য়মেব মৃত্যুরিতি॥ ৩৬॥

তথাত্পেকা দোষণরিহারায় এবং করিষ্যামীত্যাহ প্রদায়েতি মৃত্যবে কংসায় নবিদমপি নৈব ন্যায়্মিত্যাশঙ্ক্ষাহ স্থতা ইতি অস্যাং যদি মে স্থতা জায়েরন্ তদা যদ্ভাবি তদ্ভবতু জীবিতন্ত তাবস্কবেদেব তদস্তরা যদ্যায়মেব মিয়েত তদা ন কিঞ্চিদন্যায়্ং যদিচ স্থতা ভবিষ্যস্তি ন চায়ং মিয়েত তদা মৎ পুত্রাদেবাস্য মরণং ইতি বিপর্যায়ো বা কিং ন স্যাৎ। নমু প্রৌচ্স্য কংসস্য তব বালকাৎ কথং মৃত্যুঃ স্যান্তবাহ গতিরিতি ধাতুঃ অস্যান্থামন্টমো গর্জোহন্তেত্যক্তবতঃ অত ইদানীমপত্যার্পণপ্রতিক্ষৈব মন্ত্রঃ। তথা সতি

বৈষ্ণবতোষণী।

নস্থ তত্র খলোহয়মিত্যাশস্থাগর্জঃ বিচারমেব দর্শয়তি মৃত্যুরিতি অপোহঃ প্রতিকার্যাঃ। বৃদ্ধি বলয়ের দর্ম উৎকর্ম তদবধি। পূর্বা বৃদ্ধিতৎ সামান্যং উত্তরা তদিশেষঃ। অসৌ মৃত্য়ঃ। অপরাধঃ উপেকা দৌষঃ। দেহিন ইতি দেহতন্ত্রস্য ততো হল্যত্রাশক্ষেঃ॥ ৩৬॥
নিশ্চয়মেব দর্শয়তি প্রদারেত্যদ্ধিন অষ্টমেত্ আতে লক্ক বল এব ভবিষ্যামি ইতি প্রান্ অষ্টমেতরানিতি তাৎপর্য্যং তান্ সর্বানিপি প্রদায় আত্যন্তিকদেয়দেন প্রতিশ্রতা। মৃত্যুবে ইতি তং প্রতি প্রদানেন সদ্যোমৃত্যু প্রাপ্তে স্তদ্ধিবক্ষয়া। ক্রপণামিতি তাৎকালিক তৎ কার্পণ্যদর্শনাসহিষ্কৃতায়াঃ প্রাবল্যং ব্যঞ্জয়তি। তত্রচ স্থানিখননলায়েন। মন্তিদমপীত্যাশক্ষাগর্ত্তং বিচারাস্তরং দর্শয়তি স্থতা ইতি সার্দ্ধেন তবৈবাকাশবাণ্যাং কুটিল কল্লিতত্ব মাশক্ষাহ স্থতা ইতি। তত্যাঃ সত্যত্তমাশক্ষাহ বিপ্র্যায় ইতি। বিপর্যায়াহিপি সম্ভবেদিত্যর্থঃ যত উপস্থিতোহপি মৃত্যুঃ শ্রীমার্কণ্ডেয়াজামিলসত্যবদাদীনাং নিবর্ত্ততে নির্ত্তাহপি কুশ নমৃত্বি হরিণ্যকশিপ্ প্রভৃতীনাং পুনরাপতেও। যতো ধাতুরীশ্বস্য গতিরিচ্ছা হ্রত্যয়া অনতিক্রমা হক্তের্মা বেতার্থঃ। অন্যতৈং

ক্রমসন্দর্ভঃ।

আকাশবাণ্যা: কুটিলকল্পিডমানস্ক্যাহ। স্থতা ইতি সত্যত্ত্বমাশস্ক্যাহ বিপৰ্য্যয় ইতি ॥ ৩৬ ॥

পূজরামাদ স্বত্যঞ্জাদিনা যতো যেভাত্বভয়মূখিতং তারতু যন্মান্তরমূখিতং ইতি গুঢ়োহভিপ্রায়:। বাক্যস্য সার: স্থিরত। তদ্বিং ॥ ৩৭ । ৩৮ । ৩৯ । ৪০ । ৪১ । ৪১ । ৪১ । ৪৪ । ৪৫ ।

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

অপোহ: প্রতিকার্য্য:। যাবান্ বৃদ্ধিবলয়োরুদয়ো যত্র তদ্যণা স্যাত্তথা অস্মাৎ কংসহস্তান্ত্যপ্রতীকারে মনত্ বলস্যোদয়ো বিফল এব বৃদ্ধেরুদয়ন্ত সফলো ভবিতু মহ তীতি ভাব:। অসৌ মৃত্য:॥ ৩৬॥

ততৈবং করিষ্যামীতি স্থপতমাহ মৃত্যবে কংসার নৰিদমণ্যস্থচিতমিত্যাশক্ষাহ স্থত। ইতি যদি ন জায়েরংগুদা ন কাপি চিস্তা যদি জায়েরয়ণ্চ মৃত্যু: কংস্তাবতা কালেনাপি ন প্রিয়েত তদা অষ্টিতং স্যাদেব দেবকীত্ সংস্প্রতি জীবেৎ যদিচ তাবতা কালেন কংসো প্রিয়তে তদা ন কাচিদপি চিস্তা বিপর্যায়োবেতি। ময়া তদানীমদৈ পুজে সমর্প্যমাণে সতি স পুত্র এব সদ্যঃ প্রবলীভূর কংসমিমং বধিষ্যতি বেত্যর্থ: । নমু প্রোচ্স্য কংসমি বংবাজিত বিত্যর্থ: । নমু প্রোচ্স্য কংসমি বংবাজিত বিত্যর্থ: । নমু প্রোচ্স্য কংসমি বংবাজিত বিত্তি । অস্যাস্থামন্ত্রমোগর্জ ইত্যুক্তবতো

প্রথমতঃ তাঁহার মনে হইল এব্যক্তি খল, আমার কথা মানিবে না, পরে আপনিই বিবেচনা করিলেন, যে পর্যান্ত বুদ্ধি বলের উদয় হয়, তাবৎ বুদ্ধিমান্ লোকের কর্ত্তব্য মৃত্যু নিবারণ করে, তাহাতে যদি নির্ত্তি না হয় তবে দেহির অপরাধ নাই ॥ ৩৬ ॥

অতএব মৃত্যুরপি এই কংসকে পুজ দিতে অঙ্গীকার করিয়া ইহার হস্ত হইতে আপাততঃ এই দীনা অবলাকে মোচন করি, পরে যধন আমার পুজ জন্মিবে সে সময় যাহা হয় হইবে, এখন ত জীলোকটা বাঁচুক। আমার পুজ জন্মিবার মধ্যে যদি ছরাআই মরিয়া যায় তাহা হইলে আমার এ কার্য্য অভায় হইবে না। আর যদি আমার পুজ হয়, এ না দরে, আমার পুজ হইতে ইহার মৃত্যু হইয়া বিপরীত হইবারই বা আশ্চর্য় কি ? যে হেতু "দেককীর অভ্যা গর্ভ ভোষার হস্তা হইবে"

বিপর্যায়ো বা কিং ন স্থাদগতি র্ধাতু তুরিতায়া। উপস্থিতো নিবর্ত্তে নির্ত্তঃ পুনরাপতেৎ ॥৩৭॥ অগ্নের্যথা দারু বিয়োগযোগয়ো রদৃষ্টতোহ্যন্ধনিমিত্তমন্তি।

এবং হি জ্বস্তোরপি ছব্রিভাব্যঃ শরীরদংযোগবিয়োগহেতুঃ ॥ ৩৮ ॥

এবং বিষ্যু তং পাপং যাবদাত্মনিদর্শনং। পূজ্য়ামাদ বৈ শৌরিব্ভ্যানপুরঃদরং ॥ ৩৯ ॥

श्रिश्तवामी।

উপস্থিতো মৃত্যুররং তাবল্লিবর্ত্তে নির্ত্তঃ পুনঃ কালান্তরে আপতেচেৎ নাপরাধো মমেতার্থঃ । অথবাদ্য মৎ পুদ্রাহুপস্থিতো মৃত্যু-রস্যা বধাদেখা নিবর্ত্তে স পুনরনৈন মল্লেণ উবেদেবেতি। বলা গতিধাতু ছুরত্যয়েত্যস্য প্রপঞ্চ উপস্থিত ইতি॥ ৩৭॥

প্রাণিনামদৃষ্টঞ ছবিতর্কামিতি সদৃষ্টান্তমাহ অধেরিতি। ঘনের বৃহ্মান্ প্রদহন্ বিহ্ন: সন্নিহিতানিপি বৃহ্মান্ পরিতাজ্য কণাচিদ্বর্বহানিপি দহতি প্রামে গৃহান্ বা এতস্য প্রাণাস্টব্যতিরেকেনান্যং কিঞ্জিরামকং নাতি বংগ এবং জ্ঞো জ্লম্মরণ্রোরপি হেত্- ছবিতাব্য: অচিস্তঃ ॥ ৩৮ ॥

যাবদাত্মনিদর্শনং স্বপ্রজ্ঞাবধি বিচার্য্য ॥ ৩৯ ॥

বৈঞ্চবভোষণী।

ত্র স্নোক্ষরনেকীকৃত্য ব্যাধ্যা। স্থতা ইত্যাদিকং মৃত্যুর্বেত্যাদিকঞ্চেষ্টরেব সম্বধ্যতে। কিছ্তুরং নঞা সহ তং বিনাচ বোল্লাতে। বাশব্দ্যোভ্যপক্রাহিষাং। তত্র নঞা বিনা স্থতা ইত্যাদিনা বোল্লিতং তেন সহ তু বিপর্যায় ইত্যাদিনা। অত্র বা শবং কটাক্ষ ইতি ক্রেয়ং। যদা স্থতা নে যদি জায়েরন্ মৃত্যুশ্চ ন দ্রিয়েত তদা বদ্ধার ত্তা যদি কায়েরন্ মৃত্যুশ্চ ন দ্রিয়েত তদা ন কিঞ্চিদন্যায়াং স্থতা যদি কায়েরন্ মৃত্যুশ্চ তং পূর্বাং কথঞ্চিদ্মিরেত তদাপ ন কিঞ্চিদিতি। স্থতা ইত্যাদি বথাস্থিত পক্ষেহিপি বিপর্যায়ো বা কিং ন স্যাদিতি সরলাদ্বিয়ং বোল্লনা। প্রদায় দক্ষা কদা তত্রাহ স্থতা ইতি ততশ্চ,বিপর্যায়ো বা কিং ন স্যাদিতি ॥ ৩৭ ॥

হি এব। এবমেব জন্তো: প্রাণিমাত্রস্যাপি। হেত্রদৃষ্টং ছর্বিভাব্য:। কেনাদৃষ্টেন কদ্য কদা কিং স্যাত্তত্তিরিত্মশক্যমিত্যর্থ: ইতি কর্মশক্তেরপি ছর্বিভিক্যতয়া মদালকাদপ্যস্য মৃত্যু: সম্ভবেদেবেতি ভাব:॥ ৩৮॥

ষাৰদিত্যহো তাবত্যপি সম্ভ্রমে এতাবতী প্রতিভেতি ভাব: পাপমপি বছ্লাদরপূর্ব্বকং পূজ্যামাস স্বত্যাদিনা সন্মানিতবান্॥ ৩৯॥

শ্ৰীবিশ্বনাপচক্রবর্তী।

ধাতু:। এবঞ্চ সতি উপস্থিত: কংসদ্য হস্তাদেবকীমৃত্যু নিবির্তেত। তথা মংকর্ত্ক পুত্রার্পণ প্রতিজ্ঞন্ন নিবৃত্তোহণি কংসদ্য মৃত্যু: পুনরাপতেৎ প্রাণ্ডো ভবেৎ॥ ৩৭॥

মচিন্তিত মেতলাসন্তবং। যতঃ প্রাণিনামণ্টং ছবিতর্কামিতি সদৃষ্টান্তমাহ। অপ্লেবনে বৃক্ষান্ প্রদাহতো দারুণো যৌ বিয়োগযোগী কদাচিৎ সন্নিহিতস্যাপি বিয়োগং কদাচিত্বিপ্রকৃষ্টস্যাপি যোগঃ তলোরদৃষ্টতোহনালেতি বৃক্ষাণাং ভংগাদৃষ্টমেব কারণমিত্যর্থঃ। এবমেব শরীরাণাং সংযোগ বিরোগরো র্জন্মমরণরো হেড্ ছু বিভাব্যোহবিচিন্তাঃ॥ ৩৮॥

্ষাৰৎ বৎ প্ৰমাণকং আত্মনা বুদ্ধা নিদৰ্শনং জ্ঞানং বত্ৰ তদ্বপা স্যান্তপা বিষ্য্য তং পাপং কংসং পূজ্যামাস বহিল্পটাব ॥ ৩১ ॥

এই আকাশবাণী স্পাই শুনা গেল, বিধাতার গতি অম্যথা হয় না, অতএব এক্ষণে অপত্য অর্পণ করিতে অঙ্গীকার করাই সৎপরামর্শ, এরূপ করিলে উপস্থিত মৃত্যু আপাততঃ নির্ভ হইবে, এখন নির্ভ হইয়া যদি কালাস্তরে পুনরায় আগত হয়, তাহাতে আমার অপরাধ নাই ॥ ৩৭ ॥

অধিকস্ত যেমন অগ্নির কাষ্ঠ সংযোগ বিয়োগের কারণ অদৃষ্ট ব্যতীত অস্ত আর কিছু হয় না অর্থাৎ বনে অথবা থামে অগ্নি উদ্ধৃত হইয়া দাহ করিতে করিতে কদাচিৎ নিকটন্থ বৃক্ষ অথবা গৃহাদিও পরি-ত্যাগ করিয়া দুরন্থ বৃক্ষ ও গৃহাদি যে দাহ করে তাহার হেতু যজেপ অদৃষ্ট ভিন্ন অন্ত নহে, তেমনি প্রাণিদিগের শরীর সংযোগ বিয়োগের অর্থাৎ জন্ম মৃত্যুর কারণ অদৃষ্ট মাত্র, তথ্যক্তীত অন্ত নহে ॥৩৮॥

হে রাজন্। যন্ত দূর পর্যান্ত আপনার প্রজার গতি, তত দূর পর্যান্ত এবন্ধি বিবিধ বিবেচনা করিয়া বহুদেব বহুমান পুরঃসর সেই পাপান্ধা কংসের পূজা করিলেন॥ ৩৯॥

প্রত্যে প্রবাদনা স্থেতি জ্বং নিরপত্রপং। মনসা দ্য়মানেন প্রহসন্ পুনরব্রবীৎ। ৪৮॥ নহস্তাত্তে ভয়ং সৌন্য যদাগাহাশরীরিণী। পু্জান্ সমর্পয়িষ্যেইস্থা যতন্তে ভয়মুখিতং॥ ৪১॥ প্রীশুক উবাচ॥

স্থহৰধানিবরতে কংসন্তৰাক্য সারবিং। বহুদেবোহপি তং প্রতিঃ প্রশাস্য প্রাবিশলা হং॥ ৪২॥

श्रीभवतामी।

ত্য্য বিশ্বাসায় বিক্ষিত মুখান্ডোজ: প্রহসন্নত্রবীৎ॥ ৪০॥

যদ্মথা অশরীরিণী বাগাহ তথাহি নিশ্চিতং অস্তাঃ সকাশাত্তে ভয়ং নান্তি মতঃ বেভ্যঃ পুত্রেভ্যঃ তে ভরমুখিতং অপ্তমোহস্তে-ত্যুক্তেঃ অস্তোস্তাপেক্ষয়া সর্বেহ্পাষ্টমা ভবেয়্রিত্যুক্তান্ তান্ অস্তাঃ পুত্রান্ সমর্পয়িষ্যে ॥ ৪১ ॥

নিববুতে নিবুত্ত:। তথাক্যে সার উপপত্তিস্তবিৎ ॥ ৪২ ॥

বৈষ্ণবতোষণী।

ততক্ষ ক্রং নির্দারমপি তং পুনরত্রবীৎ ইদমত্রবীদিতি পাঠঃ কচিং। প্রত্যাগ্রবদনাস্থোজা সদ্যো বিক্সিতপন্মবং প্রসাদিত-মুখঃ সন্ প্রহসন্। প্রসার্য্য বদনাস্থোজমিতি পাঠঃ স্পষ্ট:। এবং বিশাসায় তং প্রত্যাগ্রনোহস্তঃপ্রসাদো বোধিতঃ। বস্তুতস্ত দ্যমানেন মনসা বিশিষ্টঃ॥ ৪০॥

সৌম্য হে শান্তপ্রকৃতে অন্তঃপ্রসাদবোধনার্থমেব পূর্ক্বিদত্র শ্লেষার্থাহিপি ন স্পষ্টঃ। যদ্বা অত্রাণি ভন্ন জন্মনা সৌম্যবেনচ বীরস্বভাবাত্যন্ন এব দর্শিতঃ। পুলানিতি চ্ছলেনাকার প্রশ্লেষাং যেভ্যন্তবাভয়মূখিতং বেভ্যো ভন্নং নান্তীতি বিচারসিদ্ধং তানেব সমর্পরিষ্যে নতু যন্মান্তব্যম্থিতমিতি। যদ্বা যতো যান্তিক্রম্য কন্মাচিত্তব ভন্মূখিতং ভবিষ্যতি তানেব সমর্পনিষ্যামি নতু ভন্নদানে
প্রবৃত্তং তমিত্যর্থঃ। নহাস্থান্তে ভন্নং সৌম্য যদ্ধি সাহাশরীরবাক্ ইতি পাঠঃ ক্ষ্চিং। উথিত মিত্যত্রাগতমিতি ক্ষ্চিং॥ ৪১॥

স্থানত দিশেষস্য ভগিন্তা বধাৎ। স্থাক্ষক প্রয়োগশ্চ মধ্যক্ষাং সৌহদমপ্যক্তীতি বধ নিবৃত্তি হেতুং তদ্ভাবনা বিশেষমপি স্চায়তি।
কিঞ্চ তদ্ধান্ত্রিতি হেতুং তদ্ভাবনা বিশেষমপি স্চায়তি। কিঞ্চ তদ্ধান্ত্রিত্তা স্থান্ত্রামপি বধান্ত্রিত্ত ইতি স্চায়তি দেবকাদিভিঃ
সহ মুদ্ধাপত্ত্যা তেষাং বধ সম্ভবাৎ। স্বস্থারিতি কচিৎ পাঠ স্তদ্ধাক্যেতি তৈর্ব্যাথ্যাতং তত্ত্রোপপত্তিস্কৃতেত্যর্থঃ। সারশক্ষাত্ বলবাচী বশ্চ বচনস্থ যুক্ততেত্যর্থঃ। যদা সারং সারত্বং অব্যভিচারিত্মিত্যর্থঃ। প্রশক্ত পরমো বৃদ্ধিমান্ সার্থাহী ক্রপাশীলোহ্সীত্যেবং

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্ত্তী।

স্বাস্থঃ প্রসাদ জ্ঞাপনার্থং প্রত্যপ্রং দ্বিদ্ধীক্ষতং বদনাস্থোজং যেন সং দ্রমানেন সন্তাপপীডামানেন মনসা যুক্ত: ॥ ৪০ ॥ অস্যাং সকাশান্তে ভন্নং নাত্তি কিন্তুস্যা অষ্টমাৎ পূত্রাৎ যদযথা। অহন্ত পূত্রানষ্টাবের সমর্প দ্বিষ্যে যতঃ পূত্রান্তে ভন্নমূথিতং স বা বধ্যভাষষ্টাবের বা বধ্যস্তামিতি ভাব: ॥ ৪১ ॥

বাক্যস্য সারঃ সত্যত্বং বস্থদেবো মিথ্যা ন জ্রতে ইতি সর্ব্বধা জ্বানাডীত্যর্থঃ। তবেদং ধর্মশীলত্বং ভূবি প্রকটীভূতমিতি প্রশস্য॥

পরে যদিও মনোমধ্যে অতিশয় থিম হইলেন, তথাচ বিশ্বাসার্থ বদন কমল বিক্সিত করিয়া হাসিতে হাসিতে সেই নিল্ল জ্জ ক্রুরকে সম্বোধিয়া পুনরায় বলিলেন ॥ ৪০ ॥

হে সৌম্য! অশরীরিণী বাণী যাহা কহিলেন আমি নিশ্চয় বলিতেছি, তাহা হইতে তোমার সেরপ ভয় সম্ভাবনা নাই। আকাশ বাণী কহিলেন দেবকীর অফম গর্ত্ত তোমার হস্তা হইবে, অন্যান্যাপেকার সকল পুত্রই অফম হইতে পারে, ভাল, আমি অঙ্গীকার করিতেছি, যে সকল পুত্র হইতে তোমার ভয় উথিত হইল, জিমিলে তাহাদের সকলকেই তোমার হস্তে সমর্পণ করিব ॥ ৪১॥ শুক্দিব কহিলেন রাজন্! কংস বহুদেবের উক্তি যুক্তিযুক্ত বোধ করিয়া ঐ কথায় হুহদ্বধ

অথ কাল উপারতে দেবকী সর্বদেবতা। পুক্রান্ প্রস্থার চাক্টো কন্যাঞ্চিবাস্বৎসরং।
কীর্ত্তিমন্তঃ প্রথমজং কংসায়ানক চুন্দুভিঃ। অর্পন্নামাস ক্ষুদ্ধে সোহনৃতাদতিবিহ্বলঃ॥ ৪০॥
কিং তুঃসহং মু সাধুনাং বিত্রাং কিমপেক্ষিতং। কিমকার্য্যং কদর্যাণাংষ্ঠুব্যব্রু কিং ধৃতাত্মনাং।

श्रीशत्यामी।

প্রস্তিকালে প্রাপ্তে সর্বঃ সর্বাত্মা ভগবান্ দেবতা যস্তাঃ সা তথা সর্বদেবতাময়ীতি বা ভগবদাশ্রয়ত্বাং ॥ ৪৩ ॥ মৃত্যবে পুত্রং কথমপিতিবানিত্যপেক্ষায়ামাহ কিং হঃসহং হু ইতি । সাধুনাং সত্যসন্ধানাং পুত্রলালনস্থাপেকা কথং ত্যক্তে-

বৈঞ্চবতোষণী।

স্তত্বা প্রকর্ষেণ গীতবাদ্যাদিনাবিশৎ। ইদমণি তদিখাসজননার্থমেব॥ ৪২॥

অথেতি মাঙ্গল্যে কালে উপাবৃত্তে কতিপন্নকালে গতে সতীত্যর্থ:। যুবৈব বস্থদেবোভ্দিহানাভ্যাগতাং জরামিত্যানি প্রাবিশ্ প্রাণোক্তে:। বৃদ্ধৌ তবাদ্যপিতরাবিত্যানি প্রীহরিবংশেহপ্যক্র্রোক্তেরহুসারেণ প্রান্ধা বার্দ্ধক্যান্তিরে শ্রীভগবদাবিভাবাং। সর্বেবাং দেবতাদীনামপি দেবতেতি মহা ভগবছুক্তিত্বাং। তথাচ বিষ্ণুপ্রাণে ত্বং পরা প্রকৃতিঃ স্ক্রেত্যাদি বহুতরং সর্বনেবহুত-স্থোক্রং। অয়ং ভাবঃ। বস্থদেব শব্দেন তাবদ্ভগবং প্রকাশহেত্যু শুদ্ধ সত্ত্মচূতে। যথোক্তং চতুর্থে শ্রীশিবেন। সর্বং বিশুদ্ধং বস্থ দেবশন্দিতমিতি তক্ষপ এবায়ং শ্রীমানানকত্বস্তিঃ। যথোক্তং নবমে। বস্থদেবং হরেঃ স্থানং বদস্ত্যানকত্বস্ভিমিতি অতঃ শ্রীদেব-ক্যপি তং সম্পত্তিরূপৈবেতি কন্তাং স্কুভ্রোং অন্থবংসর্বমের প্রত্যন্ধমেকৈকশ ইত্যর্থঃ। তচ্চ সত্ত্ব শ্রীভগবদবতারার্থং॥

কীর্ত্তিমন্তমিতি মরীচিত উৎপল্পৰেন প্রাক্তন তৃতীয় জন্মনি তেষা মেতদাণীনি নামানি স্বরাদীনি চেতি ষড্গর্ত্তানয়নে স্বামি-ভির্বাধ্যাস্যতে। যদা যদা তে স্কৃতলত আনীতা ন্তদা জীক্তফেনৈব কীর্ত্তিমদাদি নামানি কৃষা বৈকুঠং প্রস্থাপিতা ইতি জেয়ং। নবমে চাত্রচ শ্রীবস্থদেবপুত্রত্বাবস্থায়ামেব তথাস্বাদাং। সংক্তপ্রতিজ্ঞ: স্বতিবিহ্বসং প্রমতীতঃ॥ ৪০॥

মু বিতর্কে কিং ত্ঃসহং অপিতু সর্বমেবানায়াসেন সহমিত্যর্থ:। এবমগ্রেহপি। অন্তর্ত্তঃ। তত্ত্ব সত্যসন্ধানামিতি প্রস্তুতোপধাগি-

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্ত্তী।

সর্ক্ষোং দেবাদীনামপি দেবতা ভগবন্মাতৃত্বাং পূজা। কন্যাং স্থভদ্রাং অন্বংসরমষ্টস্থ বংসরেছিত্যর্থঃ বিভক্ত্যর্থেছব্যরীভাবঃ। কন্যাঞ্চ কালে প্রতিবর্ধমিতি বীপ্দাতু ন ব্যাথ্যয়া একৈক্ষিন্ বর্ধ এবাষ্টপুত্রোৎপত্তিপ্রসক্ষেঃ। অত্র কারণমত্তা ব্যাথ্যাস্যতে॥ কীর্ত্তিমন্তমিতি জন্মদিন এব ক্তনামকরণমিত্যর্থঃ॥৪৩॥

নষন্তাদিভৈত্তমাং নাম স্থান্দাদেব প্রবধঃ কথং দোচ্ব্যস্তরাহ কিং ছঃসহমিতি। নঘট্টামেকং প্রং স্বার্থাপার কার্য্থং সমর্পরত্তমাং নাম প্রান্ সমর্পরিব্যেহস্যা ইতি নিথিল প্রার্পাপপ্রতিজ্ঞাং তদা কংস্স্যাক্রাং বিনৈব কথমকরোং গৃহস্থ্য তস্য প্রমারোপেকা ন যুদ্ধাতে তত্রাহ বিছ্যামিতি বস্থানেং থলু ক্মিলোক ইব নাবিদ্ধানতো ভক্তি জ্ঞান বৈরাগ্য মহোদ্ধেন্তস্য কিং প্রৈরিতি ভাবঃ। নম্বতাদৃশস্য স্বর্মের বধার্থমানীত প্রস্যু তস্য কংসঃ কথং পুরুং হন্তমহঁতু কিমত্রাপ্যার্জ চিত্তো ন ভবেৎ তত্রাহ কিমকার্য্যমিতি। নমু তহি সর্ব্ধানের পরিহারায় বস্থাদেরো গার্হান্তামের কিং ন তত্যান্ধ তত্রাহ হন্তান্ধমিতি তেন তদ্যার্হাত্য মিণি ত্যক্ত্বং শক্যমের কেংলং মংপ্রব্রং প্রাপ্তাতো হরে মুখিং কদা ক্রক্যামীতি মনোর্গেনের গৃহে স্থীয়তে। অতএব শ্বত আ্রার্থ হিরং পুরুর্বণী বৈ ন্তেবাং তেনৈর হেতুনা পুরার্ভ্যরেদ্বি ন নিহাতে স্ম ক্রমপ্রস্যু সময়ং শীত্রং ভবন্ধিত্যুৎকণ্ঠরৈর প্রতিবর্ধমে- কৈকো গর্ত্ত আধীয়তেক্ম বালবধে স্বস্যান্মস্ত ক্লকণণাপস্থীকারণ্ডেত্যাদি তর্মবধ্যং॥

হইতে নির্ত্ত হইল। বহুদেবও প্রীত হইয়া তাহার প্রশংদা করিতে করিতে আপনার আলরে প্রবিষ্ট হইলেন ॥ ৪২ ॥

তদনস্তর ভগবদাশ্রয়ত্ব হৈছু সর্বাদেরময়ী দেবকী প্রসূতি কাল প্রাপ্ত হইলে বংসরে একটা করিয়া ক্রেমে লাট তনয় ও এক তনয়া প্রস্ব করিলেন। বহুদেব মিধ্যাকে অতিশার ভয় করিতেন, এ কারণ বিহলে হইয়া অঙ্গীকৃত পালনার্থ প্রথমোৎপন্ন কীর্তিমন্ত সন্তানটী গ্রহণ পূর্ব ক অতিক্টে কংসহত্তে সমর্পণ করিলেন। ৪০।

হে রাজন্ ! ৰহদেৰ পিতা হইয়া স্থাং মৃত্যুর হন্তে কি প্রকারে পুত্র সমর্পণ করিলেন এ স্থলে

দৃষ্ট্রা সমন্থং তচ্ছোরেঃ সত্যে চৈব ব্যবস্থিতিং। কংস স্তুন্তমনা রাজন্ প্রহসন্ধিদমত্ত্রবিং। প্রতিযাতু কুমারোহয়ং নহুস্মাদন্তিমে ভয়ং। অন্তমাদ্যুবয়োঃ পুর্ভাশ্ম ভূমে বিহিতঃ কিল। তথেতি স্তমাদায় য্যাবানক সুন্দুভিঃ। নাভ্যনন্দত তথাক্যমসতোহবিজিতাল্পনঃ॥ ৪৪॥ নন্দাদ্যা যে ব্রজে গোপা যাশ্চামীষাঞ্ধ যোষিতঃ। বৃষ্ণয়ো বস্থদেবাদ্যা দেবক্যাদ্যা যতুল্লিয়ঃ॥৪৫॥

ই প্রক্রামী

ত্যত আহ বিশ্বামিতি ভগবানেৰ তবং নান্তদিতি জানতামিত্যৰ্থ:। নমু স্বয়ং নীতে সতি কথং বালং ইন্তাদিতি মন্থা নীতবান্ নেত্যাহ কিমকাৰ্যামিতি। নমু দেবকীপুলং কথা তত্যাজ ইন্তাত আহ মৃত্যুজমিতি চিত্তে ধৃত আখা হরিবৈ তেখাং॥ ৪৪॥ কংসন্ত শান্তিদে কাৰ্যামুখ্যণা ন ভবতীতি নারদক্ত প্রত্যবস্থানং তদাহ নন্দাদ্যা ইতি ক্রেণে॥ ৪৫॥

देवकवरकावनी।

ত্বান্তদীয় ধর্ম বিশেষ এব নির্দিশ্রতে নতু তন্মাত্রত্বেন সাধুত্মিতি। লালনেচ্ছাতু স্করামেব নাজীতাভিপ্পায়েণাবতাররতি পুত্রলা-লনেতি। বিহুষাং কিমপেক্ষিতমিতানেন হস্তান্তমিত্যাদেঃ পৌনক্ষন্তামাশ্ক্ষাবতারয়তি নতু দেবকীতি। ধ্বা সাধ্নাং সর্বা সহত্ব দার্ট্যার্থং বিহুষামিত্যাদিকং দৃষ্টাস্তক্মা ক্ষেয়ং। অত্যোৎপ্রেক্ষা হস্তান্ত্বয়েরপ্রাপ্তপ্রাপ্ত বিষয়ত্বেন ভেদঃ করাঃ॥

সমন্বং পুলার্পণেন শত্রো মিত্রেচ তুল্যতাং সত্যে প্রতিশ্রুত এব ব্যবস্থিতিং নিষ্ঠাঞ্চ দৃষ্ট্র অন্ধান্মম ন কিঞ্চিদপানিষ্ঠং ভবিষয়তীতি বিভাব্যতি ভাবং। যদা সমন্বমিতি বিদ্বভাগাঃ শ্বতাত্মতা শাসুবাদঃ যোহি বিদ্বান শ্বতাত্মা চ ভবতি স সমো ভবতীতি সত্যে ব্যব-স্থিতিমিতি সাধুতায়াঃ। চতুর্থন্ত কংসপতমেবেতি নামুদিতং। প্রহাসঃ সম্ভোবাৎ। তে রাজন্মিত্যাশ্চর্য্যেদ সম্বোধনং ॥

ধ্বমোরিতি অন্যস্যাং জাতাদপীতি ব্যাবর্ষিতং। বিহিতো বিধাত্রা। কিলেতি আকাশবাণ্যাঃ প্রসিদ্ধিং দ্যোতরতি তরৈবাঞ্চাপ্ত ইতি বা ৪

তথেতি তথেতাকে তার্থা। তথা শবস্যাচ ভবান্ মথা দিশতি তথৈবাদিতার্থা। নাভ্যনন্দত ন প্রতীরায় কুতঃ অসতঃ বলস্য মুখ্যেব সৌল্লাং প্রকটয়তঃ অবিজ্ঞিতাত্মনঃ অন্থিরচিত্তস্যেতার্থা॥ ৪৪॥

নন্দাদ্যা ইতি ত্রিকং। যেচ বৃহহনস্থা একে বাশ্চ তত্র বোষিতঃ শ্রীষশোদাদ্যা:। উক্ত সমুচ্চরার্থেছিরং চ শব্দঃ সর্বাত্ত সম্বাত্ত । দ্বিতীয়শ্চশব্দঃ কৈমৃত্যাদ্যোতনার্থমপ্যর্থে। কিং বক্তব্যং তে তাশ্চেতি। অমীষাং গোপানাং বোষিতামপি সম্বন্ধিনো বে ভৃত্যাদ্যা

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্ত্তী।

সমত্বং পুত্রেহপি মমত্বাভাবাৎ সর্ব্বত্র সাম্যং ॥ ৪৪॥

নন্দান্য ইতি প্রীওকোক্তি:। যদা শ্রীনারণোক্তি ন্তথাহি অবতরিষ্যতঃ স্বাভীষ্টদেবস্য শীদ্র দর্শনেন স্বমানন্দরিত্বং শীদ্রং তৎপ্রাত্বভাব কারণং কংস কর্ত্ক বৈষ্ণবদ্ধাহং প্রবর্ত্তরন্ দেবানানন্দরিত্বং তেন ভক্তদ্রোহেণৈর কংসঞ্চ ঘাতরিত্বং কংসদাস্যমান-বেদানামপি তেবামভিজ্ঞ ভক্তানাং ভগবদাবির্ভাবনিশ্চয় জ্ঞাপকার স্বদ্ধৈ প্রীত্যতিশয়মাশীঃ সহপ্রঞ্চ দাস্যমানানাং ভগবদিদৃশ্যানন্দ প্রবর্ত্তন কর্মান্ত প্রবর্ত্তন কর্মান্ত প্রবর্ত্তন কর্মান্ত প্রবর্ত্তন কর্মান্ত প্রবর্ত্তন কর্মান্ত প্রক্রিষ্ঠ ক্র ক্রারদ্যে ক্রেশাংকর্মপি হর্ষবিশেষং মানয়ন্ স্চকেছপি স্বন্ধিন্ত স্বাহরন্ মিধ্যাসৌহার্দাবিস্কারেণ সাল্পকংসম্প স্বাহ্তক্তী ক্র্মারদ্যে

এমত আশস্কা করিতে পার না, সত্য প্রতিজ্ঞ সাধু পুরুষদিগের তুঃসহ কি ? বিধান্ লোকেরা কোন্
বস্তুর অপেক্ষা করিয়া থাকেন ? কুৎসিত ব্যক্তিদেরঅকার্য্য কি ? আর যাঁহারা চিত্তে ভগবান্ হরিকে
ধারণ করিয়াছেন ভাঁহাদের স্ক্রুজই বা কি ? যাহা হউক, বস্থদেবের ঐরপ সাধুষ এবং সত্যনিষ্ঠা
দেখিয়া কংস মনোমধ্যে যথেষ্ট ভুষ্ট হইল এবং হাস্য করিতে করিতে কহিল ভূমি এই পুত্রুকে লইয়া
যাও, ইহা হইতে আমার ভয় নাই, তোমাদের অকম তন্য় হইতেই আমার মৃত্যু বিহিত হইরাছে,
জন্মিলেই তাহাকে আনিয়া দিও। এতৎ শ্রবণ বস্থদেব তাহাই করিব বলিয়া পুত্রটা লইয়া গমন
করিলেন কিন্তু অন্ত ও অজিতেন্দিয় কংসের ঐ বচনে ভাঁহার বিশাস না হওয়াতে আন্তরিক
আনন্দ জুন্মিল না ॥ ৪৪ ॥

তেই রাজন্ পরীকিং ! অভ্রপুরে যে সকল নন্দানি গোপ ও ভাঁহাদের যে সমস্ত যোষিং এবং বহুদে।

সর্কে বৈ দেবতাপ্রায়া উভয়োরপি ভারত। জাতয়ো বন্ধু হস্তদো যেচ কংসমস্বতা: ॥ ৪৬ ॥ এতৎ কংসায় ভগবান্ শংসয়ামাস নারদ:। ভূমে ভারায়মাণানাং দৈত্যানাঞ্চ বধোদ্যমং।
ঝাষে বিনিগমে কংসো যদূন্ মন্বা হরানিতি। দেবক্যা গর্কসম্ভূতং বিষ্ণুঞ্চ স্ববধং প্রতি ॥ ৪৭ ॥
দৈবকীং বহুদেবঞ্চ নিগৃহ্ নিগড়ৈ গৃহি। জাতং জাতমহন্পুক্তং তয়োরজনশঙ্কয়া।

दी धत्रचामी।

केंछतार्सञ्चलव नस्कूनत्ताः ॥ ८७ ॥ वर्षाणयः एवक्छिमिछ एनदः ॥ ८९ ॥

বৈষ্ণবতোৰণী।

ভেচেত্যর্থ:। বৃষ্ণর তহুপদক্ষিতা যাদবা: দেবতাশব্দেন শ্রীভগবৎপার্বদা অপ্যক্তা:॥ ৪৫ ॥

প্রায়শন্ধ তাত্র বছরু কোবাঞ্চিকৈতাশ্বাং। হে ভারতেতি যথা ভরতবংশে ভবংপিতামহাদরে। দেবতা ইতি। ভোজাদর তদীয়া শপি দর্মে দেবতাপ্রায়া ইত্যাহ বেচেতি কংসং প্রতি অনুত্রতা ভক্তায়মানাঃ জ্ঞাতরঃ সপিগুঃ বন্ধনঃ স্বন্ধনঃ স্কৃদো মিত্রাণি ভগ-বান্ সর্বজ্ঞঃ কংসম্ভ শাস্ত্যা শীত্রং প্রীভগবদবতারো ন স্থাদিত্যাদিকং চিস্তরন্নিত্যর্থঃ। যথা পরম দ্যালুতা প্রবেশ নারদোজিরিরং শীত্রং ভগবদবতারে কারণোখাপনেন জগতামেব হিতাচরণাৎ অতত্তং প্রতি অস্থা ন কার্য্যেতি ভাবঃ॥ ৪৬॥

শংসয়ামান স্বার্থে নিচ্। শশংস। তদিশেবঃ শ্রীহরিবংশে। ত্রিপিইপাদাপতিতো মণুরোপবনে স্থিতঃ। প্রেয়মান কংলায়
স মৃত্য মুনিপ্রবা। স দৃত্য কথয়ামান নারদাগমনং নৃপে। স নারদভাগমনং ক্রা ছরিতবিক্রমঃ। নির্জগামাকুরঃ কংসঃ স্প্রাঃ
পদ্ধনোচনঃ। স দদর্শতিথিং প্লাঘাং দেবর্বিং বীতক্রমং। তেজসা জলনাকারং বপুয়া স্ব্যবর্চসং। সোহভিবাদ্যব্য়ে তক্রৈ প্লাঃ
চক্রে বণাবিধি। আসনকালিবর্ণাভং বিস্কোপজহার সঃ। নির্দাদাসনে তন্মিন্ স বৈ শক্রমণো মুনিঃ। উবাচ চোত্রসেনভ স্থতঃ
পরম কোপনং। প্রিভোহ্ইং ছয়া বীর বিধি দৃষ্টেন কর্মণা। গতেছেবং মম বচঃ প্রয়তাং গৃহতাঞ্চ বৈ। অনুস্ত্য দিবো লোকানহং
ত্রন্ধ প্রোগমান্। গতঃ স্ব্যস্বং তাত বিপুলং মেরুপর্বতঃ। সোহহং কদাচিদ্বোনাং সমাজে মেরুম্বনি। সংগৃহ্ বীণাং সংস্কাশসচ্ছং ত্রন্ধণ: সভাং। তত্র মন্ত্র্যাসবং দেবতানাং ময়া শ্রুডং। ভবতঃ সামুগজ্যেই ব্ধোপারঃ স্থাকণ ইতি। পদ্মলোচন ইতি
বিশ্বরেনোৎ সূত্র লোচন ইত্যর্থঃ ॥ ৪৭ ॥

ৰবেরিতি বৃশ্মকং। ইতি অনেন প্রকারেণ বিশেষেণ পুন নির্ভিশকাপগমাদিনা পুরীতো নির্গমে সতি ববেঃ সাকাতত্ত্বি-

'শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

ষ্নিরাপত্য কংসং প্রতি রহস্যমাহ নন্দাদ্যা ইতি ঘাভ্যাং ॥ ৪৫ ॥

কেষাঞ্চিকতাত্বাৎ প্রারশক্ষপ্ররোগঃ। ভা তামদী কান্তিজন্যাং রতেতি কংগ সংবাধনং। উভরো র্কুদেবদক্ষরোঃ শংসরান্ বাস শশংস॥ ৪৬॥

বিষ্ণুক অবধং প্রতীতি পূর্বাশক্র বিষ্ণুদে বিক্যামাবিষ্কুর ছাং বধিব্যতীতি নারদেনোক্তং তত্তৎ সর্ব্ব এব ভ্রুপ্রকৃতিত্যপি ক্লেরং। জন্মনো বিষ্ণুতক্তকরা॥ ৪৭॥

কংসাদীনাং ছর্জনানামেতর চিত্রমিত্যাহ মাতরমপি কিমুত পিতরমিত্যেবং বধাপুর্বং ওক্তাধিকাং।

জানন্ নারদ্বচনাৎ 🛭

ৰাদি যে সকল বৃষ্ণিবংশ, দেবকী প্রস্তৃতি যে সমুদায় যতুন্ত্রী ॥ ৪৫ ॥

শপর বহুদেব ও নন্দ এই উভয় কুলের যে যে ফাতি স্বল্ বন্ধু যাহারা কংসের অনুগত সক-লেই দেবতা ভুল্য ছিলেন॥ ৪৬॥

ধী সমরে দেবর্ষি নারদ কংসের নিকট গিয়া ঐ কথা কহিয়া আসিলেন, আর দৈত্যগণ ভূমির ভার বরূপ হওয়াতে ভাহাদের বধার্থ দেবকৃত উদ্যম হইবে, ভাহাও অবগত করাইলেন। দেবর্ষি এই কথা বলিয়া নির্গত হইবাসাত্র কংস বছদিগকে দেবতা এবং দেবকীর গর্মন্ত সন্তানমাত্রকে আপ-নার নিধন কারণ বিষ্ণু মনে করিয়া ॥ ৪৭॥

তৎকণাৎ ৰহদেৰ ও দেবকীকে গৃহ মধ্যে শৃত্তল বন্ধ করিয়া রাখিল এবং বিষ্ণু আশকীয় তাঁহা-

মাতরং পিতরং ভ্রাতৃন্ সর্বাংশ্চ স্থান । স্বস্তি হাস্ত্পো সুকা রাজান: প্রায়শাে ভূবি।
আজানমিত সংজাতং জানন্ প্রায়িক্তনা হতং। মহাস্তরং কালনেমিং যতুভিঃ স ব্যক্ষণ্ত।
উগ্রসেদক পিতরং যতুভোজাদ্ধকাধিপং। স্বয়ং নিগৃত্ব রুভুজে প্রসেনান্ মহাবলঃ॥ ৪৮॥
॥ *॥ ইতি শ্রভাগবতে সহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং দশমন্ধকে প্রথমো২ধ্যায়ঃ॥ *॥ ১॥ *॥

विधवनामी।

निगरेष: भृष्येत: अस्ता विकु छष्ट्कता॥ १৮॥

॥ 🛊 ॥ ইভি দশমে প্রথমঃ ॥ 🛊 ॥

বৈক্ষবভোষণী।

শ্রহে লক্ষাহাৎপত্তে:। কিবা তেন তরিবারণসাশবরা॥ মদা জ্ঞাদা স্বস্ত কংগল্ভ বধং প্রতি তদর্থং। বিশ্বক দেবক্যা পর্য্তে সম্যক্ নির্মেবর্ধ পরিপূর্ণতরাভূতমাবিভূতিং। ভবিষ্যতাশি ভূতবিদ্ধিলাং সামীপ্যান্তরিদ্ধারণাদা। বদা গর্ত্তে সভূতিবঁদ্যা তং মদা। সভূতিমিতি পাঠোহশি কচিং। তল্জানঞ্চাদামইমোগর্ত্ত ইতি পূর্ব্বোচ্জেন সমুদিতা দৈত্যানাঞ্চ বংগাদামমিতি নারদবচনাদেব জেরং। তথাচ তত্তিব। তত্তিবা দেবকী বা তে মধুরায়াং শিত্তবা। বোহস্তা গর্তোহইন: কংস স তে মৃত্যুর্ভবিষ্যতি। দেবানাঞ্চিব সর্ব্বেং তিদিবস্ত গতিক সং। পরং রহস্তং বেদানাং স তে মৃত্যুর্ভবিষ্যতি। পরতোহশি পরস্তেষাং স্বয়ন্ত্রণ দিবৌকসাং। ততত্ত্বে তর্মুন্ত্রণ দিবাং তে কথরামাহং। প্লাদাক স হি তে মৃত্যুর্ভ্তপূর্বন্দ তং স্মরেতি। তত্ত্ব পিতৃবসেতি পিতৃসবদ্ধেন স্বস্বেত্তাশি প্রাক্তলব্দকনাত্ত্বন পৌলী দেবকী স্বপ্তাহেন পালিতেতি কেচিং। নিগৃত্ব বদ্ধা নিজগৃহে। অজনেতি জীববজ্বস্বরহিতস্তাপি প্রাকৃত্তম্বন্দ্রতি কংসন্ত মৌদ্যং স্কৃতিং। কিবা অজনাদ্বা শহা ভরং তরা॥

নম বাগান মন কংস: কথং ন লব্জতে তত্তাহ মাতর্মিতি মাত্রাদীনাং যথোত্তরং লিশ্বছেন ন্যুনতা মাতর্মিপ ছব্তি কিমৃত্ব পিতর্মিত্যেবং হি নিশ্চরে। যতো বে অস্থন নিজ্ঞাণান্ এব তর্পরন্তি ইত্যস্ত্প: রাজ্যাদিল্কা: তে মাত্রাদীন্ ছব্তি প্রারশ ইতি তেহপি ন সর্কা ইতি তম্ভাত্যভাগমন্ত্বিবক্ষয়া॥

বিশ্না নিজশক্ত্যা জগন্তাপকেনেতি হননে সামর্থ্যমূক্তং। জানন্নিতি ভূতপূর্বাঞ্চ তং স্মরেতি শ্রীনারদ্বচনাদেব। পূর্বজ্ঞান-স্মরণাৎ॥

নচ কেবলং তৈঃ সহ স্বপিত্রাপীত্যাহ উত্ত্রেতি। বদা ভোজান্যধিপ্মণি নিগৃত্ব বদাহতিক্রম্য বা স্বরং বৃত্তে যতো মহদলং সামর্থাং দৈত্যসেনা বা বস্তু সং। ভোজানীনাং যত্ত্বেহণি পৃথপ্তজি তেবাং তেবু প্রধানানামপ্যধিপ ইতি বিবক্ষয়। শ্রসেনানিতি মাধ্রাং তৎ পূর্বমেব তদস্জাতীক্বত্য বৃত্তি হৈতি দ্যোতিতং॥ ৪৮॥

॥ • ॥ हेि जीवनम विश्वनाः देवक्षवरंज्यवाः अथरमार्थायः ॥ • ॥

ক্রমসন্ধর্ভ:।

प्तिजाथीया हेि **भार्व**प्तिअचार भक्षा स्त्रमशुषाळ ॥ ८७ । ८१ । ८৮ ॥

া 🕶 ইতি জীদশমে প্রথম: ॥ 🛊 ॥ ১ ॥ 💠 🛭

এবিশনাথচক্রবর্তী।

শ্রসেনাস্তর্গতভান্ধাপুরানপি 🛭 ৪৮ 🖡

🛚 🛊 ॥ ইতি সারার্থদর্শিন্যাং হৃত্তিশ্যাং ভক্তচেতসাং। 🗸 দশমে প্রথমোহধ্যারঃ সম্বতঃ সকতঃ সভাং ॥ 🕫 🤊 ॥ 🕫 ॥

দের যেমন ২ পুত্র জন্মিতে থাকিল, জমনি বধ করিতে আরম্ভ করিল। হে রাজন্! মহীমণ্ডলে প্রায় পুরুক্ ভূপতিমাত্রই স্ব প্রাণের পরিভৃপ্তি কামনায় মাতা, পিতা, ভ্রাতা, সমস্ত স্থল্ ও মিত্র পর্যান্তও হত্যা করিয়া থাকে। অপর পূর্বে বিফুকর্তৃক যে মহাস্থর কালনেমি নিহত হইরাছিল কংস আপনাকে সেই ব্যক্তি স্করণে উৎপদ্ধ জানিয়াই যতুদিগের সহিত বিরোধ আরম্ভ করিল। অপর নিজ পিতা উপ্রেশন, যিনি যতু ভ্রেজ ও অন্ধক বংশের অধিপতি ছিলেন, তাঁহাকে নিগ্রহ করিয়া স্বয়ং সমুদায় শ্রদেন রাজ্য ভোগ করিতে প্রত্ত হইল ॥ ৪৮ ॥

। 🛊 । 🛮 देखि मन्दर्भ धीवन । 🛊 ।

প্ৰীশুক উবাচ।

প্রাম্ব বক চালুর ত্ণাবর্ত মহাশনৈ:। মৃষ্টিকারিক দিবিদ প্তনা কেশি ধেতুকৈ:।

অন্যেশ্চান্তর ত্পালৈ বাণ ভোমাদিভির্ত:। যদুনাং কদনং চক্রে বলী মাগধসংগ্রাঃ।
তে পীড়িতা নিবিবিশু: কুরু পাঞ্চাল কেকয়ান্। সাল্লান্ বিদর্ভান্ নিবধান্ বিদেহান্ কোশলানপি ॥>॥

একে তমতুরুদ্ধানা জ্ঞাতয়ঃ পর্তুপাসতে॥ ২॥

হতেরু ষট্তু বালেরু দেবক্যা ঔপ্রেনিনা। সপ্তমো বৈষ্ণবং ধাম যমনন্তং প্রচক্ষতে।

व्यीधव्यामी।

ষিতীরে কংস্থাতার দেবক্যা গর্ত্তগা হরি:। এন্ধাদিভিঃ স্বতঃ সাচ সাস্থিতেতি নির্প্যতে ॥ • ॥

বছ্ডিঃ স ব্যক্ষ্যতেত্যুক্তং তমেব বিরোধং প্রপঞ্চরতি। স্বরয়া দেবকীগর্ত্তস্যান্যত্ত সঞ্চারেণ্ তগবতঃ প্রবেশং বক্তুং প্রদর্বেত্যাদিনা সার্ক্তরেণ। মহাশনঃ অধান্তরঃ ॥ > ॥

অভুক্তানাঃ অভুবর্তমানাঃ॥২॥

ধাম কলা তদেব সপ্তমোগর্জো বভূব। কিং ভদ্ধাম ইত্যত আহ বমনস্তমিতি হ বঁশোকবিবৰ্দ্ধনঃ আনন্দক্ষণস্যাবতীৰ্ণদাৎ হৰঃ

देवकवरजावनी।

প্রান্থতি যুগাকং তৈর্তিরে হেতৃ: বলীতি। নিভ্তং বিবিশু: তত্তবেশাদীনা হলিকগোপগ্রামেরু শুপ্তা ইত্যর্থ:॥ ১॥ এক ইত্যর্থকং অফুরন্ধানা:। চাতৃর্বোণ বশীকুর্বস্ত:। বলা একে ভক্তা: প্রীকৃষ্ণাবভারদর্শনরূপং স্বার্থমপেক্ষমাণা ইত্যর্থ:। এতফাগ্রেংকুর্বানে ব্যক্তং ভাবি। পর্যুপাসতে পর্যুপাসত॥ ২॥

- হতেখিতি সার্ধকং । জাতং জাতমহন্নিতি পূর্বমূক্তং তে কতি হতা ইত্যপেক্ষায়ামাহ হতেখিতি তে হি পুরা মরীচেঃ পূলাঃ দৈবাঃ শ্রীবন্ধণ্যপরাধেনাক্ষর প্রাপ্তা হিরণ্যাকপুলাৎ কালনেমেকৎপন্নাঃ ধড় গর্তা ইতি থ্যাতাঃ স্বং পরিত্যজ্য বন্ধোপাসকাতে জাতা ইতি ক্ষক্ত হিরণ্যকশিপোঃ পিতা মুমান বিধিয়তীতি শাপং মুদ্ধা শ্রীদেবকী গর্তে যোগমারা দারা শ্রীভগবতা নিয়োজ্য তৎ পিছকালনেম্যবভারকংসহত্তেন ঘাতিতা ইত্যাদিকমত্র শ্রীহরিবংশাগ্যক্তমন্ত্রসন্ধেরং যত্ত্রে হিরণ্যকশিপোর্জাতা ইতি তেবামাখ্যানং তেনৈক্বাক্যথার কালনেমিক্ষেত্রে তত্মাদেব জাতা ইতি জ্লেরং জাতা ইত্যত্র পূলা ইত্যক্তক্তবাৎ ভারতাদিয়ু চ তথা

विश्वनाथठकावर्डी।

গর্জং দঞ্চার্য্য রোহিণ্যাং দেবক্যা বোগমারয়। তস্যাং কুক্ষিং গতঃ রুক্ষোবিতীরে বিবৃথৈঃ ছতঃ॥ • ॥

यস্ভিঃ সব্যক্ষণ্যত ইত্যক্তং তমেব বিরোধং প্রপঞ্চয়তি প্রলম্বেতি সার্দ্ধতারে। মহাশনোহ্বাল্পরঃ॥ ১ ॥

একে হক্রাদয়ঃ শ্রীক্ষণাবতার দর্শনোংকগাবদ্ধঃ তং কংসমত্কদ্ধানা স্তদাজাবর্তিনঃ॥ ২ ॥

সপ্তমো পর্তো বভূব যং গর্তমনস্তং প্রচক্ষতে। কীমূলং বৈক্ষবং থাম ক্ষ্মস্যাংশমিত্যর্থঃ।

বিতীয় অধ্যায়ে কংসু বধ নিমিন্ত দেবকীর গর্ত্তে ভগবান্ হরির আবির্ভাব এবং ব্রহ্মাদি কর্তৃক ভাঁহার তাব তথা দেবকীর সাস্থ্ন।॥ • ॥

ভকদেব কহিলেন হে রাজন্! মগধদেশীয় জরাসত্মের একান্ডাঞ্জিত মহাবল কংস প্রলম্ব, বক, চামুর, ছণাবর্ত্ত, অঘামুর, মৃষ্টিক, অরিষ্ট (র্যামুর) দ্বিদি, প্তনা, কেশী, ধেমুক, তথা অন্যান্য অহন স্থাল বাণ, ভৌম (নারকান্তর) প্রভৃতির সহিত মিলিত হইয়া যত্তদিগের পীড়া জন্মাইতে লাগিল, তাহাতে যাদবগণ নিপীড়িত হইয়া ক্রু, পাঞ্চাল, কেকয়, সাঅ, বিদর্ভ, নিষধ, বিদেহ এবং কোশল দেশে পলায়ন পূর্বক বসতি ক্রিলেন ॥ > ॥

ক্তিপয় জ্ঞাতি চিতাকুবর্তন পূর্বক কংসেরই উপাসনায় নিবিষ্ট রহিলেন ॥ ২০॥
- অনস্তর কংস কর্ত্ব ক্রেই দেবকীর ছয়ঃবালক নিহত হইলে জগবান্ বিফুর কলা যাহাকে অনস্ত

গর্ট্তো বস্থব দেবক্যা হর্ষশোকবিবর্দ্ধন:। ভগবানপি বিখাত্মা বিদিত্বা কংসজং ভয়ং।
যদূনাং নিজনাথানাং যোগমায়াং সমাদিশৎ। গচ্ছ দেবি ব্রজং ভদ্রে গোপ গোভির্লঙ্কতং ॥৩॥
রোহিনী বস্থদেবস্য ভার্যান্তে নন্দগোক্লে। অন্যাশ্চ কংসসংবিগ্না বিবরেষু বসন্তি হি ॥ ৪॥
দেবক্যা জঠরে গর্ত্তং শেষাধ্যং ধাম মামকং। তৎ সংনিক্ষ্য রোহিণ্যা উদরে সংনিবেশয়॥ ৫॥

द्यीधवचाभी।

পूर्क गर्ड माधात्रण मृद्यां टिनाकः ॥ ७ ॥

নমু সা গোকুলে কিমিত্যান্তে অত আহ অন্যাশ্চিতি ন কেবলং সৈব অন্যা অণীতি বিবরেষু অলক্ষ্যন্তানেষু ॥ ৪ ॥ অঠবে সত্তং নমু গর্ভ আকুষ্যমাণঃ কথং জীবেদিত্যত আহু মামকং ধামেতি তত্ততঃ ॥ ৫ ॥

বৈষ্ণবতোষণী৷

শ্রবণাৎ অথবা করভেদব্যবছেরং বাতনঞ্চ তেবাং বিস্ক্রর এবেতাগ্রে পঞ্চাশীতিতমাধ্যারে ব্যক্তং ভাবি এবং তেবাং হননে প্রভ-পবৎ ক্তোপেকাপি পরিষ্কৃতা ভাব। ঔপ্রসেনিনেতি দের্ঘাম্কং সাক্ষান্তরামাগ্রহণাব। বৈক্ষবং প্রীকৃত্যমরং বছাম অনন্তং সকর্বণং চতুর্ম্বাহ্ছিতীরং প্রচক্ষতে বদস্তাভিজ্ঞাঃ ॥

ভগবান্ স্বয়মের নিত্যরূপ: শ্রীকৃষ্ণ: বিধাঝা সর্বাংশী। অপি শব্দ: ক্লীরোদনায়পেক্রা। পূর্বাং স ব্রন্ধাদীন্ সমাদিশং। অধুনা স্বর্মসাবিশি। বোগমায়ামিতি। বিদিয়া নিবেদনং বিনাশি বদুনাং ভরং জ্ঞাত্বা তত্ত্বনিরাসার্থমিত্যর্থ:। সম্যক্ প্রোৎসাহনাদিপূর্বাক্মাদিশং। কুত: নিজা: শ্রীবস্থদেবাদয়ো নাথা বেষাং ভক্তবাৎসল্যাদিতি ভাবং। বোগো ভগবছুজিবিশেবং সএব ব্রন্ধাদীনামপি মোহনাঝারা তাং ক্লগংকারণশক্তিতোপি পরাবস্থামেকানংশাঝাং॥

পচ্ছেতাৰ্দ্ধকং। হে দেবি জগৎপূজ্যে তত্ত্বে সৰ্ব্ধমঙ্গলে এতৎ সৰ্ব্ধং তন্ত্ৰাঃ প্ৰোৎসাহনাৰ্থং বদা তত্ৰ গমৰে যোগ্যভোকা। পুনবিশেষেণ প্ৰোৎসাহয়তি গোপেতি অনেন ভেষাং গোপানাং গৰাঞ্চ তন্ত্ৰা অপ্যগম্যং পর্মান্দর্যাক্লপদ্বং দর্শিতং ॥ ৩ ॥

অন্তা বস্থদেবভার্যা: ॥ ৪ ॥

পৰ্ত্তং ক্ৰণং শেষাখ্যং শিষ্যত ইতি শেষোহংলঃ স আখ্যা খ্যাতিৰ্যক্ত তং মমাংশত্বেন খ্যাতমিতাৰ্থঃ। সামকং স্কৰ্ষণসংজ্ঞং ধাম

ক্রমসন্দর্ভ:।

(भवांशाः समाः भएकन व्यतिक्रिमिखार्थः। छः तक्ष्मं नामकः शाम चन्न्रतमाञ्चतः वा ॥ ১। २। ०। ॥ । ८ ॥

ঐবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

সাক্ষাদানন্দস্য কুক্ষিপতছাত্বৰ্য: কংসো বধিষ্যতীতি বৃদ্ধ্যা শোক: ॥ ৩ ॥

हेमानीः चग्नः छगवान् कृत्कारित सागमात्राः विमनामोनाः ठिष्ट्किवृद्धौनाः शक्यीः ॥

নন্দগোকুলে রোহিণ্যান্তে ইতি বজার্ডবধানস্তর- রোহিণ্যা অপি জাতং গর্জমালক্য রহসি লোক্যারা বস্থদেবেনৈব সা প্রেষিভা-কংসাৎ সংবিধা ভীতা: বিবরেযু রহসাহলেযু ॥ ৪ ॥

নামকং ধাম মদংশভূতং বলদেবস্বরূপং কীদৃশং শেব ইত্যাংশেন আখ্যা বস্য বলৈয়কাংশেন বিশ্বতা জগতী জগতং পতে ইত্যঞ্জিনেজে:। অতএব তস্য রোহিণী নিত্যমাত্কতেহিণি দেবক্যা গর্ভে মংগ্রবেশাস্থরোধেনৈর প্রথম তেন প্রবিষ্ঠং ততঃ স্থাং শং বলা যায়, তিনিই দেবকীর সপ্তম গর্ভ্ত ইলৈন, আনন্দ রূপ ভগবান্ অবতীর্ণ ইইবেন ইহাতে প্র গর্ভত যেমন হর্ষ বর্দ্ধক হইল, পূর্ব্ব প্রত্তের সহিত সাধারণ্য দৃষ্টিতে তেমনি শোকবর্দ্ধন হইতে লাগিল। সে বাহা হউক, হে মহারাজ! বিশাদ্ধা ভগবান্ কংস হইতে নিজাপ্রিত যাদবগণের ভয়ের বিবরণ অবগত ইয়াছিলেন অতএব স্বয়ং যোগমারার প্রতি এই আদেশ করিলেন, হে দেবি! হে ভজে! গোপ এবং গো সমূহে অলঙ্কত ব্রজপুরে গমন করে। এ।

বস্থদেবগৃহিণী রোহিণী নন্দগোকুলে অবস্থিতি করিতেছেন, কেবল জিনিই নহেন বস্থদেবের অভাভ ভার্যাও কংগ ভরে ভীত হইয়া অলক্ষ্য হানে একণে বসজি করিতেছেন ॥ ৪ ॥

তুমি গিয়া দেবকীর জঠরে যে শেষ নামক সন্তান আছে, আকর্ষণ পূর্বক ভাঁছাকে সোহিণীর

অথাহমংশভাগেন দেবক্যাঃ পুত্রতাং শুভে। প্রাপ্স্যামি দং যশোদায়াং নন্দপদ্ধাং ভবিষ্যসি॥৬॥

विभन्नभागी।

কিমর্থমেবং কার্ব্যং ইতাত আহ অংশতি অনম্ভরমেবেতার্থ:। অংশতাগেনেতি অংশৈ: শক্তিতি র্জনতেহ্ধিতিষ্ঠতি সর্বান্
ব্রহ্মানি তাম পর্যান্তাইতি অংশতাগা: তেন পরিপূর্ণেন রূপেবেতার্থ:। যথা অংশে জানিখর্য বলাদিতি ভাজরতি যোজয়তি স্বীয়ানিতি তথা তেনেতি। যথা অংশেন পুক্ষরপেণ মায়ায়া ভাগো ভজনং ঈক্ষণং যশ্ত তেন। যথা অংশেন মায়য়া গুণাবভারানিরূপা

বৈষ্ণবতোষণী।

क्रभः आधात्रणकिमत्रएवना अवः वै नमाक् व्यवैकिष्ठः सूर्थभूक्क निष्ठताः कृद्रे। ॥ e ॥

অথানস্তরমেবেতি দেবকীপুত্রস্বপ্রপ্রে বর্ষাং বোধরতি এবনেব শ্রীবলদেবস্যারকালাগ্রজন্বং তচ্চাত্রে ব্যক্তং ভাবি। অংশতি তৈ ব্যাথ্যাতং। তত্র প্রথমেহর্থে কর্ত্তরি বঞ্জু আর্য্য। বিতীরেচ নিজস্তবাত্তবং। তৃতীরেহংশেন পুরুষরপেবেত্যাদিকং ক্ষন্মতসহান্ধীনিতি ক্ষেমং যহা অংশানাং ভাগো ভজনং প্রবেশো যত্র তেন স্বরূপেন। যহা অংশানাং ত্রাধীনাং ভাগধেরেন হেতুনা। নম্ব শ্রীসম্বর্ধণাকর্ষণে প্রীমশোদারাং জন্মনিচ মম কা যোগ্যতা ইত্যপেক্ষারামাহ ওডে মরিদেশেনৈব প্রাপ্তমন্বলে তত্র স্বং যোগ্যা ভূরিত্যর্থঃ। এবং তাং প্রতি বরদানং ক্ষেমং। অতএব তয়া শ্রীনন্দাদিমোহনং বক্ষাতি যদা হে ভাগ্যবিত মতো যশোদারাং ভবিষ্যাসি। যশোদা রামিতি তেন তব যশং নন্দপত্মামিত্যানন্দণ্চ ভবিত্তেতি ভাবঃ। নিগুচ্নায়মর্থঃ। অংশভাবেন প্রকাশভেদেন দেবক্যাঃ পুত্রতাং প্রাপ্যামীতিত্রবং প্রকাশান্তরেন শ্রীমণাদারা অপি পুত্রতাং প্রাপ্তামীতি ক্ষেমং। অবতীন্ধে বিদ্যমানতামেব প্রাপ্ত্যাসি নতু পুত্রীদ্মিতি তথা ব্যবহারাভাবাৎ ইতি ভাবঃ। এতদ্বন্ধনমৈব ভবিষ্যাসি ইতি পৃথগুক্তং অন্যথা শ্রীমণোদারাং স্বং পুত্রতাং প্রাপ্তাসীতি বিভক্তিন

क्रममक्र्यः।

অথাহমিতি। অংশানাং ভাগো ভজনং প্রবেশো যত্ত তেন পূর্বস্বরূপেণৈর॥ ৬। ৭॥

শ্ৰীবিশ্বনাপচক্রবর্তী।

মরিবাদ শা্যাদনাদ্যাত্মকং শেষং তত্র দেবকীগর্জে স্থাপরিছৈব স্থমাত্ব রেহিণ্যা গর্জে যিবাদদিত্যর্থং। নম্ন শুদ্ধসক্ষরপারাং ভগবংপ্রকাশিকারাং মহাশক্ষে দেবকীদেব্যাং প্রাক্ষতানাং বছলর্ভাগাং কথং প্রবেশঃ সম্চিতীভবতি সভাং শুদ্ধসন্থয়ন প্রি প্রাক্ষনান্ধিরিটানাং প্রবিষ্টানাং প্রবিষ্টানাং প্রবিষ্টানাং প্রবিষ্টানান্ত প্রকাশিকার্যান্ত লিকার্ত্ত দেবক্যামপি বছলর্জাণামিত্যর্থঃ। যত্তকং। মংস্থানি দর্শকৃতানি ন চাহং তেছবন্থিতঃ। নচ মংস্থানি ভূতানি পশ্য মে বোগনৈশ্বরমিতি। কিন্তু কনের ভক্তিপরিপাটী প্রদর্শনার্থনেরেরং গীলাবগম্যতে। তথারি ভক্তমনে প্রবেশনীতি নাদিলক্ষণা ভক্তি তিন্তি তদার্ভ প্রবিদ্ধক্ষক ভূতত্বাং বিজ্বর বেলগান্দ তিন্তি হন্ত প্রতেবের সংসারাদ্ধক্রপে পতিয়ামীতি ততঃ প্রকটাভূতান্তরাং কালেন তে নিবর্ত্তে চ। ততো ভগবদ্দাংশ্রবণকীর্জনপরিচর্যাদিমরী ভক্তিরতিপ্রবৃদ্ধাভ্রতি ভক্তের্ভাগবংপ্রকাশক শুদ্ধ সর স্থার্থনাক্তির্বাদিমরী ভক্তিরতিপ্রকাভিত তালের কালেন তে নিবর্ত্তি ভক্তের্ভাগবংপ্রকাশক শুদ্ধ সর স্থার্থনাক্তির্বাদিমরী ভক্তিরতিপ্রবৃদ্ধাভ্রতি ভক্তের্ভাগবংপ্রকাশক শুদ্ধ সর স্থার্যান্ত বিশ্বরাদ্ধির প্রবিদ্ধান্ধির প্রবিদ্ধান্ত কালেন কালিন কালেন কালেন কালেন কালেন কালেন কালিন কালেন কালেন কালেন কালিন কালেন কালে

অংশৈ ক্লানবলাদিভি উল্লন মন্থবর্তনং ভজেষু যদ্য তেন দর্মথা পরিপূর্ণস্বরূপেণেতি ভারার্থদীপিকায়াং অংশানাং ভাগো-প্রবেশো যত্ত ছেন পূর্ণেন স্বরূপেণেতি। অংশানাং অন্ধাদীনাং ভাগেন ভাগেধেরন হেডুনেতি। বরং বৈষ্ণবতোষণ্যাং। যবা

উদরে সংস্থাপন কর। হে দেবি ! আকর্ষণ করিলে গর্ত্ত কি রূপে জীবিত থাকিবে, এ আশকা করিও না, তাহা আমারই অংশ॥ ৫॥

পরে আমি পূর্ণ ক্রমেণ দেবকীর পুত্রত্ব প্রাপ্ত হইব, তুমি নম্পত্মী যশোদার গর্ত্তে জন্মিও ॥ ৬॥

অর্চিষ্যন্তি মনুষ্যান্তাং সর্বকামবরেশরীং। নানোপহারবলিভিঃ সর্ব্ব কাম বরপ্রদাং।
নামধেয়ানি কুর্বন্তি স্থানানিচ নরা ভূবি। ভূর্গেতি ভদ্রকালীতি বিজয়া বৈষ্ণবীতিচ।
কুমুদা চণ্ডিকা কৃষ্ণা মাধবী কন্যকেতিচ। মায়া নারায়ণীশানা শারদেত্যন্তিকেতিচ॥ ৭॥
গর্ত্তসংকর্ষণাভং বৈ প্রাভঃ সন্ধর্ষণং ভূবি। রামেতি লোকরমণাৎ বলভদ্রং বলোচ্ছুয়াৎ॥ ৮॥

औधव्यामी।

ভাগা ভেদা যদ্য তেন যদ্ধা অংশা এব মংশা কুর্মাদিরপা ভজনীয়া নতু সাক্ষাং স্বরূপং যদ্য তেন যদ্ধা অংশৈজ্ঞনিবলানিভি জজনং অসুবর্ত্তনং ভজেষু যদ্য তেন সর্বাধা পরিপ্রেন রূপেণেতি বিবক্ষিতং রুষ্ণস্ত ভগবান্ স্বয়মিত্যুক্তবাং। তাং প্রোৎসাহয়তি স্বং বশোদায়ামিত্যাদি সাদ্ধিচতুষ্টয়েন॥ ৬॥

সর্কান্ পুত্রাদীন্ কাময়ন্তে যে তেযাং বরাং ঈশ্রীং শ্রেষ্ঠাং নিয়ন্ত্রীং অর্চকানাং সর্কান্ কামবরান্ প্রদলাতি ষা তাং ॥ ৭ ॥ অদ্বিকর্ষণেন্চ তদ্য ব্যাপদেশা ভবিষ্যন্তি ইত্যাহ গর্ভাকর্ষণাদিত্যাদিন।। রামেতি সম্বোধনং ক্রিষ্যন্তি। তথা সংক্ষতেন তেন

देवस्वद्यायनी ।

বিপরিণামেনৈবার্থ সিদ্ধিঃ স্থাৎ পূদ্রতামিতি সামান্যবচনছেন পুংস্বাব্যভিচারিত্বং যুক্তীনামিতিবং দধার সর্বাত্মকমাত্মভূতমিতি বক্ষ্যানা দিশা যথা দেবকী মাং মনসি ধাররিয়তি স্বগর্জদেবনাভিমংস্ততে চ তথা সাপি যথাচ দেবকা মা মাতৃত্বাহ্মভবস্তথা তস্তা-মপীতি। নন্দস্বাত্মক উৎপন্ন ইত্যাদৌ শ্রীশুকবাক্যে বির্তি উবিষ্যতি। অতো ভবতা স্তত্র সন্তা ব্যাক্ষ মাত্রাঞ্চ মন্ত্রা ক্রেতি যতে। ভবতী মারেতি॥ ৬॥

তদেবাভিব্যঞ্জয়তি অর্চিষ্যস্তীতি ত্রিভি:। মহুষ্যা ইতি প্রায় স্তেষামেব সকামত্বাৎ ধর্মেংধিকারাচ্চ। ইত্যাদিকঞ্চ তাং প্রতি বর এব। তথাচ শ্রীহরিবংশে। প্রসাদং তে করিষ্যামি মৎপ্রভাবসমং ভূবি। যেন সর্বান্ত লোকস্ত দেবি দেবী ভবিষ্যসীতি॥

নামেতি যুগ্মকং কুর্বস্থিত করিষ্যন্তি ভূবি বর্ত্তমানাঃ সর্কেষ্থপীত্যর্থঃ ছর্পাদিনামানি অর্চ্চকানাং ভাবভেদেন তত্তৎ কামা-পেক্ষয়া কিছা স্থানভেদেন তত্তদাধ্যয়া প্রসিদ্ধেঃ। তত্তচ স্থাপি নামৈকং কুত্রাপিচ দ্বে কচিচ্চ বহুনি ইত্যেতদভিপ্রায়েণ তত্র ভত্তেতি শব্দপ্রয়োগঃ চকারাশ্চ সর্কেষ্যমেব প্রাধান্তবোধনার্থমিতি ॥ ৭ ॥

পরম মৎ প্রেমময় শ্রীগোকুল সম্বন্ধেন তহাপি মাহাত্ম্যুদেষ্যতীতি সঙ্কর্ষণ প্রয়োজনান্তরমাহ গর্ত্তে বৈ এব গর্ত্তঃ সঙ্কর্ষণাদেব শ্রীবিশ্বনাধ্যক্রবর্ত্তী।

অংশভাগেন অংশাংশেন পুত্রতাং পুত্রভাবং প্রাঞ্জানি নতু সর্বাংশেনেত্যতঃ সা দেবকী ময়ি বাংসল্যটমন্বর্যভাবমন্ধং করিষ্যতীত্যর্থঃ। তেন ভাবাস্তরশূন্যং সম্পূর্ণমেব বাংসল্যন্ত্রথং শ্রীখশোদায়ামেব প্রাঞ্জ্যামীতি দ্যোতিতং। ত্বন্ধ বাংসল্যন্ত্রথং শ্রীখশোদায়ামেব প্রাঞ্জ্যামীতি দ্যোতিতং। ত্বন্ধ বাংসাদায়াং প্রীষ্ণ সমবাঞ্চ্যসীত্যসূক্তে ত্বয়ি স্মতান্নামপি সা বাংসল্যং ন করিষ্যতে। অলক্ষ্যবিগ্রহত্বেনেব তব ব্রজে বর্ত্তিয়ানাগ্রাণিতি ভাবং ॥ ৬ ॥

তবাংশভূতাং মায়ান্ত বস্থদেবেনানেষ্যমাণাং কংসং বঞ্চান্ত্রি বিদ্যাদি স্থানেষু প্রভবিষ্যন্ত্রীং নরা <mark>আরাধরিষ্যন্তীত্যাহ অর্চিষ্য-</mark> ন্ত্রীতি। যতঃ সর্বকামানাং লোকানাং বরাং শ্রেষ্ঠামীশ্বরীং॥

কুৰ্বজি ক্রিয়ান্তি তদেব মিদানীং মদবতারেণ ত্দবতারেণ চ লোকাঃ কেচিছৈঞ্চবাঃ কেচিছোক্তাশ্চ ভবিষ্যস্তীতি ভাবঃ॥ রামেতি সহ স্থাতি সমাসঃ॥ १। ৮॥

ভদে! তুমি উৎপন্ন হইয়াও যাহারা পুত্রাদি কামনা করিয়া থাকে তাহাদিগের শ্রেষ্ঠা নিয়ন্ত্রী হইবে এবং অর্চকদিগের সমুদায় কাম বর প্রদান করিবে, অতএব মানবগণ উপহার ও বলি দিয়া তোমার পূজা করিবে। আর পৃথিবীতে নর সকল তোমার স্থান করিয়া দিবে এবং দুর্গা, ভদ্রকালী, বিজয়া, বৈষ্ণবী, কুমুদা, চণ্ডিকা, কুষ্ণা, মাধবী, কম্মকা, মাধা, নারায়ণী, ঈশানা, শারদা, তথা অন্থিকা এই সকল নাম রাথিবে॥ ৭॥

আর হে দেবি ! তোমা কর্ত্ক গর্ত্ত আকৃষ্ট হওয়াতে তত্ত্বহ শিশুকে পৃথিবীর লোকেরা সম্বর্ধণ

সংদিষ্টেবং ভগবতা তথেত্যোমিতি তদ্বচঃ। প্রতিগৃহ্থ পরিক্রম্য গাং গতা তত্তথাকরোৎ॥ ৯॥ গর্ব্বে প্রণীতে দেবক্যা রোহিণীং যোগনিদ্রয়া। অহো বিস্রংদিতো গর্ব্ব ইতি পৌরা বিচুক্রুশুঃ॥১০॥

भिवत्यामी।

লোকস্য রমণাৎ রত্যুৎপাদনাৎ॥৮॥

তথেতি পুনরপি ওমিতি অত্যাদরেণ প্রতিগৃহ গাং পৃথীং ॥ ১॥

বিশ্রংসিতঃ বিশ্রস্ত ইত্যর্থ:। ইতি বিচ্কুতঃ নতু তদিহরিত্যর্থ:॥ ১০॥

देवस्ववरजायगी।

নতু শেষত্বাদিনা প্রালয়ানে জগদাকর্ষণাদিত্যর্থ:। গর্ত্ত সম্বর্ষণাদেব গোকুল প্রাপ্তাা সর্বেষণং লোকানাং রমণাং তরৈব বলস্ত উচ্ছু-য়াৎ আধিক্যাৎ তদীয়পরমপ্রেমার্জিতমনত্বরেতি ভাব:। বলং বলবহুচ্ছু য়াদিতি পাঠে বলবংস্থ আধিক্যাদিত্যর্থ:। বামেতি সহ স্থপতি স্থপ্ মাত্রেণ সমাস:॥৮॥

তক্ত ভগৰতো বচস্তদ্যপাদিষ্টং তথৈব নতু কিঞ্চিছ্যভিচারেণেত্যর্থ: ॥ ৯ ॥

যোগমানৈ যোগনিদ্র। নিজাবৎ সকললোক বোধ হরণাৎ তয়া প্রকর্ষণ নীত ইতি দেবকা৷ ছঃথাদিকং রোহিণ্যাদ্র বিশ্বয়ালকং গোকুলবাসিনাঞ্চ তল্পজ্ঞানাদিকং কিমপি নাভূদিতি বোধিতং। ত এচ শ্রীহরিবংশাছাক্তাপ্লসারেণৈব জ্ঞায়ং। প্রাণের শ্রীবস্থদেবা-হিতগর্জায়া: শ্রীরোহিণ্যাঃ পশ্চাদেগাকুলং গতায়াঃ সপ্তমে মাসি তং গর্জমপদার্য্য দেবকী জঠরাং সাপ্তমাসিকং গর্জমলক্ষিতমার্ব্য রোহিণ্যালবং নীত ইতি। তথাচ শ্রীহরিবংশে যোগনিজাং প্রতি শ্রীভগবহক্তো। সপ্তমো দেবকী গর্জো ঘোহংশঃ সোমো মমাগ্রজঃ। স সংক্রামিয়তবাত্তে সপ্তমে মাসি রোহিণীমিতি। তয়য়ন প্রকার বিশেষণ্ট তাত্তব। সার্দ্ধরাকে স্থিতং গর্জং পাতয়তী রজস্বলা। নিজ্রা সহসাবিষ্টা পপাত ধরণীতলে। সা স্বপ্লমিব তং দৃষ্ট্র। স্বগর্জে গর্জমাহিতং। অপশ্রস্তীচ তং গর্জং মুহূর্জং ব্যথিতা ভবং। তামাহ নিজাসংবিশ্বাং নৈশে তমসি রোহিণীং। কর্মণেনাস্ত গর্জস্ত স্বগর্জে চাহিতস্ত বৈ। সম্বর্ধণো নাম শুন্তে তব পুরো ভবিষ্যতীতাাদি স্বহো আশ্চর্য্যে থেদে বা দেবক্যা গর্জো স্রংসতঃ বিস্তন্ত বিশ্বস্তাতি। যদ্বা কংসেনৈব কেনচিত্পায়েন পাতিত ইত্যর্থ: ব্যক্তত্রা তদহ্কিস্তেষাং তম্বয়াং বিচুকুণ্ডঃ উচিতরার্জম্বরেণ ক্রজ্ব বিশেপ্রিতি বা॥ ১০॥

ক্রমসন্দর্ভঃ।

রামেতি সহ স্থপেতি স্থাত্রেণ সমাসঃ॥ ৮। ৯॥

বিস্রংসিতঃ পাতিতঃ। কংসেনেতি ভরাৎ কর্ত্বপদগুপ্তি:॥ ১০। ১১॥

ঞীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

তথেতি পুনরপ্যোমিতি অত্যাদরেণ তদীয়ং বচঃ প্রতিগৃহ গাং পৃথিবীং তত্তদনস্করং॥ ৯॥ বিশ্রংসিতঃ কংসেনৈব কেনচিন্মক্রৌষধাত্মপারেনেতার্থঃ। বিচুক্স্ ভঃ দেবক্যাং স্নেহব ওরা বিলেপুঃ॥ ১০॥

বলিবে। তোমা কর্ত্ব আকৃষ্ট হইয়া পরে তিনি সকল লোকের রতি উৎপাদন করিবেন, ইহাতে লোকে তাঁহাকে "রাম" বলিয়াও সম্বোধন করিবে। অধিকন্ত তিনি নিজ বঙ্গে অতিশয় উচ্ছিত ইইবেন ইহাতে লোকে তাঁহাকে বলভদ্র বলিয়াও ডাকিবে॥৮॥

হে রাজন্। ভগবান্ কর্ত্ক এই প্রকার আদিফা, হইয়া, ভাল তাহাই করিতেছি, বলিয়া মায়া তাঁহার বচন গ্রহণ করিলেন, অনস্তর প্রদক্ষিণ পূর্বকি অবনিতলে গমন করিয়া সেইরূপ করিলেন॥৯॥

হে রাজন্! যোগনিদ্রা কর্তৃক দেবকীর সেই গর্ত্ত রোহিণীর উদরে নিহিত হইলে পুরবাসী সকলে "দেবকীর গর্ত্ত বিজ্ঞান্ত হইল" বলিয়া চিৎকার করিয়াছিল, কিন্তু তবিবরণ কিছুই জানিতে পারে নাই॥ ১০॥

ভগবানপি বিশ্বাত্মা ভক্তানামভয়প্রদঃ। আবিবেশাংশভাগেন মন আনকতুন্তেঃ ॥ ১১ ॥ স বিভ্রুৎ পৌরুষং ধাম রাজমানো যথা রবিঃ। তুরাসদোহতিতুর্দ্ধর্ঘো ভূতানাং সংবভূব হ ॥১২॥ ততো জগন্মসলমচ্যুতাংশং সমাহিতং শ্রস্থতেন দেবী।

ञीधतवामी।

মন আবিবেশ মনস্যাবিৰ্বভূব জীবানামিব ন তস্য ধাতৃসৰদ্ধ ইত্যৰ্থ: ॥ ১১ ॥ ধাম শ্ৰিম্(ৱিং ॥ ১২ ॥

জগলাঙ্গলং জগতো মূর্তিমনাঞ্চলং। অচ্যতাংশং চ্যুতিরহিতা অংশা ঐশব্যাদরো যদ্য তং। যবা অচ্যুত্স্য অংশ ইব অংশতং ভক্তা-কুএহায় পরিচ্ছিল্লমিব বপুরিতার্থ:। সমাহিতং সম্যুভ্তমেবাহিতং বেদদীক্ষা অর্পিতং দেবী দ্যোত্মানা ভ্রুসব্বেতার্থ: সর্বা-

বৈষ্ণবতোষণী।

বিখন্ত আত্মা প্রভ্রপি ভক্তানামভয়ঙ্কর: তদানীং তচিত্তে ভাববিশেষেণ পর্যক্ষুরদিত্যর্থ:। তত্ত সর্বৈশ্ব্যপরিপূর্ণতয়েত্য-ভিপ্রায়েণ শ্রীভগবানিতি। এতদাদ্যপদ্যার্জ্য দর্শ্ব সম্মতং ন স্থাৎ অতএব শ্রীচিচ্ছুকেনৈবং ব্যাথ্যাতং মন আবিবেশ পৌকবং ধামেতি সম্বন্ধ ইতি শ্রীমাধিপাদানান্ত সম্মতং লক্ষ্যতে তথাচ তদ্যাধ্যানাং॥ ১১॥

পৌরুষং ধাম শ্রীভগবত্তেজঃ। মনসি শ্রীভগবদাবেশেন তত্তেজোহভিব্যক্তেঃ। যথা ধাম প্রাছর্ভাবং প্রভাবং বা। তথাচ বিশ্বঃ। ধাম দেহে গৃহে রশ্মৌ স্থানে জন্মপ্রভাবমোরিতি। ছ্রাসদং নিকটে গন্ধশক্যঃ চকুরাদ্যপ্রাহ্যে বা। অতএবাক্তিছ্র্বিং। অভিতবি-তুমশক্যঃ সম্যুখভূব হ। ক্টুং॥১২॥

সর্বাত্মকর্মণি আত্মভ্তং আত্মনি প্রান্তর্ভূতং পুত্ররূপতয়া দধারেত্যথং তেন জীববজ্য়াভাবাৎ ব্যক্তিরেব প্রীতগবতো জন্ম উচাতে। তথাচ প্রীমধ্বাচার্যাধৃতং তন্ত্রভাগবতবচনং অহেরমন্থপাদেয়ং যজ্পং নিত্যমব্যয়ং। সএবাপেকরপত্র ব্যক্তিমেব জনার্কন:। অগৃহান্ত্রতচিতি রুক্তরামাদিকাং তয়ংং৷ পঠাতে ভগবানীশো মৃত্ব্জিব্যপেকয়া। তমসা অপুগৃত্ত যতমং পানমীশিত্য। এতৎ পুক্ষর রূপত্র গ্রহণং সম্দীর্ঘতে। রুক্ত রামাদিরূপাণাং গোকে ব্যক্তিব্যপেকয়া ইতি। মহাবারাহ বচনঞ্চ। সর্বে নিভ্যাং শাস্থতাশ্চ দেহাতত পরাত্মন:। হেরোপাদের রহিতা নৈব প্রকৃতিজাং ক্চিৎ। পরমানক্সদোহা জ্ঞানমাত্রাশ্চ সর্বত ইতি। ভগবস্তমিতি শেষঃ। আনক্ষরতীত্যানক্ষাং করা যত চক্রস্ত তং অমৃতরশিত্বাং। অন্যতিঃ। যথান চূতে একোহপ্যংশো যত তং

ক্রমদন্দর্ভ:।

পেরিক্ষং ধাম ভাগবতং বপু:॥ ১২। ১৩॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

বিশ্বাঝা বিশ্বলৈয়ৰ প্রেমাম্পদীভবিষ্যন্ অংশেন প্রেষাদ্যবভার বৃদ্দেন সহ ভাগেন ভগসমূহেন ষউভ্রাধ্যেণ সহিত এব মন আবিবেশ মনস্যাবিবভূব। পরাবরেশো মহদংশ্যুকো হজোহণি জাত ইতি তৃতীয়োকে:॥ ১১॥

পৌরুষং ধাম পুরুষোত্তমস্য প্রাহ্রভাবং দধানঃ স্বশ্মিন্ প্রাহ্রভূতিং ক্লফং পশ্যন্নিত্যর্থঃ। ধাম দেহে গৃহে রশ্মৌ স্থানে স্বন্ধ প্রভাবয়ো রিতি বিশ্বঃ। হ্রাসদঃ প্রাণিভিরাসনীভবিত্ মশক্যঃ অতএবাতিছর্দ্ধর্যঃ কংসাদিভি রণ্যভিভবিত্নশক্যঃ॥ ১২॥

ততো তগবাংশুদেহাদেবকীদেহে প্লুবিষ্ট ইত্যাহ তত ইতি জগতাং মূর্ত্তিমন্ত্রকণ চ্যুতিরহিতা অংশ। নারারণন্সিংহাদরো বত্র তথা সর্ক্ষোং ভক্তানাং সর্ক্স্য শস্তোর্বা আত্মনো মনসঃ কং স্থাং বত্র তথ আত্মভূতং আত্মনৈব ভূতং স্বয়মাবিভূতিং নৃত্ বোগি-

সে যাহা হউক, তৎপরে ভক্ত জনের মভয়দাতা বিশ্বাত্মা ভগবান্ হরি পরিপূর্ণরূপে বহুদেবের মনে আবিভূতি হইলেন, জীব সকলের ম্যায় তাঁহার ধাতুসম্বন্ধ হয় নাই॥ ১১॥

হে রাজন্। বহুদেব ঐ প্রকারে পৌরুষ ধাম অর্থাৎ শ্রীমূর্তি মনোমধ্যে ধারণ করত সূর্ব্যের স্থায় দেদীপ্রমান হইয়া সর্ব্য স্থতের ত্রাসদ এবং অতিশয় ত্র্বর্ধ হইয়াছিলেন ॥ ১২ ॥

তদনস্তর পূর্বাদিক্ যজ্ঞপ আনন্দকর চন্দ্র ধারণ করে তজ্ঞপ দীপ্তিশালিনী শুদ্ধস্থা দেবকী বস্তুদেব কর্তৃক বেদদীক্ষা ধারা অপিতি অচ্যুতাংশ অর্থাৎ অচ্যুতের অংশ সদৃশ যে অংশ, যাহা ভক্তাঃ

49

मधात नक्षाञ्चकमाञ्चक्रः कार्छ। वशानव्यकतः मनदः ॥ ১० ॥ मा (मयको नक्षकशिकान निकामकृषा निकताः न (त्रदकः।

व्यवस्थामी।

আকং সর্বস্যাত্মানং অতএব আত্মভূতং ব্দিরাদাবেৰ সভং মনতঃ মনবৈৰ দ্বার ধারণয়া বুভবতী আত্রাহার্যণং দৃষ্টান্তমাহ যথা কাঠা প্রাচী দিক্ আনিক্ষরং চক্রমিতি॥ ১৩॥

সর্ব্য লগরিবাসস্য নিবাসভূতা সভাপি নিভরাং সর্বজনাক্ষাদকতয়ান রেজে কিন্ত বর্ষের আনন্দরতঃ কংসস্য গৃহে রুদ্ধা অতির নিদৃশ্যতে ঘটাদিযু রুদ্ধান্তিশিবের তথা সতী শোভনা সর্বতী জ্ঞানধলে জ্ঞানবঞ্চক রুদ্ধা যথা অল্লেবামমূপকারিশী ন রাজতে

देवकवरणावनी।

সর্বাংশ পরিপূর্ণ ভগবন্তমিত্যর্থ:। যত এবাত্মভূতং সর্বামূল অরপং সমাহিতং সাক্ষাদর্শিতবং প্রকাশিতং। হর্বশোক বিবর্দ্ধন ইতি।
পূর্বাং শোকোহপ্যক্তঃ অধুনাচ পরমানন্দ এব জাত ইত্যাহ সর্বোং আত্মনাং জীবানাং কং স্থাং বন্ধান্তং। যদা নচ বোগিনামিব
তদ্ধারণে যদ্ধ ইত্যাহ। আত্মনা ভূতং সমাহিতঃ সন্ যঃ অর্গেবাবিভূ ভিতমিত্যর্থঃ॥ ১৩॥

গছতীতি ৰগং ইতি নিজক্যা সর্ক্ষয়ত বাত্তবেলাপি অন্ত্ৰেমাতানিত্য এব সর্ক উচাতে। সর্ক শক্ষণ পৃথক্ পঠিষি ততঃ সর্কশবেদন তদতীতং সর্ক্ষিতি ততক নিতাত সর্কৃত্ত অনিতাস্যাচ সর্ক্ষয় নিবাস আর্দ্রাং বছা। বস্য ভাগেতাাদি প্রতে বিদান্ত্রের বিষয়ে তত্ত সর্কাল আন্তর্জা নিবাস আর্দ্রাং বাত্তবিদ্ধানিত বিশিষ্টত সর্কালিক শোভাবোপাটোজা। তাদৃত্তবি নিতরাং সর্কা- জাদকতরা ন রেজে কিন্তু আন্তর্জাকিত বিশিষ্টত অভৈবাজাদকতরা রেজ ইত্তার্থ:। বথা তাদৃত্তবিনিধা সরস্বতীচ নিতরাং সর্ক্রোলসকতরা ন রাজতে। কিন্তু আন্তর্জা বিশিষ্টস্যোলাসক্তরৈব রাজত ইত্তার্থ:। এতে, হি স্বদীঝা স্বর্জাসতঃ আন্তর্জানেবোলাসর্ভ ইতি। সর্ব্বতী পক্ষে আন্তর্জা তর্মা আদিকং অন্তিনিব্রের কর্জানেব

ক্রমসক্র ।

নেতি। সা শুদ্ধসবর্ত্তিরপত্বেন প্রসিদ্ধা। দ্যোতনান্দেবকীতি যথার্থনায়ী নিতরাং ন রেজে ইতি। তেজসঃ সর্বচক্ষ্:রু প্রসরণা-ভাবাদানক্ষস্য চ সর্ব্যনঃশ্বিতি ভাব:। পূর্ব্বোহত্ত দৃষ্টাস্কোহিছিশিথের ক্ষতেতি। উত্তরোহত্ত সতী জ্ঞানথলে যথেতি। তত্ত্ব কংসস্য

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

বদ্দব্দেন ধারণয়া মনস্যানীতং মনস্তো মনসা দধার তেন জীবকজননীজঠর সম্বন্ধো বারিতঃ। স্বতএবাস্তরপং দৃষ্টাস্তমাহ। কাঁচা প্রাচী দিক্ আনন্দকরং চক্রং মধেতি কিয়দিনানস্তরং তত্ত্ব সা স্বকৃষ্ণি মধ্যেৎপি কৃষ্ণং পঞ্চন্তী বস্তুবৈতি জ্ঞেয়ং। দিষ্টাম্ব তে কুষ্ণিগতঃ পরং পুমানিত্যবিমোক্ষেঃ॥ ১৩ ।

প্রাক্ততাপ্রাক্ত সর্বজননিবাসস্য শ্রীহরেনি বাসরুপা সত্যপি নিতরাং সর্বজনভাজ্ঞাদকতরা ন রেজে কিন্ত তত্রত্য স্বাক্তরত্ব দিত্রজন সহিত্তস্য স্বাক্তৈরের বিতঃ কংসস্য গৃহে ক্লা অধিশিখা ইবেতি সা যথা গৃহে ক্লা নগঁরং ন প্রকাশরতি কিন্তু গৃহস্থিতবন্দেব
তথা স্বস্মীপবর্ত্তিনাং বিজ্ঞাননাং শীতাদি নাশিকা চ তথৈবেতার্থঃ। বথা চ সা প্রবলা সতী রোধকস্য গৃহং দহতি তথৈব দেবক্যুপি কংস্বৈস্থার্থং ধক্যতীতার্থঃ। জ্ঞানখনে জ্ঞানবঞ্চকে ক্লা সরম্বতী সর্বলোকাত্মপ্রারিণী সতী যথা ন রাজতে পাপাতিশয়েন

সুগ্রহার্থ পরিচিছ্ন শরীর তুল্য হইয়াছিল, তাহা আপনার মনোধারাই ধারণ করিলেন। হে রাজব্! ভগবানের ঐ অংশ স্কাস্থা, অভএব অত্থেও দেবকীর আস্থাতে বর্তমান ছিলেন ॥ ১৩॥

সে বাহা হউক, নেধকী বনিও ঐ ক্লগে দৰ্ম লগনিবাস ভগবানের নিবাস ভূকি বইলোন, তথাপি দৰ্মজনানকভাজন হইনা অভ্যৰ্থ লোভা পাইতে পানিবান না, কেবল আপনিই আনসামূভব ক্রিতে লাগিলেন, ঘটাদিতে অবক্লয়া দীশ শিখার ন্যায় কংস্কৃত্ব ক্রেক্লয়া ছিলোন, অভএব জানব-ক্ষ হাজিতে নিক্লা সুন্দ্রতী বেশন অহতক উপজানিশী না হজাতে আজান লনকভ ক্রপে শোভা-মালিনী বহু না, ত্বৰ আনানকক ক্রপে দেবকীয় শোভা হবীল না, কেবল আপনিই দীপ্তিমতী

(जारकसरगरह श्विभिरियत क्रका नवस्त्री खानवरम वर्ग नंजी ॥ >॥ जार तीका करनः श्रव्याकिजास्त्राः वित्राष्ठग्रस्तिः ख्वनः श्रविक्रिकाः । स्वारेहर दम श्रावहत्वा हित्रश्चि हार श्वर खिला यह भूरवस्त्रीमृभी ॥ >॥ किममा जिलान कवनीयमास महार्थज्या न विहस्ति विक्रमः ।

वीधवयामी।

344 11 38 II

λ,

প্রভনা ভবনং বিরোচয়ত্তীং অভিড: অন্তরা কুক্ষিমধ্যে যস্যাক্তাং এব বিরোচমানং এবং হরিরের বন্ধস্বাদীল্শীয়ং পূর্কং নাসীং॥১৫॥

নতু সন্তি সামাদর উপালা নেতি স্বরং আহ অর্থমর্থতত্তো দেবকার্যপ্রধানঃ বিক্রমং ন বিহস্তি ন নাশরতি মহথে প্রাক্রমং করি-

देवक वर्रावनी।

সা এবলা তলগৃহমপি ধক্ষাতি। তাদৃশী সরস্বতীচ নিজাধারং প্লাণেন নাশরিবাত্যেব ইভি ভাবং ॥ ১৪ ॥

ৰীক্ষ্য সাক্ষান্দ্ৰী প্ৰভয়েত্যতা বিশেষ: জীবিষ্ণুস্রাণে। ন শেকে দেবকীং দ্রষ্ঠ্ং কশ্চিদপ্যতিতেজ্বসা। কাক্ষ্যমানাং ভাং দৃষ্ট্ মনাংসি কোতমাৰমূরিতি ভগবদানক ক্রিভাভাব্যাৎ। শুচি শুদ্ধং নতু পূর্ববিশ্বনার্থং সকপটং স্থিতং যন্তাভাং আহ স্বচিত্তে। শুহাং ক্ষরমূদ্রং বা। স্লেবেণ নাগভেব মম সিংহ ইব জীবণোহরং দ্রীং শ্রিভ ইতি ॥ ১৫ ॥ .:

কিমদ্যেতি অত্র টীকারাং ববেতাত পূর্বত কিন্ত ত্রিয়া ইতি যদি বিক্রমং ন বিহস্তি তথাপি দ্রিয়া ইতি জ্বেরং অদ্য অশ্বিরেবাহনি তত্রাপ্যাপ্ত অধুনৈব। এবং ভরেনৈব বং খদৌরাস্ব্যং তক্ত বিবেকেনৈব স্বয়ং করোমীতি স্বান্থিকান স্বধং করেছি দ্রিয়া ইতি

ক্রমসন্ধর্ত:।

জলাৃহ প্রবেশো পূর্বমন্থতৰ বিষয়ে ভবছন্তরং তু মনঃ প্রবেশাভাবালৈবেত্যাই ॥ ১৪ ॥

তামিতি। এব জীবন্ জীবরূপেণ দৃশ্যমানোপি লোকবহিত্বতদ্বসাম্যাৎ মৃত এব সংনিষ্ঠে হৈতুমাহ। অন্তর্গামিরূপতর। স্বরং প্রেডুঃ পরমেশ্বরো যত্রেতি। তস্য দোবমুজুণ শ্রীহরিবংশ স্বন্ধস্য স্বাভাবিকং গুণমাহ॥ ১৫॥১৬॥১৭॥

ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

স্বরোধ**কঞ্চ কালেন বথা নাশর**তি ভ**বৈব স্বাশরাধেন কংসমপি দেবকী নাশ**য়িব্যতীত্য**র্থ: ॥ ১৪ ॥** ।

প্ৰভন্না ভবনং ৰিরোচরস্ত্রীং অজিতঃ অন্তরে কুন্দি মধ্যে বস্যান্তাং। শুচি স্বাভাবিকমানন্দোখং নতু পূর্ববন্ধকার্যং সকণটং স্নিতং যস্যান্তাং বীক্ষ্য স্বপ্তমাহ মে মভক্ষসূত্য হরিঃ সিংহঃ বদ্বস্থাদীদূলী পূর্বং নাসীৎ ॥ ১৫॥

স্পাইমণ্যাহ তামিন্ মধৈনিথি আত ইদানীং কিং করণীয়ং গর্জহমেব তমিমং হন্যাং চের বাদস্থাদর্পতন্ত্র: স্বার্থপরোহণি লোকঃ বিক্রমং ন বিনাশরতি সম্প্রত্যাস্য বধে মম বীরম্ববাঞ্জা বিক্রমো নক্ষ্যতি তামাজ্ঞাত প্রবৃদ্ধতক্ষীভূতেনানেন সহ সংগ্রামে জন্ধে পরাজ্যে বা মম বিক্রমন্ত স্থাস্ত্যের গর্জবধ্যেত্ব কো বিক্রম ইতি ভাবং। ন কেবলং বিক্রমহানিরেব ধর্মাদিহানিরপীত্যাহ শ্লিয়া

ब्हेजा बिह्मा ॥ >8 ॥

পরস্ত কৃষ্ণি মধ্যে ভগবান্ বিষ্ণু অবস্থিত থাকাতে বিশুদ্ধ হাস্তম্থী দেবকী নিজাঙ্গপ্রভার বাসগৃহ আলোকময় করিতেছিলেন, একদিন কংস তাঁহাকে তত্রপে নিরীক্ষণ করিয়া কহিল, এই দীপ্তিশালী
ব্যক্তি নিশ্চর হরি, আমার প্রাণহর হইয়া, দেবুকীর গর্ত্ত রূপ গুহায় প্রবিষ্ট হইয়াছেন, কারণ দেবকীকে পূর্বেও দেখিয়াছি, অত্যে উদুলী দীপ্তিমতী ছিল না ॥ ১৫ ॥

একণে আমি ও বিষয়ে আই কি করি, এই হরি অর্থ পরতন্ত্র অর্থাৎ দেবকার্য্য সাবন তৎপত্ত, কথন অপিনায় বিজ্ঞান বিনষ্ট করিবেন না, আমাত্র বধ নিমিত অর্থা প্রাক্তম প্রকাশ ক্রিসেন্য সংগ্র ন্ত্রিয়া: স্বস্থ শুরুষত্যা বণোষ্যাং যশা প্রিয়ং হস্ত্যসুকালমারু: ॥ ১৬ ॥

স এব জীবন্ধপি সংপরেতো বর্ষ্টেত ষোহত্যস্ত নৃশংসিতেন।

দেহে মতে তং মসুজা: শপস্তি গস্তা তমোহন্ধং তমুমানিনো প্রবং।

ইতি ঘোরতমান্তাবাৎ সন্নির্ভ: স্বয়ং প্রস্তু:। আত্তে প্রতীক্ষংস্তুজ্জন্ম হরে বৈরামুবন্ধকৃৎ॥ ১৭॥

शिवत्रवागी।

ৰাতোবেতাৰ্থ: যদা তৰ্হি ইনমিদানীমেব হস্তৃামিতি বিচিন্তাহ অৰ্থতন্তোহণি পুমান্ বিক্ৰমং ন বিহন্তি ন নাশন্তি স্ত্ৰীবধে তন্ত্ৰাশঃ স্যাদিতি ভাবঃ। তদেবাহ জিন্না ইতি গুৰুষত্যা গৰ্ভধানিগাঃ॥ ১৬॥

কিঞ্চ স্বএৰ জীবন্ধপি মৃতঃ স্যাৎ নৃশংসিতেন ক্রোর্যোগ যো বর্ত্তেতং জীবস্তমেব মন্থলাঃ শপস্তি ছ্র্কাইক্যধি ক্ কুর্কন্তি। সচ দেহে বৃত্তে তত্ত্মানিনঃ পাপিনো নরকং গমিষ্যতি অথবা শাপ প্রকারমাহ তত্ত্মানিনোৎস্য দেহে মৃতে প্রবমন্ধংতমো গমিষ্য-তীতি॥ ১৭॥

বৈশ্বতোৰণী।

সার্ছেন অরং অদেহ রক্ষার্থক: ক্ষণিকোছিল বা সর্ব্ধকালং বল আদি হতি। ত্রিরা ইত্যাদের্থগান্তর স্বধ্যত্বে বল আদেশ বথোন্তরং তদপেক্যত্বে ত্রৈষ্ঠং বদর্থং বধক্তজ্জীবনুমণি হন্যাদিতি কিং তেনেতি ভাব: ॥ ১৬॥

নমু দিনানি কতিচিং যজ্জীব্যতে তদপি গুডং ডত্রাহ স ইতি এব জীবন জীব্বদবস্থানে দৃশ্বমানোহপি সৃত্এব। লোক ৰহিছ্-তভা সাম্যাদিতি ভাব:। থলু বিতর্কে। নৃশংসিতং হিংসা। মন্থলাং সর্বে এব মন্থ্যাং। অন্তব্যৈ তত্ত্ব ভন্নমানিনং পাপিন ইতি। দেহাত্মবুদ্ধাব পাপাভিনিবেশো ভবতীতি ভাব:। যথা দেহেহমুতে জীবতাপি কিথা দেহে স্তি মৃতে মরণে চ সভীদ্ধাই॥

ইতি এবং বিচারেণ। ভাবাদভিপ্রায়াৎ চেষ্টিতায়া সম্মের নম্বন্ধেয়াং মন্ত্রণাদিনা সম্যাজুর্ত্তঃ। নতু গর্জপাতনাদৌচ মন্ত্রং চকারেত্যর্থঃ। যতঃ প্রভ্রন্থনিরপেকঃ। যথা সম্মান্ত্রনির। নম্বন্ধস্মত্যা প্রভুঃ প্রভ্রম্থ ইত্যর্থঃ। বস্তুত্ত তত্ত্ব জ্ঞান্ত্রামিবশ এব আদিতি ভাবঃ। হরেবর্বরাদ্যশেষদোর হরছেন কিয়া সর্ক্র মনোহরছেন ত্রামতয়া প্রসিদ্ধতাপি মইদ্বরং দেব ক্র্সামূরছোইক্রন্ত্রনা তং করোতীতি তথা ভূতঃ সন্। বদ্যপি ভয়াৎ কংস ইভ্যুক্তং তথাপি ভয়ন্থানে বৈরম্পি ভবতীতি তথোচাতে। তস্য
হরের্জন্ম প্রতীক্ষমাণ আত্তে বভ্রেতার্থঃ। তং প্রতীক্ষায়াঞ্চ বিশেষঃ শ্রীছরিবংশে সচিবান্ প্রতি কংসোক্রো। মাসান্ বৈ প্রামাসাদীন্ গণয়ন্ত মম স্ত্রিয়ঃ। পরিণামেত্ গর্জস্য শেষং জ্ঞাসামহে বয়মিতি। অভ ক্রের্বা বদর্থং সপ্ত তে গর্জাঃ কংসেন বিনিপাতিতাঃ। তত্ত গর্জং প্রবন্ধেন ররক্ত্রস্য মন্ত্রিণ ইতি॥ ১৭॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰথৰ্কী।

ইতি অক্ষতা। অবিশ্যাঃ। অত্ন ভরেইনৰ যং মদৌরাম্যাং তবং ততু মবিবেকেনৈৰ ইতি ইনিমভিনানম্থং করিতং কংসেনেতি জ্ঞেরং॥ ১৬॥

গর্জং হতবতো মন জীবিতব্যমণি ধিকৃতমেবেত্যাহ দ ইতি। নৃশংসিতেন ক্রোর্যোণ। দেহে মৃতে সভীতি জীবতি তৃ বদ্যাপি তত্মাবিভাতি তদণীতি ভাব:। শপন্তি রে পাপিন্ কুন্তীপাকে পতেতি সাক্ষেপমূকৈরাক্রোশন্তি। ততক্ত তমুমানিন: গ্রাণান্তর হিংসরা ত্মতত্ম মানরতো লালরতো জনস্য ভোগাং যদধ্য তমন্তং প্রবমেব গল্ঞা গল্পতি॥ ১৭ ॥

দেবকীকেও বধ করিতে পারি না, এ স্ত্রীলোক, আমার ভগিনী, তাহাতে আবার গর্ত্তবিত্তী, ইহাকে বধ করিলে সর্ব্ব কালের নিমিত্ত যশঃ, জী এবং প্রমায়ুঃ বিনষ্ট হইবে ॥ ১৬ ॥

আর যে ব্যক্তি অত্যর্থ ক্রতা সহ জীবন ধারণ করে, সে জীবন সত্ত্বেও মৃত ত্লা, জীবদ্ধাতেই মসুবারা বিবিধ ফুর্বাক্য দারা তাহাকে ধিকার দেয়, অপর দেহ মৃত হইলে, সেই শরীরাতিমানি পাপির অন্তমন নরক প্রাপ্তি হয়। এই প্রকারে বিবেচনা করিয়া যদিও ঐ ঘোরতর ভাব হইতে আপনিই নিম্ম হইল, ফ্লাচ বৈরাহ্যক কর্ত হরির জন্ম প্রতীকা করিয়া থাকিল। ১৭॥

আসীনঃ সংবিশংন্তিষ্ঠন্ ভুঞ্জানঃ পর্যাটন্ শিৰন্। চিন্তায়ানো হাষীকেশমপশ্রেৎ ভ্রম্মাং জগৎ ॥১৮॥ ত্রন্মা ভবশ্চ তত্তেত্য মুনিভিনারদাদিভিঃ। দেকৈঃ সাকুচরৈঃ সাকং পীর্ভির্ধধনৈড্যন্॥ ১৯॥ সত্যত্ততং স্ত্যপরং ত্রিসত্যং সন্তাক্ত যোনিং নিহিত্ত সভ্যোত্ত।

विषद्रशामी।

সংবিশন্ শরান: ॥ ১৮॥

রন্যাভি গী। উ বুৰণং কামবর্ষিণং ঐজ্বন্ ভুষ্টু বুং ॥ ১৯॥

প্রতিশ্রন্তং স্তাং কৃত্মিতি ক্ষা: প্রথমং স্তাবেন স্থবন্তি স্ত্যব্রত্মিতি স্তাং ব্রতং সংক্রো যস্য স্তাং পরং প্রেষ্ঠং প্রাধি-

বৈষ্ণুবতোৰণী।

বৈরাছবন্ধবার আসীন ইতি চিস্তরানঃ অন্নমধুনৈবাবিভূরি মাং হনিষ্যতীত্যেবং ভাবনন্নিত্যর্থঃ ক্ষীকেশমিতি সর্বেক্তিন্তত পরিক্ত্রণেন ক্ষীকেশতাভিব্যক্তেঃ। যদ্যপি তক্ষরত্বদর্শনং যোগিনামপি স্ক্র্রভং প্রেমভক্তানামেব সম্পদ্যতে তথাপি তের্ পর্মানক্ষমরত্বেন অক্ষিত্তে পর্ম হংখ্যরত্বেনতি ভেদঃ ॥ ১৮ ॥

ভত্ত বন্ধনাগারে। আদি শব্দেন সনকাদিভি: তেরু শ্রীনারদস্যাদিখং কেবল পরম ভজ্যারাম্থেন মুখ্যখাৎ শ্রীহরিবংশোজস্য জগরদবভারার্থ জ্ঞানীর প্রবন্ধ বিশেষদ্য সকল তথা প্রহর্ষণ সর্বোধানি তেবামগ্রত আগমনাচ্চ। সাহচুট্র পন্ধাদিসহিতৈঃ প্রত্নান্ধ প্রত্নান্ধ বিদেষ্ট বহুত্বমার্থ। কিছা আগমনে মুভাদীনাং পশ্চাভাবেনাপ্রাধান্তাৎ। সহার্থবাগ ভূতীরাচ। প্রতৌ ভূ সর্বোধাং যৌগপদ্যেন প্রাধান্তাদের কর্জ্যমিতি। তৌ মুভাদিভিরভূপতৌ পূর্বমাগতৌচ পশ্চাত্তেচ তৌচ বৃগপদ্যের তুই ব্রহ্মার্থ। পূর্বং তেরামপ্রধান কর্জ্যেনককর্জ্যদ্বিরোধাৎ জ্বা প্রয়োগশ্চ॥ ১৮॥

সভ্যত্রতিষ্ঠিত ব্রতং প্রতিক্রতং বঃ ক্রিতং সংক্রোহ্পি সত্যঃ কিং পুনর্তরূপ ইত্যতোহ্ত্রাবতরণিদাং মুক্তমেবেতি ভাবঃ।

ক্রমসন্ধর্ড:।

শানীদ ইভি। বেনান্তে স দোবোহণি জন্ধণং বাস্যতীতি ভাব:॥ ১৮॥

ি ব্ৰেছে। অজাগমনে পশ্চাভাবি স্ন্যাদীনা মপ্ৰাধান্যাং। সহাৰ্থবোগে তৃতীয়াচ স্তবেতৃ যৌগপদ্যেন প্ৰাধান্যাং দৰ্পেবাং কৰ্তৃ-স্বৰেব বিষক্ষিত্ৰ মিতি। ঐড়য়লিভি বহুদং পূৰ্কাং মৃন্যাদিমিলিভৌ ভাবাগতৌ পশ্চান্তৌ চ তে চ তৃষ্টুব্রিত্যর্থঃ। পূৰ্কাং তেবামিশি প্রধানকর্ত্তুদ্ধেককর্তৃক্তাবিরোধাৎ জনু বোগশ্চ। ন বদিত্যস্য ব্যাধ্যায়াং॥ ১৯॥

সভ্যান্ততং বিশ্ববন্ধতি। সংখন সচ্চিদানক্ষবনত্বেন উপপন্নানি শ্ৰোতসিক বৃক্তি সিকানি ॥ ২০ ॥২১॥২২॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্ত্তী।

বৈরাম্বর্জনিতেন ভরেন কংসদ্য চিত্তাবেশং বির্ণোতি আসীন ইতি সংবিশন্ শরানঃ। চিত্তরানঃ চিত্তরন্ ক্ষীকেশং সর্কেল্লির বিষয়ীভূতং তল্পর্যদর্শনং প্রেয়া প্রমানক্জনকং ভয়েন তু প্রমন্থজনকমিতি ভক্তবৈরিণো তল্পর্য দর্শনস্য ভেগে। ভাইবাঃ॥ ১৮॥

র্বণং লীলামুতব বিণং ক্লকাবুদং। একা ভ্ৰমচতুর্দশকেদারমহারুষীবল ইব। ভবশ্চোরাদিত সাধুপ্লো নৃত্য বিনোদী মহা নীলকা ইব নারদাদিভি ভাদেকজীবনৈ মহাসোৎকাঠ চাতকৈরিব দেবে: কংসজরাসন্ধাদিদাবানলাবৃত্ত মহামতললৈরিব সহ ঐজ্বন্ ঐজ্বত তুই ব্রিতি বাবং। বছব্চনমার্বং॥ ১৯॥

দ্বমেৰ ৰাত্তবং বন্ধ সংসাৱেহ দ্বিল্লবাত্তবে। দং ভকৈৰ্গম্যাসে নান্দ্ৰারিতি স্বত্যর্থ ঈক্ষিতঃ। স্বভক্তপালনৈক ব্রত্যানিতা স্ত্যুস্বাচ্চ-

জপবেশন, শয়ন, অবন্থান, ভ্রমণ, ভোজন, পান সকল সময়ে কেবল হবীকেশের চিন্তা করাতে জগৎকে তদায় দেখিতে লাগিল। ১৮॥

ए भरीकिए। अहे ममरत नात्रणांति मूमि अंदर अपूर्णत ममिखिताराति रात्रदक्त, छश्यान् खन्ना अवर मरहभ रात्रकीत स्थान खनरन जाश्यन अक्तिया. विविध यहन शांता कामगर्विछश्यारनत छप जात्र कृति-राज्य ॥,>> ॥

छगवान् अख्रिक्षात्र मछा कतित्तम देशांद्य क्षे ददेश त्मनकात्रा अन्यकः मछाच सर्ग छन

সন্ত্যস্য সত্যমৃত্সত্যনেত্রং সত্যাত্মকং ত্বাং শরণং প্রপন্নাঃ ॥ ২০ ॥

ञ्चिथत्रचामी।

সাধনং যদ্মিন্ তং ত্রিসত্যং ত্রিশ্বপি কালের স্প্রে: পূর্বাং প্রেলরানন্তরং স্থিতিসমরেচ সত্যং অব্যতিচারেণ বর্ত্তমানং তদেবাহঃ সভ্যস্য বোনিমিতি সদ্ধন্দেন পৃথিবাপ্ তেজাংসি তাদ্ধন্দেন বাষাকাশৌ এবং সচ্চ তাচ্চ সন্তাঃ ভূতপঞ্চকং তং সন্তামিত্যাচক্ষিত ইতি ক্রতঃ তস্য যোনিং কারণং অনেন স্থাইঃ পূর্বাং বর্ত্তমানতোক্তা তথা সন্ত্যে তিন্তিরেব নিহিতং অন্তর্গমিতয়া স্থিতং অনেন স্থিতি-সমরেহিপি সত্যস্কর্ম্বাং। তথা সন্ত্যস্য সভাং তাম্যাই স্থাই বাংলিই বাংলিই প্রায়েশ স্থাই বাংলিই বাংলিই এবং ত্রিসভাত্মমূপ্রাদিতং। তথা অভসভানেত্রং অভঞ্চ স্থাতা বাণী সভাক সমদর্শনং তথা ভগবতা

বৈশ্বতোষণী।

আতঃ সত্যপরং সভ্যত্রভন্নাদেব সভ্যপ্রিরা ভবান্ তচ্চ তব প্রীতিং জ্বান্বা বিধীরমানঞ্চেৎ শ্রেষ্ঠং ভবতি শ্রেষ্ঠ্যঞ্চ তস্য তৎপ্রাধিন্দাধনতাপরন্ধনেবিত । তথা তৈ ব্যাথ্যাতং । অভঃ সভ্যক্রোশনেন ধরণ্যাপি বং প্রাপ্ত ইতি ভাবং । সচ ধর্মো মহাসভ্যস্য তব যুক্ত এবেত্যাক্য বিষাত্রামিতি । অভঃ কলেঃ প্রথমাংশমভিব্যাপ্য ত্রিষ্ঠ্যস্যাপি তবাবতারোহয়ং নাযুক্ত ইতি ভাবং । তিসভ্যমেব সভ্যস্য বোনিষিত্যাদি বিশেষণ্ত্রেরেণাপপাদিতং । সভ্যস্য সভ্যমিতি অসংহিতা নির্দেশন কাল ব্যবধানাং পৃক্ষপ্তরুক্ত পাদান্তবং সকাকু গানপ্লুতেন বা । তত স্তথেব ছেন্দোহমুরোধেন পঠনীয়ং । তদেবং সভ্যত্রতম্বং ত্রিসভ্যক্ষ চিত্র-মিত্যাক্তঃ প্রতেতি সভ্যা প্রিরাচ যা বাক্ সা স্থন্তা সৈব প্রতং সমমব্যভিচারি যক্ত্রানং তৎ সভাং তরোরিপি প্রবর্জকং প্রকাশক-ব্রতি তস্য তরোর্ধাঙ্ক্রমন্যার্ধ প্ররোর্ব্যভিচারিষং কৈমুভ্যেনামীতং বৈদিকরপরো স্বরোং পরমাশ্রমন্থন ত্রিসভ্যমিপি অবর্তে প্রসাদানের বরমপি ভবস্বং জানীমঃ স্বনশ্রেভাইন্তর্মে স্টেতিং । অস্তরিঃ । তত্র স্থাইঃ পৃক্ষং ইত্যনেন ভূতকালন্ত বৈশিষ্ট্যমুক্তং । প্রেলরাস্তর্বানি ভবিষ্ক দদাম্যেভন্তুতং মম ইতি লক্ষণং । অতো যাদবাদি স্বভক্তনামভ্যার্থং দ্ব্যাবতীর্ণং বৃক্তমেবেত্যর্থং ।
যতঃ সভ্যস্ত পরং সদা সর্ক্রথা মিথ্যা রহিতং ইত্যার্ক্ষ । অতএব ত্রিসভাং যতঃ সন্তাস্য ব্যবহারিক সভ্যন্ত প্রপঞ্চ যোনিমিত্যাদি।

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্ত্তী।

ত্বমেব প্রপ্রস্তাহ হিত্যান্তঃ। সত্যং ব্রতং যদ্য তং । সক্লদেব প্রপদ্ধে য ন্তবাদ্ধীতি চ বাচতে । ক্ষন্তং সর্বদা তবৈ দদাম্যেত্ব তং মনেতি বৃহুক্তে:। নচ স্বভক্ষপালকদেবতান্তরবং দনিত্যাহ্যুৎকুইন্চেত্যাহ। সত্যং সর্বালাদেশবর্তী পরঃ প্রেচ্চ তং। বহা। সত্যং সন্ত্যানানানং। সত্যে প্রতিষ্ঠিতঃ কৃষ্ণঃ সত্যমত্র প্রতিষ্ঠিতং। সত্যাৎ সভ্যোহি গোবিন্দ ক্ষন্তাৎ সভ্যোহি নামত ইত্যাদ্যম পর্বোক্তেঃ পরং পরমেশ্বরং। ত্বদুদ্ধিবলাদরোপি সত্যা এবেত্যাহাঃ। তিহাঃ জ্ঞান বল ক্রিয়া শক্তরং সত্যা যদ্য তং। ন তদ্য কার্যাং করণঞ্চ বিদ্যুতে ন তৎ সমস্চাভ্যধিকণ্চ দৃশ্যতে। পরাদ্য শক্তি বিবিধৈব শ্রন্থতে স্বাভাবিনী জ্ঞান বলক্রিরা চেতি শ্রুতঃ। দ্বাশা স্ক্রি স্ত্যাইত্যাহাঃ। সত্যাদ্য মৎস্য কুর্মাদ্যবতার বৃন্দশ্য বোনিম্কানস্থান মবতারিণ মিত্যর্থঃ। দ্বনাপি নিত্য মিত্যাহাঃ। নিহিতং সন্নিহিতং স্থিতিয়াত্বং সত্যে মণুরাবৈকুষ্ঠাদিলোকে। কিঞ্চ সারস্য সার ইতি বং সমস্তাচিন্বস্থসারন্থমেবেত্যাহাঃ সত্যস্য সত্য মিতি। বহা সত্যস্য বংকিঞ্চিৎ কালবর্ত্তনো মান্ত্রিকপ্রপঞ্চন্য প্রকাশক্ষাৎ সত্যং স্ব্রিকালবর্ত্তনং চক্ষ্ণন্দক্ক ক্ষত প্রোত্রম্য প্রেচাত্র

করিতে লাগিলেন্ যথা—ভগবন্! আপনি সত্যত্রত অর্থাৎ আপনকার সংকল্প সত্য, সত্যই আপনাতে প্রেষ্ঠ প্রাপ্তি সাধন অর্থাৎ সত্যাচরণ দারা আপনাকে প্রাপ্ত হওয়া যায়, আপনি তিন কালেই অর্থাৎ সৃষ্টির পূর্বের, প্রলম্নের পর এবং দ্বিতি সময়ে সত্য স্বরূপ অর্থাৎ অব্যভিচারে সর্বেদ। বর্ত্তমান আছেন, কারণ আপনি সভ্যের অর্থাৎ পৃথিনী জল তেজঃ তথা বায়ু আকাশ এই পঞ্চভূতের যোনি, স্ত্রাং সৃষ্টির পূর্বের, বর্ত্তমান ছিলেন। একণেও সভ্যে আর্কাশাদি ঐ পঞ্চভূতে অন্তর্যামিত্ব রূপে অবস্থিত রিয়াছেন, ইহাতে স্থানির সময়েও আপনকার সভ্যত্ম দৃষ্ট হইতেছে। আরু আপনি ঐ সভ্যের অর্থাৎ পৃথিব্যাদি পঞ্চ ভূতের সভ্য অর্থাৎ পার্মার্থিক স্বরূপ, বে হেতু তাহার বিনালে ত্মাপনিই অর্থাকেন, অভএব প্রলম্ন সন্তর্যা অর্থাৎ প্রাপনকার সভ্যত্ম নিশ্চয় হয়। অধিক স্কৃত্ত

একায়নোহদো বিফল দ্রি**মূল শচভূরদঃ পঞ্চবিধঃ ষড়াত্মা।**

विधवयोगी।

ব্যাধ্যাসম্মানত্বাৎ সত্যঞ্চ সমদর্শনমিতি ঋতঞ্চ স্থনৃতা বাণী কবিভিঃ পরিকীর্ত্তিতা ইতি ত্রেরার্নেত্রং নয়ন সাধনং নেতারং প্রবর্ত্তক-মিতি যাবং। এবং সর্ব্ব প্রকারেণ সত্যাস্মকং ত্বাং বরং শরণং প্রপন্না ইত্যর্থঃ॥ ২০॥

নত্ন ভবস্তোহিপি লোকেশ্বা মন্ত্ল্যা এব কিমিতি মাং শ্বণং প্রপদ্যন্তে নৈবং বাচ্যং দ্বমেবৈকঃ সর্বেশ্বঃ সর্ব স্থাটি কারণত্বাং বয়ন্ত ত্বেক শ্বণা এব লোকাদি রূপং বৈতঞ্চ সর্বাং তদ্যতিরেকেণ নান্তীতি বক্ত্ং হৈতপ্রপঞ্চং বৃক্ষরপেণ নিরূপরিও একায়ন ইতি অসৌ প্রপঞ্চ আদি বৃক্ষঃ বৃক্ষাতে ইতি বৃক্ষঃ। সমষ্টি বাষ্টি দেহরূপঃ ক্থংভূতঃ একারনঃ একা প্রকৃতিরয়নমাশ্রন্থা যস্য।
ত্বিফ্লাং ছে স্থ তঃ থে কলে যস্য সঃ। অরোগুণা রক্তঃ সন্ধ তমাংসি মূলানি যস্য সঃ। ধর্মার্থ কামমোক্ষান্ট্রারো রসা যস্য সঃ। পঞ্চেক্রিয়াণি ত্বক্ চক্ত্ নাসিকা জিহ্বা শ্রোত্ত সংজ্ঞকানি বিধা জ্ঞানপ্রকারা যস্য সঃ। যট্ উর্লয়ঃ শোক্ষোহন্তরামৃত্যুক্ষ্ণপিশাসা কোষা বা
আন্ধানঃ স্থতাবা যস্য সঃ। সন্ধ ত্বান্ত্র মাংস মেদোহন্থি মন্ধাণি ধাতব ত্বচো যস্য সঃ। পঞ্চভূতানি মনোবৃদ্ধাহন্ত রাক্ষ

বৈষ্ণবতোষণী।

নমু দেবকীগর্ত্তে প্রবিষ্টস্য কথং সন্ত্যযোনিছাদিকং ততাহঃ সন্ত্যাত্মকং সত্যো বিকাররহিত আত্মা শ্রীমৃর্তি র্যস্য তং অতং সমানং॥২০॥

ৰিখগ ইত্যধিষ্ঠাতৃত্ব মাত্ৰ বিবক্ষমা দাম্যেনৈৰ নিৰ্দেশঃ বিশেষস্ত তয়োৱেকঃ খাদতি পিপ্লোন্নমিত্যাদৌ ক্ষেয়ঃ। এবমনয়ো বৃক্ষা-ক্ষবাতাবাৎ প্ৰপঞ্চাতীতৰং দৰ্শিতং। প্ৰবাহ ৰূপেণ প্ৰথমত এব বৰ্ত্তমানস্থাৎ। আদিশ্চাদৌ সদাকালচ্ছিদ্যমানস্থাৎ বৃক্ষত। তত্ৰ সুখ দুঃখ ৰূপে কলে চতুৰ্বসঃ। স্বগষ্ট বিটপ ইত্যক্ৰচ চহ্নশঃ প্ৰুতস্বৰেণ ঘটনীয়ং। অন্তত্তঃ। তত্ৰ একায়ন ইতীত্যস্তে ৰাভ্যামিতি

. ীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

মিতি বং। সত্যং কেবেদং বিশ্বমন্থকতেতি মাধ্বভাষ্য প্রমাণিত শ্রুতঃ। হৈ খত নিত্যসত্যস্বরূপ। সত্যং নেত্রং সর্বেজি-বোপলক্ষকং নয়নেজিয়ং যস্য তং সত্য আত্মা শ্রীবিগ্রহো যস্য তং॥ ২০॥

নমু বদি দেহেক্সিয়ধামাদি বিশ্লিটোহহমেব সত্যস্তর্হি জগদিদং কিমসতাং তত্র জগতং সত্যত্তেহপি কালছেনাছং তব তু তনভাব ইত্যাহ: । একারন ইতি । অসৌ প্রপঞ্চ আদিবক্ষো ভবতি । প্রথমত এব প্রবৃত্তবাদাদিং বৃণ্টাতে কালেন ছিলাতে ইতি বৃক্ষং । সমষ্টি বার্টি দেহরূপং । একা প্রকৃতিরয়নমাশ্রমে যস্য সং ৷ বে স্থগছংখে ফলে যস্য সং ৷ অরোগুণা মূলানি যস্য সং ৷ চত্বারো বর্ণধর্মা আশ্রম ধর্মা বা রসা যস্য সং ৷ পঞ্চ ইক্রিয়াণি বিধা জ্ঞানপ্রকারা যস্য সং ৷ ষট্ উর্ময়ং আয়ানং অভাবা যস্য সং ৷ অত্ত শোক মোহ জরা মৃত্যু কুংপিপাসাং বৃদ্ধারং ৷ সপ্তধাত্র কচো যস্য সং ৷ ত্রস্থাংস মেদোহস্থি বশা শুক্রাণি ধাতবং ৷ অটো পৃথিব্য-

আপনি সত্যের অর্থাৎ স্থন্তী বাণীর ও সমদর্শনের প্রবর্ত্তক, এইরূপ সকল প্রকারেই আপনি সত্যা-জাক হইয়াছেন, আমরা, সত্য রূপি আপনকার শরণাপন হইলাম ॥ ২০ ॥

প্রভা! আপনি যদি এ রূপ বলেন তোমারাও ত লোকেশর অতএব মং সদৃশ, কেন আমার শরণাপম হইতেছ। এ রূপ বলিবেন না, সর্ব্ব স্ট্রাদির কারণ প্রযুক্ত আপনিই এক সর্ব্বেশ্বর, আমরা আপনার আপ্রিত, লোকাদি রূপ হৈত প্রপঞ্চ সকল আপনা ব্যতিরেকে কিছুই নাই, হে ভগবন্। এই প্রপঞ্চ আদি রুক্ষরূপ অর্থাৎ সমষ্টি ব্যত্তি দেহরূপ। এক (প্রাকৃতি) ইহার আপ্রা। ছই (স্থাত্যথ) ইহার ফল। তিন (সন্ধু, রজাং, তথা, তথার) ইহার মূল। চারি (ধর্ম, অর্থ, কান, মোকা) ইহার রুল। পঞ্চ (প্রোত্ত, ক্রক্ চর্মুং, জিল্লা, নাসিকা এই ইন্দ্রিপঞ্চক) ইহার জ্ঞানপ্রকান ভ্রার (পোক্ষ, মোল, মান, মুখ্য, ক্ষা, পিপাসা) ইহার স্ক্রান। সন্ত (স্ক্র্ট্র, রুলার, মানে, মোল, অফি, মানে, অফি, মানে, অফি, মানে, অফি, মানে, অফি, মানে, অফি, মানে, অফি, মানা, উফান, উহার ছক্। অন্ত (সঞ্চুত এবং মনঃ বৃদ্ধি, অহ্লার) ইহার বিটপ অর্থাৎ লাখা বিস্তার। নর (নহ ইন্সির কিছেন্ত) ইহার থার। ক্ষা অর্থাৎ প্রাণ, অপান, সমান, ফ্রান্দ্র,

সপ্তত্বগক্ত বিটপো নবাকো দশচ্ছদী **বিধপশ্চাবিরকঃ ॥ ২১ ॥**ত্বমেক এবাস্থা সতঃ প্রসৃতিত্বং সন্ধিনানং ছম্মুগ্রহশ্চ।
তুন্মায়য়া সম্পৃতচেতসন্তাং পশুন্তি নানা ন বিপশ্চিতো যে ॥ ২২ ॥

ञ्चैभव्रवामी।

এবমষ্টো বিউপা ৰস্য সং নব বারাণি অক্ষাশ্ছিজাণি যস্য সং। দশ প্রাণাশ্ছৰাং প্রাণি বিদ্যন্তে যস্য সং দশচ্চদী বৌ জীব প্রমা-থগৌ যন্মিন্ স্থানো সং বিথগং॥ ২১॥

এবং রূপস্য সংসার বৃক্ষস্য সতঃ কার্যস্থিমেক এব প্রস্থৃতিঃ প্রকর্ষণে স্তির্জন্ম যদ্মাৎ স কারণমিত্যর্থঃ। ছমেব সন্নিধানং সংনিধীয়তেও দিন্তি লরস্থানং ছমেবাত্রাইণ্চ অনুগৃহাতি যঃ সং পালকঃ। নতু বৃদ্ধ বিষ্ণু কলা এবংভূতাঃ প্রাসিকাঃ কথমহমিতি চেত্তবাহুঃ ছন্মান্ত্রেতি সংবৃতং পিহিতং চেতে। জ্ঞানং বেষাং তে ছামেব নানা পশ্যন্তি বেজু বিপশ্চিতো বিছাংসঃ তে তথা নপশ্যন্তি॥ ২২॥

বৈষ্ণবতোষণী।

শেষঃ পঞ্চেত্যাদে আনেতি করণে লাট্। বৃক্তাণীজিয়পঞ্চক সভাবত্তেন। পশুন্তি পাদপা ইত্যাদে প্রশিদ্ধঃ। কোষা গুলাংস ক্ষিরমেদে। মজ্জাদ্বীনি। লোম রক্ত মাংস সাধৃষ্টি মজ্জান ইত্যেকে। ধাতবন্ত গুণাদরঃ শুক্ত সহিতাঃ সপ্তাদ্বিভি সপ্তাবরণানি গুণ্যস্তেতি বা॥ ২১ ॥

মৃহ: ছম্পদপ্রয়োগ তত্ত্ব তদিতর ব্যাবৃত্তি দার্চার্থ:। यহা নমু প্রস্তুতি: সন্ধিনাং চ মহাপুরুব:। অনুপ্রহো বিফ্:। কথনহমেব তত্ত্রজন তত্ত্রাহ: ছদিতি। অকার প্রশ্লেবেশ ছনারন্না বেতু অসংবৃত চেতদ তে নানা ন পঞ্জী কিছেকমেব পঞ্জীতার্থ:। এবং সর্বেরাং ভগবজ্ঞপাণামভিন্নবং চাভিপ্রেত:। একত্ত্বের ভগবিপ্রিহত্ত স্বাভাবিকাচিত্তাশক্ষ্যা নানা ক্রপতা সমাবেশাং। উপাসনা ভেনেনৈব দর্শন ভেদাক্ত। যথোক্তঃ শ্রীনারদপঞ্চরাত্রে। মণির্যথা বিভাগেন নালপীতাদিভির্যুত:। ক্রপ্তেভদমবাপ্রোতি ধ্যানভেদান্তথাচ্যুত ইতি। মণিরত্র নানা ক্রবিধারী বৈদ্ব্যাথ্যো জেন্তঃ। যব। সংবৃত্ততে সংস্কর্মন্ন অনীয়ন্ম মান্ত্রা এব পূর্ব্বোক্তং নানাবিধং ছাং পঞ্জত ত্রের নানাহমসৌ প্রাপ্রোতি ইতি মন্তন্ত ইত্যর্থ:। বে বিপশ্চিত ক্রেত্ত তন্ত্র তথা ন মন্তব্র। কিন্ত স্বাভাবিকশক্ত্যেবতার্থ:। অন্তং সম্মানং। এবং সর্বেরামেব শ্রীভগবজ্ঞপাণ্যমমান্তিকছং। সচিদানক্ষ্যনর্পত্ব

শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

থেজো বাধাকাশ মনো বুজাহকারা বিউপা: শাথা বিস্তারা যদ্য স:। মব বারাণি অক্লাভিছাণি বস্য স:। দশ প্রাণাভ্দা: প্রাণি বিদ্যান্তে যদ্য স: দশন্ত্দা। বৌ জাবেশবের থগো যদ্মিন্ স:॥ ২১॥

ছচ্ছকি কার্যাছাদ্শোহরং ছদীর এবেত্যাহা। ছমেব অদ্য প্রথকর্কদা সতঃ সত্যদ্য এক এব প্রস্তক্তরংপাদকা। সন্নিধানং লর্জনিং অনুগ্রহং পালক:। ভাব প্রধান নির্দেশেন তও্রাধিক্যমভিপ্রেতং। নমু ভবদাদ্যো এক বিষ্ণু কলা এবছ্তাঃ প্রদিদ্ধাঃ ক্থমহমিতি চেত্রভাহা। ছেরারলা অসম্ভ চেত্রঃ অনার্তজ্ঞানা বাং নানা ন প্রাস্তি যে বিপশ্চিত তেওঁ। একাদীনাং অদব্তার্জাদিভি ভবিঃ॥ ২২॥

ব্যান এবং নাগ, কুর্মা, কুকর, দেবদত ও ধনময় এই দল প্রাণ ইহার প্রান্ত ছই (জীব ও প্রমাত্মা) ইহাতে প্রক্রী॥ ২১॥

ভগবন্ ! এবছিধ কার্য্য রূপ সংসার রুক্ষের জন্ম এক আপনা হইতেই হয়, অর্থাৎ একমাত্র আপ-নিই-এই সংসার ক্ষেত্র-কার্ব । অপর আপনিই ইহার সমন্থান । আপনিই ইহার পালক। মাহাদি-বের জ্ঞান-আপনকার মারায় আফ্রের, তাহারা আপনাকেই রক্ষা, বিষ্ণু, ক্ষুত্র, বলিয়া নানাবিধ অবলো-কনু করিয়া থাকে, বিহান গুরুষেয়া জন্মপ্র দেখেন না ॥ ২২,॥ বিভর্ষি রূপাণ্যৰবোধজাত্মা কেমায় লোকস্ত চরাচরস্তা।
সব্যোপপন্নানি হুথাবহানি সতামভন্তাণি মৃহঃ থলানাং ॥ ২৩॥
ত্বযুস্থাক্ষাকামলসব্ধান্ধি সমাধিনা বেশিত চেতদৈকে।

क्रीभवचामी।

নস্থ দেবকীস্থতং মাং কথমেবং বর্ণমথেতি চেক্তত্রাহং বিভর্ষীতি। অবরোধ রূপ আআ তং রূপাণি মৃত্রী বিভর্ষি ধৎদে নতু ত্বং কন্তাপি পুত্র ইত্যর্থঃ। ক্ষেমার পালনার স্তাং ধর্মবর্তিনাং সুথকরাণি খলানাং অভ্যাণি নাশকরাণি॥ ২০॥

ন কেবলমেতাবভক্তানাং মোক্ষার্থ মপীত্যাত্বঃ স্বয়ীতি। স্বরি সমাধিনা স্পাবেশিতচেত্সা নিসিভেন তৎপাদপোতেনাশ্রি-

देवकवरजावनी।

অববাধ রূপ আত্মা সর্বান্ধ শ্বরূপ: প্রীদেবকীনন্দনাধ্যন্থমেব সন্ধেন সচিদানন্দখনত্বেন উপপন্নানি শ্রোত যুক্তি সিদ্ধানি রূপাণি পুরুষাখ্যাদীনি মুহার্বিভর্ষি লগৎস্কাই: প্রতিধৎসে প্রকটয়সীতার্থ:। অতো দেবকীলক্ষণনিজ্ঞপাক্তি হারা প্রাকট্যান্তব তরন্দনত্বেশি তাদৃশত্বক ন ব্যাহস্তত এবেতি ভাব: লোকক্ষেমার্থতে হেতু: প্রথেত্যাদি। সৎপালন ধলদগুডাড্যামেব তৎ সিদ্ধেং ধলানামপি হুই কর্মতো নিরুত্তে:। সন্তোহত্ত ধর্মমর্ব্যাদা কারকা: থলা স্তল্লোপকা ইতি। অস্তর্টন্তে:। বছা ত্বকে এবাস্থেত্যাদাবেব শ্রীদেবকীনন্দন রূপক্তৈব তন্ত তাদৃশত্বং নির্দ্ধার্যাদ্যমবাবতার্যাং তেষাং নানা রূপাণাং প্রয়োজনমাহ বিভর্ষীতি তদেবং সর্বোম্ব অন্ধাণাং তাদৃশত্বে সিদ্ধে কিমৃত স্বয়ং ভগবতন্তবে ইতি ভাবঃ॥ ২৩॥

অন্ধ তাৰন্ধজ্ঞপাবির্ভাব সমরগতানাং তেবাং বার্তা অন্তদাপি মনোমাত্রেণাপি লব্ধতদাশ্রমাণামনামাদেনাথিল সংসার হু:থনাশঃ পরম স্থাব্দরপ ঘৎপ্রাপ্তিশ্চ ভবতি তৎপ্রসঙ্গেনাজেবামপি আদৃশত্বং সম্পদ্যত ইত্যাত্বং দ্বনীতি দাভ্যাং। পরম স্থাত্মক তৎ পার দ্বীপার্মানে দ্বরি হে অধুস্কাক্ষেতি পরম সৌন্দর্ব্যমুদ্ধিইং। অনুমাবেশে হেতুঃ। কিঞাথিলন্ত অথগুন্ত সবক্ত চিচ্ছক্তিবিশেষাচিন্ত্যা-

ক্রমসন্দর্ভঃ।

বিভবীতি। লোকদৃষ্টিং প্রতিধৎসে প্রকটয়সীত্যর্থ:। অতো দেবকীলকণনিজশক্তি দারা তব প্রাকটোন তৎপুত্রত্বেংশি তাদৃশত্বং ন ব্যাহতমিতি ভাব:। ন কেবলং পালনার্থং কিন্তু ভক্তজনানাং স্বায়্ভবানন্দাবেশার্থমিশি রূপং বিভবি। বেনোভীর্যমানমুত্তীর্ণঞ্চ ভবানিং জানস্তি তৎসংসর্গেনান্যেংশি তাদৃশা ন ভবস্তীত্যান্ত:॥২৩॥

বন্ধীতি। হে অব্জাক ইতি সৌন্দর্য্যং ব্যঞ্জিতং অখিল সত্ত্যায়ীতি অপ্রাক্তত সত্ত হেতুক নিরতিশয়ানাং ন গুণা ত্বং প্রাকৃত সত্ত্যায় থণ্ডাত্বেন সাতিশয়ত্বাৎ পরিমিত কার্যাত্বাচ্চ। অমলেতি পাঠে প্রাসিদ্ধ সত্ত্বাধ্যানেনাপি তাদৃশত্বং ব্যক্তং। তাদৃশে ত্বি তবসমূত্র-

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

অন্যেহপি মৎস্যকুর্মাদয়ো বহবন্ধনীয়োরাঃ সম্ভীত্যাহঃ। বিভবী জি। অববোধঃ চিদ্দনরূপঃ। সম্বোপপরানি শুদ্ধসম্পর্ক পাণি থলানাং অভন্তাণি অভন্তকরাণি ৪৩॥

কেমারেত্যক:। তদেব কেমং বাস্তবম্ভিব্যঞ্জরিত পরীতি থিলং নিজ্ঞাং সত্তং গুণাত্মকং অথিলসত্তং বিশুদ্ধ সত্তং নিশুণং ধাম অক্সপং যস্য তদ্মিন্। অমল সত্তেতিচ পাঠঃ স্মাধিনা পৃথিব্যামবতীর্ণস্য তব রূপগুণলীলাদি ধ্যানাতিশয়েন স্বয়াবেশিতং বচ্চেত

ব্রহ্মন্ ! স্থাপনি এরপ বলিবেন না যে আমি দেবকীপুত্র আমাকে এরপ বর্ণন করিতেছ কেন? প্রেডা ! স্থাপনি জ্ঞানস্বরূপ আস্থা, চরাচর জগতের কল্যাণার্থ সময়ে সময়ে বিবিধ মূর্ত্তি ধারণ করেন, বর্দ্ধতঃ স্থাপনি কাহারও পুত্র নহেন। স্থাধিকস্ত আপনার ঐ মূর্ত্তি সত্ত্ত্বণান্থিত এবং ধার্ম্মিক জ্ঞানগরের স্থাবহ ও ধলদিগের বিনাশ কর। অত্তবে অপিনাকে ঐ রূপ বর্ণন করা অনুচিত নহে॥ ২০॥

তে অব্রাক্ষ ! আপনি নির্মালসত্তাণের ধাম, প্রধান প্রধান বিবেকিপুরুষ সমাধিযোগে আপননকার চর্ণ রূপ জরণী আশ্রের পূর্বেক ভবসাগরকে গোষ্পদ (ভূচই) করিয়া থাকেন অর্থাৎ যে সকল পুরুষ নিকাম হইয়া আপনকার ভলনা করেন ভাঁছাদের অনায়াসে মুক্তি হয়। ছে দেব ! কেবল

ত্তপাদপোতেন মহৎ কুতেন-কুৰ্বান্তি লোকংসপদং ভবানিং। ২৪॥ স্বরং সমূতীর্য্য স্ত্তরং হ্যমন্ ভবার্শকং ভীমসদশ্রসোহনাঃ।

वीधत्रवामी।

তেন একে মুখ্যা বিবেকিন: মহন্তি: ক্লতেন সেব্যতয়া সম্পাদিতে নয়ছা ইদমপি মায়াময়মিত্যনাদরং পরিত্যক্স ইদমেব মহৎ সর্ক্ষোংকৃষ্টমিতি মনসি ক্লতেন বছমতেনেত্যর্থ:। ভবান্ধিং তুল্জং কুর্কস্তি অনারাদেন ভক্তমানানাং নিকামাণাং মুক্তিরিত্যর্থ:॥ ২৪॥

নমু তেন পোতেন চেৎ পূর্ব্বে পারং গতাঃ তহীদানীস্তনানাং কা গতি স্তত্তান্তঃ স্বীয়মিতি। অরমর্থঃ হে ছামন্ স্বপ্রকাশ ছং পাদপোত সামীপ্য মাত্রেণ ভবাস্থাে বংসপদ মাত্রে জাতে তত স্তান্তিরপেক্ষাঃ অরমেব অন্তেষাং ভীমং স্কৃত্তরমপি ভবার্ণবং সমু-স্ত্রীর্য্য ভবং পদাস্তোক্ত রূপাং নাবং অত্তৈবে নিধায় ভক্তিমার্গ সম্প্রান্তার্গ পারং যাতাঃ তৎ কিং যতঃ অভদ্রসৌহ্নদাঃ সর্ক্তৃতেষ্তিপ্রীতিব্বকাঃ অতত্তেবাং তর্ণায় নিধায়েতি। কথং মং পদাশ্রয়ণ মাত্রেণ তীর্ণা অত উক্তং ভবান্ সদম্প্রহং সতো

বৈশ্বতোষণী।

পরিমিত সর্ব্ধ স্বাপ্তাত্মক ত্বীর অরপ স্থাভিব্যশ্বক শুদ্ধসন্ত্রস্থান্তি আশ্রাম্থান্ত ক্রমারা মল রাহিত্যেন যৎ শুদ স্বসংজ্ঞান্ত দেব সাক্ষাত্তক: ॥ ২৪ ॥

সম্য শুটেডক্টীব্রে তি বংসপদমাত্রতা করণেন নাব ক্তিতীর্বোল্ড চেষ্টামাত্রং নিরন্তং। ত্মান্ত্রতি তচ্চ তব প্রকাশ স্বভাবাদেবেতি ভবি:। অত্র পূর্বতিত্ব পদাদি শব্দস্য সাধনলক্ষণ ভক্তে তাৎপর্যাং। অত উক্তমত্র নিধায়েতি। অক্টব্রে:। তত্র কথং মৎপাদে-

क्रममन्दर्धः।

পার পরমন্থণ দ্বীপায়মানে মহৎ ক্লডেন পরমাদর বিষয়ীক্লডেন দ্বংশানের পোতেন্ আবেশিতং প্রবেশিতং তচ্চেড: তেন ভবানিং গোবংসপদং কুর্বস্তি। তদানন্দেন তদন্তিত্মপি ন জানজীত্যর্থ:॥ ২৪॥

স্বর্মতি অত্র পূর্বত্রত পাদশব্দস্য সাধন লক্ষণায়াং তত্তকাবেৰ তাৎপর্য্যং। তত্ত্র নিধায়েতি। অতঃ টীকাচ ভক্তিমার্গং প্রব-শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

ত্তেন হেতুনা প্রাণ্ডেন স্বংপাদ পোতেন মহৎক্তেন মহত্তির্ভবাল্কে: পোততুল্যীক্তেনেত্যর্থ:। গোবংসপদং কুর্বন্তি ভবালেরন্তি-ত্বস্পি ন জানস্তীত্যর্থ: ॥ ২৪ ॥

কিঞ্চ ত্বংগাদপোতাশ্রমণমাত্রেলৈর ভবারে গাঙ্গান্ত্রের জাতে বৈঞ্বা ভবারিমজানত্ত এব প্র্যামেবোল্লন্ত্রীত্যান্ত:। সম্ মিতি তরণ সাধন নিরপেক্ষমের অন্যাঃ স্বছত্তরমণি ভীমমপি সম্তীর্য্য যাতাঃ হ্যমন্ হে স্থ্য ইতি তং যেষামন্তঃকরণে নোদেষি তেবামের তমঃ প্রস্কাপঃ সংসারোহণ্র ভ্ল্যো ভীমো হত্তরক্ষ ভবতি। প্রেমভক্ত্যুদ্ম পর্কতে ত্ব্যুদ্দিতে তু সমত্ত তমসি স্থামের নাই সতি স্বস্থমের সংসার তরণং ভবেদতো ভবংপদাস্তোক্ষনাব্যাতির কুলে নিধারের ভক্তিমার্গ সম্প্রদারং প্রবৈষ্ঠ্যের যাতা তে থথা ন্যোপ্যবং তরেয়ুরিত্যভিপ্রায়েণভূত্যপ্রেক্ষতে ইতি ভাবঃ। অত্র সংসারস্য সামন্ত্যেন নইক্ষেপি বরং সংসারিণ এবেভি ভক্তানাং মিথ্যাভিমান এব গোবংসপদাকারঃ সংসারঃ। যথা চ গোবংসপদ ক্লাং পাবনং শ্লাঘনীরক্ষ ভবেৎ তথৈব তেবাং সোহভিমানোণ্য-ন্যেষাং ভক্তমানিনামভিমান রোগহরোইভিজ্জানঃ শ্লাঘনীর্শ্চ ভবতীতি ভাবঃ। যতঃ সংস্কৃত্বিক্ষেব্যাহর অন্তর্গ্রহ এতাদুশো

আমরাই আপনকার চরণকে সেব্য বলিতেছি এমত নহে পূর্বতন মহাজনমাত্র আপনকার পদকে সেব্য রূপে গ্রহণ করিয়াছিলেন ॥ ২৪॥

প্রতা। আপনি যদি এ রূপ বলেন পূর্বত্ন ব্যক্তির। আমার চরণ তরি যোগে ভ্রমাগরের পরপার গমন করিয়াছেন তবে ইদানীস্তন ব্যক্তিগণের উপায় কি ?। তে স্থাকাশ। আপনি ভক্ত জনের অসুগ্রাহক, ইহাতে আপনকার চরণ তরির নামীপ্যমাত্তেই এই সংসার গোল্পদ তুল্য হয়, অভ্যাহক, ইহাতে আপনকার চরণ তরির নামীপ্যমাত্তেই এই সংসার গোল্পদ তুল্য হয়, অভ্যাহক পূর্বতিন মহাজনগণ এ তরির অপেকান। করিয়া অভ্যার স্কর ইইলেও ম্বাং ভ্রাণৰ উত্তীপ ইইয়াছেন, অর্থাং আহার ভিত্তিমার্থ সম্প্রাহর পরিয়া সংসার সাধ্যমের প্রাহ ইয়াছেন, ভাহার কারণ সর্ব্ব ভূতের প্রতি তাঁহাদের অতিশায়ু

ভবং পদান্তোরুত্ব নাৰমত্র তে নিশার যাতাঃ সক্রেছো ভবান্ । ২৫ । যেহন্মেরবিন্দাক বিমৃক্তমানিন ভ্বাভভাবাদ্বিভঙ্ক বুজাঃ ।

विश्ववानी ।

ভজানহুগৃহাতীতি ৷৷ ২৫ ৷৷

নমু বিবেকিনাং কিং মন্তৰ্গনেন মুক্তা এব হি তে তত্ৰাহু: বেংক ইভি বিসুক্তমানিনঃ বিমুক্তা বরমিতি মক্তমানাঃ ছবি জড়ো নিরক্তো বো ভাব স্তমান্তক্তেরভাবাদিতার্ছঃ। ন বিশ্বজ্ঞা বৃদ্ধির্ববাং তে তথা বহা ছবি জক্তভা ইভি ছেনঃ অস্তমতরঃ বাদেবেব বিশুদ্ধ বৃদ্ধরঃ

टेवकक्टजावनी।

ভ্যাদৌ জানং বিনেতি শেষ:। যথা এবং ভেষামেৰ ভত্তারণ কারণতে হেছু: সন্ত এবাছগ্রহরণা বস্যেতি ॥ ২৫ ॥

নমু বিনাপি মংগদাশ্ররং জানেনৈর সংসারোজরণাদিকং তবেং কিন্তেন তত্রাহ্য ব ইতি হে অরবিন্ধাক্য ইতি কৃষ্টিমাত্রেণ সর্কতাপ হারিত্মকুতং। তালুশেহণি বরি বছর পর্বাবনিতেন বুমংগদেন তদীরাশ্চ গৃহত্তে। অন্তর্ভারীত্যাদি প্রবাধ মনন নিদিধ্যাস্নাদি বহা প্রথমত তাবং ব্যক্তভাবাদবিশুদ্ধ বুদ্ধরং তথাপি জান মার্গমাশ্রিত্য বিমৃক্তমানিনঃ। দেহবরাতিরিক্তব্যোদ্ধানাং তাররক্তঃ। ততঃ। ক্রেশোহবিক্তরত্তেধামব্যকাসক্তেতেগামিত্যক্তঃ। কৃচ্ছেণ পরং পদং জীবমুক্তি রূপং আকর্ প্রাণালি ততাহেখা পতিত্তি কদা ইত্যপেকারামাহঃ অনাদৃত্তেতি বদীতি শেবঃ। তেবাং তক্তি প্রভাবস্যানম্ব্রত্রের্দ্ধি পূর্বক্স্য ব্যন্দাদ্বস্য নিবর্ককাভাবাং। তথাপি দক্ষানামণি পাপ কর্মণাং মহাশক্তি শ্রত্তিবং পাদপদ্মবজ্ঞার পুনর্কিরোহাং তথাচ বাসনাজাব্যক্তর শ্রতিক্তবং পরিশিষ্ট বচনং। জীবমুক্তা আপি পুনর্কদ্ধনং যান্তি কর্ম্বতিঃ। বদ্যচিন্ত্য মহাশক্তো ভগবত্যপুরাধিন ইতি। অত্বর তত্তিবে জীবমুক্তাঃ প্রণাল্ডরবচনক। নাম্বর্জতি বো মোহাং ব্যক্তং ক্যণীশ্বরং। জ্ঞানামি দক্ষ কর্মণি স্থিতবেদ্ধ রাক্ষ্য

क्यममर्खः।

র্জ্যেজ্যর্থ:। ইত্যেষা। ভবাপবর্গেত্যস্য ব্যাখ্যান্নামপি স্বন্ধ:॥ ২৫॥
বেন্যে ॥ ২৬ ॥

ঐবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

नांत्राब्यमा मः ॥ २०॥

বৈশ্বধান্ত্যের ভবার্ণবাে গোপাণী ভবভি বে ডু ভব বিশুক্ষর্যন্ত্র বান্ত্রান্তরে আনিন শুলাক্তর হুজুরা লীম এব কল্পে। মহানিহ ভবার্ণবিমন্তরেশ বড়বর্গ নক্রমন্ত্রেশন ভিতীর্বতি। তাই হরের্জনতাে ভালনীর মন্ত্রিং ক্রেজ্বিং বাসন্মূল্তর হুজুরার্ণমিতি বথা সন্তর্নারেশেক্তং । ক্লেশাংধিকতরন্তেরামিতি বথা ভগরতাপি নৈক্র্যামপাচ্যুত ভাববর্জিতং ন শোভতে জান নাই নির্মানমিতি বথা নারলেনাপি ভবৈর দেবা অপ্যান্তঃ। যে ইতি। জন্যে উক্ত লক্ষ্পেভাত্ত্বলম্পূর্হীতেভাঃ সভ্যোভিরাঃ। জরবিন্ধাক্তেতি ছংকুপারলোক্তন মাধ্যানম্ভেবিন ইতি ভাবঃ। বিস্কুল্যানিন ইতি ছয়ক্ত্রপ যথা সংসারেভীর্ণা অপি সংসারিনানিন ভবৈবৈতে সংসার মধ্য পভিতা অপি বিস্কুল্যানিনভত্ত্র হেতুঃ স্বায়রবিন্ধাক্তে মধ্যালারে অভভাবাং নারাই পাবলাসন্ত্রেন ক্রিভাত্তাকাই অবজানতি মাং মৃত্য মান্ত্রীও ভদ্মান্ত্রিভিনিত ভগবহুক্তে কৌ গ্রান্ত্রিক্তলানাঃ স্থানি নির্জন মূলকাতঃকরণ ভদ্মিবাহুংগরমপি জানং ন বিভঙ্কমিত্যার্থঃ। তদ্পি কুছে ও তপঃ শ্রদ্যানি ক্লে, জনিতেন বিজ্ঞানেন পরং পদং জীবনুক্তনশা নাক্রছ্যেত্যেয়াং গুণীভূত ভজ্যা বুকুত্বং জ্লোং ভাং বিনা পরসপ্তারোহাসভ্বাই ক্রেরং ততিং ভক্তিম্বাস্ত্র তে বিজে। ক্লিক্তিভাবে ক্রেরং তাং বিনা পরসপ্তারোহাসভ্বাই ক্রেরং ততিং ভক্তিম্বাস্ত্র । ন আল্তের মারিক্ত বুল্লা বুন্ধক্রী ইনতে। অন্তর্মই জানিনাং জানাকভূতা ভক্তি ছিবিধা ভক্তিং বিনা জানং ন বিদ্ধেনিতি শাল্লাক্রনের কিছিন্যানী জিল্লাবা ভলনীয় ভারবিধালিছু মারিক বুল্যা মারাবৃদ্ধা বা অক্লাক্রন্তরি অনান্ত্র মাইভিতি জান্তরা ভেরাই তথা প্রস্কুলাটি

দয়া, সকলে তদেবাগে পার ইইবে বলিয়া ঐ ভরী কইয়া বাদ নাই ক্রিং ট তে অরবিন্দলোচন। বে সকল পুরুষ ভবলীয় চরপণত অনাদয় করিয়া আপনাবিদকে মৃক্ত বলিয়া অভিমান করে, আপনকার প্রতি ভক্তির অভাব হেডু তাহাবের বুকি বিভয়া নতে, অথবা আপনাতে প্রতি না বাকা প্রস্তুক্ত কেবল ভাষালের বাব (মৃত্যুক্ত) বিষয়েই বিভয়া বৃদ্ধি হতরাং গোলবন্ত ক্রিক্তি

আরুহ কুছেন পরং পদং ততঃ পভস্তাবৈদিন্তব্রদিন্ত রা । ২৬ ॥ তথা ন তে মাধব তাবকাং কচিন্তুপ্রতি মার্গাই ছায় বছসৌন্দাঃ।

अध्यक्षामा ।

কুচ্ছেন বহৰৰ তপদা পরং পদং মোক্ষসন্নিহিতং সংকুলতপঃ শ্রতাদি আরুত্ব পতত্তি বিদৈরভিত্রত্তে ন আদৃতে যুদ্দত্ত্রী বৈতে ॥ ২৬ ॥

দ্বনীরাক্ত ন ক্যাচিক্সি প্রত্তীত্যার্হ: তথা নেতি বিনায়ক। বিয়হেতবঃ তেরামনীকানি ক্তোমাক্তানি পাস্তি যে তেরাং মুর্দ্ধহ বৈষ্ণবতোরণী।

ইতি। তদেবং ভক্তিসোপান জ্ঞান মার্গে তফাপি চিত্তবড়িশং শনকৈবিৰ্ভ্জে ইত্যাদে ত র শন্ধপদং চিত্তমাক্রব্য ব্যোরি ধাররে দিত্যাদৌচ বন্ধান ত্যাগো ধারণান্তরং সিন্ধিল প্রায়তে ত্রানাগরো ন মন্তব্য:। কিন্তু বন্ধকৈবল্যেছা সংস্কার বশাকৈথিল্যানেবং। বথা
নির্জাসংস্কারবর্শাৎ বিবয়াবিটানাং বিবরে তদ্ভাতে। তত্র প্রীতগ্রতা বঞ্চনাচ ক্রিরতে ইতি বন্ধণ্যেব মগ্নতা স্যাৎ। অভ্যেবমন্দ
ভক্তাং ভগবান মুক্তেরা মুক্তিমিত্যাদে:। অনাগরেহিপি নরকোহিশি প্রয়তে। নাতঃ পরং পরম বন্ধবতঃ স্বয়্রশমিত্যাদিরু।
বো নাল্তো নরকভাগ্তিরসংপ্রস্কৈরিত্যান্যকে:। তত্মাৎ সর্কাং সমঞ্জসং॥ ২৬॥

তজ্ঞপোপাদকান্ত আয়তবাদি জ্ঞানাভাবেছিদ খবর্মপরিত্যাগেছিদি কথঞিং পাতকাপাতেদি নৈব পত্তনীত্যাক্ত তথেতি প্র্যার্থ বিরোধে যথা দং মূর্থ তথাত্ত নেতিবং। যবা কিন্দেত্যথা। তাবকাং ক্রাচির্ক্তরণাশ্রিতা যে তে তু ক্রাচিং ক্রিদিদি মার্গাদিদি কিং প্নমূর্গ্যাৎ ন পত্তন্তি প্রত্যুত দ্বি বন্ধনোক্রনাঃ প্রাপ্ত নিশ্চন প্রেমাণঃ সন্তঃ। অতএব দ্রাছভিতে৷ গুপ্তাঃ সন্তঃ ইত্যাদি। মাধব হে লক্ষ্মীকান্ত ইতি তেবাং স্বতএব সর্ব্বস্থাং দিন্ধির্গ্যভিপ্রেতা। যবা মধুকুলাবতীর্ণেতি পরম কার্ল্গাঃ প্রতিত হে সর্ব্বশিক্তিযুক্তেতি। প্রত্যু প্রভাবান্তেবাং তাল্পুক্তমেবেতি ভাবঃ অক্তরৈঃ। যবা তথা তেন প্রকারেণাদি প্রথম প্রয়ন্তবাং ক্রেপিক্রনান্ত ব্যালতিযুদ্ধেন্দি ন ভংগতি। কিন্তু বন্ধনিজ্যুক্তি হিল্বেন্টি কর্মানিক্রিক্রি বিশেষেণ চরন্তি নির্ভয়

ক্রমসন্দর্ভ:।

कथा॥ २१॥

ঐবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

মতাং বছকালেনাবিদ্যানিরসিনীং বিদ্যাস্থপাদ্য প্রস্কৃত্রদশাস্থপাদ্যত সহসৈবাস্থনীরতে তে বিস্কুমানিন এবোচ্যন্তে নতু বস্তুতো জীবসূকাঃ। ভক্তাহমেকয়া প্রাস্থ ইতি ভগবহুকে উজিং বিনা তং পদার্থনাপরাকাস্থতবালাভাং ভগবদপরাধ সভবাচ্চ দখানামণি কর্মণাং প্নঃ প্রবোহাদধঃ পতন্তিচ। মতুকং। রথবাতা প্রদক্ষে বিক্তুজ্জিচজ্রোদর মৃতং প্রাণবচনং। নাম্ বজতি বা মোহাছুজ্জং পর্ষেধ্বর। জানামি দক্ষকর্মাপি সভবেছুল রাক্ষ্স ইতি। বাসনাভাব্যোখাপিতং পরিশিষ্ট বচনঞ্চ জীবস্থাকা জাণি পুনর্বন্ধনং বান্তি কর্মভিঃ। মদ্য চন্তা মহাশক্ষে ভগবত্যপরাধিন ইতি। বিত্যাক্ষাত্র তেবাং ব্রন্ধভূতর প্রদাম্থপাদ্য জবিদ্যা বিদ্যানাক্ষাক্ষামেপ্যান্ত্রপর্মানা জবিষ্কান বিদ্যানাক্ষাক্ষানা বিশ্বত ভদনত্ত্বমিতি ॥ ২৬॥

নম্ম জ্ঞানিন এব কেবলং কিমিছাক্লিপাতে উরতে প্রস্তু চিত্রকেছাদি দৃষ্ট্যা ভক্তা অপ্যান্ধিপাক্তাৰিক্যত আহে তথেতি বথা বিমুক্তনানিনাংখা পততি তথা তাবকা মার্গাৎ ভক্তিবোগাল্লপ্রস্তি কিমুত মৃগ্যান্থত ইত্যর্থঃ। বদি বা বস্তুতি তথাপি দ্বি বন্ধনৌল্ল। এব ভবতি চিত্রকেত্ ভরভেক্সগ্রাদীনাং লংশে সতি বৃত্তাদিন্ধে প্রেয়ঃ শতশুলীভাব দর্শনাৎ ভক্তানাং লংশোপি প্রেমাধিক্য হেতৃরেব দৃষ্টা। তথা ন লশান্ত বতো প্রক্রিক্তি বি বন্ধনৌল্লাঃ। ন বে ভক্তা প্রশানীতি প্রক্রিক্তাতবভা মনোপক্রিব্যতিব

বছ জ্বের তপতা বলে মোক নামিহিত পদ অর্ধাৎ গৃৎ কুল, তপতা, বেদাধ্যয়নাদিতে আরোহণ করিয়াও প্রায়ই বিশ্বে অভিভূত ইয় ॥ ২৬ ॥

পরস্তাতে মাধবা বে সকল ব্যক্তি আপমনার তক্ত, আপমাতেই সোলদ্য বর্ত্তন করিয়া,থাকেন ভারাদের ঐক্সপ তুর্গতি হয় নাম ভার্যায়া অপিনী কর্তৃক অভিয়ক্তিত হইয়া নির্ভয়ে বিশ্বকারিগণের



ষয়াভিগুপ্তা বিচরন্তি নির্ভয়া বিনায়কানীকপযুদ্ধ প্রভো ॥ ২৭॥
সত্ত্বং বিশুদ্ধং প্রয়তে ভবান্ স্থিতে। শরীরিণাং শ্রেয় উপায়নং বপুঃ।
বেদ ক্রিয়া যোগ তপঃ সমাধিভি স্তবার্ছণং যেন জনঃ সমীহতে॥ ২৮॥

विधवयामी।

বিচরস্তি বিদ্বান জয়স্তীত্যর্থ: ॥ ২৭ ॥

সতাং স্থাবহানি রূপাণি ধারয়সীত্যুক্তং বিভর্ষি রূপাণীতি। তৎ কেন প্রকারেণ স্থাবহত্বমিত্যপেক্ষারামান্তঃ সন্থং বিশুদ্ধ-মিতি সন্থং বসুং প্রস্নত ইত্যবয়ঃ। শ্রেয় উপায়নং কর্ম ফলদাতৃ কথং যেন বসুষা জন তথার্হণং পূজাং সমীহতে করোতি। কৈঃ বেদশ্চ ক্রিয়ায়োগশ্চ তপশ্চ সমাধিশ্চ তৈঃ চতুরাশ্রমধন্দৈরিত্যর্থং। বসুষোহনাশ্রমণে হর্হণাসম্ভবারকর্মফল সিদ্ধিঃ স্যাদিতি॥ ২৮॥

বৈষ্ণবতোষণী।

জেন তানেব মহাবিদ্বর্গেশান্ বিদ্ন করণার্থ মাগতান্ সোপানানীব ক্লমা শ্রীবৈক্ঠপদমারোহস্তীত্যর্থ:। তেবাং ভক্তি বিমেহস্থতাপ: স্যাৎ তেনচ শ্রীভগবতো মহতী কুপা স্যাদিতি অস্তৎ সমানং॥ ২৭॥

নাতঃ পর্নং পরম যন্তবতঃ হরপমিতি তৃতীয়োক্তাহুসারেণ পরম কারণ হৃদ্ধরঃ পরম তবৈক রূপছেইপি বিশুদ্ধ সন্বস্য তৎ প্রকাশ শক্তি রপছেন তদভেদ বিবক্ষয়া বিশুদ্ধং মায়াতীতং চিচ্ছক্তি বৃদ্ধি বিশেষঃ সন্থমেব বপুরিত্যুক্তং হিতৌ পালনার্থং তৎ প্রায়ত নিত্যানন্দবিবিধ প্রকারকারবানেব যত্র পালনে যাদৃশং বপূর্ব ক্রং তদর্থং তাদৃশং বপুঃ প্রবর্তরতীত্যর্থঃ যথা নানেক্রিয়বানেব দেবদন্তে। দর্শনার্থং চক্ষঃ প্রয়াতে প্রবণার্থং প্রোত্রমিতি ব্যাপদিশ্বতে ত্বদিতি ভাবঃ তদেবং হারং প্রকটীভূর পালনেন স্থাবহরং দর্শিতং ধ্যানগতছেনাপি দর্শক্তি শরীরিণামিত্যানি শরীরিণামন্দেব জীবানাং প্রেয়াঃ সৎকর্ম ফলস্য তৎ প্রেমানক্রপ্রয়িত্যা বৈর্থা বর্ণস্থা বা উপায়নহ উপটোক্রনিয় করণং পরমানক্রপ্রয়িত্যাঃ। এতস্যৈবানন্দ্রসানাানি ভূতানি মাত্রা অপি জীবতীতি প্রতঃ। উভয়্বাপ্যুপাসকানাং তত্তদাত্ত্বে পর্যবসানং বেদেতি ভদর্হণপ্রধানিন্দত্বাপ্রমধন্দৈরিত্যর্থঃ। অর্হণ্য বিবক্ষিতত্বাং। কেবল বেদাদ্যর্পন লক্ষণার্হণস্ত্র বপুর্বিনাপ্যদেশেনের সম্ভবাচ্চ। বেন বপুরা হেত্না জনশত্রাপ্রমবর্তী সর্বোহিপি সম্যুগীহতে ঘদনপ্রকৃত বপুর্বেদাদ্যর্পন মাত্রমর্হণং তত্তু ন সম্যুগিতি ভাবঃ। ততশত্রাপ্রমিণামর্হণিসিদ্ধা তৎ সন্ধন্ধনামন্যেয়ামপি তৎ সিদ্ধের্ম্ব ক্রমেবাক্তং শরীরিণামিতি। অন্যবৈঃ। অত্ন ন কর্মা ফলসিদ্ধিরিত। সর্বালামিতি সিদ্ধীনাং মূলং তচ্চরণার্চনমিতি ন্যারের ॥ ২৮ ॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

তকৈ ইত্যাদি ব্যাখ্যায়াং সম্বমিতি দরং॥ ২৮॥

শ্ৰীবিশ্বনাথটক্ৰবৰ্তী।

মংপ্রভুনা মমারং ত্রংশঃ কৃত ইতি ত্বরি দৃঢ়বিশ্বস্তম্ভর:। ততশ্চাভিতত্তরা রক্ষিতা বিনারকানাং বিশ্বকারিণাং জনীকানি স্তোমাঃ তানি পাস্তি যে তেষামপি মুর্দ্ধস্থ বিচর্ত্তি তানভিভবন্তীতার্থ:। বহা তচ্চরপাংত্তেপি ভক্ত্যা স্বমূর্দ্ধস্থ ধাররস্তীতার্থ:॥ ২৭॥

তদেবং বিভর্ষিরপাণীত্যনেন শুদ্ধস্বাত্মক শরীরাণাঞ্চরাচরলোকে প্রাকট্যমুক্তং। ক্ষেমারেতি তৎপ্ররোজনং ক্ষেমঞ্চ ভক্তেঃ কৈবলাং স্বয়ান্ত্রাক্ষেতি চতুর্জি বিবৃতং তন্মধ্য এব বেখনোরবিদ্ধাক্ষেত্যনেন ভক্তের্গুণ ভাবন্চ মোক্ষণলকা জগবচ্চরণাদরে সতি ধ্বনিতঃ। ইদানীং ভক্তেঃ প্রাধানামপি প্রয়োজনং শুদ্ধস্বাত্মক বপুঃ প্রাকট্যস্যেত্যাত্ত্বঃ সন্বমিতি বিশুদ্ধং মারাতীতং সবং চিন্মরং বপুর্জবান্ শ্রমতে। কীদৃশং স্থিতী প্রাক্ষন সমরে শ্রেম্বসাং উপ ক্ষাধিক্যেন অমনং প্রীপ্তির্বত ক্সচ্ছের এবাতঃ বেদাদিভিশ্বত্তি শত্রুরাশ্রমধন্তৈঃ সহ অহ বং স্বাহতে। বেদা বপুষেতি বপুবোহনাশ্রমণেহর পা সিদ্ধেঃ। ২৮॥

অধিপতিদিগের মন্তকোপরি ভ্রমণ করিয়া বেড়ান অর্থাৎ দর্ব্ব প্রকার বিশ্বজয় করিয়া ফেলেন। অথবা তাহাদের মন্তককে সোপান করিয়া বৈকুণ্ঠ পদে অধিরোহণ করেন॥ ২৭॥

প্রভো! আপনি স্থিতি কালে বিশুদ্ধ সন্ত্রপ শরীর আগ্রেয় করিয়া থাট্টকন, আপনকার সেই দেহ দেহিদিগের কর্ম কল দায়ক, অতএব স্থাবহ, যে হেতু সেই শরীর যোগে লোকে বেদ-ফ্রিয়া-যোগ-তৃপস্থা এবং সমাধি দারা অর্থাং চুতুর্বিধ আ্রেম ধর্ম দারা আপনকার পূজা করিয়া থাকেন। আপনি শরীর আগ্রেম না করিলে পূজার অভাবে কর্ম ফল সিদ্ধি হুইতে পারিত বা ॥ ২৮॥

সত্তং নচেদ্ধাতরিদং নিজং ভবেদিজ্ঞান মজানভিদাপমার্ট্রনং।

वीधवयामी ।

খ্যাৰ্জাক্ষেত্যাদিনা শ্লোক এয়েণ ভগবন্ধকানাৰেব নোক্ষো নাজেবা মিত্যুক্তং। তত্ৰ কৰ্ম কলং হি ভক্তিং বিনা মাভূৎ মোক-শুভূ জ্ঞানৈক সাধ্যম্বাৎ কিং ভক্তোতি সাফুশ্যান্ প্ৰত্যাহঃ সৰং নচেদিতি। হে ধাতঃ ইনং সন্ধং নিজং তব বপু নভবেচেৎ ভৰ্চি বিজ্ঞানং বিশিষ্ট মপবোক্ষং জ্ঞানং নভবেদিত্যসূবদঃ। কথং ভূতং অজ্ঞান ভিদাপমাৰ্জনং অজ্ঞানঞ্চ তংক্কতা ভিদাচ তথ্যারপমা-র্জনং নিবর্ত্তকং। যদা অজ্ঞানং ভিদন্তি অজ্ঞানভিৎ বিজ্ঞানং মার্জনং আগ প্রাপ্তমেবেতি। নমু কড়ানাং বৃদ্ধাদীনাং যতঃ

বৈষ্ণবতোৰণী।

ধাতঃ হে বিবিধ মূর্জিধর ইদং সর্ক্ষোপকারকং সন্থাক্ষকং গুণশু বৃদ্ধাদেঃ প্রকাশেঃ বহুত্বং বৃদ্ধাদেনত্ব তীনাঞ্চ বাহ্ন্যাপেক্ষয়া প্রকাশত ইণ্ডাত্র প্রবোগশ্চায়ং বৃদ্ধাদি গুণিঃ সন্ধনিবিশেবাল্রয়ঃ গুণবেন প্রকাশাৎ বা যো গুণবেন প্রকাশতে স সন্ধনি বিশেবাল্রয়ঃ গুণবেন প্রকাশতে যথা গুলাদে প্রকাশতে স সন্ধনি বিশেবাল্রয়ঃ প্রকাশতে বথা গুলাদি গুণাঃ । প্রমাত্র বিশেবাল্রয়ঃ প্রকাশতে স কামি বিশেবাল্রয়ঃ প্রকাশতে যথা গুলাদি গুণাঃ । প্রমাত্র বিশেবাল্রয়ঃ কর্মানিক প্রকাশতে যথা গুলাদি গুণাঃ । প্রমাত্র বিশেবাল্রয় কর্মানিক প্রকাশতে যথা গুলাদি গুণাঃ । প্রমাত্র বিশ্বালিক প্রকাশতে ম কর্মানিক প্রকাশতে যথা গুলাদি গুণাঃ । বিশ্বালিক প্রকাশত প্রকাশত প্রকাশত প্রকাশত বিশ্বালিক প্রকাশত কর্মান প্রকাশত বিক্ষেক কর্মানিক বিশ্বালিক বিশ্বালিক কর্মান প্রকাশত কর্মান প্রকাশত কর্মান প্রকাশত বিক্ষেক কর্মানিক ক্রান্ধ বিশ্বালিক কর্মানিক ক্রান্ধ বিক্ষালালীক প্রকাশত ক্রান্ধ বিশ্বালিক কর্মান প্রকাশত কর্মান প্রকাশত কর্মান প্রকাশত কর্মান প্রকাশত কর্মান প্রকাশত কর্মানিক ক্রান্মান ক্রান্ধ বিশ্বালিক কর্মান ক্রান্ধ প্রকাশত কর্মানিক ক্রান্ধ করে ক্রান্ধ বিশ্বালিক ক্রান্ধ বিল্যান ক্রান্ধ বিশ্বালিক ক্রান্ধ বিশ্বালিক ক্রান্ধ বিশ্বালিক ক্রান

ক্রমসন্দর্ভ:।

অত্র সৰু শব্দস্য সাক্ষান্তদাবিভাবে শ্রীবস্থদেব দেবক্যাবেব তাৎপর্ব্যতোহবগতে। শ্রীবস্থদেবাদ্যাখ্যং সৰুং বপুরিত্যাদি যোজ্যং।

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্ত্তী।

নমু কেচিদার্শনিকা মদপ্য প্রাক্ত সন্ময়মেব মন্যন্তে তত্ত্রাহা। সন্মাতি হে ধাতা ইনুমিতি তর্জন্যা গর্ডং লক্ষীকুর্জন্তি তব বপুরিদং নিজং সন্ধং শুদ্ধং ল ভবেছেৎ কিন্ত প্রাক্তনের সন্ধং ভবেছ। তদা বিজ্ঞানং তথা ভূতদ্বেন সতা মন্থভবঃ মার্জনং লোপং আপ প্রাপ্তঃ। মহদকুভব এবাত্র প্রমাণমিত্যর্থঃ। বিজ্ঞানং কীদৃশং অক্সানতিৎ অক্সান নিবর্ত্তমিতি স্বমুব্বা বিশুদ্ধ সন্ধনেন বিক্সান মাত্রাদের সংসারো নিবর্ত্ত ইতি ভাদৃশ বিজ্ঞানস্য প্রামাণ্যং নাশহ্যমিতি ভাবঃ। কিন্তান্ত প্রমাণান্তরমপ্যকী ভাবঃ। গুণপ্রকাশৈও প্রসাতিতেজ্বিরা ক্রাদাদি সর্ব্যন্ত প্রসাদক্ষ প্রেম প্রদাদক্ষ প্রেম প্রদাদক্ষ প্রকাশিতে সম্প্রতাদ্ধাতি ক্রির্বাহি তাবং। প্রকাশেহি প্রসাতিতেজ্বিরা ক্রান্ত বিসাহি বিশ্বাক সাংগ্রাক্তর্বাহি বিশ্বাক সাংগ্রাক্তরা ক্রান্তে শরীন প্রকাশিতে নভূ প্রাক্তব্বেন। অভ্যাব বঙ্গাবে ব্যাব্রারা ক্রান্তে শরীন

হে ধাতঃ। এই বিশুদ্ধ সন্ত বদি আপনকার নিজ শরীর না হয়, তাহা হইলে বিশিষ্ট জ্ঞান যাহাতে অজ্ঞান হজ ভেদ নির্ভ হয়, তাহাও হইতে পারে না, ৩৭ প্রকাশ দারা আপনি সর্ব্ব সাক্ষী, পরিপূর্ণ স্বরূপ, এই প্রকার কয়নাই হইতে পারে অর্থাৎ আপনকার বৃদ্ধানি গুণ প্রকাশ পাইতেছে, আপনি অপ সাক্ষী, বৃদ্ধারক হইয়া প্রমাতা হওয়াতে আপনকার গুণ প্রকাশ হইল এ রাম অনুনান করা যাইতে পারে, আপনাকে সাক্ষাৎ করিতে পারা যায় না। পরস্ত ভদ্ধ সন্ত মৃতির

গুণপ্রকাশৈরসুমীয়তে ভবান্ প্রকাশতে যক্ষচ মেন বা গুণঃ ॥ ২৯ ॥ ন নাম রূপে গুণ কর্মা জন্মভি নিরূপিভব্যে তব তক্ত সাক্ষিণঃ।

बीधवचामी।

প্রকাশ: তদ্ব ক্ষেতি জ্ঞানং ভবেদেব গুণপ্রকাশৈ গুণাবিছিলে: প্রকাশৈ: ভবান্ সর্ক্রাকী পরিপূর্ণ: কেবলময়মীরতে কর্যতে নতু সাক্ষাং ক্রিয়তে ইত্যর্থ:। অহমান প্রকার মাহু: প্রকাশতে যক্ত চ যেন বা গুণ ইতি। যক্ত সম্বন্ধী অয়ং বৃদ্ধাদি গুণা প্রকাশতে যো গুণসাক্ষীত্যেবং যেন বা বৃদ্ধান্ধঢ়েণ প্রমাত্রা বাহো গুণা প্রকাশতে ইত্যন্ত্রমীরতে ইত্যর্থ:। গুদ্ধ সম বপুষি প্রি সেব্যমানেতু স্বদাকারেহস্তঃক্রণে স্বংপ্রদাদেন সাক্ষাংকারে। ভবেদেব ইতি ভাব:॥ ২১॥

এবং তাবস্তক্তানাং অভ্যুদরাপবর্গার্থং রূপাণি বিভর্ষীত্যুক্তং তান্তপি ভব্ধনীরানি কেবলং নতু জ্ঞাতুং শক্যন্তে অনস্তত্তাৎ অভর্ক্যন্তাচ্চ মনোবচসোরগোচরন্বাদিত্যাহ: ন নাম রূপে ইতি। গুণাশ্চ কর্মাণিচ জন্মানিচ তৈ নিরূপিত্যব্যে নিরূপণার্হে ন ভবতঃ কুতঃ অমুমেরং বন্ধুমার্গোয়স্ত তবেতি তত্তাপি হেডুঃ তম্ভ সাক্ষিণ ইতি নহি সাক্ষিণ স্তত্তং মনোবচোহগোচরমিত্যর্থঃ।

বৈষ্ণবতোষণী।

প্রকাশতে বহিনের ধুম ইতি অতভ্যবপ্র: পরমানন্দরপথেন স্প্রকাশতাৎ যেন প্রকাশে যেনচ ব্রহ্মজ্ঞানস্থাপি তিরোধানং সা ত্বীর স্থাপ্রকাশতা রপা শক্তিরের স্থাৎ ততাে বাছেন জড়েন সবেন তৎ প্রকাশে ন কিন্তু কথি দিয়ুমানমের অঙ্গণােদরাদিনা স্থাাদেরে-বেতি যথা মনাংস্থাসন্ প্রসন্ধানি সাধুনামস্থরক্রহামিত্যাদি বক্ষ্যতে অতএব শ্রীবিষ্ণুপ্রাণাদৌ স্বাদ্রো ন ক্রীশে যত্তি প্রাক্তা গুণাঃ। স তরঃ সর্বভ্রেজ্যঃ প্রমানাদ্যঃ প্রসীদত্ত্ । হলাদিনী সন্ধিনী সন্ধিবয়েকা সর্ব সংস্থিতাে। হলাদতাপকরী মিশ্রা তরি নো গুণাহাজ্যাদি জানং নৈব-স্যাদিত্যাহঃ স্বং নেতি নিজং স্বরং ভগবতন্তব সাক্ষাং সম্বন্ধিতাং অতএব স্বন্ধাহাজ্যাদি লক্ষণ বিশিষ্টং জ্ঞানং কীদৃশং তদিতর জ্ঞানম্বাজ্ঞানং তন্তিং মার্জনং নির্তিং প্রাপ নমু স্বরং ভগবানহমবতীর্ণ ইতি কুতাে জ্ঞানং তত্তাহঃ গুণাভ গুণস্য শ্রীদেবক্যাদি প্রভাবাদেঃ প্রকাশৈঃ। নমু ম্মাংশত এব তস্য তাদৃশাঃ প্রকাশা ভবস্ক ন বিলক্ষণমাদিত্যাহঃ প্রকাশত ইতি শ্রীসন্ধর্বাণাদিত স্তাদৃশ্রানম্ভবাদিতি ভাবঃ॥ ২৯॥

নমু নাম রূপে থলু মনোমরে এব দ্যাতাং কথং মজ্রপদ্য তাদৃশত্বং বর্ণাতে তত্তাহা গুণাদিতি র্বে তব নাম রূপে তে নিরূপণীয়ে জ্ঞেছে যাথার্থোনামূভবনীয়েন ভবতঃ ইত্যর্থ: তত্ত্ব গুণৈর্নাম ভক্তবংদল ইত্যাদি রূপঞ্চ শ্যামস্কুল রাদি।

ক্রমসন্দর্ভ:।

তদেব রূপ প্রসঙ্গেন নাম্নোইপি স্বপ্রকাশব্যাতঃ॥ ২৯॥

ন নামেতি পুর্ব্বোক্ত গুণস্য সাক্ষিণ:। তথাপি ক্রিয়ায়াং শ্রবণকীর্ত্তনাদি লক্ষণয়াং ভক্তৌ প্রতিপত্তিভক্তৌ জাতারাং ক্ষণকৈয়ব-

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

রিষশরীরিণ:। তৈতৈয়রতুল্যাতিশরৈ বীহাঁ দেহিষসকতৈরিতি। যথা ইদং নিজং সবং শুদ্ধসরায়কং তব বপু ন ভবেদ্ধাবির্ভবে-চেনং তদা অজ্ঞানভিং বিজ্ঞানমপরোক্ষামূভবো মার্জনং আপ নাশমেব প্রাপ্নুয়াদিত্যর্থ:। কিন্তু তদা গুণানাং বৃদ্ধাদীনাং প্রকাশৈ ভবানস্থীরতে। কেবলমস্থীরেতৈর অস্থ্যান প্রকার্যান্তঃ। যস্য গুণ: প্রকাশক্ষে বেন বা বৃদ্ধাবিষ্ঠাত্তা হেতৃনা বাহোগুণঃ প্রকাশতে স ঈশর ইতি॥ ২১॥

ন কেবলমেডজ্পেশেব তে বিশুদ্ধসন্থাম্মকমণি শ্বেডস্য বাচকং নামাণি তে চ নামরূপে ভক্তৈয়বাস্ত্রিতৃং শক্যেনান্যথেত্য-পীত্যাক:। নেতি গুলৈঃ শ্যামস্থলর স্থপার্জ লোচনেতি কর্মন্তি গোঁবর্জনোদ্ধরণ ত্রিভঙ্গললিতেতি। জন্মতি র্নন্দনলন বস্থ-দেবনশ্বনেতি যে তব নামরূপে তে বদ্যপি যথা কথঞ্চিছাচ্যুধ্যয়ে তবত ন্তদ্পি সাক্ষিণো বিষয় ত্রষ্ট্র জীবস্য নিরূপিতব্যে শাক্ষাদ-

সেবা করিলে সেবকের অন্তঃকরণ আপনকার আকার প্রাপ্ত হয়, তাহাতে আপনকার প্রসাদে অবশ্রুই সাক্ষাৎকার ঘটে ॥ ২৯ ॥

ভগবন্ ! গুণ, কর্ম ও জন্ম ধারা আপনকার নাম রূপ নিরূপণ হয় না, কারণ আপনকার বর্ম মনঃ ও বাক্যের অসুমেয় মাত্র, কিন্তু মনঃ ও বচনের গোচর নহে, যে হেতু আপনি তাহারও মনোবচোভ্যামকুমেয় বন্ধ নো দেব ক্রিয়ায়াং প্রতিযন্ত্যণাপি হি॥ ৩০॥
শৃণুন্ গুণন্ সংস্থারয়ংশ্চ চিন্তায়ন্ নামানি রূপাণিচ মঞ্লানি তে।

ञीधत्रवामी।

হে দেব বছৰা দ্যোত্মান তথাপি ক্রিয়ায়াং উপাসনাদি লক্ষণায়াং ত্বাং প্রতিযন্তি উপাসকা: সাক্ষাৎ পশুস্তি হি প্রসিদ্ধং ॥ ৩০ ॥

বৈষ্ণবজোষণী।

কর্মভির্নাম গোবর্দ্ধনোদ্ধরণ ইত্যাদি রপ্ঞাবেণ্ বদন ত্রিভঙ্গলিতেত্যাদি। কর্মভির্নাম শ্রীদেবকীনন্দন ইত্যাদি রপঞ্চ শ্রীমংস্যাদি। যথা গুণাং শাস্ত্রাভাসাদয়ঃ কর্মাণি সদাচারাঃ যম নিয়মাদীনি বা জরানি সদিপ্রকুলোংপর্ম্বাদীনি তৈরপি ন নির্দ্রণীয়ে। যতো মনসা তর্কেণ বচসা আগুবাক্যেন চামুমেয়মন্তি ইতি নিশ্চয়মের নম্বম্ভবিত্বং শক্যং বন্ধ গুণ কর্মাদি লক্ষণং প্রাপ্তি সাধনং বস্য তস্য তত্ত্বত হেতুং তস্য পূর্বোক্ত বৃদ্ধা গুণস্যাপি যং সাক্ষী সাক্ষাদর্শন শক্তিমান্ অতএব তেনাদৃশ্র স্তুস্য তদগোচর বিলক্ষণ স্বরূপ মাধুর্য্যময় গুণাদেরিত্যর্থঃ। বৈপরীত্যেন বানয়োরপি হেতুহেতুমন্তাবং অতো গুণাদীনামনিরপণীয়প্রতি অপি ন নিরপণীয়ে ইতি তথা সাক্ষিসমন্ত্রিক তলোরপি তাদৃশত্বং যত্তকং তচ্চ প্রমিতমের পরমানকৈক রূপেণাব্যতিরেকেণচ বিষদম্ভবাং। তদখাসারং হালয়ং বতেদং ইত্যাদৌ। রূপং যদেতদববোধরসোদয়েনেত্যারস্ত্র্য নাতঃ পরং পরম যন্ত্রতঃ স্বরূপমিত্যাদৌচ ক্রিয়ায়াং নাম কীর্ত্তন রূপ ধ্যান লক্ষণায়াং সত্যাং ইত্যর্থঃ। প্রতিযন্তি তে নাম রূপে স্বরূপ মাধুর্যাদিনা যথাবদম্ভবিত্ত। তহক্তং ভক্ত্যাহমেকয়া গ্রান্থং শ্রময়ায়া প্রিয়ং সতামিতি। অক্রতিঃ। তত্তক ভক্তাাহমেকয়া গ্রান্থং শ্রময়ায়া প্রিয়ং সতামিতি। অক্রতিঃ। তত্ত ভল্পনীয়ানি স্বরণভাসাদিনা যথা কথ্ঞিদম্বর্তনীয়ানি জ্বাত্মমন্ত্রতিরুং অতর্ক্য স্বরূপাদি যাথার্থ্যয়াং তত্ত শব্দেন নাম রূপে অপ্যন্তর্ভাবিতে। ত্যোন্তং প্রকার্ম্বাং। উপাসনাদীতি উপাসনা মানসী আদি গ্রহণাদ্বাহ্ব ক্রিয়াচ গৃহীতেতি॥ ৩০॥

নমু তৎ ক্রিয়াচেত্তদমুভবস্য হেতু স্তর্ধি কথং প্রথমত এব সান স্যাৎ। উচ্যতে অস্তাত্র নানাপরাধন্মী সংসারবাসনা প্রতিবন্ধিনী সাচ তদা বৃত্তৈয়বাপগচ্ছতীত্যাহঃ শৃণুদ্ধিতি শ্রবণাদীনাং বিকরো জ্ঞেয়ঃ। মঙ্গলানি সর্ব্ধ তঃথনিবর্ত্তকত্বাং প্রম স্থাত্মকত্বাচ্চ ইতি ভাবঃ। অতঃ স্বতঃ প্রধার্থতোক্তা অতএব ক্রিয়াস্থ নিজাশেষ কর্মস্ব বর্ত্তমানো যঃ সোহপি তচ্চরণারবিন্দমো রাবিষ্ট চিত্তো ভূতা।

ক্রমসন্দর্ভঃ।

তে প্রকাশতে ইত্যর্থ:। তদশ্মসারং হৃদয়ং বতেদমিদ্যাদে: নাহং প্রকাশ: সর্বস্যেত্যাদেশ্চ। তত্মান্তর্ভত্পাসক এব তত্র তত্র। বিষ্ঠ চিত্তোভবতি ভবায়চ ন কল্পতে নান্য ইত্যাহ:॥ ৩০॥

শৃণ্রিতি ক্রিয়াস্থ ব্যবহারিকীশ্বপি বর্ত্তমানঃ। যোংশেন বৎস্যাদিনাক্মাকং ভবায় স সাক্ষাৎ স্বয়মেবেতি কুক্ষিং গত ইতি

শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

হতবনীয় মাধুর্যোগ ভবতঃ। তয়ো মাধুর্যানহত্তব এব তদনহত্তবঃ। যথা পিত্তদ্বিতরসন জনেন চর্বিতস্যাপি মংস্যৃত্তিকা থপ্তস্য স্বাদালাভাদনহত্তব এব। এবঞ্চ ভক্তিরহিত জীবকর্ত্ত্বাশুকেরেব হেতো নামরপ্রোর্থার বিশ্বর্দ্ধন্য ক্রমব্যাত্ত্বাদি ভাবঃ। যবা সাক্ষিণ ইতি তবেত্যস্য বিশেষণং নামরপ্রোঃ স্বর্পভূত্তাৎ ন হি সাক্ষিণঃ স্বরূপং সাক্ষাৎ জ্ঞাতুং শকুব্রীতি ভাবঃ। হে দেব অথাপি ক্রিয়ারাং অধীয় শ্রবণকীর্ভনাদি ভক্তে সত্যাং প্রতিষত্তি নামরপে সাক্ষাদহত্তব্বিচ। তেলাময়ত্বব্বিদ্ধান ক্রেয় ইত্যাতঃ। মনসা ক্ষান্তি মানশ্ন্যথাদি লিকেন বচসা মনোরবিন্ধাক্ষ দিল্কতে থামিত্যাদ্যহ্বাগ ব্যঞ্জক বাক্যেন অহুমেরং বর্ম প্রেমভক্তিরোগো যস্য তস্য ॥ ৩০ ॥

কিঞ্নামরণরোঃ একণাদিভিরভ্যাস এবাহত্বে কারণমিত্যা**রঃ। শৃণ্রিতি জিরাম মটেদহিক ব্যাপারেরু** বর্তমানোহপি ন

সাকী। তথাপি হৈ ছ্যুতিমন্। উপাসকগণ উপাসনাদি ক্রিয়াযোগে আপনাকে সাক্ষাৎ দর্শন করিতে পার এরপ প্রসিদ্ধ আছে। ৩০ ॥

ফলতঃ যে ব্যক্তি ভক্তি পূর্বক আপনকার পরম নঙ্গল নাম ও রূপ সকল প্রবণ কীর্ত্তন ও চিন্তন করিতে করিতে তথা স্বস্থান্ত মানবদিগকে শ্বরণ করাইতে ২ উপাসনাদি ক্রিয়ার সময় আপনকার চরু ক্রিয়াস্থ বুল্লচরণারবিন্দয়োরাবি**ইচিতো ন ভবায় কল্পতে ॥ ৩১ ॥**দিন্ত্যা হরেহস্তা ভবতঃ প**দোভূবো ভারোপনীত তত্ত্ব জন্মবৈশিতৃঃ।**দিন্ত্যাঙ্কিতাং ত্বং পদকৈঃ স্থানোভনৈ প্রক্রাম গাং দ্যাঞ্চ তবান্ত্রকম্পিতাং ॥ ৩২ ॥
নতে হভবস্থো ভবস্থ কারণং বিনা বিনোদং বত তর্করামহে।

প্রীধরস্বামী।

তশান্তক্তিয়ব মোক্ষ ইত্যুপসংহরন্তি শৃণুন্নিতি অন্তানপি সংশারয়ন্॥ ৩১ ॥

বিশেষতঃ শ্রীক্ষণবভারমভিনন্দন্তি দিষ্টোতি দিষ্টা ভত্তং তব পদঃ পাদভূতায়াঃ ঈশ্বরদ্য তব ক্ষম মাত্রেণাপনীত এব কিঞ্ দ্বংপদকৈঃ কোমকৈঃ পদৈঃ স্থানাভনৈঃ ব্রজাক্ষাদি গুভ কক্ষণৈঃ গাং পৃথীং দ্যাং স্বর্গঞ্চ তব তয়াস্থকন্সিতাং ॥ ৩২ ॥

নমু তব জন্মনা ভারোহপনীত ইত্যক্তা মমাপি কিং জীববং সংসার উক্তঃ নহি নহীত্যাহঃ নেতি বত হে ঈশ অভবস্য অসং-

বৈষ্ণবতোষণী।

যথা য ইত্যসা পূর্বেণাদ্বর: । যা শৃণুন্ ভবতীতার্থ:। ডচ্চরণারবিন্দরো: ক্রিরাস্থ শ্রবণাদিক কর্মস্থ স্থাবিষ্ট চিত্ত:। যথা ক্রিরাস্থ ডজ্জীলাস্থ । যুথদিতি পাঠ: ক্রচিৎ। ডতশ্চ সমঞ্জনমেব। অতো ভবার সংসারায় ন ক্রতে তৎ কারণে বিদ্যমানেপি উদ্যোগ্যে। ন স্যাৎ তথাসনা রহিতোভবতীতার্থ:॥ ৩১॥

দিষ্ট্যা এতন্তম্রং জাতং অস্মাদৃশানাং ভাগ্যেনেত্যর্থ:। অস্যা ভারার্দ্তায়াঃ বদবতারে পরম ধন্যবং প্রাপ্তায়া বা। পদ ইতি পদ্তাং ভূমেরুৎপত্তা কার্য্যকার্বনেরেরভেদান্তিপ্রায়ে পন্তাং ভূমিরিতি শ্রুতেঃ অতএবার্ত্যেকুর স্বতৌ অধিম্পং তৈহবনির জিনুরিতি। জন্মনা শ্রীদেবজ্ঞামবতার মাত্রেণ। ভারঃ কংসাদি হেতুকঃ অপনীতো দ্রীকৃতঃ ইদং তদ্বিজ্ঞাপন চাতুর্যাং। এবং ভারহরণাদ্ধরে-বিতি সংঘাধনং। নিজপদান্ধ ব্যপদেশ সৌভাগ্য ভাজন পৃথিবী ভারাপনয়নেন ভক্তানামস্বাদৃশাং ভূবোহপি হিতং কৃতমেবেতি প্রেমাজনমেকং সিদ্ধা। কিন্তু অস্মাকং তদ্যান্দ পরমহিতকারি বিচিত্র ক্রীভ্রা সর্কলোক কৃতাথী করণ্যের মুণ্যপ্রেমাজনং কার্য্যান্দরেনাহঃ দিষ্ট্যান্ধিতামিতি অল্লার্থে ক প্রতায়ঃ ঘাপরাস্তোচিত নরাক্ষতিবেন মহাশরীরিণাং তেষাং দেবানাং ভাদৃশ দৃষ্টা। কিন্তা দ্বাবের্থ স্থেকামলত্ব ক্র্রণাং। অন্ধিতাং অকঙ্কতামিত্যর্থ:। দ্যামস্কিশতামিতি দৈত্যবধাদিনা তত্রত্যানাং হিতাচরপাং। যথাবিশেষণ দ্বমদিং ম্বোরের জ্রেয়ং। ততশ্চান্ধিতত্বেনের ভক্তিবিস্তারণাদিনা বামুকিশিতাং গাং। দ্যামন্ধিতামিতি। ক্লাচিৎ পারিজাত হরণাদ্যর্থং তত্র গত্য্য পারিজাত প্রাগাদির পদানাম্দ্রাং। ৩২ ॥

ন ভব: সংসারে। ভক্তানাং স্থগতামপি বা যশান্তস্য বত হর্ষে। অন্যক্তি:। यशा। বিনোদমালার্থে হেডু: হে অভয়। বত:

ক্রমসন্দর্ভঃ।

পূর্ব্ধে মনস্তোদধারেত্যপ্যুক্তং। তত একবাক্যতামুরোধেনায়মর্থঃ। যদ্যপি তদীয় প্রাচীন তাদৃশ প্রেমযাক্রাবশতমা কুকিং প্রবিষ্টএব

শ্রেমনাথচক্রবর্ত্তী।

ভবায় ক্রতে কিন্তু ভবদমুভবায় করতে॥ ৩১॥

ভারাব্তর্ণমবশ্য কর্ত্ত্ব্যমিতি ভল্যা জ্ঞাপরস্তি । দিষ্ট্রোতি পদঃ পদজন্যায়াঃ পদ্ধাং ভূমিরিতি শ্রুতেঃ। ভারোহ্পনীতঃ অধু-নৈব কংস জ্রাসন্ধাদীন্ হতান্ জানীম ইতি ভাবঃ। পদকৈঃ স্কুমারেঃ পদেঃ স্থানাভনৈ ধর্মবন্ত্রাদি মঙ্গলচিত্বতিঃ। গাং পৃথিবীং দ্যাং স্বর্থক॥ ৩২॥

অশ্ববিজ্ঞাপিতঃ অশ্বদাদি পালনার্থমবতীর্ণোহসীত্যশাকম্ভিমান এব কেবলং বস্তুত স্থং স্বৈর জন্ম কর্ম লীলোহসীত্যাহঃ। নেভি

গারবিদে আবিষ্ট হইয়া থাকে তাহাদিগকে পুনর্বার সংসারে আসিতে হয় না ॥ ৩১॥

হৈ হরে ! আপনি ঈশ্বর এই ধরণী আপনকার চরণভূতা, বড় ভাগ্য, আপনকার জন্ম মাত্রে ইহার ভার অপনীত হুইল। ভগবন্ ! আমাদের পরম ভাগ্য, অদ্য আপনকার স্থানাভন চরণের ধ্যে বক্ত অঙ্কুশাদি শুভ লক্ষ্য ধারা অবনীকে অঙ্কিতা, এবং স্বলোককে আপনা কর্ত্বক অনুকৃষ্পিত দেখিতে পাইব ॥ ৩২ ॥

- হে ঈশ ! আপনি অসংসারী ফ্তরাং ক্রীড়া ব্যক্তীত আপনকার জন্মের কারণ আমরা কিছুই অসু

ভবো নিরোধঃ স্থিতিরপ্যবিদ্যরা কৃতা যতত্ত্বয়ভয়াপ্রাদ্মনি ॥ ৩০ ॥
মৎস্তাশ কচহপ বরাহ নৃসিংহ হংগ রাজফ্য বিপ্র বিবৃধেষু কৃতাবভারঃ।
ছং পাসি নম্রিভুবনঞ্চ তথাধুনেশ ভারং ভুবো হর যদূত্ম বন্দনন্তে ॥ ৩৪ ॥

श्रीश्वचामी ।

সারিণত্তে জন্মনঃ কারণং ক্রীড়াং বিনা ন তর্করামঃ। কিঞ্চ হে অভরাশ্রর ন ভরং আশ্রয়ত ইতি তথা তং সংবাধনং হে নিত্যমুকে তার্ধঃ তব জন্ম কারণং নাত্তীতি কিং বক্তবাং যতো জীবাম্মজাপ ভবাদরম্বরি বিষরে বা অবিদ্যা তরা ক্বতা ন পরমার্থতঃ সন্তীতি ॥৩০ প্রস্তুতং প্রার্থরত্তে মংস্যেতি নোহস্থান্ ত্রিভূবনঞ্চ অস্তুদা যথা পাসি তথাধুনা পাহীতি বন্দনং তে ইতি বদস্কঃ সর্কে শিরোভিঃ প্রণমন্তি ॥৩৪ ॥

বৈষ্ণবভোৰণী গ

সর্বাশ্রমাত্মনি ত্বয়াশ্রিত্য বর্তমানারা অবিদ্যা বিদ্যাখ্যারাশ্চিছ্জেরিতরা মারা তর্মৈব নিত্যং ভবাদরঃ কতা বর্ততে ততত্ত্বতংপাতি পালনমাত্রার্থং নারং কত্ত্বরুদেশ প্রথম্ব বিশ্বো যুক্ত ইতি বিনোদং বিনা ন কারণান্তরং তর্করামহ ইত্যর্থং । হুইবধার্থ-প্রথম্বত সভর বৈয়ব সন্তবভীতি তদেবং বিনোদস্য ত্বরূপাস্থ্বভিত্বেন ত্র্ত্তাদি দীলাভ্যো মহান্ বিশেবো দর্শিতঃ। অতএব নাগপন্নীতিক্ষকং অব্যাক্ত বিহারারেতি। অতএব অজিতক্ষতির দীলা কৃষ্ণসার ইত্যাদিকানি শ্রীশুক্ষাদীনামণি বিশেবণানীতি ॥ ৩০ ॥

হে ইশেতি তত্র সামর্থাং দর্শরন্তি তথা পাহীতি শ্বেং হে যদ্তমেতি অধুনা শ্রীকৃষ্ণ রূপদেন সাক্ষাভগবন্ধাং পূর্বতো বিশেবেণ পালনং কর্ত্তবানিতি ভাবং। অতএব ভারং হরেতি বদ্যাপ ময়া হতাং বং কহি মা ব্যথিষ্ঠা ইতি রীত্যা তব জন্মনা ভারোহপনীত ইত্যু কৈব তৎ প্রার্থনা বিশেবতো লদ্ধ্য তথাপি প্নক্ষিভল্পীলা দর্শনার্থমক্ষ্ঠতরৈবেদম্কং ইতি জেয়ং। অস্তবৈধা যথা পালি তথাধুনাপি পালি পালনি কাকা ততোহধিকমেব পাল্লগীতার্থং। তদেবাভিব্যঞ্জয়তি তুবো ভারং হরেতি শ্রীনৃসিংহাদ্যবতারে ত্বয়া হতানামপি হিরণ্যক্ষপিপু কালনেমি প্রভৃতীনাং প্নরত্ত জন্মনা তুবো ভারে। তথাতার। অধুনা তথা বিধেহি যথা তেবাং প্ররা বৃত্তি র্ল আং। বেন ভক্ষানাস্থাকং তাদৃশ হুটাদর্শনেনচ পরম হিতং ভাদিতি ভাবং। মধ্বেং ছুটানাং মৃক্রিদানম্বোগ্যমিত্যাশক্ষ্য তদর্থং স্কাক্ প্রণমন্তি যদ্ভ্রমেতি অক্সং স্মানং॥ ৩৪ ॥

ক্রমসন্দর্ভঃ।

তথাপি কুক্ষ্যাদিন্তব্যং ভগবতোহবরোধকং ন স্যাং। কিন্ত প্রেমৈবেতি। তস্য চ প্রেম আশ্রয়ঃ কুক্ষিন ভরতি কিন্তু মন এবেতি। ভদান্মভয়া মনএৰ তদ্ধারণে সাধনং। ততঃ কুক্ষিং গতঃ মনদৈব দধারেতি॥ ৩১॥ ৩১॥৩১॥৩৫॥৩৫॥৩৬॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্ত্তী।

জ্ঞভবদ্য অস্ত্রম্মনঃ ভবদ্য প্রাত্মভাবদ্য বত আশ্রয়াত্মনি ত্বয়ি দ্বামাশ্রিত্য বর্ত্তমানা যা অবিদ্যা মারা তবৈর ভবাদরে। জগৎস্ট্র্যাদয়ঃ ক্বতা ইত্যর্থঃ। নান্তি ভয়ং যত ইতি ত্বৎ ত্মরণাদের কংসাদ্যক্ষর ভয়ং নিবর্ত্ততে। তদ্বধার্থং আজে ত্মরমেবাবিভূর্যোদ্যমো ন ঘটত ইতি জাবং ॥ ৩৩ ॥

তদশ্যমাক্ষধীরাবাং বৃহধৈবাবগত চরং বৈক্ষ্যমবগম্যতাং চেত্যাহঃ। মৎস্যাখেতি। তথৈব ভূবোভারং হরেতি ভূভার-হরণমেব সম্প্রতামাকং পালনমিতি ভাবঃ। বন্ধনত্তে ইতি বৃদক্তঃ সর্ব্বে শিরোভিঃ প্রণমন্তি ॥ ৩৪ ॥

মান করিতে পারি না। হে নিত্যমুক্তস্বরূপ! আপনকার জন্ম নাই ইং কি আবার বলিতে হয়? জীবান্ধার ষ্মে জন্ম হিতি ভঙ্গ, ভাহাও আপনকার বিষয়ে যে অবিদ্যা আছে ভাহারই কৃত, বস্ততঃ জীবান্ধারও জন্মাদি কিছুই নাই॥ ৩৩॥

সে যাহা হউক, হে ঈশ। আপনি অফ সময়ে মৃৎত অথ কছপে বরাহ নৃসিংহ হংস ক্ষতিয় বিপ্র এবং দেব এই সকলে অবভার গ্রহণ করিয়া আমাদিগকে এবং ত্রিভূবনকে যজ্ঞপ পালন করিয়াছেন একণেও তক্রপে রক্ষা করুন, অধিকস্ত এই ভূমির ভার হরণ করিতে আজা হউক। হে যদূতম! আপনাকে বন্দনা করি! এই বলিয়া সকলেই মস্তক অবনত করিয়া প্রণাম করিলেন॥ ৩৪ ॥ দিন্ট্যান্ব তে কৃক্ষি গতঃ পরঃ পুমানংশেন সাক্ষা দ্বগবান্ ভবায় নঃ।

মাভূত্তয়ং ভোজপতে মুমূর্বো র্বোপ্তা বদুনাং ভবিতা তবাদ্মকঃ ॥ ৩৫ ॥

ইত্যভিন্ট য় পুরুষং যজ্জপমনিদং যথা। ত্রক্ষোণানো পুরোধায় দেবাঃ প্রতি যমুর্দিবং ॥ ৩৬ ॥

॥ * ॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্থাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং দশমক্ষকে বিতীয়ো২ধ্যায়ঃ ॥ * ॥ ২ ॥ * ॥

ञिश्वत्रामी।

দেবকীং প্রত্যান্তঃ দিক্টোতি নোহস্মাকং ভবায় উদ্ভবায় সাক্ষাৎ পরঃ পুমান্। তে কুক্ষি গতঃ স্ততো ভয়ং মার্জ্যতি ॥ ৩৫ ॥ যস্য রূপমনিদং সর্বা প্রত্যক্ ভূতং যথা যথাবং অস্মান্ বঞ্যিতা এতাবিহ স্থাস্যত ইতি মন্যমানা এক্ষেশানৌ পুরোধার পুরতঃ রুতা যযুঃ ॥ ৩৬ ॥

॥ * ॥ टेफि मन्दम विकीय ॥ * ॥

বৈষ্ণবভোষণী।

ধুলে হিরম্ভিপ্রারঃ প্নরার্ভি মোক্ষাপ্তা তেবাং ছ্টানাং ক্লাচিদ্পি দুর্লাই ন ভাবীতি ভক্তানামন্মাদৃশাং প্রমহিভয়েব সিন্ধ্রনিভি এবনকৈর লগালা দেবাংগ্রীভগবন্ধঃ ভবা তেনৈবাতিবিন্ধিতাং গ্রীদেবকীমান্ধানর দিটান্থিত। ছে মাতরিতি তবগন্ধাত্ত্বেন প্রম বন্দ্যাবাং বদ্যাপি মনজো দধার ইত্যুক্তং তথাপি কুক্ষিণ্ড ইদ্ধি মাতরি তভাং তথৈব বক্তুং বোগালাক্তং পরঃ পুনান্ প্রম প্রুবোজন ইত্যুক্তং তথাপি কুক্ষিণ্ড ইদ্ধি মাতরি তভাং তথৈব বক্তুং বোগালাক্তং পরঃ পুনান্ পরম প্রুবোজন ইত্যুক্তং তথা করা করেব নহংশাদিনা অতএব ভগবান্ সকৈন্ধর্য যুক্তং অংশেন প্রীকেন্দ্রেন ইতি তভাপি তভাং জন্ম প্রকাশিত মিতি ক্রেরং ন ইন্তি সাক্ষাত্ত্বল বিশেষয়োর্থ বন্ধে র্কাণ্ড ইতি বহু এতং দিলা নহু কংসক্ত তুল্চেইছেরেণ বিভেনি ভ্রাবঃ মুন্বোরিতি নিক্টারাত মৃত্যুদ্ধানেবং চেইত ইতি ভাবঃ। তেভ্রং মাতৃং স্বং ভ্রং মাতৃং স্বং ভ্রাব ত্বাহং নিত্যুক্ত ব্যুক্ত ক্রিন্তি ভ্রাবঃ যদ্নাং সর্ক্রোমণি কিং পুনত্তব প্রীক্ত্রেন্দ্রাদীনাদ্বা তন্ত স্বস্য বেত্যুর্থঃ। এবং নিত্যুক্ত ব্যুক্ত ক্রিন্তি ক্রেরং। তথাচ শ্রীবিষ্ণুপুরাণে। অদ্টাঃ পুরুব জীতি র্দেবকীং দেবতাগণাঃ। বিশ্রাণাং কপুরা বিষ্ণুং তুই বু ভামহার্দিনিতি॥ ৩৫॥

পুরুষমিতি শ্রীদেবকী স্বদরপুরে স্থিত্যভিপ্রায়েণ। যথা পরমপুরুষোত্তমং। যস্য রূপমনিদং প্রপঞ্চাতীতং পর ব্রহ্মাত্মকং তথা তথাভূতত্বেন স্বতেরবিষয়মপীত্যর্থ:। ইত্যানেন দেবকী ক্রম্মাত্রেণৈব ভূভারোহপনীত ইত্যাদি গর্ত্তিতেন প্রকারেণাভিতঃ স্তত্বেতি পরমাত্মতাদি বর্ণনেন স্তবনাদপি শ্রীদেবকী গর্ত্তজাতত্বাদি বর্ণন স্থাতেরুৎকর্ষোহভিপ্রেতঃ ॥৩৬॥

॥ 🛊 ॥ ইতি শ্রীবৈঞ্চবতোষণ্যাং দশমটীপ্সন্যাং দ্বিতীরোহধ্যায়ঃ 📲 ॥

ক্রমসন্দর্ভঃ।

॥ 🛊 ॥ ইতি শ্রীমন্তাগবত দশমস্বন্ধে শ্রীকীবগোপামি 🚁ত ক্রমসন্দর্ভস্য ছিতীয়োহধ্যার: সমাধ্য: ॥ 🛊 ॥

ঞীবিশ্বনাথচক্রবর্জী।

দেবকীং স্তবস্ত আশাসমন্তি দিষ্টোতি। অংশেন বলদেবেন সহ কৃক্ষিং গতঃ। যথা। যোহংশেন পরঃ পুমান্ প্রকৃতীক্ষণ কর্ত্তা ভবেৎ স সাক্ষান্তগর্বানিত্যর্থ:। ভবার ভূতৈতা॥ ৩৫॥

যদ্য রূপং অনিদং প্রপঞ্জীতং চিদায়মিতার্থ:। অসমান্বঞ্যিতা এতাবিহ কিমপি রহ্দ্যং অভ্তং দ্রুক্ত ইতি মন্মান। ব্রেক্শানে) পুরতঃ কুতা॥ ৩৬॥

💵 ګ ॥ ইতি সারার্থদর্শিন্যাহ হর্ষিণ্যাং ভক্তচেতসাং। বিতীয়ো দশমেহধ্যারঃ সঙ্গতঃ সঙ্গতঃ সভাহ ॥ 🛊 ॥

তদনন্তর দেবকীর প্রতি কহিতে লাগিলেন হে অব। ভাগ্য ক্রমে পরম পুরুষ সাক্ষাৎ ভগবান্ আমাদের উদ্ভবার্থ তোমার কৃকি গত হইয়াছেন, ভোজপতি কংসের মরিতে ইচ্ছা হইয়াছে, তাহা হইতে আর তুমি ভয় পাইও না তোমার আত্মজ অতঃপর যতুদিগের রকাকারী হইবেন। ৩৫।

হে রাজন্! বাঁহার রূপ সর্ব্ প্রত্যক্ ভূড়, সেই পুরুষের এই প্রকার বধার্থ ন্তব করিয়া দেব-ভারা মনে করিলেন আমাদিগকে বঞ্চনা করিয়া ক্রেকা ও মহেশ বৃদ্ধি এখানে থাকিবেন অভএম ভাহাদিগকে অএবর্তি করিয়া সে ভান হইকে প্রভান করিলেন। ১৯৯।

k * ॥ देखि मनदम विकीय ॥ * #

গ্রীশুক উবাচ॥

অথ সর্ব্ব গুণোপেতঃ কালঃ পরম শোভনঃ। যহে বাজন জন্মকং শাস্তক এই তারকং ॥ ১॥ দিশঃ প্রসেত্নপূর্বপং নির্মালোডুগণোদরং। মহী মঙ্গলভূমিষ্ঠ পুর্ব্বাম জ্ঞাকরা॥ ২॥

শ্রীধরস্বামী।

তৃতীয়ে নিজ রূপেণ সম্ভূতক হরি: স্বয়ং। পিতৃভ্যাং সংস্কৃতো নীত: পিত্রা ভীতেন গোকুলং॥ •॥

অথেতি মঙ্গলার্থং ঘহি সর্ব্ব গুণোপেতঃ কালো বভূব তদা দেবক্যাং বিষ্ণুরাবিরাসী দিতাইম শ্লোকগতেনাখয়ঃ। প্রম শোভনত্ব-মেবাহ বহাঁত্যাদিনা অজনারারাগাজ্জন ত্বসাপতে তথ্য অকং রোহিণী নক্ষত্রং কথভূতং শাস্তানি অক্ষাণিচ অখিন্যাদীনি গ্রহাক্ত তারকাশ্চ যদ্মিন্ত্র। যহাঁতি সর্ব্বান্থজ্যতে ॥ ১॥

নির্ম্বলানামূড্রগণানামূদ্রো যন্মিন্ তং। তথা মঙ্গলেন ভূমিষ্ঠাঃ পুরাদ্রো যস্যাং সা তথা ॥ ২ ॥

বৈষ্ণবতোষণী।

সর্ব গুণোপেতত্থাদেব পরম শোভনঃ বহীত্যাদিকং তৈর্বোজ্বতং তত্র বহুজনে জারমানে তং সন্নিহিত সময়ে তৃাদৃগজন জন্মবাদিকমাসীং। বহিচ জনার্দনে জারমানে তজ্জন সময় এবচ তাদৃগদুল্ভি নাদাদিকমাসীং তদা দেবক্যামাবিরাসীদিতি বিশেষে এইবাঃ বায়পোরং সাইরিউভিরেক্মেব বাক্যং সান্ত্রথাপি প্রবোধভায় তদন্তর্বাক্যানি পৃথক্ পৃথগঙ্কনিইছব ব্যাথ্যেরানি সার্দ্ধান্ত পাষ্টম লোকগতেন ইতি তথাখ্যা পরার্দ্ধান্ত ভদন্তর্ভাব বিবক্ষা শান্তর্জাদিকছং তৃদ্ধিত বেছিলীদিনে সর্বেধান্ত্র্যাদীনামুগ্র দৃষ্টিত্ব রাহিত্যাদিনা। তচ্চোগ্রাদীনামুগ্রহাদি পরিহারাদেঃ অত্র বিশেষশেলকঃ খমাণিক্য নানি জ্যোতি প্রস্থি। উচ্চস্থাঃ শনি ভৌম চাক্তি শনরো লগুং ববো লাভগো জীবঃ সিংহতুলালির ক্রমবশাং প্রোশনোরাহবঃ। নৈশীখঃ সময়োহইনী বুধ দিনং ব্রহ্মক্রক কণে শীক্ষণভিধমন্ত্রক্ষণ মভ্লাবিঃ পরং বন্ধা তৃদিত। কিঞ্চান্তর ব্রহ কন্যা তুলা মীনরাজের ক্টু মৃচ্চগাঃ। সোম সৌম্য শনি কৌণী-স্থতা গুজজন্মনি স্থিতাঃ বর্ষে জন্মজন্মনঃ শিশেষা। বিশ্বমেব বস্তু শ্রীমন্ বভ্রামুষ্য তৃষ্যতঃ॥ ১ ॥

উদয়ঃ প্রকাশঃ॥ ২॥

ক্রমসন্ধর্ভঃ।

অথৈতি যহি বিদা অজনস্য কনাপান্যানা জাতত্বনাঞ্চস্য প্রীক্ষণস্য নিজ জন্মনা স্বীক্রিয়মাণং ঋকং তন্থাপরাস্তকান বিশেষ গত রোহিণ্যাখ্যং অভূত্তনৈব সর্বকাল গুণোপেতঃ সর্ব গুভসমেত কালোহভূথ তদিছোরাং জাতারাং হুর্ঘটনটোভিন্তছেন্তিবেব বা স্বভাবেনেব বা স্বভাব স্বভাব। সর্বাধ্যানিক্মাহ। লাস্তেত্যাদিনা যথাযথঞ্চ তং জ্লেয়ং। তেবাং ভীষণ স্বভাবত্বেন সর্বাধ্য বিভাগ ক্রিয়া ক্রিয়া

ঐবিশ্বনাপচক্রবর্ত্তী।

তৃতীয়ে দেশকালাদৌ প্রসন্ধে শ্রীহরের্জনি:। পিতৃভাাং সংস্কৃতি: প্রাপ্তি র্যশোদাস্তিকাগৃহে ॥ • ॥

যত্তে বিজনস্যাপ্রাকৃত জন্মরহিতস্য ভগবতো জন্মনক্ষত্রমভূং। লথ তদৈব সর্বান্তগোপেতঃ কালোহভূদিতারয়ঃ। শ্লেষেণ জন্মক-নামাপ্যাহ। অজনালারায়ণাজ্জন্ম বস্য সোহজনজন্মা প্রজাপতিত্তস্য অকং রোহিণী নক্ষত্রমিত্যর্থঃ। প্লিষ্টজেনোক্তি র্জন্মকং ন প্রকাশ্বিদিতি নীতিশান্তরীত্যা পোপনার্থা। কীদুশং শান্তানি অকাণ্যবিন্যাদীনি গ্রহাশ্চ তারকাশ্চ যন্মিং তাং॥ ১॥

ি সর্ব্বগুণোপেত্ত্বমাহ দিশ ইতি। বর্ষাত্বপি শরদোগুণ উক্তঃ তত্ত্ব সর্ব্বাণি তত্ত্বানি প্রসন্নানি তত্ত্ব মহাভূত্তস্যোদ্ধস্থস্য প্রসাদ-মাহ গগণমিতি অধস্থস্য প্রসাদমাহ মহীতি॥ ২॥

ভৃতীয় অধ্যায়ে ভগবান্ হরির নিজ রূপে স্বয়ং উদ্ভব, মাতা পিতা কর্ত্ক তদীয় স্তুতি এবং ভীতি বশতঃ গোকুলে নীজ করণ ॥ • ॥

শুক্দের কহিলেন অনন্তর যথন সর্বস্থিণ সম্পন্ন পরম রমণীয় শোভন কাল উপস্থিত হইল অর্থাৎ ব্যু সময়ে ক্রোছণী নক্ষত্র উদিত ও অস্থিনী প্রাকৃতি তারকা নিকর তথা অক্তান্ত তারা সমূহ শান্ত হইল ৪ ১ ৪

দিক্ নকল প্রসন্ধ গগণনগুলে নির্দানকত্রগণ প্রকাশ ছইতে লাগিল। আর পৃথিবীক পুর, আম. গোষ্ঠ তথা আক্রণেকল বস্তুল মন্ত্র মন্ত্র মন্ত্র প্রকিল । ২॥ নদ্যঃ প্রসন্ধ সলিলা হ্রদা জলক্ষ্বশ্রিয়:। বিজ্ঞালিকুল সন্নাদ ন্তবকা বনরাজয়ঃ॥ ৩॥ ববৌ বায়ুঃ স্থান্সর্পান্ধবহঃ শুচিঃ। অগ্নয়শ্চ বিজ্ঞান্তীনাং শাস্তান্তত্ত্ব সমিদ্ধত ॥ ৪॥ মনাংস্থাসন্ প্রসন্ধানি সাধ্নামহ্মক্রছাং। জায়মানেহজনে তন্মিন্ নেছছ ন্ত্রাঃ সমং। জগুঃ কিন্ত গন্ধবান্তিই বুঃ সিদ্ধান্ধাঃ। বিদ্যাধর্যান্ত নন্ত্র স্বরোভিঃ সমং মুদা। ম্মুচুর্নিয়ো দেবাঃ হুমনাংসি মুদান্বিতাঃ॥ ৫॥

वीधतवामी।

জলফুহৈ: আঃ শোভা যেবাং তে দিজালিকুলানাং সন্নাদো যেবু তে তথা তত্তকা ফুলু তাঃ॥ ৩॥ সমিদ্ধতেতি আর্থিদাড়াগমাভাবোদ্ধরাঃ সমৈদ্ধতেতি সম্যক্ দীপ্তা বভূব্রিত্যথ:॥ ৪॥ অস্বক্ষ হাং কংসাদি ব্যতিরিক্তানাং সর্ক্পাণিনাং অজনে জান্নমানে আসন্ত্রসন্ত তেমিন্ সমরে॥ ৫॥

বৈষ্ণবতোষণী।

প্রসর সলিলম্ব জলকৃহ প্রীম্বরোস্তত্র তত্ত্র পৃথিধির্দেশঃ প্রাধান্য মাত্রেণ অত উভরেষামপ্যভরং জ্ঞেরং॥ ৩॥

স্থশ্পর্শ ইতি শৈত্যং পূণ্যেতি সৌরভ্যং পূণ্যন্ত চার্ম্বপীত্যমর:। ভটিনির্মান ইতি ধূলাদ্যসন্ধন্ধেন মান্দ্যমূক্তং। চশক্ষোহত্র বাবুন্ধ্যা বুর্মাতাপেক্ষয়া পূর্ব্বোক্ত সমূচ্চেরে। সতএব তত্র বায়ৌ সতীত্যর্থ:। শাস্তা নির্বাণ প্রায়া অপি। যদা প্রদক্ষিণাবর্ত্তাঃ সন্ত ইত্যর্থ:॥ ৪॥

ভীৰণাকারাদিখেন সর্ব্বেছপি উৰেগহেত্তর। তেভ্যোক্রছন্ত্যেব সর্ব্বেইতি অনুরক্রহাং সর্ব্ব প্রাণিনাঞ্চ। ততঃ কংসাদীনান্ত চিন্তোবেরোহিধিকমজনীতি ভাব:। নতু সর্ব্ব গুণোপেতত্বাদিকমজন জন্মর্ক্ স্য কিরন্তং কালমারত্য ইত্যপেক্ষারামাহ অজনে ভগবিদি জারমানে ইতি। বর্ত্তমান সামীপ্যে বর্ত্তমানবদা। তদাদিভাগমারভ্যৈব তত্তৎ প্রবৃত্তং কিন্তু নিকট নিকটং অধিকং ইত্যর্থ:। অজনপদং তস্যাপি বদা জন্ম তদা বা কিং কিমান্তর্যামিতি ভাব: অজনে ভগবতি জারমানে ইতি। বর্তি পদেন স্বেদ্মপি সর্ব্বিব বোজ্যং। নেতঃ স্বর্থমেব শুভ বিশেষোদরাৎ। তথাচ প্রত্বিবংশে। জনাহতা হৃদ্ভয়ো দেবানাং প্রাণদং স্তদেতি। অত্ব দিক্ প্রসাদাদরন্দির প্রবৃত্তাঃ হৃদ্ভি নাদাদরত্ব তৎকালীনাগতা ইতি জ্বেরং॥

ৰিদ্যাধৰ্য্যশেতি চশব্দঃ পূৰ্ব্বং সমানগণ্ডাপেক্ষয়। মুদেতি নিভ্ত খ্ৰীভগবং প্ৰাছভাবে সত্যপি তন্ত্ৰদাচরণে হেতৃ:। তদ-স্থসন্ধানাভাবেপ্যাক্ষিক হৰ্ষডাভাবেইনৰ তদাচরণাং। তদেতি পাঠম্ভ সৰ্বদেশ্য:। কিন্তু স্বাম্যসন্মত ইব মহী ত্যাদিনাইম শ্লোকে তস্যাধ্যান্তত্য ব্যাখ্যানাং। যথা তেনৈৰ সম্বন্ধ উদ্দিষ্ট:॥ ৫ ॥

क्रममन्दः।

षञ्जक्रहाः मर्स्यागिनां ।। ।।।

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

মধ্যস্থানাং ত্রয়াণাং প্রসাদমাহ দ্বাভ্যাং নদ্য ইতি। জলক্ত শ্রিষ ইতি রাত্রাবিশি দিবসস্য গুণঃ দ্বিজ্ঞালি কুলানাং সংনাদঃ তবকাশ্চ যাস্ত্র তা ইতি। বর্ষাস্থপি বসস্থস্য গুণ উক্তঃ॥৩॥

স্বৰ্থপৰ্শ ইতি শৈত্যং পুণ্যেতি সৌরভ্যং। পুণ্যন্ত চার্বপীত্যমর:। শুচি নি র্শ্বল ইতি ধ্ল্যাদ্যসম্বন্ধেন মান্দ্যস্ক্রং। শাস্তা--নির্মাণ প্রায়া অপি সমিদ্ধত অভাগমাভাব আর্ব: সম্যাদন্দিশাবর্ত্তব্যে উদ্দীপ্তা বভূব্রিতি মাপরেশি ত্রেভায়া গুণ উক্তঃ॥ ৪ ॥

মনাংলি মনো বৃদ্ধী ক্রিয়াদীনাপি তত্ত্বানীত্যর্থ:। অত্বক্রহামিতাত্বর কর্তৃক জোহবত্ত্বেন সাধ্নামপি মনাংসি পূর্বে অপ্রসন্ধান্যে বাসরিতি ভাব:। জায়মানে আসর প্রায়ভাবে অজনে প্রীক্ষকে॥ ৫॥

অপর যে সময় নদী সকলের জল প্রসম হইল হ্রদ সকল কমল সমূহে শোভাশালী ও বনরাজী সকল পক্ষি ভ্রমরাদির কলরবে পরিপূর্ণ পুষ্পান্তবঁকৈ শোভিত হইয়া উঠিল। ৩॥

আর যথন পবন স্থস্পর্শ হইয়া পুণ্য গন্ধ বহন পূর্বক বহিতে লাগিল দ্বিজাতিদিগের শাস্ত ত্তা-শন উদ্দীপ্ত হইয়া উঠিল ॥ ৪ ॥

অপিচ যে সময় সাধু পুরুষদের অথবা কংসাদি ব্যতিরিক্ত সকল প্রাণির মদঃ প্রসন্ধ ইল। এবং যে সময় সেই জন্ম রহিত ভগবান আসন প্রসর হইলে অর্থাৎ জন্মিবার উপক্রম করিলে ভূরি ভূরি তুমুভি ধ্বনি হইল তথা গজ্ববিগণ গান, সিজ্জারণনিকর স্তব এবং অস্বরা দিগের সহিত বিদ্যাধ্র সকল হুর্মে নৃত্য আরম্ভ করিলে, দেব ও ঋষি সমূহ হুর্যান্থিত হুইয়া পুস্প রৃষ্টি আরম্ভ করিলেন ॥ ৫ ॥

औमहाभरुष्।

የዓ

सन्तः सन्तः कलपता कर्गर्व्यत्रभूमान्नतः। निनीर्षः छम উদ্ভূতে आग्नमारम कर्मामरन ॥ ७॥ দেবক্যাং দেবরূপিণ্যাং বিশৃঃ সর্বশুছাশয়ः। আবিরাসীকাধা প্রাচ্যাং দিনীক্ষিব পুঞ্চলः॥ ৭॥

विशतवामी।

অহু সাগরং সাগরে পর্জতি সভি তমসাঁ উত্তে খনতমসি নিশীখে॥ ৬ ॥ বধা ৰথাৰং ঐবংরণৈব দ্ধপেশ॥ ৭॥

বৈক্ষবভোষণী।

অত্রাণি পূর্ববিষ্কর।। মূলেভি পুনক্ষিং পৰিভাঃ সভোন্যং মিণিডাঃ সন্তঃ। পাছসাগরং সাগরং গর্জন্তরন্থ তথাচ ঐবি-ফুপুরাণে সিন্ধবো নিজশংক্ষ বাদ্যং চজুর্বনোহরমিভি #

নেতৃত্ব শৃত্য ইত্যাদিকং কদা ইত্যাপেকারামাহ। নিশীধে অর্জনাত্রে কীদুলে তম উত্তে তমসা উট্ডের্ছান্তে ভূ প্রাধ্যে ভাজকুকাইমীনাহ বিশেষণক্ষের তৎ কাভি ধারা তথানালেনাপীন্দ্পনা বোজনার তথাপ্যভূতোপনেরং। নিশীধে প্ণচিজ্ঞাদরাদনাৎ
তেনোপ্রমাচেরং বথা কথাকিবে নছতিযোগ্যিতি জ্ঞাপতে। হুল্ভিনাদানে হৈছু: আরেতি। প্রীজ্ঞাদি উক্তর্জন প্রার্থানান প্রাক্তি
ত্রিন্ প্রকটা ভবতি তৎ প্রাক্তাক্ষণ ইত্যর্থ:। কংসাদীমাং তল্পজ্ঞানং গোসুনে জারমান মারাপ্রভাবেশৈবৈতি জ্ঞারং। অথবা
অবেতি বহি বদাহজনক কদাপ্যক্রদা জাতঘেনাক্রতক্ষ প্রীক্ষকত জ্ঞার্মং নিজ জ্ঞানা বীজিয়নাণং তত্বাপান্ত সমর্বিশেবগত
কোহিণ্যাখ্যমত্ব। তর্হোর ভদারন্ত এব। সর্কত ক্রানেং কালত বক্তচ যে গুণাং স্থকা ধর্মা হৈজনেতঃ সর্ক প্রভ সন্মের্থনিব কা। তথা সম্পন্ন ইত্যর্থ: অজন জ্ঞান্ত্রাদিনা
হত্ব। তনিছারার জীভারাং ত্র্বটি ঘটনীরাভি ক্রছেন্তিভিরেব বা। ব বভাবেশের বা। তথা সম্পন্ন ইত্যাদিনাত ক্রম্পনিতি পর্নন নেবেনর নক্রেত নির্দেশনা রহক্তবং হুচছতি। তক্ত তনুভোৎপ্র মহিমার্থনিতি ক্রেরং সর্কান্তণোপেতত্বং দর্শনিত পাজনেক্ত্যাদিনা।
বহাঁত্যর্ক বর্জিতেন মনাংসি ইত্যর্জান্তেন। তত্র স্বগুণোপেতত্বং শীন্তেতি পর্ম শোভনত্বং জারমান ইত্যাদিনাচ মুনুর্চ রিত্রাজ্ঞান্তন
মহীত্যর্জেনিচ অত্র বিদ্যাদাদি বায়ু পর্যন্ত বর্ণনং। শর্ষকান্তাদি সম্বন্ধনাং গুণানাং দর্শকং জ্বার্কার বিদ্যানীত বর্ণান্তলাক্ষান্ত ক্রিয় ইতি
রাত্রো চ দিবসস্বিদ্যান্ত ব্যাদ্যাধ্য হি তে ন সন্তবতি অতাে মন্ধং জগর্জ্ব র্জনান্য প্রপার্ষ্ট মূচো বিল ইতি বৈক্ষব্যাক্যং জন্মর্কারিভ
সম্বন্ধেহবজ্ঞেনিতি অক্তব্যান্য হি তে ন সন্তবতি অতাে মন্ধং জগর্জ্ব র্জনান্য প্রপার্ষটি মূচো বিল ইতি বৈক্ষব্যাক্যং জন্মর্কারিভ

দেবক ভগৰতো রূপমিব রূপং সচিচদানন্দবিগ্রহ:। তহুত্যামিতি তহুদাবির্জাবেহণি ন কচিলোই ইতি ভারঃ বিক্তৃরূপিণ্যামিতি পাঠোহপি কচিৎ সর্ব্ব গুহাশয়ঃ হুর্গমন্বাৎ হুর্বিতর্ক্যনাচ গুহেব গুহা প্রিভগ্রবৎ স্থানং সর্ব্বাহ্ন সর্ব্বজীবাদ্যন্তর্গকশাস্থ স্ত্রীইবক্তাদি

क्रमनम्र्छः।

অহুসাগরং সাগরেণ সহ। জারমানে জনার্দন ইতি। তজ্জ্জার্ধং জনানাং বাচনে সতীত্যর্থ:॥ ৬॥ দেবো বক্সনেবতজ্জপিন্ধাং ভদ্ধসন্থ বৃত্তি রূপারানিত্যর্থ: পাঠান্তরে বিশ্বন্ধপিশ্যাং তহন্তাপকঃপ্রাকৃত বিশ্বহানিতি চ নামণ বোদ্য-

ঐবিশ্বনাখচক্রবর্তী।

অভ্ৰুতঃ বদৃশীত্বতঃ দাপন্নং সাগরসর্জনং তালপাস্যান্তথা ॥

নয় দিশঃ প্রসেহরিতি সস্পং নির্মাণোড়্গণোদর্মিতি পূর্বোক্তে র্জনগরাঃ ধনু করা জগর্জুরিত্যশেকারাসাহ নিনীখ ইতি তম্পা উৎকর্বেণ মৃতে ব্যাত্তে ইতি নিনীখ এব মধ্যে প্রগং দেবংওওোলসমাত্ত্ প্রান্তাবিত্যসঙ্গ্রপং । জনানাং স্ব্রিভভত সুনি দেবা-দীনাং অর্জনে ভগবান্ আবির্ভব আবির্ভব সমস্যোধ্যমিতি বাচনে জ্লাম্বানে স্তি॥ ৬ ॥

শেষরপিন্যাং বিস্কৃত্যপিন্যাইতি চ পার্চঃ। দেবস্য বিকোন্নিব রূপং সচ্চিদানক ধনং বর্তত্বে বস্যান্তস্যাং আবিরাসীং প্রকটা বড়ব। সর্কীয়ে অহন্তি অহবিদগম্যহানের বধুরা বিক্রচানির জীবাভ্যকরণের চ সর্ক্রন প্রোক্রমান্তেতে ইতি নঃ। অনেয়া লানলো লগ

অধিকক কথন তক্ষেমর নিশীশে ভগনান্ জনার্দম জন্মিনার উপজেষ করিলেন প্রতিধাগরে জলধর সকল কলা করিতে গালিল। ১ ৪

त्ने ग्रेश, प्रतिहरक दयमन इक्ट क्रमान शांत्र औरांत्र काम, हमस्त्राभिनी दमरकीय गर्द गर्काछ-

তমঙ্কুতং বালকমখুজেক্ষণং চতুর্ভুজং শশু গদাত্মদারুধং।

শীবৎদ লক্ষাং গলশোভি কৌস্তভং পীতাঁঘরং দান্তপ্রোদদৌভগং॥

মহার্চ বৈদ্ধ্য কিরীট কুণ্ডলম্বিধা পরিম্বক্ত দহত্র কুন্তলং।

अध्यक्ति।

তমভুতং বালকং বস্থানে ঐকতেতি দ্বিতীয় শ্লোকেনাদ্বয়:। অভুতত্তে হেতুগর্ত বিশেষণানি অভুজেকণমিত্যাদীনি প্রীবংস

বৈষ্ণবতোষণী।

লকণাস্থ খহাস্থ শেতে হক্ষ্ভিত তয় বিহরতীতি। পুকলঃ সর্কাংশপূর্ণ ইত্যস্তর্যামিত্বালিনা জ্বলমালির্ বর্ত্তমানৈ রংশৈঃ সর্কৈরেব সংভূমাবতীর্ণঃ। অস্তর্বামিনামপি তদানীং শ্রীদেবকীনন্দনত্বেনৈর মহৎস্থ ক্রেড তথাচ প্রিভীয়বাক্যং। তমিমমহমঞ্জং শরীরভাকাং জ্বলি ফিলি থিটিতমান্ম করিতানাং। প্রতি দুশমিব নৈকধার্কমেকং সমধি গতোহন্মি বিধৃত ভেলমোহ ইতি। ভথাচ শ্রীবৈকুঠ লোকান্যধিষ্ঠাতারোপি ভত ন্ততঃ সন্ত্রাবতীর্ণা ইতি শ্রীহরিবংশান্তাকেন মুক্টমান্বতা গোমত্বে শ্রীগঙ্গুলগমনাদিনা স্পষ্টবাদিতি এতচে শ্রীভাগবতাম্তে বির্তমন্তি নচাত্র দোবঃ। স্থ স্থরপেণের পরম বিভৌ তত্তিব নিজ সর্কর্ত্তিং প্রকাশ্য তত্তেলো নিগুচ্তয়া তেবাং হিত্তাং। তথাচ শ্রীমধ্বাচার্যগৃতং পাল্লবচনং। স্ব দেবো বহুধা ভূষা নিগুণিঃ পুরুবোত্তমঃ। একীভূয়ঃ পুনঃ শেতে নির্দোবো হরিরাদিক্সদিতি। প্রাচ্যামিতি দৃষ্টাস্তেন সর্ক্তি প্রকাশমানভাপি শ্রীদেবক্যামাবির্ভাব বোগ্যতোক্তা। অতএব শ্রীবিষ্ণুপ্রাণেহপি ততেহিথিল জ্বাৎ পল্প বোধানাচ্যতভান্তনা। দেবকী পূর্ক সন্ধ্যানামাবির্ভৃতং মহাত্মনেতি। আবির্ভাবন্দ কংস বঞ্চনাদ্যর্থমন্ত্রমে মাসীতি শ্রীহরিবংশে। গর্জকালেম্বসম্পূর্ণে অন্তর্মে মাসি তে ব্রিয়ো। দেবকীচ যশোদাচ স্ক্রাতে সমং তদাইতি॥ ৭॥

ভিমিতি যুগাকং। বালকং মৃত্ স্থলাকারতয় বালকত্বেনৈব প্রতীয়মানং শঙ্খাদীনি উদিতি ঝটিতি কংসাদি হিংসনজ্ঞাপনায় উদ্যতানি উৎকৃষ্টীনি বা আয়ুধানি যস্ত তং। আয়ুধক্রমশ্চোক্তো শ্লোতমীয়ে বৃহদেগাতমীয়েচ এতদ্বানক মন্ত্র বিশেষ প্রসঙ্গে। দক্ষ-ভোর্দ্ধে স্বরেচ্চক্রং গদাঞ্চ তদধঃ করে। বামভোদ্ধে শাক্ষ ধিহুঃ শঙ্খণ্ড তদধঃ স্বরেদিতি। কিন্তু শঙ্খ চক্র গদা পদ্ম প্রিয়া জুইং চতুভূ জং ইতি বক্ষ্যমাণাত্মসারেণ। শাক্ষ স্থানে পদ্মং ক্রেয়ং। তত্রতু শাক্ষে পিদেশোপাসনা বিশেষার্থমেব ভগবতি তু সর্ক্ষদা সর্ক সমা-বেশাং নাসস্কর্মিতি। সাক্রপরোদাদিপি সৌভগং বর্ণ সৌন্দর্যাং যক্ত তং। মহার্হং তত্রতা রব্রেছপি প্রমোৎকৃষ্টং যকৈদুর্যাং বাল-

क्रममञ्ज

ভোক্তা সর্বাহ্ন গুহাত্ম তথা ছজের হলের বৈক্ঠানির শেতে নিগৃঢ়ং ক্রীড়তি যা স সর্বাংশ পরিপূর্ণ ইত্যর্থা। দৃষ্টান্তে চ তথাহ পুদল ইতি ॥ १ ॥

তমভুতমিতি পরিচ্ছদানামণি তৎস্বরূপ ভূতত্বে লিক্ষমিদং তৎসহিতানামেবাবির্ভাবাৎ। পরিষক্তেতি কিন্মী রীতানেক কেশ

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

গর্ডাদ্যন্তিতঃ সন্নিঃসরতি তথা নেতাত দৃষ্টান্তঃ যথেতি কিঞ্চ দৃষ্টান্তদাষ্টান্তিকরে। যুঁগপদেবাবির্ভাবমাহ তদিনে নিশীথে প্রাচ্যাং দিশি অষ্টম্যা ইন্দ্ রপ্টোছপি মহংশং মংপ্রভ্ জন্মনা অলঞ্চকারেত্যানন্দোত্রেকেণ প্রকাঃ পূর্ণিমায়া ইন্দ্রির প্রকাঃ সন্ যথা আবিরাসীজিত্বির দেবক্যাং বিষ্ণুরপি সর্কাংশকলা পরিপূর্ণ আবিরাসীদিত্যবয়ঃ। আবির্ভাবশ্চ কংসবঞ্চনাদ্যর্থমন্তমে মাসি বছকং হ্রিবংশে গর্তকালে অসম্পূর্ণে অষ্টমে মাসি তে ন্তিরৌ। দেবকী চ বশোদা চ স্ব্রান্তে সমং তদেতি। শমাণিক্যনান্নি জ্যোতিরা হে জন্ম-পত্তী চোক্তা। উচ্চতাঃ শশিভৌম চাল্কিশনয়ে লগ্ধং ব্যো লাভগো জীবঃ সিংহ তুলালিষ্ ক্রমবশাৎ প্রোশনোরাহ্বঃ। নৈশীথঃ সময়োহন্টমী বুধদিনং ব্রহ্মকর্মত ক্ষণে প্রিক্যান্তিধমন্ত্রেক্রণমভূদাবিঃ পরং ব্রন্ধ তদিতি॥ ৭ ॥

তমঙুতং বালকং বহুদেব ঐকত ইতি ছিতীয়েনাবরঃ। অভুতত্বে হেতু গর্তাণি বিশেষণানি অবুজেকণমিত্যাদীনি। বৈদ্ব্যং

র্যামী ভগবান্ হরি ঈশ্বর রূপে আবিভূতি হইলেন ॥ ৭॥

হে রাজন্। ভগৰান্ আবিস্তৃত হ'ইলে কস্থদেব দেখিলেন সেই বালক অতিশয় অনুত, উঁহোর পদ্মপলাশ তুল্য লেমচন, চারি হস্ত, শৃত্ম গদা প্রভৃতি আয়ুধ ধারণ করিয়াছেন। বক্ষঃছলে শ্রীবংসের চিহ্ন বিরাজমান, মলদেশে কোস্তভনণি শেভিমান। ভাহার পরিধান পীতবসন, বর্ণ নিবিভ জলধর

66

উদামকাঞ্যক্ষ কন্ধণাদিভির্বিরোচমানং বস্তুদেব ঐক্ষত ॥ ৮॥ সীবিস্ময়োৎফুল্লবিলোচনো হরিং হতং বিলোক্যানকচুন্দুভি স্তুদা।

এ ধর্মামী।

লকণং গলেন শোভতে গলশোভী স: কৌৰভো যত্মিন্ তৃং। শীর্ষিক সহস্র কুন্তলং কিরীট কুণ্ডলানাং ডিয়া কুর্দপরিমিত কেশ মিতার্থ:॥৮॥

বিশ্বয়েন উৎফুলে বিশিষ্টে লোচনে যক্ত স:। গ্রামযুতং অম্পৃশং মনসা দত্তবান্ কংসনিগৃহীতক্ত দানাসভ্তবাং বিশ্বয়ে হেতু:

বৈষ্ণবভোষণী।

বায়জাখাং নীল পীত বক্ত ছবি রত্বং তছিদ্যতে মহিষ্ঠ তথা যদিন্ তাদৃশ্য কিরীট্যা থিয়েছিং কুণ্ডলয়ো বিষাহধঃ কিন্মীরিত বছল-কুন্তলমিতার্থঃ। যদা থিবেতি টাবন্তং হলবাদেতি বিধানাং। ততক মহা বৈদ্ব্যিমিব কিরীট্য কুণ্ডলছিবা পরিদ্ধক সহস্র কুন্তলং বস্যু তং তথবানাছবি তথা শোভমান কুন্তলবৃদ্ধং ইতার্থঃ। কিরীট্য ত্রিকোণ পত্রাবলিরপং মুকুট্ত সমস্ত কচাবরকমিতি ভেদঃ। উদ্ধামভিত্তেজনাত্যুত্তী কাঞ্চাদিভিঃ ক্রছা বিশেষতো রোচমানং। যথা তৈরুপলক্ষিতং স্বত্রের বিরোচমানং কিন্ত স্বরূপ লাবণ্যাদি লব্ধ ধামভিরেব তৈঃ স্বয়মসৌ প্রতিভূষিতো ভবতীতি ভাবঃ। অত্রের ঘনতমস্যুপি তাদৃশমৈকত। বক্ষাতেচ স্বরোচিবেতি। অত্র গৌতমীয়ে যালকড়োপরি নিবিষ্টামন্ট্রী সমার্তহা। ব্রহ্ম শিবাদি ত্যুখনানহঞ্চোক্তং তরোক্তং পিত্ভ্যামন্ট্রোন্টি ক্রেয়ং॥৮॥

স পরম ভাগ্যবান্ হরিং কংসাদীনাং সর্বজ্ঞানহরং ভগবন্তং পুত্রতাং প্রান্তাং প্রান্তাং প্রান্তাং সাক্ষাক্ ইণ বিদ্যালে বিক্সিত লোচনঃ সন্ তদা তৎক্ষণমেবাস্পৃথ অস্পর্শার দানায় সংক্ষমকরোও। নমু কংসেন পীড়িতস্য স্তত্সর্বস্য বন্ধস্য সংক্ষোহিপি কথং ঘটেত কথং বা লানং বিনৈব দানং তত্রাহ ক্ষেত্তি কৃষ্ণপ্রান্তাৰ সভাবেন য উৎসব উল্লাসন্তেন সন্ধ্রা মনত্তরা স্বস্থা হাততা বিচার-মিপি ন কৃতবানিতি ভাবঃ। তত্স মুদা ব্যাপ্তো বভূব কৃণং মুদ্ধ ইবাসীদিত্যবং। যথা মুদা হর্ষ পূর্বকং লাতঃ সন্ক্ষেত্যাদি

ক্রমসন্দর্ভঃ।

মিত্যৰ্থ: ॥ ৮ ॥

স্থতং হরিং বিলোক্যেতি। অবভার সামান্যজ্ঞানং তত্ত্ব ক্লফেতি মুনীক্সবাক্যং তৎস্বভাবং বতএবাত্যস্কোল্লাসক চেতত্ত্বরা

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

নীল পীত রক্তছবি রত্নং তল্যুক্তং কিরীটং ত্রিকোণ প্রাবলীরূপং ॥ ৮॥

স বিদ্যবেত্যহো মহামুক্ত মুনীক্রাণামপি ছর্ল দর্শনঃ পরমেশ্বরো মম পুনরবিদ্যাবদ্ধ জীবস্যাবিদ্যাবদ্ধজীবেন কংসেনাপি বহিরপি বদ্ধস্য গৃহহেবতীর্য দৃশ্যো বভূবেভ্যেকে। বিদ্যাঃ । সর্জ ব্যাপকং পরং ব্রদ্ধাপি মাত্রধর্গন্তান্ত্রলাটিত দিতীয়ঃ । বিবিধার বস্ত্র কটক কুণ্ডল কিরীটাদ্যলম্বার বিশিষ্ট এব বালকো গর্ডারিক্রান্ত ইতি তৃতীয়ঃ । সাক্ষায়হাভয়স্যাপি ভীষণ আদিপুক্বো ভগবানপি কংসভর্মভীতং মাং স্বপিতৃত্বেনালীচক্রে ইতি চতুর্থঃ । হরিং স্থতং বিলোক্যেতি তদ্মিন্ স্বেইদেব্দ প্রস্থবা ভাবনা যৌগপদ্যেন্দ্র তস্যাভূদিতি ভাবঃ । ক্র্ঞাবতারেত্যহো সামান্য বালক্স্যাপি জন্মনি পিতা দান ধ্যানাত্যংস্বং করোতি মম তুর্জ্ঞ এব পুরুবেনাবতীর্ণঃ সম্প্রভাহং ক্র্থব্বং করোমীতি প্রাপ্ত সন্ত্রমঃ মুদ্য আগ্লুতঃ আনন্দসম্প্রেণ নিমক্ষিতঃ সম্প্রদ্ধ মনসা দদৌ ।

সদৃশ হতগ, মহামূল্য বৈদূর্ঘ্য মুকুট তথা কুগুলের হ্যুতিতে অপরিমিত কেশপাশ দেদীপ্যমান, আর তিনি অত্যুৎকৃষ্ট মেধলা অঙ্গদ তথা ককণাদি অলঙ্কারে দীপ্তি পাইতেছেন ॥ ৮॥

ভগৰান্ হরিকে উক্ত রূপে আবির্ভূত হইতে দেখিবামাত্র যদিও বহুদেবের নয়নধর বিশায়ে উৎ-স্থা হইল, কারণ কৃষ্ণাবজারোৎসবের সত্তম জন্মিল তথাপি পুত্রমুখ দর্শন হইল বলিয়া আনন্দে পুল-কিত হইলেন এবং ওৎক্ষণাৎ মনো খারা দশ সহত্র ধেকু দান করিলেন। সে সময় বন্ধনাবস্থায় কৃষণবিতারোৎদিব দংলমে। হস্পৃশব্দা বিবেভ্যোহর্তমাগুড়ো গৰাং॥ ৯॥ অথিনমন্তোদিবধার্য্য প্রুষং পরং নভালঃ কৃত্বীঃ কৃতাঞ্জলিঃ। অরোচিষা ভারত দৃতিকাগৃহং বিরোচয়ন্তং গতভীঃ প্রভাববিৎ॥ ১০॥ প্রিক্লেব উরাচ॥

বিদিতোহিদি ভবান্ সাক্ষাৎ পুরুষঃ প্রকৃতেঃ পরঃ। কেবলামুভবানন্দস্বরূপঃ দর্কবৃদ্ধিদৃক্ ॥ >>

শ্রীধরস্বামী।

কুকাৰভারেতি মুদা আপুতো ব্যাপ্তঃ স্নাত ইতি বা॥ ৯॥ 💮 কুতধীঃ 😘 জবুদ্ধিঃ॥ ১০%।

পুরুহ্না পশুন্ জাং পরিভাজ্যাহ অহে৷ বিদিভোহসি কথং বিদিতোহস্থি তবান্ প্রক্তঃ পরঃ পুরুষ ইতি রমু কিম্আকর্তাং

বৈষ্ণকতোৰণী দ

লকণোভূষা স্পাদিতি॥ >॥

অধানস্তরং সদ্য এবেত্যর্থ: পুরুষং পর্মেশ্বরং তত্তাপি পরং পরিপূর্ণ তরা অবতীর্ণং অবধার্য নিশ্চরেন জ্ঞান্ধা তত্ত্ব হত্তবীঃ
তত্ত্ব ন্যস্তচিত্ত ইতি ওতশ্ব ক্ষত্ত প্রণামানি অলানি ভূলাদীনি বদ্য সং সাষ্টালং প্রণম্য ইত্যর্থ: যন্ব অবনত শিরাঃ সন্ অবধারণে
হেন্তব্বস্থায় স্থীবেলানাধার্থেন মনো নরনাহলাদকেন মিলিতার্কেলু কোটি ভূল্যেনাপি রোচিষা মধ্য তমো ব্যাপ্তং স্তিকাগৃহমেব নতু ত্বাহুং বিশেবেণ রোচরস্তং প্রকাশরস্তং এবনেকল্পৈর যুগপরিল তেজসং কচিন্বিভারেণ কচিচ্চ সম্বরণেন পার্মেশ্বর্য শক্তিদ্যোতিতা কীল্পা সম্বতীও তথা গঙ্ভীঃ অপগত কংসভরঃ সন্। নহু শ্বর শক্ষং কংস্প্রহরিকাঃ শ্রোযাক্তীতি ভর হেত্ত্বস্তোব
ভক্তাই প্রজ্বাবং উইদক্ষ্যং ক্ষেত্তীতি তথা সং। কিং ক্রিয়ান্তি এতে বরাকাঃ গোপি বা ইতি ভাবরিন্তেতি ভাবঃ। ভারত হে ভরত
বংগ্রেতি শ্রীবস্থানেক ভারাভরেশ প্রীভ্যা সংঘাধরতি। শ্লেবেণ ভাঃ শ্রীকৃষ্ণক্ত কান্তিঃ হেতু গর্ভত্তব তল্তাং রভেতি॥ ১০ ॥

বিদিত ইতি তৈর্ব্যাখ্যাতং তত্ত্ব কথমিতি কিং প্রকারক ইত্যর্থ: ভবান্ ইত্যাদৌ হেডু রূপে বাক্যান্তরে তত্ত্বক্ষণদৃষ্ট্যা পরম পুরুষত্বেন সিছো ভবান্ প্রকৃতেঃ পর ইতি ব্যাথ্যেয়ং। নিষ্কৃত্যাদৌ নমু তহি আশ্চর্য্যবং কথং বিদিতোহসীতি বদসি পুরুষস্য

ক্রমসন্দর্ভ:।

বোধনায় ততো বিশেষ জ্ঞানায় ওতো বিশেষ জ্ঞানমাহ॥ ৯॥

পরং পুরুষং **জীক্ষ**ণখ্যং শ্বরং ভগৰস্তমেব নিশ্চিত্য তত্ত হেড়ুং ক্লডণীঃ ন্যস্তচিত্তঃ তথৈৰা**হ** ॥ ১০ ॥

বিদিতোংসি ভবান বিজ্ঞাতোংসি কথং যা প্রক্তেঃ পরঃ পুক্ষতন্ত্রটা স ভবান যা কেবলামুভবানক্ষঃ পরপ্রকাষ্য আত্মা স ভবান

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্ত্তী।

বিশ্রাননং বিতরণং স্পর্শনং প্রতিপাদনমিত্যভিধানাৎ স্পৃশি দানার্থকোহপি জ্ঞের:॥ ১॥

ক্বতধীন্ত নিষেব যৌগপদ্যেন কুতুতখর্ব্য বাংসন্য বৃদ্ধি:। গতভী: প্রভাববিদিতি। হস্ত হস্তানিরপাকে কংস সহসাগত্যান্তং প্রযোক্যতীতি প্রবৃদ্ধা বভরম্বভূব তদৈখর্ব্য বৃদ্ধা প্রভাব জ্ঞানেন গতমিত্যর্থ:॥ ১০॥

হে জগবং দং মামেবং নিজ অরপং দদর্শরসি জন্যান্তমভিপ্রারঃ মংপিতা মদর্থং কংদান্তিভতি তন্ত্রামীশরং প্রতীতা নির্ভরো তব্যবিতি তৎ সতাং দ্বনীশরত্বেন মম প্রতীতি জাতৈবেত্যাহ। বিদিতোদি। কীদৃশদ্বেনেতি চেদত আৰু বং প্রকৃতেঃ পরঃ

ছিলেন ভাহাতে বস্তুতঃ দান হুইবার সম্ভাবনা কি ? ॥ ৯ ॥

হে ভারত। তদনন্তর শুদ্ধবৃদ্ধি বহুদেব ঐ পুদ্ধকে পরম পুরুষ অবধারণ করিয়া প্রণত হইলেন এবং কৃতাঞ্জলি হইয়া নির্ভয়ে স্তব করিতে লাগিলেন। হে রাজন্। তৎকালে বালকের শ্রীর কান্তি ঘারা সৃতিকা গৃহ সাভিশর উদ্যোতিত হইতেছিল। ১০॥

বহুদের প্রথমতঃ পুজ বৃদ্ধিতে দর্শন করিয়াছিলেন, তৎপরে ভাবা পরিজ্ঞাগ পূর্বক করিলেন অহো ! আপনাকে জামিতে পারিলাম, আপনি প্রকৃতির পর পুরুষ, কি আশ্রর্কার সাকাৎ দৃষ্ট হইলেন তগবন্ ! কেবল অনুভব ও আনন্দই আপ্রামার বন্ধণ এবং আপনি সর্বপ্রাসির কর্তবারী; এতারশ

সএব স্বপ্রকৃত্যেদং স্ক্রীথে ত্রিগুণাত্মকং। তদ্মু দ্বং ছপ্রবিষ্টঃ প্রবিষ্ট ইব ভাব্যসে॥ ১২॥

ेशत्रवामी।

পুরুষস্ত প্রকৃতেরমুদ্ধাদেবেত্যত আহ সাক্ষাদিতি প্রত্যক্ষত ইডার্ছ:। নম্বন্দিসন্নির্দ্ধং প্রত্যক্ষত উপদত্ততে কিঞ্জিনিবিত্যত আহ কেবলেতি কেবল-চাসাবমুক্তবক্ত আনন্দক্ষ স এব শ্বরূপং যন্ত সং কিঞ্চ সর্ব্যবিদ্ধুক্ নক্ষেবংভূতো দৃশ্রো ভবতীতার্থ:॥ ১১॥

নমু দেবকীজঠরপ্রবিষ্টস্য কিমিরমভিন্ধতিঃ ক্রিয়তে অত আহ স এবেতি সএব উক্ত স্বরূপ এব দং ন দেবকীজঠরে প্রবিষ্ট ইত্যর্থ:। নমু বিশ্বং স্ট্রা তদমু প্রবিষ্টস্য কুমেত্বত অত আহ স্প্রস্তাতি স্মার্রা ইদং স্ট্রা তদমু সমপ্রবিষ্ট এব। নমু

বৈক্ষৰভোষণী।

প্রক্তে রন্যথং প্রসিদ্ধনেবেত্যত আহ সাক্ষাদিতি। বদা পরমন্ত্র ভল্ঞাপি সাক্ষাৎ প্রাপ্ত্যাতিপ্রদ্ব্যরাহ বিদিতোহসীতি ময়াদ্য দ্বস্পলক্ষেহসীতার্থঃ। বেদন প্রকারমেবাহ যঃ প্রকৃতেঃ পরঃ প্রকৃতিজ্ঞ পৃক্ষঃ স তবান্ যথা যঃ কেবলাম্ভবানন্দ্রমপঃ পর ব্দ্রাধ্যা নির্মিশেব আত্মা সোহপি তবান্ যক্ষ সর্ম বৃদ্ধিক্ সর্মান্তবামী পরমান্ধা গৈছিপি তবানিতি তত্তজ্ঞপক্ষাৎ ত্বরং তগব্বেন বিদিতোসীহত্যর্থঃ। তত্তাপি সাক্ষাদিবিতোহিসি চকুবা দুটোহসীতাহো মম ভাগ্যমহিষেতি ভাবঃ॥ ১১॥

তত্র দৈক্তেন তদ্মন্ নিজ পুরুষাপলপনার সা দেবকী সর্ব্ধ জগিরবাস নিবাসভ্তেতি দিট্টার তে কুদ্দি গতঃ পরঃ পুনানিত্যাদি
লক্ষমণি তৎ প্রবেশং বারয়তি স প্রবেতি চতুর্ভিঃ তদ্মাৎ সর্ব্ধ ব্যাপকত তবাত্র সম্প্রতি প্রকাশ এব নতু প্রবেশ ইতি তাৎপর্যাঃ
বাত্তবার্থবেবং ন কেক্লং সাক্ষাৎ প্রাপ্তোহসি অপিতু পুরুত্তরাপীত্যাশরেনাহ স ইতি সএব পুর্ব্বোক্ত মদহভবরীত্যানেনৈর রপেণ
করঃ ভগবত্রপ এব ত্বং ততো হেতোরপ্রবিষ্টঃ অসম্ভাবিত প্রবেশ ইতার্থঃ। পরাজেরসোঢ় ইতি ব্রিদ্ধার্থ বৈশিষ্টং তথা ভূতোহশি
ক্রপ্রকৃত্যা প্রেমবশ্যেন পরমাচিন্ত্য শক্তিষেন্ত নিজ ক্ষতাবেনেদং দেবকুলেরং হৈ নিশ্চিতং প্রবিষ্টো ভাবাসে ক্রিরেস তত্ত্ব দৃষ্টারঃ।
ক্রপ্রে ক্রীটাদৌ কারণার্থবাদীর রূপেন ত্রিগুণাত্মকং ব্রদ্ধান্তং ক্রিয়া গর্ডোদকশারি রূপেণায় পশ্চাৎ তদিবেতি। অত্র সামাজতোহয়ং
ভাবং বক্সমাণায়সারেগাবোগ্যেহণি তত্ত্ব বিদ্বিতি বালাত্র বোগ্যে কিম্তেতি। বিশেষত ক্ষাং ব্রদ্ধান্তি ভত্তা তৎ প্রবেশে সত্যাপি
ব্রদ্ধান্তাস ক্রত্বেন বং প্রেমাভাবাং প্রীক্তভগনম্বনে তৎস্পর্শিদ্ধাভাবান্ত ত্রোদাসীন এবাসি অতঃ প্রবিষ্টোপ্রপ্রবিষ্ট এব ক্ষ্যান্ত তারণরীত্যাদন্ত্যের তন্তদেলাগ্যতেতি তহুদেবচ মমেতি ত্ব বিগ্রহ প্রবিষ্টান্তের স্ক্রত্মাণি ত্বং প্রাপ্তেইনিক্র প্রত্তমের সন্দর্শন নিশ্চিতমপ্রবিষ্টব্বং ইদত্ত প্রবিষ্ট ইব ভাবাসে বথা ক্ষান্তান্যঃ প্রবিষ্টো ভবতি তথৈব ক্রিরুসে ইতি এতহুক্তং ভবতি নচান্ত র্ব বিহিব্য ন পূর্বং নাপিচাপরং ইত্যাদিরীত্যা পরমকারণতবৈত্বক্রপর্যালি বিত্ত্মণি নিজ :বিপ্রহং নিজকন প্রেম্বা স্ক্রদেশ মধ্যন্থিতমের সন্দর্শ-রুসি তেন চানন্দ্রসি ব্রদ্ধান্ত্রিবনোহণীতি অন্যথাস্থপত্যা মনিষত্র মহোবাদি বং কাগ্যচিন্ত্য শক্তিরের নিমিত্তম্পগদ্যতে তবৈর

ক্রমসম্পর্ড:।

সর্বা বৃদ্ধি দৃক্ সর্বান্ধর্বামী সোহপি ভবানিতি শ্বরং ভগবন্ধেনেতার্থ:। তত্ত্বাপি সান্ধাদেব বিদিতো দৃটোহসীতাহো মম ভাগ্যমিতি ভাব:। কিরং এতহা যত: প্রতয়াপি প্রাথোহসীতি তমবতার কারণেন সহ বক্তুং তাদৃশ প্রাথি হল্ল ভতাখ্যাপনার প্রকৃতিপরা দিশং বোজয়ন্ তস্য ঘটনার সর্বাদি পরিপাটিশাসুবদন্ সর্ব প্রবেশে। তাবদাহ ॥ ১১ ॥

স এবাহ। ভত্ত প্রবেশোহপি ভতঃ পরস্বমাহ এবং ভবানিতাব্যাভ্যাং যথেতি স্বাভ্যাং॥ ১২ ॥

🔊 বিশ্বনাথচক্রবর্তী।

পুক্ষ **ওদীকণ কর্ডা স ভবানেৰ বং কেবলায়ভবানন্দ 'খরপং পরবন্ধাণ্ড আত্মা স** ভবা**ন্' বং সর্কার্ডি**দৃক্ সর্কান্তর্যামী সোহপি ভবানু সাক্ষাদেব খরং ভগৰত্বেনৈৰ ইতি সর্কাষ্থং জানাম্যেবেত্যর্থঃ ৪ ১১ ৪

নত্ন তোত ত্বল্হে প্ৰবিষ্টং মাং পরিচ্ছিরনের জাত্ত্যের জানাসি জতঃ কিমপি বে তবং ন জানাসীত্যাশক্ষ্য অজ্ঞানমাবিস্থৰি লাহ স এব উক্ত স্বন্ধপ এব তং স্প্রপ্রকৃত্যা স্বীয় প্রধান শক্ত্যা ইদং জগুৎ স্ট্রা তদত্ত অপ্রবিষ্ট ইব প্রবিষ্ট ইব চ তাব্যসে নির্পাসে। লগজোহস্তম্পজ্ঞাননিস্থাৎ ক্ষপ্রবিষ্ট ইব নম্প্রবিষ্টঃ বহিচ্চোপ্সভাসানস্থাৎ প্রবিষ্ট ইব মতু প্রবিষ্ট ইত্যবং। এবনের সর্বত্

ट्यान वाक्ति कथन काराज्य मृश्र शरतन नारे, रेशांखरे थाणाक नितीक्षण कतिया जाकार्या मानि-

ভগবন্! আপনকার শ্বরূপ এই প্রকারই ইহাতে কোন সন্দেহ নাই, আপনি দেবকী জঠর প্রবিষ্ঠ

যথেমে বিকৃতা ভাবান্তথা তে বিকৃতিঃ সহ। নানা বীৰ্য্যাঃ পূথপ্তুতা বিরাজং জনয়ন্তি হি। সমিপত্য সমুৎপাদ্য দৃশ্যন্তেইসুগতা ইব। প্রাথেব বিদ্যমানত্বামতেযামিত সম্ভবঃ ॥ ১৩॥

औधत्रशामी ।

কথং তৰ্হি প্ৰত্যোচ্যতে ত**ং স্ট**্ৰ **তদেবাস্থা**বিশদিত্যত **সাহ প্ৰ**বিষ্ট ইবেজি ভাৰ্যদে নিৰূপ্যদে প্ৰত্যক্ষতো বা সজ্জপেণ প্ৰবিষ্ট ইব লক্ষ্যদে॥ ১২॥

অত্র দৃষ্টান্তঃ যথেতি ইনে অবিক্তা ভাবা মহদাদরে। যথা তথেতি দৃষ্টান্তং বিরুণ্যেতি তে বিকৃতৈরিতি তে হি বিকৃতিঃ ষোড়শ বিকারৈঃ সহ সন্নিপত্য মিলিছা বিরাজং ক্রন্ধান্তং জনরন্তি সন্নিপতনে হেতুঃ যতঃ পৃথগ্ভূতাঃ সন্তঃ নানা বীর্যা বিশিষ্ট কার্য্য সমর্থান ভবন্তি অতঃ সন্নিপত্তেতি। এবং সমুৎপাদ্যাম্গতাঃ প্রবিষ্টা ইব দৃশুত্তে ন পুনঃ প্রবিষ্টাঃ কুতঃ উৎপত্তেঃ প্রাণেব কারণ তয়া বিদ্যমানস্বাৎ ন তেরামিহ স্থান্ত কার্য্যে পশ্চাৎ সম্ভবঃ প্রবেশ ইতি ॥ ১৩ ॥

বৈষ্ণবতোষণী।

নিজ্ঞজনঃ। প্রেম প্রবর্ত্তিতয়া লোকবল্লীলা কৈবল্য বিনোদশালশালিন ন্তব প্রবেশোপি সম্পাদিত তথা পুত্র ভাবোহপীতি তত এব ভগবতো বরাদিকং চ নির্বাদ্দিতি জ্ঞেয়ং তত্র শ্রীদেবক্যা তদর্থমন্মিলেব জন্মনি ব্রতং বিধায় তত্মান্তবরো লব্ধ ইতি শ্রীবিধফুর্ম প্রাসিদ্ধিকামুন্মর্ত্তব্যা॥ ১২॥

অন্যত্র মহদাদীদামিব ভবতঃ স্থতরাং প্রবেশোহপি ন সম্ভবেদিত্যাহ যথেতি যুগ্মকেন বহির্গতস্যান্তর্গমন্দমেব প্রবেশঃ পূর্ব্বং বিদ্যমান এব হি কারণ কার্যাংশাভিব্যক্তিশ্চেতি ন তেষাং প্রবেশ ইত্যর্থঃ॥ ১৩॥

क्रमममर्ज्यः।

যথেনে পৃথিব্যাদর তথা তে মহদাদরোপি। কথং হি যন্ত্রাৎ বিক্লতৈরিতি পূর্বত তু সঞ্চাদিভিঃ। পরত যোড়শবিকারেঃ পূর্বত বিরাজ্য তৎপ্রারং ঘটং পরত বন্ধাণ্ডং॥ ১৩॥

ঐবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

বর্ত্তমান খং মালাহে প্রবিষ্ট ইব নতু প্রবিষ্টঃ সর্কাদৈব বর্ত্তমান খং জাত ইব নতু জাতত্তেন চ সর্কাব্যাপক মূর্ত্তেত্তব কংসঃ কিমিপি কর্ত্তুং ন শকুরাদিতি জানাম্যেবেতি ভাবঃ ॥ ১২ ॥

অত্র দৃষ্টান্ত:। যথা ইমে অবিক্বতা ভাবা মহদাদয়ো ব্রহ্মাণ্ডে প্রবিষ্টা অপি ন প্রবিষ্টা: তত্র পুন জাতবৎ প্রকীতা অপি ন জাতা স্তথিব অমিত্যর্থ:। দৃষ্টান্ত: বির্ণোতি তে অবিক্বতা: বিক্তি: ধোড় শবিকারে: সহ নামা বীর্যা: পরস্পর বিসদৃশ অরুপা অপি পৃথা ভূতা: পরস্পর মিলিতা অপি সন্ধিপত্য চৈতন্য প্রেরণবশামিলিতীভূয় বিরাজ: জনয়ন্তি। তত্ত বিরাজ: সমুৎপাদ্য অনুগতা ইব তত্র প্রবিষ্টা ইব দৃশ্যন্তে মতু প্রবিষ্টা:। তহুছিরপি তেখা: বর্ত্তমান আদিত্যর্থ:। তথা তত্র বিরাজি সমুত্তা ইব দৃশ্যন্তে নতু সমুত্ত তাত্তর হেতুমাহ প্রাণেবেতি ইছ বিরাজি সন্তব উৎপত্তি:॥ ১০॥

নহেন। নিজ মায়ায় এই ত্রিগুণাত্মক বিশ্ব স্থৃষ্টি করিয়া পশ্চাৎ ইহাতে প্রবিষ্ট না হইয়াও প্রবিষ্টের ন্যায় লক্ষ্য হইতেছেন॥ ১২॥

ভগবন্! যদ্রপ অবিকৃত ভাব অর্থাৎ মহদাদি পদার্থ সকল বিকৃত ভাবের সহিত অর্থাৎ বোড়শ বিকারের সহিত মিলিত হইয়া বিরাজ অর্থাৎ ত্রন্ধাণ্ড উৎপাদন করে। ভগবন্! অবিকৃত ভাব মহদাদির সহিত বিকৃতভাব মিলিত হইয়ার কারণ এই ঐ সকল ভাব পরস্পার পৃথক্ হইলো বিশিষ্ট কার্য্যে সমর্থ হয় না, অপর, অবিকৃত ভাব সকল বোড়শ বিকার সহ মিলিত ছইয়া ত্রন্ধাণ্ড উৎপন্ন করণান্তর যদ্ধ্য তাহাতে অনুপ্রবিষ্টের ন্যায় দৃষ্ট হয় বস্তুতঃ প্রবিষ্ট নহে, কারণ উৎপত্তির পূর্বেষ্ট করেণ বন্ধান ছিল, মৃত্রাং কার্য্য স্ট ইইলে পশ্চাৎ প্রবেশ সম্ভবে না ॥ ১০ ॥

এবং ভবান্ বুদ্ধাসুমের লক্ষণৈ প্রতিষ্ঠি গৈঃ সন্ধা তদগুণা এহঃ। অনারত ছাৰহিরস্তরং ন তে সর্বল্য সর্বাছান আত্রবস্তনঃ॥ ১৪॥

धिशतकामी।

দাই জিকে অতিদিশতি এবং ত্বানিতি নমু যদ্যহমপ্রচ্যত স্বরূপ এব কারণতরা কার্যের্ বর্ত্তে হি তেছিব্রিরে গৃঁহ্মাণেরু মম প্রহণ কিং নাজি ত্রাহ বৃদ্ধান্থ্যে সক্ষণে রিতি বৃদ্ধা রূপাদি জ্ঞানেনাহ্মেরং লক্ষণং স্বরূপং যেবাং তৈওঁ গৈরিব্রিরেপ্রাইম্ব প্রতি বৃদ্ধা রূপাদি জ্ঞানেনাহ্মেরং লক্ষণং স্বরূপং যেবাং তৈওঁ গৈরিব্রিরেপ্রাইম্ব প্রেরণ করিছে বৃদ্ধার প্রায় সহ তাবমাত্রং গ্রহণে কারণং কিছ ইব্রিরাণাং শক্তিং সাচ কার্য্যক সমধিগন্যা যণা কার্য্যমের করাতে অতো যথা চক্ষ্বা রূপ গ্রহণে রুগদি গ্রহণং নাজি তথৈব বিষয় গ্রহণে স্বর্ত্তির্বাপাং শক্তিং সাচ কার্য্যক প্রধানকর গ্রহণ করিছে ক্রিন্ত্রার এবং তাবং প্রারেশ বিদ্যানার্থা প্রবেশে। নাত্তী ভূজিং। কিঞ্চ পরিছিন্ত্রস্কান নীড়ে পক্ষাদিবং প্রবেশে। ভূবেং তব দ্বার্ত্ত্বাদপরিছিন্ত্রত্বেন বহিরন্তর তেদাে নাত্তি কৃতঃ প্রবেশ ইত্যাহ স্বন্যান্ত্রতাদিতি। স্বনার্ত্ত্বে হেতৃনাহ সর্বস্বোতি নহি স্বব্রির্বাপ্য স্বন্যাব্রক্ষরিত ব্যাপ্রাতিতি স্বান্থা নহি ব্যাপক্ষ্যাবরণং বটতে জ্বা বন্ধনং পর্মার্থ্য বন্ধনান্ত্রণং ন ঘটত ইত্যর্থা। তন্ত্রাত্ত্রাম্বর্ণামিত্রা প্রবেশাে ন মুথ্যাহন্তি কৃতত্তরাং গর্ত্তে প্রবেশঃ স্বতা বন্ধান্ত্রতান প্রবেশা স্বতা বাদ্যাত্রিত ক্রেত্তরাং গর্ত্তে প্রবেশঃ স্বতা বন্ধান্ত্রতানন্ত্রতান স্বর্তা। ক্রের্ত্ত্রামিত্রা প্রবেশাে ন মুথ্যাহন্তি কৃতত্তরাং গর্ত্তে প্রবেশঃ স্বতা কেবলাহ্ত্রানন্দ স্বরূপ এব ছং বিদিতে।হ্সীত্যাশ্চর্যাং মম ভাগ্যমিত্যর্থা। ॥১৪॥

বৈষ্ণবতোষণী।

ভবতত্ত্ব পরমকারণত্বেন ন স্ক্তরাং প্রবেশো নচ স্পর্ণ ইত্যাহ এবমিতি তন্মাদেবভ্তস্য তব সাক্ষাদেবাহয়ং প্রকাশ: দোপি তব পরম প্রসাদময় ইতি ভাব:। অন্যতৈ:। তত্র গুণৈরিতি বিশেষণভেদেনার্থভেদাং দ্বিধা ব্যাখ্যাতং। যদ্ধা আত্রৈবার্থবিশে-বেণ প্রেমবশুরাদি গুণিলং বোজয়তি এবমুক্ত প্রকারেণ প্রেমবশুরাদিতি গুণিলহ নিতাবর্ত্তমানোহপি তেরু গুণেরু আগ্রহঃ প্ররাশক্তির্বস্য তথা ভ্তে। ভবান্ ভবতি কথছুতৈ: বৃদ্ধান্থমেরনের নতু প্রাপ্যং লক্ষণং স্বন্ধাণ বৈষাং তৈ: নতং সমশ্চাভ্যাধিকণ্ট দৃশ্যতে ইতি শ্রুভঃ। তত্র হেতবঃ দর্মদ্যোত্যাদয়ঃ সর্কময়য়য় সর্কারনঃ সর্ক্রেরভঃ স্ক্র্রাপ্তম বা আত্মনা স্বয়মের বস্ত যন্তরং পরম প্রস্থার্থ স্বরূপস্যত্ত্যি তথাপি তালা গাগ্রহ ইতি সতত ভক্তপ্রেমবশন্তেন সত্তাশেষ সালা গাভিব্যঞ্জকত্বং দর্শিতং তত আব্রোর্থং প্রভ্রেয় প্রবিষ্টঃ প্রাপ্তোসিচ তত্ত্বতে। যুক্তমের তদের চাবয়োরপি পরম ফলমিতি ভাবঃ॥১৪॥

ক্রমসন্দর্ভঃ।

এবং ভবান্ তথা তলগুণেষু গৃহমাণেষু অএহো গ্রহণাভাবো যদ্য তাদৃশক ভবানিতি তু স্থিতৌ ততঃ পরত্তমুক্তং প্রবেশমেব নিরাকুর্মন্ প্রপঞ্চ্যা স্বতঃ সন্তাং পরিহরতি ॥ ১৪ ॥

<u> वी</u>विश्वनाथहळ्कवर्त्ती ।

কিঞ্চেমে তত্তলগুণৈ বিধি। এব ভবাং স্থ কারণছেন প্রবিষ্টোহপানিপ্ত এবেত্যাহ। এবং ভবান্ স্থপ্রকৃত্যা স্টে জগতি প্রবিষ্টোপি বুদ্ধা অস্থেম্যমেন লকণং যেষাং তৈঃ স্থপ্রকাশদাপভিজ্ঞানাননাদিভিগ্রিছিঃ স্বোপানেটের প্রবিষ্টাপ সদা বিরাজনানোপি তলগুণাপ্রহং। তদ্যাঃ প্রকৃতে প্রপান্ লেপকান্ ছংখার্কান্ আনন্দৈকমর স্বং ন গৃল্পি। কৃতঃ অনাবৃত্তছাং যোহি প্রকৃতি প্রবিষ্টারে ভবতি স এব ভান্ গৃল্পতি লিপ্তক ভবতি যথা জীব ইতি ভাবঃ। অভস্তব বহিরপ্তরং বাপ্যতে প্রকৃতে প্রণান সন্ধি। যথা জীবদ্য বহিঃ শক্ষ লপশালয়ঃ। অস্তুক্ত শোক মোহালর ইতি ভাবঃ। সর্ক্ত্রের্থান স্বাধিত্যা প্রবিষ্ট্রস্থাপি। কিঞ্চ কেবলং ন ভবৈব অপি তু আরু বন্ধনঃ ভব স্বীয় পদার্থন্য স্বৰ্জন্য রুৎসদ্যাপি নীলা বিলাস ধাম ভক্তানে বহিরপ্তরঞ্চ ব্যাপ্যতে লেপকাঃ প্রকৃতি প্রণান সন্ধীত্যর্থ: ॥১৪॥

ভজাপ আপনি ইন্দির ও বিষয় সহিত বর্তমান হইয়াও এ সকলের সহিত গৃহীত হয়েন না হে ভগবন্। পরিছিন্ধ ব্যক্তিরই নীড়ে প্রজাদির প্রবেশের ন্যায় অহ্যন্ত প্রকোশ সম্ভবে, আপনি অনারত অর্থাৎ অপরিছিন্ধ, আপনকার অন্তর্ভাহি: ভেদই নাই, প্রবেশ কোথা হইতে হইবে,। আপনি সর্ব্বিষয়েপ, সকলের আত্মা, ব্যাপক এবং পরমার্থ বস্তু আপনকার আবরণ হইতে পারে না। আপুনকার অন্তর্থামিত রূপে প্রকেশই মুখ্য নহে, ইল্লাভে দেবকীর গর্ত্তে প্রবেশ কি রূপে হইবে ? অতএব, আপনি কেবল অনুভ্য ও আনন্দ স্বরূপ, আপনাকে জানিতে পারিলাম, আমার পরম ভাগ্য॥ ১৪॥

য আত্মনোদৃশ্য গুণেষু সন্নিতি ব্যবস্যতে স্ব ব্যতিরেকতোছবৃধঃ।
বিনাসুৰাদং নচ তন্মনীষিতং সম্যগ্যতন্ত্যক্তমুপাদদৎ পুমান্॥ ১৫॥
ছবিভাহত জন্মন্থিতিসংযমান্ বিভো বদন্ত্যনীহাদগুণাদ্বিক্রিয়াও।

शिधतयामी।

নবেতদ্বেত্ চত্ট্যং প্রণঞ্স্যাবস্তব্ধে ঘটেত তত্ন সম্ভবতি সন্থেন প্রতীতেরিত্যাশস্কাহ য ইতি। আত্মনো দৃশ্যেষু প্রণেষু দেহাদির্ অবস্তাতের নিশ্চনোতি যং প্রান্ সোহবুধং অবিধান্ ব্যতিবেক দর্শনাৎ কিঞ্মনীবিতং বিচারিতং তৎ দেহাদি সর্বং যতঃ বিনাহ্যাদং বাচারম্ভণমাত্রং বিনা সমাঙ্ন ভবতি অতোহ্যস্তব্ধেন ত্যক্তং বাধিত্যের বস্তু বুদ্ধা উপাদদৎ স্থীকুর্কন্ অবৃধ ইত্যর্থ: ॥ ১৫ ॥

এবং পরমেশবদৃশ্যস্য তথাতিরেকেণাসভ্যমুক্তং পরমেশবেরাপাদানত্বাদ্পি তথ্যতিরেকেণাসভ্যমিত্যাহ অভ্যোহস্যেতি নটেবং

বৈষ্ণবতোষণী।

নবন্যেবামন্যেপি দেবাঃ প্রাদিরপাঃ প্রকাশন্তে কথং ময্যেবাগ্রহঃ ইত্যতাহ ব ইতি ছরেন পর্ম প্রইরং পর্মকারণঞ্ছ ছাং বিনান্যেবাং স্বাতর্রেণ সন্থাভাবারতের প্রবার্থছমিতি ভাবঃ। বছা আত্মনঃ স্বস্য দৃষ্ঠাঃ সাক্ষাদস্ভবনীরা মনোহরা প্রণা বেবাং ছেছপি মধ্যে স্ব ব্যতিরেকতঃ তেবামপি মূল স্বরূপং তাং বিনারং দেবঃ সন্ উত্তম ইতি বো নিশ্চিনোতি সমূর্থঃ হতঃ তক্মনী-বিতং দৃষ্ঠপুণেছিরং সরিতি বিচারিতাং সম্যাপ্তর্মং ন ভবতি কুতঃ অনুবাদং তত্মনির্ধারণার্থমন্যোন্য বাদং বিনা তৎ সৎ সন্ধা ভাবেন তত্মনিশ্চিয়াদেবেত্যর্থঃ বতঃ স্থান্ স্বিভিত্যকং প্রক্ষাধান্তর্মেবোপাদদৎ স্বীকৃতবান্ দদে পরবৈশ্বদমার্ধঃ ॥ ১৫॥

ষত্ত ইতি তৈ ব্যাখ্যাতং তত্ত্বোপাদানত্ব নির্মাহারৈবং ব্যাখ্যেয়ং অনীহত্তমন্ত্রের্জানিতত্বমিত্যর্থঃ। অবিকারিত্বং স্বরূপান্যথাভাব রহিতত্বমিত্যর্থঃ। গুণময্যাবিদ্যরা বিবর্ত্তত এবেতি নোপাদানত্বেহপি দোব ইতি ভাবঃ। অথ নিমিত্তত্বে দোষমাশহতে নবিতি ব্রহ্মঘাদিত্যাদৌ বন্ততো ব্রশ্ধ স্বরূপ এব তত্মিন্ গুণাধ্যারোপাদেব বিকারিত্বাদি প্রতীতেরিতি ভাবঃ। যথা নির্দোধেণ সর্ম কার-

ক্রমসন্দর্ভঃ।

য ইতি যদি অস্য জীবান্ধনো দ্রষ্টুর্ব্যতিরেকেণাপি ন জগজ্পলভাতে তদা কিং পুনঃ সর্ব্ধ প্রকাশক্ষ্য পরমান্ধন ইত্যর্থ:। অস্থাদং বেদায়্মতিং বিনেতি তত্র সাপি নাজীত্যর্থ:। যস্য ভাসা সর্ব্ধমিদং বিভাতীত্যাদি শ্রুডে:। যতঃ স পুমান্ বেলৈপ্তাক্তমুপাদদৎ উপাদেষ্থেন স্বীক্তরানিভার্থ:। দদ ধাতৌ তিঙাভিঙি ভবস্তীতি চ্ছান্দসং পরক্ষৈ পদং। স্বষ্ট্যাদি কর্ত্ত্বেপি ভতঃ পরন্ধমাহ॥১৫ স্বস্তু ইতি। শ্রুডেম্ব শবসুলদ্বাৎ ইতি ন্যায়েন সিদ্ধান্তমাহ। বদস্তীতি বিরোধং পরিহরতি জ্বাবে ব্রহ্মণীতি চিন্তামণ্যাদিবদ

अविश्वनाथहळ्कवर्श्वी।

ু নহ বেশকা অপি প্রস্তৃতিখণাই কেচিৎ ক্রথদা তন্তা এবেত্যত আহ ব আছান: খস্য দৃশ্যগুণেরু ভোগ্য প্রকৃচন্দন বনিতাদির্
সমিতি উত্তমেহরং পদার্থ ইতি ব্যবস্তৃতে নিশ্চিনোতি স অব্ধঃ কুতঃ। খব্যতিরেক্তঃ খনিং ছেবাং সদা সংযোগাভাবাৎ ততশ্চ শোক মোহাদি হংগঞ্জদ্বাৎ সংসার্থবাহ প্রাপক্ষাচ্চেতি ভাবঃ। নহসৌ মীমাংসকো ভোগ্য প্রগাদিঃ সমিতি বদন মনীবিদ-মেবাছানং মন্যতে। তত্তাহ বিনেতি হু নিশ্চিত্যেব বাদং বিনা। তদ্মনীবিতং ন সম্যক্ মনীবিদ্ধং তত্ত্ব প্রবাদ এব নতু স মনী-বীত্যর্থঃ। বত্তাক্তমেব দ্বীর ক্রনৈত্ব পাশ্দাদ্বেন যহ তদেব উপ আধিক্যোনাদদং শীক্ষতবান্ হুম্বমার্বং॥ ১৫॥

নমু স এব স্বপ্রক্তােদং স্টে তাাদি স্বন্ধকে স্বৰ্ণমন্ত প্রকৃতেশ্চ মচ্ছক্তিম্বেনাভেদাৎ গুণমন্ত ক্ষণাদানস্য ময় কথমন্তর্ব হি-

ভগবন্! যে পুরুষ আত্মার দৃশ্য গুণ দেহাদি মধ্যে দেহাদিকে আত্ম ব্যতিরেকে পৃথক বর্তমান বলিয়া নিশ্চয় করে, ব্যতিরেকে দর্শন হেছু সে নিতান্ত অবিধান্, যে হেছু দেহাদি পদার্থ বিচারিত হইলে বাক্য মাত্রের আরম্ভ ব্যতিরেকে এ সকল যথার্থ হইতে পারে না, ততএব অত্মে হৈ বন্ধ অবক্তম্ম রূপে বাধিত, যে পুরুষ বুদ্ধি দারা ভাছাই বন্ধ বলিয়া স্বীকার করে, তাহাকে অবিধান্ ব্যতীত আর কি বলা যাইতে পারে ? ॥ ১৫ ॥

বিভো! তত্ত্বদর্শিরা বলেন আপনা হইতে এই জগতের সৃষ্টি স্থিতি প্রলয় ইইতেছে, অথচ আশনি নিও ণ স্থতরাং নিজ্ঞির ও অবিকারী। ভগবন্! যদিও নিজ্ঞিয়ের কর্তৃত্ব ও অবিকারিত্ব বিরুদ্ধ, তথাঞ্চ

湖

স্বয়ীম্বরে ত্রহ্মণি নে। বিরুষ্যতৈ তদাশ্রয়ম্বান্থপচর্ব্যতে গুণৈ: ॥ ১৬ ॥

धीरतयात्री।

সত্যপি বিকারিস্বয়িত্যাহ অনীহাদিতি অভগ্রাদনীহন্তং অভোহবিকারিস্বয়িত্যর্থ:। নার্ অনীহন্তে কথং কর্ত্তং কুড়ের কুড়োবাবিকারিস্বং ভত্তাহ ওয়ীখন ইতি ব্রহ্মদাদবিকারিস্বং উপরস্বাচ্চ কর্ত্বমিতি। নার্ এতদপি বিরুদ্ধ্যেব নেত্যাহ তদাশ্রম্বাদিতি ভাগে: কুর্বন্তিঃ দ্বিরুদ্ধিকর্ত্বমুপ্চর্যাতে ভাগাশ্রম্বাৎ যথা ভৃত্যক্রতং রাজনীতি॥ ১৬॥

বৈষ্ণবভোষণী।

পদেন সর্ব্বোৎস্কুটানস্কত্তণতং স্থাপর্যতি ছক্ত: প্রকৃতিশ্ব প্রতিজ্ঞান্তরাহাহরোধেনেতি ন্যারেন উপাদানাদিনিত্তাত। আন বিরোধনাশক্তা পরিহরতি বিভো ইত্যাদিনা। তানাত্তণাদবিজিয়াদনীহাদিতি পদান্তর্যা ক্রমেণায়মর্থ:। বদ্যপি তব রক্ত আদি তৈত্তপাদবিজয়াদনীহাদিতি পদান্তর্যা ক্রমেণায়মর্থ:। বদ্যপি তব রক্ত আদি তৈত্তপাদবিজয়াদনীহাদিতি পদান্তর। নিমিন্ততা হেতুর্বহিরস্কল্ডেইপি নাজীতি তথা বিজ্ঞা ইত্যায়মর্থ:। যদ্যপিচ ক্রৎক্ষ প্রসক্তি নির্বয়র শক্ষ ব্যাপকো বেত্যুক্ত রীত্যা বিজ্ঞারেকদেশাভাবেন মর্ম্ম পরিগতা যাপুণাল্যাংশানবহানাদিদোর্য: স্যাৎ নিমিন্তবাদীকারে চেইগিল ন সম্ভবেদিতি। তথাপি শ্রুতেম্ব শক্ষ্মাদ্যাদ্যাদ্যাদ্য শ্রুতি প্রমাণাল্যত্তির বাদি ক্রেই সাল্যে ক্রমেণ্য ক্রমেণ্য ক্রমেণ্য ক্রমেণ্য কর্মান্তর্বাদি হেতুরে প্রমাণাল্যত্ত্বর বাদি ক্রেই সন্দেহ ইত্যাভিপ্রায়াদিত্যর্থ:। নচামং বিরোধ ইত্যাহ দ্বাতি ব্রন্ধনি নির্মিকার পরমানক্রেক ক্রপেহপি ঈশ্বরেদ্ব সর্ব্বাচিত্ত্যালভাবিতি। চিন্তামণ্যক্রশালীনামপি নানা পদার্থ প্রসর্ব্বা ব্রাহ্বাদ্যান্তর্বাদ্যান্তিত্তা: পর্ম যিত ত্রদ্বিতি প্রাণানাং নির্বেট্ট স্তি সর্ব্বাচিত্ত্য: পর্ম হত্যাল ক্রমেণ্যক্রিল ক্রমেণ্যক্রেণ হাল্যক্র ক্রমেণ্যক্রিল ক্রমেণ্যক্রিল ক্রমেণ্যক্রিল বিরোধ: স্যাৎ অন্যথাম্বপত্তিহি সর্ব্বোপমর্দ্ধিনী বেরমুভ্রন্তরাপ্যচিত্ত্যানের শক্তিং বলাত্রপত্তাপা বিরোধমণিনি নিক্রেক ততঃ সর্ব্বপত্তর্বাহা স্থাদি ক্রেই কর্মেণ্য ব্যামন্ত্র্যালি হেতু সদ্যোহিত্ব ক্রমেণ্য বিজ্ঞা ক্রমেল্য ক্রমেণ্য হিত্তা ক্রমেণ্যির ইত্যাশক্রাই হিত্তালিক ক্রমেণ্য হিত্তালি হৈতু নির্দেশ্য বাহ্বল্য ক্রমেণ্য ক্রমেণ্য হিত্যাপ্ত ত্রেক্রভালিক ইত্যাদিক্রম্বাদিতি তন্যাঃ শক্তিভ্রাতা বৈভবনেবেত্যর্থ: ॥ ১৬ ॥

क्रममर्खः।

চিন্ত্যশক্তিছেনেতি ভাবঃ। তত এব ত্রৈগুণ্যং শক্তিছেহণি তদস্পর্শ মাহ তদাশ্রম্বাদিতি তথৈব পালনলকণান্তরস্থিতিবিসর্গ-লক্ষণাবাস্তরং জন্ম দৈনন্দিনাদি লক্ষণাবান্তর সংবমা অপীত্যাহ॥ ১৬॥

🖻 বিশ্বনাথচক্রবন্ত।

ওঁণ যোগাতাব ব্যুৱাহ ঘন্ত ইতি। নমু জগৎস্ট্যাদি কর্তু: কুতোহনীহ্যাদিতি সন্তবেৎ তত্ত্বাহু ব্দীশ্বে ব্ৰহ্মণি ন বিক্ষণতে ব্যি ব্ৰহ্মণান্ত্ৰান্ত্ৰপূপ্পতৈ বিবেশি ক্ষান্ত্ৰ ক্মান্ত্ৰ ক্ষান্ত্ৰ ক্ষান্ত্ৰ

আপনি স্থার এবং দাকাৰ কা, আপনাতে অকর্ড ও অবিকারিত বিরুদ্ধ হইতে পারে না, গুণ দকল স্ক্রাদি করে আপনি তাহাদের আপ্রয় বলিয়া আপনাতে স্ক্রাদি কর্ড্ছ আরোপিত হয়, যেমন ভ্রেক্সত কার্য় রাজাতে আরোপ করা দিয়া থাকে ॥ ১৬ ॥ স স্থং ত্রিলোকস্থিতয়ে স্বমায়য়া বিভর্ষি শুক্লং থলু বর্ণমাস্থানঃ।
সর্গায় রক্তং রজসোপরংহিতং কৃষ্ণঞ্চ বর্ণং তমসা জনাত্যয়ে॥ ১৭॥
স্বমস্থা লোকস্থা বিভো রিরক্ষিষ্ গৃহিছহক্তীর্ণোছসি মমাধিলেশর।

औशत्रकामी।

এবং ভূতসৈয়ব তব যথা বিশ্ব স্থিতি দর্গ লগার্থং ত্রিবর্ণা গুণাবতারাঃ এবং ভূভারাপনরনার্থমিতি জ্ঞাতমিত্যাহ দ স্বমতি শ্লোক-হরেন॥ ১৭॥

রকিত্মিচ্রবতীর্ণোহসি ক্লেন বর্ণেন মতঃ সাধ্নাং সংরক্ষণার্থং রাজন্তসংজ্ঞা 'যেহস্থরকোটি থ্পপাত্তৈ নির্ভ্যানাঃ ইত-

देवस्थवट्यावशी।

নকু কথং মন্তোহন্ত সর্বাং স্ট্রাদিকং ত্রন্ধাদীনামণি সর্বাদি কর্ত্ক্ষাদিত্যত আহ স ষ্মিতি স উক্তাবিরোধপ্রকারেণ স্ট্রাদিকারকৃষ্ণ শুদ্ধং শুদ্ধং শুদ্ধং শুদ্ধং শুদ্ধং শুদ্ধং শুদ্ধাদি প্রকাষ্ট্রিয়ে সার্বিধানাপি সর্বাদ্রি ক্ষাব্র্বাপকারকৃষ্ণ শুদ্ধান জ্বালি প্রকাষ্ট্রিয়ে তার হেতুং স্ব্রায়্যা নিজরূপয়া তথা রক্তং রক্ষোময়ন্ত্রন রক্ষং ক্রেনাধান কর্মান্ত্রা নাভিব্যঞ্জিত স্বরূপ প্রকাশিমতার্থং তারু ক্র্যান্থা সন্ বিভর্ষীতি আরু চাক্ষ্বে গুণোন তথা ত্রোময়ন্ত্রন রক্ষং ক্রেনাধানি প্রায়ত্র নাভিব্যঞ্জিত স্বরূপ প্রকাশিমতার্থং তারু ক্র্যান্থা সন্ বিভর্ষীতি আরু চাক্ষ্বে গুণোন তথা ত্রামানাং বকাদীনামণি শুমবর্ণস্থাং পরমসান্তিকানাং শ্রীব্যাসগুকাদীনামণি শ্রামবর্ণস্থাং ক্রেনাদান্ত্রের বিশ্বনিক্র হিল্পান ক্রেন্ত্রের প্রকাশি কর্মান্ত্রা নানাবর্ণা আপি বুণা বুং পালন সংহারপরা এব। অতো ত্রন্ধণো রক্তবর্ণস্থেহিল করে তাৎপর্যাং শ্রীবিক্ষোন্ত নিগুণি রর্পান্ত্রের নাশ্রবং স্তর্গন্তং বক্ষতেচ ব্রিদেবী পরীক্ষায়াং হরিহিনিগুণিঃ সাক্ষাং প্রকৃষ্ণ প্রকৃত্তং পরঃ। শিবং শক্তির্তঃ শক্ষান্তিলিক্ষা গুণসংর্ত ইতি। অত্রবান্ত্রাণি রক্ত্রেরাণানিবং সন্তেনেতি নোক্রং। তৈরপি তত্তকাণুণ ক্রিয়া ব্যত্যান্ত্রের ব্যাখ্যান্ততে রক্ষিত্মিক্ত্র্রবতীর্ণোহিসি ক্রক্ষেন বর্ণনেতি আত ইত্যাদেনি প্রত্যত তামসানাং হনন-নেত্র জন্যাথ্য তদীর ব্র্যাথ্যা সহম্রোণি বিরোধং স্যাদিতি সর্ব্বথা স্চিদানক্ষ্বন্ত্রপ্রপ্রের ত্র্রেণা স্কিদানক্ষ্বন্ত্রপ্রপ্রের ত্রেপাণ স্ক্রিযা স্ত্রেণা স্ক্রিযা স্ত্রেণাপি বিরোধং স্যাদিতি সর্ব্বথা স্চিদানক্ষ্বন্ত্রপ্রপ্রের ত্রপ্রিয়া স্ত্রেণা স্ক্রিযাণা স্ত্রেণাপি বিরোধং স্যাদিতি সর্ব্বথা স্চিদানক্ষ্বন্ত্রপ্রপ্রের স্থানানক্ষ্বন্ত্র স্থাবা স্ত্রেণাধিত শ্রাধ্যা সহ্রেণাপি বিরোধং স্থাদিতি সর্ব্বথা স্তিক্ষানক্ষ্যা স্থান্ত্র ত্রাধ্যা স্ব্রেণাপ্র স্থান্ত্র স্থানিত্র স্ব্রাধ্যা স্ব্রেণাপ্র স্থান্ত্র স্থানা স্রেণাপি বিরোধং স্থাদিতি স্বর্বথা স্তিক্ষ্যান্ত্র স্থানা স্থানা স্ব্রেণাপ্র স্থান্ত্র স্থান্ত্র স্থানা স্ব্রেণাপ্র স্থান্ত্র স্থান্ত স্থান স্থান্ত্র স্থান্ত্র স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত বির্বান্ত স্থান স্থান্ত স্থিতি স্থান্ত স্থানিক্র স্থান্ত স্থান্ত স্থানিক্র স্থান্ত স্থানিক্র স্থান্ত স্থান্ত স্থান স্থানিক্র স্থান্ত স্থিকিক স্থানিক্র স্থান স্থান্ত স্থান্ত স্থানিক্র স্থান স্থানিক্র স্থান

অধুনাতু লোকহিতার্থং স্বর্মেব মংপুল্রতাং প্রাপ্তোহসি অহে৷ লোকভাগ্যং কিমুত মন্তাগ্যং ইত্যাহ ছমিতি অস্য বিবিধ ছঃথসা-

ক্রমসন্দর্ভঃ।

স খং স তথা ভূত এব খং। অত্র লোকে যু খন্তকা এব মুখ্যা ইতি মুখ্যং ডং পালনমেব প্রবাজন মিতি ভাবং। তলেবাহ খ মার্যা খেবু ভজেবু রুপ্যা। ভক্তরপাত্র প্রবিষ্ঠিয়া প্রবিষ্ঠিয়া শক্তির হুর্ঘট ঘটনীতি জ্ঞেরং ভর্মদেন স্থানাহিশি ভরুষেনোকং উত্তরত্ব রক্তসেত্যাদিবং। সাধেন ত্যক্ত খাং। ন ততন্ত হুর্গং কিন্তু তদ্ধিষ্ঠানক এবেত্যর্থং। সাধ্বনং শ্রীবিষ্ণুর্পস্য তথৈবাধু-নাপি ইছুপ্ সংহরতি॥ ১৭॥

অমুদ্যতি মুম অদেককামৰাৎ কারাগৃহ রূপেছপি গৃহে দারের বা বিভো দর্কত দর্কাংশেন স্থিতঃ। হে অধিবেশ্বর দর্কেঝাং

ত্রীবিধনাথচক্রবর্তী ।

নমু ব্রজাদিত্যোহপাস্য স্ট্রাদি প্রসিদ্ধং কথং কর ইতি ব্রবে সত্যং ব্রদ্ধাদরোহ পি তবৈব রূপাণীত্যাহঃ স প্রসিদ্ধ কমেব ক্ষমার্যা ক্ষরণেশৈব শুরুং শুদ্ধমিত্যর্থঃ। জগংপালকস্য বিষ্ণোঃ শ্যামবর্গরাং। জনাত্যরে জনসংহারারেত্যর্থঃ। জর রজসোপর্হিতং ব্রজামিতি বং জম্পোল্য্রিতং ক্ষমেতিবুং সংখনোপর্হিতং শুরুমিত্যমূক্তে ব্রদ্ধান্তরে রজক্রেমারে ক্রক্তমোবোগ ইব বিষ্ণোন্ধ স্বেদ্ধান্তঃ। সর্বস্যাবরণ বিক্ষেপাভাবাদোনাসীন্যরূপদেন শুদ্ধসন্তে প্রমেশ্বরে সান্ধিধ্যমাত্রং নতু স্পর্ণঃ। জতএবোক্তং ত্রিদেন্ধিক্রীক্ষারাং হরিছি নিশ্রণাঃ সাক্ষাদিতি সন্থাদরো ন সন্থাশ ইতি সাক্ষী চেতাঃ কেবলো নিশ্রণিশততি শ্রতিশ্য ॥ ১৭॥

ভোস্কাত সতাং জ্বাহং বিদিত্তৰ একামি জ্বলগৃহে কিমর্থমবাত্রমিত্যপি জানাসি চেং জহি ইত্যত আহ জমিতি ৷ অস্য

প্রতো ৷ আপনি উক্ত রূপ হইয়াও ত্রিলোকীর পালনার্থ বীয় মায়া বারা শুরু বর্ণ ধারণ করেন, স্পত্তি নিমিত্ত রাজোগুণাবিত রক্ত বর্ণ গ্রহণ করেন, অপর প্রলয় সময়ে তমোগুণ বারা কৃষ্ণবর্ণ বীকার করিয়া থাকেন ॥ ১৭ ॥

হে অথিলেখন। হে বিভো। আপনি এই সমস্ত লোকের রকা ইচ্ছা করিয়া **আ**মার সালরে

রাজস্ত্রসংজ্ঞাহত্ত্রকোটি যুধপৈ নির্গৃহ্মানা নিহনিষ্যে চমু: ॥ ১৮ ॥ অয়স্থ্রসভ্যস্তব জন্মনো গৃহে অফ্রাএজাংস্তে হভ্যহনৎ হ্রেশ্র । স তেহ্বতারং পুরুষে: সমর্পিতং অফ্রাধুনৈবাভিসরত্যুদায়ুধঃ ॥ ১৯ ॥ প্রিক উবাচ ॥

भैधववामी।

ক্ষত-চাল্যমানা: চমু: নিহ্নিষ্যদে সংহ্রিষ্যসি॥ ১৮॥

কিন্তু তথাপ্যপ্রমত্তেন ত্বনা ভাষামিত্যাহ অবস্থিতি। অসভ্যঃ থলঃ সমর্পিতং কথিতং ॥ ১৯ ॥

देवस्वदायां ।

গর মগ্রস্য যাদবাদি ভক্তজন প্রধানস্য সর্বলোকস্য বিরক্ষির্ স্বপাংস্থাপো ভবজীতি দিতীয়ায়া: যদ্ধী তং রক্ষিত্মিচ্ছুরিত্যর্থ: হে বিভোহ্যিলেশরেতি অবতারাসস্তবং ন্যাত্মতি তথাপ্যবতীর্ণাহিসি তত্রাপি মম গৃহে মং সম্বন্ধমাত্রযুক্ত কারাগৃহহেপি অহো পরম কারণ্যমহিমেতি ভাব:। তত্মাং ক্ষত্রিয়াজ্বচক্রবর্তির্দৈ নিংশেবের বিশেবের চোহ্যমানাশ্চাল্যমানা যাশ্চম তাঃ পুনরাব্রাভাবেন নিতরাং হনিষ্য্য এব তদগ্রতঃ তাসাং হননেন তেখাং হননভাপি স্বত্তু প্রাপ্তে স্তংসহিত্যনন্মের বিবক্ষিতং। যথা নির্ভ্রমান নির্ভাগি সিদ্ধা ইত্যর্থ: দীর্ঘপাঠন্ত তেষামসম্বতঃ নিংশেবের বৃত্তং কার্যমাণবৃহ্বেন রচ্যমানা ইত্যর্থ: ॥ ১৮॥

অন্তমিতাত্র তেবামাভাগে কিখিতি পিতৃত্বেহম্তৃত্যা খিদং নিবেদরামীত্যর্থ: তদেবাহ তথাপীতি যবা তেবাং মধ্যে মহাছ্ট্রাং খদীরানাং ন: পরম ছ্থড়াং অন্যাপি ধৃষ্টতথৈব ভাবিদ্বাচ্চান্তমেব প্রথমণ প্রতিকার্য্য ইত্যাহ অভ্যহনং অভ্যহন শিলানাং পেবরামাপ ন্যবধীদিতি পাঠস্ত সার্ক্ষত্রিক স্থৈ: সন্মতশ্চ সিদ্ধত্বনাসমাহিত্তাং অভিসরত্যাগচ্চনেব বর্ততে হে স্থ্রেখরেতি তচ্চ খড়ক্তদেব বৈরিণামস্থরাণ্যাং যুক্তমেবেতি ভাবঃ ॥ ১৯ ॥

ক্রমসন্দর্ভঃ।

কায়মনোবাগতীতাচিন্তানন্ত্ৰণক্তে ততোভক ক্লপা প্ৰবৰ্ত্তিত্বা মচিন্তানক্তা তবাবয়োঃ প্ৰবেশেঃছলি ঘটতে ভবৰদীক্তঃ প্ৰভাবে। ছণীতি ভাবঃ। ন বিদ্যুকে ইত্যুদ্য ক্লপব্যাখ্যায়ামলি সন্তমিত্যাদি বরং॥ ১৮॥

অথ বৃত্তমপি নিবেদয়ন্ তথাপায়স্ত শীঘ্রমেব প্রতিকার্য্য ইত্যতিপ্রৈতি। অয়ভিতি। অবেতি আনস্কর্য্যে যোগনিত্রয়া তাবদাহে-ক্রিয়াবরণাৎ অস্তবৈব্যস্তঃ কিঞ্চিজ্ঞাতমিতি ভানাৎ॥ ১৯॥

🖺 বিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

লোকস্য ইমং লোকং অতঃ বাধুনাং রক্ষণার্থং রাজন্যসংজ্ঞা যেহস্বকোটিযুগপারৈজনির্ভ্যানাঃ ইতত্ততশ্লাসমানাক্ষ্য সেনাঃ ॥ ১৮ ॥

শত ৰংক্পরা তব সর্বনৈখব্যমহং জানাম্যেব তবপাবিবেক্সমুদ্রে। মরা ছত্তর এবঁ যতঃ সাম্প্রতিক্স্য মহাছ্ট কংস্স্য দৌরাঝাং ঝাং জ্ঞাপরামীত্যাহ। অর্থিতি। নমু মনৈত্বলৌকিক রূপনাধুব্যাঝাননিম্যো মাং ন প্রহিব্যতি প্রভূতে প্রীণরিব্যতীতি তথাহ অসভ্যঃ রসাঝান হেত্হি সভাজ্মেবেতি ভাবঃ। হিংদায়াং কৈন্ত্যমাহ তবেভ্যানি। সম্পিতিং ক্থিতং অভিস্থিমেব সর্ভীতি তমাগতপ্রার্মহং প্রামীভাতোহ্ধুনৈব রুপমিন্মুপসংহর। ত্মিরাগতেভ্পদংজিহিধাতঃ পূর্বং কিং ভবিষ্যভীতি মে মহাক্ষ্প ইতি ভাবঃ॥ ১৯॥

কৃষ্ণবর্ণ হইয়া অবতীর্ণ হইলেন, অতএব রাজম্মনামক কোটি ২ অহার যুথপতির সহিত যে সকল সেনা ইতস্ততঃ পরিচালিত হইতেছে সাধু জনের রক্ষণার্থ আপনি ভাহাদিগকে বধ করিবেন সন্দেহ নাই ম ১৮ ॥

তথাপি আপনি সাবধান ছইবেন, কারণ এই খল কংস আমাদের গৃহে আপনকার লক্ম হইবে ইহা শুনিয়া আপনকার অগ্রন্তানিক নিহত করিয়াছে। হে হ্যরেখর। ঐ জুরাত্মীর ভ্ত্যেরা আপন-কার অবতার কথা ব্লিয়া আদিল, সে শুনিয়া এখনি অস্ত্র উদ্যাক্ত করিয়া আসিতেছে॥ ১৯ ॥ অধৈনমাত্মজং বীক্ষ্য মহাপুরুষ লক্ষণং। দেবকী তমুপাধাবং কংসাদ্ভীতা স্থবিশ্মিতা॥ ২০॥ জ্ঞীদেবকুগুবাচ॥

রূপং যত্ত প্রাক্তরব্যক্তমাদ্যং ব্রহ্মজ্যোতি র্নিশুর্পং নির্বিকারং।

औधत्रश्रामी।

উপাধাবৎ অস্তৌ ।। २०॥

খির ভরশকা তাবদ্বান্তীতি শ্লোকচভূষ্টরেনাই দেবকী কিঞ্চিৎ বিজ্ঞাপিরিভুং রূপমিতি যন্তৎ কিমপি রূপং বন্ধ প্রান্থ বিদা কিং তবন্ধ তদাই অব্যক্তং তত্র হেভুং আদ্যং কারণং কিং পরমাণবং ন ব্রহ্ম বৃহৎ কিং প্রধানং ন জ্যোতিশ্চেতনং কিং বৈশেষিকাণামিব জ্ঞানগুণং ন নিশুণং কিং মীমাংসকানামিব জ্ঞানপরিণামি ন নির্বিকারং কিং ভান্ধরীরাদীনামিব শক্তিবিক্ষেপেণ পরিণামি ন সন্তামাত্রং তর্ধি কিং সামান্যং ন নির্বিশেষং তর্ধি কিং কারণহাৎ সক্রিয়ং ন নিরীহং সন্নিধিমাত্রেণ কারণং। এবং ভূতং কিমপি

বৈষ্ণবতোষণী।

অধ শ্রীবস্থানের স্তবানস্তরং তমেনমিত্যরয়: তং চিরমপেক্ষিতং এনং দিব্যর্রপেণাবিভূ তমিত্যথঃ আয়ক্ষং নিক্ষোদরাদের জাত-ছেন ভাতং তাদৃশভানোংপাদনঞ্চ মমতাবিশেষজননার্থং অতএব মম গর্জজোহভূদিত্যাত্মক্তিঃ কিন্তু প্রস্তাত্মকরণাত্তদেগাপ-নাম পূর্বং যোগনিজ্ঞা বা ভগবত্তেজসা বা বাহেছ জ্লিয়াবরণমপি ক্লতং অতএবাছেছ ভূমে। মহাপুক্ষ স্থাং ভগবান্ ত্রাছ ক্ষম দর্শনং ভয়ে হেছু: মহাপুক্ষ দর্শনং বিশ্বরে হেছু: ভোত্রে চেতি জ্ঞেয়ং তথাপি ভয়ত্বিরোছজন্ব দর্শনমন্ত্রা স্নেহস্য প্রোবল্যং দর্শয়ভ ॥২০

রূপমিতি তৈ ব্যাখ্যাতং তত্রাব্যক্তং সর্বাগোচরং নমু বস্তুচ সর্বাগোচরং ন সম্ভবতি তত্রাই কারণং সর্ব্ধ কারণং কার্যান্যথাম্পণপতৈরব গমাং ইতার্থ:। নমুনের ধলু ব্যক্তবং কারণঘঞ্চ বিদ্যুত ইতি তত্রাতিব্যাপ্তি: দাদিত্যাশহতে কিং পরনাণব ইতি পরিহরতি নেতি তেষাং বায়াদি পরমাণুনাং পরস্পরমিপ ব্যার্ত্তে র্ বৃহ্তমঘ্যতার্থ:। তর্হি তত্ত্বদ্ধান্যে প্রধানেইতিব্যাপ্তিরিত্যাই কিমিতি পরিহারেত্ স্বতঃপ্রকাশমানদাং। স্ক্যোতি: শব্দেন চেতন মূচ্যতে প্রধানস্য স্কৃত্বাং তং প্রকাশ্যদ্মিতি ভাব: ক্যোতিশ্চরণাতিধানাদিতি ভারাং। নমু চেতোক্সানস্য যোগাং চেতনমূচ্যতে তর্হি তথা বৈশেষিকাণামান্ধান স্বতো জ্বাঃ কিন্তু জ্ঞান গুণ যোগাদেব চেতনা ইতি মতং তথা কিন্তুরামিপি তর্ম্ব ইত্যাশহতে কিং বৈশেষিকীতি। তথৈব ত্রাশহান্তরং কিং মীমাংসকানামিব ইতি। অথ ভাহ্মরীয়া বহু স্ক্রণ এব শক্তি কৃত্বিক্রেপণ জ্ঞানক্রিয়াদি রূপত্র্যা পরিণামং মন্যন্তে তদ্প্যাশহাতে কিং ভাররীত্যাদিনা তং পরিহরতি ন সন্তামাত্রমিতি। স্কুব্দেনাত্র বহুবেনিমিতং সন্তা ত্র্যাত্রমিত্যবিক্রতমেব তদিতার্থ:। ততু সোৎপ্রাসমান্ধিপতি তহীতি সা খনু

क्रयममर्जः।

আথেত্যুক্তমাত্মজমিতি চ তত্তাবনঞ্চ মমতাবিশেষজননার জীবদার্ত নিজ্ঞমণস্য সর্কাংশানলীকারাৎ তৎসলোপনার জ্ঞেয়ং॥ ২০॥ রূপং বিশেষতশ্চায়মর্থঃ। নতু সারাংশ বিবেকে সতি জগদপি ব্রহ্মছেনোপলভাত। তহি কেন বিশেষক্তবাহ। সাক্ষাদিতি মায়া নার্তত্বনেত্যর্থঃ। তত্মাদিদং ব্যক্তবং যাড়্গুণাং কুপাবিকারিছং। আল প্রত্যক্ষ বিশেষছং কর চরণাদি চেটা সৌঠবমপি

🔊 বিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

অব পত্যর্ভয়ং দৃষ্ট্ উপ সমীপং ভীতেতি অরপ মহুপসংহরত্তং অয়মানং তমালক্ষ্য পরমেশরভারেণ কংসময়ং ন গৃণয়তি তদহং হস্ত কিং করোমীত্যতিবিহ্বলেত্যর্থ:। স্থবিত্মিতেত্যক পরমেশরভাগ্রে কংসং থলু কো বরাকত্তদপ্যাবয়োর্ভয়ং বর্দ্ধত এবেতি কোয়মবিবেকো হস্তর ইতি ভাবঃ॥ ২ ।

কিঞ্চ ভক্তাঃ খলু স্বভ্যা ভগ্নেন্তমণি বলীকুর্বস্তীতি প্রসিদ্ধেরেনং মহাহঠিনং স্তত্ত্যেব বলীকুতা স্ববচনে স্থাপরামীতি মনসি বিমৃশ্য ভোঃ পরমেশ্বর আবরোঃ প্রতিক্ষণমেবাভিভরে বর্ত্কমানেহপি তব ভরশত্তৈব নাজীত্যাহ চতুর্জিঃ। রূপমিতি মনবস্য তব তংপ্রসিদং

শুকদেৰ কহিলেন রাজন্। তদনস্তর কংসভীতা দেবকী সেই সম্ভানটীকে মহাপুরুষ সক্ষণান্তিত দেখিয়া বিশ্বিত চিত্তে স্তব করিতে লাগিলেন॥ ২০॥

দেবকী কহিলেন ভগবন্! বেদ সকল বাঁছাকে অনিক্চিনীয় কাৰ্য্যকল যে বস্তু ৰলিয়া বৰ্ণন করেন অর্থাৎ যাহাকে নিরীহ (সমিধি মাত্রে কারণ) নির্বিশেষ, সন্তামাত্র, নির্বিকার, নিন্তুণ,

मलामाजः निर्वित्भवः निर्वीहः म पः माक्ताविकृतशाष्ट्रमीशः ॥ २> ॥

विषत्रयामी।

কার্য্যকরাং যহন্ত সএব সাক্ষাৎ সং বিক্রিতি অপবোদদেশতাহ অধ্যাস্থলীপ ইতি বৃদ্ধাদিকরণ সংবাত প্রকাশক ইতার্থঃ। অথবা সব্যক্তং ন কেনাপি প্রকারেণ ব্যক্তাত ইতি অব্যক্তং কথমুৎপত্ত্যা ভাবর ব্যক্তাত ইত্যাহ আদাং সর্বস্ত কার্য্যস্য আদ্যমনাদীতার্থঃ তথা ব্রন্ধক্যোতির্নিপ্রণং নির্কিকারং ইতি চতুর্ভিঃ পদেঃ দেশেন প্রকাশেনচ প্রণেনচ বিকারেণচ ব্যক্তিং নিরাকরোতি। তথা সভা-বৈশ্ববতোষণী।

সামানাং তক্ক পদা আতি দ্বেবোচ্যতে সাচ পুর্ব্বোক্তাব্যক্তাদি রূপা নভবতীতি হতিলানমিব সর্ব্বং লাতবিতি ভাবং। তএ সিবাব্যতি ন নির্ব্বিশেষমিতি সামান্যং থলু বিশেববহুগতমেব স্যাৎ তত্তু বিশেষাৎ পূর্ব্বন্ধনিত বর্ষানং ন সামান্যাকারমিতার্থং। তত তথ প্রকাশক্ষাৎ ত্রাচক শব্দ্যাপি প্রবৃত্তি নিমিত্তং যা চিৎ সৈব সব্বোচ্যত ইতার্থং। চেতনম্বত্ত ব্যক্তশাপ্যাদেবোক্তমিতি ভাবং। তদেবং সামঞ্জন্যে প্রমাশ্বতে তহিঁতি সক্রিষং সক্ষোভমিত্যর্থঃ এবং নিরীহমিত্যাদ্যপি স্বিধান মাজেণেতি স্বর্গপ্তভাতিত্ত্ব শক্তৈবেতার্থং। নহু সারাংস বিবেকে সতি জগদপি ব্রহ্বনোপদভাতত তহিঁ কেন বিশেবত্তরাহ সাক্ষাদিতি মানানায়ত্তবেনেতার্থং তমাদিদং ব্যক্তবাং বাজা গুং রূপাদি বিকারিত্বং অকপ্রতাদ্বিশেষকত্বং করচবণাদি সৌর্চ্বমিপ স্বরূপ ধর্ম বৈত্বমেব জ্ঞীরানায়ন্তাদি মতাহসারেণ তৎ স্বরূপক্ত সধর্মাত্ত হালাত্ত শুতাবিশেষকত্বং করচবণাদি সৌর্চ্চমিপ স্বরূপ ধর্ম বৈত্বমেব জ্ঞীরানায়ন্তাদি মতাহসারেণ তৎ স্বরূপক্ত স্বর্ধার হাপানাত্ত শ্রিকাশিক হালাবিদ্বাহ্য হালাবিদ্বাহ্য স্বর্ধানার হালাবিদ্বাহ্য স্বর্ধানার ক্রিরার্কত ব্যক্তর বিশ্ববিদ্বাহ্য স্বর্ধানি নিরাক্রেরাতি। তর্জ ক্রম্বাহিত্যং সাক্ষাদিত্যনেনৈব নিরাকরেণ বিষদ্বত্ব সিন্ধার্থিং শাবৈ নিরাক্তত্বাতি প্রত্যাৎ পরিভিন্নত্ব নিরাকরোতি। তর্জ ক্রম্বাহিত্যং সাক্ষাদিত্যনেনৈব নিরাকরেণ বিষদ্বত্ব সিন্ধার্থিক শিক্ষার্পিক বিরাক্তরেণি পরিক্রাহ্য হিত্যাদি বচনবৃন্ধাৎ ব্যব্বাদিক বিত্তা স্বর্ধান বিরাক্তরেশিক ইত্যর্থং। নচান্ত বিহু ইত্যাদি বচনবৃন্ধাৎ ব্যব্বানাক্রিরাম্বাহ্য স্বর্ধানাক্র স্বাহ্যান্ত পরিক্রার্বাহা তানপি দীপর্বিস্থা পরমানন্দেনোলাস্ব্রাত্যর্থং। ইত্যেবং ব্রন্ধতোহিপি পরমাবির্তাবন্ধং দর্শিতং। সাক্ষাদিত্যনেনচ তথেব ব্যক্তিতং। শ্রুত্বনিত্র ক্রাদিনিতি বিহু ব্যব্বাহাদি স্বিত্বাহার তানিক্রির্বাদিত বিত্তাব্য ব্যক্তর ব্যব্বন তারত্বাাদিতি দিক্। যথা যদিতি যক্ত রূপং শ্রীবিগ্রহং তদনির্ব্বনির্বার ব্যবিত্বাহা । তদেবাহ

ক্রমসন্ধর্ত:।

শ্বরূপ ধর্দাবৈভবমেব। অতঃ সন্থানাত্রং কেবলধর্মরগং জ্যোতিঃ শ্বপ্রকাশতৈতন্যং। ব্রহ্ম সর্মতোহপি রহৎ। আদ্যং কর্মরহিতং দৃষ্ট দোব প্রাকৃত তত্ত্বরূপ্প নিরাদেন। জ্ঞানিনঃ প্রতি প্রকাশনানং তবন্ধ করণং শ্রীবিগ্রহং প্রাহঃ স তত্ত্বপ এব ভবান্। ন চৈতদিপ। তদ্ধোবাহং ভবেৎ অদৃষ্টদোবদাং বিহদস্ভবার্থঃ শাল্পে নিরাক্তবাচ্চেত্যভিপ্রেত্য শ্বরূমপি নিরাক্রোতি। জন্মরাহিত্যং সাক্ষাদিত্যনেত্রীন নিরাক্রোও। তত্ত্বিজ্ঞ পরিচ্ছদ্বতা শ্বস্থরপেটণৰ প্রাক্ট্যাৎ। পরিচ্ছিন্নছং নিরাক্রোতি বিষ্কৃরিতি ব্যাপক্ষ্মিরত্যর্থঃ। ব্যক্তত্বং অধ্যাত্ম দীপ ইতি প্রত্যাত্মাকং ব্রুয়াদিকমেবেদং প্রকাশরতে। তত্তা ব্রহ্মবৎ শ্বরমেব প্রকাশতে। তত্তা

ঐবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

রূপমাকারং নারারণ রাঘ্ব হয়শীর্বাদিকং অব্যক্তং সর্কেলিয়াগোচরং আদ্যং আলন্যং প্রাহর্বেদাঃ। তথা নিশ্ব পিং নিবি কারং বন্ধ বন্ধাতিঃ প্রাহ্মঃ। বন্ধা ভাষা সর্ক্রিমিদং বিভাতীতি প্রতঃ সভাগ জানমনতাং বন্ধ ল্যোভিঃ সনাভনমিতাপ্রিমোকেঃ। তৎপর্যু প্রমং বন্ধ সর্ক্রং বিভল্পতে লগও। মনৈব ভাষনেং তেজা জাতুমহাসি ভারতেজার্জুনং প্রতি হরিবংশে ভগবহুকেঃ। বস্য প্রভা প্রভাবতো জগনও কোটি কোটিখনেব বস্থাদি বিভৃতিভিয়ং। তন্ধ নিক্সমনত্বনেশ্বভূতং গোবিলামাদিপুরুষং তমহং ভলামীতি ব্রন্ধাহিতোকেঃ। বন্ধাহি প্রতিষ্ঠাহমিতাল স্বামিচর পৈতথা ব্যাখ্যানাচ বিভৃতিপ্রসাদি বিকারঃ প্রম্যোহব্যকং রলঃ সভ্য পরমিতাল পরমিতি শব্দা ব্যাখ্যানাচ। মদীরং মহিমানক পরং বন্ধেতি শব্দিতমিতি মংস্যাদেবোক্ত । পরাহ্মানক পরং বন্ধেতি দ্বিত্তালিত হতি বাম্বাচারিভোলাচা। তদ্ধ ক্রমানেকা পরং বন্ধেতি প্রতিষ্ঠামিত তিজিরুমান্ত্রাচা তথা কর্মা তব সভামাল্যং ভন্ধসন্থ সামান্যং ভন্মসন্ধ শক্তিবিদ্যাভূতিমিতি বাবং স্ববিশ্রহ্ধান ভক্তপরিক্রাদিকং নিবি শবং বিশেষাং প্রপাদিকিতং প্রাহ্মঃ। অভন্ধৰ নির্মিছং স্বতঃ পরিপূর্ণবেন বিভ্নতং বন্ধা স্বামিককানপি নিরীহ্যতীতি

জ্যোতিঃ ব্রুপ, বৃহৎ, আদ্য অর্থাৎ মূল কারণ বলিয়া থাকেন সাপনি সেই বস্তু, নাকাৎ বিষ্ণু; অধ্যা-

নকে লোকে বিপরাদ্ধাবদানে মহাস্থতেয়াদিস্তং গতের।
ব্যক্তেহব্যক্তং কালবেপেন যাতে ভবানেকঃ শিষ্যতেহশেষসংজ্ঞঃ॥ ২২॥
যোহয়ং কালস্তস্ত তেহব্যক্তৰদ্ধো চেন্টামান্ত শেষ্টতে যেন বিশ্বং।

धिश्वचामी।

মাত্রমিতি বিশেবেণ নির্কিশেষমিতি সামাজেন নিরীহমিতি জিল্লয়াচ ব্যক্তিং নিরাকরোতি অন্তং সমানং এবভ্তস্য তব ন তর্ত্ত শঙ্কেতি ভাবঃ॥ ২১॥

কিঞ্চ মহাপ্রালরেহপ্যবশিব্যমাণস্য কুতোভরমিত্যাহ নঙে লোক ইতি। চরাচরে লোকে মহাভূতেরু সীনেদ্রপি আদিভূতং ভূত-পক্ষং প্রবিষ্টেবু তামিল্লপি ব্যক্তেহ্ব্যক্তং প্রধানং প্রাপ্তে অশেবাদ্মকে প্রধানে সংজ্ঞ। প্রজ্ঞা যস্য এবং ময়ি সীনমিদমন্তি পশ্চাদেব-মুদ্বোধনীরমিতি সং অশেবসংক্ষঃ শেবসংক্ষ ইতি বা॥ ২২॥

বিক এবং প্রশন্ন হেড়্র্বোহরং কালঃ এবং হে অব্যক্তবন্ধা প্রকৃতিপ্রবর্ত্তক তস্য প্রলমাবিধিভৃতস্য তে তব চেটাং লীলাং

বৈশ্বতোষণী।

ব্দবাক্তমিত্যাদিনা নিশুণাদিকং প্রাক্তত শুণাদি রহিতকং। এবং পর ব্রহ্মত্বমুক্তং সএব জং বিষ্ণুঃ নিজৈখর্ব্যেণ সর্কব্যাপক ইতি পরমেশরকং। অধ্যাক্ষদীপ ইতি পরমাক্ষতং। অক্তৎ সমানং ॥ ২১ ॥

কালবেগেনেতি সর্কটোব হেড়া। এক ইতি বৈকুঠানীনামপি তদভেদাভিপ্রায়েন। যথা অশেষা যে তদানীং বৈকুঠানর তত্তং পদার্থাভিধা তেপি সংজ্ঞা যক্ত তত্ত্তজ্ঞপোপি বা স্থানেবেত্যর্থা। যথা শিষ্যত্তে মহা প্রালমেহপি তিঠন্তীত প্রীবৈক্ষবমতে যথেষ্ট বিনিরোগার্হং শেষ শব্দেন কথাতে ইতি বা শেষাং প্রীবৈক্ষ্ঠলোক পরিচ্ছেদ পরিবারাদরঃ তেহপি সংজ্ঞারত্তে যেন যদশু ছংগেনৈব তে সুহীতা ভবজীতার্থা। এবং ভূতো ভবানেকঃ শিষ্যতে নম্বর্গতে তব জীবর্ষপ্রপঞ্চ ইত্যর্থা। তথৈব ভূতীয়ে প্রীবিহুর প্রশ্নাং তত্থানাং ভগৰং তেখাং কতিথা প্রতিসংক্রমা। ত্রেমং ক উপাসীরন্ ক উস্বিদ্যুশেরত ইতি এবমেব কৈমুত্যেন বক্ষাতে মর্ব্যোশ্যুত্রবালভীতঃ পলায়ন্ ইত্যাদি॥ ২২॥

কালবেগেনেত্বাক্ত্বা প্রাপ্তং কালভ বাভব্রাং নিরভঙ্কী ভতঃ স্থতরাং তভ ভয়মাত্রং নিরাকুর্বতী প্রমণি কংদাদিভয়াচ্ছরণং

ক্রমসন্ধর্ভ:।

কেনাপি ব্যশ্পিত ইতি। শব্দদেবেশ চ আন্মানমধিকৃত্য বর্ত্তমানা অধ্যায়ান আত্মারামা: তানপি দীপয়সি পরমানন্দেনোল্লাসয়-সীতি ব্রহ্মতোহপি পরমাবির্জাবন্ধং দর্শিতং সাক্ষাদিত্যনেনচ তথৈব ব্যশ্পিতং। ক্টোক্টান্থেন তারতম্যাদিতি দিক্॥ ২১৷২২৷২৩/২৪৷৷

এবিশ্বনাপচক্রবর্তী।

নিরীহং। কিয়া নিঃশেবেণ হয়তি স্বমতিলাবয়তীতি নিরীহং স্তৃহেহা ঈত্ড্ বাঞ্ত্যেনরঃ। স স্বং বিষ্ণুরধ্যায়াদীপঃ সর্ব তত্তপ্রকাশক ইতাবিজ্ঞায়া অপি মম মনসি বধা ক্লোরয়সি তথাহং বঢ়ীতি ভাবঃ॥ ২১॥

কিঞ্চ মহাপ্রালয়েহপাবশিব্যমাণসাঁ তব কুতোভয়মিত্যাহ নটে চরাচরে লোকে মহাভূতেরু লীনে সতি তেৰপ্যাদিভূতমহ্মারং গতের সংস্থ তিমালপাহ্মারে বাজে ব্যক্তং। প্রবিটে সতি তম্মিলপি ব্যক্তে মহন্তবেহব্যক্তং প্রধানং প্রায়ে সতি একে। ভবানেব শিব্যতেহবশিটো ভবতীতি পূর্বপ্রোক্তাক লক্ষণং ভবত একজৈব রূপং জ্যোতিঃ সন্তামাঞ্জ শিব্যত ইতি সপরিবার স্থান পরিছিদিন্ত্র তস্য নিত্যমাত্র হৈ ত্রাহ্মাত্র হৈ ত্রাহ্মাত্র হিছে ক্ষেত্র ক্ষা প্রক্রিক্ত ক্ষা ক্ষান্ত হৈ ব্যবস্থা ভবান শেষ উচ্যত ইত্যর্থঃ ॥ ধ্রাহ্মাত্র ক্ষান্ত হৈ ব্যব্যক্ত বিশ্বত ব

কালবেগেনেত্যক্তা প্রাপ্ত: কালুসুমণি স্থাত্তাং বারম্ভী সর্ব ভীষণাৎ কালাদিশি ব্রমং নাতি তত্ত্ব হৈতুমাই। বোইমং সর্ব স্থানিপ, অর্থাৎ বুদ্ধ্যাদি কারণ সমূহের প্রকাশক। অত্তবে আপনকার ভয় আশকা নাই॥ ২১॥

প্রতো! বিপরার্দ্ধ কালের অবসানে চরাচর লোক বিনষ্ট হয়, সে সময় পৃথিব্যাদি মহাতৃত আদিভূতে অর্থাৎ সূক্ষাভূতে বিলয় পায়, পরে ব্যক্ত•সেই আদিভূত কাল বশতঃ অব্যক্ত অর্থাৎ প্রধানকে
প্রাপ্ত হইলে এক আপনিই অবশিষ্ট থাকেন। সে সময় অশেষাত্মক প্রধানে আপনকার প্রক্ষা হয়
অর্থাৎ আমাতেই এই সমস্ত বিলীন আছে এইরূপ বোধ করেন॥ ২২॥

অণিচ হে প্রকৃতিপ্রবর্তক ভগবন্। নিমেষাদি বংদর পর্যান্ত বিপরান্ধ রূপ এই কাল, যাহাতে

নিমেষাদির্বাৎসরাস্তো মহীয়াং স্তব্দোনং ক্ষেমধাম প্রপদ্যে ॥ ২০ ॥ মর্ক্রো মৃত্যুব্যালভীতঃ প্রদারন্ লোকান্ সর্বান্ নির্ভয়ং নাধ্যগছৎ। ত্বপাদাক্তং প্রাপ্তা যদৃদ্রাদ্য স্থায় শেতে মৃত্যুরস্মাদপৈতি ॥ ২৪ ॥ স দং খোরাত্রগদেনাদ্মকান জাহি অস্তান্ ভ্ত্যবিক্রাসহালি।

विवत्रयांगी।

বিপরিবর্ত্ততে পুনঃ পুনর্বৎসরার্ত্তা মহীয়ান্ বিপরার্ক্তরপঃ বস্য চেষ্টামাতঃ তং দ্বাং ক্ষেমধাম অভরস্থানং প্রপদ্যে শরণং ক্রজে॥ ২০॥
ক্ষেমধামদ্বাহ মর্ত্তা ইতি। লোকান্ প্রতি ষদৃদ্বো কেনাপি ভাগ্যোদরেন। তে আন্যা॥ ২৪॥
প্রতং বিজ্ঞাপরতি সাদ্ধিতি। ভ্তানাং বিজ্ঞাসং হন্তীতি ভ্তাবিজ্ঞাসহা। ভ্তাবিদিতি বা চ্ছেনঃ। পৌকুবং ঐশবরং

বৈষ্ণবতোৰণী।

যাতি য ইতি বোৎয়ং নিমেবাদি বঁৎসরান্তঃ কালঃ বৎসরার্ত্তাচ মহীরান্ বিপরার্ক্তরপঃ যেনচ কালেন হেতুনা বিখং চেষ্টতে তং কালং তন্ত তাদৃশস্য তে তব চেষ্টামাত্রিত্যবরঃ। অভএবেশানং সর্কেবরং। ততঃ প্রপন্তর হরণমাত্রং কির্বা ইতি ভাব:। অতএব ক্ষেমন্তাভয়ন্ত স্থপ্পার্ক্তেক স্থানং। যবা সর্ক্ষদল ক্রয়াদীনামপ্যাশ্রয়ং॥২৩॥

যত খংপাদাপ্রিতোহপি নির্জয় সন্ স্থী ভাদিতারে মর্জ্য ইতি মরণধর্মা যঃ কলিয়্ত্যুত্তংপরক্ষারা নির্জয় ভয়াভাবং নপ্রাপ আদ্য হে সর্বপ্রেট স্তোরপি নিরন্তরিতার্থঃ। খয়ে ভয়৸হিতঃ সন্ লেতে নির্ক্তা ভবতীতার্থঃ। মতোহস্মান্থপাদালাদ্রেতো সর্ত্যানা তত্মাৎ সঁরাশার্ত্যঃ পলায়তে। অলজরপাকেণ শতঃ প্রনার্থনিপ ধ্বনিতং। তৎপ্রতাবমাত্রলাতন্ত্র ভয়াভাবত । বন্ধ মৃত্যুরিতি অল্যাধুনা দ্বি সাক্ষাং প্রান্ত্রন্ত সর্বলোকঃ শতঃ সন্ লেতে। বর্তমান সামীপ্যে বর্তমানবন্ধঃ। তত্র হেতুঃ মৃত্যুরিতি। অভ্যৎ সমানং। এবং পরবন্ধদেন স্বচিতং। নির্ভয়য়ং প্রলয়েহংপ্যবিদ্যান্তরন সর্বোপ্যক্র মৃত্যুরিতি। অভ্যৎ সমানং। এবং পরবন্ধদেন স্বচিতং। নির্ভয়য়ং প্রলয়ের্ত্রান্তরান্তরাধেন রূপং যারদিত্যক্র মন্বাক্য নার্বাক্য ব্যাধ্যাতং॥ ২৪॥

স তাল্শখেন নিৰ্ভয়ঃ মভাগোনচ মৎ পুলতাং প্ৰাপ্তৰং আহি দিইছেনারোচকৰাৎ সাক্ষাৎ কংসনামাগ্রহণং এবং প্ৰীমপি

ক্রমসম্বর্ড:।

এক ইতি বৈকুঠানামণি স্বরূপং চেতি পুরুষ বিরাজ্ভর্যামিনো রূপং আকারং চতুর্ জ্বাং। অচএব বিরাজ্ভর্বার্তি ধ্যান-জীবিখনাখচক্রবর্তী।

সংহারক: কালস্তমণি তস্য তব চেষ্টামাতঃ। তে অব্যক্তবন্ধো প্রকৃতিপ্রবর্তক। যেন স্কুচেষ্টার্মণেণ কালেনৈব বিশ্বং চেষ্টতে। স এব কালঃ ক্সুত্রাহ নিমেবেতি মহীয়ান্ পুনং পুন্ব প্ররাত্ত্তা বিপরাধ্রণ। স্থা স্থাং প্রপদ্যে যথা স্থা নির্ভয়স্ত থৈব স্মাতরং মামণি নির্ভয়াং কুর্বিতি ভাবঃ॥২৩॥

षक्षत्रभाखिरणारिन निर्माः কিমৃত पशिष्ठार মঠ্য ইতি সর্বান লোকান্ প্রতি পলারন্ নির্দাং ভরাভাবং ন প্রাণ। বদৃদ্ধরা বাদৃ-চ্ছিক্মহৎক্ষপালত্বভক্ষেত্তার্থঃ। দংপাদ্দেববাজং ধারস্করিং প্রাণ্য অজ্ঞোহত্রী শব্দে না নিচুলে ধারস্করের হিন্দিরণ ইতি মেদিনী। হৈ আদ্য তেন ঘতকাপি দ্যা মাতৃত্বেন স্বাক্ত তাপি কংসাদ্ধি কেবলমহ্মেব মহাভ্রবিহ্বেশেতি ভাবঃ॥ ২৪॥

খং ৰ্কীক্ষ নিৰ্ভন: কণ্যাবাদেৰ মহাত্য প্ৰতৌ করোৰীত্যাহ স খমিতি। বোরাদিতি মহাতীবণৰং। উপ্ৰেতি পিতা নোগ্র: বিষেত্ৰ পরিবর্ত্তন হ'ইতেছে তত্ত্বপ্ৰ পশুতেরা বলেন ঐ কাল তোমার লীলা মাত্র। প্রতো! তুমি এতাদৃশ এবং অভয়ন্থান, আমি তোমার শরণাপন হইলাম ॥ ২৩॥

হে আগা। এই মর্ত্যাকে মৃত্যুরূপ বিষধর হইতে ভীত হইয়া প্লায়ন করত সকল লোকের প্রভিই ধাৰ্মান ইইয়াছিল, কোষাও নির্ভয় পার নাই। কোন অনির্বাচনীর ভাগ্যোলয় হেতু ভোষার পাদপথা প্রাপ্ত হওরাতে একণে হুস্থ ইইরা শগ্রন ক্রিভেছে, ইহার নিকট চুইতে মৃত্যু অপগত হইব ॥ ২৪॥

ज्ञतन् । त्रेरे प्रि प्रका करमत कप्रशति जैवारमनाक्षय चात्र करम रहेटक भागता पिक्त मळत

রূপঞ্চেদং পৌরুষং ধ্যানধিষ্ণ্যং মাপ্রত্যক্ষং মাংসদৃশাং ভো: কৃষীষ্ঠাঃ ॥ ২৫ ॥ জন্ম তে ম্যাসে পাপো মা বিশ্বামাধুসূদন । সমুবিজে ভবদ্ধেতোঃ কংসাদহমধীরধীঃ।

श्रिश्वामी।

ধ্যানাম্পদং মাংসদৃশাং মাংসচকুষাং প্রত্যক্ষং মারু**থাঃ** ॥ ২৫ ॥

ख्यक এव रहरका निमिखकुका९ कः ना९ नम्बिख विरक्षि यकः **भगी** त्रिक्षा ॥ २७ ॥

বৈষ্ণবডোব শী।

অয়বসভা ইত্যেবোক্তং শব্দলেবেণ প্রমোগ্রন্থং স্চিতং অর্থলেবেণ্চ শিত্যাক্তর ব্যক্তা ভরাবিক্যং। নিক্ততি সম্লং হি বন্ধ্তা ভয়র্খিতমিতি ন্যারাৎ ন ল্লাহীতি অন্ধ্রকানেব কুরু নতু তং ঘাতরিজুং প্রার্থরে ইতি কুপাবিশেষার দৈন্যোক্তিঃ। ভো ইতি প্রমার্ক্তা স্বোধনং। তথাপি মাতৃভাব স্বভাবতো ভর্বিষয়ং তমেবাস্তর্ধাপরিজুং ছলেনাহ ক্লপঞ্চিত্ পুরুষত ব্যক্তান্তর্বানিনো ক্রপমাকারং চতুভূজিত্বাৎ অতএব বিরাজ্যর্কর্তিষ্ ধ্যান বিক্তান্তন প্রশিক্ষামত্তোবার্থঃ। বিভ্রুত্ত হি গৃঢ্দং ধ্যানবিক্যাত্তক প্রস্কৃতিষ্ প্রার বিক্তানি শ্রানালিক মিত্যাদি সংখ্যানি প্রত্যাদি শ্রীগোপালভাপনী ধ্যানাদে মাংসদৃশাং অজ্ঞানাং অবোগ্য- ত্বাদিতি ভাবঃ। তত্ত্ব হেতৃত্ব বক্সতে বিশ্বমিত্যাদিনা॥ ২৫॥

নমু মাতত্ত্ব কিমর্থ: ভরং তথা মমাপ্রত্যক্ষতারাং গর্তচৌর্য্যাপরাধেন তন্মাৎ ভরমেব স্যাৎ ইত্যাশস্কা যথার্থমেব নিবেদরতি জন্মত ইতি। ভবদর্থমেব বিভেমি নাআর্থমিতি। বদ্যপি মধুস্থানজেন ভয়ি ক্রাদন্মান্তরং ন সম্ভবতি তথাপি তত্ত্ব কারণমিদমেবে-ত্যাহ অধীর্থীরিতি হঠাকৈর্যবিলোপকেনামূকজ্পোদয়েন্ত্যর্থ: অত্র কংস নাম গ্রহণমত্যুৎক্ষরা॥

তত্ত্বাস্থ্যতিষাশন্ত পুনতদণ্যসহমানাহ উপেতি শৃথাদি প্রিয়া সেবিতং চন্ধারো তৃত্তা যত্ত্ব তাদৃশং যদ্ধপং আকার বিশেষ স্তদে-বোপসংহর গোপর রূপান্তরন্ত প্রকৃষ্ট্র ইত্যর্থ:। তথা সতি লোকে কুত্রাপি গোপয়িত্মশক্য স ইতি ভাব:। ছে বিশান্তরিতি

ক্রমসন্দর্ভ:।

ধিষ্ণ্যত্মেন প্রসিদ্ধং মাংসদৃশাং অজ্ঞানাং অযোগ্যভাদিত্যর্থ:। রূপং চেদমিত্যাদি প্রকরণব্যাধা বিশেবং চতুর্থসন্দর্ভন্ত সপ্ত-নবতিত্মপদ্যানন্তরপ্রবৃত্তকে দৃশ্য:। নম্মাতত্ত্ব কিমর্থং ভরং তমহং মাররাম্যেব। তথা মমাপ্রত্যক্ষতারাং গর্ভচৌর্য্যেণ ভন্মান্তর মেব স্যাৎ ইত্যাশক্ষ্য যথার্থমেব নিবেদয়তি॥২৫॥

জন্মত ইতি। ভবদর্থমেব বিভেমি নাত্মার্থমিতি। বদ্যপি মধুসুদনত্বেন কুদ্রান্তন্মান্তব ন ভরং সম্ভবেৎ তথাপ্যধীরধীত্বেনব বিভেমী-ত্যর্থ:। অতোহধিকং ভূজাবরং কৌস্কভাদিকঞ গোপয়ন্ নিগুঢ়ং লোকাহুরপমেবাকারং প্রকাশরেত্যর্থ:। তথা সতি লোকে

🕮 বিশ্বনাথচক্র বর্তী।

সেনাচ নোগ্রা কিছাল্মন্ত এবোগ্র ইতি ভরেনৈব দাক্ষাভ্রামাগ্রহণং কিঞ্চ ভৃত্যানাং বিবিধং আদং হংসি পিজোরাবরোঃ কিমন্তর্ভরং ন হরসীতি ভাবঃ। ভো মাতঃ কংসাদি বধার্থমেবাবতীর্ণোহল্মি আরাতু কংসন্তমধুনৈব বধিব্যামি চক্ষ্ডাং পশ্যেতি ভত্তকিমাশকা বিক্রিয়া পুত্র ভাবেন তল্মাং কংসবধ্যসভাবরন্তী প্রত্যুত কংসাদেব তদনিষ্ট্রমাশক্ষানা মহাভরকম্পিত সন্ধালী হন্ত হন্ত পরমেশ্রেরাদহন্দারবৃতি পুত্রেহ্দ্মিন্ ভেদাদর উপারা ন ঘটন্ত ইত্যুতঃ সাইয়ব অক্ত্যং সাব্যামীতি মনসি বিমৃশ্য তজ্ঞপম্পসংহারবিতৃং যুক্তান্তরম্থাপরতি রূপমিতি পৌক্রইমেশ্বরং ধ্যানফিলঃ ধ্যানাম্পদং মাংসদৃশাং মাংসদৃশাং প্রত্যক্ষং মারুথাঃ ॥ ২৫॥

ভো মাত বদীদং ক্পমন্ত হাপিকামি তদা কংস আগত্য গওঁ তে ক গত ইতি গওঁচোব্যাপরাধেন স্বামধিকং তাড়রিবাতীতি চেন্তত্র মন কা শরা ইত্যাহ ক্রেডি । মাবিদ্যালাভানাত । মধুক্দনেতি মধুক্দতাং হতবতো মন কংসবং কং প্রানা ইতি মানংহা ক্রদানীস্থনাং মধোরপারমিদানীস্থন: কংসং কোটিগুলিতবলাধিক ইতি ভাবং। কর্ছেভোরিতি মদপরাধং প্রকল্প স্বভাচন-ব্রাদিকং ক্র্যাচেতং করোত । কেবলং ভবভং ক্ল্যাপ্যালাসে ইভি ভাবং। মহু তহি ক্লপং বন্ধদিত্তেন নতে লোকে ইত্যইইয়াছি, অনুগ্রহ করিয়া আমাদিগকে লোণ কর । তোলার এই প্রশাসক্রপ ধ্যানাস্পাদ, ইহাকে চর্মন্ত চক্ষ্র গোচর করিও না ॥ ২৫ দ

হে মধুসুদন। আমাতে তোমার এই জন্ম হইল ইছা যেন ঐ পাপ কংস জানিজে বা পারে। প্রভো। আমি তোমারই নিমিত্ত কংস হইভে ওয় পাইজেছি, আমার চিত্ত অহির হইতেছে। অভএব 1

উপসংহর বিখাত্মরদো রূপমলোকিকং। শব্দ চক্র পদা পদ্ম জিয়াত্মইং চতুর্তু জং॥ ২৬॥ বিখং যদেতৎ স্বতনো নিশান্তে যথাবকাশং পুরুষঃ পরো ভবান্।

अथव्यामी।

কিমিত্যুপসংহর্ত্তবাং এবভূতেন পুত্রেণ মন্না তব মহতী শ্লাখা স্যাদিতি ডজাহ বিশ্বমিতি নিশান্তে প্রলন্নাবসানে যথাবকাশং জসং-

বৈঞ্চৰভোষণী।

বুগপদনত রূপাবকাশস্থায়াত ত্বাশক্তিরিতি তাবঃ অতোহধিক ভূজবরং কৌতভাদিকক গোপরন্ নিগৃঢ়ং লোকাহ্রপদেব রূপং প্রকাশরেতার্থ:। তথা সতি লোকে কুত্রাপি গোপরিভুং শক্তাসে ইতি ভাবঃ ॥ ২৬ ॥

নৰধুনা মারয়াম্যের তং তথেদৃশেন ময়া পুত্রেশ তব কীর্ত্তিরের ভবিষ্যতি মাংস চক্ষুবোহপি চমংক্রতিমাপ্যারীত্যাশয়্য পুনর্জনা-বর্জিঞুনা মাতৃভাবেম তস্য তাদৃশ শক্তেরপ্রতীত্যা ব্যালান্তরেগাণি তং-প্রার্থরতে বিশ্বনিতি অত্ত তেবামাতাসেহণি বিনিতি

ক্রমসন্দর্ভ:।

কুত্রাপি গোপয়িতুমপি শক্যেথামিতি ভাব:। নধধুনা মাররাম্যের ভং তথেদৃশেন মরা পুজেশ তব কীর্ষিরের ভবেং। মাংসদৃশোহপি চমংক্কৃতি স্থেমাম্পাতীত্যাশস্ক্য তাদৃশ গ্লেহেনৈব তস্য তাদৃশশক্তিমপ্রতীরতী ব্যাস্বান্তরেশ্পি তদেব প্রার্থিরতে॥ ২৬॥

বিশ্বমিতি বিশং অনস্তকোটি প্রক্ষাঞ্জাত্মকং নিশা প্রশাসরাজিঃ তদভে ভলানীদেব ভেবাম্ডিব্যক্তেঃ পরঃ পুরুষো মহৎপ্রাই রূপঃ

ঐবিখনাপচক্রবন্ত।

নেন মলৈখৰ্ব্যং বৃথৈৰ কিমবাদীঃ সত্যং পুত্ৰ ভবন্ধাতাৰমেৰমধীরবৃদ্ধিদ্ধেব মাথিদ্যস্থ মধৈব দোবোৎদং নিশ্বস্থনং তে বামি মাড়-বাংসলোনাপি রূপমিদমুপসংহরেতি ভাবঃ॥

বিশাস্থান্থিতি বিশ্বমধ্যে হৃহমণান্ধি তল্মমান্তম ধ্যে স্থিদা কথমেবমধীরাং ধিনং প্রবর্তনদীতি তবৈবারং দোব ইতি ভাবঃ। অলো-কিক্মিতি লৌকিক নরবাদকাকারো ভব। বথা ঝটতি স্থামহং কাপি গোপন্নানীতি ভাবঃ॥ ২৬॥

নত্র কিবিজ্যপনংহর্তবাং ময়া পরমেশবেদ পুজেণ তব মহতী প্রতিঠিবাছিতি চেয়াহং প্রতিঠামাশাদে ইত্যাহ বিশ্বমিতি।
নিশান্তে মন্দিরে নিশান্ত বত্য সদন ভবনাগার মন্দিরনিত্যবরঃ। অতত্র মন্দিরে ব্যাবকাশমস্ভোচ্ছঃ নুলোকস্য মাছ্লা মম
বিচ্ছনমেব তদিদং। আম বৃচ্ছে কোটিবছাভবিপ্রহো ভগবাং তব মাছ্রপ্রয়া গর্ভে ছিতোহভূদিতি বকু মৃতিবছমাণ কিং ন
নজনে ইতি প্রতিবেশি ন্যো মাছুশহনিবাজীতি প্রভ্যুতাপ্রতিঠিব মম স্যাদিতি ভাবঃ। মছ প্রত্রম্ভূর্ত র্গবহু সাক্ষাদ
পরোক্ষান্ত্রতানা দেবিবী বহুদেবরোরণি কিমিদম্বটমানমাবিদ্যক্ষং ভয় গোকাদিকং নৈবং বিদ্যাবিদ্যাভাগং বহিরলাভাগং পরত্তা
থলু বাবরলা স্বন্ধপত্তা চিচ্ছক্তিভাগ্যা জণি সারম্বতিরপো বঃ প্রেমা তহিলাসভূতমেবেদং ভয়শোকাদিকমাবিদ্যক্ষপ্রথাদ
পাত্রী ভবিজ্ং নৈবাহঁতি। প্রেরো মার্লাভীতত্বে কিং প্রমাণমিতি চেৎ ভগকতঃ প্রেমবভাদাবাদ্যপ্রপাদিকমাবিদ্যক্ষপ্রথাদ
পাত্রী ভবিজ্ং নৈবাহঁতি। প্রেরো মার্লাভীতত্বে কিং প্রমাণমিতি চেৎ ভগকতঃ প্রেমবভাদাবিভি বাবান্ বণ্চানি তবতঃ। ভক্তাা
মার্লাবাদান্ত্রসাপদ্যতিতি। কিশার চান্যর বৃহ্ণভার্থবিদ্যভাগ্যতে। ভক্তা মামতিলানাতি বাবান্ বণ্চানি তবতঃ। ভক্তাহনেক্রাপ্রাহ্ ইতি ভগবন্ত্রভাল্য স্বন্ধং তক্ত্যের প্রমানিত্যবদীরতে। সা চ ভক্তি রিবিধা ভণীভূতা প্রথানীভূতা কেবলাচ তাসাদ্দ ক্রমেণ জানং জানমন্ত্রী রতিঃ প্রেমা চেতি কলানি তব্র জানেন কেবলং চিৎ স্থাবৈত্যমন্ত্র ব্রন্থভালান্যক্রমণ্যকর ক্রমবদ্যান্তর ক্রমবদ্যান্তর বিশ্বরা ক্রম্বর্গনের রাধিক্যান্ত্রবিধিং
হক্তং চতুর্জা মাধুরী তস্য বন্ধ এব বিরাজতে। প্রশ্বর্য ক্রীভ্রোবেণাভ্রথা শ্রীবিগ্রহন্য চেতি। প্রেমাচ দাস্য সংগ্রেমব্রান্ত্র স্পাইন্দ্রপ্রম্বান্তর ক্রমবৃত্ত্য ব্যবহান ব্যেমা স্বন্ধ ভ্রমন্ত্রক্রমান্ত্র বিহানিত বিদ্যাবাদ্য বাংস্বা
ভ্রমন্ত্রক্রমান্ত্র প্রথানা বাংসব্র বিধা তাল্যবিধা ক্রমন্ত্র ক্রমবৃত্তাস্বানান্ত্র বিশাল্য বাংস্বা
ভ্রমন্ত্রক্রমান্ত্র বিধা বাংস্বা বাংস্বা বাংস্বা বাংস্বা
ভ্রমন্ত্রক্রমন্ত্র ক্রমবিধা তাল ক্রমভ্রমন্ত্র ব্যাক্রমন্ত্র বিধা বাংস্কা
ভ্রমন্ত্রক্রমন্ত্র ক্রমব্র বিধা বাংস্কা বিদ্যান্তর বিধা বাংস্কা বিদ্যান্তর বিধা বাংস্কা বিদ্যান্ত্র বিধা বিদ্যান্ত্র বিধা বাংস্কা বাংসবিদ্যান্তর বিদ্যান্তর বিধা বাংস্কা মান্ত্র বিদ্যা বাংস্কা বিদ্যালীক্র ক্রমব্রমান্ত্র ক্রমব্রান্ত্র ক্রমব্র ক্রমব্র ক্রম্বান্তর ক্রমব্র ক্রমব্র ক্রমব্র ক্রমবর্তী ক্রমব্র ক্রমবর্তী ক্রমব্য

হে বিখান্ত্ৰন্ । পৰা, চক্ৰ, গলা, পৰের পোন্ধান্ধ পোন্ধিত চতুত্ৰ, এই অনুত লগু তিলোহিত কর॥২৬ ত্রমবন্ । জাপনি পদন পুলুব, গ্রেলান্যসন্ত্র কীয় দায়ীরে চয়াচর বিশ্ব ধারণ করিলাছিলেন, বাঁহার। দেহে জগৎ অসকোচে ছিল, কোন পদার্থের খান বঙীর্ণ হয় নাই, সেই আপনি আমার গর্মে জিমিয়া- বিভর্তি সোহয়ং মম গর্ত্তজাহস্কুদহো নুলোকস্থ বিভূম্বনং তথ ॥ ২৭ ॥ শ্রীভগবানুবাচ ॥

ছমেব পূর্বে দর্গেইছে: পৃশ্লি: স্বায়স্তুবে দতি। তদায়ং হৃতপা নাম প্রস্তাপতিরক্ষায়ঃ॥ ২৮॥

श्रीभन्नवामी ।

কোচতঃ অসম্ভাবিত্থাৎ উপহাস্যতৈব স্যাদিত্যর্থ: ॥ ২৭ ॥

চত্ত্র রূপেণাবিভাবে কারণং তাবদাহ ধনেবেত্যাদি চতুর্দশক্তিঃ। পূর্বসর্গে প্রথম জন্মনি অভ্: আসী: পৃত্নিনাম সার্ভুবে ময়স্তবে অরং বস্থদেব:॥ ২৮॥

देवस्थवरजायशो।

নাটোপনেব বাকাং ততশ্চাধুনা মাররাম্যেব ইত্যেবৌদ্ধতোন ধ্বনিতং দ্যাৎ এবমিত্যর্থান্তরং। বিশ্বং অনস্তকোটি ব্রশ্বাপ্তায়কং। নিশা প্রাক্ত প্রবায় রাত্রিঃ। তুদুত্তে তদ্যা নাশে স্পষ্ট স্থিতি সময়ে পরঃ পুরুষো মহৎ শুঠু রূপঃ দন্ বিভর্ষি ইতি দোহরমেব হি বিশ্ব-মন্তর্জাবয়ন্ স্বাংশিনং তং প্রবিশ্যাবির্জবতীত্যন্তিপ্রারাং। গর্জনো পর্জগেশ্চেতি পাঠ্যয়ং ॥২৭ ॥

এবং ত্যোক জি জিরান নিতে। নিজ প্রসিদ্ধ ক্লপাবির্জাবকারণকথনাদিনা তৌ প্রতিষ্টুবলিব পরিসাম্বরন্ মাতরি সেহ বিশে-বেণ তাং সংখাধ্যাহ স্থমেবেত্যাদিনা স্বায়স্কুবে মহস্তবের সচি বর্তমানে। যদা হে সতীতি পুনঃ পুনস্তক্তৈব পত্নীভয়া পাতিব্রত্য নিষ্ঠাভিপ্রায়েণ। স্বক্ষরের রাগ দ্বোদি রহিতঃ। এব্যক্ষোন্তং দাম্পত্যবোগ্যতোকা॥ ২৮॥

ক্রমসন্দর্ভঃ ৷

मन् ॥ २१ ॥ २৮ ॥

🕮 বিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী ।

প্রেমবজ্ঞনমান্থাদয়তি। জ্ঞানেন বা জ্ঞানময়য়ত্যা বা সচিচদানন্দায়্য়ববত্যাং য আ্বাদতয়্বাং কোটিকোটগুণিতং মমতা হেতুকমান্থাদং প্রেমা প্রবর্জয়ত। তথাই সর্ব্ধ সন্ত্রাপ নিবর্জকাং পরমাহলাদকাং দৃশ্যমানাচচ্দ্রাদপি সকাশাং সর্বপ্রপানাহিপি কালছাদি দোরমুক্তোহিপি দৃশ্যমান: অপ্রো যং স্থমধিকং দত্তে তত্র মমতৈর বদি কারণং সর্বপ্রপমিতিতে সভাবাদের নিরব্ধিক হথপ্রদে শ্রিক্তে প্রীভূতে নিরব্ধিকৈর সা মমতা প্রেমনিষ্ঠা কিমুত্রতি জ্ঞান প্রেমো র্ভেদো বির্তঃ। যথা হুবিদ্যা স্বর্জ্জা মমতরেশবং স্থারপ্রপম্পাতিস্থায়তুং বয়াতি। যথা হুবিদ্যা স্বর্জ্জা মমতরেশবং স্থারপ্রপম্পাতিস্থায়তুং বয়াতি। যথা হুবিদ্যা স্বর্জা মমতরেশবং স্থারপ্রপম্পাতিস্থায়তুং বয়াতি। যথা হুবিদ্যা স্বাত্রবন্ধনার্য ব্যাক্রমান্ত্র ক্রিক্তাহিলা। মাননীয় জনস্যাপি য়াত্রবন্ধনমনর্থ স্থাক্র ক্রম্ম কঞ্জেকারাদিনেত্যবিদ্যাধীনো জীবো হুংথী। প্রেমান্ধনা ক্রমেহিতিস্থাতি। কিঞ্চ যবৈবাবিদ্যয়া স্বতারতম্যেন জ্ঞানাবরণ তারতম্যাজ্ঞীবদ্য পঞ্চবিধ ক্রেশ তারতম্যং বিধীয়তে। তথেব প্রেমাহিপি স্বতারতম্যেন জ্ঞানেকর্যাদ্যাবরণ তারতম্যাং স্বিবিষ্যর বিধীয়ত ইতি ত্র কেবলং প্রেমা শ্রমিকার স্কিন্তা মমতা রসনয়া নিবধ্য পর্মার্রন্ত্র বলীভূতো বিধায় জ্ঞানৈম্বর্গাদিকমার্ত্য বণাধিকং স্বর্গাতি নিষ্ঠ ঐথর্য জ্ঞান মিলিতক্রেন প্রাবদ্যাভাবাৎ তক্তং প্রেম্বন্ত্রণা তথা ভূতত্বে কারণ্ড নাবেইবাং। ভাসাং যদোদাদি দেবক্যাদীনাং নিত্যসিক্র্বাদেব তত্তবাদৃশ প্রেমবিশ্বাণামপি নিত্যসিক্রাদিতি সর্বাং নিরব্দাং ॥ ২৭॥

ভো মাত র্ন কেবলমন্ত্রিরে কল্পনি ছালাইগড়োইন্মণিডু ক্ল্যান্তরেক্ত্রণাতক্ত কিমিতি অলৈন্যং মন্যনে ল তং প্রাকৃত্যেব মানুষীত্যাই ছমেবেত্যাদি চতুর্দশভিঃ ৯ অনুঃ আনীঃ স্বারস্কৃবে মধন্তরে সতি বর্তমানে অরং ক্রনেবঃ ॥ ২৮ ॥

ছেন, ইহা সমুষ্য লোকের এক প্রকার বিভ্ন্থনা। অতএব এতাদৃশ রূপবান্ পুত্র হারা আমার শ্লাঘা হওয়া দূরে থাকুক, লোক সমাজে করং উপহাস্যতা হইবার সম্ভাবনা, এ নিমিতেও এই অভূত রূপ সম্বরণ কর্মন ॥ ২৭॥

এতৎ প্রবণে ভগৰার আপনার চতুতু জ রূপে অবতারের কারণ বলিতে লাগিলেন, হে সতি! প্রথম জন্মে স্বায়জুবমরস্তারে তুমিই প্রায়ি জিলে তৎকালে এই অক্সার বহুলেব স্তৃপা নামে প্রজা-পতি হইয়াছিলেন॥ ২৮ ॥ যুবাং বৈ ব্ৰহ্মণাদিটো প্ৰজাদৰ্গে যদা ততঃ। সংনিয়দ্যেক্তিয় গ্ৰামং তেপা**লো** প্ৰমং তপঃ।
বৰ্ষ বাজাতপ হিম ঘৰ্মকালগুণানমু। সহমানো খাদরোধ বিনিধৃত মনোমলো।
শীৰ্ণপৰ্ণানিলাহারাবুপশান্তেন চেতদা। মতঃ কামানভীপ্ৰস্তো মমারাধনমীহপুঃ॥ ২৯॥
এবং বাং তপ্যতো উদ্তে তপঃ প্রম তুক্তরং। দিব্য বর্ষ সহস্রাণি ভাদশেয়ু র্মদাস্থানোঃ॥ ৩০॥
তদা বাং প্রিতুটোহহমমুনা বপুষান্দে। তপ্যা শ্রদ্ধানিত্যং ভক্ত্যা চ হুদি ভাবিতঃ।

श्रीभवत्यामी।

তেপাথে তপঃ ক্লতবস্তৌ॥ २०॥

তপ্যতোঃ আচরতোঃ ঈযুর্গতানি মদাম্মনোঃ মচ্চিভ্রোঃ॥ ৩० ॥

অমুনা বপুবা প্রাত্ত্তোহমি বরদরাট্ বরদের শ্রেষ্ঠঃ ইত্যনেন সক্ষরবণেচ বারং বারং আবিভাবে কারণমূকং কামস্য দিংস্যা বৈক্ষবভোষণী।

বৈ প্রসিদ্ধৌ শারণে বা । ততত্ত্বদানীমেবেতি ব্রহ্মাদেশপালন প্রতাক্তা সংনির্মোতি চ শান্তি নিঠা অতএব প্রমং অনেকার্থক তপেক্তপং কর্মক এতার্থ ব্যক্তর্এব তপং শব্দোহন্দ্যত ইত্যভিপ্রেক্তা তৈর্ব্যাখ্যাতং। তেপাথে তপঃ ক্লতবভাবিত্যেবার্থ: পর্যাব-ফুতি তত্ত্রব চাশিতং ফুটিতি ॥

তপএৰ দৰ্শয় তি বুৰ্বেতি যুগাকেন বৰ্ষাদীন্ কালস্ভ গুণান্ স্বভাষান্ অহু নিরস্তবং সহমানৌ আতপং দাকাজবিরশিতাপং অৰ্থ উষ্ণাং । যদা আতপং শারদস্ভ রবেং ঘর্মো নৈদাদ্ভ । কিঞ্ছাদরোধং প্রাণায়ানং তেন প্রথমং সামাস্তব্যে ধৃতা নাশিতা ভতো যাব ছপলভাৱে তাবিদ্ধিংশেষণ ধৃতাস্ততঃ স্বয়ম্পলভামানায়া অপি স্ক্রতম বাসনায়া উচ্ছেদনেন বিশেষণ নিষ্ঠা মনদো মলাং কামা-দয়ো যাভাগং তৌ । এতেন যৎকিঞ্জির মধ্যমন্থ বাবব ক্রমেণ ভ্রোরাগ্রহাধিক্যং বোধিতং অভএব উপশান্তেন স্থিরেণ কিলা মদি-ঠেন শ্যো মন্ত্রিতা বৃদ্ধিরিত্যুক্তেরিতি শান্তিনিঠা। মতঃ পুত্রভূতাং কামান্ জনকভাবোচিত স্থানি প্রজাস্থা ইত্যুক্ত বাং মাদ্শো বাং বৃতঃ স্বৃত্ত ইতি বক্ষ্যাণ্ডাচে॥ ২৯॥ .

ভদ্ৰে পরম ভাপ্যবতীতি তত্র যোগ্যতোকা যথা ভদ্ৰৰনে মাথুরকেত্র এবাত্র ময্যেব আত্মা চিন্তং যুয়োরিতি কামান্তরং নিরন্তং ইত্যুপরতি নিঠা ॥ ৩০ ॥

`তদেতি সার্দ্ধকং অন্তে হে স্কাপরাধরহিতে ইতি তপোনি শিহুলুতা স্থচিতা অত্এব বাং যুবলো: সম্ভেদ্ধন যুবাং প্রতীতার্থ: ক্রেমসন্তর্ভা

অনেকার্থস্য তপে: তপ: কর্মক ক্বত্যর্থ ব্যক্তর এব তপ: শব্দোহন্দ্যতে। আতপ: শার্দস্য রবে: ধর্মো নৈদািদ্য মতঃ পুত্র ভূতাৎ কামান্ জনকভাবোচিত স্থানি। প্রজাসর্গ ইত্যুক্তং মাদৃশো বাং বৃতঃ স্থৃত ইত্যগ্রতশ্চ বক্ষাতে॥ ১৯॥ ৩০ ॥

বাং যুবাং পরি প্রতি তপদা মংসক্তোষার্থং প্রযুক্তন জাতা দাধনভক্তো যা শ্রদ্ধা তয়া জাতা তলকণা যা ভক্তিরয়া নিতাং হদি-

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্ত্তী।

আতপ: সৌরকিরণোথতাপ: হর্ণো নিদাঘোথ:॥ ২৯ ॥

मनाषाता म क्रिडरहा:॥ ७०॥

মদীয় ব্ৰতক্ষণ তথা ব্ৰহাত জি পূৰ্বকং নিমন্তরং মদ্যানমের মৎপরিভোৱে কারণমিত্যাহা তদেতি। অমুনা অনেন চতুত্ জেন

ব্রকা তোমাদিগকে প্রজা স্কনার্থ আদেশ করিলে তোমরা সুই জনে ইন্তিয়ে সমুদায় নি এহ করিয়া পরম তপতা করিয়াছিলে। বর্ষা রোদ্র হিম ঘর্মা প্রভৃতি কালগুণ সকল সহ্য করিয়া থাকিতে, প্রাণায়াম দারা তোমাদের মনোমল নির্ধৃত হইয়াছিল, শীর্ণপর্ণ ও অনিলমাত্র তোমাদের আহার ছিল, শাস্ত চিত্ত ইয়া আমার নিকট অভীক্ট সিদ্ধি অভিলাধ করত আমার আরাধনা করিতে॥২৯

্ ভজে। াৰ্থী প্ৰকাৰে আমাতে চিত্ত সমূৰ্প করিয়া তুশ্চর তপ্ত। করিতে করিতে তোমাদের দেব, পরিমানে বাবশ নহজ বংসর বধন গভ ছয় ॥ ৩০ ॥

তখন তোমাদের প্রতি আমার পরিভোষ কলে, তপস্থা এবং প্রদা ভক্তি সহকারে তোমরু

প্রান্থরাসং আদেরাড়্ যুবরোঃ কামদিৎসয়া। ব্রিষ্কতাং বর ইত্যুক্তে মাদৃশো বাং রুতঃ হতঃ ॥৩১॥ অজুক্তগ্রাম্যবিষয়াবনপত্যো চ দম্পতী। ব ব্রাথেছপ্রর্গং মে মোহিতো মম মার্য়া॥ ৩২॥

अभववामो।

দাতুৰিচ্ছয়া মাদৃশঃ মংসদৃশঃ ॥ ৩১ ॥ মে মডোহপি যুবামপবর্গং ন ৰব্রাথে বৃতবস্তৌ ॥ ৩২ ॥

বৈষ্ণৰজোমণী।

পরিত্ই: সন্ পরীতি কর্ম প্রবচনীয়ং বা তচ্চ বীঞ্চায়াং বীঞাচ অন্ধডেদেনেতি তথৈবার্থ: নমু তজ্যৈৰ পরিভোষ্যক্ষ: নতু তপসা সত্যং পারন্দারিকমেব কারণং তদিত্যাহ তপসা মৎ সন্তোষার্থ প্রযুক্তন জাতায়া নর্বধা সাধনতক্তে শ্রদ্ধা তরা জাতা বা তর্মকণা তক্তিয়ে নিত্যং দ্বিদ্ধি ভাবিত: যদ্ধেন প্রাণিত: চকারাদিনৈব যদ্ধ প্রেমলকণ্যা প্রাণিত: প্রুদ্ধ ভাবনা মধ্যেবেতি জ্বেরং অম্না এতেন শ্রীক্ষণাথ্যেন বপুষতি পরিতোষাদেশ সর্ব্ধি যোজাং অম্না বপুষা, হৃদি ভাবিত: । অতএব পরি সর্ব্ধভোভাবেন তুটোহংং অতএবামুনৈর বপুষা প্রাক্ষামিতি হেতৌ তৃতীয়া । বরদ্যাভিতি তৈর্ব্যাখ্যাতং । কিঞ্চ তপসোহধিক ফল্পানে ত্ত্র চোভবো-ত্রাধিকোচ কারণং ক্রেরং ॥

ব্রিয়তামিত্যর্শ্বকং বাং যুবাভ্যামিত্যর্থ;। তৃতীয়ায়া: ষষ্ঠী মাদৃশ: মৎ সদৃশ এব বৃতঃ নতু সাক্ষাদহং। লজ্জাদিনা তথা বরণাশকে বিতি ভাব:॥ ৩১॥

ভাদৃশ্নে ৰজাবেন ৰ্বাং ন কেবলং বিষয়ান্তরোৎপাদনং নাদৃতবন্ধী অপিতৃ তদুনাদরেণ মোকায় যোগ্যাবিপি মৎ প্রসাদেন তং হত প্রাথমপি মাদৃতবন্ধী ইত্যাহ অজুইেভি তত্রাজুই গ্রাম্যবিষয়াবিত্যনেনাহন্বায়ান্দিদ দেহাবেশো নিরকঃ। অনপত্যাবিত্যনেনাশতোপলক্ষিত মন্ত্যাপাদাভাব উক্তঃ। তত্তভাপবর্গবরণ বোগ্যভা দর্শিভা তত্বজ্ঞং বিনিধ্তি মনোমলাবিভি তত্রাপি মে বন্ধ ইত্তি প্রাথিকভাবনা দৃদীক্ষতা তত্তজং বরদরাভিতি তাদৃশাবিপি ধ্বাং ভাদৃশাদিপ মডো ন বরাথে তত্র ক্রমপ্রাথং হেতৃং মির্দিশতি মোহতৌ মম মার্ম্যেতি। মম মদীয়েরা ঝটিতি স্ববিষয়ক প্রজ্বেছ সম্পাদিকয়া মার্ম্যা ক্রপয়া। যন্ধা মন্তিবক্ত প্রজাচিত লাল-নেজ্যাম্যা ক্রপয়া তিরছ্ ভান্যভাবত্থাৎ ইত্যর্থঃ। দৃষ্টাক্তম্ব সালোক্য সান্ধি ত্যাদৌ প্রসিদ্ধ এবেভি নোক্তঃ॥ ৩২ ॥

ক্রমসন্তঃ।

ভাবিতঃ প্রেমলকণ্যা প্রাণিতঃ প্রভাবনাময়েতি জেলং । বাং ব্বাভ্যামিত্যর্থ: চতুর্থ্যাং বন্ধী। তদা বামিত্যাদি ॥ ৩১ ॥

• শকুষ্টেতি । ম্ম মাননা মদগত প্রলেহমব্যা কুপরেত্যর্থ: । মিববরলেহস্যাপবর্গস্থাতিক্রমিত্বাদিতি ভাব: ॥ ৩২ ॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

ভক্তোতি প্রদ্ধরেতি নিত্যমিতি ভাষিত ইতি পদত্রদ্বাধিকোন নেরং তপো বোগাকভূত। ভক্তির্ব্যাধ্যেরা সা ভূ মদান্মনোরিভ্যেতাব-নাত্রেণৈর সিদ্ধোদতস্ততঃ পৃথগৃত্তা প্রেমহেতু ভূতৈর তত্তভ তপো বেগাবেবাধিকারনরোইরধর্বা জ্ঞানহেতু জ্ঞেরাবিতি কেচিদাছ রন্যেতু নিত্যসিদ্ধরো দেবিকী বস্থদেবরোঃ প্রেমাপৈয়ধ্য জ্ঞানমিশ্রো নিত্য এব তদংশ্রেরঃ পৃদ্ধি স্থতপসোজানিবোগৌ দংশিনো-ভ্যারবিঞ্চিৎকরাবিত্যান্তঃ। জ্ঞার চিন্তিত ইত্যন্তক্তা ভাষিতো ভাষ বিষয়ীকৃত ইত্যনেন রাগভক্তিরবগন্ধতে॥ ৩১ ॥

মাননা প্রদেহ মন্যা বৈশ্ববীং ব্যাতনোঝানাং প্রদেহমরীং বিভ্রিভ্যুপরিষ্টাছকেঃ প্রদেহহাংশি নারাশকেনোচ্যতে। মোহিতৌ তদাখাদানন্দেন বিচিত্তীক্বতৌ ॥ ৩২ ॥

হৃদর মধ্যে নিত্য আমার চিন্তা করাতে আমি এই দেহ ধরিয়া প্রাফ্তৃত হই, কারণ আমি বরদাতা-দিগের রাজা, তোমাদের অভিলয়িত বর দান করিব। সে বাহা হউক, তোমাদের সন্তুশ আবি-ভূত হইয়া 'বর প্রার্থনা কর" এই বাব্যে বলিলে তোমরা আমার সমূপ পুত্র চাহিয়াছিলে। ৩১ ।

তোমরা ছুই ত্রী পুরুষে অনপত্য **ছিলে, আন্যাধিবর কিছুমাত্ত ভোগ কর নাই, আনার মারার** তুমাহিত হইয়া আমার নিকট মৃক্তি প্রার্থনা কর মা**ই**॥ ৩২॥ গতে ময়ি যুবাং লব্ধ। বরং মৎসদৃশং স্কৃতং। **গ্রাম্যান্ ভোগানস্থ্রাথাং যুবাং প্রাপ্ত মনোরথোঁ।** অদৃষ্ট্রান্যতমং লোকে শীলোদার্য্য গুণৈঃ সমং। অহং স্কৃতো বামভবং পৃশ্লিগর্ম্ভ ইতিস্মৃতঃ॥ ৩০॥ তর্মোবাং পুনরেবাহ্মদিত্যামাস কশ্যপাৎ। উপেন্দ্র ইতি বিধ্যাতো বামনদাচ বামনঃ। তৃতীয়ে হস্মিন্ ভবে হহং বৈ তেনেব বপুষাধ বাং। জাতোভুয় স্তয়োরেবং সত্যং মে ব্যাহতং সকি॥৩৪

বরং দকা ম্যি গতে ॥ ৩০॥

অদিতাাং কশুপাধানন আদেতি য**ত্তদপি ত**জ্জপ<mark>য়োগুৰিলে। রহমেৰ পুনরাদ মিতার্থ:</mark> ॥ ৩৪ ॥

देवक वरका बना।

धीरत्रवामी।

সতঃ সাবিতে মরি মনেকাথারৈবাগ্যাদপি শিথিলো জাতো উৎফুল্ল মনজেন স্বস্য মলকণ পুত্র সম্পত্তি বোগ্যভেড্লাত িয়ন্ত্র-মপ্যর্জিতনভাবিত্যাহ গতে মন্ত্রীতি। পশ্চলগ্রাম্যান্ ভোগানপি ধুবাং ভূকেবন্তো যতোযুবাং প্রাপ্ত মনোরথো ভূতো। পুরাং প্রতি গতে ইতি বা। অত্র টাকারাং বরং দথা ইত্যধ্যান্ত্রিতাৰ ব্যাধ্যাতং। দৰেতি পঠিন্ত কুত্রাপ্যদর্শনাং। বরং মৎসদৃশ মিত্যক্রচ বর্ষস্থাক্র কর্ম সাধনঃ॥ ৩০॥

সহস্ত ভবদ্ধাং তছ্তি চাতৃগ্যান্ছলিত ইব পাচাছিচার্যা ভবস্থনোগতমেব কৃত্বানিত্যাহ আদটে তি । শূীলং স্ক্রিকং উদার্বাং নহস্বং গুলন্তব্যাং কারবং কাকণাদি তৈরাল্লনৈব সমং তুলাং। স্বতঃ খাতঃ শ্রুত ইতি পাঠঃ ক্রিং কোকণাদি তৈরাল্লনিত্তা বভূবেতি লক্ষ্যতে বিজ্ঞ বজ্ঞানিগর্ভঃ সর্বাদেব উক্তক্ষম ইত্যাদিকং ক্রেকাদশে প্রসক্ষত শ্রেষ্ততে ॥

তাষারিতি তৈর্ব্যাখ্যাতং তত্র তদপীত্যানৌ তদপি মনৈব পুনরব্তিবমিতার্থ:। বামন আনেতি যদিতি উপেক্ত ইতি । ভাতে বামন হাত বামন ইতি বিখ্যাতো ব: স আস ইতি যদিতার্থ: অন্তেদি কিশং ভাদেশাভাব আর্থ:। বদা তথা তথা বিখ্যা । বন্ধা বিশ্যা । বিশ্যা বন্ধা বিশ্যা । বন্ধা বিশ্যা । বন্ধা বিশ্যা বন্ধা বিশ্যা । বন্ধা বিশ্যা বন্ধা বিশ্যা । বন্ধা বিশ্যা বন্ধা বিশ্যা বন্ধা বিশ্যা । বন্ধা বিশ্যা বন্ধা বন্

বেন পুরা বরার প্রাছরাসং তেনৈবেতি অধুনা পরিপূর্ণতয়া পূর্বজন্ম বরেজংশতবেতি বোধিতং। এতেচাংশকলা: প্ংস: ফ্রঞ

ক্রমসন্দর্ভ:।

যুবাং গতে প্রাপ্তবতি মরি বরং **লভ্জ্য অভ উৎফুল মনন্ত্রেন তাদৃশ পুত্রার্হ সম্পত্তি** যোগ্যতেচ্ছরা চ বিষয়োপার্জ্জনং জ্ঞেয়ং॥ অনুষ্ট্রেতি। শীলং সচ্চরিত্রং ঔদার্য্যং মহরং। গুণাং কারুণ্যাদয়ং তয়োং কারণানি॥ ৩০॥

ষা তথাতিহ্বভাগা অভ্যন্ত। বাবোংপি জীৰহাদেৰ আগতে সতি বিৰুতা ইতি হয়োৱৰলঃ তদংশস্যেৰ তৎ সাম্যাৎ পৃলিগ্ৰীদি ক্লপ্ৰয়েন পূৰ্বাণাৰিটাৰঃ। তথা্ণ্যপ্রিতোৰাং তৃতীৰে অৱমেৰ স্বল্ধ তাৰ্দলৈৰ তেনৈৰ ৰপুৰেত্যক্তা গম্যতে॥ ৩৪। ৩৫॥

শ্ৰীবিশ্বনাগচক্রবর্তী।

শ্রামান্ ভোগানিতি ভাদৃশ পুত্রোংপত্তীচ্চরেতি ভাব: । ব্যবায়ো প্রাম্যধর্মশ্রেতামর: ॥

পৃশ্লিপর্য্ত ইতি লোধ্যং ত্রেতার্গাবতারো লক্ষাতে। বিকৃষ্ঞ: পৃশ্লিগর্ত্ত ইত্যেকাননে তংগ্রাদদিকোক্তে: ॥ ২০ ॥

ব্দিত্যাং কল্পপাৰামন আগেতি যত্তদপি তক্রপায়ো যু বয়োরহমেব পুনরাসমিত্যর্থ:॥

ভবে জন্মনি তেনৈব চতুর্ভালন অহং জাত ইতি প্রথমে জন্মনাহং পৃদ্ধিগঠঃ দ্বিতীয়ে হহং বামনা তৃতীরেহন্দ্রিমহমেহমেবেতা ক্ষক্ষ-মাত্র বাচ্যান্তেন মটমব পূর্ণন্ধং ত্রো ম দংশন্থমিতি বোধিতং। এবং ত্তমেব পূর্বসর্গে হতুং পৃদ্ধিরিতি। নতু,পৃদ্ধিরেব ত্তমিত্যুক্তা

দে যাহা হউক, আমি তোমাদিগকে ঐ বরই প্রদান করিয়া গমন করিলে, তোমরা আমার সদৃশ তনর লাভ করিয়া বিবিধ প্রাম্য ভোগ করিয়াছিলে, কারণ তোমাদের মনোরথ পূর্ণ হইয়াছিল। হে সতি! সেই জন্মে আমিই তোমাদের পুদ্র হইয়াছিলাম, যে হেছু লোকে শীল ও উদার্য্যাদি গুণ দার। আমার সমান কোন ব্যক্তিকেই দেখিতে পাই নাই, অতএব ঐ জন্মে পুরিগ্র্ বলিয়া বিখ্যাত হই॥ ৩০॥

হে সতি! দ্বিতীয় জ্বশ্যে আমি পুনর্বার তোমাদেরই ছই জনের পুত্র হইয়াছিলাম। কশ্যপ হইতে অদিতির গর্ব্বে জনিয়া উপ্রেক্ত নামে বিধ্যাত হই। ঐ জন্মে আমার আকৃতি থকা হইয়াছিল

[১০য়। ৩অ।

এতদ্বাং দর্শিতং রূপং প্রাগ্জন্ম স্মরণায় মে। নান্যথা মন্তবং জ্ঞানং মর্ত্যলিক্ষেন জায়তে॥ ৩৫॥ যুবাং মাং পুত্রভাবেন ব্রহ্মভাবেন বা সকুৎ। চিন্তয়ক্তো কৃতত্বেহো যাস্থেথে মন্গতিং পরাং।

এিধরস্বামী।

প্রাক্ প্রথমং তাবদেতক্রপং মে জন্ম ইতি শ্বরণার জ্ঞানায় দশিতং মন্তবং মদ্বিয়কং অনস্তবং ওদিছেয়া বালোহপি ভবিষ্যামীতি ভবি:॥ ৩৫॥

নমু ত্বি প্রসল্লেহপি কথমাবয়োঃ পুনঃ পুনর্জন্মতি অতঃ পরং ন ভবিষ্যতীত্যাহ যুবামিতি ॥ ৩৬ ॥

देवस्वद्यायगी।

ইত্যাহ্যক্তে: অতএব বৈ নিশ্চয়ে অথ কাং স্থ্যে পরিপূর্ণতয়ৈব জাত ইত্যর্থ:। ,বাং যুবয়োন্তয়োরেবেতি জন্মভেদেপাভেদং দর্শয়তি। হে সতীতি সত্যং মে ব্যাহ্যতমিতিচ তব পাতিব্রত্যাদি ধর্মস্থ সিদ্ধি ম হক্তেরপি সত্যতা সম্প্রত্যেব পর্যাপ্তাভূদিত্যভিপ্রায়েশোক্তং॥৩৪

ভবতামিন্ ইতি ভবো বিষয়: অহং বিষয়ো যদ্য তজ্জানং নির্ণয়ে মনুরারপেণ ন স্যাং জন্যত ইতি চিচ্ছুকপাঠ:। যদা যচোকং রূপঞ্চেনমিতাদি তত্ত্বাকারং যজ্ঞানং যজ্ঞাং দর্শিতং তত্ত্বরদানমারভা প্রাচীন তদাকার প্রাহ্রভাব তার মারণায়ের নতু প্রাধানভাপেকরা নরাকৃতি পরক্রমান্থেনৈর মার ভবা মার তত্ত্ব প্রতিপাদনা দিতার্থ:। কিঞ্চাভাগা প্রকারান্তরেণ মম ভবো কর্ম তং প্রতীতি র্যত্ত ভজ্জানং ন জায়তে। কেনাত্র প্রকারান্তরং তদেবাহ মর্ত্তান্ত বিভূজভাদিনা প্রাকৃত মনুষাভোব লিকং চিহুং যত্ত্ব তেন গৃঢ়েন নরাকৃতি পরক্র রূপেণেত্যর্থ:। তত্মাচত্ত্র বিভূজভায়া ক্রীভৃতে। মম মুখ্যোহিশি তদাকার: প্রথমং ন দর্শিত ইতি ভাব:। মুখ্যদ্বন্ধান্ত দর্শিতং একোহিসি প্রথমমিত্যাদি তদমিতং রক্ষাদ্বাং শিবাতে ইত্যন্ত ব্রহ্মবিক্যে। নচান্ত ন বহি র্যনোত্যাদি প্রীভক্তরাক্রে।
গোপ্যন্তপ কিম্বরিন্নত্যাদিনা শ্রীভক্তদেবেনাপি স্বয়্মমুমোদ্যানেনান্ত্র্নিতে মধুরাপুরক্রী বাক্যে। যার্ব্রগ্রীশিপ্রিক্মিত্যাদি শ্রীমহন্ধবে

যুবামিতি বা শব্দ: উপমার্থে বিকরে বা। স্বর্গণে গুণেনচ বৃহত্তমন্ত্রামুখ্যন্ত্রন ভগবানেবাত্র ব্রহ্ম তাদৃশভাবেন কৃত্তমেহো সম্থে মুছ্শ্চিস্তয়ন্তৌ। ভাবদ্বস্যা তুলান্ত্রঞ্চ বিষয় মাহাত্মাৎ। পরাং সদগতিং, পর্মবৈকুঠং তল্গমনঞ্চ কশ্রপাদিতিভ্যাং একীভ্যাধিকারান্তে জ্যোং। অন্তব্রে:। অত্যাবভারিকায়ামিতি কথমিতাল্যা:। অত ইত্যাদিস্ত সিদ্ধান্ত:। অথবা তদেবমপি যুবাং সাধকাবিতি ন মস্তব্যং নচ পুন ম'ৎ প্রাপ্তৌ শক্ষা কার্য্যা যতঃ এতে হি যাদবাঃ সর্ব্যে সদগণা এব ভাবিনীত্যাদি পাত্ম কার্ত্তিকমাহাত্মাবচনাৎ। যণা সৌমিত্রি

শ্রীবিশ্বনাপচক্রবতা।

যুবামিতি পুত্রভাবেন নরাকৃতি পরব্রদ্ধ ভাবেন বা কৃত্সেটো সক্তদেব বা চিন্তরত্তী পরাং প্রকটলীলাত উত্তরা মপ্রকটলীলাং পুশ্যাদীনাং অংশস্বং দেবকী বস্তুদেবয়োরংশিস্থা । সতি হে কোবিদে। সন্সুধী কোবিদো বুধ ইত্যমরঃ॥ ৩৪॥

সরি ভবতীতি মন্তবং মশ্বিষয়ং মর্ত্তালিকেন ময়েতাহন্ত অয়ং পরিপূর্ণ অরপে। মর্ত্তালিকে। শ্বিভূজ এব নরাক্তি পরএক্ষডাদিতি ভাব:॥৩৫॥

এবং স্বপিতৃতাৎ স্বমস্ত্রোপাসনা পটলোক্ত বস্ত্রদেবাদি ধ্যানপূজাদীনাং সার্ব্ধকালিকত্ব প্রদর্শনমপ্যন্যথামূপপত্তি সিদ্ধং তয়ে নিজ্য সিদ্ধাং সংগোপ্য প্রেমবর্দ্ধনার্থং সাধকত্বমেব খ্যাপয়ন্ সিদ্ধিং প্রতিশ্রুত তাবানন্দয়তি। যুবামিতি। বস্তুতশ্চায়মর্থ:। মম প্রথমা গতি রদ্যতনী গোকুলং প্রতি যাত্বেকাদশে বর্ষে মথুয়াং প্রতি পুন ভাবিনী তাং পয়াং মদগতিং যুবাং যাস্যেথে প্রাপ্সাথঃ যাস্যথ ইত্যর্থ:। সাম্প্রতন্ত্র ময়া সহ যুবয়ো বিচ্ছেদ এব ভবতীত্যর্থ:॥

আৰুমায়য়া আত্মনায়া তদিজ্ঞান্যাদিগুণমায়া জড়াঝিকেতি মহাসংহিতাবচনাদাক্ষেজ্যা প্ৰাকৃত: প্ৰকৃতিক স্বৰূপক স্বভাবকেতি

এ কারণ লোকে আমাকে বামন বলিত। এই তৃতীয় জন্মেও আমি সেই শরীর সহিত তোমাদের গৃহে ঐ রূপে পুনর্বার জন্মিলাম, তোমরা সেই পৃশ্বি ও স্তুত্পা, আমার কথা সত্য জানিও॥ ৩৪॥

হে সতি! আমার পূর্বতন জন্ম সারণ করিয়া দিবার নিমিত তোমাদিগকে এইরূপ দর্শাইলাম, এ রূপ না করিছে খানব চিহু ঘারা মদ্বিয়ক জান জন্মিতে পারিত মা॥ ৩৫॥

কোমরা ছুই জনে স্নেহ করিয়া পুত্রভাবে অথবা ত্রন্মভাবে আমাকে চিন্তা করিয়া অতঃপর আমার •পরা গতি প্রাপ্ত হুইবে।

95

ইত্যক্ত্বাসীদ্ধরিস্কাং ভগবানাক্সমায়য়। পিজোঃ সংপশ্যতোঃ সদ্যো বভূব প্রাকৃতঃ শিশুঃ ॥৩৬ ততশ্চ শৌরি র্ভগবং প্রচোদিতঃ স্বতং সমাদায় স সূত্তিকাগৃহাং।

श्री धत्रवानी ।

যদি কংসাত্তীতোহসি তাই মাং গোকুলং নয় কশোনায়াত কন্যাং মন্মায়ামান্ত্রতি প্রথমমেব ভগ্রেকা প্রচোদিতো বস্থনেরো যদা বৈষ্ণবভোষণী।

ভরতী যথা সঙ্কর্ষণাদয়:। তথা তেনৈব জায়ুত্তে নিজলোকাল্যল্ছয়া। প্নস্তেনৈব গছেন্তি তং পদং শামতং পরং। ন কর্ম্ম বন্ধনং জন্ম বৈশ্ববানাঞ্চ বিদ্যুত্ত ইতি পাল্লোভরপ শুবননাং। মদীয় তত্তন্মহাময় মজ্জ্যাইমীপুজাপটলায়ুসায়াচ্চ। যুবাং নিতামেবৈ তাদ্শৌ। তথাপি মমেব ব্বয়োরপি মংপ্রেইলব মংপ্রেমবিশেষমমায়াধন প্রচাবার্থং তত্ত্ব ত্ত্ব স্থাংশেন। সম্প্রতি স্থামেব চাব-ত্রগং লীলামারং। এতদেবাক্তং দ্বমেব পূর্ক্রপর্গে ভৃং পৃল্লিরিত্যাদি। তত্ত এবানস্তরমপি মং প্রাপ্তেম ন সাধন বৈশিষ্ট্য নাধেক হৈছা হৈ তাথং। কিছু তদপি পূর্ক্রদেব নং প্রাপ্তিম স্বত্রব ইত্যাহ যুবামিতি। পূল্লভাবেনেতি ভাববৈশিষ্ট্যেন তথা মদাবিত্রবিশিষ্ট্যেন চেত্যর্থং। ক্রেমভাবেনেতি ভাবসামান্যেন ভগবল্লাত্রগাবিভাব সামান্যেন চেত্যর্থং। বেত্যক্তক্ষেপ পিতরৌ নাল্লবিন্দেতামিত্যাদিনা পিতরাবুলকার্ম্বারিত্যাদিনা। স্বংহা ভাগ্যমহোভাগ্যমিত্যাদি রীত্যা। ইথং স্তাং ব্রন্ধ স্থামত্ত্যা ইত্যাদি রীত্যাচ তারত্যয়াং। পূর্কেণ মুখ্যন ইতরেণ গৌণেন বা চিন্তয়ত্ত্বী ত্রাপি সক্তনের চিন্তয়ন্তেরী বা যদ্যেবমিপি সম্ভবতি তদাপীত্যর্থং পরাং অস্যাং প্রপঞ্চ প্রক্তিলীলাত উক্সাং তদপ্রকাতলীলা ক্রপাং মদগতিং যাস্যথ এব নাধুনিক সাধন যোগ্যতাযোগ্যতাভ্যাং ত্রোপকার্য্যতাপ্রকার্যতে ইতি ভাবং। তত্র হেতুং ক্রেইরেইর ক্রাবেত্র এব সিদ্ধং মেহং পুল্লভাবন্ধং প্রেমা যােরা স্বেটা স্বন্ধাব সিদ্ধমন আয়মান্মাছতপাণ্যেতিবং যারা ক্রতমেহেই। চিন্তয়ন্তরী অন্যং স্থানং।

ত তঃ কিং জাতং ইতাপেক্ষায়ানাই। ইতীতি। ইত্যুক্তা ইবিস্তাচত তুঁ জং ক্ষপমপহর্ত্তু পোপরিত্ত প্রবৃত্তকেন বিখ্যাপিত তর্মানসি তৃষ্টানাসীই। ততক পিজোং সম্পান্ততাবৈৰ নজনাত্ৰ দত্ত দৃষ্টোঃ সতোর্ভপৰান্ স্বৰূপভূত ৰাজা গ্রাৰাস্থায়ায় মায়া স্যাৎ শাষ্ত্ৰী বৃদ্ধো বিতি ত্রিকাণ্ডশেষাং মায়া বয়ুনং জ্ঞানমিতি নির্ঘণটাচ্চ স্বৰূপভূত জ্ঞানশক্ষা বৃদ্ধিসোষ্টৰ বিশেষময় শক্ষোতি যাবং যথা আত্মনায়া তদিছে৷ সাহা গুণনায়৷ জড়াগ্রিকেতি মহাসংহিত৷ বচনাং আত্মেছ্য়া। যথা নায়া দত্তে কুণায়াঞ্চেতি বিশ্বকাষাং আত্মক্ষা। শিশুবাবিদ্ধৃত শৈশবোবভূব। তত্র বিশেষ জ্ঞানার্থমাহ প্রাকৃত ইতি গৌণাা বৃত্ত্যা প্রাকৃত ইবেতার্থ:। যথা নচাগন্ধকাকাবেণ তাদৃগ্বভূব ইত্যাহ প্রাকৃত ইতি প্রকৃতিক স্বৰূপঞ্চ স্বভাবশ্যে প্রকৃতি সিদ্ধান্দং হি মহাত্মনামিতি প্রয়োগাচ্চ স্বভাব- বিদ্ধ এবেত্যর্থ:। অর্থান্তরং হি নচান্ত ন বহি র্যাসোলায়তা ববন্ধ প্রাকৃতং বথেতি পূরিতে বাক্ষো দাইণিন্তিক দৃষ্টান্তাভাগং নির্ঘনীয়ং বাভীই শীলাক্রমনেৰ প্রকৃত্ত্ব স্তল্য সর্ব্ধনেৰ তত্ত্ব স্বভাব বিদ্ধনেৰতি ভাব:। বক্ষাতেচ গর্গেণ বহুনি সন্তি ক্রপাণি নামানিচ স্কৃত্যা তে ইতি॥ ৩৬॥

ভগবতা প্রচোদিত ইতাত্র ব্যক্তোব্জিবেব তসা শ্রীংরিবংশে বস্থাদেব বচঃ শ্রুষা রূপং সংহরদচ্যতঃ। অন্ত্রাপ্য পিতৃত্বেন নন্দাগোপগৃহং নয়েতি। অভার্থ: সংহরৎ সমহরৎ কিং কৃষা নন্দাগোপগৃহং নয়েতি পিতৃত্বেন পিতৃত্বেন মুক্তায়েত্যর্থঃ। সম্যাগাদায়

योत्रार्थः ॥ ७७ । ७२ । ७৮ । ७३ । ८० । ८२ । ८२ । ८० ॥

দ্রীবিশ্বনাপচক্রবর্ত্তী।

পর্য্যারাৎ প্রকৃতি সিন্ধমিদং হি মহাত্মনামিতি শিষ্টপ্রয়োগাচ্চ স্বভাবসিদ্ধ ইত্যেবার্থঃ। অর্থান্তরম্ভ ন চান্ত ন বহি র্যস্যেত্যারভ্য ববন্ধ প্রাকৃতং যথেত্যপ্রিমে বাক্যে লাষ্ট্রণিত্তক দৃষ্টান্তাভ্যাং নিরসনীয়ত্বাৎ । ৩৬॥

ভগৰতা প্রচ্যেদিত:। বদি বিভেষি তহি মাং গোকুলং নর যশোদারাশ্চ তাং কন্যাং মন্মারা মানরেত্যাদিই: স বস্থদেব: অপাদ নিগড়ং অরমেব প্রস্তং বীক্ষ্য বদা গন্তমৈছেৎ জ্ঞদা সা নন্দ্রভায়রা নিমিত্তভূত্ত্বা অজনি জাতা। কিঞ্চ গর্তকালে ভ্নংপূর্ণে অইমে মাসি তে

শুকদেব কহিলেন হে রাজন । ভগবান্ হরি ঐ প্রকার কহিয়া ভূফীস্কৃত হইলেন। পরে দর্শনকারি পিতা মাতার সমক্ষে নিজ মায়াযোগে প্রাকৃত বালক হিলেন॥ ৩৬॥

অনন্তর যদি কংস হইতে ভয় পাও তবে আমাকে গোক্রে রাখিয়া, আমার যোগমায়া যশোদার-কন্যা হইয়া অন্মিয়াছেন, তাঁহাকে লইয়া আইস, এই প্রকার ভগবছাকো প্রেরিত হওয়াতে যখন যদা বহির্গস্তমিয়েষ তর্হাজা যা যোগমায়াইজনি নন্দজায়য়া॥ ৩৭॥
তয়া হৃত প্রত্যয়দর্শবর্তিষু ঘাংশুেষু পৌরেষুচ শায়িতেম্বথ।
ঘারশ্চ দর্শাঃ পিহিতা ত্রত্যয়া বৃহৎকবাটায়দকীল শৃষ্টলেঃ॥ ৩৮॥
তাঃ ক্ষণাহে বস্থাদেব আগতে অয়ং ব্যব্যান্ত যথা তমার্বেঃ।

ত্রীধরস্বামী।

গদ্ধনৈচ্ছৎ তলৈবচ যা অজাপি যোগনায়া সা নৰ্শলায়য়। নিমিত্তমাত্ৰ ভূতয়া অজনি জাতা 🖟 ৩৭ ॥

發

হতাঃ প্রত্যেরাধাঃ সর্কর্ত্তরো বেষাং অথবা হতাঃ প্রত্যের। অন্যাশ্চ সর্কা বৃত্তরে বেষাং জাগ্রতামপি তথা ভূতের দাবশালের সংস্থ রংৎস্থ কবাটের লৌহকীলক যুক্ত শৃথলৈ বুহিঙ্কি কবাটাদিভি দুরিত্যরা ইতি বা ॥ ৩৮ ॥

স্বন্ধনেৰ ব্যবৰ্যান্ত বিবৃতা ইতাৰ্থ:। ব্যব্ৰিয়ম্ভেটি বক্তব্যে গুণশ্ছান্দসঃ রবেনিমিভাৎ ॥ ৩৯ ॥

देवस्वदं जायनी।

কোমণ বস্তান্ত্ত পেটিকাবাং স্থাং নিধায় তাং শিরস্যাধায় কিছা সাবধানং শলৈ: শলৈ: করাভ্যামুখাণ্য নিজাত্তে নিধার বাছভ্যামা-নিষ্যানিব গৃহীয়া সং অনির্বাচনীয়ভাগ্যবান্। ততশ্চ পাদনিগড়: বয়মেব ভ্রষ্ট ইতি জ্বেষং তহীত্যক বিশেষঃ প্রীহরিবংশে নস্ম্যা মেব সংজাতা কৃষ্ণপক্ষস্য বৈ তিথাবিতি॥ ৩৭ ॥

তরেতি যুগাকং। প্রতাষো জ্ঞানং বাংশ্বাং বারস্থিতাং রক্ষিণো বারপালান্চ তের্। তথাচ শ্রীবিষ্পুরাণে মোহিতান্চাভবংক্ত রক্ষিণো বোগনিজন্ন। মধুরাবারপালান্চ ব্রস্থতানকত্বপূভাবিভি মোহনাদিকক্ষ মান্তরা এব যোগামিতি তথা ওত্তকং প্রকাশনদ্ধ শ্রীভগবত এবেতি তথৈব তদাহ বারন্টেতি অথানন্তরং সদ্যএবেত্যর্থ:। যাং পিহিতা মুদ্রিতান্তা বারোপি স্কৃষ্ণাদীনাং হৃতপ্রভারাদিখং লক্ষণীক্ষতা শ্রীবস্থানের স্থাগতে সতি স্বয়মেব বির্তা ইত্যর্থ তান্চ কথমপ্যাব্যাবিদ্বিত্বং ন শক্ষান্তে ইত্যাহ বৃহৎ করাটাদিভি ত্রিভ তারাং॥ ৩৮॥

কৃষ্ণ: কৰি ভূঁ বাচক: শব্দো পশ্চ নির্বৃতি বাচক:। তরোরৈক্যং পরং ব্রহ্ম কৃষ্ণ ইত্যভিধীয়ত ইত্যন্থগারেণ সর্বাকর্ষক প্রমানন্দ বন্দুর্ভি অস্য বাহে বাহক ইতি বহনাদিশ্রমো নিরন্ত:। প্রত্যুত প্রমানন্দ এব ব্যঞ্জিত:। তথা সংসারবন্ধদি কর্ষতি হরতীতি কৃষ্ণ

শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।
ক্রিরো। দেবকী চ যশোদা চ স্থ্বাতে সমং তদেতি হরিবংশবাক্যে সমং সহ সমকালমের স্থ্বাত ইতি তক্রাবগমাদক্র তু দেবকী
প্রসবোক্তর কাল এব যশোদা প্রসবদর্শনাছ ভ্রোরেব শাস্ত্রবাক্তিপ্রামাণ্যাদেব মনসীয়তে। বদৈব দেবকী ক্লকং স্থব্বে তদৈর
যশোদাপি ক্লকং স্থব্বে তদনস্তর সময়ে যোগমারাক স্থব্বে ইতি কালভেদেন তদ্যা বি: প্রসব এবেত্যত এব অদৃশ্যতাম্বা বিকো:
সাম্বাই মহাভূজেতি বক্ষাতে। কিক যশোদা প্রস্তব্য ক্ষস্য চতুর্ভ্রাদ্যম্কে ন রাক্তি প্রক্ষবাক্ত বিভ্রম্বনে ব্রোগত ইতি ॥৩৭

তথা শোলবামরা হতাঃ যদ্য জ্ঞানদ্য দর্মা র্ত্তরো বেষাং তেষু বাংছেষু বাবপালেষু শান্ধিতেরু দংখিতি জ্ঞানহরণং যোগমারাংশ ভূতারা মানামঃ কার্যাঃ । যা বারঃ পিহিতাভাব্যবর্যান্ত ব্যত্তিরন্ত বির্তা ইত্যর্থঃ। বৃহৎ কপাটগতৈরারদ কীল শৃল্পলৈ ছ্প্রত্যরাঃ ছ্রতিক্রমাঃ।। ৩৮॥

রবে নিনিতাং। উপাংশু মন্দ মন্দং পঞ্জিতং যদ্য দাং। কণৈশ্বীকৃতৈরিতার্থঃ। শ্বাদন পরীধান পাছকা ছত চানরিঃ। সেই পুত্র গ্রহণ করিয়া সৃত্তিকা গৃহ হইতে বহির্গমনে বস্তুদেবের বাঞ্চা হইল, সে সময় ভগবানের যোগমায়া জন্ম রহিত হইয়াও নন্দজায়ার পর্ট্রে জন্ম গ্রহণ করিলেন ॥ ৩৭ ॥

রে রাজন্! সেই মায়ার প্রভাবে সমুদায় দারপালের যাবতীয় ইন্দ্রির রন্তি অপহত হইল অর্থাৎ তাহারা জাগ্রৎ থাকিয়াও অচেতন হইয়া পুড়িল এবং পুরবাদি দকলে নিদ্রায় অভিভূত হইয়া শয়ন করিল। বহুদেব দেবকী যে গৃহে ছিলেন তথাকার দার সকল বৃহৎ বৃহৎ কবাট, লোহ কীলক এবং লোহ শৃত্যের বন্ধ হইয়াছিল॥ ৩৮॥

কিন্তু বহুদেব শ্রীকৃষ্ণকে লইয়া বহির্গমনার্থ উদ্যত হইলে বেমন রবির উদরে জন্ধকার স্বয়ং বিমোচিত হয় তাহার ন্যায়, সে সকল উদ্যাতিত হইয়া গেল। রাজন্। তৎকালে মেঘ সমূহ মন্দ

とと

ববর্ষ পর্জন্য উপাংশু পর্জ্জিতঃ শেষেছিরগানারি নিবারয়ন্ কণৈঃ॥ ৩৯॥ । মঘোনি বর্ষত্যসকৃদ্যমাসুজা পঞ্জীরতোরোঘ জ্ঞাবের্দ্মি ফেণিলা। ভয়ানকাবর্ত্ত শতাকুলা নদী মার্গং দদো সিন্ধুরিব প্রিরঃপতেঃ॥ ৪০॥ নন্দ্রজং শোরিক্লপেত্য তত্র তান্ গোপান্ স্বস্থানুপলভ্য নিদ্রো।

अभववामी।

গভীরো ষজ্যোয়ের তুস্য জবেন বেঁ উর্মারতঃ কিণিলা ফেণব্যাস্থা ভ্রানকৈরাবর্ত্তশতৈ ব্যাপ্তাপি প্রির:পতে: সীতাপতে: ॥ ৪০ ॥ নিদ্রা অজ্যা ॥ ৪১ ॥

বৈষ্ণবতোষণী।

ন্তৰাহ ইতি বনং বাৰি ক্তোচ হেতৃ:। ব্যবহান্তেতি কৰ্মকৰ্ত্তি প্ৰবোগ: কৰ্ত্তাচাৰ্থাৎ প্ৰীবহ্নদেব এব তমো ব্যোদ্বিতিং স্যাদিতি দৃষ্টান্তেন তদাগমনাং পূৰ্বমেব ক্ৰমেণ সমাধিৱতি ধ্বনিতা পৰ্জন্যো গৰ্জন্মেণ্য উপাংশু মন্দং মন্দং গ্ৰিভং যস্য সঃ শেষ ইতি সমরে নিজনেবা সিদ্ধরে পার্যদ প্রবরঃ শ্রীমাননস্ত এব। শ্যাসন পরীধান পাছকা ছত্ত চামরৈ:। কিং নাভ্তস্য ক্ষম্য মৃতিভেটিশ ক্রিভিত ক্রমাণ্ডবচনাং। অবগাং শ্রীবহ্নদেবস্য পশ্চাদগছং। তথাচ বিষ্ণুরাণে। বর্ষতাং জলদানাঞ্চ তোয়মত্যুরণং নিশি। সংছাদ্যান্ত্রমেণ শেষ: ক্রেডানাকছক্তিমিতি। তচ্চ তেন স্থানিরিদ মহার্টি নিবারণং যথ বিঞ্লিক্ষিত মেব ক্ষেয়ং চিত্তয়া বৰ্ষমানে বৈরব্যে সদ্যঃ স্থাদ চমংকার হেতৃত্বেন যোগ্যাহাং॥ ৩৯॥

মঘোনি শক্তে বর্ষের বর্ষজীতি অন্তাপি মায়ামোহিতজনত্বে তদজানাদদৌ শ্রীবস্থদেবাদর্শনাদ্যর্থমের বৃষ্টিমকরোৎ। যা থদু জল ভূম্যোরেকজাপাদনেন তদ্য সহসা যমুনাবগাহেহিপি হেজুরভূং। তত্রাসক্ত্বঞ্চ তৎ ক্লেশ শক্ষয় মধ্যে মধ্যে বিচ্ছেদনাৎ। সচ বিচ্ছেদো নির্জনদেশ ইতি জ্বেয়ঃ। বমাস্থজেতি তদানীং পরম ভীষণবাদ্যভিপ্রায়েগ। তদেবাভিব্যয়য়তি গল্পীরেত্যাদি বিশেষণাভ্যাং। অন্তএব নদীতি মহাশক যুক্তবঞ্চ য়েবেণোক্তং। তথাপি যথা সীতাপতেঃ সমুক্ত তথা দা শ্রীবস্থদেরদ্য মার্গং দদৌ। পরার্ত্তাবিপি তদ্যৈর তদানাং অতএব তৈরিপি সীতাপতেরিত্যের ব্যাখ্যাতং। তথাচ শ্রীবিক্ষপুরাণে। যমুনাঞ্চাতিগল্পীরাং নানাবর্ত্ত শতাকুলাং। বস্থদেবো বহন্ বিকৃৎ জামুমাত্রবহাং য্যাবিতি ॥ ৪ • ॥

উপেত্য সমীপে গছেতি বন্ধাদিকমন্ধানতোহিপি তস্য দৈবসাহায্যং কৃচিতং দারবদ্ধাদি বিমোকস্ত পূর্ববং। তুদানীং প্রীয়ণোদা সমীপে সমতিব্যক্ত শৈশব মাধুর্য্যেণ শ্রীবহুদেবস্য কর্ম চাক্সইচিত্তথাচ্ছিত্রমিত্যক্তং। হুতনিতি কৃচিৎ পাঠ: নিধায় নিধিমিব গৃঢ়ং ন্যায়। তস্যাঃ হুতামুপাদার মারাছেন কন্যাছেন্চ কংসবঞ্চনার্থস্পাদেরছেন্চ গৃহীত্ব। এবচ শ্রীভগ্রতি স্নেহ তর এব। যদ্বধি মারাছেন

श्चीवित्रनाथठक वर्डी।

কিং নাভূতস্য কৃষ্ণস্য মৃর্ট্টিভেন্ডৈ চ মূর্টিছিভি বক্ষাগুপুরাণাৎ॥ ৩৯॥

তোরোঘ ভোরসমূহ: প্রিয়:পড়ে: সীতাপতে: ॥ ৪ • ॥

তংস্থতামূপাদায়েতি কংসাৎ অপ্তাস রক্ষণং মিত্রপুত্রা বধং জানতোছুপি পরমধার্ম্মিকস্যাপি বস্থানবস্থায় মন্যায়ে ন দ্ধণং

মন্দ গর্জন পূর্বেক বারি বর্ষণ করিতে ছিল সত্য, কিন্তু তাহাতে বস্তদেকো পমন ব্যাঘাত হইল না। অনস্তদের স্বীয় ফুগা ছারা জ্বল নিবারণ করিতে করিতে তাঁহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ মাইতে লাগিলেন॥৩৯

ইন্দ্র স্থানবরত বর্ষণ করিলে যদিও গঞ্জীর জল প্রবাহের বেগে প্রবল তরক হইরা যমামুজা যম্না ঘোরতর ফেশিল এবং ভয়ানক শত শত আবর্ত্ত শঙ্কুল (ব্যাপ্ত) হইরাছিল, তথাপি সাগর যদ্রপ সীতাপতি রাম্চক্তকে পথ প্রদান করিয়াছিলেন তাহার ন্যায়, ঐ নদী বহুদেবকে যাইবার নিমিত্ত বন্ধ প্রদান করিলেন ॥ ৪০॥

সে যাহা হউক, বহুদেব নশ্বজ্ঞে উপনীত হইয়া দেখিলেন ভগবানের মায়া প্রতীবে গোপেরা সকলেই নিদ্রিত হইয়া রহিয়াছে অতএব আপনার পুরুটী যশোদার শয়নে স্থাপন করিয়া তদীয় শিশুং যশোদাশয়নে নিধার তৎ হৃতামুপাদার পুন গৃহানগাৎ॥ ৪১॥

দেবক্যাঃ শয়নে ন্যুস্য বস্থদেবোহও দারিকাং। প্রতিমৃচ্য পদোর্লোহমান্তে পূর্ববদার্তঃ॥ ৪২॥ যশোদা নন্দপত্নীচ জাতং পরমবুধ্যত। নতলিকং পরিশ্রান্তা নিদ্যাপগতস্মৃতিঃ॥ ৪৩॥

॥ अ ॥ ইতি এভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্থাং সংহিতারাং বৈয়াসিক্যাং দশমক্ষে এক্ষা-বতারস্তৃতীয়োহধ্যায়ঃ ॥ अ ॥ ৩ ॥ अ ॥

প্রীধবসামী।

প্রতিমূচ্য বন্ধা পদোঃ পাদয়োঃ লোহং নিগড়ং আন্তে শ্ব॥ ৪২॥ জাতং কিঞ্চিদিতি কেবলং অব্ধাত নতু পুত্রঃ কন্যা বা ইতি নিদ্রন্ধা চ মোহিতেতি॥ ৪৩॥

॥ * ॥ ইতি দশমে তৃতীয়: ॥ * ॥

देवक्षवरकाष्ट्री।

জ্ঞাতায়া জ্বপি স্বীকার:। তথা মিত্রপুঞ্জীত্বেন প্রতীয়মানায়া অপি কংসকার্য্য বধ দোষানপেক্ষণং। গৃহানিতি চিস্তাব্যাকুলস্য শ্রীদেবকী লক্ষণস্য নিজগৃহস্য ততো মৃহ্য ক্রিতত্বেন বছত্ব নির্দেশঃ॥ ৪১॥

দারিকাং বালিকাং শয়নে ন্যান্যতি তস্যা উদর্ক শোক বৃদ্ধি শঙ্করানাদরেশৈব শয়ন এব ন্যাস্য ন পুনরন্ধ ইত্যর্থঃ। পূর্ববিদায়তঃ ক্বাটাদিভি নিরুদ্ধঃ॥ ৪২॥

যশোদেতি তাদৃশ পুরোৎপত্যা শ্রীনন্দস্য ব্রহ্ম চ কীর্তিবিতারণাডিপ্রারেণ তথা নন্দরতি পুরোৎপত্তা হলপিতি নন্দরাভস্যাণি তদানন্দতা হচিতা। তস্য পত্নীতি তস্যা অপি হুগদানন্দকত্বং তথা তৎ পতিত্বেন তস্যাপি যশো বিতারণং স্টেতং পরিপ্রান্তা প্রসন্ন শ্বভাবেন হাতাত্য ক্রমা। নিজ্যা যোগনিজ্যা অতঃ স্বতরাং তৎ পরিহ্মনানামণি তাদৃশত্বস্থা। তথাচ শ্রীবিষ্ণপুরাণে। তারিন্ কালে যশোদাপি মোহিতা যোগনিজ্যা। তামেব কন্যাং মৈত্রয় প্রস্তা মোহিতে হুন ইতি। পশ্চাৎ পুত্র দর্শনেন পরম হাইভিদিতিত জ্বেয়ং। তথাচ তবৈব দৃদ্দেত প্রস্কা সা বণোদা হাতমায়কেং। নীলোৎপল দর্শন্যামং ততাহত্যর্থং মুলং য্যাবিতি॥ ৪০॥

॥ * ॥ ইতি বৈষ্ণৰতোষণ্যাং শ্ৰীদশমটীপ্ল খাং তৃতীয়: ॥ * ॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

॥ * ॥ ইতি দশমে তৃতীয়: ॥ * ॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্ত্তী।

প্রকৃত ভূষণমেব পুত্রীভূতে ভগবতি বৃদ্ধিফুলেহেনৈব তাদৃশ বিবেকাপহারাৎ ॥ ৪১ ॥

প্রতিমৃচ্য বন্ধ। পদরো র্লোহং নিগড়ং আরুত: আত্তে স্ব ॥ ৪২ ॥

পরং কেবলং জাতমবৃদ্ধাত নতু পুল্র: কন্যাবেতি। তদ্য জাতদ্য চিহ্নং। তত্র হেতুঃ পরিশ্রান্তা অতিদৌকুমার্যাৎ প্রসবোধ শ্রম্বতা প্রদাবন্ধ চানন্দেন শ্রমোপশাস্ত্যা চ নিদ্রবেতি। কিঞ্চান্ত চকার উক্ত সমুক্তরে। যথা বস্থাদেবপদ্ধী তথা নন্দপদ্ধী চ জাতঃ স্বগর্তাছংপদ্ধপত্যং পরং সর্ব্যোৎকৃষ্টং অবৃদ্ধাত তক্ষাধুর্যাস্থাদ শক্তৈয়ব তদ্ধস্তমা তদীয় স্বরূপভূতা নন্দমমূত্র গোচরী চকারেত্যর্থঃ। কিছ তদ্য লিহ্নং পর্মেশরেয়া হরমেবেতি লিহ্নং বিশেষং ন অবৃদ্ধাতেতি তেদঃ। নমূ তদ্যা গ্রেজঃ কৃষ্ণ ইতি ন প্রাদিদ্ধ তত্তাহ্ বন্দোলা তাল্লেশা দলাতি দেবকৈয় স্থীভাবাৎ যে নামী নন্দভার্যায়া যশোলা দেবকীতি চ। অতঃ স্থামভূত্রসা দেবক্যা শৌরী কার্যেত্যালি পুরাণ্রচনাবগ্রতালিভ্রপ্তঃ। ক্যাধানমিদং ভাগব্তামৃত বৈষ্ণব্রোব্যানন্দ্রন্দাবনাদি সংমত্যৈবতি নোপেক্ষণীরং॥ ৪০॥

॥ * ইতি সারার্থদর্শিণাং হর্ষিণাং ভক্তচেতসাং। তৃতীয়ো দশমে ছবে সক্তঃ সক্তঃ স্তাং॥ * ॥

তনয়া গ্রহণ পূর্ব্বক পুনরায় গৃহে আগমন করিলেন॥ ৪১॥

অনস্তর দেবকীর শয়নে কন্যাটা রাখিয়া আপনার পদৰয়ে লোহ নিগড় বন্ধন পূর্বক পূর্ববৰ বন্ধ-নাবস্থায় রহিলেন ॥ ৪২ ॥

হে রাজন্! . নন্দপত্নী যশোদা যথন কন্যা প্রসৰ করেন তৎকালে কোন একটা উৎপন্ন হইল এতাবলাত্র কাহার বোধ হইয়াছিল, পরিপ্রান্তা ও মায়া ধারা অপহত স্মৃতি হওয়াতে তাহার চিহ্ন অর্থাৎ পুত্র কি কন্যা জানিতে পারেন নাই॥ ৪০॥

.॥ 🚁 ॥ ইতি প্রীদশমে তৃতীয় ॥ 🕸 ॥

ભ્ય

শ্ৰীশুক উবাচ॥

বহিরন্তঃপুরদারঃ দকাঃ পূর্ববদার্ভাঃ। ততো বালধ্বনিং শ্রুদ্বালাঃ দম্পিতাঃ॥ ১॥ তেতু ভূর্ণমূপব্রজ্য দেবক্যা গর্জদা তথ। আচশ্যুর্ভোজরাজায় যতুদ্গিঃ প্রতীক্ষতে॥ ২॥ দ তল্লাভূর্ণমূপায় কালোহয়মিতি বিহিলাঃ। দূতীগৃহ্মগাচ্ছীত্রং প্রস্থালামুক্তমূর্জ্জঃ। তমাহ প্রাতরং দেবী কুপণা করুণং দতী। সু্ধেয়েং তব কল্যাণ ব্রিয়ং মাহস্ক মেইদি।

श्रीभन्तवामी।

চতুর্থে চণ্ডিকাবাক্যমাকর্ণ্যাতিভয়াকুল:। হর্মান্তিভিহিতং মেনে কংসো বালাদি হিংসনং॥ ১॥ তং অষ্টমং জন্ম॥ ২॥

বৈষ্ণবতোষণী।

আবৃতা লগা বভূবুং স্বয়মেব। ততভদনন্তর্গেব বালভা বালজাতে ধ্ব নিং জাতমাত্রভা স্বভাবতো রোদন শব্দং। অতঃ সামান্যতো ন স্বীবং। গৃহপালা রক্ষিণঃ শ্লেষেণ কুকুরা ইব। স্বয়ক্ সাবধান মুদ্যতান্ত ত্যোখিতাঃ॥১॥

উপব্ৰঙ্গ্য তত্ৰ তেথামনধিকারেছপি সমীপে গন্ধা ভোজনাজায় তং বিজ্ঞাপয়িতুং॥ ২॥

কালঃ হস্তং সময়োহিয়ং কিস্বা সাক্ষামূ ভূরেয়মাগত ইতি। বিহবলো ভয়ব্যাকুলঃ। অতএব প্রাথালন্ ইভন্ততো নিপতন্ উত্তরাহে শীঘুং ভূগমিতি বা পাঠঃ॥

প্রাতরমিতি তং প্রতি তাদুশোকৌ যোগাত। তক্ত হুরাত্মতোক্তা করুণং যথাকাং। সভীতি তক্তা বৈরুব্যেন তক্ত সাহুগকাচিরাদেব নাশ: সম্চিত এবেতি ভাব:। দেবী স্বপুপ্রক গোপনং দিষ্ট্যৈব ময়া কুত্মিতান্তর্দোত্যানা প্রিয়সখ্যা যশোদায়া: কক্সকা বধ শঙ্ক্ষয়া কুপণা ছংথিতাচ সভী ৷ তব সুবা পুত্রবধ্ প্রবিষ্ঠীতি প্রথমং তাবলোভং জনস্তি। তদবজ্ঞায়াষ্ট্রমগর্প্তামাশক্ষাচ তামাচ্ছে মুদ্যতং প্রত্যাহ স্ত্রির মিতি অসমর্থানবধ্যাঞ্চেত্র্য:। তচ্চ তব যুক্তমেবেত্যাহ কল্যাণ হে ধার্মিকেতি যদ্বা হে আয়ুমন্ইতি মৃত্যুভ্মং নিবর্ত্যতি অপ্রমে গর্ত্তেংশিন্ অবলায়া এব উৎপত্তে: ইতি মৃত্যুভ্মং নিবর্ত্যতি॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

বালস্য বালকজাতে ধ্ব নি: 4 ১ ॥ ২ ॥

মম কালোয়ং জাত ইতি সু্যান্তবিষ্যৎ পুত্ৰস্য বধু ভবিষ্যতি। তদেব জানস্তমাহ। ক্রিয়মিতি দীনদীনবদিতি দৃষ্টাত্ত: নতু গৌণ-তোকি: শ্রীযশোদায়। নিজস্থী লাং সম্বিজে ভবজেতোরিত্যাদিবং সেহল স্বভাবস্থাচন ॥৩॥৪॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

মায়াবাক্যেন কংসদ্যামূতাপো দেবকী ক্ষমা। ছম'দ্রিভি ম'ব্রণাচ চতুর্থে কথ্যতে কথা॥ • ॥

বালধ্বনিং জাতমাত্র বালক রোদনশকং। গৃহপালা: খান ইব॥ ১॥

তদষ্টমং গর্ত্তক্র ॥ ২ ॥

কাল: বালকং হত্তমন্ত্ৰমেৰ সমন্ত্ৰ ইভি। যথা মন্ত্ৰু রিভি ভয়েন ॥

দেবী স্বপ্ত্রন্থ গোপিতভাদস্ত দেত্যাতমানা। স্থাঃ কল্পেয়মপি জীবন্ধিতি ক্বপণা সতী তৎপ্রতারণে কোবিদা। সূবা তব ভাবিনঃ প্রজ্ঞেয়ং বধ্ প্রবিষ্যতীতি বৃদ্ধা। তদপি বলাদাচ্ছিদ্য জিম্বন্ধং তমাহ দ্রিরং প্রশোরমবলা হে কল্যাণেতি দ্রীবধােথ পাপেন তবাকলাণং মাতবন্ধিতি ভাবঃ॥

চতুর্থ অধ্যায়ে চণ্ডিকা বাক্য শ্রাবণে কংসের অতিশয় ভয় এবং ছুর্মন্ত্রিদিগের কুমন্ত্রণায় বালকাদি হিংসায় প্রস্তুতি । ।।

শুক্লের কহিলেন রাজন্! বহাদেব পূর্ব্বিৎ নিগড় বন্ধ হইয়া বসিলে বহির্ভাগন্থ ও অভ্যন্তরত্থ সমুদায় পুরন্ধার পূর্ববিৎ স্বয়ং আবিদ্ধ হইল। তদনস্তর বালক ধানি শুনিয়া গৃহপাল সকল জাগিয়া উঠিল ॥ ১॥

এবং শীন্ত প্রন পূর্বক দেবকীর অন্তম পর জন্ম কংসের নিকট নিবেদন করিল; এ ছুরাজা উদ্বিধ্ন ইইয়া উহারই প্রতীক্ষা করিডেছিল ॥ ২ ॥

ষত এব প্রবণমাত্র সম্বর শয্যা হইতে গাত্রোখান করিল এবং এই বুকি আমার কাল, ইহা বিবে-

বহবো হিংসিতা ভ্রাতঃ শিশবঃ পাবকোপমাঃ। ত্বয়া দৈবনিস্ফেন পুব্রিকৈকা প্রদীয়তাং॥৩॥ নশ্বহং তেহ্যবরজা দীনা হতস্থতা প্রভো। দাতুমহ সি মন্দায়া অঙ্গ মে চরমাং প্রজাং॥৪॥ শ্রীশুক উবাচ॥

উপগুছাক্সজামেবং রুদন্ত্যা দীনদীনবং। যাচিতন্তাং বিনির্ভর্পে হন্তাদাচিচ্ছিদে থলঃ 🛭 ৫ ॥

बीधवचारी।

কালোমৃত্য়: ॥ ৩॥

অঙ্গ হে ভ্ৰাতঃ॥৪॥

দীনদীনবং দীনাদপি দীন ইব নতু তথা পুত্ৰস্যান্যতা নীতথাৎ সাচ যোগমাৰেতি ফাতথাং যাচিত্তাহপি থলঃ আচিচ্ছেদ আকুষ্য কথাহ॥ ৫॥

देवकवटायगी।

ভাতরিতি স্নেহং জনমতি পাবকবতেক্সন্থিন:। বহব ইতি নির্দয়তমুক্ত্রণ গদমানাহ দৈবেতি। একেতি গুঢ়োপালস্কং দৈল্ল:॥ ৩॥ কার্পণাথ সেহমুংপাদমন্ত্রী পুনরপি তথৈব প্রার্থতে। নম্বিতি নিশ্চয়ে হি যতঃ দীনা বন্ধনাগার বাসাদিনা। প্রতা হে আদেয় দানেপি সমর্থ। মন্দারৈ পুত্রভাগ্যহীনায়ে মে মহাং। ইমামিতি পাঠে ইমামপীত্যর্থঃ সদ্যোজাতাং কিঞ্চিদপি কর্জু মুক্ষমাং নতু অন্তমগর্ত্তাদিয়ং কল্পাবল্ল হন্তব্যা যতিশ্বমাং বার্দ্ধক্যেন অন্তমেনাপ্রভাপত্যোৎপত্তি সন্তাবনা নির্জেঃ॥ ৪॥

আত্মজামিতি বশোদর। সহাস্তা: সংখ্যনাভিন্নত্বং বিবক্ষরা অতএব দীনদীনবদিতি দীনদীনো যোজন শুদ্ধৎ কর্মধাররবছত্তর পদেবিত্যধিকারত্বন প্রকারেণ গুণ বচনক্ত ইতি স্থতেণ বিরুক্ত্যাহি দীনদীন: সিদ্ধাতি। জীতভীত ইব শীতমযুগ ইতি বং। মারা দিইজ্ঞানেপি স্নেহেন স্বভাবেন। জ্বুরে নীচে ২ধমে থল ইতি বিশ্বঃ॥ ৫॥

ক্রমসন্মর্ভ:

আত্মজামিতি ভিরাত্ম তয়ৈবোক্তং॥ ৫॥ ৬॥

औविश्वनाथठकव्छा ।

বছৰ ইতি। নিৰ্দায়ৰ মুক্তা শঙ্কশানাহ দৈবেতি মনৈবৈজদু বৃদ্ধং তব কো দোষ ইতি ভাবঃ প্ৰদীৱতামিত্যনেন স্বরাপি মাং শ্ন্য-ক্রোড়াং মাকুর্বিতি দৈলুং॥ ৩॥

অঙ্গ হে প্রতিঃ॥৪॥

এবমনেন প্রকারেণাত্মজাং স্কন্যামিবেত্যর্থ: । দীনদীনবৎ দীনাদপি দীনজন ইব নতু তথা তক্তাঃ স্থাপত্যস্থাভাবিৎ। তাং দেবকীং। আচিছিদে সাক্ষয় কগ্রাহ ॥ ৫॥

চনা করত বিহল হইল। তদনন্তর ইতস্ততঃ স্থালিত ও মৃক্তকেশ হইয়া দীবা দেবকীর সৃতিকা গৃহে দেবিয়া গোল। হে রাজন্! লোতাকে আগত দেবিয়া দীনা দেবকী সকরুণ বচনে কহিতে লাগি-লেন হে কল্যাণ! এটা তোমার সুষা অর্থাৎ তোমার পুত্রবধূ হইবে, ইহাকে মারিয়া স্ত্রী বধ করা উচিত হয় না। ভাই! তুমি দৈবপ্রেরিত হইয়া অগ্নি তুল্য অনেক শিশুর প্রাণবধ করিয়াছ, একটা কন্যা আমাকে দাও॥ ৩॥

প্রভো! আমি তোমার কনিষ্ঠা ভগিনী, সুকল সন্তান গুলি নিহত হওয়াতে নিতান্ত বিলা হই-যাছি। শেষের কন্যাটী এ অভাগিনীকে অসুগ্রহ করিয়া দিতে যোগ্য হয়েন॥৪॥

হে রাজন্! কন্সাদিকে আলিঙ্গন করিয়া দেবকী দীনা অপেকাও দীনার ন্যায় হইরা ঐ প্রকারে যাক্রা করিতে থাকিলেন, তথাপি ছ্রাত্মা কংদের দয়া হইল না। ভর্পনা করিয়া তাঁহার হন্ত হইতে কাড়িয়া লইল। ৫॥ তাং গৃহীত্বা চরণয়ো জাতমাত্রাং স্বস্থঃ স্থতাং। অপোধয়চ্ছিলাপৃষ্ঠে স্বার্থােম্যুলিত সৌহনঃ॥৬॥
দা তরস্তাৎ সমূৎপত্য দদ্যো দেব্যম্বরং গতা। অদৃশ্যতামুজা বিষ্ণোঃ সায়ুধান্ট মহাভুজা।
দিব্য প্রগন্থরালেপ রত্নাভরণ ভূষিতা। ধমুঃ শূলেষু চর্মাদি শব্দ চক্র গদাধরা।
দিদ্ধচারণ গন্ধবৈরিপ্সরঃ কিমরোরগৈঃ। উপাহতােরু বলিভিঃ স্থ্যমানেদমত্রবীৎ॥৭॥
কিং ময়া হতয়া মন্দ জাতঃ থলু তবাস্তর্ক্ৎ। যত্র কচিৎ পূর্বশক্র মাহিংসীঃ রূপণান্ রুথা॥৮॥

धी धत्रशामी।

অপোথয়ৎ বলেন চিক্ষেপ॥ ७॥

সদ্য এব দেৰী ভূদা॥ १॥

কপণানিতি অন্যান্ শিশুন হনিষ্যতীতি জ্ঞান্বা বাব্যতি। ক্বপণামিতি পাঠে মা মাং ক্নপণা॰ বুথাহহিংসীঃ হিংসিতবানসীতি। यहा

বৈষ্ণবৃতোবণী।

থলংমেব দর্শয়তি তামিতি জাতমাত্রাং গর্জ্জলাদি ক্লিয়ামিত্যর্থ:। তথাচ শ্রীহরিবংশে সা গর্জশয়নক্লিষ্টা গর্জায়্কিয়মূর্জজেতি ॥ ৬ ॥ সা তর্জতাদিতি ব্য়াকং। সদ্য: সমূপেত্যাধা ক্লিপামাণাপি বলাদ্র্জম্পুত্য। অত বিশেবো ভবিষোত্তরে। কংসাস্থরভোভমাঙ্গে পাদং দক্ষা গতা দিবমিতি। দেবী দিবারূপা সতী। অদৃশ্রত কংসাদিভিঃ সর্বৈধা। তচ্চ নিজোক্তে কংসশ্র বিশাসার্থং মহাভুজজেন মহাকারজ্ঞ বিভীবিকার্থং॥

সিক্ষেত্যাত্যপলক্ষণং॥ १॥

মন্দ্র হে অল্লব্রেন মরা হত্যা ইতি যদ্যহং হতাপ্যভবিষানিত্যর্থ:। যন্তবান্তং করিষাতি সুযুদ্ধ ক্রিচিলিচিত্য বন্ধু ননর্হে দেশে জাত ইত্যতো নয়াদ্য থং ন হল্পস ইত্যর্থ: সুতাবং ক ইত্যপেকায়ামাহ পূর্কাশক্রঃ পূর্ক ক্রমনি যন্ত্যাং হতবানিত্যর্থ:। ক্রপণাং দেবকীং

ক্রমস্পর্ভ:

বি**ষ্ণোরন্থকৈতি চ**॥ ৭ ॥

হত্যা যদাহং হতাপ্তভবিষ্ঠানিতার্থ:॥৮।৯।,১০।১১,॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰৱৰ্তী।

অপোথয়ৎ বলেন চিকেপ॥ ৬॥

সমুংপত্য অধঃক্ষিপ্যবাণাপি বলাছ্ৎপ্লুত্য। কংসাস্থ্যসোত্তমাঙ্গে পাদং দৰা গতাদিবমিতি ভবিষ্যোত্তবং। অনুজ্ঞা বিষ্ণোবিতি রুঞ্চন্য বশোদাগর্জ্জবং স্চুমুতি। সার্থাষ্টেত্যাদি কংসন্য ভীষ্ণার্থং। স্থবাচি বিশ্বাসোৎপত্যর্থক॥ ৭ ॥

মরা হতরা কিমিতি বদাহং হতাপাভবিষামিতার্থ: বত্র কচিং বক্ত মনর্হে দেশে ইতার্থ:। ক্লপণাং দেবকীং ক্লপণানিতি পাঠে অভান্ শিশূন্॥৮॥

এবং জাতমাত্র সেই ভগিনীতনয়ার পা ধরিয়া বলপূর্বক শিলা পৃষ্ঠে নিক্ষেপ করিল। সে স্বার্থ নিমিত্ত সৌহল্য উন্মালত করিয়া ফেলিল॥৬॥

সে যাহা হউক, প্রক্রিপ্তা হইবামাত্র সেই কন্যা কংসের হস্ত হইতে উর্দ্ধে গিয়া উঠিলেন এনং
তংকণাৎ দেবী হইয়া আকাশে গমন করিলেন। হে রাজন্! তদনন্তর সকলে দেখিতে পাইল
বিষ্ণুর অমুন্ধা সেই দেবী সদান্ত অউভুজা হইয়াছেন এবং দিব্য বসন ভূষণ ও মাল্যালকারে শোভা
পাইতেছেন, তাঁহার অই হস্তে শূল, ধকুঃ, বাণ, থড়গা, চর্মা, শন্মা, চক্র ও গদা দেদীপ্যমান, আর সিদ্ধ,
চারণ, গদ্ধবি, অশারা, কিন্তর এবং উরগাণ ভূরি ২ উপহার আহরণ ক্রিয়া তাঁহার ভব করিতেছেন।
হে ভারত! ঐ দেবী আকাশ হইতে উচ্চস্বরে কংসকে সম্মোধিয়া কহিলেন॥ ৭॥

অরে মৃঢ়! আমাকে বধ করিলে কি হইবে, তোর পূর্ব শত্রু তোর অস্তক হইয়া কোনস্থানে

ইতি প্রভাষ্য তং দেবী মায়া ভগবতী ভূবি। বহু নাম নিকেতেরু বহু নামা বস্থুবহু ॥ ৯ ॥ তয়াভিহিতমাকর্ণ্য কংসঃ পরম বিশ্বিতঃ। দেবকীং বহুদেবঞ্চ বিমৃচ্য প্রশ্রিতাহত্তবীৎ ॥ ১০ ॥ অহো ভগিনাহো ভাম ময়া বাং বত পাপানা। পুরুষাদ ইবাপতাং স্বহুদোহিংসিতাঃ স্থতাঃ। সমহং ত্যক্তকারণ্যস্ত্যক্তজ্ঞাতি স্হৃৎ ধলঃ। কানু লোকান্ গমিষ্যামি ত্রহ্মাহেব মৃতঃ শ্বসন্।

শ্রীধরস্বামী।

क्रुपनाः (मवकीः॥ ৮॥

বছনামস্থ নিকেতেবু বারাণস্যাদি স্থানেবু॥ ৯॥ প্রম বিশ্বিতঃ কথং দৈবী বাক্ অনুতা জাতেতি॥ ১০॥

देवकवट्डायनो ।

বন্ধনাদিনা মাহিংদীঃ পতি সহিতামেনাং বন্ধনাদেয়াচয় ধনাদিকঞ্চ প্রত্যুপন্ধেত্যর্থঃ । কুপণানিতি পাঠে তন্ত্রম হস্তান্ বালকান্ তৌ তং স্বাধিনক্তার্থঃ ॥ ৮ ॥

প্রভাষ্য আদিশ্র ভগরতি পূর্ব্বোদিষ্ঠ ভগরৎ প্রসাদেনাধিকৈ ধর্যযুক্তা সভী বহুনামেতি নানা নামস্থ নিকেতেরু নানা নামথেন পূজাভূদিত্যর্থ:। হ হর্ষে ॥ ১॥

বিমৃত্য কারাগারালিংসার্য্য বি শব্দেন বন্ধিসকোচাচ । নিগড়াঝোচনমগ্রে বক্ষাতি । দেবক্যাং প্রাথিমোচনং স্ত্রীণামেব তলবুক্তে: বিশেষতে। ভগিনীঘাৎ তহা ছংখ বিশেষচে । অহাতৈঃ । যথা তয়াভিহিতমাকর্ণ্য তাঞ্চ তঞ্চ বিমৃত্য নদ্রঃ সন্ধ্রবীৎ কীদৃশো ভূখা কক্সারা আক্ষিক বৈত্রাদিভি স্তাদৃশ বাকৈস্চাত্যস্ত বিশ্বিতো ভূষেতি ॥ ১ • ॥

আহো দ্যমার্তি সম্বোধনে। বত থেলে। পুরুষালা হি পুরা স্থাপত্যাদা আসন্ তত্ত্রকাং রাক্ষ্ণীং স্থাপত্যমন্তীং দৃই। দেব্যা রূপ-যোকং ইতঃ প্রভৃতি রাক্ষ্যবালা জন্মত এব প্রবৃদ্ধা ভবস্থিতি॥ •

ত্যক্তকাৰুণ্য: বালানাং ভাগিনেয়ানাং নির্দোষাণাং বহুনাং রুখা মারণাং ইতি ধর্মোনাপেন্ধিত এব। লোকশ্চ নাপেন্ধিত ইত্যাহ ত্যকা জ্ঞাতরা দেৰকাদর: স্বহদশ্চ বন্ধবো ভবদাদরো ধেন সং অতএব খলং। হু বিতর্কে কাঁলোকান্ বৈ ইতি পাঠে বৈ নিশ্চরেমৃতঃ সন্ লোকান্ গমিষ্যামি ব্যতিরেকে দৃষ্টাস্তোহয়ং ব্রহ্মহা যথা কাঁশিচল্লোকান্ ন গছাভি ত্বচ্চ কান্ লোকান্ গমিষ্যামি ন কানপি
তস্য প্রসিদ্ধৈর্মহারোরবাদিভিঃ প্রায়শ্ভিত্ত পর্যাপ্তি র্নত্ মমেতি। মম স্বস্তাস্তেভ্যোপি হুর্গতর ইত্যর্থ:। হে স্বসরিতি দৈত্যাং অসামিতি
পাঠে ইহ লোকেহপি জীবন্ধত ইত্যর্থ:॥

🕮 বিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

বছ নাম নিকেতের বারাণস্যাদি ছলের ॥ २ ॥ পরম বিশ্বিতঃ কথং মাজুষ্যা দেবক্যা গর্বে জুর্গাদেবী জাতা কথিং বা দৈবী বাগন্তাভূদিতি ॥ ১০ ॥

असियाटकन, जुडे जात जनाना मीन वालकिमगटक इथा वर कतिम् ना ॥ ৮॥

ঐ প্রকার কহিয়া ভগবতী সেই দেবী ভূমগুল মধ্যে বারাণসী প্রভৃতি বহু বহু নামধারি নিকেতনে অধিষ্ঠিতা হইয়া বহুনামা হইলেন ॥ ২ ॥

পরস্তু তাঁহার বাক্য শুনিয়া কংস য**ংপরোনান্তি বিশ্মিত হইল, কারণ তাহার মনে হইল এ কি !.** দৈববাক্য অনৃত হইল ! যাহা হউক, সে তদন্তর দেবকী ও বস্থদেবকে বন্ধন হইতে মোচন করিয়া দিল এবং বিনয়াবনত হইয়া কহিতে লাগিল ॥ ১০ ॥

অগো ভগিনি! অহে ভগিনীপতি! আৰি বড় পাপাত্মা, রক্ষিদ যেমন স্বীয় অপত্য হিংসা করে তাহার ত্যায় তোমাদের হুত দকল বিৰক্ষ করিয়াহি, ইহাতে আমার কারুণ্য ত্যাগ হইয়াছে এবং আপনি জ্ঞাতি হুহুদ্ ত্যাগ করিয়াছি, আমি অভিশয় থল, ব্রহ্মহার সদৃশ মরণের পর কোন্ লোকে দৈবমপ্যনৃতং ৰক্তি ন মৰ্ত্যা এব কেবলং। যদ্ভিস্ঞাদহং পাপঃ স্বস্থ নিছতবান্ শিশূন্॥ ১১॥ মাশোচতং মহাভাগাবাস্থজান্ স্কৃতং ভূজঃ। জন্তবা ন সদৈকত্র দৈবাধীনাঃ সহাসতে॥ ১২॥ ভূবি ভৌমানি ভূতানি যথা যান্ত্যপ্যান্তিচ। নায়মান্তা তথৈতেরু বিপর্য্যেতি যথৈব ভূঃ॥ ১৩॥

व्यिथत्रवासी।

হে ভাষ ভগিনীভর্ঠ: পুক্ষাদ্রো যথা স্বাপ্ত্যমপি হিনন্তি তহৎ ॥ ১১ ॥

হে মহাভাগৌ সকতং ভূজ: স্বায়ক কর্ম ভ্রোক্ন কিঞ্জন্তবং প্রাণিনঃ সদা নাসতে কিম্বরকালমের তত্রাশি একর নাসতে কিছ বিষ্ক্রান্তে যতো দৈবাধীনা: ॥ ১২ ॥

সদা নামত ইতি যহক্তং জন্ম মরণাদি তদপি দেহানামের নাম্মন ইত্যাহ ভূবীতি। ভূতানি দেহা এব আয়াত্তি অপ্যান্তিচ ভবন্তি ন ভবন্তিচেত্যথ: দুখা ভূবি তোমানি ঘটাদীনি তমং। এতেবু ভূতেবু জন্মাদিভি বিক্রিয়লাণেছপি অধুমপ্রোক্ষত্যাভিজ্ঞায়মান আত্ম

. বৈষ্ণবতোষণী।

ন কেবলমত্র মুদ্রেব দোষঃ কিন্তু দেরানামেবেত্যাহ দৈবমিতি দেবতা। সত্যমেব দেবা অনৃতং মহুষ্যা ইতি শুতিবিরো-ধোহপি জাত ইত্যার্থঃ। এবেতি লোকোক্তানধিকং। পাপ ইতি কথমন্যথা তিছিল্লভঃ ভাদিতি ভাবঃ॥ ১১॥

মহাভাগৌ হে,পরম বিবেকিনৌ অন্তবঃ সক্ষএব জীবা নতু কেচিদিত্যর্থঃ। একক একক্মিন স্থানে নাসতে তত্ত্বাপি সহ সংভূষ প্র-স্পরমাসজ্য নাসতে মাইসর্য্যাদি সম্ভবাদিত্যর্থঃ। কিন্তু পৃথক্ স্থাক্ স্থাক্ কাম্মিকিত লোকাদৌ তিষ্ঠতীত্যর্থঃ॥ ১২॥

অপবাস্তি নগুন্তি ভূবীতি তত্র বানি তানি সর্বাণ্যেবেত্যর্থ:। যথা ভূবি বর্ত্তমানানীতি ভৌমানাং ব্যৱনাশয়োঃ সর্ব্ব প্রত্যক্ষতোক্তা। এবং দার্চান্তিকেহলি জ্বেংন বিপর্ব্যেত্ জন্মাদি বিক্রিসাং নাপ্নোতীতি। তত্র প্রীবৈষ্ণব মত্তে ভূব আপ্রয়ম্বাংশ এব দৃষ্টাম্বত্থং ন কারণত্থাংশে পীতি জ্বেয়ং। ঈশরেহিপি মাংসর্ব্যেণ কংসাদীনাং ত্বৈত্বাদান্তর প্রায়ম্বাং তদংশেপীতি বা। তত্ত্বৈর জীবাদ্ধনো ব্যাপক্ত্যাংশে

ক্রেমসন্দর্ভ:

জন্মবং সদা নাসতে ত্রাপ্যেক্সিন্ হানে নাসতে সহ সংভ্যাপি নাসত ইত্যর্থ: ॥ ১২ ॥ ভূবীতি দৃশ্যমানানীত্যর্থ: । জীবাম্মন আশ্রম এব ভূবো দুটাল্লং ॥ ১৩ ॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

ভাম হে ভগিনীপতে। পুরুষাদো রাক্ষ্যো যথা স্বাপত্যং হিনন্তি তম্বং ॥ ১১ ॥

ভূজ ইতি কিবন্তং স্কৃতমিতি বঠাডাব আৰ্ব:। মহাতাগাৰিতি হুৰ্গাদেব্যেৰ আৰ্ব্যোৱাম্মজাভূৎ কিমন্যৈ: স্টেড: স্কৃত ভূগ্ভিবিতি বিমৰ্শেন মাশোচতং। কিঞ্চ বিমৰ্শান্তর্মপ্যাহ জন্তব ইত্যাদি॥ ১২॥

আন্মানাম্ববিবেকেনাপি মাশোচতমিত্যাই ভূবি ভূমো আপ্রিতানি ভৌমানি ঘটাদীনি আরান্তি জারতে অপবাতি নশুন্তি চ। যথা ভথৈব ভূতানি দেহা এব জারতে নশুন্তি চ। তথা এতের ভূতের্ দেহের বিপরিষৎস্থ জ্মাদ্যনেকবিকারং প্রাপ্নুবৎস্বপি অয়মপরোক্ষ তরা জায়মান আত্মা ন বিপর্ব্যেতি জ্মাদি বিকাররপং বিপর্যায়ং নাপ্নোতি একরপ এব বর্তত ইত্যর্থঃ। যথৈব ভূ ন বিপর্ব্যেতি

যাব বলিতে পারি না। কি আশ্চর্য্য ! কেবল মানুষেই মিধ্যা বলে এমত নুয়, দেবতারাও অনৃত বলিয়া থাকেন, দৈব বাক্য বিশাস করিয়াই ত আমি ভগিনীর শিশু সম্ভানদিগকে নিহত করিয়াছি॥ ১১॥

যাহ। হউক, কোমর। মহাভাগ, আর সন্তানদিগের নিমিত্ত শোক করিও না, তাহার। সকৃত কর্মন ভোগী অর্থাৎ স্ব স্থারক কর্ম ভোগ করিয়াছে, অপর সকল প্রাণীই দৈবাধীন, এ কারণ সর্বাদা একত্র থাকিতে পার না, অত্যয়কাল যাত্র থাকে ॥ ১২॥

যক্রপ পৃথিনীতে পার্থিব ঘটাদি উৎপদ হয়, পরে ভালিয়া বায়, ভাহার ন্যায় দেহ সকল জন্ম গ্রহণ করে এবং পরে ধ্বংস প্রাপ্ত হয়। অপদ্ধ যজ্ঞপ পার্থিব ঘটাদি বিক্রিয়মাণ হইলেও পৃথিবী বিক্লভা হয় না, তেমনি জন্মাদি ছারা দেহ সকলের বিকার হইলেও প্রত্যক্ষ পরিজ্ঞেয়মান এই আ্যা যথানেবংবিদাং ভেদো যত আত্ম বিপর্য্যয়ঃ। দেহযোগ বিয়োগৌচ সংস্থতি ন নিবর্ত্ততে ॥ ১৪॥ তস্মান্তদ্রে স্বতনয়াময়া ব্যাপাদিতান#প। মাসুশোচ যতঃ সর্বাঃ স্বকৃতং বিন্দতেইবশঃ॥ ১৫॥

ন বিপর্বোটিত বিপর্যাবং ন প্রাপ্রোতি এক রূপ এব বর্ত্তই তার্থ:। ভৌমেরু বিক্রিয়মাণেরু যথা ভূস্তথেতি ॥ ২৩ ॥

এবং বিচার্য্যমাণে সতি ন শোকাদ্যবসরঃ অজানতাম্ভ ন নিবর্ত্তত ইত্যাহ যথেতি যথা যথাবৎ অনেবং বিদাং এবমজানতাং আত্ম বিপর্যায়ঃ দেহে আত্মবৃদ্ধি র্ভবতি যতো বিপর্যায়াং ভেদো ভবতি দেহাহক্ষারেণ**্ আত্মনি পরিচ্ছিন্নে সতি ইদ**মহক্ষারাম্পদং ভিন্নং ভবতি যতো ভেদাৎ পুলাদি দেহৈযোঁগশুচ বিষয়োগশ্চ ততঃ সংস্থৃতি স্থুথ ছংথে ইতি যাবদজানং ন নিবর্ত্ত ইত্যর্থ: । ১৪ ॥

এবমুক্ত প্রকারেণ ন তে তব তন্যাঃ অহঞ্ তান্ ন ঘাতিত্বান্ তথাপাজ্ঞানদৃষ্ঠা স্বতনয়ান্ ময়া ব্যাপাদিভানপি মানুশোচেতি

বা। তদাচায়ান্তীত্যাদিকং যথা ধাত্বমেব বিপর্য্যেতি ভ্রমতীত্যর্থ:॥ ১৩॥

আত্মন এবং দেহাদ্বৈশক্ষণ্যমজ্ঞানতাং দেহযোগ বিয়োগোহণীতি পাঠো বহুত্র সচ সর্ব্বোপি ছন্দো বিভার্যয়কবন্তবতীতি ন্যায়েন উকারোহজহম্বদীর্ঘ প্লুত ইতি বং। অধৈত মতে পূর্ব্বোক্ত প্রকারেণাস্মজ্ঞানান্যথাত্বং ততো ভেদকর্মনং ততোভিয়ে ২ধ্যাস: ততো দেহযোগ বিয়োগো ততঃ সংস্তিশ্চ ন নিবৰ্ত্ত ইতি চ স্যাৎ অনৈবং বিদামিতি বছবচন পাঠ এব সর্ব্ধ সন্মতঃ। অত টাকায়ামি-ত্যেতং পূর্ব্বেক্তিং সর্ববং যাবদজ্ঞানং তাব্দ্ধনিবর্ত্তত ইতি ব্যাথ্যেরং ॥ ১৪ ॥

ভ্রে হে সদু দ্ধিমতীতি তামধিক শোকাং বিশেষতঃ সম্বোধয়তি। যত্ত বিল্মতে ভুঙ্ ক্তেহ্বশঃ অনিচ্ছন্নপীতার্থঃ.॥ ১৫॥

নতু কারণবেহপি ৰপা বেন হেতুনা। এবমাত্মজনতানতা ভেদস্তস্মাদন্যত্র তহুপাধৌ দৃষ্টি ভ্ৰতি। বতো হেতে। স্তবৈৰাত্মভাবনা ভবতীতাদি। যত ইতি যতংশচতার্থঃ॥১৪॥১৫॥

ঐবিশ্বনাথচক্রবন্তা।

ভৌমেষ্ ঘটা দিম্বনেক বিপর্যারং প্রাপ্নবংম্বপীতার্থঃ॥ ১৩॥

অনেবস্থিদ এব আত্মভব্মজানত: শরীরমেবাত্মত্বেন জানত ইতার্থঃ। যথাবথাবদেব প্রথমং ভেদো ভবতি পৃথক্ পৃথক্ শবীরা-ণোব পৃথকু পৃথপান্ধান ইতি ভেদজানং ভবতীতার্থঃ যতো ভেদাদেব আত্মনো বিপর্যায়ঃ জন্মাদি বিকাররূপ বিপর্যায় প্রাপ্তি:। দেহজন্মধ্যণাভাগমেবাত্মা জ্বীতোমূত ইতি জ্ঞানং ভ্ৰতীতাৰ্থ:। ততক দেহৈবেৰ পুত্ৰাদিভি ৰ্যোগঃ স্থথকারণং বিষোধে ত্রুথকারণঞ্চ ইরমেন সংস্তি:॥ ১৪॥

ত্ৰণাৰু দেহাৰামৰামুখাং ত্ৰুষ বুছা। তান্ বৃহিদ্'টা। ময়া হতাৰপি মায়শোচেতাৰ্থঃ। ময়া পঞ্ভূতাত্মক। দেহা এব হতা ইতাতো ম্যাপি দোষ দৃষ্টি ন কাৰ্য্যেতি ভাবঃ। মনৈৰমাত্মতত্বজ্ঞানং নাঞীতি চেৎ তদুপি মানুলোচেত্যাই যুক্ত ইত্যাদি অজ্ঞানাশ্ৰয়ে কৰ্মবাদে

বিপর্যায় প্রাপ্ত হন না, সর্ব্বদূা এক রূপই থাকেন॥ ১৩॥ :

ভিগিনি! এইরূপ বিচার ক্রিলে শোকাদির সম্ভাবনা মাত্র নাই, যে দকল ব্যক্তি এই প্রকার যথাবং না জানে তাহাদিগের আত্মবিপর্যায় অর্থাৎ দেহে আত্ম বুদ্ধি হয়। বিপর্যায় হইতেই ভেদ জন্ম অর্থাৎ আত্মা পরিচ্ছন হইয়া অহকারাস্পাদ ভিন্ন হয়। সেই ভেদ হইতে পুজ্ঞাদির দেহ সহ যোগ ও বিয়োগ হয়। তাহাতেই সংক্ষতি অর্থাৎ স্থ ছুঃখ ইইয়া থাকে। সেই সংসার যাবৎ সজ্ঞান থাকিবে ভাবৎ নিবর্ত হইবে না 🎩 ১৪॥

অতএব হে ভুদ্রে! যে সকল শিশু গিয়াছে যদিও তাহারা বস্তুত তোমার ভনয় নয় এবং আমিও 🍕 বস্তুতঃ তাহাদিগকে নিহত করি নাই, তথাপি অজ্ঞান দৃষ্টিতে তুমি তাহাদিগকে স্বীয় তনয় জানিয়া

যাবন্ধতোহন্মি হস্তান্মীত্যাত্মানং মন্যতেহস্বদৃক্। তাবত্তদভিমান্যজ্ঞো বাধ্যবাধকতামিয়াৎ॥ ১৬॥ ক্ষমধ্বং মন্ দৌরাত্মং সাধবো বন্ধুবৎসলাঃ। ইত্যুক্ত্বাশ্রুমুখঃ পাদে শ্রালঃ স্বস্রোরথাগ্রহীৎ॥১৭

बीक्ष्यामी।

দাব্যতি তথাদিতি। অজ্ঞানাশ্রমেব কর্ম বাদমাহ যত ইতি॥ ১৫॥

কথং তহি এপোনাৰ হত্ত ত্বজতন্ত প্ৰাথশ্চিত প্ৰবৰণং অজ্ঞান মূলমেবেত্যাহ যাবদিতি। অস্বদৃক্ দেহাভিমানীতি তদ্ভিমানী তম্ম দেহল হননমান্ম ভিমন্তমান ইত্যুগ্ন ১৬॥

স্থানঃ কংসং স্বয়োরিতি স্বস্পকেন দিবচনাত্বপপত্তাা মিপুন গণ দারা মিপুন লক্ষণয়া স্বস্থ তংগত্যোরভিধানং নিঙ্গসমবার স্থাব্যন প্রোণভূত উপদধাতীতি বৎ দেবকী বন্ধদেবয়োঃ প্রত্যেকং পাদমগ্রহীদিতার্থঃ। স্থানশব্দেন বা কথঞিদ্বস্থদেবাভিধানং ॥ ১৭ ॥

देवस्ववद्यावनी।

্ অজ্ঞ স্বজ্ঞানহীন:। অরং সর্কাত্রেব হেতু:। অস্থাতি:। যথা নৰেবং জানরপি স্বং কিমিতি মরণাধিতেবি কিস্বা তান্ হতবানসি স্বাস্থ্যবাভাবাদিত্যাই যাবদিতি স্বদৃক্ শাস্ত্রদৃষ্ঠা আত্মতহজ্ঞোহপি হতপ্রায়োহন্দি অতএব তান্ হনিব্যামীত্যেবমভিমানং কুরুতে যতেহিজ্ঞ: স্বাস্থভব রহিত:॥১৬॥

নৰশাক্ষাপি স্বাস্কৃতবো নাজীতি চেত্তথাপি মদপরাধ্য ক্ষত্তব্য ইত্যাহ ক্ষমধ্বনিতি বছরং দেবকাদ্যপেক্ষয়া যতো যুয়ং সাধবো বজু বংসলাশ্য দীনেতি পাঠে ক্ষমার্থনায়াদৈন্যং স্বচয়তি সাধবো দীনবংসলা ভবন্তীতার্থঃ। অথানস্করং, সদ্যো বদরেবাগ্রহীদিতার্থঃ। অন্তর্ত্তঃ। তত্র মিথুনগুনো মাতৃ পিতৃ প্রভৃতিকঃ প্রাণভৃত্তবেদন তন্মন্ত্র সংস্কৃতেইকোচ্যতে বছর্ত্বান্তপপত্তাচ তদ্যাপাতিনোাহিপ গুন্ত ইতি। বাসরীভাস্য সকার পক্ষমাপ্রিত্যাজহল্লকায়া ব্যাথাতিং। অনচিচেত্যস্য দ্বিস্ক্ষমাপ্রিত্য জ্বল্লকায়া ব্যাধ্যে

জ্মস**ন্দর্ভঃ**

কথং তহি তব মোহ স্তত্রাহ যাবদিতি। তহি নামাকং কথং ভবেং॥ ১৬॥ ত্রাহ ক্ষমধ্যতিত বদ্বংস্থাঃ তেবামপরাধগ্রাহকা ইতার্থঃ। দীনেতি পাঠঃ স্থামঃ॥ ১৭॥

श्रीविधनाथहक्रवर्छी ।

প্যেবং বিচারেণ ন শোকাবকাশ ইতি ভাব:॥ ১৫॥

মম সূত্তংপুত্র হস্তৃত্বেৰ তাবলাভি জ্ঞানিতাদিত্যাই। যাবদিতি অস্তদৃক্ ন স্থমান্ত্রানং পশ্যতি কিন্তু দেহমেৰ পশ্যতিতেইংজ্ঞা। তেন মম দেহাভিদানাভাবাং। হত্তাশি স ইমান্ লোকান্ন ২াভ নানিবন্ধাত ইতি বচনাল ত্বপুত্র হস্তৃত্ব নাপি বন্ধ ছি। এ ভাবঃ ॥ ১৬॥

তদিপি ময়ি পুত্রস্ত্রমারোপ্যাধিকং চেজোদিবি তহি শিতান ংছই এব বৃদ্ধি পূর্বকং পাণ মকরবমেব তথা নিঙ্গতি বৃদ্ধিং ইপৈ-বেতাাহ ক্ষমব্যাতি। শালা কংসা অস্ত্রোরিতি দিবচনাত্রপণত্তা অস্থপেনে অস্থতি ল'ক্যতে ইত্যেকঃ অস্থপেদা লক্ষকঃ অন্যোবাচকঃ। তরোরেকশেষাং অস্ত্রোরিহদেব দেবক্যোঃ ানেন প্রত্যেকং পাদমগ্রীদিত্যর্থঃ॥১৭॥

আমা কর্তৃক নিহত হইলেও শোক করিতে বোগ্য হইও না, যে হেতু সকল ব্যক্তি গবশ হইয়া সক্ত কর্ম প্রাপ্ত হইয়া থাকে॥ ১৫॥

যদি বল জ্ঞান দৃষ্টিতে যদ্যপি কেই হন্তা অথবা হত হয় না তবে প্রাক্ষণাদি ববে প্রায়শ্চিত্ত প্রত হয় কেন! উদ্ভির তাহাও অজ্ঞান মূলই জানিবে, ফলতঃ দেহাতিমানী পুরুষ যাবৎ পর্য্যন্ত আমি হতা, অথবা আমি হত হইলাম এইরপ আপেনাকে বোধ করে তাবৎ পর্যান্ত দেহের হনন আয়াতে কল্পনা করিয়া দেই অজ্ঞ ব্যক্তি বাধ্য ও বাধক ভাব প্রাপ্ত হয়॥ ১৬॥

অতএব তোমরা সাধু ও দীনবংগল, আমার দৌরাষ্ম্য ক্ষমা কর। ছে রাজন্ ! কংস এইরূপ কহিয়া অঞ্চমুখে ভগিনী ও ভগিনীপতির চরণ গ্রহণ করিল ॥ ১৭॥ নোক্ষয়ামাস নিগড়াৰিঅৰঃ কন্যকা গিরা। দেবকীং বস্তুদেবঞ্চ দর্শয়ন্নাত্মসোহনং।
ভ্রাত্যুং সমস্তপ্তস্ম কান্ত্ব। রোষঞ্চ দেবকী। ব্যস্তজ্বস্তুদেবশ্চ প্রহস্ত তমুবাচহ।
এবমেতন্মহারাজ যথা বদসি দেহিনাং। অজ্ঞান প্রভবাহংধীঃ স্ব পরেতি ভিদা যতঃ॥ ১৮॥
শোক হর্ষ ভয় দ্বেষ লোভমোহ মদাস্থিতাঃ। মিথোন্নস্তঃন পশ্যস্তি ভাবৈ ভাবং পৃথগদৃশঃ॥১৯॥
কংস এবং প্রসন্ধাভ্যাং বিজ্ঞানং প্রতিভাষ্তিঃ। দেবকী বস্থদেবাভ্যামসুক্তাতোহবিশাদাহং।

শ্রীধরস্বামী।

আত্মসোহদং প্রিয়বাদাদিনা দর্শয়ন্॥ ১৮॥

স্ব পর ভেদ দর্শনে কিং ভবতি তদাহ শোক ইতি। ভাবৈরেব নিমিত্তভূতৈ মিধো ভাবান্ মুডং ভাবমীশ্বরং পৃথদে শক্তে ন প্রান্তি কিস্বহুমেব হস্তা হতক্চেতি মহান্তে ইত্যর্থ: ॥ ১৯ ॥

বিশ্ৰন্ধং যথা ভবতি ॥ ২০ ॥

देवस्थवरकार्यु ।

নিগড়াল্লোহশৃত্থলাৎ তদা তং কর্ত্তয়ামাদেত্যর্থ:॥

আহুস্তত্ত্বচ সম্পাহতপ্রদ্য ক্ষাঝা দৌরাঝাং সোচ্ব রোধং চকারাচ্ছোকঞ্চ তত্যান্ত। বস্থদেবস্ত হ ক্ট্রম্বাচ। প্রহস্যেতি তদ্যাপি তাদৃশোক্ষে:॥

এবন্মক্রদিতি ময়েদং পূর্বনেবাক্তং ভবতৈব ন মন্যত ইতি ভাবং। হে মহারাজেতি শাস্ত্রজ্ঞানং তায় ঘটতৈবেতি ব্যঞ্জিতং মহাভাগেতি পাঠে তথৈবাথং। পক্ষে ন রাজত ইতি অরাজঃ হে মহারাজ হে অত্যস্তাশোভমান অমঙ্গল সান্নিধ্যাদিতি ভাবং। তথা মহান্ অভাগঃ অভাগঙ্গ মহাত্র প্রথম হর্ভগ ইতি। দেহীনামহংধীঃ ত্রাহং ভোকা কর্তা ইত্যাদি নাতর্জ্ঞান প্রভবা যতোহহংধিয়: ॥১৮ আইকেই ক্রেপ্তে স্থাপ্ত স্থাপ্ত

ভাবৈত্ তৈঃ পৃথক্ দৃশঃ বহিদ্ প্রিয়:। অভাতৈঃ। তত্র বস্তুত ঈশ্বর এব হস্তা ন দেহো নাজাবা হত চ দেহ এব নাজ্যেত্যর্থঃ। মিথো নিমিত্তত্তিরিতি যোজ্যং মিথোম্মন্তমিতি তদিধা ন হন্তং সাক্ষাদবতীর্ণমিপি তং তদিধা ন পারতীতি শ্লেধার্থান্চ॥ ১৯॥

এবং তথাক্যান্নমোদনেন স্বসিদ্ধান্ত নিরূপণেনচ বিশ্রন্ধং কংসস্য বিশ্বাসজনকং যথা স্যাৎ বিভদ্ধনিতি পাঠে অকপটং যথাস্যান্তথা প্রতিভাষিতো অনুজ্ঞাতশ্চ সন ॥

ক্রমসন্দর্ভঃ।

নিগড়াৎ লৌহ শৃঙ্খলতঃ তং কর্ত্তয়িত্বাপীত্যর্থঃ পূর্বং বন্ধনাগারান্মোচনং ক্রেয়ং। ক্রান্ধা ক্ষ ামবলম্বা॥ ১৮॥ ভাবৈ ভূ তৈনিথে। নিমিত্তভূতৈঃ পৃথক্ দৃশো বহিদ্ভিয়ঃ॥ ১৯। ২০। ২১। ২২। ২৩। ২৪॥

ঐবিশ্বনাথচক্রবতা।

নিগড়াৎ লোহশৃত্বলত: ॥

ভ্রাত্রপরাধং **কান্তা** রোধং শোকঞ।

যতো ২হং ধিয় এব হেতোরয়ং স্বঃ অয়ং পর ইতি ভিদা দহ স্থপেতি দমাদঃ ॥ ১৮ ॥

মিথঃ পরম্পরং ভাবৈ নূ পব্যান্ত রোগাদিভি ভাবং মহয় গবাখাদিকং মন্তমীখরমিতি শেষ। পৃথক শো বহিদৃ ইয়ালা ১৯॥

এবং কন্যার বাক্যে বিশ্বস্ত হইয়া প্রিয় বচনাদি দারা আত্মসোহার প্রদর্শন করত তাঁহাদিগকে নিগড় হইতে মুক্ত করিয়া দ্বিল। বহুদেবও হাস্থ করিয়া তাহাকে বলিলেন হে মহারাজ! যে প্রকার কহিতেছ এই রূপই বটে, যে হেতু দেহিদিগের অহং বৃদ্ধি অজ্ঞান প্রভবা, সেই অহং বৃদ্ধি হৃইতেই ইনি আপন, ইনি পর, এতজ্ঞপ ভেদ দর্শন হয়॥ ১৮॥

ভেদদর্শী দেহিগণ শোক হর্ষ লোভ মোহ ভয় দ্বেষ এবং মদে পরিপূর্ণ, স্নতরাং নিমিন্ত ভূত পদার্থ সকল দারাই পদার্থ সকলকে বিনষ্ট করেন যে ঈশর, তাহাকে দেখিতে পাম না॥ ১৯॥

শুকদেব কহিলেন হে রাজন্! বহুদেব ও দেবকী প্রদান হইয়া, যে প্রকারে বিশাস হয় সেইরূপ করিয়া এই মতে সম্ভাষণ করিলে, কংস তাঁহাদের কর্তৃক অনুজ্ঞাত হইয়া নিজ নিকেতনে প্রবেশ তক্ষাং রাজ্যাং ব্যতীতায়াং কংস আছুয় মস্ত্রিণঃ। তেড্য আচফ তৎ সর্বাং যত্নকং যোগনিদ্রমা॥২০ আকর্ণ্য ভর্ত্ত্ব্ গদিতং তমুচুর্দেবশত্রবাঃ। দেবান্ প্রতিক্তামধা দৈতেয়া নাতিকোবিদাঃ॥ ২১॥ এবকেতর্হি রাজেল্র পুর গ্রাম ব্রজাদিষু। অনির্দেশায়ির্দশাংশ্চ হ্নিষ্যামোহদ্য বৈ শিশূন্। কিমুদ্যমৈং করিষ্যন্তি দেবাঃ সমরভীরবঃ। নিত্যমুদ্বিগ্ন মনসো জ্যাঘোষধন্ম ত্ব ত্ব ॥ ২২॥ অক্যতন্তে শরব্রাতৈহন্যমানাঃ সমন্ততঃ। জিজীবিষব উৎস্ক্ত্য পলায়নপরা যয়ু। কেচিৎ প্রাঞ্জলক্ষে ভীতা ন্যন্তশন্ত্রা দিবোকসঃ। মুক্তক্ছ শিখাঃ কেচিদ্রীতাঃ স্ম ইতিবাদিনঃ॥২৩

• শ্রীধরস্বামী।

নাভিকোবিদাঃ দুইমাত্র মতয়ঃ॥ ২১॥

ন নিৰ্গতানি দশদিনানি যেষাং তানস্তাংশ্চ ॥ ২২ ॥

देवस्व वरका वनो ।

তজ্ঞানমপি ভগবৰিম্থানাং তেষাং হৃদি হৃদ্ধিং ন স্যাদিতি দর্শগ্ন কংস্থা স্বোক্ত জ্ঞানবিক্ষ ব্যবহারনাহ তস্যামিত্যাদিনা যাবং সমা ও মণ্ডিলঃ প্রাল্ড কেশি চানুরাদীন ॥ ২০ ॥

স্বভাবত এব দেবানাং শত্ৰবঃ ক্বতামৰ্বাঃ সন্তঃ॥ ২১॥

হে বাজেক্সেতি সংগাধনমিক্সেহবজ্ঞগা ভোজেক্সেতি পাঠোহপি তথৈব বৈ এব অদৈবে ॥

নত্র তথি দেবা যুদ্ধার্থমূল্যমং করিষ্যন্তি তত্রাহুঃ কিমিতি জ্যাঘোষেঃ পূর্বং যুদ্ধে ক্লতৈঃ সদা লীলায়ামপি বা ॥ ২২ ॥

অহত ইতাদিনা হতিতঃ কণাচিৎ কংসস্য দেবগণ জয়ো জেয়:। তথাত বিষ্ণুপ্রাণে তত্তে । কিং ন দৃশোহমরপতি ময়া সংযুগ্নহাত সং। পৃষ্টেনৈব বংন্ বাণানপগছের রক্ষ্যা। মজাষ্ট্রে বারিতা বৃষ্টির্যদা শক্ষেণ কিং তদা। মছাণ ভিতর জনদৈ নিপোযুক্তা হথেপিত। ইতি। পলায়ন পরা বিমুখতয়া ধাবস্ত ইত্যর্থঃ॥

প্রবন্ধো মূর্দ্ধি ধতোহঞ্জলি বৈ ভাদৃশা বভূবুরিতি শেষ:। যতো দীনা হংথিতাঃ কীণ্চিত্তা বা ভীতা ইতি কচিৎ পাঠ:॥ ২৩॥

এীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

বিশ্বন্ধনকপটং যথা স্যাৎ বিশ্ৰব্ধনিতি পাঠে সবিশ্বাসং॥ ২০॥ নাকিকোবিদা ন কোবিদা ইত্যৰ্থ:। উঁতি ইত্যনধিকাৰ্থং॥ ২১॥ অনিদ শান্ দশদিনেত্যো ন নিৰ্মতান্ নিৰ্মতাংশ্চ॥ ২২॥

করিল। পরস্ত রাত্রি প্রভাত হইবামাত্র মন্ত্রিদিগকে আহ্বান করিয়া কন্যা রূপিণী মায়ার সমুদায় কণা তাহাদেুর নিকট কহিল॥ ২০॥

সন্ত্রিগণ দৈত্য, দেবতাদের বৈরী এবং তাহাজের প্রতি জাতকোধ ছিল, বিশেষতঃ দৃষ্টমাত্র বিষ-য়েই বৃদ্ধিমান, অতএব প্রভুর উক্ত বাক্য প্রবণ করিয়া উত্তর দিল॥ ২১॥

হে রাজেন্দ্র ! যদ্যপি এ রূপ হইয়া থাকে তবে পুর গ্রাম ব্রজ ইত্যাদি ছানে যে থানে যত শিশু জিম্মিয়াছে তাহাদের বয়ংক্রম দশ দিনের ন্যুনই হউক, অথবা অধিকই হউক, সকলকে বিনই করা যাউক। মহাক্রাজ ! দেবতারা সমর ভীক্র, আপনকার ধনুকের ছিলার শব্দে নিত্যই উদিগ্র থাকে, তাহারা উদ্যম করিয়া কি করিতে পারিবে ! ॥ ২২ ॥

হে রাজন্। সাপনি দেবগণকে সংহার করিতে প্রবৃত্ত হইলে তাছারা আপন্কার শরজালে বিদ্ধ হইরা জীবনেচহার সমর পরিহার পূর্বক চতুর্দিকে পলায়ন পর হইয়াছিল। কত্রকঞ্লা দেবৃতা ভীত ন সং বিস্মৃত শস্ত্রাস্ত্রান্ বিরথান্ ভয়সংযুতান্। হংস্যন্যাসক্ত বিমুখান্ ভগ্নচাপানযুধ্যতঃ ॥ ২৪ ॥ কিং ক্ষেমশ্রৈবিব্ধৈরসংযুগ বিকথনৈঃ। রছো জুয়া বা হরিণা শস্তুনা বা বনৌকসা। কিমিক্রেণাল্লবীর্যোণ ব্রহ্মণা বা তপস্ততা॥ ২৫ ॥

बीभवयागी।

অগুতঃ বিধাতঃ স্তু উৎস্থা রণং ত্যক্ত্বা ॥ ২৩॥ অগ্রাসকান বিনুপাংশেচতি ন হংসি ন হিংস্সি॥ ২৪॥

্গেন্য নিউবে দেশে শূরৈঃ সংযুগাদভাত বিকখনং প্রৌঢ়বাদো বেষাং তৈঃ। নমু হরে বিভেমি শভোশেচতি চেত্ততাছঃ রহো জুবেতি সর্প্রভান্তঃ প্রবিষ্টেন কচিদপি বহিরদৃষ্টেনেতার্থঃ। পুরুষ প্রবেশ রহিভমিলাবৃত্ত বনমোকোশ্যভাতেন শভুনা॥ ২৫॥

বৈষ্ণবতোষণী।

অংগ তব ধর্ম পরিপালনেনৈব দেবা জীবভীত্যান্ত:। নতমিতি ধৃতান্যপি ভয়াকুলতয়া বিশ্বতানি খজাদীনি শরাদীনি চ বৈঃ তান্॥২৪ নত্ব তথাপি জীবভতেভিমানিনোহবশ্যং বিজেষং দর্শয়িষ্যন্তি তত্তান্ত: কিমিতি সার্দ্ধকং অসংযুগং স্ত্রীপার্শ্বাদি। অন্তত্তৈঃ। তত্ত্ব সর্বভেত্যাদি বাঁভবোহর্থ: কৈত্যানামভিত্রেতন্ত কীরোদাদে অন্তত্ত্বেনানিনুত্ত তিঠতীত্তাব ইতি তাভ্যাং তব রণসংঘট্টনাবগন্তব্যানেবিত ভাবঃ। নত্ন তথাপি দেবেজ্রোহবশ্যমাগন্তা তবাহ কিমিতি। নত্ন ব্রহ্মা তৎ সহীয়ো ভবিতা তত্তাক্ ব্রশ্বনেশিত তপঃ প্রত্মেন বিক্রমাভাবাৎ তপোব্যর ভিয়া শাপাপ্রত্বিত্তক্ষ তেন সহায়েনাপি স্বতা কিমিত্যর্থ:॥ ২৫ ॥

ক্রমদন্দর্ভ:।

রংখ জুষা নিশীমস্থিতেনেতি তেষাং বিবক্ষিতং টীকায়ান্ত বাস্তবার্থ এব ॥ ২৫ ॥ যথেতি বন্ধ বলম্বেন মহান্ বিবৃদ্ধঃ সন্॥

শ্ৰীবিশ্বনাপচক্রবর্তী।

অবাতঃ বিধাতঃ সতঃ। উৎস্কা রণং ত্যক্ত্বা॥ ২০॥

তব ধার্মিকখনেব তেষাং বৃদ্ধৌ হেডুরিত্যাত্য। নত্মিতি। তেনাত্যপরং ধার্মিকত্বং তাজ্বতাং। ধর্মস্য নায়ং কাল ইতি ভাবঃ॥ ২৪॥

বয়স্ক তেডাঃ কৰা থাপ ন বিভীম ইত্যাছা। ক্ষেমে নির্ভয়ে দেশে শুরৈঃ সংযুগাদন্যত্রৈব বিকল্পনং প্রোটিবাদো ঘেষাং তৈঃ। নচ হরেঃ শন্ডো ব'া ভেতব্যং তয়োরপি ত্বতুল্য বলত্বাভাবাদিত্যাইঃ। রহোজুযেতি। যদি বলং স্যান্তদা কিমিতি প্রকটীভূয় ন ফ্রাতে কিমিতি বোকানামন্তঃকরণেয়ু প্রবিশ্য নিজুয়ত ইতি ভাবঃ। বনৌকসা পুরস্বপ্রবেশ রহিতমিলাবৃত বনমোকো যস্য তেন ॥২৫॥

হৃষ্যা অস্ত্র শস্ত্র বিদর্জন পূর্বকে অঞ্জলি পূটে দাঁরাইয়া ছিল। আর কতকণ্ডলা মুক্তকচ্ছ ও মুক্তশিথ হৃষ্যা ''আমরা ভয় পাইয়াছি'' বলিয়া শরণ প্রার্থনা করিয়াছিল। ২৩।

রাজন্। সেই সকল দেবতা স্ব স্থা শস্ত্র এবং বিরথ ও ভয়ে বিনম্ভ ইয়াছিল, আর তাহাদের ধরুঃ ভগ্ন হইয়াছিল অতএব মুদ্ধ পরিত্যাগ করিয়াভপালায়। আপনি তাহাদিগকে অন্যমনস্ক ও বিমুথ দেখিয়া বধ করেন নাই॥ ২৪॥

হে মহারাজ! দেবতারা নির্ভয় দেশেই শূর, যে স্থানে যুদ্ধ নাই সেই খানেই তাহাদের প্রোঢ়িবাদ (শোর্য বীর্যের কথা) শুনিতে পাওয়া যায়, তাহাদের হইতে কি হইতে পারিবে ? আর হরি
ও শল্পু হইতেই বা ভয় সম্ভবনা কি ! হরিত সর্বাদা নির্জ্জনে সকলের অন্তরেই প্রবিষ্ট থাকেন, বাহিরে
দৃষ্ট হয়েন না । মহাদেবের বাস ইলার্ত বন, যে খানে কখন কোন পুরুষ প্রবেশ করিতে পারে না ।
ইন্দ্র অথবা ব্রহ্মা হইতেও ভয় সম্ভাবনা দেখি না, কারণ ইন্দ্র অতিশয় অয় বীর্যা, আর ব্রহ্মা সর্বাদা
তপস্থাতেই নিযুক্ত আছেন ॥ ২৫॥

20

তথাপি দেবাঃ সাপত্মামোপেক্যা ইতি মন্মহে। ততন্তম লখননে নিযুক্তনাহস্মানসূত্রতান্॥ ২৬॥
যথাময়োহঙ্গে সমুপেক্ষিতো স্কৃতি ন শক্যতে রুড়পদক্ষিকিৎসিতৃং।
যথেক্রিয়গ্রাম উপেক্ষিত স্তথা রিপুম হান্ বদ্ধবলো ন চাল্যতে॥ ২৭॥
মূলং হি বিষ্ণু দেবানাং যত্র ধর্মঃ সনাতনঃ। তহ্মচ ব্রহ্ম গো বিপ্রান্তপো যজ্ঞাঃ সদক্ষিণাঃ।

शिधतचामी।

यमः প্রাদ্যমৈর্টেবাঃ কিঞ্চিদপি কর্জুঃ ন সমর্থাঃ তথাপি নীভিরন্থসর্ত্তব্যা ইত্যান্ত্ত্তথাপীতি ॥ ২৬ ॥ ক্রত্পদো বন্ধমূলঃ ॥ ২৭ ॥

বৈষ্ণবতোষণী।

মন্নহে মন্যামহে। নমু দেবা ভীতা: পলাগিষ্যস্ত এব ততাহ: তত ইতি তেষাং দেবানাং মূলসা বালকরপোণাবতীয়া স্থিতসা গুপুসা বিকোঃ ধননে হিংসনে হম্মারিযুক্ত্ন ॥ ২৬ ॥

নমু গুপ্তশেদসমর্থ এব স মম কিং করিবাতি তত্তাত র্যথেতি কদাচিন্নহৌষধাদিপ্রভাবেণ তচ্চিকিৎসা সম্ভবমাশকা দৃষ্টান্তান্তর-মাতঃ ধণেক্রিয়েতি। বন্ধবদ্বাৎ এব মহান্ বিরুদ্ধ: সন্ ন চালাতে স্থানান্ত্রশাস্ত্র্মপি ন শকাতে কিম্ত হন্ত্রমিতার্থ:॥ ২৭॥

অথ মূলস্থ তক্ত গুপ্তভাপি হননোপায়ং সাহৈ কিত্তির্জানক্তা মূলজমেব তত্তহস্যবিদাম্বীণাং বচনাত্নবাদেনাপি সপরিক্রং নির্দিশ্য জ্জনন মেব দৃটী কুর্বস্থি মূলমিতি হি নিশ্চিতং। সনাতনোহনাদিসিদ্ধো বেদপ্রসিদ্ধো নতৃপধর্মাদিসিত্যর্থ: ধর্মোহপূর্ব: তপ: স্বধ্যাচরণং নিত্যনৈমিত্তিক লক্ষণং যজ্ঞ শবেন কাম্য কর্মাণ্যপলক্যক্তে সদক্ষিণা ইতি তথৈব সাক্ষত্যা ধর্মমূলতা সিদ্ধে:॥

অথ তথাপি তস্য বিষ্ণোরহোজ্ট্রেপি তৎপরিকর হননেনৈব হননং স্যাৎ ইত্যাহ ক্তমাদিতি। সর্বাত্মনা সর্বেটেব প্রবত্তেন হন্ম তেবাং হননমেবাম্মাকং জন্ধর্শোপমর্দকং পর্মো ধর্মঃ ইতি তান্ হন্যামেবেতার্থঃ হে রাজন্নিতি তব প্রভাবেণৈব স্নতরামেবেতি ভাবঃ। ব্রাফাণ্যননে হেতবঃ ব্রহ্মেত্যাদি তরাশে স্বতো বেদাদি নাশ সিলেঃ গোহননে হেতুঃ হবিছ'বা মৃত্যাদি যক্কীয়দ্রব্যপ্রদাঃ॥

ন কেবলং তে বিষ্ণোঃ পরিকরাঃ অপিতৃ তহু নির্বিশেষাঃ অপীতি পূর্ববদম্বদন্তি বিশ্র ইতি তপঃ স্বধর্মাচবণং সভ্যক মুগার্থ-

ক্রমসন্দর্ভ:।

পর্মো হ্রপ্র্বঃ তপঃ স্বধর্মঃ যজ্ঞাঃ কাম্যধর্মাঃ। সর্কাক্সনা সর্বেটেণ্ব প্রযন্তেন ॥ ২৮॥ ২৯॥ ৩০ ॥ '

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

তদপি কুদ্রা অপি শত্রবো নোপেকণীয়া ইতি নীতিশাস্ত্ররীতি রন্ত্সরণীয়ৈবেত্যাহস্তথাপীতি ॥ ২৬॥ বচপদো বন্ধন্তঃ॥ ২৭॥

ধর্মঃ সনাতন ইতি ধন্ম এব তং জীবরংস্কদ্য মূলমিত্যর্থঃ। তদ্য ধর্মদ্য মূলং বেদাদ্য:॥

তেষামপি মধ্যে আক্ষাণবধেনৈব সর্বে নজ্জান্তীত্যাহ:। তত্মাদিতি কিঞ্চ যক্ষানাং কারণং ছবি তত্য্য গার ইতি তাশ্চ বধ্যা ইত্যাহ-

কিন্তু যদিও উদ্যম করিয়া দেবতারা কিছুই করিতে পারিবে না সত্য, তথাপি ,নীতি অমুসরণ করা কর্ত্তব্য, আমাদের মত এই যে, দেবতারা আমাদের শক্র, স্থতরাং উপেক্ষণীয় নছে, অতএব তাহাদিগের মূলোৎপাটনার্থ আমাদিগকে নিযুক্ত করুন। হে ম্হারাজ। আমরা আপনকার অমুত্রত, প্রাণপণে আদেশ পালন করিব ॥ ২৬॥

যেমন শরীরে কোন একট্রী রোগ উৎপন্ন হইলে যদি তাহাকে উপেক্ষা করা যায়, তবে সেই ব্যাধি ক্রমে বুজনুল হইরা উঠে, পরে সহজে তাহার প্রতীকার করিতে পারা যায় না, অথবা যেমন ইন্দ্রিয় নিচরকে উপেক্ষা করিলে শেষে সে সকলকে বশীভূতকরা অসাধ্য হয়, তেমনি মহান্ রিপু বছ-বল হইলে তাহাকৈ বিচলিত করা হুংসাধ্য ॥ ২৭॥

হে রাজন্ ! দেবতাদিগের মূল বিষ্ণু, ঐ বিষ্ণু যেখানে, অনাদিসিদ্ধ সনাতন ধর্ম, সেইখানে থাকেন, দেই ধর্মের মূল বেদ, গো, ত্রাহ্মণ, তপস্যা এবং দক্ষিণা সমেত যজ্ঞ, অতএন সর্ব্ধপ্রয়ে বেদবাদি-তপস্থি এবং যজ্ঞশীল ত্রাহ্মণদিগকে, তথা স্বতদোহনকারিণী গাভী সকলকে বধ করা যাউক। হে মহা- তি আং সর্বাত্মনা রাজন্ আর্কাণান্ অক্ষাবাদিনঃ। তপস্থিনো যজ্ঞ শীলান্ গাশ্চ হন্মো হবিছু ঘাঃ।
বিপ্রা গাবশ্চ বেদাশ্চ তপঃ সত্যং দমঃ শমঃ। শুদ্ধা দয়া তিতিক্ষাচ ক্রতবশ্চ হরেন্তন্যঃ।
সহি সর্ব্ব স্থরাধ্যক্ষোহ্মস্বন্ধিড় গুহাশরঃ। তন্মূলা দেবতাঃ সর্ব্বাঃ সেশ্বরা সচ্পুর্ম্থাঃ॥ ২৮॥
আয়ং হি তদ্বাপায়ো যদ্যীণাং বিহিংসনং। এবং ছ্র্মান্ত্রিভিঃ কংসঃ সহ সংমন্ত্র্য ভ্র্মিতিঃ।
অক্ষহিংসাং হিতাং মেনে কালাপাশার্তোহ্মস্রঃ। সন্দিশ্যু সাধুলোক্স্য কদনে ক্লনপ্রিয়ান্।
কামরূপধ্রান্ দিক্ষু দানবান্ গৃহ্মাবিশ্ব ॥ ২৯॥

श्री धत्रवामी।

দেবানাং মূলং বিষ্ণু: সচ যত্ৰ ধৰ্মন্তত্ৰান্তে ধৰ্মদ্য মূলং বেদাদয়: ॥ ২৮ ॥ কিঞ্চ যত্মাৎ বিপ্ৰাদয়ো হুরেরের তনৰ স্তত্মাদয়মেবোপায় ইস্ত্যাহ অয়মিতি ॥ ২৯ ॥

বৈঞ্চৰতোষণী।

ভাষণমিতি সাধারণ ধর্মঃ দমাদয়ঃ প্রায়োনিবৃত্তিধর্মাঃ ক্রতবশ্চ প্রায়ঃ প্রবৃত্তি ধর্মা ইতি বিবেচনীয়ং পূর্বতোহতাধিকোন দমাদীনা-মুক্তি অন্বতামপ্যবীণাং জিঘাংসয়া। তন্রিত্যেকত্বং সমাহার প্রাধান্যেন তত্মরিতি হ্রস্বান্ত পাঠে। ন বহু আ

এবং তদ্ধননে সতি দেবাতান্তর হিংসাতু পিষ্টপেষণমেবেত্যাহ্য সহীতি স হি স এব যথাহস্করন্ধিড়পি স এব বিতীয়ো হি শব্দ প্রসিদ্ধে তির্হি কথমসৌ। সাক্ষাদেব নহিংস্যেত ততাহ গুহাশয় সদৈব অনৃশ্য বাসহাৎ সম্প্রতি পৃথিব্যাং জাতত্বে হপ্যগুপ্তহাদসৌ ন দৃশ্যতে হন্যথা জীয়তৈবেতি ভাবঃ ॥ ২৮ ॥

তত্মাৎ পূর্ববৃক্তিমেব সংক্ষিপ্য উপসংহরপ্তি অয়নিত্যর্দ্ধকেন। গুণ্ডখাৎ ঘাত্যবালেষীপ প্রায়ো নৈব প্রাপ্য:। গাবন্তয়্যহগ্নাদিনা বাহা জীবিকা অপি ভবস্তি তেবাং ধর্ম্মূল্ডমপ্যেষামেব হিংসরাপগচ্ছেনিত্যভিপ্রেত্যান্তঃ ঋষীণামিতি। ব্রহ্মবাদি প্রভৃতীনাং
এব তহুধোপায় ইত্যন্ত অয়ং ভাবঃ। পূর্বং থলু ধর্মত তজ্জীবিকাছেন তদাশ্রয়মুক্তং তস্য চ বেদাদয়ো মূলানি অতন্তন্তম তুল্যা এব তে
তত্রচ বিপ্রা স্তেষামপ্যাশ্রয়াঃ তত ন্তব্য চূর্যপত্রের গুহাশয়স্য তল্পকণ মূল জীবিকা স্থান হিংস্বৈর হিংসা স্যাদিতি এ

স্বতে। হুর্মতি: পুনশ্চ হুর্মঞ্জিভি: সহ সক্ষয় হিতমিভি হিতামিতি বা পাঠ: ॥

কদনে নিমিত্তে॥ ২৯॥

ঐবিশ্বনাথচক্রবন্তা।

ৰ্গান্চেতি॥

বাক্ষণবধ এব তদ্য শরীরপাতো ভাবীত্যাহঃ বিপ্রা ইতি ॥ ২৮ ॥ শ্বীণাং বিহিংসনমিতি সর্ব্ব মূলদ্য বিষ্ণোরপি মূলবাদিতি ভাবঃ ॥ ২৯ ॥

রাজ! গো, বিপ্রা, বেদ, তপদ্যা, সত্য, শম, দুম, প্রজা, দয়া, তিতিকা ও যজ্ঞ এ সকল বিষ্ণুর মূর্ত্তি। বিষ্ণু সমস্ত দেবতার অধ্যক্ষ, সকলের অন্তর্যামী, অহরদিগের বিদেবী প্রাঃ তিনিই ঈশ্বর ও চতুর্ব্থ সহিত সমস্ত দেবতার মূল ॥ ২৮॥

হে সহারাজ! যে হেন্তু আহ্মণাদি সকলে বিষ্ণুরই শরীর, অতএব ধ্যিদিণের হিংসা করা যাউক, তাহাই বিষ্ণুকে বৃধ-করিবার উপায়। তদনস্তর হুর্মতি কংস হুর্মজিদিণের সহিত মর্দ্ধণা করিয়া অহ্মহিংসাতেই আপনার শ্রেয়ঃ অবধারণ করিল, কারণ কালপাশে আর্ভ হইয়াছিল, পরে পরপীড়নে
তৎপর তথা ইচ্ছামুসারে বিবিধ রূপধারি দানবদিগকে সাধুজন হিংসার্থ আদেশ করিয়া নিজগৃহে
প্রবিষ্ট হইল॥ ২৯॥

20

ক্রেবে রজঃ প্রকৃতর তথ্স। মৃত্তেতসঃ। সভাং বিদেধমাতের রারাদাগতমৃত্যবঃ॥ ৩০॥

আয়ুঃ শ্রিয়ং যশো ধর্মাং লোকানাশিষ এবচ। হস্তি শ্রেয়াংসি সর্বাণি পুংসো মহদতিক্রমঃ ॥৩১॥ ॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং দশমস্বদ্ধেহস্থরমন্ত্রণং চতুর্থোহধ্যায়ঃ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

শ্ৰীশুক উবাচ॥

নন্দস্বাত্মজ উৎপরে জাতাহলাদে। মহামনাঃ। আছুয় বিপ্রান্ বেদজ্ঞান্ স্নাতঃ শুচিরলঙ্কতত্বান্।

श्रीभव्यामी।

আরাং দমীপমাগতে। মৃত্যু রেবাং তে॥ ৩ ॥

নতাং বিষেষো ন মৃত্যুমাত্রহেত্: কিন্তু বহুবনর্থকারীত্যাহ আয়ু: শ্রেয়নিতি ॥ ৩১ ॥

. ॥ * ॥ ইতি দশমে চতুর্থঃ ॥ * ॥

পঞ্মে জাতকং নলী স্নো: ক্জা মহোংসবং। গ্রাণ মথ্রাং প্রাণ বস্তুদেবাগ্মোৎস্বং॥ । ॥

বৈষ্ণবতোষণী।

রজঃ অভাবন্ধাং কুপথগানি বৃদ্ধাঃ উদ্রিক্তেন তমসাচ সাধু দর্শিতমপি সংপথমপশাস্তঃ বিদ্ধে ফলমাহ আরাদিজাদিনা॥ ৩০॥ লোকান্ ধর্মসাধ্যস্থাদীন্ আশিষে। নিজবাছিতানি আয়ুরাদীনাং যথোত্তরং শ্রৈষ্ঠাং কিং পৃথপ্তি দেনেন সর্কাণ্যপি শ্রেষাংসি সাধ্য সাধনানি সংসঃ সাধিতাশের পুক্ষার্থন্যাপি জনস্য মহতাং তাদৃশাং শ্রীবিক্ষোরপ্যপদীব্যশীলক্ষেন প্রসিদ্ধানাং অতিক্রমো বাচনিকাদ্যনাদ্রোহিপি॥ ৩১॥

॥ *॥ ইতি বৈষ্ণবতোষণীনাম্যাং দশম টিম্মস্তাং চতুর্থঃ ॥ *॥

নন্দ্ৰিতি যুগ্মকং। নন্দয়তি জগদিতি শ্ৰীনন্দ্যা যথাৰ্থ সংজ্ঞৰং দৰ্শয়ন্ তুশব্দোক্ত মৈখবা জ্ঞান প্ৰধানাং শ্ৰীবস্থদেবাদপি শুদ্ধবাং-স্বারীত্যা সৌভাগ্যভ্রমভিব্যঞ্জয়তি আত্মজ ইত্যাদিনা কুর্ম্বহেত্যকেন। অতঃ শ্লাঘিষ্যতেচ রাজ্ঞানন্দঃ কিমরোধু ক্ষন্ ইত্যাদিভ্যাং

क्यममर्ज्यः ।

অতিক্রমো বচসাপি॥ ৩১॥

॥ 🛊 ॥ 🛮 देखि नन्द्य ह्यूर्थः ॥ 🛊 ॥ ८॥ 📲

আয়ক ইতি প্রীভৃত ইত্যার ব্যাথ্যাস্যতে পূর্কমেব। মহামনা: প্রীক্ষাবিষ্টিতিত। . অধুনা তু তশিলেব আয়লে জাতে জাতা-

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

ভীতং রাজানমাখাদয়তি আরাদিত্যাদিনা॥ ৩০॥ ৩১॥

॥ * ॥ ইতি সারার্থদর্শিন্যাং হরিণ্যাং ভক্তেডগাং। দশ্মদ্য চতুর্থেহিরং সঙ্গতঃ স্কৃতঃ স্তাং॥ *॥

রুঞ্জন্মোৎসবো দাড়ং করং শ্রীমধুরাগমঃ। নন্দ্র্যা ব্রুদেবেন সংলাপঃ পঞ্চমে হভবং। নন্দ্রিতি তুকারেণ বর্লেব আত্মজে উংপরে জাতাহলাদোহিদি কংসভয়াৎ সঙ্চিত্মনা জাতকর্মাদিকং কর্তুং ন প্রান্ত্রং। নন্দস্ত আ্বাত্তে উৎপল্লে জাতাহলাদো মহামনাঃ

হে ভারত! অস্থ্রগণ একে রজঃস্বভাব, তাহাতে আবার তমোগুণে তাহাদের চিত বিমৃঢ় ও আপনারা মৃত্যু সমীপে আগত হইয়াছিল অতএৰ আশু উৰ্কাদ হইবার নিমিত সর্ক্তোভাবে ত্রহ্ম-বৈষ ক্রিতে প্রস্ত হইল॥ ৩০॥

হে রাজন্ প্রীক্ষিৎ! সাধুজনের বিষেধ কেবল মৃত্যুমাত্রের কারণ নহে, তাহাতে বহু ২ অনর্থ হয়, অর্থাৎ মহন্যক্তিদের অতিক্রমে পুরুষের পায়ু, জী, যশ, বর্ম, স্বর্গাদিলোক, কল্যাণ-এবং সর্ববিধার শ্রেষঃ বিনষ্ট করিয়া কেলে। ৩১ ॥

॥ अ । 🗮 ि प्रभारत हेजूर्थ ॥ 🗱 ॥ .:

পুত্রের জাতোৎসব করিয়া নন্দের মধুরায় গমন এবং তথায় বস্তুদেব সহ সমাগ্রেমাৎস্ব । ে॥

বাচয়িতা স্বস্তায়নং জাতকর্মাজজন্য বৈ। কারয়ামান বিধিনা পিতৃদেবার্চনং তথা। ১ 📭

ब्रीधतचामी।

मरामना डेमात्रुहिखः ॥ > ॥

देवक्षवरकाष्ट्री।

আত্মজ ইতি অত্যাত্মজত্ম্প্রত্মাত্মাত্মজত্মনোৎপদ্মত্মিত্যর্থত্তমং প্রত্যেকাষ্যাভ্যাং ব্যক্ষতে নীলোৎপল্বৎ তচ্চান্যথা প্রতিপত্তি নিরা-সার্থং। তত্রাত্মজন্বং পুত্রভাবেনাত্মবি প্রাত্নভূতিস্মের নান্যৎ তৎ ধলু আবিবেশাংশভাগেন মন **আনক চুদ্ভে:। ততো জগন্ম**লণ মচ্যুতাংশমিত্যাদিবৎ শ্রীনন্দ যশোদয়োরপি গম্যতে। যস্য দেবে পরা ভক্তি যথা দেবে তথা গুরৌ। তলৈয়তে কথিতা হথা প্রকা-শত্তে মহাত্মন ইত্যাদে:। ভক্তিরেবৈনং নযতি ভক্তিরেবৈনং দর্শয়তি ইত্যাদেশ্চ শ্রুতে:। তথা ভক্ত্যাহমেক্যা গ্রাহ্ম ইতি শ্রীভগবহুকেশ্চারাম্ববিষ্যতে তাদৃশ প্রেমাম্পদত্যা পরম পুরুষার্থ রূপায় তৎপ্রাকট্যায় সতত তন্মনত্বসক্ষণ ভক্তেরবিশ্যকতাৎ শ্রীনারদ পূর্ব জন্মনি শ্রীঞ্চবপ্রহ্রাদাদিষুত্র দৃষ্টত্বাৎ তৎক্রতুন্যায়েন যে মৃথা মাং প্রপদ্যক্তে তাংস্তবৈর ভন্ধান্যহমিতি শ্রীভগবহুপ-নিষ**ু প্রামাণ্যেনচ ত্**ৎ প্রাকট্য বিশেষায় ভাছিশেযস্ত চাপেক্ষিডভাৎ। **অন**য়োরেতাদৃশ ভক্তি দিগদর্শ**ন তু ত্রন্মবরে ক**রিষ্যতে। এতদেবাহ মুহামনা ইতি অত্যন্ত তাদাত্ম্যাপত্ত্যা মহান্ জীক্ষ্ণএব মনো যস্য তন্ধারণ দামর্থোন মহৎ মনো যস্য ইতি বা। यস্যাতি ভক্তি ৰ্ভগবত্যকিঞ্চনা দৰ্ব্বৈন্ত বৈ ন্তত্ৰ সমাদতে স্থবা ইত্যুক্তামুদারেণ মহামনন্ত্রং থবত্তৈব মৃণ্যং যত্রোদার্য্যাদরো হুপি গুণা অন্তর্ভবন্তীতি উপলক্ষণকৈতৎ শ্রীযশোদারা অপি বক্ষ্যতেচ। নন্দঃ কিমকরোদ্রশ্বন্ শ্রের এবং মহোদরং। যশোদাবা মহাভাগা পপৌ यস্য। ইতি। তদেবমনয়ো স্তমোশ্চাত্মনি তৃদ্য জাতৃত্বে সমানে ২পি ফলেন ফলকারণ মহুমীয়তে ইতি ন্যায়েনান্তি বিশেষঃ। তয়োশ্চত্-ভূজিফেনানয়োদ্ধিভূজকেন ইতি। অথোৎপন্নত্বং নাম চ বহিস্তাদৃশ প্রাক্ট্যমেব নতু জীববৎ প্রকারান্তরং তচ্চানরো স্ততো নির্কিশেষ-মেৰ প্ৰত্যুত পুত্ৰতয়োৎপন্নত্বেত্বতি বিশেষো হপি পুত্ৰত্ব ব্যঞ্জিকমাক্ত্যা প্ৰকৃত্যা চানছোঃ প্ৰাকট্যাৎ তয়োস্ক পুত্ৰত্বাপ্ৰত্যান্ত্ৰিক্ষা তয়া তবাচ প্রাকট্যাৎ তচ্চ যুক্ত অনমোরেব প্রীতে: গুদ্ধপিত্ভাবময়ত্বাছৎকট্ডাচ্চ। তত্ত্বন্ধত্তিতাদিনা তু শব্দ ব্যক্ত বৈশিষ্টোনাত্র দর্শ্যতে। পর পরত্রচ দশ্যিষ্যতে ত্রােষ্টেশ্বর্য জ্ঞানাচ্ছানের বিদিতোহগীত্যাদিনা তদ্দর্শিতং তাদৃশভাবং বিনা তু শ্রীবরাহদেবস্য ন ত্রন্ধপুত্রত্বেন ঞ্জিক্ষদেবস্যত নোত্তরাপুত্রত্বেন প্রসিদ্ধিঃ তল্পোন্তস্য নাভিমানো হপি। তত্মাৎ সর্বাংশেন ঞ্জীনন্দস্যাত্মজ্বতেনাৎপল্লোহসৌ ক্রিয়য়া জন্যাস্পৃষ্টতয়ৈদ বক্ষ্যতে আহুমেত্যাদি গ্রন্থেন। অত্তবে শ্রীগর্গেণৈবাত্র প্রধানতা বক্ষ্যতেচ। প্রাগমং বহুদেবসা কচিজ্জাত-ন্তবাত্মজ ইতি। প্রীব্রহ্মণাপি স্বপুরুণার্থতা সমধ্য়িতা নৌমীডাত ইত্যাদৌ পশুপাঙ্গজায়েতি সর্বতে। বৈশিষ্টেন ভগবতা প্রীশুকেনচ নাযং সুথাপো ভগবান্ দেহিনাং গোপিকাস্থত ইতি। আগমবিদ্ভিরপি সকল লোকমঙ্গলোঁ নন্দগোপতনয়ো দেবতেতি। তত্মারন-

ক্রমসন্দর্ভ:।

লোদ ইত্যাদিভি:। আবিবেশাংশভাগেন মন ইত্যাদি সাম্যং বোধয়মপি ভাববৈশিষ্টাং বোধয়তি কারয়ামাসেতি। স্থাননজ্জাতাাং॥১

ত্রীবিখনাথচক্রবন্তী।

অতিবিদ্যিত্যনাঃ বৃতিবাচনপূর্বকং জাতকণ্ণ কার্যামাসেতি তুকারাদেবৈত্যাত্তে বহুদেবান্তেদে প্রতিষ্ঠ নন্দগৃহেংপি ক্রুল্যোৎ-পত্তিঃ শ্রীমন্ত্রীক্রাভিপ্রতাবগন্যতে। গর্ভ্বালেন্দশৃদ্ধি ইতি পূর্ব্বাক্তে বৈশিলায়ন সন্দর্ভাপি নচ তুকারোহত্ত পাদপূর্ণার্থ ইতি বাচাং। নন্দ আত্মল উৎপল্লে জাতাহ্লাদাে মহামন্। ইতি বিনাপি তুকারেদ পাদপূর্তেঃ। নচ তদপি তুকারে হনর্থক এব আত্মনা জাত আত্মল প্রান্ধিতি জানধাত্ত, প্রেরাগাদেবাভীপিত সিদ্ধেরিতি বাচাং। উপগুহান্ত্রাদেবিন্যিত্যানাের্যাপত্তে হপ্যাত্মলশক্ষেপ্রোগাং। কিঞ্চ নাড়ীছেদাং পূর্বেমের জাতকর্ম্বোপক্রমশ্রকাং নাড়ীছেদাণ্ড গর্ভজন্ধং বিনা কথা সন্ধ্রবেৎ। কিঞ্চ ক্রফান নন্দ্রবিত্র পূর্বি বিনালি প্রান্ধি ক্রি বহব এব ন তে সর্ব্ব এবামুগার্থী ভবিত্ মর্গন্ধি তথাছি অদৃশ্যতাম্বল বিক্ষোরিতি প্রাণ্যাং বহদেবন্য কচিজ্ঞাতন্তবাত্মল ইতি। নৌনীভাত ইত্যাদে গর্ভপালক্ষামেতি। দেহিনাং গোপিকান্ত্রত ইতি। গৌতনীয়ে বন্ধবীনক্ষাং বন্দেইতি। ক্রিদীপিকারামিপ্রি দৈবতা সকললোক মন্দলাে নন্দ্রোপ্রেশ্ব তনাই ক্রিছি। মৃদ্রেহিপি নন্দপ্রপৃথং প্রেইছিড্যান্ধন্ধঃ। ক্রেচিত্র ক্রকান বন্ধানি ক্রক্ষা বন্ধদেব পূত্রত্ব বিজ্যস্থত্ব ক্রিমিকান্তর্যাদিভাহিপি প্রেমমিশ্রসম্বন্ধ মূলকেভাঃ স্কান্ধিৎ ক্রমপ্রত্ব স্ব্রাম্বন্ধ গোণীকান্তনানি প্রেমিক মূলকানি ক্রফান নন্দাা্তিবশান্ত ব্যানাৰ্থ বচন প্রংশতেন মহান্ত্রান সহলাহ্লবেনে স্বর্থানে ক্রিটানীত্যত স্তান্থ ব্যান বিন্দ ভাল

হে রাজন্। আত্মজ উৎপন্ন হইলে উদারচিত নন্দ সাতিশয় আনন্দিত হইলেন। স্নানানন্তর শুচি

ধেন্নাং নিষুতে প্রাদান্বিপ্রভাঃ সমলঙ্কতে। তিলাদ্রীন্ সপ্তরক্রোঘ শাতকোম্ভাঘরার্তান্॥ २ ॥

श्रीधतवामी।

নিযুতে ছে দশ লক্ষে সপ্ত তিল পর্বভাংশ্চ প্রাদাং। কথস্কৃতান্ রক্ষেত্রৈ রক্সমূহৈ: শাতকৌন্তার্তর: স্বর্ণ রদাজৈবখবৈশ্চ আর্তান্॥ ২॥

देवकवट्डावनी।

স্বায়ন্ত উৎপদ্ধ ইত্যেবোক্তং নতু নলস্বায়ন্তং মহেতি অতোহত্ত মান্তা জ্বাচ শ্রীবন্ধদেবাদী ব্যালমান্ত্রাইন ত্রাপ্যসৈবান্তর দ্বাত ক্ষাত লাতং। তদান প্রকারিক ক্ষাতি লাতং। তদান প্রকারিক ক্ষাতি লাতং। তদান প্রকারিক ক্ষাতি লাত্র ক্ষাত্র নিলিক ক্ষাত্র ক্মাত্র ক্ষাত্র ক্ষাত্র ক্ষাত্র ক্ষাত্র ক্ষাত্র ক্ষাত্র ক্ষাত্র ক্ম

নিযুতে বিংশতিলক্ষাণি এতচ্চ ছাদশাধ্যারে প্রকটী করিব্যাম: তত্ত কীরস্বামিকারিকরা দিগদর্শনং যথা এক দশ শত সহস্রাণ্য-যুত্ত প্রায়তাথ্য লক্ষমথ নিযুত্মিতি । সম্যালস্থত যথোক্ত রৌপ্যপুর স্বর্ণ শৃঙ্গাদি ভূষিতে । তিলাদ্রিপরিমাণাদিকমুক্তং ভবিষ্যোক্তরে ।

• ক্রমসন্দর্ডঃ ।

ধেন্নামিতি নিযুত্মত শতগুণিত্মযুক্ত জেরং। একং দশ সহস্রমযুক্ত প্রযুক্তাথ্য লক্ষণ নিযুত্মিতি কীরস্বাম্যুক্তে বিলয়্য কথং স্বয়ং ন রুত্বান্ উচ্যুক্তে ॥ ই॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

তারতম্যেনৈর তত্ত্বাপ্রদেশ তারতম্যমন্যথা বরাহদেবস্য ব্রহ্মপুত্রবং কৃষ্ণস্য চোত্তরাগর্ত গতত্বেনোত্তরা পুত্রবমণি প্রসিদ্ধানত তি ক্রবাণা বশোদা গর্জ্বাতত্বাভাবমের স্বাভীষ্টপাধকং মন্যক্তে নচ নল বশোদারো: ক্লফে স্প্রাহ বৃদ্ধার তত্তাপি সম্বন্ধস্যাপাধিকং বাচাং। নহি বস্ত্রশক্তির্দ্ধ্যা পরাহন্যত ইতি নামাং। নহি নির্হেত্ক: প্রেমা হেতু বৃদ্ধার সহেতুকো ভবতি নহীম্বরে জীববৃদ্ধ্যবেশবো জীবো ভবতি কিন্তু কৃষ্ণস্য স্ত্রক্ষণাদারন্তভাবণস্যাপি সত্যক্ষরে কৃষ্ণপ্রির পরিকরাণামপি জ্ঞানভাবণাদেবান্ত্রস্যাপি সত্যক্ষারান্ত্রমব্যাদেব্যক্ষ্যপ্রাস্থাবিদ্ধান ব্যক্ষ্যাদেবিদ্ধান ক্রমান্ত্রম্যাক্ষার চিত্রপ্রেশ্ব ক্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্তর্বান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্

নি**কৃত্ব বিংশতি লক্ষাণি। একং দশ শত সহস্রাণ্যকৃতং প্রযুতাধ্য লক্ষ্মথ নিযুত্মিতি ক্ষীরস্বামী। তিলাদ্রিপরিমাণ্যুক্তং ভবি-**

হইয়া বেদজ্ঞ বিপ্রাগনকে স্বাহ্বান ও অলহ্বত করিয়া স্বস্তিবাচন পূর্বক মধাবিধি তনয়ের জাত কর্মাদি করাইলেন। পরে স্থাপনার পিতৃ ও দেবলোক্ষদিগেরও অর্চনা হইল ॥ ১॥

তদনস্তর বিংশতি লক্ষ অলঙ্কত থেমু, তথা সাতটী তিলপর্বত আক্ষণদিগকে দান করিলেন। সেই

• কালেন স্নানশোচাভ্যাং সংক্ষারৈ স্তপদেজ্যা। শুদ্ধান্তি দানৈঃ সম্ভন্তা দ্রব্যাণ্যাত্মাত্মবিদ্যয়া॥৩॥

शिधवयामी।

জ্ব্যাণাং গোহিবণাদীনাং হক্সধ্যে কিঞ্চিল্লানৈ বেবন্ধন্ধঃ তথা দানাদি যুক্ত জাতকথা সংস্কারৈরের গন্ত্রাণাং শুন্ধিরিতি দশ্বিভূং প্রতিনির হানি শোধকানি দৃষ্টান্তবেনানাহরতি কালেন্দ্রতি। কালেন ভূম্যাদি স্বানেন দেহাদি শৌচেনানেধ্যলিপ্রাদি সংস্কারের র্গাদি তপদেশ্রিয়াদি ইজাযা আন্ধানি প্রবিদ্যাদি সংস্কৃত্রা মনঃ আত্মা আত্মবিদ্যায়॥ ওঁ॥

देवस्वद्यावशी।

উত্থো দশভির্টোণৈর্যানঃ প্রভিত্ত । বিভি: কনিষ্ঠে। রাজেন্স তিলনৈলঃ প্রকীতিত । পূর্ন্নবিচ্চাপনং স্বাং বিশ্বন্থং প্রকালিকং। তিলোকং তবৈবালো ধান্যান্তিপ্রদ্রেশ। ইবং নিবেশ্যামরশৈল মগ্রা মতন্ত্র বিশ্বন্ত গিরীন্ ক্রমেণ। তুরীর ভগেলন চভূদিলঞ্চ সংস্থাপরেৎ পূলা বিলেপনাচ্যানিত্যালি। তেচ মল্বরান্যঃ চহাবঃ। তথাচ তবৈত্র মেরুমহান্ ব্রাহ্মিয়ন্ত নাগ্যে প্রন্থ কুলা বিলেপনাচ্যানিত্যালি। তেচ মল্বরান্যঃ চহাবঃ। শুণাচিত পারুমহাত্র নীলরহৈঃ সোম্যেট বৈদ্ধ্য স্বোজনালাঃ। প্রকাশ মুক্তাকল বজুর্কো বান্যেন গোন্দেক পূল্যাগৈঃ। পশ্চাচ্চ পারুমহাত্র নীলরহৈঃ সোম্যেট বৈদ্ধ্য স্বোজনালাগ বিলাধিক বিলাকরে৷ হপ্যে হির্থায়ঃ স্যাং। কিঞ্চ শুরুম্বাবালী স্যাং পুরের্ণ কুঞ্চানিচ দক্ষিণেন। বাসাংসি পশ্চাদ্ধ কর্ম্বাণি রক্তানি চৈবোভারতে৷ ঘনানি ইত্যাদি। ক্রোণ দংখাচেটকা গারীজোণাঢ়ক প্রস্থাঃ কুত্রক পলং পিচুঃ। শাণকো মাষকশৈচক ব্যাপ্র্বিং চতুর্গুণা ইতি। এবং বট্পঞ্চাশ্বিক প্লণত ছয়েন জোণাং স্যাং। তাদেনাভিবজেশ ক্রেচাহিল বিলাক বিলাধিক বিল

নপু বদ্যানশব্দে হৈত্ত হি বাং কর্ত্ত কালবিলাং কথং ন রুত্বান্ উচাতে পুল্পেরৈবেতা হ কাবেনিতি তদ্ ষ্টান্তি বলা কালং গঠতে রবশ্যক্ষমভিপ্রেতং। অন্টের অব ভ্যাদীন্যধ্যাস্তানি দ্ব্যাণি অর্থাং। গঠতের পরি ক্রি তিরু ও দের ভ্রে ভরে ভরে ভরে দুর্ভীন্ত ও পূর্বিদ্যাব সাধ্যাম অত তথা শব্দেন পূর্বত যথৈতি গম্যতে। যথা তথেতি পাঠা কচিং। ভূমি ভ্রাদিনীন্ত্রাদানং দৃষ্টান্ত পোষ পার্থনেবৈতি ব্যক্তি হা যথা কালাদিভি প্রাদিনি ভ্রাদৌনি ভ্রান্ত্রেব আল্পান্ত্র্ আল্লাবিদ্যায়। স্ক্রপজানেনের কিন্তা ভগবন্ত তোৰ ন্যত্তা। অত এব ত্রাদীত্যনেন গৃহীত্র্যাপ্যান্থনঃ পৃথভি, কেনাং। ত্রাত্ শ্রীনন্ত্রাক্রান্ত প্রবন্ধনা স্বাং ভগবত। পূল্র ব্যা জায়মানেনের সদ্যো ভগদি শোধিতং তথাপি তেন প্রম প্রেম্বির তংক্তমিতি সর্বেরাং নাদ্শাঞ্চ নহাল্লখনিতি ভাবং । ৩ ব

क्रममन्दर्धः।

পুর্ব্রপ্রেরেবেত্যাহ কালেনেতি। জ্বাণি ভূম্যাণীনি তত্র ভূমেঃ কালেনেত্যাদি জ্বেণ্। ৩॥ ৪॥ ৫ ॥ ৬ ॥ ৭॥.

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

ব্যোন্তরে। উত্তয়ে দশভির্জোণৈ মধ্যমং পঞ্চিম্তিং। ত্রিভিঃ ক্নিষ্ঠো, রাজেন্দ্র তিল্পেল্য প্রক্রিভিঃ। ত্রেণেসংখ্যাত খারী ব্যোগাঢ়কাং প্রস্থাং কুড়বঞ্চ পলং পিচুং। শাণকো মাধকশ্চেতি যথাপুর্বং চতুগুণা ইতি ॥২॥

্ আবশ্যক্ষ্য বিবিধদানাদিযুক্ত জাতকৰ্মনো গৰ্ভগোধক্ষ্য প্ৰাক্ বালক্ষ্য দৃষ্টাস্তান্ দীপকাল্ছাৱেগাহ্ কালেনোত কালাদিভি ৰ্জ্বাণি ভন্ধান্তি। তত্ত্ব কালেন ব্যুণিনীনি লানেন দেহাদীনি শৌচেনামেধ্য লিপ্তাঙ্গাদীনি সংস্কারৈ গর্ভাগীনি তপ্যা ইক্রিয়াদীনি ইজ্যা ব্যাস্থাদীনি দানৈ ধনাদীনি সম্ভটা মন:। আত্মাতাু্বিদ্যয়া প্রমায়ন: ব্রুপাঞ্ভবেন জীব:॥ ৩॥

সপ্ত তিলাচল রত্ন সমূহ, তথা স্থবর্ণ রসাক্ত বসনে আবৃত হইয়াছিল॥২॥

হে ভারত! গো হিরণ্যালি দ্রব্য মধ্যে কোন ২ পদার্থ যজ্ঞপ দানাদি হারা শুদ্ধ হয় তজ্ঞপ দানাদি যুক্ত জাত কর্ম সংস্কার হারাই গর্গুশুদ্ধি ইইয়া থাকে, এই নিমিত্ত নন্দ ঐ রূপ দান করিলেন। কলতঃ কোন ২ পদার্থ (ভূম্যাদি) কালবশতঃ শুদ্ধ হয়। কোন ২ পদার্থ (দেহাদি) স্নান দারা শুদ্ধি পায়। কোন ২ বস্তু (ভ্রমেধ্য লেপনাদি) শৌচ দারা শুদ্ধ হয়, কোন ২ পদার্থ (ইন্দ্রিয়াদি) তপসা হারা পৃত হয়। কোন ২ ব্যক্তি (ব্রাহ্মণাদি) যক্ত দারা পবিত্ত হন্। কোন ২ পদার্থ (দ্রব্যাদি) দান দারা শুদ্ধ হয়। কোন ২ পদার্থ (মনঃ প্রভৃতি) সম্বোধি শুদ্ধ হয়। তথা সাক্ষা দারা শুদ্ধ হয়। তথা সাক্ষা দারা শুদ্ধ হয়। থাকে ॥ ৩ ॥

শৌমসল্যগিরো বিপ্রাঃ সূত মাগধ বন্দিনঃ। গায়কা *চ জগুরে কু কু হোঁ। হুন্ ভ্রো মুহঃ॥ ৪॥ অজঃ সংমৃষ্ট সংসিক্ত দারাজির গৃহান্তরঃ। চিত্রধ্বজ পতাক। অক্ চৈলপল্লব তোর গৈঃ॥ ৫॥ গাবো র্যা *চ বৎসা *চ হরিদ্রা তৈল্র ঘিত।। বিচিত্র ধাতুর্ব হ্রক্ বস্ত্রকাঞ্চনমালিনঃ। মহাহ ব্রাভরণ কঞ্কোফীয় ভূষিতাঃ। গোপাঃ সমায্য রাজন্নানোপায়নপাণ্যঃ॥ ৬॥

शिभतवाभी।

সৌমসলাগিরঃ স্বাভিবাচকাঃ বিপ্রাদ্যোবভ্রঃ। তর স্তাঃ পৌরালি নাং প্রোক্তা মাগদা বংশশংস্কাঃ। বন্দিন খুম্ন প্রজাঃ প্রভাব সন্ধোক্তবং ॥ ॥

সংস্ঠানি সংসিকানিক দাবানি অজিবাণি অজনানি গৃহাওবাণি গৃহমধানিক যথিন্স তথা চিত্ধবজেৰু পতাকানাং অজনৈচল প্লবতো বানি চ তৈ ভূষিতঃ ॥ ৫ ॥

হরিরাতৈর ক্ষিত। লিপ্তা: বিচিত্রা ধাতব্য বহলজ্জ বস্তাণিস কাঞ্চন নালাশ্চালকার তথা বিদ্যান্ত বেষা তে তথা ভূতা গ্রাদ্যের বছুব্বিত্যব্য ॥ ৮॥

देवस्वद्रांस्वी।

্ডেষ) আনকি ভেনাঃ শুৰিব ভেনাশ্চ ছুদ্ভ্যশ্চ আনকভেনাশ্চ যুগাত এব হস্তাভ্যাং কাষ্ট্ৰিয়েন বানাজ্যে তে নেছঃ স্বাদেশৰ। সুক্রি তাম্ম স্ট্রেল্য্যঃ হর্ষ্ডবেশ ভেন্যুং তাল তাল্ডেপ্তেঃ ॥ ৪ ॥

সংশক্ষাজ্যাধনাদিনতো বিশেষে। বোধাতে। চৈলানি মণ্ডিত বস্ত্রাণি। অনাথ্যি। তত্র পতাকানাং প্রজো নালাকাবেণ সন্ধি বেশাং। চুয়িত ইতিধ্যাই।রাং। যদা প্রজঃ পুশুমালাঃ চিত্রাণি বিবিধানি যানি ধ্রজাদীনি তৈঃ সম্মন্যং ॥ ৫॥

চকাবৌ পূর্ম কৈমৃত্য প্রতিপাদকৌ তেন মহিষ্যাদ্বোহপুপেলক্ষ্যন্তে দুষা বংসতরা ইতি পাঠঃ <mark>কচিৎ।</mark>

श्रीविधनाधहक्रवाशी।

তবা বিপ্রাঃ সৌমস্কলাগিরঃ সৌমস্কলাং গীরু বেষাং তে এডভাশীকাদক। বভূদুঃ। ত্তাদ্যো জন্তঃ। ত্তাঃ পৌরাণিকাং প্রোক্তা মাগ্রা বংশশংস্কঃ। বন্দিনস্থনল প্রজ্ঞাং প্রতাব স্ত্শোক্তবঃ॥৪॥

কাণৌ সমাক মুঠানি পশ্চাৎ চন্দনপূজাদি রসৈঃ সংগিজানি ধারাণাজিরাণাল্পনানি গুঃমধ্যানিও বাল্পন্ বঃ। টিবল্পজ পতা-কাভাং তথা চিত্রাণাং জ্জাং চেলানাং চেল্পভানাং প্রবামাঞ্তি তিনিইণ তোরগৈঃ বিভূমিতো হভূদিতি শেষঃ॥ ৫॥

ক্ষিতা লিগা: ॥ ৬॥

সে যাহা হউক, তদনন্তর আক্ষাণগণ অভিবাচন আরম্ভ করিলেন। সূত (পৌরাণিক) মাগধ (বংশকীর্ভক) এবং দৃশী (প্রস্তাবানুরপ কথনশীল) লোকের। তব করিছে লাগিলেন। শেষে গায়ক গণ গান আরম্ভ করিল এবং বার্যার ভেরী ও জুন্দুভির ধ্বনি হইতে লাগিল॥ ৪॥

হে পরীক্ষিং! ব্রেজপুরীর সম্দায় দার, অজির এবং গৃহতল সম্মার্জিত ও জলসিক্ত হইল আর চিত্র বিচিত্র ধ্বজা স্কলে পতাকার মালায় তথা চেল বস্নু পল্লব এবং তোরণে ভূষিত হুইতে আরম্ভ হইল॥৫॥

অপর, ত্রজন্থিত গো, রুষ তথা বংস সকল, তৈল হরিদ্রার চল্চিত হইয়া বিচিত্র গ্লাডু, মর্রপুচ্ছ, মাল্য,বসন, ভূষণ, চোলক,তথা উঞ্চীতে স্থসজ্জিত হইয়া গোপগণ বিবিধ উপহার গ্রহণপূর্বক আদিতে আরম্ভ করিল॥৬॥ গোপ্যশ্চাকর্ণ্য মূদিতা বশোদায়াঃ স্থতোদ্ভবং। আত্মানং ভ্ষয়াঞ্জ ব্স্তাকল্লাঞ্জনাদিভিঃ॥ ৭॥
নবক্তুম কিঞ্জ মুখপকজভূতয়ঃ। বলিভিত্তবিতং জগাঃ পৃথুভোণ্যশ্চলৎকূচাঃ॥৮॥
পোপ্যঃ স্লম্মই মণিকুগুল নিক্ষকণ্য শ্চিত্তাম্বরাঃ পথি শিখাচ্যুত্মাল্যবর্ষাঃ।
নন্দালয়ং স্বলয়। ব্রজ্তীবিরেজু ব্যালোকুগুল প্যোধ্রহারশোভাঃ॥ ৯॥

শ্ৰীধরস্বামী।

আক্ষাঃ অলহারা:॥ १॥

নব কমুম কিঞ্জকৈ মুখি পছজেষু ভৃতিঃ শ্রীযাদাং॥৮॥

সুমৃষ্টানি উজ্জ্বানি মণিময়ানি কুগুলানি যাসাং নিষ্কাঃ পদকানি কঠেরু যাসাং তাশ্চ তাশ্চ শিথাভ্যশচু শানি মাল্যবর্ষাণি যাসাং তাঃ নন্দালয়ং ব্রহ্নতী এ জন্তঃ পথি বিরেজ্ঃ সবলয়াঃ কন্ধণভূষিতাঃ। ঝালোলৈঃ কুগুলাদিছিঃ শোভা যাসাং তাঃ॥ ১॥

देवस्ववत्त्रावन्रे।

গোপ্য: শ্রীন্দোদারা যাতৃ প্রভ্তর:। চশন্ধ উক্ত সম্ক্রয়ে। ততো গোপা আকর্ণ্যেতি পূর্বেণাপ্যম্ময়:। আসাং পশ্চাদ্বাবাহস্তঃপূর্বা-সাং। মুদিতা ইত্যানেন তেভ্যোহপি মোদ বিশেষং দুর্শয়তি যশোদায়া ব্রজ্যশঃ প্রদায়া অনপত্যায়া শ্রীব্রজেশর্যাঃ স্কৃত্যা উদ্ভব মুৎপত্তি নাকর্ণ্য এব মুদিতা স্তুস্যাং তন্মিংশ্চ নিত্য সহজ প্রেম সন্থাবাৎ অক্তএব ব্রাদিভিরাম্মান মভ্যয়ন্॥ ৭॥

নবকুৰুম কিঞ্জবাদিপ মুখপক্ষলানাং ভূতিঃ শোভা যাসাং ইতি তদানীমন্ত্রাগাবেশেন মুখশোভাতিশয় উক্তঃ। কিঞা বলিভি ম হারত্নিদিমের রক্ষতপাত্রান্ত্যপহারেঃ সহ তান্ গৃহীত্বা ইত্যর্থঃ। মোদ বিশেষ্মেবাহ ছরিত্মিত্যাতিনা। পৃথুদেশগোহিপ ছরিতং তথ্যঃ তত্র চলংকুচা ইত্যতিন্যস্য লক্ষণং সর্ক্ষণেংকণ্ঠাতিশয়স্যেতি জ্ঞেয়ং॥৮॥

ভক্তিবিশেষেণ পুনস্তাএব বৰ্ণন্ধতি গোপ্য ইতি শিখা ধত্মিলাগ্ৰাণি নন্দালয়ং ব্ৰজন্ত্য এব বিশেষতো বেজুবিতি তাসাং দেহাদি শোভাশত সম্পত্ত্যে সত্যামপি শ্ৰীনন্দনন্দন প্ৰেমসম্বন্ধেনৈব বিশেষতঃ শোভেতি তাবঃ ॥ २॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

নবেতি অত্যুলাসাৎ নবকুৰুম কিঞ্জাদপি মুখপকজ ভৃতি বাসাং॥ বলিভিকৃপহাবৈ: সহ ॥ ৮ ॥ ১ ॥

ঞীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

গোপ্য: শ্রীয়শোদায়া ষাতৃ প্রভৃতয়:॥ १॥

নবকুত্ব কিঞ্জাদপি মুথপন্ধকে ভূতি: শোভা যাসাং তাঃ। বলিভিঃ স্বর্ণমুদ্রা রক্তহারানর্য্য বস্ত্র নারিকেলাদি ফলাক্ষত দুর্কা চলন পূপামালাদ্যৈঃ স্বর্ণপাত্রস্থৈঃ স্বর্ণরসর্জ্জিত বস্ত্রাচ্ছাদিতৈ ব্যমপাণি গৃহীতৈঃ দহিতা ইত্যর্থঃ। পৃথু শ্রেণ্যোহপি ছরিতং জগ্মু ইর্বোৎস্ক্যান্ত্রেগ্রশাং॥৮॥

বণিতা অপি তাঃ পুন উক্তিভরেণাতৃপ্তাা বর্ণয়তি গোপ্য ইতি। শিখা ধন্মিলাগ্রাণি। এজতী এজিস্তাঃ ॥ ৯॥

গোপীসকলও মশোদার সন্তান জন্মিয়াছে শ্রবণ করিয়া অতিশয় ছফ হইল এবং বসন ও অঞ্জনাদি দারা আপনাদিগকে ভূষিত করিতে প্রবৃত্ত হইল ॥ ৭॥

অনন্তর বিপুল নিতৰা ত্রিবলি শোভিত সেই দকল গোপী বশোদার সন্তান দর্শনার্থ সত্তর গমন করিল। হে রাজন্। কঙ্কুম ও পদ্ম কিঞ্জক্ষ দারা ঐ স্বকল গোপীর মুখপদ্মে চমৎকার শোভা হুইয়াছিল। তরান্বিত হুইয়া যাওয়াতে ভাহাদের পীন স্তন চঞ্চল হুইতে লাগিল ॥ ৮ ॥

সেই সকল গোপীর কর্ণে উজ্জ্বল মণিময় কুগুল, কণ্ঠদেশে মনোহর পদক এবংকরে শোভন কঙ্কণ ছিল, আর তাহারা বিচিত্র বসন পরিধান করিয়াছিল। অধিকস্ত, তাহাদের মন্তকশিখা হইতে এক ২ বার পুস্পমাল্য বিস্তন্ত হইয়া পড়িতেছিল অতথাব নন্দালয় গমন করিতে ২ পথিমধ্যে তাহারা সর্বতোভাবে বিরাজমানা হইল। এবংচঞ্চল কুগুল পীনপরোধর তথা মনোহর হার দারা তাহাদের সকলেরই চমৎকার শোভা হইল॥ ৯॥

তা আশিষঃ প্রযুঞ্জানাশ্চিরঞ্জীবেতি বালকে। হরিদ্রা চুর্গ তৈলাদ্ভিঃ সিঞ্চন্ত্রোহজনমুজ্জঞঃ। অবাদ্যন্ত বিচিত্রাণি বাদিত্রাণি মহোৎসবে। কৃষ্ণে বিশ্বেখরে হনন্তে নন্দ্রস্য ব্রজমীয়ুষি। বোপাঃ পরস্পরং হান্টা দবি ক্ষার স্বতাম্বৃতিঃ। আসিঞ্জো বিলিম্পন্তো নবনীতৈশ্চ চিক্ষিপুঃ॥১০॥ নন্দো মহামনাস্তেভ্যো বাসোহলক্ষার গোধনং। সূত মাগধ বন্দিভ্যো যেহন্যে বিদ্যোপজীবিনঃ।

শ্রীধরস্বামী।

জন' সিঞ্চম্বাঃ অজনং উচ্ছপ্তরিতি বা॥ ১০॥

देवक वरकावनी।

. চির' পাখীতি তাসামত্যলাসোক্তিং ভয়াচ্চ তস্য সাক্ষিকীং সর্ক্ষ সম্পতিমায়না সঙ্গতি মায়নি প্রীভিং চাশাসত। অলাথে কিঃ। অত্যপ্তবাশাং বালক ইতি তদানীং তবিং স্তদেবোচিতনিতি ভাবঃ। যথা বালকেহপি ততক প্রেম স্বভাবাদেব ইতি। অজনং ভগ্বস্ত মুক্ত ওং উতৈ মঙ্গল কণীত বন্ধনে বা বালকনস্লার্থং তনকীপ্রন্ন, জীবেতি পাঠস্ত তাসামতিকারণ্যাক্তিঃ। উপলক্ষণকৈতৎ সংক্ষোঃ॥

অবাদাস্থ বাদকৈরিতি শেবং বিচিত্রাণি। ততং বীণাদিকং বাদামানদ্ধং মুরজাদিকং। বংশ্যাদিকস্ক শুষিরং কাংস্যতালাদিকং ঘনং ইতি চতুর্বিধানি। একৈকসাবোন্তর বৈচিত্রা বাদন বৈচিত্রাত বিচিত্রাণি কিখা অবাদ্যস্ত ব্রজবাদিত্রের বাদ্যমানের জগতি যানি বাদিত্রাণি তান্যশি স্বরং জনৈশ্চ বাদিতানি বভূব রিত্যর্থং। তত্র হেতু ম হোৎসবে যাবছংসবোপরি বিরাজমানে তন্মহে তত্রাশি হেতবং ক্ষেপ্ত জগচিত্রাকর্ষক মহোত্মা তথা স্বয়নবতীর্থে ভগবতি বিখেশবে সর্প্ব প্রতি অনত্তে স্ক্রপৈশ্বর্য মাধুর্ব্যরপরিচ্ছিন্নে নন্দ্র্য ব্রজং পরম প্রেমানন্দায়ত সমুদ্রত্যা পরমং নিজোচিত পৃদং স্বর্থি তিমিন্ধু দ্যুতীত্যগং। আগত ইতি কচিৎ পাঠং॥

ক্টাঃ সম্ভো দধ্যাদিভিঃ প্রস্পবং আ সম্যক্ সিঞ্চয় নবনীতৈশ্চ প্রস্পারং বিশেষেণ লিম্পন্তঃ প্রস্পারং চি**ক্ষিপ্ঃ বলেন প্রচছন্ন**তয়া বা পিডিল প্রস্কেশ্বলন্নামান্তঃ॥ ১০॥

নক ইতি ব্থাকং। তেভো গোপেভো গোপীভাশ্চ তথা স্তাদিভাশ্চ বেচান্তে বিদ্যোপজীবিনঃ গায়কা বাদকাশ্চ তেভোঁপি বাস ক্রমসন্ধঃ।

বাহীকুলোসেনাশীঃ। জীবেতি পাঠস্বতিকারুণ্যেন। **অজনং শ্রীবিষ্ণুং মঙ্গলার্থং**॥

অবাদ্যস্ত জৈলক্যে। তত্র হেতুং ক্ষেত্যাদি নন্দদ্য ব্রঙ্গং। পরাকাঠাপন্ন প্রেমস্বাস্তদভীইলীলাঘোগ্যমিত্যর্থং। পরম্পাবং চিক্ষিপুং স্থল্যানাস্থং॥ > • ॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

স্তিকান্তর্গ্রং প্রবিশ্য চিরং পাহীতি রা**লপ্তরেন রাজ। ভূখেতি ভাবঃ। জীবেতি পাঠে বাংসল্য কারুণ্যোদরঃ। ততো** বহিনিস্ত্য হরিজাদিভিঃ প[ু]স্পুরং জনং সিঞ্জ্য উ**টচে র্জন্তঃ**॥

অবাদ্যস্তেতি ত্রিলোক্যামের যতঃ ক্লফে বিশ্বল্যৈবেশ্বরে তানি বাদ্যান্যনন্তান্যের যতো হনতে ইতি ॥

চিক্ষিপু: প্রয়াসার্থং বালন প্রচন্দ্রভারা পিচ্ছলপত্তে খালয়ামান্ত: ॥ ১০ ॥

মহামনাঃ মহোদারমনাঃ প্রাদাৎ বেখনো তেভ্যোথপি বিদ্যাঃ নৃত্য গীত বাদ্য শক্ত শাস্তাদ্যাঃ তৈত্তৈরিতি যানু যানু অযাচতেতার্থঃ।

দে যাহা হউক, সেই সকল গোপী নন্দনিকেতনে উপনীত হইয়া 'চিরজীবী হও' বলিয়া বালকের প্রতি আশিষ প্রায়োগ করিতে লাগিল, পরে হরিদ্রা চূর্ণ ও তৈল জল দিয়া সেচন করত সেই অজন ভগবানের গুণগান করিল। হে রাজন্! সেই মহোৎসভব বিচিত্র ২ বাদ্য দকল বাদিত হইয়াভি।। অপর বিশ্বের ঈশ্বর অনন্ত ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ নন্দত্রকে অবতীর্ণ হওয়াতে যাবভীয় গোপ আনন্দে প্রাকৃত হইয়া দ্বি ত্রু স্বৃত জল লইয়া পরস্পর সেচন ও নবনীত ছারা বিলেপন করিয়া, কেপণ কবিতে লাগিল॥ ১০॥

বহামনা নন্দ তাহাদিগকে বহু ২ বসন ভূমণ ও গোধন প্রদান করিতে লাগিলেন। খপর স্ত

তৈত্তিঃ কামৈরদীনাত্মা যথোচিত্রশপূজয়ৎ। বিজ্ঞোরারাধনার্থায় স্বপুত্রস্ভোদয়ায়চ। রোহিণী চ মহাভাগা নন্দগোপাভিনন্দিতা। ব্যচরদিব্য বাসঃ স্রক্ কণ্ঠাভরণ ভূবিতা॥ ১১॥

শ্রীধরস্বামী।

তেতাঃ প্রাদাল্যথোচিত মন্যানপাপূজ্যং॥ ১১॥

देवस्व वर जायनी।

আদিকং প্রাদাদিতি শেষঃ। তত্র ধনং স্বর্ণ রূপ্যাদি। যথোচিতমিত্যন্তর পদ্য পদেনাব্রাপ্রিয়ঃ। স্বত্ত এব স্কদীনাস্মা উদাব চিতঃ সম্প্রতি মহামনা ইতি পুনক্তিঃ পূর্ববং প্রিক্ষমনক্ষেন তত্তীদার্য বিজ্ঞাদি ৬ণানাং মহরতিশয়িতাভিপ্রায়েণ ন কেবলং তাবতা তৃপ্তবান্ কিঞ্চ। তৈত্তৈরিতি তৈত্তৈঃ কামেঃ সহ প্রশ্চ বে যে স্বৈরং প্রাথিতা স্তবং কামদান পূর্ব্বকং সর্বাং তান্ যথোচিতং জাতি বদ্যোবিদ্যামূরূপং অপূজ্যং অক্ চন্দন তাম্বূল প্রোংসাহনাদিভিঃ সন্মানিতবাংশ্চ। দানাদে রুদ্দেশ্যাহ বিক্ষোরাধনস্য যোহ্যাঃ ফলং তং সন্তোধ তথ্য পর্ম বৈক্ষরত্বাং কামিতার্থানত্যকামত্বাচ্চ নহপূর্ব মালায় তথা স্বপ্ত্রভাত্যাদ্যাঘ্য সনেন কর্মণা শ্রীবিষ্ণঃ প্রদীদ্ত তং প্রসাদেন মম প্রাভ্যাদয়ো ভবছিতি সম্মার্মিত্যর্থং। অথচ বিক্যোবাধনস্য বং ফলং তদ্ধপায় তদভূদেরাম্ম তদপ্তের রূপ গুণ শীলেম্বর্য প্রকাশনায় ইতি পদরেষেণ যদেবং মনন প্রাপ্তঃ তচ্চ তদ্য বাগ প্রাপ্তত্থাৎ প্রম মহদিতি প্রকর্ণার্থেনত মুনীলঃ দিদ্ধান্তমাপি বিন্যান্থদিতি জ্বেং। অত্র চ শন্দোহপ্যর্থে সচ ছল্ল ভবং স্ক্রাতি নন্দঃ কিমকরোয় স্কন্ ইত্যাদেঃ নেমং বিবিঞ্ ইত্যাদেঃ মুবাং শ্লাব্যত্মাবিত্যাদেচ্চ।

রোহিণী রোহমতি জনমতি ব্রজম্বথং তছীলেতি রোহিণী অদ্যৈব স্থনাম নিক্জি সাক্ষয় প্রমোৎকর্ষং প্রাপ্তেতি ভাবঃ সাচ মহাভাগা তাদৃশ স্বীয় প্রোদমেন তস্যাপি পরম প্রেয়স্যা নিজ প্রাণসহচর্যাঃ প্রীয়শোদায়ান্তনয়স্যাপ্দেবেনত তত্ত্বাল্যাদিলীলা মাধুর্য্য লাভেন চান্যাভ্যঃ প্রীবস্থদেব পদ্মীভ্যঃ প্রীদেবকীতশ্চ ভাগাবিশেষবতী স্বদাগমন মাত্রেণ মন্ত্রেই মন প্রত্রো জাত ইতি শ্রীমন্ধলাভিধ গোকুলরাজ্বনাভিনন্দিতা সতী গোপোভ্রপেহপীত্যমরঃ। প্রীমন্ধলন গোপেশ্চাভিনন্দিতা সতীতি বা মহ্রাসেনৈব তদ্ধতানি দিব্যানি মর্ত্য হল্পভানি যানি বাস আদীনি স্বয়পি তত্ত্বাদেবৈব সর্ব্ধ হৃঃখং বিশ্বত্য তৈর্মাণ্ডিভা সতী ব্যচরৎ মহোৎসবে তপ্তিন্ প্রীত্যা বিবিধ

ক্ৰমসন্দৰ্ভ:

তৈরিতি বিকোরারাধনস্য যোহর্থ: ফলং তৎ সম্ভোষ:। তদর্থং স্বপ্তরাভাদ্যাথ্ঞ। অনেন কর্মণা বিফু: সন্তব্যত্তন চ মং-পুল্লস্য শ্রেষো ভববিতি সক্ষমন্ত্রতার্থ:। তদাগমনেন জাতাভীষ্টবাদ্দশগোপাভিন্দিতা ব্যচর্মহোৎস্ব কর্মার্থং ততঃ॥১১॥১২॥

🖺 বিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

যথোচিতং বিদ্যা গৌরবাদিকমনতিক্রম্যেত্যর্থ:। দানাদেঃ ফলমাহ। বিষ্ণোরারাধনদ্যার্থ: বিষ্ণুসভোষ স্তব্যৈ ত্যাপি ফলং স্বপুত্র-স্যাভ্যাদয়:। অনেন দানাদি কর্মণা বিষ্ণু: প্রসীদতু। বিষ্ণো: প্রসাদেন মৎপুত্র: কুশলী ভবস্থিতি সম্বর্গনিভার্থ:। চকারেণ নবগ্রহ দিকপালাদীনামপি স্বপুত্রং প্রতি প্রসাদার্থ:॥

মহাভাগা বস্থাদেবপদ্বীভাঃ সর্ব্বাভাগিপ শুরুষ্ণ বাল্যালীলোৎসব লাভাদিতি ভাবঃ। নন্দগোপেন নন্দরাজেন গোণো ভূপে২পীভাসরঃ। অভিনন্দিতা দ্বনাগমন মঙ্গলেন এব মংপুজো হয়মভূদিতি। বাচরৎ সমাগত জীজন সন্মাননার্থমিতার্থঃ। দিব্যবাস
আদিভিঃ শ্রীবনোদানন্দাভাাং দত্তৈ ভূবিতা পত্যু ব্যানাদি ছংখং স্বস্য চ তাছছেদাদি ছংখং রুষ্ণজন্মোৎসবানন্দেন বিস্কৃতিবেতি
ভাবঃ॥ >>॥

মাগধ বন্দী তথা অন্যান্য বিদ্যোপজীবী যে সক্ল ব্যক্তি গিয়াছিল তাহাদিগেরও যথাভিল্ধিত ততদুর্য দারা যথোচিত পূজা করিলেন। আর মহাভাগা রোহিণী দিব্য বসন, মাল্য তথা কঠাভরণে ভূষিতা হইয়া ভগবানের আরাধনা এবং স্থীয় তনয়ের অভ্যুদয় নিমিত্ত যথাশক্তি দানাদি করিলেন। তদ্দর্শনে নন্দ এবং অন্যান্য গোপগণের যৎপরোনান্তি আনন্দ জ্মিল॥ ১১॥

তত আরভ্য নন্দস্য ব্রজঃ সর্বব সমৃদ্ধিমান্। হরেনি বাসাত্ম গুণৈরমাক্রীড়মভূম্প ॥ ১২ ॥ গোপান্ গোকুল রক্ষায়ৈ নিরূপ্য মধুরাং গতঃ। নন্দঃ কংসস্য বার্ষিক্যং করং দাতুং কুরুছহ ॥১৩

শ্রীধরস্বামী

তরে নিবাদেন যে আতাুনি গুণাজৈবনায়া আক্রীড়ং বিহারস্থানং॥ ১২॥ কাষিক্যং প্রতিবর্ধং দেৱং॥ ১৩॥

देवस्वदङावशी।

ব্যাণাবেণ ইতস্ততো বদ্রাম ইতার্থ: ♦ এতদগ্রেৰ স্বগৃহান্ত: শায়িত্স্য ত্রীয়াভিনৰ বালক্স্যাতানুক্তিৰিতি ভেষ্ণ ॥ ১১ ॥

নহু সদ্য এব ধেহু নিবৃত ঘ্রদ্য সমাগলধার সম্পাদনং সপ্ত তিলাজ্যানি সাধনং এজাসংখ্যের ধেহু ব্যাদ্যলম্বনং বহু ব্রালম্বনাদ্দিনক কথং কৈন্ত্রিত্রপেক্ষায়ামাই তত ইতি। প্রাক্ বহুত্রর মধুরা ভগবান্ যত্র নিতাং ইত্যাদি নাায়েন যোহসৌ গোপেরু তিঠিওীত্যানি তাপনীক্ষতা জরতি জননিবাস ইতি প্রীয়ার ইজ্যোগবামিতি ভগবান্ গোকুলেখর ইতি প্রীক্তরাজ্যাচ হরে নিবাসভুত্যে যুহায়া তথ্য বহুত্ব যে গুলাইজঃ সর্ব্ধ সমৃদ্ধিমান্ রছঃ তত ইতি তত্তস্য জন্মারভ্য তু রমাক্রীড়মভূং বহুব। চিন্তামিনি প্রকুর সাম ক্ষর বন্ধ লক্ষারতের ব্যালগবাস্থা: লক্ষ্যীসহ্রশতসন্ধ্রমান্য গোবিদ্দাদিপুক্যং তমহং ছলামি ইতি রক্ষসংহিতার্সাবেণ তত্তনাল্রানে অয়ং ভগবন্ধিত্যপ্রেয়ীত্রা সেবাজেন। নাযং প্রিয় ইত্যাদে। বৈকুঠ প্রীবিজ্যেন তাস্ক অর্থোযিদাদি স্ব্ধান্য যোধির পরিয়াবেণ চ এজদেবীনামের পর্য রমা রূপাণাং ভাষামিনি পর্য রমায়াঃ প্রীরাধান্নান্চ ভদানীমেবাবিজ্ঞাবিদ্ধান্ত স্থান মণি বছুবেতার:। যদিচ তত আবিভা নন্দ্যা ব্রাহা স্বর্ধ সমৃদ্ধান্য মন্ত্র হির্মান্ সন্ত্রে বিরাসাত্র গুলি ব্রামাণাং তাসামপ্যাক্রীড়ত্যাসীদিতি ততো জগল্লন্মী দৃষ্ট্যাপ্যাক্ষিক সর্ব্ধ সম্পত্তি সম্ভবাত্তনানীং তত্র কিমিবাসভবং যত্র চিন্তামনি নামিনি ভগবন্ধং প্রাকট্যমাত্রং জন্ম হাচিতং রমাক্রীড় শন্ধেনচ সর্ব্ধ সমৃদ্ধিমন্ত্র বাচ্যে পৌনক্রতাং স্যাং ব্যাহ্য ক্রীজ্বে বাচ্যে প্রিনিল্যাত্র ক্রান্ত্র হির্মাত্র বাচ্য বির্মিত তির বির্মিত সিদ্ধান্ত সামিল বির্মিত তথাদিবিরাক প্রতিত যাধান্ত্রকং নাদৃত্য। ১২ ॥

পূৰ্ক্মপুত্ৰকেন ধনাদৌ মমহাভাৰতঃ জ্ৰীনন্দস্ত কংসান্তম্মকিঞ্চনগোৰ নাদীং অধুনাতৃ পুত্ৰ মহারত্ন প্ৰাপ্তা। সৰ্ক্ষণং প্ৰচা গুদকাৰ্থ ব্যগ্ৰঃ সন্ গুঠতৰ ভয় সমাধানাৰ্থং ৰাজধানীং শীল্পং অৱমেৰ গত ইত্যাহ গোপানিতি নিৰূপ্য নিৰ্ভা বাৰ্ষিক্যং প্ৰাৰণ্য্য বৰ্ষা-স্কৰ্মবন্ধক হাত্ৰদৈৰ দেৱং। তে কুৰুদ্ধহৈতি যথা কুককুল সন্তানিক হেছে। তব ৰক্ষাৰ্থং প্ৰীম্ধিষ্টিয়াদয়ো ব্যায়। সংগতি ভাৰঃ॥ ১৩॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

স্বলৈকে জাতে পূতনাদি ছ্টগণাং কংসাং ভীতা। শীৰ্তমেৰ কৰং দাতুং॥ ১০।

শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

নম্ কুবেরেণাপ্যশক্যং নরাণাং কামিতপুরণং শ্রীনন্দরাজেন কথং হৃত্মিত্যত আহ তত ইতি। হরেনি বাসভূতস্যাত্রনো গুণৈ ব্রহাং সর্বসমূদ্ধিমানের সদা। তত আরভ্য তুরমায়াং সর্বা সম্পান্তেরাক্রীড়ং ক্রীড়াম্প্রনমভূৎ। বদি সর্বা সম্পান্তিবের নন্দভবনে ক্রীড়িতুমারেভে তদা ক্সা দেয় বস্তুন স্তুক্রাভাব ইতি ভাবং ॥ ১২ ॥

চিরাৎ সর্ব্যনোহর পুজোৎপত্তা। প্রাপ্ত মহানিধিরিব শ্রেয়াংসি বহুবিয়ানীতি বিমৃশ্য শ্রীনন্দরাজো যথা দেব পিত দিক্পাল গ্রহানীতি বিমৃশ্য শ্রীনন্দরাজো যথা দেব পিত দিক্পাল গ্রহানীতি বিমৃশ্য শ্রীনন্দরাজা যথা দেব পিত দিক্পাল গ্রহান্প্রার্থ ব্যানিতিঃ প্রাদ্যিত্থ বাহিক করদান্মিষেণ তংসমীপং গ্রহান বিল্লকে ইন্ডাহ গোপানিতি॥ ১৩॥

হে রাজন্ ! ঐ সময় হইতে গোপরাজ নন্দের ত্রজপুরী সমস্ত সমৃদ্ধিতে সম্পন্ন হইয়াছিল। অধিকস্ত ঐ পুরী তগৰান্হরির নিবাস স্থান হওয়াতে নিজগুণে মহালক্ষী রমার বিহার ভূমি হইয়া
উঠিল॥ >২॥

সে যাহা হউক, তদনন্তর নন্দগোপদিগকে গোকুল রক্ষার্থ নিমুক্ত করিয়া কংসের প্রাপ্য বার্ষিক রাজস্ব প্রদান নিমিন্ত মধুরায় গমন করিলেন ॥ ১৩ ॥ . বস্তুদেব উপশ্রুত্য ভ্রাতরং নন্দমাগতং। জ্ঞায়া দত্তকরং রাজ্ঞে যথো তদবমোচনং। তং দৃষ্ট্যা সহসোধায় দেহঃ প্রাণমিবাগতং। প্রতিঃ প্রিয়তমং দোর্ভ্যাং সম্বজ্ঞে প্রেমবিহ্বলঃ। প্রতিঃ স্থুখ্যাসীনঃ স্পৃষ্ট্যানায়মাদৃতঃ। প্রস্কুধীঃ,স্বাত্মজয়োরিদমাহ বিশাস্পতে।

শ্রীধরস্বামী।

ভাতবং স্থায়ং তদ্বমোচনং তদ্য বৃদ্ধি স্থানং॥ ১৪॥

देवस्ववर्ण्डायनी ।

উপশত্য জন প্রম্পরেশ গ্রাহা শ্রীবল্লবেজ্না দর্শ জনাদৃত্যাং। ততশ্চরশ্বারা রুঁজে কংসারা দত্তকরং চ জারা। অন্যথা বাগ্রাটিও ত্যা স্থা গোষ্ঠাসম্ভবাং লাতবং বৈশ্বক্সভাষাং শূর বৈমারের লাতুর্জাত্রাণিতি মধ্বাচার্য্যাং। তথোক্তং বল্পবারের লাতুর্জাত্রাণিতি মধ্বাচার্যাঃ। তথোক্তং বল্পবারের বল্পবার স্বার্থা করে বাং নিস্ট্রং স্চাস নন্দাথা উতাস্য ভার্যা। নালা বশোদা সচ শূব তাত স্কৃত্য্য বৈশ্বা প্রভাবেশ্ব গোপ ইতি। বৈশ্যাপ্রভব ইতি পিতানহা স্বজাতিয়াং অত্থব স্বান্দে বাদবানাং হিতার্থার স্বতো গিরিবরে। নরা ইতি শ্রীভগ্রেলার্যা। বাদবেশ্বি সর্বের্থি ভবজো মম বল্লভাইতি হরিবংশে তদ্বাতৃন্ প্রতি শ্রীরাম বাক্যঞ্ব। তস্য অব্যোচনং শ্বানিকং অব সম্প্রান্ত্রাত ব্রুত্ব কৃত্যবিষ্ঠিত প্রস্থাপ্রিতুনিজ্যাচ॥

তং দৃষ্ট্ ইত্যানৌ নন্দ ইত্যধ্যাহার্য্যং তত্ত কংসভ্যাদিনা ভ্রন্তাগ্যমনাসম্ভবেহপি সহসৈবাগতং তং দৃষ্ট্ । যথা সহস্ সপদ্যেব উথাগ প্রীতঃ লব্ধং প্রমানন্দঃ তত্ত প্রেমাবিবশং ক্ষপাদি বিকারেরাকুলঃ সন্ যতঃ প্রিয়তমং। যথা ততঃ প্রেমাবিবশং ক্ষপং বছুব। তত্র প্রীনন্দ স্তমাগতনিত্যেতাবত্যংশে দেহং প্রাণমিবেতি দৃষ্টাস্তঃ নতু দৃষ্ট্ ভ্যাদ্যংশেহপি তত্রাসম্ভবেনাব্যাপ্তঃ। তত্ত তং দৃষ্ট্ ইত্যাদিকং সর্বাং যোজ্যিয়া পশ্চাৎ কঃ কিমিবাগতমিত্যুট্ল্য যোজনীয়ং দেহং প্রাণমিবেতি। বর্ণজ্যেষ্ঠ্যাপি প্রীবস্থদেবস্ত প্রীনন্দেনামন্ত্রত্থাৎ বয়সামুক্তরং লক্ষ্যতে। তচ্চ পুন জনিব্যাণাপত্যস্ত বচসা ব্যক্তী ভবিষ্যতি দিষ্ট্যা ভ্রাতঃ প্রবয়স ইত্যাদিনা॥

ততশ্চার্থাৎ শ্রীনন্দেন পাদ্যাদিনা পূজিতঃ শ্রীবস্থদেবঃ। তচ্চ স্ববাদাগতশ্বং। অনামশ্বং কুণলমিত্যর্থং সবিনয় বচনাদিন। আদৃতশ্চ সন্। ইদং বক্ষ্যমাণমাহ প্রসক্তধীরিতি বক্ষ্যমাণস্থ সর্বস্থাপি পুত্রার্থকত্বাং। স্বশব্দেন তদানীং তৎসম্প স্বভাবেন তক্ত ভগবদ্ধি মিশ্রত্বেংপি বাংস্বামেবাসীদিতি ভাবঃ। তত্র শ্রীশুকেন স্বামুমোদনঞ্চ ব্যঞ্জিতং বিশাম্পতে প্রজানাথ॥

क्रगमन्तर्जः i

উপশ্রত্য পরম্পর্য়া শ্রন্থা। পশ্চাদূতমুখাৎ দত্তকরং জ্ঞান্থা অস্য পূর্বাং গমনং পুশ্রসম্বন্ধেনোংকণ্ঠাবিশেষাং। প্রাতবং পিতৃব্যজং। তদেতচ্চতুর্থ সন্দর্ভে পঞ্চশশোত্তরশততম বাক্যে দ্রষ্টবাং। দৃষ্ট্র্ম গ্রীতঃ স্বস্বজে তদক্ষসঙ্গাচ্চ প্রেমবিবশো জাতঃ। অত্র বর্ণ কনিঠেনাপি শ্রীনন্দেনানমস্কৃত্রান্তস্য জ্যেষ্ঠবং গম্যতে। আদৃত্যে বিনয় বাক্যাদিনা। স্বাত্মজ্যোরিতি তস্য বাৎস্লাং স্চিতং।

শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

ভাতরং বৈশ্যকন্যায়াং শ্বি বৈমাত্রেয় ভাতৃজাতথাদিতি ভারততাংপর্য্যে শ্রীমধ্বাচার্য্য বচনৈক্তং অন্ধবাক্যং তথ্য ময়া স বরং সংনিক্টঃ সচাস নন্দাথা উক্তাশ্য ভার্যা। নামা বশোদা সচ শ্রতাত স্বত্স্য বৈশ্যাপ্রভাবেংথ গোপ ইতি বৈশ্যাপ্রভাব ইতি পিতামহাভিজাতিবংং। অতএব স্থানে । বাদবানাং হিতাথায় ধতো গিরিবরোময়েতি ভগবদাক্যং। বাদবেষু চ সর্কেষু ভবস্তো মম বল্লভাইতি তদ্ভাতৃন্ প্রতি রামবাক্যঞ্। তদ্বমোচনং তদ্য ব্দতিস্থানং॥

তং বস্থাদেবং সম্বজে নন্দঃ নতু নমশ্চকার বয়সা ততৈ। জোঠজাং ॥
ভাহ বস্থাদেবঃ ॥

বহুদেব শুনিতে পাইলেন রাজধানী মধ্যে আপনার পরম মিত্র নন্দ আসিরাছেন অতএব রাজসমীপে কর প্রদানের সম্বাদ অবগত হইবা মাত্র তাঁহার বাসম্বলে গমন করিলেন। হে রাজন্! প্রাণ আগত হইলে দেহ যদ্রপ উথিত হয় প্রিয়মিত্র বহুদেবকে দেখিবামাত্র তল্তাপে নন্দ সহসা উথিত হইলেন এবং প্রীত ও প্রেম্বিহল হইয়া প্রিয়তমকে বাছৰয়ৰারা আলিকীন করিলেন। তদনন্তর বহুদেব প্রতিত হইনা স্থাসীন হওত আদরপূর্বক অনাময় জিজ্ঞাসিরা আত্মজম্বের চিত্ত আসক্ত থাকাতে নন্দকে সুখোধিয়া বলিতে লাগিলেন মিত্র। তুমি অধিক বয়স পর্যান্ত অপুক্রক ছিলে তোমার সন্তানাশা এক

দিষ্ট্যা ভ্রাতঃ প্রবয়দ ইদানীমপ্রজন্য তে। প্রজাশায়া নির্ত্তন্য প্রজা যৎ সমপদ্যত ॥ ১৪ ॥ দিষ্ট্যা সংসারচক্রেহস্মিন্ বর্ত্তমানঃ পুনর্ভবঃ। উপলব্ধো ভবানদ্য স্থলভিং প্রিয়দর্শনং॥ ১৫॥ নৈকত্র প্রিয়দন্বাসঃ স্থলাং চিত্রকর্মণাং! ওঘেন ব্যুক্ষানানাং প্রবানাং প্রোত্সো যথা॥ ১৬॥

वीशवचामी।

পুনর্ভনঃ পুনর্জাত ইব তত্ত্র হৈতু গর্ত্তবিশেষণং সংসারচক্রে বর্ত্তমান ইতি । ১৫॥

ছল্ল ভত্মেবাহ নৈকত্ৰেতি প্ৰিয়শ্চাসৌ সমাসশ্চেতি হে প্ৰিয়েতি বা শ্ৰোতস ওবেন নীয়মানানাং প্লবন্ধীতি প্লবাঃ তৃণ কাঠাদয় তেষাং যথা একত্ৰ স্থিতি ন'ক্তি তত্ত্বংগ ১৬॥ •

বৈষ্ণবভোষণী।

দিষ্ট্যেতানেন বহস্ত দ্ত প্রস্থাপনং গমাতে বছল যজ্ঞাদি প্রস্থাবৈদ্যপ্রস্থণতেঃ প্রজামাত্রসাশাস্থা নিবৃত্তগাপি ইদানীং যৎ প্রজা সমপদ্যত পরমোত্তম পুত্রত্বেন সম্পন্ধতার জাতেতার্থ: এতদিষ্ট্যা সোহয়ং সিদ্ধান্তঃ সরস্বতীসন্থানঃ। স্বমতে তু চ্ছলেনৈব তথোকং সমাগপ্রাপ্যতেত্যেবার্থ: প্রজ্ঞেত্যেব বা ছলোকিঃ সন্থতি মাত্রার্থন্ব। অত্রৈবং বিবেচনীয়ং অনেন তদভিপ্রাম্বাজানাদেব প্রজামাত্রাশা তক্ত দর্শিতা। তক্ত তাদৃশ প্রজায় এবাশা প্রাগাসীৎ কলেন ফল কারণান্ত্রমানাৎ অত্রএব হল্ল ভত্ত জ্ঞাপনায় বিলম্বোপ্যভূৎ তথা তক্ত প্রব্যম্বাদিকমপি তজ্জ্ঞাপনং তু পুত্রতাপল্লে শ্রীভগবতি সেহভরোদ্দীপনার্থং। লোকে হি বয়োহধিকস্থানপত্যন্ত বহু প্রব্যান্ত্রান্তমে হত্যন্ত স্লেহো দৃশ্রত ইতি॥ ১৪॥

অদ্য দিট্যা ভবাত্বপলন যুক্ত প্রিয়দর্শনং ছল ভং। নমু মমতু অবশস্ত ন ছল ভবং তত্রাহ পুনর্জাত ইব ভবানিতি তচ্চ কুতঃ সংসারচক্রে বর্ত্তমান কলে কলে মৃত্যুসন্তবাদিত্যর্থ:। এতচ্চ অনিষ্ঠাপলীনি বন্ধ্যদানীতাত উক্তমিতি তেষামভিপ্রায়:। যবা সংসারচক্রে বর্ত্তমানো ভবাল্লিরেব জন্মনি পুত্ররূপেণ পুনর্জাত ইব দিষ্ট্যোপলন:। যতঃ প্রিয়মাত্রস্য দর্শনং ছল ভং কিমুবৈততাদৃশানন্দ
যুক্তস্যেত্যর্থ:। যবা দৃষ্ট্যা ভত্তং কথমন্দ্রিন্ সংসার চক্রেহদ্য পুনর্ভবো জবৈশ্ব বর্ত্তমানঃ মমেত্যর্থাৎ যতো ভবানদ্য উপলব্ধা দৃষ্ট ইতি ভত্ত
হৈত্ত্ত্ল ভিমিতি॥ ১৫॥

একঅ সংবাসঃ সদা স্থিতি ন স্যাৎ তত্ত্ব হেতু শ্চিত্তেতি ব্যুহ্মমানানাং বিবিধং নীয়মানানাং বহু প্রাপ্ণে॥ ১৬॥

ক্রমসন্দর্জ: i

তত্র তস্য প্রজারা আশা ন সাধারণ্যা: কিন্তু তাদৃশ্যা এব অন্যথা তদপ্রাপ্তে: ॥ ১৪॥

পুনর্ভবো জন্ম বর্ত্তমানো হতুৎ নমেত্যর্থাৎ তত্ত্র হৈত্যু উপেতি। সংসারচক্রেহন্মিন্ প্রিরদর্শনং ছন্ন ভিমিতি॥ ১৫॥ সংবাসঃ সদান্ধিতিঃ॥ ১৬॥

अविश्वनाथहळ्ळे ।

প্রবরসো বৃদ্ধন্য প্রো জাত ইত্যুক্তে নিথোজিঃ কন্যেত্যুক্তে নন্দস্যাপ্রতীতি রতঃ প্রজেত্যপত্য বাচক শব্দ প্ররোগঃ। মৎপুত্র ন্যাসং স্বক্ষ্যা চৌর্যাঞ্চ কথঞ্চিরন্দো জামাতি নবেতি শঙ্ক্যাপি তছকে প্ররোগঃ॥ ১৪॥

• দিট্টোতি বন্ধনাদি ক্লিষ্টস্য মম পুন ৰ্জবো বৰ্ত্তমামোহরং পুনর্জনৈত্রাদ্যাভূদিত্যর্থ:। বতো ভবাহপদন ইত্যেভাবৎকাদপ্যান্তমহং ভবদম্পদ্যভাস্কৃত ইবাস্মিতি ভাব:॥ ১৫॥

নংখবঞ্চেদাবামেকজৈব বসাৰ শুত্ৰাহ নৈকজেতি হে প্ৰিয়। ওখেন শ্ৰোতসো বেগেন বৃ্ছ্মীনানাং বিবিধং নীয়মানানাং প্লব-স্তীতি প্লবা স্থাকাঠানয় স্তেয়াং ॥ ১৬ ॥

প্রকার নিরুত্ত হইয়াছিল, একণে যে তনয় লাভ করিয়াছ, ইহা তোমার পরম ভাগ্য॥ ১৪॥

সংখ! যদিও ভূমি এই সংসার চজে অবস্থিত ছিলে, তথাচ অন্য তোমাকে ভাগ্যক্তমে পুনরুৎরের ন্যায় দেখিতে পাইলাম, কারণ প্রিয়দর্শন অতি ভূমাভ ॥ ১৫॥

হে প্রিয়! জোভঃপ্রবাহে নীয়মান তৃণ কান্তাদির যজ্ঞপ সর্বাদা একত্ত ছিতি হয় না, তেমনি যে সকল হছদের বিভিন্ন ও বিচিত্র কর্মা, তাহাদের পরস্পার একত্র ছিতি ঘটে না॥ ১৬॥ কচ্চিৎ পশব্যং নিরুজং ভূর্যামু তৃণ বীরুধং। রহম্বনং তদ্ধুনা যত্তাস্দে স্থং স্কন্ধৃতঃ॥ ১৭॥ ভ্রাত মম স্তঃ কচ্চিমাতা সহ ভবদুজে। তাতং ভবস্তং মম্বানো ভবস্ত্যামুপলালিতঃ॥ ১৮॥ পুংসন্ত্রিবর্গো বিহিতঃ স্ক্রদো হামুভাবিতঃ। ন তেয়ু ক্লিশ্যমানেয়ু ত্রিবর্গোহর্থায় কল্পতে॥ ১৯॥

শ্ৰীধরস্বামী

কচিচ্লিতি পশব্যাদি রূপে তশ্মন্ বনে নির্দোষ গোপয়ো দধ্যাদি প্রভূত গোপিকান্তন্যাদিনা প্রক্ষেমবিবক্ষরা পৃচ্ছতি প্রসক্ষীঃ
স্বায়জয়োরিত্যুক্ত হাৎ ॥ ১৭ ॥

ভবন্তামুপলালিতঃ সন্কচিষ্ত্ত ইতি শেষঃ ॥ ১৮ ॥

পুত্রাদর্শন ক্লেশেনাহ পুংস ইতি। স্কলে। বন্ধূন্ প্রতান্তাবিতঃ সম্পাদিতো যক্তিবর্গঃ স হি পুংসে। বিহিতঃ কুকঃ শাল্তেণ বা

বৈক বতোষণী।

নিকলং নীকলং একাং ছন্দোহমুনোধাং কলাশলনায়ং টাবন্তঃ। অধুনা যত্তাস্পে দং ইতি পশুনাং স্থানুসারেণ শ্রীমথুরামওলে কদাচিং কদ্মিংনিছনে স্থিতে:। যথাধুনৈত্য্য পূর্বাহর্ণঃ সুক্রেরিপি প্রের্যয়ঃ। বিশেষত স্তদানীং তন্তদপেক্ষয়া স্ক্রের্তি ইতি তত্তাপি তন্ত্রদগুণানাং বহুদেশ ব্যাপিতাপেকত ইতি ভাবঃ॥ ১৭॥

উপলালিতো নিজ প্রবল্লালিতো যা স কচিৎ কুশলী বর্ততে ইতার্থা। অন্তাত্তা। যথা কিং ভবস্তং তাতং মন্যমানো ভবতি ইতি মেহং বর্দ্ধমতি বস্তুতন্ত জাত মাত্রস্য তভাবো ন সন্তবেৎ দর্শনাবোগয়োঃ সম্ভবাদিত্যনেনৈব সম্বন্ধঃ। যথা ভব্য কি কিমান্তে কিং কংস ভ্যাদিনাংখ্যত্র ন গতোহজীতি ভাবা। মন হত ইতি পূর্বৈ শ্রীবহ্নদেবেন তজ্জন্মনোহি পি ক্রনাণ। তথাচ শ্রীহরিবংশে প্রাণেব বহ্নদেবন্ধ ব্রেজ শুপ্রাব রোহিনীং। প্রজাতাং প্রমেবাগ্রে চক্রাৎ কান্ত জাননমিতি। অস্যার্থা। প্রজাতাং ক্রন্তিত্তীং অগ্রে শ্রীন্দনন্দন জন্মতঃ পূর্বং ইতি তয়োর্জন্মচ প্রায়ঃ সমকালনেব জ্বেমং তথাচ তাত্রৈব তদানীং শ্রীবহ্নদেবাক্তো বর্দ্ধমানাব্তাবেতো সমান বন্ধসো যথা। শোভেতাংশো ব্রেজ তম্মিন্দনগোপ তথা ক্রিভি। অতএব তয়োর্জগপ্রিকণাদি লীলা বক্ষাতে। শ্রীপ্রন্তবিষ্ক বারিতি ভক্ষন্ম নক্ষত্রে ক্রিয়তে তচ্চ শ্রীক্ষণ্যাইমাসিকদাৎ তস্য ত্বাদশ মাসিক্ষাহ্পপদ্যত ইতি॥ ১৮॥

এবং মিত্র পূরাদীনামপি পালনাদিনা ভবতঃ পরম ক্বতার্থতা বৃত্তৈব। অহত্বধুনা ধনাদিমানপি পূত্র কলত্র মিত্রাদি ছংখেনা-কৃতার্থ এবেত্যাহ পুংস ইতি পুংমাত্রস্য শ্লেষেণ তদেব পৌক্ষমিতি ভাবঃ। হি এব অনুভাবিত এব ক্লিশ্রমানের ক্লেশং প্রাপ্তবৎস্থ অর্থায় স্থায় ন কল্পতে কিন্তু ছংধীয়ৈবেত্যর্থঃ। তেষাং ছংথে সতি ধর্মস্যাপ্যনাদরশীয়ত্বাও। বৃদ্ধোচ মাতা পিতরৌ সাধ্বী ভাব্যা স্কৃতঃ

ক্রমসন্দর্ভ:।

নিকজং নীকজং কজা রোগ:। অধুনেত্যভাত পূর্বমাদীদিতি জ্ঞাপিতং॥ ১৭॥ ১৮॥ সম্প্রতি কংসামুক্তস্য মম নানাস্থান গত স্বজনস্য তত্ত্বেন তদপালস্য সর্বং ব্যর্থমিত্যাহ পুংস ইতি॥ ১৯॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

পশুভো হিতং পশ্বাং। নিরুজং নীরুজং হস্বহং ছলোংফুরোধাং। রুজা টাবস্তঃ॥ ১৭॥ মম স্থতঃ সুথং বর্ত্ততে ইতি শেষঃ। ম্বান ইতি বর্ত্তমান সামীপ্যাশ্বংস্যমান ইত্যর্থঃ॥ ১৮॥ মম তু গৃহাশ্রমো বিফল এবেত্যাহ। পুংসঃ সুহৃদঃ স্ত্রীপুরাদীন্ অস্থলক্ষ্যীরুতঃ ত্রিবর্গঃ শাস্ত্রেণ বিহিতঃ। ভাবিতঃ স্বকর্মতি-

হে মিত্র ! এক্ষণে তুমি যে রহদনে স্থলাণ পরিরত হইয়া বাস করিতেছ, সেখানে পশু সকলের কুশল ত ? তথায় ত কোন রোগের প্রাত্তাব নাই ? এবং জল, তৃণ, লতা ত প্রচুর পরিমাণে লভ্য হয় ? ॥ ১৭ ॥

হে জাতঃ । আমার পুত্র তাহার জননীর সহিত তোমাদের ব্রজে রহিয়াছে, সে তোমাকে ত পিতা বলিয়া মানে, তোমাদের স্ত্রী পুক্ষ কর্তৃক লানিত হইয়া ভাল আছে ত ?॥ ১৮॥

্মিত্র ! পুজ কলজের কুশল জিজাসা করিবার তাৎপর্য্য এই যে , বন্ধ্বর্গের নিমিত সম্পাদিত যে ত্রিবর্গ (ধর্মা, অর্থ, কাম) ইহাই পুরুষের যুক্ত ও শান্ত বিহিত, কারণ বন্ধ্বান্ধব ক্লেশ পাইতে থাকিলে

300

নন্দগোপ উবাচ॥

আহো তে দেবকীপুত্রাঃ কংসেন বছবো হতাঃ। একাবশিষ্টাবরজা কন্যা সাপি দিবং গতা ॥২০॥
নূনং ছদৃষ্টনিষ্ঠোহয়মদৃষ্টপরমো জনঃ। অদৃষ্টমাত্মনস্তত্ত্বং যো বেদ স ন মুহুতি ॥ ২১ ॥

औंधत्यामी।

প্রোক্ত:। ন স্বমাত্র পর্যাবদিত: অতত্তেরু ক্লিশ্যমানেরু স্থার ন ভবতীত্যর্থ: ॥ ১৯ ॥

নন্দো বন্ধদেবং সাত্যন্ত্রাহ অহো ইতি॥ २०॥

ন্নমিতি অদৃষ্ট এব নিষ্ঠা সমাপ্তি যাস্য সং যুদৈৰ পুত্রাদি স্থাপ্রসমস্টং হীয়তে তদৈব তে পুত্রাদয়ে। ন ভবস্তীতার্থ:। তথা অদৃষ্ট-পর্ম: অদৃষ্টমেব পরমং যাস্য সং। যাস্য প্রাদয়ে। বিযুক্তা তথাপি তান্ অদৃষ্টমেব পুন: সঙ্গময়তীতার্থ:। এবসদ্টমাত্মন তত্মবাতিচারি কারণং স্থতংখ্যো র্যো বেদ স ন মুহুতি তথাদিদানীং ছয়া ন তংখং ভাবনীয়ং মৃতানামপি বিযুক্তানাম্পি চ কালান্তবে দশনযোগায়োং সম্ভবাৎ অন্যদাদিভির্পি কালান্তবে তছিয়োগে সত্যপীতি নক্ষ্ম দৈবী বাগেষা ভাবি স্চিকা॥ ২১॥

देवक्षवरकारंगी।

শিশুঃ। অপ্যকার্য্য শতং কৃষা ভর্ত্তব্যা মহুরব্রবীৎ ইতি স্বতে: এ ১৯॥ ।

ভবতা যদ্ধ কেমং পৃষ্টং তদপ্যস্তোব বয়ন্ত তুদুংখেন তদপি কথয়িত্ং ন শকুমং ইতি ব্যক্তয়ং স্তমেবাস্থানাচিতি অহো ইতি থেলে ॥२॰
সাম্বয়তি নৃনং নিশ্চরে হি এব অদৃষ্টনিষ্ঠ এব ন মুছতি মোহেন শোকং ন প্রাপ্নোতীত্যর্থঃ। অস্তাইতঃ। তত্র ন ভবতি অদর্শনং
প্রাপ্ন বন্তীত্যর্থঃ। মুভানামপীতি জমদায় সত্যবদাদৌ দৃষ্টগাদিতি ভাবঃ। তথাদিত্যাদিকং স্বলৈয়ব মত্যস্থাবেণ নভূ শ্রীমন্ত্রন্দন সেয়তি ন বসভদঃ। সত্যপীত্যস্য দর্শনাযোগরোঃ সম্ভবা দিতানেনৈব সম্বন্ধঃ। যহা অদৃষ্টাদেব নিষ্ঠা মরণং ব্যাতি তব তংপ্রাণাঞ্চ তাদৃশাদৃষ্টবাত্তে মৃতা ইত্যর্থঃ। নহু তর্হি অঙ্গন্মৈব বরং ততাহ অদৃষ্টমেব প্রমং জন্ম কারণং ব্যাতি। এবঞ্চ প্রস্পর স্থাদো মহ্যালীলায়েবেতি জ্ঞেয়ং॥ ২১॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

যব্যপি অংপৃষ্টং ব্রহ্ম কুশলং বিদ্যতে তথাপি তদ্বিজ্ঞাপয়িতুং ত্বদুংখেব ন শকু ম ইতি ব্যপ্তয়ংস্তমেবাস্থ্পোচতি অহো ইতি ॥ ২০ ॥ ২১ ॥ শ্রীবিশ্বনাথচক্রবন্তী ।

নিম্পাদিত তেরু স্বংস্থিত। জীপুল্লো ম'ৰিচ্ছেদাৎ মন চ পুল লালনাদি স্থানবাপ্তা। ন অর্থায় ন প্রয়োজনায় ॥ ১৯॥

বংপৃষ্টিং মধুজ ক্ষেমনত্তীতি কিং ব্ৰবীমি যদহং অদু:থেনৈব মহাছঃথীত্যাহ অহো ইতি তত্ত মংপুত্ৰ ন্যাসাদিকসম্য ন বিনিত-মিতি জাহা বস্থদেবো গতাশকো হস্তরানন্দিতো বভূবেতি জেরং॥ > ०॥

ভো ভাতরয়ং ছপারোহপি বিপংসিদ্ধ বিবেক পোতেনৈব তীর্যাতামিত্যাহ ন্নমিতি। অদৃষ্ট এব নিষ্ঠা সমাপ্তি র্যস্ত সং। যদৈব পুলাদি স্বথপ্রদমদৃষ্টং হীয়তে তদৈব পুশ্রাদয়ো ন ভবস্তীত্যর্থ:। অদৃষ্টমেব প্রমং মৃত বিষ্কু পুকাদীনামপি সদমকারণং যস্য সং। এবমদৃষ্টমান্ধনস্তবং যো েদেতি অভুলাঃ কোহন্যো বিবেকীতি তব মাস্ত মোহ ইতি ভাবং॥ ২১॥

পুরুষের ত্রিবর্গ হুথার্থ হয় না॥ ১৯॥

নন্দ এই স্কুল কথা শুনিয়া বস্থদেবকৈ সান্ত্রনা করত কহিলেন মিত্র! তোমার পদ্ধী দেবকীর অনেক শুলি সন্তান কংসু কর্তৃক নিহত হইয়াছে, শেষে একটা কন্যা অ্রশিফ ছিল তিনিও স্বর্গে গমন করিয়াছেন॥ ২০॥

আমার নিশ্চয় বোধ হঁইতেছে অদৃটেতেই লোকের নিষ্ঠা (সমাপ্তি) হইয়া থাকে, অর্থাৎ পুত্রাদি রূপ স্থপ্রদ অদৃষ্ট যথন হীন হয়, তথন আর পুত্রাদি থাকে না, পরস্ত অদৃষ্টই লোকের পরম পদার্থ, তাহাতে যদিও পুত্রাদি বিয়েগ হয়, তথাপি সেই অদৃষ্টই পুনরায় তাহাদের. সহিত মিলাইয়া দেয়। এই রূপে অদৃষ্টকেই যে ব্যক্তি আপনার তত্ত্ব অর্থাৎ হথ হংথের অব্যভিচারি কারণ বলিয়া জানেন তিনি কদাপি মৃয় হয়েন না, অতএব একণে আপনি হঃখ চিস্তা করিবেন না, য়ত ও বিযুক্ত দিগেরও কালান্তরে দর্শন এবং তাহাদিগের সঙ্গেত্ব উত্তর কালোন্তরে দর্শন এবং তাহাদিগের সঙ্গেত্ব উত্তর কালোন্তরে সংযোগের সন্তাবনা আছে॥ ২১॥

্বস্থদেব উবাচ॥

·করো বো বার্ষিকো দত্তো রাজ্ঞে দৃষ্টা বয়ঞ্চ বঃ। নেহ স্টেয়ং বহুতিথং সম্ভাৎপাতাশ্চ গোকুলে॥ শ্রীশুক উবাচ॥

ইতি নন্দাদয়োগোপাঃ প্রোক্তান্তে শৌরিণা যয়ুঃ i অনোভি রন্ডু দ্যু কৈন্তমনুজ্ঞাপ্য গোকুলং॥২২ ॥ * ॥ ইতি শীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং দশমস্ক্ষে বস্তদেব নন্দসমাগমো নাম পঞ্চমাহধ্যায়ঃ ॥ * ॥ ৫ ॥ * ॥

बीधत्रचामी ।

তাং বুদ্ধা বস্থদেবো হঃখং ত্যক্তবা নন্দমাহ করো ব ইতি। বোযুদ্মাতিঃ ॥ ২২॥
॥ *॥ ইতি দশমে পঞ্চমঃ ॥ *॥

বৈষ্ণবতোষণী।

অহো তে দেবকীপুত্রা ইত্যাদি শ্রীনন্দোক্তা। লোকেষু পূত্রপরিবর্ত্তন জ্ঞানাদি শক্কা নিরুক্তে: পরম হুই: শ্রীবস্থদেব ন্তঃ প্রতি সমাগম মৃসম্পদিশতি কর ইতি। ব ইতি বছবং গৌরবাৎ তৎ সঙ্গি সংগ্রহাদ্বা বন্ধমিতি তদ্ধন্দনাশ্বনো বহুমানাং। ব ইতি পৌনকক্তাং ভিন্ন বাক্যদাদদোবায়। যদ্বা বোযুমদীয়া বয়ং তৎ ক্ষেহেন দিন কতিপর ডিঠাস্বং তং প্রত্যাহ বহুতিথং অত্র রাজধ্যান্যাং ন স্বেয়ং। তথাচ শ্রীবিষ্ণপুরাণে। দন্তোহি বার্ষিক: সর্বো ভবন্তি নূপতে: করঃ। যদর্থমাগতা ক্ষান্নাত্র স্থেমং মহাধনৈ রিতি। করো বৈ ইতি কচিৎ পাঠা বহুতিথমিতি পূরণ প্রতায়ে ডটী তিথুগাগমাৎ বহু গুণ পুগ সংক্ষা তিথুগিত্যনেন ততো বহুতিথং বথাস্যাৎ তথা ন স্থেমমিতি লক্ষে বহুনাং পূরণী বা স্থিতি: সা নাহুঠেয়া ইত্যুর্থে চিরকালং ন স্থেমং ইত্যেব বিবক্ষিতং তথাপি নিজ সঙ্গ স্থাপেক্ষয়া শীষ্মজিগমিষু মিবালক্ষ্য ভাষয়তি সঞ্জীতি॥

প্রকর্মেণ ভার দর্শনাদিনোক্তাঃ অনভাহঃ অনোবহন সমর্থাঃ মহাব্যভাক্তদ্যুকৈরতিশীল গমনার্থং তমহুজ্ঞাপ্য তদহুজ্ঞামাদার গোকুলং যয়ঃ প্রতন্থিরে॥ ২২॥

"॥ *॥ ইতি বৈষ্ণবতোষণ্যাং শ্রীদশম**টীপ্ল**নাং পঞ্চম: ॥ *॥

ক্রমসন্দর্ভঃ।

কর ইতি ট করাদত্র দণ্ডভন্নঞ্চ তথা বৈষ্ণক্ষেত্রভাক্যং। নাত্র ক্ষেৎ মহাধনৈরিতি। বছতিথমিতি পূরণ প্রত্যন্তান্তং বহকাক পর্যাস্তং ব্যাপ্যতার্থ:॥

ষ্পন্তুদ্ব্কৈরিতি শিদ্র গমনার্থ প্রসিদ্ধমেবোক্তং অন্তুদ্বিশে**ষ ব্যঞ্জন**রা ॥ ২২ ॥

॥ *॥ ইতি শ্রীদশম ক্রমর্সন্তে পঞ্চমঃ॥ *॥

গ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্ত্তী।

জ্ঞাততত্বো বস্থদেবো যদক মাগত স্তদাহ কর ইতি। বৈ নিশ্চিতং বো যুমাভি:। বহুতিথং চিরকালং ॥ ২২ ॥

। ॥ * ॥ ইতি সামার্থদর্শিন্যাং হর্ষিণ্যাং ডক্তচেত্রসাং । দশমে পঞ্চমোহধ্যারঃ সক্ষতঃ সক্ষতঃ সতাং ॥ * ॥

নন্দের ঐ সকল ভবিষ্যৎ শূচক দৈব বচনের মর্ম হৃদয়ঙ্গম করির। বহুদেব ছু:খ পরিত্যাগ পূর্ব্বক তাহাকে সম্বোধিয়া বলিলেন মিত্র। রাজাকে বর্ষিক কর দেওয়া হইয়াছে, আমাদিগের সঙ্গেও সাক্ষাৎ হইল, আর এখানে মধিক কাল অবস্থানের আবশ্যকতা নাই, গোকুলে ম্রানা উৎপাত উপস্থিত আছে, শীত্র প্রস্থান কর।

ভকদেব কহিলেন হে রাজন্! বহুদেব এই প্রকার কহিলে নন্দাদি গোপর্ক তাঁহার অসুমৃতি লইয়া ব্যবাহ্ন শকটে আরোহণ পূর্বক গোকুলে প্রত্যাপমন করিলেন॥ ২২ ॥

॥ 🗱 । देखि मनास्म श्रक्म ॥ 🛊 ॥

200

প্রিশুক উবাচ॥

নন্দঃ পথি বচঃ শৌরে ন ম্যেতি বিচিন্তয়ন্। হরিং জগাম শরণমূৎপাতাগম শক্কিতঃ। কংসেন প্রহিতা ঘোরা পূত্মা বালঘাতিনী। শিশুংশ্চচার নিম্নন্তী পুর গ্রাম ব্রজাদিরু॥ ১॥ ন যত্র প্রবাদীনি রক্ষোম্বানি স্বকশাস্থা। কুর্বন্তি সাম্বতাং ভর্তু হাতুধান্যশ্চ তত্র হি॥ ২॥

क्षित्रवामी।

বতে সংগ্রিবা নন্দো ব্রজং গছেক্ মৃতাং পথিল দুই। তু রাক্ষসীং তস্তাঃ মৃত্যুং শ্রুবাচ বিশ্বিতঃ ॥ ১ ॥ শ্রীক্ষণবিধরে শ্রুমানং রাস্থানং প্রতি অবিধরে প্রবৃত্তা দৈব মরিষ্যতীতি স্চয়ন্নাহ ন যত্তেতি। বত্ত শ্রীকৃষ্ণস্য শ্রুবণাদীনি ন

∡वक्षवटलायगीं।

পথি বিচিত্তরন্ হরিং সর্কভরহরং নিজেইদেবত্বেন সতত শরণমপি বিশেষতঃ অপুত্রমঞ্চলার্ধং মনসা শরণং জগাম। যরা ন মৃষে-ত্যতো হেতোর্হরিং মনোহরং বৃত্ততং পথি বিশেষত শিত্তয়ন্ ন জানে তত্ত কিং বৃত্তমন্তি ইতি তত্ত চিন্তাং শরণং নিজগৃহং জগান গচ্ছ-রভুং॥

অথ ব্ৰন্থব্যনাহ তত্ৰচ যদ্যপি পূৰ্বং তদাছিভি ঋ বীণামেব হিংসা নিশ্চিতা তথাপ্যতিভীতেন কংসেন তু প্রস্পরদৈরবোপায়েছি মিতি প্রথমং তামনঙ্গীকৃতা সাক্ষালাহিংসা এবাসুমতা ইত্যভিপ্রেত্যাহ কংসেনেতি। প্রাহিতা প্রাণে নিযুক্তা যতো দোরা বালঘাতিনীচ অত এব নিতরাং ফুড়ী মতী ছব্বি স্তনদানেন সন্যো মারম্বনী। তথাচ বিষ্ণুপ্রাণে। যদ্মৈ যদ্ধৈ স্থনং রাত্রৌ পূতনা সংপ্রযজ্ঞতি। তস্য ক্ষণেনাঙ্গং বালকস্যোপহন্ততে। আকরঃ রক্ষাভ্যৎপতিস্থানং গ্রামং ব্রজ্ঞতি বা পাঠঃ। আদি শঙ্কাৎ সার্থাদ্বন্ধ ॥ ১॥

শিশ্ন নিম্বীতি প্রাদির্ চকারেত্যকং। নহু তর্হি শ্রীনন্দব্রজবালানাং হস্ত কা বার্ত্তা ইত্যপেক্ষায়ামাই নেতি। স্বকর্মস্থ যজ্ঞাদির্
তথ সাক্ষা পার্থান্যপি যব্র প্রবণাদীনি ন কুর্বস্তি কিং পুনং স্বপ্রধানানীত্যর্থশে সাম্বতানাং ভব্জানাং ভর্ত্তারিতি তেষামপি প্রবণাদিভিত্তে
নগুন্তি কিং পুনস্তস্যেত্যর্থং। স্বর্থে চকারং অমুক্তসমূচ্চয়ে বা অন্যেচ দৃষ্টাং। হি এব তবৈত্রব প্রভবস্তীতি শ্রেষং। যথা কিন্তমানী
স্কনাং সর্ব্বে শিশ্ব স্তয়া বত হতান্তব্রাহ নেতি। পূর্ববদর্থাং। অন্তেচ ভগবিদ্যম্থাং কংসপক্ষীয়াং প্রভিগবতা ভল্পত্রৈর বাজিরে। ইতি
ভাবং। ইতি কংসক্ত মৌচাং দর্শিতং। তদেবং তেন সাক্ষাদ্ধিন্তিতেছপি তাদৃশ হৃষ্টাগমনং নিথিল লোকানক্ষক প্রভিগবিদ্যালা বিশেষ
সম্পত্যর্থং তথা তাদৃশ হেতুকোৎপাতশ্চ কজ্জনস্তাদীনাং তরিষয়ক প্রেম বিশেষ বর্জনার্থং তদীর প্রসাহ্মাবি লীলাশকৈত্যব সম্পাদ্যত

ক্রমসন্দর্ভ:।

ন যত্ত্ৰেতি। ততো যথা কথঞ্চিত্তগৰৎসম্বন্ধ বিদা ভূতানাং দৈত্যস্বভাৱানামেব বালং স্থতী ভগৰত স্তাদৃশলীলেছেইয়েই ইটগোকুলে প্ৰবেশ সমৰ্থাভূদিত্যাগতং তভ এব বন্ধ মিতাপালেত্যাদি চ ঘোষিদ্বেতি তৎ কৰোতীতি ণিচি ক্তি ৰূপং টেলেণিখা ১ ॥

এতত্তু গোপপ্রযুজামান দিব্য বালভিয়েতি জেরং। কামচারিণী অব্যাহত গমনাপি॥২॥৩॥৪॥

बिविधनाशहक्रवर्छी।

বর্ষে সৌরূপ্য কৌরূপ্যে জীবমূত তনে। রিহ। নির্বর্ণ্যেক্তঃ পুতনায়া দাহে। নন্দস্য চাপমঃ ॥ > ॥

🕮 कृष्कविष्टत শঙ্কমানং রাজানং প্রতি অবিষয়ে প্রবৃত্ত সৈব মরিষাতীতি স্চরন্নাহ নেতি। যত্র প্রাদিষ্ সাঘতাং ভর্তু: শ্রবণাদীনি

ষষ্ঠাধ্যায়ে সথা বহুদেবের বাক্যে এজে প্রত্যাগমন কালীন নন্দের পথি মধ্যে মৃত রাক্ষ্যী দর্শন এবং মরণ বিবরণ ক্লবর্ণে বিস্ময় বর্ণিত হুইতেছে॥ ।॥

শুকদেব কহিলেন নন্দ আসিতে ২ পথিমধ্যে এই চিন্তা করিতে লাগিলেন বহুদেবের বাক্য কখন নিথা হয় না, বোধ হয় বজে কোন উৎপাত হইয়া থাকিবে, এই প্রকারে ভাবি উৎপাত শঙ্কায় তাঁহার অতিশয় ভায় হইল অতএব ভগবান্ হরির শরণাপন হইলেন। এ দিকে নিঠুর সভাবা বালঘাতিনী প্তনা কংশ কর্ত্বক প্রেরিত হইয়া প্রগ্রাম ব্রজ প্রভৃতি স্থানে শিশু হত্যা করিয়। বেড়াইতেছে॥ ১

এতৎ ভারণে শ্রীকৃষ্ণ বিষয়ে শক্ষিত চিত্ত পরীক্ষিতের প্রতি কহিলেন রাজন্! কোন আশকা করিও না, অবিষয়ে প্রকৃতা রাক্ষ্মী অবশ্য প্রাণতাগ করিবে, কারণ সাত্তপতি ভগবান্ হ্রির শ্রব-

শ্ৰীমন্তাগৰতম্।

[১০কা৬আ

সা থেচর্য্যেকদোৎপত্য পূতনা নন্দগোকুলং। যোষিত্বা মায়য়াত্মানং প্রাবিশৎ কামচারিণী॥ ৩॥ তাং কেশবন্ধব্যতিষক্ত মল্লিকাং বৃহন্ধিতত্ব স্তন কুচ্ছুমধ্যমাং। স্থবাসসং কল্লিতকর্ণভূষণত্বিয়েল্লস্থ কুগুল মণ্ডিতাননাং॥ ৪॥

ত্রীধরস্বামী।

সন্তি তত্রৈৰ তাসাং শক্তিঃ। সাক্ষান্তন্মিন্নেৰ সতি কা শক্ষেতি ভাৰঃ ॥ ২ ॥

যোষিত্বা বেশতো বরাং নারীমিবাত্মানং ক্লন্তা নত্ন নির্মিশিক্ষাচ সতী কথং পর সন্মনি প্রবিষ্ঠা অত আহ কামচারিণীতি। নহি কামচারিণীধিদং চিত্তমিত্যর্থ:॥৩॥ *

তাঞ্চ বনিতাং পতিং দ্রষ্ট্রুং আগতাং অতিরূপবতীং প্রিয়মিব গোপ্যোহমংসত ইত্যুত্তরশ্লোকেনায়য়। শ্রীসাম্যাথানি বিশেষণানি কেশবন্ধ ব্যতিষক্ত মন্ত্রিকাং ধন্মিল্লসংসক্ত মল্লিকাকুসুমাং বৃহদ্ধিতম্বেন স্তনাভ্যাং চোভয়ত আক্রান্তমিব কুচ্ছুং কুশং মধ্যমং উদরং যস্যা স্তাং সুবাসদং রমণীয়ে বাসদী বৃদ্যা স্তাং। ক্লিতয়োঃ কর্ণভূষণয়োছিবা উল্লস্ভিঃ কুওলৈ ম'ণ্ডিত মাননং যদ্যাস্তাং॥ ৪॥

· বৈষ্ণবত্তোষণী।

ইতি ভাবঃ। লীলানায়ী শক্তিশ্চ শ্রীভূ লীলেতি মুখ্য শক্তিত্তরে বৈকুঠে পাল্লোত্তর থণ্ডাদি প্রসিদ্ধা সৈব পাল্ল কার্ত্তিক মাহাত্ম্যাদে। ভূলদীত্বেন বৃন্দাত্মেনচ বর্ণাত ইতি শ্রীকৃষ্ণলীধারাং বৃন্দারূপৈব সা জ্ঞেরা যদধিষ্ঠানং বৃন্দাবনমিতি॥ ২॥

একদা রাত্রাবিত্তি পরাশর বৈশম্পায়নৌ। উৎপত্যাকাশমার্গেণাগত্য। উপেত্য ইতি পাঠঃ কচিৎ। যতঃ থেচরী সা ঘোলঘাদেব বোষিম্বেতি অত্র যোষিতং করোতীতি ণিচি টিলোপে ক্তৃ ৯ প্রতায়ে বোষয়িম্বেতি বক্তব্যে গিচো লোপ আর্য:॥ ৩॥

তামিতি যুগাকং। **স্তাতীতি** মল্লিকানাং মিথো যোজনয়া বছধা সেচিবং বোধাতে কর্ণ ভূষণয়ো: কল্পিত্তং লীলা গত্যাদিনা অতএব স্কৃতঃ প্রস্তা ভ্রোত্থিয়া উল্লেখির উল্লেখির মণ্ডিতাননাং॥ ৪॥

, শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

দৃষ্টাদৃষ্টফলেষু স্থকশ্বস্থাপি বৰ্ত্তমানা জমা ন কুৰ্বস্থি ততৈত্ব যাতৃধান্যঃ প্ৰভবন্তীতি শেষঃ। কিমৃত যত্ৰ প্ৰাধান্যেন কুৰ্বস্থি তত্ৰ ন প্ৰভবন্তীতি কিমৃতভৱাং যত্ৰ কৈৰ্ণ্যেন কুৰ্বস্থি কিমৃতভমাং সাক্ষাদেৰ যত্ৰ স প্ৰায়ভূ গান্তে ইতি ভাবঃ॥ ২॥

তদিপি পূতনাকালীলায়া আবশ্যকভালীলাশকৈ প্রেরণকশাদেব মৃত্যুনা নিমন্ত্যমাণৈব মর্জুং গোকুলং জগামেত্যাহ সেতি। একদা রাজৌ আকাশমুংপত্য গোকুলং প্রবিশ্য মায়য়া আজানং ঘোষিত্বা ঘোষিতং ক্রছা নিজ্লাপে আর্যাঃ। সৌন্দর্যোগ সর্বজনান্ মোহ-রিত্বা গৃহান্তঃ পুরাদির সহসা প্রবেষ্ট্রমিতি ভাবঃ। যদ্যপি জগামোহিনী ভগবআয়াপি তান্ সিদ্ধভক্তান্ মোহয়িত্ব নোংসহতে তদপি কৃষ্ণলীলাশোভাসিদ্ধার্থং ঐক্রজালিক মায়েব তানপি পূতনাদি মায়া মোহয়তি ভগবিদ্ধভাবশাদিতি জ্ঞেয়ং ॥০॥৪॥

ণাদি মাত্রে রাক্ষস সকল নিহত হয়, যেখানে প্রবণাদি নাই, সেই স্থানেই রাক্ষসীরা স্ব স্ব কর্ম করিয়া থাকে অর্থাৎ যেখানে শ্রীকৃষ্ণের প্রতি প্রবণাদি না হয় সেই থানেই রাক্ষসীদের শক্তি, যে স্থানে শ্রীকৃষ্ণ সাক্ষাৎ বর্তুমান তথায় রাক্ষসীদের শক্তি প্রকাশের সম্ভাবনা কি ?॥ ২॥

সে যাহা হউক, এক দিবস রজনীযোগে ঐ পৃতনা - আকাশ পথে নন্দগোকুলে আসিয়াছিল এবং মায়াযোগে আপনাকে বর নারীরূপিণী ক্রিয়া নন্দসদনে প্রবেশ করিয়াছিল; সে কাসচারিণী, ইহাতে নির্লভ্জ ও নিঃশঙ্ক হইয়া প্রপৃত্তে প্রবেশ করা তাহার পক্ষে বিচিত্ত নতে॥ ৩॥

হে রাজন্! ঐ নিশাচরী পরমা স্থলকী নারী হইয়াছিল, তাহার কেরা পাশে ক্রিকা কুম্ব সংযুক্ত, বৃহৎ গিতত্ব ও স্থলতম স্তনদ্বয়ে আক্রান্তের ন্যায় হওয়াতে উদর যেন কুল হইয়াছিল। তাহার পরিধান বিদন রমণীয়, কুর্ণ ভূষণের শোভায় এবং দেনীপ্যমান কুগুণে মুখ্যগুল স্থলর রূপে মণ্ডিত ॥ ৪ ॥

বস্তুস্মিতাপান্ধ বিদর্গ বীক্ষিতৈ র্মনোহরন্তীং বনিতাং ব্রজ্ঞোকসাং। অমংসতান্তোজকরেণ রূপিণীং গোপ্যঃ শ্রেয়ং দ্রফটুমিবাগতাং পতিং॥ ৫॥ বালগ্রহস্তত্র বিচিন্নতী শিশূন্ যদৃচ্ছরা নন্দগৃহে হসদস্তকং।

শ্রীধরস্বামী।

বছ মিতাপাস বিসৰ্গ বীক্ষিতৈঃ বস্তু রম্যং স্বিতং বেষু তথা ভূতা অপাস বিসৰ্গা বেষু তৈ বীকিতৈ ক্রোকসাং মনোংরঙীং অতো গোপা হভমনত্বেন তাং ন নিবারিত্বস্ত ইত্যুক্তং ভবতি। গোপ্যশ্চ প্রিয়মির মন্বা তৃষ্ঠীমাসন্ অতঃ কেনাপি অনিবারিতা গতী প্রবি-বেশেতি ভাবঃ ॥ ৫ ॥

বালগ্ৰহঃ পুতনা অসদস্তকং বালং দদর্শ। নতু অসতামস্তকং দৃষ্ট্বা কিং ন বিভেতি শ্ব ইতি চেত্তত্ত্বাহ। প্রতিজ্ঞ নীনজোক তেজ্যং

বৈষ্ণবতোষণী।

ননোহর ধ্বীং মনোহরবদাচর স্থীং বনিজাং জনিতাত্যথা হ্রাগাং ব্রিয়ং অভােজ যুক্ত করেণ লক্ষণেন ক্রিণীং শ্রিমনেবাগতা মনংগত শ্রীরত্র জগংশপতিঃ কিং কর্তুং ইব পতিং দ্রাষ্ঠ্র কঞ্চিং পুণা লক্ষণং জনং নিজাশ্রম্বেন বরীত্রান তাল্শ লক্ষণ ফ্রের্মের শ্রীরত্ত্ব তনর এব দৃশ্যতে ইত্যাশয়া ততাে ন নিবারিতবতা ইতি ভাবং। জাত্র পতি শক্ষা ধববাচিঝং তেয়ামণি ন মতং অগ্রেচ ক্রননী ভাবদাৈর দশ্যিকমাণবাং। জ্বন্তত্তিঃ। তথা আজাস্থানিবত্তার্থঃ। ক্রছ্ংক্রশমিতি কার্যকারণ ব্যারভেনোপচারেন তদা ক্রমাল্যক্রখং জাতং জ্বাদিব ক্রশমিত্যর্থঃ। তথা অতিমনোহরণাদ্বেতাে বৃদ্ধমন্থং ভাবং তেনেতি কর্ত্ধর্ম কর্মান্থাবার্তেনাদ্বানক্ত্যাং॥ ৫॥

সেতি প্রকরণ বশালভাতে। বালগ্রহ ইতি তদিশেষণমের অজহলিক্স্বান্নলীসং। তত্র গোকুলে শিশ্ন বিটিষ্টী মৃগয়মানা ততশ্চ এনৃ ছেয়া স্বৈরিত্যা ভগবত এব তাদৃশ লীলা শক্তি প্রেরণেনায়ুসন্ধানং বিনাপীতার্থ: সহসা শ্রীননগৃহ এবাগ্রতা বিচিন্নতী তমের তল্লে দদশ। যদৃচ্ছা বৈরিতেত্যাবাঃ। অসদস্তকমপি বালং বালামাধুরীমাবিদুর্বস্তঃ অউএব তল্লে আহিতং সন্তঃ প্রতিচ্ছন্ন নিজোকতেজ্সং

ক্রমসন্দর্ভ: i

স ভণিত্যস্যাবতারিকা প্রবিট্টকে ব**ন্ধ সম্ভোজকরেণ লক্ষণেন রূপিণীং শ্রিয়ং অমংসত। পতিং লুইুং কঞিং শুভলক্ষণ** ভাষাং জনং নিজাশ্রম্বেনে বরীত্নিতি ত্ব্য শ্রী**রুঞ্চ এব পর্য্বস্থানং বিভর্ক্য তাভি ন**িন্বারিতা ইত্যুথ**ং**॥৫॥

বালগ্রহ ইতি বিশেষণমের সতি বিশেষ্যং প্রকরণবশাৎ যদৃচ্ছরা ভগরত: দৈরলীলেচ্ছ্য়া সহসা নন্দগৃহ এবাগত্য ইতি শেষ:।

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

তাং প্রিয়ং ক্ষপিণীং মৃতিনতীং রশ্বাদি ধনসম্পত্তিমিব অস্তোজকরেণ উপলক্ষিতাং। পতিং শ্রীব্রজরাক্সেষ্টদেবং শ্রীনারারণং এই মিনবাগতাং অনংসতে হাত্তরেণাদ্বর: । বৃহতা নিত্তবেন স্তনাভাগ্ন উভয়ত আক্রান্তমিব ক্লচ্ছণ কৃশং মধ্যমমূদরং যস্যা স্তাং। বনিতাং অত্যত্তন রাগবতীং। বনিতা অনিতাত্যর্পান্তরাগারাঞ্চ বোষিতীত্যমর:। আহো ক্লপ মহো হন্তরাগ ইতি ব্রম্পৌকসাং মনোহরতীং অতএবৈতে সহস্যাত্তপ্রং প্রবিশস্তীমপি ন নিবার্যামান্ত্রিতি ভাব: ॥ ৫॥

বালগ্রহ: পুতনা অসমতকং অহস্তারমপি অবধ্যতেন প্রতীরমানং বালং দদর্শ যতঃ প্রক্রিছেরেতি ভসি ভস্মন্যাহিতমন্তরপিতং

সে মনোহর হাস্য যুক্ত কটাক্ষে অজবাসিদিগের চিত্ত হরণ করিয়াছিল, অতএব গোপেরা তাহাকে নিবারণ করিল না, গোপীগণ তাহাকে দেখিয়া মনে করিয়াছিল জ্রীকৃষ্ণ গোকলে জন্ম এহণ করিয়াছেন, ইনি বৃষ্ণি তাঁহার বনিতা লক্ষ্মী, এইরপে. মৃতিমতী হইয়া পতি দর্শনার্থ আসিতেছেন, ফলতঃ তাঁহাকে সাক্ষাৎ লক্ষ্মী মনে করিয়া গোপীরাও তৃষ্ণীস্তৃত হইয়াছিল, স্তরাং কেহই নিবারণ না করাতে সে অনায়াসে পুরমধ্যে প্রবিষ্ট হয় ॥ ৫॥

হে রাজন্। প্তনা সাক্ষাৎ বালক অন্তেষণ করিতে করিতে নন্দ গৃহে শয্যার উপর ঐ শিশুটা দেখিতে পাইল। যদিও সেই বালক অসজ্জনের নিধনকারী, তথাচ তাহাকে দেখিয়া পুনরায় ভয় বালং প্রতিচ্ছন্ন নিজারু তেজসং দদর্শ তল্লেইগ্রিমিবাহিতং ভিসি ॥ ৬॥
বিবৃধ্য তাং বালকমারিকা গৃহং চরাচরাত্মা স নিমীলিতেক্ষণঃ।
অনন্তমারোপয়দক্ষ মন্তকং যথোরগং স্থামবৃদ্ধি রক্জুধীঃ॥ ৭॥
তাং তীক্ষ্বিভামথ বামচেষ্টিতাং বীক্ষ্যান্তরা কোষপরিচ্ছদাসিবং।

अधतताभी।

বালনাট্যেন প্রতিচ্ছন্নং তিরোহিতং নিজং উক্ন তেজো যেন তং কমিব ভসি তল্মনি আংহিতং অগ্নিমিবেতি ॥ ৬ ॥

চরাচরাক্মছাদেব তাং বিব্ধা নিমীলিতেকণঃ আন ! ব্যমনস্তং হুটানামস্তকং সা অঙ্মারোপয়ৎ বালং মত্বা যথোরগং হ্পুং অব্জি শ্চাসৌ রজ্জুধীশ্চেতি সং অজ্ঞানতো রজ্জু বৃদ্ধা যথা গৃহ্ণতি তর্বং ॥ ৭ ॥

নমুৰশোদাবোহিণোৌ কথং তাং ন ন্যবারয়তাং তত্তাহ তামিতি। . বামং বস্তু জনন্যা ইব চেষ্টিতং ৰস্যাস্তাং বর্জিয়ঞা সংকৈব

देवस्थवरङावशी।

তদাতিমুখোন চ্ছন্নজনহাপ্রতাবং দদর্শ তত্র দৃষ্টাস্থোহিছিমিতি যথা কশ্চিন্তস্মগ্রাহিতং অগ্নিং তাদৃশং পশ্রতি ত্রদিত্যর্থ:। ব্রজৌকসাং-মনোহরগুমিত্যাদিকমপি দীলাশক্তিকৌতুকমেব॥৬॥

বাশক মারিকাদংজ্ঞং গ্রহং চরাচরদ্যাত্মা প্রমাত্মা বাল্য লীলয়া সর্বভাব গ্রহণাং মুদ্রিত নেত্রাক্তো বভূব তচ্চ তদ্যাং নিজাত্যন্ত বাশক ভীকত্ব বোধনায় তাদৃশ হুইদর্শনাভাবায় স্বদৃষ্টি স্বাভাবিক তিথিধর্ষণাভাবায় তিন্ধিতার্থাক্ত হুট্রেন কর্মে দর্শনাভাবায় স্বয়ননন্তং তাদৃশানামন্তকং অবৃদ্ধি বিপরীতজ্ঞান পূর্বকং যথাদ্যাত্তথা আরোপয়ং॥ ৭॥

অথ কাং স্নো কাক্টিক ত্রীরেনোভয়ত্রাপার্য়:। অভীতি চিচ্চুক পাঠঃ বামচেষ্টিতহেন ছংথপ্রদতা নিরস্তা তত্রাস্তরা বীক্য ইত্যস্ত

ক্রমসন্দর্ভ:।

প্রতি তদাভিমথ্যেন। ভদি ভক্ষাভাস্তরে দৃষ্টাস্তোহয়ং ছলতাং সংগ্রহং আয়া প্রমায়া। স্বয়ননস্তং তাদৃশানস্তকং অতএব অব্দি যথা স্যাত্তথারোপ্রং। কণ্ট মাতৃস্থেহ ম্যা তং প্রভয়া তক্মিন্ প্রসক্ষে স্তি॥৬॥৭॥৮॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

ভশ্মাজাদিতমগ্নিমেবৈতার্থ: ॥ ৬ ॥

চরাচবাত্মেতি হুষ্টাগননকালে সর্বজ্ঞতাশকে: সেবাব_র্তি দেবত:। তাং বির্ধ্য বাল্যস্বভাবেনৈর নিনীলিতেক্ষণ আস দিদীপে।
নিজাতান্ত বালর ভীকত্ব জ্ঞাপনায় চ তাদৃশানকলদর্শনাভবার চ স্বদৃষ্টি আভাবিক তবিধ ধর্ষণাভাবায়চ মাতৃভাব দর্শিকায়ান্তস্যা: স্বকর্ত্বক ববে লক্ষাক্তপৈতৈয়চ তত্মরণ বৈক্ল্য দর্শনাভাবার চ মুদিত নেত্রস্থং। ততশ্চানস্তং তমক্ষমারোপর্য়। অন্তবং স্বস্যেতি সংহারিকাশকে: দেবাবসর:। যস্য দেশত: কালতশ্চ অস্তো নান্তি তমনন্তম্পি অক্ষমারোপর্দিত্যর্থ: বিরোধেনাত্ত রসো ব্যক্তিত:।
অন্তব্যনভ্যতি শব্দ বিরোধ:। যথা স্থাসুরগং অবুদ্যা অনুবৃদ্যা হেতুনা সক্ষ্মি জনো গৃহাতি তহদিত্যর্থ:॥ ৭॥

নত্ব বেশাদাবোহিশো কথং তাং ন ন্যবারয়েতাং তত্তাহ তামিতি। বামং বস্তু জনন্যা ইব চেষ্টিতং যদ্যা স্তাং। সম্ভবা গৃহমধ্য এব

হইল না, কারণ বাল রূপ প্রদর্শন হেতু ভক্ষাচ্ছাদিত অগ্নির ন্যায় তাঁহার স্থীয় মহ্ৎ তেজঃ প্রতিচ্ছন্ত হইয়াছিল॥ ৬॥

দে যাহা হউক, চরাচর সকলের আত্মা, শিশুরাপী ভগবান্ ঐ রাক্ষদী আসিবামাত্র জানিতে পারি-লেন এ অন্ধনা নহে, বালসংহারিকা, অতএব তাহার বিনাশ বাসনায় নয়নঘ্য নিমীলন করিয়া রহি-লেন। অনন্তর ঐ রাক্ষদী উাহার নিকট গমন করিল এবং অজ্ঞান বৃশতঃ সর্পেতে রক্ষু বুদ্ধিকারী ব্যক্তি যেমন স্থাবিষধরকে কোড়ে আরোপণ করে তাহার ন্যায়, ছক্টের অন্তক সেই অনন্তকে এহণ করিয়া আপনার অক্ষে স্থাপন করিল॥ ৭॥

হে রাজন্! যদিও ঐ রাক্ষনী মৃত্ন অথচ বিচিত্র চর্ম্ময় কোষাচ্ছাদিত অসির তুল্য তীক্ষ চিতা,

বরস্ত্রিয়ং তৎপ্রভয়াবধর্ষিতে নিরীক্ষ্যমাণে জননী অতিষ্ঠতাং ॥ ৮ ॥
তিম্মিন্ স্তনং ভূর্জরদীর্য্যমূল্লণং ঘোরাস্কমাদায় শিশো র্দদাবথ ।
গাঢ়ং করাভ্যাং ভগবান্ প্রশীড্য তৎ প্রাণৈঃ সমং রোষসমন্বিতোহিপিবৎ ॥ ৯ ॥

धीशतवामी।

অধ্বাগৃহনধো বীক্ষা অন্তত্তৈকৈয় বহিৰ্মাৰ্দ্ৰৰে চ দৃষ্টাক্তঃ কোৰণরিক্ষদাসিবৎ মৃছ্চিত্ৰ চৰ্মময়ঃ কোষঃ পরিচ্ছদ আবরণং ষদ্য অসে: থড়গঞ্জ তৰং তংপ্ৰভয়াবধৰ্ষিতে অভিভূতে অহমস্য জননী ইয়ং বেতি ৰোহিতে তু সত্যো জননী জনন্যো নিরীক্ষ্যমাণে এব কেবল মতিষ্ঠতাং নতু নিবারিত্বতো ॥৮॥

তিমান ভানে ছর্জরং বীর্ঘাং বিষং মমিন্তং জ্ঞনং প্রীকৃষ্ণমন্ধমাদায় শিশোঃ তব্মৈ শিশবে দদৌ অথ অনস্তমেব প্রপীডা কেবলং

বৈঞ্চৰতোষণী।

ছষ্টতাপ্রনিতিক থণ্ডিতা অন্তর্দ্ধুই জনস্য সহসা পরগৃহান্তঃ প্রবেশ সহসা সামর্থ্যাৎ তত্ত্বাপি বর্জ্তিরমিতাবিশ্বসনীরতাচ নিরার্ক্তা বিশেষ-তক্ত তং প্রভন্না নাত্বৎ স্নেহ প্রাকট্য প্রতি ভ্রাবধর্ষিতে। জননী ইতি প্রথমা বিবচনস্য পূর্ব্ধ সবর্ণ শ্হান্দদঃ স্থপাং স্থলুক্ পূর্ব্ব-সবর্ণেত্যাদিনা॥৮॥

তশিলেব স্থানে ইতি ধান্তা মুক্তং উবণং স্পর্শেনাপি মারকমিতার্থ: অতএব বীর্যাং তবিধ রপমেবেতি তথা তৈ ব্যাখ্যাতং আদার আরুবা। অতো বিকর্মকত্বমণি তৎ তং জনং ব্রজবালকানামপি বধার্থমাগতবেন রোধ সমন্বিতঃ সন্ প্রাণৈ সমং অপিবৎ যতো দন্তিন্যাং তদ্যাং দৃত্তেনৈব প্রাণাপহারো যোগ্য ইতি ভাবঃ রোধ সমন্বিত্বক তৎ জন্য প্রাণ পানার্থমেবাক্তং তত্তত রোধরূপং তত্তের এব তান্ হুইভাব ময়ান্ অপবিত্তানপিবং অশোবয়দিতার্থ: কুঠার সমন্বিতো বৃক্ষমিছিনদিতি বং স্বয়স্ক তদমুকরণ মাত্রাং কৃতবানিতার্থ: ফলস্ক তদমুকরণ মাত্রাদিপি স্যাদিতি স্বব্রেরেবং ব্যাখ্যোয়ং। রোবশ্যাম্যাপাতক্র এব পরিণামতন্ত্র পরম ক্রপামেবা করোদিত্যাই ভগবানিতি কার্মণাদি স্বস্থণাব্যভিচার্য্যেব স্বিত্রত্রং। এতচ্চাত্রে বাস্থাং কিঞ্চেদং বাল্য লীলাবেশেহপি তাদৃশ শক্তো হেতুং তদাবেশেহপি স্বর্ধানাং শক্তীনাং স্ব সময় প্রতীক্ষকভালীলামুরূপা প্রবৃত্তিঃ স্যাদেবেতি ভাবঃ। স্বান্থব্যে ম্প্রাণীতিচ মধ্বেব ইত্যন্তে বিরম্ম ক্রন্তোঃ প্রাণা হি ত্রিবয় ঘাত্যা ন ভবস্তি। তত স্তদাত্বতাগাদনায় তৎ প্রাণানেব স্বপ্রাণেষ্ মিশ্র্যাণীতিচ মধ্বে

ক্রন্মসন্দর্ভ:।

হৰ্জবৈত্যাদিভ্যাং বিষমন্ত্ৰং গন্যতে। আদাম আক্ষয়। জতো দিকৰ্মকত্বং তমিতি শেষঃ। প্ৰপীতা অনমিতি পূৰ্কেণৈবাষনঃ।

🗐 বিশ্বনাথচক্র বর্তী।

বীক্ষ্য অস্তব্যৈক্ষ্যে বহি মার্দিবে চ দৃষ্টাস্তঃ মৃত্ চর্মমন্নঃ কোরঃ পরিচ্ছদ আবরণং যদ্য তথাস্তমদিনিবেতি তদ্যাঃ প্রভবাবধর্ষিতে অভিভূতে মংপুত্রদ্যাভ্যদরার কিনিয়মবিকা কিনিয়মিক্রাণী মুর্তিমতী তৈলোক্য দম্পত্তি বা বাংদল্যেন স্তন্যং পায়য়তীতি মোহিতে দত্তো জননী জননাে) নিরীক্ষ্যমাণে এব কেবলম্ভিষ্ঠতাং নতু নিবারিতবতাে) ॥ ৮॥

তশ্বিদ্ধের স্থানে ত্র্জ্জরং বিষর্গণ বীর্যাং যাস্য তৎ। যোরা পূতনা শিশোং শিশবে গাঢ়ং প্রণীড়োতি তয়া ত্যাজরিতুমশক্যঃ সন্নিতি ভাবঃ। রোষসমন্বিত ইতি মদীর ব্রজবালকানপীয়ং জিঘাংসতীতি রোষময়ী ছই সংহারিকাশক্তিরেবাপবিত্রান্ প্রাণান্ স্তনকাপিব-দশোষরং নতুস ইতি কুঠারসমন্বিতো বৃক্ষমজ্জিনদিতি বং ॥ ১ ॥ .

তথাচ শ্রীকৃষ্ণের চুই জননী অর্থাৎ যশোদা ও রোহিণী ভাছাকে উত্তমা স্ত্রী এবং জননীর ন্যায় চেফাবিত তথা গৃহ মধ্যে প্রবিষ্টা দেখিয়া তদীয় প্রভায় অভিভূত হইয়াছিলেন অর্থাৎ মুগ্ধ হইয়া এই
অঙ্গনাই বুঝি বালকৈর জননী হইবে, এই রূপ বিতর্ক করত কেবল তাহার প্রতি দৃষ্টিপাত করিয়া
দাঁড়াইয়াছিলেন, ইহাতে ভাঁহারা নিবারণ করিবেন কি । ৮॥

সে যাহা হউক, রাক্ষ্মী সেইন্থানে উপনীত হইয়া শিশুকে ক্রোড়ে লইল এবং হুর্জর গরল বিলেপিত স্তন পান করিতে দিল। তদ্দর্শনে ভগবান্ ক্রুদ্ধ হইয়া গাঢ় নিপীড়ন পূর্ব্বক কেবল বিষ সা মুক্ত মুক্তালমিতিপ্রভাষিণী নিষ্পীভ্যমানাখিলজীবমর্মণি।
বির্ত্য নেত্রে চরণো ভূজো মুক্তনিস্বিদ্ধগাত্রা ক্ষিপতী প্রয়োদ হ ॥ ১০ ॥
তস্থাঃ স্বনেনাতি গভীর রংহসা সাদ্রি মহী দেয়াশ্চ চচাল সগ্রহা।
রসা দিশশ্চ প্রতিনেদিরে জনাঃ পেতৃঃ ক্ষিতো বজ্রনিপাতশঙ্কয়া॥ ১১ ॥
নিশাচরীত্বং ব্যথিতস্তনা ব্যস্থ ব্যাদার কেশাংশ্চরণো ভূজাবিপ।
প্রসাধ্য গোঠে নিজ রূপমান্থিতা বজ্রাহতো বৃত্ত ইবাপতদ্প ॥ ১২ ॥

वीधत्रवामी।

বিষমপথামিতি মহৈর তদ্যা: প্রাণ্ডে: সৃহাপিবং ॥ ৯ ॥

চরণৌ ভুজৌচ মুহ: ক্লিপস্তী নিষিন্নানি স্বেদযুক্তানি গাত্রাণি যদ্যা: দা॥ ১০॥ ব্যাদায় মুখং বিরুত্য নিজ রূপমান্থিতা মরণদময়ে কপটমযুক্তমিতীব॥ ১২॥

রদাঃ রসাতলানি চ ॥ ১১ ॥

देवकवरजायवा ।

বেতি ভাব:॥ ৯।

মুক্ষ মুক্ষেতিবদলমিত্যপি বারণেহত্ত বীপ্দায়। অভাব: প্নৰ্বক্ত মুদক্তাৎ অধিল জীব মৰ্মাণ জীবনাপ্সমে করোদ উচ্চৈ: সরো-দনমার্থনাদং চকার। হ হর্ষে॥ ১০॥

রসান্চেল্: প্রতিনেহণ্চ দিশশ্চ প্রতিনেহরেবেতার্থ:। বজ্ঞেতি লোকে তদুর্দ্ধ শব্দপ্তাপ্রসিদ্ধে:॥ ১১॥

নিজরপং উল্কীয়রপং। গোঠে লক্ষণয়া গোঠ সমীপদেশে গোদোহাধাবরোধন স্থলে নতু জনবাসে। নতু ক্রমাণামের চুর্ণিতত্বেন কথ্যমানত্বাং চরণরোঃ পক্ষাত্মক ভ্রুরোল্চ বিক্ষেপণোৎপতনাৎ সা থেচর্য্যে কলেৎপত্যেতি পূর্ব্ব দর্শিতভাচ্চ হে নুপ এতাদৃশ কথো-বোধনেন নুন্ পাদীতি ভাবঃ॥ ১২॥

क्रमनमर्जः।

রোষদমন্বিভন্থ তৎ স্তন্যপানার্থমুক্তং॥ ১॥

ডতশ্চ রোষধারাপিবদনাশয়দিতি রোষক্ষপং তত্তেজ এব তানপিবৎ ন স্বয়মিত্যর্থঃ॥ ১০॥ ১১॥

বস্তুতন্ত্ৰ ভগবান্ রোবেহপি কারুণ্যাদি গুণাব্যভিচারী। গোষ্টে গোদোহার্থ গবাবরোধন স্থলে ন তু গবাদ্যাবাদে ক্রমাণামের চূর্ণিত-ত্বেন কথ্যস্থাৎ ॥ ১২ ॥

बैवित्रनाथठळ वर्डी।

নিশীডামানা অর্থাদালকেন চরণৌ ভূজৌ চ মৃত্মু হ নিক্ষিণতী॥ > । রসা রসাতলানি চ॥ >> ॥ নিজরণমান্থিত। মৃত্যুণীড়িতয়া তয়া নিজমায়য়া রক্ষিত্মশক্যভাং॥ > ২॥

অপথ্য বিবেচনা করত তাহার প্রাণের সহিত পান কল্পিতে আরম্ভ করিলেন॥ ১॥

সমস্ত জীবমর্শ্বে নিপ্পীড়ামানা হওয়াতে দেই রাক্ষ্মী সহ্ব করিতে না পারিরা বারস্বার ছাড় ছাড় বলিতে লাগিল এবং ছুই চকু বিরত করিয়া মূহ্মুহ্ণ হস্ত ও পদ ক্ষেপণ করিতে ২ রোদন আরম্ভ করিল। স্তনাকর্ষণের বেগে তাহার গাত্র ঘর্শ্বে পরিপূর্ণ হইল ॥ ১০॥

হে রাজন্! পূতনার অতি গভীর বেগান্বিত শব্দে পর্ববিসন্ধ পৃথিবী এবং গ্রাহ নক্ষত্র সমেত নভোমগুল বিচলিত তথা রসাভল ও দিক্ সকল প্রতিধ্বনিত হইল। অধিকস্তা, যাবতীয় জীব বন্ধনি-পাত শক্ষায় ভূতলে পড়িয়া গেল॥ ১১॥

সে যাহা হউক, ঐ নিশাচরী ঐ প্রকার ব্যথিত স্তনা ও বিগত প্রাণা হইরা বিরেচনা করিল মরণ সময়ে কপটতা যুক্ত নহে অতএব মুখ ব্যাদান এবং কেশ, চরণ তথা হস্তবর প্রসারিত করিয়া আপ-নার রূপ অবশ্যন করিল। হে নৃপ! পরে ক্রাহ্র ব্রাহত হইরা যে রূপে পড়িয়াছিল সেই রূপে পতিতা হইল॥ ১২॥ শতমানোহপি তদ্ধেই ক্রিগবৃত্তান্তর ক্রন্মান্। চূর্ণানাস রাজেন্দ্র মহদাসীত্তদভূতং ॥ ১৩॥ ঈশামাত্রোগ্র দংষ্ট্রাস্থং গিরিকশরনাসিকং। গওশৈলন্তনং রৌদ্রং প্রকীর্ণারুণ মূর্দ্ধজং॥ ১৪॥ অন্ধকৃপ গভীরাকং পুলিনারোহ ভীষণং। বন্ধসেতু ভূজোর্কজিনু শৃশ্যতোয় হ্রদোদরং॥ ১৫॥

ञ्चिभत्रचामी।

পতরপি তদ্যাঃ দেহঃ বট্জোশ মধ্যবর্ত্তিনো জ্মাংক্ পীচকার॥ ১৩॥

দ্বীশা লাক্ষণ দণ্ড: তংপ্রমাণা উত্রা দংট্রা যশ্বিন্ তথি ভূতমাননং যশ্বিন্ তং তদ্যাঃ কলেবরং বীক্ষ্য গোপা গোপ্যক সংত্ত হ সংত্রন্ত সংত্রাস হেতৃত্বন পুনরট্রভিঃ পদে বিশন্তি গিরি কলর ইব নাসিকে যশ্বিন্ তং গিরেক্চ্যুতৌ স্থূলোপলো তাবিব তনৌ ম্মিন্ তং । রোজং ঘোরং প্রকীশা অকণা মুক্কা যশ্বিন্ তং ॥ ১৪ ॥

ক্ষরকুপাধিব গভীরে অফিণী যক্ষিন্তং। পুলিনধদারোহো জবনে তাভ্যাং ভীষণং। বদ্ধাং সেতব ইব ভূজো উরু অভ্যীচ বৈকাবভোষণী।

তত্রান্তর্গানার পতেতি। ন কেবলং জীবরের জীবান্ জ্বান দ্রিয়্মাণো হপ্যতিতরামিত্যপি শর্মার্থ: তদেব যট কোনী ক্রম চুর্নিজং তত্রাপি তন্ধারেং চ্নিজং যত্তদ্বত মহদেবাসীৎ স প্রবৃত্ত ত্যাঃ শ্রীভগবলীলা শক্তেরের মহিমা ইত্যবগমরিজং ভৌতি রাজেন্তেতি ॥১৩ স্বশ্বতি ত্রিকং। রৌক্রমনের দর্শান্তি স্বশ্বতি ত্রিকং। বেরীক্রমনের দর্শান্তি স্বশ্বতালান্ত বিশেবণৈ:। তত্রচ ভীষণমিতি প্নক্ষক্তি জ্বনরোর্ভিভয়ন্ধর্পাভিপ্রারেণ পূর্বং তত্তা নির্ভ্রত্বনাদেনাধুনাচ ত্রালহরণমন্ত্রান্তরে গোপা গোপান্চ তাদ্বেহ দর্শনেন সমাক্ ত্রন্তা বভূব্রিত্যর্থ: শ্বপ্রবিদ্ধান এতহ্য-ক্রমেবেত্যর্থ: ॥১৪॥

শথ বাল হরণরন্তং জানতা: শ্রীমণোলনিকটয়া গোপাস্ত মোহবাপ্তে শ্রীমণোলা রোহিণ্যে পরিত্যক্ষ্য বিদ্রুতা তক্ষুতক নৈহাতং বালং গৃহীৰা গৃহমানীত্রতা ইত্যাই বালং ছেতি। তত্র বালমিতি তথাপি তলীলামাত্রাবিদারেশ তালাং তক্ষ্যা সেই বৃদ্ধিঃ স্বিতা বালবাদেবাকুতোভয়ং বস্তত্ত ন কুতোহপি ভয়মন্তেবামপি যন্ত্রাং তং। অতএব তল্যা উর্সি জ্রীভৃত্তং সহসাবলোকপূর্বক শ্রীহন্ত পাল নর্তনাদিনা জ্রীড়াং কুর্বান্তং অতএব জাতঃ সংশ্রমো বিশ্বরো হর্বাবেগো বা যালাং তথাভূতাঃ সত্যঃ সাক্ষাং পতিত পূত্রা মহোচ্চ দেহারোহণে হপাতির্যাক্ ওয়াভিমুখং গরা জগৃহর্বতো গোপাঃ শ্রীক্ষে সহজ সেহাকুলছেন প্রসিদ্ধান্তেনৈব সর্বাভিম্যং

ক্রমসন্দর্ভ: i

পতেতি। অত্র ভাৰৎ জনচুর্ণীয়কৃষ্ণ তথাপি দ মহয্য গ্রাদি বৰ্জিষ্ণ চেক্ট্রস্মত্রাভূতং। তচ্চ ভগ্রছক্তি ব্যঞ্জকমের॥ ১৩॥১৪॥১৫॥

श्रीविश्वनाशहक्तवर्शी।

পত্মান: পীড়াবৈরপ্রাবশাদন্ত: পুরাত্ত্মাত্ত্রপ্রত্য গ্রামসপুলেজ্য তথহিংপ্রদেশে পত্মিত্যর্থ:। অপি কারেণ ন কেবলং জীবস্থাব সা জীবান্ জঙ্খান অপিতৃ মৃতাপীতি ভাব:। বট্জোশ মধ্যবর্তিনো জ্ঞমান্ তাবতাং ক্রমাণাং চুর্ণনং ক্রমাত্র চূর্ণনং প্রামেল্যনং চেত্যজ্যভূতং ক্রমান্চ তে কংনারামন্থা অভাব্য ক্লা ইতি বৈশ্বতাব্দী ॥ ১৩ ॥

তস্যা কলেবরং বীক্ষা গোপাগোপাশ্চ তত্রস্থা। ঈশা লাকল দণ্ড তথপ্রমাণা উগ্রদংখ্রী যদিং তাদাসাং যস্য। পুলিনবদারোহো-অথবং তেন জীবণং। বদ্ধাং পেতব ইব ভূলাব্র অব্দ্রী চ যদিন্ তথ শ্নাতোরপ্রদ ইব উদরং যদিন্ তথ। পূর্বান্ত তস্যাঃ শাক্নে তিরানি বিদীর্মানি প্রদাদীনি বেবাং তে তাশ্চ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥

হে রাজেন্দ্র । পূজনারাক্ষনীর দেহ পতিত ক্ইবার সময় ছয় জোলের মধ্যে যত রুক্ষ ছিল সমূ-দার চুর্ব করিয়া ফেলে, অতএব তাহার পজন অদুভ হুইয়াছিল॥ ১০॥

ফলতঃ প্তনার দেছ অতিশয় ভয়াৰক, তাহার বদনে লাসল দণ্ডের প্রমাণ উগ্র দশন, নাসিকা-দর গিরিকলনের তুল্য, হুই তান হুইটা গওলৈল অর্থাৎ কুন্তু পর্বত সদৃশ, মন্তকে অরুণবর্ণ কেশ কলাপ প্রকীর্ণ ॥ ১৪ ॥

নেজৰা আৰক্পের ভুলা গভীর, জৰনৰত্ন নদীয় পুলিন সমান, ভুজ-ৰয়, উরু-ৰয় থবং পদ-ছয় বদ্ধ সেত্র সদৃশ, উদর জলশুন্তর্দসম, ভাতরাং সর্বভোভাবে ভীষণ ॥ ১৫॥ সংতত্রস্থং স্ম তদ্বীক্ষ্য গোপা গোপ্যঃ কলেবরং। পূর্বস্ত তন্নিউনিত ভিন্নছৎ কর্ণ মস্তকাঃ। বালঞ্চ ত্রস্থা উরদি ক্রীড়স্তমকুতোভয়ং। গোপ্যস্ত ব্র্ণং সমভ্যেত্য জগৃহ র্জাত সংভ্রমাঃ। বশোদা রোহিণীভ্যাং তাঃ সমং বালস্য সর্ব্বশঃ। রক্ষাং বিদধিরে সম্যক্ গোপুচ্ছভ্রমণাদিভিঃ১৬ গোমূত্রেণ স্নাপ্যিত্বা পুনর্গোরজসার্ভকং। রক্ষাং চ চক্রুঃ শক্তা দ্বাদশাঙ্গেষু নামভিঃ॥ ১৭॥

औधत्रश्रामी।

বিদ্ধিন তং। শূন্যতোর হ্রদ ইব উদরং বিশ্বিন্তং॥ ১৫॥

পূৰ্ব্বেষৰ তদ্যা শব্দেন ভীতাঃ পুনৰ্দশ্নেনাতি তত্তস্থ্ৰিত্যাই পূৰ্ব্বিতি। তদ্যা নিষ্টনিতং শব্দত্তন নিৰ্ভিন্নানি হং কৰ্ণ মন্তকানি বেষাং তে॥ ১৬॥

हानभारत्रयु ललाठे। नियु दक्शवानि दानश नामि ।। ১१॥

देवस्ववरज्ञायनी ।

ত্যর্থ: তথৈব স্তাসাদি তব্রজ্ঞানমণি বক্ষ্যতে এতাহি প্রায়ঃ জ্ঞীব্রজেশরীসবয়কা জ্ঞেয়া মাতৃবৎ মেহেন রক্ষাদ্যাচরগাৎ॥ ১৫॥

বাল্স্তেতি লেহভবেণ তাদৃশ রক্ষা যোগ্যত্বং বোধয়তি এবমগ্রেহণি যশোদারোহিণীভ্যাং সমমিতি তরে প্রারিষ্টশক্ষাতি ব্যাকুলত্বেন কিঞ্চিং কর্ত্ত্ স্থান্ত তরাপ্রধায়ভাং সাহিত্যঞ্চ তয়োঃ সমাক্ শোকোপশমনার্থং জ্ঞেয়ং। স্বর্ধণ ইতি বহবর্থাৎ কার-কাং নাক্লিকার্থোহয়ং শস্ প্রভায়ঃ। বাহাভাস্তরাদি ভেদেন স্ক্তিরবৈত্যর্থঃ। সম্যগুত্তম প্রকারং যথাস্যাৎ। আদি শব্দেন শর্ষণ নির্মন্ত্রন পূর্ণকোণ স্পর্শাদীনি ॥ ১৬॥

সমাক্তামের দর্শরতি গোম্ত্রণেতি। ললাটাদি ঘানশালেষু কেশবাদি ঘানশ নামভিঃ শক্তা গোমরেন রক্ষাং চক্রং তানিচ বিবি-চ্যোক্তানি পালোক্তরথতে তিলকনির্মাণবিধৌ। ললাটে কেশবং ধ্যারেলারারণমথোদরে। বক্ষংস্থলে মাধবন্ধ গোবিলাং কঠকুপ্লকে। বিফুঞ্চ দক্ষিণে কুক্ষৌ বাহেছি মধুস্দনং। তিবিক্রমং কন্ধরেতু বামনং বাম পার্মকে। শ্রীধরং বামবাহেছি ক্ষীকেশন্ত করে ব। প্রাক্রম পদ্মনভঞ্চ কটাাং দামোদরং ভানেৎ ইতি এরং সহজ্ব পর্ম বৈষ্ণবত্রা শ্রীভগবদ্নমভিরেব রক্ষাবিধিঃ ক্লত ইতি জ্বেরং॥ ১৭॥

ক্রমসন্দর্ভঃ।

প্রীয়শোদাদ্যোরপ্রাধান্যং শোকবৈবশ্যেন ॥ ১৬॥ ১৭॥

শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

উরসি পর্বতবত্বুকে ক্রীড়ন্তং। প্রবেষ্টুং ক্তিকাগারমনীশানাং বনৌকসাং। দিদৃকা পূর্ত্তর ইব নিজ্ঞান্তং স্বপুরাষ্টিং॥ ১৬॥ বৃক্ষাবিধানে যশোলা রোহিণ্যোরপ্রাধান্যং তয়োঃ শোকোথ বৈষ্ণ্যাতিশবেন। সর্বতঃ সর্বেষ্পেষ্। আদিশব্দেন সর্বপ নির্ম-হুন ক্পকোণ স্পর্শনাদীনি॥

শক্ত। গোময়েন বাদশাকেষু ললাটাদিষু নামভিঃ কেশবাদ্যৈ:॥ > १॥

অতএব সেই দেহ দর্শন করিরা গোপ গোপী সকলেরই মহাভয় জামিল। ইতি পূর্বে ঐ রাক্ষ-দীর গভীর ধ্বনিতে তাহাদের হৃদয় কর্ণ মস্তক নির্ভিন্ন হইয়াছিল। দে যাহা হউক, মৃতা রাক্ষ্মীর বক্ষঃস্থলে আপনাদের বালককে ক্রীড়া করিতে দেখিয়া গোপীগণ সম্ভ্রমান্তি হইলেন এবং শীত্র সমীপে গিয়া শিশুকে তুলিয়া লইলেন। অনস্তর মশোদা ও রোহিণীর সহিত মিলিয়া গোপুচ্ছ চাল-নাদি দারা সর্বব প্রকারে তাঁহার রক্ষাবিধান আরম্ভ করিলেন্॥ ১৬॥

প্রথমতঃ গোম্ত দারা স্নান করাইয়া পুনর্বার বালতের অঙ্গে গোরজঃ দকল লেপন করিয়া দিলেন, তদনন্তর গোময় দারা ললাটাদি দাদৃশ অফে কেশবাদি দাদৃশ নাম অর্থাৎ ললাটে কেশুব, উদরে নারায়ণ, বক্ষঃস্থলে মাধব, কণ্ঠকুলে গোবিন্দ, দক্ষিণ কৃষ্ণিতে বিষ্ণু, দক্ষিণ বাহতে মধুসুদন, দক্ষিণ কন্ধরে ত্রিকিন্দ, বাম কৃষ্ণিতে বামন, বাম বাহতে প্রথম, বাম ক্ষরে হারীকেশ, পূর্তে পদ্দিন এবং কটিতে দামোদর এইরূপ নামোল্লেখ পূর্বক তিলক দিয়া রক্ষা বন্ধন করিলেন । ১৭॥

গোপ্যঃ সংস্পৃতিসলিলা অব্দেষু করয়োঃ পৃথক্। অস্তাত্মতথ বালস্য বীজ্ঞাসমক্র্বত ॥ ১৮॥ অব্যাদজোহজ্ঞি মণিমাং তাব জাষধোর যজ্ঞো হচ্যুতঃ কটিতটং জঠরং হ্যাস্যঃ। হংকেশব স্বন্ধর ঈশ ইনস্ত কণ্ঠং বিষ্ণুভূ জং মুধমুক্তক্রম ঈশরঃ কং॥ ১৯॥ চক্র্যাতঃ সহগদো, হ্রিরস্ত পশ্চাৎ দ্বংপার্যয়া র্মুমুর্শী মধ্হাজনশ্চ।

विश्ववामी।

জনাচান্তা এবং প্রথম মতিসন্ত্রমেণৈবং রক্ষাং কৃষা কিঞ্চিন্নভাষাসাঃ পুনতাংপর্ব্যেণ বীজন্যাসমকুর্বতেত্যাহ সংস্পৃষ্ট সনিলা জাচান্তাঃ আত্মনি প্রথমং অলেবু কররোঃ পৃথক জলান্যেকালশ বীজানাং মধ্যে করওজৌ ত্রীণি করবোঃ সন্ধিরু চুম্বারি তথা অভ্যু গাদাবেকৈ কৃত্মিন্নক জজাদ্যেকৈকং বীজং নিধার বালস্যাপ্যজের তথৈবাকুর্বতঃ ॥ ১৮ ॥

অব্যু অঙ্ছী জাহ জাহনী ভূজং ভূজো কং শির:॥ ১৯॥

তথা দিকু রক্ষামকুর্বনিত্যাহ চক্র্যপ্রত ইভি। চক্র সহিতো হরি স্ক্রাপ্রতোহন্ত সহগলো গদাসহিতো হরি তাব পশ্চাদন্ত দং-

देवक्षवरकावनी ।

অথ রক্ষানম্বরং গোপ্য ইতি বশোদা রোহিণ্যৌ ব্যাবর্ত্তরতি পূর্ববং অতএব বক্ষ্যতেহণি গোপীভিরিতি মাতেতিচ পৃথক্ষেন ভাত্য তাত্র বক্ষামাণ রীত্যা অধানীখরাত্তৈকাদশ বীবানি সামুখার তত্তদাদ্যক্ষর রপাণি নমঃ শক্ষামান জেরানি ॥ ১৮ ॥

ততক পলৈরেতৈ রক্ষাং চক্রিত্যাহ অব্যাদিতি। অব্যি জাবিতানরোঃ স্থপাং স্থপ্রতাদি ছোলন স্তেশ স্থপ্র্ক ভ্রমিত্যতা স্থপাং স্থপ ইতি ওট্ স্থানে অমাদেশ:। অজাদ্যাং কেশবাদিবস্তত্ত্বামপ্রধানা মূর্তিভেদাং। মণিমানিত্যপি তল্পামা ভগবৎপ্রান্ত্রাব বিশেষঃ হং জীবাধারপল্পং উল্লোবকঃ॥ ১৯॥

ক্রমনন্দর্ড:।

বীজং অজাদীনাং প্রথমাক্ষরং সামুখারু ॥ ১৮॥ অভিবু জাবিতি স্থপাং স্থল্গিডাট্টিনা স্থল্ক ॥ ১৯॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

প্রথমনাচান্তা এবাতিসম্মেণির রক্ষাং ক্বরা পশ্চালকাশাসা যথাবিধানমের রক্ষাং চকুরিত্যার গোপ্য ইতি। সংস্কৃত্ত সনিলা আচিত্তা। আত্মনি আত্মনংশ্বলের কর্মোশ্চ স্থাস অঙ্গনাস করন্যাসে ক্রেন্যাসে কর্মোশ্চ আত্মনি আত্মনাজ্যের ক্রেন্সালের ক্রেন্সাল

ত তক্ত পৰৈনৱেতৈ রক্ষাং চকুরিক্তাহ অব্যাদিতি অভিযু অভ্যু । মণিমান্ তল্লামা ভগৰৎপ্রাহর্ভাব বিশেষঃ । আয়ু আহুনী জল্মে ২চ্যুত ইতি সন্ধিরার্ধঃ। यहुक्कारहुग्छ ইতি চ পাঠঃ। হুৎ জীবাধারপদ্মং উরো বক্ষঃ॥ ১৯॥

্ডথা দিকু রক্ষামকুর্বন্ধিত্যাহ। চক্র্যপ্রত ইতি চক্র সহিতো হরি স্তবাগ্রতো হস্ত। সহগদো গদাসহিতো হরিক্তব পশ্চাদন্ত। ছৎ-

তাহার পর গোপীসকল জল স্পর্শ পূর্বক আচমন করিয়া প্রথমে আপনাদের সকল অঙ্গে ভথা কর-ৰয়ে অজুদ্ধি একাদশ বীজ ন্যাস করিলেন শেষে বালকের অঙ্গেও তজেপ করিয়া দিলেন॥ ১৮॥

হে রাজ্মী পোপীরা এই বলিরা বীজন্যাস করিয়াছিলেন বথা-ভগবান্ অজ তোমার পদবর রক্ষা করুন, অণিমান তোমার জাতু-বর রক্ষা করুন, যজ তোমার উক্ত-বর রক্ষা করুন, অচ্যুত তোমার কচিতট রক্ষা করুন, হয়প্রীব ডোমার জঠর রক্ষা করুন, কেশব ভোমার অবর রক্ষা করুন, উশ তোমার উবর রক্ষা করুন, ইন অর্বাৎ সূর্ব্যদেব, ভোমার কঠদেশ রক্ষা করুন, বিষ্ণু ভোমার ত্ল-বর রক্ষা করুন, তিয়ার বৃধ রক্ষা করুন, ইখর তোমার মতক রক্ষা করুন ॥ ১৯ ॥

অপর, চক্রপাণি ভোষার অত্যে থাকুন, হরি গদা ধারণ পূর্বক ভোষার পশ্চাৎ ভাগে থাকুন, ধরু-

কোণেরু শব্ব উরুগার উপর্যুগেক্স ন্তার্কঃ কিতে হলধরঃ পুরুষঃ সমন্তাৎ ॥ ২৬ ॥
ইন্দ্রিয়াণি হুবীকেশঃ প্রাণানারায়ণোহৰতু। শেতবীপপতিশ্চিতঃ মনোযোগের্বরোহবতু ॥ ২১ ॥
পৃশ্লিগর্ব্তন্ত বৃদ্ধিমান্থানং ভগবান্ পরঃ। ক্রীভৃন্তং পাতৃ গোবিন্দঃ শ্রানং পাতৃ মাধবঃ।
অজন্তমন্যাবৈক্ঠ আসীনং স্থাং প্রিয়ঃপতিঃ। ভূঞানং গল্পত্ব স্বত্তিহ ভর্করঃ।
ভাকিতো যাতুধান্যন্ত কুমাণ্ডা যেহর্ভকপ্রহাঃ। ভূতমাতৃ পিশাচান্চ যক্ষরকো বিনারকাঃ।

শ্রীধরস্বামী।

পার্শরোধ স্থারে। মধুহা অসিধরো হজনশ্চ আন্তাং শব্ধর উরুগার: কোণেরু ক্ষিতৌ ২ধস্তাৎ ॥ ২০ ॥ এবং বহীরকাং কৃষা অন্তরঙ্গ রক্ষামকুর্শরিত্যাহ ইক্রিয়াণীতি ॥ ২১ ॥

देवक्षवरज्ञावनी।

ভার্ক্সহিত: উপেশ্র: পুরুষ: পুরুষোত্ম:॥ २०॥

ইক্সিয়াণীতি সাৰ্দ্ধকং। অবন্ধিতি প্নক্ষকী বক্ষণেত্যক্ত বৈশ্বগ্ৰাৎ এবমগ্ৰে পান্ধিত্যাদ্যপি পৰো জগবান্ বং বাংং ভগবানিতাৰ্থঃ। স্বাহ্মতী সহাদান্দারং। তেবাং ভদংশবেন মমতাম্পদ্যাৎ বস্তু ব্যক্ষ বভেতি প্রার্থনাম্য ইতার্থঃ। সত ক্তর্ভাবার্ভাবাক্ষাব্রণ রূপান্দ তে তে ইতি ক্সেমং॥ ২১॥

ক্রীড়স্তমিতিচ সাদ্ধকং। গোবিন্দ ইত্যাদিকস্ত তত্তৎ ক্রীড়াম্বরণেণ তত্ত্র গোবিন্দ গো মধ্যে ক্রীড়াপরঃ ক্রিডদেৰ ইতি তাসাং ভানং। মাধবং লক্ষ্মীসংবাহ্ চরণঃ শেষশারী বৈকুঠো বিকুঠামতো জয় বিজয় সনকাদি সমাধানার্থং প্রপন্ন প্রমং পাদপ্রক্ষামৈব বহিন্দিতো যঃ স ইত্যর্থঃ। প্রিয়ংপতিঃ প্রমব্যাম সিংহাসনস্থো মহানারায়ণঃ। যজ্জভুক্ স্পষ্ট এবেতি। সর্ব্ধ এছ ভর্মর ইত্যস্য সর্বৈধ্ব রপ্যবন্ধঃ। ক্রীড়াদির গ্রহদোবেভ্যোহণি রক্ষার্থং॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

তার্ক সহিত উপেজ: পুরুষ: প্রকৃতিদ্রন্তী ॥ ২০ ॥ ২১ ॥

পরো ভবান্ স্বয়ং ভগবানিতার্থ:। সরস্বতী সম্বাদকায়ং। অতত্তে বিজ্ঞোরিতি চ বক্ষাতে তেবাং তদংশত্বেদ মমতাম্পদস্বাৎ। স্বস্যা স্বয়ং তগববেইনবাহস্তাম্পদস্বাচ্চ অন্স্বাংশ রক্ষা ভবতু স্বয়ঞ্চ স্বস্যাইতি প্রার্থয়ামহ ইত্যর্থ:॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

পার্শরোধ পূর্ধ রো মধুহা অসিধরো হলনকাত। কোণের শত্রধর উকগারোহত উপয় পেকো হত তাক্র কিতাবধন্তাকত। হলধরঃ পুরুষ: সমস্তাকত ॥ ২০ ॥ ২০ ॥ ২২ ॥

ধারী মধুহা এবং অসিধারী অজন তোমার পার্য-ছয়ে অবস্থিত হউন, শশুধারী উরুগায় তোমার কোণ-সমূহে থাকুন, উপেন্ত তোমার উপরে এবং গরুড় অধোভাগে আর হলধারী পুরুষ তোমার সর্ব দিকে রক্ষার্থ অবস্থিত হউন ॥ ২০ ॥

এই প্রকারে বহির্ভাগে রক্ষা করিয়া পরে অস্তরের রক্ষা করত কহিতে লাগিলেন, বংগ ! শ্রহীকেশ ভোমার ইন্দ্রির সকল রক্ষা করুন, নারারণ তোমার প্রাণ সকল রক্ষা করুন। খেতবীপ্রতি ভোমার চিত্ত রক্ষা করুন। বোগেশ্বর তোমার মনঃ রক্ষা করুন ॥ ২১॥

অপর, পৃথিগত তোমার বৃদ্ধি রক্ষা করুন, ভগবান বয়ং তোমার অহতার রক্ষা করুন, গোনিদ তোমাকে জীড়ার সমরে রক্ষা করুন, মাধব ভোমাকে শর্ম কালে রক্ষা করুন, বৈরুষ্ঠ তোমাকে গমন কালে রক্ষা করুন, জ্রিপতি তোমাকে উপবেশন সমরে রক্ষা করুন, সর্বব্রহেয় জ্যাকারী বজ-ভোক্তা ভোমাকে ভোজন কালে রক্ষা করুন, অপর ডাকিনী গণ, রাক্ষী সকল তথা বালআই ও কোটরা রেবতী জ্যেষ্ঠা পূতনা মাতৃকাদয়:। উমাদা যে হুপস্মারা দেছ প্রাণেজিয়ে ক্রন্থ:।
ব্রপ্রদৃষ্টা মহোৎপাতা রন্ধ বাল গ্রহান্ত যে। সর্বে নশ্যন্তি তে বিষ্ণো নাম গ্রহণভীরবঃ॥২২॥
ইতি প্রণয়বদ্ধাভি র্গোশীভিঃ কৃতরক্ষণং। পায়য়িত্বা স্তনং মাতা সংন্যবেশয়দাত্মজং।
তাবদ্দদায়ো গোপা মথুরায়া ব্রজং গ্রাঃ। বিলোক্য পূতনাদেহং বভুবু রতিবিস্মিতাঃ॥২০॥
নূনং বতর্ষিঃ সংজাতো যোগেশো বা সমাস সঃ। স এব দৃষ্টো হ্যুৎপাতো যমাহানকভুন্দুভিঃ।.

ञ्जिथत्रयामी ।

আত্মানং অহন্ধারং॥ ২২॥

সংন্যবেশয়ং শার্যামাস॥ ২৩॥

देवकवरजावनी ।

ডাকিস্ত ইতি ত্রিকং। আদি শক্ষাচ্চ বকী জ্ঞালামুধাদ্যা দেব্যা গণাঃ। বালগ্রহা ইতি পুনরুক্তি বালকে তেভ্যো ভয়াধিক্যাৎ। কেচিদাছ্রর্জক রূপেণ যে প্রাণিনো,গৃহন্তি তেহর্জকগ্রহাঃ পিশাচ ভেদা ইতি ॥ ২০॥

ইতি এবং ক্ল'তং বক্ষণং বক্ষা যদ্য তং। তত্ৰ হৈতুং প্ৰণবেন স্নেহেন বন্ধাভি বঁশীক্লডাভি:। ইতি শ্ৰীবশোদা গৃহে বন্ধবস্তাসাং ধাত্ৰী-ভবা নদাবছিতি:। তথাচ শ্ৰীভগৰদৰ্থং প্ৰম ব্যগ্ৰত্বা বিবিধ ব্যাপাৰতাচ জ্বেয়া। শুনং পাৰ্মিছেতি মাতুং স্নেহ স্বভাৰত:। তথা লোকে স্তনপানেন ৰাশুদ্য স্বাস্থ্যজ্ঞানাচ্চ॥

তাবদিতি গমনে শৈল্য মুক্তং মধুরাপুর্ব্যাঃ সকাশাৎ স্তব্ধং ব্রজদর্শন যোগ্য দেশং প্রাপ্তাঃ বিলোক্য দূরতো ৰিবিধ কল্পনায় নিভাল্য পর্বতাকারত্বেন দূরত এব দর্শনাসম্ভবাং তক্রচ শ্রীবন্ধদেবোক্ত সন্বাদেনাত্যন্ত বিশ্বিতা ইত্যর্থঃ ॥ ২০ ॥

অতি বিশ্বিতানাং তেৰামস্তোক্তিমাহ। নুনমিতি বিতর্কে স আনকগুন্দুভিঃ প্রাগেতাদৃশো নাসীং। অধুনাচ ঋষিঃ সম্প্রজাতো-বৃত্তঃ ঝবিবাক্যক্তৈব প্রামাণ্যাং। নমু ঋষিত্ব চিহ্নং কিমপিন দৃষ্টং ইত্যাশক্ত পক্ষান্তবমাহ গোগেশ ইতি। অন্তরুপাসনা নিঠঃ সংশ্রকান্ত্যাং

ক্রমদন্দর্ভ: i

অত স্তত্তদঙ্গাবতার। স্তদাবরণ রূপাশ্চ তে ত ইতি জেয়ং। অর্জক বালগ্রহনোরৈকার্থ্যেন পুনক্ষক্তি ব'ালক্ষেত্রা জয়াধিক্যাৎ ॥২২ তাবদিতি বিলোক্য জ্ঞাত্বা তচ্চ দ্রতোহপি দর্শনেন য২ কিঞ্চিছ বণেন চেতি জ্ঞেয়ং। যে নীচলাতয়ো ব্রজৌকসস্ত এবেত্যুর্থ:॥২৩।২৪

विविधमाथहज्यवर्शे।

প্রণয় রসন্মা যশোদা গৃহ এব বন্ধাভিঃ। পায়য়িখেতি তনপানমেব বালানাং স্বাস্থ্যলকণমিতি ভাবঃ। সংন্যবেশরং শায়য়ামাস ॥২৪ স্প্রতি বিশ্বিতাঃ কিং শক্ষেণ শ্রমাদচ্ছিদ্ধপক্ষঃ কোহপিঃ পর্কতো নভোৱাগিনোহপাত্রতান্ মহীকহাং শুণ্যিছা পপাত। কিস্বা ব্য়মেৰ সাহন্দিক্যা আন্ত্যা ক্য়াপি যোগিন্যা বা দেশান্তরং প্রাপিতাঃ শ্বঃ। কিস্বা,কস্যাপ্যৈক্রজালিকস্যেদং কর্মেতি সন্দিহানা ইতার্ধঃ॥ ২৩॥

তত্ত্ব জীওজরাজন্ত নিশ্চিনোতি নূনং নিশিতমেন ঋষিরশ্বংকুলে বস্থানেনঃ সর্বজ্ঞতাদক্ষীরতে। যোগেশো হটাঙ্গযোগাভ্যাসী যোগজ নেত্রেণ তাবি রও দর্শিষাং সমাগদীপ্যতে শ্ব। অস মুনিপ্রৌ॥

কুমাও এড়িত ভূতগণ, মাতৃগণ, পিশাচগণ, তথা ৰক্ষ, রাক্ষস, বিনায়ক সকল এবং কোটরা, রেবর্তা জ্যেছা, পুত্রমা, মাতৃকা এড়িতি, তথা উন্মাদ, অপস্মার, যাহারা দেহ, প্রাণ ও ইন্দ্রির জোহী। অপর স্থা দৃষ্ট মহা মহা উৎপাত এবং র্জগ্রহ, বালগ্রহ প্রভৃতি যত আছে, সকলেই বিষ্ণুর নাম গ্রহণে ভীত হইয়া বিন্ত হউক ॥ ২২॥

ছে রাজস্ ! গোপীরা অণ্য বন্ধ হইয়া ঐ প্রকারে রক্ষা বন্ধন করিলে নাতা আত্মজকে তনপান করাইয়া শ্যাম শয়ন করাইলেন। এই সময়ে নকাদি গোপগণ সধুরা হইতে একে আসিলেন। পূত-নার মৃতদেহ দেখিয়া ভাষাদের সাভিশর বিশায় জানিল। ২০॥

পরস্পার কহিতে লাগিলেন কি আশ্চর্যা। আমাদের বোধ হয় বহুদেব সম্প্রতি শবি শর্থাৎ তপঃ

কলেবরং পরশুভিশ্ছিত্বা ততে ব্রজ্ঞোকসঃ। দূরে ক্ষিপ্ত্রাবয়বশো নির্দেহ্ণ কার্চবেস্থিতং ॥ ২৪॥
দহমানস্য দেহস্য ধ্যশ্চাগুরুসোরভঃ উত্থিতঃ। কৃষ্ণনিভূকি সপদ্যাহতপাপানঃ॥ ২৫॥
পূতনা লোকবাল্মী রাক্ষ্সী রূধিরাশনা। জিঘাংসয়াপি হরুরে শুনং দ্বাপ স্লাতিং॥ ২৬॥

विधन्नश्रामी।

বিশ্বয়মেবাহ নুনমিতি। বত বিশ্বসে সাম্প্রতং স ঋষিং তপং প্রভাববানু বোগেশো জানী বা সম্যাস যতঃ স এব দৃষ্ট ইতি॥ ২৪॥
। বিশ্বয়ান্তরমাহ দক্ষানস্যেতি। ক্রফেন নিভূক্তি অভএৰ সপদ্যাহতঃ পাপ্যা যস্য॥ ২৫॥

প্ৰদল্গ কৈমৃতিক ন্যানেন ভক্তি বৈভবমাহ পূজনেতি॥ ২৬॥

देवकवटडावनी।

তত্ত্ত্তি বোধাতে তত্ত্ৰ হেতৃ: স এবেতি। আনকস্কৃতিরিতি। তাদৃশ জন্মখেন যোগ্যতাং বোধরতি। অন্তব্ত্তা বছা কোহপি যাং পূর্ব্ব জন্মনি ঋষি র্যোগেশো বা সমাস অত্ত সন্দেহ এব বিকরং স এবানকত্বসূতিঃ সন্ সংজাতঃ অন্যৎ সমানং। এবং সর্বজ্ঞিছা-দেব সোহবদদিতি তৈর্মতং অতএব স্থবিশ্বিতাঃ॥

এবং যাবৎ শ্রীনন্দাদরো নিকটমারান্তি তাবতৈ র্গোকুল রক্ষারাং স্থিতিঃ শ্রীমছপনন্দাদিতি নিযুক্তা তত্তিভাঃ ব্রন্ধোকনো ব্রজা-প্রিতাঃ কনিষ্ঠ জাতরো নিত্রামদহন্ পুনর্শীবন শক্ষা নির্দেহরিতি গাঠঃ কচিৎ ॥ ২৪ ॥

অত্তরতোহণি সৌরভং ৰস্ম সং। জত্র হেডু:। ক্লফেন সৌগন্ধ্য সৌন্ধপ্যাদি নিজাপেরোংকর্ম ব্যঞ্জকেন ভগবতা নিংশেষেণ ভূক্তঃ প্রোণৈ: সহ তুনপানাং অতএব সপদি ধ্যত্তাণ সময় এব আ সম্যক্ হতো নাশিতঃ পাপ্যা ধ্মসেবিনামপি সর্প্রোং যেন স চাসৌ সচ তুস্য এবং ভগবহচ্ছিইস্য মহিমা দর্শিতঃ। পবিত্রং বস্তু ভক্ত্যা সমর্পিতঃ কিমুতেতি বক্ষ্যতেচ পূতনা ইজ্যাদিনা॥ ২৫॥

পূতনেতি যুগাকং। জাত্যা রাক্ষদী ত্রাপি লোকবালগ্নী ত্রাপি ক্ধিরাশনা হররে ইতি তত্তদোষ হরগাতিপ্রায়ের প্রমান্তনে মৃত-প্রারেম্বর্জনি ক্রিয়া দক্তি প্রদান্তন সামান্ত স্তাবন্ধিতার ক্রমার বিশেষতঃ পূতনাদীনামপি তাদৃশ হিতকারিত ক্রপো বেশগুণৈকদেশ স্তদাদি গুণ গণ প্রকটনেন সর্ব্ধ চিন্তানাং স্বভাবত এব স্বন্ধিরাকর্ষকার ত্ত্তৈ ক্রেছিবিছেবাভাবেন মৃত্ন স্কাতিং সতাং গতিং প্রক্রিক মেব প্রাপ্রোতীতি ॥ ২৬ ॥

क्रमनसर्चः।

ক্ষণনিভূক্তিত তং সৌগন্ধাধানমপি ব্যক্তিতং॥ ২৫॥

রাক্ষ্যী লোকবালয়ী ক্ষরিশালনতি ক্রমশোহধমভাধিক্যং ॥২৬॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

ব্ৰজৌকদো হত্তাজা উপনন্দাদ্যাদিষ্টা:। নিঃশেবেণ দেহ: পুন জীবনশন্ধা বিষধর জীবানাং দাহেনৈবোপশান্তে:॥ ২৪॥
তদ্বেস্য কৃষ্ণুপশর্লোখং মহিমাননাহ, দক্ষমানস্যেতি। কৃষ্ণ নির্ভ্রেন কৃষ্ণকৃত জন্যপানেন সপদ্যাহক্ত: পাপান বস্তুত্যাং প্রক্রা
প্রসঙ্গাং কৈম্ত্য ন্যাবেন ভক্তে মহিমানমাহ প্তনেতি জিঘাংসন্থানি কিম্তোদাসীন্যেন কিম্তুত্রাং প্রক্রা কিম্তুত্যাং প্রক্রা
ভক্তেয় ত্যর্থ:। হররে ভগবৎ প্রাহ্রভাবিষাত্রার কিমৃত কৃষ্ণার পরমাত্মনে সর্ব্ধ পরম স্বন্ধপান্নাবভারিণে। বিরন্তনমধি কিমৃত বিবেতরন্ত্র
কিম্তুত্বাং প্রিরং কিমৃত্ত্যাং প্রিরভরং কিমৃতাভিত্যাংপ্রিরভমং। পূত্না নাত্রা প্রসিদ্ধার রাক্ষ্যাপি কিমৃত মাম্ব্যংকিমৃত্ত্রাং জ্বাঃ
কিমৃত্ত্যাং রক্তা অম্বাগযুক্তাঃ। ভ্রাণি কিমৃত্ত্যাং ভ্রাভরে। হতি বৎসলাঃ বৎসাহরণলীলা গভাজাম্ব্যভিত্না অনিবাচ্যাং
শ্রীষ্ণোদা তু দূরত এব প্রণভিপাত্রীকৃত্যৈর হাণিভা নতুন্ধিতিত্তি করণ স্ক্রাদানকর্মকর্ত্পদেহু কৈমৃত্যমণ্ডলী॥

প্রভাবশালী অথবা সম্যক্ জানী হইয়াছেন, কারণ তিনি যাহা বলিয়াছেন সেই উৎপাতই দৃষ্ট হইল। তদনস্তর ব্রজবাসি সকলে মিলিত হইয়া বহু ২ কুঠার জানিয়া ভদ্মারা পৃতনার মৃত কলেবর ছেদন করত এক একটা সঙ্গ দৃরে কেপণ করিলেন এবং কার্চ রেপ্তিত করিয়া দগ্ধ করিতে লাগিলেন॥ ২৪॥

হে রাজন্ ! দাহন করিবার সময় ব্রজবাসিদের অন্য এক বিশ্বয় উপস্থিত হইয়াছিল, অধীৎ দহ্মনান সেই দেহের ধুম অগুরু চলন ভুল্য হুরভি হইয়া উঠিয়াছিল, তাহার কারণ ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ তদ্দেহ ভোজন করিয়াছিলেদ তাহাতে তাহার সমস্ত পাপ সদ্যঃ বিধবত হইয়াছিল ॥ ২৫॥

হে মহারাজ। ভগবন্তজ্ঞির বৈভব দেখুন, পুতনা সকল লোকের বালঘাতিনী এবং ক্রেধিরাপনা রাক্সী ছিল, হত্যা করিবার বাসনাতেও ভগবান্ হরিকে স্তন দিয়া সদ্গতি প্রাপ্ত হইল॥ ২৬॥ কিং পুনঃ শ্রদ্ধা ভক্তা কৃষ্ণায় প্রমান্ত্রনে। যচ্ছন্ প্রিয়তমং কিং সু রক্তা স্তশাতরো যথা। পদ্যাং ভক্তকদিস্থাভ্যাং বন্দ্যাভ্যাং লোকবন্দিতৈঃ। অঙ্গং যদ্যাঃ দ্যাক্রম্য ভগবানপিবৎ স্তনং।

वीधतवामी।

শ্ৰদ্ধা আন্তিকোন ভক্তা প্ৰেল্লা রকা: বিশ্বান্তঝাতর ইতি বংসাহরণ শীলাভিপ্রারেণ ৰহবচনং গো গোপিকা ন্তদাতু তন্মাতরো হভবলিতি ॥ ২৭ ॥

देवकवट्डांघना ।

কিং পুন: কিম্ভ ইতার্থ:। তত্রাণি প্রদ্ধনা বিশাদেন কিমৃত তত্রাণি ভক্তা আদৰেণ কিমৃত প্রিয়তমমিতাকে: ক্রমপ্রাপ্তাচান্ন মর্থে কভাতে ত্রাণি প্রীতা অস্য প্রীক্ষণম বা প্রিয়ং যছন্ কিমৃত। ত্রাণি প্রীতাতিশনেন প্রিয়তরং যছন্ কিমৃতেত্রেরার্থ: ত্রাণি অতি প্রীতাতিশনেন প্রিয়তমং যছন্ কিমৃত ইতি কিম্প ত্রাণি রক্তা তাদেক জীবনা তথ্যুথৈক ক্থাশ্চ যথা যছনিত তথা যছন্ কিমৃতেত্রেরার্থ: প্নক্তি: কৈম্ত্রেগেণি বৈশিষ্টায় ত্রাণি ত্রাভিবেন যথা যছনিত তথা কিমৃতেতি অত্রবে মাত্রং সর্বাদিক রাগাং প্রেরস্যাদরোষ্ণি ন দৃষ্টান্তিতা ইতি জ্বেং ॥

ন্ধু থদ্যেবং হাটা তার্হি কথং সদগতিমাপ উচাতে তন্মহিম দৃষ্ট্যা নাশ্চর্য্যং তদশীতি বদং অস্যা স্থামেব সদগতিং পুনরাশ্চর্যা বিশেষাম্ব পরম বিশেষতো দর্শমতি পদ্যামিতি যুগ্মকেন। ভজানামেব নান্যেষাং দ্বন্যেব স্থিতাভ্যাং নতু সাক্ষাৎকর্ত্ত্বং শক্যাভ্যাং যে সইব্ধরাপ লোকৈ ক্ষিলভা শ্রীব্রহ্ম শিবাদয়োহপি মহাভক্তা তৈরপ্যদেশমাত্রেণ বন্দিত্বং যোগ্যাভ্যাং নতু সাক্ষাৎ দেব্যাভ্যাং সম্যাগাক্রম্য নতু যথাক্তথিই স্পৃষ্ট্য যাস্যাঃ স্তনমপ্যপিবং তথাভ্তা সতী সদগতিমাপেতি কিমাশ্চর্যামিতার্থং তত্রচ মাতৃবেশ ভাবাম্করণে তৎকর্ত্বনিব কারণমিতি ভাবং। তত্তকং সদ্বেশাদিব প্তনেতি। কংবা দয়ালুং শরণং ব্রহ্মেতি চ। বন্ধা ভবো লোকপালাঃ স্বর্ধাসং মেহতিকাজ্ফিণ ইতিবং স্বর্গং পরম স্থাম্ভব স্থানং। য এতং প্তনামোক্ষনিতি বক্ষামাণ রীত্যা প্রগঞ্জীতং। প্তনাপি সক্লা

ক্রমসন্দর্ভঃ।

প্রমান্থনে জ্ঞানকিয়া শক্তি প্রদেশে তংসামান্যত স্তাবন্ধিতার ক্ষায় বিশেষ পৃত্নাদীনানপি তাদৃশ হিতকারিতা রূপো যো গুণৈকদেশস্থলাদি গুণগণ প্রকৃতিনেন সন্ধাটিন্তানাং স্থভাবতঃ স্বাসিন্নাকর্ষকার তথ্য ত্ব্বেষ্মাত্রাভাবেন যথা কথঞিং কিঞ্চিপি যদ্ধন্ কিং
প্নঃ কিম্তেত্যর্থঃ। তত্রাপি প্রদ্ধা বিশাসেন কিম্ত তত্রাপি ভক্ত্যা আদরেণ কিম্ত তত্রাপি স্বস্য প্রাক্তরং যদ্ধন্
প্রীত্যেত্যর্থাং। অত্রাপি প্রীত্রা প্রিয়ং প্রীতি বিশেষেণ প্রিয়তরমিতি ক্রমঃ কার্য্য। অতঃ প্রীতিবিশেষতর রূপেণ প্রোমা প্রিয়তমমিত্যাদ্যাপি গম্যং। তত্রাপি রক্তা স্তদেক জীবনান্তংস্থেক স্থা যথা যদ্ধন্তি তথা যদ্ধন্ কিন্ত কিম্তেত্যেবার্থঃ। প্রকৃত্তি কিম্তেত্যেধি ত্রাপি ক্রাত্রো যথা যদ্ধন্তি তথা ক্রমণ ক্রাপি ক্রাপ্তিরে যথা যদ্ধি ত্রাপি ক্রাপ্তরো যথা যদ্ধি তথা ক্রমণ্ডিত।

তম্বহিম দৃষ্ট্যা তু নাশ্চ যিং তদপীত্যাহ পদ্ধামিতি। তথাভূতা সতী সা সাগতিমাণেতি কিমান্চর্যমিত্যর্থ।তত চ মাত্রেষ-ভাবালুকরণকারণা ত্ৎকরুণৈৰ কারণমিতি ভাবঃ।তজ্জং ু সল্লেষাদিব পুতনাপীতি। কং ৰা দ্যালুং শরণং এজেনেতি চ।

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

ভগৰতো নিকারণক কথা প্রাণিতং প্তনায়া: সোভাগ্যং তাবং পশ্যেত্যাহ পদ্যামিতি রাভ্যাং। ততাক্দিছাভ্যামিতি প্তনা ন ভকা নাপ্যভকা কিওঁ তস্য বৈরিণীতি ভাবং। লোকবিদিতৈ এঁক কলাদিভিরপি বন্যাভ্যামিতি প্তনায় তুপানে ন বন্দিতে নাপ্যবন্দিতে কিওঁ মর্ণসময়ে বহুদয়াং সকাশাং নিকাসয়তুং বতমানয়াপ্যশকু বত্যা স্বপাশিভ্যাং বাবৰণং ভাজিতোঁ এবেতি ভাবং। সম্যগাক্রম নতু বথাকথাকিং শৃষ্ট্। স্বর্গং বন্ধাদরো লোকপালাং স্বর্জাসং মেংতিকাজিশ ইতি বং। প্তনাপি সকুলা স্বামেব দেবাপিতেতি বন্ধাকে বৈকৃষ্ঠনের মৃত্ব ন্র্বাং স্বর্গং। ত্মপি কীনৃশং জনন্যাং শ্রীষ্ণোদায়াং প্রকাশতেদেন গড়ি ব্রু তমিছি প্রিগোলোকমেব-ভাসেই স্বর্গানেনাক্যা স্ক্রীষ্বর্গান্তরং সালোক্যমবাপ নতু প্রেমসেবাভ্যমিতি বৃদ্ধাতে। সমন্যাং স্বন্ধনিনাং গতিমিতি তুন ব্যাধ্যেমং

ইহাতে সিদ্ধ জননীর ন্যায় যে ব্যক্তি আছা (আন্তিক্য) এবং ভক্তি (থেম) ছারা পরনাতা ভগ-বান্ শ্রীকৃষ্ণকে প্রিয়ত্ম বস্তু দান করেন ভাঁহার সদ্দতির কথা আরু কি বলিব ? অপর যে পুদ্ধুয় ভক্ত জনের হান্য বিতে এবং বাহা লোকবন্দিতদিলেরও বন্দনীর, নেই প্রদায় হারা যাহার অক আক্রমণ যাতৃধান্যপি দা স্বর্গমবাপ জননীগতিং। কৃষ্ণভুক্তন ক্ষীরাঃ কিয়ু গাবোহ্মুমাভরঃ। প্যাংসি যাসামপিবৎ পুত্রুসেহ স্কুতান্যলং। ভগবান্ দেবকীপুত্রঃ কৈবল্যাদ্যখিলার্থদঃ।

देवस्वद्याधनी ।

ত্বামের দেবাপিতা ইতি রীত্যা গোকুলং বনবৈকুষ্ঠিং ইতি শ্রিক্ষোপনিবদ্রীত্যা গোকুলাখ্যং মহৎপদ্মিতি শ্রীত্রশ্বসংহিতা রীত্যাচ শ্রীগোকুলগৈয়র প্রাপদিক লোকানভিব্যক্তরং। চিন্তামণি প্রকর সন্ম ইত্যাদি ব্রহ্মসংহিতা বর্ণিত প্রকার বিশেষং। গোলোক এব নিব-সত্যথিলাস্বস্থুতো গোবিল্মাদিপুক্ষং তনহং ভঙ্গানীতি। তত্র প্রদিদ্ধ্যা শ্রীক্ষেলাক্ষের অভএব জননীগতিং ত্রাপি জননাা: শ্রীক্ষেলাক্ষের অভএব জননীগতিং ত্রাপি জননাা: শ্রীব্যেশাদায়া ইব গতিং নিজ লালনাদ্যধি কৃত ধাত্রীবর্গ প্রবেশমিত্যুর্থ:। নিবেৎস্যতেচ জননীনামন্যগতি রিতি ভাবং। তত্তকং। ত্বামের দেবাপিতেতি লেভে গতিং ধাত্র্যাচিতাং ইতি চ। নমু ত্রস্যা দৃষ্টান্তত্বেন মাতৃশামিপ প্রতি তথৈবাভিপ্রেরতে নেত্যাহ ক্ষেতি। তথ্যাদের গাবো মাত্রশ্চ মাতর এব নিভামিত্যর্থ:। অপ্রস্তানাং গবাং প্ররোগে মাতৃষু কৈন্ত্যার অস্মাতর ইতি বা চ্ছেদঃ। যথা কিম্গাবং যতন্তা অনুমাতর মাতৃ সন্দ্র্য এব অতঃ শ্রীব্যোদায়ু স্ক্র্ত্মণিবদের দূরে রক্ষিতেতি জ্বেরং। আরু ক্ষির্বাধিক্যাৎ পূতনায়াং তদহুকরণমিত্যেরচ দিল্ধঃ॥

তস্যা: স্বৰ্গং বিশেষ্ট্য ত্ৰিশেষণ জননীগতিং বিশিন্তি প্যাংসীতি যুক্ষকেন। অয়মৰ্থা। কৈবল্যাদ্ধিলাৰ্থদঃ কামিনাং ধর্মাদি মাত্রাপ্রদান নতু স্বরূপ ব্যক্তা মুম্কুলীর কৈবল্যদা নির্কিশেব ব্রহ্মাথ্য স্বরূপতাদাআমাত্র প্রাপত্তঃ নতু সবিশেষ ভগবদাথ্য স্বরূপোপলন্তকঃ তথা জগবান্ ভক্তানামপি ভগবং স্বরূপ মাত্রেণ নতু মমতা বিশেষ ময় প্রেমবিশেষ প্রেদেন প্রাদি ক্রপেণ তং প্রাপক ইত্যর্থা।
তথা দেবকীপুত্তঃ ব্রীদেবক্যা অপি জন্মনৈব পূত্রঃ নতু পিতরে নাম্ববিশেতাং ইত্যাদিনা স্লাদ্বিয়মাণ তাদৃশ ভাবময় লালনেনাপীতথাঃ স্বর্ধ যাসাং গ্রাং মাতৃণাঞ্গালমতার্থং প্রবেষ্কুতঃ অলমতার্থনেবাপিন্দিতি পরক্ষরং ভ্রাবন্য গাড়ব্দাধিক্যেন্দ সর্কো-

ক্রমসন্দর্ভ: i

এবং তদ্যাঃ স্মান্যতঃ সদাতিমূক্। পুনরাশ্চর্যা বিশেষায় পরমং বিশেষতো দর্শয়তি যাদ্বিত্যদ্ধেন। স্বর্ণং ব্রহ্মা ভবো লোকপালাঃ স্বর্কাসং মেহভিকাজ্ঞিন ইতিবং পরম স্থামূভব স্থানং ॥

য এতং পূতনা মোক্ষমিতি। বক্ষ্যমাণ রীত্যাচ প্রীগোক্লস্যৈব প্রাপঞ্চিক লোকানভিব্যক্তং চিন্তামণি প্রকর সন্মেত্যাদি ব্রদ্ধসংহিতা বর্ণিতং প্রকাশবিশেষং গোক্ল এব নিবসতীত্যাদি তত্ত্বৈ প্রসিদ্ধং। প্রীগোলোকাথাং প্রীকৃষ্ণলোক্ষেব অন্তএব জননীগতিং তত্ত্বাণি জনন্যা অপি প্রীযশোদায়া ইব গতিং নিজলালনাদাধিকৃত ধাত্রীবর্গ প্রবেশমিত্যর্থঃ। • তত্ত্বং। দ্বামেব দেবাশিত্তেতি।
লেভে গতিং ধাক্র্যচিতামিতি চ। নূত্ব ত্র্যা দৃষ্টাস্তথেন মাতৃণামিতি তথা গতিরভিপ্রেয়তে নেত্যাহ ক্রেক্তি। তন্মাদেব গাবো
মাতরশ্চ জননী গতিমবাপেতি কিমু বক্তব্যং। গাবন্তা ন্তদীয়া মাতরশ্চ মাত্র এবেত্যর্থঃ। ত্র্যাং বিশেব্যিত্বং জননী গতিমিশি
বিশিন্টি প্রাংগীতি দ্বাভ্যাং। ইথং সতাং ব্রদ্ধস্থামুভ্ত্যা ইত্যাদিব্দায়মর্থঃ। যা কৈবল্যাদ্যখিলার্থনঃ কামিনাং ধর্মাদি মাত্রর্থদ

শ্বীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

রকা তন্মাতরো বর্ষেত পূর্বত। ক্বজভুক তনকীরাঃ কিমু গাবো ইছুমাতর ইত্যুত্তরত্র চ ততঃ সকাশাৎ তন্মাতৃণামপ্যন্যাস্থাপাদিক্য প্রতিপাদনাৎ বৈরিজন কংসাদি সাম্যেহিপি ষস্যাবেষভাবাছকরণ কারণাদেবৈতাবৎ ক্বপাপাতী বভূব পূতনা তস্যাং শ্রীষশোদায়া গতিং প্রাপ্তঃ বোগাতাং সা কথং ধতামিতাত এব লেভে গতিং ধাক্যাচিতামিত্যুদ্ধবেনাকং। অতএবাত্রাপি জননী শব্দেন ধাত্রোব ব্যাখ্যেতি কেচিং। তত্রাপি ধাক্যাচিতেতি শব্দেন ধাত্রীসম্বন্ধিনী গতি ন' লভাতে। মহারাজাতিতা সম্পদ্দেস্ত্রকে মহারাজ তুলাব সম্পং প্রতীয়তে ন তু মহারাজসম্বন্ধিনীতি। তত্মাৎ স্বধ্যেত্বির গোলোকে ধাত্রী নার্ধ্যং পূত্ন। প্রাপ্তে সিদ্ধান্তঃ ॥

নহ কিমু গাবো হয়মাতর ইতি কৈমুভোন মাতুণামণি বৈকুষ্ঠ প্রাপ্তিরেব বদ্যভিপ্রেরতে তহি বৈরভাব বাৎস্কা ভাবরোজনাথা-পতিঃ বাচ ভগবতাবিবেচকর কলণ দোলমেব সম্পরেৎ বদি চ বাতুণানাপি সা বৈকুষ্ঠনবাপ কিমুতায়রকাঃ পরম বংস্কাঃ মাতরো গাবশ্চ কিন্ত তাত্তে হপুত্রমং কলং লভতে স্বেতাভিপ্রেরতে তহি তদেবাভিবাল্লাতাং কিন্তাল্লামান প্রাংগীতি। অন্যেভাঃ কৈবল্লাদ্যখিব ফলপ্রদাহণি মানাং পরাংগি অলং অভিশরেণ ছল্লাভ বুলা অপিবং। অন্যাসূত্র পীত্রতীৰ তে মুদেতি ব্রেরাভেশ্চ। তেন তাভাঃ কিমরং বৃষ্ণিতং দাগাতি প্রভাত তা এবালৈ বাহিতং দণতীতি স্ববাহিত্য্বনবাগাতা কলনং ফলং সোমোণীতঃ কলে। করিয়া ভগবান স্বরং তনপান করিলেন, সেই রাক্ষ্যীও বর্থন জননীরগতি লাভ করিলেন পুর্বেরতে বাহাদেব ছল্ল অভ্যক্ত প্রস্তুত্ত হাইলে, ভাহালা মাজুনক্ল হারা কেনাক্ষ্যভালাভ করিছে ভাহার কমা কি গ্

তাসামবিরতং ক্ষে ক্র্বিতীনাং স্থতেক্ষণং। ন পুনঃ কল্পতে রাজন্ সংসারোহজ্ঞানসম্ভবঃ। কটধ্মস্য সৌরভামবস্তায় ব্রজৌকসঃ। কিমিদং কুত এবেতি বদক্তো ব্রজমাযযুঃ। তে তত্ত্ব বর্ণিতং গোপেঃ পৃতনাগমনাদিকং। শ্রুছা ত্রিধনং স্বস্তি শিশোশ্চাসন্ স্বিস্মিতাঃ।

देवक वरकावनी।

স্তম্মং দর্শিতং। এতচ্চ ইথং স্তাং ব্রহ্ম স্থামুত্তা ইত্যাদিবছ্জেরং। অতস্তাসাং অজ্ঞান সম্ভবং সংসারং সংসারিষ্ণ ন পুন নত্ কলতে ঘটতে জ্ঞানাছপর্গপরি সমাঁক্ট্রাং। সংসারিকের মুক্তানামপি সিদ্ধানামিত্যাদি ন্যায়েন শুদ্ধ ভুক্তস্যাপ্যেক্স্য পরম ছল্লভি-ছাত্তবিধানামসন্তব ইতি তদেব ব্যশ্নয়তি অবিরতং নিতামেব শ্রীক্তকে স্থতেকণং স্ভভাবং কুর্মতীনামেব সতীনাং যত্র শ্রিক্ষ তথ্য নিত্যমেবৈতাদৃশীনামেবেত্যর্থ: হে রাজন্শ ভগবতত্বজ্ঞানে বিরাজমানেতি সিদ্ধান্তে স্থাবধানং করোতি অতঃ স্থাগ্য জননীগতিমিতি, বিশেষপেনাপ্রাপঞ্চিক্ষমেব স্থত্রামিতি চাগতং। কটঃ শ্লণানমিতি ক্ষীরস্থানী। ব্রজোকসং যে তদ্ জাস্তাং পূর্ম্মন্যত্র গতান্তে তথা॥ তে পূর্ম্বোক্তা: শ্রীনন্দাদয়শ্চ সংপ্রত্যাগতাঃ গোপৈ: শ্রীগোকুল রক্ষানিযুক্তাদিভিঃ তত্র ব্রক্তে পূত্রনা গ্যনাদিকং বিশেষতঃ শ্রন্থ স্থাদি শব্দাং স্তনদান মহার্তনাদাদি। শিশোশ্চ স্থিতি শ্রেক্তা তেন স্থবিশ্বয়েন বাংস্বায় পোষ্ণং ধ্বনিত্তং॥

ক্রমসন্দর্ভঃ।

নতু স্বরণমাত্র বাঞ্চকঃ। মুমুক্শাঞ্চ কৈবল্যদো নির্বিশেষ ব্রহ্মাথ্য স্বস্থানাত্র প্রাপকঃ নতু সবিশেষ ভগবদাথ্য স্বস্থানাল পলস্ককঃ। তথা ভগবান্ ভকানামলি ভগবংস্বরূপমাত্রেণ নতু মমতাবিশেষ মন্ত্র প্রমবিশেষ প্রদেন পুরাদি রূপেণ তংপ্রাণক ইত্যর্থঃ। তথা দেবকীপুরুঃ শ্রীদেবক্যা অপি জন্মনৈব পুরুঃ নতু তাদৃশ ভাবময়েন লালনেনাপীত্যর্থঃ। স এব যাসাং গবাং মাতৃণাঞ্চ অলমতার্থঃ প্রমেক স্বৃত্তং অলমত্যর্থমেবাণিবং ইতি পরস্পারং তদ্বাবাসক্রিদ শিতাঃ। তলাঃ সর্ব্বোত্তমতা চ। অভত্তাসামজ্ঞানসম্ভবঃ শংসারঃ সংসারিত্বং ন পুন ন তু করতে মুদ্রাতে জ্ঞানাত্রপর্মুণরি সমার্ক্তরাং। সাংসারিকের মুক্তানামলি দিল্লানামিত্যাদি ভারেন গুদ্ধভক্তসান্ধের স্বর্গতি। তদ্বিশ্ব ভাষাক্র ভাষাং তদিবাসাসভ্বাত কিমৃত তাসাং। তদেব ব্যঞ্জয়তি অবিরতঃ নিত্যমেব শ্রীকৃষ্ণে স্বভ্রারিং পূর্ব্বানাত্রি। বে

শ্রীবিশ্বনাপচক্র বর্ত্তী।

দলবিতার্থ আয়াতঃ তত্ত্বত বৈক্ঠ হিতে র্গোলক হিতেক সকাশান্ত ব্রুদ্ধের হিতি স্তাসাং সর্ব্বোৎকৃষ্টেতি সিদ্ধান্তা হবগতঃ। দেবক্যাঃ প্রোহণি তাসাং প্রাংস্যলমণিবং নতু তস্যা ইতি ততােহণি তাসাম্ংকর্ষে। ধনিতঃ। নচ. তাসাং সংসার ধ্বংস সক্ষণ ফলমের দাতব্যমন্তীতি বাচাং। সংসাবো হি দেহ গেছ পাতি প্রাদ্যাসক্তিরূপ স্থবাসাং দেহসমন্ধি স্থন্যামৃতং কৃষ্ণঃ পিবতি। গেছে কৃষ্ণঃ ধেনতি। পতিঃ কৃষ্ণন্ত পিতা। পুরঃ স্বরং কৃষ্ণ এবুতি তদাদ্যাসক্তেঃ সংসারন্ধ ন ঘটত ইত্যাহ তাসামিতি। স্বতেক্ষণং স্বতভাবং। নতু ক্রতে ন ঘটতে। অজ্ঞানসম্ভব ইতি জ্ঞানিনাং ব্রহ্মান্ত্বত এব তাবং সংসারিদ্বান্তার প্রতিপাদকঃ। ক্রমান্ত্রবাদণি শাস্ত্রভানাং ব্রহ্মতা ভগবন্ধস্থত। এঠিঃ। ডতোহণি দাক্তাববদ্ধী ভগবতঃ প্রভূষেনাম্ভবং ব্রেট ইতি সংসারাজাবেহণি কৈম্ত্যং ভক্তিরসামৃত্রিক্রেরবান্তব্যং॥

প্রাণ কিলা প্রতিষ্ঠান কর্মান কর্মান কর্মান কর্মান করি শানামিতি শীর্ষামী। কুড কিমিনমিতি কিমেতাবান গুকুণুণ ধুন ইক্রপ্রান্তিংহত্যা-ভূতকমণি ডিকা স্থতকং প্রবেষ্ট্র মুংসহতে। কিলা বিসম্বাতো নিংহত্যানরাব্দ্ধীমধিরোহতি কিম্দীচ্যাং কুবের প্রাৎ কিলা প্রতিয়াবক্ষণান্যানি চাকা বছধা সন্ধিলা। ইত্যর্থ ॥

ফলতঃ তাহারা ভগবান শ্রীকৃষ্ণে অবিরত পুত্র দৃষ্টি করিত, শ্রতরাং তাহাদের অজীন সম্ভূত সংসার ক্রিড হইতে পারে না। সে যাহা হউত, যে সকল ব্রজবাসিয়ান্ত দূরে গিয়াছিলেন চিতাধুমের সোরভ আত্রাণ করিরা, ইহা কি, কোথা হইতে হইল পরস্পার কলিতে বলিতে তাঁহারা। ব্রজে আগমন করিলেন এবং গোপদিশের প্রমুখাই প্রনার আগমন তথা নিধন বৃত্যন্ত শুনিয়া এবং শিশুর

নন্দঃ অপুক্রমাদায় প্রোয্যাগত উদারধীঃ। মূর্ধ্বেত্রায় পরমাং মূদং লেভে কুরুদ্বহু ॥ ২৭ ॥

য এতং প্তনামোক্ষং কৃষ্ণস্যার্ভকমন্ত্তং। শৃণুয়াৎ শ্রদ্ধায় মর্ত্ত্যো গোবিন্দে লভতে রতিং ॥২৮॥
॥ ॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং দশমক্ষে প্তনামোক্ষঃ

যঠোহধ্যায়ঃ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

धीयत्रकामी।

বৈষ্ণবতোষণী।

তেম্বপি শ্রীনন্দ বৈশিষ্ট্যমাহ নন্দ ইতি সংভ্রমে গতে সতি প্রমাং মুদং লেভে তত্র হেতৃবং নামৈর তাবতা শ্রীনন্দ স্তরাপ্যাদারধীঃ দ্যাদি গুণ গণার্থ মানসং অত্রাপি অপুত্র মাদায়ীকৈ ক্ষতা ত্রাপি প্রোষ্ঠাগত স্তরাপি মুর্দ্ধ্যব্যায়তি। কিন্তু প্রোষ্ঠাগত ইতি হন্ত মংপ্রবাসাদেতাবাননথো জাত ইতি পশ্চান্তাপবানপীতি গমাতে। ক্রমহংতি পূর্ববং এতদারভাচ শ্রীক্ষ্ণস্যাধােকজেত্যাথা ব্রজ্জনৈ: কৃতা। যথা হরিবংশে বাহ্দের মাহাজ্যে। অধােহনেন শ্রানেন শক্টান্তর চারিগা। রাক্ষণী নিহতা রৌদ্রা শক্ষ্নীবেশ-ধারিণী। পূত্রনা নাম বেরা সামহাকারা মহাবলা। বিষদিগ্ধং স্তনং ক্ষুত্রা প্রযুদ্ধিতী জনার্দ্ধনে। দৃশ্ভ নিহতাং তত্র রাক্ষণীং বনগোচরাঃ। প্রজাতো হয়মিত্যাহক্ত স্থাদধােকজ ইতি॥ ২৭॥

অহা পৃতনায়া: সাক্ষান্তৎ সম্বন্ধানি। তাদৃশ্যাং গভৌ কিমাশ্চর্যাং তথার্তা প্রবণনাপি সর্ব্বোহপি তিমান্ বৈতিমপি লভতে ইত্যাহ য ইতি। যো মর্ব্যো মর্বাধর্মা বং কশ্চিদেতৎ প্রীক্ষম্যান্ত্রার্ভক চরিতং শৃণ্রাৎ স গোবিন্দে গোকুলেন্দ্র-ভগবতি রতিং লভতে ইত্যথাম্স্বানমপ্যনপেক্য নামাদিব্দ্প শক্তিরেব থ্যাপিতা তথাপার্থ্যাম্স্বানে সতি কারণা বিশেষালোচনাৎ ফল্স্য শৈল্য বৈশিষ্ট্যে গম্যেতে। কীদৃশং পৃতনায়া অপি মোক্ষঃ সংসারাজ্ব ফ্ ফলাস্তরাচ্চ নির্গমো যেন তৎ অত্তবাস্কৃতং অর্ভকভাবাপরিত্যাগেছপি তাদৃশ মারণ মোক্ষণাদিনা বিশ্বয় কৌতুকাবহং। নিশ্মা ইক্তি পাঠে যন্ত্রিশ্বিশ্যা ভবতি স শ্রদ্ধা সহ রতিং লভতে। পাঠদ্বাং তেষাম্যান্তঃ। অসক্ষত্যাপ্যসাব্যাথানাৎ। অবিদ্যায়াং ক্ষাদেব লভ্যোহহ্মিতি তন্মনীং। প্রাগহন্ পৃতনাং ক্ষো রাঘ্বস্তাভ্রামিব। কিঞ্চ। আরম্ভাদেব লীলায়া বকীধাতুগতিপ্রদঃ। কৃষ্ণং স্বত্বনাধুর্ব্যে ভূক্ষামাস বৈক্ষবান্। ২৮॥

्॥ *॥ ইতি ফ্রীবৈষ্ণবতোষণ্যাং দশম টিপ্লণ্যাং ষঠঃ ॥ *॥

ক্রমসন্ধর্ভ:।

সম্প্রত্যাগতাঃ পুরুষমাগতাশ্চ বিশেষতঃ শ্রন্থা॥ ২৭॥

য ইতি পূতনায়াঃ মোকঃ সংসারাং। আসাংসারিকান্তমূল ফলান্তরাচ্চ নির্গমো বত্র তৎ ন কেবলমার্ভকস্য প্রবণেন তদবস্থ এব তামিন্ অপি তু অর্জ পৌগণ্ড কৈশোরাম্মকে সর্কাব্দেছংপি গ্লোবিন্দে গোকুলাধিষ্ঠাতরি তামিরিত্যর্থঃ॥ ২৮॥

॥ *॥ ইতি জীদশমক্রমদন্দর্ভে ষষ্টোহধ্যায়: 🖣 *॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্ত্তী। •

হ্ৰবিত্মিত। ইতি ইন্যো বহুদেবং সত্যুদ্ধাহ ঈদৃশ্যামপি বিপত্তো শিশোঃ স্বস্তি নারায়ণং বিনা কঃ ক্র্যাদিত্যক্তবন্তঃ ॥

প্রোষ্যাগত ইতি। হস্ত মংপ্রবাসাদেবৈতাবাননর্থো জাত ইতি কিঁমহং মথুরামগচ্ছমিতি পশ্চান্তাপ:। উদারধীরিতি হস্ত নির্-জয়ে। ষারপালা অপি কেহপি তাং পূর্ঃ প্রবেষ্ট্রং ন ন্যাধিদ্ধান্ধিতি সর্কেষাং ধিয়ে। নিনিন্দ ॥ ২৭ ॥

যত্র তৎ আর্ডকং অর্ভকচরিতং পূত্রনায়া অণি মোকো মত্র তৎ অঞ্জবান্ত্তং শৃণুরাৎ স রক্তিং লভতে। নিশম্যেতি পাঠে তুব্যেৎ তিঠেদিতি বাধ্যাহার্থাং। यह। মঃ প্রদ্ধা নিশম্য রক্তিং লভতে স গোবিন্দে গোবিন্দবিষয়ক রতিমান্ ভবেদিভার্থঃ॥ ২৮ ॥

॥ • ॥ ইতি সারার্থদর্শিন্যাং হরিণাং ভক্ততেত্সাং । বঠোহধ্যায়ো হত্ত দশ্যে সঞ্জঃ সঞ্জঃ সভাং ॥ • ॥

কুশল সম্বাদ পাইব্রা বিশ্বিত হইলেন, পরস্ত উদারবৃদ্ধি নন্দ প্রবাস হইতে আসিয়া স্থীয় তনয়কে গ্রহণ পূর্বক মন্তক, আত্রাণ করত পরম হর্ব প্রাপ্ত হুইলেন॥ ২৭॥

হে রাজন্! প্রীক্ষের অত্ত বাল চরিত এই পৃতনামোক বিবরণ যে মমুষ্য প্রকাসহকারে প্রবণ করিবেন তাঁহার গোবিলে রতি লাভ হইবে॥ ২৮॥

॥ * ॥ देजि ममरम यर्छ व्यशास ॥ * ॥

শ্রীবিকুরাত উবাচ॥

যেন যেনাবতারেণ ভগবান্ হরিরীশ্বরঃ। করোতি কর্ণরম্যাণি মনোজ্ঞানিচ নঃ প্রভা ॥ ১॥

যচ্ছ ণতোহপৈত্যরতি বিভ্যা সত্ত্বক শুধাত্যচিরেণ পুংসঃ।

विधवचामी।

উংক্রিপন্ শক্টং ব্যোমি তুপাবর্তমধংক্রিপন্। দর্শরন্ বিশ্বমাস্যেত ক্রঞঃ ক্রীভৃতি সপ্তমে ॥ • ॥

রুঞা ঠক স্থাসিদ্ সংপ্রবানক্ষনিষ্ঠবং। ভূব শুদেব সংপ্রাষ্ট্রাজান্যদভিনক্তি। যেন যেনেতি। যেন যেন মৎস্যাদ্যবতারেণাশি ানি যানি কথাণি কবোতি তানি নং কর্ণহ্রপাবহানি মনং প্রাতিক্রাণিচ ভবজ্যের ॥ ১॥

্ৰথানি যং শৃণ্ডঃ পুংমাত্ৰস্য অৱতিৰ্মনোগ্লানিং ত্ৰুলুক্ত। ৰিবিধা <mark>তৃঞাচ অপগছতি। তথা সৰ ভদি হৱিভকি হ</mark>বি-

देवसवरजीयनी ।

বেনেতি যুগ্নকং। তাৰত গোবিন্দে লাভতে রা হং ইত্যুক্তা প্রবণ কীন্তনাদাশেষ সাধনানাং পরম ফল রূপায়াঃ প্রভাবস্ততেঃ সিদ্ধিং বাল্ডাব হারভাগের প্রতা অফাপি তত্দীপন মন্ত্র জাতপ্রমানন্দং সন্পরগোৎস্ককোন কদাচিৎ কথান্তরাপাতালক্ষা তাণ্শ ভচ্চবি-হাজবন্ধে প্রেষ্ট্রাবেটা তদীয়াশেষাবভাব চরিতানাভিনন্দতি বেনেতি। ভগবানিত্যাদি পদত্রেশেণ। তৎ কর্মণামপি ক্রমেণ সর্ক্রৈম্বর্যু যুক্তত্বং হথানেব দোব জ্বেধ্বত্বং অন্তর্কাহিরিজিত্ব হরত্বক তথাবশ্চ সেবারং অভ্যথা দণ্ডকর্ত্ত্বমপাভিত্রেতং । কর্মনাত্ত্বন শক্ষাব্যে তাদৃশ মাধু-বানব্যুং ধ্বনিতং মনোজ্ঞাহেনাথন্য চ ইতি। প্রভো হে সর্ক্রণজিয়ুকেতি সর্ক্রমন্ত্রাক্ষিক্রিয় বৃত্তিসূত্তং তথা ক্রায়ত এবেতি ভাবং॥ ১॥

পিপুঞ্জিতমতি যক্ত্বত ইতি। অব্তিঃ প্রবণাদৌ মনোহপ্রবৃত্তিঃ প্রবৃত্তিটে সত্যাং বিবিধা তৃষ্ণা সৃদ্ধং চিত্তং শুদ্ধাত ভূর্মাসনা ক্ষরেণ নৈম্মল্যান্ত্রসূত্তি স্বাতি অচিবেণেত্যস্য সর্কৈবপায়য়। অন্যৈশিচবেণের তত্ত্বৎ সিদ্ধো। হরৌ ব্রহ্ময় মম তবচ মনোহরে তগ্ বা ত্তিকিং প্রেমা তথ্য পুক্ষে ভক্তজনে ইতার্থঃ। অন্যবিঃ। এতচার বৃদ্ধিরহং মন্যে। কিন্তু মমাণি তত্ত্ব দৃঢ্তা তব মহাবৃদ্ধের-

ক্ৰমসন্দৰ্ভঃ [

বান্যলীলারতত এব বতি ফলং শ্রমা স্বস্যাপি তছ্দীপন্মপ্রভূষ জাত প্রমানন্দ তদেব ভূম: পৃচ্ছতি বেনেতি লিভি:॥ >॥ বদেভানেন যদ্যপি তথাপি বত্তদন্দপীতি স্থালয়া জয়াণাং কিঞ্চিদ্যাহারেণায়য়:। কর্ণেভি পদ্ধয়ং শ্রমার্থ্যাসু-

वीविधनाथठकवर्डी।

লাতঃ মুপ্রোথিতঃ কৃষ্ণঃ গপ্তমে ২ন উদক্ষিপৎ। তৃণাবর্ত্ত মহল্লাস্যে বিশং মাতর মৈক্ষাং। রদ্দ্দ্দ বঞ্চং বাধিং পূতনা অনুস্বনে।
শক্ষে হিল্ব বসং পাণোস্থাপত্তবেশ বলং। বিশ্বরূপখনে তাবদৈশব্যং নিজ মাতরি। এবমাদি মমৈশ্ব্য যুগাং বাল্যে প্রদর্শিতং।
মহো ভগবদবতারাস্তরগীলামাত্রগ্যাপাশ্মননাহরণেহগি আক্রম্ভ বাল্যনীলা মামতি লোভ্যত্যতন্তামের ক্রহীত্যাশাসেনাহ ধেন খেন
মংস্যাদ্যবতারেগাপি বানি ২ ক্যাণি করোতি হান্যপি নাং কর্ণাভ্যাং রন্তান্যাখাদ্যানি মনোজ্যানি মনোপ্যানন্দ্রিত্বং জানস্ত্যের কিন্ত্র তেথাপ মধ্যে যং শৃণ্তঃ প্রেণঃ প্রমাত্রভাগি অরতিঃ প্রবিদ্যাধ্যবিত্রবৃত্তির পৈছি নগুতি অন্ধ দ্বিবৃত্ত্যা নির্দ্যোভ ভিতরগাধাদ বিহক্ষা তাত্র ভ্র্যাভাবং অগৈতি ক্রচ্যংপত্ত্যা আকাজ্যা কার্যতে ইত্যথঃ। তত্ত্ব স্থাং চিত্তং ভ্রাতি ক্রাপ্রতে ইত্যথঃ। আইরেনেতি

সন্তমাধ্যায়ে গগণে শকটোৎক্ষেপণ, তৃণাবর্ত্তকে অধঃক্ষেপণ এবং মুগু মধ্যে বিশ্বপ্রদর্শনপূর্বক

রাজা পরীক্ষিৎ শ্রীকৃষ্ণের বাল্যলীলা রূপ অমৃতদমুদ্দে নিমগ্ন হইয়া উল্লাস্বশতঃ সবিনয় বচনে শুক্দেবকৈ জিজাসা করিলেন প্রভো! ভগবান্ ঈশ্বর হরি মৎস্যাদি যে ২ অবতার গ্রহণ করিয়া যে ২ কর্ম করেন যদিও সে সকলই আমাদিগের কর্ণের শ্বথাবহ এবং মনঃ প্রীতিকর হইয়া থাকে॥ ১॥

তথাপি যাহা শ্রবণ করিলে পুরুষ মাত্রের মনোগ্লানি, তথা তাহার ঘূলীভূত বিবিধ তৃষ্ণা অপগত হয়, আর অচিরে সত্ত শুদ্ধি, হরিভক্তি এবং হরিদাস পুরুষের সহিত সংগ্রহয়, যদি অমুগ্রহ করেন, ভক্তি হ'রে তিংপুরুষে চ স্থাং তদেব হারং বদ মন্যুদে চেং॥ ২॥
অথান্যদ্পি কৃষ্ণ্য তোকাচরিত্মছুতং। মামুষং লোকমাসাদ্য তজ্জাতিমমুক্তমতঃ॥ ৩॥
বাদরায়ণি রুবাচ॥
কদাচিদে খানিক কৌতুকাপ্লবে জন্মর্ক্ষোগে সমবেত্যোষিতাং।

ञीधत्रवामी।

দাস স্থ্যানিচ ভবস্তি তদেব হারং হরেশ্চরিভং মনোহরং বা বদ অন্প্রাহং যদি করোধি। ২ ॥ অত্যোৎস্কেন পুনর্বিশিন্তি অথেতি অনুক্ষতঃ অনুক্ষিতঃ॥ ৩॥

উত্থানং শিশোরঙ্গ পরিবর্ত্তনং তত্র করণীয়ে কৌতুকাপ্লবে উৎসবাভিষেকে তথা তত্মিল্লব দিনে জন্মর্কস্যাপি গোণে অতি মধোং-

বৈষ্ণবতোষণী।

ভূপেগমানেব দ্যাদিত্যাহ যদি স্বং মন্যদে তদা বদ। পরম বিনয়োজিরিয়ং। ফ্লা পুনরধুনাপি গুপ্তং নকরোধীত্যর্থঃ। স্বিন্য নর্মোজিবিয়ং॥ ২॥

কীদৃশং তত্ত্ব চিত্তবং হরিং তত্ত্রাহ অথেতি। অথানস্তর্মের নত্পোদ্যাতাদিনাশি ব্যবধানেন শ্রীক্ষণ দা দীলামাধুরীভিশ্চিত্তাকর্ষ-ক্ষয় তেলাকাচরিত্তমের বদেতি পূর্বেশৈবাষয়:। তদেবং স্থচনৎকারে হেতুমাহ অন্ত্তং রূপ গুণ কিলাস দীলা চাতুরীভিঃ কচিত্তদহুগত ছ্রুইেম্ব্যমিদনেনচ থিম্মাবহং তচ্চামানস্ব্যানের রূপ্যিতুং প্রকটিতমিত্যাহ মাহুবং লোকমাসাদ্য মর্ত্তালোকেহবতীর্ঘ্য তজ্জাতি-মপি স্বলীলয়াম্মাৎ কুর্বতঃ স্থাভেদেন ব্যবহরত ইত্যর্থঃ॥ ৩॥

শ্রীতকদেবাহপি তহ্তকেবাছমোদমানঃ ক্রমপ্রাপ্তাং বাল্যালীলামের কথয়তি কদাচিদিত্যাদিনা। কদাচিদ্মাসত্রয় এব বয়ঃ প্রাকট্য সময়ে। ব্রেমাসিকস্যচ পদা শকটো হপরত্ত ইতি দিতীয়োক্তেঃ তবৈর জন্মর্কয়োগ ইতি নাক্ষত্র মাসেহিভিপ্রেতঃ তবৈরচ দৈবাদৌখানিকং যং কৌতুকং রত্তং তস্যাপ্লবে ব্যক্তৌ সত্যাং। ঔথানিকং বহিনিক্রমণমিতি কেচিৎ। তত্ত্তিয়াং। চতুর্থে মাসি নিক্রম

ক্রমসন্দর্জঃ।

ভবেন। হারং হারবৎ স্পৃথয়া হাদিধার্য্য চেন্মন্যদে পূর্ব্বিৎ তৃপ্তাং ন করোষীত্যর্থঃ। তত্তাদৃশ মন্যদিপি তোকাচরিতমের বদেতাষয়ঃ॥२॥০ অভিষেচনং কুশাগ্রেণেতি জ্ঞেয়া। চকারং কারয়ামাস॥ ৪॥

ঐবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

সর্ব্বত যোজ্যং। ততক ভক্তিং প্রেমা স্থাৎ তংপুরুষে বৈষ্ণবে সধ্যমিতি ষদ্যপি জক্তারম্ভত এব বৈষ্ণবে সধ্যং বিহিতং তদপি প্রেমি সতোব বৈষ্ণবমাত্রে নিরুপাধিকং সধ্যং ভবেদিতাত্রৈবোক্তং। হারং হ্রেশ্চরিতং শ্লেষেণ হারমিব হৃদয়ে ধার্যাং। যদ্যপি তগবচ্চরিতমাত্রস্যাপ্যর্ভি নির্ক্তাদি প্রেমান্ত বন্ধ প্রাপণে সামর্থ্যমন্ত্যের তদপি শ্রীকৃষ্ণবাল্যাদি চরিতমচিরেণের তত্তৎ প্রাপয়তীত্যজৈবোক্তং। মন্তব্যে চিদ্তি। যদি তবৈতৎ সন্মতং ক্সাদিতি ভাবং॥ > ॥ > ॥ ২ ॥

অত্যৌৎস্থকোন তদেব পুন: স্পষ্টরতি। অথেতি। তজ্জাতিং মামুধকাতিং অধুক্ষত ইতি মামুধকাতামুরোধেনৈব ভূর্পোকে প্রাকটাং নমু দেবাদি জাতামুরোধেন দেবাদি লোক ইতি দেবাদিভ্যোহিশি মামুধাগাং সৌভাগাং দ্যোতিতং॥ ৩॥

কদাচিন্দাসত্তর ব্যাস সতি তৈনাসিক্ষ চ পদা শকটোংপবৃত্ত ইতি বিতীয়োক্তে:। মাজত চরণাবৃদ্গিত্যত তু রাসাত্ত্রয় পরি-চ্ছেদকা ষত্ত ইতি ব্যাখ্যের:। উত্থানমুত্তানশারিন: শিশোন্তির্য্যক্ শর্মনসামর্থ্যোক্ষম:। তত্ত্ ভবে কৌতুকাপ্লবে তদ্ ইং বন্ধবাসিনীনাং

তবে সেই মনোহর চরিত্র বলিতে আজ্ঞা হুউক ॥ ২॥

হে ব্রহ্মন্ ! ভগবান্ একৃঞ্চ মনুষ্য লোকে অবভীর্ণ হইয়া মানব জাতির ক্ষমুকরণ করিয়াছিলেন, শুনিতে পাই, তাঁহার অন্যান্য বাল্যচরিত অভিশয় ক্ষৃত, ক্ষুগ্রহ করিয়া তাহাও বর্ণন কল্পন ॥ ৩॥

শুকদেব কহিলেন রাজন্! একদা অর্ধাৎ মাসত্তয় স্বভীত হইলে বালকের অঙ্গ পরিবর্তনে যে উৎসবাভিষেক করিতে হয়, সেই উৎসবাভিষেক তথা সেই দিবসেই জন্মনকত্ত্তর যোগ নিমিত্ত নিশালয়ে অতিশয় মহোৎসব হইল, তাহাতে যাবতীয় পুরস্ক্রী (পতি পু্ত্রবতী ফ্রী) একস্থানে মিলিত বাদিত্রগীতৰিজমন্ত্র বাচনৈ শ্চকার সূনো রভিষেচনং সতী ॥ ৪॥
নন্দস্ত পত্নী কৃতমজ্জনাদিকং বিপ্রৈঃ কৃতস্বস্তায়নং স্বপৃদ্ধিতৈঃ।
অন্নাদ্যবাসঃ স্রগভীষ্টধেনুভিঃ সংজাতনিদ্রাক্ষ মশীশয়চ্ছনৈঃ॥ ৫॥
উত্থানিকোংস্ক্রমনা মনস্বিনী সমাগতান্ পূজয়তী ব্রজৌকসঃ।

बीधतवामी।

সবে সমনেত যোগিতাং মিনিত প্ৰজুণিণং মধ্যে°বাদিতাদিতিঃ শোভিতমভিষেচনং মশোদা চকার ॥ ৪ ॥ অন্নাদিতিঃ স্বপুজিতৈ বিজ্ঞৈঃ ক্বত মস্বলং সংজাত নিজে অক্ষিণী যদ্য তং অশীশ্বং শান্তিবতী শক্টদ্যাধ্তাং প্রেছে॥ ৫॥

বৈষ্ণবতোষণা।

ইতি ফ্রে: ত a5 সাবনমাস গ্রহণাং। হুনোরিতি তদেক পুস্রায়ান্তস্যাঃ স্নেহ ভরেণ তল্পহোংসবে পরমাং শক্তিং বোধয়তি। সতী সর্ক কর্মাপু এবোভ্যা ইত্যর্থঃ। স্ত্রীপ্রধান কর্মারানস্যা এব কর্ড্য মুক্তং নতু প্রাথং শ্রীনন্দস্য ॥ ৪॥

নল্প্য পত্নীতি তথলোগার্যাং তত্ত্ব তস্যাহ্মতি: সাহচ্যাঞ্জ স্চিতং। কৃতং তথা গোপীভিশ্চ মজ্জনাদিকং যদ্য স তং। আদিশকালোগারোচনা তিলকবেশাদি পূর্ব্বোক্তোহভিষেকো হপ্যক্রান্তভাবতে। স্বস্তায়নং স্বস্তিবাচনাদি মঙ্গল কর্ম অরাদ্যং অলং তহুপ্করণঞ। আদামিতি কৈচিং। অকু র্ল্লাদিমালাহভীটং আত্মনো বিপ্রাণাং বা যদ্য যং প্রিয়ং জবাং ধেছু বিশেষণং বা শনৈরিতি স্কুমারতয়ানি দাভঙ্গ শক্ষ্যাচ॥ ৫॥ ।

অশ্রবণে হেতৃ: মনস্থিনী প্রমোদার্চিন্তেভাভ্যাগত পূজায়াং শ্রদ্ধা দক্ষতা সাবধানতাচোক্তা। অথোথানিকে প্রমোদার ময় প্রোৎসব বিশেবে ঔংস্করণ কর্ম সাক্ষভার্থম্ংকঠা বৈষ্ণ্রাং যায় তথাভূতং মনোযস্যাং তথা ভূতাচ সতী সমাগতান্ সর্বানেব ব্রন্ধবাসিনো
ক্রনান্ গ্রনাল্যাভরণাদিভিঃ পূজ্মগ্রীতি। অতো যেচ বক্ষ্যমাণা বালা স্তত্ত আসংস্তে তয়া প্রশাস্থে বিক্ষতাএব প্রায়শো ভবেমুরিতি
ক্রেয়ং এবকারেণ কিঞ্চিদলি শ্রবণং প্রত্যাথ্যাতং। বৈ নিশ্চয়ে। তেনচ সত্যমেতদিতি সশপথং তদেব দৃদীক্কতং। অন্যথা শেষকৃত্য পবিভ্যাগেনাপ্যবশ্যমাগতা স্যাদিতি ভাবং সচ বোদনেনাপি মাতরমপ্রাপ্য স্থনার্থী সন্ ক্ষ্মেব চরণাবৃদ্ধং মৃত্রুৎক্ষিপ্রবানিতি বাল্য-

ক্ৰমসন্দৰ্ভ:

অরাদ্যং অরং তছপকরণঞ্চ ॥ ৫॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবন্তী।

কু হুহলসমূজ নিমজ্জনে সতীতাৰ্থ:। ভিশ্লিলেব দিনে জন্মক'ভাপি যোগে সতি সমবেত যোধিতাং মিলিত পুৰস্কুীণাং মধ্যে বাণিআ-বিভি: শোভিতং অভিষেচনং চকার ॥ ৪ ॥

অনাদিভিরন্নদি দানেন স্বষ্ঠু পৃথিতৈ বিপ্রৈ: কুতনঙ্গলং। সংজাতনিত্রে অকিণী যন্ত তং বালং ক্রফং শনৈরিতি নিত্রাভক শক্ষা ক্রোড়ে নিম্পান্ধ ধূছিব ব্যুম্পি শরিক। অশীশয়ং। বৃহৎ প্রাক্ষণৈকদেশস্থক শক্ষাভাধিছিতে পল্যকে নিশ্চলং নিংশক্ষ শায়নামাস। তত্ত নিজাপুর্ত্তিং জ্ঞাতিব ব্যুম্প্রভাবিতি শনৈঃপদেনৈব দ্যোতিতং ক্রেয়ং॥ ৫॥

উত্থানিকে উৎসবে উৎস্কায়ক মনো যন্তা: সা মনস্থিনী ৰস্তালন্ধার মাল্য গদ্ধ চন্দন তৈল সিন্দ্রালিকং দদানা ব্রচ্জাকসো হইলে সর্বাকশ্ম-কুশ্লা যশোদা তাহাদের মধ্যে বসিয়া গীত বাদ্য এবং ব্রাহ্মণ দারা মন্ত্রবাচন করত মঙ্গল করিয়া শিশুর অভিযেক করিলেন ॥ ৪॥

তদনন্তর অমাদি সমস্ত ভোজন সামগ্রী তথা বসন, মাল্য, অভীপ্সিত ধেমু ইত্যাদি দিয়া আক্ষণ দিগের পূজা করিলেন, তাহাতে সেই সকল বিপ্র তনমেন্ধ মঙ্গল বিধান করিয়া দিলে তিনি কৃতস্মান সেই শিশুর দিকে দৃষ্টিপাত করিয়া দেখিলেন তাহার নেত্রম্বয় নিমীলিত হইতেছে, অতএব শ্লীরে ২ হস্ত মারা তুলিয়া লইয়া গিয়া গৃহের মধ্যে একটা শকটের নীচে প্রেমে (ঝোলনায়) শোয়াইয়া মাদিলেন ॥ ৫॥

তাহার পর যে দকল ব্রজন্ত্রী আদিয়াছিল, উৎদবমতা হইয়া তাহাদিগের পূজা করিতে ব্যস্ত ছই-

নৈবাশৃণোদ্রৈক্রদিতং হতেস্য সা রুদন্ স্তনার্থী চরণাবুদক্ষিপৎ॥ ৬॥ স্বঃশ্যানস্য শিশোরনল্লক প্রবালমুদ্ধন্তিত্বতং ব্যবর্ত্ত।

व्यथतकामी।

উদক্ষিপং উদ্ধং চালিতবান্॥ ५॥

জদ্ধঃ শ্যানস্য শিশোরম্লক্ষাসো প্রবাশবক্ষৃত্ত যোহজ্যি তেন হতং শক্টং ব্যবর্তত বিপরীতমপ্তং ক্ষ্ণ বিধ্বস্তানি নানা

रिवधवरणावनी ।

গীলা সৌষ্ঠবমুক্তং। শক্টান্ত্র ভন্ধন ইতি ব্রহ্মাণ্ড পুরাণোক্তান্ত্রদারেণ শক্টারিষ্ট্রস্য দৈত্যস্য বধার্থমিতি সভ্যতে। ওচ্চান্ত্রন্তিক-নেব ৬বড় প্রীভগবত্তারিতস্য স্বভাবত এব সর্ক্ষ সমাধান শক্তিময়ত্তাং রোদনঞ্চ মাতৃঃ স্তন্যপানার্থং স্তনার্থানুতকে:। অস্য ভন্মসতঃ ভাবস্য মুনীক্রেণান্ত্র্যারণাল্যথাধ্যমেব বচনং। তচ্চ ক্তমাংসল্য বশ্যতাময় বাল্যলীলাবেশেন ক্তেয়ং। ভক্তভাব বশ্বস্থাং গোক্বলীনা কৈবস্যাহিচিতি সিদ্ধান্তঃ॥ ৮॥

क्रम्यक्रः।

স্ত্ৰাৰ্থীতি বাৰ্যলীলাবেশো দৰ্শিতঃ॥ ৮॥

অধ হাত শক্টাত্মরভঞ্জন ইতি ব্রহ্মাওপুরাণাং। অস্তরাবেশেনৈর ভূমৌ প্রবিশচ্চক্রাহ্মেল্যাপ্রি শক্টস্যাল্লকেন চরণেন

প্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

মনোংখবাগত নাবীঃ। নৈবেতি ব্ৰক্ষপ্ৰীজন সন্ধানন বচন প্ৰতি বচনাদ্যাবেশবশাদিত্যগঃ। স্তনাৰ্পীতি নিজাস্ত এব ক্ষোলামাদিতি ভাবঃ। মনীয় বোদন শব্দেন নাবদধাসি তিওঁ জ্বলাহ শ্ক্টকোটন শব্দেনৈব স্বামবধাপয়ানীতি মাত্ৰে কুপান্নিব শ্কটভস্কাৰ্থমেৰ চন্ত্ৰী উচ্চিকেপেত্যংপ্ৰেকা গম্যা ৯ ৬॥

সমকশ্চাপৌ প্রঝাল্বকু হৃশ্চ, বোংক্ছি জেন হতমিতি তেন রামনাবতারত কটাহ ভেদার্থমিব শক্টভলার্থ তেজন বৃগং ন বদিওং নাপি নৃসিংহাবতাবত কঠোর হিবলাকশিপু বিদারণার্থমিব লাতৈত্বাতি কঠিনমিতি ভাবং । রাল্যাদি লীলা নাধুর্যাবিরোধাতি-মহর্ঘটং ঐর্থানেতং রুক্ত পূর্ব প্রতিপাদকং । ব্যবস্তৃ বিপ্যাস্তীভূর অপত্ং । বিধ্বস্তানি নানা রস্বস্তি কুপাভাজনানি স্বর্ণ রজ্গতিবিক্ত কাংস্থাদি ময়ানি পাত্রাণিয়ত্র তদ্ধণা ভার্থা । বাহাস্তানি বিপ্যান্তানি চল্লে চ অকাশ্ট চ্ফালাং বাত্যভাশ্ফাকা বিদন্

লেন। অতএব বালক গৃহাভান্তরে শক্টের নীচে শ্রান থাকিয়া বে রোদন করিতে ২ হঠাৎ একবার চরণম্বয় উদ্ধিদিরে সঞ্চালিত করিলেন্॥ ৬॥

হে রাজন্! অধোভাগে শ্রীরুঞ্জ শয়ান ছিলেন, উপরে শক্ট ছিল, উদ্ধাদিকে ক্ষেপণ করাতে ভাঁহার ফুদ্র অথচ প্রবাল তুলা মৃত্র চরণ দ্বারা উপরিস্থ শক্ট আহত হইল এবং তৎক্ষণাৎ বিপর্যুত্ত

বিশ্বস্ত নানা রসকুপ্য ভাজনং ব্যত্যস্ত চক্রাক্ষ বিভিন্ন কুবরং ॥ ৭ ॥
দৃষ্ট্য যদোদাপ্রমুখা ব্রজন্ত্রিয় ঔথানিকে প্রকৃণি যাঃ সমাগতাঃ ।
নন্দাদ্যশ্চাদ্ত্তদর্শনাকুলাঃ কথং স্বয়ং বৈ শক্টং বিপর্য্যাৎ ।
উচুরব্যব্দিত মতীন্ গোপান্ গোপীশ্চ বালকাঃ । রুদ্তানেন পাদেন ক্ষিত্তমেত্রসংশয়ঃ ॥ ৮ ॥

ন তে শ্রন্দধিরে গোপা বালভাষিত্মিত্যুত। অপ্রমেয়ং বলং তস্য বালকস্য ন তে বিছু:॥৯॥ • শুধরস্বামী।

রদবন্ধি কুপ্যভালনানি স্থারজতাতিরিক্ত' কাংসাদি ময়ানি পাত্রাণি যথা ভবস্তি তথা চক্রেচ অফাশ্চ চক্রাক্ষাং বত্যস্তাশ্চক্রাকা যদ্মিন্ বিভিন্ন: কৃবরো যুগন্ধরো যদ্মিন্ তচ্চ তচ্চ যথা ভবস্তি তথা ব্যবর্ত্তি ॥ ৭॥

অন্ত দর্শনেন আৰু বিভূবু ওদেবাহ কথমিতি। বিপর্যাগাৎ বিপরীতমপ্তদিতি॥৮॥

ন শ্রন্ধরে বিখাসং ন জগ্মঃ উত অপি বালদ্য এতর সম্ভবতি এতেচ বালাঃ কিং জানস্তীতি ॥ ৯॥

रेवकावट्यायगी।

যাং শ্রীমণোদাপ্রমুখাঃ যাশ্য ব্রজন্তিরঃ ঔথানিকে পর্কাণি সমাগতাঃ। যেচ শ্রীনন্দাদরতে সর্কে দৃষ্ট্য শক্ট বিপ্র্যায়ং বীকা তথা চু-ত্না উৎপাত্তরা শক্তিনা দর্শনেন ব্যাকুণ্চিত্তাঃ সন্তঃ কথং শক্টং বিপ্র্যাপিত্ত্ রিতিশেষঃ। প্রশীতাত কমণীতি কচিৎ পাঠঃ। বৈ ৰিম্বে ॥ ৭ ॥ • •

অভ্তদর্শনাকুশ বাদেবাবাবদিত। কিং দৈত্যেন গ্রহাদিনা বেত্যাদি বিবর্ত্তন কারণোদ্ধনে নিশ্চমণতা মতি বেঁবাং তান্। বাদকা ত্রাধ্যাক্তি চিত্তবেন তদেক দুইয়া এতছেকটা অনেনেতি এতদিতিচ প্রত্যক্ষণ তৎকালীন্ত্রক স্চয়তি অত্এবাহা সংশ্যোহপ্যক্র নাতি কিমুতাপ্রতীতিরিতার্থা। ৮ ॥

তে পরম ভগবং প্রিয়ন্তেন সর্ব্ধ জ্ঞান যোগা। অপীত্যর্থঃ। অপ্রমেয়ং ভগবত্তয়া বিশেষতন্ত বালগীলাবিছারেণ তর্কাগোচরুং বলং।
ন বিজঃ ততো ন প্রদাধিরেচ। তত্র পুনতে ইতি হেরস্তরং পুত্রভাবনয় তৎ প্রেমানন্দমত্তা ইত্যর্থঃ। তাদৃশ তংপ্রেম সর্বাচ্ছাদকভাদিতি
ভাবঃ। প্রত্যুত্তগবান্ রামো বিপক্ষীয় নূপোদামং। কৃষ্ণং চৈকং গতং হর্তং কন্যাং ক্লহশন্ধিতঃ। বলেন মহতা সার্ধং প্রাভ্রেহ পরি-

ক্ৰমাসন্দৰ্ভঃ।

স্পর্শো জ্ঞেয়:॥ १॥ ৮॥

েত বাংসল্য পূৰ্ণচিত্তাঃ 🏿 ১। ১০। ১১। ১১। ১৩। ১৪॥

ত্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

বিদীর্ণঃ কুবরো বুগন্ধরণ্ড যত্র তদযথা স্থাত্তথা। শক্টাস্কর ভঞ্জন ইতি ব্রহ্মাণ্ডপুরাণাৎ অস্কুরাবেশেনৈর **স্থানি প্রবিশচ্জক্তা**গুচ্চচ্চাপি শক্টস্য নিকট প্রান্তবেন জন্নদেন চরণেন স্পর্ণে চিচ্নয় ইতি শ্রীবৈষ্**রতো**ষণী॥ ৭॥

বশোদা প্রমুখা য়াশ্চ ব্রজস্তিয়ং পর্বণি। কন্দণীতি চ পাঠং। বিপর্যয়ং সদপতদিত্যুচ্রিতি শেষং॥ অব্যবসিত। কিং দৈভাবদেঃ কিলা গ্রহাদেঃ কর্মেদ্মিজ্যনিশ্চিতা মতি বেষাং তান্॥৮॥
ন শ্রদ্ধিরে ন বিশ্বস্তি স্ব ॥ ১॥

হইরা পড়িয়া গেল। হতরাং নিকটে নানা রস পূর্ণ যে সকল কাংস্যাদি পাত্র ছিল সমুদায় ভূগ ইহল এবং সেই শকটের চক্র ও অক্ষ উলটিরা পড়িল, আর যুগদ্ধর (জোঁয়াল) বিভিন্ন ইইয়া গেল॥ ৭॥

হে মহারাজ! অন্ধ পরিবর্তনোৎসবোপলকে যশোদা প্রভৃতি যে সকল ব্রজন্ত্রী একরা মিলিড হইয়াছিলেন তাঁহারা এবং নন্দাদি গোপ রুদ্দ ঐ ব্যাপার অবলোকন করিয়া আশ্চর্য্য দর্শন হেডু সাতিশয় ব্যাকুল হইলেন এবং বিশায় প্রকাশ পূর্বক পরস্পার কহিছে লাগিরেন শকট স্বয়ং কি প্রকারে বিপরীত হইয়া পড়িল। সেখানে ব্যুসকল বালক ছিল তাহারা গোপ এবং গোশীগণকে ব্যাকুলিত চিত্ত দেখিয়া বুলিল আমাদের নিক্তম বোধ হয় এই শিত রোদন করিতে করিতে পাদ চালনায় শক্ষক পাতিত করিয়াছে॥৮॥

কিন্তু বালকের কথা বলিয়া গোপেরা তাহাতে বিশ্বাস করিল না, বরং পরস্পার কহিতে লাগিল শিশুর কখন এরূপ কর্ম সম্ভবে না, ইহারা বালক কি জানে?, হে রাজন্! ঐ শিশুর যে অপরিমিত রুদন্তং স্থতমাদায় যশোদা গ্রহশঙ্কিতা। কৃতস্বস্ত্যয়নং বিপ্রৈঃ সূকৈস্তনমপায়য়ৎ ॥ ১০ ॥ পূর্ববং স্থাপিতং গোপৈর্বলিভিঃ স পরিচ্ছদং। বিপ্রা হুত্বার্চয়াঞ্চকুর্দধ্যক্ষত কুশান্ধৃভিঃ॥ ১১ ॥ যেহসূয়ানৃতদন্তের্ব্যা হিংসা মান বিবর্জ্জিতাঃ। ন তেষাং সত্যশীলানামাশিষো বিফলাঃ কৃত্যঃ॥১২॥

बीधत्रश्रामी।

त्रकारेषः स्टेकः कृषा॥ >०॥

ভগবং প্রভাবানভিজ্ঞ বিপ্রচেষ্টিতং বিতশ্বরাছ পূর্ব্ববিদিত্যাদিনা বলিভিঃ শইজঃ। মুদ্ধা অষ্ট দিক্ষু বলিভিঃ সহিতং সপরিকরং যথা-পূর্ব্বং স্থাপিতং বিপ্রা দ্ব্যাদিভি রর্চ্চরামাস্থ: হৃত্যা গ্রহাদি হোমং বিধায়॥ ১১॥

व्यन्त्रा গুণেবু দোষাবিষরণং। ঈর্ব্যা অক্ষান্তি:। তেষাং আশিষ: ক্লতাঃ তৈঃ প্রযুক্তাঃ॥ ১২॥

देवक्षवरज्ञावना ।

প্লুতঃ। ছরিতং কুশ্তিনং প্রাগাদগলাধারও পত্তিভিরিতি। শ্রীবলদেবস্যাপি তথার শ্রবণাং। নেমং বিরিঞ্চ ইত্যাদে তক্ত স্ততেশ্চ।
নমু ভাদৃশ প্রেমবৈবক্তোন স্বতো হহুপদ্ধানং নাম মাপ্ত অন্তেখামুক্তা সন্তবেদিত্যাশন্ত হেবন্তরমাহ উত অপি বালভাবিতমিত্যতোহপীতি
গোপা অপি ন শ্রদ্ধিরে কিমৃত গোপ্য ইত্যর্ধঃ॥ ১॥

অতএব বিশেষতঃ শ্রীষশোদায়াঃ দেহতরেণ চেষ্টিতমাহ স্কদস্তমিতি। গ্রহেভ্যো বালগ্রহাদিভাঃ বিশ্রৈঃ কর্ত্ভিঃ হজে রক্ষোদাদিভিঃ ক্রণেঃ রক্ষোহনং বলগহনমিত্যাদিভিঃ পশ্চাদাশস্তা স্তৰমপায়য়ৎ ॥ ১০ ॥

জ্ঞীননাম্বর্ত্তিনাং বিপ্রাণামপি তাদৃশ এব ভাব ইতি দর্শরন্ধাহ পূর্ব্বদিতি। বলিভিঃ বলবন্তিরিত্যাদিনা শক্টিন্য পরমং গুরুজং বৃহ-প্রক্ষ দর্শিতং। ভত্তকং তালোচ্ছিতাগ্রমিত্যাদি। অতস্তদধে৷ নিঃশক্ষোচং মাতা পূলং শায়িতবতী। ছত্বা আদাবনিষ্ট নির্ভ্যথং আজ্ঞান ব্যান্তিভিঃ সা সামান্যতো গ্রহহোমং বিধার পশ্চাং দ্ধিমিশ্রৈরক্ষতৈঃ কুশ সহিত প্রোক্ষণ জলৈশ্চ শক্টমর্চ্চরামান্তঃ। গোপজাতীনাং তদাশ্রর প্রধানজাং॥ ১১॥

অধুনীতে ভা বিশেষতঃ শ্রীবল্লবেক্স শ্রীবলৈ দিবকে তিবাহ য ইতি চতুর্ভিঃ। তত্র য ইতি ত্রিকং। তত্রৈবৈকেন তেবাং ব্রাহ্মণানাং সর্বেষিত্রময়য়য় য ইতি। অস্থাদি চতুক বিবর্জনেন প্রায়েধর্মপরতঃ হিংসা মান বিবর্জনেন মোক্ষপরতঃ সত্যঞ্চ সমর্কনিনিতি। নারায়ণ পরাঃ সর্বে ন কৃত্র নবিভ্যতি। স্বর্গাপবর্গ নরকেষপিতৃক্যার্থ দর্শিনঃ। ইতি চৈক্বাক্যতয়া সত্যনীলভেন প্রম বৈক্ষব্বত্বেক্সং অতএব সর্বাহৈ নাসাত্তে পৃথপ্তক্তিঃ॥ ১২॥

শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

স্টুকৈ রক্ষোদ্বমন্তৈ: ক্বতং^{শ্}ৰস্তান্থনং যস্য তং ॥ ১० ॥

ৰলিভি বঁলবত্তি গোঁপৈ: পূৰ্ববদেব শক্টং হাপিতমিতি তমু বৃহত্তং ব্যঞ্জিতং। অৰ্চ্চরাঞ্চকুরিতি গোপজাতীনাং তদাশ্রয় প্রধানত্বাং সঞ্চিত ধনাম্পদ্যেন লক্ষ্যধিষ্ঠানত্বাচ্চ ॥ >> ॥

ত্রীনন্দন্ত প্রাক্ষণাশীর্জিরেব মে বালকঃ কুশলীতি জানাতি ত্বেত্যাহ ব ইতি। মানো গর্জঃ। তেবাং তৈঃ কৃতা আদিষো ন বিফলা ইতি বিশ্বসাতি শেষঃ॥ ১২॥

বল গোপগণ তাহা জানিতে পারে নাই তাহাতেই ঐ রূপ কহিল॥ ৯॥

সে যাহাহউক, যশোদা সত্বর গিয়া রোদন পরায়ণ পুত্রটাকে ক্রোড়ে লইলেন এবং চুইতাই আশস্কায় ব্রাক্ষণদিণের দারা রাক্ষ্য বিনাশক মন্ত্রপাঠপূর্বকে স্বস্ত্যয়ন করাইরা স্তনপান করাইতে লাগিলেন ॥১০

তে রাজন্! দেই সকল আক্ষাণ ভগৰানের প্রভাব অনভিজ্ঞ ছিলেন, ইতরাং গোপগণ কর্ত্ব ঘণাক্রমে অফটদিকে বলির সহিত স্থাপিত প্রহাদির হোম করিয়া দধি, অক্ষত এবং কুশ জল দিয়া যথাবিধি অর্চনা ক্রিলেন । ১১॥

ে মহারাজ। যে সকল আহ্মণ অনুয়া, অনুত, দস্ক, ঈর্ধা, হিংসা এবং অভিমান বর্জিত ও সত্য-শীল সেই সকল দিজাগ্র্য যে আশীর্কাদ প্রয়োগ করেন তাহা কদাপি বিফল হয় না॥ ১২॥ ইতি বালকমানীয়সামর্গ ক্ষেত্ রূপাকৃতিঃ। জলৈঃ পবিত্রোষধিতিরভিষিচ্য বিজ্ঞোতনৈঃ॥ ১০॥ বাচয়িত্ব। স্বস্তায়নং নন্দগোপঃ সমাহিতঃ। হুত্বাচায়িং বিজ্ঞাতিত্যঃ প্রাদাদরং মহাগুণং॥ ১৪॥ গাবঃ সর্বগুণোপেতা বাসঃ প্রগ্রু কুমালিনীঃ। আত্মজাত্মুদয়ার্থায় প্রাদাতেচাম্বযুক্ত ॥ ১৫॥ বিপ্রা বেদবিদো যুক্তাত্তৈ বাঃ প্রোক্তান্তথাশিষঃ। তা নিক্ষলা ভবিষ্যন্তি ন কদাচিদপি প্রবং॥১৬ একদারোহমারুড়ং লাল্যন্তী স্বতং সতী। গরিমাণং শিশোব্যাণুংন সেহে গিরিকৃটবং॥ ১৭॥

श्रीभव्यामी।

ইতি এবমতিপ্রেতা সামর্গ্ বঙ্গুভিরূপাকৈতে: সংস্কৃতিঃ পবিত্রা ওবধরো বেষু জলেষু তৈঃ কৃত্বা বিজ্ঞোতনৈঃ কৃত্বভিঃ অভিষেচ্য অভি-বেকং কার্যায়ির। ১০। ছত্বা হাব্যাত্বা। ১৪।।

গাবো গাশ্চ প্রাদাং অবযুক্ত আশিবো যুর্জু: ॥ ১৫ ॥ তান্তথৈব বভুবুরিত্যর্থ: ॥ ১৬ ॥

উংক্ষিপ্য মৃহপাদেন শকটং ব্যোদ্ধি দীলয়া। তৃণাবৰ্ত্তং পদাপীতা ভুব্যপাতয়দৰ্ভকঃ। আন্নোহং উৎসঙ্গং ॥ ১৭ ॥

বৈষ্ণ বজোষণী।

ইতীতি ত্রিকান্ত যুগাকং সামর্গ্রেষ্থের তত্তবেদমন্ত্রাঃ পরিত্রৌষধরঃ সর্কেরিধরঃ মহৌষধরত ॥ ১৩ ॥ মহান্ডণং রসামোদ্দি বিশিষ্টং ॥ ১৪ ॥

গাব ইতি সার্দ্ধকং। অভ্যাদয়ঃ সর্কোপদ্রব শান্তি পূর্বকং বৈভবং স এব নিজ পুক্ষার্থ নেহ ভরাত্তং সাধ্যিতুং তেচ বিশ্রোঃ অহ অন্নতোজনাদানত্তরং অযুক্ত প্রযুক্তবন্তঃ। আদিহ ইত্যুত্তর স্বার্ক্তাৎ॥ ১৫॥

কীদৃশান্তে বেদনিদঃ বেদার্থাভিজ্ঞাঃ মন্ত্রবিদ ইতি পাঠো বছত্ত। তথাপি তত্নপলক্ষণত্তনে স এবার্থ:। স্বতো যুক্তা ভগবছকা: ইত্যর্থ:। ভগবান্ এক কার্থেরেন্ডাল্ল:। প্রধাবান্ ভজতে যোমাং স মেযুক্তনো মত ইতি শ্রীভগবদনীতাত:। অতক্তি হা সাশিষঃ প্রোক্তা ভাতথৈব বভূব্রিতার্থ:। তদিছামুদারেণ যথাবদরং তাঃ শ্রীভগবতি ব্যক্তা বভূব্রিতার্থ:॥১৬॥

ত্রজে বিরাজমানে। হং কাঞ্চিদর্হামি নার্তিং। ইতি চিক্ষেপ ভগবাসুপরিস্থ মনঃ কুটং। একদা একাশ বয়ঃ প্রাকটো একহায়ন

ক্রমসন্দর্ভ:।

তে চ বিপ্ৰা আশিৰোহৰযুগতেত্যবয়:॥১৫॥

় বাশ্চ আশিষ্টেরঃ প্রোক্তাভাভথৈব। বৃহ্বরিতি শেষঃ।। এশ্বণাদেবছেন তত্তৎ প্রকাশানামশীকারাদিতি। ভাবঃ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্র বর্ত্তী।

উপাক্তি: সংস্কৃতি:। প্ৰিক্ষা ওৰধনঃ সংক্ৰীৰ্ষণ মহৌৰধ্যাদরে। যত্র তৈ জলৈ: কর্তি দ্বিজ্ঞান্তমৈ: কর্ত্তিরভিষিত্য অভিষেকং কারমিষা ছবা হাবমিষা। মহাশূলমতিশাদামোদ্ধুকে:॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥

গাবং গাং ঋণাং বছ পদ্মৰীত্যাদয়ং। তে বিপ্ৰা অহু অনস্তবং অধ্যুঞ্চ স্বীচকুং॥ ১৫॥

ৈতে বা আৰ্লিব: প্ৰোক্তাযে বিশ্ৰা যুক্তা বোগিন স্তা তথা বস্তুবুরিতি লেব: ॥ ১৬॥

রাজতাবিলসম্পত্তিপতে। মধ্যপি সঞ্চিতৈঃ। কিমেতি ব্যতিরিতি অমনোহভিনদীখরঃ। একদা একাল বরসি বতে সতি এক

এই জুডিপ্রায়ে বালককে আনিয়া ব্রাহ্মণদিগের দারা ঋক্, যজু ও সামমন্ত্রে সংস্কৃত তথা পবিত্র ওয়ধি দিল্লিভ জলে অভিযেক করাইয়া॥ ১৩॥

গোপদাজ নন্দ সমাহিত চিতে স্বস্তিবাচন করাইলেন, তাহার পর অগ্নিতে ছোম করাইয়া দিজা-তিদিগকে উত্তম হৃত্যাদ ও হৃপদ্ধ অন্ন দিলেন ॥ ১৪ ॥

भात अधिकास अक्षामग्रार्थ वह ২ গাড়ী আনাইয়া বল্প মালক্ত তথা স্বৰ্গারে ভূষিত করত দান করিবেন। সেই আক্সাণেরা সকলেই আশীর্কাদ প্রয়োগ করিতে লাগিলেন॥ ১৫॥

ছে রাজন্। বেদবেতা যোগী বিপ্রগণ কর্তৃক যে যে আশীর্বচন উক্ত হয় দে সর্কল সেই প্রকারই ইইয়াছিল, নিশ্চয় জানিও, বেদজ্ঞ জ্ঞান্ধণের আশীর্বাদ কদাচ নিক্ষল হয় না॥ ১৬॥

েহে রাজন। ভগবানের খন্য বালচরিত্র বলি অবণ কন্ন, একদা নন্দপদ্বী পুত্রকে ক্রোড়ে

ভূমো নিধায় তং গোপী বিশ্বিতা ভারপীড়িতা। মহাপুরুষমানুষ্ঠো জগতামান কর্মান্ত। দৈত্যো নাম্বা তৃণাবর্ত্তঃ কংসভৃত্য প্রচোদিতঃ। চক্রবাত স্বরূপেণ জহারাসীনমর্ভকং॥ ১৮॥

अधव्यामी ।

তৃণাবর্তাং সমৃত্যু পবিহারায় শ্রীকুঞেনৈবা**ত্মন উৎসন্ধান্তারায় কৃতং ভারমজ্যনতী উৎপাত** শঙ্কা মহাপুক্ষ মাদখ্যে। একিকো-দব বর্ত্তিনাং জগতাং ভারেণ পীড়িতা বিশ্বিতাচ সতী **যথা জগতাং মধ্যে কর্মস্থ আস বস্তৃব নতু জ**গত্রদরং তং বেদ ইত্যর্থ:॥১৮॥

বৈষ্ণবতোৰণী।

আসীন ইত্যতাে রজ্বিংশাধাায়োজে:। লালয়ষ্টী মুখচ্মনং স্তনপারনক তথা কলাচিন্নীলয়। করাভাামুভোলনং কুর্রতী সভী প্রসা-ভিজ্ঞেতার্থ:। ইতি লালনে সৌষ্ঠবং অভিত্থেতং বাঢ়ং স্ববলেন প্র্যাপ্রিত্থ তত্তাক্ষা একাকিনী ব্ধর্ণন্মেক্দা গৃহদাসীধিত্যাদি বক্ষমাণ প্রকারান্তরেণ স্প্রসাং॥ ১৭॥

ভূমৌ নিধায় ইতি তৈ ব্যাপ্যাতং তত্র স্বমৃত্যিতাত্র স্থ শব্দেন সৈবোচ্যতে মৃত্যু শব্দেম চ পরাভব এব তদসন্থবাং কৃতং প্রকাশিত-মিত্যর্থ:। অত: শ্রীক্রফোদরবর্তিনামিতি বিভূত্বন তত্ত্বরবর্ত্তিনামিবেতি ব্যাথ্যেয়:। পরিচ্ছিয়ত্বেংপি বিভূত্বর দামোদর লীলায়াং স্থাপ্যিতবাং বিগ্রহ রূপত্বেংপি বিভূত্বং বিভূত্বেংপান্তাম্পৃষ্টসমগ্রিমাগ্রিমনীলায়াং স্থাপ্ষিতব্য:। যবা ভূমাবিতি সংভ্রমেণ থট্যুদে ভারাসহ-নাভিপ্রায়েণ চ ইতি ভাব:। ভারণীড়িতেতি তাদৃশ প্রদক্ষে জাদৃশ শক্ত্যুদয়াদিতি ভাব:। জগভাং মহাপুরুষমীশ্রমিত্যর্থ:। কর্মস্থ স্বস্তায়নাদিরপ স্ববাৎসল্যময়ের্। যন্ধামার্থ স্কং প্রিরাত্ম তনম প্রাণাশন্মা স্বংকৃতে ইত্যানেন ত্রস্যাং কৈম্ত্যাপৃতিবং॥

দৈত্য ইতি মুগাকং। বাত্যারূপ দৈত্যখেন হর্ তথং মহাবলিষ্ঠখং। অপ্রতি কার্যস্থাক্টাকং। কংসভ্তা ইতি পরম দেই খং তত্রচ প্রোচাদিতঃ পূর্বং বালবাতিখেন পূতনৈব সামান্তত ভাবং প্রস্থাপিতা তত্তাশ্চ ছন্মান্ন মূর্তেরপি মরণাছকারুলঃ সন্মন্ত্যিব শক্টাস্থবঃ প্রথাপিতঃ তস্যচ বিলায়নান স্থাতিঃ সন্মূর্তার্ধ ধর্মো বলবতরো হপ্রক্রেপা মহাবান্থবৈর প্রক্রইতরা স্থাতিশরো দর্শিতঃ সচ গলে নিস্পীডা গৃহীত ইতি ভাবি কৌতুক স্চনং চাত্র। আসীনং তত্ত্র মাতৃ দৃষ্টি পথ এবেতি তস্য বিশ্বয়ো হ্রুথাতিশরো দর্শিতঃ। অর্ভকং প্রকৃতি বালাঃ সংবৃত গৌরব্যাত্যর্থঃ ॥ ১৮ ॥

क्रमममर्जः।

জগতাং মহাপুক্ষং ঈশ্বর্নিতার্থ:। কর্মস্ক স্বস্তায়নাদি রূপ তশ্বাৎসলা মন্তের্। যদ্ধামার্থ স্কৃৎ প্রিয়ায় তনম প্রাণাশরাভ্ৎকৃতে ইত্যানেন কৈমৃত্যাৎ পূতনাদিনা কার্য্যাদি সিদ্ধে:। কংসেন স্বসূত্যু এব প্রকটতয়া প্রেরিত ইত্যর্থ:॥ ১৮॥ ১৯॥ ২০। ২১। ২২। ২৩॥

🖺 विश्वनाथहक्तवर्जी।

আদীনো প্রিয়মাণো বিহায়দেত্যগ্রেতনোকে:। আরোহমুৎসঙ্গমারুড়ং তং লালরস্তী ভূজাত্যামুত্রোলনান্দোলনাঙ্গিতিকলাসয়ন্তী গিরিক্টবং গিরিক্টবং গিরিক্টবং গিরিক্টবং গিরিক্টবং গিরিক্টবং গিরিক্টবং নিশাগরিমাণং বোঢ়ুং ন সেহে। আগমিবাস্তং ভূপাবর্ত্তং স্মাভৃকমেবামুং হরিবাস্তমালকা মাজু র্ণোদায়াঃ ক্রেশো মাভূদিত্যের্য্যা এব শক্তা ভত্তারায় ভারঃ ক্রেয়ামাদে ইতি জ্বেয়ং। কিঞ্চিপ্যুপরি ভোলরাম্ব মাং ব্যোপ্তি প্রেনায়্বং। ইতান্য্য কিল সত্যকামতৈবানয়ত্ত্ববিশ্বনায়্বং॥ ১৭॥

ভূমাবিতি সন্ত্রমেণ বিশ্বিতেতি মহিলোরেরমাকশ্বিকো ভারঃ কৃতন্ত্যো ল জানে কন্সচিদালপ্রহয়্যাবেলজনিতো নেতি শব্দা জ্গৃতাং মহাপুরুবং শ্রীনারারণমাদধ্যে। বৈকুষ্ঠ দিশমুদ্ধ্যালোক্য ভগবংশ্বনৈ দন্তোহরং স্বতশ্বনৈব পালনীর ইতি ধার্ক্তননোবাচেত্যর্ক। তভক্ষ ব্যগ্রা তংস্বস্তায়নান্যর্থং কর্মস্থ বিপ্রাহ্যানাদির্ আস বভূষ ॥ ১৮॥

লইয়া লালন করিতেছিলেন; হঠাৎ তাঁহার ভার বোধ হইল, সেই শ্লিণ্ডকে গিরিশিথর ভুল্য গুলু বোধ করিয়া তিনি ভার বহনে অসহিষ্ণু হইলেন॥ ১৭॥

শ্রীকৃষ্ণের উদরন্থিত জগতের ভারে অত্যর্থ পীড়িতা হওয়াতে ঐ গোপীর সাভিশুর বিশ্বর জনিল। তৎক্ষণাৎ পুশ্রুকে ভূতলে স্থাপন করিলেন এবং ঘটনার কারণ দা জানাতে উৎপত্তি আশক্ষা করিয়া মহাপুরুষের ধ্যানে প্রবন্ধ হইলেন। তাহার পর ঐ বিষয়েই নিষ্ক থাকিলেন কিন্তু পুশ্রের উদরে জগৎ ক্ষিষ্ঠিত হুওয়াতে তাহার যে গুরুজ হইয়াছে তাহা জানিতে পারিলেন না এই সমরে কংসের ভত্তা ত্ণাবর্ত নামা একজন দৈত্য কংসপ্রেরিভ হইয়া চক্রকাত ক্ষরপে আসিয়াছিল, সে ভূতলোপবিষ্ট সেই শিশুকে হঠাৎ হরণ করিল। ১৮॥

গোকুলং সর্বমারণুন্ মুদ্ধংশচকুং বি রেণুভি:। ঈরয়ন্ শ্বমহাঘোর সব্দেন প্রদিশো দিশু:॥ ১৯॥
মুহূর্ত্তমভবদোর্ছিং রজসা তমসা রতং। স্থতং যশোদা নাপশান্ত স্মিন্তব্রতী বতঃ।
নাপশ্যৎ কশ্চনাত্মানং পর কাপি বিমোহিত:। ত্ণাবর্ত্তবিস্ফাভি: শর্করাভিমপ্রক্রতঃ॥ ২০॥
ইতি থরপবনচক্রপাংশুবর্ষে স্কৃত প্দরীমবলাধ্বিলক্ষ্য মাতা।
অতিকরুণমসুসংসরস্তাশোচভূবি পতিতা মৃতবৎসকা যথা গোঃ॥ ২১॥

शिषत्यामी।

স্বরয়ন্ নিনাদেরীয়িত্যর্থ: ॥ ১৯ ॥ যতঃ বত্র **স্থত্যত**ী তত্র স্থানে নাপশ্রুৎ ॥ ২• ॥ থরপবনচক্রাৎ পাংশুবর্ষে সতি ॥ ২১ ॥

देवकवट्डायना ।

ষ্দ্রস্থা হরণাশক্তে রেণুভিরাবৃণ্ন অতএব গুত্রত্যানাং চক্ষ্য ডজ্যোতীংবি চ মুক্তন্ প্রদিশঃ বিদিশঃ দিশশ ॥ রজদা তংক্তত্যসূচ শ্রীভগবদর্শন বিনাশকাভ্যাং রজস্তমোগুণাভ্যামাবৃত্য । প্রথমং যোগনাং হৃদর্মবাসীদিতি শ্লেবেণোপ-নাচ। তুমিং স্টিত্রব স্বপার্যে গ্রস্তবত্যপি যতো যদান্তক আদের্হেতোর্নাপশ্রুৎ তুদ্মিদ্বিত্যত্র স্বর্মিতি কচিৎ পঠিঃ ॥ ১৯॥

পর্মন্যমান্ত্রানমপি নাপশ্রং। চকারাং কিঞ্জাশৃণোচ্চ। বিমৌহিতঃ কিঞ্চিন্সুস্কাভূমপ্যশক্ত ইত্যর্থ:॥ ২০॥

এবমত্যন্ত গৌরৰ প্রকাশনেনাত্মনাহনকুপক্য নয়নং শ্রীভগ্বতা তল্লীলাশকৈয়ৰ বাৎসল্যেন বাধিতা অপি প্রাদর্শনমাত্রেণৈবাত্যাক্সম মতী কিঞ্চিদহলজাত্মকমা বহু বিল্লাপেড্যাই ইতীতি। পূর্ব্বোক্ত প্রকার ধর পবন চক্র সংবন্ধ পাংশু বর্বে সতি স্থতস্য পদবীং
মার্গং কেনাপি লক্ষণেনানধিগম্যৈৰ অবলা কিঞ্চিৎ কর্ত্ব্যহ্মজাত্মণাশকা কেবলং ভূবি পতিতা সতী অতি ক্ষণং কাঠ পাবাণ বন্ধ
সারাদীনামপি ভেদকং বথাস্যাত্তথা অন্ত্র্যরন্ত্রী অশোচৎ তদর্বং বিলাপং চক্রে বহা প্রাগ্রেলাচৎ পশ্চাক্ষোহেন ভূবি পতিতা বতো মাতা।
ক্ষেহভরেণাক্সজানাভাবে পরমার্ক্তবেচ দৃষ্টাস্কঃ। মৃতেত্যদর্শন মাত্রেণ মহানিষ্টশক্ষোৎপত্তেঃ ॥ ২১ ॥

প্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

ভাবদেব দৈত্যোজহারেতি ভদ্ধরণকালে ঐপর্ব্যা এব শক্ত্যা ভারলাঘবং ক্লুত্রিতি ক্লেরং। দিলো বিদিশক ঈরমন্ প্রতিধ্বনরন্ ॥১৯
যতো যক্ত নাজ্ববতী ভদ্মিন্ স্থলে ॥

শরপৰন চক্রাৎ পাংশু বর্বে সক্তি ক্ষবিলক্ষ্য অদৃষ্ট্ব।॥ २०॥

উপারতঃ পাংশুবর্ষস্য বেগো যদ্মিং গুথাভূতে প্রনে সতি ॥ ২১ ॥

ঐ তৃশারর্ত সমস্ত পোকৃষ আন্দোলিত এবং ধূলি দারা সকলের দৃষ্টিরোধ তথা খোরতর মহাধ্বনিতে শশ দিক্ প্রতিধানিত করিতেছিল ॥ ১৯॥

অতথ্য মৃত্তিকাল সংখ্য সমূল্যে গোষ্ঠ ধূলি এবং জন্ধকারে আছম ক্ষ্মাণেল। বলোলা বে আনে পুরুত্তক জাগান করিমাছিলেন ওবার জাঁহাকে দেখিতে পাইলেন না সকলেই বাঁডাার বিমোহিত ক্ষমান বিদ্যালয় আছিছ আগমানে অথবা অন্যক্ত জানিতে পারিক মা, ত্থাবর্ত্ত লানব যে সকল পর্করা (খাপরাল) থাকেল করিতেছিল ভাছাতে সকলেই বংশকোনান্তি উপত্যত হইল। ২০॥

ক্ষোজন ক বেশ্বান প্রনামক বেড় উদ্ধান্ধারে ধ্নিবর্ষণ ইইভে থাকিলে যশোদা পুত্রবর্থ দেখিতে দা পাইয়া ইভছতঃ জনুষ্মণ করিলেন, কুরোপি সন্তান প্রাপ্ত হইলেন না, অভএব যুত্বৎসা গাভীর ন্যায় ভূতলে পড়িয়া কঙ্কণখন্তে রোদন করিতে করিতে শোক করিতে লাগিলেন॥ ২১॥ ক্ষিত্মসুনিশ্ম্য তৃত্ত গোপ্যো ভূশমস্তপ্তধিয়ো হ্লুগ্ণ্ম্থ্য:।
ক্রুক্ত রুসুপলভ্য নন্দসূত্বং পবন উপারত পাংশুবর্ষবেগে ॥ ২২ ॥
তৃণাবর্ত্তঃ শাস্তর্রা বাত্ত্যারূপধরো হরন্। কৃষ্ণং নভোগতো গস্তুং নাশক্ষোভূরিভারভূৎ ॥ ২০ ॥
তমশাস্তং মন্যান আত্মনো গুরুমত্ত্যা। গলে গৃহীত উৎক্রেট্রুং নাশক্ষোদ্ধৃতার্ভকং।

औधत्रवामी । *

উপারত: পাংশুবর্ষস্য বেগো মন্দ্রিন্ তথাভূতে পবনে সতি তত্র তস্যা ক্লিড মহুনিশম্য গোপ্যো কক্ষণ্ণ:॥ ২২ ॥
ৰাড্যা চক্রবাতঃ তুজপধর: কৃষ্ণং হরন্ শান্তরয়: কথিংলজোগত: ততঃপরং গল্প নাশকোদিত্যর্থ:॥ ২০ ॥

৩ ক্রমন্তরা অতিগোরবেণ তং অন্মন্তং অন্মন্তং পর্বতেপ্রায়ং মন্যমান: ত্রেনৈবান্ধনো গলে গৃহীত: তং ত্যক্ত্মিচ্ছরপি নাশকোদিত্যর্থ:॥ ২৪ ॥

বৈষ্ণবতোষণী।

প্ৰনে উপারত পাংশুবর্ধবেগে সতি গোপ্য: প্রতিবেশিক্তঃ তব শ্রীব্রজেশ্বরীগৃছে ক্ষণিতং অমুনিশম বীপারা শ্রমা তবচ শ্রীনন্দ স্থ্যমূপপত্য গদাপ্যদৃষ্ট্। ভূশমন্তপ্রধিয়: সত্যন্তত এবাশ্রু পূর্বম্থা: সত্যো ক্ষন্তঃ। অনুরক্তেতি পাঠে শ্রীনন্দপদ্ধা; শ্রীনন্দপনী চাত্র-রক্তাধী র্যাসাং তাঃ। নন্দস্থমিতি শ্রীনন্দস্য তদমুগ্রাৎ শ্রীব্রজবাসিনাঞ্চ সর্বেবাং রোদনং স্ক্রতি॥ ২২॥

ততশ্চ তেযামার্ত্তি রোদনে নভোগমনলীলাং বিহায় দৈত্যং হস্তমুদ্যত ইত্যাহ তৃণেতি। তৃণাবর্তো বাত্যারূপধরঃ ক্বফং হরন্ ন^{তেন} গতো ভূষা তত্র তেনাবিদ্ধুতভারেণ ভূরিভারভূৎ সন্ তত এবচ শাস্তরয়ঃ সন্ গস্তং নাশকোৎ॥ ২০॥

অন্তর্থ অন্ধর্য নীলমণি পর্বাতং নতু নক্ষত্মং তং মন্যমান: অতোহরণাশক্তা চ মোক্ত মিছেরপি নাশকং বত তেনৈব গলে গৃহীতঃ অতএবাছুতং লোকাতীতং কৌতুকাবহং বার্ডকং। অন্মন্তমিতি যুবোরনাকাবিতি জ্ঞাপকাং ছাক্ষনো বলোপঃ কিন্তু পাঠোহরং কচিদেব। অন্মানমিতি পাঠন্ত বছত্ত অত্ত্ মতুপলোপ স্থান্দর। অন্মার্ণমিতি পাঠন্ত বছত্ত উত্ত তত্ত তত্ত তত্ত প্রত্যার্গ শব্দন বর্ণ উচ্যতে আগমাদৌ তথা দৃইছাং। বর্ণ শব্দেন চ আভা ভণ্যতে আন শব্দেন কথকিৎ পর্বাত ইতি। অত্তচ বথাহি কেনচিহুট্চে নীর্মানো-বালকো ভয়াত্তলালং গৃহাতি তক্ষাক গ্রহণাদিনা লৌকিকবাল্য লীলাচ।

ত্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

তত্র ব্রজেখার্যা ক্লিভিং নিশম্য অন্ধু পুরান্তরাদ্পি গোপ্য আগত্য তত্র ককছ:॥ ২২॥

প্রথমং ক্লাং বালকান্তরমিব হরন্ নভঃ অভ্যূর্জং গভঃ তভক ভূরিভারভ্দিতি তত্ত উর্জ্ঞানেশে মহাভারং তং প্রতি বন্, শাস্তররঃ তভক বোঢ়ুমসমর্থ এব তভো গল্পং নাশকোং॥ ২০॥

ততণ্ট নিশন্ন শ্বীন নভো বিহারাভিলাবো নিশাদিত স্বৰ্গপুর পুরন্ধী কল্পী বদর্শনাভিলাবন্দ বালঃ ক্লকাং হবং প্রবর্তে ইত্যাহ। তমিতি। আত্মন: সকাশাদণ্যতিগৌরবদ্দেন তং জন্মতং জন্মবন্ধং পর্মতং মনামানঃ উৎস্তই নিঃসার্ক্লিড্রং নাশকং। তল হেড্রং গলে

অনেককণ পরে যথন প্রনের ধূলি বর্ষণ বেগ উপরত হইল তথন গোপীগণ রোদন ধানি শুনিয়। ব্যস্ত সমস্ত হইয়া সেই ছানে যশোদার নিকট আসিলেন এবং নন্দতনরকে দেখিতে না পাওয়াতে সম্ভপ্তহিতা তথা অঞ্চপূর্ণমুখী হইয়া আর্কস্বরে রোদন আরম্ভ করিলেন ॥ ২২॥

এদিকে তৃশাবর্ত্ত দানৰ চক্রবায়্র রূপ ধরিয়া জীক্ষ্ণকে হরণ করিয়া লাইয়া যাইতেছিল, ভূত্তিভার লাইরা যাওয়াতে তাহার বেগ নলীভূত হইরা পড়িল, অতএব ক্রইস্টেই বিদ্ধা আইজিন করিল তথাচ তাহার পর যাইতে সমর্থ হইল-না ॥ ২৩ ॥

হে রাজন ! ঐ দানব বিজাতীয় গুরুষ হৈছু ঐ অমৃত বালককৈ পার্বভর্ণা বোৰ করিতেছিল কিন্তু বালক ভাহার গলদেশ গ্রহণ করিলছিলেন ছভরাং সে ভ্যাগ করিতে ইচ্ছা করিলেও ভাহা করিতে সমর্থ হইল না, বরঞ্চ গ্রহণ হেতু অবিলম্মেই চেন্টাশ্ন্য হইল এবং ভাহার চকু বহির্গত হইয়া গলগ্রছণ নিশ্চেটো দৈভাে নির্গতদােচন:। অব্যক্তরাবাে ন্যপতৎ সহ বালাে ব্যক্ত প্রজি। তমস্তরীক্ষাৎ পতিতং শিলায়াং বিশীর্ণ সর্বাবিয়বং করালং। পুরং যথা রুদ্রশারেণ ভিন্নং ব্রিক্সা রুদক্তাে দদৃশুঃ সমেতাঃ॥ ২৪॥ আদায় মাজে প্রতিহাত্য বিশ্বিতাঃ কৃষ্ণক তম্যােরদি লম্মানং॥ ২৫॥ তং স্বতিমন্তং পুরুষাদনীতং বিহায়দা মৃত্যুম্থাৎ প্রস্কুং।

अध्यक्षामी।

তস্যোরসি দখনানং ক্ষণাদার মাত্রে প্রতিষ্ঠ্য সমর্শ্য বিশ্বিতাশ্চ বন্ধৃব্রিভার্থ:॥ ২৫ ॥ বিহারসা গগণমার্গেণ প্রুষাদেন দৈত্যেন নীতং তথাপি মৃত্যুমুখাৎ প্রমুক্তং পুন ল'ক্। মোদং প্রাপুঃ॥ ২৬ ॥

বৈক্ষৰতোষণী।

গল প্রহণেটনৰ নিশ্চেষ্ট:। হস্ত পাদ প্রক্ষেপণাদাবশক্ত ইত্যর্থ:। গল গ্রহণাদেব নির্মতে বহিনিঃসতে লোচনে যস্য সং। কিঞ ন ব্যক্তং কিমুক্তং ইতি বোদ্ধ মশক্যং রাব আর্ত্তনাদো ষস্য সং। সহবালঃ শ্রীক্ষবালগোপাল সহিতঃ। ব্যক্ত মুর্ক্তঃ ব্রক্তমধ্যে নিতরাং পৃষ্ঠতঃ সর্বাহ্মপাত্তমপত্তং। পূর্বং পৃতনারাঃ পাদাদি বিক্ষেপেণ মহার্তনাদেনচ ব্রক্তবাসিনাং মহাভন্মং বৃত্তমাসীৎ তদধুনা মাভূদিতি গলগ্রহ-পেন নভস্যেৰ মারণং অভিএব নভসি গমনার্থং ভূণাবর্ত্তেন স্বস্য হারণমপীতি তবং॥

শিলারাং পশুপদ সম্মর্দ কর্দমান্তরবার্থং গৃহান্তিকে শিলাবন্ধ ভূভাগ এব নস্বন্যস্য কস্যচিত্রপরীত্যর্থ:। অনেন পূত্রনাবং বৃক্ষবর্গ-চূর্ণং পরিশ্বতঃ। অতএব বিশেষতঃ শীর্ণা ভয়াঃ সর্ব্ধে অবয়বা ষদ্য করালং কঠিনতরাক্ষপি। যদা অতএব করালং রৌদ্রং। আকা-শারিক্টেইতয়া পতনে দৃষ্টান্তঃ পূর্মিতি। তক্রাপি বিশীর্ণেত্যাদি যোজ্যং। সমেতাঃ শীর্থশোদা পার্ম মিলিতাঃ। যদা অন্যোন্যং মিলিতাঃ সভ্যো কলন্তাঃ। ক্দত্যো বা সমেতাঃ সর্ব্ধাএব যুগপদদৃশুঃ। যতঃ স্ত্রিয়ঃ স্ত্রীদ্বেন প্রেম কোমল অভাবতঃ মেহ বিশেষেণ গ্রীক্ষণা-সক্রচিত্তা ইক্সর্থঃ। অতএব তাসাং শোকাধিক্যেন শীন্ত্র তদপনোদনার্থং তাসামেবান্তিকে নিপাতনাদানৌ তাঁতিন্তদর্শনং॥ ২৪॥

ভতঃ শ্রীকৃষ্ণ দৃষ্টবতীনাং চেটামাহ প্রদায়েত্যর্জকেন। হত্তমর গৃহীতালগণাত্রসি লখমানং। পূর্কমাবেগন্য বলবস্থাং পশ্চাদেব বিশ্বয়ঃ। দৈত্যোরসি লখমানকেনালভাগাভাদিনা তলাঃ পরম ভাগ্যাহ্লদক্ষানেন্চ বিশিতাঃ। অনস্তর্কী যমুনায়ামেব তচ্ছনীরং বাংগামাহ্ল রিতিজ্ঞেয়ং॥ ২৫॥

ৰন্তিমন্তং সৰ্বাণা কুশলিৰং কবিষৰ্মেবাছ বিহায়দ। পুৰুষাদেন নীতং অতে। হল্মদৃশ্যাগম্ভানে ভক্কেণ নীত্যামৃত্যুত্বাস্য ক্ষমদক্ষ : i

অশ্বস্তমিতি ব লোপশ্ছান্দস: १ २৪। ২৫। ২৬॥

श्रीविधनाशककावर्जी।

গৃহীতঃ তেনৈৰ ৰাল্যলীলয়। অপতন ভয়াদিতি ভাবঃ। অধান্তমিতি বুবোরনাকাবিতিবৰলোপ শ্হান্দসঃ। অখানমিতি পাঠে মতু-বুোপশ্চ। অশাৰ্ণমিতি পাঠে অখাৰ্ণবং শিলা সমুভমিবেতাৰ্থঃ॥ ২৪॥

তভোরদি শ্বমানং কৃষ্ণং আদার মাত্রে প্রতিষ্ক্তা বিশ্বিতা বস্তৃত্য । উরসীতি কৃষ্ণসা বাধাভাবঃ স্টিতঃ । সম্বরস্য স্টপ্রদেশ এব শিলা পতিভরাম ॥ ২৫ ॥

বিহারদা গগণমার্গেণ পুরুষাদেন সমুব্যভক্ষকেণ নীতং অতএব মৃত্যো মুপাদিব মুক্তং ॥ ২৬ 🛔 🕡

আসিল শতএব শব্যক্ত ধান্ত্রি করিতে ২ গতাহা হইনা বালক সহিত অঞ্চমধ্যে পড়িয়া গেল। হে রাজন্। অন্তরীক হইতে শিলাতলে পড়িত হওয়াতে দেই ঘোর দাদবের সমুদায় শব্যব বিশীর্ণ হইয়া গেল। তদনভার অঞ্চারনাগণ রোদন করিতে ২ ফুদ্রবাণে নির্ভিদ্ধ অিপুরাহ্যরের ন্যায় ভিদাস ঐ দৈতাকে বেধিতে পাইল ॥ ২৪ ॥

এবং তাহার বৃদ্ধান্তলে লখিত জীকুফকে দাইরা মাতৃহতে সমর্পণ পূর্বক ঘৎপরোনাত্তি বিস্ময় প্রকাশ করিতে লাগিলেন॥ ২৫ ॥

ভয়য়য় দাদব গগণমার্গে লইয়াগিয়াছিল, তথাপি বালক মৃত্যুমুখ হইতে মৃক্ত হইয়া আসিয়াছেন

গোপ্যশ্চ গোপাঃ কিল নন্দম্থন লক্ষ্য পুনঃ প্রাপুরতীয় মোনং ॥ ২৬॥ অহোবতাত্যভূতমেষ রক্ষ্যা বালো নির্ভিং গমিতোহভাগাৎ পুনঃ।
হিংস্রঃ স্বপাপেন বিহিংসিতঃ খলঃ সাধুঃ সমছেন ভরাৎ অমৃচ্যতে ॥ ২৭॥ কিং ন স্তপশ্চীর্ণমধোক্ষজার্চনং পুর্তেই দত্তং বত ভূতসোহনং।
যৎ সংপরেতঃ পুনরেব বালকো দিট্যা স্ববন্ধু প্রশ্রন্থপক্তিঃ।

धीधत्रचासी ।

পরস্থারং হর্বকথা মাহু: অহোবতেত্তি। নির্ত্তিং গমিজঃ মৃত্যুং প্রাণিজ্ঞ কোহত্ত বিশ্বরো বৃদ্ধাতে এবৈতদিতি তেখেব কেচিদাহঃ হিংস্র ইতি॥ ২৭॥

নোহশাভিন্টীর্ণ ক্তং পূর্ত্তং বাপি ক্পাদি নির্মাণং ইষ্ট্রং পঞ্চয়ায়িহোত্রাদি ছতাং লানং যদবস্থাত্তপ আদেঃ প্রণয়ন্ হর্ষরন

বৈষ্ণবতোৰণী।

তসা হারছেন মুধং প্রাপ্তমণি তত্মাৎ প্রকর্ষেণ ক্ষতাদি রাহিত্যেন মুক্তং উর্করিডমিতি। যথা। বিহারদা প্রকাদেন নীতমিতি অত্যাচপাতাদি সম্ভবাৎ সাকাষ্ট্য মুখমিব প্রাপ্তমণি জন্মাৎ প্রমুক্তং। গোপ্যঃ জীবলোদাদাঃ তাসামাদে নির্দেশস্তাভিঃ প্রাক্ লক্ষাৎ স্বেহবিশেষেণ মোদাধিক্যান্ত। গোপাশ্চ কিল নিশ্চতং তাদৃশং কর্ব। পুনরণি প্তনাদি ভরাপেকুরা কিছা জন্মাপেক্রা প্রজাতমিবেজার্থঃ॥ ২৬॥

এবং জেরাং নির্ম্বরং সেহ বিশেষ এব বাবর্দ্ধত। মচ তির্ঘাতক্মীশ্বর জ্ঞানং বৃত্তমিতান্যোন্যং তেষাং হর্ষবার্তরৈবাহ জহো থতেতি। প্রম বিশ্বরেহত্যন্তহর্বে বা। জত্যন্তমেবাহ্রের ইত্যাদিনা। এব একৈকপ্রাণ রূপণ রূপণ সকুমারোহতিনবং বালং কিঞ্চিদিপি কর্ত্ব মুলক ইত্যর্থং। নির্দ্বিং গমিতোহিপি পুররভাগাৎ জ্পদভিমুথং প্রাপ্তঃ। অতি জ্বতরং যথাস্যাত্তথা বা শত্রোরপি মরণাৎ। নাভ্তং তৈতদিত্যাহং হিংস্প ইত্যি। বিচারহীনং জ্বিখাং থলো বঞ্চকং জ্বতঃ স্বপাপেন বিহিংসিতঃ সাধু হিংসামাত্তাদি দোব রহিতঃ সম্বেনাম্বর্ণ প্রম স্থ ছংখ দশনজেন প্রোন প্রমুচ্চতে প্রমুক্ত ইত্যর্থং। এবং পুনং পুন রূপক্রবেণ ছাইকংসাদিচিন্তান কার্ব্যেতি ভাবং। সাধুরিতি শ্রীনন্দম্দিখোকং গোপ স্থাধারণ বাক্যথাং। যথা হিংস্প ইত্যাদিকমর্থান্তর্ব্যাসেত তক্ত বিহিংস্যত্ত ইত্যর্থং॥ ২৭॥

পুন: প্রহর্ষণাত্মভাগামভিনন্দস্ত শ্বর্টথবাছ: কিমিতি অধোক্ষজস্যার্চনং যন্ত্রান্তদর্পিত্ত্বাৎ তত্তক্তি সাধকমিত্যর্থ:। স বৈ পুংসাং পরো ধর্মো যতো ভক্তিরধোক্ষর ইত্যুক্তে:। তাদৃশং তপ আদি। ত্রুত্র তপ: রুজ্যুদি পূর্বাদিকঞোক্তং। বাপী কৃপ ভড়াগানি দেবতায়-তনানিচ। অন্ন প্রদানমারামা: পূর্বমিত্যভিধীয়তে। অগ্নিহোত্রং তপ: সিদ্ধং বেদানাঞ্চান্থপালনং। আতিথ্যং বৈশ্বদেবঞ্চ ইটমিত্য-

ক্রমসন্দর্ভ:

যুবোরনাকাবিতি জাপকাং। প্রমূচ্যতে প্রমূক ইত্তার্থ:॥॥ ২৭॥ সংধাক্ষক্তীণনার্থং তপ আছি॥ ২৮॥

🕲 বিশ্বনাথচক্রবর্তী।

এবং বালকেংশি মহান্ত্র হস্তু তলক্ষণেনৈশর্যোণ প্রকটোভূতেনাপি তেবাং নন্দাদীনাং বাৎসন্তাং ন জন্ত্রাস প্রত্যুতাবর্ধ ভূবেত্যাহ জাহোবতেতি ত্রিভি:। জন্তুতাদিপি বদভূতং তত্মাদণ্যভূতমেতৎ যদেষ বালো নির্ভিং অমঙ্গল ব্যঞ্জন্তারণ নাশাদি শব্দেন বক্তু মনহাহিদ্দাং প্রাপিতোহিশি অভ্যাগৎ পুন বন্ধে নামভিমুখং প্রাপ্ত:। কোহত্ত বিদ্বারা যুজ্যত এবেতি ভেষেব মধ্যে কেচিলাছ: হিংপ্র ইতি স্থিপানে নিরপরাধ নব বালক হরণলক্ষণেন। সাধু বালকঃ সম্বেদ্ধন বালভাদেব শক্ত মিক্রাদির তুল্য বৃদ্ধিবেন ॥ ২৭ ॥

ঞীনস্বাদরত্ত যদ্যস্য বালভামত্বলমভবিষ্যন্তদা সর্বে বরমরিষ্যামৈবেত্যতো হত্মাক্ষমেবৈত্তত্তর পুতৃত্তক্সমিত্যাহঃ কিমিতি।

এতদর্শনে গ্রেণীদিগের এবং নন্দানি ধ্যোপ সৃকলের পুনরায় অসীম আনুনা ক্রিল । ২৬ ।

উাহার। ছাই হইয়া পরস্পার কড়িতে লাগিলেন, মটো এ অতি আক্রিয়া। এই বালক ঐ ক্লপ ক্লিছর রাক্ষ্য কর্তৃক মৃত্যু হল্তে, হাপিত হইয়াও প্নয়ার মাসিলেন, সেই এল হিংসক নিজ পালেই বিহিং-সিত হইয়াছে, সত্য বটে, সাধুলোক সমন্ব হেতু আপনা হইতেই ভয় হইতে মৃক্ত হন ॥ ২৭॥

মাহাঁ হউক, আমরা কি তপদ্যা কি বিষ্ণুপূজা, কি কৃপ বাপী প্রাকৃতি নির্মাণ জন্ম পূণ্য, কি পঞ্ যজ্ঞ, কি অগ্নিহোত্রাদি যাগ যজ্ঞ, কিয়া দান ধর্ম, করিয়া ছিলাম বলিতে পারি না, যে হেছু সেই সকল তপদ্যাদির প্রভাবে আমাদের এই মৃত বালক ভাগ্য ক্রেই আত্মবন্ধুদিগের আনন্দ বর্ষন পূর্বক দৃষ্ট্যানি বহুশো নন্দগোপো রহদ্বনে। বস্থদেব বচো ভূয়ো মানয়ামাস বিস্মিতঃ। একদার্ভকমাদায় স্বাক্ষমারোপ্য ভাবিনী। প্রস্নুতং পায়য়ামাস স্তনং স্নেহপরিপ্লুতা॥ ২৮॥ পীতপ্রায়স্য জ্বনী স্বত্স্য রুচিরস্মিতং। মুখং লালয়তী রাজন্ জ্ভতো দদৃশে ইদং॥ ২৯॥

शिशतयात्री।

ভূপাবর্ত্তাবগমে দৃষ্ট গৌরবাশন্ধিনীং প্রসং। বোধরন্ দর্শরামাস স্কুষ্ণমাণো মূখে জগং॥ ২৮॥ পীতপ্রায়স্য পীতঃ প্রায় ভনো যেন ভ্রো॥ ২৯॥

देवकवरकावनी।

ভিধীরতে। শরগাগত সংআশং ভূতানাঞ্চাপ্যহিং সনং। বহির্বেদ্যাঞ্চ যদানং তদ্তর ভিধীরত ইতি। যদাধোক্ষস্যার্চন রূপং তপ আদি। তত্র তপ একাদশীব্রতাদি পূর্তাদিকঞ্চ তৎ সেবাক্ষরেন কৃত্যিতি জ্ঞেয়ং। এব সাদৃশ্যে সংপরেত ইব পুনরপি অবন্ধৃন্ প্রণয়ন্ কুর্বন্ অনান্ শীব্যবিতি যাবং। উপস্থিতঃ স্মীপ্যাগতঃ॥

এবং সামাস্থতঃ সর্ব্বেষাং শুভগবতি সেহভূরো দর্শিতঃ বিশেষতশ্চ শ্রীবন্ধবেদ্রসোৎপাত নির্দ্ধারেণ পুনন্তৎ শ্বরাগৌ ব্যবস্কৃততরা-মিত্যাশরেনাই দৃষ্ট্রেত। বছশঃ ইত্যানেনান্যান্য শ্রীভগবত তাদৃশানি চরিতানি হচিতানিচ শ্রীমধুরা লোক প্রসিদ্ধানি শ্রীধরাণ্যচন্ত্র্ম বিপ্রাভিত্তব চাত্রীমরাদীনি শ্রীম্নীক্রেণ রাক্ষো হলাযুট্ট্নামুক্তান্যপি ক্রেয়ানি বৃহ্দন এব নান্যত্ত্রেতি বিশেষ শহানিদানং এবং ব্রজানক্রাৎ পৃথিবীপালনাক্র নুন্দর্গোপ ইতি শ্লেষঃ ॥

ৰজন্তম: স্বভাবং মদ্তামকং শুক্ষানিমং। নিম্নিজান্ ৰিভৰ্মীতি ত্ণাবৰ্তজ্ঞহানপি। অথ পূৰ্ব পূৰ্ব ভয়াৎ পুনরনিষ্টাশক্ষা শুষাজীমিব তাং সাত্মীতুং লীলাশজ্জিবেব তদ্মিন্ কঞ্চিৎ প্ৰভাবং দৰ্শন্তি একদেতাদিনা। আদায় পলাজিকায়াং দ্যানং তং ততো গৃহীবা ভূমৌ ক্ৰীড়স্তং ততো বা বলাদ্গৃহীত্বা ভাবিনী স্বভাবতঃ সম্ভাব যুক্তা বিশেষত স্কাদৃশ পুত্ৰদেহরসেন পরিপ্লুতাত্তং নিম্প্লা সক্তব্যব প্রমুতং প্রকর্ষেণ বস্ত্রাদ্যাজীকরণেন সদা ক্ষরৎস্তনাং॥ ২৮॥

পীতপারভোতি। পীতা গাবো বিভক্তা প্রাতর ইতিবং কর্তার ক্তঃ। ভাবক্তান্তাং পীতং পানং প্রায়মীরদসিদ্ধং বক্তেতি বা। টীকাদতে জনশব্দোপোহতার্থ এব। জননীতি স্কৃতভোতি লেহ ভরং বোধনতি তত্তচ ক্লচির্মিত ইতি প্রমসৌন্দর্যাং অতো লালয়তী ভৃত্তমাণ্ড তলালনং জনিতানন্দতরালভোন ভৃত্তাং কুর্মতঃ স্তঃ মুখে মুখবিবরান্তঃ। দিতীরান্ত পাঠে মুখং লালমতী তদ্বারা জঠরে দদ
লেতি জ্বেং। ক্রংমন্ত চান্ত জঠরে জনভা ইতি ব্রমন্তেং সপ্তমান্তঃ পাঠ এব তেবাং সম্প্রতঃ। অত্যেহপি মুখে দর্শনভ ব্যাধ্যানাদিদ
মন্মাতি বিশ্বত তদেব বিশ্বং ন্রভং তস্য বিগ্রহসাচিন্তাশক্তাঃ বিভ্রামিতি ভাবঃ। অতথব তত্ত বিশ্বত সম্পর্কো নান্তি তত্তকং-

ক্রমসন্ধর্ত:।

পীতেতি। পীতা গাবো বিভক্তা ভ্রাতর ইন্ড্যাদি প্রয়োগ দর্শনাৎ কর্মবি ক্তঃ আগতপ্রার ইতিবং। ইনং যদম্বাতি দৃশ্যিতে তদেব নান্যমিজাচিম্কানক্ষ্যা তন্য বিগ্রহন্য বিভূম্বং দর্শিতং জগহ্দরম্বং প্রলম্বে তদংশাংশন্য গর্ম্ভোদশামিন ইন্ডার্থ:॥ ২৯॥ ৩০ ॥

ত্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

চীর্ণং ক্বতং। পূর্ক্তং বাগ্যারি নির্দেশিং । ইটং পঞ্চয়কাদি। মং যশ্মাৎ তপ আদে:। প্রণয়ন্ কুর্বন্ হজন্ জীবন্নিতি যাবং। প্রণয়ন্ বতঃ কুর্বনিতি বা ॥ ২৮ ॥

পীতঞারন্যেতি। পীতা গাবো বিভক্তা ভাতর ইতিবং'কর্তবি জ:। তদং গীতবংপ্রার্গ্যেতার্থ:। মুখে মুক্তবিবরাত্ত:। বিতীয়াত পাঠে মুখং কালয়তী ক্ষমারা বঠনে মদলৈবিতি জেবং। ত্রুংবস্য চাত্ত র্জঠনে জনন্যা ইতি ক্রমতক্ষে:। ইন্সমন্ত্রণাং বিধনেব তদীয়

পুনরার স্থাসির। উপদ্ধিত ইইলেন। হে রাজন্। গোলরাজ নক এই প্রকার নিজ বাসন্থান বৃহ্বনে বহু বহু সত্ত স্থান করিয়াছিলেন। তদনন্তর এক সময় যশোদা বালককৈ জোড়ে অর্থণ পূর্বক স্বেহু পরিপ্লত হইয়া প্রস্তুত তান পান করাইতে ছিলেন। ২৮॥

শিতর প্রায় তান পান হইয়াছে,জননী দইয়া লালন করিতেছেন, এমত সময়ে ঐ বালক একবার

খং রোদদী জ্যোতিরনীকমাশাঃ দূর্য্যেন্দু বহ্নি খদনামুধীংশ্চ।
দ্বীপায়গাং স্তদুহিতু ব্নানি ভূতানি যানি স্থিরজঙ্গমানি।

সা বীক্ষ্য বিশ্বং সহসা রাজন্ সংজাত বেপথুং। নিমীল্য মুগশাবাক্ষী নেত্রে আসীৎ স্থবিশ্বিতা ॥৩০ ॥ * ॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং দশমস্বন্ধে শকট-ভপ্তান তৃণাবর্ত্তবধো নাম সপ্তমোহধ্যায়ঃ ॥ * ॥ ৭ ॥ * ॥

वीधवयामी।

নগান্ গিরীন্ তদুহিভূ ন দী:॥ ৩० ॥

॥ * ॥ ইতি দশমে সপ্তমः॥ *॥

देवस्थवट जायगा।

শ্রীভগবহপনিবংস্থ। ময়া তত মিদং সর্বাং অবগদব্যক্ত মৃর্তিনা। মং স্থানি সর্বা ভূতানি নচাহং তেম্বস্থিতঃ। নচ মংস্থানি ভূতানি পশ্র মে যোগমৈশ্বরং ইতি। জগহদরত্বত্ব তদংশাংশ গর্ভোদকশায়িন এব তচ্চ প্রদয়কালে স্ক্ষতদ্বৈবৈতি ॥ ২৯॥

ইদন্তাপরাম্ট্রমেবাহ থমিতি। অন্তরীক্ষা রোদদী দিবং ভূমিঞ্চ এবং ভূবঃ স্ব ভূ রিতি লোকত্রয়ং॥

বীকা দাকাদ্ই।। সহসাহক্ষাক্ষ্পণচেত্যমর: বিশ্বনেশ্য জগদেব ইতাছক্তমণি তৎ কারণাদিকং সংগৃহীতং জ্জাতো পুনর্বিশ্ব দর্শনে বৈকারিকানীত্যাদিনা ব্যঞ্জিতবাং। সংজাত বেপথং প্রমান্ত্তকেন উংপাত শব্দা বা। নেত্রে সংমীল্য তদদর্শনার নিজাক্ষণী মুদ্রিদ্বানেন নিজাভ্যাং বহির্নেরাভ্যামেবৈকদৈব তদর্শনং বোধিতং। নচ দিব্য দৃষ্ট্যাদি প্রাপ্তিঃ প্রত্যুত ততঃ শ্রীক্ষপ্রেমানন্দ লক্ষ্যা এব দাসীরমানা কাচিদিয়মপি শক্তি ওল্যাং বর্ত্ত ইতি লক্ষ্যতে নেত্র নিমীলনাদনাদ্ভিত্যব সেতি তর্ক্যতে। তছক্তং নারদ পঞ্চরাত্রে। হরিভক্তি মহাদেব্যাং সর্বা মুক্ত্যাদি সিদ্ধয়ং। ভ্করণভাব্ততা ক্তা ভেটিকাবদহ্বতা ইতি। তথাপি তদানীমন্ত্ত্যাত্তাদ্শ লীলোদয়াবসরে ক্লান্যমেব ফলয়ন্ত্রী বিশ্বর দারা তামাজ্যেশ্বরী মুল্লাসন্ত্রিদ্ব মহ্বর্তত ইতি চ গম্যতে। মুগশাবাক্ষীতি মুনে শ্রীক্রম্ব বাংসন্যময় বিশ্বর শোভা বিশেষ বিরোচমান তন্মাত্তাচন সহজ্ব সৌন্ধ্য ক্রণোলাসম্যাং বচনং॥ ৩০॥

॥ * ॥ रेंकि जीत्रिकवटलावन्ताः मन्म विश्वकाः मश्चरमारशाग्रः ॥ * ॥

क्रमननर्जः।

॥ 🛊 ॥ ইতি জীদশমে শ্রীজীবগোস্বামি কৃত ক্রমদল্রে সপ্তম: সমাপ্তঃ ॥ 🛊 ॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

বিগ্রহস্য মাতৃক্রোড়গতস্যাপ্যচিত্ত্যশক্ত্যা বিভূজেন সর্ব্ব জগদ্ধিষ্ঠানতাং। জ্প্তিত ইতি জ্প্তণেচিত ক্ষণেপি স্বিশেষ সর্ব্ব বিখ-দুর্শনমচিত্ত্যশক্তিয়েব নিশাদিতং॥ ২৯॥

নগান্ বীপাথ্যাকরান্ অম্বাদি বৃক্ষান্ পর্বতাংশ্চ তদ্ হিতৃ ন দী:॥

সংসা অকলাং যুপ্পচ্চ। সংজাত বেপথুকংপাত শহর। সংমীল্যেতি শ্রীবিকুধাানার্থং ভগবরারায়ণ রক্ষ রক্ষ মংস্থতমন্মাছৎপাত থাদিতি বিত্রন্ত দৃষ্টিছাৎ মৃগশাবাকী। প্তনাদি বধৈষর্যাং ন প্রেম সমচ্কুচৎ। প্রত্যতাবর্দ্ধন্ত শ্রিরিষ্ট প্রতিশহরা। নক্ষভাগ্যাদি হেত্নাং তত্রাভূদ্যদি কর্মনং। তত্তো নির্হেত্রেবেয়নৈখরী শক্তিরাগতা। বিভূত্ব দর্শিকা ক্ষদেহেল্য ক্ষ্টমেবহি! তথাপি বিশ্বিত বাসীমংপ্র্ন্যোদমদ্য কিং। নক্ষ্ণাজ্ঞান সন্ত্রান্তা বাৎসল্যে শিথিলাভবং। নচাত্র সন্তবেৎ কিঞ্চিৎ পূর্ববিদ্ধেত্ব কর্মনং। তচ্চাপি বস্ততো গাঢ়প্রেমোশির্মায়মেব হি। ইতি নিক্ষ্পতা প্রেম: খ্যাপিতা স্যান্ত্র্ত্র। এবঞ্। প্রেমদেব্যা পরীক্ষার্থমাগচ্ছন্তরাভরা। শক্তিবেষা হরেঃ কিন্ত ত্রা দালীক্ষতা ভূবেদিতি॥ ৩০॥

॥ *॥ दें ि नातार्थनर्निनार इविनार छङ्गाठिनाः। जनाय नशुरुधानः नम्राहः नम्राहः नम्राहः ना

জ্ঞা ত্যাগ করাতে তাঁহার মনোহর হাস্য যুক্তু আস্য মধ্যে যশোদা নেইবিতে পাইলেন ॥ ২৯ ॥
আকাশ, বর্গ, মর্ত্তালোক, জ্যোতিশ্চকে, দিক্, সূর্য্য, চন্দ্র, আমি, বায়ু, ছীপ, পর্বত; নদী, অরণ্য
এবং স্থাবর, জঙ্গম ও সম্দায় ভূত দেদীপামান। হে রাজন্। পুর্ক্তের বদনইন্যে এ প্রকার বিশ্ব নিরীক্ষণ
করিয়া ভয়ে যশোদার হংকম্প উপস্থিত হইল, নেত্তেষয় নিমীলন করিয়া ক্ষণকাল যংপরোনান্তি
বিশ্বিতা ইইয়া রহিলেন ॥ ৩০ ॥
॥ ॥ ইতি দশমে সওম ॥ ॥ ॥

বাদরায়ণিরুবাচা

গর্গ: পুরোহিতো রাজন্ যদ্নাং স্বমহাতপা:। ব্রজং জগাম নন্দস্য বস্থদেব প্রচোদিত:। তং দৃষ্ট্রা পরমপ্রীত: প্রত্যুপার কৃতাঞ্জলি:। আনর্জাধোকজধিয়া প্রণিপাত পুরঃসরং। স্পবিষ্ঠং কৃতাতিথ্যং গিরা সূন্তয়া মুনিং। নন্দয়িছা-ব্রবীদুক্ষন্ পূর্ণস্য করবাম কিং॥ >॥ মহিছিচলনং নূণাং গৃহিণাং দীনচেতসাং। নিঃপ্রেয়সায় ভগবন্কয়তে নান্থা কচিং॥ ২॥

अध्वयामी।

শ্বষ্টিমে নান কর্মাণ্য বালক্রীড়া কুতৃহলে। মৃত্তকণাভিষোগেচ বিশ্বরূপং নিরূপ্যতে। বিশ্বরূপাদি বালণ্য নিশ্ম্যাশন্ধিন: পিতৃং। নামরুল্ গর্গবাকোন নিজ্ঞত্বমস্ফুচং ॥ ১ ॥

পূর্ণশেচৎ কথং ধনিনাং গৃহমাগতঃ তত্রাই মহদ্বিচলনমিতি। মহতাং স্বাশ্রমাদনাত্র বিচলনং ন স্বার্থং কিন্তু গৃহিণাং মঞ্চলায়। নমু

देवकवरजावनी।

এবনৈ ব্যা সম্বলিতঃ বাল্য চরিতমন্ত্রমারণ প্রস্তাকন শীলী স্তর ব্যস্তরিতমপ্যক্ত্র। পুন: পরার্ত্য কেরলং বাল্য স্বাভাবিকং পরম মনোহরং যথাক্রমং কথরদ্বাদৌ দিগবি শিব শতাহে ইতি জ্যোভি:শাজাভিপ্রারেণ প্রার: শততম দিনে নাম করণমাহ গর্গ ইত্যাদিনা জন। ইত্যান্তেন হে রাজ্মিতি পূর্ব্ব শীলা প্রবণ স্থাবিষ্ঠং রাজানং কথান্তরে হবধাপরতি স্মহাতপাঃ জনীর্বাচনিয় ভাগ্যবান্ যেন শ্রীবন্ধ-দেবস্য শ্রীনন্দ্য প্রীক্ষান্য হৈবং পরমাশ্বীয়তাং প্রাপ্ত ইতি ভাবঃ ॥

আনর্জ নন্দ ইতি শেষঃ অধোকজুমিয়া পরমেশ্বর ইব ভক্তোত্যর্থঃ। স্পবিষ্টং পাদ প্রকালনাদিনা পথি শ্রমাপনোদনেন সদা-সনে স্থোপবিষ্টং কৃতং আভিষ্যঃ মধুপর্কাদ্যর্পণ লক্ষণং যদ্য তং স্তন্ত্রা মধুর তোত্ত ক্রপরা মুনিং নন্দাভিপ্রেত শ্রবণায় প্রাক্ত্রত মৌন মিড্যর্থঃ পূর্ণস্ত শ্রীভগবস্তক্তা দিদ্ধ সর্বার্থস্য তত্ত্ব দ্বন্ হে সর্ববেদার্থ জ্ঞানেন বৃহত্তম। ভগবান্ ব্রদ্ধ কার্থস্যাদিনা বেইদিলা বেইদিলা বেইদিলা বেইদিলা বেইদিলা বেইদিলা বেইদিলা বেইদিলা বিষ্টি বিয়ালিনাচ তন্তকাবের তৎপর্যাবদানাথে ॥ ১ ॥

মহতাং শ্ৰীভগৰৎ সেবাদি নিষ্ঠমাৰিশেষেণ চলনং স্বস্থানাদন্যত্ত দূরে গমনং নুণামিতি স্বভাৰতঃ ঐতিক পারলোকিক কর্ম প্রাণা-

ু ক্রম্মন্দর্ভঃ i

অধোকদ্বধিয়া তদধিষ্ঠানত্বেনাডেদ দুই্ট্যা॥১॥২॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

●অষ্টমে নামকরণং রিঙ্গণং গব্যমোষণং। মৃত্তকণং বিশ্বরূপ দর্শনঞ্চ নিগদ্যতে॥০॥

অস্ত্রবধ প্রসন্থ স্কু সন্ধত্যের তৃণাবর্ত্ত্বধ মৃক্ত্র। তৎপ্রাচীনানি নামকরণাদীনি চরিতানামুম্বত্য বক্তু মৃপক্রমতে। গর্গঃ পুরোহিত

পূর্ণস্থ তব কিং করবাম অপি তুন কিমপি কর্ত্মহর্ণাম ইত্যর্থো বা। কিং শব্দস্য প্রস্লার্থবাৎ পূর্ণস্থ তব কিং অপেক্ষিতং বর্ততে তপ্ জেহি বরং করবামেতার্থো বা। আদ্যে মম অন্যূহাগমনস্য বৈর্থাং। দ্বিতীয়ে পূর্ণহস্যেতি চেন্মৈবমূভরত্রাপ্যভরং ন ব্যর্থং প্রজ্যতাভিনন্দনীরখাৎ পরম সার্থকং ক্লপাপারবন্দ্যাৎ সনৎক্ষার বামনাদীনাং পরম পূর্ণানামপি পূথু বলি প্রভৃতি গৃহাগমনস্য দৃষ্টবাদিত্যাহ

শ্বেষ্টমাধ্যায়ে **শ্রীকৃষ্ণের** নামকরণ এবং বাল্যক্রীড়া কুভূহলে তথা মুদ্তক্ষণাভিযোগে বিশ্বরূপ নিরূপণ বর্ণিত হুইতেছে॥ •॥

শুক্তি করিব প্রেরিত হইয়া নন্দমন্দিরে গমন করিলেন। তাঁহাকে দর্শন করিয়া নন্দের পরম প্রীতি জন্মিল, কৃতাঞ্চলি হইয়া প্রেছ্যুখানু করিলেন, পুরে বিষ্ণু বৃদ্ধিতে প্রণিপাত পুরঃসর যথাবিধি সর্কনা করিলেন, মুনি আতিবাঁ আছুণ পূর্বক স্থাসীন হৈলে সুন্ত বাক্য দারা আনন্দিত করত নন্দ বলিতে লাগিলেন জন্মন্থ আপনি পরিপূর্ণ স্বরূপ, আমি আপনকার কি করিব १॥ ১॥

হে ভগৰন ! মহান ব্যক্তিগণ স্থীয় আশ্রেম হইতে যে অন্যত্ত গমন করেন তাহা তাঁহাদিগের সার্থ নিমিত্ত নহে, গৃহিদিগেরই মঙ্গলার্থ, গৃহি ব্যক্তিরা অতিশয় রূপণ, ক্ষণকালের নিমিত্ত গৃহ পরিত্যাগ জ্যোতিষাময়নং দাক্ষাদয়তজ্ জ্ঞানমতীব্দিয়ং। প্রণীতং ভবতা যেন পুর্মান্ বেদ পরাববং॥ ৩॥

विधतवायी।

তহি তিএব মহদ্দৰ্শনাৰ্থং কিমিতি নাগছন্তি ভতাৰ দীনচেভসাং স্কুণণাদাং ক্ৰুদ্দি গৃহং ত্যক্ত কুং অশকু বভাষিতাৰ্থ:॥

ত্বা বালয়োর্নীম করণাদি করণীরমিতি বক্তু তস্য জ্ঞানাতিশরমাহ জ্যোতিবামরনমিতি। যদজীব্রির জ্ঞানসাধনং জ্যোতিবামরনং তং প্রতিপাদকং জ্যোতিশোল্রমিত্যর্থ:। ত্রুং সাক্ষাৎ তবতা প্রণীতং বেনান্যোহিপি প্রান্ পরাবরং পরং কারণং পূর্বজন্মকৃতং কর্ম অবরং কার্যাং অন্মিন্ জ্ঞানি তাবি ফলং তবেদ। উক্তঞ্চ জ্ঞাত্তকে যত্পচিত্রমন্য জ্মানি ওভাগুড়ং তস্য কর্মণঃ প্রাপ্তিং দর্শরতি শাস্ত্রন্থের স্বর্যাণি দীপ ইবেতি ॥ ৩॥

বৈষ্ণবজোষণী।

মিতার্থ: তত্রাপি গৃহিণাং জায়া পুরাদীনামপি তত্তদিত ব্যগ্রাণাং অতএব দীনচেতসাং নিঃশ্রেষ্পায় সর্ব্ধ মঞ্চায় ভগবন্ হে সর্বজ্ঞ ইতার্থ: প্রবৃত্তিফেদিত্যাদি বচনাৎ। অতো বিজ্ঞানাং ভবিষধানামজ্ঞেরু মধিধেরু ক্লপরা স্বয়মাগ্রনমূচিত্রমেরেভি ভাব:। ক্যতে ঘটতে। অন্যথা দীনজ্বন নিংশ্রেষ্পার্থ ব্যতিরেকেগ ক্লাচিদ্পি ন ঘটতে মহতাং নিংশ্রেষ্প: স্বাভাব্যাৎ ॥ ২ ॥

জ্যোতিৰাং গ্ৰহাণাং। অন্নমিতি করণে নাট্। অন্নতের্গতার্থতরা জ্ঞানার্থনাৎ করণস্যাপি হেতুরাৎ তৎ প্রতিপান্ধকমিন্ত্যবার্থ: তচ্চ প্রণীতমিত্যুক্তা জ্যোতিংশাল্পমিত্যেব পর্যাবসীয়তে। কীদৃশং তৎ জ্ঞানং জ্ঞানান্তরস্যাপি সাধনং তথা অভীন্তিরং ইন্তিরাগোচর জ্ঞান জনকথান্তদিত্যান্তঃ। তদেবং বিশেষণদ্বস্থাতীন্তির জ্ঞানসাধনমিত্যেব নির্গলিতো হর্থ:। যদা ক্রনং জ্ঞানসাধনং শাল্ত-মিত্যর্থ: যদ্যমাজ্ঞবদাদির বিধ্যাতমতীন্তিরং জ্ঞানং স্যাৎ ইতি পরং পূর্ব জন্ম রন্তং অবরং এতুজ্জন্ম ভাবি কলং তৎ বেদেতি বালয়োত্তত্ত্বেতা কথনীরমিতি ভাব:। তত্ত্ব পূর্ব জন্মবৃত্ত জ্ঞানাত্ব পূর্বজ্ঞানি গুভাদান্তরিপ গুভং ভাবীত্যভিপ্রারেণ অতএবাত্তে শ্রভগ্রন্ত ক্রথনং। পুমান্ যা কণ্ডিৎ পুরুষ ইতি ভচ্ছাল্লন্ত স্থামন্বাদি গুণ উক্তঃ॥ ৩॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

জ্যোতিবাং গ্রহাণাং। অত্রায়নমিতি করণে লুট্। অয়তের্গতার্থতয়া জ্ঞানার্থছাৎ। করণন্যাপি হেতুছাৎ তৎপ্রতিপাদকমিত্যেবার্থ:। তচ্চ প্রণীতমিত্যক্ত্যা জ্যোতি: শাস্ত্রমিত্যের পর্য্যবদীয়তে। কীদৃশং তৎজ্ঞানং তৎসাধনং। অতীক্রিয়ং ইন্সিয়াগোচর জ্ঞানজনকত্বাতদতিক্রান্তঞ্চ। তদেব বিশেষণদ্বস্য অতীক্রিয় জ্ঞানসাধনমিত্যের নির্গলিতাহর্থ:॥৩॥

बैविश्वनाथहळावर्डी।

মহতাং স্বাশ্রমাদন্যত্র বিচলনং গৃহিণাং নিংশ্রেরসায় পরম মললায় করতে সমর্থং ভবতি তদেব তেবামপেক্ষিতম্পীত্যর্থ: নূণানিতি গৃহিলপি মধ্যে নূণানেব নতু দেবাদীনাং এবং মৃছপি মধ্যে গৃহিণামেব নতু ব্রহ্মচার্যাদীনাং। তত্রাপি দীনং তৃণাদিপি মুর্ভগন্মনাং চেতো বেধামিতি তেবেব মহৎ কুপাধিকাসন্তবাৎ নতুত্তমন্মন্য কঠোর বক্রচেত্সামিতার্থ:॥ ২॥

বালক্ষয় নামক্রপার্থং প্রার্থনা বীক্সং স্বজনাহ। জ্যোতিষাং গ্রহাদীনাং অয়নং জ্ঞাপকং জ্যোতিঃশান্ত্রং যদ্যতঃ অতীক্রিয়ং স্থানং ভবেত্তম্বতা জ্ঞান্নত ইতি ক্সিং বক্তব্যং দ্বনা প্রদীতং ক্বতং যেনান্যোহপি পুমান্ পরমুত্তরকাল ভাবি বন্ধ অপরং পূর্ককাল ভূতঃ রন্ধ বেদ জানাতি তেন বার্দ্ধকে মম জ্ঞাতস্য পুত্রস্য জন্ম লগ্নাদিকং বিচার্য্য হত্তপাদাদি লক্ষণঞ্চ দৃষ্ট্য জ্ঞাক্তদাদিকং কথনীরমিতি ভাবঃ॥ ৩॥

করিতে পারে না, মহাপুরুষেরা দয়া করিয়া বয়ং তাহাদের গৃহে আসিয়া দর্শন দেন। প্রভা !
মহাত্মাদিগের গৃহত্ব ভবনে আগমনের কারণ এতদ্বতীত অন্য ক্রেইকারই করিত হইতে পারে
না॥ ২.॥

হে ত্রস্থান্ । অতীন্ত্রিয় জ্ঞান সাধন ধে প্রসিদ্ধ জ্যোতিংশান্ত্র; তদ্বারা একণে জন্য পুরুষের অর্থাৎ পূর্ব্ব জনাকৃত কর্ম এবং অবর কার্য্য অর্থাৎ ইহ জন্মে ভাবি ফল অবগত হওয়া যাইতেছে, ভাহা সাক্ষাৎ আপনা কর্ত্ব প্রণীত হইয়াছে॥ ৩॥

ছং হি ব্রহ্মবিদাং শ্রেষ্ঠঃ সংক্ষারান্ কর্ত্তুমর্সনি। বালয়োরনয়োনু গাং জন্মনা ব্রাহ্মণো গুরুঃ ॥৪॥ গর্ফ উবাচ॥

যদুনামহমাচার্য্যঃ খ্যাতশ্চ ভুবি সর্বতঃ। হৃতং ময়া মংস্কৃতং তে মন্যতে দেবকীস্তৃতং॥ ৫॥ কংসঃ পাপমতিঃ স্থাং তব চানকছ্নুভেঃ। দেবক্যা অন্ট্রাে গর্ত্তো ন জ্রীভবিতুমহ্ তি।

গ্রীধরস্বামী

বিবিক্তিমাই স্থ হীতি। দৈবজ্ঞা মন্ত্রিচচ স্থ অতো নামকরণাদি সংস্থান্ কর্মহ সীত্যর্থ:। ন্যেতদগুরুণা করণীয়ং ততাহ নুণামিতি॥ ৪॥

সভাৎসাহিনং নন্দং প্রতি গুপ্তমেতং কার্য্যমিত্যভিপ্রায়েণ প্রত্যাচক্ষাণ ইবাহ যদুনা মিতি। ওবতু তথাপি স্বত্রাগত ইতি কো বিদ্যাদিতি চেদত স্বাহ থ্যাত ইতি। ততঃ কিমত স্বাহ স্থতমিতি কংসোমন্যতে মন্যেত কল্পদেত্যর্থঃ ॥ ৫ ॥

নত্ন যহকুমার ইতি কথঞিজ্ঞানাতু ভত্রচ বস্থদেবস্য পুত্র স্তত্তাপি দেবক্যাং জাত ইতি কুতো জানীয়াৎ তত্তাহ পাপ্মতিরিত্যাদি।

देवसः वटकावना ।

হি যতে। ব্ৰহ্মবিদাং শ্ৰেষ্ঠো, মহাভাগৰতোত্তমভাং অতএব সংস্কারান্ জাতাহরপান্ জন্মনা জাত্যৈৰ কিং পুন জ্ঞানাদিনা ইতাৰ্থ: ॥ ৪ ॥

যদ্নামিতি ত্রিকং। মর্কাতঃ সর্কাস্যাং পাপমতি ছ'প্তবৃদ্ধিঃ। অপি হস্তা ইতি সম্ভাষনার্থস্যাপি শব্দস্থ ঘদীত্যর্থঃ হস্তা দেবুকীপুজাদিহনন-শীলঃ কংসো যদি প্রাপ্তাশতঃ স্থান্তর্হি সংস্কার কর্মান্দাকং মহানেবানয়ে হিস্তায় রূপঃ স্থাদিত্যর্থঃ। টীকায়ান্ত হস্তা গল্ভা তদা সদ্য এবেতি ব্যাধ্যেরং॥ ৫॥

তব্যেদং জ্বেরং বিবিক্তে নামকরণ দিৎসরা ভরমুৎপাদয়তি। বস্তুতস্ত গত্যথান্ধন ধাতো গাঁমনেন প্রাক্ষ্যতি আয়াস্যতীত্যথা। অপী-ত্যেব পাঠো যুক্তা। যান্য বিবিক্তে নামকরণ দিৎসরা ভরমুৎপাদয়তি। বস্তুতস্থ কিন্তুত্ব বিভাক্তা প্রত্যুতানকর্মুতি সম্বন্ধ শঙ্কাপযা-ক্রমসন্দর্ভা।

জন্মনা জাতৈয়ব ॥ ৪ ॥ ৫ ॥

শ্রীবিশনাথচক্রবর্তী।

কিঞ্চ এতাদৃশ মহামুভাবস্যাপি তব মদপৃহাগমনং মন্ত্রিপ্রেরদায়েব তচ্চ মম নি:শ্রেরদ মৈহিকং পারলৌকিকঞ্চ ততৈত্বিং নি:শ্রেরদমদা নিশাদ্যমেকং অচ্চরণেষ্ নিবেদরামি ক্রপন্না দৃণি ত্যাষ্ট অমিতি। ন কেবলং জ্যোতির্বিদামেব তং শ্রেষ্ঠ ইতি ভাবং। তেনোভন্ন গুণবৃক্তত্বাস্থান্মেব দৈবজ্ঞা মন্ত্রিচ কর্ত্ত্মহ্পীতার্থং। নমু তদগুণাকরণীয়মিতি চেন্ততাহ নৃণামিতি। ৪॥

স্বরং বিভাদতাৎসাহিনং নন্দঞ্চ কংসাতীধমাণঃ স্থপ্তমেইবতং কার্য়েত্যভিপ্রায়েণ প্রত্যাচকাণ ইবাহ যদ্নামিতি। তব যত্ত্যেৎপি ক্ষত্রিস্থাভাবার যত্ত্যগাতিঃ। স্থাহত যত্পুরোহিতত্ত্বন গাতঃ মংকুত্যমিদং ন গুপ্তং স্থাস্যভীতি ভাবঃ॥ ৫॥

দর্শক: দর্শন্যাং মন্যতে মংস্যতে নবেতাবং কোহস্থসদাস্যতে তত্রাহ কংসন্তদ্পি দ্বিত্ব বন্ধাদিনি সোহপি ন দ্রোহ মাচরিষ্যতীতি চেদত আহ পাপমতি:। মাদৃশান্ জিঘাংসত্যেবেতি ভাবং। কিঞ্চ ত্বাপাবশা নপকরিষ্যত্যেবেত্যাহ স্থামিতি। বন্ধদেবদ্রোহিণ:

অপর, আপনি ব্রহ্মবেতাদিগের মধ্যে শ্রেষ্ঠ, ইহাতে আপনি দৈবজ্ঞ ও মন্ত্রবিৎ, অতএব এই চুইটা বালকের সংস্কার সকল করিতে যোগ্য হয়েন। ব্রহ্মন্ । রাহ্মণজাতি জন্ম ধারা মানব মাত্রের গুরু, আপনি সংস্কার করিলে তাহা গুরুক্ত হইবে॥৪॥

গর্গের মানস গোপনে সংক্ষার করেন, অতএব নন্দের অত্যর্থ উৎসাহ দর্শনে প্রত্যাখ্যান তুল্য বচনে কহিলেন নন্দ। আমি যদুদিগের আচার্য্য বলিয়া পৃথিবৃত্তি মধ্যে সর্ব্বতে বিখ্যাত, আমি যদি তোমার পুত্রের সংক্ষার করি, লোকে এই পুত্রকে দেবকীপুত্র জ্ঞান করিবে॥ ৫॥

যদি বল, আপনি ষত্দিগের আচার্য়া, আপনি সংস্কার করিলে লোকে না হল্ন আমার পুত্রকে যতু-কুমার বলিয়া আনিবে, বহুদেবেল পুত্র দেবকীগর্ম্ভে জ্মিয়াছেন ইহা প্রকাশ হইবার সম্ভাবনা কি? তাহাতেও বক্তব্য এই, তুরাত্মা কংস পাপমতি, তোমারও বহুদেবের সহিত সথ্য আছে অধিকস্ত ইতি সঞ্চিত্তার্থ ক্রের দেবকীদারিকাবচঃ। অপি হন্তাগতাশঙ্ক স্তহি ত্রোহনয়ো মহান্॥ ৬॥ জ্ঞীনন্দ উবাচ॥

অনক্ষিতোহস্মিনুহদি মামকৈরপি গোব্রজে। কুরু দিজাতিসংস্কারং স্বস্তিবাচনপূর্বকং। শ্রীশুক উবাচ॥

এবং সংপ্রার্থিতো বিপ্রঃ স্বৃচিকীর্ষিত্মের তৎ। চকার নামকরণং গুঢ়ো রহসি বালয়োঃ।

क्षिथवश्रामौ ।

কিং ময়। হত্যা নন্দেত্যাদি দেবকীকন্যাবচঃ শ্রুষা দেবক্যা অষ্টমো গর্ভো নস্ত্রীভবিতৃ মহ্তীতিচ নিতাং সঞ্চিত্ত্রন্ সামান্যেন কচিদ্ত্রীত জ্ঞাষা যুবরোশ্চ স্থাং সঞ্চিত্ত্রন্ জ্ঞাহ ভবেদিতি সংভাব্য মৎসংস্কার লিঙ্গেন চাগতাশঙ্কঃ আগতা আশঙ্কা বন্য সং । অপি যদি হস্তা হনিষ্যতি তর্হি তরো মহান্ অনয়ঃ স্যাং ॥ ৬॥

দ্বিজ্ঞাতি সংস্থারং দ্বিজ্ঞাতীনাং অবশ্যক্তব্যং সংস্থাবমাত্রং কেবলং স্বস্তিবাচন পূর্ব্বকং কুরু॥ १॥

বৈষ্ণ বতোষণী।

ত্যেব তথা তাদৃশ বন্ধস্য পুত্র সঞ্চারে সথ্যমপ্সকিঞ্চিৎকরং স্যাৎ তথাপি পাপমতিস্থাৎ তুর্মন্ত প্রবীণ্ডেন ইদমাশক্ষিয়ত এবেতি ভাবঃ মছক্রেবেব অসৌ অস্ত পুত্রতরা জাতঃ কিন্তবৈত্ব শিক্ষয়া দারিকার্মানো মাং ছলয়ন্ নন্দগৃহং প্রবিষ্ট ইতি ॥ ৬ ॥

গোরজ ইতি স্থান সংখ্যারানপেকাচ দর্শিতা রহসীতি দিনে গ্রাং স্পালানাং বনে গ্যনাং। বিজ্ঞাতিসংস্থারং ব্যাবং কর বৈজ্ঞাত্ব রূপ নামকরণ লুক্ষাং। পুণাহ বাতি ঋদ্য ব্রি ক্রিক্তা। স্বান্তিবাচনং জাং। স্বন্তিবাচন মন্ত্রাণাং পঠনক স্বন্তিরাচনং। যথা পুনন্ত মা দেবজনাঃ পুনন্ত মনসা ধিয়ং। পুনন্ত বিশ্বাভূতানি জাতবেদঃ পুনীহি মাং ইত্যাদি মন্ত্রাঃ। তক্ত সর্কাকশ্বাবিশ্বকং ন বহিলোক বেদ্যক সতঃ কেবলং তং পূর্কাকং॥

তৰু জ জনৈরপালক্ষিতত্যা রহিদি তাদৃশ দংস্কার মাত্র করণং অন্ত কর্ত্ত্বিষ্টমের। নরু শ্রীভগবদৈশব্যাভিজ্ঞেন তেন কৃতত্তৎ ক্রতৌ সঙ্কোচো ন ক্বতঃ তত্রাহ বালয়ে। রিভি লোকহিতার্থং স্বভক্ত প্রনোদার্থং চ প্রকটিত বাল্যলীলয়ে। স্তয়ো স্তদম্রপা লীলা তদীদৈশব্য জ্ঞানিনামপি মোহিনীতি ভাবঃ। তত্র রহঃস্থানে বালকধ্যানয়ন তদর্শনত্ত গর্গানক শুভাশীর্মাদাদিবর্ণনমূহং॥

क्रगमन्दर्धः।

অপীতি সম্ভাবনাৰ্থভান্যদূীত্যৰ্থ:। হস্তেতি শীলে চূন্। হিংসাশীলঃ কংসো যদি প্ৰাপ্তশক্ষো ভবতীত্যৰ্থ:॥ ७॥ १॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবন্তী।

কংসস্য বস্থদেব সথে ঘ্যাপি জোহ সম্ভবাদিতি ভাব:। তাঁত্ৰেবং কুযুক্তিং ক্ৰম্য তীত্যাহ দেবক্যা ইতি দেবকীদারিকাবচ: ক্ৰমা অইনো গৰ্মেন নাজ নাজ কৰিছিল কৰিছেল কৰিছিল কৰিছি

ভাগ্যবশাদের মাল্ ইমারাভমীলুশমাচার্য্য: কলা প্নরহং লপ্যে তথালাদিআহাৎসবাদং দিনান্তরে সবিকারং করিবো সাম্প্রভ্যমণ কেবলং শাস্ত্রীয়মাবশ্যকং করুকেবৈতৃদ্বান্ধ কার্নামীতি মনলি বিভাব্যাহ অলক্ষিত ইতি। মামকৈ প্রান্তাদিভিরণি গো বজে ইতি "দেকীর অফ্রম গর্ন্তে ব্রী হুইতে পারে না " ইত্যাদি যে বাক্য দেবকীর কন্যা কহিয়া যান, কংস তাহাই সর্বাদা চিন্তা করিয়া থাকে, অতএব দেবকীর অফ্রমগর্ভের সন্তান কোথাও আছেন, ইহা নিশ্চয় করিয়া এবং তোমাদের উভয়ের স্থা দেখিয়া আমার কৃত সংস্কারকে চিহ্ল করত আশক্ষার কংস যদি মারিয়া ফেলে, তাহা হুইলে তোমাদের মহানুশ্বনয় অর্থাৎ অশুভ হুইবে ?॥ ৬॥

নন্দ কহিলেন, ত্রন্ধন্ ! এই ত্রন্ধপুর অতি নির্জন স্থান, এখানে কংসের কোন লোক নাই, আমার লোকেরাও আপনাকে দেখিতে পাইবে না, অলক্ষিত হইরা কেবল স্বস্তি বাচন করিয়া বালকের দ্বিজাতি সংস্কার অর্থাৎ দ্বিজাতিদিণের অবশ্যকর্ত্তকা সংস্কার্য্যাত্র করিয়া দিতে আজ্ঞা হউক।

.শুকদেব কছিলেন দ্বিজ্বর গর্গ এই প্রকার প্রার্থিত হওয়াতে সেই ছুই শিশুর নাম করণাদি সংস্কার,

অয়ং বৈ রোহিণীপুজো রময়ন্ স্কদো গুণৈঃ। আখ্যাস্যতে রাম ইতি বলাধিক্যাদ্বলং বিছুঃ॥৭॥ যন্নামপৃথগ্ভাবাৎ সক্ষণমুশত্যপি॥৮॥

আসন্ বর্ণাক্রয়ে। হুদ্রে হুকুরু হুকুর তনুঃ। শুকো রক্তন্তথা পীত ইদানীং কুঞ্তাং গতঃ ॥৯॥

वीधतवागी।

যদ্নানপৃথগ্ ভাবাং কু তশ্চিকেতো বিপ্রতিপদানানাং যদ্নানপৃথগ্ ভাবাং ভাবেন তামাং অন্যোন্য শিক্ষা সর্কৈক মত্য-কর্ণাদিতার্থ:। সমাক্ কর্ষতি আকর্ষতি একীকরোতীতি সম্বশ্নপুশেন্তি ননাতে বক্ষান্তীতার্থ:। গন্ত সম্বশন্ত ন প্রকাশয়তি ॥৮॥ অসা তব পুরুষা অতঃ প্রীকৃষ্ণ ইত্যেকং নাম ভবিষাতি ॥ ৯॥

देवकवरजायनी ।

আয়ং বৈ ইতি সার্দ্ধকং। আয়ং হীতি কচিং। আয়মিতাসুল্যা নির্দিশ্য করেণ স্পৃষ্ট্য বা বোধয়তি এবনগ্রেহপ্যস্যেতি তত্ত্ব প্রকটার্থং নোহিগীপুল হৈত্যতদপোকং নামেতার্থঃ স্কৃষ্ণং শ্রীবস্থদেবাদীন্ ভবদাদীংশ্চ। আর্থীসাত ইতি নামেছিখ মৎকর্তৃক্তং বাজিমাত্রমের কিস্ত্র তাদ্শতিয়া অয়মের থাতি ভবিষ্যতীতার্থঃ। এবুমুত্তরক্রাপি। বিছ্রিভি বস্তনান সামীপ্যে বর্তমানবৃত্তং। এবুমুত্তরক্রাপি। এনমিতি শেষঃ॥ ৭॥

যদৃনাং শ্রীবস্থদেবাদীনাং ভবদাদীনাঞ্চাপ্থগ্ভাবাঃ নির্বিশেষ পিতৃষাদিভাবাং তেনোভরকুলভাপি স্বশ্নিয়াকর্ষণাদিত্যর্থঃ। এষানপি যাদব্যেন ত'দৈকাং ঘাবকাতো ব্রজমাগ্রুসা রামভ বচনেন হরিবংশে ব্যক্তং প্রত্যুবাচ ততো রামঃ স্ব্যাংগুনেভিতঃ স্থিতান্। যাদবেষপি সর্ব্যের ভবস্থান্য বিজ্ঞান্য হিতি । যদ্নামহমাচার্য্য ইতি কু প্রসিদ্ধি মাত্রমবলম্বা প্রোক্তং। অপি শব্দামাম্বরাণ্যপি স্চিতানি। উত্তেতি পাঠে স এবার্থঃ। প্রকৃটার্যেকু শোভনং হার যেষাং তান্ সাম্বত। আত্মারামাদীন্ রময়ন্ রামঃ বিজ্ঞানিন্তি ইতি নামাং সদাতনত্বং ব্যঞ্জতি এবমুত্রপ্রাপি কিঞ্চ স্কর্ষণ নায়োহপি নিক্তন্তান্তর্মপি শব্দান্ত ক্রেয়ং॥ ৮॥

এবং জন্মক্রমাণেক্ষয়দে। শ্রীবলদেবস্য নামানি ব্যক্ষ্য শ্রীকৃষ্ণস্য নামানি প্রকাশয়রাহ আসন্নিতি। তত্ত্ব প্রকটার্থেহিয়ং অমুবুগং যুগে

ক্রমদন্দর্ভঃ i

যদৃনাং শ্রীবন্ধনেবাদীনাং ভবতাং চাপৃথগ্ছাবান্ত পিতৃতাদি সাধারণ বুদ্ধেরিত্যর্থ:। তত্তকং শ্রীহরিবংশে গোপবর্গং প্রতি তেন স্বয়নেব। যাদবেশ্বপি সর্ক্ষের্থ ভবন্তো মন বান্ধবা ইতি নির্দ্ধারণং হি সন্ধাতীরেশ্বের মৃষ্ট্রী সপ্তম্যৌ বিধত্তে। গোষু ক্ষমাঃ সমাক্ ক্ষীরা ইতিবং। তদেবং সতি সন্ধর্শতি কভেদ বুল্ধিকী করোতি সন্ধর্ণ ইতি বিবৃক্ষিতং। অনেন গোপানামেষ যত্ত্বংশোদ্ভবত্মপাবগতং। তচ্চ শ্রীকৃষ্ণসন্ধানে প্রতিপাদিত্যের ॥ ৮॥

আসদিতি প্রকটার্থো হয়ং প্রভিমুগং তকু গৃঁহুতো ভগবতো বর্ণান্ত্রম্য অস্য বালকস্যাসন্ ক্রম বিবরণং শুক্র ইত্যাদি। ইদানীং

শ্রীবিখনাগচক্রবর্তী।

স্থানসংস্কারোহপি নাপেক্ষ্য:। রহসীতি দিনে সপাদানাং গবাং বন গ্যুনাৎ। দ্বিজাতিসংস্কারং বালয়োরনয়োঃ ক্ষত্রবৈশ্যান্ত্রপ নামকরণ লক্ষণং। পুণ্যাহ স্বতি ঋষরাত্র ব্রিজ্ঞা স্বত্তিবাচনং ভবেৎ তস্য সর্ব্বকর্মস্বাবশ্যকতাৎ তৎপূর্বকং॥ ৭ ॥

যদ্নাধ বস্ত্ৰদেবাদীনাং ভবদাদীনাঞ্ অপৃথগ্ভাবাৎ নিৰ্দ্ধিশেষ পিড্ছাদি ভাবাং স্বস্থিন্ন ভয় কুলস্যাকৰ্ষণাং। ওচ্চ হরিবংশে। প্রত্যবাচ তহো রামঃ সর্বাংস্তানভিতঃস্থিতান্। যাদবেছপি সর্ব্বেশ্ন ভবস্তো মম বল্লভা ইতি তহচনেনৈব ব্যক্তং। গর্ত্তসম্বর্গন্ত ন প্রকাশয়তি ॥৮॥ তব পুজ্জন্বঃ কোহপি মহাপুক্তর এব শ্রীনন্ধং বোধয়লাহ আসলিতি। প্রতিযুগং তন্গৃহিতো হসী তক্লাদয় ক্লয়ে বর্ণা আসন্। গৃহত

যাহা করিতে আপনারও ইচ্ছা হইরাছিল, নির্জ্জনে অতিগোপনে সম্পন্ন করিলেন। তদনন্তর নন্দকে সেখোধিরা বলিলেন গোপরাজ। রোহিণীর এই পুত্রটা নিজগুণে স্ফল্জনের মনোরঞ্জন করিবেন এই কারণে ইনি রাম বলিয়া খ্যাত হইবেন এবং বলাধিক্যু হেতু ইহাঁকে বলও বলিবে॥ ৭॥

অপিচ, কোন কারণবশতঃ যতুর্গণ পরস্পার বিবাদ করিলে ইনি তাঁহাদিণকে শিক্ষা ঘারা সম্যক্ কর্ষণ করিবেন অর্থাৎ সকলের ঐক্যমত্য করিয়া দিবেন একারণ ইহাঁকে অনেকে সকর্ষণ বলিয়াও জানিবে॥৮॥

আর তোমার এই পুজান প্রতিষ্গেই শরীর পরি এই করেন, ইহার শুল, রক্ত এবং পীত এই

বৈষ্ণবতোষণী।

নুগে বারং বারং তনুগৃহিতো হয় শুরাদি বণাত্রয় আসন্ ইদানীং বংশ্রাবেত্ জগনোহন শ্রামণ্ডানেবারং গতঃ এতহকং ভবতি তন্ গৃহিত ইতি সাত্রয়াক্রা যোগ গ্রভাব ইবোকঃ। তত্রচ শুরাদি রপ গ্রহণেন শ্রীনারারণ স্বভাব্য বাস্ত্যা তহপাসনা যোগ এব প্র্যাব্যারিতঃ পূর্ব পূর্বং তদংশত্ত শুরাহাপাসন্মা তহংসামাদি প্রাপ্ত্যা শুরুতাদি প্রাপ্তিঃ সম্প্রতি ক্ষাহালাসন্মা তহংসামাদি প্রাপ্তা। শুরুতাদি প্রাপ্তিঃ ক্ষাত্র প্রমান্ত শ্রামারার্বনাগাসন্মা তংসাম্য প্রাপ্তা রক্ষতা প্রাপ্তিরিতি বক্ষাতে চ নারায়ণসমাে শুণৈ রিতি ইখং পূর্বে কৃত্ত মুক্তং পরম ভাগবতঃ শ্রীনন্দ তোমিতঃ এবং পরমােৎকর্ম প্রাপ্তি হত স্বর্ম নির্ভাব রুক্ষেত্রের তাব্যাস্থাং নাম জ্বেয়ং। স্বতো নারাপি কৃষ্ণতাং গতঃ ইত্যথিহিপি ক্রেম ইত্যভিপ্রায়ঃ। স্বপ্রকট বাস্তবার্থাণায়। অনুর্গং নূগে বুগে তন্গৃহিতঃ প্রকট্মতঃ ত্রেরা রণ্ আসন্ প্রকটা বভূব্ং তত্র যাে যাং শুকুং প্রহিত বাহ যাে যাে বাং বরুং হতা মেন গতঃ নর্বাংশমান্ত স্বামনিতীর্গ্রাং স্বতঃ স্বাং কৃষ্ণহাং সর্বা নিজাংশস্য কৃষ্ণীকর্ত্রাং সর্বাক্ষক্ষাচ মুখাই তাবং ক্ষেতি নাম। সতঃ করি ভূবাচাকঃ শবদা গশ্চ নির্বৃতি বাচকঃ। 'তয়াে বৈকাং পরং ত্রন্ধ কৃষ্ণ ইতাভিধীয়তে ইত্যাদিকা

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্ত্তী।

ইতি স্বাচয়োক্তা যোগপ্রভাবো দর্শিতঃ। ইদানীং দাপরাস্তে কৃষ্ণতাং গত ইতি। সত্যাদ্যবতারাণাং চতুর্ণাং শুক্রাদীনামুশাসনা সিদ্ধন্তেন ভ ভংসারূপ্য প্রাপ্ত্যেতি ভাগে নন্দং বোধয়িতুমীপ্সিভঃ। বস্তুতস্ত অস্যাবতারিশ স্তত্ত্বর্ণবস্তো হবতারা অংশা এব ইদানীময়মবতারী। পূর্ণ: ক্ষণত্বং প্রাপ্ত:। যহা য়ঃ শুক্ল: যো রক্ত: য়: পীতশ্চ। উপলক্ষণমেতৎ যো যো হন্যো মন্বন্ধরাবতার লীলারতার পুরুষাবতারাদিশ্চ সমর্কোহপি ইদানীমংশিলো হ্যাবিতারসময়ে ক্লফতামেতজ্ঞপতা মিল্লিজভূতিতাং গতঃ সর্কাংশ মাদায়ৈবাবতীর্ণবাৎ। নমু ক্লতে শুক্ল-শ্চুবাছরিতি। ত্রেতায়াং রক্তবর্ণো হসাবিতি দাপরে ভগবান্ শ্যাম ইতি কলৌ রুঞ্বর্ণ থিবা ক্ঞমিত্যেকাদশোক্তে:। কথ্যস্তে বর্ণনানভ্যাং ওক্ল: সভ্যয়গে হরি:। রক্ত: শ্যাম: ক্রমাৎ ক্লফা ক্লেডায়াং দ্বাপরে কলাবিতি ভাগবতামৃতোক্তেশ্চু পীতো হৃষং কিং য্গামো হবতার: নচ আদ্ত্রিতি ভূতকাল নির্দ্ধেশন ক্রম প্রাপ্ত্যা পীতোহপি দাপরযুগাবতার ইতি বাচ্যং যুগাবতারপ্রকরণপঠিতমাং নচ ভত্রস্থ শ্যাম পদস্য পীতার্থস্থমত্তর পীতপদস্য বা শ্যামার্থস্থ ক**র্**যামিতি তথা পীত ইত্যকার প্রলেষেণাপীতঃ শ্যাম ইতি বা বাচ্যং সংর্থাপি ব্যাখানে অনুযুগ্নিতি বীক্ষাপ্রয়োগাৎ তন্ত্রিতি বছবচনাচ্চ। বীক্ষ্যা চৈকৈক্মিম্পি যুগে বর্ণঅয়স্য প্রাপ্তেন ভিমতার্থ লাভঃ। নচেদানীমিতি পদেন কৰিযুগ্ম্যাদিমো হংশ এব বাচনীয় ইতি বাচ্যং। ক্লাবতারম্য দাপরাম্ভ র্তব্বেন প্রসিদ্ধেঃ। भाजमञ्जि भट्य व जनवास्थानमञ्ज नाः। उटेनटवहासूत्रत्वा स्नावधर्मा क्षांत्रवः कनितिष्ठि अधरमाटकन्छ। क्रस्मावजातास्वरमव किनियुन প্রের্ডেঃ তঁম্মাদেরমত্র ব্যাথ্যেয়ং। বভালো নিতাসম্বন্ধাৎ যথা ইদানীং দ্বাপরান্তে কৃষ্ণতাং গতঃ স্বর্ময়মবতারী তথা তেনৈব প্রকারেণ ইবানীং কৰিমুগাৰি ভাগে পীত ইতি কিঞ্চিৎ স্তৃপ কালমবলয় ইবানীমিতি পদাৰ্থ উভয়ত্ৰাপ্**দুঘতীতি। নমু তহি^{*}সাকাৎ** ক্ৰিয়-মাণে। হ্যা ক্ষেত্ৰা বৰ্ণঃ। কিং ইদানীস্তন এব কিখা পূৰ্ব্বমপ্যাসীদেব তক্তিব প্ৰাকট্যমধুনেতি তত্ত্ব ন কেবলং ক্লফবৰ্ণ এব পূৰ্ব্বমাসীৎ অপিতৃ অনোহপি বৰ্ণা আসল্লেবেত্যাহ স্থাসন্ধিতি ত্ৰয়োহপি বৰ্ণা মথাসম্ভবং পূৰ্ব্ব পূৰ্বে যুগে তদানীং দৃশ্যমানান্তবং পূৰ্ব্বমপি আসল্লেব নিতাহানামেব তেষাং ভদানীং ২ প্রাকটাং। নতু তে তদানীমেবাপুর্বা অভবলিতার্থঃ। অস্য কথভ্তসা অরুযুগং তন্রবভারান গৃহতঃ। অবতারাহ্সংখ্যেরা ইতি হতোক্তেঃ। কাহো কথং বা কতিবেতি ব্রক্ষোক্তেশ্চ। এবঞ্চ বৈবস্বতমন্বস্তর গৃজ্জাইাবিংশ চভূব্ণীয় দাপৰ কৰিষ্গলো: স্বয়মৰতারী ক্ষা: পীতশ্চ প্রাহর্ভৰতি তাৰুগধয়াৰতারে। শাম ক্লেটা তদা তবৈৰাৰভূতি তিঞ্জ:। তত্র পীত্রা স্বর্ণবর্ণো হেমাক্লো বর**ঃদশ্লনাল্গনী। সন্ন্যাসকৃৎ সমঃ শাস্তো নিঠাশান্তিপ**রায়ণ ইতি ভারতাত্য**ক্ততেৎপি বিশিষ্য** স্পষ্টতর। অন্যত্র কাপ্যস্থকিরতিরহস্যত্তাং। ছব্ল: কলো যদভব দ্রিযুগোহর্থ স ত্বমিতি সপ্তমন্তব্ধে শ্রীপ্রহলাদেনাপি ছমবৈনৈবোকত্তাং। ছমত্বঞ্জীয় বৰ্ণভাবয়োৱন্দীয় বৰ্ণভাবাভ্যামাবৃতত্ত্বন জদানীস্তন জনৈঃ প্ৰাম্যে ছল ক্যন্তমেবেতি স্বস্য ছক্ষৰ কাৰং চিকীৰ্বাচ তস্য রহস) ব**ন্ধ জাত ব্যঞ্জ**কতা হেতুকৈবেতি গৌড়ীয়ভক্ত স্থধীতি রবশ্যাবগম্যং। তত এব তৎপ্রমাপক বচনস্য নানাতম বিধানেন কল[ি] বপি তথা পূৰ্। কৃষ্ণবৰ্ণং বিষা কৃষ্ণং সাজোপাকাল্ল পাৰ্বহং। যজৈঃ সধীৰ্ত্তনপ্ৰাহৈ বৃত্ততি হি স্থমেধন ইত্যান্য মুগাৰ্ডার প্ৰক্রণ মধ্য পঠিতস্য তথৈক ছল্ল এবার্থো হবসীয়তে হর্থান্তরেল। স মধা নানা কলো সর্বাক্তির্পে অপিকারাং বৈবল্পতান্তাবিংল চতুর্গীয় কলাবপি তম্ববিধানেন তম্বাধ্য ন্যায়বিধিনা। খেতো ধাব**তীত্যাদিবং এক প্রবদ্ধোচার্য্যেণ একদৈবার্থছয় বোধকেন শবে**নেতার্থঃ। শৃণি,তি,শৃণ,স্তমপি রাজানং প্রতি প্ন: প্রেরণং রহসাজেন তত্ত্বেশোচামানমর্থং বিশিয়াবধাপয়িত্বং নানাতত্ত্ব বিধানেনেতি কর্মী ওক্সমা প্রাধান্যং দর্শিতমিতি তথান্তরং ভন্তম্যাপ্যাচ্ছাদনার্থং ক্সেবং। ক্সেকেতি সর্ব্ধ কলিযুগ**থকে রুফবর্ণং কুফবর্ণদেহং** ক্লক্ষণং ব্যাবর্ত-

প্রাগয়ং বস্তুদেবস্য কচিজ্জাত স্তবাস্মজঃ। বস্থাদেব ইতি শ্রীমানভিজ্ঞাঃ সংপ্রচক্ষতে॥ ১০॥ বহুনি সন্তি নামানি রূপাণিচ স্নতস্য তে। গুণকর্মাসুরূপাণি তান্যহং বেদ নো জনাঃ॥ ১১॥

बीधतवामी।

প্রাগ্যমিতি সামান্যোক্ত্যা ঋষিবরং জন্মান্তরগতং নাম কথয়তীতি নন্দো মনাতে স্ম অতএব এনং বাস্থদেব ইতি সংপ্রচক্ষতে ॥ ১০॥ গুণাসুক্রপাণি ঈশ্বরং সর্বাজ্ঞ ইত্যাদীনি কর্মান্ত্রপাণি গোপতি গোবর্দ্ধনোদ্ধরণ ইত্যাদীনি তানি সর্বাণি অহমপি নো বেদ জনা অপি নো বিহুঃ ॥ ১১ ॥

देवकदरकाषणा ।

নিকজি রপান্ত ভ্রতি সর্ব্ধ বৃহত্তগানল এব সর্ব্বান্তভাবাৎ। অতঃ স্বাভাবিক মেবৈতন্মহানাম যত্র প্রথবে বেদা ইব তান্যনান্যপি নিমানি রূপে রূপানীবান্তভ্ তানি গুক্তক বিশেষ্য রূপন্য তস্যান্য নাম গণ বিশেষণকত্বাং। উক্তক প্রভাসপুরাণে। মধুর মধুরমেতন্মকলং নকলানামিত্যাদৌ সকল নিগমবল্লী সংফলমিতান্তে রুক্ষনামেতি। নামাং মুখ্যতরং নাম রুক্ষাখাং মে পরস্তপতি চ। যস্যাস্য যশ্চ প্রথমমপ্যক্ষরং মহামন্তব্যে প্রসিদ্ধান্য। ম ॥

প্রাণিতি প্রকটার্থে তবাস্বজোহরং ক্চিদন্যত্র বস্থদেবাদপি জাত ন্তং কথং তত্রাহ প্রাক্ত কলা ত পূর্বজন্মনীতার্থ:। এবং শ্রীবস্থদেবক্ত পূর্ব ক্ষমত্রপি তরামানীদিতি শ্রীনদ্দেনাবগৃতং। অপ্রকটার্থে ইহৈব জন্মনি পূর্বং কংস কারাগারে বস্থদেবাজ্জাতোহপি ভবায়জ এবেতি পূর্ব্বিদ্ধান্তাহ্বসাবেণ অন্তথা ভবায়জ ইত্যক্তাধিকাং তাং। অর্থ ব্রেপি শ্রীমন্ হে পরম ভাগাসম্পদ্যুক্তি ভাদৃশ পূত্র প্রাপ্তে:। পাঠান্তবের শ্রীমান্ পরমশোভা সোভাগ্যাভ্যাং যুক্তোহয়ং তবাম্মজ:। অভিজ্ঞা ইত্যনেনানিক্ত্যম্বরাত্তির স্ক্রেবাস্তরক্ষরং বোধ্যতে॥ ১০॥

রূপাণীতি দৃষ্টান্তত্বেনাক্রং যথা শুক্লাদি রূপাণি তথা নামান্তপি জন্মান্তর সম্বন্ধিনী বহুনি সন্তীত্যর্থ:। তান্তহং বেদ জনান্ত ন বিছ বিত্যর্থং। লোকেহপ্যসন্তাব্যত্বাৎ তানিচ বহুনি নতু প্রকাল্লন্ত ইতি ভাব: অপ্রকটার্থেতু গুণাত্মরূপাণি শ্রীনর নারামণ নৃসিংহাদীনি কর্মান্ত্রপাণি মৎস্যাদীনি অথ গুণাত্মরূপাণি নামানি ভক্তবৎসল ইত্যাদীনি কর্মাত্মরূপাণি জগৎপ্রদ্ধী জগৎপালক ইত্যাদীনি সন্তি-

क्रममन्धः।

জৎপ্তাহাবসরে তু ক্ষতাং সাক্ষান্নারারণতাং রূপ গুণাদিভিস্তত লাতামেব গত ইত্যর্থঃ। উপসংহরিষ্যতে চ নারায়ণ সমো গুণৈরিতি। এবং তত্তত্পাসনা প্রভাবরূপং পূর্ববৃত্তমূক্তং। অত এব পর্মোৎকর্ষরূপ নিষ্ঠহার্থ ক্ষম ইত্যোবাস্য মুখাং নাম জ্যেমতি ভাবং॥ ৯॥ বান্তবার্থস্ত প্রোগিতি তবাত্মজোংয়ং কচিং কার্য্যে নিমিত্ত এব বস্থদেবস্য জাত ইতি এবাত্মজ্বমেবাস্য স্থাভাবিক ইতি ভাবং। বক্ষাতে চ স্থত্যা ত ইতি॥ ১০॥ .

বহুনীতি প্রকটার্থে কতি বাচ্যানীতি ভাবঃ। বাস্তবার্থে তু গুণামুরূপাণি শ্রীনৃসিংহরূপাদীনি কর্মামুরূপাণি শ্রীকৃর্মাদীনি ॥১১॥১২

শ্ৰীবিশ্বনাপচক্ৰবৰ্তী।

য়তি বিষা কাস্ত্যা অক্তমণ ইন্দ্রনীলমণিবছজ্জলমিতার্থ:। এক কলিযুগপক্ষে কৃষ্ণবর্ণং কিন্তু বিষা কাস্ত্যা অকৃষ্ণং শুক্ল রক্ত শ্যামানামুক্তখাং পারিশেষোণ পীতং অস্তঃকৃষ্ণং বহির্গোর মিতার্থ:। যথা কৃষ্ণাবভার লীলাদি বর্ণনাৎ কৃষ্ণবর্ণং। সালোপাক্ষেত্যাদিকমিত্যুত্বক্ষেহপি স্পষ্ট প্রচ্ছেমহাত্যাং তুল্য এবার্থ:॥ ১॥

প্ৰাক্ পূৰ্ব্য: বস্থাদেবস্য বস্থাদেবান্তৰাত্মজাহয়ং কচিদেকান্তস্থলে জাত ইতি প্ৰাক্ পূৰ্ব্যজন্মনি, বস্থাদেবস্যাপি পূৰ্ব্যজন্মনি বাস্থাদেব ইত্যেৰ নামাসীদিতি নাক্ষা বৃদ্ধাতে শ্ব অভিজ্ঞা ইতি ন কেবলমহমেক এবেতি প্ৰামাণ্যং দৰ্শিতং ॥ ১০ ॥

বহুনীতি। ন কেবলং ক্লফ ইতি নাম বাহুদেৰ ইতি নাম মায়ৈৰ ক্তমিতি ভাৰং। ক্ৰপাণীতি ন কেবলং মধোজানি ওকাদীন্যেৰ ইতাৰ্থং। গুণকৰ্মাহক্ষ্পাণীতি। ভজ্কবংসল সৰ্বজ্ঞ গোৰ্হ্বনধাদীনি ক্ৰমণৰং সভাৰ্যো শক্তানন্দাৰ্থকিন্তভঃ ক্লফং। ভক্তানাকৰণা-তিন বৰ্গ ইইয়াছিল এক্ষণে ইনি ক্ষতা প্ৰাপ্ত হইয়াছেন, ক্লতএব ইহার ' প্ৰীকৃষ্ণ ' এই একটা নাম হইবে॥ ৯॥

আর, তোমার শ্বই পুত্র পূর্ব্বে কদাচিৎ বহুদেব তময় হইয়া জন্মিয়াছিলেন, সেই কারণে সভিজ্ঞ জনেরা ইহাঁকে বাহুদেবও বলিয়া আখ্যা প্রদান করিবেন॥ ১০॥

নন্দ! তোমার তনয়ের গুণামূরপ "ঈশার, সর্বভ্জ" ইত্যাদি বহু ২ নাম এবং কর্মামূরপ গোপতি,

এষ বঃ শ্রেয় আধাদ্যদেগাপগোক্লনন্দনঃ। অনেন সর্ব্বন্ত্র্গাণি যুয়মঞ্জ রিষ্যুথ ॥ ১২ ॥ পুরানেন ব্রজপতে সাধবো দহ্যুপীড়িতাঃ। অরাজকে রক্ষ্যমাণা জিগুর্দদূয়ন্ সমেধিতাঃ। য এত্যান্ মহাভাগে প্রীতিং কুর্বস্তি মানবাঃ। নারয়োহভিভবস্তোন্ বিষ্ণুপক্ষানিবাস্তরাঃ।

बीधतवामी।

জাতক ফণমাহ এষ ইতি। আধাস্যৎ আধাস্যতি॥ ১২॥ অনন বক্ষামাণা: সমেধিতাক্চ দক্ষেন্জিন্তা:॥ ১৩॥

বৈষ্ণবতোষণা।

ইত্যানেন সচ্চিদানল্বন রূপাণামিব নামামপি নিতাতা স্থাচিতা সাচ গুণ কর্মান্তরপাণীতি সাধিতা গুণানাং নিতা ওগবং সমবেতবারিতাতা সিদ্ধ্যা ওপা কর্মাণাঞ্চ প্রীগোবর্জনধর কালিয়দমনাত্বাপাসনানা মনাদ্সিদ্ধ বেদপ্রসিদ্ধেঃ। অতএব তত্ত্বপাসক পরস্পরার্শানিবিছিয়তাপত্তে: প্রীভগবতা ভক্তেছাময়প্লাচ্চ তরিতাতা তদম্রূপ নামামপি তথাইদিদ্ধিঃ। তচ্চ সর্বং প্রীভাগবতামূতে বির্তন্তি। এবং গুণকর্ম নামানস্ত্যাজ্ঞপাণীব নামান্তনন্তানি লৌকিকবং প্রতীয়মানান্যপি সচিদানল্বেনালৌকিকানি তত্বপাসক হৃদবৈষ্ক বেদ্যা ত্বানি নাহমপি বেদ জনা অপি ন বিত্রিতার্থঃ। অত উক্তং শ্রীবিষ্ণুপুরাণে। অনাথেয়াভিধানং স্বামনাণ্যেয় প্রয়োজননিত্যাদি। স্বিতীয়ন্তর্কেচ। তদশ্বসারং হৃদয়ং বতেদং যদগ্রুমাণৈ ইরিনামধেরেঃ। ন বিক্রিয়েতাথ যদা বিকারো নেত্রে জ্বং গাত্র ক্রের্ হুর্য ইতি॥ >>॥

গোপান গোকুলশব্দেন তত্রত্যাংশ্চ স্কানেব নন্যতি হর্ষ্যতীতি তথা স ইতি তস্য স্থভাব উক্তঃ শীলাথেঁ প্রত্যয়াৎ। কর্মণাপি বো যুমাকং অজজনানাং স্কোষামেব শ্রেষ: ঐহিকাম্মিক মঙ্গলং আধাস্যতি। তথানেন ক্ষেত্রন হেত্না স্কাণি হুর্গাণি কংসাত্যপ-দ্রবানপ্রোহনায়াসেন তরিষ্যথ ॥ ১২ ॥

পূর্বাবৃত্ত মাহ পুরেতি। জন্মান্তরে প্রকটার্থে সাধবো দেবা: দস্যবো দৈত্যা: অরাজকে ইক্সন্ত পদচ্যুতো ॥

মহাভাগে প্রমপুণ্যবতি। যদ্ধা হে মহাভাগে ইত্যন্তে শ্রীয়শোদা সম্বোধনং সন্ত্রীকো ধর্ম মাচরেদিতি ন্যায়াৎ। মহাভাগা ইতি ক্টিৎ পাঠঃ। মানবা জীব মাত্রাণি ইতি নৃগতিং বিবিচ্যেত্যাদিবং। অর্থ্যে বাহাঃ প্রতিপক্ষ জনাঃ আন্তরাশ্চ কামাদারঃ বিষ্ণুপফান্

क्रगमन्नर्जः।

নাবায়ণ প্রমব্যোমাধিপ এব সুমো যস্য তাদুশোহিপি। শ্র্যাদিভিদ্ব ক্রিঃ গোপানাময়ে ভভাবহ বিধৌ স্থসমাহিতং। পাঠান্তরে স্কেন

গ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

দপি তখৰ হাচ্চ মন্ত্ৰমন্ন বপুষ ইতি গোবিন্দো গোবিচারণাদপীতি কেশবাচার্য্যাদি ব্যাখ্যানাদিত্যর্থ:। তান্যহং দৈবজ্ঞোহপি ন বেদ জনা নো,বিগুরিতি কিং পুনরিত্যর্থ:। নদ্দস্ত মংপুশ্রস্য মহাপুরুষস্থান্নানা জন্ম গতমিদং দর্বজ্ঞবাদয়ং বক্তীতি বৃদ্ধতে॥ ১১॥

আধাসাং আধাস্যতি গোপানাং গবাঞ্চ কুলং নন্দয়তীতি সং। তেষাং কুলসা নন্দনং। ব্রহ্মমোহনে পুত্র ইতি বা। ছে গোপেতি বা। অঞ্জঃ স্থানে সর্ব্ধ ছুর্গানীতি যদা যদোপদ্রব আয়াস্যতি তদা ছদিষ্টদেবেন এীনারায়পেনাবিষ্টোহয়ং ২ৎপুত্র এব ছয়ায়মাশ্রয়িতব্য ইতি ভাবং॥ ১২॥

পুরা জন্মান্তবে দাধবো দেবাঃ দস্যুবো দৈত্যাঃ। অরাজকে ইব্রুস্য পদ্চুতে ॥

গোবর্দ্ধনধর ইত্যাদি অনেক আখ্যা আছে, আর গুণ কর্মের অনুরূপ ইহার রূপও বিস্তর, সে দকল আমিও জানি না, অন্য ব্যক্তিরাও জানে না । >> ॥

সে যাহা হউক, একণে তোমার এই বালুকের জাতক ফল বলি এবণ কর, ইনি গোপ ও গোক্-লের আনন্দ বৰ্দ্ধন হইয়া তোমাদের শ্রেয়ঃ উৎপাদন করিবেন। অপর তোমরা ইহা হইতে ষথার্থতঃ সকল তুর্গম উত্তীর্গ হইবে॥ ১২॥

অহে ব্রজ্পতে । পূর্ব্বে একবার অবনী **অরাজক হইলে দহ্যগণ হইতে সাধুদিগের উৎপী**ড়ন 'আরম্ভ হইরাছিল, তাহাতে ইনি তাঁহাদিগের <mark>রকা করেন। ইহাঁ কর্ত্ক রক্ষিত এবং সমেধিত হই</mark>য়া

তম্মান্ধনাস্বজোহয়ং তে নারায়ণসমো গুণৈ:। শ্রিয়া কীর্ত্তানুভাবেন গোপায়স্ব সমাহিতঃ ১১৩॥ ইত্যান্মানং স্মাদিশ্য গর্গেচ স্বগৃহং গতে। নন্দঃ প্রমুদিতো মেনে আত্মানং পূর্ণমাশিষাং॥ ১৪॥

श्रीधत्रश्रामी ।

ইতি আল্লানং প্রতি সমাদিশ্য আত্মানং শ্রীক্লঞ্চং বা আশিষাং আণীর্ভি:॥ ১৪॥

देवकवट्डावनी।

দেবান্ দৈত্যা ইব অপ্রকটার্থে ভাগোঁ ভগএব নিজাশেষ ভগবতা প্রকটন পরে বিষ্ণু পক্ষ শক্ষো দেবতাপর্যাযো জেয়ঃ। সমুদায়দ্যৈক-দেশোহপি দুষ্টাস্কো ভবতীতি নচাশ্বিরিব শক্ষো হত্বপদাঃ॥

গুণাদিভি নিরায়ণেন পরম বৈকুঠনাথেন সমঃ অপ্রকটার্থে নারায়ণ এব সমো যন্তেতি নারায়ণাদিপ মাহায়্য়মিকং বোধিতং উপ্নানাত্পনেয়স্য কিঞ্চিৎ সাদৃশ্ব মাত্রেণ ন্নতাপত্তেঃ তত্র গুণা আয়নিষ্ঠাঃ ধর্মাঃ করণাদরো রূপাদয়্র । বহিনিষ্ঠামাহ প্রিয়াদশাত্যাকির্ত্তিয়া সংখ্যাত্যাহত্বত্বন প্রতাপেন। পক্ষর্রেহিপি যদ্যপীদৃশ তথাপি তরায়নো জাতঃ স্ব প্রভাব মন্তর্ধ্যাপ্য ছামেরাস্থ্যত ইতি প্রসমাহিতঃ পরমাবহিতঃ সন্ এতং গোপায় বাল্যেহিমিয়স্য রক্ষায়াং প্রয়েয়্ ক্রিত্যর্থঃ। বস্তুত্ত বেহ বর্দ্ধানার্থমেবেদং অত্তর বাল্যাদিনামবয়ঃ সর্ব্বা সর্বায়নাচ রক্ষেত্রর্থঃ। তত্র কীর্ত্তা স্বস্য কেবলস্য সংপ্রক্স্যাচ কীর্ত্তি বিধ্যাপনেন লোক রঞ্জনয়েত্যর্থঃ। গোপাদবেতি পাঠে আয়নেপদ্মার্যঃ। গোপানাং অয়ে। লাভ ত্রিন্ স্থসমাহিতেহিয়মিতি। পাঠান্তরে আয় স্ব শন্ধাত্যাং যোগক্ষমে অভিহতে তদেবং প্রকটার্থেহিপি নারায়ণ্য সাম্মান তয়ামান্যেরাস্য নামানি তথাত্তে বিশিষ্ট্যান্যন্যান্যি ত্রিষ্ঠাতি ভাবঃ। অতঃ শ্রীনক্ষেত্রির গ্রেষ্ট্র স্বিত্যাহি প্রামান্য নামানি তথাত্তে বিশিষ্ট্যান্যন্যান্য অভোহধুনা নন্ধং কুর্ক্তিত্যর্থঃ॥ ১৩॥

স্বাচ্ছত ইতি তদতো সম্মাদিনা ত্রিশেধাক্ত্রি:। সত্রব প্রকর্ষেণ মুদিত ইত্যেতদনম্বরং নিজপুরোহিতাদীনানীয় প্রকট-নেব স্বয়ং নাম করণ মহোংসবঃ ক্লত ইতি জ্ঞেয়ং॥ ১৪॥

ক্রেসন্ত:।

স্বৰ্থমেৰ সনাহিত ইতি ৰান্তৰোহৰ্ধঃ প্ৰকটাৰ্থে তুল্লাল নাৰায়ণস্য সমস্তথাপি তৰায়জ্তাং প্ৰাপ্ত ইতি তবৈৰ গোপনীয় ইতাৰ্থঃ ॥১০॥ গত ইতি তদগ্ৰে সম্ভ্ৰমাদিনা তদ্বিশেষাক্ষুৱেঃ ॥১৪॥

ত্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

নারায়ণ সম ইতি হণিষ্টদেবেন সন্ধৃষ্টেন শ্রীনারায়ণেন স্বসমং প্রস্তুভাং দত্ত ইতি ভাবং। সতো মুকুল মধুস্দন নারায়ণাদিনাম ভিন্রমপ্যভিধীয়তাং কিন্তু শ্রোহাদি বছবিমানীতি বিভাব্য স্থপাবধানং সন্ গোপায় প্রতিক্রণং পালয়। রক্ষিতঃ পুলোহয়ং তে নারায়ণ ইব সর্কোপিজবেভা বিক্ষিণতীতি ভাবং। গোপায়স্বৈতি পাঠে আয়ুনে পদমার্যং। বস্তুতন্ত নারায়ণং সমো যস্য ত্রাপি গুণাদিভিরেব নতু দৈতা মোক্ষদন্ত ভক্ত মহাভাবপ্রদন্ত শুনারায়ণাদ্বি মহাতি গোক্ষদন্ত ভক্ত মহাভাবপ্রদন্ত শুনারায়ণাদ্বি মহাতি গোক্ষদন্ত ভক্ত মহাভাবপ্রদন্ত গুলাবহ বিধো বা স্থসমাহিতঃ॥ ১৩ ॥

আত্মানং স্বং প্রতি। প্রাণানাজ্বতা মৌগ্রোন ছইয়োঃ পুতনানসোঃ। শিষ্টবর্গ প্রকৃষ্টপ্য গর্গস্যাপি মনো ২হরং॥ ১৪॥

সাধ্যণ সেই সকল দস্তাকে পরাস্ত করিয়া দেন। ছে নন্দ! ইনি অতি মহাভাগ্য, যে সকল মানব ইহাঁতে প্রীতি করেন, যেমন অস্তর্গণ বিষ্ণুপক্ষীয় ব্যক্তি দিগকে অভিভব করিতে পারে না তাহার ন্যায়, সেই সকল মানবকে অরিগণ পরাভব করিতে কদাপি সমর্থ হয় না। অতএব হে নন্দ! তোমার এই আত্মজ, গুণ সম্পত্তি কীর্তি এবং অমুভাবে (প্রভাপে) নারায়ণের সমান, তুমি সর্বাদা সমাহিত হইয়া ইহাঁর রক্ষণাবেক্ষণ করহ॥ ১৩॥

হে রাজন্। এই প্রকার আদেশ করিয়া গর্মাচার্য্য স্বীয় গৃছে গমন করিলেন, নন্দও আনুন্দিত হইয়া আপনাকে কল্যাণপূর্ণ জ্ঞান করিতে লাগিলেন॥ ১৪॥

কালেন ব্রজ্বতা তাত গোকুলে রামকেশবে । জাতুজ্যাং দহ পাণিজ্যাং রিঙ্গমাণে বিজহ্রতুঃ॥১৫ তাবজ্যি যুগ্মমতুক্ষ্য দরীস্পত্তো বোষ প্রঘোষ রুচিরং ব্রজকর্দমেষু।

अध्यक्ति ।

বালক্রীড়া চনংকারৈঃ ক্তঞ্চা রামেণ সংযুক্তঃ। প্রমানক্রমাধ্ত এজে নক্র্যশোদরোঃ। পূর্ণগ্রমের দর্শগ্রহাই কালেনেতি॥ ১৫॥
অনুক্রয় পুনঃ পুনরাক্রয় স্বীস্পত্তী অভিশয়েন চল্ডৌ কথং ঘোষাঃ কটিপাদ ভূষণকি ক্রিণাঃ জেঘাং গ্রেঘাংয়ৰ কচিরং যথা ভরতি তেষাং ঘোষাণাং নাদেন হুটং মনো যরোভৌ লোকং ইতস্ততো গচ্চস্তং জনং অন্তস্ত্যু ত্রিচতুরাণি পদানি অনুগ্রম মুগ্রবৎ প্রভীতরচ্চ

বৈষ্ণৰতোষণী।

এবং ত্যা শ্রবণকৃতং পূর্ণ মুক্তা দর্শন ক্রতমপি বক্তুমার্ভতে কালেনেতাদি কালেন রজতা ইতি শক্ট ভল্পনারাম করণাচ্চ কিঞিৎকালে গতে সতীতার্থ: তৃণাবর্ত্ত বধ্বেত্ত্তর কালীন এক একংয়ন ইত্যুক্তবাৎ একান্দেহি শিশোঃ পাদব্রু দৃশ্যতে বলিইস্যুক্ত অমধ্যেহিপি ব্যুক্তিক্রম কথনং তৃ হুইবধাদৃত লীলাগ্ব সাধারণ্যেন কচিদাবেশেনচ। গোকুলে ব্রুমধ্যে ইতি তত্ত্রিব তন্মহামধ্র লীল্যা তত্রত্যানাঃ মহাজাগ্যং বোধয়তি এবমগ্রেহিপি বোধাং। রাম স্কলীল্যা গোকুল রমণাং কো ব্রুমা উশশ্য তাবিপি ব্যুক্ত গীলামাধুর্যোণ বশীকরোতীতি। কিন্তা প্রথম রুত্ত প্রশাস্ত কেশ বিলাস যুত ইতি। যহা অংশবো যে প্রকাশস্তে মম তে কেশ সংজ্ঞিতাঃ। সর্ব্বজ্ঞাঃ কেশবং তত্মানামাহ মুন্নিসভ্রমা ইতি। ভারতরীত্যা তত্তাহিপি দেদীপ্রমানত্যা বিবক্ষিত ইতি কেশবঃ। তাবিতি রিঙ্গণ লীল্যা জগননোহরতা অভিপ্রেতা কেশবস্য পশ্চারির্দ্দেশঃ অফুল্বত্বেন হে তাতেতি কথ্যবাল্যলীলা বিশেষ ক্ষরণেন প্রেমবৈবন্যাং। স্পালনং সম্বোধনং। যহা তাত্স্য প্রীনন্দ্স্য গোকুল ইতি ভ্রথবিহার স্বাছন্দ্যং দ্র্শিতঃ॥ ১৫॥

অষ্ক্ৰোতি। স্বীস্পত্তী কৃটিলং গছভোবিতিচ বিদ্বালীলায়ামপি বলিষ্ঠাইং দ্যোতয়তি অভিনুম্মামিত্যাদিষু কমলাদি রূপকা-প্রায়োগং স্বস্য তদ্ভিক্তম ক্রেঁ। কৃচিচ্চ তং প্রয়োগ স্বন্যয় তদ্বারাপি ক্রেঁই কি জ্বেঃ। ব্রহ্ময় কর্দমেমিতি প্রায়োগান্ত গোর-সাদি নিপাতেন প্রায়ণসা পদ্ময়ন্ত্বাং বহুরফ স্থান বাহুল্যাং লোকং ক্ষিদাগতং মুগ্ধবং গ্রহ্জনং মধৈবাম্কত্য পশ্চাদন্যং জ্ঞারা প্রভীতবং মাত্রোবন্তিকম্পেয়ত্বং প্রশ্বদান্তীত্বাধিকোন বাল্যলীলাসেষ্ঠিবং বোধিতং। বতি প্রত্যাম্ব্র্থানোম্ধ্যে বালং তথৈব লীলাবেশেনেত্যেইঃ। স্বন্ধিতঃ। যথা ঘোষো ব্রহ্মেন ত্রত্যা স্থেষাং প্রকৃষ্টি র্যোধিঃ ঘণ্ডো বিশ্বণ্যা মহাশ্র্যাক্ষিত্যাল্যচ্চ শক্ষৈ-

ক্রমসন্দর্ভঃ i

কালেনেতি প্রাচীনলীলেয়ং। নামকরণস্য শতভ্য প্রয়স্তাহে নির্ণয়াৎ। তৃণাবর্ত্তবধ্স্য বার্ষিকত্বাং। অস্য বর্ষাভ্যস্তবে চ সম্ভবাং॥১৬॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবতী।

কালেন ব্ৰছতেতি। ঐশব্যমিশ্ৰা ক্ষস্য প্ৰোচ্য বাল্যস্য মাধুৱীং। কেবলামেব তাং প্ৰাছ নিত্যভাষ্যামূপাসকৈ:॥ ১৫ ॥ অভিবু যুগ্মম্ফুর্যোতি। জাত্মভাং সঞ্চলনেন অভিবু গাৱাকৰ্ষণাৎ সরীস্পজে কুটিলং গচ্ছতে ব্ৰজকৰ্দমেষ্ গোৱস গোৰৎস মৃত্যাদি-কৰ্দ্ধিত ব্ৰজালণেষু। ঘোষাণাং গোপগোপীনাং প্ৰঘোষো হো হো হো ইতি মুখক নতালিকোলোষ:। তেন ক্চিরং যথা স্যাত্তথা যতন্ত্রাদেত্যাদি। ঘোষাং কিছিণ্য ইতি স্বামিচরণাঃ। লোকং ব্ৰজপুরস্ক্রীজনং কিছিদাগতং মুদ্ধবং মাতরং মদৈবাহুস্ত্য পশ্চাদন্যং জ্ঞাখা মাত্রোবস্তিক্মপেরতু। বতিপ্রত্যন্ত্রাদ্বথান্যা মুগ্ধাদি বালস্ত্রেধিব লীলাবেশেনেতার্থঃ॥ ১৫ ॥

ভদা চ তরো মাতরৌ নিজস্থতে দোর্ভ্যামুপগুল্ধ প্রমোদং যযতুং। নিজ নিজেতানুক্তবাৎ তৌ ঘাবপি প্রতি তরো ছারো: স্থত-বৃদ্ধিং। তে বে প্রত্যেব তরোরপি মাতৃবৃদ্ধি বুধাতে। স্থানা বাংসল্যোগ রূপরা সুবস্তো ছগ্ধপ্রাবিস্তনে সভ্যো। স্থান্তর কিং ন স্থানমিতি নাবেন পদ্ধ এবালরাগতুলাতেনাপি ক্লচিরো। মুথমিত্যেকত্বং অস্ত লাল্যমুথাপেক্ষরা মুগ্ধং মনোহরং স্থিতং মত্ত প্রমাণতঃ

কিয়দিন গত হইলে গোকুল মধ্যে রাম ও কৃষ্ণ ছুই জনে জামুদ্বয়ে তথা হস্তহরে ভর দিয়া চলিতে চলিতে বিহার আরম্ভ করিলেন॥ ১৫॥

তাঁহারা উভয়ে স্ব স্ব পদ্ধয় পুনঃ পুনঃ আকর্ষণ পূর্বক কটিভূষণ ও চরণ ভূষণ কিঞ্কিণীর নিনাদে ক্লচিব রূপে বারস্বার চলিতে ২ ব্রজকর্দমে যাইতেন, সেই কিঞ্কিণীর শব্দে জাঁহাদের মানস সহর্ষ 'হইত, কথন ২ ইতস্ততঃ গমনকারি লোকের পশ্চাৎ ২ তিন চারি পদ গিয়া মুশ্ধ ও প্রভীতের ন্যায় তন্ধাদ হৃত্যমনসাবসুস্ত্য লোকং মুগ্ধপ্রভীতবন্ধপেরজুরন্তি মাত্রোঃ ॥ ১৬ ॥
তন্মাতরো নিজন্ত হিণারা স্মুবন্ত্যো প্রাঙ্গরাগ ক্রতিরাবুপগৃহ্ম দোর্জ্যাং।
দ্বা স্তনং প্রপিবতোঃ স্মুখং নিরীক্ষ্য মুশ্ধস্মিতার্লক্ষনং যযতুঃ প্রমোদং ॥ ১৭ ॥
যহাসনাদর্শনীয় কুমারলীলাবস্তর্জি তদবলা প্রগৃহীতপুটছঃ।

वीषत्रशामी।

মাত্রোরত্বি সমীপে উপেয়তু: উপজ্ঞতু:॥ ১৯॥

তদাচ তলাতনৌ নিজস্তা ে দোর্ভ্যামুপগৃহ প্রামোদং যয**়:। কথং ভূতে শ্বণমা রুপন্না সুবস্তো** পরঃপ্রপন্নোধরে সভ্যো পক্ষেন অঙ্গালেণ রুচিনৌ কথস্তুতং মুধং নিরীক্ষা মুধ্বং মন্দং স্মিতং যন্মিন্ **অন্না দশনান্দ** যন্মিন্ **তচ্চ তচ্চ ॥ ১**৭ ॥

যহি অন্নানাং দর্শনীয়া: ,কুমারলীলা যােয়ান্তথাভূতো জাতো তদা অন্তর্জ ব্রহমধ্যে তদ্বলা ব্রহাসনা: তৌ প্রেক্তঃ প্রেক্-

देवकदरङावना ।

क्ठितः गथामार्गः उमा भाषमा एजन वा अक्टाईन नामन । मसमना । १ ४ ।।

প্রেলা ব্রজকর্দন এবাদ রাগত্তেন কচিরৌ। ক্ষচিরত্বঞ্চ স্থানরে কিং ন স্থাপরমিতি ন্যারেন সরসিজ মন্থ্যিত্বং শৈবলেনাপি রমাং
ইত্যাদিবৎ বিশেষতপ্ত বাল্যদীলারাং তদাদেরের শোভনত্মিতি। নিজৌ স্থারৌ স্থতৌ ইতি তরোহৌ প্রত্যের সেহভর উক্ত নিজ
নিজ্যের ক্রমাং। অত্যুএব প্রকর্ষেণ স্বেচ্ছরা কদাচিন্মাত্ বিপর্যারেণাণি পিছতোঃ তানং দলা তত্তদন্তরা মুধং নিরীক্ষ্য সম্যাবলোক্যাচ
অত্যুএব প্রকৃষ্টং নেনং বিরিকো নামং স্থাপ ইত্যাদি বক্ষ্যমাণাম্পারেণ তত্তদানন্দতোহণাধিকতমং মোদং প্রাপ্তবত্যো। স্থ হর্বে বিসরে
বা। মুধ্মিত্যেকত্বং স্ব স্থ লাল্য মুধাপেক্ষরা। অন্যাবৈঃ। বন্ধা মুধ্বং স্থানর বিতং ব্র প্রমাণতঃ সংখ্যাতশ্রেরা দশনা ব্র তচ্চ
ভাচত । ২৭ ।

অথ কিঞ্চিত্ত হোহতি হৈছে গ বল বৃদ্ধি প্রাক্ট্যাদিত নতে চাছবিল এক্সধ্যে বিহরতাং সর্বাদায়ণি এক স্ত্রীণামত্যানলো জনিত ইত্যাহ বর্তীতি । অলনা দর্শনীয়ে ত্যাদিকং তৎ কৌতুকে তাসামের প্রাধান্যাৎ। বংসৈত্ত কৈ বছত্বমেক বংস পরিত্যাগেন মূহর্বৎসান্তর গ্রহণাৎ একদৈর ত্রি চতুঃ পুচ্ছগ্রহণারা। প্রশবেদ ক্লাচিদ্ধি পুচ্ছত্যাগ্যে নিরস্তঃ। অতএব স্থানে স্থানে হস্ক্র্য্যাণী অত্এব প্রকর্বেণ-

ক্রমসন্দর্ভঃ ।

প্রসঙ্গেনাবেশেন চ ব্যক্তিক্রম: সম্ভাব্য:। প্রপিবতো: স্তন: দম্বা তত্তদন্তরা মুখ: নিরীক্ষ্য চ ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥

ঐবিশনাথচক্রবর্তী।

সংখ্যাত্রশ্চারা দশনা যত্র ডচ্চ ড্চ্চ ॥ ১৭ ॥

যহি কিঞ্চিৰলাধিক্য প্রকটনে সতি অন্ধনানাং আ সমাক্ প্রকারেণ নর্ধনীয়া অতি চিন্তাক্ষিণী কুমারস্থন্ধিনী লীলা যথো তথাভূতা বভূতাং তং তদা অবলা তৌ প্রেক্ষন্তঃ প্রেক্ষমাণা ল্লন্তঃ। কীদৃশৌ তাজাং গৃহীতপুলৈ বৃত্তৈ রিভততক আক্রমানাণাবিভি। নরানানাং বৎসানাং পুজান জালুচংক্রমণেন প্রাণ্য কিমিদমিতি সাক্র্যং মৌদ্ধোন যদা কর্তনেন মুহীক্তা গৃহীত তদা
বৎসৈ কথার পলায়তে। ততক্ত মৌদ্ধেন মৃষ্টি মত্যজ্জে প্রভুত ভরেন দৃদ্ভরীকুর্ক্তে ভূতনে স্বন্মাণে ক্লিম্বে বিলোক্য

হ'ইয়া জননীদের সমীপে প্রত্যাগমন করিতেন ॥ ১৬ ॥

মাতৃত্বয় আপন ২ তনয়কে বাত্ বারা উত্তোলন করিয়া পরম হর্ষ প্রাপ্ত হইতেন। সেহভরে তাঁহাদের পরোধর চুত্ত্বে পরিপূর্ণ হইত। পদ্ধ ও অঙ্গরাগে ক্রচিরাঙ্গ বালক চুইটাকে ব ব বাত্ বারা আলিঙ্গন করিয়া তাঁহারা শুন দান করিতেন এবং যশ্বন শিশুরা শুন পান করিত তখন ঈবৎ হাত্ম ও অল্প দশনে চুশোভিত বদনের দিকে একদৃষ্ঠিতে চাহিয়া থাকিতেন। ১৭ ।

তদনত্ত্ত্ব যে সময় রাম কৃষ্ণ উভয়ের কুমারলীলা অসনাগণের দর্শনযোগ্য হইল, সে সময় ঐ ছই বালক ব্রহ্মধ্যে বৎসগণের পুত্র বরিতে আরম্ভ করিলেন,ভাহাতে সেই সকল বংস ধাবমান হইয়া ইত- বংসৈরিভস্তত উভাবসুরুষ্যমাণো প্রেক্ষ উজ্বিতগৃহা জন্মরু র্হসন্তাঃ ॥ ১৮॥
শৃন্যামিদং ট্রাহিজলবিজকউকেভাঃ জীড়াপরাবভিচলো স্বস্তুতো নিষেক্ষুং।
গৃন্থাণি কর্ত্বপি যত্ত ন ভজ্জনতো শেকাত আপতুরলং মনদোহনবস্থাং।

व्यथत्रवामी।

মাণাঃ বিশ্বত গৃহক্বত্যা হসস্থো জন্ধবুঃ। কথভূতৌ ভাভ্যাং প্রগৃহীতানি পৃচ্ছানি যেষাং তৈ র্বংগৈ রিভন্তভোহতুক্যামাণৌ॥ ১৮ ॥ অতি চপলৌ ভৌ শৃঙ্গাদিভ্যো নিৰেছুঃ গৃহোচিভানি কর্মাণিচ কর্ন্তুঃ কর তদা তক্ষমস্তৌ ন শেকাতে যদা অলং মনসোহনবস্তাং

বৈঞ্চৰতোষণী।

ক্ষমাণাঃ অভএব, ভ্যক্তং গৃহং উত্তত্য ক্বত্যং কিখা প্রেক্ষণার্থং তত্ত্ব তত্ত্ব সর্ব্ধ ব্রজে পরিভ্রমণেন গৃহমের যাভিন্তাঃ হনন্তঃ অভ্যত্তাং। কিং বা অহো বলিষ্ঠতরৌ ইতি তৌ পরিহসন্তাঃ তণ্টিকরপ্যাক্ষর্মাণ্ডাং॥ ১৮॥

তত্তাধিক বরোবল প্রকটনেন ক্রীড়া লোলতয়া মাজোরপি মনঃ প্রেম বিহ্বলং চক্রতু রিত্যাহ শৃঙ্গীতি। যতঃ ক্রীড়াপরৌ অতঃ শৃঙ্গাদীন্ ধর্তু মতিসর্বৈধ্যী তেভ্যো নিবেদ্ধং নিবারয়িত্য। বহা শৃঙ্গাদিজিঃ ক্রীড়াপরৌ অতত্তেত্যো নিবেদ্ধং ন শেকত্য। সন্ধিরার্যঃ। ক্তঃ অতি চলৌ পরম চপলোঁ। তর শৃঙ্গিলো র্যাদরঃ লংষ্ট্রিণঃ ক্রুরাদরঃ বানরাদরো বা অসয়ঃ ধঞাাঃ। পাঠায়রে অহয়ঃ সর্পাঃ বক্সানাং সম্বরণদি সম্ভবাৎ ইদমেব যুক্তং বিজ্ঞা মর্রাদরঃ। অপক্ষেন সদা নিবেধেহন্তস্যাশক্যতা তাড়নাদাববোগ্যতাচ। তথা শৃঙ্গানিভ্যো নিবেধস্যাবক্তকতা সাচ মেহাকুলতয়া অপার্মে বাপনেনচ বাখাতেগেতিচ রোধ্যতে। তক্ষমনাত্ত,তদীয়তয়া জাতসত্তেপ্রকাচ ক্রতামাবন্যক্ষণি তত্তএব কর্ত্যং ন শক্যতে। অত্তরে মনসঃ অনবস্থাং অন্থিরতাং অনমত্যর্থমাপত্তুং এতচ্চ প্রভাবৎ পরাণাঃ ক্রমনানাং তেবাং তদর্থ কর্মণা চিন্তাবৈদ্যামিল। চাপলাখ্যসক্ষারি তাব তয়া স্থামিনং বাংসল্যাব্যঃ তক্তবৃন্দ ছর্ম ওং তাবং পৃষ্ণৎ তৎ সমাধি নিঠাতোহপ্যংকর্মং ভল্পতি। এবনেব ব্যাখ্যাতং গৃহসৌধ্যস্য পরাকাঠা দর্শিতেতি। তচ্চাপ্রে প্রীত্রন্ধ স্বত্যাদ্যান্যার্থাবেশ নিবেদ ব্যন্ধার্থ ক্রমণ প্রবাদ্য তব্য ক্রাম্বান্ত বির্বাহ্য তলয়া প্রণাদ্যা বালতার। বিলাবেশ ব্যন্তমেব হিন্তা ক্রমার্থ ক্রমার্ক্তার্থানি তারাত্র প্রত্যাদ্য নিবেদ ব্যান্তমেব ত্র প্রীরামক্ত্রেরারভোক্তামাসক্র্যা শোতাতার: প্রতিবিদ্যানার্যাবন্ধ ব্যত্তিয়ের ক্রান্তের বালতক্রার্ক বর্চসৌ। এক নির্দাধ নির্ক্তাবেক শক্ষাসনান্ত্রা। এক ব্রাব্রেকং প্রস্থানে শিক্তরতং। এক ক্রাম্বন্ত্রার গতাবেক দেহেই বিধা ক্রতৌ।

क्यममर्जः।

জনবন্ধাং বাংসল্য পোৰুক চাপলাখ্য স্কারি ভাবং ভদীর গৃহকর্মণোহপি ভৎ প্রেমময়ত্বেন স্থাপিভত্বাই॥

এ বিশ্বনাথচক্রবর্তী।

হুত্তনাছংসাদপি হুর্কালৌ যুবামিতি হসত্তো ধল্পেন পুঞ্ছং ত্যাক্সমাসভূরিতি ভেন্নং ॥ ১৮ ॥

অতিচলোঁ তৌ কুলাদীন ধর্ণ চলতোঁ তৈঃ সহ জীজিত্মিছতোঁ বা তৌ তেজো নিষেধ্ং গৃহোচিতানি কর্মানি চ কর্ত্য যা বাদা তজ্জানো ন লেকতু তলা মদসো হনবছাং চাশলাং বাংসলাঃ ছারিপোষক সঞ্চানি ভাষাং আপত্য। তত্র পৃথিগো র্যাদরঃ দাই শ ক্রাদরঃ বিজাহ পশ্লিশঃ॥

ন্ততঃ আকর্ষণ করিয়া লাইয়া যাইত। তদ্দর্শনে ব্রজাসনাগণ কেছিক বশত গৃহকর্ম বিশ্বত হইয়া ছাত্র করিতে ২ সাতিশয় হুকী হুইতের ॥ ১৮॥

হে রাজন্! আপনাদের ছুইটা সন্তান অভিশয় চপল ও ক্রীড়াপর হইয়া উঠিলে তাঁহাদিগতে শৃদি, দংক্তি, সর্প, পকি, অয়ি, জল ও কন্টক দুইতে নিবারণ করিয়া রাখিতে তথা মৃহ্যাচিত তাবৎ কর্ম করিতে ছুই জননা (বংশাদা রোহিশা) অপাক হইয়া পড়িলেন, হুভরাং তাঁহাদের অন্তঃকরণ অভিশর অনুকর্মানিত হইল। পরন্ত জনমন্তর আরু কাল মধ্যেই রাম এবং হুফ স্ব স্ব বলে জাতুকর্ষণ ব্যতিরেকে পদ্মর হারা জন্মপুর মধ্যে চলিয়া ক্রেট্ডে আরম্ভ করিলেন। ভাহার পর ভগবান্

কালেনায়েন রাজর্ষে রামঃ কৃষ্ণশ্চ পোত্রজে। **অন্নউজাপুভিঃ পদ্ধিতিক্রমতুরোজসা।** তত্তশ্চ ভগবান্ কৃষ্ণো বয়সৈয় **এজবালকৈঃ। সহরামো এজন্ত্রীগাং চিক্রীড়ে জন**য়মুদং। কৃষ্ণশ্য গোপ্যো কুচিরং বীক্ষ্য কৌমারচাপলং। শৃণুস্ত্যাঃ কিল তন্মাতুরিতি হোচুঃ স্যাগতাঃ॥১৯

अधित्रवाभी।

আপত্রিতি গৃহদৌধাদ্য পরাকান্তা দর্শিতা।। ১৯।।

देवकवरञावनी।

একচব্যা নহাবীগ্যাবেকস্থ শিশুভাপতে। এক প্রমানে লোকানাং বেদবৃত্তোচ মাহুৰো। রুৎমন্ত জগতো গোপো সংবৃত্তো গোপদাবকো। সংবৃত্তা ব্যতিষকাভিঃ ক্রীড়াভিরতিশোভিতে। অস্ত্রোস্ত কিরণপ্রতে চক্রপ্র্যাবিবাদরে। বিদর্পত্তো তু সর্প্রত সর্প্রতাগ ভূপাবৃত্তা। বেজতুঃ পদ্ধানিকা দৃথ্যো কলভকাবিব। কচিছ্রম প্রদিয়াকো ক্রীয় প্রোক্রিতা কচিং। তৌ তত্র পরিধাবেতাং কুমারাবিব পাবকী। কচিছ্রাম্বভিরাক্তিইঃ সর্পমাণো বিবেজতুঃ। ক্রীড়ভৌ বংসশালাম্থ শক্ষমিয়াস মুর্দ্ধজো। গুড়ভাতে প্রিয়া কুরাবাননা জননো পিতৃঃ। জনক বিপ্রক্রোণো প্রহ্মবেটা কচিং ক্রিং। ত্রু তত্র কৌতৃহ্গিনো মুদ্ধজ বাাকুলেক্ষণো বেজতুশুভক্রবদনো দাবকো মুক্মারকাবিতি॥

এবম্ংকঠনা বৃণপদিব বর্ণনিত্মিছে: শীজমেব নিঙ্গণ পাদ ব্রজ্ঞারোরাদিম মাদিমং ভাগং বর্ণনিত্ম পুন তজনীলা মাধুনী বিশেষ অন্তর্নারাদিন মাদিনিং ভাগং বর্ণনিত্ম ভাগমিন বর্ণনিত্ব প্রত্যাবর্ত্তে কালেনেত্যাদিনা অল্লেনেতি। বন্ধ বন্ধস্যাপি বৃদ্ধি বলাতিরেক প্রকটনাং অন্তর্ধানি ভূমি বর্ধনমপ্রাপিতানিং কান্নি বেবু তৈ: পদ্ধি: পলৈনোজ্লা গোক্লে বিচক্রমতু: ব্রমতু: অঞ্চলেতি পাঠেইনারালেন বিচছিবাই। গোরজে ইতি পাঠে গোলক্স্যাক্তি ধন্তেন্তি বংসাচ তস্য মনোহরত্বং পবিত্রত্বঞ্চ বোধনিত্বং হে রাজস্ক এবে সর্ক্তেতি ভ্রীলা মাধুনী মহিধবই ব্যাপান্ত্রত্বত ইতি ভাবং॥

তদেবং সাধারণ্যেন তয়েররীলাং বণিয়িত্ব। পুন: প্রীক্লণ্ড সম্বন্ধেন রামভাপি তাদৃশত্বং ব্যঞ্জয়তুং তস্য [বিশেষতঃ দর্ম বন্ধ বন্ধ মনো মোহন লীলা বর্ণনেন প্রাধান্যং বকু মৃষ্টি ওতলিতি। তু ভিল্লোপক্রমে। ক্লেণা ভগবানিতি স্বয়ং ভগবন্ধেন স্বভঃ প্রধান্যং সহ রাম ইতি লীলাতোহিপি বোধরতি অথচ ভগবান্ নিজ্ঞ ভগবন্তা সারমাধুরী বিশেষ প্রকটন পরঃ ক্লেণা সর্ম জনাকর্ষক মাধুর্যঃ সহরাম জ্যাক্র্যাকর্যকঃ। রামেতি ভস্য পর্ম রমণ সাহায্যাদব্রেব তরিক্লন্তি মর্য্যাদা পর্যাধ্রিত্তি ভাবঃ। তত্তাদৃশং সন্নিত্যর্থঃ। বর্ষস্যঃ স্থিভিঃ সহেতি মিখং প্রণয় বিশেষণ ভাদৃশ লীলাসেষ্টিবং দর্শিতঃ। তত্র বোগস্ত্রা সমবয়ত্বং ক্লার্থশিক্ত্যা সমান গুণ ক্লাতি শীল বাবসায় বেশব্রু ধ্বনিতং তথৈব স্থিত্বাপ্রধান প্রত্তি ভাবঃ। তার হিত্র ব্রুস্য ভাদারীয়ত্বেন প্রসিদ্ধস্য ত্যা ব্রুজ বিশেষ্ট বালকৈন্চিক্রীড়ে চিক্রীড় ম

ভাতংক্রীড়োরাসিতচিত্তা ভল্পা তন্মাছু: স্বেষামণি প্রেমবিনোদ বিশেষার মিথঃ সংমন্ত্রা তদ্যাং চুক্তরিবেতাাহ ক্ষপ্তেতি। গোণাঃ প্ররেষা বৃদ্ধান বৃদ্ধান ব্যক্ত পৃণ্ডাঃ পৃণ্ডাঃ বৃদ্ধানত করিছে হা বিলাঃ পৃণ্ডাঃ বৃদ্ধানত করিছে বিলাগি বিশেষার মিতি প্রেম কৌতুক্তরে বিলাগি বৃদ্ধানত করিছে বিলাগি বৃদ্ধানত বিলাগি বিলাগি বৃদ্ধানত বিলাগি বিলাগি বিলাগি বৃদ্ধানত বিলাগি বিলা

annad:

পুন রিম্পণ পাদব্রস্থ্যা লীলয়োরন্তিম মন্তিমং ভাগং বর্ণস্থিত্ মাহ কালেনারেনেতি।
সামোন করে। স্থানী মৃত্যু বিদেষতঃ শুকুঞ্জীলামাহ। তত্তেজাদিনা॥ ১৯॥

জীবিশ্বনাগচন্দ্রবর্তী।

অন্তর্তানি ভূমিবর্ণনাপ্রানি জান্নি বের্ তৈঃ পড়িজাছ সংধরণং বিনৈবেতার্থঃ ওজসা অঞ্চলেভিচ পঠিঃ ম সহরাম ইতি গব্যসোরণাদি শীলারাং কুকভৈব প্রাকান্যাৎ ৪ ১৯ ৪ .

প্রীকৃষ্ণ রাম সহ মিলিত হইয়া সমবয়ক্ষ ভ্রেষাল্ডদের সহিত জীতার প্রস্তুত হইলেন। তদর্শনে ভ্রেষালনাদের পরম হর্ষ হইল। গোপীগণ জীকুকের মনোহর বাল চাপন্য অবলোকন করিয়া সকলে মিলিয়া তদীয় জননীর সমক্ষে আসিয়া বলিতে লাগিলেন। ১৯॥

বংসান্ মুঞ্চন্ কচিদসময়ে জোশ সংজাতহাসঃ
স্তেমং স্বাস্থ্যবিধিপয়ঃ কল্লিতৈঃ স্তেম্যোগৈঃ।
মৰ্কান্ ভোক্ষ্যন্ বিভন্নতি সচেম্বাত্তি ভাণ্ডং ভিনত্তি
দ্ৰব্যালাভে স গৃহকুপিতে৷ যাত্যুপক্ৰোশ্য তোকান্॥ ২০॥ -

क्षित्रचारी।

ক্ষচাপলা চৌর্যাণি সহৈবাধিল সন্মত:। প্রজন্মতা: সমাগত্য গোপো। গোপো মুদং দত্য:। অসময়ে অদোহনকালে ক্রোল-সঞ্জাতহাস:। তেয়ং চৌর্যার্জিতং নতু দত্তং তত্রাপি স্বাত্ন নেতরং। দ্বিচ পয়্চ দ্বিপ্রোহত্তি কিঞ্চ ভৌক্ষান্ মর্কান্ প্রতি বিভজ্ঞা দ্বাতি তেবাং মধ্যে তৃপ্তত্মেন স কোহপি নাত্তি চেৎ তহি ভাত্তং ভিনত্তি কচিদ্ত্রস্গালাভে সতি সং গৃহান্ ধক্ষামীত্যেবং কুপিতো বাতি যদ্বা সগৃহা গৃহিণ: তেভাঃ কুপিতত্তেষাং তোকান্ পর্যাহাদির স্বপ্তামুপক্রোশ্ম রোদমিন্বা যাতীতার্থ:॥ ২০॥

देवस्वरकावनी।

তদ্বথাছ ব'ৎসানিতি সার্দ্ধধেয়ন। তত্র পূর্বার্দ্ধনেকং বাক্যং অবতারিকা বিনোদায়তু পৃথগিব ব্যাখ্যায়তে। তত্র প্রথমোপদ্রবমাতঃ বৎসান্ মুঞ্চন্ বহুত্বং স্বেষাং বৈষ্ট্রা বিশেষ বোধকং নমু প্রভ্যুত বৎসপালায়মানত্বং ধ্বিদং কো মু দোবং তত্তাহঃ অসময়েহদোহন-কালে নমু বালকেনাজ্ঞানতঃ প্রলুইদং ক্লতং অয়শোচধ প্রতিগৃহং বিদ্যমানা বহবো লোকা ক্ষ্মীরন্ ভত্তাহঃ কচিৎ ক্লত্যান্তর ব্যগ্র-তথা যদা তে রোদ্ধুং ন শকুবৃত্তি তদৈবেত্যর্থ:। এবঞ্জেটি কথং নভীষয়ধ্বে তত্রাচং ক্রোশে সম্যগ্জাতহাসঃ আন্দোশনার্থং ইতি পরম মোহনীতোক্তা। বত কিমর্থ বৎসান্ মুঞ্জেত্তত হসস্তাঃ সাহকরণমাহঃ দধি পয়োহতীতি তদর্থমেব। গৃহজনানিতভতো ধাবয়িতুং বৎসান্ মুঞ্জীতার্থঃ আহো কঠিনা তার্হি কথং স্বয়মেব পূর্ব্ধং ন দখেতাত্র সন্মিত জ্রবিলাদেন শনৈরিবাছঃ তেয়মেবাত্তি নতু দত্তং অত-ব্রদ্দত্তমপি তাদৃশং ন ভূঙ্তে ইতি ভাব:। অন্নি কা বো হানি যত ন্ততঃ পতিত ভাওদা গোরদমাত্রদাতাল প্রমাণ পানে ততাহ গৃহ-স্বাম্যাদার্থং যত্নতঃ স্থাপিতং স্বাদ্বেবান্তি তত্রাপাথ কাং লেনৈবান্তি। অহো পরম চতুরাণাং বো গোরদং অদাবশিক্ষিত চাতুর্ঘাশ্চারয়ে-দিতি ন স্ভাবরাম:। ত্রাহ:। ক্রিতে: পূর্বমদৃষ্টাশ্রতৈরধুনা অব্ট্রাব রচিতৈ: তেয়োপালৈ:। অয়ি যুহৎ পিতৃপিতামহাদীনাং পুণা ফল মেবেদং যদয়ং পরম ক্লপণানাং অদত্তমপি ভূঙ্কে ভহি কথমিব পশ্চাদপি নাহ মোদধ্বে ততাত্ মর্কানিতি বরং। সথি গণায়িত: স্বয-মন্তু। অহো ভক্ষান্ বভোজনাং পূর্বমেব মর্কটান্ পর্বান্ প্রতি বিভাজা দদাতি কিঞ্চ তেবাং বনাৎ ফলাদি তৃপ্তত্বেন যদ্যেকো নাত্তি তর্হি স্বয়মপি নাজি ভাওক ভিনতীভার্থ:। এতত ুসর্কাং তাদাং । রাগত বানর বৃন্দায় নবনীতং দাতৃং নিজোপদেশস্যাকরণ কোপে-নেতি শত্যতে। যথা স পরমহ্রীল: কদাচিত্বন্না যত্নেন বহু ভোজিতক্ষেৎ স্বয়ং নাত্তি তহি ভাগুং ভিনত্তি তদ্দোষমারোপ্য ইতি ভাব:। নমু কথমেবং জ্ঞাতেহপি ভাণ্ডানি ন গোপায়থ তন্মাদ্যু য়মেব তথা ক্রীড়য়স্তো। মম বালকং চপলীকুতবক্তা ইত্যান্ত: দ্রবোতি। ন ইতি পরোক্ষ নির্দেশো দর্শনেপি অদর্শনং স্কুচয়তি। সম্প্রতি সৌম্য প্রকৃতি দর্শনাৎ অক্সন্তং বা সর্বং গ্রহন্তিতং জনং প্রত্যাপি কুপিতঃ সন্ তোকান তোকানি বালাপভ্যান্যপি রোদয়িত্বা যাতি দ্রবতি। তানিচ রাধাচক্রাবল্যাদীনি তল্লঘু ভ্রাতাদীনিচ জেলানি সগৃহশদ্দেনৈব বা গৃহস্থিত জনা উচাত্তে। ২০॥

क्रयमन्दर्धः ।

বংগানিতাাদি বনাৎ ক্লাদিভিত্পড়েদেন তেমু কোংপি নাবি চেৎ তৰ্হি স্বয়মপি নাবি ভাওঞ্চ ভিনৱীতাৰ্থ: ॥ ২০ ॥ শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী ।

কৃচিরং স্থানং হব্যৈতাদৃশং স্থায় সংশ্বিষ্ণশা। শ্রীৰশোদরা ন প্রাপ্তং তদস্মচাকুরমেতত্ততাঃ প্রারণ বণ্যস্থিতি ভবে গ্রা শৃণ্ত্যাঃ শৃণ্টিগ্য স্থাস্ত্র চরিত্র প্রবণার্থং গৃহকার্য্য শতমপি তাজত্তা তত্মাতে উপালস্ত্রন দান মিষেণ পরমানন্দমের দাত্মিতি ভাবঃ॥ ২০॥

যশোদে! ভোমার কৃষ্ণ অসময়ে (আদোহন কালে) বংস সকলকে খুলিয়াদেন, কেছ আফোশ (কোধ) করিয়া কিছু বলিলে হাঁসিতে লাগেন। চোর্য্যের নানা উপায় ক্লনা করিয়া তথারা স্থাত্ত্ব দ্বি ভূষ্ক চুরি করত ভক্ষণ করেন। খাইতে ২ আবার বানরদিগের প্রতি ভাগ করিয়া দেন, কদাচিৎ সেই সকল বানরের মধ্যে ভৃগু হইয়া কেছ ভোজন না করিলে আপনিও খান মা, ভাগু ভাঙ্গিয়া কেলেন, কথন দ্রব্যের অলাভ হইলে গৃহ্ছিত জনের প্রতি কোপ করিয়া প্রয়ন্তে শ্রাম শিশুগণকে রোদন করাইয়া প্রস্থান কুরেন ॥ ২০॥ হস্তাগ্রাহে রচয়তি বিবিং পীঠকোল্থলাদ্যৈ শ্ছিদ্রং হস্তর্নিহিতবয়ুন: শিক্যভাত্তের তদ্বি ।

ञीभवयामी ।

কলিতিতত্তেরবোগৈ রিত্যক্তং প্রপঞ্চলতি হস্তাগ্রাহ্ ইতি। তুঙ্গশিকান্থ ভাতেরু অন্তর্নিহিত দধ্যাদৌ বয়ুনং জ্ঞানং যদ্য দঃ। ছিদ্রং

देवकवरकावगी।

অহা কিমিদমপূর্ব্ধং কথয়ধ কৈ তে স্তের্বাগা ভানপি শৃথ্ম করাহং হস্তেতি। বিধিং হস্ত্রাহাকালার আদাশনের পীঠে পীঠনিবল্প বালক গলে ইতি জীবিল্লমঙ্গলাহ্যুক্তালুসারেণ বালক্ষারোহণাদি। হি নিশ্চিতং। অথ ভতেহাংশি দ্বে বক্ষত ভত্রাহং শিক্যবর্ত্তি
ভাতের দীর্ঘ সশলা লগুড়াদিনা ছিলং বচরতি। নহ করোতু পীঠাহ্যপায়ান্ দ্রতশিহস্তক্ত নিজাভীই ধারা যোগ্যতা হর্ঘটা ক্টেদপি
ভাতং তরাহং তবিং। নহ বহর ভাতের সংস্থ নিজাভীইং কথং প্রানুষান্তরাহং অন্তরিতি ভাত লক্ষণ বিশেষেণেবেতি ভাবং। অথ
কথমন্ত স্তমসি গৃহকোষ্টিকায়াং ন রক্ষত তত্রাহধর্বান্তেতি স্থাপেন মণিগণ সাপেক্ষমপি পতিতং তত্রা মণিগণ ধরণমপ্যুৎকঠিয়ব
ক্তিহি মদঙ্গ কিরণাভেদামপি যদি গাঢ়ং তরো ভবেসিতি অনেনেদমপ্যক্তং তরতি বদি ধৃত্যবিগাদ্ধং ন ভারদা ক্তিচিং কথিছিং
তমোলেশ শেবেণ কিঞ্চিদপূর্ব্বরিতং ভাদিতি চৌরভাভ মণিপরিধাপনেন ত্রাপি তত্র সাহায়াং জনো মন্যতে। গৃহস্থামিতি ছ্রিভিংমং
মণিগণেহিপ্যাচ্ছিদ্যেত তত্মাদদা প্রভৃত্তি নায়মলঙ্করণীয় ইতি তঞ্চ ভাবসন্তি। অপূর্বক্ষেদং ধৃতানর্থ মণিগণেহিপি গোরস চোর ইতি
পরিহসন্তি চেতি। অনি যদীদং সতাং স্যাং তদা নিহুতা গৃহীবৈবাত্রানীয়তাং তত্তাছং কাল ইতি। যদিং জনসন্তরতি তত্মিন্ সময় বিশেষ
ইত্যর্থ:। নহ কাসৌ তত্তাহ র্যহীতি। এবং ভঙ্গী বিশেষার্থনেবেদং পৌনকক্যং। তেতিছিতি যক্তি ভঙ্গেন পৃথক্ পাঠাং। অথবা

থীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

সধি ৰূপোদে দৃণ্ অপ্ত্ৰক্ত চৌৰ্য্য চাতুৰ্য্য মিত্যাহঃ বংসানিতি। এতং প্রেছণ্য পৃত্যগৃহেৰু দ্ধি চোরয়ামীতি মনসি কুছা গছা গত্বা গৃহান্ জনশ্স্তাং কি কীর্ম কচিদ্দিৰলে অসময়ে অদোহকালে বংসান্ মুকন্ ভৰতি। ততভেতত্ততো ধাৰতো বংসান্ পরাবর্ত্ত ন্তিত্ব তদয়পদং পৃহাল্লিংস্ত্য জনেৰুধাবৎস্থ শূন্য গৃহান্ প্ৰবিশ্য দ্ধি চোর্য়িস্থা প্ৰাৰ্ভ ইতি ভাবং। স্বস্তুসিল্লইনি স্বরে দ্ধিচোরং কৃষ্ণ আগত স্তাড্যতাং নহতামিত্যাদি ক্রোশে আক্রোশে ক্বতে সতি সঞ্চাতহাসো ভবতি। অথ তদনস্তরমেব মহামাদক হাক্ত মধুপান-বৈবক্তেন জড়ীভূতাম্বনাম পশ্ৰস্তীৰ্ণি নিৰেদ্ মণাবয়ন্তীৰ্ দ্ধিপৰোহন্তি। তিত্ৰবোৰিতা ভূঙ্কে নাপি পনায়তে অমাকং মোহিতী-কুডখাদিতি ভাবঃ। নবেবঞেদ্ধিলস্পট মিমং প্রথমমেবোদরপুরং কথং ন ভৌন্ধরণের তত্র দ্বরা হতীক্ষং ভোজিতভাভ ন বুভূকা-দিকং কিন্তু স্তেরং তেন কর্মের স্বাহ্ত স্মতশ্চোরিতমের দধ্যাদিক মন্মৈ রোচতে নতু দর্মিতি ভাবঃ। তদেবং পরোক্ষ মপরোক্ষ-৫৯তি ৰিৰিধং চৌৰ্য্যং ৰংসমোচন *ছানাভ্যাং* জ্ঞাপিতং। এবং কল্লিভৈঃ স্বৰ্তুদ্ধ্যুৰ রচিটভঃ স্বেম্বলৈগৈ স্চৌৰ্য্যাপালয়রপৰৈরপি লোষ্ট্রেকপাদিভিরপরত্মিন্ পরত্মিরপি দিনে ভোক্ষান্ অভৌজনাৎ পূর্বমেব মর্কান্ মর্কটান্ প্রতি বিঞ্জতি হার মরং ভবতাং প্রত্যেকং ভাগ ইতি বিভন্তা দদাতি। বছত্ৰ ভোঞ্চিতত্বেনাতিভৃগ্তত্বাৎ তেখাং মধ্যে স্প্ৰকোহপি মৰ্কটো নাত্তি চেন্তদা যুদ্মান্ বিনা কিংনে ভোজনে নাহ মপি ন ভুঞ্জে ইতি ছ:থেন ভাণ্ডং দ্ধিপূল্লং তিনন্তি কলাচিৎ শৃক্তগৃহে প্রবিশ্য দধ্যাদি জ্ব্যালাভে সতি সগৃহাদ গৃহসহিত জনারের কুপিতঃ তিষ্ঠ রে তিষ্ঠ খঃ প্রাতজ্ঞলদলারমেকং গৃহীজৈব চৌগ্যার্থমেয়ামি বতা দধিন আংল্যামি তালাৃহং স্বাল বৃদ্ধমেৰ ধক্ষ্যামী হ্যক্তা ভোকান্ বালাপভানি উপজ্জ নথাদ্যাঘাতেন রোদিরিতা বাতি। ক্সিংশ্চিদ্নাসিন্ গৃহে অবিষ্টঃ সন্ হস্তেন প্রহীতু মলক্ষ্যে দধিজ্ঞাতেও বিধিমুপারং রচরতি। উপযুগপরি নিহিত দিত্র পীঠারোহণেন বা উদ্থলারোহণেন বা বালক্ষারোহণেন ্বত্যর্কঃ। অভিত্রুস শিক্যবর্ত্তি ভাণ্ডেরু অন্তর্নিহিতে দধ্যাদৌ বয়ুনং জ্ঞানং বস্ত সভাওটৈকণা দর্শনেনৈবেতি ভাবঃ। অবরোপ-য়িছুম শব্যঃ সশল্য লগুড়েন ছিল্লং রচয়তি তথিও ছিল্লং কর্তুং ছিল্লেণ ধারাং পাত্যিছুং ধারুয়াচ ব্যাদাভুং খন্য বালানাঞ্মুণং প্ৰবিভুং বেন্তীতি সং। নচান্ধকাৰেহলি চৌৰ্যাদামধ্যনিত্যাকং। ধৰাত বৃক্তে হগাৰে বাদং শীৰ ভাষাক্ষমণি অৰ্ধপ্ৰদীপং রচ

অপর উচ্চতম শিক্যন্থ ভাণ্ডে যে সকল জুব্য থাকে, যাহা হাত দিয়া না পান তাহার নিকট পীঠ উদূথল ইত্যাদি লইয়া গিয়া পাড়িবার উপায় করেন,যদি আমরা শিক্যন্থ কোন ভাণ্ডের অভ্যন্তরে দধ্যাদি
কোন বস্তু প্রকাইয়া রাখি,ভোমার কৃষ্ণ তাহাও জানিতে পারেন এবং তাহা পাইরার নিমিত তাহাতে
ছিদ্র করিয়া দেন। অধিকস্তু, যে কালে গোপুগণ স্ব'স্ব গৃহকার্ম্বো ব্যগ্রচিত্ত হইয়া থাকে সেই
সময় অন্ধকারময় আগারে ভোমার বালক আপনার অঙ্গে যে মণ্ডিগণ ধৃত, আছে, যাহা ভাঁহার আপ-

ধ্বান্তাগারে প্রতমণিগণং স্বাঙ্গমর্থপ্রদীপং কালে গোপ্যো যহি গৃহক্ত্যেষু ব্যগ্রচিত্তাঃ ॥ ২১॥ এবং ধার্ফ্যান্থাতি কুরুতে মেহনাদীনি বাস্তে।
স্বেয়োপায়ৈর্বিরচিত কুতিঃ স্থপ্রতীকো যথান্তে।

औधत्रचामी ।

রচয়তি তবিং ছিন্ত রচনাবিৎ ধ্বান্তিযুক্তে গৃহে সাঙ্গমেবার্থে প্রদীপং রচয়তি বিশেষতো ধৃতমণিগণং যহি যন্মিন্ কালে॥ ২১॥ রে রে চৌর ইত্যাক্র্টো জন্নতি দ্বমেব চৌরঃ অহং গৃহস্বামী ইত্যাদীনি ধার্ট্যানি প্রাগল্ভ্যানি উপতি ভোঃ কমনীয়ে যণোদে যথ উশতি বাস্তৌ স্বর্জিতে গৃহে মেহনাদীনি পুরীবোৎসর্গাদীনি কুরুতে এবং তেরোপারে বিরচিতা ক্রতিঃ কর্ম যেন সঃ ত্বৎ সমীপে

देवकवरकावनी।

তত্তত্তাতে বুতত্তিশেষং কথং জানাতি ততাহং তদিং লক্ষণেনৈব ইতি পূৰ্কবং। নতু ভো মিথ্যা প্ৰলাপিন্যঃ কিমিদং কথয়থ মমায়ং ৰাল্কোহল্যাপি মুগ্ধ এব তত্তাহঃ অন্তঃবেব নিহিতং সংবৃত্য ধৃতং বয়নং জ্ঞানং দৰ্কবৃদ্ধি যেন সঃ। অন্যৎ সমানং। তদেবং নিগৃত পরজব্যস্য সময়স্যত জ্ঞানং হুগারোহণ ছিদ্রকরণ লক্ষণক্রিয়াধৈধ প্রাবীণ্যং সংজ্যতহাস ইতি মোহনবিদ্যাত্বং চোক্তং। তৈশ্চ সংপূর্ণেগু গৈমহাচোরত্যেকা॥ ২১॥

অথ তস্য ভয়াতিশয়ং দৃষ্টা সংক্ষেপেগৈবোপসংহরন্তাঃ কিমপানাদপি হাসায় ব্যঞ্জন্তি এবমিতার্জেন। এবং ন্তের বোগৈর্বিরচিত ক্বতিঃ রুত্রক্তাঃ সন্পুনর্ধাইটানি আসাং সম্বন্ধ বিশেবেণ পরিহসন্তীনাং বৃদ্ধনামূত্রীয়াকর্ষণাদীনি বৃত্তিগীসদৃশা নিদেশাদীনিচ কুরুতে কিং বহুনা আসাং বাজে মূত্রণাদীনিচ কুরুতে এতা মার্জয়িত্বং নিতাং ন শক্ষুবন্তি স্বয়নাগয়া পশ্রত চেতি ভাবঃ। তাহো পশ্রত সোহয়মেব নানা ইতি পরক্ষা মাহঃ স্থগ্রতীক ইতি। তদেবং প্রেমবিনোদং বর্ণয়িত্বা শ্রীয়শোদায়াঃ রেহপুবং দর্শয়িত ইত্মিতি। তাসাং সনর্ম প্রেম বিশেষময়ং ক্রোশন ক্রমাহ সভয়েতাদি। ইত্যং ব্যাথশতঃ অর্থ ভাদর্থনীয়ঃ পর্ম প্রাগল্ভাং যস্যাং সা অত্তরে প্রহর্ষোদয়েন পুশ্র চাঞ্চল্যাদি কৌত্বকন তাসাং কৌত্বক পরতায়া বিতর্কেণচ প্রহারত্বা প্রহিলিত হাস প্রারন্ত্র সহিতং মুখং বল্ল হণিত বৃক্তমিতার্থঃ। তাদ্শং মুখং যস্যাঃ সা হি এব উপালর মিচ্ছামপি নাকরোং কিন্ত বংশ ঈদ্শীয়ু ঈদৃশং ব্যবহারং কথং করোষীতি সলালনম্বাচেত্যর্থঃ। ইদ্যেব নিশ্চিত্য তাভিরপ্যাগত্য ক্রোশাহ ক্রামাত্র ক্রামাত্র ব্যা

क्रममन्धः ।

উশ্তি কমনীয় ইতি বশে রত্র রোচনানতার্থ প্রাধান্তাৎ। নহ্পালব্ধু মৈঞ্দিতি। তদ্বেতদেবাভিপ্রেত্য তাভিরপি ক্রোশনং

ঞীবিশ্বনাপচক্রবর্তী।

স্বতি। তত্রাশি প্রতমণিগণমিতি কিমপাবিদিতং ন তিষ্ঠতীতি কথং সাবধানা ন তিষ্ঠতেতি চেন্তত্রাহুং কালে ইতি। যদ্যপ্যস্ত স্থিত কলভাবণ মধুর চলন গাত্রলাবণ্যাদি মধ্যের প্রত্যক্ষ চৌর্য্য নিষ্পাদিনী মোহনী বিল্যৈবান্তি তদাপি বাল্য মৌগ্রাবশাং পরোক্ষ চৌর্য প্রিয় এবাদৌ বুধাত ইত্যত এব ক। কুত্র কিং কুরুতে ইতি বাল সহচর প্রেষণাদিনা প্রতিক্ষণ মনুসন্ধত্ত ইতি ভাবং ॥ ২১ ॥

ন কেবলং চৌর্য্যমেব কুক্তে ইত্যাহ: এবমিতি। উপতি হে কমনীয়ে স্বপুপ্ত গুল প্রবংশনানন্দিতে হে বশস্থিনি বাতৌ দেব-পূজার্থনামৃষ্ট লিপ্ত ভূমৌ মেহনাদীনি মৃত্বপুরীষোৎসর্গাদীনি ধার্ট্যাস্থাপদ্রবান্ পুরস্ক্রীজন বেণ্যুত্তরীয়া কর্ষণ বিবাহচিকীর্যা পাদ প্রহারা-দীনি কিঞ্চ তবানেন তনমেন মহতী সম্পত্তি জাবিনীত্যাহ। স্তেম রূপে রুপায়ৈ বিত্তার্জ্জনৈ বিশেষেণ রুচিতা কৃতি ব্যাপারের বেন স:। বাল্যে দি চোরস্থতি যৌবনে পরবিত্ত কল্ঞাদীন্যপি চোর্মিক্যতীতি ভাব:। স্বং সমীপে তু স্প্রতীক: সাধ্রিবাতে। তাসাং প্রেম-বিশেষনয় ফুংকার ফলমাহ সভয় নয়নং মাতা মাং তাড়ম্বিত্তিতি শক্ষা ব্যাকুলং শ্রীযুক্তং সচকিত বিহ্বল দৃষ্টির সক্ষা শোভা বিশিষ্টিং

নারই অঙ্গ, সে দকলকে আপনার প্রদীপ তুল্য করিয়া স্বীয় কার্য্য সাধন করেন॥ ২১॥

যদি কেছ চোর বলিয়া আক্রোশ করে তাহাকে বলেন তুই চোর আমি গৃহের সামী। হে যশোদে! তোমার কৃষ্ণ এইরূপে নানাবিধ ধুইতা করিয়া বেড়ান এবং মার্জিত গৃহে মল মৃত্র ত্যাগ করিয়া আইসেন। হে সতি! চোধ্য ছারাই তোমার পুত্রের সকল কর্ম্ম হর, কিন্তু তোমার সমীপে সাধুর ন্যায় থাকেন, যেন তুইতার লেশও জানেন না। হে রাজন্! গোপীগণ ঞীক্ষের সভর

ইখং স্ত্রাভি: সভয়নয়ন শ্রীমুখালোকিনীভি-ব্যাখ্যাতার্থা প্রহসিতমুখী নম্পালব্ধ মৈছেৎ॥ ২২॥ 🗶 একদা ক্রীড়মানাস্তে রামাদ্যা গোপবালকাঃ। কৃষ্ণো মৃদং ভক্ষিতবানিতি মাত্রে অবেদয়ন্॥২৩ সা গৃহীত্বা করে পুত্রমুপাল্ভ্য হিতৈষিণী। যশোদা ভয়সন্ত্রান্ত প্রেক্ষণক্ষমভাষ্ত ॥ ২৪॥

विधवसामी।

স্প্রতীকঃ সাধ্রিব আত্তে। সভরে নয়নে যদ্মিন্ তক তং শ্রীবৃক্ষং মুখক তলালোকিনীভিঃ ব্যাপ্যাতার্থা প্রথ্যাপিতাতাত কর্ম ফলা উপালকুং আক্ষেপ্তুং নৈছেং॥ ২২॥

কদাচিদপরাধান্তরে উপাণভত তদ। তু মহাদীশ্র্যমভূদিতি কথ্যন্ত্রাহ একদেতি ॥ ২০ ॥ উপালভা নির্ভংক্ত ভ্রেন সংভ্রাম্বশ্রেকণে চপ্রনিরীক্ষণে অকিণী যস্য তং ॥ ২৪ ॥

रेवकवरजावगी।

সকোচনং নাকরিষাতৈবেতি ভাব: । অত্র। জগজ্জন মলধ্বংসি শ্রবণ স্থৃতি কীর্ত্তনা; । মলমুজানি রহিতা: পুণালোকা ইতি স্থৃতা: । ইতি পুরাণান্তর বচনেন কৈমূত্যাপাতাং। ত্বক শাশ্র রোম নথ কেশ পিনদ্ধমিত্যাদি প্রকল্পিনী দেবী সিদ্ধান্তাস্থানাচ্চা। যদ্যপি তত্র ন সম্ভবন্তি তথাপি বাল্যপীলাবিনোদার্থ: মৃধৈব প্রপঞ্চিতানি মেহনাদীনীতি জ্ঞেয়ং রোচমানতার্থ প্রধানোহত্ত বশ ধাতু: ততঃ কমনীবে ইতি ব্যাগাতং॥ ২২॥

পুনরেতৎপূর্নাং কানপি পূর্ব্বদহৃত লীলামমুস্বত্যাহ একদেত্যাদি। তে তথাবিধাং রামাদ্যা ইতি তেষু জ্যেষ্ঠবর্গং বোধয়তি অতএব শ্লেষেণ গোপায়ন্তি শ্রীব্রজেম্বর্যাজ্ঞ্যা সর্বতঃ শ্রীকৃষ্ণং রক্ষন্তীতি গোপাশ্চ তে দারকাশ্চ॥ ২৩॥

প্ৰায়নমাশস্ক্য করে গৃহীয়া হিতৈষিণীতি। তত্ৰোপাণস্থন তাড়নাদিক মপি হিতমিতি তত্জাতীয়দ্য প্ৰেয়: প্রমাশ্র্যথং ব্যঞ্জিতং প্রমিতি কেবলং তদ্যা এব তদ্যোগ্য মাড়ু: প্রম হঃখ ভয় প্রদেনা মাপরাধেন তাড়নমপ্যাশস্ক্য ভয় সংভ্রাম্ভ প্রেক্ষণাকং অতঃ কেবল মভাষতৈব নতু তাড়িতবতীতার্থ: ॥ ২৪ ॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

ক্তনিতি ভাব:॥ ২২ ॥

শ্ৰীবিশ্বনাপচক্রবর্তী।

মুথমালোক যিতৃং শীলং বাদাং তাভি বাথিনাতো হৰ্থঃ শ্ৰীকৃষ্ণ ধাষ্ট্য'দৰ্শন শ্ৰবণ বিবিধ ভাবশোভিত তলুথাবলোকনোথ আনকোন ঘটৈত সা। এত এব প্ৰহ্নিতমূধী তাসাং স্বস্ত চানন্দেন প্ৰকৃলিতমূখী উপালকু মাক্ষেপ্তুং নৈছেদিছোমপি নাকবোৎ। মং স্থত-ধাৰ্ষ্টোনেমা আনন্দে নিমজ্জ ও তথ স্চমুৱো মামুপি নিমজ্জ বিভিত্যাকা জক্ষেতি ভাবঃ॥ ২২॥

পুরন্দ্রীণাং স্তনং বাংসন্য রসাস্বাদফলকং সমাপ্য সহচরাণামনি স্তনং বিশ্বয় রসাস্বাদোদক্যাহ একদেতি। দশ্ধ: তেথে ১ছুপা-লম্ভং প্রোচ্য প্রাহ মৃদ্যে ১ শনে। উপালম্ভং জনন্যেতি স্বয়ে প্রেমেতি হেতুতাং॥ ২৩॥

করে গৃহীবেতি প্লামনাশক্ষা উপাল্ভা নির্ভর্পা। হিতৈষিণীত্যপাল্ভ তাড়নাদাবপি প্রেয়: পোষ এব নতু তত্র দ্বোর:। প্র মিতি মাতুরিয়ং রীতিবেব নত্বনীতি:। ভয়সমাত্তেতি প্রমেশরস্যাপি তাদৃশত্বং প্রেমবঞ্জ দ্যোতন্যা ভূষণ্মেব নতু দ্যণ মিতি ভাব:॥ ২৪ ॥

নয়ন ও ত্রীযুক্ত বদন অবলোকন করিতে ২ এই প্রকারে তদীয় মন্দ কর্ম কুকল বারস্বার ব্যাখ্যা করিয়া বলিলেও যশোদা কেবল হাস্তমুখী হইয়াছিলেন, পুত্রকে ভর্পনা করিতেও তাঁহার বাসনা হয় নাই॥ ২২॥

পরস্তা, কৌন এক সময় অন্য প্রকার অপরাধ ঘটাতে যশোদা শ্রীকৃষ্ণকৈ তিরস্কার করিলেন, তাহাতে একটা স্থমহৎ আশ্রুষ্ঠা প্রকাশ পাইল অর্থাৎ এক দিন রাম প্রভৃতি গোপ বালকগণ জীড়া করিতে করিতে দৌড়িয়া মাসিয়া যশোদার নিকট নিবেদন করিলেন, মাতঃ! তোমার কৃষ্ণ মৃতিকা ভক্ষণ করিলেন॥ ২৩॥

ক্ষামি দমদান্তাত্মন্ ভবান্ ভক্ষিতবান্ রহঃ। বদন্তি তাবকা হেতে কুমারান্তেহগ্রজোহপ্যয়ং॥২৫ নাহং ভক্ষিতবানন্ত সর্কে মিধ্যাভিশংসিনঃ। যদি সত্যগিরস্তহি সমক্ষং পশ্য মে মুখং॥ ২৬॥

वीधतवामी।

অনাস্থাত্মন্ চপলগাত্র। রহ একাত্তে॥ ২৫॥

াং ভিক্তিবানিতি ন বাহুং কিঞ্জিয়া জক্ষাতে মংকুক্ষাবাদাবের সর্ব্বমন্তীতি ভাব:। সমকং প্রত্যক্ষণ ১৬॥

देवकवटङावना ।

উপলম্ভনমেব কিঞাছিদিশতি কলাদিতি। অদান্তাপান্ হে অসংবতেজিয়। রহ ইতি শ্রীরামাদীনাং সাক্ষামূত্তকণাশক্তে:। হি হেতৌ নিশ্চয়ে বা। তাবকা হীতি মিথ্যাপবাদাদিকং নিরন্তং এতে সাক্ষাম্ভিদান। ইতি নাত্রাপলপিতুমপি শক্ষ্যীতি ভাব:। নমু মাতর্ননিশৈবেতি বদন্তীতি চেত্ত্রাহ তবাগ্রন্থোপি বদতীতি অত্র চায়মিতি তৎসাক্ষাদেবাস্যোক্তৌ ন কোহপি সংশর ইত্যর্থ:। অগ্রন্থ শ্রীবস্থাদেব নন্দরো প্রতিক্রি বিলোক্ষয়াঃ পরম স্থাবেন শ্রীনন্দন পুল্বেন বাচয়িত্বা লাল্যমানত্বনচ তথা ক্রেছাব্রাং॥ ২৫॥

নাহং ভক্ষিতবানিতি শ্রীক্রম্ব বাক্যং বাল্যলীলায়াং মিথোাক্তেবপ্যদোষাং। প্রস্তুত বর্ণন প্রবণাভ্যাং শ্রীশুকাদি সাধুগণ স্থপ হেতুম্বেন গুণম্বাং। হে অম্বেতি তাড়ন শঙ্ক্যা স্নেহং বর্জয়তি। সর্ব্ধ ইত্যনেন মদগ্রক্ষোহপায়মন্যবালবদেব মন্যভাং নচাত্র বিশেষ ইতি ভাবঃ। মে মুখং পশ্র ইতি সমগ্র ভক্ষণতন্তচিক্তাপগম মননাং॥ ২৬ ॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

পুনরেতৎ পূর্বাং কামপি পূর্ব বদস্তুত লীলা স্কুত্যাহ। একদেত্যাদি এবং নিগুঢ়েতি ব্যাপারাং বদোবং ॥ ২৩। ২৪। ২৫। ২৬॥

শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

হে অদান্তাত্মন্ চঞ্চল গাত্র হে অনবন্ধিত চিন্ত। মৃদমিতি মদগৃহে কিং সিতাদিকং ন প্রাপ্নোধীতি ভাবঃ। রহ ইতি নৎ সাক্ষাদশক্তেঃ। বদন্তি তাবকা ইতি নায়ং মিথ্যাপবাদ ইতি ভাবঃ। মন্তাড়নাকাজ্জিণ এতে মদৈরিণ এবেতি চেন্তবাগ্রজো বলদেবোহপীতি। সংয়মিতি স্বংসাক্ষাদেবেতি নাত্র সন্দেহ ইতি ভাবঃ॥ ২৫॥

কৃষ্ণ উবাচ নাহমিতি। বাল্য স্বভাবেন তাড়ন ভয়ায়িপ্যোক্তি বাৎসল্য রস্পোষিকা অতএব বাৎসল্যাদীনাং রসানাং প্রেম-বিলাসমন্ত্রখাং প্রেমবতাঞ্চ ভক্তবাৎ ভগবতশ্ব ভক্তবাৎসল্যভাচ পৃথিব্যক্ত সত্য শৌচদমাদি নিতা চিনাম সক্ষেত্রণ-গণ চক্রবিবাধ ভক্তবাৎসল্য গুণাঙ্গ ভ্তাচেত্যেবং ভ্ততে মিথ্যাদয়ো ভগবতি ন দোষারত্তে প্রত্যুত নহাত্রণ চূড়ামণীভবস্থীতি বিবেচনীয়ং॥ ২৬॥

তাহাতে হিতৈষিণী ঐ জননী পুজের কর ধারণ পূর্বক তিরক্ষার করিতে লাগিলেন। হে রাজন্! মাতা হস্ত ধরিবামাত্র জীক্ষের ছুই চক্ষু ভায়ে ব্যাকুল হইল, যশোদা তাহাকে সম্বোধন করিয়া কহিলেন॥ ২৪॥

অরে চপলার ! তুই একান্তে মৃত্তিকা ভক্ষণ করিলি কেন ? এই যে তোরই দঙ্গী এই সকল বালক এবং তোর অগ্রহ্ম এই রামণ্ড বলিতেছে॥ ২৫॥ — — —

শ্রীকৃষ্ণ কহিলেন মা। আমি কিছুই খাই নাই অর্থাৎ (বাহিরে কিছু ভক্ষণ করি নাই, অত্যে হইতে আমার কুক্ষিমধ্যে সম্দায়ই আছে) ইহারা সকলেই মিথ্যা ব্লিতেছে, যদি ইহারা সত্য-বাদীই হয়, প্রত্যক্ষে তুমিই কেন আমার মুখ নিরীক্ষণ কর না।॥ ২৬॥

যদ্যেবং তহি ব্যাদেহীত্যক্তঃ স ভগবান্ হরিঃ। ব্যাদতাব্যাহতৈখব্যঃ ক্রীড়ামমুদ্রবালকঃ॥ ২৭॥ সা তত্ত্র দদৃশে বিখং জগৎস্থাসুচ থং দিশঃ। সাজি দ্বীপান্ধি ভূগোলং স্বাযুগীন্তারকং।

वीयत्रवामी।

वारिष भूषः व्यमात्रवि वाषि भूषः व्यमाति व्यान्॥ २१॥

তত্র তান্ত্রন্মুথে বিশ্বং দদ্শে দদর্শ। তং প্রপঞ্রতি। জগং জলমং স্থানু স্থাবরং ধং অন্তরীক্লোকং সাদ্রি দীপান্ধি ভূগোলং পর্বত

देवक्षवद्यावनीः।

দ শ্রীকৃষ্ণাখ্য তগবান নিত্যাশেষ ভগবন্তা যুঁজবেন মন: সক্ষোচ হেত্রপি হরি: সর্বমনোহর: মাধ্য্যাভিশরতের প্রাধান্য প্রকাশ নেন ধন্তশীল ইত্যর্থ:। অতএব নবিশেবেণ নচ আ সর্বতো হতং তাক্তং ঐপর্যামণি বেন সং কিন্ধনাদ্তমণি তলক্ত নিকটে হিতা নিজোচিত লীলা বিশেষবেদরং সদা প্রতীক্ষতে। কদাচিলভতেচ তল্পশ ইতার্থ: ক্রীড়ামন্থলবালকক্ষ ব্রং ক্রীড়াম নিল্মা মন্ত্রন বালক অংসদৃশ:। বহা ক্রীড়ামন্থলাং তলীর তাদ্শ নিতালীলা সক্ষি মন্ত্র্যা: নন্ত্রন্থরণ মাধানক্ষি মন্ত্র্যা: তেচ নন্দাদর: তেষাং বালক আগনান্ত্র্যারেণ নিতা তলীল:। উভর্থা স্বেছামর ব্রুপ্তিবোচিত লীলারদাবিট ইত্যর্থ:। অতএব ব্যাদেহীত্যুক্ত মাত্রো ব্যাদের ব্যাদাৎ মাতৃকোপ রবিরশ্বিলেশবশাল খুনীলাব্রুম্বং বিক্ষিতং দধারেত্যর্থ:। ভরসংভ্রান্ত প্রেক্ষণাক্ষমিতি চোক্তং তদেব-মনৌ সদৈব তাদ্শ লীলারসভোগী। তাদ্শ তদৈপর্য্য শক্তিরেবত্ ব্রং বা তমেবালিক্ষ বা তদভীই লীলারস সম্পাদনার ত্রংসমাধানং সমাদধাতি যথাধুনা মাত্রি কোপাছাদকভাবান্তরাপাদনেন তথা সর্ব্বমেবান্তান্ত্র বিদ্যুতে ততো ন কিমণি ভক্ষমতীতি তন্ত্রচঃ সভ্যাপাদনেন চ তল্পকণ নিল্প প্রত্বাধ্যায় বিশ্বমাদিবারা মাতৃত্বৎ প্রেমপোষায়ের বিশ্বং দর্শিতবতী যথাচ তৃণাবর্ত্বধানে। তামিন্ ভাবাদিক মাবিভাবিতবতী তদেবম্বতিতিত সর্বার্থ সিক্ষের্বর্য্য মণি মহদেব সিদ্ধং ইতি জ্বেরং ॥ ২৭ ॥

সেতি রুগাকং। তত্ত্ব তিশ্বন্ ভগবতি তজ্জঠরা স্তর ইতার্থঃ। ভক্ষণাপদাপোপবোগিশ্বাৎ বক্ষ্যতেচ তৈঃ তনুদরাশ্রিতং বিশ্বমিতি। চরাচবা-

ক্রমসন্দর্ভ:।

কিঞ্চ। স ঐক্কাধ্য: ভগবান্ নিত্যাশেষ ভগবতা যোগেন মন: সঙ্কোচ হেতৃতা মোগোছিপ হরিং মাধুর্য্যাতিশয়েন প্রাধান্যেনসর্ব্বনেহির:। অতো ন বিশেষেণ চ আ সর্বতো হতং ত্যক্তং ঐত্যায়পি যেন সং। কিছনান্তমপি তৎ যস্য নিকটে স্থিছা নিজো
চিত্ত লীলাবিশেষাবসরং সদ! প্রতীক্ষতে ক্লাচিৎ লভতে চ ভাল্ল ইত্যর্থ:। ক্রীড়ামমুজবালকল্চ ক্রীড়ামমুজাভদীয়তাল্শনিত্যলীলা সম্বন্ধি মমুষ্যা: শ্রীনন্দাদরং তেবাং বালকঃ নিত্য তল্লীলং। অত্যাব ব্যাদেহীত্যক্তমানো ব্যাদত্তেতি বিদারিতে আগেয় সতীত্যর্থ:॥ ২৭ ॥ ২৮॥

শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

বাবেহি মুখং প্রসারর। মহু মাতা মমান্যাপরাধং মা পশ্যত্বিভীচ্ছরৈব তাজনাদ্বীতেন ভগবতামিথ্যাক্তং। মৃথপ্রসারণে হুমৃত্তিকাভক্ষণ লক্ষণ ব্যক্তা সা তদ্যেক্ছা কথং সকলা স্যাদিত্যত আহ ন ব্যাহতং প্রেম মাধ্র্যবেদন নিজেখর্যামূসদ্ধানাভাবেহিপি ন পরাহতং কিন্তু স্কৃত্যাবসরে স্বয়মেব সাবধানমৈখর্যাং যস্য সং। সত্যসন্ধরতা শক্ত্যা প্রেরিতা ঐথরী শক্তিঃ স্বয়মেব প্রকটীভূয় বিখং দর্শয়িছা শ্রীবশোদাং বিশ্বর রসনিমন্ত্রীকৃত্য প্রভং সনকল কোপং বিশ্বারয়ামাসেতি ভাবং। নখলং ভগবতঃ প্রেমমাধ্র্যান্তাদেন যতে৷ বশোদা ভং সন তাজনাদিভ্যোহিপি তস্য ভয়ং স্যাৎ অত ঈশরোহহমিতি স্বয়মেব নিকেখর্যমন্ত্রসন্ত্র নির্ভয় এব কথং ন তিইত্বিভাত আই ক্রীড়েতি। ক্রীজাপ্রধানো মন্ত্রবালক ইতি শাক পাথিবাদিছান্ত্রধানগেদলোণঃ শ শাক এব প্রধানং যস্য তথাভূতঃ পার্থিব ইত্যক্র পার্থিবো ব্রথা নিজান্ত্রাদেয় খণ্ডাদিবস্তব্র মধ্যে শাক্ষেব প্রধানং মন্যতে। তথৈবান্ত্রমীশ্বরো মন্ত্রবালকঃ ক্রীভাং তাল্পপ্রেমমন্ত্রীয়ের প্রধানং মন্যতে নতু স্বীয় সর্কেশ্বর্ছাদিক্ষিতি ভাবঃ ॥ ২৭ ॥

তত্ত মুধাবর্জঠকে ক্রংমন্য চার্ক্তর্কে ইতি বৃদ্ধবাকে:। জগৎ জ্বুমং ছাঙ্গু ছাবরং ধং ভূবলে কিং। সাত্রীতি ভূগোলমিত্যস্য

ষশোদা কহিলেন যদি এমন, তবে মুখ প্রসারণ কর দেখি। হে রাজন্! এই কথা বলিবা মাত্র সেই ভগবান্ হরি, যিনি লীলার্থ মনুজ বালক হইরা ছিলেন, যাঁহার ঐশ্বর্য অব্যাহত, তৎক্ষণাৎ বদন ব্যাদান করিলেন ॥ ২৭ ॥

যশোদা তাঁহার মুধ মধ্যে নিধিল বিশ্ব দেখিতে পাইলেন অর্থাৎ জন্নম, স্থাবর, অন্তরীক্ষ, দিক্ দকল,

জ্যোতিশ্চক্রং জলং তেজো নভস্বান্ বিয়দেব চ। বৈকারিকাণীন্দ্রিয়াণি মনোমাত্রা গুণান্ত্রয়॥২৮ এতদ্বিচিত্রং সহ জীবকাল স্বভাবকর্মাশয়লিঙ্গভেদং।
দুনোস্তনৌ বীক্ষ্য বিদারিতাত্যে ব্রজং সহাত্মানমবাপ শঙ্কাং॥ ২৯॥

औधत्रश्वामी।

দ্বীপ সম্প্ৰ সহিত ভূপোঁকং বায়ুণ্চ প্ৰবহঃ অমি বৈহিতেঃ ইন্দুণ্চ ভারকাশ্চ ভংসহিতং জ্যোতিশ্চক্ৰং অপোঁকং বৈকারিকাণি দেবাঃ
মন ইতি বৈকারিক শব্দেন গৃহীতমপি দেববৈদক্ষণ্যাৎ পুনক্ষেতং ইন্দ্ৰিয়াণি তৈজ্ঞ্সানি মাত্রাঃ ভামসাঃ শব্দাদয়ঃ। গুণাঃ সন্ত্বাদয়ঃ॥ ২৮

এঘমেতদিচিত্রং বিশাং সহ একদৈব বীক্ষা। বিচিত্রতামাহ। জীবশ্চ গুণকোভকঃ কালশ্চ পরিণামহেত্ঃ স্বভাবশ্চ জন্মহেত্ঃ
কর্মাচ তৎ সংস্থারঃ আশম্মত এতৈ লিজানাং চরাচরশরীরাণাং ভেলো যদ্মিন্ তৎ তত্র চ ব্রম্বঞ্চ সহাত্মানং স্বসহিতং কচিদীক্ষা স্বনোস্তবনী অয়ে বিদারিতে আত্তে শকামবাপ ॥ ২৯ ॥

देवस्ववद्भावनी । •

স্মকং বিশ্বনেব বির্ণোতি ধমিত্যাদিন। ভেদমিতাস্তেন বৈছাতোহণ্নি র্জ্যোতিশ্চক্রেহপি জের:। ধমস্তরীক্ষং ভূবলে কিং ইত্যর্থ:। বিয়দেব বিয়দপি দদর্শ স্থূলানাং তং পরিচ্ছেদ্যানাং তৎ কার্য্যাণাং জ্লাদীনাং কা বাস্তেত্যর্থ:। এব্যত্তাহপ্যসূবর্ত্ত্যং। চকারাদহঙ্কারা-দীংশ্চ। তত্র নিরাকারাণামপীক্ষণং তদধিষ্ঠাতৃ দেবানামভেদভানেন জেরং॥ ২৮॥

কদা বীক্ষা বিদারিতাত্মে সতি তশ্মিন্ ব্রজং সহাত্মানং আত্মভাং স্বাভাাং ক্লফ যণোদাভাাং সহিতং। বক্ষাতেচ শ্রীব্রহ্মণা। যক্ত কুকাবিদং সর্বাং সাত্মং ভাতি ইতি এবং তত্তৈব বালবিগ্রহ্মাচিস্তাপক্তা৷ যুগপ্দিভূত মধ্যমত্বে তত এবাজৈব স্বগতোহস্তঃস্থিতত্ব বৃহিঃ স্থিতত্বে দর্শিতে। শক্ষামবাপ বিবিধানাশকামকরোদিতার্থ:। যথা পুত্রং প্রতি শক্ষা মকরোং বীক্ষাতে পূর্ববং সিদ্ধান্তঃ॥ ২৯॥

त्राप्रसर्छः

সহাত্মানং **আত্ম**ভ্যাং আভ্যাং শ্রীকৃষ্ণ বশোদাভ্যাং সহিত্মিতি॥ ২৯ n

बीवियनाथहकवर्जी।

বিশেষণং। স্বায্িত জ্যোতিশ্চক্রমিতাস্য বায়ুঃ প্রবহঃ। অমিবৈ হাতঃ। নভস্বান্ নভস্কঃ বৈকারিকাণি দেবান্ গুণান্ স্থাদীং স্ত্রীন্। অত্র নিরাকারাণামপি দর্শনং তদধিষ্ঠাত্দেবতানাং মুর্তিমন্তাৎ ॥ ২৮॥

পুনশ্চ প্রণঞ্যতি। এত বিখং সহ যুগপদেব বীক্ষ্য জীবশ্চ গুণকোভক: কালশ্চ পরিণামহেতু:। স্বভাবশ্চ জন্মহেতু: কর্ম্মচ তৎসংস্কার আশারণ্ড তৈ লি লানাং শরীরাণাং ভেদো যদিংগুও। তনৌ কুক্ষৌ বিদারিতে প্রসারিতে আসের আস্যাদারা কুক্ষাবিত্যর্থ:।
সহার্মানং আত্ম পতি পুরাদি সহিতং ব্রজ্ঞ। যস্য কুক্ষাবিদং বিশ্বমিতি ব্রক্ষোকেরসৈয়ে বিশ্বস্যান্তঃস্থিতত বহিঃস্থিততে অচিস্তাহোগমারবা দর্শিতে। ততশ্চ কুষ্ণশরীরস্য জগন্মধ্যবর্তিত জগন্মাপক ছাভাং পরিচ্ছিরতাপরিচ্ছরতে বাস্তবে এব ব্যক্তিতে এখর্য্যোপাসকানাং
বিশ্বন্দিন্ত ভগবদর্শনং ভগবতি বিশ্বদর্শনং যত্তকং তদেতদের মাধুর্যোপাসক শিরোধার্য পদাধ্সর। শ্রীষ্পোদারাপি দৃষ্টং। দৃষ্টা চ
শঙ্কাং পুরুং প্রতানিষ্ঠাশস্কাং অবাপ ॥ ২৯॥

এবং পর্বত, দ্বীপ, সমুদ্রদহিত ভূলোক, প্রবহ বায়ু, বৈছ্যত অগ্নি, চন্দ্র তারা সহিত জ্যোতিশ্চক্র অর্থাৎ স্বলোক তথা জল, বায়ু, বৈকারিক অর্থাৎ ইন্দ্রিয়াধিষ্ঠাত দেবগণ, ইন্দ্রিয় সকল, মন ও শব্দাদি বিষয় তথা সন্ত্রাদি তিন গুণ ইত্যাদি সুমুদার তম্মধ্যে বিরাজমান দৃষ্ট হইল॥ ২৮॥

হে রাজন্ ! তনারে শরীরে ঈষ্দিদারিত মুর্থমধ্যে এইপ্রকার বিচিত্ত বিশ্ব যাহাতে গুণকোভক জীব, পরিণাম হেতু কলৈ, কর্ম এবং তাহার সংক্ষার, আশার এই সকল দারা চরাচর যাবতীর বিভিন্ন শরীর বর্তুমান ছিল, তাহা এবং এক প্রদেশে আত্মসহিত ব্রজপুরী অবলোকন করিয়া যশোদার যৎপরোলান্তি বিসায় হইল॥ ২৯॥

কিং স্বপ্ন এতত্ত্তদেবমায়া কিংবা মদীয়ে। বত বৃদ্ধিমোহ:।
অথো অমুধ্যৈব মমার্ভকদ্য যঃ কশ্চনোৎপত্তিক আত্মযোগ:॥ ৩০॥
অথো যথাবদ্ধবিত্তক গোচুরং চেতোমনঃ কন্ম বচোভিরঞ্জদা।

প্রীধনস্বামী।

তানাহ কিং স্বপ্ন ইতি। পরিতো বিলোক্যাহ নামং স্বপ্ন: তহি কিং দেবল্ল হরেসামা তথা হল্লেহপি কিং ন পশুন্তি মদীয় এব কন্দিব দিনোহ: বিপর্যাসঃ দর্শণে মুখবং এবং তুহি অয়ং ক্লেফোহপি কথং অন্ত: প্রতীয়তে অন্তর্জহিলৈচকরপেন কথং জগং প্রতীয়তে তথা সতি বিশ্বপ্রতিবিশ্বরারিব পরস্পারং বৈপরীতান প্রতীতিঃ ভাদিত্যাশক্ষান্তথা বিতর্কয়তি অথো ইতি অথবা মনাম্য্যার্ভকভাপি সতঃ যঃ কন্দ্রনাচিন্তা আত্মযোগঃ স্বীয়মেশ্ব্যং ঔৎপত্তিকঃ স্বাভাবিকঃ॥ ৩০॥

চরমং পক্ষমান্ত্রিতা অয়মীশ্বর ইতি নিশ্চিত্যাহ অথো ইতি। চেতশ্চিত্তং চিত্তাদিভি ন বিতর্ক গোচরং লগৎ যদান্ত্র্যং যদধিষ্ঠানং

বৈষ্ণবতোষণা।

এতদ্বৰ্শনং উত্ত বা দেবত। বিশেষত মায়া বা। বত থেদে ঔৎপত্তিক আশ্বযোগঃ জন্মনৈব স্বন্ধিন্ত প্ৰথিক্ত প্ৰাৰ্থিক বাবং বিবিধাশ্ব দ্বনাথ ॥ ৩০ ॥

জণ চরম তর্কমণি তত্র কুংশিপাদ। কৌমল্যাদি দর্শনেনাসম্ভাব্য পুনর্বত্বিধৈবি তিকৈনি শ্রমণ্ডাপ্পুবতী সর্ব্ব ছর্বিতক সম্পা-

ক্রমসন্দর্ভঃ।

তিষ্যেৰ বালবিগ্ৰহস্যাচিস্ত্যশক্ত্যা যুগপদ্বিভূত্ব মধ্যমত্বে তত এবাস্যৈৰ জগতোহস্তস্থিতত্ব বহিঃস্থিতত্বৈ দৰ্শিতে ঔংপত্তিক আত্মযোগঃ। জন্মনৈৰ স্বন্ধিন্ অপূৰ্ক্ষাৰ্থ সম্প্ৰাপ্তিঃ॥ ৩০॥

অণ চরম তর্কমপি তত্র ক্ষ্ণপিপাদা কোমলতাদি দর্শনেনাসম্ভাব্য নিশ্চমমপ্রাপুরতী পরমাচিম্যশক্তিং শ্রীনারায়ণমের তৎকাবণং

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

তাদৃশদর্শনস্য কারণং বিতর্কয়তি। কিং স্বপ্ন: এতদর্শনং কিং স্বপ্নহেতুকং নহি নহি নিজাণস্য নয়নকাল্য্যাদ্যভাবাং তং কিং দেবমায়া নহি নহি মম-নিক্ষীয়া মোহনে দেবানাং প্রয়োজনাভাবাং। তহি কিং মদীয় এব কন্চিছু ছেমে হৈ বিপর্যাস:। নহি নহি স্বাস্থ্যসময়ে সম্প্রতি মম বৃদ্ধি মোহকারণাভাবাং। অথো অথবা অমুষ্য মম বালক্স্য নারায়ণসমো গুণৈরিতি গর্ণবিভিমহা-প্রভাবত্বাং কন্সনাচিস্ত্য আত্মযোগঃ আত্মীয়মেশ্র্য:॥৩০॥

চতুর্থু তর্কমণি তত্র স্বপুত্রে কুৎপিপাদা মৌগ্ধা চাঞ্চল্যাদি দশনেনাসম্ভাব্য স্ববৃদ্ধ্যা কমণি নিশ্চয়ং কর্ত্ত্মশকুবতী সর্ব্ব তকা

তিনি আপনা আপনি কহিতে লাগিলেন এ কি স্বপ্ন ? পরে চহুর্দ্দিক্ নিরীক্ষণ করিয়া আপনিই বলিলেন স্বপ্ন নয়, ইহা বুঝি ভগবান্ হরির মায়া। তদনস্তর বিবেচনা করিয়া বলিলেন দেবমায়া নয়, তাহা হইলে অন্যে দেখিতে পায় না কেন ? আমারই বুঝি বুদ্ধি বিপর্যান্ত হইয়াছে, দর্পণে যক্ষপ মুখ দেখে তদ্দেপ এতমাধ্যে বিশ্ব দেখিতেছি। তাহার পর আপনিই বিচার করিয়া বলিলেন ঐ রূপও নহে, তাহা হইলে প্রীক্ষণ্ড তমাধ্যে, কেন প্রতীয়মান হইবেন ? পরিশেষে আশক্ষা করিছে করিতে করিতে কহিলেন অন্তরে ও বাহিরে একরূপে বুঝি জগৎ প্রতীত হইতেছে। ক্ষণকাল পরে আপনিই কহিলেন তাহাও নহে, তাহা হইলে বিশ্ব প্রতিবিশ্বের ন্যায় পরস্পার বৈপরীত্যে প্রতীত হইত। এই রূপ আশক্ষা করিয়া অন্যপ্রকার বিতর্ক করত কহিলেন, আমার বালকের বুঝি ইহা স্বাভাবিক কোন অচিন্ত্য প্রশ্বায় হইবে ॥ ৩০ ॥

পরে শেষ পক্ষই অবলম্বন করিয়া বলিতে লাগিলেন এই ঐশ্বর্য অত্যন্ত অচিন্ত্যই বটে। অহে। ! যাহা চিত্ত মন বাক্য এবং কর্মদারা বিতর্কের বিষয় নয়, যাহা জগতের আশ্রয়, যাহার অধিষ্ঠান হৈছ যদাশ্রারং যেন যতঃ প্রতীয়তে স্থছ্নিভাব্যং প্রণতাশ্মি তৎপদং ॥ ৩১॥ অহং মসাসো পতিরেষ মে স্থতো অজেশরস্থাবিলবিত্তপা সতী।
গোপ্যাস্চ গোপাঃ সহ গোধনাশ্চ মে যশায়য়েখং কুমতিঃ স মে গতিঃ॥ ৩২॥

ত্রীধরস্বামী।

যেন করণাধিটাতা যতো বুদ্ধিবৃত্তাভিবা<mark>কাং। নমু ইদমবিতর্কাং ভবতু তৎ পদং কীদৃক্ অত আহ স্থহর্কিভাবাং ইদমত্যন্ত মচিন্তা</mark> নিতার্থ: ৪০১ ট

এবং প্রপঞ্চ প্রতীত্যোদীতং তবং পুনর্জীবসংস্তিহেতুমায়াশ্রয়ছেনোরয়স্তাহ অহমিতি যশোদা নামাহং অসৌ মম পতি: অমুষ্য ব্রজেশবস্য অধিল বিভাধিষ্ঠাত্রী অহং সতী জায়া এব ক্লেণা মম স্থতো গোপ্যাদদশ্চ মদীয়া ইখং কুমতি র্যনায়রা আস এব মে শ্রণমিতি॥ ৩২॥

देवस्वयाजायगी।

দকং শ্রীনারায়ণমের তৎ কারণং নিশ্চিত্য তঞ্চ হজেরিং মন্বা কেবলং প্রণমতি অথো ইতি। কর্ম শুভমদৃষ্টরৈছিকঞ্চ কান্নিকর্যাপারশ্চ ন বিতর্কগোচরং বিতর্কাগোচর ইত্যর্থ: তাদৃশমণি যদাশ্রমং যেন সাধনেন যতো হেতো রঞ্জসা প্রতীয়তে সাক্ষাদমূভ্যতে তক্ত পদং পাদান্তং অতএব স্কৃত্বিভাবাং অচিস্তাকার্যার্নশক্ত কারণমেন প্রমাচিন্তা স্বরূপ শক্তিবৃদ্দকং ॥ ৩১ ॥

অথ বাহ্মপ্রসন্ধার নিজ্পতাভাবিকাবস্থিতিমেব দ্রুত্বসন্তাহ অহমিতি পাদত্তবেণ পুনরন্তর মন্ত্রসন্ধার ভীতা তমেব শরণং গছতি যদিতি ইখং নিজবালকে উচ্চাব্য দর্শনে হেডু: কুমতি র্যন্ত ত্র্বিভাব্যরা মান্তরা সঞ্জবিম্থারা: শরণমিতি। যদা যদী-ত্যাদৌ তথাপীত্যাক্ষেপল্ডাং। তদেতং স্বর্ধং লবণাকর ভাষেন বিশ্বয়াদি দারা তস্যাং প্রেমেব পৃষ্ণাতি ইতি দর্শিতং॥ ৩২॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

নিশ্চিত্য ত**ঞ্ স্থত্তে বিং মতা কেবলং প্রণমতি। অথো ইতি ত**দ্য পদং পদাজং। অথ বাহ্যমন্থসন্ধায় নিজং ভাবং দ্রুচুয়স্ত্যাহ। অহ্ মিতি পাদক্রেণ পুনত্ত^{ত্} স্থাত্তত্তিসমূসন্ধায়াহ॥ ৩১॥

যদিতি। কুমতি নিজ বালকে বিশ্বরূপদর্শনরূপা ॥ ৩২ ॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

গোচরস্যাপি বস্তনো বস্ততঃ কারণং ভগবানেবেতি সামান্যতো নিশ্চিবতী তৎপদাৰ্শ্বং স্কতশ্বন্তিকামা প্রণমতি। অথো ইতি বথাবৎ যাথার্থোন নৈব বিতর্কস্য গোচরং। ক্লীবন্ধনার্থং। দৃশ্যমানমাশ্চর্য্যমিদং যদাপ্রশ্বং যো হস্যাধিষ্ঠানং। যতঃ যশ্চাস্যোৎপত্তিহেতুঃ। বেন প্রতীয়তে যশ্চাস্য প্রতীতিহেতুঃ তৎপদং তস্য ভগবতঃ পদং চরণারবিন্ধং। চেতশ্চিস্তং। তদাদিভিঃ প্রণতাম্মি স্কৃত্বি ভাবাং, মাদৃশীনাং ধ্যাতৃমশক্যমতঃ কেবলং প্রণমামি। স্ববাস্য মৎস্কৃত্ব্য সর্কানিষ্টং প্রশমন্বন্ধিতি ভাবঃ ৮ ৩১ ॥

হত্ত হত্ত সএব স্থাত্যাদ্য দাতা সএব বক্ষিতাপি ভবেদেব তত্ৰ মন পুনৱজ্ঞারা: কিনহন্ধার মনকারাত্যানিতি তৌ জিহাসন্তী প্রীবিষ্ণ্ণ প্রপদ্যনানা প্রাহ অহমিতি। অধিলবিত্তপা নিধিলধনরকণাভিমানবতীত্যর্থ:। গোপান্চেতি গোপীনাং গোপানাং সর্বগোধনা-নাঞ্চাহমেব স্বামিনী মহারাজ্ঞীত্যভিমানো যথা কুমতি স্তথৈব লোকোত্তরদ্যাদ্য সর্ব্ধ ব্রজ্জনপ্রাণভূতদ্য বালকদ্যাহং মাতা অহমেব পালঘিত্রী দানধ্যানাদিভি বিপ্রদেবাদ্যারাধনৈ নিতাং বিষ্ণুপ্তনৈন্দ সর্বানিষ্টেভ্যো রক্ষামহমেব সভতং কারম্বন্ধী ভবামি ততোহদ্য স্বভীত্যভিমানোহপি কুমতি:। এতার্বতো গোকুলৈখব্যদ্য প্রীবিষ্ণুনৈব দত্তঘাত্তর যথা মুমাভিমানানৌচিত্যং তথৈব তেনৈব কুপরা দত্তে প্রতনাদ্যারিষ্টেভ্য: প্রতিক্রণং পাল্যমানে চ পরম লোকোত্তরে হন্মিন্ স্থতে লৌকিক্যা গোপজাতে নিক্ষারা অত্যযোগ্যায়া মুমাত্র রক্ষয়ত্রীখাদ্যভিমানোপ্যনৌচিত্যাৎ কুমতিরেবেতি বিবেকজিন্ধকৈব প্রীবশোদারা: ক্ষণিকীয়ং নতু বিবেক:। যথা মহামোহা-ক্ষানামিপি ব্যাবহারিক লোকানাং কাদাচিৎক পার্মাধিক প্রসক্ষতান্ত্রীগুল্যাদ্যাস্তিজিভানেতি জ্বেয়ং ৪৩২ ॥

বুজির্ত্তি অভিব্যক্ত হয়, এবং যে পদ হইতে এই জগৎ প্রতীয়মান হইতেছে সেই পদে সামি শরণাপন্ন হই॥ ৩১॥

হায়! আমি থশোদা নাল্লী গোপী আমার পতি এই নন্দ,ইনি ব্ৰক্তেশ্বর, আমি ইহাঁর অধিন বিত্তের অবিষ্ঠাত্তী সতী জায়া, এই কৃষ্ণ আমার পুত্র, এই সকল গোপ, গোপী এবং গোধন আমার,এই প্রকার কুমতি যাহার মায়ায় হইতেছে সেই এই ভগবান্ আমার শরণ হউন॥ ৩২॥ ইত্থং বিদিততত্ত্বায়াং গোপিকায়াং স ঈশ্বর:। বৈষ্ণবীং ব্যতনোশ্মায়াং পুত্রস্থেহ্ময়ীং বিভূ: ॥৩০॥ সদ্যো নফস্মতি গোপী সারোপ্যারোহ্মাত্মজং। প্রস্ক্রেহ্কলিল হুদ্যাসীদ্যথা পুরা ॥ ৩৪ ॥ ত্র্যা চোপনিযন্তিস্ত সাংখ্যযোগৈশ্চ সাত্বতিঃ। উপগীয়মান মাহাত্ম্যং হ্রিং সামন্যতাত্মজং ॥৩৫

अध्यक्षामी ।

रिकावीः चीवाः मात्राः ॥ ७० ॥

প্রবৃদ্ধেন স্নেহেন কলিলং ব্যাপ্তং ছদরং যস্যা: সা পুরেবাসীৎ ॥ ৩৪ ॥

মায়াবলোদ্রেকমাহ ত্র্যা ইন্ডি। ত্র্যা ইন্তাদিরপেণ উপনিষ্তি: ত্রন্ধেতি সাংবৈত্য: পুরুষ ইতি যোগৈ: প্রমাত্মেতি সাহতৈ র্ডগ্-

বৈষ্ণবজোষণী।

ভদেবং তরিষ্ঠানেব দৃষ্ট্। সোহপি পরমত্ই ঘবৈষত্রা দর্শনেন বাত্রশ্চ সন্ তং ভাবমেব তথা বিন্তারধামানেত্যাই ইথমিতি। ইথং অহং নমাদাবিত্যাদিনা বিদিতং নির্দ্ধারিতং তবং প্রথমপাদত্রধােক শ্রীকৃষ্ণলীলাযাথার্থ্যং যরা তথাং গোপিকারাং সদা মাতৃভাবেন শ্রীকৃষ্ণলীলিত্রাং স তরা প্রাথিত ঈশবং। মারাং তিষ্বরাং দরানেব বাতনােৎ পূর্বতােহপি বিন্তারধামাস যথা তিষ্কিরাধি প্রায়মীদৃশ দর্শনাাদিকং পূন ন জাতং ইতি তাং বিশিনষ্টি পুত্রেতি প্রাচূর্ব্যে ময়ট্ প্রাচূর্ব্যং চাঞ্ডদীর সেহাপেক্ষরা তস্যাং প্রকৃতিসম্বন্ধিত্বং প্রত্যাচ্চেইবিষ্কেবীং বিষ্ণোঃ স্বরূপশক্তিং॥ ৩০ ॥

ত তক সদের নষ্টা তিরোহিতা স্থাভি <mark>তদমুসন্ধানং যক্তা তথাভূতাসীৎ। আ</mark>রোহম**রুং আত্মন্ত: নিজো**দরাহুৎপ**রং ইতি তত্তাবা-**মুবাদঃ। নষ্টস্থতিত্মের প্রচয়তি যথা পুরেতি ॥ ৩৪ ॥

তদেবমহো প্রমভাগ্যবতী শ্রীযশোদেত্যাহ ত্রয়েতি। ত্রয়া কর্মোপাসনাম্যা তত্তদন্তর্থানিপর্য্যসানরা উপনিষ্টিঃ স্বরূপ-গুণাত্যাং সর্ব্ধ বৃহত্তমে তত্ত্বিরেব পর্যাবিদিতাভিঃ। সাংখ্যযোগৈঃ সেম্বরৈকৈচ শ্রীজাগ্যবতার্থপর্যাবদানৈঃ প্রাণেবিত্যগং। সাম্বতৈ গুতুপাসনামরৈঃ পঞ্চরাত্রাগনৈঃ। অনয়োরপি বেদাক্তাং তৎ সাহিত্যোক্তিঃ। উপহীনে যংকিঞ্চিদ্যীয়মান্মাহায়াং নতু

ু ক্রমসন্মর্ভ: i

তবং অহং মমেতি পাদক্ররোক তল্পীলাধার্থাং দ তন্ম প্রাথিত ঈশবং মারাং তদ্বিষ্যাং দরাং পূর্বতোহপি বিস্তাব্যামাস। বৈষ্ণবীং বিষ্ণো: স্বন্ধপাক্তিং তদেব মহো প্রমভাগ্যবতী খ্রীমশোদেত্যাহ ॥ ৩০ ॥ ৩৪ ॥

ত্রেতি। ত্র্যা কর্মোপাসনাম্যা স্কার্থামিপ্য্বসান্য উপনিবত্তি বন্ধপ্তণাভ্যাং স্ক্রুভনে বন্ধণি ত্রিরেব প্র্

এীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

ইখমনেন প্রকারেণ বিদিতং তবং মমস্ব**লিহাসা বরা ত**স্যাং যশোদারাং সত্যাং তহি কা মাং লাল্যিব্যতি প্রতিক্ষণং কা পাল্যি-ব্যতীত্যতঃ প্রস্নেহমরীং স্বরূপে মরট্। প্রস্নেহরূপং প্রেমবিশেষং ব্যতনোদিত্যর্থঃ। মোহনসাধর্ম্যান্মারাং তেন চ'তাং প্রেমান্ধা চকারেতার্থঃ॥৩৩॥

নষ্টন্মভিরিভি। যথা স্বপ্নদুর্ধোহর্থ: কশ্চিৎকশ্চিধিস্মর্য্যতে তথৈব সদ্য এব সা বিশ্বদর্শনাদিকং বিসন্মারেভ্যর্থ:। প্রবৃদ্ধেন সংকাচকাব পাদুপ্রৈপ্রাক্তানাদসমূচিতেন প্রভুত্ত প্রবনীভূতেন স্নেহেন কলিলং ব্যাপ্তং হৃদয়ং যস্যা: সা॥ ৩৪॥

দেৰক্য়"অপি সকাশাং তদ্যা উৎকর্ষমভিব্যঞ্জারভূমৈখর্ষ্যদর্শনাদপি স্বীয় বাৎসন্য প্রেমঃ সঙ্কোচাভাবমাথ্যায়ৈখ্য প্রবণাদপ্যাত। ত্রব্যা বজ্ঞপুরুষত্বেন উপনিষ্ক্তি ত্র'ক্ষড্বেন সাংথ্যৈঃ পুরুষড্বেন ঘোলাঃ পরমাত্মডেন সাথতৈঃ পাঞ্চরাত্রৈর্ভগবত্বেন ইত্যেবং কর্মিপ্রভৃতিভি ক্রপনীষ্মান মাহাত্মাং দেশকালানিরমান্তস্যাঃ সমক্ষমসমকং বা উপ আধিক্যেন গীরমানৈখর্য্যঃ ঠুঁরিং সা আত্মসম্মন্যতেত্যত্মদভীষ্টদৈব

হে রাজন্! গোপী যশোদা এই প্রকারে যথার্থ তত্ত্ব অবগত হইলে পর সেই ঈশ্বর পরম বিহু ভগবান পুত্রু হেম্মী স্বীয় মায়া বিস্তার করিলেন ॥ ৩০ ॥

তাহাতে তৎক্ষণাৎ সেই গোপীর স্থৃতি বিনষ্ট হুইয়া গেল। তিনি তনয়কে ক্রেড়ে করিলেন, প্রবৃদ্ধ স্নেহে তাঁহার হাদয় ব্যাপ্ত হইল। স্থতরাং পূর্বে যক্রপ ছিলেন তক্রপই হুইলেন॥ ৩৪॥

এবং বেদ সকল ইজ্রাদি ৰলিয়া, উপনিষ্ৎ সকল এক্স বলিয়া, সাংখ্য সকল পুরুষ বলিয়া, যোগ

বিষ্ণুরাত উবাচ ॥

নন্দঃ কিমকরোদ্রহ্মন্ শ্রেয় এবং মহোদয়ং। যশোদা বা মহাভাগা পপে। যস্যাঃ স্তনং হরিঃ॥৩৬

শ্রীধরস্বামী

বানিতি উপগীয়মানং মাহাত্মাং যুদ্য তং॥ ৩৫॥

অতি বিশ্বরেন পৃচ্ছতি নন্দ ইতি। মহামুদ্য **উত্ত**বো য**দ্য তৎ**॥ ৩৬॥

বৈষ্ণবতোষণা।

সমাক্ আনস্তাং। তং হবিং আছাজং অমন্যত পুশ্রভাবেন সাক্ষান্তপা লালিতবতীতি কাকা চমংকারাতিশরো বাঞ্জিতঃ। অবেদং বিচার্যাংন তাবদস্যা বিশ্বদর্শনমুংকর্ষহেতুঃ। বাবদ্ন জায়েত পরাবরেছদিন্ বিশ্বেখরে দ্রষ্টির ভক্তিযোগঃ। তাবং স্থবীয়পুরুষস্ত রূপং ক্রিয়াবদানে প্রযতঃ দরেত। তং সত্যমানন্দনিধিং ভজেত নান্যত্র সক্ষেৎ যতংজাত্রপাত ইতি প্রথমসাধনেহলি দিতীয়ক্তরাবজ্ঞাত্রখং। নচ বিশ্বদর্শনেন শ্রীক্তক্ষে পরমেশরক্তানমভূং। তুর্যা নির্ণয়েহপামুদ্য মমার্ভকন্তেত্যাদ্যক্তর্যাং। ক্রিক্ত যতজ্জান্যাং পরেক্ষত্রের নির্দেশাং পঞ্চমনির্ণয়ে চ পত্যাদিগণপাতিত্বন এব মে স্কৃত ইতি যন্মায়য়েতিচ তবৈধ দর্শনাং অনুষ্থা শ্রীনের বিদ্যোত্র তমেবাল্ডোয়াং। নচেশ্বর জ্ঞান মৃত্যাং পূল্ঞাদিতাব্যয় শ্রীক্তক্ষাদ্যভূত্ব স্কৃত্বম ইতি প্রকরণার্থঃ দর্শিতব্যাখ্যয়া তম্মার্থলাং। অভ্যথোত্তরগ্রহে প্রেম্নান্তরেচ ন সংগছেতে তম্ভান্তাদৃগীশরক্ষানং পরিক্তল্য তদাবরণঞ্চানম্পাচ্য তনপায়নাদিককৈর রাজ্ঞা ভোষান্যাশ্রাং শ্রীব্যমাণ্যাং ক্রিব্যমাণ্যাং করিনাং পরমঞ্জানবতাং শ্রীব্যাসাদীনামণি তক্ষ্ণানমাত্র ভাগ্যাং লিক্ষেত্র বিশ্বরাহিন তর্গালাভিকি হিতাহত্বাভাবেন দ্বাধার্যমাণ্যাং করিনাং পরমঞ্জানতিত্রভাত্তমার বিশ্বিকিভবন্যারহে। তাদৃশ্যাং শ্রেরোহণি তম্বান্সদেদ স্থাপরিষ্যমাণ্যাং। অন্যেমান শিষ্টানামণি জ্ঞানাদিমতামন্ত্রায় শ্রীকৃক্তং ভলন্ত্যো নৃনিরিষ্যমাণ্যাং। অন্যত্রত তাদৃশ ভাবদ্যৈর ততন্ততাহতিশরঃ শ্রমতে রাজন পতি প্রক্রেরনমিত্যাদে ইথং সতাং ব্রহ্মস্থ্যামূভ্তেত্যাদে চ। ততঃ কিং পুন স্থানীয়দ্য ইতি দর্শিত এবার্থঃ সাধীয়ান। ৩৫ ॥

ইখং তস্যাং তাদৃশং শ্রীভগৰতঃ স্লেহং তস্যাশ্চ তন্মিন্ বাৎসল্যং শ্রুষা তদ্বাগা ভরেণাতিবিন্মিতঃ শ্রীনন্দস্য তদ্যাশ্চ ভাগ্যং

ক্রমসন্দর্ভ: ৷

বিসিতাভি: সাংখ্যাযোগৈ: সেম্বরৈ:। তে চ শ্রীভাগবতার্থ পর্যবসানানি পুরাণানি মস্তব্যানি। সাহতি: তহপাসনাময় পঞ্চরাতাগিমৈ: উপ যংকিঞ্চিপীয়মানং নতু সমাক্ আনস্ত্যাং। তং হরিং আত্মন্তমমন্ত পুরভাবেন সাক্ষাত্তণা লালিতবতীতি। কাকা চমংকারাতিশয়ো ব্যক্সিত:। অথ বিশ্বরূপদর্শ নমীশ্বরভাবং চানমুমোদ্য পুরভাবময় স্তনপায়ন বাল্যলীলামুভবাবেবামুমোদ্তে ॥ ৩৫ ॥
নন্দ ইত্যাদি নায়ং স্থাপো ইভাস্থোয়ন্ত্রায়ুকো গ্রন্থ:॥ ৩৬ । ৩৭ । ৩৮ । ৩১ । ৪১ ॥

ঞীবিশ্বনাপচক্রবর্ত্তী।

তেনাবয়ে ব্রত নিয়ম সংতত পূজনাদিভি: সম্বাহিন প্রজন্যাভিধান মদীয় শ্বশুরক্বত নিরবদ্য বহুতপ: সম্বোধিতেন শ্রীনারায়ণেন কপ্রা দত্তো লোকোত্তর: পূজোহয়ং যথ কর্মিপ্রভৃতিভি স্র্যাদি প্রতিপাদ্যবেন ন্ত্রুবতে তত্র থলু নারায়ণসমা গুণৈরিতি সর্বার গর্গেগ গীয়ত্যা নারায়ণ সাম্য প্রথমা অন্যত্নকর পূত্রনাদিবধানামেতংকর্জ্করপ্রথমা চায়মেব নারায়ণ ইতি তেষাং বিশ্বাস এব তেতু-ব্স্তুত্বয়ং মংপুত্র এব মাং মাতরং ক্ষণমপ্যদৃষ্ট্য বিক্লীভবত্যহকৈনং স্থানিমেব ব্যবহিতং জ্ঞার্যা বিজ্ঞলীভবামীত্যাবয়ো র্জন্যজনন্যোরহুত্ব এবাত্র প্রমাণমিতি মনসি সা সমাধতে। কিঞ্চ। কর্মিপ্রভৃত্ব স্ত্রেয়াদিভির্যথা হরিং ষজ্ঞপুক্ষাদিকং মন্যন্তে তইগবেয়ং বাংসল্য প্রেয়া হরিং আত্মলং মন্যতে তেভাস্ত তত্তদম্রূপ্য কলং দাদনন্তেষামন্থ্যাহকো বশ্মিতা সন্নীষ্টে। অন্যোপ্ত বাংসল্য প্রমান্ত্রাহ্যকাণ কলং দাদনন্তেষামন্ত্রাহ্যকো বশ্মিতা সন্নীষ্টে। অন্যোপ্ত বাংসল্য প্রমান্ত্রাহ্যকাণ কলং দাক্ষান্ত্রিকাণ কলং ক্রিভাব্যায় প্রসাম্প্রাহ্যক তির্বার্য ক্রিলান্ত্র প্রমান্ত্রিকাণ করিছা মান্ত্র ক্রেয়া প্রস্তান্ত্র বিশ্বতি পদ্যমিদং ক্রফলীলায়াং পরিভাবান্ত্ররূপং জ্বেং। পরিভাবা হেকদেশস্থা সকলং শান্ত্রমন্ত্রিকাণ ক্রিলান্ত্র ব্রত্ত বর্ষা ক্রেয়ার ক্রেশের জ্বান্ত্রিকাণ করিছা হিছে। ইকো গ্রন্থর ব্রত্ত্ব ব্রত্ত ব্রত্ত্ব ত্রত্ত ইকি পরিভাবোপ্তির্গতে বর্ষা ক্রেমার ক্রেশের মাধুর কুলক্ষেত্রাদিগত লীলাস্থ ব্রে যত্ত্ব প্রশ্বর্ত্ত ব্রত্ত্ব ইতি ॥ ৩৫ গ

উত্থ্যদর্শন প্রবণাভ্যামপি তদ্যাঃ প্রেমদার্চ্যার্কণ্য কঞ্চিপ্তভ্তিভো ভক্তেভান্তাভিব্যজ্যমানমুংকর্ষণ জানরভিবিশ্বরেন পৃত্তি সকল পরমাত্মা বলিয়া, তথা সাত্তগণ ভগবান বলিয়া, যাঁহার মাহাত্ম্য গান করিতেছেন, সেই হ্রিকে আপনার আত্মজ জ্ঞান করিতে লাগিলেন। ৩৫॥

এই বৃত্তান্ত শ্রবণ করিয়া অতিশয় বিশায় হওয়াতে রাজা পরী**ক্ষিৎ পুনরা**য় _দবিশায় প্রকাশিয়া

পিতরো নাম্ববিন্দেতাং কৃষ্ণোদারার্ভকেহিতং। গায়স্ত্যদ্যাপি কবয়ো যল্লোক শমলাপহং ॥৩৭॥ শ্রীবাদরায়ণিরুবাচ ॥

জোণো বস্নাং প্রবরো ধরয়া ভার্য়া সহ। করিষ্মাণ আদেশান্ অক্ষুণস্তম্বাচ হ।

औरतवामी।

যরোঃ প্রসল্লোহবতীর্ণঃ তৌ পিতরাবপি যন্নান্ধবিন্দেতাং ন প্রাপ্নুতাং কৃষ্ণস্যোদারং মহৎ অর্ভকেহিতং বালনীলাং যচ্চ কর্মো গার্ম্ভি তদ্যোহবিন্দাং স কিং শ্রেয়োহকরোং॥ ৩৭॥

देवस्थवर जायनी।

পৃচ্ছতি নন্দ ইতি। কিং কতরং। এবমীদৃশো মহান্ উদয়: সর্বত: স্লেহোংকর্বো যশ্বাং। মহাভাগেতি ততোহপি তস্যা: শোষেধিক-মভিথৈতি তদেবাহ পণাবিতি। অত: পীষামৃতং পরস্তস্যা: পীতশেষং গদাভূত ইত্যুক্তরীত্যা শ্রীদেবক্যা তথা বংস বালক রূপেণা-ন্যাসাং গোপীনাং স্তনপানে সত্যপি প্রবিশ্বর্য ক্লানমিশ্রমান্তথা কথঞ্জিন্ত্রাপ্যসময়ে বারেকন্দাভ্যাচেডান্তর্ত্রান্য রূপেষ্চভ্যত্র পরস্পরৈতাদৃশ মেহাভাবাদকৈব স্তনপানং সম্যাভিপ্রেকং॥ ৩৬॥

কিঞ্চ পিতরাবিতি পিতৃত্বন সর্ক লোকথ্যাতী লব্বরো চাপি প্রীক্ষণ্ডাগারাং রাজন্ পতিরিত্যালো অত্বেমক ভক্ততাং ভগবান্
মুক্লো মুক্তিং দদাতি কহি চিং স্থান ভক্তিয়েগাং ইভ্যুক্তদিশা পরমাদেয়স্যাপি দাতৃ যথ অর্জকেহিতং তদম্ব পশ্চাদিপি না বিন্দেতাং
মধুরায়াং গতেন বাল্যলীলাসম্বরণাং। কিং বাচাং সাক্ষাদম্ভব মাহাত্মাং তদ্য ভক্তা গুরবোহিপি ফ্লানেনাপি কুতার্থস্মন্তাং পরা
পরার্জং কালং গময়ন্তীহ্যাহ। যচ্চ কবয়ো ব্রহ্মাদয়ং পূর্বপরার্জাদে প্রীনারদাদীন্ প্রভ্যুপদেশনারভ্যাদ্যাপি গায়ন্তা। অহা সর্ক্রোন
মপি তন্তাগ্য বিশেষ হেভ্রিত্যাহ যদেব চাদ্য কলিকালেহপি লোকমাত্রাণাং সর্ক্রেষামপি শমলাপহং। একজাপি গীয়মানেন সম্বর্জপরম্পার্মা
কুতার্পী করণাং মন্তক্তিযুক্তো ভ্রনং পুনাতীতি অমুব্রজামাহং নিত্যং পুরেয়্রভাজনুরে বিভূতিবিতবং। অত উক্তং শ্রীস্তরেন কুফ্লার্রতং কলিকআবদ্ধনিতি। যদা কর্ম আত্মারামশিরোমণ্রোহপি ভবন্ধি। মহাভাগবতা অনাদিতঃ শ্রুতিপুরাণ্গীয়মানমপি অদ্যাপি
গায়ন্তি প্রমানন্দ ভরেণ বত্র তত্র্যাপ্যান্তা ইব গায়ন্তএব বর্ত্তন্ত নচ কথমন্তি মাত্রং যাত্র লোকস্যাতিদীনস্যাপি মন্ত্রিস্বাণ্
তদন্তরারকং কন্ম তন্ত হন্ত্র যথ শ্রবণমাত্রেণ মন্ত্রিভার্যভার্যভার্যভার্যতাং মন্ত ইত্যর্থঃ। তৎ যো যাচ অবিন্দং স্বাচ কিং শ্রেরোহক্রেরাদিতি পূর্বেণায়রঃ। এবং মহাবিত্রয়ো ব্যঞ্জিতঃ॥ ৩৭॥

অথান্তাগ্রিমাধ্যায়ে ম্থ্য: সিদ্ধাস্থাে বক্ষাতে প্রথমং তাবং কিমকরােং শ্রেম ইতি সাধনগতং তং প্রশ্ন মন্থত্য তত্র সিদ্ধান্তালাং বাবদেতদধ্যায়ং বকুং আদে তারারংশেন যং পূর্ববৃত্তং তদভেদেন তদাহ দ্রোণ ইতি ত্রিভি:। প্রবরং পরম শ্রেষ্ঠঃ শ্রীনন্দাংশত্বাং। আদেশান্শীমধুরামণ্ডলে গোপালন প্রায় বাস শ্রীবস্থদেব স্থাাদি লক্ষণান্॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবন্তী।

নল ইতি। মহান্ উদয়: ফলং যদ্য তং। মহাভাগেতি নলাদপি তদ্যা: শ্রেয়োহধিক্মভিথৈতি ॥ ৩৬ ॥

নমু পীতশেষং গদাভূত ইতি বচনাদেবক্যা অপি স্তন্ত পথাবিত্যত আহ পিতরৌ অস্মৎকুলে পিতৃত্বেন থ্যাতৌ দেবকীব্র্দেরৌ কৃষ্ণস্য উদার্মতিস্থপ্রদম্ভিমহচ্চ অর্ভকেহিতং বালচ্ত্রিত্রং ন অম্ববিদ্দেতাং চকুবাদিভিরাম্বাদ্যিতুং নালভতাং উদার্পদেন রাম মাতৃত্বাভিমানিনী রোহিণী বংসাহরণলীলাপ্রাপ্তমাতৃভাবা গোপ্যক্ত ব্যার্ভাঃ যং অর্ভকেহ্তিং॥ ৩৭॥

কৃষ্ণাবতারস্য তদীয় বাল্যদীলানাঞ্চ নিত্যখাদেব নন্দ্যশোদ্যো নিত্যসিদ্ধৰং স্পষ্টমিতি। নাপ্যেতাদৃশঃ প্রেমা সাধনসিদো ভবিত্মহ তীত্যপি জানতোহপি রাজ্ঞোহস্য প্রশ্লোহরং বধা ভক্তাব্যুৎপদ্মস্যেতত্যতন্ত্র মমাপুত্রিরং তাদৃশীভবিত্মহ তীতি প্রষ্ঠির রাজ্যুদাসীন্মনা এবাছ জোণ ইতি। আদেশান্ গোপালনাদিলক্ষ্মন্ তং ব্রহ্মাণং ॥

জিজ্ঞাসা করিলেন, ব্রহ্মন্ ! নন্দ এমন কি মহোদয় শ্রেয়ঃ করিয়াছিলেন ? আর ভগবান্ হরি যাঁহার স্তনপান করিয়াছিলেন সেই মহাভাগা যশোদারই বা এমন কি স্কৃতি ছিল ? ॥ ৩৬ ॥

অপর, বাঁহাদের প্রতি প্রসন্ন হইয়া ভগবান অবতীর্ণ হইয়াছিলেন সেই পিতা মাতারাও ঐক্ঞির যে উদার বাল্যলীলা প্রাপ্ত হয়েন নাই এবং কবিগণ অদ্যাপি যাহা গান করিয়া থাকেন, এবং যাহাতে কলুষ বিনষ্ট হয় সেই বাল্যলীলা যিনি প্রাপ্ত হইলেন তিনিই বা কি প্রেয়ঃ করিয়াছেন ?॥ ৩৭॥ জাতয়ে। নৌ মহাদেবে ভূবি বিশ্বেশ্বরে হরো। ভক্তিং স্যাৎ পরমা লোকো যয়াঞ্জো ত্র্গতিং তরেৎ॥৩৮ অস্ত্রিভ্যুক্তঃ স এবেহ ব্রজে দ্রোণো মহাযশাঃ। জ্বস্তে নন্দ ইতিখ্যাতো যশেদা সা ধরাভবৎ॥৩৯ ততো ভক্তি র্ভগ্বতি পুত্রীভূতে জনার্দনে। দম্পত্যো নি তরামাসীদেগাপগোপীয়ু ভারত॥ ৪০॥

এখরস্বামী

ব্ৰহ্মণ আদেশান্ গোপালাদিলকণান্ ॥ ৩৮ ॥ স এব জোণো জজ্ঞে সচ নন্দ ইতি থ্যাতঃ সা ধরা যশোদা অভবৎ ॥ ৩৯ ॥ গোপ গোপীনামপি বস্তুত্বভাবাৎ অন্ত্যেব ভক্তিঃ তয়োঃ পুন নিতিরামেব ॥ ৪০ ॥

देवकवरजायनी।

ত্র যদ্যপি খ্রীমরন্দাংশহাচ্ছুদ্ধ ভগবন্ধাধুর্যাংশক্ষি যোগ্যন্তথাপি তত্তদেব মুনিসঙ্গেন তদৈবর্যজ্ঞানমালয় শ্লেষেণ বাজীই-মাই জাতয়ারিতি। ভূবি জাতয়োঃ সতোঃ নৌ আবয়োহ রৌ মনোহরতা প্রধানে ভগবতি। অতএব বিশ্বেম্বীশরেহপি মহাদেবে প্রমন্ত্রীড়াপরে ভক্তিঃ প্রেমলক্ষণা স্যাৎ। প্রার্থনায়াং লিঙ্। প্রমেতি অমনস্যাদৃতং তদিশেবং বােধয়তি সচ পিতৃঘােচিত বাংসল্যাথ্য ইতি ফলেনাল্মীয়তে। যে যথা মাং প্রপদ্যন্তে ইত্যাদি শ্রুবণাং। এবং বচন মাত্রলভাগেরাশ্রেমপিরিত্যাগ্যম্যা পূর্কমিপ তরোল্ডাল্ল ভক্তি রক্তিম মবগম্যতে অন্তিম্বেহপি প্রার্থনা তাদৃশপ্রেমাংকঠয়ের অত্তিম্বভাবাৎ প্রেমঃ। বথা শ্রীঞ্জবস্য ক্বেরে সাক্ষাৎপ্রপ্রেপার্থনাহ কেবলকামনাম্যাপি ভাং। তাদৃশ প্রেণ অমহিনাদি রুদ্ধেং অতঃ প্রেম বভাবছান্তংপ্রাধান্যেনের প্রার্থিতং নান্যথা যত্র তাদৃশবেন শ্রীক্ষশাপান্তগতিঃ স্বত্যে আতেতি এবং বস্থদেবাদিতঃ সাধ্যেপ্যংকর্ষো দলি তঃ। সাধ্যম্য সাধ্যমাচ ভদ্ধ ভক্তিছাও। অতঃ ভদ্ধ ভগবৎ প্রেম বাসনত্বন তত্র সর্ক্ষোমপি হিতং প্রার্থিতং নতু কামিজনবন্ধৎসরেণাত্বন এব ভদাহ যমাস্ক্রত্যা তচ্ছুবণ কীর্তনাদিনান্যোহপি লোকঃ সর্ব্রো হুর্গতিং তরেৎ ইতি। লোকে ইতি সপ্তমন্ত্র পাঠে লোকে বয়া প্রিদিম্বান্যাইপীতি লেখং। এবমুভ্রোরপি বাংসল্য ভদ্ধে মাত্রভাব বাভাবােহ প্রিবাদানারা আধিক্যমণি ক্রেয়ং। ৩৮।

স এবেত্যভেদ বিবক্ষরা ইহ জীমধুরাপ্রদেশে স ভগবানিতি পাঠে প্রমাদরো দর্শিতঃ পূর্বতোহপি মহাবশাঃ সন্॥ ৩৯ ॥ তত্ত স্তাদৃশ ভক্তেহে তাঃ পূজীভূতে যোহনাসা কস্যচিৎ পুজো নাসীৎ তদ্মিন্ পুত্রতাং প্রাপ্তে তরোরেব তদ্ধোদ্রিকতাদৃশ-

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

জাতরোরিত্যনেন ভাবিনি জন্মনীতি লভাতে। মহান্দেবং ক্রীড়া যদা তন্মিন্ ভূবি স্থিতো যো বিশ্বের স্তন্মিন্ বিশেহপীখরা যত্র তন্মিন্ পরাবরেশো মহদংশযুক্ত ইত্যুদ্ধবোক্তেঃ পূর্ণে ইত্যুর্থ:। হরৌ আবরো ম্নশ্চোরে। পরমেতি ফলেন ফলকারণ মন্থমীরতে ইতি ন্যায়াৎ স্বন্ধরবিচারিতাপিভূবোচিভবাৎসল্যমনীত্যর্থ:। ক্য়ামন্তক্যা ভবিষ্যস্ত্যা ভচ্ছুবণ কীর্ত্তনাদিনা অন্যোহপি সর্কো লোকঃ হর্গতিং তরেদিতি শুদ্ধ প্রেমভক্তি প্রার্থনায়া তজ্জানি ভবোক্তম্ক্রপা সাধনভক্তিরপ্যেকা শুক্রবাদীদিত্যবগন্যতে। নতু পৃত্তি স্তত্তপ্রেমির ভক্তিস্থপোযোগোঁ চেতি পূর্বং ব্যাখাত্যের তংগ্রসক্ষে তংকলং॥ ৩৮॥

স এব জোণোত্রজে ইছ মন্দ ইতি খ্যাতঃ। সা ধরৈবেহ যশোদেতি নিত্যসিদ্ধরো বশোদা নন্দরোঃ সাধনসিদ্ধৌ খরাজোণৌ প্রবিষ্টা বভূতামিত্যর্থঃ ॥ ৩৯॥

জনাৰ্দ্দনে গোপীজনান্ প্ৰেয়া পীড়য়তি নবনীত চৌৰ্ঘাছ্যপদ্ধৰৈ: উদ্বেজয়তীতি বা অন্যরসং ৰাচমান ইতি বা গোপগোপীযু মধ্যে

শুক্দেব কহিলেন রাজন •! বস্তু জ্রেণ, ধরানাদ্মী ভার্যার সহিত জ্রন্ধার আদেশ পালন করিবার নিমিত্ত জ্রনাকে কহিয়াছিলেন, ভগবন <u>! আমরা ছই জনে অবনীতলে জন্ম গ্রহণ-করিলে আমাদের ছই জনের মহাদেব বিশ্বের হরিতে সেই পরম ভুক্তি উৎপন্ন হউক, যদ্ধারা লোকে হুর্গতি হইতে উত্তীর্ণ হইয়াথাকে, এই বর প্রদান কর্মন ॥ ৩৮॥</u>

ব্ৰহ্মা, "তথাস্ত্ৰ" অৰ্থাৎ তাহাই হউক বলিলে, সেই মহাযশকী জোণ ব্ৰহ্মগুলে নন্দ এই আখ্যায় বিখ্যাত হইয়া জন্মগ্ৰহণ করেন এবং সেই জোণভাৰ্ম্যা ধরা যশোদা হয়েন। ৩৯॥

েদেই কারণে ভগবান্ জনার্দ্দন পুত্র ছইলে তাঁহার প্রতি তাঁহাদিগের সাতিশয় ভক্তি জন্ম।

ক্ষো ব্ৰহ্মণ আদেশং দত্যং কৰ্ত্তুং ব্ৰজে বিভূ:। সহ রামো বসংশ্চক্তে তেষাং প্রীতিং স্বলীলয়া ॥৪১॥
॥ * ॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংদ্যাং সংহিতায়াং বৈয়াদিক্যাং দশমস্বন্ধে বালক্রীড়াযামন্টমোহধ্যায়ঃ ॥ * ॥ ৮ ॥ * ॥

ত্রীবাদরায়ণিরুবাচ॥

औधतवामी।

चनीनमा পুরভাবাহকারিণ্যা॥ ৪১॥

॥ * ॥ इंजि मन्द्रम ष्यष्टेमः ॥ * ॥

নবমে পয় উৎসিত্তে গ্ৰা গোপোথ তৎক্কতং। বিলোক্য ভাওভলাদি ক্ষাং দান্না ব্ৰহ্ম তং। তন্দ্রাশ্রিতং বিশাং দৃই। বিশ্বিত চেতসং। বন্ধনন্ত্ৰুবাপ্রা। পূর্ণতা মন্ত্রশারং॥ • ॥ ়

देवक्षवरज्ञावनी ।

ভাবাং অতঃ পুত্রভূতে ইতি কচিং পাঠঃ সদত এব কথস্ত হৈ শাদিতি উকৈর দ্যাতে যাচ্যতে মাএং নতু বভাতে যং তশিল্পি যতে৷ ভগবতি স্বয়ং ভগবতি প্রীকৃষ্ণ ইত্যর্থ:। তশ্বিন্ ভক্তি নি তরাং পূর্বতোহিপি বরীয়স্যাসীং। তথা প্রসিদ্ধ ব্রজ্জন মুখ্যবেন স্বাভাবিক প্রম বাংস্বাবতীয়ু গোপ্যোপীশ্বপি নিত্রামানীদিতার্থ: পুত্রীভূত্তাদেবেতি ॥ ৪০ ॥

তত্র প্রস্ত দিল্লান্তান দৃষ্ট্যা তাবহুপদংহরতি কৃষ্ণ: স্বয়ং ভগববেন পরম স্বতলাংপি ব্রহণো লগান্ত সর্ক নিক্ষ ভক্তওরো রাদেশং বরং দত্যং কর্জুং তেন দামানাত্রা দৃষ্ট্যাপি দা তয়ো: পরম ভক্তি বিশেষ তয়ালীষ্টালক্তি রিগমেব প্রকটা স্যাদিতি নিদর্শনয়া
লগতাব্যভিচারিছেন পাঁবং বিধাজুং পরম স্বরমণ সহায়েন শ্রীবনরামেণাপি দহ ব্রন্ধে বদং গুদানীং প্রকটকতে তয়ো: দম্বিনি
ব্রন্ধ বিশেষে তংপুর্ভরা প্রকটিভূয় নিবদন্ স্বয়া নিক্ষ স্বাভাবিকৈয়ব লীলয়া তেয়াং তয়োগুংসলিনাঞ্চ প্রীতিং তিছিশেষং চক্রে।
বক্ষামাণ তাত্তিক দিল্লান্তান্ত্রমার প্রমর্থা। নমু যদি তাদৃশী ভ কিন্তরেয়াং পূর্কমিপি বিদ্যাত্রব তহি ব্রন্ধাদেশেন কিং কৃতং তরাহ
কৃষ্ণ ইতি স্বের্গ্রেক্য যা লীলা ভক্তিবশা লীলেত্যর্থ: তিয়ের তেয়াং প্রীতিং ব্রন্ধে বদন্ ক্রেমা ব্রন্ধাত ভাবং। তদাদেশং
বিপ্রাবিদায়ক্তা ইত্যাদিবং ক্রপয়া তয়হিমানমপ্যদর্শয়নিত্যর্থ:। অত গুদাদেশেন তবৈয়ব হিতং ক্রেমিতি ভাবং। তদাদেশং
বিনাপ্যনেয়ায়ং গোপাদীনাং তয়াব ক্রমাণ ॥ ৪১ ॥

॥ *॥ हे ि औरेवस्ववटकावनाः मनमिन्निनाः ष्रहेमः ॥ *॥

অথ তত্র তাত্তিকং সিদ্ধান্তঃ বক্তুঃ তৎপ্রতিপাদন বোগ্যাং পূর্বাপরবিলক্ষণাং লীলামুদাহরন্ দ্ধিপরশ্চোগ্যাত্ত্রনাতা কাং তাম-মুত্বতা বর্ণরতি একদেত্যাদিনা যশোদেতি দামোদরত্বাদিনা প্রীকৃষ্ণার প্রেমবশ্যতাতিশয় যশোদানাং নন্দস্য গেহিনীতাদ্ধাস্ত্রা

ক্রমসন্দর্ভ:।

॥ *॥ हेि श्रीमन्म क्रमनन्दर्भ २४मः॥ *॥

প্রিবিখনাথচক্রবর্ত্তী।

দশ্পত্যো র্যশোদানন্দরোউজি নিতরামানীদিতি গোপা গোপ্যশচাপি দ্রোণধরষোরমূবর্তিন তাদৃশসাধনবতঃ পূর্কজমন্যাসন্নিতি জ্ঞাপিতং ৪ ৪ • ৪

আদেশং পরমাভক্তিরন্ধিতি বরং। প্রীতিং চক্রে প্রেমাণমুৎপাদয়ামাস ॥ ৪১॥

॥ *॥ ইতি সারার্থদর্শিন্যাং হর্ষিণ্যাং ভব্ততে তথাং। দশমগ্যাইমোহধ্যারঃ সঙ্গতঃ সঞ্জঃ সভাং॥ 📲॥

নিবিদ্ধমন্থনং পীতা গুনঞাকৃত্তিমান্ কুধা। ভাগুং ভিত্বা ক্ৰন্তং মাত্ৰা নবমে বদ্ধ ঈশবং ॥ টোৰ্য্যকোধাদিমজ্জীবান শতুণৈৰ্ব দৈব বাৰবেং। চৌৰ্যকোধাদিমান্ মাত্ৰা বদ্ধতং কৃষ্ণ বােদিছি। অভিচমৎকারকস্যাসাধারণস্য শ্রীকৃষ্ণবিষদ্ধকনন্দশশোদাশ্রাব শ্রু অন্যান্য ব্যাপ সােদিগের স্বভাবতই তৎ প্রতি ভক্তি ছিল ॥ ৪০ ॥

দে যাহা হউক,ভগবান প্রীকৃষ্ণ ব্রহ্মার আদেশ সত্যুক্রিবার নিমিত্ত বলরামসহ ব্রজে বাস করিয়। পুত্রভাবাসুকারিণী লীলাদারা সকলেরই প্রীতি বর্দ্ধনকরেন॥ ৪১॥

। # ॥ ইতি দশমে অফীম ॥ # ॥

নবমাধ্যায়ে চুল্লীস্থিত চুগ্ধ উৎসিক্ত ছইতে লাগিলে যশোদা তাহার রক্ষণে গমন করায় একুফ রোষ-

একদা গৃহদাসীয়ু যশোদা নন্দগেছিনী। কর্মান্তরনিযুক্তান্ত নির্মানন্থ স্বয়ং দধি। যানি যানীহ গীতানি তথালচরিতানিচ। দধি নির্মান্থনে কালে স্মরন্তী তান্যগায়ত॥ ১॥ কোমং বাসঃ পৃথুকটিতটে বিভ্রতী সূত্রনন্ধং পুজ্ঞান্তের তুক্চযুগং জাতকম্পঞ্জ স্থভ্জঃ।

धीधतचामी।

স্বয়ং দধি নির্মামন্থ তদা অগায়ত চেতি চকারস্বরসঃ॥ ১।

देवस्व वरकावनी ।

যানি যানি ত্বস্য বালস্য চরিতানি ইহ তব সভায়াং মম গীতানি সর্বাণি তানি স্বসং স্বরস্তী বাংসল্যবিশাবেন ভাবয়স্তী দথে। নির্মাহনং যত্র তামিন্ কালে গানাবসরে অগায়ত। চকার উক্তনমূচ্চয়ে। নির্মান্ধ অগায়চ্চেতি নানাকবিজ্ঞনরচিতানি স্বয়ং তৎকণ নির্মানি বেতি জ্ঞেমং গীত্রপেণেতি শেষঃ॥ ১॥

ইঅং তদেক মিগ্রামাং ত্রমাত্রি নিজ্লেহভরোদয়াৎ তামের বর্ণয়ন্ পরমসৌলর্ব্যেণ পর্মক্রেহন চ ত্রাত্রযোগ্যতাং দশ্যতি

ক্রমসন্সভ:।

একদেতি। প্রায়োহয়ং দীপমালিকামহোৎসবো ভবেৎ। দামোদরলীলোপাসনস্য কার্ত্তিকেহভিধানাৎ॥ ১ । ৭২ । ৩॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

মহাবাৎসল্যপ্রেয়ঃ সাধনমপ্যসাধারণমপূর্কং শ্রেয়ে ভবিতৃ মহঁতীতি তদনাকণিতবতঃ প্রপ্নকর্ত্রাজ্ঞাহপি চিন্তং নাতিপ্রসরন্যালক্য তত্র মুখ্যং সিদ্ধান্তব্যপ্রস্থিত্ব দিনাস্তরণতাং দানবন্ধনলীলাং বক্তুমুপ্রক্রমতে একদেতি। দীপ্যালিকামহোৎসবদিন ইতি শ্রীবৈক্ষবতোষণী অত্র শ্যামৈককর্ণ ত্রক্ষমবং প্রাদ্ধ সংখ্যাস্বপি গোরু মধ্যে ব্রজ্ঞান্তস্য যাংপন্মগজিন্তাদ্যা অতিক্ষাত্র স্থান্ধিপ্রসঃ স্থান্ধিত্বমাত্রচারিণ্যঃ সপ্রাষ্ট্র এব গাবে। বর্ত্তে তাসামেব হ্র্মদ্যাদিকং মৎপুত্রস্য রোচকং ভবিব্যতীতি বিচারস্থী শ্রীবশোদা নির্মান্ত ব্রামিত স্বপ্রবোচনীয় নবনীতোৎক্রমণ হ্রাবর্ত্তনাদে বাংসল্যপ্রেমাখ হঠাদেব দাসীনাং বিজ্ঞানসন্তার অদ্যারভ্য বালকস্থ ভক্ষ্য নবীনত হ্রাদিকং সর্ক্ষমহ্মের সাধু সাধ্যিষ্যামি যথা তত্তদেব রোচন্ত্রন্ ক্ষ্মশ্রেয়াথং পরগৃহং ন যাস্যভীতি ভাবং দ্বীত্যনস্থানাং দ্রাং মধ্যে যদেকং সারভূতং পূর্বেহ্যঃ স্থ্যমেব সাধিতং তদেবেতি ভাবঃ। নির্মানহিত্যপলকণং হ্র্মপ্যাবর্ত্ত্যামাস ॥

সপ্রসিদ্ধো যো বাল: ক্লফ স্তস্য চরিতানি যানি গীতানি গীতচ্ছন্দ্র। কবিপুরফ্রীভি: স্বয়ং বা নিবদ্ধানি তানি স্মরস্তী অস্সন্দ্র্যতী অগায়ত। গৃহাস্ত: শয়িত কুফাদশনোখন্য স্বাস্ত: কোভন্যোপশান্তয়ে ইতি ভাব:॥১॥

বাংসল্যপ্রেমা রূপগুণাভ্যাং চ ক্লঞ্চ্য যশোদৈবাহুরপা মাতেতি দ্যোত্যন্ বাৎসল্য রসোপাসকানাং অবশ্যকর্তব্যং শ্রীকৃষ্ণমাতৃ-ভবের দধি ভাগুণাদি ভঙ্গ করেন, তদবলোকনে ঐ গোপী কর্তৃক শ্রীকৃষ্ণের বন্ধন এবং তাঁহার উদরন্থিত বিশ্ব দশনে বিশায় ॥ ০ ॥

শুকদেব কহিলেন, এক দিন গৃহের দাসীগঞ্জন্যান্য কর্মে নিযুক্ত হইলে নন্দগৃহিণী যশোদা স্বয়ং দধি মন্থন করিতে লাগিলেন, সেই সময় শ্রীকৃত্তের বাল্যচরিত্র ঘটিত যে যে গীত ছিল তাহা স্মরণ করিয়া গান করিভেছিলেন॥ ১॥

হে, রাজন্! যশোদার বিশাল কটিতটে কোম বসন কাঞ্চীছার। নিবদ্ধ ছিল, পু্ত্রস্তেহে স্তন-দ্বয়

রজ্বাকর্ষপ্রমভুজচলৎকঙ্কণো কৃওলে চ বিশ্বং বক্তুং কবরবিগলমালতী নির্মাস্থ । তাং স্তন্যকাম আসাদ্য মধুতীং জননীং হরিঃ। গৃহীত্বা দধিমস্থানং ন্যুষেধৎ প্রীতিমাবহন্॥ ২॥ তমঙ্কমার্ক্রমপায়য়ৎ স্তনং স্থেহস্কুতং সন্মিত্মীক্ষতী মুখং।

न्त्रीधत्रवामी।

স্ত্রনত্বং কাঞীবন্ধং। রজ্জ্বাকর্ষণেন প্রমো যুষো ভূজিয়োশ্চলক্তে কন্ধণে চ ক্ররাছিগ্রন্তো মাগতেরা যুসাঃ সা.॥ ২ ॥

देवकावरकावनी।

কৌমমিতি। তত্র স্থল্য: পৃথুকটিত্ট ইত্যুপলকশোনাসসৌন্ধর্যং ব্যঞ্জিতং। বেশসৌন্ধর্যং কৌমমিত্যাদিনা। কৌমমতসীত সূত্যং বারং কৌমদিতি অতসী স্যাহ্মা কুমেতি চামরা:। অতিস্ক্ষঞ্চেমবলোক্যতে নানারাগঞ্চেতি তচ্চ সচিত্রং পীতং জ্বেয়ং। অস্যা: কমদীপিকাভিপ্রায়তঃ শ্যামবর্ণবেন শোভাভরাপেক্ষরা এতস্যাঃ পীতবর্ণবঞ্চ শ্রীগৌতমীয়ে স্ত্রনদ্ধমিতি ত্রাপ্যতিশোভা দর্শিতা। স্তরং নীবীবর্ষং মন্থনার্থং বিশেষতো বা তর্নমং। স্বাভাবিক চেষ্টা সৌন্ধর্যমাহ রক্ষেত্যাদি। কুওলেচ চলম্ভী কবরঃ কেশবন্ধঃ মালতীত্যত্র ক প্রক্রাভাবঃ সমাসাম্ভ বিধির্নিত্য ইতি জ্ঞাপনাং। মালতীতি তস্যাএব কার্ত্তিকে প্রাধান্যাং। মেহমাহ পুরেতি জ্বাতেতিচ প্রচ্যিত-গানাং মুক্রবিতি ক্রবোশ্চালনব্যঞ্জনয়া হর্ষাদি ভাব বিলাসোহপি বর্ণিতঃ॥

তং স্নেহবিশেষনয় বাল্যলীলান্ত্রপয়া ক্ষা তান্যকামঃ তাং তাদৃক্ স্নেহরসময়ীং যতো জননীমিতি জ্রীক্ষান্তঃস্থিতভাবমেবা-ন্থবদতি তেন চ তস্যাঃ স্থমেবাভূদিত্যাহ প্রীতিং আসমস্তাবহন্ প্রাপয়ন্। তানপানে প্রযন্তাং মছন দণ্ড গ্রহণেন নিষেধ সামর্থ্যা-চ্চাভূর্য্যাচ্চ। এবং মনৌহরণান্ধরিঃ শ্যাত উত্থায়েতি জ্রেয়ং কার্তিকে প্রাভরেব মছন ব্যবহারাৎ বালান্তরৈরসংমিলিতভাচ্চ॥ ২॥

সন্মিতং প্রস: ব্যং স্ত্রামধ্র্রাচ্চ বিতেন গতে লক্ষ্যাণেন সহিতং মুথং তদ্যেক্ষাণা অভ্রাধি ত্যক্ত্য। নমু তং পায়রব্যে-বাল্কে ক্রা কুতো ন গতা তত্তাই জবেনেতি। তথা সতি বেগেন গমনাসিদ্ধে:। তত্ত্বৈব হেতুং উৎসিচ্যমানে ইতি উল্লিঞ্তীত্যথ:। এবং দৃষ্টিপ্রোচ্বেইনতিদ্বে পয়ং পাকস্থানং জ্ঞেয়ং তৎপ্যোহপি মথ্যমানদ্ধিবদেব ইতি ক্ষণিক তত্ত্যাগোহপি কুত:। অথবা যদ্ধামার্থ স্ক্রৎ প্রিয়াম্মতন্য প্রাণাশ্রা স্বংক্তে ইতি কৈম্ভ্যান্ত্র্যাক্ষ বিশেষতঃ স্ক্রং তদ্যৈব পিত্বে। চ প্রস্যাপাত্ত্থেং সোচ্যুপ্দেক্দেহধন-

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

র্ধ্যাননায় কৌমমতসীতস্তৃথং পীতচিত্রমতিসক্ষং ভবেং। তেনাস্যাঃ শ্যামবর্গতং ক্রমনীপিকোক্তং ধ্বনিতং। স্তানদ্ধং নীব্য নিবদ্ধং। পৃথুক্টিতটে স্ক্রিক্রিল্যাভ্যাং সর্ধাক সৌন্দর্য্যবঞ্চ ব্যঞ্জিতং রজ্জোরাকর্ষেণ শ্রমো যয়োন্তয়োভূজিয়োন্চলয়ৌ ক্ষণৌ বজ্ মিত্য-স্তানাং বিভ্তীত্যনেন সম্বদ্ধঃ। মেমতুল্যাং ক্বরাধিগলস্তী জলবিন্ত্রণীব মালতী যস্যাঃ সা। ক্প্রত্যয়ভাব আর্বঃ॥

আবাদ্য প্রাতরম্ব গৃহাৎ প্রবৃদ্ধা বহি নি নৈত্তা কুধা কদমুখং সন্নিত্যথং। মন্ত্রানং মন্তনদণ্ডং স্থীতেতি নাত ন 1 মথানেতি স্বর্চন্ মমান্ত্রিষ্যন্তীং মাত্রম্ভিজ্ঞায়েতি ভাবং অভন্তচাতুর্ঘ্যং জাকা যা মাতৃং প্রীতি স্তাং আবহন্॥ ২॥

অহে। বালস্যাস্য বৃদ্ধিরিত্যক্ত্ব মথনাধিরম্যোপবিষ্টা স্বয়মেবাস্কমারূচণ তং উৎস্জা ইত্যত্ত হেতুঃ জ্বেনেতি। তত্তাপি হেতুঃ উৎসিচ্য মানে অতিতাপেনোল্রিচ্যমানে সতি পয়সি উত্তারণার্থামিত্যর্থঃ। অধিস্রিতে চুল্লীমারোপিতে। নমু রক্ষাদপি তস্য। হগ্ধতিমমহা-

হইতে ত্থা প্রস্তুত হইতেছিল, আর বারষার রক্ষ্র আকর্ষণে বাহু-ঘয় প্রান্ত হাইতে তাহা হইতে ক্ষণ চলিত ও কর্ণের ক্তুলযুগল কম্পিত এবং কবরী হইতে পুস্পদাম, খালিত হইতেছিল, অপর প্রম বশতঃ তাঁহার বদন স্থেদ-বিন্তুতে অভিত হইয়াছিল, প্রীকৃষ্ণ স্তন্য পান্ কামনার জননীর নিকট আসিলেন এবং হস্ত ঘারা মন্থানদণ্ড ধারণ করিয়া প্রীতি উৎপাদন পুরঃসর মন্থন করিতে বারণ করি-লেন ॥ ২॥

হে রাজন্! ক্রোড়ে আরু ছরির সহাস্য বদন নিরীক্ষণ করিতে করিতে য়শোদা স্তন পান করাইতে লাগিলেন, স্কেহ বশতঃ তাঁহার পয়োধর হইতে ছগ্ধ প্রস্তুত হইতে থাকিল, ইতি মধ্যে চ্লীর উপরে যে ছগ্ধ ভাশু আরোপিত ছিল অগ্নির অত্যন্ত তাপে তাহা উপলিত হইল অতএব যদিও

অতৃপ্তমুৎস্কা জবেন না য্যাবুৎসিচ্যমানে প্য়সি ছধিজ্ঞিতে ॥ ৩॥
ন জাতকোপঃ স্ফুরিতারুণাধরং সংদশ্য দন্তি দ্ধিমগুভাজনং।
ভিত্তা ম্যাশ্রুণ দৃশদশ্যনা রহো জঘাস হৈয়ক্ষবমন্তরং গতঃ ॥ ৪॥
উত্তাগ্য গোপী স্কুশৃতং প্য়ঃ পুনঃ প্রবিশ্য সংদৃশ্য চ দধ্যমত্রকং।

শ্রীধবস্থামী

অধি প্রিতে চুল্লীমারোধিতে উৎসিচামানে অতিতাপেনো দ্বিজ্যমানে ॥ ৩॥ দুশদ্যানা শিলাপুজেণ অন্তরং গৃহমধ্যং গত একান্তে নবনীতমভক্ষ্যৎ ॥ ৪॥ স্পৃতং স্বত্থং দ্ধি মন্থন্থানং প্রবিশ্য ভিন্নু সংদৃশ্য দৃষ্ট্য ॥ ৫॥

देवसव्दावशी।

বিদ্যাদিসম্পত্তার্থকর্মানি সদৈবেহতে তচ্চৌষধপায়ন স্থপন তাড়নাদৌ প্রসিদ্ধং। অন্যত্র চন সম্ভবত্তি ইত্যন্যভাব হুর্বোধো নাতাপিতৃ স্নেহ পরিপাকঃ থবসৌ গোপজাতীনাং চ সর্বতে। হুগ্ধসম্পত্তাবেবাগ্রহঃ। ততোহয়ং বালকোন কাঞ্চিদপি স্বসম্পত্তিব রক্ষাং জানাতীত্যতে। ময়েবাধুন। সা কর্তব্যতি ধিয়া তৎপরি ত্যাগেন তদর্থ গমনমপি তৎস্বেহ ময়মেব মপাত্মসম্পত্তার্থং সহমান নেপ্যান্মছঃপ্রেহবিশেষ এবাম্বানি গম্যতে তথ্দিতি বিবেচনীয়ং স্বত্রব তুশকঃ॥ ৩॥

জাতকোপ ইত্যাদিকমশেষং। মাতৃষ্টেম্য বাল্যলীলাবেশমাধুর্যাং বর্ণিতং। তত্তম্ভাবানাং তন্মনসোবোদ্ধূত্তাং তত্তচেপ্টানাঞ্ বহস্যের কৃতত্তাং তালিকমেবেতি চ দর্শিতং। প্রোচ্নষ্টা মুবা রুণাপি বাল্য স্বভাবেনৈবাক্র যস্য সং। নাস্যং পশাতি বস্তম্যা ইত্যাদি ভটিপদ্যে মিথ্যাসৌ বিহিতেক্সির ইতি বং। যদা কদাচিং কৈতবাদিনা মিথ্যা শ্লোদিতি অধুনাতু অমুবাক্রঃ অতৃপ্তাদিতি মুনীক্রস্য সবিনোদ সাক্ষিত্বং দৃশদক্ষনেতি নিঃশবং তত্তলে শনৈবন্ধচ্ছিদ্রার্থং অন্তর্মস্তর্গুহং গতঃ সন্ হৈয়ঙ্গবং হৈরঙ্গবীন্ং হেগু গোদো-হনস্য সদ্যোনবনীতং। তাদৃশ স্বত্যের তদিত্যমর সন্মতাবপি। কাত্যস্ত নবনীত্তমিত্যাহ ইতি কীরস্বামি লিখনাং। তদিদক প্রথমনথিতাচদ্ধ্য ধৃতত্বাৎ কোগোদোহোত্তবন্ধং নব্যভিচরতি ॥ ৪॥

স্থ হ'ল পকং। ভশং ভিশ্নং। তচ্চ স্থতীস্থাৰ কৰ্মেতি বিলোক্য নিৰ্দ্ধাৰ্য্য তাদৃশে কৰ্ম্মণ্যন্যস্যাপ্ৰবৃত্তে উক্ষাভুৰ্য্যবিশেষোপলক্ষে স্তুপ্ত কোপসন্তাবনাচ্চ তমপি তত্ৰাপশ্যস্তী জহাস তস্যাতিচাপল্যেন ভেদেন চাতুৰ্ব্যেণ ভীত্যাপসরণেন গৃহান্তত্তৎ কিছিণ্যাদি তচ্চা-

ক্রমসন্দর্ভ: i

न काट्डिंड व्यवस्था गृहा हा खत्र गृहः गढः ॥ ८ । ८ ॥

🗐 বিশ্বনাধচক্রবর্তী।

প্রদন্তং যদন্ত্রাধেনাত্থঃ ক্লেট্প্পেক্তিঃ স্তাং । তছক্যপেরাদিরু কাপ্যপেক্যতা বরা পুনঃ সোহপি স্বেভ্যপেক্তাং ৄ প্রেরো বিচিত্রা পরিপাট্টাদীরিতা বোধ্যা তথা প্রেমবতীভিরেব বা ॥ ৩॥

ম্যা র্থাপি বাল্যস্থ ভাবাদেবাঞা বস্য স:। দৃশদশ্যনা শিলাপুত্রেণ নিঃশক্ষিদ্রোর্থং তত্তলে ইতি জ্ঞেরং। অস্তরং গৃহাত্যস্তরং তিহ্যস্পবং রেগগোদোহস্য সদ্যো নবনীতং ॥ ৪ ॥

স্থতং স্পৰং। দ্ধিমছনছানং প্ৰিশা দ্ধামত্ৰকং দ্ধিপাত্ৰং অভিচিৰ্ণদ্ধে অভিচৃত্ত্বনাস্ক শায়াং কন্ভন্ধং বিলোক্যেভি স্তন্যপানে বালকের ভৃত্তি হয় নাই, তথাচ তাঁহাকে পরিত্যাগ করিয়া যশোদা বেগে সেই দিকে গ্রন করিলেন ॥ ৩॥

ন্তন্যপান ত্যাগ করিয়া যাওয়াতে জ্রীক্ষের, জোধ হইল, কম্পানান জ্বরণ ওর্চ দশন দিরা দংশন করিতে করিতে ক্রোধে একটা শিলাপুত্র (লোড়া) লইয়া দধিমণ্ডের (নবনীতের) ভাজন ভাঙ্গিয়া ফেলিলেন, পরে গূহ মধ্যে গিয়া একান্তে নবনীত ভক্ষণ করিতে জারম্ভ করিলেন ॥ ৪॥

যশোদা চুলী হইতে হতও প্রথ নামাইয়া পুনরার দধিমন্থন স্থানে প্রবেশ করিয়া দেখেন দধিমণ্ড-

ভিন্নং বিলোক্য স্বস্থতস্য কর্ম তজ্জহাস তঞাপি ন তত্র পশ্যতী ॥ ৫॥ উদূথলাজ্যে রুপরি ব্যবস্থিতং মর্কায় কামং দদতং শিচিস্থিতং। হৈয়ঙ্গবং চৌর্যাবিশঙ্কিতেক্ষণং নিরীক্ষ্য পশ্চাৰ স্থতমাগ্যক্ষনৈঃ॥ ৬॥ তামাত্র্যন্তিং প্রস্মীক্ষ্য সম্বন্ধতোহ্বরুহাপ্যসার ভীতবং।

. শ্রীধরস্বামী।

উদুথলাতে প্রেবর্তি তিল্যাদ্ধলন্যোপরি । শিচি শিক্যে। চৌর্যোগ বিশক্তিতং চঞ্চলমীক্ষণং যস্য তং ॥ ৬॥
তপদা ঐকাগ্রোণ ঈরিতং তদাক্রিতাং নীতং ক্ষমং যোগ্যং প্রবেষ্ট্রং মনোহপি যং নাপ তং। অথবা অন্ধাবৎ কেবলং নতাপ

देवकवट्यावनी ।

লিত ভাণ্ডাদি শকাশ্রবণেন চ॥.৫॥

বাকাদিভয়াদিবর্তা স্থাপিতস্যোদ্ধলস্যোপরি স্বন্তিকাসনেনোপরিষ্ঠং অস্তর্গ হপ্রবেশানস্তরং যৎ কিঞ্চিদেব ভূকা সহরমবিনিষ্ঠং হৈয়ক্ষবীনং সভাওমের গৃহীয়া মাতৃর্বকনায় পশ্চাজাবেশ নির্দ্ধনং গৃহপশ্চাজেশং গ্রেভি শেষঃ। পূর্ব্বং শিক্ষে, স্থাপিতং যত্ত দেরেভি বিশেষচাপল্যদর্শনমপ্যক্তং পশ্চাং স্বত্সা পৃষ্ঠতস্তদ্ধিক্ষনার্থং ॥ ৬॥

প্রকর্ষণ সম্যাগীক্ষিত্তি স্বতাড়নার্থং তদ্যা যক্তি গ্রহণাসম্ভবাং প্রাক্ ক্রদাপি তদর্শনাচ্চ। তরিদ্ধারার্থং অতঃ সন্থ্যঃ দন্ অপ্সদার মাতৃবঞ্চনার ব্যলাক্ষ্পাথা তৈতার্ক্সরিহিভনানাজন তাদদননিজপুরপুরোধারঃ প্রত্যেবতি জ্বেরং। ভীতবদিতি সহজ্মাতৃস্নেহভর জ্ঞানেন তবতোহ স্বভ্রাভাবাং। যথা ভীতোহন্যে মণা তথৈব ইত্যথং। এবা মাত্রি বাল্যাদি দীলামাধুরী। মাতা তৃত্তি বিশ্বাদ্ধিন প্রোধারমপি নির্গত্তনং জ্ঞারা অন্ধাবদেবেত্যাহ যোগঃ সমাধি স্তত্তাং মনঃ প্রবেইং ব্রহ্মণি শ্রীভগবত, এবাবির্ভাবত স্বরে বা দীনী বিহুং ক্ষমং যোগ্যমপি তপ্সা ঐকার্গ্রেশ ক্রিতং প্রমূথ্যায় প্রেরিত্মপি নাম্প্নাদ্ধীত্যর্থঃ। নাম্মিত্যাদেশ স্প্রি

ক্রমসন্দর্ভ:

উদ্ধলেতি। পশাদ্বারেণ তুরালির্গমেতি শেষঃ ॥ ৬ **॥**

তানিতি অপসরণং নাত্বকনার্থং প্রোধারারৈর জেরং। প্রবেষ্ট্ং জন্মণি লীনতাং প্রাধাং তপসা প্রেরিকম্পি যৎ, যং নাপ ॥ ৭।৮॥

এীবিশ্বনাণ্চক্রবর্তী।

বাম তৰ্জন্যা নাসাগ্ৰং শৃষ্টে,তি জ্ঞোং ॥ ৫ ॥

দ্ধিক্লিল চরণচিক্লেন কিছিণীশন্দেন চ তকালিতভাগুদিশক্ষেন্ত গৃহান্ত: ইতং নবনীতং ভূঞানং অনুষায় হসন্তী কিঞি দ্বিদ্য যবিজ্ঞ যিবাসজি আ তাবদেব পক্ষবারেণ নিংস্তা বহিঃ প্রালণান্তরে কাকাদি ভ্রাদ্ধোম্থীকতোদ্ধলস্যোপরি ক্লঞে অভিকাসনে-নোপবিটে সতি দৃদভূতদাই। উদ্ধলেতি শিচি শিকো ভিত্তঃ ততংশ্চার্থিআ আনীত্মিত্যাই। টোগ্যাক্লেভা মণ্ড্তাভ্নভ্যাদ্ধি-কিতে তদা গ্রানাম্সন্ধানপ্রে ইক্লণে বস্য তং। গৃহান্তগতৈরতির্যাগ্রীবং নিরীক্ষ্য পশ্চাৎ ক্রন্ত্রিক্লনার্থং ওৎপৃষ্ঠতভাং বিশ্বস্থী শনৈরিতি অচর্ণশন্ধাভাবার্থঃ ॥ ৬॥

পুষ্মভীৰণাৰ্থমাত্ত্বট্টিং ভীত্ৰটিতি সাহজিক মাতৃৰেহভাৱ জ্ঞানেন তৰ্তোহস্তৰ্যাভাবাং। যথা ভীতৰ্গিতি মতুৰস্তং ভ্যায়জং

ভাজন ভগ হইয়া পড়িফাছে। দেখিয়া বিবেচনা করিলেন পুত্রেরই কর্প্প হইবেক, কিন্তু ভাঁহাকে তথায় দেখিতে বা পাইয়া হাসিতে লাগিলেন ॥ ৫॥

পরে গৃহাভান্তরে দৃষ্টিপাত কয়াতে দেখিতে পাইলেন বালক বিপর্যন্ত উদ্থলের উপর সন্তিকাসনে উপবিষ্ট হইয়া শিকাল সদ্যোজাত নবনীত পাড়িতেছেন এবং যথেচহরপে বানরদিগকে দিতেভেন, পরত চৌর্য হৈছু জাহার নেত্রহর স্থতিশয় চঞল হইতেছে নিরীক্ষণ করিবামাত্র যশোদা ধীরে
ধীরে পশ্চাহ দিকে গমন করিলেন ॥ ৬ ॥

• এই সময়েই জিক্স পশ্চাৎ দৃষ্টি করাতে তাঁহার ন্য়নগোচর হইল, জন্মী যহিহত হইয়া নিকটে উপস্থিত ইইয়াছেন অতএক সম্বর উদ্ধল হইতে অবরোহণ করিয়া ভীতবৎ পলায়নপরায়ণ ইইলেন, যশোদা তাঁহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ ধাবমান হইলেন কিন্তু তাঁহার ধাবন করা বিফল হইল, কৃষ্ণকে প্রাপ্ত

গোপ্যবধাবন যমাপ যোগিনাং ক্ষমং প্রবেষ্ট্রুং তপ্দেরিতং মনঃ ॥ ৭ ॥ অরক্ষমানা জননী বৃহচ্চলচ্ছেন্নীভরাক্রান্তগতিঃ স্থমধ্যমা। জবেন বিস্রংসিতকেশবন্ধনচ্যতপ্রস্নামুগক্তিঃ পরাম্যৎ ॥ ৮ ॥ কৃতাগসং তং প্রকৃদ্ভমক্ষিনী কর্ষস্থান্দ্রিনী স্বপাদিনা।

धीधत्रश्रामी।

ষতে। গোগিনাং মনোহপি বং প্রবেষ্ট্রং নক্ষমমিতি ॥ १॥

অবঞ্মানা এবং ক্ষমস্গচ্ছন্তী বৃহত্যোশ্চলন্ত্যোঃ শ্রোণ্যোর্ভরেণাক্রান্তা তকা গতি র্যস্থাং সা বিস্তংসিতাৎ কেশবন্ধাং চ্যুতৈঃ প্রস্থানবন্ধগতিবস্থামনং য্সাঃ সা। • যথা জবেন কম্পিতাং কেশবন্ধাং পুরংপতিতানি প্রস্থানি অনু পশ্চাং গতি র্যসাঃ সা প্রামৃষ্থ ধৃতব্তী॥ ৮ ॥

অলম্পিনী অঞ্জন্তী সর্বাতঃ প্রদানন্তী মদী মরোঃ তে অফিণী অপাণিনা কর্বন্তং মর্দয়ন্তং ভিষমন্তী। ক্রস্তু জান্দনঃ । তীবয়ন্তী ভয়মুৎপাদ-

देवकवर डायनो।

ভাবিষাং। অন্বধাবং পদে পদে প্রাপ্যমানমিবাধাবং। অহো অন্ত তাবদন্তা: সন্তত মক্ষরনাদিসময়নৌভাগ্যং প্রদায়নসময়-সৌভাগ্যমণি প্রম যোগিনাং মনসোহপ্যগোচর ইতি ভাবঃ। সাক্ষাক্ত ধারণান্তস্যা: সর্বভক্তেভ্যোহপ্যথিকে। ভাগ্যভ্রো দর্শিতঃ॥ १॥ রহিদ্যোদিরপাণি জ্বেন প্রাম্বং তং পৃষ্ঠতে। ধৃতবতী স্বেহময়েনেতি শেষঃ মতে। জ্বননী ॥ ৮॥

কৃতং আগো যেন তং অভন্তাড়নমাশকা তঃ পরিহারার্থং প্রকর্ষণ ক্রমন্তং অতএব অঞ্জনসিনী অপ্রশৃতিঃ প্রসরংকজ্জলে অক্সিনা বাধ্যমানমপি মাতৃহত্তেনাঞ্চমার্জনমপরাধাদপ্রাপ্য অবৈদ্যাব পাণিনা কর্মন্তং সম্মুদ্ধিতঃ বহুলাঞ্চনির্গমার্থং কিছা অপ্রাপীসারণার্থং মার্জয়ন্তং কিঞ্জিন্তান বিহ্বলে ঈক্ষণে নেত্রে যদ্য তং । কিছা তথা ক্রমন্তং । উতৈবীক্রমাণাহ্বলোকয়ন্তাপি । পুন ন্তাণুশবিক্র্মাভ্যাসসক্ষোচনেন স্থপ্রকৃত তপোদানার্থং ভীষয়ন্তী ভায়য়ন্তী ভায়মন্তং অবাগুরং অবাগুরত । গুরী উদামে। হে অশান্ত, রোবাক্রান্ত লুক্প্রকৃতে বানরপ্রিয় গৃহল্টাক ইতঃ প্রভৃতি নবনীতাদিকং কিঞ্জিলাশ্যে বন্ধা গৃহান্ত নথা কুত্রাপি গন্ধা ক্রীড়েত্বং ন শক্ষোধি ক্রীড়নকানি

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

বং। স্যাত্তথাপ্ৰসাৱ ছ্ট্রাবেত্যর্থঃ। ভয়ভাবনয়া ভিতস্যেতি কুদ্ভাতেকঃ। গোপী বশোদা বোগঃ স্মাধিস্তত্বতাং মনঃ তপ্সা জ্ঞানেনে-বিতমপি প্রবেষ্ট্ং ব্রহ্মণি লীনী ভবিতৃং ক্ষমমপি বং নাপ। নামং ক্থাপ ইত্যাদৌ স্পন্নীভাবিহাং॥ ৭॥

নচ যোগিছ্প্রাপং তম্ম্ধাবনেন সান প্রাপেতি বাচ্যমিত্যাই অষ্ট্রেড । বিস্থাসিতাং কেশব্রাং চ্টেড: প্রস্নের্ম্গতির্ম্গমনং যস্তাং সা। পরা পৃষ্ঠতোহমুষং তং ধৃতবতী ॥ ৮॥

যোগিছপ্রাপং তং ন কেবলং খৃত্তরতোব কিন্ত ব্রহ্মকালিভির্নিশং স্ত্র্যানং ত্মভং সয়ৎ অপি মহাকাল্যমাদীনামপি ভয়হেতৃং তং যষ্টিমাত্রেণাপ্যভাষ্যদপীত্যাহ কুতাগদমিতি অঞ্জনসিনী অঞ্জী দক্ষতঃপ্রদেরতী মদী যােগান্তে অক্ষিণী, অপাণিনা স্বামপাণিপুর্দ্ধনৈব সংমদ্রস্তং দক্ষিণপাণেম হিগ্হীত্রাং ভিষয়ন্তী যট্টা ভাষ্যন্তী। ভ্রন্ত্রগাবাধৌ। বহা ভীষ্যমাণা তদা ভ্রপরবৈশ্বদ আর্থে। আবাধ্বং

হইতে পারিলেন না। হে রাজন্ ! যোগিদিগের একাগ্রতাদারা তদাকারে পরিণত চিত্ত বাঁহাকে প্রাপ্ত হইতে অক্ম হয়, তিনি কি সহজে ধৃত হন্ ? ॥ ৭॥

অনেক ক্ষণ পশ্চাৎ পশ্চাৎ গমন করিয়া পারে যুশোদা তাঁহাকে ধরিলেন। ধ্রিবার সময় চঞ্চল ও বিশাল নিতম্ব-ব্যের ভারে যশোদার গতি এক এক বার স্তব্ধ হইতে লাগিল, আর কেশবন্ধ বিস্তংসিত হওয়াতে তত্ত্বস্থাপ সকল বিগলিত হইয়া পশ্চাৎ পশ্চাৎ পতিত হইল ॥৮॥

সে, যাহা হউক, শ্রীক্ষের হস্ত গ্রহণ করিয়া ভয়প্রদর্শন করিতে করিতে ঐ গোপী যদিও অভিশয় ভংশন করিলেন, তথাচ তাঁহার দৃষ্টি শ্রীকৃষ্ণের প্রতিই রহিল। ভগবান অপরাধ করিয়াছিলেন,

榖

উদ্বীক্ষ্যমাণা ভয়বিহ্বলেক্ষণং হতে গৃহীত্বা ভিষয়স্ত্যবাগুরৎ ॥ ৯ ॥ ত্যক্ত্যা, যক্তিং স্থতং ভীতং বিজ্ঞায়ার্ভকবৎসলা । ইয়েষ কিল তং বন্ধুং দাল্লাহতদ্বীর্য্যকোবিদা ॥১০ নচান্ত ন' বহি র্যায় ন পূর্বাং নাপি চাপরং । পূর্ব্বাপরং বহিশ্চান্ত র্জগতো যো জগচ্চ যঃ ॥ ১১ ॥

ं श्रीधव्यामी ।

यक्षी व्यवाधतमञ्जूनग्रः॥ २॥

ইরেষ ঐক্তং। পতথীর্বাকোকিদা তংপ্রভাবীনভিক্তা॥ ১০॥

অকোবিদৰ্মেবাহ নচান্তরিতি পঞ্চতিঃ। বন্ধনং হি বহিঃ পরীতেন দামা অন্তরাবৃত্তসাব ভবতি তথা পূর্বাপরবিভাগরতো বস্তনঃ পূর্বতো দামস্বাহপরতঃ পরিবেইনেন ভব্তি নহেতদন্তীত্যাহ নচান্তরিতি কিঞ্চ ব্যাপকেন ব্যাপ্যস্য বন্ধোভবতি তচ্চ বিপ্রীত্মিতাাহ

বৈষ্ণবতোষণী।

সহচর বালকাদীংশ্চ দ্রষ্ট্রপি ন শক্ষাদীত্যাদি বাকোন তথা যই যোগান প্রায়াদিনা তাড়নোদ্যমিব ক্রতবর্তীতা ্র্রান্থ ন চ তাড়য়ানাদ উবীক্ষামাণেতি সভয়র পাঠে ভয়বিহ্বলেকণং যথাজ্ঞারথা উঠৈচেরর্জমুখতরাহবলোক্যমানেতি তজ কাত্র্যমূক্তং। আইতোহবাঞ্ রদেব। যথা ভয়েন বিহ্ববে কম্পান্ন, হড়ে গৃহীত্বা ক্ষণমবাঞ্চরং। অভাৎ সমানং॥ ১॥

যতোহর্তকমাত্রে বংপলা কিমৃত স্বার্ভকে তলিলিভার্থ:। অভোহতদীর্যকোবিদা তৎপ্রভাবায়সন্ধানরহিতা স্নেহভরাক্রান্ত-চিত্তকোন্যাক্তর:। যায়। ভ্রীব্যকোবিদা তচ্চাপ্দভর ভ্রবারতাদ্যভিজ্ঞা অত্তং বন্ধুনৈছেং। কিল প্রসিদ্ধে নিশ্চয়ে বা॥ ১০॥

জাহো প্রেমবলং শ্রীষশোদায়া ইত্যাহ ন চেতি ফুমকেন ব্যাপকত্বেন বহিনান্তি অত তৎপ্রতিযোগিতয়া প্রতীতমন্তরমণি নাতি। এবং পূর্বাপরে অপি। জগচ্চ যঃ ইতি কারণবাতিরেকে কার্য্যাতিরেকাৎ যদননাক্ষণদিত্যর্থ:। ততণ্চ তচ্ছক্রৈয় অপচ্ছকে-

क्रममन्द्रः। •

ভীষয়ন্তী ভায়নিত্মিতার্থ:। অবাগুরং অবাগুরত ভং সনাদিনা তাড়নোদ্যমিব ক্বতবতী ॥ ৯। ১০॥ ন চান্তরিতি কিঞ্॥ ১১॥

প্রীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

ভো অশান্ত প্রকৃতে বানরবন্ধে মন্থনীকোটক অদ্য নবনীতাদিকং কৃতঃ প্রাপন্স তথা বর্গমাদ্য যথা সহচরবালকৈঃ সহ থেলিতুং নবনীতমপ্রস্তৃ পন প্রভবিষাসি। ইদানীং যাইতাড়নাথ কিং বিভেষীতি তর্জ্যন্তী যই গুণানেন তাড়নোদামং চকার নতু ততাড়। গুরী উল্লেখ্য ১ ॥

মাত্রমা মাং তাড়য়েতাকৈ তাড়নে যদি তবাতিশয়ঃ ভীন্তং কিমদ্য দ্বিভা গুমভাজনী:। মাত্রের মথ নৈব করিয়ে পাত্র স্বকরতো বত যদ্ধিমিতি পুজোক্তি-কাত্র্যা বিরবমনা হস্ত ক্লাচিদমং মন্থানা বনং প্রবিশেদিতি শঙ্করা তলিবোধার্থমূপায়ং নিশ্চিকায়েত্যাহ তাকেতি। তথীগ্যন্ত সর্বব্যাপকস্থশক্ষ্ণস্য তদৈখর্যস্যান কেশবিদা। তদ্ধ তন্মাধুবৈত্বিক নিমম্বাদিতি ভাবঃ ৮ ৮০ ॥

ব্ৰহ্মাদি অধপ্যান্তং স্মায়াগুলৈ নিবপ্নস্তমপি সর্ব্যাপক্ষপি মহামহেশ্বং তং স্থপ্রেমবলাদেব পট্টময় দায়া ব্রহ্মাপীতাহি ন চেতি ঘাডাাং ব্রহ্মাই হি বহিংপরীতেন দায়া আর্তস্য পরিছিল্ল ব্রহাণ সন্তব্যতি যক্ত তু বিভূষাদহি ন বিদাতে তৎপ্রতিযোগি ঘাদঝ্র ন বিদাতে তত্র ক বা দায়া স্থাতবাং। কিছা তেনাবরীত্বামিতি ভাবং। সর্বদেশব্যাপকতম্ক্রা প্রশঙ্গাৎ সর্বকাল্বাপিকস্মাহ ন প্রাপ্রানিতি ঘালাং পাক্ পশ্চাৎ কালো নাজ ইত্যথাঁ। কিঞ্চ ব্যাপকেন ব্যাপাস্থ বুছিলা ভবতি তচ্চাত্র বিপরীত্মিতা। প্রাণাশ্বিমিতি। স্থাত্র ইতি তচ্ছ ক্রিকার্ছাদিতার্থং। তত্র সম্পূর্ণেন স্থাতাপি তছলোন সন্তবেং কিং পুন র্জাগদংশাংশভূতেন নামেতার্থা। নত সাকারতেন তস্য বিভূষং সন্তবেদিতি বাচাং সাকারতৈব তত্যোদ্যে সর্ব্বস্থাত ইদ্যাক্ষাল্য যশোদ্যা দুট্যাং।

স্তরাং কেবল রোদন করিতে লাগিলেন। অঞ্জলে কাঁছার লোচনমুগলের অপ্তন চতুর্দিকে প্রস্ত হইতে আরম্ভ হইল। অপর হুই কলে হুই নেত্র মর্দন করিতে থাকিলেন॥ ৯॥

হে রাজন্! ষশোদা অতিশর পুত্রবংগ্রা, সন্তানকে সভয় অবগত হইরামাত্র যতি পরিত্যাগ করিয়া রুক্ত্র বারা বৃদ্ধন করিতে ইচ্ছা করিলেন, যে হেতু ভগবানের কি রূপ বীর্যা, তিছিলয়ে ঐ গোপী অনভিজ্ঞা ছিলেন ॥ ১০ ॥

হে রাজন্। যশোদাকে কেন অনভিক্তা বলিলাম তাহার কারণ শুন, যাঁহার অন্তর নাই, বাহির

তং মন্বাল্লজনব্যক্তং মর্ত্তালি**ম্বমধোকজং। গোপিকোলুখলে দাল্ল। ববন্ধ প্রাকৃতং যথা ॥ ১২ ॥** তদ্দামবধ্যমানস্য স্বার্ভকস্য কৃত্যিসঃ। ব্যঙ্গুলৌনমভূতেন সন্দধে ইন্যান্চ গোপিকা।

शिधतयामी।

পূর্ধাপব্যিতি। কিঞ্চ ত্রতিরিক্তম্য চাভাবাং ন বন্ধ ইত্যাহ জগচ্চ য ইতি ॥ ১১॥ তং মগ্রালঙ্গ মধেকিজং আয়ুজং মত্বা ববন্ধ ॥ ১২॥ দ্যকুলোনং দ্বাভ্যামকুলিভ্যামপূর্ণং॥ ১৩॥

বৈষ্ণবতোষণী।

স্তদংশাংশভূত্য। রহ্মা কথং তদ্ধঃ স্থাৎ নহি বহিন্দিটোে দহেয়ুবিতি ভাবঃ ি স্ক্তিত্ব ন্ঞ্প্রোগ স্তভ্ততাবদাটাং অত্এব সম্-চন্যে চকারবিশি শক্ত তমেব ব্যস্ক। যতুলোঃ সামানাধিকরণাল্লচ স্বক্পান্তর্মিতার্থঃ ॥ ১১॥

বণা প্রাক্তং বালং তৃথৈবচ ত্রি কথং ববদ্ধ ত্রাই মর্ত্রালিকং দৃশ্যান্মমূহাবালকাকারং। ত্রি কথং ন চান্তরিত্যাদি উত্রাই কথাক্তং ইন্ত্রিয়জ্ঞান্তীতরূপং। অতএব নিত্যা ব্যক্তাহিপি ভগবানীক্ষতে নিজন্ধজিতঃ। তামুতে প্রমান্ত্রানং কঃ প্রেদ্যান্ত্র প্রত্নাধ্যান্ত্র নিত্যা ব্যক্তাহিপি ভগবানীক্ষতে নিজন্ধজিতঃ। তামুতে প্রমান্ত্রানং কঃ প্রেদ্যান্ত্র প্রক্রের প্রক্রির প্রক্রের প্রক্রির প্রির প্রক্রির প্রক্রির প্রক্রির প্রক্রির প্রক্রির প্রক্রির প্রক্র

त्रभटलमे कुछानन इछारनन वक्तनरगागार छाद्र। भिक्षामाः भववानक वर्षे रभक्तानी छिछा। मानूरनानमिछि व्यथनामा वस्त्री

क्रमनमर्ज्ः। •

. श्रीविधनायहज्यवद्योः।

্প্রমা স্মাবিষাতাপি তক্ত বন্ধনে প্রথমং ওদাকারস্য মাতৃক্ষোড়পরিচ্ছিলসাপি বিভূমমাহ বিভি:। তদামেতি। সহচুরঃ সহ

ুর্ব নাই, পর নাই, যিনি সরং জগতের পূর্বে পর, জান্তর আছির, তথা আপনি জগতের

মানবলীলাকারি সেই অব্যক্ত অধোক্ষজকে আত্মজ জান করিয়া ঐ গোপী প্রাকৃত বাসকের তুল্য হারা উদূখলে বন্ধন করিলেন॥ ১২॥

याङ्। इछक, कृष्णान्ताथ वित्रा यित्व तब्बूषाता सीम वानकरक तक्कन कतिएक बात्रक कतिएन

ইনং ত্লুধনং প্রোধারাভান্তর প্রাক্ষণপতি তন্তাদেবঁ জেলং হৈছে। বৃত্ত তক্ত প্রোধারা গ্রন্থ বাং। টেতা হঞ্। যৌ তাকর্জনরকৌ তু ব্রুজে সভ্যোপ্যাচনাবিতি হরিবংশাং॥ ১২॥

[•] যদনাং সন্দধে তদপি ছাঙ্কুনং ন্ন্যাদীদি ভাষয়ঃ। যদিতি প্রথমায়া রজ্ঞ। দৈবাৎ ছাঙ্কুলোনসং জ্লাতং ততণচ তস্য বীল্যোচিত-

[া]ই সা কথং ব্ৰদ্ধ তত্ৰাহ তং আত্মৰ্থী মন্ত্ৰা অলাধাৰণৰাংস্ণাপ্ৰেমবিষয়ীক্ত্যতাৰ্ত্তা । জ্ঞানৈত্ৰাং বিভূত্বেপাচিস্তাশকৈচাৰ নামিতি ভাৰণা অব্যক্তং প্ৰেমবাণ্য বাদেৰ প্ৰজ্ঞীভূত মহৈহুৰ্য্যং মৰ্ত্তালিসং মহ্যাক্ষাইং জন্পাধোক্ষসতীলিসং। মথা প্ৰাকৃত ্বাতি তথৈৰ চিং প্ৰমণি তং বৰ্দ্ধেতদহা প্ৰেমবলং তদ্যা ইতি ভাৰং॥ ১১॥ ১২॥

যদাসীত্রদপি ন্যনং তেনাশুদপি সন্দধে। তদপি দ্বাঙ্গুলং ন্যনং যদ্যদা দত্তবন্ধনং। এবং স্বগেছদামানি যশোদা সন্দধত্যপি। গোপীনাং স্থায়ন্তীনাং সায়ন্তী বিস্মিতাভবৎ। স্থমাতুঃ স্বিদ্নগাত্রায়া বিস্তন্ত্রকবরস্রজঃ। দৃষ্ট্রা পরিশ্রমং রুষ্ণ রূপয়াসীৎ স্ববন্ধনে॥ ১৩॥

বৈষ্ণবতোষণী।

দৈবাদ্যস্লোনখাং উত্তরাদাঞ্চ তথ্য লাল্যোচিতহঠবত্তাদর্শনেন তত্ত দর্শিতাস্থভাবরা ত্রিভ্তাশক্ত্যা তথৈব রক্ষণাং। কিঞ হিতেহপি প্রেমণি বৈর্ত্তাবিশেষতজ্জাত তৎক্ষণাবিশেষাভ্যাং দাভ্যাম্নদেন তদ্দীকরণং ন ভাং। জতএব দৃষ্ট্য পরিপ্রামং কৃষণ কুপয়াসীং স্ববন্ধনে ইতি বক্ষ্যতে ইতি দৈবী হচনা। জন্য দাম সন্ধানক মাতাপুত্ররো ওৎসনবোদনে শ্রুখা আগতাভিঃ প্রতিবেশি গোপীভিঃ পরিহাসেন তদর্পণাং॥

যদি ত্যস্তান্ত দিত্যনেন পূর্বেশাবয়:। যদ্যশাদিতি বা বধ্যতে অনেনেতি বন্ধনং দাম। যদ্যদা দন্তবন্ধনং তৎ সর্ক্মপি ভাস্তাং ন্যনমিতি পূর্বেশৈবারয়: ॥

স্থ সমন্ত্রীনাং স্থামনানামপি গোপীনাং। অনাদরে ষষ্ঠা। অতিনির্ককেন সন্ধীয়মানেংপি মুহুর্ব কনে রক্ষ্পগ্যাইয়রপ্যবসিতে পরমান্তর্যাণ যচ তাদাং স্থামতং তদ্পানাদ্ত্যেত্যর্থঃ। স্থগেহে যানি দামানি মহননেত্রাণি তানি সর্কাণ্যপি সন্দধতী সতী। যদ্বা সন্দধতী বন্ধনাভিনিবেশেস সন্ধানং কুর্কত্যপাভবৎ। সপ্তম্যর্থে ষষ্ঠী গোপীয়ু স্থামপ্তীয়ু সন্ধান্ধ স্থামপি স্থাম্বী বিশ্বিতাপ্যভবং। সত্তমহামিন্ দিনে সপ্তা শ্রীনোহিণ্যপি শ্রীমহুপনন্দাদিগৃহে নিমন্ত্রিত্ব গতাসীদিতি গম্যতে অন্তথা সা ন্যবার্ষিষ্যদিতি॥

স: স্বয়ং ভগবান্ ক্লম্ব: সর্কচিত্তাকর্ষকলীল:। স্বেতি পাঠে শ্রীক্ষক্তাপি **তক্তাং সেহাধিক্যং বোধুন্নতি। অত**এব ক্লপন্না মাসু-

क्रममन्रर्जः.।

হঠবতাং দৃষ্ট্। তথিভূহ-শক্তিন্ততাত্মানং প্রকাশিতবতীতি সর্বস্যা এব দ্বাঙ্গুলোনন্তং জাতং ॥

যত্র স্থিতেহপি প্রেমণি ভক্তবৈক্ষ্যাবিশেষ তজ্ঞান তৎক্বপাবিশেষাভ্যাং দ্বাভ্যামূনত্বেন তদ্দীকরণং ন স্যাদিত্যেষা তু দৈবী হুচনা বক্ষাতে চ। দৃহ। পরিশ্রমং ক্লফঃ ক্লপয়াসীৎ স্ববন্ধনে ইতি॥

অতঃ শ্রীরোহিণ্যাদি শ্রীমছপনন্দাদিগৃহে নিমন্ত্রিতেব গতাসীদিতি লভতেে। অন্যথা সা বাৎসল্যাদবারগ্রিষ্যদিতি ॥ ১৩ ॥

শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

ধেলনং প্রগৃহেষু দধিচোর্য্যং চাবশ্যকং প্রাত্যহিকং ক্রত্যং চিকীর্ষো ম´ম বন্ধনং মা ভবত্বিতি তদিছোয়াং জাতায়াং মৎপ্রাকৃং কা ব্রীযা-দিতি তদীয় সত্য সঙ্কলতা শক্ত্যা প্রেরিতা বিভূতাশক্তিং সহসৈব তদ্দেহে প্রাত্রভূদিত্যাহ ঘ্রস্থ্যানং হাভ্যামসূলীভ্যামপূর্ণং। ততশ্চ। তেন দামা সহ অন্যদাম সন্দধে গ্রাছিং দকা জুগুক্ষেত্যর্থ:॥

বন্ধ্যতে হলেনেতি বন্ধনং দাম ॥

গোপীনাং গোপীরু প্রতিবেশি পুরক্ষীরু স্কারমানাস্থ সভীরু বিশিতেত্যহো মৃষ্টিণরিমিত্যক্ষোদরং শতহস্ত পরিমিতেন দামাপি ন বেষ্টাতে ত্ত্রোদরং তিলমাত্রন্পি ন বিপুলীভবতি দামাপাঙ্গুলিমাত্রমপি ন ন্নীভবতি তদপি বেষ্টনং ন পূর্য্যত ইত্যেকে। বিলয়ং। প্রতিবার্ষের বেষ্টনে অন্ত্র্কুল ন্নতৈব নতু তাঙ্গুল চতুরস্কুলাদি ন্নতেতি বিতীয়ণ্চ বিলয়ং॥

তত্তাহো মণিম্যানতিনীর্থকি জিণীবেটিতাবেশ্বাস্যাস্য গৃহস্থিত সর্ব্বামতিরপি যবদ্ধন ন নিশাদ্যতে তদ্য ওতং বং বালকস্য লগা চপত্তে বিধানা বন্ধন ন নিথিতমিত্যস্থীয়তে তদিও উদ্যাৎ প্রিয়নথি বনোদে বির্মাতামিতি পুরদ্ধীন্ধন প্রবাধিত্যাপি যনোদ্যাদ্য সন্ধাপর্বত্যন্ধর্প দামতি প্রথিতিরেত্বত্বদ্বস্যাবিধির্থিলিগমিবনীয় ইতি প্রোচ্বাদ্বত্যা প্রাভিমত্যা প্রমেশ্বর বননো দাবে স্পরিভাজে সতি ভক্তগ্রতাম গ্রে ভক্ত হঠ এব তির্টেদিভাতো মাতৃং প্রমানক্ষা মাতৃবংসলো ভগ্রানের বন্ধনো দাবে স্পরিভাজে সতি ভক্তগ্রতাম গ্রে ভক্ত হঠ এব তির্টেদিভাতো মাতৃং প্রমানক্ষা মাতৃবংসলো ভগ্রানের বন্ধনো তথাপি ভগ্রানের প্রভাবে তাহা সম্পন্ধ হইল না। গ্রন্থির সময় সেই রঙ্গ্রু ছুই অঙ্গুলি ন্যুন হইল তথন ত্বায় তদ্দেশনে গোপী অন্য রজ্জু আনিয়া তাহার সহিত যোগ করিলেন, যথন তাহা ন্যুন হইল তথন ত্বায় রজ্জু আনিয়া তাহার সঙ্গে মিলাইলেন, তাহাও ছুই অঙ্গুলি ন্যুন হইলে লাগিল। যশোদা আপন গৃহের এবং গোপীদিগের সকল রজ্জু সংযোগ করিয়াও যথন কৃতকার্য্য হইতে পারিলেন না, তথন তাহার জাতিশায়

এবং সন্দর্শিতা হুঙ্গ হরিণা ভক্তবশ্যতা। স্ববশেনাপি কুষ্ণেন যস্যেদং সেশ্বরং বশে 🛊 ১৪ ॥

धीधतवामी।

নচৈবং স্বাতন্ত্র ভঙ্গ ইত্যাহ এবং সন্দর্শিতেতি। সেখরমিদং বিষং মৃদ্য বলে যদধীনমিত্যর্থ:॥ ১৪ ॥

देवकवरकावनी ।

ছঃখ দর্শনাক্ষমত্র। ব্যবহনে ছ্র্যটেৎপ্যাসীং। মাতৃ শব্দেন ত্রাৎসল্যমের মূলং কারণমিত্যুক্তং। লাল্য স্বভাব জাতাং হঠবতাং পরি-ভাজ্য ধৃতারাং কপায়াং ত্রিভূষ শক্তে রজ্জুঃ প্রতি কিঞ্চিদোদাসীস্তেন বিভয়বৈব তয়া সংব্রো বভূব অভ্যান্ত ক্রিভা এবেভার্থ:। পরিশ্রমণ্ট কলভ্সের বলবত স্বস্ত গ্রন্থনে রজ্জুসন্ধানাদিনা চ॥ ১০॥

নহ পূর্বহং পর্মেশ্বর্থ সাধিতং তথা বৃত্ত্বাহপ্রাভাবঃ। কোপশ্চের্য ভয়ং পলারনং বলাল্যুহণঃ রোদনং বন্ধনঞ্চ বর্ণিতং তরদপ্যান্তরেন রহস্তবেন ভবতামপি স হেত্বেন তাহিক্মেবাধিগম্তে ততঃ কথমিব তাদৃশে তত্তদিতি উচ্যতে সত্যং তত্র গুণৈঃ পূর্বমীশ্বর্থক বর্ততে তথাপি ভকান্তরিহ শ্বন্ধা হাল বিলানতে কস্যাপি স্থকরা ভবন্তি আকোমল হৃদয়্রেনারোচমানআং। ততত্তেমাং গুণহ্বমিপি হীয়তে জনস্থাহতবার ধর্মা হি গুণাঃ। শ্বত্ত নির্দায়তার্রপো দোব এব। নচ ত্রিয় সন্তর্বতি সাধারণহালগতেনানৈশ্বর্যাং। অয়মায়াপহতপাপা। এব উ এব বামনীঃ বামানি সর্কাণ্যভিষত্তীতি শ্রুতঃ। তত্মাৎ সর্কেরাং গুণহ্বনাধিক। দোবান্তরবিরোধী চ স এব মুখ্যো গুণো মন্তর্যঃ। যথৈব মন্তে প্রস্বাত্তরপদ্দে সএবান্তরা পঠিতঃ যথা বং রূপয়া ভূত্যা তেল্পা মহিয়োজ্বসা। ভূই ঈশ গুণঃ সইর্কন্ততাহিসি ভগবান্ প্রভূরিতি। স চ ভক্তান্তর্মণ এব ন্যায়ঃ ন্নেরে দোম্যা তদবস্থ্যং। তত্ম বিদ সর্কতোভাবেন নির্দাধি তহমভামনী ভক্তিঃ আরহি তত্যাপি তহমগু প্রান্ততা যুক্তা ন চৈর্মেশ্বর্যঃ হীয়তে অক্তর্ম জাগরকহাং। যথা বঙ্কাপি ক্রিমাণ্যেন লাকুবর মণিঞ্জীবয়োঃ। কিঞ্চ প্রত্তাত তেল গুণেন সর্কাকর্বণাং বিগুলীভূরৈরিশ্বর্যাব্যান্তরা ভাবে। অতো ভক্তবশাতাপ্যাবশ্যকতা। তথাচ প্রীবৈক্র্তদেবেন স্বয়মপ্যকং। অহং ভক্তপরাধীনো হস্বতন্ত্র ইব বিজ। সাধুভিত্রে জন্মরা এব যুক্তবাদিত্যর্থঃ। অতঃ সাচ বশতা তদম্পুলান্তর্বহিরীহামব্যের স্থাদিতি তন্ত্রাবাতিবাদাদিভাবত্বাদ্য কৈত বেসু মমাপি নিইকতব্যায় এব যুক্তবাদিত্যর্থঃ। অতঃ সাচ বশতা তদম্পুলান্তর্বহিরীহামব্যের স্থাদিতি তন্ত্রাবভাবিত্বালাাদিভাবত্বাদ্য হথা তহাকাং। গোল্যাদিদে বিদ্বিত্বাগদি দাম ভাবন্ধা তে দশাশ্র কলিলান্ত্রন সম্প্রাক্ষে বিজ্ঞান্ত্রা হিত্তাগদি দাম ভাবন্দ্য তে দশাশ্র কলিলান্ত্রন সম্প্রাক্ষা বিজ্ঞান্ত্রা হিত্তাগদি দাম ভাবন্ধা তে দশাশ্র কলিলান্ত্রন বিজ্ঞানিক স্বান্ধান্ত ভীরপি

ক্রমসন্দর্ভ:।

এবমপি এঁতংপ্রকারেণৈর সমান্দর্শিত। ন উদ্ধর্মন্তীতি ভাব: ॥ ১৪॥

শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী i

ত্যাহ স ইতি স্বমাতুরিতি চ পাঠ:। রূপ্যেতি সর্বশক্তি চক্রবর্তিনী প্রমভাষতী রূপাশক্তিরেব ভগবচিত বেননীতমিব বিজ্ঞান্ত তার স্বয়ং প্রাত্ত্ব পূর্বেরিছ্তে সভাসন্ধরতা বিভূতা শক্তী তার সহসৈবাস্তব্ধাপয়ামাসেতার্থ:। অত্র পরিপ্রমমিতি রূপ্রের্ডাভাগং ব্যঙ্গুলন্নতা সমাহিতা ভক্তনিষ্ঠা ভলনোধা প্রান্তি স্তদ্ধানাধা স্বনিষ্ঠা রূপা চেতি বাভাগেরে ভগবান্ বদ্ধা ভবেং। তে বে যাবরভ্তাং তাবদ্যস্কান্নতা স্বাসীং। তয়োক্তত্তয়োক্ত বদ্ধাহত্তি প্রেয়া স্বক্ষন প্রকার স্বন্ধাতরি স্বয়্মুদাহতে। ভগবতেতি জ্রেয়ং॥ ১৩ ॥

ভগৰতঃ পরন পারনৈখর্য্যে সত্যপি প্রেমবশ্যতা নিবন্ধনং বন্ধন্দিদং প্রস্কমৎকারিছান্ত্র্ধণ্মের নতু দ্বণমিত্যাহ এবং হরিণা স্বস্য আন্মারান্বেহপি ব্ভুক্ষরা পূর্ণকামছেহপাতৃপ্তা ভন্ধসন্ত্রন্ধপিছেলি কোপেন স্বারান্ধ্যলালীবন্ধেহপি চৌর্যোণ নহাকাল যমাদিভির্দিছেলি ভয়পলায়নাভ্যাং মনোগ্র্যীনছেহপি মাত্রা বলাক্ষ্য হণেন আনন্দময়ত্বেহপি ছংখরোদ্দেন সর্ব্ব্যাপকত্বেহপি বন্ধনেন ভক্তবিশ্যতা স্বাভাবিক্যের স্বস্য সম্যক্ দর্শিতা। অজ্ঞান্ প্রতি দর্শনায় উপযোগাভাবাৎ ব্রহ্ম ভব সনৎকুমারাদীন্ বিজ্ঞানপ্যতিচমৎকারং প্রাপ্যায়ভাবিত্তি নেদমফ্করণমাত্রন্ধেন ব্যাধ্যেরং দর্শয়ং শ্বরিদাং লোকে আন্মনো ভক্তবন্যতামিত্য ত্রিদামিতি প্রয়োগাদিতি

বিসায় জান্দিল এবং গোপীগণও অতিশয় বিসামান্ত্রিত হইলেন, হে রাজন্! বন্ধনার্থ যত্ন করিতে করিতে বশোদার গাত্র ঘর্মাক্ত হইল এবং তাঁহার কেশপাশ হইতে পুষ্পমালা বিলিষ্ট হইয়া পড়িতে লাগিল। জননীর এই পরিশ্রম দেখিয়া জীকুষ্ণ কুপাপরবশ হইয়া স্বয়ং বৃদ্ধনন্থ হইলেন॥ ১৩॥

হে রাজন্! ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ স্বতন্ত্র, ঈশ্বর সহিত এই বিশ্ব তাঁহার বশবভী, তথাপি তিনি ঐ প্রকামে ভক্তবশ্যতা দেখাইরাছিলেন ॥ ১৪॥

নেমং বিরিকোন ভবোন জীরপ্যঙ্গসংশ্রয়া। প্রসাদং লেভিরে গোপী যত্তৎ প্রাপ বিমৃক্তিদাং॥১৫

डीशक्त्रामी।

ভগবং প্রদাদ মনোছপি ভক্তা লভত্তে ইদ্স্ত চিত্রমিতি সরোমাঞ্চ মাহ নেমমিতি। বিবিঞ্চ: প্রোহপি ভব আয়াপি এজা বাপি ॥ ১৫॥

देवस्ववरज्ञावनी ।

যবিভেতীতি। তদেতদভিপ্রেতাহ এবমুক্ত একারেণ দশিতা ত্রাণি সমাক্ অনাত্র বন্ধনপ্রয়য়মতাবিলাদাম্পদ ছাভাবাং। অংকতি প্রেম স্বোধনে। হি নিশ্চরে হরিণেতি তথা ভক্তানাং মনোহরণাং। স্বশেন স্বভ্রেণাপি যতঃ ক্ষেন স্বয়ং ভগবতে তার্থঃ। তদেবাতি বাঞ্যতি যদ্যতি ॥ ১৪ ॥

সমাক্ অমেবাভিবাঞ্জয়ন্ যদ্নিমিন্তমেকদা গৃহদাসাধিত্যাদিক মৃদাহর্তু মারন্ধং তহ্য নলাং কিমকরোৰু হ্লন্ ইত্যাদি প্রাহ্ম ব্রান্তিং দিলান্তমাহ নেমমিতি ঘাতাং বিরিক্ষা ভকাদি গুকং ভবে। বৈক্ষবানাং দৃষ্টান্তম্নপং লক্ষ্মী নি তাপ্রেমসীচ সা তৃ বিশেষতোহক্ষ্ম সংশ্রম তদকোনিবাল্লাপি প্রদাদ তর্মহাভক্তিরপং লেভির এব। কীদৃশাদিপি মুক্তিং দদাতি কহিছিৎ মান ভক্তিযোগমিত্যুক্ত দিশা প্রায়েম্ক্রিমাত্রপ্রদাত্রপি কিন্তু গোপী শ্রীমণোদা গোপেশ্বরী যন্তদনির্কাচনীয়ং প্রস্থাদ শক্ষেনাপি বক্তৃং শঙ্কনীয়ং কিমপি প্রাণ ভক্তপ মিমং পূর্কেকেং প্রেমপরিপাকরণং প্রসাদং তথাপ্যত্তবিষ্মত্বান্তছক্ষ্মবাচাং ন বিরিঞ্চং প্রাণ ন ভবং প্রাণ ন শ্রীরপি প্রাণেত্যর্থ:। যদ্ম গোপী যন্তং প্রাণ ভক্তপমিমং বিরিঞ্চাদ্যো ন লেভিবে ন লেভিবে ন লেভিবে ইতার্থ: নঞ্জ্রন্ত্রন্ত্রনাত্রি:। অক্সংশ্রেমতে সর্ক্তঃ প্রেম্বতা অপি তত্যান্তদক্ষ্মপ্রাম্বেনান্ত্রবিষ্মক ভদীয়তা মুধ্যা তন্মিন্ মমতা তু ভদমুগতা সাচ ঐশ্বান্তান সংল্রান্তা। অস্তান্ত স্থানিবন্ত মনতা ভাবান্তর। ক্ষ্মতিতা চ মদেকগতিত্যা মদেক কর্ত্ব্য হিতা ভাবনাচাধিকেতি তৎ প্রসাদাধিক্য মিতি কিং বক্তব্যং তদীয় এব স ইতি। তন্মান্ত্রনান্ত্রিমেক্সিত ভবং ॥ ১৫ ॥

क्रममम्बर्धः

নেমমিত্যাদি দ্বয়ং ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥

শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

ভাবঃ। স্বৰণেন স্বাধীনেনাপি নহু তহি কুতঃ স্বাধীনত্বং তত্ৰাহ যুদ্যোতি চিচ্ছকি সাৱভূতেন প্ৰেষ্ট্ৰৈব তস্যানন্দাতিশয়াৰ্থনেব ভক্ত-বশবং নিম্পাদ্যত ইতি প্ৰাক্ প্ৰপঞ্চিতঃ॥ ১৪॥

ভক্তবশাসা তস্য ভক্তবশি মধ্যে ব্রেশ্বর্যা আধিকামপারং বশাহাতিশয় দর্শনেন সরোমাঞ্চমাহ নেমমিতি বিশিষ্টা মৃক্তি বিমৃক্তিঃ প্রেমা তংগুদাদিপি ক্রফাং যং ক' প্রসাদং গোপী প্রীয়শোদা প্রাপ তং তং প্রসাদং বিরিঞ্চো ভবং শ্রীরপি ন লেভিরে ন লেভিরে ন লেভিরে ইতাবরং নঞ্জ্ ব্রেমণ লেভিরে ইতাবরং নঞ্জ্ ব্রেমণ লেভিরে ইতাবরং। ব্রেমণ ক্রির্ফা পুল্রাংশি ব সাদিং ন লেভিরে মণি তু প্রসাদং লেভির এব। কিন্তু গোপী যং প্রসাদং প্রাপ ইমং ন লেভিবে ইতাবরং। বিরিঞ্চা পুল্রাংশি সাদিশিবা ক্রগতাং পরো গুরুরিত্যুক্তে ভক্তোমপুংকর্ষবাদিপ প্রী সামিপি অক্স সংশ্রয়কেন বর্ষাই দাসাভ্যাং তাভাামুংকর্ষবভাশি বসাাং সকাশাং প্রেমা ন্না এব সা যপোদা সাধনসিদ্ধা পুর্বজন্মনি ব্রহ্মদত্তবর্গা ধরা আদীদিভি মহানেবানরং নহি প্রস্থানে বরদানলভামেতাদৃশং প্রেমসৌভাগ্যং ভবিতৃ মহ'ভি স ব্রহ্মাপি তত্ত্বরি ভাগ্যমিত ভন্ম ক্রিমণ্টব্যামিতি প্রাথবিমানোহস্যা নুান্তিন্ন কন্ধান্তামের গণতে ইত্যতঃ প্রতি স্বত্তাসম প্রসিদ্ধে নিত্যসিদ্ধে এব নন্ধ্যপোলে ত্র্যা ক্রেরে। ননাং কিনক্রেরার্থ ক্রন্ প্রেম এবং নহোদরং। যপোদা বেতারবিমুদ্ধে ভ্রদীর প্রপ্নে মন্নাপি স্বয়প্রার্থই ক্রেন্ প্রেমণিত ভাবং ॥ ১৫ ॥

হে মহারাজ! ভগবানের প্রদন্ধতা অন্য ভক্তজনেরাও প্রাপ্ত হয় সত্য, কিন্তু সুক্তিপ্রদ ভগবান্ হইতে যশোদা যে প্রসন্ধতা লাভ করিলেন, ভাহা কি ব্রহ্মা পুত্র হইলেও, কি ভব আত্মা হইলেও, কি অঙ্গাঞ্জিতা লক্ষ্মী ভার্য্যা হইলেও কাহারও কথন সে রূপ প্রসাদ লভ্য হয় নাই ॥ ১৫॥ নায়ং স্থাপো ভগবান্ দেহিনাং গোপিকাস্তঃ। জ্ঞানিনাং চাত্মভূতানাং যথা ভক্তিমতামিহ ॥১৬ কৃষ্ণস্থ গৃহকৃত্যেষু ব্যগ্রায়াং মাতরি প্রভুঃ। অদ্রোকীদ্ধুনো পূর্বং গুহুকো ধনদাত্মজো।

औधव्यामी।

ফ্লিত্যাহ নায়্মিতি। দেহিনাং দেহাভিমানিনাং তাপ্সাদীনাং জ্ঞানিনাং নির্ভাতিমানানাম্পি ॥ ১৬ ॥

বৈষ্ণবতোষণী।

অণ কণমস্তান্ত্ৰী তৎপ্ৰাপ্তি জাতা পরেষা বা কণং স্থান্ত্ৰাহ নাম্মিতি অন্তং গোপিকামুতো ভগবান্ দেহিছেনাভিমান-বতাং তপ আদিভি ন স্থাপ: কিন্তু এতাবানের যজতামিহ্ নিংশ্রেদ্যদোদয়:। ভগবতাচলো ভাবো যন্তাগবতদঙ্গভ: ইত্যুক্তরীত্যা কথঞ্চিৎ কদাচিৎ তম্ভক্তসঙ্গো যদি স্যাত্তদা ক্রমত এব প্রাপ্যঃ। এবং জ্ঞানিনাং দেহাদ্যতিরিক্ত জ্ঞানবতাঃ আত্মভূতানাং তদিজ্ঞান-বতামপি ন স্থাপঃ কিন্তু পূর্ব্ববন্তু ক্রক্ষেদ্রাদেব। আত্মপোতানামিতি পাঠং কেচিৎ পঠস্তি তত্র আইত্মব পোতস্তমণুদাধনং যেষাং জ্ঞানিনামিতার্থঃ। তহি কেষাং কেষাং স্থাপ ইতাপেক্ষায়াং তল্লিদর্শনমাহ যথা ইহ শ্রীগোপিকাস্থতে ভক্তিমতাং স্থপাপঃ। অনেন মহানারায়ণাদি ভক্তিমস্তোহপি ব্যার্তা: ্যুক্তঞ্চ তেষামস্থাপ ইতি। দেহিনাং জ্ঞানিনাঞ্চ দেহিদামান্য দৃষ্টা। ভক্তান্তরাণাঞ্চ গোপ-লীলাদৃষ্ট্যা তত্রাদরানাম্পদরাং। তম্ভকানাং স্থাপ ইতি চ যুক্তং। ইথং সতাং ব্রহ্মস্থামূভূত্যা ইত্যাদিমু তেঁবাং তাদৃশতল্লীলায়। সংব্যান্ত্রান্ত্রান্ত্রানিতি জ্ঞেয়ং। তত্র গোপিকাস্ত্রত ইতি বিশেষণমের নোপলক্ষণং গোপিকায়া এব সর্ব্বোপাদেয়ত্বন বিবক্ষিত হাং ইহ শব্দত তদ্বাচ্যের ন জগদাদিবাচী প্রাপ্তথাদ্বার্থছাচ্চ ভক্তিমস্তদ্ধ ত্রৈকালিক ভক্ত পরম্পরা এব প্রবিশেষেণ প্রাপ্তথাং। তামুপদিশত্তাং বেলানাং তত্বপদেশকোপদেশ্যপরম্পরাশাং চানাদানস্তকাল ভাবিতাং। তচ্চ বিশেষণং ভক্তিস্থপ্রাপ্তি রূপয়োঃ সাধন সাধায়ো রুভয়োরপ্যবস্থয়োর্দ্ধন্তং। তথাতে সার্ধকালিক তম্ভকা গোপিকাম্বতবেনৈব সাধয়ন্তি লভন্তেচ ভমিতি স্থিতে নিত্যৈব তম্ম তদ্রপেণাবস্থিতিঃ সিদ্ধা। তণা গোপিকাম্বতত্বেনৈব সাধননির্ণয়ে গোপিকায়ান্চ তৎ সাধনত্বে স্বাশ্রনোধাপাতাৎ ন সাধনাবকাশ ইতি সৈব নিৰ্দ্ধাৰ্য্যতে অতএব গোপিকায়াঃ স্থাপ ইতি কিং বক্তব্যং গোপিকায়ান্ত স্থতএব স ইতি ব্যঞ্জিতং। উপল-ক্ষণকৈতং শ্রীনন্দগ্য তদীয়ানামপি তেষাং তাদৃশ্ত্রক শ্রীকৃঞ্জন্মাষ্টম্যাদিরতে তদীয় নানামন্ত্রে চ আবরণপূজায়াং দ্রষ্টব্যং। তন্ত্রাং পূর্ব্বং মলা ভাষোবংশাভ্যাং দ্রোণধরারূপাভ্যাং যল্লীলামাত্রং তদেবাপাত প্রবোধমাত্রার্থমুক্তমিতি ভাবঃ ॥ ১৬ ॥

এবং শ্রীগোপিকায়াং কেবলবালত্বেহপি অন্যত্রাব্যাহত জ্ঞানাদিমত্বং বক্তুং প্রস্তোতি ক্ষণাত্তি। এবং শ্রীমশোদা শ্রীকৃষ্ণং ববন স চান্তং মোচয়ামাস ইতি । ভিন্নোপক্রমে তুশব্দ। গৃহক্তেয়ের্ ইতি বহুত্বেন তেষামন্থপরতিঃ স্থচিতা তং ত্যক্তা গ্রমনঞ্চ তগ্য

শ্ৰীবিশ্বনাখচক্রবর্ত্তী।

নিঞ্চ প্রীভাগবতেহন্দিন্ ভগবংপ্রেনৈব সর্বপ্রেরার্থনিরামণিজেনােদ্ব্যুতে তপ্য মূলভ্তাপ্রয়াণাং ভক্তানাং মধ্যে নিতাসিদ্ধ এব তপ্য নিতান্থিতি: সম্ভবেহ তেদি মধ্যে গোক্লবন্তিন জনাবাদ্য এব শ্রেষ্ঠা যেষাং বাংসল্যাদি ভাববিষয়ীভূতঃ ক্ষক্তদর্গমন ভক্তিমন্তিনের ফ্লভা নান্যৈরিত্যাই নাম্বনিতি। অয়ং গোপিকাস্কতাে ন স্থাপঃ কেষাং দেইনাং দেহাধ্যাসবতাং ভক্তিমতাং জানিনাং দেহাধ্যাসবহিতানাং আল্পারামভক্তানাং তথাভূতত্বে সত্যেব প্রাপ্তিযোগ্যতায়াং নিষেধসম্ভবাং আল্পভানাং পূর্বশ্রোকনির্দিষ্টানাং বিরিঞ্জবিশ্রাং তল্প বিরিঞ্জবিয়াঃ আল্পবিশ্রানাং বাবতারত্বেন লক্ষ্যাঃ স্বর্গশক্তিবেনাআ্ভূতত্বং এবং ত্রিবিধন্ধনানাং গোপিকাস্কতে। ভগবান্ ন স্থাপঃ। কিং তদিতি বিক্র্তা দৌল্যাদিস্ত এব হংথমেবাভিব্যুঞ্জবিত। যথা ইহ প্রীয়েশাদায়ামেতত্বপলন্ধিতের বাংসল্যপথ্যকান্ত ভাবাশ্রেষ্ প্রস্থলাকের যা ভক্তিঃ স্ত্রিয় উরগেক্তভাগ ভূলদণ্ডেত্যাদিনা যথা ঘলোকবাসিন্য ইত্যাদিনা চ ব্যঞ্জিতা ক্রত্যাদিভিরম্পতি ন্যী তদ্বতাং যথা স্থাপত্থা তেনেতি তেন গোপিকাদ্যম্পতিময় স্বন্তা ছংথালীকারত্ব বিরিঞ্জ ভব লক্ষ্যাদিভিরীশ্রাভিমানিভিঃ স্বস্থ লোকস্থিতৈ ছ'লক এব অন্যেয়ন্ত তাদ্লোপদেশন্যালাভাদরোচকত্বায় তদ্মগত্যভাব এবেতি ভাবঃ তাত্ত স্থাপ ছ্লাপন্তাগণ ক্রাণ্ডা গ্রোপ্তাপ্তিয়ী এবোচ্যেতে ইতি কেচিলাহঃ। ভক্তিবিদ্যাগান্যনাচকত্বং বক্তুমাহ ক্রক্তবিতি॥ ১৬॥ ১৭ ॥

কারণ গোপীনন্দন ভগবান্ ভক্তিমান্ জনগণের যক্তপ স্থলভা, দেহাভিমানি তাপসাদির এবং নির্তাভিমানি আত্মভূত জানিদিগেরও তৃত্তপে স্লভ নহেন॥ ১৬॥

হৈ রাজন্! ভগবান্ভক্ঞ শিল্ভ বন্ধন এক্ত হঁইলেও অন্যের মোচক হইয়া থাকেন, তাহার বিবরণ

299

পুরা নারদশাপেন বৃক্ষতাং প্রাপিতে মদাৎ। নলকৃবরমণিত্রীবাবিতি খ্যাতে প্রায়েখিতো ॥১৭॥
॥ * ॥ ইতি জীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং দশমস্বন্ধে উদ্থলবন্ধনং নাম নবমোহধ্যায়ঃ ॥ * ॥
•

ত্রীপরীক্ষিপ্রবাচ॥

কথ্যতাং ভগবন্ধেতত্তয়েঃ শাপস্য কারণং। যত্তবিগহিতিং কর্ম যেনাসীদ্দেবর্ষেশুমঃ। প্রাপ্তক উবাচ॥ •

औधत्रश्रामी।

•ভক্তৈ বৰ্দ্ধস্যাপি অন্যমোচকত্বং বক্তৃমাহ ক্ষণ্ডিতি ॥ ১৭ ॥

॥ 🛊 ॥ ইতি দশমে নবনঃ ॥ 🛊 ॥

দশ্যে পাতর্দ্রিক্সস্তরা যমলার্চ্ছ্নৌ। তত্র তাভ্যাঞ্চ দেবাভ্যা॰ ক্লফ: স্তত ইতীর্যাতে ॥ • ॥

় বৈষ্ণবতোষণী।

প্রাঙ্গণসমীপস্থত্বাং রক্ষ্যমাণানাং বালানাং রক্ষিতত্তাৎ দৃঢ়বন্ধনমোচনোলুথলাকর্ষণ শক্তেরমননেন পুত্রস্যাস্যান্যতা গমন শঙ্কাপগমাৎ তথাচ শ্রীবিষ্ণুপুরাণে তস্যা বাক্যং। যদি শক্ষোসি গছত ত্বমপি চঞ্চলচেষ্টিতেতি ॥

পূর্বমদ্রাকীদিত্যকং তত্র পূর্ব পূর্ব তদশন সম্ভবেইপি সম্প্রতি তছক্তি স্তবিশেষামূপেক্ষরেতি তচ্চ যদ্যপি স্বযোগ্যখাওলীলাশক্তিক্তমেব তথাপি স্ববন্ধনামূসন্ধানেন ত্বন্ধনামূসন্ধান্য যুক্তমাদিবেত্যুৎপ্রেক্ষণীয়ং দৃষ্ট্য বিচারিতবানিত্যর্থ: ॥

অথ তনেৰ তস্য বিচারমাহ পুৰেতি মদাদভিমানাং মধুমন্ততায়াশ্চ হেতোঃ যতঃ শ্রিয়া সম্পদান্বিতৌ ॥ ১৭ ॥

॥ *॥ ইতি শ্রীদশম টিপ্পন্যাং বৈষ্ণবতোষণ্যাং নবমঃ ॥ *॥

অথ তম্ম বন্ধস্য মাতৃকোপাদ্মগ্রস্থ চাব্যাহতসার্বজ্ঞময়ীং বিচাররপামান্তরলীলামপি কৌতৃকাং পৃচ্ছতি। কথ্যতামিতি। তমোহভূদিতি শেষ:। তদৈতচ্ছাপস্থ কারণমিতি যোজ্যং যেনাদীন্দেবর্বে তম ইতি পাঠাত্তরং স্থগমং আর্যবাচ্চন্দোভদীদোষ:॥

ক্রমদন্দর্ভ:।

॥ *॥ हेि श्रीमन्य क्रमनन्य नवमः ॥ *॥

তদ্ধুগল মোক্ষণশীলাশ্রবণ রসপোধার্থং পৃচ্ছতি ক্থাতামিতি॥ ১॥

শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

ঋণিত্বাদেব বদ্ধোহহং মাত্রা তদনূণীভবন্। কিং কুর্বের ইতি সংচিস্তা মোচয়ত্তঃ পুরক্রন্মী॥

॥ 🛊 ॥ ইভি সারার্থদর্শিন্যাং ছর্ষিণ্যাং ভক্তচেতসাং। দশমে নবমোহধ্যায়ঃ সঙ্গতঃ সঙ্গতঃ সভাং ॥ 🗣 ॥

কুবেরাত্মল্লয়ে: শাপকথাত্রোক্তা পুরাতনী। তিছিমোচিয়িতা ক্লফ্টভাাত্ত দশমে স্বতঃ॥ • ॥

শুন, ঐ রূপে বন্ধন করিয়া যশোদা গৃহকার্য্যে ব্যত্তা হইলে ঐক্ষি অর্জ্জুন নামে ছইটা বৃক্ষ দেখি-য়াছিলেন, ঐ তুই তরু পূর্বজন্মে ক্বেরাত্মজ গুহুকু ছিল, মদোমততা প্রযুক্ত নারদের শাপে বৃক্ষত্ব প্রাপ্ত হয়। পূর্বজন্মে তাহারা অতিশয় সম্পতিশালী ও নলক্বর এবং মণিগ্রাব নামে বিখ্যাত ছিল ॥ ১৭॥

॥ 🗱 ইতি দশমে নবম ॥ 🗱 ॥

দশমাধ্যায়ে বৃক্ষবন্ধের মধ্যদেশ দিয়া গমনকরত শ্রীকৃষ্ণ কর্তৃক যমলার্চ্ছনের পাত এবং তাহাদিগের কর্তৃকস্বরূপ ধারণ পূর্বক শ্রীকৃষ্ণের স্তব বর্ণন॥ ॰ ॥

রাজা পরীক্ষিৎ জিজাসা করিলেন হে ভগবন্। কুবেরতনয় নলক্বর এবং মণিগ্রীবের শাপের কারণ কি আজা করুন। তাহারা এমন কি গহিত কর্ম করিয়াছিল যে, যাহাতে ভাগবতোতম নারদেরও তাহাদের প্রতি ক্রোধ উৎপদ হয়॥

রুদ্রস্যাস্কুচরো ভূষা স্থদৃপ্তো ধনদাস্বজো। কৈলাসোপবনে রম্যে মন্দাকিন্যাং মদোৎকটো।
বারুণীং মদিরাং শীষ্বা মদাঘূর্ণিতলোচনো। স্ত্রীজনৈরসুগায়ন্তিশ্চেরতুঃ পুল্পিতে বনে॥ ১॥
অন্তঃ প্রবিশ্য গঙ্গায়ামস্তোজবনরাজিনি। চিক্রীড়তু যুবিতিভি গ্রজাবিব করেণুভিঃ॥ ২॥
যদৃচ্ছয়া চ দেবর্ষি র্ভগবাংস্তত্র কোরব। অপশ্যমারদো দেবো ক্ষীবাণো সমর্ধ্যত॥ ৩॥
তং দৃষ্ট্যা ব্রীড়িতা দেব্যো বিষম্রাঃ শাপশঙ্কিতাঃ। বাসাংসি পর্যাধুঃ শীত্রং বিবস্ত্রো নৈব গুহ্সকো ॥৪॥

প্রীধরস্বামী।

যদিগহিতিং কর্ম যেন বা ভাগবতোত্তমস্যাপি তমঃ ক্রোধঃ তদেতৎ কথ্যতামিতি॥ ১॥ গঙ্গায়ামন্তম ধ্যে কথন্ত তে অভ্যোজানাং বনানি তেবাং রাজয়ঃ তা বিদ্যান্ত যদ্মিন্॥ ২॥ অপশ্যাৎ দৃষ্ট্ব চ ক্ষীবাণীে মত্তৌ সমব্ধ্যত॥ ৩॥ কৃত ইত্যত আহু তং দৃষ্ট্তি॥ ৪॥

বৈষ্ণবতোষণী।

প্রী শুকদেবশ্চ, তাদৃশ তিহিচার মহুস্তা বকুমারত্ত্বান তত্ত্ব কলুসোতি যুগাকং বারণীং ক্ষীরোদমধনাজ্ঞাতাং কিছা বরণ-নির্মিতাং ইতি মহামাদকত্বং উকং তাং পীর্থা কৈলাসোপবন মধ্যে যা মন্দাকিনী। তস্যাং তৎসমীপে প্র্লিতে রনে প্রথমং চেরতঃ॥ >॥

গঙ্গারাং চিক্রীড়তু:। কিং ক্রতা। অন্তঃ প্রবিশ্য অন্তঃ কণস্তুতে অস্তোজবনানাং রাজি র্যব্রেত্যব্যাবিশেষণ্ডেন নপুংসকজারু ম্ ॥ २॥ ত্বর্থে চুকারো ভিরোপক্রমে। যদা অপশাৎ সম্যাগব্ধাত চেতি চকারার্য়:। যদৃচ্ছ্য়া বৈরিত্যা আগত ইতি শেষঃ। দেবর্ষিরিতি নিয়স্ত্ ত্বং ভগবানিতি দ্যালুত্বং ইতি বক্ষ্যমাণ শাপামুগ্রহয়ো র্যোগ্যতোক্তা। হে কৌরবেতি তত্ত্ব তস্য গ্রীনাসস্ভবেপি আগ্যনাৎ কৌতুকেন সন্বোধনং ॥ ৩॥

গুহুকাবিতি তুদা সাধিকত্বাভাবেন দেবত্বহানে: কেবল যক্ষতয়োপলক্ষিতে। এবশব্দেন দেবীনামাঞ্চহণাপি ন পর্যাধাতা-মিতি বোধাতে ॥ ৪ ॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

অন্তোজ্বনেন রাজিতুং শীলং যস্য তন্মিন্॥ ২। ৩। ৪॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্ত্তী।

তরো বিগহিতিং যৎ কর্ম্ম যেন বা কর্মণা দেবর্ষেরপি তম: ক্রোধ এতত্তয়োঃ শাপদ্য কারণং কথ্যতামিত্যযম: ॥ > গঙ্গায়াং চিক্রীড়তুঃ কিং ক্লত্বা অন্ত ম'ধ্যে প্রবিশ্য' কীদৃশে অন্তোজানাং বনরাজি ব্র তিমিন্ ॥ ২ ॥ দৃষ্ট্র চ ক্ষীবাণৌ মত্তৌ এসমব্ধ্যতেতি মন্তমোরনয়ো ম'ম ক্লপা ন ফলবতী ভবিষ্যতীতি তরো ম'লাপনোদনার্থং দধ্যাবিতি ভাবঃ ॥এ৪

শুকদেব কহিলেন রাজন্! কুবেরের এই ছুইটা সন্তান রুদ্রাত্মচর হইরা অতিশয় অহঙ্কত হইয়াছিল। তাহারা এক দিবস মদোনত হইয়া কৈলাস পর্বতের রমণীয় উপবনে গমনপূর্বক পুপ্পিতবন
মধ্যে এক সঙ্গে সঙ্গীতকারিণী স্ত্রীগণের সহিত বিহার করিতে আরম্ভ করিল। বারুণী মদিরা পান
ক্রাতে তাহাদের লোচন মদে বিঘূর্ণিত হইতেছিল ॥ ১ ॥

তুই জনে পদ্বনরাজিবিরাজিত মন্দাকিনীর জল মধ্যে প্রবিষ্ট হইয়া গজন্বয় যেমন হাজিনীগণ সমভিব্যাহারে বিহার করে তাহার, ন্যায় যুব্তির্ন্দ সহিত জল ক্রীড়ায় প্রবৃত্ত হইল ॥ ২ ॥

দেই সময় যদৃচ্ছা ক্রমে দেবর্ষি নারদ দৈবাঁৎ সেই দিক্ দিয়া যাইতে ছিলেন হঠাৎ ভাহাদিগকে দেখিতে পাইলের। 'দেখিবা মাত্র দেবর্ষির বোধ হইল এই ছুই ব্যক্তি মদ্যপানে মত্ত ইইয়াছে ॥৩॥

হে কুরুনশন ! দেবীগণ দেবর্ষিকে দেখিতে পাইয়া সাতিশয় লজ্জিত হইল এবং বিবস্ত হইয়া থাকাতে শাপ ভয়ে সম্বর বসন পরিধান করিতে লাগিল কিন্তু ঐ ছুই গুহুক দিগদ্বর হইয়াই থাকিল, বস্ত্র পরিধান করিল না॥ ৪॥ তো দৃষ্ট্যা মদিরামতো **শ্রীমন্নাক্ষো স্থরাত্মতো।** তরোরমুগ্রহার্থায় শাপং দাস্যন্ত্রিদং জণ্টো ॥৫॥ নহন্যা জুষতো জোষ্টান্ বৃদ্ধিজংশো রজোগুণঃ। শ্রীমদাদাভিজাত্যাদি র্যত্র স্ত্রীদ্র্তিমাসবং ॥৬॥ হন্যত্তে পশবো যত্র নির্দিবৈরজিতাত্মভিঃ। মন্যানিরিমং দেহমজরামৃত্যুনশ্বং॥ ৭॥

শ্রীধরস্বামী

অনুগ্রহার্থায় অনুগ্রহ: মদনাশ: অর্থন্চ জ্রীকৃষ্ণদর্শনং তদর্গ্ণ ইদং বক্ষামাণ্ণ নহন্য ইত্যাদি ॥ ৫ ॥

জোব্যান প্রিয়ান বিষয়ান জ্বতঃ সেবমানুস্য পুংসঃ শ্রীমদাদন্য আভিজাত্যাদিঃ সংকুলবিদ্যাদিজনিতো মদঃ জন্যো বা এজো গুণঃ রজঃকার্য্য হাস্য হর্ষাদিরপঃ নহি তথা বৃদ্ধি ভ্রংশঃ বৃদ্ধিং ভ্রংশয়তীতি তথা কিন্তু শ্রীমদ এব তদাহ যত্রেত্যাদিভিশ্চতুভিঃ। যত্র শ্রীমদে ॥ ৬ ॥

ইমং নশ্বরং দেহং অজ্বরামুত্যু অর্জ্বল্ড অমৃত্যুল্ড যথা তথা মনামানৈ: ॥ 🖣 ॥

বৈষ্ণবতোষণী।

স্রায়জাবিপি নিনামতৌ যতঃ শ্রীমদেনাকৌ সদসদ্ ষ্টিহীনৌ। মদিরেত্যাদি বিশেষণদ্বঃ শাপে স্বেতি চান্ত্রহে হেতু বিবিচনীয়:। তয়োরন্ত্রহার্থায় ইতি তৌ প্রতি স্বযোগ্যসায়গ্রহন্ত যোহর্থ উপশান্তি ভগবছক্তি ভগবংসাকাংকার্দ্ধনন্ত্রপ: তলৈ তং প্রাপিরিছুং স্থাবরত্ব প্রাপকঃ শাপং দান্তন্ অন্তর্গ্রহ স্থাবতাদেষাং সোহয়মন্ত্রহঃ পরাপরাধ স্থশাপাবভিত্র স্বরপেণের পর্যবিদিতঃ ভারতন্চ তজ্রপোহর্থঃ স্বয়নের ব্যক্তীভবতীতি ভাবঃ। ততা চসতি যৎ থলু বিশেষেণ বৃহদ্ধনান্তর্জানি শ্রীমন্ত্রনান্ত্রাদিকং গোপস্থ নাম বৃক্ষত্রা জন্ম প্রাপত্তঃ। যচ্চ যেন যেনাবতারেণ ইত্যাদিরীত্যা প্রমমন্ত্রিলাশ্রীবালগোপাল সাক্ষাৎকারাদিকং লেভাতে। তিরেদং স্ক্রাব্যামঃ তদানীং তেন শ্রীমদেবর্ষিণা তু তোকেন স্বীবহরণং যত্লুকিকায়া ইত্যাদিরপ: নির্গলকায়ণাম্যতন্ত্রীলাগনেং ক্রিয়মাণ মাসীদিতি তৎ কায়ণ্যতাদান্ত্র্যাপন্ন নিজান্ত্রহেণ তৎ পর্যাস্ত্রোধ্য ইতি জ্বনৌ তত্বতো হত্তংকোপাভাবেন গ্রাধারপেণোটচেঃ স্বয়্মবোচং ॥ ৫ ॥

জীনদেনান্ধং দৃষ্ট্য শ্রীলংশরপং শাপং দাতুমাদৌ শ্রীমদং নিন্দতি নহীতি পঞ্চতিঃ। অভিজাতিঃ সংকুলং তত্ত্বং আভিজাত্যো মদং আদি শ্রুদিয়াদিমদং। তথাচোক্তং বিদ্যামদো ধনমদ স্তথা চাভিজারো মদং। মদা এতৈরলিপ্তানাং তএব হি সতাং দমাং। যত্র শ্রীমদে সতি স্বতএব সদ্য তেবাং প্রাথেং তেবাং কামক্রোধ্যোম হাহেতৃত্বাং। তয়োল্চ। কাম এই ক্রোধ এই রজোগুণসমূহবং। মহাশনো মহাপাপ্যা বিদ্যোন্ধিই বৈরিশং। ইত্যাদিনা নিন্দিত্বেন শ্রীমদ্যীতাস্ক্রপ্রাং॥ ৬॥

ততশ্চ মহাপাপ জনকং পরপ্রেছাহলকণং স্কৃত্তীং কর্মাত্র বটত ইত্যাহ হন্যস্ত ইতি ভোজনস্থথার্থং পশব ইতি ,সাক্ষাৎ ভক্যাভিক্য

ক্রমসন্দর্ভ:।

তিম্বিধানামমুগ্রহস্য যোহর্থঃ। জীক্লফদর্শনং তবৈ ॥ ৫॥

হন্যন্ত ইতি। অজরণচ যো দেহবিশেষঃ পশ্চাদমূতুরেপ্যন্যন্ত্রো ছ'ল্ছিক্যং জন্মমামানৈরিত্যর্থঃ॥ १। ৮॥ 🕡

• শ্রীবিশ্বনাপচক্রবর্তী।

অনুগ্রহ্ন্য অর্থ: ফলং ভগবৎসাক্ষাৎকারন্তদর্গং শাপং দাসান্তি। যথা। অতিবংসলং পিত্রাদিকো হতিমধুরং ক্ষীরাদিকং ভোজনিষান্ পুজাদিকমতিনিজালিলাক্য তন্ধিজাভলাবং নধবন্ধাত্যাত করোতি তন্ধদিত্যথা। জগাবিত্যন্যেপি শ্রুত্ব স্থিতং জানন্তি ভাবং ॥৫॥ জোবান্ প্রির্বিষয়ান্ ভূষত: দেববানস্য পুংসঃ শ্রীমদাদন্য আভিজাত্যাদি বুদ্ধিভংশকো হি নিশ্চয়েন ন ভবতি। যথা শ্রীমদা অবশ্যমেব বৃদ্ধিভংশরতীত্যর্থা। অভিজাতিঃ সংকূলং তত্ত্বং। জ্যাদিশলাঘিদ্যাদি মদা। রক্ষোগুণোত্তবদ্যজ্ঞাগুণা শ্রীমদে সতি যথা পাপানি জানত্তে তথা নান্যভেত্যাহ যতেতি চতুর্জিঃ॥৬॥

জরামৃত্যভ্যাং দৃষ্টাভ্যামপি ইমং দৃেহং ন নশ্বরং মন্যমানে:॥ १ ॥

হে রাজন ! ঐ তুই কুবেরনন্দনকে শ্রীমদান্ধ ও মদিরা মত দেখিয়া দেবর্ষি তাহাদের . মদ নাশ এবং কুফার্মনি লাভ অভিপ্রামৈ অভিদাপ দিবেন বলিয়া কহিতে লাগিলেন ॥ ৫॥

অহো! যে পুরুষ বিষয় স্বো করে তাহার ঐশ্বর্য মদ ভিন্ন সংক্র জনিত ফিলাদি মদ অথবা অন্য কোন প্রকার রজোওণের কার্য হাস্য ও হ্রাদি তজ্ঞপ, বুদ্ধি জংশকারী হয় না, ঐশ্বর্যমদে যজ্ঞপ বুদ্ধি জংশ হয়, ভাহার কার্য তাহাতে মদ্য, স্ত্রী ও হ্যুত তিনটীই উপস্থিত করে॥ ৬॥

আর ঐশ্বর্যা মদে অন্ধ অজিতাত্ম ব্যক্তিরা এই নশ্বর দেহকে অনশ্বর জরাও মৃত্যুবিহীন মনে

দেবসংজ্ঞিতমপ্যতে কুমিবিড়্ ভম্মশংজ্ঞিতং।. ভূতঞ্জক্ তৎকৃতে স্বার্থং কিং বেদ নিরয়ো যতঃ॥৮॥
দেহঃ কিমন্দাতুঃ স্বং নিষেক্ত্র মাতুরেব বা। মাতুঃ পিতৃর্বা ক্রেতুর্বা বলিনোহয়েঃ শুনোহিপ বা॥৯
এবং সাধারণং দেহমব্যক্তপ্রভবাপ্যয়ং। কো বিদ্যানাত্মসাৎকৃত্ব হস্তি জন্তুন্তেহসতঃ॥ ১•॥

শ্রীধরস্বামী

নরদেব ভূদেব সংজ্ঞিতমপি ঝাদিভি ভক্ষিতং বিট্মংজিতং দৃদ্ধং ভশ্মসংজ্ঞিতং অন্যদা ক্ষমিশংজ্ঞিতং তৎক্তে তদর্থং যো ভূতঞ্ক্ ভূতদ্রোগ্ধা যতো ভূতদ্রোহাৎ নিরয়ো ভবতি স কিং স্বার্থং বেদ নবেদেত্যর্থ: ॥ ৮ ॥

নিষেক্ত্র: পিতৃঃ মাতৃঃ পিতৃমা তামহদ্য পুত্রিকাপুত্রকরণেন ॥ ১॥

অব্যক্তপ্রভবাপ্যয়ং অব্যক্তাৎ প্রভব স্তশ্মিরের অপ্যয়ো যদ্য তং আত্মদাৎ রুত্বা আত্মেতি মতা অদতঃ মূচাদৃতেঃ॥ ১০॥

देवक्षवতোধণী।

বিচারোখণি নিরস্তঃ। নির্দারণ বিভাগত হিজতে জিতি ক্রিয়াং অতএব ইমং সাক্ষাজ্জরাদি ধর্মকমণি তএচ প্রতিক্ষণপরিণামিজেন নাশ-শীলমণি অজরা মৃত্যু বস্তি নির্মাননা । টাকায়াং অজরশ্চ যো দেহবিশেষঃ পশ্চাদমৃত্যুরপ্যস্তঃ তয়ো দ দৈক্যং তদ্মসমানৈ-রিত্যথঃ॥ ৭॥

স্বদ্য অর্থং হিত্মিতার্থঃ ॥ ৮॥

দেহে মমতা নিদ্ধারণমপি ন ঘটেত বহু বিপ্রতিপত্তেরিত্যাই ইতি সং ধনং স্বীয়মিত্যুথ:। বলিন: বলাদ্বিষ্ট্রাদ্যুথ: গৃহকঃ। এব শক্ষ্যাপি পূর্বেরপ্যবয়:। ক্রেতুর্বা বলিনোহ্যে রিতি বা বলিন: ক্রেতুর্যেরিতি বা পাঠ: ॥

এবং পূর্ব্বোক্তপ্রকারেণ দেহং সাধারণমপি বিধান্ জানন্ তথাহব্যক্তং প্রধানবং কারণাবস্থায়ামবিবিক্তং ভূতপঞ্চক তত্ত প্রভ-বাপ্যয়ে ষভ ইত্যাপাত্মাত্রপ্রতীত্মপি জানন্কো নাম ত্মাত্মবেনাঙ্গীকৃত্য জন্ত্ হন্তি ন কোহপি অসম্ভন্ত জানস্থোহপি স্পতী-ত্যবং ॥ ১০॥

ক্রমসন্দর্ভঃ।

দেহ ইতি স্বং বস্থিতি শেষঃ ॥৯।১০।১১।১২।১৩)১৪।১৫।১৬)১৭।১৮।১৯।২০॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবন্তী।

মরদেব ভূদেবসংক্তিতমপি অন্তে মরণানন্তরং খাদিভিরভক্ষিতং পুত্রাদিভিরদগ্ধং চেৎ কমিসংজ্ঞিতং ভক্ষিতঞ্চেৎ বিট্সংজ্ঞিতং দগ্ধগেৎ ভক্মসংক্ষিতং ভবেৎ তদ্য দেহস্য ক্তে যো ভূতঞ্জক্ যতো ভূতলোহাৎ॥৮॥

দেহে মনীতা নিদ্ধারণমপি ন ঘটতে বছবিপ্রতিপত্তেরিত্যাহ দেহ ইতি নিষেক ; পিতৃঃ সং ধনং। মাতৃঃ পিতৃ মাতামহস্য বা পুত্রিকাকরণে সতি। বলিনো বলাদিটার্থং গৃহতঃ॥ ১॥

অব্যক্তাং প্ৰভবন্তৰিদ্নেবাপ্যয়ে যদ্য তং। আৰ্থ্যাৎক্ষা আত্মজনাঙ্গীকৃত্য অদতোহজ্ঞান্ বিনা॥ ১০॥

করিয়া নির্দয়তাপূর্বক পশু বধ করিয়া ভ্রমণ করে॥ १॥

কিন্তু ইহা বড় খেদের বিষয় যে এই দেহ নরদেব ভূদেব ইত্যাদি আখ্যায় বিখ্যাত হইলেও অন্তে কৃমি অথবা বিষ্ঠা কিন্তা ভন্ম সংজ্ঞা প্রাপ্ত হয় অর্থাৎ মৃত্যুর পর এই দেহ মৃত্তিকায় প্রোথিত হইলে কৃমি সংজ্ঞিত, কুরুরাদি কর্তৃক ভক্ষিত হইলে বিষ্ঠা রূপে পরিণত এবং অগ্নিতে দগ্ধ হইলে ভন্ম সংজ্ঞা প্রাপ্ত হইয়া থাকে। এই রূপ দেহের নিমিত্ত যে ব্যক্তি প্রাণিদ্রোহ করে, যাহাতে নরক হয়, সে আবার স্বার্থ কি জানিল ? সে নিতান্তই অনভিজ্ঞ ॥ ৮।।

অপর এই দেছ কি অন্দাতার ? কি নিয়েক কর্তা পিতার ? অথবা জননীর ? কিম্বা পুত্রিকা করণের কারণ মাতামহের ? কি ক্রমকর্তার ? কি বলবান্লোকের ? অথবা অগ্নির ? কি ক্র্রের ? কাহার যে কিছুই নিশ্চয় করিতে পারা যায় না ॥ ৯॥

বরঞ্গ, এ স্কলেরই সাধারণ এমত অফুভব হর, অপর এই দেহের উদ্ভব অব্যক্ত অর্থাৎ মায়া হইক্তে হইয়াছে, অন্তে অব্যক্তেটেই ইহা বিলয় প্রাপ্ত হইবে, অতএব মৃত্ ব্যুতীত কোন্ বিদ্যান্ ব্যক্তি এতাদুশ দেহে আত্মবুদ্ধি করিয়া তদর্থ প্রাণিহত্যা করিবে ? ॥ ১০॥ অসতঃ শ্রীমদাক্ষত দারিত্রাং পরমঞ্জনং। আত্মেপিন্যেম তৃতানি দরিত্রঃ পরমীক্ষতে॥ ১১॥ যথা কউকবিদ্ধাকো কভো নে কিতি তাং ব্যথাং। জীবসাম্যং গভো নিকৈ ন' তথা ২বিদ্ধকণ্টকঃ॥১২॥ দরিদ্রো নিম্নইংস্তভো মৃক্তঃ সর্বামনৈরিছ। কৃত্রং যদৃষ্ট্যাগোতি ভুদ্ধি তদ্য পরং তপঃ।

अवत्रामी।

এবং শ্রীমদচেষ্টিতমুক্ত্ব। তং প্রতীকারং নিশ্চিনোতি অসত ইতি। পরং শ্রেষ্ঠং দান্নিস্তমেব কেবলমিতি বা কৃত ইক্যুত আহ আন্মোপম্যেনেতি। ^{*}ততো ন ক্রন্ততীতি ভাবঃ ॥ ১১ ॥

সদৃষ্টাস্থমাহ বংগতি। মুগ্লান্যাদি লিজৈঃ সর্কোবাং জীবানাং শ্রথছংখে সমে ইতি জ্ঞাতবানিত্যর্থ:॥১২॥ কিঞ্চ দারিশ্রং মোক্ষমণি সাধ্যতি ইত্যাহ দরিজ ইত্যাদি লোক চতুইবেন। নিরহংগুভঃ নির্পতোহহয়াররূপভয়ো গর্কোন

देवस्वद्यावनी।

অহো ৰতাগাধোরনাক্তান্যথাপি কথঞ্চিকিতং ক্তাৎ শ্রীমদাক্ষ্য অসাধোদ বিজ্ঞোণৈবেত্যাহ অসন্ত ইত্যাদি পরমঞ্চনমিতি নিদান-বিপর্বায় জারেন ॥ ১১ ॥

যতো বংগতি। কৰোঃ ক্যাচিদপি প্ৰাণিনন্তাং ক্টকবেধকুতাং নেচ্ছতি ত্যা সা ভবন্ধিতি ন ৰাশ্তীত্যৰ্থঃ। ৰভো নিলৈমু খ-ক্লান্তাদিতি লীবস্য ত্যা সাম্যং নিল হংধাহম্মরণাৎ কুণোদয়েন তুল্যাবন্ধু হং গতঃ প্রাণ্ডো ভবতি। অবিদ্ধকণ্টকঃ ক্টকেনাবিদ্ধ ইত্যর্থঃ। রাজদন্তাদিবৎ পরনিপাতঃ। যথা অবিদ্ধং অন্যাঃ ক্টকো যত্ত্র সং॥ ১২॥

অহমারেণ ধনিদাদি গর্মেণ বস্তস্থে। নম্রদাভাব: দ নির্গতো বন্ধাৎ অতঃ দর্মের ধনাদিদম্বন্ধিভি ম দৈশ্চিত্রবিক্ষেণৈ মুক্তো ভবতি।
কিঞ্চ আরাদ্যভাবেন বদৃদ্ধা অভাবত এব প্রাপ্নোতি বস্তস্তপ ইত্যভিমাননালকদাং। তচ্চ পরং শ্রেষ্ঠমিতি প্রদিদ্ধ তপোবদভিমানাহেতৃত্বাং ॥

তদ্যোজির করাদিকং চ তপংসাধ্যমণি অতো ভবতীত্যাহ নিত্যমিতি। অরকাজ্ঞিণঃ ডক্ষামাত্রেক্ষো: অস্থ নিরস্তরং শুবাত্তি বিষর-রসামুপরমন্ত্রীতার্থঃ অতএব হিংমা বিষরোপতোগার্থপরশীড়নাদিলকণাণি উপরমতি। এবং শ্রীমদাদন্দিতাত্মতা ততণ্চ হিংসা-

विविचनाथठकवर्जी।

শ্রীমদরোগপ্রতীকারং নিশ্চিনোতি অসত ইতি। পরং কেবলং ॥ >> ॥ 🧍

নিলৈ মুখিলান্যাদিভি দৃঁটি জীবে পরস্থিন সাম্যং গতঃ। পূর্বাস্থভূতখব্যথাসাদৃশ্যং তত্তাস্থমিদান ইভ্যর্থঃ। অবিদ্ধকণ্টকঃ কণ্ট-কোবিদ্ধঃ। রাজবস্তাদিঃ ৪ ১২ ৪

দারিজ্যে সভি মোক্ষসাধনানি অভএব ভবজীত্যাহ দরিজ ইতি ত্রিতি:। অহুছারেণ ধনিছাদিগর্কেণ বঃ অভঃ নম্ভাতাবঃ স

হে রাজন্! দেবর্ষি এই প্রকার ধনমেদর চেক্টা উল্লেখ করিয়া তাহার প্রতীকার ক্ষাং নিশ্চয় করিয়া কহিলেন, ধনজদে অন্ধ ও অসৎ কোকদিগের কেবল দরিদ্রতাই প্রেষ্ঠ অঞ্চন, কারণ দরিদ্র লোক আপ্নান নার দৃষ্টাক্তে অন্যকে দেখিয়া থাকে, হুতরাং কাহারও দ্রোহ করিতে তাহার ইচ্ছা হয় না ॥ ১৯॥

কলতঃ, যে ব্যক্তির অঙ্গে কন্টক বিদ্ধ হয় সেই লোকই মুখনানতাত্তি চিহু ছারা "সকল জীবেরই হথ ছংখ সমান" ইহা জানিতে পারে, হতরাং সকল জীবকে সমান বোধ করাতে সেই ব্যক্তি যেমন আন্য আলির কন্টকবেধ জন্য ব্যথা ইচ্ছা করে না, যাহার অঙ্গে কখন কন্টক বিদ্ধা হয় নাই তাহার তজ্ঞপ বাহা হয় না ॥ ১২ ॥

সাপর, দরিক্তা যে ভাষা তাহার আনা বারণ এই, দরিক্তা হইটে সুজিও সাধিত হয়, কারণ যে ব্যক্তি ব্যক্তি ভাষা হইতে অহজারস্থা পর্যা নির্গত হইয়া যার অবং লৈই ব্যক্তি সকল প্রকার মদ পুন্য হয়। তুদনন্তর বৃদ্দোক্তাহে যে কউ পার ভাহাই ভাহার অবস্থা তপ্রা, অধিকস্ত অসাত্ত্বাজিক দরিক্ত পুরুষ্টের হেন্দ্ নিতা ক্ষার কীন হইছে থাতে, অভএব ভাইনি ইক্তির সকল অবিলয়ে ওক হয়, নিত্যং ক্ষুৎক্ষামদেহস্য দরিদ্রস্যামকাজ্মিণঃ। ইন্দ্রিয়াগুরুশুষ্যন্তি হিংসাপি বিনিষ্ঠতে ॥১৩ ॥
দরিদ্রিস্যের যুদ্ধান্তে সাধবং সমদর্শিনঃ। সন্ধ্রি: ক্ষিণোতি তং তর্ষং তত আরাচ্চ সিধ্যতি ॥ ১৪ ॥
সাধুনাং সমচিতানাং মুকুক্ষচরণৈষিণাং। উপেক্যোঃ কিং ধনস্তব্ভৈরসন্তিরসদাশ্রীয়ঃ ॥ ১৫ ॥
তদহং মত্তরো মাধ্ব্যা বারুণ্যা শ্রীমদান্ধয়োঃ। তমোমদং হ্নিষ্যামি স্থৈণয়োরজিতাত্মনোঃ ॥১৬ ॥

क्षितवागी।

যক্ষাৎ স:॥১৩॥

যুক্তাতে স্বত্তব সংগচ্চতে তহঁং তৃষ্ণাং ॥ ১৪ ॥
নমু সাধুনামপি ধনিক এব প্রিয়ং স্যায়দরিজ ইত্যত আহ সাধুনামিতি। ধনেন তত্তে। গর্কো যেষাং তৈঃ ॥ ১৫ ॥
তমোমদং অজ্ঞানকতং মদং ॥ ১৬ ॥

বৈষ্ণবতোষণী।

দিকং তদিপরীতে তু দারিদ্রো হিংসাদিনিবর্তকং জিভাত্মভামত্যক্তং ॥ ১৩ ॥

কিঞ্চ সংসক্ষতা। চায়ং ক্তার্থো ভবতীত্যাহ দরিদ্রসৈবেতি সাধবোহপি দরিদ্রসৈয়ব যুজান্তে প্রযক্ষ বিনাপি মিলিতা ভবতি। উভয়েষামপি বিবিজ্পঞ্চারাদিতি ভাব:। এবকারান্ত্র ধনিনাং তেযাং জনসংঘট্টপ্রায়ে তথালে হর্ঘট গমনম্বাদিতি ভাব:। ন চাত্তলোকবকৈরপি দরিদ্রস্যাব্যোগে। ধনিনো বোগশ্চ যন্ত্রেনাপাদাত ইত্যাহ সমং ধনহানি লাভয়োস্ত্রলাং ক্রষ্টুং শীলং ঘেষাং তে। ততঃ সন্তিযুজ্যমানমাত্রে হেত্তি শুমন্ন বিষয়কমপি সর্কাং তর্ষং ব্যাং দরিদ্র এব ক্ষিণোতি। আরাং শীলং। হি নিশ্চিতং ॥১৪॥

নন্থ সাধৃতি মৰ্থ ক্রিয়তাং স্বলাভার্থং ধনিযোগে যত্ন অহপ্রহার্থং তু ক্রিয়তাং তত্রাহ সাধ্নামিতি এতে সাধবং সদাচারাস্তে তু যত্র স্ত্রীদ্ত মাসব ইতি দর্শনাদসন্তোহসদাচারা এতে সমচিতা ধনিত্বাধনিত্বয়োং সমদৃষ্টয় ত্তেতু ধনগর্ব্বিত্তমন তয়োবি ঘনদৃষ্টয়ং। এতে মুকুন্দচরণৈষিত্বেন তদেকাশ্রয়া ত্তেতু বিষয়ৈষিত্বেনাসদাশ্রয়া ইত্তোবং প্রকৃতিবিরোধাদনভিক্ষতে ক্লপেক্যৈ স্থাদৃশ্যত্বময়াম্প্রহাবোটগা তাদৃশাম্প্রহক্ষপং প্রয়োজনং কিং স্যাধ্রৈবেতার্থঃ॥ ১৫॥

নত্ব মাধ্ব্যা মন্ততা ক্ষণাদপ্যাদ্যতি তত্তাহ শ্রীমদান্ধ্যোরিতি শ্রীমদান্ধতায়াঃ স্থায়িতাদদক্ষণাধ্বীপানেন মন্ততাপাস্থ্বৎদ্যতেন্ত্রে-শ্রীবিখনাথচক্রবতী।

নির্গতো যন্ত্রাং স:। সর্কমদৈ মুক্ত ইতি দরিজ্ঞ সকৈরনাদৃতত্বাৎ সংকুল মরাদয়োহপি প্রায়ো নশাস্তীতি ভাব: ॥ ১৩ ॥

নচ দরিক্রস্যৈকা তৃক্ষৈব সর্বাদোষ্ম্যীতি বাচাং তদ্যা অপি প্রতীকারসম্ভবাদিত্যাহ দরিক্রস্যৈবৈতি। ধনিজ্ঞদারিক্রায়োম্বলাদশি-জেনোভ্যপৃহান্ কপ্যা গচ্ছজোহপি সাধবো দরিক্রস্যৈব যুজান্তে দরিদ্রেশৈব তথক্তন সন্তাষণ সম্বাদাদি সম্ভবাৎ তদ্যেব তে স্বয়ঃ সংযোগজনিত ফলদায়কা ভবস্তীতার্থ:। নতু ধনিনো মদান্ত্র্যা অত্তানয়োঃ সন্ত্রিধী বর্ত্তবানাহ্হমেব প্রমাণ্যিতি ভাবঃ। তত্ত্ব সন্তিঃ সৎসংযোগ মহিদ্বৈব তং তর্বং তৃষ্ণাং দরিদ্রঃ স্বয়মেব ক্রিণোতি ক্রিণীকরোতি। তংক্রপাল্রস্য ভক্তামৃত্যা তৃষ্ণাহর স্বভাবত্বাৎ অত্তর্ব পূর্ব্যমুক্তং ক্লচ্ছুং যদ্চহ্যায়োতীতি ক্লচ্ছুস্য বাদ্চিছ্কেরং নতু কর্মজনিতরং ভক্তস্য কর্মানস্থীকারাং ॥১৪॥

নচ সাধ্নাং ধনোপাধিকো ধনিকসংযোগঃ সম্ভবতীত্যাহ সাধ্নামিতি ধনেন তম্ভো গর্মো। যেষাং তৈঃ অসন্তিরবৈকীবৈঃ অসদাশ্রীর-রবৈক্ষবেশেবিভিঃ। তেন গর্মারহিতা দরিলা বৈক্ষবশেবিলো ধনিনোহিপি সাধুভিঃ সংযুদ্ধান্ত এবেতি ভাবঃ ॥১৫॥
তদনযো পর্বিরোপস্য কাং চিকিৎসাং করোমীতি মনসি বিচার্য্য নিশ্চিনোতি তদহনিতি চতুর্জিঃ। মাধ্যা মধুম্য্যা তমোহক্ষানং ॥১৬১৭

তাহাতে প্রহিংসাও নির্ভ হইরা যায়।। ১৩॥

অপিচ, সমদর্শি সাধু পুরুষেরা দরিন্দ্র সঙ্গেই সঙ্গত হইয়া থাকেন, দেই সাধুদিগের দারা দরিদ্র পুরুষদিগের তৃষ্ণা ক্ষয় হয়, স্থতরাং অবিলম্বেই সিদ্ধিলাভ করিয়া থাকেন ৪ ১৪॥

অহে কুবেরতনয়! সাধু পুরুষ্দিগের ধনিগণই প্রিয়, দরিদ্রজন প্রিয় নতে এরত বলিও না, সাধুপণ সমচিত, ভগরান্ যুক্দের চরণমাত্র অহৈষণা করিয়া ভ্রমণ করেন, ধন গর্বিত অসদাভাগ অসহ
লোককে চাঁহারা উপেক্ষা করিয়া থাকেন ই ছ ৯৫ ছ
-অত্ত্রিব তোমরা ছই জন শ্রীমানে অন্ধ এবং মাধ্বী নামক হারাপানে মন্ত থাক, অধিকস্ক একলে ত্রৈণ হই-

यिति। লোকপালত পুত্রে। ভূষা তমঃপ্লুডো। মবিষাসসমাত্মানং বিদ্যানীতঃ স্বত্নলো ॥১৭॥ অতো হছ তঃ স্থাবরতাং আতাং নৈবং যথা পুনঃ। স্মৃতিঃ স্তান্ধং প্রসাদেন তত্রাপি মদকুত্রহাৎ ॥১৮ বাস্থদেবত সাদিধ্যং কর্ম দিব্যাসক্তে। রুতে স্বর্গোকতাং ভূয়ো লক্তকী ভবিষ্যতঃ॥

শ্রীশুক উবাচ॥

স এব মুক্ত্রা দেবর্ষি পতিতা নারায়ণাশ্রমং। নলকৃবর মণিগ্রীবাবাসতু র্মলার্জ্নো ॥ ১৯॥

- শ্রীধ্রমানী।

তমং প্রতৌ তদোব্যাপ্তো ॥ ১৭ ॥
শপতি অতো ২হ'ত ইতি অন্ত্রাতি স্যাতাং নৈব্যিত্যাদিনা মংপ্রসাদেন স্মৃতিং স্যাৎ ॥ ১৮ ॥
স্বলে কিতাং দেবতং পুনল কা তামিন্ মদন্তাহাৎ লক্ষতকী ভবিষ্যতঃ ॥ ১৯ ॥

বৈষ্ণবজোষণী।

তার্থ:। অউএব স্থৈপরো: স্থ্রীলম্পট্রো:। নন্পভোগেন স্থৈপত। শামোৎ নেত্যার অজিতাত্মনো: অসংযমিত্মনসোরিতি॥ ১৬॥
পুরেটা ভূথাপি তমোগুণ ব্যাপ্তোন কেবলমজ্ঞানেন নগ্নো কিন্তু মদেন মধ্যবজ্ঞরাপীত্যাশ্যেনার স্থর্গদাবিতি। অস্য বটোরগ্রেনার কোবা দোর ইতি মহাত্ত্বিদাদিত্যর্থ:॥ ১৭॥

অত ইতি যুগাকং। কাতে। নিজকর্ম দোষাদেবেতার্থ:। স্থাবরতাং, বৃক্ষবোনিমর্থত: তমঃপ্রত্থন স্থাবরত্লাড়াং। অতঃ স্থাবর-খেন পরমদারিদ্রো সতি এবমীদৃশৌ পুন ন স্যাতাং। নমু স্থাবরত্বং বহুনাং বর্জতে নৈতাবতা শিক্ষা সাাং তআহ মৃতি: পূর্বজন্ম বৃত্তাস্তব্যরণং। অতএব সদা ভগবৎপ্রিরাণাং ব্রজজনানাং সেবা চ তাভ্যাং ক্কতা। তথাচ হরিবংশে। যৌ তাবর্জুন বৃক্ষোতু ব্রজে সত্যোপ্যাচনাবিতি ॥ ১৮ ॥

বাস্ত্রদেবস্য মন্নি যোহস্থ গ্রহ স্তন্ধান্ত সৈয়ব সান্নিধাং লব্ধ। দিব্য শরচ্ছত ইতি তাবং কালএব প্রীভগবদবতারাং। লব্ধভক্তী ভবি-ষ্যতঃ ইতি ভক্তিরসিকানাং ভক্তিব্যতিরিকাশীরক্ষ্ঠো। লব্ধেতি ভক্তেঃ দ্বিরতাং বোধমতি ॥

- ীবিশ্বনাধচক্রবর্তী।

স্থাবরতামিতি নিরাবরণয়োঃ স্তর্নারক্রবাণয়োরনয়োঃ স্থাবরত্বনেবাচিত্মিতি ভাবঃ। স্থাবরত্বেছপি মংপ্রদাদেন স্মৃতিরস্থ। স্থাবরতামিপি মদমুগ্রহাদিত্যাদি। দেবমানেন শরচ্ছতে বর্ষশতে বৃত্তে সতি বাস্থদেবস্য সালিধ্যং লব্ধা লব্ধভকী সভৌ স্থলে কিতাং ভবিষ্যতঃ প্রাঞ্জাতঃ। ভূপ্রাপ্তৌ প্রক্রৈ পদমার্যং॥ ১৮। ১৯॥

য়াছ, তোমাদের ইন্দ্রিয় বশীভূত নাই, আমি তোমাদের অজ্ঞানকৃত মদ নাশ করিতেছি॥ ১৬॥

হে রাজন্ ! এই প্রকার কহিয়া ঐ দেবর্ষি রোশবশতঃ কহিতে লাগিলেন, যে হেতু এই ছুই জন লোকপালের পুত্র হইয়া এ প্রকারে তমোব্যাপ্ত হওয়াতে অত্যন্ত তুর্মদতাপ্রযুক্ত আপনারা যে বিবন্ত তাহাও জানিতেছে না ॥ ১৭ ॥ *

নেই কারণে ইহারা স্থাবরত্ব প্রাপ্ত হইবার যোগ্য, অচিরে তত্ত্রপ হউক, পরে অনুপ্রছ্ করত বলি-লেন পুনর্বার ইহাদিগকে ঐরপ না ছইতে হয়, একারণ আমার প্রমাদে ইহাদের ঐ অক্টাতেও শৃতি থাকিরে, তাহাই আমার অনুগ্রহ ॥ ১৮ ॥

দেবপরিমাণে শতবংসর অতীত হইলে ইছারা ছই জনে ভগবান বাজুদেবের সালিধ্য হেড় পুন-রায় দেবত লাভ করিলা আমার অমুগ্রহে সেই দেহে ভুক্তি লাভ করিবে।।

শুকুদের কহিবেন রাজ্য। নেই দেববি এই প্রকার কহিলা নারামনাজনে গমন করেন, তুদবধি বল্ডুরর ও মণিগ্রীব বম্লাস্ট্ন বৃঙ্গ হইয়া পোকুলে বাস করিতেছিল ॥ ১৯॥ খবে র্ভাগবতম্থ্যক্ত সত্যং কর্ছং বচে। হলিং। জগাম শনকৈন্ত্ত বত্ত কো বমলার্জ্বে। ॥ ২০॥ দেবর্বি মে প্রিয়তমো বদিমে ধনদাক্তকা। তত্তথা সাধরিব্যামি যদ্যীতং তমহাত্মনা ॥ ২১ ॥ ইত্যন্তরেণার্ক্নরোঃ কৃষ্ণন্ত ধময়ো র্যা। আত্মনির্কেশশাত্রেণ তির্ব্যগ্গতমূদ্ধলং ॥ ২২ ॥ বালেন নিকর্ষতাম্বশুদ্ধলং তদ্দামোদরেণ তরসোৎকলিতাজ্যি বক্ষো।

व्यथवचामी।

প্রস্তমাহ ঋষেরিভি॥ ২০॥

কিমিভি সভ্যং কর্ত্তব্যং তত্তাহ কেবর্ষিরিভি। যালভ: ভত্তভ: ॥ ২১ ॥ -

বৰরো ব্ৰদ্যো: সহজাভয়ো: আত্মন: প্রীকৃষ্ণস্য তন্মধ্যে প্রবেশমাজের 🗈 ২২ 🗈

জহু জঞ্জীতি জন্বক্ তত্ৰ ৰেতু: দামোদরেণেতি। উৎক্ষিত: উৎপাটিত: জন্তি ৰদ্ধো ৰদ্ধোন্তে পদ্মস্য এক্সঞ্স্য বিক্ৰমিতে-

देवकवरकावनी।

তদেৰমিতিহাসং প্ৰদৰ্শ্য তস্য সম্প্ৰতি বদ্ ভগবদশ্বস্তবং দৰ্শিতং তদেব দৰ্শয়তি ধৰেরিভি। ভবচ সভ্যতা বোগ্যা সাচ ভেনৈব প্রবর্তনীয়েতি ভাব:। তত্রাপি ভগবতঃ ভক্ত্যাখ্য পরমবিদ্যাক্তানাৎ পরম পৃক্তাস্য ভাগবতমুখ্যস্যৈতিচ কচিৎ পাঠ:। হরিরিতি তচ্হাপাছভরণাভিপ্রারেণ। শনকৈরিভি শক্সমুখানেন মাআদ্যাগমনশভয়া। তত শ্চোৰুখলস্য শনকৈরাক্রণেন প্তন মণি ন জাতমিতি জ্ঞাপিতং এবং বৰেন তদা কর্বণার্থং রিজ্বণেনৈর গ্রন্থাং। উক্তং চ বিভীরে যদ্রিকভার্ত্তরগতেনেভি ॥ ২০ ॥

যদ্যভাদেবর্বি দে প্রিয়তম ক্তভাথ তেন মহাত্মনা মহাত্মভাবেন যদগীতং তদেব তত্তথা তেন প্রকারেণ ইমৌ ধনদাত্মকো সাধ্যি-ব্যামি স্থাবরযোনে রুদ্ভার পুন: স্বর্গং দদ্ধা পরমভক্তিমক্তৌ করিব্যামীভার্থ: 🛚 ২১ 🖰

ইতাশাৰেতো: ফুড মহদপলাধলোম ৰাল্যলীলাক্ৰীড়নকতা আধৈয়েব তাদৃশবং স্যাদিতি কিচাৰ্ব্যেতাৰ্থ:। ভিৰ্ব্যপ্পতং প্ৰীভগব-দভিপ্রারাছ্সারেণ ভির্যাক্ত্বং প্রাপ্তমিতার্থঃ। ভির্যাক্ বক্রে ভিরো হর্পেচেভি, বিস্বঃ। অত মাত্রপদেন বত্রং বিনেতি স্বস্ততে। গতমিতি তত্ত্বৈৰ কৰ্জ্মং ইভি তদ্য দচেতনদ্মিৰ হচিতং তচ্চ শীশাশক্তেঃ বয়ং দৰ্মসম্পাদকদ্বেন। ধথা হয়িবংশে। ভদাম ভস্ত বাদস্ত প্রভাবাদন্তবন্দ্যিতি। পালে। নমন্তের দায়ে কুরদীপ্তি ধারে ইতি॥ ২২॥

ভত্তির্ব্যগ্ গত্যা তল্পোর্ল নিঃশেবেণ কর্বতা আকর্বতা দামোদরেণ কর্ত্রণ উৎকলিভান্তির বন্ধৌ সভৌ তরসা বেহগন নিঃশেবং

क्रयममर्जः।

ৰৎ দেবৰ্বি মে'.প্ৰিয়তমঃ তক্তবাদিমে ধনদাক্ষকো তথা সাধরিব্যামি বৎ যথা তেন মহান্মনা গীডমিত্যবরঃ ॥ ২১ ৪ আন্ধনির্বেশমাত্রেণ অবছেমাপীত্যর্থঃ। তেন চোলুখলস্য তির্য্যগৃত্যা লীলাশকেঃ প্রভূতা দর্শিতা। এব্দন্যত্রাপি ক্লেরং ॥ ২২॥

विविधनाथहळावळी।

প্রস্তব্যাহ ঋবেরিতি॥ २०॥

ৰদ্যবাদেবৰি মে' প্ৰিয়ত্তম কৰাদিমৌ তথা সাধ্যিকামি বন্ধখা তেন মহাত্মনা গীতমিতাৰর: ॥ ২১ 🗗

ইতি বিচার্য্য বনব্যাঃ সহজাভরোদ রোরভ্তরেশ মধ্যে ববৌ। তত্তক আস্থানঃ প্রবেশমাত্তেশ উদ্ধৃদং ভিত্যপ্গতং ভিন্নভীনইভূছ ॥২২ जित्रकीनत्मरताम्थनः व्यवक् चाञ्चक्नाः वर्धामाञ्ज्या निःस्नित्व कर्वजा वालन जैरकनिज **डेरशहित्जा** शब्द वरसा वरसादकी। शब्द

टर त्राक्षन् ! टमरे टमर्विय नात्रमें शत्रमें क्षित्रक क्षेत्रक क्षेत्रक राक्ष्य मिक्क देवियादन यमनोर्क्न मीटम थे छूटेंगे इंक हिन छेर्श्याम् देति शैरित शैरित राष्ट्रे दार्ग शर्मन कतिरान ॥ २० 🛊 🗇

ভগবান আপনা আপনি কহিতে লাগিলেন, যে হেডু দেববি আমার প্রিরতম, সেই কারণে এই प्रदेश क्रवन जनतिक (वनगण्ड्नरक) त्रहे स्विति कतिर्छ रहेन, के नहीं क्रिये वर्जन विनिर्वाहिन॥२>

এই প্রকার বলিয়া ভগবান্ অবিলয়েই সহজাত নৈই ছই অর্জুন রুক্তের স্বাহ্নে গরন করিনের जनात्म बिक्स व्यक्ति वरेनामां अनि सारात्क वेच हितन ति क्षेत्रमा विकास के किए हैं हैन ॥२२

टर ताजन ! जीकृतकत छमतत त्रक्तू वक किम लाशात्क त्रके छम्बनिक काकृक हैरेता छोड़ाई

নিম্পেডতু: পরমবিক্রমিতাতিবেপ ক্ষপ্রবাদবিটপৌ ক্তচগুণকো ॥ ২০॥
তত্ত্ব প্রিয়া পরময়া ককুভঃ ক্ষুরস্তো সিদ্ধাবৃপেত্য ক্ষ্মোরিব ভাতবেদাঃ
কৃষ্ণং প্রশুর শিরসাধিদলোকনাধং বদ্ধাঞ্চলী বিরক্তসাবিদমৃচতুঃ স্ম॥ ২৪॥

वीषत्रचामी।

नाजित्वभः करम्भा त्यम् एक इक्क अनानविष्ठेभा गरमारको ॥ २०॥

ককুত: প্রতি সর্ব্ধতঃ ক্ষুদ্ধাবিত্যর্থ:। বহা দিশঃ প্রকাশয়স্তাবিতি। কুজ্মোর্ফ্রোঃ হিতোহরি র্যথা মূর্তিমান্ত্রণৈতি তথোৎ-পত্য বিরজ্পো নির্মানে ॥ ২৪॥ ,

देवक्षवरकाष्ट्री।

পেতত্:। কথং তদাহ পরমেত্যাদি বিটপা অত্র শাথা:। বিটপা পল্লবে শিক্তো বিস্তারে তম্পাথরো রিতি বিশ্ব:। অন্তরৈ:। यहा পরনিতিছেন: দামোদরেনেতি তদ্যামেব মাধুর্যা:। উৎকলিতেত্যাদিনা চৈশর্যাং হুচিত্যেব পূর্ববন্ধরুরং ভগবন্তাপ্রকটনমূহং। অত্র চ নামকরণং হরিবংশে স চ তেনৈব নামা তু ক্লো বৈ দামবন্ধনাং। গোঠে দামোদর ইতি গোপীড়িঃ পরিগীয়ত ইতি ॥ ২৩॥

তত্র তরোর্থ করোঃ দ্বিতৌ দিরো দেবাবিতার্থঃ। অতঃ সর্বা দিশঃ ক্ষুদ্ধতী বিতীররা প্রাক্তিশবলা লভাতে তৃতীররা সহ শল্বং। পক্ষেং অভ্ তগ্যস্থমিদং শোভরত্তাবিতার্থঃ। যদা ক্রম্য়োং কক্তঃ দিগ্ভাগান্তদন্তিকে উপেতা মিধো জ্যোতিমি নদাদেক জাতবেদা ইব ক্রুরেটা শিরদৈর প্রকর্ষেণ নস্থা ইতি দণ্ডপ্রণামে শীঘং শ্রীম্থাদিদর্শনাদিছেঃ। ক্ষমিতি ভদানী শুলুপ্রণাকর্ষণাভিপ্রারেণ। নম্ম দানোদরবেনাতাস্ত বাল্যলীলাপরং বালকং কথং প্রণতবস্তৌ তত্তাহ অধিলেতি তদৈখায় স্বভাবাত্ত শ্রীনারদাম্প্রহেণ তির্জ্ঞানোংপত্তেরিভি ভাবঃ। যদা নম্ম তাদৃশ ক্রতাপরাধো শ্রীনারদ প্রসাদেন স্বত তহ্ তৌচ কথং লজ্ঞাদিকং বিহার শ্রীজগবৎ পার্বে প্রনাদিকমক্র্ত্রতাং তত্তাহ অধিলেতি অনন্য গতিহাদিতার্থঃ। বিরজ্পৌ বিগ্তাপরাধৌ সন্তাবিতার্থঃ। ম বিশ্বরে। মহাপরাধিনোরপি সদ্যন্তাদশব্দিদেঃ ॥ ২৪॥

क्रममन्दर्भः।

পরমবিক্রমমিতি পততোত্তরোরেব মহামর্দত্তেনেত্যাদি॥ ২৩॥

কুজরোঃ করুতঃ সকাশাৎ উপেত্য কুরস্তৌ সম্প্রমণ কম্পমানী। হয়েছিবা পরস্পরমিলিতভাৎ একীভূয়ান্নিরিবোপেত্যেভ্যুৎপ্রেকণ তন্মহিমপরিপাটীমারততে ॥ ২৪ ॥

গ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

বিক্রমিতেন অভিবলেনাকর্ষণেনাভিবেপা অভিকেম্পমানাঃ স্কন্ধাদরো বরোক্তো দামোদরেণেতি স চ তেনৈব নামা তু ক্লঞো বৈ দাম-বন্ধনাৎ। গোঠে দামোদর ইভি গোপীভিঃ পরিগীয়ত ইভি হরিবংশোক্তা প্রসিদ্ধিঃ স্মারিতা ॥ ২৩ ॥

ককুতো ব্যাপ্য ক্রুবত্তো কুর্বব্যার্ক্রের্ক্রের্জিতবেদা অধি মি থো জ্যোতির্মিদনাদেক এব জাতবেদা ইব ক্ষুর্ত্তাবিভার্থ ॥ ২৪ ॥

পশ্চাৎগামী হইয়া যায়, যাহা হউক পরে তিনি মহাবলে সেই উদ্থলটা আকর্ষণ করিতে লাগিলেন, তাহাতে তুইটা যমলার্জ্বনেরই মূল উৎপাটিত হইল এবং তাঁহার বিক্রমে ঐ তুই বৃক্ষের প্রবাল শাখা ও ক্ষম পর্যান্ত কম্পিত হউয়া উঠিল, হৃতরাং অবিল্যেই প্রচণ্ড শব্দ করিয়া ঐ তুইটী বৃক্ষ পতিত হইল ॥ ২০॥

হে ভারত ! ব্যবার্জনু উন্মূলিত হইরা পতিতহইবামাত্র দেই ছইয়ের অভ্যন্তরন্থ মূর্তিমান্ অনির ন্যার ছইটা নিজপুরুষ সেই স্থানে আবিভূত হইলেন, ভাঁহানিগের চমৎকার জ্ঞী, তাহাতে সকল দিক্ প্রকাশিত হইরা উঠিল, ভাঁহারা তথার উপনীত হইরা মন্তক্ষারা অধিললোকনাথ জ্ঞীকৃষ্ণ কে প্রণাম করিলেন এবং নিরহশার ছইয়া অঞ্জান বন্ধনপূর্বক কহিছে লাগিলেন ॥ ২৪॥

কৃষ্ণ কৃষ্ণ মহাযোগিং স্থমাদ্যঃ পুরুষঃ পরঃ। ব্যক্তাব্যক্তমিদং বিশ্বং রূপং তে ব্রশ্নণো বিদ্য়: ॥২৫॥
তমেকঃ সর্ব্বভূতানাং দেহস্বাস্থেক্তিয়েশ্বরঃ॥ ২৬॥

- ছমেব কালো ভগৰান্ বিষ্ণুরব্যয় ঈশরঃ। ছং মহান্ প্রকৃতিঃ সূক্ষা রজঃসত্ত্তযোমগী।

व्यथतवामी।

পোগবালকং মাং যুবাং দেবে কিমিতি প্রণতাবিতি চেন্ত্রাহতু: হে কৃষ্ণ কৃষ্ণ মহাযোগিন্ অচিন্তাপ্রভাব সং ন বালঃ কিন্তু পরং প্রথং যতঃ আদ্যাং কারণভূতঃ। ভ্রাপি ন নিমিন্তমাত্রং কিন্তু উপাদানমপি বমেব ইত্যাশরেন তুই বৃত্ ব্যক্তাবাক্তমিতি স্পূলং স্ত্রপ্রমিদং তে রূপং বিহুঃ ॥ ২৫ ॥

নিয়স্তাপি অমেব ইত্যুচতুত্ব্যেক ইতি। দেহ: অসব: প্রাণা: আত্মা অহঙ্কার: ইন্দ্রিয়াণি চ এতেধানীশ্বর: ॥ २७ ॥
- বিশ্বা কালো নিনিত্ত: প্রকৃতিকপাদান: প্রকৃতেজাতো মহান্ বিশাত্মতয়া পরিণমতে প্রক্ষ: ক্রা নিয়স্তা চ কিম্লাহং তলাহতু:

বৈষ্ণবতোষণী।

যদাপ্যাবাং মহাপরাধিনো তথাপি ছয় নিতরামহুগৃহীতো তৃচ্চ তবোচিতমেবেতি। নিবেদেয়িতু মুপক্রমেতে ক্ষেতি। হে নরাকৃতি পরব্রহ্মন, বীপ্সা পরমানন্দেন প্রেম সন্ত্রমেণ বা কিলা জিল্লা কর্মক ক্ষুক্তনাম স্বভাবেন। যদা উল্পুল কর্মণাদি বাল্যলীলারসম্য মহাচঞ্চলস্য কণং হৈগ্যাপাদনেনাভিক্ষী করণায়। ক্ষুদ্ধেন প্রপঞ্চলতঃ মহাযোগিন হে অচিন্ত্যানক্ষেত্র্যেত্যুর্থঃ। যতঃ প্রকৃতিক্রি ভাবং পুরুষঃ স্বন্ধ পরঃ পুরুষব্রস্যাপ্যংশী। আংশিজেন মহানারারণাদিভেদেন বহুবিধাবির্ভাবঃ স্যাদিতি ত্রাপি স্বমান্ত্রঃ ভগবান ইত্যুর্থঃ। তথা দর্শিতঃ ক্ষুরঃ পরমং ক্ষুষ্ক ইত্যাদি ব্রহ্মসংহিতাপদ্যাভ্যাং। অতঃ সর্বতে। গুণাধিক্স্যু তবেদৃশী ক্রপাপি যুক্তৈবেতি ভাবঃ। কিঞ্চ। ক্রিক্স্যুর্বাতি ব্রহ্মণা ক্রিক্স্যুর্বাতি ভাবঃ। বিক্ষা ক্রিক্স্যুর্বাতি ভাবঃ। থবাবির্যাব্রিক্স্যুর্বাতি ভাবঃ। ইতি ক্রিছে পাঠঃ। এবমাব্যোব্রিপি নিত্য তদীর্যেনাহুর্বহো ঘটত এবেতি ভাবঃ॥ ২৫॥

কিঞ্চ ছমিতি এতচাৰ্দ্ধকং ইশং তদেব সৰ্বপ্ৰবৰ্ত্তকত্বেন তৰতো হম্মদপরাধাভাবাৎ কিম্বা স্বতএব বহিরম্ভত্ব দেকনাথত্বাদমুগ্রাফৌ ভবাব এবেতি ভাবঃ ॥ ২৬ ॥

নকু সর্ব প্রবর্তক: কালো জগংকারণানাঞ্চ মইলাদীনামেব রূপং বিশ্বং তত্তাহতু: ছমেবেতি সার্দ্ধেন । কালাদিছে হেতৃত্ত্যা ভগবানিত্যাদি বিশেবণ্চতুকং ভগবান্ সর্বনিয়ন্তা কালস্য ভ্রদংশত্ত্ব-নিত্যাদি বিশেবণ্চতুকং ভগবান্ সর্বামধ্যযুক্তঃ বিষ্ণু: ব্যাপক: ন ব্যেতি কীয়ত ইত্যব্যয়:। ঈখর: সর্বনিয়ন্তা কালস্য ভ্রদংশত্ত্ব-নৈব তত্ত্বর্মাধান্তনেব মুধ্য: কাল ইত্যর্থ:। তথা মহতত্বস্য ব্যাপক্তেনৈব মহত্বান্তদাদিব্যাপকত্ত্বনেব মুধ্য: কাল ইত্যর্থ:। তথা ভগ-

ক্ৰম্পৰ্ভ:।

কৃষ্ণ ক্ষেতি। পরমন্ত্রপত্মাৎ পরমনামত্বাচ্চ প্রাঙ্নির্দ্রেশা বীঙ্গা চ। পরং পুরুষো ভবান্। তত্ত্বছপি আদ্যাং স্বরং ভগবানিত্যর্থ: ॥ २৫। ২৬। ২৭। ২৮॥

बीविश्वनाशहक्ववर्शी।

উদ্ধনে বন্ধং গোপালবালং মাং যুবাং দেবে কিমিতি প্রণতাবিত্যত আহতু:। ক্লফ ক্লফেতি ক্লিং ছলেরের যুগপছকে:। জং পর: পুরুষো ভগবান্ তন্ত্রাপ্যাদ্যঃ স্বয়ং ভগবান্ স্বতন্ত্বং গোণালবালো ভবস্যেবেতি ভাবঃ। হে মহাযোগিয়চিন্তাপ্রভাব অস্তন্ত্রোচকস্য তবৈতহন্ধনকারণমত্ত্রিকি ভাবঃ। সর্কাসক্ষপস্য তব কেন বন্ধনং সম্ভবেদিত্যাত্তু:। ব্যক্তাব্যক্তং কার্যকারণায়কং ॥ ২৫॥

নচ খনন্যা বন্ধক: কোহপীশ্বরে ১২ন্তী ক্যাহতু: থমিতি। অসবং প্রাণা: আত্মা অংকার: ॥ ২৬ ॥

সর্বাত্মক বাবনেবৈক ঈশ্বর ইত্যাহতুত্ত্মিতি। কালো নাম তব চেষ্টা মহান্ কার্যাং প্রকৃত্তিঃ শক্তিঃ প্রকৃত্তা হংশঃ কীদৃশঃ অধাকো

হে কৃষ্ণ! হে কৃষ্ণ! হে মহাযোগিন্! আপনি অচিন্ত্যপ্রভাৰ, আপনি বালক নহেন পরষপুরুষ, বে হেতু সকলের কারণ, ভগবন্! আপনি কেবল নিমিত্ত কারণ নহেন, তত্ত্বক্ত পুরুষের। বলেন সুল ও সৃক্ষা রূপে প্রকাশমান এই বিশ্ব আপনকার রূপ, অতএব এই বিশের উপাদান কারণও আপনি ॥ ২৫ এবং হে বিভোঁ। এক আপনিই সকল প্রাণির দেহ, প্রাণ, অহন্ধার এবং ইন্তির সকলের ঈশর॥ ২৬ কে দেব! যে হেতু আপনি ঈশ্বর অব্যর বিষ্ণু, অতএব আপনিই কাল অর্থাৎ কাল আপনকার

्ष्रत्वत शूक्रद्यार्थाकः मर्स्तत्कखितकात्रवि ॥ २१ ॥

গৃহমাণৈস্বমগ্রাছো বিকারেঃ প্রাকৃতি ত লৈ: i কোঁ মিহার্ছ ি বিভাতুং প্রাক্সিদ্ধং গুণসংশ্রিতঃ ॥২৮

अभित्रवामी ।*

খনেব কাল ইত্যাদিনা সাৰ্দ্ধেন। যতো ভগৰানীখন্নো বিষ্ণুত্বং অতঃ কালো নাম তব লীলা প্ৰস্কৃতিঃ শক্তিঃ প্ৰুবো হংশঃ মহান্ কাৰ্যাং অতত্তনেৰ স্প্ৰিত্যৰ্থঃ ॥ ২৭ ॥ *

নম্বহমের ৫৮ং সর্বাং ততোহপি ঘটাদিজানে মন্ধ্রানং কিং ন ভরতি ভরতি, চেৎ সর্বোহপি এক্ষরিৎ স্যাৎ অভ আহতু: গৃহ্মানৈ ভ্রিতি । দৃশ্যবেন বর্ত্তমানৈ বুঁদ্ধিবিকারৈরি ক্রিয়াদিভি ইন্ত্রী ঘং ন গৃহ্দে ইতি ভাব: । নথু তহি ভীবে। জানাভূ নৈবেভ্যাহতু: কে। বিহেতি । জাবাহাৎপত্তে: প্রাণেব ব্রাকাশত্যা সিদ্ধা ঘা বা জানাতি । গুণসংগ্রিত: দেহাদ্যারত: ॥ ২৮ ॥

বৈষ্ণবভোষণী।

বানেক আদেদমগ্র আত্মাত্মনাং বিভ্রিত্যাদি তৃতীয়ক্ষাদিতো ভগবাংক্মের সর্বকারণত্বেনার্যার্থ্যা প্রকৃতিরিত্যর্থং তথা প্রক্ষা বদংশত্তেনির দেহেন্দ্রিরাদীশত্বাবনের মুখ্যঃ প্রকৃষ ইত্যর্থং। ক্ষ্মেতি ভূমিরাপোহনলো বায়ুরিত্যাদি গীতোকাষ্ট্রাব্যবকার্যাত্মক প্রকৃতেঃ কারণবন্ধেক। রঞ্জান্তেরি বিশ্বস্য বৈচিত্র্যাপেক্ষা সচ্চিদানশশতে ব্যবচ্ছেদার্থক। সা চ তব প্রকৃতিত্বাহ্যতের প্রকৃতিঃ প্রকৃতিশু প্রকৃতিশু প্রকৃতিশ্ব প্রকৃত্য প্রকৃত্য প্রকৃত্য প্রকৃত্য প্রকৃত্য প্রকৃত্য প্রকৃত্য পর্ব প্রকৃত্য প্রক

বিজ্ঞাপুং দাক্ষাৎকর্ত্বং। জনাইত্তঃ। তত্র বিকারেঃ প্রাকৃতৈরিতাদ্য বাঁখা বৃদ্ধিবিকারৈরিত ভাগৈরিতাদ্য চেল্লিয়াদিভিরিতি। অথচ শ্লেষণ এবং পরসাম্প্রহক্ষপি দাক্ষাদ্শামানোহপি স্বমন্ত্রিং লাকিব্বং তর্তো জ্ঞান্ত্রং বা ন শক্যত ইত্যাহত্বং গৃহেতি। গৃহমানৈঃ দাক্ষাদর্ভ্রমানৈরিকারেঃ দদৈব বিজিয়াশূনাঃ প্রাকৃতিঃ স্বাভাবিকৈ ভাগৈঃ কাঞ্গাদিভি বিশিষ্টোহপি স্বং অগ্রাহং বশীকর্ত্র মণকা ইত্যর্থঃ। পরমন্বতন্ত্রহাৎ অবতারিকায়াঃ। পক্ষান্তরে তবতো জ্ঞাত্মশক্যঃ একস্যের ব্রপদিভ্রমধ্যমন্তাদিনা পরম হর্ষিত্রক্যন্ত্রহাৎ তত্র চ ইহ শ্রীনলগোকুলে প্রাক্ প্রথমত এব দিল্প নিতাং প্রকটতয়া বর্ষমানমণি স্বাং গুণান্ ভিজ্লিক্ষণান্ সমাক্ষ্তিঃ আাশ্রতোহণি কো বিশেষেণ জ্ঞাতু মর্থতি বোগ্যো ভবতি শক্ষোতি বা স্বপি তুন কোহণি লোকিকলোককতাপ্রকটনেন পরমন্ত্রের্ধাধণীলন্তাং। ব্রাণ্ডিবেশ্যানিভিল্লাহাংশি সং তান্ গুণান্ সংশ্রিতঃ তৈর্বন্ধ ইত্যথঃ। তথাহাজিক্ গুণারেণ স্বতঃ জেল বিভ্যাদিনা বন্ধনদর্শনেন পরমনোহোৎপাদনাদিতি ভাবঃ। সংবৃত ইতি পাঠেহপি সমাগ্রত্ত্বেন স এবার্থঃ॥ ২৮॥

अविश्वनाथहक्तवर्धी।

श्चर्यामी मर्स्सव् त्करंखव् (मरश्व् विकातान् मन आमीन् त्विख अत्छ। विक्षृतीयत्र अत्का छगवाः सम्मन् ॥ २१॥

ছং কপনৈব স্থা দৃশ্যদে বস্তুত্ত্বমদৃশ্য এবেত্যাহত্য। গৃহ্বমাণৈশ্বরা দৃশ্বমানৈ বিকিটের বৃদ্ধীব্রিয়াদিভি অস্থি সং ন গৃহ্বে কীদৃশৈ: প্রাকৃতি গুণকার্টেয়াক্তে রগুণকার্টেয় বৃদ্ধীব্রিয়াদিভিঃ স্থা দৃশ্যদ এবেভি ভাবা। নবপ্রাকৃত স্বাজ্ঞীবো জানাত্ত্রিনেবেতাহত্যু কোহবিহেভি। প্রাকৃতি স্বাকৃতি স্বাকৃতি বিশানস্থাজ্ঞীবস্যাপি স্থা কারণমিত্যর্থঃ। গুণসংবৃত ইতি গুণাজীত্ত্ব স্পত্তক্যা কথ্ঞিবাং জানাতীতি ভাবা॥ ২৮॥

লীলামাত্র, হে প্রভো ! আপনি মহান্ অর্থাৎ মূল কার্য্য, আপনিই রজঃ সন্ত ত্রোময়ী সূক্ষা প্রকৃতি। আপনিই পুরুষ, আপনিই সর্বক্ষেত্রের অধ্যক্ষ অর্থাৎ বাল্যাদি অবস্থার অনুসন্ধান কর্তা, অতএব আপনি স্ববিদ্ধান । ২৭॥

হৈ বিভা! আপনি দ্রন্থী, একারণ দৃশ্যম্বরূপে বর্তমান যে সকল প্রাক্ত বিকার অর্থাৎ ইন্দ্রিয়াদি, সে সকল আপনাকে গ্রহণ করিতে পারে না। ছে ভগবন্! জীবত আপনাকে জানিতে সক্ষম
নহে, কারণ আপনি জীবাদির উৎপত্তির পূর্ববিধি স্বয়ম্প্রকাশরূপে সিদ্ধ আছেন, ইহাতে দেহাদি
আর্ভ কোন্ ব্যক্তি আপনাকে জানিতে যোগ্য হইবে ?॥ ২৮।।

তিয়ে তুভ্যং ভগবতে বাহ্নদেবায় বেধসে। আত্মদ্যোতিগু বৈশ্চম্মহিন্দে ব্রহ্মণে নম্ভ। ২৯ ॥ যুদ্যাবতারা জ্ঞায়ত্তে শরীরিষশরীরিণঃ। তৈত্তিরতুল্যাতিশয়ৈকীর্যিয়ে দে হিষদস্তিঃ ॥ ৩০ ॥

•क्षीधत्रवामी।

অতো হজে যথাৎ কেবলং প্রণমন্তস্তবৈ তুভামিতি। আত্মন: বত্মাৎ দ্যোতঃ প্রকাশো বৈষাং তৈ প্রতিশৃহয়ো মহিমা মস্য অত্তৈ -রিব রবেস্তবৈদ্যা ২৯ ॥

অংশে অহমীশ্বর ইতি কুতো কাতং ভতাহতু: যস্যেতি ॥ ৩ ॥

বৈষ্ণবজোষণী।

তদৈ কৃষ্ণত্ব ভগবান্ স্থানিত্যাদে প্রসিদ্ধার তৃষ্ণং নমঃ পুন র্জগবতে মহাবৈকুঠনাথার নারায়ণাথ্যার চ পুনস্তচতৃর্গৃহপ্রথমার বাহদেবার চ পুন বে ধিনে স্টেকত্রে সঙ্কর্গাদিরপার পুরুষার চ পুরুষারৈব সতে আত্মদ্যোতে ইত্যাদি রূপিণে চ। বৃদ্ধণে কচিদধিকারিণি নির্দ্ধিশোকারেণ ক্রতে চ। তত্মাৎ তত্তৎসর্বাত্মকত্বাৎ পরমবৃহত্তমারেত্যুপসংহারো বা। দীলারপেণ চারমর্থ:। তত্ম প্রীনন্দরোক্তা প্রাণি সিদ্ধার তৃত্যং জীননাত্মকার ভগবতে নমঃ। কচিব্দেশোপত্যার চ বেধনেহত্ত্বলীলা সম্পাদরিত্তে অভ্নত্তবাত্মদ্যোতি: স্কুপ প্রকাশ বিশেবৈরেব গুণৈ বল্যালীলেত্যাদিভিরাচ্ছরৈশ্ব্যার। বহা আত্মনা ত্বা তংগ্রভার দ্যোতত্তে ভ্রদাভান্তি বৈ গুণা দামানি তৈ ব্রহ্বনাচ্ছরবিভূতার সর্বমণি ত্রি সম্ভবতীত্যাহতুং বৃদ্ধণ ইতি। ২৯॥

বিবিক্ষিত্তমাহতু: যদ্যেতি যুগাকেন। শরীরিষু মৎস্যাদিজাতিরু মধ্যে হশরীরিণঃ প্রাক্কতশরীররহিত্স্য তব। কিছা শরীরিষু বর্ত্তনান অপি অপরীরিণ গুদ্ধর্মরহিতা:। শরীরেছিতি পাঠেহপি স এবার্থা। অভতৈ তৈরনির্ব্ধচনীরে: অভএবাতুল্যাভিশরৈ বীর্ব্যাঃ প্রভাবৈরত্তুত্তিতি ববি দেহিষু জীবেষু অসকতৈয়্বউমানৈরিত্যর্থাঃ। অবতারা অপি জ্ঞারত্তে কিং পুনস্তমবতারীত্যর্থাঃ। অন্যতৈঃ। যা এবং অপ্রেমবির্দ্ধরে বিচিত্রলীলয়ায়ানমাচ্ছাদরন্ধপি ছং নিত্রাং প্রাকট্যমেব বাসীত্যাহতু র্যস্তি অর্থাঃ স এব ॥ ৩০ ॥

ক্রমসন্দর্ভঃ।

বিশ্বং শর্কাং এবং প্রাকৃত সর্কাত্মকত্ব মৃক্রণ তদতীত তদাত্মকত্বমণ্যাহতু:। তকৈ অবং ভগবতে মহানারারণার। বাহ্ণদেবার তচ্চত্ব্রিপ্রথার। বেধ্নে প্রাকৃতস্টিকত্রে সকর্ষণাদিরণার কীদৃশার প্রধার। আত্মেতি। অতএব তত্তৎ সর্কাত্মকতাৎ একণে প্রম্বৃহতে॥ ২৯॥

তদেবং মহিমানং নিরূপ্য তথাভূতস্য তদ্যাবতারেশ্বপি মহিমাতিশয়মমর্যাদং দর্শরিষা তত্ত্ব তদ্য কৈমুত্যমাণাদগবৌ সাকাজদবতারে সর্বলোক ভাগধেরাস্তঃপতিত স্বভাগধেরং স্নাবেতে যস্যেতি ঘাভ্যাং। তপবতি দেহদেহিদরোর্ভেদাভাবাৎ জীববদসৌ শরীরী ন ভবতীতাশরীরিণঃ॥ ৩০॥

শ্ৰীৰিখনাথচক্ৰবন্তী।

অতো হজে রন্ধাং কেবলং প্রণমতন্তম্ম ইতি। বেধসে বিশ্বকর্তে । ছজে রন্ধস্য কারণং গুণসংবৃত্তত্বমূক্তষেব পুনরণি স্পটরতঃ। আল্লনা ক্রের দ্যোত্তে ইতি তংপ্রকাশ্যে গু গৈশ্ছরো মহিমা মেধৈরিব রবে র্যস্য তদ্মৈ ॥ ২৯ ॥

সভাং প্রমেশ্বর এবভূতো ভবত্যের যুবাং তু মামের প্রমেশ্বরং কেন ক্লণেন ক্রবাথে তত্রাহতুঃ। বস্য অবভারা মৎস্যাদরঃ শ্বীবিরু মৎস্যাদিজাতিরু মধ্যে জ্ঞায়তে অসুমীয়স্তে। অশ্বীবিরণ প্রাক্তশ্বীবরহিত্স্য তব কৈ: দেহিরু জীবেষসক্তৈর্বটমানেবীহিন্য: প্রভাবে:। স ভবানবভারী ধবেব ভবসি। হন্তিসহত্রেণাপি হুস্প্পটিনয়ো রাব্রো রর্জ্ক্নয়ো রর্জ্নয়মৌজনো ঘাল্লীকোদিত বললবেনাপ্রপাটনাৎ রক্ষ্ কৃথলীয়োরপি তাদৃশ শক্তাপ্রাদিতি ভাব:। ভবায় ভূত্যৈ বিগতো ভবো বন্ধান্তকৈ মৌক্লার জংশভাগেন অংশাংশেন প্রক্ষেন্তাদিনা আশিবাং স্ক্রিনানানাং পতি দাতা ব: স এবেতার্থ:॥ ৩০ ॥

প্রতো! আপনি সেই ভগবান্ বাহুদেব, আপনাকে নমস্কার করি। হে ব্রহ্মন্! মেঘৰারা, যজ্ঞপ দিবাকরের তেজোরাশি আছেম বোধ হয় তজ্ঞ বে যে সকল গুণের স্বতঃ প্রকাশ হয়, সেই সমস্ত গুণৰারা আপনকার মহিমা আছেম রহিয়াছে আপনাকে নম্কার করি।। ২৯।।

অহে। অশরীরী হইলেও অমুপম আতিশহ্যশালি তত্ত্বীর্ষ্য, যাহা দেহি সকলের অসকত, তদারা বাঁহার অবতার সকল শরীর মধ্যে জানা যায়।। ৩০।। স ভবান্ সর্বলোকস্য ভবায় বিভবায় চ। অবতীর্ণো হংশভাগেন সাম্প্রতং পতিরাশিষাং।
নমঃ পরমকল্যাণ নমত্তে বিশ্বমঙ্গল। বাহ্নদেবায় শান্তায় বদূনাং পত্য়ে নমঃ॥ ৩১॥
অমুজানীহি নৌ ভূমং ন্তবামুচরকিকরোঁ। দর্শনং নৌ ভগবত ঋষেরাসীদমুগ্রহাৎ॥ ৩২॥

टीशतवामी।

ভবার উদ্ভবার বিভবার বিগতো ভবো যদ্মিন্ তকৈ কৈবল্যার ইত্যর্থ: ॥ ৩১ ॥ নৌ আবাং। অনুচর: কুবের: নারদো বা তল্য কিছরৌ ভগবতন্তব দর্শনং ॥ ৩২ ॥

देवकवरजावनी।

আহো ভাগামিত্যাংড়: স ইতি। ভবার বিভবার চেতি ঐহিকামুমিকাশেবসম্পদ্ধার্থমিত্যর্থ:। সাম্প্রতম্বতীশো যত আনিষাং ভক্ত-কামিতানাং সর্বসামেব পতিঃ পালকঃ পরিপূরক ইত্যর্থ:। সাম্প্রতমিত্যস্য বথাস্থিতমট্রেবারয়:। গোকুলকীড়াসময়ে ২ম্মিনিতার্থ: ম

এবমবভার প্ররোজনেন স্বমঙ্গলকারিতোচিভীমৃপপাদ্য তাদৃশক্ষ তদ্যুণং তাদৃশতয়ামকীর্ত্তনছারৈবাদ্রমোদমানৌ তছ্চিতসেবায়ামপাক্ষমন্ত্রনাট কেবলং ভক্তা মৃহ: প্রশতঃ নম ইতি। হে স্বতঃ প্রমকল্যাণস্বরূপ। কিঞ্চ বিশ্বস্থ মঙ্গলং ঐতিকামৃত্ত্বিক স্বৃধং

যন্ত্রাদিতি প্রমমন্ত্রতি কচিং পাঠে প্রমাণাং শ্রীশিবাদীনাদশি মন্ত্রতি ব্যাখ্যেয়। যন্ত্রেচিনিঃস্তস্ত্রিংপ্রব্রোদকেন

ইত্যাদৌ শিবঃ শিবোহভূদিত্যকেল । তৎ কৃতঃ বাস্থ্রদেবার স্ক্রিতার্থমের বস্থানেবারা প্রকটার স্বতঃ শান্তায় নির্দ্রোবার স্ব্রামাহান্ত্রে

স্বন্ধায় বা। নিত্যমের ভূবনাং ক্রিয়াণাং গোপানাঞ্চ তেবাং প্রতয়ে কুলপ্রিরূপায়। শ্রীগোপানাঞ্চ যাদবন্ধং স্থান্মধ্রামাহান্ত্রে

ব্যক্তং। রক্ষিতা ফাদবাঃ সর্কে ইক্রবৃষ্টিনিবারণাদ্বিতি। তথা যত্রাভিবিক্রো ভগবান্ মধ্যো যহুবৈরিণেত্যাদিনা॥ ৩১॥

এবং স্বব্য দেববেনানবসরে তথাবস্থিতিমধুকাই মন্বা তাদৃশং স্থাবেন্তবোষ্ট্ৰোচন্তাবাহত্য অনুজানীহীতি গন্ধমেবেতি ভাব:।

ত্মন্হে প্রমেশ্র। অন্তব্য:। বদা অনুজানীহি আবাং প্রতি কিঞ্চিদাকাং বিধেহীতার্থ:। ভূমন্হে সর্কাতঃ পরিপূর্ণেতি।

বদ্যপি তব কাপ্যপেকা নান্তি তথাপীতি ভাব:। তচ্চ ভক্তবাৎসদ্যাদেবেত্যাহত্য:। অন্তব্যক্ত ভক্তক শীল্ভবক কিছরো ক্রভান্থচরাবিত্যুক্তে:। বদা শুনাবদক্ত কিছরো তথপাদেনৈব 'তাদৃশকলপ্রাপ্তেন্তদন্তগতিশ্বরণকৈত প্রস্তবাদ্ধুক্তাচ্চ। বদাহত্বরাণাং
কিছরাবিতি নিরন্তর মহজানীহি। বদা তবাহ্তরাণাং তোপবালকানাং কিছরো অনুজানীহি এবাং কিছরো কৃষ্ণাত্রের রক্ষেত্রপ্ত:।

নবতিহল্ল ভিমিদং তথাহত্রন্থগ্রাদিতি। নৌ আবাভ্যাং তব দর্শনং ভগবতঃ প্রমদ্বালোঃ অচিন্তাপ্রভাবক বা প্রজা শ্বেং
শুনাবদক্ত মহাপরাধিনোরপ্যকভালভিসিদ্ধেরেতদ্প্যাশবিহে ইতি ভাবঃ॥ ৩২॥

ক্রমসন্দর্ভঃ।

তদেবান্দ্য নমস্কতো নম ইতি প্রমাণাং শিবাদীনামপি মকলক্ষণ। বাস্থদেবার বস্থদেবদারা প্রকটার। শাস্তার দর্শন্য পরমস্থ-ক্ষপার । যদুনাং ক্ষত্তিরবিশেষাণাং গোপবিশেষাণাক ॥৩১/৩২॥

ঐবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

পরমং কল্যাণং বন্ধান্তকৈ। হে অরঞ্চ প্রমন্দ্রশাস্ত্রপ ॥ ৩১ ॥ অন্তর্ন্য নারদ্য্য কিছরো॥ ৩২ ॥

সেই আপনি সর্বলোকের উদ্ভব এবং কৈবল্য নিমিত্ত সম্প্রতি পূর্ণস্বরূপে অবতীর্ণ হইয়াছেন। প্রভো! না হইবে কেন ?, আপনি সকল কল্যাণের অধিপতি, অতএব হে পরমকল্যাণ! আপনাকে নমস্কার, আপনি বাহ্নদেব, শান্তমূর্ত্তি, এবং যছদিগের (ক্ষুত্রেয় বা পোপগণের) পতি, আপনাকে নমস্কার করি,॥ ৩১॥

হে ভূষন্ ! আমরা জ্ইজন আপনকার অলুচর ক্বেরের কিছর, দেবর্বির প্রস্থাহে আমাদের আপনি যে ভগবান্ আপনকার দর্শন লাভ হইল ॥ ৩২ ॥ বাণী গুণাসুকথনে প্রবণ্যে কথায়াং হস্তো চ কর্মান্ত মনন্তব পাদয়ে। ন'ঃ।
স্মৃত্যাং শিরস্তব নিবাসজগৎপ্রণীমে দৃষ্টিঃ সতাং দর্শনে ২স্ত ভবন্তন্নাং॥ ৩০॥
শ্রীশুক উবাচ॥

ইখং সঙ্কীর্ত্তিতন্তাতাং ভগবান্ গোকুলেশরঃ। দালা চোদুখলে বদ্ধঃ প্রহুদলাহ গুছকো ॥ ৩৪ ॥

শ্ৰীমন্তাগৰতম্।

धीधतयामी।

তত্র গতরো: আবরো: পূর্বস্বভাবে। মাভূৎ কিন্ত বাণী গুণাত্মকথন ইত্যাদি। ন: অস্বদো র্ছরোশ্চেডি বিবচন স্থানে বহুবচনং অস্বং সন্ধিনাং সর্বেষামপীতি বা। তব নিবাসভূতং যৎ জগুৎ তদ্য প্রণামে দ্বিষাস ইতি বহুমানেনস্বগতঃ প্রণামে শিরোহন্বিত্যর্থঃ। ভবতনুদাং ভবতো সুর্বীনাং॥ ৩৩॥

সঙ্গীঠিতঃ সংস্তৃতঃ ॥ ৩৪ ॥

বৈষ্ণৰতোষণী।

শ্রীনারদাম্প্রহেণ মন্তকাবের যুবাং ব্রত্তী তত ন্তরৈর পাছতমিতি চেন্তর্হি সর্বাভক্তপ্রকারং দেহীতি ভক্তিশ্বভাবেনৈর প্রার্থয়তে বাণীতি। তর পাদরোগ্রণানাং ভক্তবাৎসল্যাদীনাং সৌন্দর্যাদীনাঞ্চ অম নিরন্তরং কথন এব নতু যোগ যাগাদি নির্নপণে নোংশ্বাকং বাণী বাগিক্রিয়মন্ত্র। পাদরোরিতি ভক্তা। নতু তন্মাত্রবিক্ষয়। শ্রবণাবিতি বিবচনেন শ্রবণেক্রিয়ন্ত সাকল্যেন প্রবৃত্তিরভিপ্রেতা। এবম-ক্রেংপি কথায়ামিত্যেরাপি শুণকথায়ামিত্যের পূর্ব্বেশ্বরন্তার্জ্বভ্রমং। কর্মন্ত্র পরিচর্য্যালকণের। চলকং সর্বৈরেবান্তে। শির ইতি তত্র প্রাধান্তাং অবশিষ্টপ্রাক্ত। তত্র নিবাসো বসভিস্থানং জগদনত তত্ত সন্বোধনং। তবেতি পুনন্ধক্তি র্জগরিবাসতয়া জগৎ প্রণামেন ছৎ প্রণামে সিদ্ধেন্থপি তদেকদৃষ্ট্যপেক্ষরা। যথা তব নিবাসভূতা যে ক্লগতো জলমরূপাং শ্রীবৈষ্ণব রূপা স্তেবাং প্রণামে শিরন্ত তন্তোভ্রম বিক্ষমানমেৎ ইত্যুক্তে:। যথা তব নিবাসোহন্ধ যো বন্ধ শুত্রম্থত ক্রগতঃ সর্বস্ত দূরতোহপি প্রণামে। দৃষ্টিশ্বকুরিন্তিয়ং ভবন্তম্নির্বিশেষাণাং সতাং শ্রীনার্দাদীনাং যথা সন্তাং শ্রীবৈষ্ণবানাং ভবন্তন্নাং চ অর্চার্মপাণাঞ্চ দর্শনে সাক্ষাৎ ত্বন্ধনিহিত্তি গৃহেশ্বসন্তবং ভ্রমদিনা ন প্রার্থিতং এবং স্পর্ণাদিকমুপ্লক্ষয়। ৩৩ ॥

গোকুলেখর: প্রহসন্ গুছকাবাহ গুছকাবিতি। তয়োভাদৃশপূর্কাবস্থং প্রচয়িতা ভাগ্যাতিশয়ং দর্শয়তি প্রহাদে হতুঃ স্বয়ং ভগবান্ তাভ্যামপীথং ভগবদ্বেনৈব কীঠিতঃ দামা চোল্পলে বদ্ধ ইতি। প্রথমত স্তাবদৃদ্ধ শুতাপি দামা তত্তাপ্যল্পল ইত্যর্থ:। স্বতো

ক্রমসন্দর্জ:।

তব নিবাসোহয়ং যো ত্রন্ধ স্তত্তবসূস্য জগতঃ সর্ব্ধস্য দ্রতোহপি প্রণামে ॥৩৩॥

ইখমিতি দামেত্যাদি প্রহাদে কারণং গোকুলেখর ইতি শীলার্থপ্রত্যয়েন তন্নামা চ নিত্য তাদৃশলীলবং দর্শরতি ॥ 28॥

প্রীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

তদম্চর কিন্ধরখাদেবাবয়েবিরাধ্বাৎসল্যাতিশয়মালক্যানৈ্য দ্বিভিমপীদং প্রাথিয়িতুমুৎসহাবহে ইত্যভিব্যঞ্জয়ভাবাহতু: বাণীতি।
অত্রৈক এব চকার এবার্থক: প্রতিসপ্তমান্তঃ বোজা:। তেন তব গুণামুকথন এব বাণী ভবতু ন ছন্যক্থায়মিত্যেবং সর্ব্বে ব্যাধ্যেরং
নঃ আবয়ো মানখ্দীয় পাদয়ো: স্বত্যাং। নিবাসভূতানাং জগতাং জঙ্গমানাং নারদাদি ভক্তানাং প্রণামে শিরোহন্ত। হে নিবাস
জগদিতি সম্বোধনপদং বা। ভবত্তনুনাং জয়ুর্তিরপাণাং॥ ৩৩॥

সন্ধীর্ত্তিতঃ সংস্ততঃ দান্না চকারাৎ প্রেন্না চ বন্ধ: । প্রহুসন্নিতি প্রহাসেহেরমেতে উপদেবাদরে মন্মায়ন্না বন্ধা: স্বন্দোচনার্থং যং মাং স্তবস্থি

প্রতিষর প্রাথিক দর্শনে তৎপর হউক । ৩০ ।

শুকদেব কহিংলন হে রাজন্। গোকুলেশ্বর ভগবান্ প্রাকৃষ্ণ এই প্রকারে স্তত হইয়া উদুখলে বন্ধ থাকিবাও হাসিতে ২ সেই তুই গুহুকের প্রতি নিম্নলিথিত বাক্য প্রয়োগ করিলেন।। ৩৪।।

292

ত্রীভগবামুবাচ॥

জ্ঞাতৃং মম পুরিবৈতদ্ধিণা করুণাত্মনা। যচ্ছীমদান্ধয়ো র্বাপ্তি বিজ্ঞংশো হসুগ্রহঃ কুতং ॥ ৩৫ সাধুনাং সমচিতানাং স্থতরাং মহকৃতাত্মনাং। দর্শনামো ভবেষদ্ধঃ পুংসো হক্ষোঃ সবিতু র্যথা॥৩৬

श्रीभद्रश्राभी।

বাগ্ভি ন ছন্যো জ্বতো জোব্যানিত্যাদিঃ শ্রীবিভংশরপো হ্রগ্রহঃ ক্বত ইভি ॥ ৩৫ ॥

যুক্তমেবৈতৎ ইত্যাহ সাধুনামিতি। সাধুনাং স্বধর্মবর্জিনাং সমচিত্তানাং আত্মবিদাং স্থতরাং মংক্কতাত্মনাং ম্যাপিতচিত্তানাং তেখাং কুপাতিবেকাৎ স্থতরামিত্যুক্তং। ক্লবিতু দুর্শিনদিক্ষো র্যথা বন্ধো ন ভবেত্তছং ॥ ৩৬ ॥

বৈষ্ণবতোষণী।

ভয়েনৈবৈতৌ ন সহত ইত্যভিপ্রেত্য স্বয়নেব হসতি স্বেতি ভাব: ৷ গোকুলেখরো ভগরানিতি গোকুলেখনশীলথালোক্লেখন-নানায়নস্বাকং ভগগানেবং প্রিয়লনপ্রেমবঞ্চতয়া গোকুলে নিত্যকৌতুকণীল ইভি গোকুলঞ্চেমং প্রমবিলক্ষণং জানীহীতি চ ব্যক্ষয়তি ॥ ৩৪ ॥

এত নাম জ্ঞাতমেবেতি অভাগা মহদপরাধির মমেদৃশ কুপাত্পেযোগাং। যথা ঋষেরাসীদত্রহাদিতি তয়োককাা প্রীতঃ সন্
তামের দ্রুদ্ন ত্রোঃ প্রহর্ষার্থ মন্মাদতেতি। কুকুণাত্মনা দ্রাশীলেন কুকুণাত্মতামেবাই খ্রীমনান্ধ্রেরপাত্মপ্রহঃ কুত ইতি। অভাইতঃ।
যথা জ্ঞাতাং নৈবং যথা পুনরিত্যাদি বছলবরপ্রদানমন্ত্রীভি ব্যিত্ভিঃ। কুণ্ডুতঃ বিগতো ভংশো হধঃপাতো মহাপরাধকতো মহানরকাদিরপো যক্ষাং॥ ৩৫॥

সাধনামিতি তৈবঁ গাখাতনেব তত্ত্ব পূর্ববার্যথাবধা যথ কি ঞ্চিন্ধ হারিছঃ স্মৃতরামিতানেন ব্যক্তিছে। যথা সাধনামিতি কুপালুতায়াং সমচিত্রানামিতাপরাধাগ্রহণে মৎকৃতাত্মনামিতাশু স্বাভাবিক গুণব্যঞ্জকঃ বিশেষণধ্যং। তেষাং দর্শনাদ্পি পুংগো জীবমাত্রসা স্তরাং সংসারবন্ধা ন ভবেৎ কিং পুন স্তালুশবহুলবালক প্রয়োগাঞ্চাহাং ভবতো রবজ্ঞাত্তাদেব তদপেক্ষা জাতেতি ভাবঃ। স্তরামিতি প্রবণকীর্ত্তনাদিনাপি ন ভবেৎ দর্শনান্ত স্থতরামিতি জ্ঞাপকং। সক্ষোর্বন্ধ স্তমঃ কৃতঃ। স্বাভ চ দর্শনাদিতি স্থতরামিতি প্রক্রা তৎ পূর্বব্যেছিপি তল্পাশাং॥ ও৬॥

ক্রম্পন্দর্ভ:।

বিগতো ভংশো ৰশ্বাং ॥৩৫॥

সমচিক্তানামিতি অপরাধাগ্রহণে সাধ্নামিত্যকুগ্রহে বিশেষণং ॥৩৬।৩৭।৩৮॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্ত্তী।

সোহয়ং বশোদাদিগোপীতি দামা প্রেয়া চ বজো হতীক্ষং তং দিতঃ বেহেন গোকুলে তিঠামি। অত্যতানাং তাদাং তংগনেনাহং যথা প্রীয়ে ন তথানয়োঃ স্তত্যেতি ব্যক্তমতি ॥ ৩৪ ॥

বাগ্ভি ন' ছন্যো জ্বতো জোব্যানিত্যাদিভিঃ শ্ৰীবিভ্ৰংশব্ধপো ২ছ্যাছ এব ক্বত ইতি ॥ ৩৫ ।

নম্ব তং দৃষ্ট্বাপ্যসন্মানয়তো রাবরো শুদ্মপ্রহ: কথং সম্ভবেত্তত্তাহ সাধ্নামিতি। সমচিত্তানাং স্থমানাপ্যানাম্প্রতাং ক্তরান্মতিশ্যেন মধ্যের ক্বত আত্মা মনো বৈশ্বেষাং। দর্শনাক্তঃ দর্শনপর্যান্ত এব বহা দর্শনোলো নালো বস্য সং সবিত্ব পূর্ণনাদক্ষের ব্রুপ্র অমংক্তাে বথা নশ্যতি তথৈব নানাপরাধ্যনীমস্যানসানাম প্রাণাং প্রানারদাদিদর্শনাদপি ন ব্রুক্ষ ইতি বিজ্ঞাপিতং॥ ৩৬॥

ভগবান কহিলেন অহে গুহুকদ্বয় ! করুণাময়, দেব্যি তোমাদিগকে শ্রীমদান্ধ দেখিয়া তোমাদের প্রতি বাক্যদারা শ্রীজংশরূপ যে অনুগ্রহ সে বিষয় অগ্রেই আমার পরিজ্ঞাত হয়।। এ৫।।

যে সকল ব্যক্তি দাধু অর্থাৎ অধন্মবন্তী এবং সক্ত্রে সমচিত ও আত্মন্ত হতরাং তাঁহাদিগের চিত আমাতেই অর্পিত থাকে, সূর্য্যদর্শনে যেমন চক্ষুর বন্ধন হয় না তাহার ন্যায়, আমার দর্শনে তাঁহাদি- গের বন্ধন হয় না ।। ৩৬।।

তদ্পচ্ছতং মৎ পরয়ো নলকুবর সাদনং। সংজাতো ময়ি ভাৰো বামীপ্সিতঃ পরমো হভবঃ॥ ৩৭
ঞ্জিত উবাচ ॥

ইত্যুক্তো তং পরিক্রম্য প্রণম্য চ পুনঃ পুনঃ। বদ্ধোল্থলমামন্ত্র্য জগ্মতু দি শমুত্রাং॥ ৩৮॥
॥ *॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংদ্যাং সংহিতায়াং বৈয়াদিক্যাং দশমস্কৃদ্ধে যমলার্চ্জুনভঞ্জনং নাম দশমোহধ্যায়ঃ ॥ *॥

औरत्रवामी।

প্রাধান্যাদেকস্যৈর সংবাধনং হে নলকুবর যুবাং তৎ তত্ত্বাৎ সাদনং সদনং নিকেতনং মৎপর্মৌ সস্তে গছতেং। যুবরোরপেক্ষিতো-মরি থেমা জাত এব। অন্তবো ন ভবো যত্মাদিতি সঃ॥ ৩৭॥

বজোলৃথলং বন্ধমুদুখলং যশ্মিন্ তং ॥ ৩৮ ॥

॥ । इंडि ननंत्र नन्तः॥ ॥ ॥

देवस्ववद्यासनी।

ৰং প্রমৌ মানকান্তিনৌ সন্থো যতঃ সংজ্ঞাত ইতি। অন্তত্তৈঃ। বহা যুবরোম রি ভাবঃ প্রেমা প্রীনাকদান্তগ্রহাৎ সম্পৃঞ্জাত এব ষতঃ প্রমো ভবোহভূদ্যঃ মদেক ভক্তি লক্ষণো বাণী গুণান্ত্বখনে ইত্যাদিনা যুবাভ্যামীপ্রিডঃ। এবং প্রনারদান্তগ্রহসম্বন্ধন নিজ্মভোষাতিশ্যব্যঞ্জনাং। তদতিশরোহপি স্থাদিতি ব্যক্তিতং। সহজ্ঞবিন্যাদিগুণামৃতপ্রোনিধিশ্বাৎ সাক্ষাভূ নোক্তমিতি জ্ঞেরং ॥ ৩৭ ॥

• পুনর্বদোল্থলমিতি শ্রীশুকদেবক্ত কৌতৃকোজি:। যন্তরা বছন্তা দেবা অপি বাবস্কি বদন্ত ইতি। তথা তাদৃশভক্তবশ্যতাময়মধুরলীলাদিদৃষ্ট্যা মুহ: পরিক্রমাদিহেতৃক্ত অত্ত বহুত্রীহিণা নির্দেশ উল্পলক্ত ভদমুগতিবিবক্ষরা সাচ বন্ধনীয়বন্ধনাশ্রয়বৈপরীত্যমরতল্পীলাকোতৃক ব্যক্তিকেতি। উল্পল্মাত্রবিশেষণং নতৃপলক্ষণং। তত তামা অপি প্রণামাদিকং কৃতমিতি জ্বেরং। তথাক্তং
পালে। নমন্তেংক দায়ে ক্রেনীপ্রিধামে। ইতি আমন্ত্রণঞ্চ ভক্তেয়তি॥ ৩৮॥

u * u ইতি শ্রীবৈষ্ণবতোষণ্যাং দশমটিপ্লকাং দশম: u * u

' ক্রমসন্দর্ভ:।

॥ • ॥ केलि प्रमास क्रमनमार्ख प्रमार ॥ • ॥

ঐবিধনাপচক্রবত্তী।

প্রাধান্যাদেকং সংবোধ্যাত তে নলকুবর অত্নেব পরনঃ সেব্যো ব্যোগ্রথা ভূতৌ সস্তো । সাদনং সদনং ন ভবঃ সংসারো বভঃ সঃ ॥ ৩৭ উন্পূৰ্ণে বৃদ্ধং বদ্ধোল্পলং । আহিতাল্যাদিঃ ॥ ৩৮ ॥

॥ ቀ ॥ ইতি সারার্থদর্শিন্যাং হর্ষিণ্যাং ভক্তচেত্রসাং। 🛮 দশ্যে দশ্যোহধ্যার: সক্তঃ সঞ্চঃ সতাং ॥ 🗢 ॥

অতএব হে নলকুবর, তোমরা আপনার সদনে গমন কর, আমার প্রতি তোমাদের পরম প্রীতি উৎপন্ন হইয়াছে, ভাহাতে তোমাদের সংসার সম্ভাবনা নাই।। ৩৭।।

শুকদেব কহিলেন রাজন ! সেই ছুই শুহুক এই প্রকার উক্ত হুইয়া সেই ভগবান্কে প্রদক্ষিণ ও পুনঃ ২ প্রণাম করিলেন, পরে উদুধলে বদ্ধ সেই ভগবান্কে সম্ভাষণ করিয়া উত্তরদিকে যাত্রা করি-লেন।। ৩৮।।

॥ *॥ इंडि मन्दर मन्य ॥ *॥

वामब्राव्यशिक्षकां ॥

গোপা নন্দাদয়: প্রুছা ক্রময়োঃ পততো রবং। তত্তাজ্বায়ুঃ কুরুপ্রেষ্ঠ নির্বাতভয়শঙ্কিতাঃ।।১।।
ভূমৌ নিপতিতো তত্ত্ব দদৃশু র্যমলার্চ্ছনো। বত্ত্রমু স্তদ্বিজ্ঞায় লক্ষ্যং পতনকারণং॥ ২॥
উল্পলং বিকর্বস্তং দাল্লা বদ্ধং স্ববালকং। কদ্যেদং কুত আশ্চর্য্যমূৎপাত ইতি কাতরাঃ॥ ৩॥

विधवचामी।

একাদশে সমাগত্য বুক্লাবনমধা উকৈ:। বংশান্ পালয়তা তেন হতৌ বংশবকাম্রে।। •॥

নিৰ্যাতো বন্ধপাত ইতি ভৱেন শৃক্কিতা:॥ >॥

লক্যাং প্রভাক্তঃ প্রভো গভমপি পতনকারণমবিজ্ঞার বভ্রমুং॥ ২ ॥

লক্ষ্যং কারণং দর্শরতি উল্পলমিতি। ভ্রমপ্রকারমাহ কল্যেদং রাক্ষ্সাদেং কর্ম্ম কুতো বা কারণাৎ অহো আশ্চর্যামুৎপাত ইতি

বৈষ্ণবতোষণী।

ভত্রালশুরিতি তত্রাগ্যুনার ফ্রতং প্রতমুরিত্যর্থ:। নির্থাতো নিরপ্রগর্জিতমুৎপাতবিশেষ: ভরং দৈতাবিভাজাভাগে সন্দির্ধাঃ
ভত্তো বৃদ্ধিতি ভাগেব নিকট হানাই প্রলেখগ্যাদীনাং প্রথমত আগমনং ন লাভমিতি জ্লেরং। হে কুকপ্রেট ইতি প্রীনন্দাদিত্রাসাবেশেন
স্বোধনং ততো রক্ষণার্থমিব ॥ ১ ॥
•

क्यामिठाक्कः निष्ठताः **উन्नान**ना पिता पित्रको प्रमुखं प्रतिपिष्ठि त्यसः।

বলমুরিতি দার্থকং উল্থলমিত্যাদিলকণং পতনকারণং লকাং লক্ষিতুং শক্ষমণি তদবিজ্ঞার দ্রন্থৰাৎ সংলাজ্বাৎ পতিত বৃক্ষ-শাধাদিব্যবহিত্যাল্য ততা বিতমনমূভ্র বলমুঃ দলিদিহা তদমূভবে তু সতি প্রথমং তদনিষ্টাশঙ্কাবিষ্টা: হ্য ন তু তর্থপাতহেত্ভিজ্ঞানরেতি। তদ্য তত্তেত্বে জ্ঞাতে সতি ভিজ্ঞানাপরা ন স্থারিতি চ ভাবঃ ॥ ২ ॥ পুনশ্চ নিক্টে সমাগত্যাপি শাধাব্যবহিতং তমদৃষ্ঠা কল্ডেদমিত্যাগ্যক্তা কাতরা বভূবুঃ। ইদমাশ্বর্যং কদ্য কেন ক্রতমিত্যর্থঃ। তথাচ বিবৃতং তথাক্যং প্রীহরিবংশে। কেনেমৌ

ক্রমসম্বর্ভ:।

উচ্রিত্যাদিনকণং পতনকারণং। সক্ষাং লক্রিছুং শক্যমণি তদবিজ্ঞার দ্রস্থদাৎ সল্লাভ্ডাৎ পতিতবৃক্ষণাধাব্যবহিতথাচ ভবস্থিতমনমূভ্র বভ্রমুং সংদিদিতঃ ॥ > ॥ ২ ॥

প্নশ্চ নিকটে সমাগত্যাপি শাখাদিব্যবহিতং তমগৃট্ব। কস্যেদ্মিত্যাছ্যজ্ব কাতরা বভূব্:। ইদমাশ্চর্য্যং ক্যা কেন শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

थकानत्म इत्त्र त्मिकः कनळव्यकथानिकः। वृत्तावनाभ्रत्मा वश्यावनः वश्यवकाननः ॥ > ॥ २ ॥

ঙৎ তরোঃ পতনকারণং বাৰকং ৰক্ষ্যং ৰক্ষয়িতুং শক্ষমণি অবিজ্ঞার প্রেরা তাদৃশবোগাতাকত্বনাসস্থাব্য বত্রমুঃ। ত্রমমেবাহ কস্যেদং কর্ম কুতো হেতোওত্বালাকর্ত্যমেতহুৎপাত ইঙি নিশ্চিত্য কাতরাঃ। ভাগ্যেন বিধাঝা বালঃ ক্লেমা রক্ষিত ইতি ব্যাকুলা বভূব্: ॥৩॥

একাদশ অধ্যারে রন্দাবনে বালকগণ সহ বৎসপালন করিতে করিতে ঞীকৃষ্ণ কর্তৃক বৎসাহ্মর ও বকাহার বধ বর্ণন ॥ ॰ ॥

ভবদেব কহিলেন হে কুরুঞ্জেষ্ঠ ! নন্দাদি গোপগণ সেই ছুই ব্লের পতন শব্দ ভনিয়া বক্তপাত ভবে শক্তিত হওত সম্বর সেই স্থানে আসিলেন ॥ ১॥

শাসিবামাত্র দৃষ্ট হইল যমলার্জ্ব ভূতলে পড়িয়া রহিয়াছে। ঐ ছুই রক্ষের পতনকারণ সম্প্র উপস্থিত থাকিলেও তাঁহারা জানিতে পারিলেন না, স্থতরাং ভাস্ত হইয়া রহিলেন ॥ ২ ॥

হে রাজন ! যমলার্জন পতনের প্রত্যক্ষ কারণ নন্দের নিজ নন্দন তিনি যে উদ্ধলে রক্ত্রক ছিলেন সেই উদ্ধল ঐ স্থানেই আকর্ষণ করিতেছেন, কিন্তু নন্দাদির সে দিকে মনোযোগ হইল না, কোন রাক্ষ্যাদির এ কর্ম ! কি কারণে হইল, এ কি আশ্রুধ্য উৎপাত এই প্রকার কহিতে কহিতে সকলে বংপরো নাক্তি কাতর হইলেন ॥ ৩ ॥

বালা উচুরনেনেতি তিরশ্চীশমূল্থলং। বিকর্ষতা মধ্যগেন পুরুষাবপ্যচক্ষহি॥৪॥
নতে তত্তুকং জগৃহু র্নঘটেতেতি তস্ততং। বালস্তোৎপাটনং তর্কোঃ কেচিৎ দল্দিশ্বচেতদঃ॥৫
উলুথলং বিকর্ষস্তং দাল্লা বন্ধং স্বমাস্থকং। বিলোক্য নন্দঃ প্রহুসদদনো বিমুমোচ হ॥৬॥

विश्ववामी।

কাতরা ভীতাঃ সস্তো বভ্রমুরিত্যর্থঃ ॥ ৩॥

মধ্যগেন বৃক্ষয়ো ম'ধ্যগতেন ন কেবলমেতাবদ্ বৃক্ষাভ্যাং বিনিৰ্গতো দিবেটা পুক্ষাবপ্যচন্দ্ৰহি দৃষ্টবস্তো ৰয়মিতি ॥ ৪ ॥ কেবলং তাৰ্কিকা ন অগৃহঃ অন্যে তু সন্দিগ্ধচিন্তা বভূবুঃ ॥ ৫ ॥ ভগবন্ধায়ামোহিত্যা নন্দ্যাচিব্লিতমাহ উল্পলমিতি ॥ ৬ ॥

বৈষ্ণবতোষণী।

পাতিতৌ বৃক্ষো ৰোষস্যায়তনোপমো । বিনা ৰাজং বিনা বৰ্ষং বিছাৎ প্ৰপত্তনং বিনা । বিনা হস্তিক্বতং দোষং কেনেমো পতিতো জ্মাবিতি ॥ ৩ ॥

ততশ্চ ব্যবহিতং তং দর্শয়িত্বা বালা: স্বয়মূচ্: তত্তাত্ত রনেনেতি সংল্রান্তত্বেন পূর্ণবচনাশক্তেরুৎপশটিতমিতি তু নোচু:। কীল্শেন সতা উৎপাটিত মিত্যপেক্ষায়ামূচ্: তির্য্যগ্গত মূল্থল মিত্যাদি। এবামমোহস্ত শ্রীদামোদর মাধুর্ঘাবেশেনেতি গম্যতে॥ ৪॥

ন অগৃহ: শ্রীনন্দাদর: মমতার্দ্রচিত্তবাৎ কেচিৎ পূতনাদিনাশাল্ল ব্যাপ্তিনা তর্কেণ কিঞ্চিৎ কর্ক শারমানচিত্তা বিপ্রা অপি স্বাভাবিক মমতার্দ্রবিদ সন্দির্ঘটেতস এব বভূব:। তত্লচাগন্তকেনাশ্চর্য্যকরেণ তৎপ্রভাবজ্ঞানেন তেবামপি স্বাভাবিক লেহর্ছিরের জাতা লবণাকরস্য রসান্তরেণাপি লবণরসর্ভিবদিতি ভাব:। তব্ তঞ্চ লেহভরেণাতিবলস্বল্যৈব .মননাং। সন্দেহ নিরাসার্থং সাক্ষাভ্যমেব তে কিল ন প্রপচ্ছুরিতি বোজব্যং কিয়া লেহভরাকুলতরা প্রশ্নেহণ্যশক্ষে:॥ ৫॥

শ্রীনন্দস্য বাৎসল্য প্রাবল্যমাহ উল্থলমিতি। উল্থলমিত্যাদেঃ পুনরুক্তি বিশেষতঃ শ্রীনন্দস্য তথোলুখলাকর্ষণেন প্রস্বাস্থ্যভদলা-ক্তমিত্যর্থ: ॥ ৩ ॥

ক্ষমসন্দর্জ:।

তত্ত্বত ব্যবহিতং তং দর্শস্থিতা বালাঃ শ্বয়মূচ্য। কিম্চুন্তত্তাহ রনেনেতি সম্লান্তত্বেন পূর্ণব্চনাশক্তেরুৎপাটিতমিতি জু নোচুঃ ॥ ৪ ॥ তেরু পর্মবাৎসল্য শ্বভাবা ন জগৃহঃ ॥ ৫ ॥

শ্ৰীত্ৰজেশ্বরদ্য প্রম্বাৎসল্য চেষ্টামাহ উল্থলমিতি। বিলোক্যেতি সাক্ষপ্রতাক্ষবিশেষেণ দৃষ্টে তার্থ:। প্রহ্মদ্বদন ইতি বালস্য

জীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

অনেন ক্লফেন বৃক্ষো ম'ধ্যগতেন তির্যাগ্গতমূদ্থলং ঐবিকর্ষজেত্যেতনাত্তং বালা উচু:। স্বস্তান্তব্দেন পূর্ণবচনাশক্তেরেতাব্ৎপাটি-তাবিতি তু নোচু:। অবিশ্বসভন্তান্ পুনক্ষচু:। বৃক্ষাভ্যাং নির্গতৌ ছৌ পুক্ষবাবপ্যচন্দ্রহি দৃষ্টবস্তো বৃদ্ধনিতি ॥ ৪ ॥

তে নন্দাদয়:। তিমামতার্ক্রচিত্তছাৎ তৎপ্রভাবানমূসন্ধানাৎ তত্তকং বালোক্তং ন জগৃহ:। কেচিদন্যে তু নারায়ণসমোগুণৈ-রিতি গর্গোক্তিম্বত্যা স্বাভাবিক প্রেমোদ্যেন চ সন্দিধ্যেত্তস এব বভূবুং॥ ৫ ॥

বিলোক্য বিশেষেণাক্ষপ্রত্যক্ষং নির্বাধং দৃষ্ট্র। প্রহস্বদন ইতি মৎক্রোড়াদপি বস্যাঃ ক্রোড়ং স্বমতিপ্রিয়ং মন্যসে সা জজননী স্বাম-

গোপ সকলকে ব্যাকুল দেখিয়া তত্ত্ৰন্থ বালকেরা কহিতে লাগিল, ইনি (জ্রিক্ষ) এই ছুইটা বক্ষের মধ্যণত হইয়া তিরশ্দীন (বক্র) করিয়া ঐ উদুখলটা আকর্ষণ করিয়াছিলেন, আমরা দেখিলাম তাহাতেই ঐ ছুইটা বৃক্ষ উপজিয়া পড়িয়া গেল, আমরা কেবল এই মাত্র দেখিয়াছি এমত নহে ঐ ছুই তরু হুইতে ছুই জন দিব্য পুরুষ নির্গত হুইয়াছিলেন, তাহাদিগকেও দেখিয়াছি॥৪॥

কিন্তু সেই সকল গোপবালকদের ঐ উল্পি আছ করিলেন না বরং পরস্পার তর্ক করত কহিতে লাগিলেন, বালকের এরণ প্রকাণ্ড তব্রুছয় উৎপাটন সম্ভব হয় না, পরস্ত জন্য কতিপর পোপবালকদের ঐ কথায় সন্ধিয় চিত্ত হইলেন । ৫।।

তুদনস্তর, ভগবন্দায়ায় মোহিত নন্দ রক্ষুবন্ধ নিজপুত্তকে উদুধল আকর্ষণ করিতে দেখিয়া হাস্য-

গোপীভিঃ স্তোভিতো হনৃত্যম্ভগবান্ বালবৎ কচিৎ। উদগায়তি কচিমুগ্ধ স্তম্বশো দারুযন্ত্রবং॥৭ বিভর্ত্তি কচিদাঞ্চপ্তঃ পীঠকোমানপাত্নকং। বাহুক্ষেপঞ্চ কুরুতে স্বানাঞ্চ প্রীতিমাবহন্।

श्रीधत्रवामी।

জ্ঞান্যন্তি মামিতি শহ্বমানোহতীৰ বাল্যমন্ত্ৰরোতি শ্ব তদাহ গোপীভিরিতি। তোভিতঃ করতালাদিনা প্রোৎসাহিতঃ ॥ ৭ ॥ ইদমানয়েত্যাক্সপ্তঃ আনেতুমসমর্থ ইব বিভর্তি কেবলং পীঠাদি বাহক্ষেপং করচালনঞ্চ তিদাঞ্চেতি চকারস্যাহয়ঃ। তৎ ঐশ্বর্যং

বৈষ্ণবতোষণী।

ধিক্যাদ্যস্থানাৎ প্রহর্ষেধনার্থং। তথাপি বিলোক্য ইতি সাক্ষপ্রত্যক্ষং বিশেষেণ দৃষ্ট্র ইত্যর্থং। বন্ধস্য ভীতস্য বালস্যোক্ষাসনার্থণ প্রহুস্থলনঃ সন্ প্রহুস্থলনিক্তি বিতীয়ান্তপাঠো বা। তথাচ শ্রীবিষ্ণুপ্রবে। নবোলগতারদন্তাকে সিত্হাসঞ্চ বালক্ষিতি। তস্য প্রকট হাসন্চ পিতৃতোহিপি শঙ্কানস্য তৎপ্রসাদদর্শনেন সপুনঃ পিতৃসন্তোষার্থ নিজ্ভয়ত্বঃখাভাববোধনায় চ জাতঃ। বিশেষত উল্পলাদারন্দ মুমোচ। বিতীয়বন্ধনায় উল্পলগতস্য প্রথমমোচনীয়ন্থাৎ। হ হর্ষে। এবং শ্রীয়বেশাদায়া বন্ধনক্ষমতাবন্ধোচন ক্ষমতরা শ্রীনন্দ-স্যাপি তাদৃশত্বং দর্শিতং। অত্য চ বন্ধনদায়াং বাহল্যং তৈঃ প্রেমাবেশেনের ন সন্তালিত্মিতি জ্বেয়ং॥ ৬॥

ন কেবলমসৌ পরমন্নিয়ায়া মাতু: পিতৃলৈবং প্রেমবশতামাপরো হপি ঘন্যানাং গোপীনামপীতি দর্শয়নতি প্রাক্তনবাল্যচরিতমাহ গোপীভিরিতি ছাভ্যাং প্রায়ো লরতীভি:। ভগবানখিলৈবর্ষ্য সম্পলোহপি বালবং জন্যো বালো যথা তছদিতি তংগ্রেমরসবশবাল্যলীলাভিনিবেশেন নিজেবর্ষ্য বিশ্বতিঃ স্হচিতা। বালক ইতি পাঠে বাল্যলীলাছরপমেব তদিতি ভাবঃ। কচিদিত্যস্য মুয়্মইত্যনেনাপ্যয়য়ঃ। অতিবালকদ্বেন নৃত্যাদিকং কিঞ্চিদজানন্ কচিমুয়ভাবমপি দর্শয়তীত্যর্থঃ। যথা নৃত্যাদৌ সর্ক্তি সর্ক্থা
মনোরম ইত্যর্থঃ। তথা নৃত্যাদৌ হেতু দ্বিশ্বত্বং স্ক্রসঞ্চারাদি শিল্পতো নৃত্যাদিপরা পুলিকা তছত্বালাং বলঃ অধীনঃ॥ १॥

বাহক্ষেপং ভূজৌ মূহরুত্থাপ্য পরাক্রমদর্শনং ন কেবলং তত্র তাদামেব স্থবং জাতং অপিতৃ গোপমাত্রাণামিত্যাহ স্বানাং জাতীনাং

ক্রমসম্বর্ড:।

ভীতদ্য ভরহানার্থং প্রহস্ত্বদন্মের হৃদ্য দঃ। অন্তন্ত স্বয়মপুষ্টির ইত্যর্থ:। বিতীয়ান্তঃ পাঠো বা তদ্য তেজস্থিত স্থভাবাদের ॥৬॥ অন্যাদামপ্রি গোপীনাং তন্মিন্ প্রেমবশ্যতাং দর্শরন্ প্রাচীনবাল্যলীলামাহ গোপীভিরিতি ছাভ্যাং ॥ ৭॥

ি বাহুক্ষেপং ভূজৌ মুহুরুখাপ্য পরাক্রম দর্শনং তত্ত্র সর্ক্ষেবাং গোপানামপ্যানক্ষমুদাহরতি। স্বানাং জাতীনাং গোপজাতীনামি-তার্থ:। অতএব যে কৈচিছ্দ্ধ ভূত্য আসন্ তেষামপি বশ্যত্যেতার্থ:॥

🔊 বিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

ল্লাপরাধেনৈব বগ্নাতি স্ম তত্ত্বামহং কথং মোচনামীত্যুপালম্ভন দ্যোতকঃ প্রহাসঃ। স্বং মার্যরৈব জীবানাং বন্ধমোক্ষো যথা ব্যধাঃ। তথা স্বংপিতরো তৌ তে প্রভোঃ প্রেইন্নব চক্রতুঃ॥ ৬॥

পিত্রোন্তরো: সৌভাগ্যমহিমা কেন বক্তু: শক্যন্তদীয় ব্রহ্মবাসিমাত্রস্যাপ্যতিমাত্রবশ্যে ব্রহ্মদিবশীকর্তাপি কৃষ্ণ ইত্যাহ সার্হ্ব-ত্রয়োদশভি:। স্তোভিত: যদি নৃত্যসি তদা তৃত্যং ধণ্ডসভ্তু কং দাস্যামীতি প্রোৎসাহিত:। বালবং যথান্য: প্রাক্তাতা বালন্তর্দে-বেত্যর্থ:। মুখ্যবাদাং প্রের্ক্তিব নিজৈশব্যানস্থসন্ধানাং। দাস্বত্তং প্রত্রেশ্যেত প্রতিকা॥ ৭॥

পীঠকেতি। কির্দস্য বলমভূদিতি জিজ্ঞাস্থভিঃ প্রথমং হে ক্লফ পাছকা মানরেতি ততত্ততোহুধিকভার ম্মান মানরেতি ততত্ততো-

वम्रान जाँदात वक्षन त्यांचन कतिया मिरलन ॥ ७ ॥

হে রাজন্ ! পশ্চাৎ আমাকে জানিতে পারে এই আশকায় ভগবান্ এক্স অতিশয় বাল্যের অনুকরণ করিয়াছিলেন, বালরূপী ভগবান্ কখন ২ গোপীদিগের করতালি বারা প্রোৎসাহিত হইয়া নৃত্য করিতেন কখন বা মুশ্ধ হইয়া ভাঁছাদের বশবন্তী দারুযন্তের ন্যায় উচ্চৈঃস্বরে গীত গাইতেন।। ৭।।

কৰন " ঐ দেব্যটা লইয়া আইস" এইরূপ আন্তপ্ত হইয়া আনয়নে যেন সামর্থ্য নাই এবম্বিধ ভাব প্রকাশ করত কৈবল পীঠ ও পাছুকা ধরিয়া থাকিতেন, আর আপনি যে ভ্তাগণের বশ্য, ইহু নিজ্ দর্শরং স্তিবৃদাং লোকে আত্মনো ভ্তাবশ্যতাং ॥ ৮ ॥ ব্রজস্যোবাহ বৈ হর্ষং ভগবান্ বালচেষ্টিতৈঃ। ক্রীণীহি ভোঃ ফলানীতি শ্রুতা সম্বরমৃচ্যতঃ। ফলার্থী ধান্তমাদার যথো সর্বফলপ্রদঃ। ফলবিক্রয়িণী তম্ম চ্যুতধান্তকরম্বরং।

विभवताती।

বিদন্তি যে তেষাং ॥ ৮ ॥

এবং ব্ৰহ্মগাহতি। রন্ধং বৃন্ধাবনং গ্ৰুমন্তঃকৃত্তেন বন্ধিতাঃ। স্বতন্ত্ৰা ইব নন্দাদ্যা মন্ত্ৰমেত্ৰমন্ত্ৰন্থ ৯ ছ বৈষ্ণবতোষণী।

অবিলেবেণ তাসাং গোপজাতীনামিত্যর্থ:। স্থানাঞ্চ প্রীতিমাবহমিতি পাঠন্তেবাং সম্মতঃ। তিছিদাঞ্চেতি চকার্দ্যাব্য ইতি ব্যাধ্যানাং। আহুসঙ্গিকং প্রবাজনমাহ দর্শর্মিতি। তদৈবর্য্যমেব বিদন্তি নতু ভূত্যবশ্যতাং বে তান্ সাক্ষাছোধ্যন্নিত্যর্থ:। অত্র ভূত্যশস্তদৈব্য্যমার দর্শিনাং ভাবাত্মবাদেন স্থানামিতি তু প্রীভগবতঃ॥ ৮॥

অন্যাভিরপীদৃশীভ ব'ল্যলীলাভি প্র' ধ্বনানাং সংক্ষারপ্যানলং সদাকরোদিত্যাই ব্রহ্মস্যতি। বৈ প্রসিদ্ধং। পুনরোৎস্ক্যাভিশবেন তানাং কিঞ্চিদাই ক্রীণীংতি নার্দ্দভিঃ। বদ্যপ্যেতে শ্লোকাতৈ নাদ্তান্তথাপি পুত্তকের দৃশ্যমানদাভিচ্ছুকেন ভূ কিঞ্চিদাথাভিত্যাও তবাদিভিক্ত ধ্বতদাসমন্থাক ব্যাখ্যারত্যে। অত্র বহুত্র নানাপঠিছে নানাক্রমতে সত্যপি গৌড়াদিদেশীরসংসভাদার দ্ট্যা ক্রমপাঠবিশেবৌ প্রিরেতে। তত্র স্থানাং প্রীভিদাভূতং কিং বর্ণনীরং অহা তদদ্রবাসসন্থন্ধন প্রিলম্বাতীনামপীত্যাই দ্বাতাং। ক্রীণীহি ভোঃ ফ্লানীতি শ্রুত্বা সম্প্রস্থাতঃ। ফ্লার্থী ধান্যমাদার থবা সর্বাক্রপ্রান্ত পরিপূর্ণবর্ষার্থীছি কলমাত্রার্থী সর্বাক্রপ্রান্ত মধ্যাবিলাং প্রস্তানালি বিচারিতবানিতি বাল্যলীলাবেশে দর্শিতঃ। তত্র ধান্যাদানং প্রত্তমাত্রপ্রাত্রপাবেশারে তি দ্বাতিশবোঁ দর্শিতঃ। ততঃ কিং বৃত্তমিতি সক্রোত্রপাবিলাং প্রত্তমাত্রপাবিলাং প্রত্তমাত্রপাবিলাং প্রত্তমাত্রপাবিলাং প্রত্তমাত্রপাবিলাং প্রত্তমাত্রপাবিলাং প্রত্তমাত্রপাবিলাং ক্রাত্রান্ত দ্বাতিশবোঁ দর্শিতঃ। ততঃ কিং বৃত্তমিতি স্বাক্রাত্রা ক্রাত্রান্ত বালানার প্রাত্তমিন ক্রাত্রান্ত ক্রাত্রান্ত ক্রাত্রান্ত কর্মান্ত বিদ্বান্ত কর্মান্ত বিদ্বান্ত বিদ্বা

ক্রমসন্দর্ভ:।

আর্দসিকং প্রয়েজনমাহ দর্শার্রিতি ॥ ৮ ॥ ন কেবলং গোপজাতীনামের প্রীতিমুদাবহদিত্যাহ ব্রহ্মেতি। তথাসিনং সর্বসৈয়েব। অব্র ক্রীনীহীত্যাদয়ং ক্লোকা বহুবিধা বর্ত্তরে॥ » ॥

बीविश्वनाथहळ्कवर्सी ।

২প্যধিকভারং পীঠকমানয়েত্যাজ্ঞপ্ত আদিষ্টপ্তত্তদানয়ন বিভর্তি স্বমূহ্**ল জঠরোপরীত্যর্থঃ। বাহুক্লেপং তত্র তত্ত্ব কর্মণি ভূজৌ মূহ্রপাপ্য** ব্রপরাক্রমদর্শনাৎ স্থানাং জ্ঞাতীনাং ॥ ৮ ॥

ন কেবলং জ্ঞাতীনামেব অপি তু সর্কেষামেব ব্রহ্মবাসিনাং প্রীতিপ্রদাে বশ্যতাদিত্যাহ দর্শরন্ধিত তবিদাং তদৈখব্যবিকান্ বন্ধাদী-নিতি নৈতদমুকরণতেন ব্যাখ্যেয়ং ॥

তেখতিনীচানাং পুলিন্দজাতীনামপি প্রীতিপ্রদ ইত্যাহ ক্রীণীহীতি: অচ্যতঃ পরিপূর্ণোহপি ফ্লমাত্রার্থী সর্বাহ্নপাহিলি খররা পুরতঃস্থিতধানামাত্রপ্রাপ্তে ধর্মিটালায় ক্ষোনায় ক্ষোন্ধ

নচ তাৰ্মাত্রমপি ধান্যং ত্যা প্রাপ্তমিত্যাহ চ্যুতেতি। অভ্যন্তরাত্বর্যা বহিনির্গদে বস্ত্র ন্যেব সর্বধান্যানি প্রতিতানি ভত্ত বিত্রমাত্র ধান্যযুক্তে কেবলাঞ্চলাবেব নীয়তামিত্যুক্ত। ফলপাত্রে ন্যক্তে ফলবিক্রমিণাপ্যমূত্রভেবেই ফ্লেং দীবাদিভি: সইর্করেবাপ্রয়ৎ

ঐশ্বর্য্য পরিজ্ঞাতা লোকদিগের দেখাইবার নিমিত্ত আত্মীয় জনগণের প্রীতি উৎপাদন করত কেবল করচালনা করিতেন।। ৮।।

বস্ততঃ ভগবান্ আপনার বহুবিধ বাল্যচেষ্টাবার। সমুদায় ব্র**জের হ্র উৎপাদন করিরাছিলেন।** হে রাজন্ ! একদা কোন একটা পুলিন্দজাতি স্ত্রী "ফল কিনিবে গো"বলিয়া চীৎকার করিলে ভগবান্ হরি, যুিনি স্বয়ং সমস্ত ফল প্রদান করেন, ফলার্থী হইয়া ধান্য গ্রহণ পূর্বক তাহার নিকট গমন করিলেন।

ফলৈরপ্রয়দ্রছৈ: ফলভাগুনপ্রি চ। সরিতীরং গতং কৃষ্ণং ভগ্নাৰ্ছনমপান্তরং ।
নোপেয়াতাং যদাহুতো ক্রীড়াসঙ্গেন পুত্রকো। যশোদাং প্রেষয়ামান রোহিণী পুত্রবৎসলা।
ক্রীড়স্তং সা হৃতং বালৈরতিবেলং সহাগ্রন্থং। যশোদাকোহবীধীকা পুত্রস্থের তুত্তনী।
কৃষ্ণ কৃষ্ণারবিন্দাক তাত এহি স্তনং পিব। অলং বিহারে: ক্র্ডাস্তস্তবান্ ভোকে মহ তি।

বৈষ্ণবতোৰণী।

শরমকলপ্রান্তিরপি তস্যাক্ত হচিতা। অব প্রীয়লোদারাঃ প্রিরোহিণীতোহিপি প্রীরামেহিপি বশীকারি বাংসল্যাতিশরং দর্শরিত্ব প্রীয়লোদরা প্রম্বাংসল্যেন নিজাং ক্রিয়নাগং প্রলালনাদিকমুদ্দিশন্ দামোদর লীলারাঃ ক্রমপ্রান্তং দিনৈকক্বতামিত্যাই সরিদিত্যাদিনা। উদয়মিত্যুক্তেন সরিস্তীল্লগতং ক্রুক্ষং ভয়ার্জন মথান্তর্যই । ভয়ো অর্জুনো বেন তমান্তর্যদিতি বাংসল্যেন তদহুসন্ধানাদারীঃ
শঙ্কা দর্শিতা। ক্রন্তং ক্রীড়াবিষ্টিচিন্তং । ক্রাথেতি কার্থ ন্যে সর্বর্ত্তর্য নামভিরিত্যর্থঃ । রোহিণী তভোদনসাধনাত্যাসকরা প্রিবশোদ
দরৈব প্রেবিত্তি ক্রেয়ং । তথা প্রক্রিক্সান্তানেন রামান্ত্রানমপূর্ত্য উত্তরাপ্রেরেন । তত্প নোপেরাতাং বদাহুতে ক্রীড়াবদেন
প্রকেই । মনোদাং প্রেবরামান রোহিণী প্রবংসলা । এবমাহুতাবিপ বনোদাং প্রেবরামানেত্যুভ্রত্রাণি তদ্যা এব বাংসল্যাধিক্যাহভবেন শীল্পলাক্র্বণসামর্থ্যানির্পরাং । কিমর্থং তত্রাহ প্ররোর্থসেলা । সরিস্তীরে নানোপত্রবশন্ত্রাণ তরোঃ দপনভোলনেচ্ছরাচেতি ভাবঃ । ক্রন্তক ক্রীড়ন্তং বা ক্রন্তং বালৈ রভিবেনং সহাগ্রন্তর । যালোদালোহবীনীন্য প্রেরেহন্ত্তনী । অন্তোহবীৎ প্রপ্ররাদ্হাব নিকট গমনে পলারনশন্তর । কৃষ্ণ ক্রন্তারিক্রাক্ষ তাত এহি স্তনং পিব । অলং বিহারেঃ ক্র্ড্রান্তর্ত্তবান ভোলমুন্রান্ত্রার ক্রিজ্রাং অনংহিত্রা পাঠাকে । ভরেহপি কারণে সভি বং ক্র্ড্রান্ত ইত্যেনাক্রং তত্তা সালনং স্বেধনং শীলাগমনান্ন
অসন্ধিঃ প্রত প্রকৃতিত্বাং অনংহিতরা পাঠাকে । ভরেহপি কারণে সভি বং ক্র্ড্রান্ত ইত্যেবাক্তং তত্ত্বা মন্ত্রাত্র বাদ্বানেন্যতি ইত্যাশরেন প্রিরামমান্তরতি হে; রামাগক্ত তাতাত সাহ্লঃ ক্র্লনন্তনা ।
প্রাতরের ক্রতাহারঃ ক্রীড়ালাবোহিনি প্রক । বতঃ কুলনন্ত্রমিত্যাদিনা ক্রক্ষ্যা শীলাগমনার্থীর্বাং লনরতি । সংবাধনপাঠেহপি স

बिविधनाथहळ्कवर्खी ।

ফলেষু তস্য জাতলোভদেন ভোকেছণি অংকরভন্তরে তলীয়বৈভবশক্তে: সাহায্যাৎ। ততশ্চ রদ্রৈরিতি তদীয় সর্ক্ষণপঞ্জল শক্তা তংগ্রেমপর্যাক্তা সক্ষেব সম্পত্তিরভূদিতি জেয়ং ॥

রোহিণ্যা: সকাশাদপি শ্রীযশোদারামতিবাৎসন্যবত্যাং রামক্কশাবতিলেহ্বশাবিতি, দর্শরন্ বমলার্ক্নভঙ্গনিন এব লীলান্তরমাহ সরিজীরে থেলনার্বং গতং ক্কশং রাম্ক উত্তর্বাক্যান্তরোধাৎ তত্তোজনসাধনাসক্তরা শ্রীবশোদরা প্রেবিতা বোহিণীতি কর্তৃপদং ক্ষেরং ॥

বশোদাং প্রেবল্লমাসেতি তস্যা এবাধিকবাৎসন্যবক্রাক্তদ্বাকর্ষণসামর্থানির্বরাৎ ॥

আলোহবীৎ পুন: পুনরাজ্হাব নিক্ট গমনে পলায়নশক্ষেতি দ্রত এবেতি ভাব: ॥

কৃষ্ণ কুষ্ণেতি বীন্দা দূরতঃ প্রবণার:

শ্রীকৃত্তের কর্ষয় হইতে ধান্য গলিয়া পড়িতেছিল, ফলবিক্রণী তাঁহার কর্ষয় ফলে পূর্ণ করিয়া দিল এবং তদিনিময়ে রত্নমারা আপনার ফলভাও পূর্ণ করিল।

হে রাজন্! অর্জন রুক্ষ ভগ্ন হইলে পর এক দিন প্রাক্ষ এবং রাম যমুনাতীরে গমনপূর্বক বালকগণ সহ জীড়া করিতেছিলেন, সেই সময় জননী রোহিণী শুনাপানার্থ তাঁহাদিগকে ভাকিতে লাগিলেন। রামকৃষ্ণ ছই জনই জীড়াসকতা হেড়ু আছুত হইয়াও যথন আসিলেন না, তথন পুত্রবংসলা রোহিণী উাহাদিগকে আনয়ন কবিবার নিমিত যশোদাকে পাঠাইয়া দিলেন। উর্জাদকে দৃষ্টি করাতে যশোদার নয়নগোচর হইল অগ্রক্ত সহ নিজ আত্মজ ব্রজবালকদিগের সঙ্গে খেলা করিতেছেন। সেহ বশতঃ শুনুহু ইতে লাগিলে। অত্প্রব দূর হইতে ভাকিতে লাগিলেন হে কৃষ্ণ! হৈ অরবি বিদ্যাক। 'হে বংস'! শুনু আইস, শুন পান কর, আর খেলায় কাম নাই, কুরায় প্রাপ্ত হইয়াছ, চল, প্রথন ভোজন করিতে যোগ্য হও। পরে রামকে সংঘধিয়া বলিতে লাগিলেন হে রাম!

হে রামাগচ্ছ তাতাশু সামুক্তঃ কুলনন্দন । প্রাতরেব কৃতাহারঃ ক্রীড়াপ্রান্ডোহসি পুত্রক।
প্রতীক্ষতে ত্বাং দাশার্হ ভোক্ষ্যমাণো ব্রজাধিপঃ। এহাবয়োঃ প্রিয়ং ধেহি স্বগৃহান্ যাত বালকাঃ।
ধূলীধূষরিতাঙ্গস্তং তাত মক্জনমাবহ। জন্মক্রং তেহদ্য ভবতি বিপ্রেভ্যো দেহি গাঃ শুচিঃ।
পশ্য পশ্য বয়স্যাংস্তে মাতৃষ্ঠস্বলক্ষতান্। ত্বঞ্জ স্নাতঃ কৃতাহারো বিহরস্থ স্বলক্ষতঃ।
ইত্থং যশোদা তমশেষশেথরং মতা স্থতং স্নেহ নিবদ্ধধী নুপি।

বৈঞ্চৰতোষণী।

এবার্থ:। হে প্রক্তে তিলিয়পি পুত্রবং মেহাং অমুকন্পায়াং কন্। কিঞ্চ প্রতীক্ষতে ছাং দাশাহ ভাক্ষামাণোরজাধিপ:। এহাব্রো প্রায় ধেহি স্বপূহান্ যাত বালকা:। হে দাশাহে তি মিত্রপুত্রত্বেন প্রমাপেক্ষাং ছাং বিনা ভস্য ভোজনমেব ন স্থাং ইতি ভাব:। আবেরো: সংখ্যাদ পিতোবার্ব জীড়াগলক্ষ্য শ্রীকৃষ্ণস্থা তমপি জীড়াভিনিবিষ্টং বীক্ষা জীড়নাছালকান্ধিরার্য়তি স্বেতি বীপায়া অভাবত্বরাবাক্যরাং। শ্রীকৃষ্ণশ্রীত্যা বালকানপি বিহারাদম্পরতো বীক্ষা মুবৈষ প্রয়োজনবিশেষক্ষ দর্শয়ন্ধী শ্রীকৃষ্ণশাব্রেত। ধূলীধ্বরিতাক্ষরং তাত মজ্জনমাবহ। জন্ম হৈ তেহদ্য ভবতি বিপ্রেভ্যা দেহি গাঃ ভটিঃ। মজ্জনং স্থানমাবহ বিধিবং কুল ইত্যর্থ: বিপ্রেভ্য ইত্যুৎপর্বৈতা তংসম্প্রদানকদানোংসাহ্বস্তং তম্মাস্থাতি যতন্তব জন্মক্রমন্য ভবতি ইতি পাঠে সদা বর্দ্মানস্যত্যর্থ:। তথাপ্যনাগছেত তদ্য তলৈবাগতানন্যান, বালান্ দর্শয়িত্যা মাৎসর্যাং জনয়তি। পদ্য পদ্য বয়স্যাংস্তে মাতৃমূইবলক্ষতান্। অঞ্চ স্বাতঃ কৃতাহারো বিহরত্ব স্বলক্ষতঃ। বীপা প্রেমা তজ্জেন কোপেন থেদেন বা। মাতৃভিম্ প্রিঃ স্বপনাদিনা
নির্মালীক্ষতাশ্চ তে পশ্চাৎ স্বর্চু অলক্ষ্তাশ্চেতি তথা তান্। উপসংহরতি ইথং যশোদা তমশেবশেবরং মন্ধা স্বতং সেহনিবন্ধধী রূপ।
হত্তে গৃহীত্ব। সহ রামমচ্যতং নীত্বা স্ববাটং কৃতবত্যথাদেয়ঃ। ইথং সলালনোক্তি পূর্কক শনৈর্গমন প্রকারেণ। অশেব্যা চূড়ামণিনিব
শিবোধার্যাপি স্বতং নত্বা মহন্ততা হয়মিত্যয়ভূয়। অতএব স্বেহন নিতরাং বদ্ধা বন্ধীকৃতা ধী র্যস্যাঃ সা। অতএব জীড়স্তমপি হত্তে
গৃহীত্ব। অচ্যত্মিত্যপলায়নাদ্যভিপ্রায়েণ। স্ববাটং নিজগৃহস্থানং। উদয়ং স্বপনভোজনালন্ধারাদি মঙ্গলং। স্ব প্রতিজ্ঞাত্যযা
তদাগ্রহাজ্যস্থা ব্যাগ্যাভ্যাদেশীকৈ বা অথানস্বরং সদ্য এবেতার্থ:। কাৎ স্বোন বা। হে নূপেতি তত্র তস্য সেহোদ্য দর্শনান্তমেব

শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

ভোক্ষামাণ ইতি মুবাং বিনা ভোকুমশক্তবন্ধং তং স্থপিতরং কিং কুধ্যা পীড়য়দীতি ভাবঃ। স্থগ্হান্ যাতেতি যুম্মাতাপিত-বোহপি বয়মিব ক্লিশান্তি তান্ স্থয়েতি ভাবঃ। বস্তুতন্ত ক্লীড়াবিচ্ছেদ এব তাংপ্যাং॥

তদপানাগান্তং ক্রীড়োৎসাহাদিরাময়িতৃং দানোৎসাহমুৎপাদয়তি বিপ্রেভা ইতি ॥

তদৈবাগতানন্যান্ বালান্ দর্মীয়া মাৎস্থ্যং জনমতি পশ্যেতি॥

তং অশেষদ্য শেখরং চ্ডামণিং স্বতং মরা নহদেষদেশ্বরং মবেত্যর্থ: স তু অশেষদেশর: স্বতক্ষ ভণতীত্যর্থ: । যথা তং স্বতং অশে হৈ তাত ! তুমি কুলপ্রদীপ অনুজসহ শীন্ত আগমন কর । কথন প্রাত্তংকালীন আহার করিয়া আদি-য়াছ,হে পুত্র ! দেখিতেছি তোমরা থেলায় প্রান্ত হইয়াছ,হে দাশার্হ ! (রাম !) ব্রজপতি নন্দ ভোজন করিতে বিদিয়া তোমাদের প্রতীক্ষা করিতেছেন । আই স আমাদের প্রিয় করিবে চল । পরে অন্যান্য বালকদিগের প্রতি কহিলেন, অরে ! তোরা সব আপন আপন ঘরে যা । তদনন্তর পুনরায় আপনার বালককে বলিতে লাগিলেন বৎস ! ধূলিবারা তোমার সকল অঙ্গ ধ্ররিত হইয়াছে, স্থান করিবে চল, বৎস ! অদ্য তোমার জন্ম নক্ষত্র, শুচি হইয়া ব্রাহ্মণদিগকে গোদান করিতে হইবে । বৎস ! দেখ দেখি তোমার ঐ সকল বয়স্য বালকগণ স্ব স্থ জননীকর্জ্ক কেমন মার্কিতশরীর ও সন্দর্রয়পৌ অলক্ষত্র হইয়াছে, তুমিও চল, স্নান করিয়া আহারের পর অলক্ষতশরীরে আদিবে, আসিয়া প্নরায় থেলা করিণ্ণ ৷ হে রাজন্! যশোদা সেহবশে বজবৃদ্ধি হইয়া ঐ প্রকারে স্থীয় কুলের চূড়ামণি ডগবন্দি প্রিক্ষকে আপনার তেনয় বোধ করিয়া রাম সহ তদীয় হস্তে ধারণ করিলেন, পরে নিজ নিকে- হত্তে গৃহীত্বা সহ রামমচ্যতং নীষা স্ববাটং কৃতবত্যথোদয়ং ॥ ৯ ॥
বিগাপর্দ্ধা মহোৎপাতানসূভ্য বৃহ্দনে । নন্দাদয়ঃ সমাগম্য অঞ্চকার্যমন্ত্রয়ন্ ।
তব্রোপনন্দো নামাহ গোপো জ্ঞানবয়োহধিকঃ । দেশকালার্থতত্ত্তঃ প্রিয়কুদ্রামকৃষ্ণয়োঃ ।
উত্থাতব্যমিতোহস্মাভির্গোকুলয়্য হিতৈষিভিঃ । আয়াস্ত্যক্ত মহোৎপাতা বালানাং নাশহেতবঃ ।

औधत्रवामी ।

ব্ৰজকাৰ্য্যং গোকুল্য্য হিতং কৃত্যং ॥ >•॥

देवंकवरजावनी।

নৃন্পালয়সীতি সলালনং সম্বোধনং॥ ১॥

ষাভাবিকেন তংপ্রেমা প্রেরিতা গোপপুলবাঃ। হর্ষ্যেকমললাহার্য্যং ব্রহ্ণার্য্য মমন্ত্রমন্। যমলার্ক্রনভঁলেক্র্যাগুমাপনানন্তরং সমাগম্য আস্থান্যাং মিলিয়া ব্রহ্ণার্য্য ব্রহ্পাণ্য প্রীক্ষম্য হিতাহসন্ধানাং। তত্র তের্ অর্থং প্রয়োজনং দেশাদীনাং ব্রহ্ণান্তিক্র মাগম্য আস্থান্যাং মিলিতানাক্র ব্রহ্ণ উত্তমমধ্যমাদিয়্য তন্ত্র উত্ত জ্ঞানিক্যং বিশেষিতং। ব্য় আধিক্যারামসাম্যাচ্চ প্রীনন্দ্রাল্যাসে নদ্ধী জ্লোচ্চাতা চেতি গম্যতে। এবং তাদুশোক্রে যোগাতোক্রা। কিন্ধু রামক্র্যরোঃ প্রিয়ন্ত্রং প্রকৃত্যের প্রেমা হিতক্রা। অতো মহোংপাতাহ্যভবেন ক্রিরামক্র্যরোরনিইশক্ষেরাহেত্যর্থ:। অত্র জ্যেষ্ঠ কনিচ্ছা নাম বৈপরীত্য সম্ভবেহপি স্বর্যত এব পূর্ব্যং জ্যেচ্ছা উপনন্দ ইতি নাম কৃতং। উপ সমীপে নন্দয়তীতি পশ্চান্তত্ত্ব যুগ্মছেন কনিষ্ঠায় নন্দেতি কৃতং তৎ পিত্চরণৈ তচ্চ তন্তারত্মা সংবাদিদ্বাদিব্যটিত্যের। তথা স্বর্ধ লক্ষণ সম্পর্যাদের তথ্য কনিষ্ঠায় অপি প্রমপ্রান্ত্রে জ্যেত্বিনির স্বের্যার গ্রের্যার্যার গ্রুব্যনিত্যর্থ:। কৃতঃ গোকুল্যা তত্ত্ত্যানাং সর্ক্রেয়াং হিতৈবিভিরিতি বালানামিতি চ সামান্যোক্তিঃ শ্রীনন্দ্র্যাস্থাদের চনার্থং প্রক্রানামিতি পাঠা ক্রিং। ব্রহ্ণানামিতি সামান্যেক্তিঃ শ্রুক্র ইতি ব্রিভিঃ রাক্ষ্যাদি শব্দেন স্বর্গাধান্ত্রাহ্যাপ্র ক্রেয়া সংবাদিদ্রান্ত মুক্ত ইতি ব্রিভিঃ রাক্ষ্যাদি শব্দেন স্বর্গানাপ্রতিকার্য্যাহং দর্শিতং। বালক ইত্যনেন তেন ত্র্যাং অতঃ কর্থাঞ্চনিতি সাক্ষাং কারণাদর্শনাৎ কেনাপ্যনির্বনির কারণেনেত্যর্থং। ছি প্রসিদ্ধৌ সর্বেথামেবাহ্যভ্রাং। ক্র্যান্তিহনোক্রেন নির্দ্ধান্ত্রেনা ক্রির্যাতি হ্রেরিতি। নৃনং নিশ্চয়ে। ১০॥

ত্রীবিশনাথচক্রবর্ত্তী।

ষদ্য অকুলদ্য শেখরং মন্বা অবাটং নিজন্থানং উদয়ং অপনভোজনালন্ধানি মঙ্গশং ॥ ১ ॥
মহাবনে বিহুট তাবং বিজিহীধা যদাজনি । বৃন্ধাবনে হরেন্তহে বৌপনন্দী ররাজ গীঃ॥
উপনন্দো নন্দরাজন্য জ্যোঠো মন্ত্রীতিপ্রাঞ্চঃ॥

গোকুল্যা গোকুল্কাসিমাত্রস্য ॥ ১৫॥

তনে লইয়া আসিয়া কল্যাগ কর কর্ম সকল সম্পন্ন করিলেন॥৯॥

হে রাজন্! নন্দ প্রভৃতি প্রাচীন ২ গোপগণ রহদ্বনে বহু বহু উৎপাত অমুভব করিরা একদা সকলে একত্র মিলিত হইলেন এবং গোকুলের হিতার্থ মন্ত্রণা করিতে লাগিলেন। তাঁহাদের মধ্যে উপনন্দামা গোপ, জ্ঞান ও বয়সে সর্বাপেক্ষা অধিক তথা দেশ কাল ও অর্থের তত্ত্বজ্ঞ ছিলেন। তিনি রামক্বফের প্রিয় করিবার বাসনায় কহিতে লাগিলেন, যদি গোকুলের হিত করিতে ইচ্ছা হয় তাহা হইলে আমাদের এ ছান হইতে অন্যত্র গমন করা কর্তব্য, কারণ এখানে নিরন্তর বালকদিগের বিনাশ হেছু মহা ২ উৎপাত উপন্তিত হইতেছে। অমন্তর উৎপাত দেশাইয়া অমুতাপস্চনা প্র্কিক, কৌতুক বশতঃ স্বরং প্রীকৃষ্ণকে জোড়ে লইয়া কহিতে লাগিলেন, দেখা বালঘাতিনী প্তনা রাক্ষণীর হন্ত হইতে এই বালকটা কথিছে মুক্ত হইয়াছে। অপর ভগবান হরির অমুগ্রহ প্রযুক্ত ইহার উপরে দেই শকটটা পত্তিত হয় নাই । ১০॥

মুক্তঃ কথঞ্চিদ্রাহ্মণ্যা বালম্বা বালকো হসো। হরেরমুগ্রহান্ত্র মনশ্চোপরি নাপতং ॥ ১০ ॥ চক্রবাতেন নীতোহয়ং দৈত্যেন বিপদং বিরং। শিলায়াং পতিতন্তত্ত্ব পরিত্রাতঃ হ্রেম্বরৈঃ॥১১॥ বন্ন ত্রিয়েত ক্রন্ময়োরন্তরং প্রাপ্য বালকঃ। অসাবন্যতমো বাপি তত্ত্বাপ্যচ্যুতরক্ষণং ॥ ১২ ॥ যাবদৌৎপাতিকোহরিটো ব্রজং নাভিভবেদিতঃ। তাৰ্থালামুপাদায় যাস্যামো হন্যত্ত সামুগাঃ ॥১৩

व्यक्षित्रचामी।

বিপদং বীনাং পদং বিহারস্থানং বিয়ৎ আকাশং নীতঃ বিগতপ্রতিষ্ঠং বা ॥ ১১ ॥ অন্যতমো বা কশ্চিৰালঃ অচ্যতেনৈব রক্ষণমাসীৎ ॥ ১২ ॥ অরিষ্টোহনর্থ:। ইতঃ স্থানাৎ ॥ ১৩ ॥

বৈষ্ণবতোষণী।

দৈত্যেন নীতঃ তত্ত্র চ বিয়দাকাশং নীতঃ তত্ত্রাপি বিপদং। অন্যতৈঃ। তত্ত্ব বিগতপ্রতিষ্ঠমিতি অত্যুদ্ধ্ মিত্যর্থঃ। ক্রেরইরঃ অচ্যতপ্রেরিতৈত্তৎপার্ষদর্গৈরেবেত্যর্থঃ। তদপাচ্যত স্বকণ্মিত্যপি শক্ষাৎ॥ ১১॥

সাত্রগদসদমাহ বন্ধ ব্রিক্সেতেতি। ছঃথৈরেবালীলমপি প্রযুক্তমিদমিতি। তত্তাপীতি ভূদপীতি বা পাঠ: ॥ ১২ ॥

এবমসঙ্কৎ পরমেশ্রেণ রক্ষা ক্বডা তাদৃশঞ্চ কুতোহন্মাকং ভজনং বেন সদা ভেন সা কার্য্যা তন্মান্তদাদিইনীতিশাল্লামুসারাচ্চোৎ-পাত স্থানমেতদান্ত পরিত্যক্রমেব যুজ্যত ইত্যাহ যাবদিতি। ঔৎপাতিকঃ উৎপাতকঃ ব্রহ্মমিত্যাদিকং পুর্ববৎ শ্রীক্কাতিপ্রায়েশৈর॥১৩

ক্রমসন্দর্ভ:।

্ৰ্যাথ্যাতাক চিৎস্থেন। স্বাভাবিকেন তৎ প্ৰেমা প্ৰেরিতা গোপুলবাঃ। হর্ষ্যেক্মললা হার্য্যং ব্রুক্ষার্য্য মমন্ত্রন্ ইত্যাহ গোপেতি। ব্রুক্সাং ব্রুক্সাগ্রিক্সা হিতাল্সকানাৎ। প্রেরক্দিতি শীলে কিপ্॥

বালানাং ব্রজানানিতি পাঠষরেংশি সম্হনির্দেশে। ব্রজেশর শক্ষোচত এবাব্রে শ্রিক্টফেকনির্চ্চতরোদেশাং। কংঞ্চিত্রেন নির্দিষ্টং নির্দারে হবেরিতি। ১০॥ স্থ্রেশবৈরচ্যতপ্রেরিটভত্তৎপার্থদৈত্তত্তাপ্যচ্যুত রক্ষণমিত্যপি শক্ষাং। ১১॥ ১২॥ ব্রজং বালানিতি পূর্ববং শ্রীক্ষণাভিঞারেণ॥ ১৩॥

ঞীবিখনাথচক্রবৃতী।

চক্রবাতেন তৃণাবর্ত্তন বিরদাকাশং বিপংপ্রাপকস্বাহিপদং। স্ক্রেস্টরেঃ স্ক্রেস্টরেণ বিষ্ণুনা। বছস্বং গৌরবেণ। তত্তাপীত্যুত্তর বাক্যে অপিকারাং ॥ >> ॥

ज्याती क्रकः॥ ১२॥

পূর্ব্বমিন্নগরে বিষ্ণুকথাকীর্ত্তন দর্শন পরিচর্য্যাদিকং বছতরমাসীং। বাবরন্দস্য বালকো হরমভূত্তাবদান্থানাদ্র সর্ব্যাদ্যের কথাকীর্ত্তন দর্শনাদিকং প্রতীক্ষণং ভবত্যভন্তাদৃশং চ কুতোহশাকং সম্প্রতি তত্তলনং বেন সদা বিষ্ণুনৈব রক্ষা স্যাদতত্তদাদিইনীতিশাস্ত্রমবান্থশরণীয়মিত্যাহ বাবদিতি ॥ ২৩ ॥

অধিকস্ত,চক্রবায় (ঘূর্ণাবায়) রূপধারী দানব তৃণাবর্ত এই বালককে স্বীয় বেগে বিহঙ্গমগণের বিহার-স্থান আকাশে লইয়া গিয়াছিল,এই শিশু তথা হইতে শিলাতলে পতিত হ্ন্,কেবল স্থরেশ্বরগণ রক্ষা করিয়াছেন ॥ ১১ ॥

সহে গোপগণ! এই বালক এবং অন্য কোন একটা শিশু যমলাজ্বন নামক প্রকাণ্ড ত্রুইটা তক্তর মধ্যস্থলে থাকিয়াও যে মৃত্যুগ্রন্ত হয় নাই, তাহাতেও কেবল ভগবান্ অচ্যুত কর্তৃকই রক্ষা হইয়ছে বলিতে হইবেক ॥ ১২ ॥

অতএব, যাবৎ পর্যান্ত উৎপাত জন্য অনুয় কোন অক্লিন্ট আমাদের এজমণ্ডল অভিভব না করে, তাবপ আমরা বালক সকলকে লইয়া অমুজগণ সহ চল এ স্থান হইতে জন্যত্ত পমন করি॥ ১৩॥ বনং রন্দাবনং নাম পশব্যং নবকাননং। গোপগোপীগবাং সেব্যং পুণ্যাদ্রিভূণবীরুধং। তত্তত্তাদ্যৈৰ যাস্যামঃ শকটান্ যুঙ্কুমাচিরং। গোধনান্যগ্রতো যাস্ত ভবতাং যদি রোচতে॥১৪॥ শ্রীধ্রমামী।

পশব্যং পশুভো হিজং। নবানি কাননানি অৰান্তরাণি বিদ্যুত্তে ৰশ্মিন্। ১৪॥

देवक्षवरजायगी।

নস্থ না সৰীক্ষ্য পরং স্থানং পূর্ব্বমারতনং ত্যজেদিতি নীতি:। তত্রাহ বনমিতি। অন্তীতি শেষ:। বুলায়া: পায়কার্ত্তিকমাহাত্মারীতার প্রীভগবংপ্রেরণীয়ং প্রাপ্তারা বনমিতি সর্ব্বোহিত্যং সকলসকা পুনমন্ত্রক স্টিতং। তদেবাভিব্যপ্তরাতি পশব্য মিত্যাদিনা। আরোগ্যাদিপ্রদক্ষলত্পাদিশ্বাং পশুভো হিতুং। নবকাননমিতি বৃহহনস্য জীর্ণকাননম্বং স্চয়তি। তচ্চ চিরকালং গবাদিসম্মদ্চিদ্র্যমাননবাস্করাদিশ্বাং তথা বুলাবনস্য পূর্বব্রজ্বাসহুং স্চয়তি। হরোরনাদিকালত্বেংপি তিম্মিরত্বনির্দ্দেশন তছ্চিদ্রচরত্বাব্রমান। গোপাদীনাং সেবামিতি তত্র হুইজ্বাদ্যভরং দর্শিতং। পূণ্যা এবান্তর স্থাণা বীরুধক্ত যত্র। অদম্ভত্বমার্বং। হলস্তাহেতি টাপা বীরুধা শক্ষ এব বা। সর্ব্বমিপি যত্র পূণ্যমিত্যর্থঃ। পূণ্যদেন প্রসিদ্ধানানের তত্র স্থিতেঃ। কার্বরাদ্যপূণ্যবৃক্ষাদীনাং কচিং স্থিতে বা তক্ষ্মত্বেন পূণ্যহুলিদেরঃ। তত্র বিশেষঃ প্রহিরিবংলে প্রীরামং প্রতি কৃষ্ণবাক্যং। ক্ষরতে হি বনং রম্যং পর্ব্যাপ্তত্পসংস্তরং। নায়া বুলাবনং নাম স্বাহ্রক্ষফলোদকং। অঝিরি কন্টক্বনং সর্বৈশ্ব গিগণৈ যুত্য। কদম্পাদপপ্রায়ং যমুনাতীরসংস্কৃতং। নিগ্ধানিলবনং সর্বার্গ্বনির্দ্ধং শুভং। গোপীনাং স্থপকারং চাক্ষচিত্রবনান্তরং। তত্র গোবর্জনো নাম নাতিদ্রে গিরি র্মহান্। প্রান্ধতে দীর্থনিধরো নক্ষনস্যের সক্ষরঃ। মধ্যে চাস্য মহাশাথো ন্যগ্রোধো যো জনোচ্ছিতঃ। ভাণীরো নাম শুণ্ডতে নীল্মেই ইবাস্বরে। তত্র গোবর্জনকৈব ভাণীরঞ্চ বনম্পতিং। কালিলীঞ্চ নদীং রম্যাংক্রজ্যাবন্ধ যতঃ স্থমিতি॥

অত্র নাতিপুর ইতি নাতিপ্রান্তে নচ মধ্যে কিঞ্চ পার্ছদেশে এবেত্যর্থ:। অহা র্লাবনং রম্যং যত্র গোবর্ধনো গিরিরিতি স্কালাং। ক্রেত্রতি বিশ্বক্ষর্থং প্রতন্তর্বৈদ্যর বাজনীয়ন্তাচ। যত্র ভাতীরস্য মধ্যবিত্তব্যক্তং তারেদং প্রতিপদ্যতে। স থলু র্লাবনসীমন্বান্তক্তনীড়নকু ট্রমাছন্তরস্যাং যোজনব্যান্তে য্মাদক্ষিণতীরে সম্প্রতি চ ভাতীরত্রা লোকপ্রসিদ্ধোলানে ব্রুমপি শাল্রেণ প্রসাধরির্মাণন্তথা যোজনবিন্তার্বেরা প্রমাণ্যির্মাণন্ত প্রসিধ্যতীতি যোজনত্রে লক্তে তৎপরস্য যোজনব্যুস্য মিশ্রণত্তরা বৃল্লাবনস্য পঞ্চযোজনপ্রমিতত্বনের সিধ্যতি। তথাচোক্তং বৃল্লাবনমৃদ্দিশ্য শ্রীর্হলোত্সীয়ে প্রভিত্যতা। পঞ্চযোজনব্যাহিত্বং দিশিতং তং প্রীর্বিংশে চান্যত্র ব্যক্ত্যতা। সীমান্তবি কুর্মতীতি তস্যা বিশেষণেন। তদেবং হিতে ভাতীরস্য বিভারে চোচ্ছুরে চ যোজনপ্রমিতকেন যমুনাতীরহুন্তেন চ যমুনোত্তর তীরেহিলি দীর্ঘান্তিঃ শাখাভি ব্যাপ্তি ভ্যতে। ততঃ পরতোহিশি বৃল্লাবন্যেতি। যত্ত প্রাাদিত্বশীর্ষধ্যক্তিকা নদ্যক্রয়ং থগ মৃগা ইত্যক্তা। চ যোজনপঞ্চলদগ্যধিকং লক্তাতে। তৎ খলু সদমাবলোক্রির্ত্যক্তা চ তর্বাইহিত কতিপরগোচারণভূমেরপি তদন্তংপাতবিক্লয় গম্যং। যতএব পূর্ব্যীত্যা গোবর্ধনিদিশাপি যমুনামারভা র্লাবন্য গঙ্গাতীরস্য গলাভবং মার্ধব্যালনমাত্রবাাপ্তা গোবর্ধনিস্য তংপাত্তি বিক্রয় গামার বিভিত্তা যাদি বিভ্যাহায়িক কর্মোলনার বিভিত্তা যাদি বিভ্যাহায়িক কর্মানিকার কর্মানিকার কর্মানিকার কর্মানিকার বিভিত্তা হার্মিক কর্মানিকার বিভ্যাহায়িক কর্মানিকার ক্রামানিকার বিভ্যাহায়িক কর্মানিকার ক্রামানিকার ক্রামানিকার ক্রামানিকার বিভ্যাহায় হবৈতি তদেতক্মত এব থদিরক্রামানিনাং পৃথক্তং স্যান্নত্ত প্রান্থত ইতি জ্বেরং। তত্তমান্যদিয় যাস্যামঃ যামেত্যর্থ। হানস্যাস্য সোণ্ডেরথাৎ কালস্যাস্য চ শোভনজাদিতি ভাবং। বাতিরেকেণ স্ত্রান্ত মাচিরং অবিল্যন্মিকার্যভ্যির বিদ্যায়ায় যাস্থায় হান্তে ইতি বিন্তনে। ১৪॥

ক্রমসন্মর্ভ: ব

পুণালীতি। বৃন্দাবনদ্য মহাবিন্তীৰ্ণন্ধ বোধন্তি॥ ১৪॥ ১৫॥ ১৬॥ ১৭॥

बिविश्वनाथठळ वर्छी।

নচান্ধৎপ্রাচীনরাজধানী নন্দীধরো গঙ্কং শক্যঃ বভরান্নন্দীধরাৎ পলাধ্যাত্র মহাবনে বন্ধং অবসাম তস্যারিষ্টস্য সংপ্রত্যপি ভবৈত্রব ছিভেঃ। নচ ব্রজভূত্বর্ন্যত্ত বিহাসা সংভবেদ্নরোচকছাদেব তত্মান্নন্দীখনমহাবনসো মধ্যবর্ত্তি স্থানমেবাবাস্যুধ্ যুজ্যতে ইতি বিচার্ব্যাহ বনমিতি। পশব্যং পশুভো। হিতং নবানি কাননান্যবাস্তরাণি যত্র তৎ এ

তত্ত্বাং। তত্ত্ৰ বৃন্ধাবনে। ভৰতাং ভবস্তাঃ॥ ১৪॥

হে আত্গণ। রন্দাবননামক বন, পশুসকলের দ্বিতকর স্থান, তন্মধ্যে ভূরি ভূরি অবাস্তর নবীন বন এবং পবিত্র পবিত্র পর্বত, তথা প্রচুর তৃণ ও লতা আছে, অতএব সেই স্থল গোপ গোপী ও গোসকলের স্থসেব্য, চল অদ্যই সেথানে গমন করা হউক, শকট সকল যোজন করহ, আর বিলম্ব করা উচিত হয় বা, ভোষাদের যদি অভিক্ষতি হয় গোধন সকল অথেই পাঠাও॥ ১৪॥ তচ্ছু বৈকধিয়ে। গোপাঃ দাধু দাধিতি বাদিনঃ। ব্ৰজান্ স্বান্ স্বান্ সমাযুক্ত্য যয় রূত্পরিচ্ছদাঃ ॥১৫॥ বৃদ্ধান্ বালান্ স্ত্রিয়ো রাজন্ দর্বোপকরণানি চ। অনঃস্বারোপ্য গোপালা যন্তা আন্তশরাদনাঃ ॥ গোধনানি পুরস্কৃত্য শৃঙ্গাণ্যাপূর্য্য দর্বকিঃ। ভূর্যাঘোষেণ মহতা যয়ুঃ দহপুরোহিতাঃ ॥ ১৬ ॥ গোপ্যো রূত্রথা নৃত্বকৃত্তু কুম্মকান্তয়ঃ। কৃষ্ণলীলাং কণ্ডঃ প্রীতা নিক্কণ্ঠাঃ স্থবাদদঃ। তথা যশোদারোহিণ্যাবেকং শকটমান্থিতে। রেজভুঃ কৃষ্ণরামান্ত্যাং তৎকথাপ্রবণোৎস্থকে ॥১৭ বৃদ্ধাবনং দংপ্রবিশ্য দর্বকালস্থাবহং। তত্র চক্রু ব্রজাবাদং শকটেরর্দ্ধচন্দ্রবং।

ञीधवयामी।

একধিয়া বিপ্রতিপত্তিরহিতা:। ব্রজান্ শক্টব্যহান্ রুঢ়াং শক্টান্যারোপিতাং পরিচ্ছদা বৈক্তে ॥ ১৫ ॥ যক্তা: ক্তপ্রয়ন্তা: ॥ ১৬ ॥

ন্দ্র: কুচগতৈ: কুছুনৈ: কান্তি যাসাং তা:। নৃদ্ধেষু কুচেরু যৎ কুছুমং তেন কান্তি যাসামিতি বা॥ ১৭ ॥ এজাবাসং গোকুলবস্তিস্থানং॥ ১৮॥

বৈষ্ণবতোষণী।

এক স্মিন্ প্রীক্ষণ এব ধীর্যেধাং অতএব বিপ্রতিপত্তিরহিত্ধীত্বাৎ সাধিবত্যাদি ইতন্ততঃ স্থিতানেক ব্রহ্মবর্ত্তিগবাদীনেবাত্ত মেল-য়িতা রুঢ়াঃ শকটান্যারুঢ়াঃ পরিচ্ছদা যেষাং তে ॥ ১৫ ॥

রুচপরিচ্ছদত্বনেব বিরুণ্ন্ যানপ্রকারমাছ বৃদ্ধানিতি যুগ্মকেন। হে রাজন্নিতি তেষাং প্রীকৃষ্ণপ্রেমার্ডিং নিগমরতি ॥ ১৬ ॥ অত্রৈব বিশেষমাহ গোপ্য ইতি ছাভ্যাং। রুচা আরুচা রথান্তংপ্রায়াঃ শকটভেদা যাভিত্তাঃ নিদ্ধাণাং স্ত্রীভূষণের মুখ্যবাতৈরন্যান্যিলি জ্বোনি ন্রেত্যন্ত তেষাং প্রথমার্থন্ত সমীচিনঃ সর্কৈরেব ব্রজনীন ন্রেত্যন্ত তেষাং প্রথমার্থন্ত সমীচিনঃ সর্কৈরেব ব্রজনীন ন্তর্গ্রামান্য প্রশিক্ষাং। কৃষ্ণরামান্যাং সহ তয়াে র্জনক-কর্ত্কায়াঃ প্রবণােংস্কে তয়ােরেব কর্তৃভূতয়াের্কা॥ ১৭ ॥ সমিতি সম্যক্ স্থেন মার্গং দদৌ সিদ্ধার প্রস্থানত রিতিবং। কিছা মিথােবদ্ধারীকৃতমহাশক্ট বৃল্প রম্নান্তরগাদিপূর্ককং প্রবিশ্য উত্তরণস্থানন্ত যোক্তনামিতভাং কালিয়হদাহত্তরতাে জ্বেয়ং

শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

ব্ৰজান্ ব্ৰজবৰ্তিগৰাদীন্ একত্ৰ মেলয়িত্বা কাঢ়াঃ শকটান্যাকাঢ়াঃ পরিচ্ছদা যেখাং তে ॥ ১৫ ॥ যতা প্ৰয়েছবক্তঃ ॥ ১৬ ॥ একং শকটমিতি দ্যোৱেৰ পুত্ৰদ্যাবিৱহসহনাশক্তেঃ ॥ ১৭ ॥

হে কুরুনন্দন! উপনন্দের ঐ সকল কথা শুনিয়া গোপগণ কোন আপত্তি করিল না, সকলেই সাধুবাদ প্রদান করত স্ব স্ব শকট সমূহ যোজনপূর্বক ততুপরি পরিচ্ছদ সকল আরোপণ করিয়া গমন করিলেন॥ ১৫॥

হে রাজন্! সকল গোপই অতি প্রয়াছেল। বাল, র্জ, স্ত্রী তথা সম্দার গৃহ্খেপকরণ শকটোপরি আরোহণ করাইয়া ধসুর্ব্বাণ গ্রহণ করিয়াছিল। তাহারা গোধন সকল অত্রে করিয়া চারি দিক্
হইতে ভূগ্য ধ্বনি সহ শৃঙ্গবাদ্য করিতে করিতে পুরোহিত সঙ্গে করিয়া যাইতে লাগিল॥ ১৬॥

হে ভারত! গোপীগণ! রথারত হইয়া প্রীতচিত্তে কৃষ্ণলীলা গান ক্রিতে আরম্ভ করিরাছিল, কুচ মণ্ডলে অভিনব কৃষ্ণ বিলেপিত থাকাতে তদ্বারা তাহাদের কান্তি কমনীয় হইয়াছিল। অপর, তাহাদের কণ্ঠদেশে উৎকৃষ্ট নিক্ষ (কণ্ঠভূষণ) এবং পরিধান স্থানর বসন ছিল। তথা যশোদা ও রোহিণীও এক শকটে আরোহণ করিয়া ঐ রূপ দীপ্তি পাইয়াছিলেন, রামকৃষ্ণের কথা প্রবণার্ধ তাহাদের চিত্ত সর্ব্দাই উৎস্থাক হলা ॥ ১৭ ॥

टर नृथ ! वृग्णावन मर्व्यकात्म छ्यावर, त्रांभगन जन्मत्म थातम कविक्रा त्राक्रम वमि चान

রুন্দাবনং গোবর্দ্ধনং যমুনাপুলিনানি চ। বীক্যাসীছত্তমা প্রীতী রামমাধবয়ো মৃপ ॥ ১৮॥ এবং ত্রক্তোকসাং প্রীতিং ফছত্তো বালচেষ্টিছৈঃ। কলবাক্যৈঃ স্বকালেন বৎসপালো বস্থবডুঃ ॥১৯॥

श्रिश्रवामी।

~ স্বকালেন তান্যোগ্যকালেন॥১৯॥

বৈষ্ণবতোষণী।

দক্ষিণতো মথুরা নৈকট্যেন সম্ভট্যাপাতাং। অথবা কালিয়ন্ত্রদক্ষিণস্যাং দিশি বক্ষ্যমাণাৰ জবাসাম্মধুরার্ন্দাৰনং সন্ধি ব্ৰংখ-ক্রীড়নভক্তক্রীড়নয়ো মধ্যপ্রদেশ এব তৎ স্যাৎ মহাকাননত্বেন নির্জনত্বাৎ। অর্দ্ধচন্দ্রবদিতি পশ্চান্তাগে দ্রব্যাদিস্থাপনাপেক্ষয়া পুরত । প্রাণীনাং স্থানির্গমায় বিস্তীর্ণহারাপেক্ষা সদা সর্বত্ত তথৈবাবাদ সংনিবেশোপপত্তে:। তথাচ বিষ্ণুপুরাণে। স সমাবাদিত: সর্ব্বো ব্রজ্ঞো বৃন্দাবনে ততঃ। শক্টীবাট পর্যান্ত শক্ত্রাদ্ধাকার সংস্থিতিরিতি। এছিরিবংশে। নিবেশং বিপুলং চক্রে গবাঞ্চৈব হিতা-ষ্চ। শকটাবর্ত্ত পর্যান্তং চন্দ্রাক্ষাকার সংস্থিতমিতি। এবং তদিনে শকটেরেব চজুঃ। দিনান্তরেচ যথা প্রীহরিবংশেণ কণ্টকীভিঃ প্রবৃদ্ধাভি-ন্তথা ৰুণ্টকিতি ক্ৰ'মৈ:। নিথাতোচ্ছি তুশাথাতি রভিগুপ্তং সমস্তত ইতি। অত্ৰ কুণ্টকীতিঃ কুণ্টকুযুক্তাভিৰ্মন্ত্ৰীভিরিত্যর্থ:। আসাং ক্রমাণাঞ্চ জীবতামেব রোপণং 'জ্ঞেয়ং। শাধানাক্ত ছিল্লানাং তথান্যো বিশেষ স্তবৈত্রৰ মধ্যে যোজনবিস্তারং তাবাদ্বিগুণ মায়তং ইতি। তথা কালিয় হদ বর্ণনে ব্রজস্যোত্তরত শুস্য ক্রোশমাত্রে নিরাময়ে ইত্যাদি উত্তর শব্দোহত প্রায় ঈশানকোণবাচী তস্য দক্ষিণস্যাং দিশি মহাপুর্য্যা মধুরায়া নিবেশাৎ ঈশানকোণস্য চোত্তরাহুগতত্বাৎ । অতএবাদিবারাহেহপি তৎস্থানস্য মাহাত্ম্যং। উত্তরে হরিদেবদ্য দক্ষিণে কালিয়দ্য চ। অনয়োদেবয়োম ধ্যে মৃতাস্তে চাপুনর্ভবা ইতি অত হরিদেবো গোবর্ধনাধিষ্ঠাতা কালিয় কালিয नमन हेिंठ cक्कपुर। मथुताया नाजिन्तरञ्ज शीमर हानर निर्झनरमव शूर्यााः श्र•ठामिश् शृज्यार महायन वनकाक। **এবং का**नियहमशा নৈৰ্ধতি কোণে কোশান্তরে সদ্ধীকরাখ্যং প্রদেশমন্তর্ভাব্য দৈর্ঘ্যে যোজনদন্তং গ্রন্থ: স্যাৎ কিন্তু গোবর্জনমত্রে বিধান্নতি জ্ঞেসং। জন্যত্র হি ছারা যোগ্যত্বং দক্ষিণস্যাং মধুরাথ্যমহানগরবাসেন আগ্রেখ্যাং তেন ষমুনা চ। পূর্ব্বস্যাং যমুনায়া ঐশান্যাং কালিয়ছদেন গবাদি-প্রচারদ্য সংকীর্ণস্থাৎ উত্তরদ্যাং বায়ব্যাং পশ্চিম্ন্যাঞ্চ শীত বাতাদ্যাগ্মনেন ত্রংথহেতৃত্বাৎ। অদ্যাপি মধুরাদিদেশে **এশান্যা**দি-দিক্ চতুষ্টয়াদন্যতৈব গোঠবারনির্মাণদর্শনাচ্চ। অতো ন নঃ পুরো জনপদা ন গ্রামা ন গৃহা বয়ং। বনৌকসন্তাত নিতাং বন-শৈল নিবাসিন ইত্যক্তা পুরোধারাগ্রদেশহুত্বাৎ জ্রীগোর্বর্জনলৈয়ব পূজাবিধানং গম্যতে। তদেবং শ্রীনন্দরাক্ষ্য মুখ্যাবাদো নন্দীবর-গিরিমভিতো যঃ প্রদিদ্ধঃ স তু কালান্তরে জাত ইতি জ্ঞেয়ং। অতএব ইতন্ততো ব্রন্ধতীতি ব্রন্ধো নিক্ষচাতে। স্বতএব গোঠ নন্দনিলয়ে। বা গোরই ইতি লোক বিখ্যাত্য। গোর্চনন্দনিলয়গোকুলাখ্যানি স্থানাম্তরাণি চাত্রৈব বুন্দাবনে দৃশ্যন্তে ইতি দিক্। তচ্চ বৃন্দাবনং ভেদত্রয়াত্মকমেব জ্রীক্ষক্স্যাপি প্রমমনোহরমিত্যাহ বৃন্দেতি। বৃন্দাবনমিতি কেবলস্য সৌষ্ঠবং। গোবর্জনমিত্যা-দিনা তত্তত্য বিশেষাণাং। উত্তমেতি বৈকুষ্ঠাদ্যপেক্ষ্মা। অহো মধুপুরী ধন্যা বৈকুষ্ঠাচ্চ গরীয়দীতি প্রাপ্ততাদৃশমহাদ্ম্যমধুবন-মহাবনাদ্যপেক্ষয়া চ। অতএব মাধ্বশন্ধপ্রয়োগঃ। সর্কলোক্রমণ্হেতোরপি রাম্স্যেত্যেব কিং বক্তব্যং তদ্যাপ্যালম্বনর্পস্য সর্ব্বদশন্তিদেব্যাঃ পভূারপীত্যর্থঃ। এবমাশ্চর্য্যেণ প্রহর্ষেণ চাহ হে নুপেতি॥ ১৮॥

অত্র প্রীরহন্ত্রনলীলায়াং প্রসিদ্ধা বয়োযোগ্যতাদিনা চ ক্রমোহয়ং লক্ষ্যতে। প্রনাবধঃ শক্টভঞ্জনং নামকরণং রিশ্বণং অয়্বষ্ট-

ক্রমসন্দর্ভ:।

তত্ত্বেতি প্রীহরিবংশরীত্যা কালিয়হুদান্দক্ষিণপ্রারায়াং দিশি অষ্টকোশী দীর্ঘ: চতুংক্রোশী বিন্তীর্ণো ব্রজাবাদ ইতি ক্ষেরং॥ ১৮॥ কলবাক্যৈ ম নোহরভাষিত্তৈশ্চ॥ ১৯। ২০॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

অন্ধচক্রবদিতি পশ্চারাগে প্রতি বন্ধব্যস্থাপনার্থং অপ্রভাগে বিস্তীর্ণে গ্রাদিনাং স্থানির্গমার্থক। শক্টীবাটপর্যান্তশুক্রান্ধান কার সংস্থিতে ইতি বিক্ষুপ্রাণেচ এবং তদিনে শক্টেরেব চক্রুঃ। দীনান্তরেত্ যথা জ্বীহরিবংশে ক্টকীভিঃ প্রবৃদ্ধাভি তথা কণ্ট-কীভি ক্র'নিং। নিথাভোচ্ছি তথাথাভিরভিত্তথং সমন্তত ইতি ॥ ১৮॥

चकारमन रचां ठिजनभरवन ॥ >> ॥ २०॥

করিল। সেই স্থান ভূরি ভূরি শকটে অর্কচন্দ্রের তুল্য হইয়া রহিল। হে রাজন্ ! রন্দাবন, গোন-র্জন এবং যমুনাপুলিন অবলোকন করিয়া রাম ও ক্ষের পরম প্রীতি জ্মিল। ১৮॥.

ठाँशत्रां वामरहिष्ठ । मध्तरहनमात्रा जनवातिमारात्र वीष्ठि व्यमान कत्रिर्छ लागिरलन धरः

অবিদূরে অজ্পুবং সহ গোপালবালকৈ:। চারয়ামাসতু ব্বৎসান্ধানাক্রীডাপরিচ্ছদৌ ॥ ২০॥
क চিমাদয়তোবেণুং কেপণে: কিপতঃ কচিৎ। ক্লুচিৎপাদৈঃ কিঙ্কিণীভিঃ কচিৎ কুত্রিমগোর্থিঃ।
ব্যায়মাণে নর্দত্তী যুযুধাতে পরস্পরং॥ ২১॥

শ্রীধরসামী

কৌমারলীলাং নিরূপরতি অবিদূর ইত্যাদিনা॥২०॥

কেপণৈ বি**ৰামলকফলাদিতিঃ কিছিণীয়ুঁকৈঃ পা**দৈঃ কিপততাড়য়তঃ। বৎসপালা এব কুত্রিমাঃ কছলাদিপিহিতা ব্যর্পম**ঞ্** কুর্বতি তৈঃ সহ ব্য়মপি তথৈব ব্যায়মাণো নর্দক্তো তদমুকারিশকান কুর্বতি যুযুধাতে ইত্যর্থঃ॥ ২১॥

देवकवरजावगी।

জাহরিদণং তৃণাবর্ত্তবং:। প্রথমবিশ্বদর্শনং গোপীভি: ভোভিত ইত্যাদি ক্রীণীহি ভো ইত্যাদি বংসপুচ্চ্রাহণং মৃত্তিকাভক্ষণং বিতীয়বিশ্বদর্শনং দধিপয়স্টের্যাঃ উন্পলবন্ধ: সরিজীরগতমিত্যাদি র্লাবনপ্রবেশ ইতি। অথ শ্রীর্লাবনলীলামুপ্রক্রমতে এবং
পূর্ব্বোক্তপ্রকারেণ কলবাকৈয় ম নোহরভাবিতৈশ্চ প্রীতিমানলং যদ্ধন্তে। কলবাক্যাবিতি পাঠেহপি স এবার্থ:। স্বকালেনেতি কৌমারমধ্য এবেত্যর্থ:। কালেনারেন রাজর্বে রামঃ কৃষ্ণশ্চ গোকুলে। অন্বই জাহুভি: পদ্ধি বিচ্চমত্রেজ্বা ইত্যুক্তবাচ্চতুর্থস্যাপি
বর্ষস্যাপি বর্ষস্যান্তে হবল্যং কৌমারপরিত্যাগো লভ্যতে। পঞ্চমস্য তু সাধারণ্যাপত্তে:। রূলাবনে চ কৌমারলীলা বংসহরণসম্বন্ধিবর্ষস্যান্তর্ভাবাৎ প্রায়: সার্দ্ধ: একবর্ষং ভবেৎ। এবং বিহারে: কৌমারে: কৌমারং জহতু প্রভা ইতি তদনস্তর্মুক্ত্যা তত্তশ্চ পৌগগুবন্ধঃ প্রতিতী প্রবেশ ইতি হি বক্ষ্যতে। তত্মাদবৈর্বমূহুং বৃহন্ধনে মাস্ত্রেরাধিকবর্ষবন্ধ: স্থিয়া তৃতীরে বৃদ্যাবন্মাগত্য বাল্যস্তীলো

মাসান্ ক্রিচিন্নীয়া ভদনত্তর: বংসপালো বভূবতুরিভি। অতো বড্ প্রাহিরিংশে বৃহন্ধনক্রীড়ায়ামেবোক্তং এবং তৌ বাল্যস্তীণো

কৃষ্ণসন্ধর্ণাবৃত্তী। তিন্ধিরের বজন্থানে সপ্তবর্ষে বভূবতুরিভি। তচ্চ প্রোচ্ছাপেক্ষরা সপ্তবর্ষাবিবেতি মন্তব্যং। বিরোধান্তর্বং
করভেদ বিবক্ষয়েতি কেচিং। ১৯॥

অবিদ্রে ইতি নাতিদ্রে বাল্যাৎ নচাতিনিকটে সত্পাভাবাৎ স্থধীহারাসিদ্ধেশ্চ কিন্ত ব্রজ্ঞানাদাহ্বানপ্রাপ্রপ্রদেশে ইত্যর্থ:। নানাবিশা বেণুবেজশৃন্ধবীণাকনুকাদয়: ক্রীড়ায়া: পরিচ্ছদা: সাধনানি যরোন্তে ॥ ২০ ॥

তানেব দর্শবন্ বাল্যক্রীড়ামাহ ঘাভ্যাং। তত্র কচিদিতি সার্দ্ধকং। কশ্বিংশিচৎ কালে দেশে বা তদেঘাগ্যে। বেণুবাদনং বন্নোদেশরো-বৈ শিষ্ট্যাত্তৎপ্রভৃত্ত্যের প্রবৃত্ত ইতি জ্ঞেরং। ক্ষেপনৈ র্যন্ত্রাদিভি বিষামলাদিকং দূরে প্রক্রিপন্তঃ কিষ্কিনীষ্কৈঃ পাদে: নৃত্যতঃ ইতি শেষং। স্বযুক্ত্বনাপাদিতেঃ ক্রিনগোর্ধেঃ সহ॥ ১১॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

কেপনৈ র্যন্তবিশেষে: লোষ্ট্রাদিকং ক্ষিপতা। কিন্ধিনীযুক্তো পাদৈ নৃত্যিত ইতি শেষা। ক্রতিমগোর্**ষে: স্বস্থুনুক্তি: ॥ ২১। ২২**। ২৩। ২৪। ২৫। ২৬ ॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তা।

ক্ষেপ্তে ডোরীবদ্ধৈ বিশ্বামলকাদিকংক্ষিপতঃ দূরে চালয়তঃ। কিঙ্কিণীযুক্তঃ পাদেঃ ক্ষিপ্ত ভাড়য়তঃ। কুত্রিমগোরুবৈঃ ক্ষণাদিপিহিতবালকৈ রুধাকারেঃ সহ স্বয়মপি তথৈব ব্রায়মাণৌ নর্দত্তী তদত্কারিশকান্ কুর্কাণৌ যুয়্ধাতে ॥ ২১ ॥

কালজ্ঞমে বৎসপাল হইয়া উঠিলেন ॥ ১৯॥

হে রাজন্! রামকৃষ্ণের কোমার লীলা বলি, এবণ কর। তাঁহারা ছই জনে বিবিধক্রীড়োপ-করণ লইয়া গোপবালকদিগের সৃহিত এজভূমির অদূরে বংসচারণ করিতে আরম্ভ করিলেন॥ ২০॥

কোথাও বেণু বাজাইয়া বেড়ান্, কোথাও বিল্ল ও আমলক ফলাদিধারা কেপণ (লাটিম) কল্পনা করিয়া উৎক্ষেপণ করেন, কোথাও কিঙ্কিণীযুক্ত চরণের আঘাতে ভূতল তাড়ন করত তদ্ধারা খেলায়নান হন, কোথাও বা বালকেরা গাত্তে কশ্বলবন্ধন করিয়া কৃত্তিমন্ত্রধের অসুকরণ করিতে থাকিলে আপনারাও ব্য সাজিয়া তদসুকারি শব্দ করিতে ২ পল্পার যুদ্ধে প্রস্তুত্ত হন ॥ ২১ ॥

শমুকতা ক্লতৈর্জন চেরভুঃ প্রাকৃতে যথা। কদাচিদ্যমুনাভীরে বৎসাংশ্চারয়তোঃ স্বকৈঃ।
বয়স্যৈঃ কৃষ্ণবলয়োর্জিঘাংস্থ দৈত্য আগনং ॥ ২২ ॥
তং বৎসক্ষপিশং বীক্ষ্য বৎসবৃধ্যতং হরিঃ। দর্শরন্ বলদেবার শনৈ মুগ্ধ ইবাসদং ॥ ২০ ॥
গৃহীত্বাপরপাদাভ্যাং সহ লাক লমচ্যতঃ। আময়িত্বা কপিথাতো প্রাহিণোদ্যতেকীবিতং।

और त्यामी।

ক্তৈ: শকৈ র্ভ্ন্ হংসমর্রাদীন্ ॥ ২২ । মুগ্ধ ইব অজানলিব আসদৎ সমীপমাগমৎ ॥ ২৩ ॥ অপরপাদাভ্যাং সহ লাকৃলং যথা ভবতি তথা গৃহীত্বা ॥ ২৪ ॥

বৈঞ্বভোষণী।

বৎসমধ্যে বংসক্রপেণাসমনক তবং বলাৎ কংস্থাহিতছক বোধছতি পূজনাবিহনলাং। হরি ছ' টানাং আণ্ছরণাং শিটানাক মনোহরণাং। মুক্তিপ্রদানেন তস্যাপি ছংধহরণাং। বললেবার দর্শহন সংহতেন তং কাপ্যবিভি কৌতুকার্থং॥ ২৩॥

গৃহীত্তেতি তৈ বৰ্তাখ্যাতং। তত্ৰ সহ লাজুলং বধাস্যান্তথা গৃহীত্বা কেন তারভূতেন ইত্যাপেক্ষরামা**হ অ**পবেতি যোজ্যং। যথা অ-

🌉 বিশ্বলাপচক্রমন্তী।

खकुन् दः तमस्त्रापीन् ॥

कृष्कवनद्याद्रिकि यद्ये व्याची ॥ २२ ॥

मर्पत्रन् कारास्त्रता बनामवर स्वाभन्नन् भूदा हेव स्वसानित सामार निक्छर व्याभ ॥ २० ॥

অপরাভাং পানাভাং সহিতং লাকুলং ভক্ত গৃহীয়া অচ্যতঃ ,সংসারসিক্ষৌ চ্যুতিং তক্ত দ্রীকুর্মন্। কশিথাতো ইতি তদেহেলৈব ক্রীজোশবোণিকশিশক্ষপাতমার্থমিতি ভাবঃ। গ্রতং জীবিতং যত ওদ্বিধা ক্রান্তগা প্রাহিণোং ॥ •

কখন ২ শব্দ দারা হংস মর্রাদি জন্তর অমুক্রণ করত প্রাকৃত বালকের তুল্য অমণ করেন হে রাজন্ ! একদা রামকৃষ্ণ স্বীয় বয়স্তগণ সহিত বংসচারণ করিতেছিলেন, সেই সময় একটা দৈত্য তাঁহাদের হিংমা করিবার বাসনায় আসিল ॥ ২২ ॥

ভগবান্ হরি সেই বংসরপ্রধারি দৈত্যকে বংস্থুথের মধ্যগত দেখির। বলদেবকে দেখাইয়া দিলেন। পরে আপুনি বেন কিছুই জানিতে পারেন নাই এইরপ ভাব প্রকাশ করিতে করিতে ধীরে ধীরে তাহার নিকটে গেলেন । ২০ ॥

সমীপে উপস্থিত হুইরাই বংসক্রপি সেই অহনের পশ্চাৎ ভাগের ছুই পদ সহিত লাস ল(পুচ্ছ) ধরিরা

স কপিখৈ ম'হাকার: পাত্যমানৈ: পপাত হ। ডং বীক্ষ্য বিশ্মিতা বালা: শশংহু: সাধুসাধ্বিতি। দেবাশ্চ পরিসম্ভূটা বর্ষু: পুষ্পসম্ভূতিং॥ ২৪॥

শ্রীমন্তাগবভম্।

তো বংসপালকো ভূষা সর্বালোকৈকপালকো। সংখ্যাতরাশো গোবৎসাংশ্চাররত্তো বিচেরতু: ॥২৫ খং খং বংসকুলং সর্বালে পায়য়িষ্যন্ত একদা। গছা জলাশরাভ্যাসং পায়য়িছা পপুর্ জলং।
তে তত্ত্ব দদৃশুর্বালা মহাসন্ত্যবস্থিত:। তত্ত্বত্ব বন্ধনির্ভিন্নং গিরেঃ শৃঙ্গনিব চ্যুতং।

क्रिधवयात्री।

সর্ব্বেৰাং লোকানামেকৌ মুখ্যৌ পালকৌ ॥ ২৫ ॥ জন্ত্যাসং সমীপং ॥ ২৬ ॥

বৈষ্ণৰভোষণী।

শ্বাভট্নং শাক্ষজ্যাং সহিতং লাকু লং তস্য গৃহীত্বা ভ্ৰাময়িত্বা তমিতি পূৰ্বেশ্যবরঃ। তদানীস্তনক্ষেণ ক্রীড়নোপৰোগিকপিথফল-পাতনার্থং ক্রপিথাত্রে চিক্লেণ। অচ্যুত ইতি তং মহাকান্ধং ভ্রময়তোহলি নিজহানাচ্যবনাথ। স ইতি সাহিক্ধ স দৈত্যে মহাকান্ন ইতি মরণে নারাপগমাথ নিজমহাক্থসদৈত্যক্ষণাভিন্যক্তেঃ বিভূংশাধ্যারে ক্রপিথানি চ লীল্য়া ইতি বক্ষামাণ্ডাথ। ক্রিথিফলৈঃ সহ। হ বিশ্বরে। তাদৃশ মহাকান্নপ্রাণ্ড বালন্নপতরৈর মহাক্রিথাক্রেপ্রক্রেপাথ। বিশ্বিতা অস্য সহাকান্নভানিনা হেল্যা ব্ধেন চ শাধ্বিতি সহসা ছ্রিতিক্রজানাথ ছ্র্বিমান্নপাক্ত ভক্ত বিশ্বনান্ধ্রাক্ত বীন্দা। তের্ধেন অমরাণাক্ত প্রমহিত্যভূদিতাহে দেবালেতি ॥ ২৪॥

সর্বালোকানাং মুখ্যপালকারণি বংলগালকে ভূত্তে ভক্তবাংসল্যানিবিশের উজ্ঞ:। বয়া বংলপালকে ভূতা সর্বালোকক-পালকে সংজ্ঞা বংলার্থানিবিধেন কেবলোকানিপালনাং সংজ্ঞাতরাক্ষেপালনাং প্রাত্তেলিক কারিপৌ সভাবিতার্থ:। বিশে-বর্গপ্রক্ কিঞ্ছির্যারলাধিকাপ্রক্তিনেন কিঞ্ছিল্বের্যালগাদিনা সম্প্রদিন্দের চের্ড্র্যুল্ড প্রবাং বংসাংখ্যার হস্তে সায়ং প্রশ্নে সমাগতানাং এব তাসাং বংসাংশ্লেশ্বর ৪৫ ॥ ১৯ তাল

ে বকান্ত্রবন্ধঃ ৰক্ষান্ সর্বোধাং বালানাং ব্যাপাৰকদর্শনাশ্চর্যামাহ "বনিতি। সর্বো প্রিক্কাদর:। জনাশরো মহাসর: নন্দীবরসিরেঃ পূর্বতো বকত্বদনিতি প্রাসিদ্ধং তভাত্তিকংক নহাস্ত্রং অতিভূলপ্রাণিবিশেবং ক্ষরতিতং বক্বদবধানেনৈক্ত ভিরতরা বর্তমানং। অত গুলালিব্রেক্যুতং শৃক্ষিব ভস্য খেতশিল্যাং বান্ত্রহুদাকার্জ্ঞালি উল্লেখ্যে চ্যুতত্বে হেতৃঃ বল্লেভি। স্বৈ প্রসিদ্ধৌ। মহান্ চ্ইত-

विविचेनां थंडक वर्षी।

স বৎসাহ্রঃ ॥ ২৪ ॥

একপালকৌ মুখ্যপালকৌ। প্রাতরাশ: প্রাতর্জোজনং ॥ ২৫॥

राज्ञण निर्कितः हिन्नः गितिमृत्रमितं ॥ २५ ॥

কিয়ৎক্ষণ ঘুরাইলেন, পরে গতান্ত করিয়া কপিত বক্ষের অত্যে নিক্ষেপ করিলেন। হে রাজন্। ঐ বৎসান্তরের বিশালশরীরের ভারে সেই কপিত তরু ভার ইহনা পতিত হইল হুতরাং ঐ অহরও তাহার সঙ্গে পতিত হইল। তদনন্তর মৃত অহুর দর্শন করিয়া বালকদিগের বিস্ময় জন্মিল। আকর্য্য প্রকাশ করিতে ২ সকলেই সাধুনাদ করিতে লাগিলেন। আর দেবগণ পরিত্ত হইরা স্বর্গ হইতে পুত্প বর্ষণ করিলেন॥ ২৪॥

হৈ রাজন্ ! রামকৃষ্ণ সকল লোকের মুখ্য পালক, তাঁহারা ছই জন বৎস্পালক হইয়া প্রাত্রাশ অর্থাৎ প্রাতঃকালীন ভোজন সামগ্রী সঙ্গে কাইয়া ইতস্ততঃ জমণ কুরিয়া বেড়াইতেন ॥ ২৫ ॥

একদা বালক সকল স্থ বংসকুলকে জন্মপান করাইব বলিয়া জনাশুরুসনীপে গমন করিল এবং বংসদিগকে জলপান করাইয়া আপনারাও পান করিতে লাগিল। বে মহারাজ! দেই আন্দেশী সকল বালক মহাসত্ত একটা পক্ষি দেখিতে পাইল, দে বজ্ঞ নির্ভিন্ন প্রতিষ্ঠাত অকাজ শুরুর আন্দেশী তথায় বসিয়া রহিয়াছিল। দেখিবামানে সকল বালক সাতিশর ভীত হবল। বে রাজন। এ পশ্চিম

সবৈ বকো নাম মহানহ্মরো বক্তরপধৃক্। আগত্য ভরদা কুঞ্চ ভীক্ষ্কুণ্ডোহ্এদৰ্শী ॥ ২৬॥ কৃষ্ণং মহাবকগ্রন্তং দৃষ্ট্রা রামানরোহর্ডকাঃ। ব্সুবুরিক্রিয়াশীল শিলা আাশঃ বিচেত্তসঃ। णः जानूम्नः अमर्खमियदम्याभानमृत्रः भिजतः अभना द्वाः । कार्यन চচ্ছक मानाश्कित्रयोक्षणः वक्षाध्य रखः भूमत्रकाशमाञ् ॥ २५॥ তমাপতত্তং স নিগৃহ তুওয়ো দেখিয়াং বহুং কংসমধং মতাং গডিঃ।

क्षित्रचारी।

রাম আদি র্যেবাং তে নতু রামঃ॥ ২৭॥ **ज्ञतान्टरकाः वीत्रगवर व्यवस्त्रिश्विदम्बर्वर ॥ २৮ ॥**

देवकवट्डावनी।

মতাদিনা বপুৰা চ বৰুত্ৰপথক নিভামেব তীক্ষতু ভাষণি ৰলবানণি অগ্ৰসদেব নত্বভং কিঞ্চিনিইং কৰ্তু মূলকোদিভাৰ্য:। গ্ৰসন্মণি কেবনং শ্ৰীভগবদিক্তনৈৰ ইত্যাহ ক্লকং ছৰ্কিতৰ্কবিচিত্ৰমহাৰ্শীলাৰ্ণৰবেন প্ৰস্থিমিতাৰ্থ: ॥ ২৬ ॥

বিচেতলো বভূবু মু মূহঃ প্রীভগবলাহাদ্মাবেদিনোহণি ছটং বকং সদ্যোহত্তং শক্তা অণি প্রীবলদেবাদয় পরমন্ত্রাকুলতয়া সদ্যঃ সর্কা-ক্ষানজিরাশক্তিরহিতা বভূব্রিতার্থ:। অঅ দৃষ্টান্ত:। প্রাণং বিনেজিরাণীবৈতি। শ্রীবদদেবভাগি তাদুশর্বং শ্রীক্ষন্ধি ইরণার গতে শ্রীকৃষ্ণে मृगारछ। अटेबज्डशवान् त्रारमा विभक्तीत्रन्रामाममिछा।मो। छान्म्नमित्रव अनर्खः युक्देविध्वीरकोकूरकन मुवाबः अविदेना গলে নেতৃষশকালা তালুমূল এব লগ্নছাং। গোপালকথ্যপি কেনচিদংশেন জগলাবো বিভাগ পিতর্মিতি মহাকোতুকিছাং তদ্য বকেন প্রসনং মহাত্রভাবদান্ত সমাপ্রসনাশকাদ্ধং সম্ভবেদেবেভি ভাবঃ। অতিক্রবা তং হবং অভ্যাপদাত উদ্যভোহভূৎ বভোহ্মতং ক্ষতরহিতং। বহা স্ববেদন ক্লিঞ্চিং দ ক্রতীকর্জুং অসক্তমণি অভ্যপদ্যত তত্ত্ব হেডুং অতীতি। মহাক্রোধেন বিচারাপগ্রাদিভার্ড: ॥২৭

নিগৃহ গ্রহণেন পীড়রিত। কংসদধমিতি মহাচ্টম্ববিষ্ঠমানিকঞ্চ স্টিডং। সতাং গতিরিতি তেন তমধো যুক্ত ইতি ভাব:। এবং পদৰ্যেন হুটনিপ্রহশিষ্টাছ্প্রহলক্ষণং দারণপ্রয়োজনমুক্তং। বৃদ্ধা কংসুস্থমিতি তদারণেন কংসোহপি দারিত ইবৈতি। সভাং

क्रमगन्रजः।

রামাদর ইতি তদগুণসৰিজ্ঞানতাপি ঘটতে। তচ্চ বর্চসুন্দর্জন্য শততমবাক্যন্তাৎ পূর্বজ এইবাং ॥ ২৭ ॥ ২৮ ॥

जीवियमाथहकवर्जा।

রামাদর ইতি রামন্য সর্বজ্ঞন্যাপি তৰ্ধনমর্থন্যাপি মোহে ত্রাভূলেহ এব হেতু র্লষ্টব্য:। কল্পিণীহরণেহপি ক্রাইডভগ্রান্রামো বিপক্ষীর নৃপোদ্যমমিত্যাদৌ তস্য তাদৃশবস্য তক্তক্যমাণবাৎ 🛭

তং কৃষ্ণং প্ৰদহত্তমিতি তদ্য নীলোৎপল্যকুমারশীতল্যাপি স্পর্শো বহেরিব ব্রুস্যের তন্তানুদোরাদের জাতো জিংলাদোরাৎ নিতারা অপি তিক্তৰমিবেতি জ্ঞেরং। অক্ষতং ক্ষতরহিভমিতি **ডত্ত ঐক্তু**গাত্রস্য ব**ল্লারিডভং ধ্বনিডং ॥ ২**৭ ॥

ভুগুৰোশ্চঞ্যে নিৰ্পৃষ্ঠ নিভরাং গৃহীয়া মুদাবহং প্রস্কর্তেশ আনন্দ্রপ্রাপকঃ। উলীরং বন্য মূলং ভবীরণং ভবং ॥ ২৮॥ 🚈 🖯

नाम वक, त्म अकृषे। महान अञ्चेत, वकत्रभ धात्रण कत्रिया तिह्याहिल। तम कृष्ण्टक तिश्वितीयांज অত্যন্ত বৈগে আসিয়া একৈবারে প্রাস করিল। তাহার তুও অভিনয় তীক্ষ এবং বয়ং মহবিলিষ্ঠ **ছिल ॥** २७ ॥

दर बिजन । क्रिक वालकर्गण क्रकटक महावटकत्र मुख्या हरेख टेनियमा स्टाप्त टमहेन्न सह-क्रम रहेन, बेक्किश हिल्लियान थीन विनी विटिन्छन हम, किन्छ जिल्ल टमरे वरकत वननमधान हरेमा अमित्र मिनिक केरिकि जोसूप्रमें नेये केरिएक निमित्नक, अरुधेव तम अर्थिक अनक के त्राशाम वान-ৰ্বৰৈ কুজনুপ্তাৰ বৃদ্ধীন ক্ষিত্ৰ কৈলিল। ভুলনভন তাঁহাকে অনিক্ত দেখিয়া অভিনোৰে সুগুলাভ-ার তিবার প্রাণক্ষর প্রাণ্ড নিক্টে বেল । ২৭। কংস্থেরিত ও বক্তে পুনরার সানিতে দেখিয়া জীক্ত সাপনার ছই বাহুবারা তাহার চঞ্

পশুৎস্থ বালের দদার লীলয়া খুদাবছো বীরণবদিবোকসাং॥ ২৮॥
তদা বকারিং হুরলোকবাসিনঃ সমাকিরন্ বন্দনবিরকাদিভিঃ।
স্মাড়েরে চানকশন্দেশেকের ক্রীক্য গোপালস্থা বিদিন্ধিরে॥ ২৯॥
মুক্তং বকাস্যাত্পলভ্য দারকা রামান্যঃ প্রাণসিবেজিয়েশগং।
স্থানাগতং তং পরিবভ্য নির্ভাঃ প্রাণীয় বংসান ব্রহ্মেত্য ভক্তাঃ॥ ৩০॥

शिश्ववामी

সমীড়িরে তুই বু: আনকৈ: শবৈ। অন্যৈক সংস্তবৈ: সহ॥ ২৯॥ অস্থানমাগতং প্রাণমিব কৃষ্ণং বা প্রাণীয় একীকৃত্য॥ ৩০॥

বৈষ্ণবজোষণী।

গতিরিতি চ শ্রীরামাদীনাং প্রাণা রক্ষিত। ইতার্থ:। অতত্তে তদেকজীবনস্বভাবদার্ন্ধিগমেস্বতএব মোহতো ব্যুক্তিতা ইতি জ্ঞেরং। উপীরং যদ্য মূলং তবীরণং তদ্য পত্রমিবৈতার্থ:। এবমত্রেদং তবং। মুগ্ধবন্ধবাণেতা গৃহীতো বৎসাস্থরোহনবহিতদাদেব কিঞ্চিৎ কর্তুম-শক্তোহপ্রাদেন হত ইতি ন মন্তব্যং কিন্তু জানতাহবহিতেনাপি নিজাপেরশক্তিং দর্শরতাপি ন ক্ঞিৎ মম কেনাপি কর্তুম্পক্ততে ইতি বোধ্যিক। স্কর্থনিন্ হর্ষায়ত্বং ভগবানের তদগলে প্রবিশ্ত ইতি তম্বধন দেবানামপি হিতমকরোদিত্যাহ দিবৌকসাং সর্প্রেষামের মুদাবহ ইতি এবং বকাস্থর্স্য মহাপ্রস্তম্বাদিকমপি ধ্বনিতং॥ ২৮॥

মুদাবহনলকণ্যেবাই তদেতি। স্মাক্ স্বাকিরন্তৈ ব্যাপ্তং চকু:। নন্দনস্য মলিকাদিভি: পুলৈরিভি তেষাং প্রমপ্রিয়েরিভার্থ: স্কান্দ্রক্ষানন্দ্রমানন্দ্রম্য বিষয়ং প্রাপ্রিভার্থ: বাংলা গোলানাং তেষাং বংকিঞ্ছিৎ তদভূদিবৈক্ষীবনানাং তৎত্নেহবিশেষার্তৈম্ব্য জ্ঞানানাং মুভা: ॥ ২৯ ॥

বেহবিশেষমের দর্শগতি। তং বকারিং স্বস্থানমাগতং সম্ভান্ত সমীপে প্রাণ্য পশ্চাৎ পরিরভ্য নির্কৃতাঃ সম্ভঃ। বকাস্যান্ত্রনিতি দেহোদ্রেকেণ নির্ভাগিলনং তেন চ পরম নির্কৃতিভরং স্বচরতি। তেখামাদে প্রভিগ্রেরকেটে স্থানাগন্য তদানীমপি সম্যক্ স্বাস্থান্ত্রনিক্তি জ্বেং। তচ্চ প্রাণাদি দৃষ্টাস্থেনৈর ব্যক্তিভং। স্থানাগতমিতি প্রাণেহপারিতং। বৎসান্ প্রোণীর দিমান্তর্বৎ কালমনপেক্য সর্বান্ পরাবর্ত্তা। বছা। পালকানাং হর্দশা দৃষ্ট্রা ছংথেনেতন্ত্রতা গতান্ মেলরিতা তছকবধাদিকং জন্তঃ সংক্রমমিশ্রেণ প্রহর্বেণ গীতবহুকৈঃ স্থাবেল কথন্নামান্তঃ। এবং বৎসবধশ্যানমুত্রসমন্ত্রেমান্ত্রমাঞ্জনীতিশঙ্কা চ তদ্বিনেহস্ক্রা সংপ্রজেব কথিত ইতি জ্বেং বড়িংশাধ্যায়ে শ্রীগোপৈ ত্রস্যাপাস্থবাদাৎ শ্রীশুক্ষেক্সন্তর্বাস্থিতিশিক্ষা। ৩০॥

ক্ৰমশস্ভ:।

সমীড়িরে প্রশশংস্থ:। আনকশশ্বসহিত্তৈ: সংস্কবৈ বৈ দিকতাত্ত্বিকেন্দ সমীড়িরে ভুষ্টু বুং ॥ ২৯। ৩০। ৩১। ৩২। ৩১। ৩৪॥

ত্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

नमाकितन नमाशाकीर्गर वार्थर ठक्तिकार्थः। नःखटेनः व्याहीरेनः ॥ २२ ॥

স্থানমাগতং প্রাণমিব ক্লফং। প্রকর্বেণেডন্ডভঃ সকাশাদানীয় ডৎবৎসবক্রধচরিত্রং জন্ত ক্লড়েছরেণোচুঃ। বছা । স্বরতালাদিনা গীতং ক্রছে দি'নান্তরেহপি গানার্থমিতি ভাবঃ ॥ ৩০ ॥

ছয়ে ধারণ করিলেন এবং দর্শনকারি বালকগণের সমক্ষে বীরণবং (অগ্রন্থি তৃণ অর্থাৎ বেণার্কের ন্যায়) বিদীর্ণ করিয়া ফেলিলেন। তদর্শনে দেবগণের পরম হর্ষ হইল॥ ২৮॥

সেই সময় দেবলোকবাসী সমুদায় লোক বকারি ভগবান্ হরির উপর নন্দনকাননের মলিকাদি কুন্তম বর্ষণ করিলেন এবং শব্দ চুন্দুভি ধ্বনি তথা বিবিধ তোতে বারা তব করিতে লাগিলেন। তে রাজন। এ সকল ব্যাপার অবলোকন করিয়া গোপবালকগণ যারপর নাই বিশ্বিত হইয়াছিল ॥২৯॥

শ্রুতা তিৰিশ্বিতা গোপা গোপ্যশ্চাতি প্রিয়াদৃতাঃ। শ্রেজ্যাগতবিবেশিং ক্রন্যুটেক্সন্ত ভ্ষিতেক্ষণাঃ॥৩১ ক্রে ব্রুটান ক্রিন্তা বহবে। মৃত্যুবোহভবন্। অপ্যাসীবিপ্রিয়ং তেবাং ক্রন্তং পূর্বাং যতো ভরং॥৩২॥ অথাপ্যক্তিভবস্ত্যেনং নৈবৈতে বোরদর্শনাঃ। ক্রিয়াংসদ্রৈন্যাসাদ্য নশ্রন্তা প্রস্তাবং॥ ৩৩॥

विश्ववामी।

অভিনয়েৰ প্ৰিয়েণ প্ৰীত্যা আদৃতাঃ সাদরাঃ। প্ৰেত্যাগতমিৰ লোকাম্ভরাদাগতমিৰ ত্বিতানি অত্থানি অমৃতং পিৰ্ভীৰেকণানি বেৰাং তে॥ ৩১॥

আহো বতেত্যাদিলোকত্রস্য ইতি নন্দাদর ইত্যনেনাবর:। অপি এবমণি তেবামেবানিষ্টমানীৎ তৈ র্বতঃ পূর্বমন্যেবাং ভরং কৃতং ॥ ৩২ ॥

অথ বোরদর্শনা অপি নাভিভবস্তি ন ধর্বরস্তি॥ ৩০॥

देवकवरकावनी ।

লোপা গোপ্যক বিশ্বিতাঃ অহোবতেতাদি বক্ষামাণরীত্যা লাতবিশ্বাঃ। অহোহতিশরেন প্রিরং প্রেমবৃক্তং বর্থান্যান্তবা আদৃতাঃ তক্ষণাদিব লাতাত্যমনঃপ্রবাঃ। অত্পরোৎস্থকাং আদক্যা প্রক্ষ চিরং তদ্দানাস্থরা বন্ধুব্রিতার্থঃ। বন্ধ ক্ বিতেকণাঃ অত্প্রন্তাঃ পরমপ্রীত্যৌৎস্থকাদীকণে হেছুঃ প্রেডোতি। ইবোৎপ্রেকারাঃ। বেহতরেণ ডেবাং তথা মননাং। বহা। প্রত্যাগতং কঞ্চিৎ কশ্চিবর্ত্রিব। বহা। দিবা তহিরহেণ শতকদর্শনভূকাবুকেকণাপ্র বিশেষতা বক্ষবাদিশ্রবণেনৌৎস্থকাৎ প্রক্ষ । অন্তং সমানং ॥৩১॥ অহো ইতি চতুহং। ইতীতি চতুর্বেনাবরাৎ ব্যাখ্যা তু পৃথক্ ক্রিয়তে। তত্র গোপালানামন্যোন্যং বধাবৃক্তং। বিশ্বরোক্তিমাহ জিছে। ইতি বিভিঃ। অহো আশ্বর্ণে। বত্র থেদে। অক্তৈর মৃত্যবঃ তত্তেতবঃ। বালস্যেতি সেহভরেণ। অন্যতৈঃ। বহা। মতঃ পূর্বং প্রথমমাগতা বন্ধ ভরং কৃতং॥ ৩২॥

ভেষামেব ৰিপ্রিরন্থ, বির্ণোতি অথাপীতি। অথ পূর্বহেতোরের বোরদর্শনা অপীত্যয়ঃ। অথবা তত্ত্ব হৈছেং তর্করন্তি তেবাং বকা-শীনাং। পূরানেন ব্রন্থতে সাধবো দস্থাপীড়িড়া ইত্যাদি গর্গোক্তরীত্যা বিপ্রিয়মনিষ্টমনেন পূর্বং ক্রতমাসীৎ। যতো যেত্যো তর্মস্য ভবতি বোরং দ'শনমণি কিমৃত কর্ম বেষাং তেইপ্যেতে বকাদর ইতি তেবাং পাণিষ্টমুক্তং। নৈবং তে ঘোরদর্শনা ইতি

बैविश्वनाथहक्तवर्श्वी ।

ষতিপ্ৰিৰেণ শ্ৰীকুকেন বদৰ্শনদানেনৈবাদ্তান্ত্ৰিতান্যমূতং শিবন্তীবেকণানি যেষাং তে ঐকন্ত কতাদিশক্ষা স্কালেষ্ ন্তা-লয়ক্ত ॥ ৩১ ॥

তত্র গোপানামন্যোন্যং বিশ্বরোজিমাই ত্রিভিঃ। মৃত্যুহো মৃত্যুহেতবঃ। ভরং ক্বতং নিরপরাধানামশ্রাকং বালক্বস্যাস্য চ যশ্মাদ-প্রকারঃ প্রথমং ক্বত্তবাং ॥ ৩২॥

নৰনেন ৰাশকেন পূৰ্বজন্মনি তেবাং বিশ্ৰিয়ং প্ৰথমং ক্ষতমন্তএৰান্ত্ৰিন্ জন্মনি হৰমেনং তে এবারাস্ত্ৰীতি কথং ন সন্তাব্যতে ভ্ৰাছ:। স্বথাপি বব্যেবমণি ন্যান্তহি তৈর্বমভিভূবেতৈবেতার্থ:। কিন্তু তে নাভিত্যন্তি শ্বভিভূবিত্ং ন শকু বন্ধি প্রত্যুত জিলাংনরেন্ত্যানি ॥ ৩০ ॥

গোপ ও গোপীগণ তাহা শুনিয়া বিস্মিত হইলেন এবং স্বতিশয় প্রীতিহেতু সাদর হইয়া সমুৎস্ক চিত্তে যেন লোকান্তর হইতে আগতের ন্যার সেই স্কল্কে দেখিতে লাখিলেন, কিন্তু তাঁহারা যত দেখিলেন কিছুতেই তাহাদের নয়ন পরিত্থ হইল না॥ ৩১॥

অংশ কি আশুর্য । এই বালকের বহুতর মুজুর কারণ হইরা পেল কিন্তু যে হেতু পূর্বের তাহাদের ইইডে সনোর ভয় হইত এই কারণে তাহাদিগেরই অন্তি দৃষ্ট হইল, হায় কি থেদের বিষয় । ॥৩২॥

া কেই সকল শাৰ্ক খোলদৰ্শন হইয়াও ইয়াকে অভিভব করিছে পাছে নাই, হিংসা করিবার বাস-নার ইহার নিকট আসিয়া মেমন অগ্নিতে পভঙ্গ বিনই হয় তাহার ন্যায় আপনারাই বিনাশ প্রাপ্ত ইইয়াছে ॥ ৩০ ॥ আছে। জন্মবিদাং রাচো নাসত্যাঃ সন্তি কহি চিৎ। গর্গো যদাহ ভগবানম্বভাবি তথৈব তং।
ইতি নন্দাদয়ো গোপাঃ কৃষ্ণয়ামকথা মুদা। কুর্বস্তো য়য়মাণাশ্চ নাবিদন্ উব্যোদনাং ॥ ৩৪॥
॥ ॥ । ইতি প্রীভাগবভে মহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং দশমক্ষে বালক্রীভায়ানেকাদশোহধ্যায়ঃ ॥ ॥ ॥ ১১॥ ॥ ॥

शिवत्रवामी ।

গর্গো যদাহ তত্মারন্দাত্মলোৎরং তে নারারণসমো গুণৈরিত্যাদি। বৎসমূথগতং হত্তা বৎস দন্তান্তরং হরিঃ। আড়িযুর্থগতকাহর-গ্রণ্যং দন্তিনাং বকং॥ ৩৪॥

॥ * रेजि नन्दम धकाननः ॥ * ॥

বৈষ্ণবতোষণী।

ৰুচিৎ পাঠঃ। ন অভিভৰম্ভি ধৰ্ণয়িতুং ন শক্লুবস্থীত্যৰ্থঃ। এবেতি কণাচিৎ কণঞ্চিদপীত্যৰ্থঃ। ন কেবলমেভাবদেব কিন্তু শ্বয়ং সৰ্য এৰ মিন্নত্তেৎপীত্যাহঃ বিবাংসদেতি। কুজো২প্যাগতানাং বহুনামপ্যেকশাদেব শ্বনং সদ্যোমৰূপে দৃষ্টাস্তঃ অন্ত্ৰৌ পতন্তৰ্নিতি। অনেনাস্য পুণাঞ্জভাবদ্বমপ্যক্তং। অতো হিংশ্ৰঃ শ্বপাপেনেত্যানিবনেবোৎপ্ৰেক্ষিতং ॥ ৩৩ ॥

ত্র প্রমাণং দর্শ্যবোহণি বাংসল্যন্তাবেন সাকর্যুমাছ: অহে ইতি। ব্রন্ধবিদাং বেদার্থভন্ধনানাং ভক্তিনির্চানামিতার্থ:। অসত্যা ম সন্ধি ন ভবন্ধি। অমভাবি অম্পৃত্ধ ইতি শ্রীবন্ধবেজ্ঞ সরল্যভাবদ্বাদ্ধব্দাসল্যাক্ত রহস্যাপি গর্মোক্রং ত্র্মাহাদ্মং তের্ কিঞ্চিভিব্যক্তং অভূদিতি গদ্যতে। ইত্যনেন প্রকারেণ গতা আগমিষ্যমাণান্চ ক্রফরামকথা:। কথামিতি ক্রচিং পাঠ:। কুর্বপ্রঃ কথ্যন্ত:। ন কেবলমেতাবদেব অপিতু রম্মাণা: প্রীভগবতা সহ ক্রীড়স্তুন্চ ভববেদনাং ভবে সংসারে সাংসারিকাণাং বদ্ধুংখং তত্তেম্বব-তীর্ণা অপি নাবিদন্ ন জ্ঞাতবস্তোহণি। অতঃ কুধার্ত। ইদমক্রবন্ ইত্যাদৌ যত্তেমাং কুধাদিকং লূল্যতে তত্তু ন ভব সম্বন্ধি কিন্তু লীলো-পোষলকদারীলামর্মেবেতি ভাব:। তবৈবং বিহারেরিত্যাদি পদ্যমণি পঠন্তি। তত্ত্ব পুরতঃ পুন: কৌমারলীলাবর্ণনং স্থিতিবিশেষ্ট্রনির্বাভিনরেন। অতাহপ্রেহণি তদ্য পুনক্ষেক্রিতি জ্লেয়ং। সম্বন্ধাক্যাবৃত্রত্ত্ববাধ্যাতিদ্বাহ ॥ ৩৪ ॥

॥ 🕶 ॥ ইভি জীবৈক্ষৰতোষণ্যাং দশমটিপ্পস্তাং একাদশঃ ॥ 🛦 ॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

॥ * ॥ ইতি শ্রীদশমে ক্রমসম্বর্ডে একাদশঃ ॥ • ॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

তত্র হেতুরস্য নারারণসমন্বমেবেত্যাহ:। অহো ইতি গর্গো যদাহ নারারণসমো গুলৈরিত্যাদি॥

কথাং কুৰ্বন্তঃ আহান্যামুপবিশ্য বাল্যচাপল্যকথাং বংসবকাদিবঞ্চ্ছথাঞ্চ পুনঃ পুনঃ সংলপন্তঃ গীতপদ্যাদিভিক্পনিবন্ধতো বা ভবস্য সংসারস্য বেদনাং ভাপনং। তো ব্ৰহ্মান্ত ব্যন্তাভিত্ত বিশ্বতি আহ্বালি কথা পুত্ৰকল্যকুটুহাদিকথাক নিম্ভ্রুণ ঘোরঃ সংসারোহয়ং বর্ততে অন্নান্ত্রারাধিং ভানবৈরাগ্যতপো নারায়ণন্তরগাদিমু কথং ন যতথে ইভি দেশান্তরাগভবৃত্তগোশৃদিভিভ ভাপিতং। নাবিদন নৈবাবদধুং। ব্যাখ্যান্তরং ত্যাল্যং। ন পুনঃ ক্রতে রাজন সংসারে। হ্যানসন্তব ইভি পূর্ব্বাভে তেরাং সংসার-। স্যৈব নিবেধাং কৃতত্তদীয়পীড়াশভেতি ॥ ৩৪ ॥

॥ +॥ देखि नात्राविमिनााः व्यापाः छक्तक्वनाः । এकामत्मावतः मनत्म नवकः नवकः नवाः ॥ +॥

যাহা হউক, অন্নবেভাদিগের বাক্য অন্তক্ত আশ্চর্য্য, সে সকল কদাচ অসভ্য হয় না। ভগৰাৰ গর্গ যাহা বলিয়াছেন ভাহা তজপই অনুভূত ছুইকু। হে গাজন্। এই প্রকারে রাম্ছকের, কথা প্রসাদ কথোপক্ষান করত নশাদি গোপগণ সলা আহমান প্রমোদ করিভেন সংসারবেদনা কিছুই ভারাদের অনুভূত হুইভ না ৯ ০৪ ॥

॥ ॥ इंडि इमेटम अकामम ॥ # ॥

শ্রিবাদরায়ণিক্লবাচ ॥

क्रियमानाम् मरनामधब् कार ब्याजः मनुषाम यमनायरमभान् ।

क्षेत्रवानी।

वानत्म जू महानर्भवन्ध त्रमवाञ्चतः। वर्शनानिनाः क्रद्यां शत्मध्दत्रिकि वर्गात्कु। महावर्षमणक्रीका त्यस्यनंता म त्योकुंकः। ইতी-वावाञ्चत्रपुर्धं नन्धः व्याविभव्यतिः ॥ • ॥

ৰুচিৎ কদাচিৎ বনাশায় বনএব প্ৰথমভোজনং কৰ্জুং॥ ১॥

বৈষ্ণবতোষণী।

ভাতি রপগুণক্রীড়ানামভিনি ত্যন্তন:। আশুর্য্যস্চ नमान्ध्याम्यः अञ् न अनीमञ्। भोगातीत्मवनीनाः वनन् छवात्नो अत्कनाचाञ्चत्रवस्मार् किनिछानिना। यत्मछळ अधात्रवदः भूछना त्नाकवानत्रीछानि त्नाकवे कः যএতৎ পূতানালোক্ষমিতাদি লোকক ক্লিয়মভতে তত্ত্ব কারণং ন পঞ্চাম: সর্বত্তাপি দেশেৰৈভিছ্ঞাপ্তবাৎ বাসনাভাষ্য সহজোক্তি বিৰৎ কামধেত্ব ওকমনোহরা প্রমহংদ্ঞিরাদিবু প্রাচীনাধুনিকটীকাত্ব ব্যাখ্যাত্বাচ্চ ভ্রীরত্বস্থাদারানদীকারপ্রামাণ্যেন তगाञ्जाभागाः त्र अन्तर्यमात्रानीकात्रश्रामात्गान विभन्नीष्य कथः न जार। नरु मूत्रश्रिनामननविनामानाः एक श्रादात्भा ন দৃখ্যত ইতি ৰাচ্যং যন্ন একস্তাঘভিদো রচনাছবাদাচ্ছৃণ্ডি বেহন্স বিষয়াঃ কুকথা মতিলীরিভি ভৃতীরাং পাপভিদাদিনালাং ভত্তাপ্রবো-গাৎ নচ তত্ৰ তত্ৰ লীলাস্থবাদে সা লীলা নান্তি স্বামিপাৰৈ স্কত্ৰ তত্ৰ তস্যা অপি দৰ্শিতত্বাৎ অভএৰ বাত্ৰিংশৎ ত্ৰিশতক বস্ত বিলস্জ্বাধা हैिं जमीत्रभूत्मा थि जमशात्रवातः यस्त्रिमत्मर्तरिक न जन्नजः। निक जबत्रमनाव क्वाभि थश्रतिस्तराः। मर्खवाधात्रमश्यातन्नाकमहिष्ठ-দীকাসভাবাৎ ততো ৰাত্ৰিংশচ্চ ত্ৰয়শ্চ্ শতানি চেতি *ৰল্বৈক্যমে*ৰ তৰিবক্ষিতং। অনিশীতবৃহ্ষতানবস্থাভিয়া। ত্ৰিৰ্মেৰ পৰ্যাৰসানাৎ৷ কপিঞ্চলালভনভাবেন অন্তথা ত্রিশতীত্যেব ভাৎ। নচান্ত্রমূক্তে: সিদ্ধান্তবিরুদ্ধদার তদার্বং শ্রীক্তক্ষারিতের সর্বের্ দৃইদাৎ। স্বাহ্মরীং যোনিমাপরা মূঢ়া জন্মনি জন্মনি। মামপ্রাপ্যৈব কৌন্তের ততো যাস্তাধমাং গতিমিত্যাদিরপি মাং 🕮 কৃষ্ণদক্ষণং অঞ্চাপ্যৈব নতু প্রাপ্য ইত্যাদ্যঙ্গীকারাং। যথাচোক্তং যেচ প্রবন্ধ ধর দছরে কেন্সরিষ্ট মলেভ কংস যবনাঃ কুজ পৌপু কাদ্যাঃ। জন্যেচ সাধ কপি বঙল দস্তবক্র সপ্তোক্র সম্বর বিদ্রথ ক্রক্সিম্থ্যা:। যে বা মৃধে সমিতিশালিন আন্তচাপা: কাম্বোজ মংভ কুরু কেকর ক্রমান্যা:। যাজন্তাদর্শনমলং বলপার্থ ভীমব্যাজাহ্বরেন হরিণা নিলরং তদীর্মিতি। নচ প্রাণাশ্বরাপ্রসিদ্ধবেন সা লীলা ন সঞ্চাবনীরা পালো-তর্থগুরুদাগুপুরাণরোঃ স্পষ্টবাৎ শ্রীঘুন্দাবনে তত্ত্বদীলাভানানি চ প্রসিদ্ধানি। নচ ভক্তগতিসাদৃভেন তেবাং তৎপ্রাপ্তিরসমঞ্চশা ভদ্ধভকৈন্তালৃশপ্রাপ্তেরমূপাদেয়দাৎ। নাত্যন্তিকং বিগণয়ন্তাপি তে প্রসাদং ইত্যাদিবচনশতেভাঃ। নচ পূতনায়া জননীসামাং জননীমাহাত্মাবিভিৰেবিং সংবদাদিব পুতনাপি সকুলেতি বাক্যেন জননীবেশমাত্ৰত তংগ্ৰাপ্তা তস্যা এব মহিমাধিক্য-বাঞ্চনাৎ। তত্র তত্র তৈরপি বিজীবভাসিদ্ধান্তেন দোবঃ পরিহি রতে। কিম্বতাপি তৎসংস্থীত পঞ্চ ইতি ন্যারেন দোব ত্তদ্বস্থ এব তত্মাল কশ্চিৰিরোধ:। প্রত্যুত ভগবত্তক তত্তকীদাং পরম মাহাত্মানেবাত নেংল্যতি। অভভাল্ভব: **এ**ভগবদস্থ গ্রহ বিশেবেলৈর সম্পদ্যত ইতি তৎ স্থগোপ্যমেবেভাব্য তন্য তাদৃশং ৰচনমপ্যগুলন্ত। জলমভিবিভয়েণ। প্রকৃতং স্থাপাভামিঃ। सत्नावथर कृत्कृष्टार कूर्वविकि काक्क नामविन विविधा शृरित श्रीकरकीक्यानार यन अव सवनर स्वायविक क्षेत्रत्मकी हिना श्रीधिक ক্যেৰ লভ্যতে। স্প্ৰান্তরাশাবিভ্যুক্। কচিৰদাশারেভ্যুক্তভাং। সম্যক্ রাজিবল্লপরিভ্যাপত্রীমুণাবিপ্রকালনচারিবল্লভ্যণ-ধারণাদিপূর্বকং ব্রুরোপার নিজমা প্রবোধর্মছিতি স্বিভিঃ সই কুবজিগমিবরা ব্রজাচ্ছনৈ নির্পরনং বোধরতি সভ্তবে বরন্যেতি। বিশেষণং 🗠 চাৰুপ্ৰেভি ক্ষৰণুৰিৰ্দ্ধেশা নি**ৰ্দ্ধি**ভানাং ক্ষেথনৈর নিজাভলং বোধ্যতি। বংসাং পুৰুঃসরা,বন্য সঃ । তেন ভেনৈৰ ভেৰাং

🥳 🥴 🐃 क्रममन्द्रः।

প্ৰাৰ্ভর্মিনঃ কেনচিন্তুস্থমপি ভাস্নভাগাদিপ্রাচীনটাকাকারৈ র্মত্তিঃ সমত্বাৎ সর্বদেশপুত্তক্পন্তিভাচ নিখাতে।

🚇 বিশ্বনাথচক্রবর্তী।

कामरम निविष्ठिः क्वेमिछमुरशास्त्रनाः वर्गनरे। वरक् स्विमारछ इसकाश्य धाविमारिखदंवविष्ठः ॥ • ॥

चामणीयाद्य विवाहरतर्वे विकासन्तर्भः बात्रमण्ड्यक वर्मणात्मत्र भिन्न अवर खिङ्क कर्ष्ठ छारात्र

ভক্তেৰ কহিলেন কোন এক দিবস ভগৰান্ হরি বনৈতেই অধন ভোজন করিবার মনিসে প্রাত:-

232

প্রবেধিয়ন্ শূঙ্গরবেণ চারুণা বিনির্গতো বৎসপুরঃসন্মো হরিঃ॥ ১॥ ৩ জাল জারুলা লাভ তেনৈৰ সাৰং পৃথুকাং সহত্ৰশঃ স্বিশ্বাঃ ক্লিখেজবিধাণবেণদং । यान् यान् महत्वां शतिभाषा विकान् वर्मान् श्रूबक्का विनिधं व मूना ।* क्रकवर्रावनः शारिक व् बीक्रंका ख्रकान् चकान् । हात्रव्यक्तिशास्त्रिकित् कृ स्वत छत ह ॥ २॥

व्यथत्रवामी ।

তেনৈব मुक्क तरवर औक्र किन वा। পৃথুক। वानाः किकाः क्षरमुकाः। निक् निकाः त्रमाः निकानत्त्रा दवाः তে। महत्वाधिकः

বৈষ্ণবভোষণী।

চিত্তহরণাদ্ধরিঃ। স্থাব শ্বরং বজাদিশেবেণ নির্গতো নম্বন্যদিনবং শ্রীরামেণ সহিতঃ তত্ত্ব কারণং ভচ্চ্ স্বরবেশ্চ নিত্যমূদ্যভক্ত ভক্স ঞ্জিককেনাণি ক্বতচলননিৰ্ণন্ত্ৰ্যা নৃনং জনন্ত। দৈৰজ্ঞাত্ব্যপদেশেনাগ্ৰহ্মণান্তিকাদিকৰ্ত্মত্ব মেৰ মুধ্যং ভবেং। তবৈত্ৰৰ দুৰীলাশক্তিষ্টিত-जुनरगीठबजाररजूकरकामानगैनामन्भाननार्थयः जू शीगः कठिवनानात्र मरनानधिनजारनन वनरजाबनरेखरवारकगावार । जनास्त्रव-বধাদীনান্ত আগন্তকৰাং। অত প্রতিপদং প্রতিবাক্যং প্রতিমোকং প্রতিপ্রকরণক পূর্বপূর্ববাছরবাতরমূতরকাং পূর্বপূর্ব-मांकर्वाम्यः। ७क ७क्कनसम्देशकर्वमामाजिक्कात्रस्थिता न विविद्यक्त ॥ > ॥

তেনৈব সাকং ইতি মহাবেগেন ধাৰনাং। বতঃ স্নিঝাঃ জতঃ সর্কেবাং এব যুগপন্নির্গমোছপি স্কৃতিতঃ। সহস্রস্যোপরি সংখ্যা। একং मन नजरेकत महत्वमय्जः ७था। नकक निय्जरेकत काणिन अस् मृत्यवह हेजामित्रहनामय्जामि खन्नाविजान्। धवः वरमानाः वाना-নঞ্চাৰংখ্যেরমুক্তং। ইশং বনে বালৈ: পাল্যমানানামপি বৎসানাং যদিরক্তা নাভূৎ। তহি ব্রক্তে ক্লানাং তর কানাং তথা গোনু সঙ্গতানাং তৃথা তত্ত্বাতুণাং অন্যাসাঞ্ গৰাং তথা বংসভন্নীণাং বংসভন্নাণাং বুষাণাঞ্চ জ্ঞীগোপালদেৰপ্ৰভাবেন নিভ্যমেৰ বিবৰ্দ্ধ মানানামিরতা কথমত মহিব্যাদরত কেন বা গণ্যাঃ পশব্তদহুসারেণ গোপো গোপ্যাদরতানতা ক্রেরা:। তথাচাগমে রাসধ্যানং প্রমদা-শতকোটিভিরাকুলিত ইতি। তত্তৎসদাবেশাদিকং চাচিকৈশ্বগাদেবেতি। মুদেতি শ্বরং শ্রীক্লকেন প্রবোধনাৎ। স্বত্তত্ব বিশে বেণান্যদিনতোহুশাধারণতরা নির্বরু:। 🚨 কুক্সাড়ু বংলৈুরপি তাবনশংখ্যাতে: অসংখ্যসংজ্ঞসংথ্যৈরিতার্থ:। তংশংজ্ঞা চ দর্শিতা কীরকাষিনা। একং দশ শত সহস্রাণ্যযুক্তাযুকাখ্যকমধ নিযুক্তং। শর্কু দ কোটিন্য র্কু দ পদ্মে ধর্কং নিথর্কমিতি দশভিঃ। গণনামহাজ-শৃশ্বসমূল্যবাডিং পরার্ক্ক। অহতং পরার্ক্ক যদিতং তং অহতং ভূবাতোহসংবামিতি। প্রযুতসংজ্ঞং লকং অর্কুস্কাজো কোটি-

श्रीविषनांष्ठकवर्जी।

👉 क्रिक्स्टिंग बनामात्र वन अर आल्ड्सिंक्स कर्सुर। इतित्रिलि बनामवन्त्र माजा अन्नक्तमान्तिकन्नामानार्थः शृष्ट अव वनाजिक्स्व देखि **(朝鮮: 11.5 計** :

गृश्का वानाः । अभिक् निकारः। नरवारमाभित्रमःशा अव्योगि खैवाविजान् ॥

্ ক্ষস্য ভূ ব্ৰুটেনরসংশ্যাতৈরসংখ্যসংজ্ঞসংখ্যৈরিভার্থ:। জসংখ্যসংজ্ঞা চ ক্ষীরস্বামিদ্ট্যা জেরা। বধা। একং দশ শতসহলাগাযুতং এম্তাশ্য লক্ষ্ত নিৰ্ভাঃ অৰ্কুদকোটি ক্লাৰ্মণতে ৰবং নিশ্বনিতি দশভিঃ। গণনাৰহাৰশখনসূত্ৰশ্যাভ্ৰমণ প্ৰপ্ৰাৰ্ছঃ াবহতং পরার্চমন্বিতঃ তৎস্থত্ত; ভূর্বাতো হুসংখামিতি। প্রবৃতসংক্ষা লক্ষ্ণ শুর্কুদসংক্ষা কোটিরিত্যর্থ:। পরার্চ্চ পরাত্তাইারা সংখ্যাদশদশশুণিতা জেলা। । জত্ৰচ ৰলৈ ক্যানহাৰাদিকং সংখ্যাশক্ষণ । কেছং। কহত্বিতি খেন শুণিতমিতাৰ ইতি জেলং জ্ঞত ক্ষমবংগৈ সহাত্বিঃ সভু অক্ষান্জ্ঞান্ প্রাছানি। সংখ্যান্ বংগান্ প্রক্ পৃথক্ পৃথক্ পৃথক্তাতার্থঃ। । নচ বোজনকোনী-ৰোত্ৰসা বৃন্দাৰনসা প্ৰদেশে ভাৰত্তো ৰৎসা নৈৰ মাজীতি বাচ্যং ভগৰ্ডিগ্ৰহন্যৈৰ ধাৰ্মনাস্য তথা পৰিবিভত্তেহপাঁচিতালক্ত্যা বিভূতাৎ

करिन गोर्जायान कतिरलन अवर तस्त्रभानक वद्यमानिगरक गरनासूत्र मुन्नभानियाता अस्विधि कतिश्री বংস সকলকে **অ**থে করত নির্গত হ**ইলেন** ॥ >,॥

তাঁহার সুত্তে সেহামিত সহস্ত ২ বালক স্থাস সহস্রাধিক সংখ্যামুক্ত বৎস অত্যে করিয়া সাতি-শয় হর্ষে বহির্গত হুইলেন, ভাঁহাদের হস্তে ইন্দর শিক্য (শিকা) বেত্র বেণু ও বিষাণ ছিল। ভাঁহার। শীক্ষের অসংখ্য বংসের সঙ্গে আপনাদের বংস সকলকে যুগল্ম করিয়া চরাইতে ২ বানা ছানে বাল-

কলপ্রবালন্তবক্ষ্মনঃপিচহধাস্থিঃ। কাচমুক্তামণিস্থাস্থিতা অপ্যাস্থ্যমন্ ॥৩॥ মুফজোহন্যোন্যশিক্যাদীন্ জাতানারাক চিক্ষিপু:। তত্তত্যাল্চ ততো দুরাত্মসন্তল্চু পুনর্দত্য:॥৪॥ যদি দুরং গতঃ স্বফো বনশোভেক্ষণায় তং। অহং পূর্বমন্তং পূর্বমিতি সংস্পৃত্য রেমিরে॥ ৫॥

अभव्यामी।

मर्याय्कान् वर्मान्॥ २ ॥

কাচাদিভি: পূর্ক: মাভৃভি ভূ বিতা অপি ফলাদিভিরায়ানমভ্বরদ্বিতার্থ: ॥ ৩ ॥

•মুক্তস্ত শ্রের স্তঃ ॥ ৪॥

যদি দ্রং গচতা ভবতি কৃষ্ণ তহিঁ॥ ৫॥

देवसवरजावनी ।

রিত্যর্থ:। পরার্কপর্যন্তান্তালপগুণিতা জেরা:। তত্র চ ঘন্তার্কার্যাক্সালিকং সংখ্যাপঞ্চকং ক্লেরং। অহত্যমিতি স্থেন শুণিত-মিত্যুর্থ ইতি জেরং। অকান্ অকান্ অববংসান্ ইত্যর্থ:। অবংসকানিতি পাঠ: স্পাট:। তত্র তত্র বংস্প্রচার্দেশে। হ হরে॥ ২ ॥ অর্জনীলানেবাহ ফলেতি সপ্তভি:। অবকাঃ পুসাগুড্হা:। স্থানসঃ পুসাণি। কাচা মহারত্বেভ্যা বিবেক্তু মুশক্যরূপদাং কৌতুক-বিশেষকারিণ:। গুলা অপি বুন্ধাবনীরত্বেন তথাভূত্বাহালৈবেব কৌতুকেনাক্ষত্য মাতৃতিঃ সাত্রহং হারাদৌ প্রথিতাঃ। সুক্তেতি পাঠঃ কচিং ॥ ৩ ॥

শিক্যানি আদির্থেবাং বট্টাদীনাং তান্ নতু শিক্যানি তেবামলাধারবেনালনাশে সতি হসত ইত্যাদেরবৃক্তবাৎ। আতান্ সতঃ কেবু চাতিমুশ্বেরু কলংক্ষণ্যক হসত ইত্যাদি॥ ৪ ॥

ঈদৃশবাল্যক্রীড়াছপি তদেকপরতাং প্রণয়বিশেষক দর্শন্তি যদীতি পক্তকন। ক্লেছপি তান্ বিহার দূবং ন বাত্যের যদি কদাচিছিত্রৈ: স্থিতি: দূবং পতো ভবতীত্যর্থ:। কিমর্থং বনশোভারা ঈক্ষণার। আনেন প্রীর্ক্ষাবনস্য পর্মসনোহ্রত্বং স্চিতং। সম্যক্ পরিবস্তাদিনা স্পৃষ্টা রেমিরে স্থাং প্রাপুঃ॥ ৫॥

अविश्वनाथठक्रवर्खी।

তৎপ্রদেশৈক্ষেদশেহণি পঞ্চাশৎকোটিবোলনপ্রমাণাব্রমাণার্ক্সিলাং ভগবতৈব ব্রমণে এতছন্তরাধ্যারে দর্শরিষ্যমাণ্ডাৎ। অতএবোক্তং ভাগৰতাষ্ঠতে। এবং প্রভাঃ প্রিরাণাঞ্চ ধায়ক সময়স্য চ। অবিচিন্ত্যপ্রভাবদাদ্র কিঞ্চির ছুর্ঘটমিতি ॥ ২॥

কাচাদিভি: পূর্ক: মাতৃভি ভূবিতা অপি কলাদিভি রাশ্বানমভূবরন্নিত্যর্থ:। তত্র কাচ ধ্বের বালানামাগ্রহাৎ মণিবর্ণে মাতৃ গামা-গ্রহাভূবণে জেরে॥ ৩॥

ৰুক্ত কোননতঃ। শিক্যাদীনিতি শিক্সেভা উত্তাৰ্থ প্ৰথমবেবালাদিপাত্রাণি মুদ্রিতমুখ্যাং পিপীলিকাদিছ্প্রবেশানি কচিত্তকতলে কন্টকাদিভিনাৰ্ভ্য স্থাপিতানীতি জেলং। ভানেব জাভান্সতঃ আনাদ্বে চিক্লিপুঃ। তত্ত্বৈব বিজ্ঞতা নেতৃং প্রস্থিতে সভি ভত্ততা বালাভভোহপি দ্বাজিকিপুঃ। এব বন্বস্থা স্বজ্ঞবাষ্প্রভো বালান্ ক্দস্থানবলোক্য তে এব হসতো দছঃ॥ ৪ ॥

তং কৃষ্ণং সংস্পৃশ্যেতি অৱষ্ঠ্যিতি বিজ্ঞতা প্রথমং কৃষ্ণমস্পুশং ন ঘং নছনিতি কোলাহলং কুর্বস্তঃ ॥ ৫ ॥

ক্রীড়াদারা বিহার স্বারম্ভ করিল। ২॥

ঐ সকল বালক বদিও স্ব জননীকর্ত্বক কাচ, মুক্তা, মণি তথা স্বৰ্ণস্থাবার। স্থিত ইইয়াছিল তথাচ বন হইতে পুল্পপ্রবাল, ফল্য স্তবক এবং ম্যুরপুচ্ছ তথা ধাসু প্রস্তৃতি গ্রহণ করিয়া তদারা পুনরার আপনাদের স্বা করিতে সাগিল ॥ ৩॥

অপর পরম্পারের শিক্যাদি অপ্রেরণ কয়ত যাহা ২ আত ছইতে সাগিল লৈ সকলকে দূরে ফেলিরা দিভে লাগিলনা ৪ মান বিক্রান ক্রিক্তিক বিক্রান কর্মান কর্মান কর্মান কর্মান কর্মান ক্রিক্তিক বিক্রান ক্রিক্

যদি কথনু জ্রীকৃষ্ণ বনশোভাসন্দর্শনার্থ দুরে গমনু করিতেন তাঁহা ইংল "আমি অএে, আমি অএে" এই বলিয়া বালকেরা তাঁহাকৈ স্পর্শ করত জীড়া করিত ॥ ৫॥ কেচিছেণূন্ বাদয়ত্তো ধ্বান্তঃ শৃঙ্গাণি কেচন। কেচিছ, কৈঃ প্রণায়ন্তঃ কৃজন্তঃ কোকিলৈঃ পরে ॥৬ বিচ্ছায়াভিঃ প্রধাবত্তো গচ্ছন্তঃ সাধু হংসকৈঃ। মকৈক্লপবিশন্তক নৃত্যন্তক কলাপিভিঃ॥ ৭॥ বিক্রন্তঃ কীশবালানারোহন্তক তৈ ক্রমান্। বিক্রন্তক তৈঃ সাকং প্রবন্তক পলাশিষু॥ ৮॥ সাকং ভেকৈ বিলিজ্ঞান্তঃ সরিতঃ প্রবসংগ্লুতাঃ। বিহুসন্তঃ প্রতিক্রায়াঃ শপন্তক প্রতিশ্বনান্॥৯॥

अध्वयामी।

ध्वादका वानग्रकः मृद्धिः मह ॥ ७॥

বিচ্ছারাভি: পক্ষিছারাভি:। কলাপিভি মঁ র্বৈ:॥ १॥

কীশবালান্ বৃক্ষণাথাস লম্মানানি বানবলাক লানি আকর্ষতঃ লাল লমম্গতঃ তৈঃ সহ ক্রমানারোহতঃ। বিহুর্বতঃ দত্তপর্শন-জ্বিক ভাদিভিতঃ সহ বিকারান্ কুর্বতঃ। প্লাশিষ্ বৃক্ষের্ প্রবস্তঃ শাধারাঃ শাধাত্তরমূদ্দভ্তেঃ॥ ৮॥

প্রতিছায়া: প্রতিবিদ্বানি॥ ১॥

देवकवरणायगी।

কদেজ্যণেক্ষনামাই কেচিদিতি চতুর্জি:। বেণূন্ বাদরত্তঃ বেণুবাদনস্য মধ্যে ইত্যর্থ:। বেণুমিতি কচিৎ পাঠ:। এবং ধ্বাস্ত-ইত্যাদি তদাবেশাৎ তৎসক্ষমনাদিসিকে ব'টিতি পুনরত্বসন্ধানাক্ত ইতি ভাব:। বহা। সংস্থানিত্তরং পরমানক্ষেন তদানন্দনেছ্যা চ পুথক্ পুথক্ জীড়াং চক্রুরিত্যর্থ:। তামেবাহ কেচিদিত্যাদিডি:॥ ৬॥

বীনাং জাত্যৈকবচনবিৰক্ষরা ছারারাঃ ক্লীবন্ধাভাবঃ। সাধ্বিতি ক্রিরাবিশেষণং পূর্বত পরত্ত চ সর্বত্ত যোজ্যং। ততত্ততোহপ্যুত্তমং ৰখা স্যাং॥ ৭॥

'ক্রমসন্দর্ভঃ।'

বিচ্ছায়াভিরিতি। বিশব্দয় জাত্যৈকত্বেন ছায়ায়া অক্লীবন্ধং ॥১।২।৩।৪।৫।৬।৭।।

কীশবালান্ ডচ্ছিশূন্ ॥ ৮॥

ত্রৰা নিম রা: প্রতিচ্ছায়া: প্রতিবিদ্বানি মুখবৈক্বত্যাদিপূর্বকমমুক্রতঃ ॥ ৯॥

ঐীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

ধ্বান্তে। বাদয়ন্তঃ ॥ ৬॥ বীনাং পক্ষিণাং ছায়াভিঃ ॥ १॥

কীদৃশান্ বালান্ বৃক্ষশাথাস্থ লখমানানি ৰানবলাক লানি। তৈরম্চামানৈশ্লাক লৈ ধৃতিঃ ক্ষানাবোহতঃ। বিক্রব্য: জবিজু স্তাদি মুথবিকারান্ ক্রব্তঃ। তথা তৈঃ সহ পলাশির বৃক্ষে প্রবন্ধ শাধায়ঃ শাধান্তরং গচ্ছাঃ ॥ ৮॥

প্রবেশ নদ্যাদিতটেড্যং পরিক্তজ্বনেন সংগ্লুতাং প্রিডাং সরিতং সরিৎক্তধারাং। প্রতিছারাং স্বপ্রতিবিশ্বনি। ভূজোৎক্ষেণাদিতি-বিহসন্তঃ প্রতিস্থনান্ প্রতিধ্বনীন্ শপতঃ রে রে কর্তং ক্রমে ইতি স্প্রতিধ্বনিং শ্রুমা ক্র্পিডাং কিমরে মামেব রে রে কারেশাক্ষিপসি ফ্রমান্র শীহং প্রিরব্যেতি পুনং পুনর্ববৃদ্ধা আক্রোশস্তঃ॥ ১॥

কতিপয় বালক বেণুবাদন করিতে করিতে, কতকগুলি শৃঙ্গ বাজাইতে বাজাইতে, কতিশা বাশক ভূসের সহিত গান করিতে করিতে, অপর কতকগুলি বালক কোকিল সঙ্গে কলধ্বনি করিতে ২ খেলা করিতে লাগিল॥ ৬ বি

অন্য কতিপর বালক ভালিপূর্বাক পক্ষিদের হান্ত্রায় ধাবন, হংসদের সহিত পমন,বকসঙ্গে উপবেশন, তথা মহুর সহ নৃত্যে প্রবৃত্ত হইল॥ १॥

আর, কোন কোন বালক বৃদ্ধাখার লম্বান বানরপুদ্ধ অথবা বানরপাবককে আকর্ষণ, কেহ কেহ তাহাদের সন্ধিত বৃদ্ধে আরোহণ, অন্যে তাহাদের সঙ্গে দন্তদর্শন ও জাবিক্ষেপদারা মুখবিক্ষতি তথা তাহাদের ক্ষুতিব্যাহারে বৃদ্ধের এক শাখা হইতে অন্য শাখার উল্লেখন আরম্ভ করিল ॥ ৮ ॥

আর আর ক্লেকেরা ভেকগণের সহিতে নিশ্বাস্ত সরিৎ পর্বাৎ পুরুদ্ধনারাসকল উল্লেখন

ইখং সতাং ত্রহাত্রথামুভূত্যা দাস্যং গতানাং পরদৈবতেন।

टी धत्रपानी

তানতিবিলিত: লোকৰবেনাতিনকতি ইশ্বীতি। সতাং বিহ্বাং। ব্রদ্ধ চ তংশ্বক অহত্তিক তরা ব্যাকাশপ্রমহথেনেত্যথ:।
ভকানাং প্রমটেন্বতেন আত্মেট্রেন নাথেন মারাপ্রিতানাত ন্রদারক্তরা প্রতীর্মানেন সহ বিজ্ঞা ক্রতামাং প্রানাং প্রা

বৈষ্ণব্রোষ্ণী।

বিশেষেণ হসস্তঃ ভ্ৰাছাৎকেপণাদিনা বিবিধৰপ্ৰাপ্তেঃ। यहा। প্ৰতিবিদানি মুখবৈক্ত্যাদিপুৰ্বে ছং অনুকুৰ্বন্তঃ॥ ৯॥

সতাং পরমন্বরূপসভাবিতাববতাং। यह। এক্সপদসালিধ্যাৎ সহিশেষাশাং, উভয়থাপি জ্ঞানিনামিত্যের অর্ভুতিঃ জড়প্রতি-বোগিস্বপ্রকাশবন্ত সৈব ক্রবং আত্মত্বেন পর্যাবদিততয়া নিরুপাধি পরমপ্রেমাম্পদ্তাৎ। সৈব বৃহত্তমপর্যায়ত্রন্ধাধ্যা সক্ষে বাং পরম-স্বরূপছাং তেবাং কেবলতজ্ঞপেণ ক্রুরতা। দাস্যং গতানাং দাস্যভক্তিমতাং এখার্যাদিপূর্ণভন্না ততোহপি পরেণ দৈবতেন সর্কারা-ধ্যেন স্বরূপেণ "ফুরতা মহিমদর্শনার্থ: তৎক্রিবিষ্দা বিরলতামাহ মায়াধিকারপতিতানাত্ত যৎ কিঞ্চির্বদারকর্মেণ জ্ঞান-ভক্তোরভাবাৎ নতু তত্তজ্ঞপেণাপি তেন সার্দ্ধং বিজ্ঞ :। সহার্থভৃতীয়রা স্বপ্রেমা বশীক্ষত্যা অসন্ধিতামাপাদিতেন বিহারমপি ক্লড-বস্ত ইতার্থ:। অতত্ত্বেভা: দর্ব্বেভা: কৃতপুণাপুঞ্চা ইতি লোকোব্তি:। বস্তুতন্ত্ব কৃতানাং চরিতানাং ভগৰত: পরমপ্রদাদহেতুত্বন পুণাশ্চারবং পূঞ্চা যেষাং তে ইত্যর্থ:। পুণ্যন্ত চার্ব্বপীত্যমর:। তত্ত শ্রীমন্থনীক্তরণানামিদং বিবক্ষিতং।ভগবাংস্তাবদসাধা-রণস্বরূপৈখর্গ্যমাধুর্যান্তর্ববিশেষ:। তত্র স্বরূপং প্রমানন্দ ঐশ্বর্যাম্সমোদ্ধানস্তস্বাড়াবিকপ্রভূতামাধুর্যাম্সমোদ্ধতন্ম সর্কমনো-হরং স্বাভাবিকরপগুণলীলাদিসোষ্ঠবং। তত্তদমূভবসাধন**ঞ ক্রমেণ জ্ঞানং জ্ঞেয়ং।, ভক্ত্যাধ্যগৌরবমিশ্রা প্রীতিঃ শুদ্ধ**-প্রীতিশ্চ। এতত্রিবিধসাধ্যসাধন ভাবেন মায়াপ্রিতানাং ক্রুর্যাভাস এব কেনাপ্যংশেন বন্ধস্পর্নাৎ। নাহং প্রকাশঃ সর্কাস্য যোগ-মায়াসমাবৃত ইতি ন্যায়েন তং ব্ৰহ্মপ্ৰমং সাক্ষান্তগৰস্তমধোকজং। মহুষ্যদৃষ্ট্যা ছুম্মজা মৰ্ত্ত্যাত্মানোন মেনিরে ইত্যাদিবং। অত্র বন্ধখাদিত্যক্রমণ্ট পূর্ববদেব তত্ত ভক্তেরখরতরা ক্রিছি তৎপূর্বতঃ পূণা। যস্যান্তি ভক্তির্ভাবত্যকিঞ্চনা সর্বৈ ও গৈওত্ত সমাসতে হারা ইতি ভক্তা মামভিজানাতি ইত্যন্তভূতিসর্বজ্ঞানবৃত্তিছাং। তদ্পশ্রীতিত্ত ততোহিপি প্লাবিষ্যতে। আহে। ভাগ্যমহো ভাগ্যমিত্যাদিনা। তত্ত্ৰত নিবিশেষজ্ঞানেন অন্ধপাহুভবঃ গৌরবষয়জ্ঞানেন ঐশব্যাহুভবঃ প্রীতিময়জ্ঞানেন মাধুর্যাহুভব-ইতি। শুদ্ধপরমমধুরতাক্ষ্ঠিস্ত নির্বিশেষজ্ঞানিধুন বিদ্যুত এব। দাদেদপি গৌরবেণ ,সঙ্ক্চিতচিত্ততমা যথেইগ্রহণাশক্তে: নাতীবোৎপদ্যতে বস্তবিচারে তু দৈব দর্কতঃ দাদী আত্মারামাশ্চ মুনম্ ইত্যাদি পরিনিষ্ঠিতোৎপীত্যাদিভ্য:। তথা ব্রহ্মী ভবোৎহমপি

ক্রমসন্দর্ভ:।

ইখমিতিহয়ং॥ ১•। ১১ । ১২ । ১৩ । ১৪ । ১৫ । ১৬ । ১৭ । ১৮ । ১৯ । হ• । ২১ । ২২ । ২৩ ॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

এবং তেষাং ক্রীড়াং নির্বর্গ ব্রজৌকসামিত্যন্তরপ্লোকোজ্ঞা তদাদিব্রজবাসিমাত্রাণামের সৌভাগ্যং সর্ব্বেভ্য এব সকাশাদধিকদ্বেন ভৌতি ইথমিতি। অত্র জগতি প্রায়ন্ত্রিবিধা এব জনা গণ্যন্তে। জ্ঞানিনো ভক্তাং কর্মিণক্ষ তত্র সতাং ভক্তিমবেন সভ্লেনোচ্যমানানাং জ্ঞানিনাং। ব্রজ্ঞাত তৎস্থঞ্চ অন্তভ্তিক তরা সহেতি কৃষ্ণশরীরস্যৈব ব্রক্ষপ্রায়ন্তৃতিছং তেনৈব সহ তেষাং বিহারাৎ। ভন্মাজ্ঞানায় জ্ঞানিনাং। ব্রজ্ঞানিনামিনোহন্যে সভ্লেকনৈবোচ্যন্তে ইতি জ্ঞেরং। দাস্যং গতানাং কেবলভক্তিমতাং সতাং পর্বেবতেনেইদেবেনেতি তদানীক্তনা ব্রজ্ঞানভিনাং প্রায়োদাসভক্তা এবেতি ত এব নির্দিষ্টাং। মারাং বৈষত্নিকং স্থেমাজ্ঞিতানাং কর্মিণাং নর্মার্রকণ প্রাক্তমন্ত্র্যবালতয়া প্রতীর্মানেন ক্লজেন সহেতি বিজহুরিতি। জ্ঞানিনাং তদমুত্তর এব নতু তেন সহ বিহার: সভ্লেন। উক্তানাং গৌরবেণ তত্তজ্ঞাননের নত্ন বিহারবোগ্যতা। কন্মিণাত্তন তদমুত্তরং প্রতিভাবান্ধ তত্তজনমণি কৃতত্তেন সহ বিহার ইত্যেতে তু বিজহু; বিহারৈ তং স্থানন্ধ পরিপূর্ণমণি প্রেমবিদাসন্মানন্দবিশেষং প্রাপবৈয়ব স্বয়মণি সর্বতা বিলক্ষণমানন্দ্রিত্যর্থঃ। অতঃ সর্ব্বেভ্য: সকাশাদেতে এব ক্লতপূগ্য ইতি কিং বক্তবাং ক্লতপূগ্যপূঞ্জা এবেতি লোকপ্রতীত্যৈবোজিন

अवः প্রতিবিদ্ধ সকলের প্রতি উপহাস তথা প্রতিধ্বনির প্রতি **ভাজোশ** করিতে লাগিল॥ ৯॥

ু রাজন্ । যে ভগবান্ হরি জানিজনের পক্ষে বয়প্তাকাশ পরম ত্থবরপ, ভক্জনের খাত্রপ্রদ পরমদেবতা এবং মারাজিভ জনের পক্ষে নরবালক রূপে প্রতীয়মান হয়েন, তাঁহার সহিত গোপবালক মায়াশ্রিতানাং নরদারকেণ সার্দ্ধং বিজহুঃ কৃতপুণ্যপুঞ্জাঃ॥ ১০॥ যৎপাদপাংশুর্বহিজন্মকৃচ্ছুতো ধৃতাত্মভি রোগিভিরপ্যলভাঃ। সএব যদ্ধিষয়ঃ স্বয়ং স্থিতঃ কিঃ বর্ণ্যতে দিউমহো ত্রজৌকুসাং॥ ১১॥

ञीधत्रवामी।

রাশয়ো যেষাং তে ব্রহ্মবিদাং তদ্মুভব এব স্তব্জানাং অতিগোরবেলৈব ভজনং এতে তু তেন সহ সংখ্যন বিজ্ঞান্ত । ত্রাজামিতি ভাব: ॥ > ০ ॥

বহুভিজনভি: রুছেত: রুছেণ ধৃত আছা মনো হৈ হৈ। ১১॥

देवकवरकाषगी।

যদ্য কলাঃ কলায়। ইত্যালৈর্থগ্রজানবারিধেরপি প্রীসন্ধর্ণদ্য ভাতৃমেহপরিপ্ল ত ইত্যাদি র্বায়মাণে নর্দক্ষে যুর্ধাতে পরম্পরং ইত্যাদিভাবেডাঃ। তদেবং স্থিতে স্থিচেতদাে গৌরবাদক্চিততয়া তৎ প্রীতেশ্চ তদসংকীণছেন পূর্ণতয়া অভাববিশেষেণ চ প্রজিকশমপি বিকাশিতয়া তেন তচেত্রেশহিপি পুনস্তাদৃশতয়া প্রীকৃষ্ণে চেত আদেরপি তদদেব তথাবিধতয়া স্থীনামের রূপগুণ্-সম্মুত্বীলামাধ্র্যাণামদাধারণী ক্রিত্যের কিং বক্তবাং বারিধাবিব তত্র নির্ম্বণা মাধ্র্যামৃতসম্মুবকর্তৃষ্প স্থলীতি মাধ্র্যাক্তত্রশীভাবর্ষ দৃশাতে তর্জন ত্র ত্র দৃশ্যত ইতি সর্বেভ্যাং কৃত্রপ্ণপ্রস্থলবদ্যাংশ্চমৎকারয়তীতি। আনুট্রো। যা। প্রার্মিং পূর্ববিদ্যাধ্যায় তদানীং তদবতারে নায়াশ্রিতানাং প্রাপঞ্চিকানামপি ক্রপরা মধ্রনরাকারেণ ক্রুরতা স্মাং ভগবতেত্যাদিব্রিধ্যার। যায়াশ্রিতানাং তংরপাবিশেষমবলস্থ্যানানামিতি প্রমমধ্রতয়া ক্রুরতা তু সার্দ্ধং বিজ্যু রিত্যাদি যোজ্যং॥ ১০॥

অংহা দূরে তাবদান্তাং এবাং তেন সহ নিরম্বরবিচিত্রবিহারদৌভাগ্যমহিমা ব্রজবাসিমাত্রাণামপি তদ্দনিমাত্রদৌভাগ্যমপি পরমমহন্তিরপানৈর্বভামিত্যাই বাবদিতি। যদ্য পাদসম্বনী কুরাপি পতিতঃ পাংগুরেকোহিপি সাক্ষাৎ সএব। কিং বা পাদপাংগুরিতি কর্থকিং কশ্চিদলি সম্বন্ধোহিপীতার্থঃ। কিম্বা বদ্য পাদপঃ শ্রীবৃন্দাবনকদম্বাদিবৃক্ষঃ। যদা। যদ্য পাদে পিবন্তি সপ্রেম নিরীক্তি উত্তি তক্তবিশেষান্তেরাং অংগুর্বিতঃ কিরণচ্ছটাপি। বছভির্জমন্তি তত্র মমনিরমপ্রত্যাহারাদিকেলৈ গুড়ঃ স্থিরীকৃত্তি আয়া মনো যে:। অতো বোগিতিঃ সমাধিষ্ঠকেরপি অগভ্যঃ লক্ষ্মশক্যঃ সএব স্বয়ং ভগবান শ্রীকৃক্ষো বেষাং দৃশোবি বিরশ্চক্রিয়াং সাক্ষান্দ্শাঃ স্বয়ং স্বছাবতঃ স্বর্গপতো বা স্থিতঃ স্থিরতয়া নিত্যমন্তি। ব্যক্তি কিঞ্জিজ্বণৎ সর্বাং প্রাণ্য নারায়ণঃ স্থিত ইতিবৎ। অহো আশ্বাণে তেবাং দিষ্টং ভাগ্যং। মহা। দিষ্টদ্য মহো বিচিত্রোংসবঃ কিং বর্ণাতে বর্ণয়িয়াতে। অপিপু বর্ণয়িতৃং ন শকাতে ইত্যর্থঃ ৪১১

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

ন তু নিতাসিদ্ধানাং তেষাং নিধিলেভা জানিভাো ভজেভাশেচাংকুইতমানাং ন তত্র প্রাচীনপুণ্যবন্ধং বল্পজো হেতুরিতি জ্ঞেরং পুণ্য-শব্দেন ভগবংপ্রিয়াচরণংশা লক্ষণীয়ং তদ্ধীকারাতিশয়রূপপ্রয়োজনলাভার ॥ ১০ ॥

তেন সার্দ্ধং বিহারবার্তা দূরে তাবদান্তাং তৎসম্বন্ধিবস্তমাত্রমপি গুল ভূমিত্যাহ বদিতি। পাংগুরেকোহপি ধূলিকণ:। বদা। বস্য পাদপানাং বিহারাস্পদর্কাবনীয়র্কাণাং অংগুরেকঃ কিরণোহপি ধৃতাত্মভিরেকাগ্রীকৃতিচিত্তৈ ল'কুমনহ': নারং স্থাপো ভগবানিতি প্রেলাজে:। স্বয়ং স্থিত ইতি স্বদর্শন সাধনমন্পেক্যৈবেত্যর্থ:। দিষ্টং ভাগ্যং। বদা। দিষ্টমহঃ দিষ্টসা তেক উৎসবো বা॥ >> ॥

গণ যথন ঐ প্রকারে বিহার করিতে লাগিল তথন অবশ্যই বোধ হইবে ঐ সকল বালকের পুঞা ২ পুণা ছিল, তাহাতেই ভাহারা ভগবানের সহিত সংগ্রভাবে বিহার করিতে পাইয়াছিল। ফলতঃ অক্ষন্ত পুরুষেরা বাঁহার অন্যুভবমাত্র করেন, ভক্তজন অভিপৌরকে বাঁহার উপাসনা করিয়া থাকেন, অক্ষ্ণ বালকগণ সংগ্রভাবে যে তাঁহার সহিত বিহার করিতে লাগিল, ইহাতে তাহাদের আশ্চর্যা ভাগ্য ব্যতীত আর কি বলা যাইবে १॥ ১০॥

অথবা যোগিগণ বছজন্মপর্যন্ত কৃচ্ছাদি জ্লেড্ছারা সংয্তচিত হইরাও বাঁহার চরণরেপুলাভ করিতে পান না সেই ভগবান স্বয়ং যে সকল জ্লেরাসির দৃষ্টিগোচরে অবস্থিত হন, তাহাদের ভাগ্না যে অত্যাশ্চর্যা ইহা বর্ণন ক্রিয়া বলা বাহলামান্ত ॥ >> ॥ অথাবনামাত্যপতশাহাস্ত্রক্তেষাং স্থকীজনবীক্ষণাক্ষমঃ।
নিত্যং যদস্তনি জজীবিতেপ্সুভিঃ পীতামূতৈরপ্যমরৈঃ প্রতীক্ষাতে ॥ ১২ ॥
দৃষ্ট্রার্ডকান্ কৃষ্ণমুখান্ঘাস্তরঃ কংসানুশিষ্টঃ স বকীবকামুজঃ।
অয়স্ত মে সোদরনাশক্তরোর্ছ যোরথৈনং স্বলং হনিষ্যে ॥ ১৩ ॥

धिधतचामी।

স্থকী জন বীক্ষণে ন ক্ষমা বস্যা সংকথন্ত যেশা অন্তঃ অন্তরং ছিত্রং পীতামূতৈরপি ততে। মৃত্যুজীতৈরমরে: প্রতীক্ষাতে কথং মরিষাতি কদা বেতি। যথা কথন্ত তং স্থকী জনং যদন্ত হাদিরে অমতরং প্রতীক্ষাতে বিচিন্তাতে পীতামূতৈরপি প্ননিধিল-জীবিতে প্রতি। অয়ন্তার:। নামৃতপানমাত্রেণ জীবনং সঞ্চং ভবতি কিন্তু ভগবংলী লাম্বনেনতি তদেব নিতামন্ত ভিত্তি তি । ১২॥

কৃষ্ণমুখানর্জনান্দৃষ্ট্র স ইতি ব্যবস্যা নিশ্চিত্য আজগরং বপু ধু'বা তেবাং গ্রসনাশরা পথি ব্যশেতেতি তৃতীরলোকেনামর:। কংসেনামুশিষ্ট: প্রহিতঃ বকী পুতনা কথং ব্যবস্য তদাহ অরম্বিতি সার্দ্ধেন মম তর্মোহ যো: সোদররোহ বাং এনং ক্লফং সবলং সবৈন্যং বংসতংপালসহিতং হনিব্যামি ॥ ১৩ ॥

বৈষ্ণবতোষণী।

অথেতি ভিল্লোপক্রমে প্রস্তারসোপ্যাতকরাৎ অভ্যপতৎ সহসাভিম্থমাজগাম ততণ্চ তেষাং স্থকীজনবীকণাক্রমো ২ভূদিতি শেষ:॥ ১২॥

দৃষ্ট্রেডি ত্রিকং। অথাক্মাৎ সোদরনাশাদ্ধেতো:। অত্র মমেতি পাঠঃ সর্ব্ধ সন্মতঃ চিচ্ছুকসন্মতশ্চ বাক্যভেদাদপৌনক্ষজ্যং। অনুস্বিঃ। তত্র বহাপকে বহা পীতং প্রথেনাত্মনাৎ ক্বতং অমৃতং মোকো বৈর্মু কৈরপীত্যথঃ। কথস্কু তৈঃ। প্রীভগবন্ধীলা দর্শনার্থং নিজনীবিতেপ্সৃতিঃ চীরজিজীবিষুভিরতএবামবৈঃ স্বৃদ্ধন্দহধ্যনাশরহিতৈ লীলাবিপ্রহত্যা মৃত্যুশ্নোরিতি বা মৃক্তা অপি লীলার বিপ্রহং ক্রছা ভক্ত ইতি। প্রতীক্ষাতে অপেক্যতে। অন্যৎ সমানং॥ ১৩॥

ঐবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

এবং তত্ত্তিহারস্য প্রতিক্ষণপ্রমানল্বর্দ্ধকথাং স্বতঃ সমাপ্তাসম্ভবমাকল্য সমাপ্তিক বিনা ভোজনপানাদিকং ন সিধ্যেদিতি প্রাত্তি ভোজনসময়তারক্ষাবধার্য লীলালকৈর তি তিন্ধিকার্থ তিনিছে বিনা প্রাত্তি চিত্র তিনা কেন্দ্র কিন্দ্র কিন্দ্

কৃষ্ণম্থান কৃষ্ণাদীন দৃষ্ট্ৰ ব অবাহার: ইতি ব্যবস্য নিশ্চিত্য তেবাং গ্রসনাশর। পথি ব্যশেতেতি তৃতীয়েনারর:। বকী পৃত্সা। বনেসারমাহ অর্থিতি সার্ধেন। অরং কৃষ্ণ: মম সোদররো ন শিক্তং অথ অতএব তরোহ রো: পিঞ্চানার্থমিতি শেব: উত্তরশ্লোকার্থদৃষ্ট্যা কর্ম: স্বলং সনৈস্যং হনিয়ামি॥ ১৩॥

সে যাহা হউক, তদনস্তর এক দিন অখনামে একটা মহা জন্মর ব্রজবালকদিগের ঐ রূপ হুখ-ক্রীড়া দর্শনে অসহিষ্ণু হইরা সেই স্থানে আসিয়া উপস্থিত হইল। ঐ দানব অতিশয় চুর্দান্ত, দেব-তারা অমৃতপানে অমর হইয়াও তাহা হইতে মৃত্যুত্তয় কুরত নিরস্তর তাহার ছিদ্র অস্বেষণ করিতেন। অর্থাৎ দেবগণ স্বস্কীষনবাসনায় নিত্য ঐ রূপ করিতেন এ পাপান্থা কি প্রকারে বিনষ্ট হইবে॥ ১২॥

ঐ অষাহ্র বকী (পুতনা) ও বকাহ্মরের অনুজ, কংসকর্তৃক প্রেরিত হইয়া আসিয়াছিল। সে
কৃষ্ণপ্রভৃতি বালকর্ম্পকে অবলোকন করিয়া নিশ্চর করিল এই বালক আমার সেই ছুই সহোদ্রের
বিনাশকারী, অতএব বংসপাল সহিত ইহাকে অদ্যুই নিহত করিব॥ ১০॥

এতে যদা মৎস্কদোন্তিলাপঃ কুতান্তদা নউসমা ব্রজ্ঞাকসঃ।
প্রাণে গতে বন্ধ স্থ কা সু চিন্তা প্রজাসবঃ প্রাণভৃতো হি যে তে॥ ১৪॥
ইতি ব্যবস্যাজগরং বৃহত্বপুঃ স যোজনায়ামমহান্তিপীবরং।

গ্রান্তং ব্যাত্তহাননং তদা পণি ব্যশেত গ্রসনাশয়া থলঃ॥ ১৫॥
ধরাধরোঠো জলদোত্তরোঠো দর্যাননান্তো গিরিশৃঙ্গদংষ্ট্রঃ।
ধ্বান্তান্তরাস্যো বিততাধ্বজিহ্বঃ পরুষানিল্খাসদবেক্ষণোক্ষঃ॥ ১৬॥

श्रीशत्रश्रामी।

নমু তথাপি ব্রুত্থ অবশিষ্যেরন্নেত্যাহ এত ইতি। তিলাপ: ক্বতা ন্তিলোদকত্যা করিতা:। ব্যুস্থ দেহেরু। প্রজা এব অসবো ব্যবাং তে তথা ॥ ১৪ ॥

স যোজনায়ামং যোজনপ্রমাণেন দৈর্ব্যেণ যুক্তঞ্চ তৎ মহাজিবৎ পীবরঞ্চ। ব্যাত্তং প্রসারিতং গুহাতুল্যমাননং যস্ত্রিন তৎ ॥ ১६ ॥ অন্ত্রমিতি যত্ত্বং তদ্দর্শিরত্বং বিশিন্তি ধরায়ামধর ওঠো যস্য সং জলদেযু ভরোঠো যস্য দর্যাবিব আননস্তান্ত্রী ক্রণী যস্য সং গিরেঃ শৃঙ্গাণীব দংষ্ট্রা যস্য সং । ধ্বাস্তবং অন্তরাস্তং যস্য সং । বিততাধ্ববং জিহ্বা যস্য সং প্রধানিলবং খাসো যস্য দ্ববদীকণ্রাক্ষকঃ দাহকদৃষ্টিরিত্যুর্থঃ। প্রধানিল ধাসন্তাসে দ্বেক্ষণোঞ্চন্তে স তথা ॥ ১৬ ॥

বৈষ্ণবতোষণী।

যদা ত্রোদ্রিমনি মিত্তরোঃ তদ্বৈরগ্রহণার্থমিত্যর্থঃ নষ্ট্রসমাঃ মৃতপ্রায়াঃ ॥ ১৪ ॥ হি যতঃ ব্যবস্যার্থবেশ্যেণ অস্পন্দত্তাদিনা অশেত যতঃ থকঃ বঞ্চনাপূর্বকহিংসকঃ তাদৃশবালানাং গ্রসনে প্রবৃত্তেঃ ॥ ১৫ ॥ পদ্ধবিতি পর্বেতি বা পাঠঃ । পরুষানিলবং খাসাভ্যাং দ্ববদীক্ষণাভ্যাঞ্চ তেরু বা উষ্ণঃ ॥ ১৬ ॥

গ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

এতে রুফাদয়ো বালা মংস্কলোর্কীবকয়ো র্যদি তিলাপ: প্রেডতর্পণার্থকতিলোদকর্নপা: ক্বতা: তিলোদকতয়া করিতা: তদা ব্রজৌকসো নন্দাদয়:। বর্ম স্থ দেহেষু অনষ্টেছপি কা চিন্তা ন কাপীত্যর্থ:। যে প্রাণিনন্তে প্রকা অপত্যান্যের অসব: প্রাণা যেষাং তে অত: স্বত এব মরিষ্যন্তীত্যর্থ:॥ ১৪॥

যোজনায়ামং যোজনপ্রমাণেন দৈর্ঘ্যেণ যুক্তং মহাদ্রিবং পীবরং ব্যান্তং প্রসারিতং গুহাতুল্যমাননং যশ্বিন তং ॥ ১৫ ॥
ধরায়ামধরোঠো যস্য স:। জলদে উত্তরোঠো যস্য স:। দর্য্যৌ কলরাবিবাননস্যান্তৌ স্কণী যস্য স:। ধরাস্তমন্তরাস্যে
মুখমধ্যে যস্য স:। বিস্তৃতঃ পশ্বা ইব জিহ্বা যস্য স:। পরুষানিলবং শ্বাসো যস্য স দাবাগ্রিবদীক্ষণলোককে। যস্য সচ সচ স:॥ ১৬॥

ইহাদিগকে বিনফ করিলে ব্রজবাসি জনগণও অবশিষ্ট থাকিবে না, ইহারা যখন আমার স্থাদ্ দিগকে তিলোদকরূপে কল্লিত করিয়াছে তথন ব্রজবাসিরা ত বিনফ হইয়াই রহিয়াছে। ফলতঃ-প্রাণ গত হইলে আর দেহের প্রতি চিস্তা কি ? প্রাণধারি ব্যক্তিদিগের পুত্রই প্রিয়তরপ্রাণ, সেই পুত্র নফ হইবে॥ ১৪॥ ।

এই প্রকার নিশ্চর করিয়া ঐ থল অস্তর যোজনপ্রমাণ দীর্ঘ এবং পর্বতভূল্য পীবর আশ্চর্য্য বিশাল অজগুরদেহধারণ করিরা ঐ সকল বালককে গ্রাস করিবার আশার পথিমধ্যে শয়ন করিল। তাহার বিশ্বাল দেহে পর্বত গুহা ভূল্য আনন প্রসারিত করিয়া রহিল ॥ ১৫॥

অধর ওঠ ধরার পতিত ও উত্তর ওঠ উপরে জলধরে সংলগ্ন হইল, চুই স্কণী অর্ধাৎ ওঠের প্রান্ত-ভাগ পর্বতে গুহার তুল্য বিস্তীর্ণ রহিল। তাহার দস্তসকল গিরিশৃক সনান, মুথের মধ্যভাগ বেন গাঢ় অন্ধকার জিহনা যেন বিস্তীর্ণ বন্ধ, নিশ্বাস সাক্ষাৎ পরুষ প্রন, চক্ষুর্বরের দৃষ্টি দাবাফি-সদৃশী অতিশয় উষ্ণ ॥ ১৬ ॥ দৃষ্ট্বা তং তাদৃশং সর্বে মছা রন্দাবনপ্রিয়ং। ব্যাত্তাজগরত্তেন অুৎপ্রেক্ষতে সা লীলয়া ॥১৭॥ অছে। মিত্রাণি গদত সত্তৃত্বং পুরংস্থিতং। অস্থাংগ্রসনব্যাত্তব্যালভূভায়তে ন বা ॥ ১৮॥ সত্যমর্ককরারক্তম্ত্রাহস্ক্রদ্ ঘনং। অধরাহস্বদ্রোধন্তংপ্রতিছোয়রাক্রণং॥ ১৯॥

वीधत्रवामी।

বস্তুতোহজগরমেব ব্যান্তত্তং দৃষ্ট্। বৃন্ধাবন্দ্য শ্রীঃ সম্পদেবেতি ভ্রান্ত্যা মত্বা বিপরীতং ব্যান্তাজগরদ্য সাদৃশ্যেন তং উৎপ্রেক্ষি-তবস্ক: ॥ ১৭ ॥

উৎপ্রেক্ষামেব প্রেল্লান্তরাভ্যামাহ অহো ইতি। স্বক্টং স্বাভাস্মিদং ন বা ততাপি অস্থেশংগ্রসনায় ব্যাতং য্ব্যাসত্তং ত্র্দাচরতি ন বা ॥ ১৮ ॥

নিশ্চিতং তথৈবেত্যাহু: সত্যমিতি। অর্ককরৈরারক্তং ঘনং উন্তরৌষ্ঠ বৎ পশ্যত। তস্য ঘনস্য প্রতিচ্ছায়য়া অরুণং রোধঃ স্থলং অধুরৌষ্ঠবং পশ্যতেতি সর্কাত্রান্থেতি॥ ১৯॥

বৈষ্ণবভোষণী।

হি নিশ্চিতং। লীলগৈবেতি তথোৎপ্রেক্ষণমপি তেষামেকা ক্রীইড়বেতার্থ: ॥ ১৭॥

গদিতব্যমেবাছ: দক্ষেত্যাদিনাহন্দদিত্যাদৌ যদগ্রভাগ ইতি শেষ:॥ ১৮॥

গণতেতি কেষাঞ্চিৎ প্রশ্নং কেচিদমুমোদমানা আহুঃ সত্যমিতি যুগ্মকেন। যথার্থং বদথেত্যর্থঃ তদেবাহরর্কেত্যাদিনা গন্ধবদিত্যন্তেন অর্ককরারক্তমিতি এষাং পশ্চিমাভিমুখা গতিন্তস্য পূর্ব্বাভিমুখা স্থিতির্গমাতে প্রাতন্ত্যন্তাৎ। উত্তরেত্যতা পুষ্কাব আর্থঃ॥ ১৯॥

🗐 বিশ্বনাথচক্রবর্তী।

তম্বাস্থ্যং দৃষ্ট্। মহাসর্পব্দ্ধা কাংশ্চিৎপলায়মানানাখাসয়স্তঃ সর্কোহন্যে মন্ত্রেতি নমু রে মৃঢ়াঃ এতাবৎপ্রমাণঃ সর্পো ন সম্ভবতীত্যতো বুন্দাবন শোভাবিশেষাধায়কো জন্তবিশেষো বিধাতৈব রচিতঃ কিন্তু মহাসর্প প্রসায়িত তুগুকার ইতি নিশ্চিত্য ব্যাতঃ প্রস্তং মদা-জগরতুগুঃ তেন সহ উৎপ্রেক্ষ্যস্তে উপমিমতে লীলয়েতি ভয়াভাবঃ স্চিতঃ ॥ ১৭ ॥

কাংশিক্ষ্থ্যান্ স্থীন্ সংখাধ্য স্থানিশ্চর্য প্রামাণ্যার্থং পৃচ্ছন্তি লেহে। ইতি। সন্তক্টং নিশ্চলং প্রামিণিবিশেষঃ। ক্টোৎস্ত্রী নিশ্চলে রাশাবিতি মেদিনী।পূর্বনিপাতাভাব আর্ষঃ। যথা। গিরিশৃঙ্গৰাচকক্টশন্দেনোপমিতং ব্যান্ত্রাদিভি রিত্যনেন সমাসঃ। জন্মাকং সংগ্রসনার্থমিব ব্যান্তস্পতৃপ্তবদাচরতি ন বা॥ ১৮॥

সত্যমিতি যথা যুরং মন্যথের তথৈবেতি তে প্রত্যাহ:। অর্ককরৈরারক্তং ঘনমেতস্যোত্তরে চ্রিবৎ পশ্যত। তস্য ঘনস্য প্রতিচ্ছান্তরা অরুণং রোধঃস্থলমধুরোচন্ত্র পশ্যত। হবোরুত্তরাধরত্বাসংভবত্বাদত্ত হত্তশব্দেনোচন্ত্রং লক্ষ্যতে ॥ ১৯॥

হে রাজন্! উক্ত প্রকার বিস্তৃত বদন নিরীক্ষণ করিয়া সকল বালকই তাহাকে বাস্তবিক অজগর মনে করিল এবং এ আমাদের রন্দাবনের সম্পদ্ এই ভ্রান্তি হেড় বিপরীত্ব ব্রিয়া লীলাবশতঃ বিস্তৃত অজগরের সাদৃশ্যে তর্ক করিতে আরম্ভ করিল॥ ১৭॥

এবং প্রস্নোত্তরন্থার পরস্পার কহিতে লাগিল, অহে মিত্রগণ। বলত আমাদের অথ্যে এই যে বস্তু অবস্থিত রহিয়াছে ইহা সন্ধাভাস কি না ? এই জন্তু কি আমাদিগকে প্রাস করিবার নিমিত্ত এই ক্লপে বিস্তৃত সর্পতৃত্ত তুল্য আচরণ করিতেছে ? ॥ ১৮ ॥

তদনস্তর নিশ্চর করিয়া বলিতে লাগিল, হাঁ বটে ঐ প্রকারই সত্য, ঐ দেখ, মূর্য্যকিরণে আরক্ত নেম ইহার উত্তর ওঠের জুল্য এবং ঐ নেম্বের প্রতিছোয়ায় অরুণিত স্থল ইহার অধর ওঠ সদৃশ হইয়া আছে ॥ ১৯ ॥ প্রতিস্পর্দ্ধেতে স্কল্যাং সব্যাসব্যে নগোদরে। তু**ঙ্গশৃঙ্গালয়োহপ্যেতান্তদং ট্রাভিশ্চ পশ্য**ত॥ ২০॥ আন্ত্তান্নামনার্গোহনং রসনাং প্রতি গর্জ্জতি। এষামন্তর্গতং ধ্বান্তমেতদপ্য**ন্তরাননং ॥ ২১॥** দাবোঞ্চ্যরবাতোহয়ং খাসবন্তাতি পশ্যত। তদগদ্ধসন্তর্গদ্ধোহপ্যন্তরামিষগদ্ধবং ॥ ২২॥ অস্মান্ কিমত্র এসিতা নিবিন্টানয়ং তথা চেদকবদ্দিনজ্যতি।
ক্ষণাদনেনতি বকার্যুশশুথং বীক্যোদ্ধসন্তঃ করতাড়নৈ র্যুঃ॥ ২৩॥

औधवयामी।

স্কভ্যাং ওঠপ্রান্তান্তা বর্ত্তে নগোদরে গিরিদর্যো তদ্য দংখ্রীভি: স্পর্মানা: ॥ ২০ ॥ আন্তানামনার্নির ক্তো দৈর্ঘানা্ মার্গ: প্রতিগর্জতি প্রতিস্থিতে এবাং শৃঙ্গালাং মধ্যগতমন্থানাং আননমধ্যং প্রতিগর্জতি ॥ ২১ ॥

বৈষ্ণবতোষণী।

এতাঃ সাক্ষান্বর্ত্তমানাঃ এবমগ্রেহপি তদ্য ব্যালতুগুদ্য দংষ্ট্রাভিত্ত স্পর্কতে ইতি লেখে টীকারাং স্পর্কমান ইতি লেখকভ্রমাৎ॥ ২০॥ আরাম্মুক্তো মার্নঃ দ চান্তৃত ইতি ধ্বান্তঃ ছারাস্থকং ধ্বান্তাননমধ্যরোঃ কালবর্ণহাৎ সাম্যং॥ ২১॥

ভাতীতি পশ্যত ইতি মধ্যে বিশ্বরায় ॥ ২২ ॥
ইত্যেওলাদম্ভ: উদ্ধনম্ভ: তদ্য থলখারোপণেন। কিং বা স্বয়ং হদস্ত এব বিশেষতশ্চ শ্রীকৃষ্ণমূপং নিরীক্ষ্যোচ্চ হ'দস্ত ইত্যর্থ:
কিম্বা তবতাত্তাবহিতেন ভাব্যমিতি নশ্ববিজ্ঞাপনার্থমিব। করতাড়নৈরিতি করতালী: ক্রম্বেত্যর্থ:। তচ্চ নোকরীত্যা সর্পাপসার

প্রীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

স্ক্রভ্যা মস্য ওঠপ্রাস্তাভ্যাং প্রতিম্পদ্ধেতে তুল্যতয়া বর্ত্তে নগোদরে পিরিদর্যো)। এতা ইতি তজ্জ ন্যা দর্শগ্রস্ত স্তস্য সর্প-তুওস্য দংষ্ট্রাভিঃ ম্পর্কস্তে॥ ২০॥

আন্ত তায়ামঃ বিভূত দৈখাঃ মার্গঃ পদ্ধাঃ। রসনাং জিহ্বাং প্রতিরসনয়। সহ গর্জতি স্পর্কতে এষাং শৃঙ্গাণাং মধ্যগতমন্ধকারং কর্তু এতদপ্যস্তবাননং এত স্যাননমধ্যং প্রতিগর্জতি স্পর্কতে॥ ২১॥

তেন দাবাগ্নিনা দক্ষানাং সন্থানাং যো ছুৰ্গন্ধ: স এব সূৰ্পান্তৰ্মুতছৰ্গন্ধবন্তাতি ॥ ২২ ॥

বিলিভা: সর্ব্ধে কিঞ্চিৎ স্ভয়মান্তরশ্বানিতি। আয়ং যদি সতা এব সর্প: সাদিতি ভাব:। তয়ধ্য এব কে চিদাখাসরস্ত আছ: তথা
চেৎ ক্লণমাত্রাদেব আনেন ক্ষেত্রন হল্লা বক ইব বিনাশং প্রাপ্সতি ইতৃক্। বকারে দ্রিছিত্সা মুথং বীক্ষোতি আমন্টিগোচর এব
ক্ষা আতে কা চিস্তেতি লক্ষবিখাদা উদ্ধন্ধ ইতি এত দিলমধ্যে কিমপ্যতি ভো: স্থায়স্তদ্বশ্যং পশ্যাম ইতি বাল্যচাপল্যত

আর বাম ও দক্ষিণ দিকের তুইটা গিরিগুহা ওষ্ঠ প্রাস্তভাগের সমান দৃষ্ট হইতেছে, অপর পর্ব-তের এই অত্যুক্ত শৃঙ্গরাজী ইহার দন্তপঙি্ক্তর সহিত স্পর্ধা করিতেছে॥ ২০॥

অধিক্সত, দীর্ঘতা বিশিষ্ট স্থবিস্তীর্ণ মার্গ ইহার রদনার সহিত তুল্যতা আর এই সকল শৃঙ্গের মধ্যগতে অন্ধকার ইহার মুখাচ্যুস্তরের সহিত স্পর্দ্ধা করিতেছে॥ ২১॥

অপিচ, দাবানলে উষ্ণ এই খর পবন ইহার নিখাদের ন্যায় প্রকাশ পাইতেছে, অতএব এ দাবা-খিতে দশ্ধ প্রাণিসকলের যে তুর্গন্ধ তাহাই সর্পের অন্তর্গত আমিষ গদ্ধের সদৃশ বাহির হইয়া আসি-তেছে। ২২।

এই প্রকারে বাস্তবিক অজগরকে অজগরত্বা বিতর্ক করিয়া পরে কহিতে লাগিল, এ কি এখানে আমাদিগকে প্রাস করিবে? আমারা ত বিনষ্ট হই না, এ যদি আমাদিগকে বিনষ্ট করিতে চাহে বকাস্থরের আয় অস্থরহন্তা এই জ্রীকৃষ্ণকর্ত্ক কণকালমধ্যে আপনিই বিনষ্ট হইবে। ইহা বলিয়া বকারি ভগবান জ্রীকৃষ্ণের কমনীয় বদন অবলোকন পূর্বক হাস্ত করিতে করিতে করতালি দিয়া বজ-বালক সকলেই তদ্মধ্যে প্রবেশ করিল॥ ২০॥

ইখং নিথোতখ্যমতজ্জভাষিতং শ্রুত্বা বিচিন্ত্যেত্য মুধা মুধায়তে। রক্ষো বিদিত্বাথিলভূতছৎস্থিতঃ স্থানাং নিরোদ্ধুং ভগবাদ্মনো দধে॥ ২৪॥ তাবৎ প্রবিক্টাস্ত্রস্থরোদরাস্তরং পরং ন গীর্ণাঃ শিশবঃ সবৎসাঃ।

वीधतवामी।

অনুষা বস্ততঃ সর্পবপুরস্কর এব মুষায়তে স্বানাং সর্পদাদৃশ্য গোচরবেন প্রতীয়ত ইতি তান্নিরোদুং বার্যিজুং যাব্মনো দধে তাবং প্রবিষ্ঠা ইত্যন্তরেণাষ্যঃ ॥ ২৪ ॥

প্রবিষ্টা এব কেবলং নতু তেন গীর্ণা গিলিতা:। স্বীর্ণা ইতি পাঠে সএবার্থ:। কথস্কুতেন হতস্বকয়োরস্তঃ মরতীতি তথা তেন

देवकवटजावनी।

ণার্থমিব নির্ভয়ত্বেন নিজবীরদর্পপ্রকটনার্থমিব চ যযুরগ্রতোহধাবন্ধিত্যর্থঃ॥ ২৩॥

ইথমুক্ত প্রকারং স্থানাং স্থীয়ানামপি মিথেহিতজ্জানাং ইব ভাষিতং অতএবাতথ্যমবণার্থ শ্রুতা যতোহমুষা সত্যং ব্যান্তাজগর-তুওমপি মৃষায়তে বৃন্ধাবনশ্রীত্বন ভাষতে। অহে। আন্চর্যামিতি। কিঞ্চনত্বয়ং কেবলমজগরোহপি কিন্তানা রাক্ষ্য ইতি বিদিশ্ব কুতঃ অথিলজ্তহদি হিতঃ পরমাত্মতাং এবং সর্বপ্রবর্তকোহপি ভগবান্ সর্বৈশ্ব্যুক্তাহপি তান্নিরোজ্ং মনো দধে ইছ্যিকরোং॥ ২৪॥

যাবন্মনো দধে তাবৎ সবৎসাঃ শিশবং প্রবিষ্টা ইত্যাদিকং তম্ভ বাহলীলাবদবাস্তরলীলা সা চ প্রিয়ন্ত্রনপ্রেমরদাবেশমরীতি পূর্ববৎ দিদান্তপদ্ধতিঃ অন্তথা সত্যসংকর্মভ জ্ঞানবন্দৃর্ভ্তেমভ তদসন্তবাৎ। বংসানাং প্রবেশশ্চাত্র পশ্চাৎ ছিতানাং বালানাং করতাড়নেন ধাবনেন চ বিদ্রাবণাৎ। অতএব তৎপ্রসম্ভেন বালানাং তত্ত্বয়ানকতমো দাবাগ্নিময়ত্বেনাত্যস্তপ্রবেশমনিচ্ছতামপি তত্ত্দরমধ্যপর্যন্ত-গমনং। তেবামসংখ্যানাং তত্র সমাবেশন্ত লীলাশক্তিপ্রভাবাদেব জ্ঞেরঃ। নিগীর্ণাঃ মুখ্সকোচনাদিনা ন নির্দ্ধা ইত্যর্থঃ।

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্ত্বী।

কৌভুকোল্লাসাং। করতাড়নৈরিতি নিজনিভয়খবীরথদ্যোতনায়। স্পাশসারণার্থং বা য্যুরধাবন্ বংসা অশি পৃজ্জাত্দাম্য তান্যধাবলিতি জ্ঞেয়ং ॥ ২০ ॥

মিথ: পরস্পর: অতজ্জানাং ভাষিতং অতথ্যং অযথার্থ শ্রন্থা। অমৃষা সত্যমেব সর্পতৃত্তং হস্ত হস্তৈষাং মৃষায়তে নেদং সর্পতৃত্তং কিন্তু বুলাবনশ্রীরিতি প্রতীতীভবতীতি বিচিন্তা। কিঞ্ন কেবলং সর্পোহপি কিন্তুৰনামকং রক্ষ ইতি বিদিন্ধা। কুতঃ অধিসভূত- হৃদি স্থিতঃ প্রমান্ত্রন সর্বজ্ঞাং স্থানাং স্থানাই বিরোধ্যু ধারারিত্থ মনো দধে॥ ২৪॥

যাবন্ধনো দধে তাবদস্থরস্যোদর মধ্যং প্রবিষ্টাঃ কিন্তু নগীণা রক্ষণা ন গিলিতা জীণা ইতি পাঠেহপি স এবার্থ ইতি স্বামিচরশাঃ। কীদৃশেন হতৌ স্বকৌ বকীবকৌ অন্তর্গুংকরণেন স্বরতীতি তথা তেন অতএব বকারেঃ ক্ষণ্ধ্য প্রবেশং প্রতীক্ষমাণেন। ন চাত্র ভগবতঃ সত্যসন্ধরতা ব্যভিচরতি স্বেত্যাশন্ধনীরং। অস্থান্ কিমত্র গ্রাসিতা নিবিষ্টানরং তথা চেন্ত্ববিদ্দক্ষ্তীতি তত্তক-সন্ধর্মাণ্যত্ব বর্তমানস্থাৎ মংসন্ধর্মন্তক্ষসন্ধর্মাণ্যত্ব বর্তমানস্থাৎ মংসন্ধর্মন্তক্ষসন্ধর্মা মধ্যা-

হে রাজন্! অধিল প্রাণির হাদরন্থিত ভগবান্ হরি অতজ্জ অর্থাৎ ত্রিষয়কজ্ঞানবিহীন বালকদিগের ঐ প্রকার পরস্পার ক্ষিত বাক্য প্রবণ ক্রিয়া চিন্তাদারা অবগত হইয়াছিলেন, বাস্তবিক সর্পশ্রীর
ঐ রাক্ষ্যটা আমার আত্মীয় ঐ সক্ল বালকের নিক্ট সর্প সাদৃষ্টে প্রতীয়মান হইতেছে, অতএব তিনি
তাহাদিগকে নিবারণ ক্রিবার নিমিন্ত যাব্ধ মনঃ স্থির ক্রিতেছিলেন— ॥ ২৪ ॥

তাবৎ সেই সকল শিশু বৎসর্ক সহ ঐ অহুরের উদরমধ্যে প্রবেশ করিল, কিন্তু তাহারা কেবল প্রবিষ্ট হইল, সেই সর্পশরীর অহুর তাহাদিগকে গিলিয়া ফেলিল না, কারণ সে মনোমধ্যে আশনার প্রতীক্ষাণেন বকারিবেশনং হতস্বকান্তঃ স্মরণেন রক্ষা ॥ ২৫ ॥
তান্ বীক্ষ্য কৃষ্ণঃ সকলাভয়প্রদাে হ্নন্যনাথান্ স্বকরাদপ্র্তান্।
দীনাংশ্চ মৃত্যোর্জিচরাগ্রিঘাসান্ স্বণাদিতো দিষ্টকৃতেন বিস্মিতঃ ॥ ২৬ ॥
কৃত্যং কিমত্রাস্থ খলস্ঞীবনং ন বা অমীষাঞ্সতাং বিহিংসনং।

विधवनामी।

অতএৰ বকারে: 🔊 কৃষ্ণস্য প্রবেশং প্রতীক্ষাণেন ॥ ২৫ ॥

অক্রাদপচ্যতান্ বিনিঃস্তান্ বিলিডঃ সন্কুডাং কিক্তেত্যাদি বিচিন্তঃ তজোপায়ং জ্ঞারা অৱমপ্যবিশদিত্যকঃ ॥ ২৬ ॥ • কথং বিচিন্তা অস্যু অধুস্য জ্মীবনং অমীবাঞ্চ বিহিংসন্মিতি ছয়ং কথং বৈ নিশ্চিতং ন স্যাদিতি ॥ ২৭ ॥

टेवकबटडावनी ।

ন জীণা ইতি পাঠে জার্ঘিতুং নেষ্টা ইতার্থঃ। অন্তত্তঃ। তক্র সত এবার্থমুখসকোচনান্সমোটনাদে জারণেচ্ছাময়ত্বাং॥ ২৫॥

সত্তব বিশ্বসাভ্যপ্রদাত। বিশেষতশ্চ তানহন্তনাথান্ স্বক্রাদপচ্যুতান্ নিজাভ্যহন্ততো দ্রগতান্ সত্তব দীনান মরণেন নিজবিচ্ছেদশল্পয়া আর্ত্তান্ কিঞ্চ মৃত্যুত্ল্যাঘাস্থ্য জঠরাগ্রেষ্ণাদান্ বাহাগ্রে স্থাবদত্যন্ত্লাহ্তানিব গভান্ বীক্ষি দিইত প্রারন্ত ক্ষতেন ফলেন ইত্যথ:। এডচ্চ লোকবলীলারসময় এভগবভাবনাম্পারেণের। বন্ধতন্ত দিইং বাঁবতারে নিয়তনালাবরণশক্তি:। যথা দিইং প্রমাণাহ্যা মতি:। অন্ত নান্তি দিইং মতিরিতি পাণিনিক্তে তথা ব্যাখ্যাত্থাৎ। তচ্চাস্থান্ ক্রিমত্ত প্রদিত্তাদিলক্ষণমেব তেন যৎ কৃতং তেন বিশ্বিত: অহো বত মদ্ধ্রে মদীরানাং নিক্ষামানানামেষামপ্যেবং ফলভীতি বিশ্বং প্রাপ্ত:। অথবা। সদা স্বের্ম্থাজ্ঞোহণি হংখেন বিগত্তিত বিষ্মুখে বভ্বেত্যর্থ:। অথবা তব্তা হতথাভূতানপি স্থাদিত্ত স্ক্রাদ্রে নিপত্তিতান্ হংখিতান্ মৃতপ্রাযাংশ্চ বীক্ষাহন্য অন্ত নাথান্ ইতি স্থাদিত্ত হে হেছু:। স্থান্মতং ॥ ২৬ ॥

তুওং থলস্তৈব তত্ত অশেষং থলমরণস দক্ষণ য়ো তথা তক্ষ্কে নিজবিহারাদেশ প্রকারং পশ্রতীতি তথা সঃ। यहा। অশেষান্বং

ক্রমসন্দর্ভ:।

দিষ্টমিতি মাতুষণীলাতুসারোক্তি:॥ ২৬। ২৭। ২৮। ২৯। ৩০॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ষবন্তী।

माया खर्था नीलागटकम् मर्स्सापमिन्नाः मस्मा खांशक्रकषाः ॥ २६॥

স্বকরাদিব নহামণীনিব অপচ্যতান্। মৃড্যোরঘাররসা; জঠরাগ্রো বাসান তৃণবং পতনোম্থান্ বীক্য য়ণ্যা রপর। অর্দিতঃ পীড়িতঃ দিইকতেন লীলাশক্যমক্লকালকতেন তংপ্রদেশকর্মণা বিশ্বিতঃ। কালো দিয়ে হণ্যনেহাপীত্যমরঃ। অহো ন তাবদেশং প্রারক্র্মণ সম্ভবতি নচ ত্রিনাপ্যক্র কর্মণ্যন্ত্র্যামী প্রবর্ত্তয়েৎ তস্য মংস্বরূপত্বন মংপ্রাতিক্ল্যান্ত্র্যাম প্রাতক্ল্যাহণ্যনানারাঃ প্রেমপূর্ণং মাং কর্মণ্রসনিমন্ত্রীকর্জ্বামায়া মদীয়লীলাশক্তেরেবেরঃং কর্ম নির্দিশিক্ষোত্তরে রসময়ম্রেট্র তস্যা এবৈতাবৎপ্রভবিষ্ণ্ত্রমিতি বন্ধবিজ্ঞেদশোকার্ত্তথেহপি বিশ্বয়েনেমং জিমিতোহভূদিত্যর্থঃ ॥ ২৬ ॥ ক্র সমটে কিং কৃত্যং অস্য ধ্লস্য জীবদং ম স্যাৎ। বৈ নিশ্চিতং। অমীশং বিহিংসন্ক ন ভাদিতি বন্ধং কথং স্যাদিতি

নিহত সেই ছই আত্মীয় পূতনা এবং বকাহ্নরের অন্ত সারণ করিয়া শ্রীক্ষের প্রবেশ প্রতীক্ষা করিডেছিল॥ ২৫॥

সে যাহা হউক, সকল লোকের অভয় দাতা ভগৰান হরি অভনাথবিহীন সেই সকল দীন বালকদিগকে আপনার কর হইতে অপচ্যুত (নিঃস্ত) এবং মৃত্যু—অবাহ্মরের জঠনানলের ত্নীভূত
হইতে দেখিয়া অতিশয় বিন্মিত হইলেন এবং ইহা দৈব নিবন্ধনকর্ম বলিয়া অত্যক্ত শীড়িত হইছে
লাগিলেন ॥ ২৬ ॥

🗣 औरत ''मिटे थरलक जीवन अवर के सकत माधूब हिश्मन'' अहे हुईंगे कर्च कि क्षकारत नो इस जर्नक

দ্বং কথং স্থাদিতি সংবিচিন্তা আদাবিশন্ত গ্রমশেষদৃগ্যরি: ॥ ২৭ ॥
তদা ঘনচ্ছদা দেবা ভয়াদাহেতি চুকুশু:। জহুৰু র্যে চ কংসাদ্যাঃ কৌণপাস্থযবাদ্ধবাঃ ॥ ২৮ ॥
তচ্ছুত্বা ভগবান্ কৃষ্ণস্বকায়ঃ সার্ভবৎসকং। চুণী চিকীর্ষোরাত্মানং তরসা বস্থে গলে ॥ ২৯ ॥

व्यिषत्रवामी।

ঘনচ্ছদা নেবান্তরিতাঃ কৌণপাঃ কুণপাশিনো রাক্ষসাঃ কুণপো নিশ্বতি তদীয়া ইতি বা ॥ ২৮ ॥ চুৰ্ণং কর্তুমিচ্ছো তদা গলে আদাবেব তর্সা বরুধে অবর্দ্ধত ॥ ২৯ ॥

বৈষ্ণবতোষণী।

বালকান্ পঞ্চন্ সন্ তেষাং তাদ্গবস্থা ক্লেহাকুলভাদবিশৎ ইত্যর্থ:। এবং তেষাং ছ:খহরণাৎ বীনাহরণাচ্চ হরি: ॥ ২৭ ॥

খনচ্ছদা: কংসাদঘাক ভ্যাং চকারাং অস্তে চ হুঙা: কংসস্ত দৈত্যত্ত্বেগি কৌণপদ্ম। অতিহুইছেনাতেদ্বিব্দ্রা কংসাদবো দৈত্যাস্তে চ তেবাং সর্বেবাং হর্ষো ভগবদ্বেশ্বভাবেন এব ছর্মানসোলাসোৎপত্তে:। কিয়া। তত্ত্বৈ তেবাং আগ্রমনাৎ কংস্ত চ সদ্য এব চরমুথে প্রবণাদিতি জ্ঞেরং॥ ২৮॥

তৎ হাহেত্যাক্রোশনং চ্ণীচিকীর্ষোম্থসম্বরণগাত্রমোটনাদিনেতি শেষঃ। বর্ধে তহা মুথাসম্বরণায় বধোপায়াম চ গলবিবর-মার্ণুন্ কীলতয়া মহাস্ট্লো বভূবেত্যথাঃ। যতো ভগবান্ দকৈম্বর্যপূর্ণা অতঃ কথমপি ন ব্যেতি হীয়ত ইত্যনিষ্টশম্পি সর্কা নির্দ্ধা। বহা। কিমর্থা বর্ধে তত্রাহ ন ব্য়য়ঃ কোহপ্যপচ্য়ো ভক্তানাঃ যন্ত্রাই বালকাদীনাং রক্ষার্থমিত্যর্থাঃ। তত্র হেতুঃ। কৃষ্ণঃ ভক্তাকৃষ্ট ইত্যর্থাঃ॥২৯॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

সংবিচিস্তা তত্র সহসৈবোপায়ং জ্ঞান্ধা তুওমবিশং। যতেছিশেষদৃক্ এবংক্কতে সত্যেবং ভবিষ্যতীতি ভাবি সর্বাং পশাতীতি সং। স্বাহকবিপদঃ থলন্ধীবনসংসারয়োশ্চ হ্রণান্ধরিঃ ॥ ২৭॥

ঘনচ্ছদা মেঘাস্করিতা: কংস্যাঘ্দ্য চ ভয়াৎ হা হেতি ভগ্বত্যানিষ্টাশ্বস্থা। দেবানামেখণ্টজ্ঞানেছপি ভক্তত্বাৎ ভক্তেশ্চ প্রীত্যাত্ম
কি তাৎ প্রীতেশ্চ বিবেক্ত্রত্বভাবত্বাই কংসাদ্যা অহ্বস্থাতি চরন্ধারা সদ্যুএব বার্ত্তান্ধাৎ। কৌণপা রাক্ষ্পা: অঘাস্থ্রভ্রাতৃষ্পুত্রাদর: ॥ ২৮ ॥

তৎসাধনাং শোকজন্মসাধ্নাং হর্ষজন্মক শ্রুতা অন্তৈ ব'ংলৈচ সহিত্যাত্মানং শ্যামহন্দরশ্বরূপং উদর্হীকৃত্য চুণী চিকীর্বোরজ্ঞ গলে বর্ধে। তাবেব শোকহর্ষে বৈপরীত্যেন শ্রোত্মিতি ভাবং। নহ। শকটত্পাবর্ত্তবধদামবন্ধনাদিলীলারাং জোকেনৈব বালবপুরা কিঞ্চিদপ্যবর্ধমানেন তত্তত্যাপ্তিচঞ্চোঃ শ্বরং ভগবতো বিভোরস্ত কিম্বান্থরকণ্ঠরস্কু ব্যাপ্তিরশক্যা যতে। বর্ধে ইস্কুচ্যতে সত্যং। তত্ত্ব তত্ত্ব নরবাললীলম্বলক্ষণমাধুর্যাস্য বিশ্বররসাধায়কস্য ভক্তজনলোচনাস্বাদ্যধাদ্যোকিকং ভাদৃশব্বে সমুচিতং। শত্ত্ব তাদৃশমাধুর্য্তাহক্তপ্ত্বনাভাবাং শ্বরং ভগবতাপি তেন লোকিক্ষ্যের রীতিরালশ্বে ইতি জানীমঃ॥ ২৯॥

কণ ভাবিয়া তদ্বিদের কোন প্রকার উপায় স্থির করত অবশেষে আপনিও সেই সর্পের ভূত্রমধ্যে প্রবেশ করিলেন ॥ ২৭॥

হে রাজন্! শ্রীকৃষ্ণ অজগররূপি-অঘাহ্নরের মূখুমধ্যে প্রবিষ্ট হইবামাত্র দেবতাসকল মেঘব্যবধানে থাকিয়া ভয়প্রস্কুত হাহাকার করিয়া চিৎকার আরম্ভ করিলেন' কিন্তু অঘাহ্রের বাদ্ধব
যে সকল কংসাদি রাক্ষ্স, তাহাদের হর্ষের আর পরিসীমা রহিল না ॥ ২৮॥
•

দেবতাদের 'হো হা রব''শুনিরা ঐ অহ্নেরর দেহ চূর্ণ করিতে ভগবানের ইচ্ছা হইল অতএব বাল-ক্যণও বৎসগণ সহিত নিজাবর্বকৈ ভাহার গলদেশে বর্ষিত করিতে লাগিলেন॥ ২৯॥ ততোহতিকায়স্থ নিরুদ্ধমার্গিণে হাদুদ্যীর্ণদ্রে বিনির্গতি বিভিন্ন বিনির্গতি বহিঃ ॥ ৩০ ॥
পুর্নোহন্তরঙ্গে পবনো নিরুদ্ধে মৃদ্ধন্ বিনির্ভিদ্য বিনির্গতি বহিঃ ॥ ৩০ ॥
তেনৈব সর্বের্ বহির্গতের প্রাণের বৎসান্ স্কুদঃ পরেতান্ ।
দ্কী ব্যাপাপ্য তদ্ঘিতঃ পুনর্বক্ত্রামুক্দেন ভগবান্ বিনির্যা ॥ ৩১ ॥
পীনাহিভোগস্থিতমন্তুতং মহচ্জ্যোতিঃ স্বধান্ধাক্ষ্লায়দিশো দশ।

প্রীধরত্বামী

নিক্ষনো মুথাদীনাং মার্গভূতঃ কঠে। যস্যান্তি তৃদ্য উদ্গীণদৃষ্টেবহিনি গতলোচনস্য অন্তর্তক দেহমধ্যে পূর্ণঃ পরিভূতঃ মুর্দ্ধনি এক্ষরজুং বিনির্ভদ্য বহির্গত ইতি॥ ৩০ ॥

প্রাণের ইন্দ্রিয়ের স্বরা অমৃতবর্ষিণা দুট্ট্যৈর ॥ ৩১ ॥ অহিদেহে হিতং শুদ্ধসন্তময়ং জ্যোতিনি র্গতং থে অবস্থিতং তল্মিলীশে বিবেশ ॥ ৩২ ॥

বৈষ্ণ বজোষণী।

হি এব ততন্ত্ৰপাৰ্দ্ধনাদেব। তুচ। ইতন্ততো ভ্ৰমতশ্চ কুত্ৰ স্থান্তামি বেভি ব্যগ্ৰং ৰিচাবয়ত শ্চেত্যৰ্থ:। পূৰ্ণৰে হেত্যু নিক্দ্ধ ইতি প্ৰনঃ প্ৰাণবায়ং অতিকায়ভেতি প্ৰনম্ভ বৃহত্তরত্বং তেন মূৰ্দ্ধভেদন্তাপি তদভিশ্ৰেতত্বং। অতএব বিশব্দয়ং। মূৰ্দ্ধনি। স্থিতং ব্ৰহ্মবৃদ্ধ মিত্যৰ্থ: ॥ ৩০ ॥

তেন প্রনেটনর সহ এক্ষরক্ষারেণ বা ভগবন্ধরলীলাক্করণেন পরেতানির ক্ষণং তদদৃষ্ট্যা মৃতত্ল্যানির নিজমধুরলিগ্ধদৃষ্ট্যা উত্থাপ্য চেষ্ট্রিয়া মুকুন্দো হ্যান্থরস্য সংসারাম্ক্রিং স্থলাঞ্চাঘান্মক্রিং দদদিত্যুর্থ:। যতো ভগবান্ জগিজতার্থং স্বয়মবতীর্ণ: প্রমেশ্বরঃ তদস্থানক্ষ তৎপশ্চাদিতো বক্তাং বিনোদেন নির্যা। ৩১॥

পীনাহিভোগোথিতমিতি তু পাঠো মূলেৰু দৃখ্যতে ভোগস্থিতমিতি তু টীকায়ামেব। অভুতং অনিৰ্বাচনীয়ং মহৎ প্ৰকাশবাছল্যাৎ।

ক্রমসন্দর্ভ:।

পরেতানিতি নরলীলামুসারেণ বস্তুক্ত শ্রীকৃষ্ণবিয়োগছঃথৈনৈব মুচ্ছিতান্ চিচ্ছক্ত্যালিকিতত্বাৎ॥ ৩১॥ জ্যোতীরূপং তথা দর্শনঞ্জমহিমব্যক্ত্যুৰ্থং॥ ৩২॥ ৩১॥ ৩৪॥

🖣 বিশ্বনাথচক্র বর্ত্তী।

নিক'ছে। মুখালীনাং মার্গভৃতঃ কঠে। যদ্যান্তি তদ্য উদগীর্ণদৃষ্টে ব'হিনি গতলোচনদ্য অন্তর্কে দেহমধ্যে নিকছঃ পবনঃ প্রাণবায়ঃ নির্গমনাভাবাং পূর্বঃ। মুর্জন মুর্জনি স্থিতঃ একারজুং নির্জিদ্য বহির্গতঃ॥ ৩০ ॥

পরেতান্ স্ববিরহ তজ্জাঠরানলয়োজ্ঞ লিয়া মৃদ্ধিতোন্ দৃষ্ট্যা অমৃতবর্ষিণ্যা॥ ৩১॥

জ্যোতিরহিদেহে স্থিতং শুদ্ধসন্থময়মিন্তি শ্রীস্থামিচরণাং। তাদৃশহুইস্যাপি তদ্য মুক্তে: সর্বলোকপ্রত্যায়নার্থং জীবস্য নিরা-কার্বিহুংপি তৎকালপ্রাপ্তজ্যবৈদ্ধক্যালিঙ্গিতত্বাত্তথা দৃশ্যভ্বমিতি শ্রীবৈশ্বতোষণ্যাদয়ঃ। পরব্রহ্মণো ব্যাপকমহাজ্যোতিঃ স্বরূপমিব

তদনস্তর অতিকায় সেই অঘাস্থরের মুথাদির মার্গভূত কণ্ঠ নিরুদ্ধ এবং লোচন বহির্গত হইল। সে ব্যাকুল হইয়া ইতস্তত ভ্রমণ করিতে লাগিল। অবিলম্বেই ভাহার দেহ মধ্যে প্রন নিরুদ্ধ হইয়া পূর্ণ হইল এবং ব্রহ্মরন্ধু ভেদ করিয়া বাহির হইয়া গেল॥ ৩০॥

হে রাজন্! বায় বহির্গত হইবামাত্র তাহার সঙ্গে সমুদায় ইন্দ্রিয় নির্গত হইল। ঐক্তি দেখি-লেন আপনার সমস্ত হুছদ্ বয়স্তগণ প্রাণ শৃষ্ট হইয়াছে, অতএব অম্ভবর্ষিণী স্বীয়দৃষ্টিমারা জীবন-দানপূর্বক উথিত করিয়া তাহাদের সহিত মিলিত হওত নির্গত হইয়া আসিলেন॥ ৩১॥

হে ভারত। ঐ সর্পের স্থলদেহস্থ শুদ্ধস্বময় অত্তুত মহজেরাজিঃ স্বীয় তৈজে দশ দিক্ প্রজ্বলিত করত ভগবানের বিনির্গম প্রতাক। করিয়া আকাশে অবস্থিতি করিতেছিল। ভগবান্ প্রতীক্ষ্য বেথবস্থিতমীশনির্শ্বনং বিবেশ ভস্মিন্ মিষতাং দিবৌকসাং ॥ ৩২ ॥ ততোথতিহুক্তাঃ স্বন্ধতোথকতাহ ণং পুল্পৈঃ স্থরা অপ্যরমঃ স্থনন্ধতাঃ। ৩০ ॥ গীতৈঃ স্থগা বাদ্যধরাশ্চ বাদ্যকৈঃ স্তবেশ্চ বিপ্রা জয়নিস্বনৈ র্যণাঃ॥ ৩০ ॥ তদভূতস্তোত্রস্বাদ্যগীতিকাজয়াদিনৈকোৎসবমঙ্গলস্থনান্। প্রত্যান্ধ স্থাক্ষাত্তা হচিরাদ্ ফ্রা মহীশ্স্য জগাম বিস্ময়ং॥ ৩৪ ॥

এধরস্বামী.

বক্ত: বকার্যাক্ত: প্রীক্ষাস্যার্হ নিষ্কৃত পূজামকুর্বন্। স্থগাঃ স্বর্গ গায়স্তীতি গদ্ধবিদয়: ॥ ৩০ ॥ কিঞ্ তেবাং বানি অন্তস্তোত্রাদীনি নৈকোৎসবা অনেকোৎসবা যে মঙ্গলখনা স্তান্স্থাদ্যোৎস্তি ক্লমীপে প্রতা অজো এক্ষা অচিরাদাগত ঈশস্য প্রীক্ষাস্য মহি মহিমানং দৃষ্ট্য বিশ্বয়ং প্রাপ ॥ ৩৪ ॥

বৈষ্ণবতোষণী।

দিবৌকসাং ইত্যনাদরে ষণ্ঠা। বহা। প্রমাশ্চর্যোণ তেষু পশ্রতংশ ইত্যথং। তাদৃশহুইস্যাপি মৃক্তে: অতীন্ত্রিরায়া মৃক্তিপ্রাপ্তের্দর্শনাচ্চ। তথা তদ্ধনক ব্রহ্মাদীনামসন্দেহায়। সচ বিষয়ার্থং। তচ্চ জ্যোতিন্তংকালপ্রাপ্তভগবচ্ছক্তিম্যমেব জ্রেয়ং জীবস্য নিরাকারতাং॥ ৩২॥

ততঃ সপবিকরের নির্নমাৎ বাদ্যধরা: বিদ্যাধরাদর:। বারিধরা ইতি বা পাঠ:। বিপ্রা: শ্রীনারদাদর:। গণা: শ্রীগরুড়াদয়:॥ ৩৩॥ অদুতত্তোত্রাদীন্ শ্রুতা স্বধায়: সকাশাদন্তি শ্রীকৃষ্ণস্য সমীপে ২চিরাৎ শীত্রং আগতোহন্ত ক্লিস্য মহি মাহান্ম্যং তথুকি প্রদানলক্ষণ: কুরাপান্তত্ত তাদৃশস্যাদৃষ্ট: দৃষ্ট্। ইত্যাদি যোজ্য:॥ ৩৪॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

জীবস্যাপি জ্যোভিঃসরপং মারিকলোচনালম্যমপি তদানীং ভগবতা স্বেচ্ছবৈর স্বস্তুরপমির স্বস্থাস্থরমূক্তিপ্রদাযকত্বলকণ ওণ্যা সর্বলোকপ্রত্যক্ষীকরণার্থং দর্শিতমিত্যেকে। প্রাণাস্থামামিতি ভাগবতীং গতিমিত্যুপরিষ্টাহক্তে রঘাস্থরং সারপ্যমৃত্যিং প্রাণ ন তৃ সাব্জামিত্যত তৎকণপ্রাপ্ত তদীয় চিন্ময়দেহজ্যোতিরেব তৎ। দেহন্ত জ্যোতির্ভ্রন্তা ক্রষ্টুংশক্যো নাভূৎ। ভগবতি প্রবেশন্ত সাগৃজ্য-প্রথাবতোঃ শিশুপালদন্তবক্রয়োরিব ক্রেয় ইত্যপরে মিবতাং মিবৎস্থ সংস্থাণ। অনাদরে বা ষ্ঠা॥ ৩২ ॥

বিক্তঃ স্বস্তুঃ শ্ৰীক্ষাস্য সহৰিং পূজাং সকৃত সকৃষত। স্কুগায়তীতি স্থা গন্ধনাদয়ঃ। বাদ্যধরা বিদ্যাধরাদয়ঃ বিপ্রা বিশিষ্ঠান্দরঃ। গণা গরাড়াদয়ঃ ॥ ৩০ এ

অত্তত্তাত্রাণিচ স্থাদ্যানিচ গীতিকা: স্কুমারা গীতর ক্ষাদর কৈ নৈকোৎসবা অনেকোৎসবা নললপ্রনান্চ তান্। প্রধায়ঃ সতালোকস্য অন্তি নিকট এব প্রতেতি মহর্জন স্তপোলোকস্থা অপি পরশার কৈব প্রতি লিকট এব প্রতি তেয়ং। প্রতা অলো ব্রক্তির অচিরাৎ সদ্য এব অবাস্ত্রস্য জ্যোতিবৈক্তিং প্রতি গছদেব ঈশস্য মহি মহিমানং দৃষ্ট্ আগতো অন্যেরলক্ষ্যাণো বৃন্ধাবন-মেব। তত্ত্রচ ঈশস্য মহিমানং দৃষ্ট্ বিশ্বরং প্রাপ॥ ৩৪॥

নির্পত হইবারাত্ত দর্শনকারি দেবগণসমকে তাহা সেই ঈশে (শ্রীকৃষ্ণে)। গিয়া প্রবেশ করিল ॥ ৩২ ॥
তদনস্তর দেবগণ অতিশয় হাউ হইয়া পূজা বর্ষণ দারা আপনাদের কার্য্যকারি ভগবান্ হরির পূজা
করিলেন। আর অপ্সরা সকল মনোভাবন বাদ্য, নারদাদি বিপ্রবৃদ্ধ স্তব এবং গরুড় প্রভৃতি জয় শব্দ
দারা যথোপযুক্ত পূজা করিতে লাগিলেন॥ ৩৩ ॥

হে মহারাজ ! আপনার ধাম স্মীপে সেই সকল আশ্চর্যা ন্তব্, গীত বাদ্য, জয়শক তথা অনেক উৎসব স্বরূপ মঙ্গলাধনি প্রবণ করিয়া ব্রহ্মা তৎক্ষণাৎ তথায় আগমন করিয়াছিলেন কিন্তু প্রমেশ্র শ্রীকৃষণকে দর্শন করিয়া তাঁহার যার পর নাই বিশ্বয় হয় ॥ ৩৪ ॥ রাজন্নাজগরং চর্ম শুক্ষং রন্দাবনেইছুতং। ব্রক্ষোকসাং বহুডিথং বর্ভুবাক্রীড়গহরের ॥ ৩৫ ॥
এতৎ কোমারজং কর্ম হরেরাত্মাহিমোক্ষণং।
মৃত্যোঃ পোগগুকে চাস্থ দৃষ্টে বুলুবিশ্মিতা ব্রক্তে ॥ ৩৬ ॥
নৈতদ্বিতিকং মনুজার্ভমায়িনঃ পরাবরাণাং পরমস্থ বেধসঃ।

विधवचामी।

বহুতিথং বছকালং ক্রীড়ার্থং মহাবিলং॥ ৩৫॥

অন্যচাতিচিত্রং বৃত্তমিত্যাহ এতদিতি। কৌমারং পঞ্চমাকান্তং পৌগণ্ডং দশমাবধি। কৈশোরমাপঞ্চদাদ্যৌবনস্ক ততঃ পর্মিতি। হরেঃ কৌমাুরজং পঞ্চাক্ত্রতং কর্মা তদৈব দৃষ্টা পৌগণ্ডে ষঠেহলে বালা অদ্যৈব তহুত্তমিত্যাচুঃ। কিং তৎ কর্মা মৃত্যোঃ সকাশাং আত্মনা অহেন্চ মোক্ষণং আত্মনাং প্রসিদ্ধার্ম ত্যোঃ অহেন্ত সংসারলক্ষণাৎ আত্মন্তন্তাতিয়ঃ প্রক্ষপ্রকেশমণি তদা দৃষ্টং ক্থিতবন্ত ইত্যর্থঃ॥ ৩৬॥

নৈত্ৰিচিত্ৰং কিং তদিত্যপেক্ষায়ামাহ অবোহণীতি। আত্মনাম্যং স্বস্মানরূপতাং॥ ৩৭ ॥

বৈষ্ণবজোবণী।

শ্রীভগৰংস্পর্শপ্রভাবেন সক্কতার্থো হভূদিতি কিং বক্তব্যং জন্য পাঞ্চভৌতিকমৃতদেহোহপি পৃতনাদিবৎ সৌরভ্যপ্রাপ্তয়া সর্ক্ষ-মনোহরত্বং প্রাপেত্যাহ রাজন্মিতি পরমাশ্রব্যেণ॥ ৩৫ ॥

স্বাস্য়, হরে: পৌগগুকে তাসারস্তমাত্রখনার্যাৎ কন্ প্রত্যার:। চশলাদেবাদিক্কতমহোৎসবঞ্চ। অন্যাই:। বদা। প্রশ্নবীজখার প্রহেলিকাবদাহ কৌমারজং কর্ম পৌগগুকে দৃষ্ট্যেচ্রিতি। কিং তৎ স্মহে মৃত্যোহেতি। আত্মনামহে: সকাশান্মোকণং।
সর্ব্বে মিথো দর্শরস্ত ইত্যাদাবৈশ্যাক্তানাম্পর্ণাৎ অদ্যানেন ইত্যাদিমাত্রতদ্বস্যমাণাৎ ॥ ৩৬ ॥

মহাছ্টস্যাপি তাদৃশ্যা মুক্ত্যা কেবাঞ্চিদ্কৃতব্দিং দৃষ্ট্ৰ শীভগবংপ্ৰভাবমাহ নেতি ছাভ্যাং। পরাবরাণাং সর্কেবামংশিনামংশানাঞ্চ প্রমন্ত শ্রেষ্ঠন্ত বত ন্তেষাং বেধসং প্রাছ্ভাব কর্তৃ ক ইুতি প্রমন্বাতব্যমুক্তং তত্ত মন্থলার্ডঃ শ্রীনক্ক্মারশ্চাসৌ মারীচ দ্যাবান্। অমধ্যাদ-

ক্রমসন্দর্ড:।

পূতনাবদেহস্যাপি সৌগন্ধ্যাদিমন্ত্পান্ধপদ্পাধিমাহ রাজনিতি। আক্রীড়গহ্বরত্বং বংসবাস্তরে জেন্তং ॥ ৩১ । ৩২ । ৩৫ ॥
. আদ্যানেন ইত্যাদি বক্ষ্যমাণাং। অতএব তাবংকালং মান্নাত্তত্বাং ॥

পরাবরাণামংশিনামংশানাঞ্চ সর্কেষাং পরমস্য স্বন্ধ ভগবতঃ বেধসস্তত্ত্বাবিভাবকর্ত্ত্ব মত্ব্যলীলস্য জ্ঞীনন্দস্যার্ছ-

গ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবন্তী ৷

বছতিথং বছকালং। আ সম্ক্রীড়ার্ধকগহররং বভূব॥ ৩৫ ॥

অন্যালগ্যাল্চর্যামেকং শৃণি ত্যাহ। এত হুৎ হরে: কৌমারজং পঞ্মালক্তং কর্ম দৃষ্টা অন্য হরে: পৌগওকে বয়ির্নি বর্তেহকে বালা অল্যৈব-তহু ত্তমিত্যুচ্য। কিং তং আত্মনাং অহে: সক্ষণান্মোকণং কুতঃ মৃত্যোঃ অহি মরণান্ধেতোরিত্যর্থ:॥ ৩৬॥

মত্মত্বার্ত এব মারা তদীরস্বরূপং তত্ততঃ প্রতিপ্রসিদাদারাশন্দ্য স্বরূপবাচকত্বাৎ পরাবরাণাং সর্কেবা মংশানামংশিনামণি প্রমুদ্য বেধসঃ। স্বেচ্ছাভিমত্তমেব কর্তুঃ। এত্বিচিত্রং ন কিং তদিত্যত আহ অবোহণীতি। ধৃতপাতক ইতি পাতক্মিছ্যুপ-

¥ অহে রাজন্। অঘাস্থর যে অজগরবপুঃ ধারণ করিয়াছিল তাহার অভুত চর্ম শুরু হইয়া বহুকাল যাবৎ রুদ্ধাবনে ব্রজবাসিদিগের ক্রীড়ার্থ একটা স্থমহান্ছিদ্রের ন্যায় হইয়াছিল। ৩৫।

সে যাহা হউক, ভগবান্ কোনারকালে অর্থাৎ পঞ্চ বর্ষ বয়ঃজৈমে ঐ কর্ম অর্থাৎ মৃত্যু হইতে আপনাদের ও বালকদের মোচন (পরিত্রাণ) এবং অজগররূপি অ্যাহ্রের সংসারমোচন করেন, বালকেরা সেই স্মরেই তাহা দেখিয়াছিল, কিন্তু তাহারা ব্রজে আসিয়া পৌগগুকালে অর্থাৎ বর্চবং-সরে "অল্য এই সকল ঘটনা হইল" বলিয়া পরিচয় দিল ॥ ৩৬॥

রাজন্ : অবাহরও বে এরিফ স্পর্শারে ধৃত পাপ হইয়া অসক্তনের হছর ভ তাদায়্য লাভ-

অঘোহপি যৎস্পর্শনধৃতপাতকঃ প্রাপাত্মসাম্যুত্মতাং স্বত্ন ভং ॥ ৩৭ ॥ সক্ষরদঙ্গ প্রতিমান্তরাহিতা মনোময়ী ভাগবতীং দদৌ গতিং। স্পর্ব নিত্যান্তর্যান্ত্রভাভিব্যান্তমায়ঃ পরমোহঙ্গ কিং পুনঃ ॥ ৬৮ ॥

अध्यक्षमा ।

যস্যাসং শ্রীমৃর্বিস্তস্য প্রতিমা প্রতিক্বতি স্বজাপি কেবলং মনোময়ী সাপি বলাদস্করাহিতা সতী ভাগবতীং গতিং দলে প্রজাদা-দিভাঃ সএব সাক্ষাং স্বয়মস্কর্গতঃ কিং পুন নিত্যা চাসাবাত্মস্থামুভ্তিশ্চেতি তরা। অভিতো ব্যুদতা মারা যেন সং॥ ৩৮॥

বৈষ্ণবতোষণী।

নিত্যাক্সেতি তৈ ব্যাধ্যাতং। যথা। নিত্যং আত্মনাং সর্বজীবানাং স্থামুভূতির্বস্থাৎ যতোহতিতো বিশেবেশোদন্তমারঃ। তথাচ ৰক্ষাতি শ্রীব্রস্থা অবৈব মারাধমনাবতার ইতি সচাসৌ সূচ যতঃ প্রমঃ সর্বীতঃ শ্রেষ্ঠঃ নিজাশেবভগবতাপ্রকটনাৎ যদবস্যাক্তে স্থায়হর্বসংখ্যাধনে ॥ ৩৮ ॥

कंगनमर्थः ।

उन्नीतन्छ म মারী পরমদরানুন্চ সং। তদ্যেতি পরমশক্তিত্বং দর্শ্বকারণত্বং অতত্ত্বনীলত্বং তাদৃশপতিতোদ্ধারিত্বঞ্চ দর্শিতং। আত্মসাত্ম্যং আত্মসাম্য মিত্যনেন প্রবেশবচনেন চ তৎসাযুক্ত্যমুক্তং॥ ৩৭। ৩৮। ৩৯॥

वीविधनाथहळवर्छी।

লক্ষণং শরীরদৌর্গরাদেরপাপগম ইতি কিং বক্তব্যং পূতনাদৃষ্টা শরীরসৌগন্ধামপি ব্যাখ্যেরং। সপ্রিরস্থস্য ক্রঞ্চস্য ক্রীড়াম্পদীভাবি-ছাং। আয়ুসাম্যং ব্যমানরূপড়ং। অসতাং অস্থ্রাণাং সাযুক্তাং ছ্ল'ডিং সারূপ্যন্ত ভক্তসম্প্রদানীয়ত্বাৎ স্কুল'ডিং ॥ ৩৭ ॥

তৎপ্রাপ্তৌ কারণমাহ যায় অলং মূর্তিন্তা চ প্রতিমা প্রতিকৃতি র্জগরাখমদনগোপালগোবিন্দাদিরপা। সাণি মনোমরী মনসৈব ধ্যাতা তত্রাপি সকলেব অন্তরাহিতা সতী ভাগবতীং গতিং দলে। ধটালাদিত্য: স এর সাক্ষাৎ নিত্যাত্মা নিত্যশরীরশ্চাসৌ প্রথাস্থভূতিরপশ্চ অভিব্যুদন্তমারশ্চেতি স:। পরম: স্বর্মবান্ধর্গত: কিং পুন দ দ্যাদেবেতার্থ:। নম্ম ধটালাদীনাং তৎপ্রাপ্তৌ ভক্তিরেব কারণং অধাদীনান্ধ প্রাতিক্ল্যাৎ ভক্তাভাব এব তৎপ্রাপ্তিপ্রতিবন্ধী। ভক্তাছমেকরা প্রাত্ম ইতি ভগবৎক্রতনিরমাৎ। স্ত্যং সচ নির্মোহনাস্থিরেব সমরে। কৃষ্ণসাবভারসমরেভূ পূর্ণারা এব ক্রপাশকেকদরোক্রেভাভংস্বন্ধমাতেশৈব তৎপ্রাপ্তির্বহ্নাতে। কামং ক্রোধং ভরং লেহমৈক্যং সৌহ্বদমেব বা। নিত্যং হরে বিদ্ধতো যান্তি তন্মরতাং হি তে। নটেবং বিদ্ধঃ কার্য্যো ভব্তা ভগবত্যকে। বোগেশরেবরের ক্ষেক ইত এতি বিদ্ধতা ইতি। ক্ষম্য পূর্ণমে ক্ষাম্পাদার্মণ মনীদান্দারণং মনীদান্দারণং মনীদান্দারণং মনীদান্দারণং মনিরিন্দ্রোহণিক্রিক্তিপ্রেলিক্তংপ্রাতিক্রিল্যসাপ্যাস্থক্ল্যমন্তভিক্ষননাৎ ভব্তে সাক্ষ্পানোক্ষং বৈকৃত এব দদৌ নুক্ স্বধান্ধি বৃদ্ধাননে ভব্তেক তাদ্শবৈশিষ্টাভাবাৎ ইতি ক্ষেরং। তদ্ব

করিল ইহা মায়ামসুষ্যবালক পরাবর সকলের পরম বিধাতা ভগবান হরির আশ্চর্য্য কার্য্য নহে॥ ৩৭
বাঁহার শ্রীষ্র্তির কেবল মনোমন্ধী প্রতিক্ষতি বলপুর্বক একবারমাত্র অন্তরে আহিত হইয়া প্রজ্ঞান
দাদি ভক্তগণকে ভাগবতী গতি দান করিয়াছিল, সেই ভগবান্ সাক্ষাৎ অন্তরে প্রবিউ হইয়া যে ভাগবন্তী গতি দিবেন তাহা কি আবার অনুত বিষয়া, ভগবান্ নিত্য ও আদ্মস্থাস্ভবদারা সমন্ত মায়া
নিক্ষিপ্ত করিয়াছিলেন। ৩৮।

শ্রীসূত উবাচ॥

ইপ্নং দ্বিজা যাদবদেবদত্তঃ প্রান্থ সরাজুশ্চ রিতং বিচিত্রেং। পপ্রচছ স্থাহিপি তদেব পুণ্যং বৈয়াসকিং যদিগৃ হীউচেতাঃ ॥ ৩৯॥ রাজোবাচ॥

ব্রহ্মন্ কালান্তরকৃতং তৎকালীনং কথং ভবেৎ। যৎ কৌমারে হরিকৃত্যুচুঃ পোগগুকেহর্ভকাঃ। ত্রুহি মে মহাযোগিন্ পরং কোভূহলং গুরো। নূনমেভদ্ধরেরেব মায়া ভবতি নান্যথা।

শ্রীধরত্বামী

স্বরাতু: প্রায়দাতু:। যেন প্রবণেন নিতরাং গৃহীতং বৃশীক্ততং চেতো যদ্য য়ঃ॥ ৩৯॥ কালান্তরে ক্বতং কৌনারে ক্বতং পৌগওকে কথ্ং জ্ঞানোচু:॥ ৪০॥

देवस्ववरकावनी ।

অআকস্মাৎ স্থা উবাচ ইতি তৎপ্রসঙ্গে প্রমানন্দ্র্য্য বৈশিষ্ট্যাৎ সোহণি তত্ত্ব তৌতুষ্টো ইত্যর্থ:। যেন চরিতেন নিগৃহীতং তিহিয়োগময়প্রেমাবিভাবনেন পীড়িতং চেতো য্যা স তথাপি প্রশ্নে হেতুঃ পুণ্যং শুভাবহমিতি তৎপীড়ায়ান্তদেকৌষধত্বাদিতি ভাব:॥ ৩৯॥

কাশাস্তবক্ত পূর্ব্বকালীনং কর্ম তৎকালীনং সদ্যংকালদৃষ্টং কথং সম্ভবেত্তদেবাহ যদিতি। যং কৌমারকে হরিণা ক্লতং তং পৌগওকে কৃতমিতি কথং জ্ঞাজোচ্রিতাধয়ঃ। তদিতি কথং সম্ভবেং তৎপ্রকারমিতার্থঃ। কৌত্তলং কৌত্তকজনক্মিতার্থঃ। মহাযোগিন্ প্রমভক্তিয়কেতি প্রীভগবদৃত্তং তবাজাতং ন কিঞ্চিদৃত্তি ইতি ভাবঃ। নম্ম প্রমজ্জমেতত্ত্রাহ হে ওরো উপদেষ্টুঃ কিঞ্চিদোপাং শিবো নান্তি ইতি ভাবঃ স্বাহ্মেব সিদ্ধান্তং তর্কয়তি এতত্ত্বেষাং তাদৃশং দর্শনভানং। মায়া চ্র্যট্যটনা শক্তিঃ। হরেরিতি নায়য়া স্ক্বিচারহরণাভিপ্রায়েণবৈতান্যমায়া নিরস্তা। তদেব জাল্মতি নায়য়া ত্র্মায়াং বিনা ন সম্ভবেদিতার্থঃ। গোপ-ক্মারাণাং তেষামন্যতো ভ্রমাল্যসম্ভবাং। প্রবার্থমতোৎসক্রেন গুরুং ক্রেথিসাহ্মতি বয়মিতি। বছরং বন্ধ্বর্গাপেকয়য়হিপি ক্রেব্যার্থমা অপি এত্রচাতা স্তবিন্তাং পুণাং মনোজ্য তত্ত্ব গুণবিশেষং বোধয়তি স্বত্ত ইতি। হে গুরো অভিহ্যান্তানের বন্যাঃ

ক্রমসন্দর্ভ:।

কালান্তৰকৃতং কৌমারকৃতং পৌগগুকালে কথং স্যাৎ তত্র হেডু:। যংকর্ম কৌমারে হরিণা ক্বতমপি পৌগণ্ডে ক্বতমিভূাচুরিতার্থ:।

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

হে দিজা: যাদবদেবেন উত্তরারৈ বৃধিষ্টিরায় বা দত্তঃ পরীক্ষিৎ স্বস্য রাতা গ্রহীতা যঃ প্রীকৃষ্ণক্তপ্য যেন প্রবশেন নিতরাং গৃহীতং বশীকৃতং চেতো ষম্ভ সঃ॥ ৩৯ ॥

কালান্তরক্তং পূর্বকালনিস্পাদিতং কর্ম তৎকালীনং সদ্যংকালদৃষ্টং কথং ভবেৎ। যদিতি পৌগওকে ম্বানুষ্টের হরিক্কতমিদং কর্মেতি কথম্চ্রিতার্থ:॥ •

্মাগা হর্ঘটঘটনাপটীয়দী শক্তি:। হরিরিত্যন্যমাগ্ন নিরস্তা যোগমায়েত্যর্থ:। তবৈধ্ব ভগবন্ধিত্যপরিজনানাং মোহনসম্ভবাৎ ॥ •

সূত কহিলেন হে দ্বিজ্ঞাণ! শ্রীক্ষের প্রদত্ত মহারাজ প্রীক্ষিৎ আপনার রক্ষকের এই প্রকার বিচিত্র চরিত্র শ্রেণ করিয়া শুকদেবকে পুনরায় ঐ বিষয়ই জিজ্ঞাসা করিলেন, যে হৈছু শ্রেণ করিয়া তদীয় চিত্ত একান্ত বশীক্ত হইয়াছিল॥ ৩৯॥

রাজা পরীক্ষিৎ জিজ্ঞাসা করিলেন এক্ষান্ । কালান্তরে কৃত কর্মে তৎকালীন বোধ কি রূপে হইয়াছিল। ভগবান্ হরি কোমারকালে অর্থাৎ পঞ্চম বংসর বয়ংক্রমে যাহা করিয়াছিলেন এজবা: লকেরা ভাষা পোসতে অর্থাৎ ষষ্ঠবংসর বর্ত্তমে কি প্রকারে অবগত হইয়া এজে বিয়া বলিয়াছিল। শিক্ষা বিশ্ব বোধ হইতেছে ইহা ভগবান্ ছবির মায়া, অতথা নহে। গুরো! আবিরা করেবর্ত্ত

বয়ং ধনাতমা লোকে গুরোছিপি ক্ষত্রবন্ধবং। যথ পিবামো মৃত্ত্তঃ পুণ্যঃ কৃষ্ণকথামৃতং॥ ৪০॥ শ্রীসূত উবাচ॥

ইথং স পৃষ্ট: সচ বাদরায়ণি তৎসাত্মিতানত্তভাবিলেন্দ্রিয়:। কৃচ্চাৎ পুনর্লকবহি দৃশিঃ শনৈঃ প্রত্যাহ তং ভাগবতোতনোত্তম ॥ ৪১ ॥

॥ # ॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্থাং সংহিতারাং বৈয়াসিক্যাং দশমক্ষেত্রাফ্রবটো নাম দাদশোহধ্যায়ঃ ॥ # ॥ ১২ ॥ # ॥

প্রীধরস্থানী।

তেন যঃ স্মারিতোহনক্ত ক্তেন হাতাক্তথিলেন্দ্রিয়াণি যস্য সঃ তথা ভূতোহণি কথকিল্লবহিদ্ 🕮 হে ভাগবতোক্তমোক্তম শৌনক ॥৪১
॥ *॥ ইতি দশমে বাদশঃ ॥ *॥

বৈক্ষণতোৰণী।

কৃতার্থা: বিশেষতক থক্ত: কৃষ্ণকথামৃত্পানেন ধ্রুতরা: মৃত্পোনেন চ ধন্যতমা ইত্যর্থ: ॥ ৪ • ॥

বাদরারণিরিতি পিতৃনামোলেথা ওস্যাপি নন্দনতেন মাহাত্ম বিশেবং স্কৃতিঃ অতএব তেন ভদীরপ্রস্থিবিশেবেণ স্থারিত শুড়ছিলেবেণ ফ্রন্মং প্রাপিতোহনতঃ পাছলজেমনাদির ক্ষত্ম ব্যানতংশ গ্রানির অর্থা মাধুমীকঃ ক্ষাঃ চেনাক্রভাধিলে ক্রিয়ঃ। প্রেমভরেণ ভলেকপরিন্দুর্ত্তা লীনসর্কে ক্রিয়র্ভিরিত্যর্থ:। অরং প্রমোদমোহাত্মভবং প্রালম্ভা: কন্পপ্রকাদিবৎ প্রেমিদিকার
বিশেবো জ্রেয়ঃ। সংস্থারিত ইতি কচিৎ পাঠঃ তথাপি সএবার্থ: সচ স্বাম্যসন্মতঃ। চিচ্চুক্স্যুক্ সন্মতঃ ক্ষুজান্ধ ক্ষেত্রালে ক্রিছাল ক্ষান্ধ প্রেমিদিকার ক্ষান্ধ ক্রিছাল ক্ষান্ধ ক্রিছাল ক্ষান্ধ ক্রিছাল ক্ষান্ধ ক্রিছাল ক্ষান্ধ ক্রেমিদ্বাল ক্ষান্ধ ক্রিটিভ বিষয়তে তত্ম ভবৈর তাভেতি বারং বারং স্বোধনমিতাভিজ্ঞা আহং। তদর্থং প্রিপরীক্ষিতা মহাব্যবর্ত্তনানেন প্রেমিভারেক ভব্যাক্যাদি শ্রীক্ষক্ষকীর্জন সামগ্রী প্রীক্ষনমেলমতো রক্ষিভানীতি আখ্যাদিকা প্রেমিদ্বাল ক্ষান্ধ ক্রিমানেন প্রেমভ্রেণাক্রান্তব্য (হে ভাগবভোত্তমোন্তম ইতি ভৎপরমগুর্হমিণ প্রোত্ মর্থনীতি ভারং। ক্রিৎ স্বাম্যসন্মতো
দিনীয়ান্তপাঠঃ চিচ্ছুক্সন্মতঃ। তত্মত প্রতিরচনে হেতু ক্রের্সঃ ॥ ৪১ ॥

॥ 🛊 ॥ ইতি শ্রীবৈঞ্চবভোষণ্যাং দশমটিপ্পন্যাং দাদশ: ॥ 🛊 ॥

क्रममण्डः।

হরেরের মারা ছর্বটবটনা শক্তিঃ নান্যস্য তত্ত তবশক্তেঃ। অনেতঃশাহলজেমানাদিকমার্ভ্য ত্রহ্মণত্তুমমানভাৎপর্ব্যং প্রকাশিতে অনতেখব্য মাধ্রীকঃ॥ ৪০। ৪১॥

॥ 🛊 ॥ 🏿 ইতি দশম ক্রেমসন্মর্ভে হাদশঃ ॥ 🛊 ॥

গ্রীবিধনাথচক্রবর্তী।

হে গুরো ইতি নন ক্ষিত্রালায় বুং লিখনা শিয়ানা গুরুবোঞ্জনপ্মতেতি বিধেরবণ্যবক্ষবাখং ব্যঞ্জিতং। পিবান ইতি ক্ষাজিত ব্যঞ্জনরা ক্ষ্য লিখকণ ॥ ৪ ॰ ॥

কৃষ্ণু । ওটিক উপৰবাদ**ৰীৰ্তনোলেন্টৰ ভল্ল**ড নাৱদব্যাশনিস্নিকটভরতিবস্কতরাদিতার্থ: হে ভাগবভোভযোত্তম লোনক ॥ ৪১ ॥ ॥ এ। ইকি সার্থিদ্বিনাং-ভ্রেটডকরাং । দুন্দে বাদশোহধ্যায়: সম্ভূত: সম্ভঃ সঞ্চঃ এ ॥ ॥ ॥

হারাও লোক মধ্যে অভিশার ধন্য, যে হেড়ু আপনকার প্রস্থাৎ পুণ্য ক্ষাক্থায়ত মুহ্দুহ: পান করিতেছি॥ ৪০ ॥

্ৰুত কহিলেন হৈ ভাগবতোজনোজন লোমকী বাজা পরীক্ষিৎ যে ভগবান্ মনছের পারণ করা-ইরা দিলেন ভাঁহা কর্তৃক যদিও ভক্দেরের মনিল ইন্সিয় মণ্ডত হুইল কথাচ এ প্রকার জিল্পাসিত হওলতে কথনিং বহিদ্ টি লাক ক্রিরা হীরে গাঁহার নিতি ক্রনীয় প্রমের উভর লানে প্রস্তুত হইলেন ॥ ৪৯॥

প্ৰীওক উবাচণা

সাধু পৃষ্টং মহাভাগ দ্বয়া ভাগবতোত্তম। যদ্ তনয়সীশক্ত শৃণুদ্ধপি কথাং খুইই ॥ ১ ॥ সভাসমং সারভ্তাং নিসর্গো যদর্থবাণী জিটি জিলাবলৈ । বিশ্বিতি দি বিশ্বিতি প্রতিবাধি বিশ্বিতি দি বিশ্বিত গ্রহণ প্রহান প্রহ

अध्वयामी।

ত্রোদশে হহরছু কা বংসান্পালাংশ্চ মায়য়া। তদা তৎ সর্করপোহস্বং কৃষ্ণং পূর্কবদাচরং॥ • ॥ নৃত্নয়সি নবাবং করোবি॥ ১॥

তথাহি সারভূতাং সার্থাহিণাং অরং নিদর্গ: বভাব: কৌহসৌ অচ্যুত্তস্য বার্তা প্রতিক্ষণং সাধু নব্যবন্তবতীতি, বৎ স:। বিটানাং

देवकवरलावनी ।

িছে মহাভাগেতি গর্ত্তেংপি তেন ঐভিগবতো দর্শনাং। হে ভাগবভোত্তমেতি তৎকবৈধকরসিক্ষাং। তথা বি: স্বোধনক ঐক্নকাৰিইচিত্তাং প্রেক্টের বদ্বসাং ঈশস্য স্থাভোঃ॥১॥

আইতক ন্তনয়নীতি কিং বক্তবাং যুতো মুহৰুহিং ইতমণি নৃতনয়নীত্যেতনপুচিত মেবেত্যাহ স্তামিতি। ক্লাচিৎ ক্থকিং ক্লাচিনি ব ব্যাহিনি ক্লাচিন ক্লাচিন ক্লাচিন ক্লাচিনি ক্লাচিনি ক্লাচিনি ক্লাচিনি ক্লাচিনি ব ব্যাহিনি ক্লাচিনি ক্লাচিনিক ক্লাচ

্পাবহিত্য সন্নিতি বক্ষামাণস্য পরস্করবগাহত্বাৎ রাজন হে ব্ছ্যাদিনা প্রকাশমানেতার্থ:। উত্ততি বিতর্কে বর্ষিদং বিচাররাম ইতার্থ:। তক্ত আভগবতি বক্ষণিচ বদসভবং বছবিধনেবাশ্চর্যমানাস্তি তৎ ধনু ন সর্কেবাং ক্রোধনিতি গুল্মিভ্যুক্তং॥

MENTERS

সভামি ত্যক্ত নব্যব্দিতি প্রত্যক্ষেনাম্বাগভূলাদমেব দর্শিতং। সাক্ষাদম্বাগে তু নব্যমেব ভাতীতার্থং। তথাপি তস্যাভিছ্ যুগং

विविधनां थहक वर्षी।

জেমনং বৎসতংগালহরণং ব্রহ্মমোহনং। স্বস্কৃতবৎসবিষ্ণাদিপ্রাত্মজাবন্ধরাদশে। বিশ্বস্য স্ট্রাদিবিমোহনালৈ বিশ্বস্থা বিশ্বস

হে ভাগৰতেখুত্তম। কথা মে ভাগবভোত্তমত্বং তত্তাহ বদিতি। ন্তনরসি ন্তনীকরোষি। শ্রুতাং মুহ্রাখাদিতামপি কথা-মশুতচরীশিক করোকীতি কথায়ামনুরাগো ব্যঞ্জিঃ ॥ ১॥

সার্ভ্তাং সারপ্রাহিণামরং নিগর্গঃ বদবতঃ অচ্যুড্সী বার্ত্তি প্রতিক্রণ ক্রেণ করণ সাধু যথাস্যান্তথা নব্যবন্তবতি। তৃষ্ণাধিক্যান-পূর্ববিজ্ঞারতে। বদবনি অচ্যুক্ত্রীবাপ্রায়েজনানি বার্ণীপ্রতিচেতাংসি বের্নি তথা ভূতিকানসি তিনেকলান্দট্যাংল দৃষ্টাকঃ॥

ভয়োদশ অধ্যান্তে ত্রুক্ষা নিজ্ঞ নায়াবারা স্থোবংশ ও রালকারণ ব্রুপ্রকরিলে ক্রুক্সলী ইইয়া শ্রীকৃষ্ণ সম্বর্গের পর্যান্ত অধিকল পূর্ববংশ আচরণ করেন দল মান্তলে

ে ' শুকদেব কহিলেন হে ভাগ্রভােন্ত্র। হে স্বাভাগাত উত্তয় জিলাসা ক্রিছাছ, তোসাকে সাঞ্জাদ দি, বে হেতু ভগবান্ জ্ঞানের কথা মুহুমুহঃ আৰণু করিয়াও নৃতনের ন্যায় করিতেই মাস্যালিক সালিক

বেই মাজন ! সারপ্রাহি সাধু পুরুষবিধের পুচাতীরান্তাই বাকা, কণা ও চিতের বিষয়, ভাছাদিগের ইহাই অভাব ংঘে ত্রেণু পুরুষদিগের ক্যালিকিন্তার্থার ন্যায় ভগবান বাহাতের কথা প্রতিক্ষণ ন্যাই করেন। ত্রিক্তিক্ষণ কথা জিলাসা ক্রিক্তিক্তি ইইল ক্রিক্তি ইইল ক্রিক্তিক্তি ক্রিক্তিক্তি ক্রিক্তিক্তি ক্রিক্তিক্তিক ক্রিক্তিক্তিক ক্রিক্তিক ক্রিক্তিক ক্রিক্তিক ক্রিক্তিক বিষয় বিষয় ক্রিক্তিক বিষয় বাহকর। অথান্নবদনান্দ্ৰ তেলা রক্ষিত্ব। বংলপালকান । সরঃ পুলিনমানীম ভগবালিদুসুত্রবীৎ ॥ ন ॥
অহোহতিরমাং পুলিনং বয়সাঃ স্বক্ষেলিলপ্রে তুলাক্ষ্রাক্ষ্য করা ক্ষ্য । ১০০০ ।
স্কুটৎসরোগন্ধভালিপত্তিক ক্ষ্যিক্ষতিক্ষান্দ্রমন্ত্রাক্ষ্য । ৪ ॥
অত্ত ভোক্তব্যসন্মতি র্দিকা ক্ষ্য ক্ষ্যান্দ্রিকাঃ । বংসাঃ প্রমীপেইপ্রাং প্রক্রমান্ত্রকত্ত্বং ॥৪ ॥

अभवागी।

ছৈণানাং জিল্লাঃ কামিন্যা বাৰ্ত্তেব কথন্ত তানামণি সতাং বা অচ্যতবাৰ্ত্তবাৰ্থো যেবাং ভানি বাণীক্ৰভিচেতাংসি বেলাং ভথাভূতানা-মণি॥ ২॥

ভোজনবিহারার পুলিনং ভৌতি আহে। ইতি। স্বীয়ানাং কেলীনাং সম্পদো বিদ্যুদ্ধে যদ্মিন্তং। মুগুলা আছে। বালুকা বদ্মিন্তং কুট্ছিকসং সরঃ সরোজবাহল্যেনোপচারতঃ সর এব বিকসদিত্যকং তস্য স্কুট্ছিকসং স্থাকটা আকটা আলণ্ড বে তেখাং কে উদকে ধননয়: তেখাং প্রতিধানা তৈ ল সম্ভোক্তমাতৈরাকুলং ব্যাপ্তঃ॥৩॥

দিবা রূচ্ং বেলাতীতেত্যর্থ: ॥ ৪ ॥

বৈক্ষবতোষণী :

তথা তেন প্রকারেণাঘাস্থরবদনরপাক্ত্যার্শ্বংসপালকান্ বালাংক ভগবানিপি ॥ ২॥

হে ব্যস্যা ইতি মম সধীনাং ভবতামেব ভোজনবোগ্যমেতদিতি ভাবঃ। তদেব দর্শরতি স্বেষাং কেলেঃ পঙ্জিভোজননিযুদ্বাদিক্রীড়ায়াঃ সম্পাৎ সম্পান্ত হাত্য ন্তথাভূতা মৃত্লাচ্ছবাল্কা যদিরিতি উপবেশস্থা। ফ্টুৎসরোজসক্ষতি ভোজনাপেক্যঃ
ধ্পবং সৌগদ্ধাং এতেন শরৎকালো লক্ষ্যতে তথা গীভমিষ ভ্রমরাদিধ্বনিবিলাসঃ ভোজনপাত্রক পদ্মপত্রাদিকং স্থবাসিতলীভলাছেজলঞ্চ শরত্তাপনিবারণার্থ ঘনবৃক্ষছায়াচ ইতি স্থাভোজন সামগ্রী দর্শিতা তত্ত্ব প্রতিধ্বানেতি পর্যান্তঃ সপ্রমানাপদার্থো বছরীহিঃ
লসন্মাক্লমিতি তংপুক্ষঃ তয়োঃ কর্মধাররো জ্বেয়ঃ॥ ৩॥

হে কুধাৰ্দিতা:। यহা যতঃ কুধাৰ্দিতা বয়ং তত্ৰ হেতুঃ দিবা ক্লচং অবত্তাব্তঃপ্ৰবেশাদিনা বিশহাপত্তে। যহা। কুধেতি বংসানাং বিশেষণং। অতো ন নিজভোজনস্থাৰ্থমত্ত্ৰ নিজধ্য কক্ষাঃ কিন্তু চরন্ধিত্যর্থ:। শনকৈরিতি জলপানেনাপ্যায়িতহাৎ। যহা। অস্বৎস্থতোজনসিদ্ধার্থমধুনা সমীপে শনকৈশন্ত্রন্ত পশ্চাক্ষ্বেইচ চরিষ্যন্তোবাতোহত্ত্বোভিকে নিজধ্যন্তামিতি ভাবঃ॥ ৪

क्रमगन्रर्फः।

নবং নবমিতিবদিতি ভাৰ: উত্ত বিতৰ্কে ইদং বিচালয়াম ইতাৰ্থ: ॥ ১ ॥ ২ । ৩ । ৪ । ৫ ॥

ঐবিধনাধচক্রবর্তী।

विष्ठानाः कामूकानाः जित्रा वार्द्धव कामिनीकरथव ॥ २ ॥

ভোলনার্থং তত্তিতং স্থলং স্তোতি করে। ইতি স্বকেলীনাং বছপত্ত জিমতোজনক্রীড়ানাং সম্পানে। যত্ত তিবিতি স্থানবিস্তীর্ণবং।
মৃত্না অজ্যা বালুকা যত্ত তিন্তিস্পান্ত প্রস্কৃত্ত সাম্পান্ত সমস্য এব গজেন স্থাতা আছুইা জলনঃ পত্তিবিশ্ব যে তেবাং
কৈ উদক্তে ধনন স্বেবাং প্রতিধানাতৈ ল'সভোক্তমাতৈ সাকুলং ব্যাপ্তিনিতি ভোজনাপেক্ষণীনপুণানিনৌরভাবীণানিবাদ্যস্থবাসিতনীতনজলমিক্তামানিসামগ্রী দর্শিতা। ৩॥

দিবা রুঢ়ং দিবাকর উদ্ধাকাশমার্চ ইত্যর্থ:॥ ৪॥

देश तीकन् । शृंदेशीके टांकारित प्रश्नाति विशेषिक एतत पृथ स्ट्रेटिक परमणान तका केतिया निर्देश निर्देश कार्यात्र

ব্যুসাগণ। এই পুলিন অভিশন্ন রম্থীর, এখানে আমাদের কেলি সম্পূত্র সকলই বিদ্যমান রহি-মাদ্ধে, এখানজার বালুকা সকল, কোমল অখন নির্মাণ, আর এই সমোবদের সমুদার কমল বিক্সিত ক্রেট্রের সোরতে বহুবিধ বিহণ ও অমূর আমিরাছে, ছাহাদের অনির প্রতিধানিতে তীরস্থ তক সকল বিল্সিত হুইতেছে। ৩॥

ৰংগদকৰ সামায় এই স্থানে তোকন কৰি, বেলা অতীত ছইয়াছে, দকলেই ক্থাৰ্ড ইইয়াছি। বংগদকৰ সামায়ে স্বস্থান ব্ৰিয়া আতি অতি তুল মধ্যে কিয়ুল কৰিছে থাকুক। ৪॥ তথেতি পাঁয়য়িত্বার্তা বংসানার্রধ্য শাবলৈ । বুকুন শিক্যানি বুভুজুঃ সমং ভগবভা মুদা ॥ ৫ ॥ কৃষ্ণস্থ বিশ্বক পুরুরাজিমওলৈরভানিনাঃ কুমানূলো ব্রজার্তকাঃ ।
সহোপবিফা বিপিনে বিরেজুন্দদা যথাভোকত্ববিশিকাঃ ॥ ৬ ॥ `
•

কেচিৎ পুলেপ র্দ্ধলৈঃ কেচিৎ পর্মবৈরস্থারঃ ফলেঃ। শিগ্ভিত্বগ্ভিদ্ধন্তিশ্চ ব্ছুজুঃ কৃতভাজনাঃ॥৭

विधवनामी।

व्यक्ति मश्त्रभा मंदिरन क्षिक्ष्म्भारम ॥ ० ॥

তদা তে বিরেছ্: ক্রফস্য বিশ্বক্ পরিত: মণ্টল ব'হতি: পঙ্কিমণ্টল: ন্সহ নৈর্ম্বর্গোণোপবিষ্টা: এক্রকাভিমুখানি আননানি যেয়াং তে ফুরদ্শো বিক্ষিতন্মনা:। ক্মলক্ণিকায়া: পরিত: প্রাণি যথেতি ॥ ৬ ॥

পুলৈ ভাদলৈরনৈ তে পটার্ঃ ছুভানি ভাজনানি যৈ ভে॥ १॥

বৈষ্ণবতোষণী।

তথৈবমেৰেতি ভত্তকং সংস্পৃথ্য ইত্যৰ্থ:। শাখণ ইত্যগ্ৰেহপান্থবৰ্তনীয়ং শাখনজেমনঞ্চ ইতি বক্ষ্যমাণদ্বাৎ। যথা শাখনজিকে ক্ষেন্নং শাখনজেমনমিতি মধ্যপদলোপঃ প্ৰায়ো কানুকাময়প্ৰদেশ এব। বক্ষ্যমাণভততভোজনপাঞাদ্যপশেক্ষণাৎ। শাখনঞ্চাত্ৰ স্ক্ষ্যম্প্ৰাময়দ্বেন জ্বেয়ং। শিক্যানি স্বস্থাহাৎ প্ৰাত্তনানীতানি। মুক্ত্বেতি অযোদরান্তঃ প্ৰবেশতঃ প্রস্তাদেব তানি জীড়া সৌক্র্যায় বৃক্ষাপ্রে ধৃতানি ইতি জ্বেয়ং কিয়া অবোদরান্তঃপ্রবেশেহপি শ্রীভগবৎপ্রভাবেন বালকানামিব তেষামবৈকলাং জ্বেয়া ধু॥

অভ্যাননাঃ অভি শ্রীকৃষ্ণদেশুধ আনুনং যেষাং তে অতএব ফুল্লদৃশঃ তচ্চ তৎপ্রীত্যধর্মচিন্ত্যশক্ত্যৈব। বিপিনে শ্রীস্ক্রিবন ইভি বিশেষশোভাগোগেতেভাল ৬ ॥

ি কেচিদিতি পুনক্ষক্তা। পুলৈরিত্যাদিভিঃ প্রত্যেকমন্বয়ং বোধয়তি অন্যথা সমুচ্চয়োহপি বুধ্যেত। ,পুশাদিভোজনপাত্রাণাং বৈচিত্রী বাসকানাং,প্রভ্যেকাপূর্বরচনাকৌতুকেঞ্জয়। সম্বরোটিকৌদনাদি বোগ্যবৈচিত্র্যাপেক্ষরা বা ॥ ৭ ॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

অভ্যাননা: প্রীক্ষসমূধ্যুখা ইডার্থ:। অন্যথা ফ্রান্ক্ডং ন স্যাৎ অচিস্কা। শক্তিশেকাং ॥ ৬॥ কেচিম্বং সর্বত্র পূথগ্রয়ার্থ:॥ ৭॥ ৮ ॥

শ্ৰীবিশ্ননাথচক্ৰবৰ্ত্তা।

শাহলে হরিত তৃণবহুলদেশে আরুদ্ধ্যেতি তেষাং তত্ত্পলোভাদেবান্যত্র গমনাসমর্থমননাং॥ ৫॥

তেবাং ভোজনোপবেশপরিপাটীমাহ। কৃষ্ণ্যা বিশ্বক্পরিতঃ পুরুরাজিমঙলৈঃ স্থপাংস্থপ ইতি তৃতীয়া। বহরু পঙ্কিমগুলেবিতার্থঃ। অস্ত্যাননা প্রেয়া সর্ক্ষামুধ্যম্প্ হাবতো ভগবতঃ সত্যসঙ্কর ভাশকৈয়বোদগারিতেনাচিল্তাবৈভবেন নিশাদিতাৎ
মুধাদ্যসানাং সন্ধানন্ত্র প্রকাশাং। কৃষ্ণম্যাভিমুখে সন্নিহিতপঞ্জে বৈলমেব বর্তামহে অন্যেতু ব্যবহিতপঙ্কির পার্ষতঃ পৃষ্ঠতশ্যেপবিষ্টা
ইতি সর্ক্মবাভিয়ানবস্ত ইতার্থঃ। তেন চ, সর্ক্তঃ পাণিপাদং তৎ সর্ক্তোহক্ষিশিরোমুধ্যিতি ক্ষত্তার্থো দর্শিতঃ। সহনৈরন্তব্যাগে।
প্রিষ্টাঃ। ছলাঃ প্রাণি বথা ক্ষলকর্ণিকারাঃ পরিভো মিলিভীভূর বছপঙ্কির ভিষ্তি তথেতার্থঃ॥ ৬॥

কেচিদিতি। পুলাদিভি: স্বস্বভাজননিশাণং বালকানাং প্রত্যেকাপুর্বরচনাকৌতুকেছবৈবেতি জ্ঞেরং॥ १ ।

জ্বীকৃষ্ণের এই বাক্যে বাক্তের। তাহাই ভাল বলিয়া স্থীকার করিল, পরে বংসগণকে জলপান করাইয়া হরিষণ তৃণময় প্রক্রেশ বাদ্ধিয়া দিল তদনন্তর শিক্যমোচনপুরঃসর ভগবানের সহিত হর্ষে ভোজন করিতে লাগিল ॥.৫॥

হে রাজন ! এজবালকগণ শ্রীকৃত্তের চতুর্দিকে পদ্মাকারে ভূরি ভূরি পড় জিরচনা করিরা সমী-পবর্তি হইয়া বসিল, শ্রীকৃষ্ণ তাহাদের মধ্যস্থলে উপবিষ্ট হইলেন, তাহার অভিনুখে তাহাদেরসকলেরই মুখ রহিল, অতএব কমলক্রিকার পত্র সকল বজ্ঞপ শোড়া পান্ধ তাহারা তজ্ঞাপে বিরাজমান হইল ॥ ৬ ॥

र्णशामित नहुंबा देशन देशन वालक श्रूलाबात, किल्पन वालक श्रीविद्या क्रिके कि विश्व अपूत्र, क्रिके कि विश्व अपूत्र, क्रिके कि विश्व अपूत्र, क्रिके कि विश्व अपूत्र कि विश्व कि व

সর্কে মিথো দর্শয়ন্তঃ স্বশ্বভাজারুচিং পৃথক্। হসস্তো হাসয়ন্তশ্চাভ্যবজ্ঞ সহেশরাঃ॥৮॥
বিভ্রবেণুং জঠরপটয়োঃ শৃঙ্গবেত্রে চ কক্ষে বাষে পাণো মস্থকবলং তৎকলানাঙ্গীরু।

क्रीधत्रवामी।

ক্ষৃতিং বাছবিশেবং অভ্যবন্ধ : বুভূনিবে সংহৰ্গা: জীক্ষুসহিতা: ॥ ৮ ॥ বক্ষভূগণি তেবু বুভূষে বালানামিব কেলিবুঁসা স: তদাহ উদরবন্ধ। মঁখো বেণুং বিভ্ৰৎ দধ্যিতি সৰ্বত্ৰ সৰক:। বাম ইতি কক্ষ

देवकवटजावनी।

পৃথগ্ডোজ্যভেদেন রসগন্ধদিভেদেনচ নানাপ্রকারিকাং স্বভোজ্যস্য ক্ষচিং স্বান্তভাবিশেবং দর্শরন্তঃ মুখতল্যাদিনা সাকাং-কারমত ইব অতঃ স্বয়ং হসতঃ অন্যাংশ্চ হাসম্বন্ধ:। বদ্যপি স্বস্থাদানীতানি ভোজ্যানি পরীকার্থং সর্বেবাং সর্বেবে পরিবে-শিতানি তথাপি স্বস্থাদানীতে ভোজ্যানামের স্বাবভিরিক্তং পৃথক্ পৃথক্ আপ্রামান্তঃ বদর্থমের প্রাদিনে মিলিছা বন্যভোজনার সংক্রপ্রবন্ধঃ ইতি ভাবঃ! সহেশ্রম ইতি শ্রীভগ্রানপি ভৈরের মিষ্টমিষ্টং পরীক্ষ্য কিঞ্ছিৎ কিঞ্ছিৎ ক্রমশো মুগ্পন্থা সম্পান্ধাণং তথৈব বুভুক্ক ইত্যর্থ: ॥৮॥

অথ বালকৈ: সহ আভগৰতো ভোজনক্ৰীড়ামুক্ৰণ ভেড্যো বিশেকে তদ্য তামাহ বিভ্ৰদিতি। তৎফলানি মন্থকবলোচিডোপক্ষণানি নিশ্ স্কিত লবলী ক্ষীয় ফল প্ৰভৃতীনি। সৈয়সাধানলৈ: বৰ্গে লোকে সৰ্কেৰ্ অলে ক্ৰানিষ্ বজ্জুক্ উদ্দেশমাত্ৰেণ
সমর্পি চন্য হবিবঃ কথিখিং বীকারমাত্রেণ তভুকেনোপচর্য্যমাণোহণি লৌকিক বালবং কেলির্ব্যা ইতি প্রমাশ্রের্যাণ বিষতি পশান্তি
সতি। যথা। অবজ্জুক্ বিবিধপ্রবন্ধতো যজ্ঞভাগমণি যোন ভৃত্তে স বালেব্ কেলিঃ ভোজনমধ্য এব তৈরেকৈকশঃ সহৈব বা পরীক্ষ্যমাণদ্য ভোজাদ্য সন্ধ গ্রহণ শ্লাঘন নিক্ষন ভোজন মুধভঙ্গী হাসনাদি ক্রীড়াব্দ্য সঃ। এবং ভোজনে স্কাভিমুধ্বৈত্বধ্য বিশেষণ

क्रमनवर्षः ।

তত্ৰ তছচিতানি ফলানি সন্ধিত লবলী ধাত্ৰী প্ৰভৃতীনি বৰ্পে লোক ইতি সমন্ততংক্ষনাপেক্ষা। অন্তৰ্ক ক্টা তদহ-মোদিতা। অত জুবালকেলিঃ সন্বৃভ্কে ইতি মহান্বিশেষঃ ॥ ৯ ॥

विविधनाथहक्कवर्सी ।

সংহ্যরা: সক্তমা এব সংর্ধে শ্বর ভৌজাস্য শ্বপৃহানীতস্য ভক্ষসারব্যঞ্জনাদে: কচিং রোচকতাং দর্শন্ত: শীরবটকশাকরসালাদিকং শ্বরং কিঞ্চুক্ । আবাদবিশেবমন্ত্র ভো: সংধ ক্ষ তো: প্রাদামন্ ভো: প্রবদ পশ্যত সদারবটকাদিকং
কীদৃশং শারিতি সভক্ষপাত্রাজ্ঞাইছি। ক্ষাদীনাং হ্রের্ দ্লানালাং জনাশাদস্ভাবদ্ধ ইতার্থ:। হসবো হাস্বস্থ ইতি জাতীমাস্ত্যাদিপুশাণি বটকাভরের অলক্ষিত্মপ্রিষ্ণ ভো: স্থার: এতানতিশাত্তমান্ বটকানাশাদ্যতে হাজিবিশাসাং সশ্বং গৃহীষ্
তান্ ভ্রানান্কট্রতম্থান্ দৃষ্টা ব্সব্রোহাসরভক্ষারতিঃ সহর্কৌত্কং তাডামানাং প্লারমানাশ্চ॥ ৮॥

তেখিপ নব্যে ক্লুক্সা ভোজনলীলাং 'সর্কবিলক্ষণামাহ বিপ্রদিতি জঠরপট্রোক্ষরবল্পরোম'খ্যে বেগুং বিপ্রথ দধ্য দক্ষিণকুক্ষা-বেবেজি শোভৌচিত্যাদিতি জেরং বাবে ককে শৃলবেত্তে বিপ্রথ। বানে পাণো মহুণং লিগ্নং বুরুদধ্যোদনকবলং বিপ্রথ। তৎক্লানি

সকলে পরত্পর আপন আপন খাদ্যদ্রব্যের বিশেষ বিশেষ আত্মার পৃথক পৃথক দেখাইয়া হাস্য পরিহাস করত শ্রীকৃষ্ণের সহিত ভোজন করিতে আরম্ভ করিল॥ ৮॥

ভিষ্ঠিমধ্যেরপরি স্ক্রে। হাসয়র্মভিঃ সৈঃ স্বর্গে লোকে মিষ্তি বুড়ুছে যজ্ঞভুথানকেলিঃ ॥
ভারতৈবং বৎসপেয়ু ভূঞানেমচ্যতাত্মন্ত । বৎসাস্ত্রস্তর্বনে দুরং বিবিশুন্ত গলোভিতাঃ ॥ ৯ ॥
তান্ দৃষ্ট্বা ভয়সংত্রস্তান্চে ক্স্থোধস্য ভীভয়ং । মিত্রাণ্যাশামা রিরমতেহানেয্যে বৎসকান্হং ॥১০

अधितयामी।

পাল্যোবি শেবণং মক্তৃণ লিক্ষং দধ্যোদনং কবলং তছচিভানি পিৰাদিফলানি অঙ্গুলীসন্ধিষ্ কর্নিকেব বর্ধাভিনুখো মধ্যে তিষ্ঠন্ অস্থ্য প্রিত উপবিষ্টান্ স্কুদ্ধং বৈ নাৰ্শভিঃ প্রিহাস বাক্যৈঃ স্থাগৈ অর্গবাসিনি জনে আশ্চর্গ্রেণ পশ্যতি স্তি ॥ ১ ॥ . .

ভীভয়ং ভয়হেতৃভো ভয়ং অস্য অপাস্য। যথ। অন্ত বিশ্বস্থি ভিয়েং পি ভয়ং। য: এক্স্ডা। আশাডোজসাং। অস্মিন্পাদেইক-বাধিকামার্থ। ১০॥

বৈষ্ণৰভোষণী।

তথা বেণ্। দিধারণপরিপাটী সহিত্যে দ্বাবস্থানাদিবাল্যলীলাবিশেষেণ চ ভগবজ্ঞাবিশেষপ্রকটনং পূর্ব্ববদৃষ্ণ ॥

এবমুক্তপ্রকারেণাচ্যুতে ভগবতি আত্মা মনো যেষাং তেমু ত্নৈর্লে ভিতাঃ। যদা। ব্রহ্মণা ত্নৈ লো ভিতাঃ সন্তঃ শ্রীভগবৎ-সাক্ষারয়নাশক্তেঃ হে ভারতেতি হুংথেন সম্বোধনং॥ ১॥

তান্বংসপান্ ভয়েন বংসাদর্শনজয়া শকরা সংক্রাস্থিয়ান্ অস্য বিশ্বস্যাপি বা ভী ততা অপি ভরং অভাবত এব সর্বাভরপ্রদেই ত্যর্থ:। অভস্তস্থাক্টেনব তেকাং ভয়মপগতমিতি ভাব:। অহমেবৈকাকী বংসান্ সর্বানেব ইহৈবানেষ্যে। হে মিআণীতি স্বেহং ব্যঞ্জয়াশাসমতি তত্মাল্মুয়াকং ভোজনাত্পরত্যা মন মহাত্রংং তাদিতি বোধয়তি অতএব বংসানাং নিকটন্থিভিভানাক ন কোহপি তংসকে গত ইতি জেয়ং॥ ১০॥

ক্রমনন্দর্ভ:।

ভনসংক্রস্তান্ ভন্মনোদিগ্রান্। অত্র তদাগ্রহেণ্টের ন কোহপি তৎসক্ষে পত ইতি জ্ঞেনং॥ ১০॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্ত্তী।

তত্চিতানি সন্ধিত করীর লবল্যাদীনি অঙ্কীরু বামপাণ্যস্লিসন্ধিরু পালে বি বারাথমিতি ভাবঃ। যথা। তৎকলানি তৎপ্রেল্মনী-ভূতান্ কুদ্রগ্রান্ দাক্ষণপালস্লিষু বিভং মুপপ্রবেশযোগ্যান্ বছতরপ্রালান্ ততঃ পৃথক্কত্য প্রহীত্মের বামে পাণৌ, বৃহৎ-ক্বলগ্রহণং ক্ষেয়ং॥

কণিকেৰ সৰ্ব্যাভিমুখো মধ্যে তিষ্ঠন্ যৈ ন শাভিবিতি ভো ভ্লাঃ কিং মলুপাভিমুখং ধাৰত সুকুমারং মধুমললং পুরস্থিতং পিৰত ভো ব্যস্য ভ্রাহ্মবারং মাং কিং ভূলৈং পাদয়নি মন্যে ভ্ৰন্ধভায়ামপি তে ন ভরমিতি। ভো এতদনস্থা ৰামরা যুগ্ধাস্থ, বৃভুকুৰু জাগ্রংক্ষি নংপ্রিয়স্থাঃ নিবিস্থং ভূগ্ধতে ভদলক্ষিতং আগচ্ছতেতি ভক্ত নর্ম্ম সভ্যসন্ধলভাশক্তি লীলাশক্ষিভামিপি স্থামিন্ প্রভো কৌতৃকার্থং যদি ভোজনে বিশ্বমীহসে তহি আবাভ্যাং ভদর্থং ভ্রন্ধা সংপ্রভোগানীয়ত ইতালক্ষিতমন্থমোদিভমিতি জ্বেয়ং। স্বর্গেলোকে
ভ্রামিজনবলে মিধতি আশ্চর্গোৰ পশাভি সভি যজ্জভুক্ যজেষ্কেশ্নাজেৰ সমর্পিতমন্থপত্তং মন্ত্রপ্তমেব হবিঃ স্বীকার্মাত্রেশৈব
ভ্রামোহিপি বালৈঃ সহ কেলিমিপ্না ভূজালাদানপ্রদানভোজনলাদননিক্ষাদিনমিক্ষী যস্য সং ॥ ১ ॥

অন্ত বিষদ্য যা ভীন্ততা অপি ভয় €ভয়প্ৰদ ইত্যৰ্থ:। হে মিত্ৰাণীতি দেহং স্কন্ধত। আশাৎ ভোজনাৎ। প্লোকোহয়ং নৰাক্ট্রক-পালোহস্টুত্তেদ ইতি প্রাঞ্চ: ॥ ১০॥

ইতেছিলেন। স্বৰ্গবাদী ও মৰ্ত্যন্থ ব্যক্তিগণ আশ্চর্যান্থিত হুইয়া ঐ ভোজনলীলা অবলোকন করিতেছিল। ুহে ভারত ! উক্ত প্রকারে যাবতীয় বংসপাল শ্রীকৃষ্ণগণ্ডচিত হুইয়া ভোজন করিতে থাকিলে তাহাদের বৃৎস্থান চুরিতে চরিতে ত্ণলোভে হুঠাৎ দূরবর্তি একটি বনষধ্যে প্রবেশ করিল॥ ৯॥

তদ্দর্শনে বংশারালগণ উবিগ হইলে ঐকুক্রালিকা করিয়া ভয়ের কারণ হইতে ভাছাদের জীতি-বিমোচন প্রঃসর ক্রিলেন হে মিত্রগণ! ভোজন হইতে বিরত হইও মা, নিরুষেপচিত্তে আহার ক্র, আমি তোমাদের স্ক্র বৎস আনিয়া দিতেছি ॥ ১০ ॥ ইত্যুক্ত । জিদরীকুঞ্চাহ্ররেষাত্মবৎসকান্। বিচিষ্ধ ভগাষান কৃষ্টি স্পাণিকবলো যথো ॥ ১১॥ অস্তোজনজনজনজনজনতা মায়ার্ভকস্যোশ্তু দ্র ক্রুই মঞ্মহিজ্যটানপি তির্ফানিতো বৎসপান্। নীজান্ত কুরবহান্তর্দধাৎ থেহবন্ধিতো যঃ পুরা।

वीधत्रवामी।

বৈষ্ণবতোষণী।

আছানো বংসকানিতি গোপবাজকুমারছেন সেহবিশেষেণ চালাবংসানীমপি তদীয়ছাং বিচিছন্ অষেষ্ট্মিতার্থঃ। যছঅস্ত্যানিরু বিচিছন্ সন্যয়ে তত্ত তত্ত বভাম ইতার্থঃ। তত্তাপি স্পাণিকর্ষা এব স্বয়ং কথস্তো ভগবান্ কৃষ্ণঃ স্বয়ং ভগবান পীতার্থঃ। অহো পশ্যত নিজজনদ্যান্তামিতি ভাবঃ॥ >>॥

প্রভবত ইতি কর্ত্তরি যক্তী প্রভূনেত্যর্থ;। অক্তোজনজনিঃ মহাপুক্ষনাভিক্ষণাজ্ঞাতত্বন খতঃ সর্বজ্ঞোহণি প্রভূনা তাদৃশানান্ত শক্তিযুক্তেন কর্ত্রাহাল্যরভাগি নোকং দৃষ্ঠা যং পরং বিষয়ং প্রাপ্তঃ নোহণি ঈশিত্ অফ্রপ্রথমব্যপদেশাম্পদভাগি অন্যদণি তভাদ্ধং মঞ্মহিছং দ্রন্তঃ, অন্তিউভিজ্ঞঃ সন্নিতঃ স্থানান্তনান্ বৎসপাংশ্চান্যক্র নীবা শ্রীভগবদ্বেষণপর্যন্তং শ্রীবৃন্ধাবনপ্রদেশান্তরে স্থাপরিত্বা স্থমস্করধাৎ চোর ইব বৎসান্ পুলিনমানিন্যে যথা পূর্বস্থং অকমিন্ত মায়াশ্রে শাস্ত্রানা মে ইত্যাদি বক্ষ্যমাণেভান্ত প্রক্তিক তিব্রবানীর রক্ষিত্বানিতি জ্ঞেরং। তেষাং শ্রীকৃষ্ণত্বাগ্রণানামপি ব্রক্ষায়াপরিভবপ্রার্থং ভগবহরবলনীত্বেনের সম্ভবতীতি জ্ঞেরং। অন্যথা নরলীলভাগিছে:। নম্ বদ্যবং প্রক্টমাহাজ্যো ভগবান্ ব্র্লাচ সর্বজ্ঞাক কণ্ডং তহি বিশ্বরং প্রাপ্তঃ কথবা পূনঃ কর্মনিশ্রারং পরীক্ষামির কৃত্রান্ ত্রাই মায়ামোহনতা তদ্বুক্ত্রার্ডকন্ত সর্বমোহনার্ভক্লীলস্যেত্যর্থঃ। তল্মোহনতরা মূহরেরখর্য্য-

ক্রমসন্দর্ভঃ।

আয়বংসকানিতি সর্বাত্র সীয়তাবৃদ্ধা ভগবানপি তথা যথৌ ॥ ১১ ॥ - মায়ামোহনতা তদ্যুক্তার্ভকস্য সর্বমোহনার্ভকলীলসোত্যর্থ:। পুনঃ পুনঃ ব্রহ্মণোহপি মোহে সিদ্ধান্তোহয়ং ॥ ১২ । ১৩ ॥

গ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবন্তী।

দলাণিকবল ইতি বৎসাঘেষৰ সময়েংগি কিঞ্জিক্ত্রাক্ত্রিতি ভাবঃ ॥১১ ॥

অন্তোজন্মন: ক্মলাজ্ঞনি র্ন্যোতি জড়রংশ্যুতাৎ সচেতনোহণি একা জড়এব বদরং ভগবন্তং পরীক্ষিত্ব মহামারাবিন্যাণি তামিন্
মারাং বিভ্রতানেত্যাক্ষেণা ধ্বনিত:। অত বংসান্ প্রিন্মানিন্যে যথাপূর্বস্বং অক্ষিত্তার এইবিরোধাৎ নিত্যবিজ্ঞানান্দস্কুপ্রস্থা ভগবতন্তৎ প্রির্স্থানাং বালকানাঞ্চ চতুমু থ্যার্য়া মোহন মনৌ চিত্যার্ব্যাথ্যেরং। যন্ত পূত্রাদীনামণি মার্যা ভগবন্ধানাস্থানাপি মোহনং তৎ থলু বিশ্বর্ষ্ণাধায়ক্তওলীলাসিদ্ধার্থ। লীলাশক্ত্যা অহ্যোদনাদেব নতু স্বতঃ। অত্যু ব্রহ্মার্য্যা ক্ষ্যস্থানাং কেবলম্বাপনেন কা নীলাসিদ্ধিরত এবাং বোগমারের মোহনং ক্ষ্মারাহতাত্মনামিত্যবিম্বাক্যান্ত জ্বেরং। নচ ক্র্যায়ারমোহিতানামের তেরাং ব্রহ্মকর্ত্মন্যত্র নয়নং ব্যাথ্যেরং। উপরিষ্টাদির এতেহক ক্রেত্যা ম্লারামোহিতেনে ইতি ব্রহ্মাক্যানম্বরং সভ্যাঃ ক্লে ক্ত্রে নেতি জ্বাত্বং নেতে কথ্মনৈতি শ্রীভ্রেন্তিং। নহি ক্ষ্যথানামস্তীম্বং তেন বজু মুচিভ্রনতা মারিকানামেব বালবংসানাং হ্রণং বন্ধা ক্রমিত্যেব্যত্র্যাথ্যেরং বন্ধা ভদন্তরে তামিরবসরে গত আগতঃ স্বন্ অন্যদ্ধি মহিম্বা মহিমানং তেই হ অর্ত্বস্য স্থিতির: শ্রিক্ষস্য বংসান্ ইতঃ পুলিনাৎ বংস্থাংক জ্বাত্র নীত্বা অন্তর্ধাৎ তিরোবভূব বৎ ত্রং মারা ভগবন্ধারা মোহিন্ত।
মেব কং স্ক্রং ধার্যা মোহিত্ত এব বন্ধা মহিন্তং ক্রেইং মারাক্রিভানের বুংসান্ বংস্থানন্য্রান্রদিত্যেইং। অন্য মার্য মার্যা মোহিন্ত।

এই কথা বলিয়া খাদ্যদামগ্রীর গ্রাস হাতে করিয়াই পর্বত, পর্বতগুহা, লতাচ্ছম বিবর, তথা সঙ্কট স্থান সকলে বংস অন্মেশ কর্ত গমন ক্রিলেন ॥ ১১ ॥

হে রাজন ! পূর্বে বে এক্সা আকাশে অবস্থিত হইয়া প্রাক্তরে অঘাত্মরেয়াকণ নিরীক্ষণ ক্রিয়া রিক্সয় প্রাপ্ত হইয়াছিলেন সেই প্রাযোনি ঐ অবসরে আসিরা বালরূপি-ঈশ্বর হরির অন্য সহিমা मृ**के । याञ्जलाक गः अञ्चलः शास्तः भतः वि**त्राहरः ॥ ১২ ॥

ততো বংসানদৃষ্টৈ তা প্লিনেছপিচ বংসপান্। উভাবপি বনে কৃষ্ণে বিচিকায় সমস্ততঃ ॥১৩॥ কাপ্যদৃষ্ট্ৰাস্তৰি পিনে বংসান্ পালাংশ্চ বিশ্ববিং। সর্বাং বিধিকৃতং কৃষ্ণঃ সহসাবজ্ঞাম হ ॥১৪॥

टीधत्रवामी

দ্রষ্ট্রের বংশান্**ইতঃ হানাৎ বংশপাংশ্চান্ত্র নীমা ব্যং ভিরোবভূব প্রভবতঃ প্রাক্ষ**স্যা ১২॥ উভাবপি বংশান্ বংশপাংশ্চ বিচিকার **অবীক্ষিত্বান্॥ ১৩॥**বিধিক্তং ব্রহ্ণা কৃতং ॥ ১৪॥

देवक्वरणावनी ।

জ্ঞানাচ্ছাদনাং ইতি ভাবং। প্রাক্তনত**ত্তরাল্যলীলামোহনতাবদধুনা**পি বন্যতোজনলীলামোহনতদ্বৈব নিগতলাধ্বদীক্বত্য বাঢ়ং বিশিষ্টীক্বত্য চ তাদৃশতদৈৰ্থ্যাক্তরাবেষণার তথা প্রবর্ধিতোহসাবিতি বিবন্ধিতং। কুর্ম্বহেতি প্রৈণ্যতাদৃশী তথাল্যলীলা মোহনতার। প্রমঞ্জানদৃঢ়চিক্তং বন্ধাণমণীখং মোহন্তি ইতি ব্যক্ষতে ॥ ১২ ॥

তত্ত্বংপশ্চাৎ চকারাৎ নিক্যাদীনিচ উভাবপি ইতি কচিন্নমন বিলবেনাতিত্বংশিতাঃ সভো মদবেৰণাৰ্থমের স্থারতে ভোজন-সামগ্রীসহিতাঃ কুর্রাপি গতা ইতি বংসপান অন্যত্ত্বৈর গতা ইতি বংসকানপি। অদর্শন মার্টেশের সেহভরাক্রান্তা পূর্বজ্ঞানাত্মনো-জ্ঞানবন্মুর্তিরপি বিচারতিরোধানাদের মুক্তং ॥ ১৩ ॥ ।

অন্তৰিপিনে বৰষণা এবেতি মধাাকে তেবাং আন্নানং বিনা অলগমনাসন্তবাং। সৰ্ব্ধ ৰালকাদীনাং মোহনান্তধাপিনে ভদন্তহ্বানং নিজমঞ্মহিষদৰ্শানাভিলাৰাদিকং চাশেৰং সদা এব জ্ঞাতবান্। হ ক্টং। যভো বিশ্ববিৎ সৰ্বজ্ঞত্তক্তঃ বভঃ কৃষ্ণঃ ভগুবান ক্ৰমসন্তঃ।

লীলাবেশং দর্শরতি কাপীত্যনেন। জ্ঞানাদ্যা: শব্দর: স্থানবসরে সভয়মিব ওটয়াবিষ্ঠতি স্থাবসরে স্থলেবালৈ তমুপতিষ্ঠতীতি

ত্রীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

চোরিতের বংসবংমধের কিমর মৈশর্ষং কিমপ্যস্কৃতং করোতি জ্ঞাত। কিং শ্বরং তানেবানেব্যতি মহুং প্রার্থিরিষ্যতে বা ন কিমপি জ্ঞান্তীতি বেতি বিচারো মার্বা মোহনং বিনা তগ্য ন সভবেদতঃ তশ্বিন্ চোরিত্র্দ্যতে সতি বোগমারৈর সভ্যান্ বংসবালকানআজ্ঞান্য বহির সমারাধারা সদ্যাক্ষিতানেব তাংস্তমদর্শরদিতি জ্ঞারং। প্রভবতঃ প্রভা: ক্ষণং অবাস্থ্রন্য মোক্ষণং দৃষ্ট্ বো বিশ্বরং
প্রাপ্তঃ ॥ ১২ ॥

অদুহৈ তা নতু অপ্ৰাপ্যেত্যক্ষং। অতশুত্ৰস্থিতান্ জাতানণি অদৃষ্টা অদর্শনমতিনীরেতার্থ:। মন্মাররা মোছিত এবার্ষিতি একাণং মিথাতিমান্য প্রাহিষ্ট্রিত ভাবং। তত্তশেতাভাবণি বংসান্ বালাংশ্চ বিচিকার বিশ্ববিধাদান্তিনরপূর্ককং নটব্তদ্বেবণমতিনিনারেতার্থ: ত্ত্তোবহুৎপশুপবংশশিশুদ্বনাট্যমিত্যগ্রেতনাক্ষে: ॥ ১৩॥

পুন: কিং ক্রমা বিচিকারেতাত আহ কেতি। বিশ্বিদিশি কাণি শাংলাদনাত্রাপি বংসান্ পুলিনাদন্যত্রাশি পালান্ অদৃষ্ট্। বিচিকারেতি পুর্কেশৈবাঘর:। নহ ক্লঃ কিং বংশালিচের্কালন এব বিবেদ ডংক্শানতরং বা কিঞ্চিদবিশ্ব বা বিবেদেতাত আহ সর্ক্ষিতি দশ্লীরে তিনীয় বংস এবং ভৌজন স্থান হইতে বংসপাল সকলকে হ্রণ করিয়া লইয়া সোলন এবং অন্যত্ত্ব স্থাসন করিয়া আপনি অন্তর্হিত হইলেন ॥ ১২ ॥

এ দিকে জ্রীকৃষ্ণ বংসদকলকে দেখিতে না পাওয়াতে যেখানে হইতে গিয়াছিলেন দেই পুলিনে জাগমন করিলেন, কিন্তু দেখানে বংদপালদিগকৈও দেখিতে পাইলেন না, জতএব বনের চতুর্দিকে বংদ ও বংদপাল উভয়েরই অন্বেষণ করিতে লাগিলেন॥ ১৩॥

যথন বিপিনের ইতত্ততঃ কুতাপি বর্ষ ও বংসপালগণ দুই না হইল ত্থন হচাৎ তাহার বোধপুনা হইল যে, এ সকল বুঝি ভ্রনার কর্মা, হে রাজন্! ভগবান্ প্রাকৃষ্ণ সর্বজ্ঞা, তাহার ও বিষয় প্রবৰ্গত হওয়া বিচিত্র নহে॥ ১৪॥ ভতঃ ক্ষোমূদং কর্ত্র তন্মাতৃণাঞ্চ কস্য চ। উভয়ারিতমাত্মানং চজে বিশ্বকৃদীখনঃ ॥ ১৫॥ যাবৰৎসপ্বৎসকাল্লকবপু র্যাবৎকরাজ্যাদিকং যাবদ্যন্তিবিবাণবেণুদলশিগ্ যাবৰিভ্যান্তরং। যাবজীলগুণাভিধাকৃতিবয়ো যাবৰিহারাদিকং সর্বাং বিষ্ণুময়ং গিরোহঙ্গবদক্ষঃ সর্বস্থারতো ॥১৬॥

अध्वयामी।

উভয়ায়িতং বৎসবৎসপালরূপেণ বর্ত্তমানমিত্যর্থ:। অন্নং ভাব:। বদি তৃষ্টীমাসে তহি তিমাতৃণাং বিধাদ: স্যাৎ। বদি তানেবা-নরামি তহি ব্রহ্মণো মোহো ন স্যাৎ ইত্যুভয়ঞীতবে তথা চক্রে ইতি ॥ ১৫ ॥

ভবেৰ দৰ্শন্তি বাবদিতি। বংস্পানাং বংস্কানাঞ্জন্তক্ৰপু: প্ৰমাণং জনতিক্ৰম্য। এবম্প্ৰ্গপত্নি বোজাং। যাৰা । বাবৰংস্পাদি-

বৈঞ্চবতোষণী।

এতাবন্তং কানং হি তস্য বহিরবেষণদীলাদ্যভিনিবেশং দৃষ্টৈব জ্ঞানশক্তি ভট্ছাসীং। সম্প্রভিত্ মনগ্যেব তদ্মদক্ষিংসায়াং ভূ জাতারাং স্বস্যোবাবস্বে সমুপস্থিতেতি ভাবঃ। ঈশিভূরিজ্লাশক্তিপরাধীনদাং সর্বশক্তে: ॥ ১৪ ॥

জন্মাতৃণাং সর্বাদা সং প্রীরস্তানাং ইদং কর্ত্। চকারাছিনা স্বস্থং কণমপি স্থাত্মপারস্থাং মিত্রাপানপাজগরোদরপ্রবেশবদাস্থানো দীলাবেশাদন্যাংপাতশ্বরা তান্ কতিচিদিনান্যেকান্তে রক্ষিতৃঞ্ ছারকারাং বাদবানিবেতি জ্বেং। এবং ভেবাং মারাশরে
শরানস্থার তিছিরহছংখং ভগবতশচ তত্তদর্শনেন তৈঃ সহাতিবিছেদে ইতি নাসমন্ত্রসঞ্চ আহুসন্ধিকং প্রারোজনমাহ কস্য চেত্তি। তস্যাষ্টাদশাক্ষরতদীর্মহামন্ত্রোপাসক্ষাং। এবং শ্রীক্ষক্ষেইরের তেবাং মোহোন ব্রন্ধমারাসামর্থোনেতি শভাতে। তত্তচাম্পলীলাচ
সাধারণদৃষ্টান সিধাতীতি আন্মান্যের উভরায়িতং উভরং বৎসা বালাশ্চেত্যেবং। কিছা স্বয়ং ভগবান্ বৎসবৎসপাশ্চ ইত্যেবং ছয়ং
ভর্লাচরন্তাং চক্রে নাতীবভেদাত্তরং ইব চক্রে ইত্যর্থ:। শীত্রতভ্ববতারসামর্থাং দ্যোত্রতি বিষক্ষভাং মহাপ্রবাদীনামণীবরঃ
স্বয়্মবতারীতি॥ ১৫॥

তদেব প্রপঞ্চরতি, যাবদিতি। যাবচ্চমেনাত্র যথাস্থানং সংখ্যাপ্রমাণাদিকং বিবেচনীরং ততক বাবৎসংখ্যানি বৎসপানাং বৎসকানাঞ্

ক্রমদন্দর্ভ:।

छालिखः। ১৪। ১৫ । ,১७। ১৭॥

ঐবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

সহসা চৌর্যাক্ষণ এব ব্রহ্মণা অভর্কিভমেবেতার্থ:। অতর্কিতে তু সহসেতামর:॥ ১৪॥

তত্তক ভগবন্ধান্তরা মোহিতে ত্রন্ধণি মোহকানো অভবনং গতে সতি অস্য ত্রন্ধানামোহনাভাবমাত্র ব্যঞ্জ পূর্ববং পীরৈব বিস্বাবিদ্ধঃ সহ ভোজনাদিলীলাভি বিহারো নাভিবিচিত্রনিত্যতো মান্নাভীভান্ বলদেবপর্যন্তানপি অপরীবারান্ মোহনিছা লোকে অমারাবলং দশ্রিভুং প্রমবংসলানাং গোগোপীনাং অন্ধিন্ পূত্রভাবমভিলবন্তীনাং মনোরংং পূর্রিভুং ত্রন্ধাণং মোহনিছাপি পুনম হাবিদ্ধান্তম্ব প্রক্রেয়ার প্রক্রেয়ার আক্রেয়ার আভিইদেবে প্রভাবতোপদেইরি বাস্ক্রেরে ভক্তিমন্তং প্রস্কাব্র বাস্ক্রেরান্ বাস্ক্রেরান্ বাস্ক্রেরান্ বাস্ক্রেরান্ বাস্ক্রেরান্ বাস্ক্রের বংসবালাদ্যাকারো বভ্বেভ্যাহ তত ইতি। কস্য ত্রন্ধণঃ। আদ্ধানং অন্ধ্রের উভনারিভং উভন্যং বংসদং বালকভক্ত আরিং বংসবাল্রনিণমিত্যর্থঃ। বিষক্রভাং মহৎক্রেরীনামণীশ্র ইভি তত্ত্ব সামর্থ্যং গোভিতং॥ ১৫ ॥

ভদেব প্রাপক্ষতি। বাবৎ বৎপরিমাণকং বৎস্পানাং বৎস্কুানাক অরকং বৃপ্তঃ। জাত্যপেক্ষরা একবচনং। অত্যরানি কোমণানি

সে যাহা হউক, তৎপরে বিশ্বকর্তা ভগবান্ হরি সেই সকল বালকদের, জননী তথা ত্রন্ধার আনন্দ নিষিত্ত আপনাকেই বংস ও বংসপাল এই দিবিধ রূপে রচনা করিলেন। হে রাজন্ ! ভগবান্ বিবেচনা করিলেন ত্রন্ধা বংস ও বংসপালদিগকে হরণ করিয়া লইয়াগিয়াছেন, যদি আমি চ্ফীভূত হইয়া থাকি তাহা হুইলে ফালক্রিগের মাতৃগণের ও বি্যাদের পরিসীমা থাকিবে না, আর যদি সেই সকল বংস ও বংসপাল্রিগকে আনমন করি তান্ধা হইলে ত্রন্ধার আনন্দ হইতে পারে না, অতএব উভয়ের প্রীতিনিষ্ঠি আপুনিই হুই প্রকার হইয়া রহিলেন্ম ১৫ ॥

अवीर, बर्न ७ बर्नानितिन यक्त कृतिनितिन गतिन, त्य अवात कृत कृत रख भानि,

সম্মাত্মাত্ম-গোবংদান্ প্রতিবার্যাত্মবংদপৈঃ। ক্রীড়নাত্মবিহারে চ দর্কাত্মা প্রাবিশন্ধ জং ॥১৭॥

धिषत्रचामी।

বপু ন্তাবং দর্মরপোহজ: একুকো বভাবিতি উত্তরতাপ্যেবং। দর্মং বিফুমরং অগদিতি প্রসিদ্ধা বা গীং তদ্যা অঙ্গবং দা গীরেবার্থ-শ্বরপেণ প্রত্যক্ষা যথা তথা বভূবেত্যের্থ: ॥ ১৬॥

এবং সর্কান্তা সন্ত্রকং প্রাবিশৎ কথং স্বয়মারৈ ব প্রবোজকঃ। স্পাত্মরপান্ গোবৎসানিতি কর্মাপি স্বরমেবেত্যুকং। স্বাত্ম

বৈষ্ণবতোবণী।

তথা তেম্বরকানাং বংসপাত্মচরবালানাং বংসকাত্মচর ক্রীড়নমেষাং বপুংষি তাবদিতার্থঃ। এবং যাবন্ধি মংপ্রমাণানি করাজ্যান্দীনি তাবদিতার্থঃ যথ প্রকারাণীতি জ্বেয়ং। যাবচ্ছীলগুণেতার যাবন্ধি বাদৃশানীভার্থঃ। তর শীলং স্বভাবঃ গুণাত থুংকর্থ-কেতবং শিক্ষাবিদ্যোধাঃ অভিধা বাণী তন্ত্রমানভিনিবেশাে বা আরুতিরাকারঃ বিতীয়াদিশকাথ পিতৃমান্রাদির ব্যবহরণং পূর্বাচরিতস্মরণাদিকক। তাবং তত্তৎ সর্বাং অলএব বভৌ। ষতঃ সর্বাং তচ্চান্টে প্রাকৃতাপ্রারুতং বন্ধ ব্যবহরণং পূর্বাচরিতস্মরণাদিকক। তাবং তত্তৎ সর্বাং অলএব বভৌ। ষতঃ সর্বাং তচ্চান্টে প্রারুতাপ্রারুতং বন্ধ ব্যবহরণং প্রাক্তান্তর্গ
সর্বাং কীদৃশং বিক্র্ময়ং শ্রীভগবদাত্মকং আত্মা জ্ঞানময়ঃ গুদ্ধ ইত্যন্ত স্বরূপেথপি ময়ট্ দর্শনাথ। বাগকভাপেকরা বিক্র্শবঃ। অতো

যদসতং ভবচ্চ ভবিষ্যান্ত ইত্যাদি প্রতাভানি তেতাবাদ্যানান্ত সর্বাং তন্ত্র বর্ত্ত এব বক্তাপেক্রের তত্ত্বস্মাদিবাপদেশ ইতি ভাবঃ।

তদেবাহ অল ইতি এবমেকস্রেব বংস বংসপাদিরপদেশ ততঃ পৃথক্তেন চাচিন্তা শক্তাহভিন্নত্বমপ্যক্তং তন্ত্রোপ্রক্তা দৃষ্টাতঃ গিরো

বাক্যন্ত তিপ্ত্ স্ববন্তচয়লকণ্যাকং কর্ত্কশাদিপদাং খণা তথাদিতি তিপ্ত্ স্ববন্তচয়্বা তদভিন্নতে শ্রী ভগবতন্ত ভিন্তিরাবাদি বিত্তত্বে দৃষ্টাভারিত্য স্বান্তিরা ৷ ১৬ ৷৷

গোবৎসানিতি অভাবতোহতি বৎস্লানাং গ্রাং বৎসেষু প্রমাপেক্ষ্যন্থং হচিতং। অতএব প্রতিবার্য্য ব্লান্নিবর্ত্ত। সর্ব্যাত্ম শব্দ প্রয়োগেণ পূর্ব্ব বৎসাদিভো ভেদো দর্শিতঃ। তেন চ ভগবৎক্ষেহপাত্রছে তেভো ন্যন্মেষামভিপ্রেতং তচ্চ নাহ্মাত্মান্মাশাদে

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

বপৃংধীত্যর্থ:। এবমুন্তরত্রাপি বিহারাদিকনিত্যত্রাদি শব্দাংপিত্মাত্রাদিরু ব্যবহরণং পূর্বাচরিত স্মরণাদিকক। অজঃ অজন্যতরের ভীত্তএব ক্লফঃ দর্বস্থরাদেরপঃ দন্বভৌ দর্বং বিষ্ণুমন্ম জগদিতি প্রসিদ্ধা যা গীন্ততা অক্লবং সা গীরেব মূর্তা প্রত্যক্ষা যথা বস্তুবেত্যর্থ:॥ ১৬॥

ততক্ষ মধ্যাক্সাণরাক্ষাে: পূর্ব্বদেব জী ড়িতবতত্ত্ব সায়ং গোষ্ঠপ্রবেশমাহ ব্যমিতি পঞ্চিঃ। এবং সর্বাত্মা সন্ এজং প্রাবিশং। কথং ব্যয়মাথৈর প্রযোজকঃ আত্মরণান্ গোবৎসানিতি কর্মাণি ব্যমের আত্মরণৈ বঁৎসগৈঃ প্রতিবার্ণ্যেতি প্রভাজ্যকর্তাপি ব্যমের। আত্মবিহারে: আত্মভিরাত্মভূতৈর লিকৈঃ সহ যে বিহারা বেশ্বাদনাদ্য ভৈজীড়নিতি ক্রিয়াকারকাগাপি ব্যমেরেতার্থঃ। অত্ম পুলিনে বৎসপালা উপবিশ্য ভূঞ্চ এব শান্ধলের বৎসা ভূণং চরস্ত্যের তানবেইং ক্রন্থো নিপিনে পর্যাতত্যের ক্ষণনার্যাণাং বর্ষং ব্যাপ্রতিত্তি কং সর্ব্বের্দ্ধা তত্ত্ব হলের প্রতিদিনং ভ্রমন্তিরনৈ লীলাপরিক্রেঃ ক্রন্থারপ্রপ্রথমবার্নিত্তার ক্রিব্রের বর্ষবাতাতপ্রদারবাদিক্সাশক্তা যোগমায়া ব্যরাজীদের যগৈক্তবি ক্রেণা ব্রহণা ক্রন্থো ক্রন্থো দিলক্ষণালিতো মোহান্তে

যাদৃশ শৃঙ্গ (শিঙ্গা) বেণু দল শিক্য প্রস্তৃতি যেমন বসন ভূষণ,যজ্ঞাপ শীল গুণ আকার বয়স,,বে প্রকার বিহার ইত্যাদি, অবিকল তজ্ঞাপ হইয়া সর্বব্যরূপ ভগবান্ দীন্তি পাইতে লাগিলেন। অতএব "সমন্ত জগং, বিষ্ণুষয়" এই যে প্রসিদ্ধ ধাক্য ভাষা শ্লেম অর্ধতঃ প্রত্যক্ষগোচর ইইল । ১৬।

সে বাছা হউক, ভগবান ঐ প্রকারে সর্ব্যাপ্তা ইইয়া একে প্রবেশ করিলেন, আপনি আত্মরপি-বৎসপালক বারা নিবারণ করিতেছিলেন অর্থাৎ প্রযোত্তক এবং প্রযোত্তা কর্তা আপনিই হইয়াছিলেন। আর আত্মবিহারদারা অপিনিই ক্রীড়া করতে ক্রিয়াকারকও আনিনিই হইরা- তত্ত্বৎসান্ পৃথঙ্নীত্বা তত্ত্ত্বলোচে নিবেশ্য চ। তত্ত্বাত্মাভবদ্ৰাক্তং স্তত্ত্বৎ সন্ম প্ৰবিষ্টবান্॥১৮ তন্মাতরো বেণুরবত্বরোখিতা উত্থাপ্য দোর্ভিঃ পরিরভ্য নির্ভরং। ত্রেহস্পুতস্তন্যপয়ঃ স্থাসবং মন্থা পরং ব্রহ্ম স্থতানপায়য়ন্॥ ১৯॥

शिधत्रवामी।

স্বরূপৈ ব'ৎসপৈঃ প্রতিবার্যোতি প্রযোজ্যকর্তাপি স্বয়মেব আত্মবিহারেঃ ক্রীড়ন্মিতি ক্রিয়াকারকাণ্যপি স্বর্মেবেত্যর্থঃ॥ ১৭॥

তন্ত্রদায়া তন্ত্রদোপবাল করপোহভবদিতি। তত স্তন্তৎ সন্ম প্রবিষ্টঃ ॥ ১৮ ॥

গোপিকামোহনমাহ তন্মাতরো বেণুরবেণ ত্বরা উথিতা: সত্য: স্থতান্মত্বা পরং ব্রহ্ম ইব দোর্ভিরুপাপ্য উত্ত পর: স্থধাসবং পর এব স্থধাবৎ স্বাত্ আসববন্মাদকং পায়রামাস্থ রিত্যর্থ: ॥ ১৯॥

বৈষ্ণবতোষণী।

ইত্যাদি ভগবৰচনং ব্যক্তমেব ॥ ১৭ ॥

তত্তদাত্মা তত্তংস্বরূপঃ প্রবিষ্টবান্ ভবং প্রবিশ্যাসীদিত্যর্থ:। যথা। অর্থান্তন্তন্তেপেণ স্বস্থারং প্রবিষ্টবান্ সন্ তত্ত্দাত্মা তত্তং-প্রথমবানভবং। বংস্থার নিরোধ গোপাহ্বান সুক্ষেতিত বেণু বাদনাদিক্ঞ ক্রতবান্ ইত্যর্থ:। আত্মা যত্ত্বো বন্ধ বর্ষ হর্ত ইত্যমর:॥ ১৮॥

তনাতৃণাং চনৎকারং প্রপঞ্চন পূর্ব্বতঃ সেহবিশেষং বক্তৃং তলকণং দর্শয়তি তন্মাতর ইতি। উথাপ্যাত্তে গৃহীত্বেত্যর্থ:। যহা। প্রণতাম্পাপ্য। উত্তেতিতৃ কচিৎ পাঠঃ। কিন্তু উথাপ্যতি টীকাবৈপরীত্যং ক্ষেরং অত্রৈব টীকারাঃ সাফল্যং স্যাৎ ইতি চ পরং ব্রন্ধেতি শ্রীশুকস্তৎপারমৈশ্ব্যক্র্যা তাসাং ভাগ্যং শাঘতে অহে। ভাগ্যমিত্যাদিবৎ। স্বরেতি নির্ভরমিতি স্থাস্বমিত্যাদিকঞ্চ পূর্বতো বিশেষদ্যোতনায়॥ ১৯॥

क्रममन्द्रः।

স্থং পুত্রীয়স্তীনাং তন্মাতৃণাং চকারাৎ বিনা স্বসঙ্গ চিত্রাং তেষাং স্থীয়েন লীলাবেশেনাঘোদরপ্রবেশবর্ৎপাতাস্তরশহ্যা কতিচিদিনানি চ একান্তে তান্ রক্ষিতৃঞ্ দারকারাং যদ্নিবেতি জ্ঞেয়ং। তত্তদাস্মেতি বহুরীহিণা তত্তদ্ যুদ্বান্ ভবেদিতার্থঃ। আছা যদ্মে ধৃতিবৃদ্ধিঃ স্বভাবো ব্রহ্ম বন্ম হৈত্যমরনানার্থবর্গাৎ। প্রাস্কিকং প্রয়োজনমাহ ক্স্য চেতি। একস্বরূপছাত্ত্রায়িতমেব নতৃভ্রং। বিষ্কৃতাং পুরুষাদ্যবতারাণামীশরোহবতারী। বিষ্কৃষ্যমিত্যোপচারিকবিকারার্থে ময়ট্॥ ১৮॥ ১৯॥ ২০॥ ২১ ॥

🕮 বিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

मनृत्य पृष्ठे त्वं ८५ कि Cख्बत्रः॥ ১१॥ ˈ

তত্তদাত্মা শ্রীদাম স্থদাম স্থবলাদি বালকস্বরূপঃ ক্লফ ততেৎ সন্ম প্রবিষ্টবানিত্যময়: ॥ ১৮ ॥

হস্ত হস্ত যশোদার। ইবাদাকমপি কৃষ্ণ: কিং পুরো ভবেদিতি গোপীনাং মনোরথস্য সিদ্ধিং বছিরলন্ধিতাং বদরেব তাসাং মোহনমাহ তন্মাতরভবনাতর: স্বতান্মধা পরং ব্রহ্মব দোর্ভিকখাপ্য অব্দ্ধ কৃষা জন্যং পরোহপাররন্। উত্ত্তি কাচিংক: পাঠ্চ। নির্ভরং পারিরভ্যেতি নির্ভরং লুভেতি পূর্ব্বত: নেহাধিক্যস্চকং পরং ব্রহ্মাপি স্থাসবং মদ্ধা তাসাং তন্যং পরোহপিবদিত্যাহ স্থাসব্যতি। সেহস্কৃত্বেন সেহমন্ত তৎ প্রোমানাদ্যারসিক: কৃষ্ণ: স্থামিব স্বাহ্ আসন্মিব মাদকং পিরন্ পিবন্ধ্বভূবেতি ভলোভাদেব তস্যাপি তত্ত্বংপ্রীভাববাসনা প্রাগাসীৎ সাপি বন্ধবাহন প্রসঙ্গ এব সিদ্ধেতি। অতএব স্বস্য স্থীনপি বর্ষপর্যন্তং বোগমাররা মোহরামানেতি জ্বেরং। তন্যান্তং পীত্যতীব তে মুদেতি বন্ধণাপি বন্ধস্থান্ধ। ১৯॥

ছিলেন॥ ১৭॥

হে রাজন ! ভগবান নায়াবলে গোপবালকের রূপ ধারণ করিয়াছিলেন অভএব সেই সেই বংস সকলকে পৃথক পৃথক লইয়া গিয়া ভভদেগাছে ছাপন পূর্বক প্রত্যেকের গৃহে প্রবেশ করাইলেন ॥১৮

হে কুলবর্য। বৎসপাল বালকনিগের মাতৃগণও ভগবসায়ার মুখ হইরাছিল, তাহার। বেপ্রব আবণমাত্র সম্বর উপিত ইইরা সেই সকল মায়ারচিত বালককে স্ব স্থ তনর জ্ঞান করিরা যেন পরম-জ্ঞানেই বাহু বারা ছুলিরা অভিলয় আলিকন করিল, পরে স্থাবহ স্থান্ত এবং আসবহুৎ স্থান যাহা সেই ব্যক্ত স্থাবতই প্রস্তুত হইতেছিল, তাহা পান করাইতে লালিল ॥ ১৯॥ ততো নৃপোন্দন মজ্জলেপনালক্ষাররক্ষাতিলকাশনাদিভিঃ।
সংলালিতঃ স্বাচরিতৈঃ প্রহর্ষন নারং গতো যাম্যমেন মাধবঃ॥ ২০॥
গাবস্ততো গোষ্ঠমূপেত্য সম্বরং হুক্কারমোধ্যঃ পরিহুত্সঙ্গতান্।
স্বকান স্বকান বৎসত্রানপায়য়ন মুহুলি হস্ত্যঃ অবদৌধসং পয়ঃ॥ ২১॥

গোগোপীনাং মাতৃতাস্মিন্নাদীৎ স্নেহর্দ্ধিকাং বিনা। পুরোবদাস্থপি হরেস্তোকতা মায়য়া বিনা॥ ২২।।

अध्यक्षामी।

এবং যাম্যমেন তত্তৎকাল তত্তৎকীড়ানিরমেন সামং গ্রভঃ প্রাপ্তঃ স্বাচরিতেঃ প্রস্য আচরিতেঃ শোভনৈরাচরিতিক। মাতৃঃ প্রহর্মন্ তত্তাভিক্ল্মর্শনাদিভিক্পলালিতঃ ॥ ২০ ॥

গবাং মোহনমাহ গাব ইতি। পরিহুতা আহুতাশ্চ তে সঙ্গতাশ্চ তান্॥ ২১ ॥

এতাবৰৈষম্যং ঐক্তঞ্চ্পাদি ছনি বারমাদীদিত্যাহ গোগোপীনামিতি। গ্বাং গোপীনাঞ্জন্মিন্ ঐক্তঞ্জ মাভ্ভা উপলালন-

বৈষ্ণবতোষণী।

তত্ত্বালরপোহসৌ তত্ত্বলগুহের সর্প্রের এব প্রথমবসদিত্যাহ তত ইতি। যামো দিনান্ত্যপ্রহরন্তবিন্ যমঃ গৃহাগমননিরমঃ সর্পা বর্ষর্ বং। ত্ণসম্পত্যা ত্থানাং গবাং তদানীমাগমনতঃ পূর্প্রেব বংসানাং আগমাবশ্যক্ষাং তেন গৃহং গতঃ সারং দিনান্ত্য দেওবট্কং ব্যাপ্য উন্মাদনাদিতিঃ সম্ক্লালিতঃ মাত্তিঃ হে নূপ ইতি পূর্পপূর্প্রবং সর্প্র জ্ঞেমং। উন্মাদনং তৈলাদিনা। মজঃ স্বপনং। বেপনং চন্দনাদিনা আদিশকাং বন্যবার্তাশির্নাদীনি। মাধবং শ্রীকান্ত ইতি তক্ষ্ হসম্পত্তির্দ্ধিরপি প্রতিতা॥ ২০॥

় গবাঞ্চ তথৈব সেহবিশেষমাহ গাব ইতি। স্থকান্ স্থানিতি স্থোনিবে নিকটপ্রাপ্তবাৎ মমতাসন্ধেনাতিশরাচ্চ বৎসতরান্ বৃদ্ধিং গতানপি বৎসান্ ঔধসমাপীনভরমিতি তদীয়সর্ধপরঃ স্ববণারস্তাভিপ্রায়েণ ত্ত্রাপি স্ত্রমিতি মৃত্রিতি স্বব্দিত্যাদিকং পূর্বতো বিশেষ স্থাপকং॥ ২১॥

এবং পূর্বেভ্যো বংসপালেভ্যক্তদংশানাং বৈলক্ষণ্যং দর্শরং ক্তত্তাগ্যেন প্লাল্যমানাভ্যোহণি তত্তক্রপমাত্ভ্যোহণি তরিজরপমাতুর্বিলক্ষণ্য

ক্রমসন্দর্ভ:।

এবং পূর্বেভ্যো বৎসবাদেভাতদংশানাং বৈলকণ্যং দর্শয়ন। তত্তত্তাগ্যেন শ্লাদ্যমানাভ্যোহপি তত্তক্রপমাতৃভ্যঃ স্বরূপমাতৃ বৈ লকণ্য-

🕮 বিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

বামানাং বনেন উপরবেশ ও যদু উপরমে। ভত্মিন্ সতীত্যর্থ:। মাধবঃ ক্লক্তংক্রপভূতবালকগণত গতঃ অক্গৃহ্মিতি শেষ:। ততক উন্মৰ্জনং অসন্ধিতৈলাভ্যন্তন ভদনস্তরং সক্ষঃ সপনং মাতৃভি: সাসং সংলালিতঃ ॥ ২০ ॥

পোনীনামিব ততে। গ্ৰামপি মোহনমাহ গাব ইতি। পরিহতা আলাবাহুতান্ততঃ সঙ্গতান্ত তান্। অত্যাপি সম্বর্ষিতি মুহ্লি হিন্তা ইতি মুহু: অবদিতি বেহাধিকাস্চকং ॥ ২১॥

কিঞ্। গ্ৰাং গোপীনাং অম্বিন্ ঐবশোধানশনে ককে মাতৃতা সর্বা উপলালনাদিমরঃ সর্বাএব মাতৃতাব ইত্যর্থঃ। প্রোবং

হে রাজন্। শ্রীকৃষ্ণ এই প্রকারে তত্তৎ ক্রীড়ানিয়ম করিয়া সায়ংকাল উপস্থিত হইলে সুদ্রর আচরণে মাতৃগণকে প্রহ,ির্বত করিলেন। তাহারাও উন্মান্তন, স্পন, অবলেপন, অলক্ষরণ, রক্ষণ, তিলকার্পণ, তথা অসনাদি দারা সমাক্ প্রকারে তাঁহার লালন করিল। ২০॥

ভারনন্তর, গাভী সকলও কৃষ্ণারার বিলোহিত হইয়া সম্বর গোঠে আসিতে লাগিল এবং হুরার-শব্দে আইছে ও স্মীপে স্মীলিত ব ব বংসকে মৃত্যু হুঃ অবলোকন করত স্বরং প্রায়ত্ত জন্যরস পান করাইছে স্থারন্ত করিল॥ ২১॥

্রে রাক্তন । ক্রিকুফের প্রতি গো এবং প্রেকীদিগের উপলালনুরপ নাত্বাৎসন্য নদিও পুর্বের ন্যায় প্রকাশ পাইল, তৃষ্টি প্রদর্শে বিশেষ ক্রেছাদিকা দৃষ্ট হইল। এ স্বল লো সোপীবিলেক ভগবানে

ব্রজোকসাং স্বত্যেকের স্থে**হবল্ল্যাস্থমন্বহং। শনৈনি :সীম বর্ধে যথা ক্লফে ত্বপূ**র্ববৎ॥ ২০॥

धीषत्रवामी।

রূপা পূরোবদেবাসীং কিন্তু স্নেহ জিকাং বিনা স্বেহাধিকাং ভূ ইদানীং বিশেষ ইত্যর্থ:। আত্ম গোগোপীযু হঙ্গেস্তোকতাচ বালভাবোহপি পূর্ববদেবাসীৎ কিন্তু মায়ন্তা বিনা মনেম্বং মাতা অহমস্যাঃ পুত্র এবং মোহৎ বিনা ইত্যর্থ:॥ ২২॥

রেহর্দ্বিমের দর্শন্তি একৌকসামিতি। যথা ক্লফে বলোদানলনে বপুত্রেভ্যোহপি সেহাধিক্য: প্রুর্বনাসীৎ ইদানীং অভোকেছপি

বৈষ্ণবজোষণী।

মাহ গোগোপীনামিতি। প্রোবদিত্যভয়ত্রাপায়ন্ত্রঃ। পূর্ব্ প্রোবৎ প্রাক্তনবালকে বিবাদিন্ বালবৎসক্রপে প্রাক্তকে মাতৃতা মাতৃতাব আসীং কিন্ত সেই দ্বিলা পূর্বের সেইএবাদিংস্ক তৎসমৃদ্ধির্দ্ধিরিত্যর্থঃ আদ্ধ্রেহপি ক্রপে বস্তবভাবস্যানাচ্ছাদ্যন্ত্রাদ্যন্ত্র । উত্তরন্ত্র প্রোবং শ্রীবশাদায়ামিবাস্থি তদমাতৃতাবাস্থ হরেক্তোকতা বালভাব এবাসীন্নান্তাব ইত্যর্থঃ। কিন্তু সায়ন্ত্র বিদান তদ্যাং শ্রীক্রকোহহমিতি সত্যপ্রতিপাদনং তত্তিতসাক্ষাৎকৃষ্ণক্রপপ্রকাশনক। আস্থ তু স শ্রীদামাহং স্থানাহমিতি চ্ছেন্মপ্রতিপাদনং ক্রপান্তরপ্রকাশনক্ষেত্র হরেক্তাব্রক্তি সামে সর্ববিলক্ষণতা হেতুম্বভাববিশেষ-প্রাপ্তাসন্ত্রবাং ক্রম্বর্ব । অত্যোভরত্রাপি সমান এব বিনাশক্ষ তত্তশার্বেহিপি সমান এব যুক্তাতে। আম্বলীত্যত্রাপ্যপি শব্দেন সমানকোটনিবিইটান্ন: শ্রীধণোদানাঃ প্রাপ্তিঃ সমন্ত্রনা স্থাৎ স্বন্ত্রপীত্যক্ষ্যদিতি বিবেচনীয়াং ॥ ২২ ॥

তহৎ প্রীয়শোদানন্দনেহপি বৈলক্ষণ্যমাহ ব্রজৌকসামিতি। স্বশব্দেন স্বাপত্যত্বেনৈব জ্ঞাতেছপু নতু প্রীকৃষ্ণত্বেনতার্থ:। স্নেহ এব

क्रमननर्जः ।

তখং জীৰশোদানন্দনেহপি বৈলক্ষণামাহ ত্ৰজৌকসামিতি। ক্লেড ইত্যুভন্ত্ৰাপাৰেতি যথা ক্লেড তথা তেৰু বৰ্ধে ক্লেড্ড্

ঐবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

পূর্ববদেবাদীৎ কিন্তু রেহর্দ্ধিকাং রেহাধিক্যং বিনা পূর্বং শ্রীদামস্থদামাদিত্যঃ অপুত্রেভ্যোহিপ দকাশাৎ বশোদাপুত্রে শ্রীকৃষ্ণে রেংক্রিরাদীৎ তদাৈব অপুত্রীভূতদে লাতে দতি তদা অপুত্রেছপি তথৈব লেহর্দ্ধিরিতি বশোদাপুত্রে অপুত্রেচ তুলাএব মেহোহভূদিতার্থ:। আহ্ন
গোগোপীর হরেরপি তোকতা বাল্ডাবং পূর্ববদেবাদীৎ কিন্তু মার্যা বিনা পূর্বং মার্যা উপচারেণের পূর্বভূলাদাৎ পূর্বেদ্মাদীৎ
বন্ধমাহনদিনমারভাতু ক্রঞ্জএব শ্রীদাম স্থানাদি রপভাদাং প্রোহভূদিতি ক্রফা পূর্বভাবা বর্ধার্থ এবেতার্থ:। নমু শ্রীদামাদির
তন্মাভূণাং বাবান সেহত্তাবানের পূর্বীভূতে শ্রীক্রেছাপি ভবিতু মহঁতি বাবচ্ছীলগুণাতিধাক্রতিবরো বাবহিহারাদিক্মিতি পূর্বোক্তে:।
উচাতে। ক্রফোহি মহামহেশর্মণ আধীনীক্রতব্রন্ধাদিবাংশপর্বাজ্ঞাংগি প্রেয়ং ধর্ণীন এব প্রেমাত্ ন তদ্যাধীন ইতি প্রেয়ি
তদ্য প্রভূগভাবাৎ তেন প্রেমা সঙ্চিতীকর্ত্ব মণকা:। অভএব আমিচরণেরপ্যক্তং। এতাবন্তু বৈষ্মাং ক্রফোপি ছনি বার্মিতি
সচ প্রেমা বাংসল্যাদিন্ধপ স্থনাত্রাদির বিরাজত ইতি ক্রফং অমাত্রাদিসমীপে শ্রেম্প্রস্ক্রমনন্ত্রসন্ধানেহধিনীভূতএব সদা তিষ্ঠতি বংগ
মহারাজচক্র বর্তিনং সমীপে মগুলেশ্বর ইতি। নচ মহারহেশ্বর্স্য ভদ্যেবং পার্রভন্তাং পূর্ণমিতি বাচাং প্রভূত ভূবণমের বর্ধা জীবস্য
মারাপারতব্রাং ছংথার্থকং ভবৈবেশ্বর্স্যানক্রসন্ত্রসন্ধানি প্রেম্পারতব্রাং প্রভিক্রপন্ধনাননিম্বতিশ্বানক্রানক্রবিদ্ধেবিত বহার্হতাবৈরক্তুতং॥ ২২॥

ভবেং বশোধানসমন্ত্রীভূতর্করোঃ বরগভ ঐকরগাং বৈহাধিকাং তুল্যবুক্তমণি পুনঃ স্পান্তর্কন্ বশোধানস্থন-ভাবও পূর্ববং হইল কিন্তু পূর্বের মায়া ছিল না, একবে "লামি ইহার মাতা, ইনি স্নামার পুত্র" এই প্রকার অধিক মোহ হইল ॥ ২২ ॥

ফলতঃ ব্ৰহ্মবাসিদিগের ইতি পূর্বে ষণোদানদান ঞীকৃষ্ণের প্রতি আপনাদের পুত্রাপেকা যে

ইঅমাত্মাত্মনাত্মানং বৎসপালমিষেণ সঃ। পালয়ন্ বৎসপো বৃহং চিক্রীড়ে বনগোষ্ঠয়োঃ ॥ ২৪ একদা চারয়ন্ বৎসান্ সরামো বনমাবিশৎ। প্রক্ষাহ্ছ ত্রিষামান্ত হায়নাপূরণীম্বজঃ॥ ২৫ ॥

टी धत्रशामी

তথৈবাবৰ্দ্ধত ইত্যৰ্থ:। আ অন্দং যাবন্ধৎসরং নিঃদীম যথা ভবতি ॥ ২৩॥

এবমাক্সা শ্রীক্ষণ্ণ বৎসপো ক্সা ভতাপি বৎসানাং তৎপালানাঞ্চ মিবেশাঝানমান্মনা পালয়ন্ ক্রীড়িতবানিত্যর্থ: ॥ ২৪ ॥ এতাবং পর্যান্তং রামস্যাপি মোহ এবাদীৎ সংবৎসরান্তে তু কথঞিৎ জ্ঞাতবানিতি দর্শয়নাহ একদেতি। পঞ্চ ষট্স্ন বা রাত্রিষ্

বৈষ্ণবতোযণী।

বল্লী শনৈব ধ্রমানভাদিনা। শনৈবিতি সংলালনক্রমাণেকরা। তদংশত্বান্তেবাং কৃষ্ণ ইত্যুভরত্রাপ্যশ্বেতি। বথা কৃষ্ণে তথা তের্
বর্ধে কৃষ্ণেত্ অপূর্ববং পূর্বাং যথা নাসীতথা বর্ধে ইত্যর্থ:। যথা বথা বথা বং তের্ শ্রীকৃষ্ণস্য তত্তদংশের বালাদিশিক্যপর্যান্তের্
তত্তদেয়াগ্যং বর্ধে কৃষ্ণে অপূর্ববং আশ্চর্যাযুক্তং বর্ধে ইত্যর্থ:। পূর্বামপি যাবচ্ছীলগুণাভিধাকৃতি বয় ইত্যুনেন সহজ্ঞীদামাদিবদেব শীলাদ্যাবিভাবত্তের্ ক্র:। নত্ শ্রীকৃষ্ণবদপি ততঃ অরপাধিক্যমেব তত্ত্ব প্রেমাধিক্যে কারণং জাতং নতু শীলাদ্যাধিক্যমপীতৃদ্
তবেগ শ্রীকৃষ্ণে প্রেমাধিক্যন্ত ত্নি বার্মিতি ভাব:॥ ২৩॥

স বংসবংস্পর্পধর: বনগোঁঠয়োরিতি তত্র কুআপি কেনচিদ্পি তদ্হিতং নাভূদিতি ভাঝ:। অন্যতৈ:। যথা স প্রীক্ষঞ: আত্মাত্মা অদ্বিতীয় এব চিক্রীড়ে॥ ২৪॥

পঞ্যাস্বিত্যনিশ্চিতোক্তি: প্রেম্মানের। রমগতি শ্রীক্ষাদীনিতি রাম:। অতঃ প্রায়ো ষদ্যপি তেন স্টেব প্রবেশ গুণাপ্যেকদা সরাম ইতি বৃত্যস্তবিশেষোদ্দেশায় নির্দেশ: তচ্চ তং প্রতি তরীলাতব্বোধনং স্নেহবিশেষেণ অন্যথা অকান্তে শ্রীত্রহ্মগমনে সতি তত্তংসম্বংসরেণ তম্ভ তংকৌতুকামুভবসিদ্ধে:। অতিপূর্বমবোধনে কারণত্ত বক্ষাতে। অক ইতি বো বিনাপি জন্ম তত্তং প্রতাং

त्मग्रमन्दर्भः।

অপূর্ব্বিৎ পূর্বং বথা নাসীতথা ইত্যর্থ:। যথা। যথা বথাবৎ তেমু ক্ষান্স তত্তদংশেষু বালাদিশিক্যপর্যান্তেষু তত্তদেবাগ্যং বর্ধে ক্ষান্তে অপূর্ববদাশ্চর্যাযুক্ত বর্ধ ইত্যর্থ: ॥ ২০ ॥ ২৪ ॥ ২৬ ॥ ২৭ ॥ ২৮ ॥

🕮 বিশ্বনাথচক্রবর্তী।

ক্ষেতৃ গুণোংকর্বহেতৃকং দ্বেহাধিক্যমাহ ব্রজৌকসামিতি। আবং বর্ষং ব্যাপ্য অন্বহং দেহবল্লীতি বল্লী যথা প্রতিদিনমেব বর্ধতে তথৈবেত্যর্থ: যথা ক্ষেক্ষ যশোদানন্দনে পূর্বং অপ্ত্রেভ্যোহিপি বর্ধমানা সা আসীং। ইদানীং স্বভোকেষপি তথৈব বর্ধে ইতি স্বভোকামাপি ক্ষাজাং স্বেহু রিজভয়ত্র জুলৈয়বেত্যর্থ:। কিঞ্চ। তু শব্দবলাং ক্ষকে ইত্যস্তার্ত্ত্যা স্বেহের্দ্ধেস্তল্যজ্বেহিপি ক্ষেক্ষ যশোদানন্দনে তু তথাপি অপূর্ববং নিত্যনবায়মানৈৰ ভস্ত সর্বাক্তিমৌন্দর্য্যবিদ্দ্ধাদিগুলবন্ধানিশ্বিচ । তাসাং প্রীভূতকৃষ্ণস্বরূপাণাং তু প্রীদামান্ত্রিভিতসৌন্দর্যাদিম্বাদংশশ্বাচেতি ভাব:। মন্ত্রা যথেতি ম্থাবদের স্বেহ্বলী বর্ধে ক্ষেক্ষ তু অপূর্ববদের হর্ধে। ইত্যাবৃত্ত্যা বিনৈর ব্যাথেয়েঃ ॥ ২৩ ॥

এবমাত্মা শ্রীক্লফো বৎসপো ভূষা বৎসালাং পালালাঞ্চ নিবেশ আত্মানমাত্মনা পালয়ন ক্রীড়িতবানিতার্থ: ॥ ২৪ ॥ বন্ধমোহন প্রসন্তব্য বলদেবমোহন্দ্রপি ব্যক্তীকর্ত্ত্ কথামাই একদেতি । পঞ্জ ধট্স্থ বা বর্ষদা রাত্রির্ হায়নস্য অপুরণীর্ পুরক্তরা

সেহাধিক্য ছিল এক্ষণে ঐ সকল স্ব স্ব ক্ষন্তানের প্রতি তদপেক্ষাও অধিক স্নেহ হইল এবং এক ৰৎসর
পুর্ব্ধান্ত তাহা এরপ বৃদ্ধিশীল হইতে লাগিল যে তাহার সীমা রহিল না ॥ ২৩॥

হে রাজন্ । এই প্রকারে স্বরং আত্মা জ্রাকৃষ্ণি বৎস এবং বৎসপালক ছলে আপনার দারা আপনা-কেই পালন করত্ব সম্বংসুর পর্যন্ত বনে ও. শেহতে জীড়া ক্রিলেন ॥ ২৪॥

হে ভারত ! এতাবৎ পর্যন্ত বলদেবও দুর হইয়া ছিলেন, সম্বৎসরাজে কোন প্রকারে জানিতে পারিলেন অর্থাৎ বৎসর পূর্ণ হইবার পাঁচ বা ছয় রাজি অবশিষ্ট থাকিতে একদা বলদেব বৎস চারণ

ততো বিদ্রাচ্চরতো গাবোবৎসাম্পত্রজং। গোবর্জনাত্রিশিরসি চরস্ত্যো দদৃশু স্তৃণং॥ ২৬॥
দৃষ্ট্রাচ তৎম্নেহ্বশোহস্মৃতাত্মা স গোত্রজো হত্যাত্মপস্কর্গমার্গঃ।
দ্বিপাৎ ককুলগুবি উদাস্যপুচ্ছো হগাজুঙ্গতৈ রাস্ফ্রপয়া জবেন॥ ২৭॥

वीधवचामी।

হায়নস্যাপুরণীষু পুরকতয়া অবশিষ্টাস্বিত্যর্থ: ॥ ২৫ ॥

ততো বিদূরত এব গোবর্দ্ধনশিথরে চরস্ত্যো**>** গাবো ব্রজসমীপে চরতো বংসান্ দদৃতঃ ॥ ২৬ ॥

তদৈব সগোত্রজ্ঞ গ্রাং কলাপঃ তৎস্থেবশং তেষাং বংসানাং সেহেনাকৃষ্টঃ অতএব ন স্বৃত আছা বেন সঃ জ্বেনোপত্রজমগাৎ কণ্ডুতঃ অত্যাত্মপত্র্গমার্গঃ অতিক্রান্ত আত্মপান্ গোপালান্ তথা ত্র্গমো মার্গো যস্য সচ সচ তথা যুক্তাভ্যাং পদ্ধান্ বিপাদিব প্রতীয়মানঃ। ককৃদি আকৃষ্ণিতা গ্রীষা যস্য সঃ। উদাস্যপুদ্ধঃ উন্নমিতানি আস্যানি পুদ্ধানিচ যেন সঃ। আক্রপয়াঃ সর্বতঃ প্রবিষ্টি প্রাংসি যস্য সঃ। আক্রপয়া ইতি পাঠে স্ববার্থঃ॥ ২৭॥

বৈষ্ণবতোষণী।

প্রাপ্ত দ ইত্যর্থ:। তব্ধুনা ব্যক্তীভবিষ্যতীতি ভাব: ॥ ২৫ ॥

ততন্ত্রদনন্তরং উপত্রন্ধমিতি গোবর্জনেশানকোণকোটিস্থারিষ্টমর্জনকুণ্ডসমীপ প্রায় প্রদেশে তদন্তিকে ত্রন্ধন্ত ব্যাপ্তঃ। সম্ভীকরাথ্য প্রদেশাদৃত্ত্বমার্থাণ চতুংক্রোশন্মন্থাৎ অথ তর্জাগতো গোষ্ঠ মরিষ্টো ব্যভাস্থর ইতি বক্ষ্যমার্ণাচ্চ। ত্রনিতি তৎপ্রাশন্তাবিবক্ষয় তদাবেশেহপি সতীত্যর্থঃ। অধুনা শ্রীক্ষেন বৎসতরাগাং চারণং কিঞ্চিছয়োর্জ্যা যোগাছাদিতি জ্ঞেয়ং॥ ২৬॥

তদেবাভিব্যঞ্জয়তি দৃষ্টে বিভাগং। বৰ্থে চকারং পূর্বতো বিশেষায় সচাকাণ্ডে প্রিয়সন্দর্শন স্বভাবতঃ। অথেতি পাঠেছিপ স্এবার্থঃ ক্ষেহ্বিশেষস্থানেব দর্শয়তি অস্মৃত্যাদিভিঃ। আত্মপান্ হর্গমার্গং চাতিক্রাস্তোহত ্যাত্মপহর্গমার্গঃ। আব্দ্যাদি পাঠ্ছয়মপি কিবস্তঃ তুগভাব আর্থঃ॥ ২৭॥

वीविश्वनाथठकवर्षी।

অবশিষ্টাস্বিত্যর্থ:॥ ২৫॥

গোবর্জনশৃঙ্গে তৃণং চরস্ত্যো গাবঃ জন্মাদবিদ্রাৎ ত্রজন্ম নিকটে চরতো বৎসান্ দদৃশ্য: ॥ ২৬ ॥

অশ্বতাত্মা আত্মানমপি বিশ্বত্য স গোসমূহ: অগাং। অতিক্রান্তা আত্মপা গোপা ছুর্গমার্গান্চ যেন সং। পরস্পারং যুক্তাভ্যাং পদ্ধাং ধাবন্ বিপাদিব প্রতীয়মান: উ গুখডাং ককুদি গ্রীবা মুস্য সং উদ্গতানি আত্মানি পূচ্ছানিচ যক্ত সং। আ সম্যগেৰ কর্মি অক্ষণি পরাং-সিচ যক্ত সং॥ ২৭॥

कतिएक कतिएक भत्ररभः धारमं कतिरमन ॥ २०॥

দেই বন হইতে অধিক দূর অন্তরে গোবর্দ্ধন পর্বতের শিখরে সে সময় কতক গুলি গাভী চরিতে ছিল, তাহারা ব্রহ্ম সমীপে বিচরণশীল ঐ সকল বৎসকে দেখিতে পাইল॥ ২৬॥

ঐ সকল বংস নয়নগোচর হইবামাত্র গাভীগণ অত্যন্ত সেহাক্ষ ইইল এবং আত্ম বিমারণ পুরঃসর যারপারনাই বেগে ত্রিকের দিকে আসিতে লাগিল। তাহারা আপনাদের পালক তথা ছুর্গম
বল্প অভিক্রেম করিয়া চলিতে লাগিল, ছুই পাদ একত্রিত করিয়া ধাবমান হওয়াতে দূর হইতে বিপাদের
ন্যায় প্রভীয়মান হইল, ভাইাদের গ্রীবা ককুদে আবৃঞ্চিত ইইয়ছিল এবং সকলেই মুধ , উম্মিত
করিয়া আসিতেছিল, আর সকলেরই নান হইতে স্ক্তিভাবে ছুর্ম পভিত হইতেছিল ॥ ২৭ ॥ . •

সমেত্য গাবোহধো বৎসান্ বৎসবত্যোহপ্যপায়য়ন্। গিলস্ত্য ইব চাঙ্গানি লিহস্তাঃ স্থোধসং পয়ঃ ॥২৮ গোপাস্তদ্যোধনায়াসমৌঘালক্ষোক্ষমস্থান। স্থাধি কৃচ্ছু তোহভ্যেত্য গোবংলৈর্দৃভঃ হ্যতান্॥২৯ তদীক্ষণোৎপ্রেমরসাপ্লুতাশয়া জাতামুরাগা গতমন্বোহর্তকান্।

विधत्रवामी।

গোব্রজ ইত্যানেন ব্রভাদয়োহপাভারিত্যক্তং তত্ত বিশেষতো ধেন্নাং চেটিতমাহ সমেত্যেতি। গোবর্ধনস্যাধঃ বংস্বত্যঃ পুনঃ প্রস্তা অপি ॥ ২৮ ॥

রামেণ দৃষ্টং বংসের গবাং সেহাতিশরমূক্। গোপালানামণি দর্শরিজুমাহ গোপা ইতি। তাসাং গবাং রোধনে য আরাস স্তস্য মৌঘ্যেন মোবদ্ধেন লক্ষরা সহ উক্ষম্থানা ছুর্গমার্গজনিতক্লেশেন চাভ্যেতা গোবংকৈ: সহ স্থতান্দৃত:॥ ২৯॥

ততশ্চ তেৰাৰীক্ষণেনোলাতো যঃ প্ৰেমরদ ন্তৰিলাপুতা নিমগা আশ্সা যেবাং তে লক্ষা মহা ক্লছৈ ন্তানপি তাড়ি সিতুমাগতাঃ

ৰৈঞ্চবতোষণী।

স্বীয়ং মাধুর্ব্যাদিভিরসাধারণং স্থশোভনং বা ঔধসং উধোভ্যঃ শ্রবদিত্যর্থঃ ॥ ২৮ ॥

অভ্যেত্য অভিমুখমেত্য। অবেত্য ইতি কচিৎ পঠি:।। ২৯॥

যদ্যপি আরাসাদয়ঃ প্রেমরসোদয়ায়রায় উক্তা তথা গবাং বংগৈ: সহিতান্ ইতি বংসদকে ছিতৈরপি স্বস্থতে: পরম-বংসলানাং তাসাং দৃষ্টিপথে বংসানামানয়নাদনপসারণাচ্চ তেয়ামপরায়ঃ ত্চিতঃ তথাপি তেয়াং স্তানামীক্ষণেন য়ঃ উৎকৃষ্টঃ প্রেমরসঃ তিমিয়ায়ুতাশয়ঃ। উদ্গৃহ উচৈরকে গৃহীয়া। উদ্হেষ্টি পাঠে দীর্ঘরমার্য। অর্থঃ সএব। প্রেমরসায়্রাগয়োঃ স্থাতিশয়তৃষ্ণাতিশয়াভ্যাং বিশেষণাভ্যাং তেদঃ কয়াঃ। যদিচ গ্রামিব তেয়ামপি দ্রীতোহপি স্বস্তদর্শনসম্ভবাৎ কথাঞ্চশনাভাবেহপি বংসস্কিনাং

ক্রমসন্দর্ভ:।

মহা গাঃ প্রত্যেব জ্ঞেয়ং নতু বালান ্থাতি গ্রামিব তেষাং স্বালেষু দর্শনসম্ভ্রাদদর্শনেহিপি বংস্চারিনাং তেষাং মাধুর্যক্তিভিচ কোপাসম্ভ্রাং ॥ ২৯ ॥

তদীকণেতি প্রেমামুরাগন্নোরুলাসাতিশরভৃষ্ণাতিশরাভ্যাং বিশেষণাভ্যাং ভেদ:॥ ৩ ।॥

ঐবিখনাথচক্রবর্তী।

গোবর্দ্ধনস্থাধঃ সমেত্য দ্ব্যাহিকাদিবৎসবত্যোহণি ঔধসং উধোত্যঃ স্বন্ধমব শ্রবৎপদ্ধঃ অপার্দ্ধন্। গিলস্ক্য ইবেতি গ্রাং লেহনাধিক্যং স্নেহাধিক্যস্ত্তকং ॥ ২৮ ॥

তাসাং গবাং রোধনে য আরাসো নকুটোৎক্ষেপাদিভি শুক্ত মৌধ্যেন বৈরপ্তোন হেতুনা। লক্ষাচ মহ্যুদ্চ তলক্ষামহ্যু তেন ছুর্গমার্গ-জনিত ক্লেশেন চাভ্যেত্য গোবৎসৈঃ সহ॥ ২৯॥

গতমনাব ইতি অরেহনভিজ্ঞাঃ অত পর্মবৎসলগ্বাং গণ্দৃষ্টিপথে কথং বৎসা আনীতা ইতি তাং ভাড়য়িতুমনসোহপি তেষাং

রাজন্! উপরি লিখিত গো সমূহ মধ্যে গাভী সকল গোবর্জন গিরির নিম্নে আসিয়া সেই সকল বংসের সহিত মিলিত হুইল, যদিও পুনঃ প্রসূতা হওরাতে গাভীগণ বংস্বতী হুইয়াছিল তথাচ স্নেহ্ ভরে স্তন্য পান করাইতে লাগিল ॥ ২৮॥

হে মহারাজ! গোপগণ ঐ সকল গাভীর অবরোধার্থ বিস্তর আয়াস করিয়াছিল, সকল ব্যর্থ হওয়াতে লচ্ছিত ও ক্রোধান্নিত হইয়া চুর্গম মার্গ পর্যাটন জন্য ক্লেশও স্বীকারপূর্বক পশ্চাৎ, পশ্চাৎ আসিল এবং গোবংস সহিত স্ব স্ব পুত্রনিগকে দেখিতে পাইল ॥ ২৯॥

অহে পরীক্ষিৎ। তনয়দিগকে দেখিবা মাত্র গোপদিগের অনির্বাচনীয় প্রেমরস ভাষাত হইল, তাহাতে তাহাদের চিত্ত নিমগ্ন হইয়া পড়িল। লক্ষা ও কেশ হেতু ছাহারা প্রেদের প্রতি তাড়ন করিতে আসিয়াছিল, কিন্ত নয়নগোচর হুইবা যাত্র গতমত্য হুইয়া তবৈপরীত্যে বরং জাতামুরাগ

₹8¢

উদগ্ হ্ন দোর্ভিঃ পরিরভ্য মৃদ্ধি আণৈরবাপুঃ পরমাং মৃদং তে ॥ ৩ • ॥
ততঃ প্রবয়সো গোপান্তোকাশ্লেষহানির তাঃ। কৃচ্ছাচ্ছনৈরপগতা স্তদসুস্মৃত্যুদশ্রবঃ॥ ৩১॥
ব্রজন্য রামঃ প্রেমর্জে বীক্ষ্যোৎকণ্ঠ্যমনুক্ষণং। মৃক্তস্তনেম্বপত্যেমপ্রক্রের গিতেয়াৎকণ্ঠ্যমনুক্ষণং।

विश्वत्यानी ।

সন্তঃ গতদন্যবঃ প্রভাত জাতোহস্থরাগো বেষাং তে মৃদ্ধি ত্রাগৈরবন্ধান পরমাং মৃদমবাপু: ॥ ৩০ ॥
ক্ষন্দ্র বিভাগেগত। নিবৃত্তা ন্তেষাং স্কান্মিস্ফ্রত্যা উদাচ্ছন্তি অঞ্জনি বেষাং তে ॥ ৩১ ॥
প্রেমর্কেরৌৎকণ্ঠ্যমতিশবং মৃক্তন্তনেষ্পত্যের বীক্ষ্য হেতুমজানদ্রচিত্তবং ॥ ৩২ ॥

বৈষ্ণবভোষণী।

বস্তানাং ক্রণারের ক্রোধোৎপত্তি ন'স্ভবতীতি শকে তত্তদা বানতিকামন্তী গাঁঃ প্রত্যেব তেমাং মহ্য ম'রবাঃ। বস্তানামতি-সরিহিত্তদা স্বচ্মাধ্যায়ভবের তচ্চান্তিপূর্ককপ্রেমোদয়শ্চেতি॥ ৩০ ॥

প্রবিষ্ঠাে বৃদ্ধা ইতি তেবাং প্রারো বিবেকিছাদিনা তাদৃগন্নবিয়ােগেন মাহাে ন সম্ভবতি তথাপীত্যর্থ:। এবং বৃদ্ধা এব গোপালা আসন্নিতি বােধয়তি তচ্চ গোপলাতে তদর্শ্বাং শ্রীব্রজেশস্য চ বালপুরত্বেন স্বপ্রতিনিধেরভাবেন স্বয়্রমের গাঃ পালয়তঃ সকৌচিত্যাৎ অসুস্থতি নির্বস্তরন্মরণং॥৩১॥

প্রেমর্কে তে ছোরৌৎকণ্ঠা মৃংকণ্ঠ। ইত্যুপচারাৎ তত্তাতিশয়এব পর্য্যবস্যতি। টীকারানৌৎকট্যমিতি কচিৎ পাঠ: ॥ ৩২ ॥

ক্রমসন্দর্জ: ।°

প্রবিষ্ঠাে বিবেকিনোহপি ॥ ৩১ ॥

বজন্য গোবদন্য। অপত্যেষ্ বংদেষ্ তত্পলকণজেন গোপানাং বালকেছপি জেয়ং। এবু মুক্তন্যছবিশেষণাভূপযোগাং। প্রেমজেহেতোরোৎকঠাং॥ ৩২॥

ঐবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

বালানামীকণোছ,তেন প্রেমরসেন আলুতাশয়ায়তেক জাতামুরাগাঃ প্রেয়ামেব পঞ্মীং ক্কাম্মুরাগাভ্যাং তৃ্ঞাতিশর্মরীং প্রাপ্তাঃ। গতমন্বো বিস্তৃতকোধাঃ ॥ ৩০ ॥

প্রবির্গো র্কা:। কুচ্ছু াদেব শনৈরেব গোচারণাসূরোধাদেব অপগতা তামাদালোমাদিব্দ্য গতান্ততক বিচ্ছেদোখারা তেষাং অন্ত-মুত্যা উদ্যতাশ্রঃ॥ ৩১॥

প্রেমর্দ্ধে হেঁতোরে বিকাঠ মুক্ততনে বিধান বিধান বিধান বিধান বিধান আহত্তি হৈত্যজানন্ অচিন্তর্দিতি এতাবংকালের প্রতিদিন্দের গোনোহনাদি সমরের নবপ্রতানিপি বংসান্ বিহার প্রাচীনানের বংসান্ তনং পাররপ্তী: সর্বাত্র গাঃ পদ্যতোহিপি তস্য তদ্বিরের দিনে বিজ্ঞা প্রাচ্রপুত্ উদ্মিরপি দিনে বদন্যবাং প্রবিয়সাং বিবেকিনামপি গোপানাং তথা চিন্তনং নাভূত্ত করণং বোগমারৈর। প্রস্কানাহনিদ্দারতৈ গোগোপীগোপানাং বলদেবসহিতানাং সর্বেরামের ভগবতা স্ববোগমাররা মোহিত্রাৎ প্রতিদিনং বিরোধদর্শনেহিপি বিরোধায়সন্ধানং ন ক্স্যাপ্যভূত। কিন্তু সর্বাজ্ঞানবিসারিনাহিপি প্রয়ংশিক্র স্বাত্রির প্রতিদিনং বিরোধদর্শনেহিপি বিরোধায়সন্ধানং ন ক্স্যাপ্যভূত। কিন্তু সর্বাজ্ঞাপরিয়া প্রিরাধ্য কর্মির বিরোধির নাভূত। বর্ষপর্বাত্তং ভল্তজ্ঞীনাদিপ্রিয়সধ্বিক্রের হংপ্য তব্দ দাত্রমনোচিত্যাং স্ব্যা তু তদ্বংখং নার্জ্যের বংসকুলাবেরক্ষেক্তাক্র প্রকাশেন ভরিকট এর স্থিত্বাত।

হইল অতএব সেই দকল বালককে গ্রহণপূর্বক ৰাছ দ্বারা আলিঙ্গন করিয়া মন্তক আত্রাণ করত পরম প্রমোদ প্রাপ্ত হইলেন ॥ ৩০ ॥

ভদনন্তর প্রবৃদ্ধ বয়ক্ষ গোপগণ পুজালোবে নির্ত চুইয়া যদিও অতিকটে ঐ আলিঙ্গন ৢব্যাপার হইতে নিরত হইল তথাচ সেই সকল ভনয়ের স্মরণ করাতে তাঁহাদের নয়নাঞ্চ উলাত হইতে লাগিল ॥ ৩১ ॥

কিমেতদমূতমিব বাস্কুদেবেহধিলাত্মনি। ব্ৰহ্মস্য দাত্মনস্তোকেষপূৰ্বাং প্ৰেম বৰ্দ্ধতে।। ৩০।। কেয়ং বা কৃত আয়াতা দৈবী বা নাৰ্যুতাহুরী। প্রায়ো মায়ান্ত মে ভর্তুনান্যা মেহপি বিমোহিনী ॥৩৪

धिशतकामी।

চিন্তামেবাহ **বা**ভ্যাং কিমেতদিতি। বাস্থদেবে যথা পুরা প্রেম তথা স্বতোকেম্বপি ব্রজ্ঞার প্রেম বর্দ্ধতে। কিমেতদভূতং। কিঞ সাত্মনো মৎসহিত্যা ব্ৰহ্মস্য মম তেছপি প্ৰীতিকারণং কিমিতি ভাবং॥ ৩০॥-

কেয়ং মায়া দেবানাং বা নরাণাং বাহস্থরাণাখা কুজোবা কন্মাৎ প্রযুক্তা তত্তান্যমায়াল সম্ভবতি যতো মমাপি মোহো বর্ততে। অতঃ

বৈষ্ণবতোষণী।

অভুতং যুক্তাতীতং অধিলস্যাত্মনি অতো বাস্থদেবে সর্বাশ্রেরে কিম্বা তত্রাপি শ্রীবস্থদেবাপতের পূর্ণভগবত্তরা প্রকট ইত্যর্থ:। এবং দৰ্মণা ভন্মিন্নেৰ তত্ত্বিভ্ৰতাদৃশপ্ৰেমবৃদ্ধেৰ্যোগ্যভোক্তা। তথাপি ভন্মিন্নিব ব্ৰহ্মস্য গোগোত্মাক্ষস্য ভোকেষু স্বাপভ্যেষু ॥ ৩৩ ॥ অথাত্র কাপি ক্স্যাপি মায়ৈব হেতুর্ভবেদিতি তর্কয়তি কেয়মিতি ইয়ং তেবু প্রেমবর্দ্ধিনী মায়া ছর্ঘট্যটনী শক্তি:। কা কিং লক্ষণা। বা শব্দ: সমূচ্চয়ে কুন্ত আয়াতা কমাৎ সমুভূতা কেন চ ক্বতেতার্থ:। কুত ইত্যেব বিচারয়তি। বা শব্দো বিতর্কে। তত্তৎপিত্রাগ্যপা-সিতৈ দে বৈ: কৈরপি মহাপ্রভাবৈ: ক্বতা কিং তেভ্যোহপি মুনীনাং প্রভাবং পর্য্যালোচ্য তথৈব পক্ষাস্তবং করন্বতি নারীতি। অত্রাপি বা শব্দো যোজাঃ। নৰেবং এক ফবন্ধিজপুত্রাদিষু ব্রজজনানাং প্রেমবর্ধনস্পর্ধাচ ন সম্ভবতীত্যাশক্ষ্য পুনবি করম্বতি। উত্পক্ষা-ন্তরে। আহুরী স্বস্থাপত্যেত্বপি শ্রীকৃষ্ণসদৃশন্মেহবিবর্দ্ধনেন ব্রজন্য শ্রীকৃষ্ণবিষয়কভাববিশেষহান্যা তন্মাহাত্ম্য সংক্ষোচাদ্যর্থং কংসা-দিভি: ক্বতা কিং। পুতনাদীনাং তল্মোহনতাদর্শনাৎ। यहा। মায়েয়ং দেবানাং মুনীনাং চ তল্লীলালোভেন প্রাচীনানশুদ্ধাপ্য স্বয়মাবিষ্কাবময়ী। সাতু সাধ্নাং তেষাং ন সম্ভবতীতি তর্কান্তরেহস্বরাণান্ত প্তনা বৎসান্তরাদিবৎ ছটভাবময়ীতি জ্ঞেরং। তরা তু 🗐 কৃষ্ণ ইব তেমু মন্ ক্ষেহবৃদ্ধিন সম্ভবতীত্যাহে প্রায় ইতি। তদ্য স্ববিষয়কবঞ্চনাদভাবনায়া হেম্বনালোচনয়া তাদৃশপ্রেরন্তং

ক্রমসন্দর্ভ:।

অধিনস্যাত্মনি প্রমাত্মনি অতো বাহ্নদেবে সর্বাশ্রয়ে ইতি তত্ত্বৈব তাদৃশ প্রেমযোগ্যতোক্তা ॥ ৩০ ॥ কেম্বনিতি অন্বিতি সংভাবনা প্রায় ইতি তাদৃশ প্রেম তৎস্বরূপৈকামুবন্ধান্বান্তনারারা অপ্যসন্তাবনা ॥৩৪॥

এ বিশ্বনাথচক্রবর্তী।

অতো বর্ষাবদান এব ভগবতঃ দা তত্র যদাভূৎ তদা মায়াপি শনৈঃ শনৈ রংশেনাংশেনৈব তত্মাত্পররাম নতু যুগপৎ সামত্ত্যেন। ভগবদৈশ্ব্যসিদ্ধে তমপি ভক্তাভিমানাম্পদীক্বত্য নিমক্ষমিতৃমিত্যবদীয়তে ॥ ৩২ ॥

প্রথমং মায়াংশোপরমে সতি বিরোধদর্শনোথং তস্য চিস্তনমাহ কিমেতদিতি। বাস্থদেবে ইবেতি বাস্থদেবে ম্থা পুরা প্রেম তথা ব্যতোকেছপি ব্ৰহ্মস্য প্ৰেম বৰ্দ্ধতে কিমেতদম্ভূতং কিঞ্চ সাম্মনঃ মৎসহিত্স্যাপি ডেবু ক্লফ্চবৎ প্ৰেম কিমিডাঁৰ্থঃ ॥ ৩৩ ॥

ভবতু সর্বজ্ঞতদ্বৈৰ কারণমদ্য জ্ঞাদ্যামীতি ক্ষণং পরামূশ্য বিতীয়মায়াংশোপরমে সতি মারেয়মিতি নিশ্চিত্য সা কীদৃশী কুতন্ত্যা কিং সম্বন্ধিনীতি পুনবি তর্কন্নতি কেন্তং মান্না কুতো হেতোঃ কুতো দেশাদা। দৈবীতি দেবা ব্রহ্মাদ্যাএব কিমেশ্বর্যা পরীক্ষণার্থং বৎস-বালকা ভূখা অন্মাকং চিত্তং স্বেষ্ প্লেহরন্তি নৈতে জ্রীদামাদ্যা:। নারীতি নরা ঋষ্যাদরএব কিং জ্ঞানপরীক্ষার্থমেতে বৎসাদ্যা অভূবন্। আত্মরীতি অন্মরা: কংসাদর এব কিছু বলেনাপাররস্তন্ত্রেনাত্মাকং হিংসার্থমেতে হস্ত্বন্ধিতি বছধা বিকরা তৃতীয়মারাংলোপরমে-সতি পুন: সম্ভাবরতি প্রায় ইতি মে ভর্জু: শ্রীক্লফল্যৈৰ মায়া ইরং মহাযোগমারাখ্যা শক্তি রসাধারণী বস্যা: ধলু মারা নিরস্তৃ যায়া

পূর্বে বাহুদেবে যজপ বৃদ্ধিশীল প্রেম ছিল একণে আপনাদের বালকের প্রতি - অঞ্বাসিদিগের তজ্ঞপ বুদ্দিশীল প্রেম দেখিতেছি, এ কি আশ্চর্য্য ? আমার এবং ব্রজবাসির ঐ সকলের প্রতি এতা-দৃশী প্রীভিন্ন কারণ কি ? ॥ ৩০॥

এ কোন্মায়া ? দেবতাদিগের অথবা মানবদিগের ? এ মায়া কাহা কর্তৃক্ট বা প্রস্কুলা হটরাছে ? ইহা অন্য মায়া সম্ভবে না, যে হেছু ইহা হুইছে আমারও মোহ জন্মিরাছে, রোধ হয় আমার আমি জীকুকেরই এই মায়া **হইবে ॥ ৩**৪॥

289

ইতি সংচিন্ত্য দাশাৰে বিৎসান্ স্বরসানপি। সুর্বানচন্ত বৈকৃষ্ঠং চকুষা বয়ুনেন সং ॥৩৫॥ নৈতে হ্রেশা শ্বয়ো ন বৈতে ছমেব ভাসীশ ভিদাঞ্জেহপি।

अध्यक्षामी।

প্রায়শো মৎস্বামিনঃ শ্রীকৃষ্ণস্যৈর মারেরমন্তি তি সম্ভাবয়তি॥ ৩৪॥

'এবং শ্রীক্ষকপান্ সামান্যতো জ্ঞাছা শ্রীকৃষ্ণ: পৃষ্ট্। শ্রীকৃষ্ণোপদেশেন বিশেষতঃ সর্বাং জ্ঞাতবানিতাাহ নৈত ইতি। জায়মর্থঃ পাল্যমানা বংসা ধ্রীণামংশাঃ পালাশ্চ দেবানামংশা ইতি তাবদহং বেল্লি ইদানীন্ত ন তথা কিন্তু অন্মিন্ ভিদাশ্রয়েহিপি ছমেব ভাসি

বৈষ্ণবতোষণী।

স্বরূপৈকায়বধ্যতালোচনয়া চ প্রায় ইত্যুক্তং অন্ত স্থাৎ স্পনির্দ্ধারণে সম্ভাবনা। বিমোহিনী নিরত্নসন্ধানপ্রেমবর্দ্ধিনী। বিশক্ষো দীর্ঘকালম্বাদ্যপেক্ষয়া ইতি লক্ষণমপ্যস্যা দর্শিতঃ॥ ৩৪॥

স্বয়সানিতি সমাসাস্ত আর্ব:। বৈকুঠং স্থার্থেহণ্ ুসর্ক্থা কুঠরহিত্মিতি তজ্ঞপত্তে বিলং। বয়্নেনাহসন্ধানা্ত্মক জ্ঞানময়েন তস্যুবযুনস্য প্রেমবিশেষময়ত্বেন সামর্থ্য বিশেষং দর্শয়তি। দাশাহ': প্রীয়ত্তকুলোভব: প্রাতৃত্বং গত ইত্যর্থ: ॥ ৩৫ ॥

স্বেশাং দেবশ্রেষ্ঠাং গরুড়াদয়ঃ ঝবয়ঃ প্রীনারদাদ্যাং ভিদাশ্রয়েহপি বালবংলাদি সম্হোহয়ং য়দ্যপি বিবিধডেদস্যাশ্রয় তথাপি তিমিলিতার্থং ঘদেব ভাসীতি স্বর্নপানন্দাদিনৈক্যাস্ভবাং। স্বন্যাইত্তঃ। যদা দৈবী বা নার্গতাস্থনীতি বিভিক্তা পরিহরতি নৈত ইতি। এতে বংলাদরো ন স্বরেশাং নচ ঝবয়ঃ তে তত্তৎক্রীড়ালোভেন তানস্তর্দ্ধাপ্য বংলাদিরপাং সন্ত্রীতি নেতার্থ:। তেবামীদৃশ-প্রেমাম্পদ্যাভাবাং। ইথং সতাং ব্রহ্মস্থাম্ভ্ত্যা ইড্যাদিরীত্যা তাদৃক্ কৃতপ্ণ্যপ্রস্থাভাবাচে। আসুরীত্যভোত্রপ্কে তত্ত্রেপস্থ স্বভাগর কৃতঃ। স্বত্ত একোহপি দং পৃথক্ বিবিধতেদেন বর্তমানং স্ক্রিদং বংলাদিরপং, কুতে। হত্রিতি নিগমাদ্দ ইতি

ক্ৰমসন্দৰ্ভ:।

াসবয়সানিতি সমাসাম্ভ আর্ধ:। দৈবীত্যাদিবৎ স্বয়ং সংভাব্য নিরস্যতি॥ ৩৫॥

নৈত ইতি ইখং সতামিত্যাদি রীত্যা তেষাং তাদৃশক্বতপুণ্যপুঞ্জাজাবাৎ ভিদাশ্রয়োহপি যদ্যপি ভিদাশ্রয়েহয়ং বৎসাদি সমূহস্তথা

वीविश्वनाथठकवर्जी।

বিশুদ্ধ ঘনচিৎস্বপ্যধিকারঃ। স্বাদিতি সম্ভাবনারাং লোট্। নান্যেতি কা নাম সা মারা মমাপি মোহিনী যতো মদংশস্য মহৎপ্রষ্টুঃ পুরুষস্যাপি মার্য্যা বন্ধাদিকং সর্বজ্ঞগন্মোহিতমিতি ভাবঃ॥ ৩৪ ॥

ভবতু সমাধার জ্ঞানদৃষ্টা পুনরপ্যেতান্ নিভালরামীতি বিচারে সতি চতুর্থমারাংশস্যাপি প্রীকৃষ্ণস্যেত্রের উপরমে সতি তান্
যথার্থান্ কৃষ্ণস্ত্রপানেতানপশ্যদিত্যাহ সবয়সানিতি সমাসাত্ত আর্থা: । বয়ুনেন সমাহিতজ্ঞানময়েন চকুরা বৈকুঠাং প্রীকৃষ্ণমেনা
পশ্যং ॥ ৩৫ ॥

ততক ক্কলৈবং বংগবালকীভাবে কিং কারণং কিল্বা প্রয়োজনং তে বংগবালকা বা ক হাপিতা ইতি বহুতরসমাধিনাপি যৎ স্বয়ং জাতৃং নেষ্টে জত্র মারা ন কারণং কিল্ক স্বয়ং ভগবতঃ ক্রফস্য ধবৈশ্বগ্রম্যাধারণমিথং স্বয়প্রমেব। সর্বাত্র স্বাধারণাদয়ঃ। পরমেশরাঃ স্বাংশা অপি যবিষয়ক মরজেশ্বেষ বিভ্রতি নতু সর্বজ্ঞন্বং স্বত ইত্যত্র প্রমাণং লার্কাবাসিবিপ্রবালকক্ত্রা ভূমা মহাপ্রকাবাধিপাঞ্জত আখ্যাস্যতে জন্মাৎ শ্রীবলদেবঃ ক্রফং দৃষ্টিব সর্বাং তত্ত্বমবগতবানিত্যাহ নৈতে ইতি। স্বয়েশা ক্রমান্যাত্র মারয়

এই রূপ চিস্তা করিয়া জ্ঞানময় নেত্র প্রকাশ করাতে দেখিতে পাইলেন সকল বৎস, ও সমুদায় স্থা, সমস্তই ঞ্রীকুষ্ণস্থরপ ॥ ৩৫॥

হে রাজন ! বলদেব ঐ প্রকারে সামান্যত সমুদায়কে জ্রীক্ষরপি জানিয়া পরে বিশেষ পরিজ্ঞানার্থ ভগবান কৈ জিজ্ঞানা করিলেন ভাই ! এই সকল বংগপাল হুদ্রেশ অর্থাৎ দেবগণের অংশ এবং এই সকল বংস ক্ষরিদিগের অংশ, অগ্রেইছাই জানিতাম কিন্তু একণে ঐ প্রকার বোধ হয় না, ভেদাপ্রয় হইলেও ইহাদের মধ্যে তোমাকেই দীপ্তি পাইতে দেখিতেছি, অতএব এ সকল কি ?

সর্বাং পৃথক্ ত্রং নিগমাৎ কথং বদেত্যুক্তেন রন্তং প্রভুনা বলোছবৈৎ ॥ ৩৬ ॥
তাবদেত্যাত্মভুরাত্মমানেন ক্রট্যনেহ্সা। পুরোবদাব্দং ক্রীড়স্তং দদৃশে সকলং হরিং ॥ ৩৭ ॥
যাবস্তো গোকুলে বালাঃ সবৎসাঃ সর্ব্ব এব হি। মায়াশয়ে শয়ানা মে নাদ্যাপি পুনরুত্থিতাঃ ॥৩৮।।

की धत्रवामी।

অতবং পৃথক্ সংবিভক্তং স্কাং কথং বৃত্তনিতি বদেতাকেন প্রভূগা বক্তা নিগমাৎ সংকেপত এব উক্তং বৃত্তং বলোছবৈৎ বিদিতবা-নিত্যর্থ: ॥ ৩৬ ॥

ততঃ কিং বৃত্তমিত্যপেক্ষায়ামাহ তাবদিতি। বর্বে গতে আজুনো মানেন ফট্যনেহসা ক্রটিমাত্তেণ কালেন সকলং সাস্ক্চরং হরিং দদর্শ॥ ৩৭॥

দৃষ্ট্ৰ চ ব্যতক ৰদিত্যাহ বাভ্যাং যাবন্ত ইতি মে মারাশয়ে মারাতরে॥ ৩৮॥

বৈষ্ণবতোষণী।

বেংনে বাক্ শ্রমো নিরন্ত: প্রভ্না মাদৃশাং জন্যৈবেখরেণ হেড়্না রৃত্তং তদজ্বাদীৎ যতো বলঃ সর্বসামর্থাধিক্যবান্ বলাধিক্যাঘলং বিত্রিভ্যুক্তে:। এবং প্রীকৃষ্ণভাত্প্রহেণেব তদিজ্ঞানং বোধিতং। অন্যৎ সমানং। এতাবস্তং কালং তদ্য তত্তৎকালজ্ঞানং তল্লীলা-নির্বাহায় শ্রীভগবদিচ্ছবৈব। সাচ দ্রাল্সবলস্বভাবস্য মদ্প্রক্ত তেখাং তাদৃশাবস্থাসহনং ন ভাৎ ইত্যাশক্ষ্যের ॥ ৩৬ ॥

অথ ব্রহ্মাপি তত্তবং শ্রীভগবৎক্ষপরৈর জাতবানিতি তৎ প্রসক্ষ মারভাতে তাবদিত্যাদিনা। তাবদিতি গতেহপি বর্ষে ইত্যর্থ:। অতি শীঘ্রাগমনং মল্লাভয়াদিতি জ্যেয়ং। যত আত্মনো হরেরের ভবতীতি তথা স:। আবং একাবপর্য্যন্তং। সকলমিতি কলা: বালা: বংসাশ্চ নতু শ্রীবলদেব: তদিনক্রী ডানির্ব্বাহার রহস্তং কথমিতা বনে তত্তনয়নাও॥ ৩৭॥

গোকুলে যাবস্তো বালা বংসপালরূপ। আসন্ ভাবস্তঃ সর্বঞৰ বংসসহিতাঃ সন্তো মায়েত্যাদি যোজাং॥ ৩৮॥

ক্রমসন্দর্জঃ।

পীত্যর্থ: ॥ ৩৬॥

সকলং কলান্তিব ওঁদাদিন্তিঃ সহিতংগ ৩৭ ॥ ৩৮ ॥

এবিশনাপচক্রবর্তী।

বংশবাশকাকারা এতে ন সম্ভবস্থি নাপি ঋষয়ঃ চকারারাপ্যস্থরাঃ কিন্ত ভিদাশ্রেরেংপি বিবিধতেদাম্পদেংপি বংশবাশাদিসমূহে ভ্যেবৈ-কো ভাগি একস্যাপি তব পৃথক্তং বংশপাশাদিরপত্তং সর্বাং কথং তরিগমাৎ সংক্ষেপার্দেভ্যুক্তেন পৃষ্টেন প্রভূমা প্রীক্ষেত্র হেতৃনা বলঃ অবৈৎ বন্ধনোহনাদি বৃত্তং জ্ঞাভবান্॥ ৩৬॥

বৃদ্ধনাহনপ্রসাদ এব গোপ্যাদীনাং মোহনাদিকং বির্ভা পুনর্ত্ত কণেছিণি বিশেষতো মোহনাদিকং বিবরীতু মারভতে তাবদিভি।
বর্ষে বাতেছিণি আত্মনো মানেন ক্রটানেহদা ক্রটিমাত্রকালেন অভিশীজাগমনং মহাভরেনৈর। যত আত্মনো হরে: সকাশাদের ভবতীতি সঃ আক্মেকান্পর্যান্তং সকলং বৎসবালাদিকং হরিং ক্লঞ্জ বন্ধতন্ত কলান্তংস্করপভূতা বৎসবালাদ্যান্তংসহিতং দদৃশে
দদর্শ। বলদেবন্ত পূর্ক্বর্ষকন্তান্তিরের জন্মক্রদিনে শান্তিকলানাদ্যর্থং মাত্রা রক্ষিত ইতি পূর্ক্বজ্বেরং॥ ৩৭॥

্দৃট্|টেচবং ব্যতক্ষদিত্যাহ আভ্যাং মায়াশয়ে সন্মারাত্তে সন্মায়ামোহিতাতএব ক্কেনাআনীতা ৰেভি বিভাব্য মারিকানাং নাভি-

কি প্রকারে হইল বল ? এই রূপ উক্ত হইয়া জীক্ষ্ণ নিগম অর্থাৎ সংক্ষেপে কহিলে সমুদায় বিষয় বন্দেবের পরিজ্ঞাত হইল ॥ ৩৬ ॥

ছে রাজন ! তদনস্তর যাহা যাহা হইরাছিল বলি শুন ! জ্রীকৃষ্ণ নারাবলে বংস ও বংসপাল স্থান করিয়া ঐ প্রকারে জীড়া করিতে লাগিলেন, এক বংসর গত হইল, কিন্তু সমূহ্যের এক বংসর প্রকার আত্মপরিমাণে তেটিমাত পরিমিত কাল । প্রকার করিয়া দেখিলেন ভগরান পূর্ববং অনুচরগণ সহ মিলিত ইইয়া ক্রীড়া করিতেছেন ॥ ৩৭॥

েইহা দেখিয়া ক্রন্ধা বিতর্ক করিতে লাগিলেন, এ কি ? গোকুলে যত বানক ও গোৰংস ছিল,

ইত এতেহত্ত কৃত্রত্যা সন্মারামোহিতেতরে। তাবস্তএব তত্তাকং জীড়স্তো বিশ্বনা সমং॥ ৩৯ এবমেতেরু ভেদেরু চিরং ধ্যাদা স আত্মভূ:। সঙ্যাঃ কে কতরে নেতি জ্ঞাভূং নেতে কথঞন। এবং সন্মোহরন্ বিশ্বং বিশোহং বিশ্বমোহনং। স্বয়ৈব মায়য়াজোহপি স্বয়মেব বিমোহিতঃ॥৪০

टीश्रवानी

মন্মারামোহিতেভা ইতরে কুত্রতাা:॥ ৩৯॥

ইতি বিভর্কররমূষ্ট্রিত্যাহ এবমিতি ছাত্যাং 🕽 : এবমেতেরু ভেনেরু চিরং ধাছা স আত্মভূদ্ধিতি পাঠ: ॥ ৪০ ॥

देवकबर्खावनी।

ইতো হেতো:। यथा। এতে সায়াশরে শয়ানা ইতো বর্ত্তম্ভে। ময়ায়মোহিতেতরে চাত্র কুত্রতা ইতি যোজ্যং। বিষ্ণুনা ইত্যকং ব্যাপ্য তথৈব ক্রীড়নাডিপ্রায়েণ ॥ ৩৯ ॥

এবমুক্থকারেণ ভেদের মোহিতাসুসন্ধানং অমোহিতাসুসন্ধানং তরে। বিপির্যারতের এতের মধ্যে কে সত্যাঃ অনারোণিতপূর্ব্ব-বংসবালভাবাঃ কতরেচ ন সত্যাঃ কিং নাম সমোহিতান্ ভগবতা নীত্বা তৎপরিবর্ত্তে নান্যে তালৃশা মাররা নির্দ্ধারাক্রাপ্যমী স্থাপিতাঃ। কিয়া মরা দ্রাত্তিয়াব তে দৃশ্যত্তে এতে বেতি চিরং ধ্যাত্বাপি নিম্পবিচারাদিপ্ররাধ্যেন নিশ্বেত্বং নেষ্টে নাম ইত্যর্থঃ। স মারাবিভারকোহপি আর্জুং অভঃসিন্ধানোহপি ভগবত্থাকৈর আজুং নেষ্টে ইত্যর্থঃ॥

সংখাহরন্ অমাররা বংলাদ্যাচ্ছাদনাৎ সংখাহিত্মিচ্ছরিত্র্থ:। এবং তদভিপ্রারান্ত্রারেলৈর সংশব্ধ: বিভূমিতি সর্ধ্ব্যাপক-

ক্রমসন্দর্ভঃ।

ইতো হেজো: ন কেবলমত্রেব 'হানে কিং তহি' অবং ব্যাপ্য তত্ত্ব গোকুলেহপি জীভভঃ॥ ৩৯॥

মোহিভাপুসনানং অমোহিভাপুসনানং তরোবিধর্য্য এবং প্রকারেখেতেরু ভেদেবু অনারোপিতপুর্ববংসবাসভাবা: মায়াহভানাং বা

विवयनाथहव्यवर्ती।

নিকটে গড়া তৰ্জন্যা সাভিনর মাহ। ইতঃ প্রদেশাদত্ত কিঞ্চিদ্রে এতে বংসবালা বর্তস্তএব তত্ত বিষ্ণুনা সমং জীড়স্তঃ কুত্রত্যাস্তে কীদৃশা সন্ধায়ামোহিতেত্য এতা ইতরে॥ ৩৮॥ ৩৯॥

এতেবু তেদেখিতি কিনেতে ইং প্রকৃতা শুরাহ কৃষ্ণস্টা:। কিখা এতএব কৃষ্ণস্টা শুর তে প্রকৃতা: কিখা উভরে এব কৃষ্ণস্টা: প্রকৃতাৰ ক্লফেনৈব কালি বন্ধাওান্তরে চালিতা:। কিখা ক্লফেন বংসবালানাং প্রকাশবরীকরণাৎ উভরে এব প্রকৃতা: কিখা মরিতর পথা পশাতি সতি এতএব কৃষ্ণেন তর নীয়ন্তে পুনরবাগছতে মির তে এবার নীয়ন্ত। ভবতু তহি যুগপদেবোভয়র দৃষ্টানি ক্লিপানীতি তথা ক্লাণি ভাত্তরক দৃষ্টা চিরং ধ্যাদেতি ভবতু খীর সর্বজ্ঞতীরবাহনবশ্যং জ্ঞাস্যামীতি বহুস্মাধিনাণি জ্ঞাতুং নৈবাশক্ষিতাহি সত্যা ইতি। প্রতেরু ভেদেরু মধ্যে সত্যা ভগবংখরপভূতা ন সত্যা বহিরক্ষমায়াস্টা ইতীমং ভেদত্ত কথ্কন জ্ঞাতুং সংলক্ষ্
ক্রানবিবাহীকর্ত্রণে নেটে ন শশাক ॥

ভঙক বন্ধা ৰোহসমূলাবর্কে নিপপাতেত্যাহ এবমিতি। সন্ধোহয়ন্ বংসবাসতেয়েন মোহয়িত্মুপক্ষমাণঃ কলো বন্ধাপি খারৈব-বাররা ব্যবেব বিক্ষো প্রক্রমা হেতুমা বিমোহিতঃ ভগবন্ধাররা বিশেবেণৈর মোহিতঃ। মোহিতুস্গাপি বন্ধণ এবং বিব্রসীক্রণ-

বংশ সহিত সকল বালকই আমার মায়াশব্যায় শয়ান আছে অদ্যাপি তাহাদের পুনরুখান হয় নাই ॥ ৩৯ ॥

আমার মারার সোহিত সে সকল বালক হইতে ভিন্ন, এ সকল বংস ও শিশু কোথা হইতে হইল ? ইহারা এখানে কি রূপে আদিল ? ফলড: এ সকল মারাক্ত্রিত বালকই স্থংসর পর্যান্ত এ বানে বিষ্ণুর সহিত জীড়া করিতেটিল # ৩৯ ॥

সে যাহা হউক, মনেক কৰ প্রভেড তর্ক বিতর্ক ও চিন্তা করিয়াও জন্ধা ঐ দিবিধ বালকাদির মধ্যে কোন্ গুলি সত্য, ও কোন গুলি অস্ত্য, কোন প্রকারে নিশ্চয় করিতে পারিলেন না, স্নতরাং মোহ

তম্যাং ত্রোবলৈহারং থালোতার্চিরিবাহনি। মহতীত্রমাথৈশুং নিহন্ত্যান্থনি মুঞ্জতঃ ॥ ৪১ ॥

^{*} शिथत्रचामी ।

নমু মারাশ্রয়স্য তস্য কুতোমোহ ইত্যত আহ তম্যামিতি। মহামায়াবিনি ভগবতি অন্যথারারা আবরণবিক্ষেপকখাতাবে দৃষ্টান্তব্য-মাহ তম্যাং তমিশ্রারাং রাজ্ঞাং নৈহারং হিমকণপ্রত্বং তম ইব। তদ্ধিতার্থোপসর্জনস্যাপি তম্পো নৈহার্মিতি বিশেষণং ছাল্লসং। তর্ত্তমো যথা পৃথগাবরণং ন করোতি কিন্তু তত্ত্বৈব লীয়তে যথাচ খন্যোতার্চি রহনি ন পৃথক্ প্রকাশং করোতি তথা মহতি পুরুবে যুক্তঃ পুংস ইতরা নীচা মারা তত্ত্ব ন কিঞ্ছিৎ করোতি কিন্তু আত্মনি স্বাত্মিরে ঐস্যাং সামর্থ্যং নিহন্ত্রীতি॥ ৪১॥

বৈষ্ণবতোষণী।

স্বাশার্যা তস্য দৃষ্ট্যাচ্ছাদনং চ ঘটতেতি ভাব:। ততো বিমোহং মোহয়িতুম্শক্যমপীত্যর্থ:। কিঞ্ বিশ্বমোহন্মণি অল: স্বরস্ত্রিতি পূর্ববং। এব শ্লাভ্যাং নতু ভগবন্যায়গা নতু ভগবান্ বেতি বোধাতে ॥ ৪০ ॥

তচ্চোচিতং এবেত্যাহ তম্যামিতি। যদত্র টীকায়ামাবরণবিক্ষেপক্রম: সন্মত: তদহুন্মত্য ব্যাথ্যায়তে। তম্যাং নৈহারং তমো যথা তমীং না বণোতি কিন্ত তচ্চ স্বরমেব তত্র লীনং সং তমীতম: সান্দ্রীকৃত্য নীহারমেবার্ণোতি যথা চাহন্যহ: স্থিত্যা পূর্ণস্য চন্দ্রস্যাচিরিপি স্ব্যাচিঃ স্বত্যা প্রত্যায়য়তি তথা খন্যোতার্চি কর্ত্ স্ব্যাচিরিপ স্বত্যা প্রত্যায়য়ত্ই ন শক্রোতি কিন্ত খন্যোতমেব প্রতিহত প্রভাবন্ধেন জ্ঞাপয়তি তন্ধং মহতি মায়াং প্রযুগ্ধানস্যেতরস্য মায়া মহছেকি মাবরীতুং ভাবাস্তরক বিক্ষেপ্ত: অসমর্থা স্তী স্বাশ্রয়তয়ায়্বেনে ব্যেপদিশ্য তদেব নিহন্তীত্যথ: । অব্যয়ম্পি বছ্বেকাছিত্য। যথা। যথা তথিবেবং সাম্য ইত্যমর: ॥ ৪১ ॥

क्रममन्धः ।

কথং মৃত্তুনার ভগবন্মারা করিতভ্যমিতি ভাষরিখা ইতি ভাষ:॥ ৪০ ॥ ইতর্স্য কুল্রস্য মারা স্বপ্রভাবদর্শনা তাং যুঞ্জতঃ পুংসঃ আত্মনি ঐশ্যং হস্তি ॥ ৪২ ॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

রূপে বিমোহনে ভগবতি মাধাঞ্রোগরপোহপরাধ এব কারণমিতার্থঃ। নতু স্বর্মারটারে ব্রহ্মা বিমোহিত ইতি ব্যাপ্যেরং। মাধারাঃ স্থান্ত্রবামোহক্তাস্ভবাৎ উত্তরশ্লোকে দৃষ্টাত্তবিরোধাচ্চ ॥ ৪০ ॥

মহামারাবিনি ভগবত্যনামারা আবরণবিক্ষেপে। কর্ত্ মুশুরু বতী আশ্রমের তিরন্ধরোতীতি দৃষ্টাক্তাভামিক তম্যাং তাৰস্মাং রাজৌ নৈহারং তমোবং নীহারস্থানিতন ইব ইবার্থেছের বছলঃ। ইব ববা চ সাদৃশ্যে ইত্যভিধানাং। নৈহারং তমোং থবা তমীদাবরীত্বমসমর্থং তমীতমং সাজীকতা তেন অমেবার্ণোতি নীহারক তিরন্ধরোতি তথৈব ব্রহ্মারা ভগবস্তং মোহ্ছিত্মসমর্থা ভগবইণেবর্ধানেব
বিপ্নীকৃত্য বমাবৃত্তবতী ব্রহ্মাণ্যেব তিরশ্চকারেতি। দৃষ্টাক্তেহ শিলংশেন ব্রহ্মারা অপি হেত্রমন্তীক্তাপরিত্রান্য দৃষ্টাক্তার্বান্য
বিশ্লীকৃত্য বমাবৃত্তবতী ব্রহ্মাণ্যেব তিরশ্চকারেতি। দৃষ্টাক্তেহ শিলংশেন ব্রহ্মারা অপি হেত্রমন্তীক্তাপরিত্রান্য দৃষ্টাক্তার্বাহ
বিশ্লীকৃত্য ব্যাব্রিক বর্ধা প্রদ্যাত্ত তথা দিব্দেহপি মংগ্রভা প্রদ্যোত্তামিতি খন্যোত্তন প্রকৃত্তি প্রভাগ দিব্দেইজির্দ্ধান্য
ন শক্ষোতি প্রত্যত ত্যেব ভ্রত্তেলসং স্কান ক্রাপ্রান্ত তথৈরান্যবৈশ্ব্যবানপি ব্রহ্মা তগবত্যপি নামনা নিক্ষেশ্ব্যং নিহ্তি ॥ ৪১ ॥
ভ্রত্তেলা এবাভূদিত্যতো মহতি পুরুষ্টে ইত্রমারা ক্রাপ্রাক্তাকানি আত্মানং যুগতঃ সং প্রয়্থানস্য প্রংসঃ প্রশ্রম্বর্ধাং নিহ্তি॥ ৪১ ॥

শূন্য অগ্নচ বিশ্বমোহন ভগবান্ বিফুকে মায়া মারা মুগ্ধ করিতে গিয়া আপনিই বিমোহিত ব্রুক্ত

হে রাজনু ৷ তদিলা রজনীতে হিমক্রপ্রভের অন্ধার মত্ত্র পৃথক আবরণকারী হয় না বাজির অন্ধারেই লীন হয় এবং রাজিকালে খলোতের জ্যোতিঃ মত্ত্র দিবলে পৃথক এনেলা হয় না, স্থাকিরণেই লীন হয়। যায়, তত্ত্ব যে পুকর মহৎ পুকরে আন্ধারণ যোগকরের ভাষার প্রতি এ প্রয়ক ইতর মায়া কিছু করিতে পারে না, আপ্নারই সামর্থ্য বিষক্ত করে ॥ ৪১ ॥

তাবং সংক্রী বংসপালাঃ পশুভোষ্ক ও তে তে বিশ্বীতিনঃ কুওলিনো হারিপোর্বনসালিনঃ ॥ ৪২॥ চতুত্বাঃ শহাক কম্ক্রণ পাণয়ঃ। কুপুরিঃ কটকৈ পাতাঃ কটিসূত্রাসুরীয়কৈঃ॥ ৪০॥ আভ্যুমন্তকমাপূর্ণা স্তলসীনবদামভিঃ। কোমলৈঃ স্ক্রাত্তির পূর্বিপ্রাস্ক্রীমকৈঃ॥ ৪০॥

शिषत्रयामी।

অন্যদপ্যাশ্চার্য্য মাহ তাবদিতি। বংসপাত্মাং বংসাং পালাশ্চ সর্ব্বে যাইবিবাণাদয়শ্চ ॥ ৪২ ॥ শ্রীবংস প্রভাযুক্তানি অঙ্গদানি দোঃবু যেষাং রত্মময়ানি কত্বং ত্রিধারাণি কত্বণানি পাণিবু যেষাং তেচ তেচ ॥ ৪৩ ॥ তথা ভূরি বহু জন্মার্জিতং পূণ্যং তদ্যুকৈ র্কানেরপিতিত:॥ ৪৪ ॥

देवक्षवरकाश्नी।

এবং মোহেন দীনতাং গতে ব্ৰদ্ধণি শ্ৰীভগবানপাচিরাৎ স্তম্ভুং মঞ্মহিষমনাদিণি বদিতি তদভিপ্রারাহ্যারেইণৰ ক্ষপাং ব্যতনোদিত্যাহ তাবনিত্যাদি নবকেন। অকান্ত পৃথক্ পৃথক্ ক্রিয়ন্তে। পশাস্তমন্তমনাদৃত্য তদ্ধিশক্তিমনপেক্য অদৃশ্যন্ত স্থামেব তদ্টো
ব্যক্তীভূতাঃ স্থাকিমাত্রেণাভিব্যক্তেঃ কর্মকর্ত্বং। চতুভূলা ইত্যক্র চতুভূল্বাদিনা বিষ্ণুষ্মৰগম্যতে মারাদ্যধিষ্ঠাভূদ্বনত্ প্রথমবিতীরপুক্ষব্যমবগংস্যতে। তত্মাৎ স্কামি তরিযুক্তোহং হরোহরতি তবশং। বিষং পুক্ষরপেণ পরিপাতি ত্রিশক্তিব্যন্তব্যক্ষকত্রা প্রারো বিষ্ণোবেবাবির্ভাব প্রবণাত্ররাণামভেদ ভ্রাপনার্থমেব ব্যামিপ্রস্থেনাবিভাবোহ্যং জ্ঞেয়ঃ॥ ৪২॥

শ্রীবংগো নাম দক্ষিণগুনোর্দ্ধে স্ক্ষুরোয়াং দক্ষিণাবর্ত্তঃ শ্রীভগবডোহসাধারণ লক্ষণং। যথা শ্রীযুক্তং বংসং বক্ষঃ তং প্রভাযুক্তমিত্যাদি। যথা শ্রীযুক্তং বংসং বক্ষা যেথামিত্যাদি যোজ্যং। উরো বংসঞ্চ বক্ষাত ইত্যমরঃ। কটকৈঃ পাদবদরৈঃ পারিশেব্যাং। জন্যতৈঃ। তত্র কল্পোমুথাগ্রভাগে ত্রিধারত্বান্তথোক্তং। যথা ক্ষবো বলয়াঃ ক্ষণানি মণিবন্ধবন্ধনানি হত্তস্ক্রারি ১ ক্রেক্ট্রন্থাতি ন্বর্গাং। তত্র তত্র ক্ষীর্ষ্বামিনা তথা তথা ব্যাধ্যানাচ্চ ॥ ৪৯ ॥ না

ভূরিপুণ্যবৃদ্ধিঃ সাধকৈ স্তন্ত্তৎ প্রতিমাদির মনসা কর্মণা চার্পিতে: ইতি প্রীত্যা তেষাং ধারণং বহুকরণঞ্চ স্থচিতং ॥ ৪৪ ॥

ক্রমসন্দর্ভঃ।

क्टेटेकः भागवनदेशः॥ ४७॥ ४४ ॥

প্রীবিশনাথচক্রবর্ত্তী।

তাবদিতি যাবদেবং ব্রহ্মা মীমাংসমানো ব্যামুন্থতি স্বেত্যর্থঃ।, বৎসা পালান্চ পণ্যতোহস্বস্য পণ্যস্তমপ্যক্ষমন্দৃত্যেতি। ভোঃ সভ্যনোক্বাসিন্ অব্ধ সভ্যং ত্বমন্ত এবাসি উদ্দৈশ্য বৃদ্ধা বিষয় ক্ষমি আশ্বামার মাহিরিত্মিচ্ছসি কথকিং আতুমপি তাব্রদাকোসি।, প্রেণ্ডি ব্যদৃশ্যস্ত বরং বৃদ্ধাবনীরা ভূগং চরভো বংসা অপি বৎসাংশ্চাররস্তো গোপবালা অপি এবং ভবামেতি আপরস্ত ইব তদ্ টি-গোচরাঃ স্বরমেবাভ্বন্ স্প্রকাশভাদিতি ভাবঃ ॥ ৪২ ॥

শ্রীল স্থাতি তদ্যুক্তানি বংগানি বক্ষাংসি বেষাং তে চ। অঞ্চলযুক্তা দোষো বাহবো বেষাং তেচ রক্ষং কৌতত্ত্বালুক্তাঃ ক্ষবং অভিশব্ধেক্তা ত্রিরেধাতিতাঃ কঠা বেষাং তেচ। ক্ষণযুক্তা পাণয়ো বেষাং তেচ তে। কটকৈঃ পাদবদীয়েঃ ॥ ৪০ ॥ ,

ভূরিপুণ্যানি প্রবণকীর্দ্তনাদিভজনানি তরতা ভক্তসহত্রেণার্পি তৈ: ॥ ৪৪ ॥

সে যাহা হউক; ঐ সময় অম্য এক আন্তর্য্য ব্যাপার হইল, সমুদ্যি বংস ও বংসপাল তথা সমস্ত যাষ্ট্র শৃক্ষ প্রভৃতি সদাধ্য দুলনকারি জন্ধার সমক্ষে তৎকণাৎ ঘনশ্রাম, পীতকোশেরবসনধারী, চতুভূ জ, শব্দ চক্র গদা পদা হস্ত, কিরীট কুওল হার এবং বনমালার অলম্ভত দুফ হুইতে লাগিল ॥ ৪২ ॥

আর স্কলেরই বাসুতে প্রীরংবের প্রভায়ক কুলের, সকলেরই হতে রন্ধনয় ও ক্ষুব্ধ তিধারায়িত করণ, সকলেই নৃপ্র, কটক, কটিস্তা, তথা অনুরীয়ক দারা উদ্যোতিত। ৪০॥

অবং তন্ধারা সকলেরই চরণ ও মন্ত্রক পরিপূর্ণ দৃষ্ট হইল ॥ ৪৪ ॥

চল্রিকাবিশাদম্মেরে: সারুণাপাস্থা ক্ষিতে:। বকার্থানিব রক্ত: সন্থাত্যাং অক্সালকা:॥ ৪৫॥ আত্মাদিত্তবপর্যাত্তমুর্ বিষয়িশ্চরাচরে:। মৃত্যগীতাদি নৈকাহৈ: পৃথক্ পৃথগুপাসিতা:॥ ৪৬॥ অনিমান্যের্ম হিমভিরক্তাদ্যাভির্বিভৃতিভি:। চতুর্বিংশতিভিত্তব্ব: পরীতা মহদাদিভি:॥ ৪৭॥

वीषत्रचामी ।

চক্রিকাবিশদন্মিত্যুকৈঃ সহারুণগুণেন চ বর্তমানা যে অপালা তৈর্বীক্ষিতেঃ অকার্থানাং অভক্রমনোর্থানাং রক্তঃস্বাভ্যাঃ এই -পালকা ইব ব্যদৃশ্যন্ত সম্বাদিশদন্মিতেন পালকা ইব রন্ধোবদরূপগুণেন চ স্তুটার ইব তাদৃক্ কটাকৈদে গাঁতমানা ইত্যর্থ: ॥ ৪৫ ॥ আন্ধা এন্ধা তদাদিত্তমপর্যাকৈঃ ৷ নৈকাহি রিণেকাহিণিঃ ॥ ৪৬ ॥

অজাদ্যাভি ম'ায়াবিদ্যাদিভি: বিভৃতিভি: শক্তিভি:। মহদাদিভিরিতি মহৎস্ত্রেরা: পৃথক্তবিবক্ষরা চতুর্বিংশতিত্বং। তবৈ র্জগৎকা-রবৈ:॥ ৪৭॥

देवक वटकावनी।

কেবৈরবন্ধংশিতবাহল্যেন স্বর্থেব চল্লিকানিভবিশদীভূতৈক তৈরিত্যর্থ:। টীকারান্ত শিত এব বিশ্বতবিশেষণং তাৎপর্য্যন্ত্রণাং দত্তমিতি জ্বেরং। বরা চল্লিকাবিশ্বির্ধান বর্ণাং শত্তমিতি জ্বেরং। বরা চল্লিকাবিশ্বির্ধান বর্ণানার্থা শেবরৈঃ শ্বরমানৈঃ মৃহপাচক ইতি বং ক্রিরাবিশেষণেন সমাসঃ। শ্বকার্থানাং লাই পালকা ইতি তালুক্কটাকৈরের তদৈকসাধ্যবতাং শ্বকশ্বোক্তানাং একান্তিভক্তানাং তালুশাভীইনিছেঃ। ত্রাক্রণকটাকৈঃ প্রত্যার ইতি ত্রপ্রাারণগুণসা স্বক্তিব্রাারক্ষাত্তিনের ত্রিষ্বর্কবিচিত্রকামানাং উৎপালনাং। শ্বিতব্রুকটাকৈঃ পালকা ইতি নিব্বাব্যারাদিবিচারেণ ক্ষীর্মাণানাম্বি তেবাং তেনের রক্ষণাৎ পোষণাচ্চ। ইবেত্যুৎপ্রেক্ষারাং। অরুণবিশ্বন্ধণ-শ্বনীয়াভ্যাং রক্ষঃস্বাভ্যামিব্রতি ॥ ৪৫ ॥

চরাচরের ব্যৱসক্ষণগুরুত্তঃ ভরম্বরিক্তিঃ। নৃত্যুগীতাদরে। বে নৈকার্হাঃ অনেকার্হণোপকরণানি তৈঃ। পৃথক্ পৃথগিতি ব্যাধিকারাহ্সারেশ উপাসনা সামগ্রীভেদাং। ইবং বালকাদীনাং ভেষাং প্রভ্যেক্মেকৈক ব্রহ্মাণ্ডেশরত্ত্বরুত্ত। তথাচাগ্রে ব্রহ্মান্ডেশর অপস্তাভূরিতি ॥ ৪৬॥

महिमिक्टिवर्चर्याक्टेश्ः॥ ३०॥

क्रममन्द्रः।

জৰুণবিশদস্থানীয়াভ্যাং র**ন্ধ:সন্ধা**ভ্যামেৰেভূত্তপ্ৰেক্ষা ॥ ৪৫ ॥

हत्राहटेत **उ**द्धारिक्षांकृटेमवरेकः ॥ ८७ ॥ ८९ ॥ ८৮ ॥

अविषनाथहक्तवर्था।

চক্রিকাবং বিশদং ব্যাস্যান্ত্রথা শ্বেররত্ত ইতি চক্রিকাবিশদংশ্বরণি মৃত্যাচক ইতিবং সমাসঃ অরুণাপাক্ষেন সহ বর্তমানানি থানি সন্মুখবীক্ষিতানি তৈঃ প্রকার্থানাং অন্ত্রুশানীর প্রভক্ষননোর্থানাং রক্ষঃ স্বাত্যাং স্লষ্ট্পালকা ইব ব্যদৃশ্যক রক্ষদেবারণ গুণেন প্রতারইব স্বেষ্ট্রেন বিশদ্বিভেন পালকা ইব॥ ৪৫॥

चाषाव उन्ना। निक्टिन् चनकार देनः॥ ८७॥

মহিমভিরৈশবৈত্য:। অজা মারা ক্যান্যান্তিঃ শক্তিভি:। চতুবিংশভিভিরিতি মহন্তক্তৃত্ততব্বেঃ পার্থক্যবিবক্ষরা। তথৈ জন্মৎ-কারবৈং॥ ৪৭॥

অপিচ সকলেই চন্দ্ৰিকার ন্যায় বিশদ হাস্ত তথা অরুণবর্ণ**বুক্ত অপাল-দর্শন্ধারা রক্তঃ ও সত্ত** গুণে আপন আপন ভক্তদিগের মনোর্থ সকলের অন্তা পালকব**ং প্রকাশ পাইতেছিল। অর্থাং সত্ত** গুণসমূল বিশ্বদ স্মিত ধারা পালকের ন্যায় এবং রজো গুণবং অ**রুণ গুণ ধারা অকার ন্যায় ত্**ইরা তাদৃশ কুটারক উদ্যোতিত হুইতেছিল॥ ৪৫॥ "

আর মুর্ভিমান প্রকাশি তথ পর্যান্ত সমুদায় চর্ম ও অচর মৃত্য গীতাদি বছবিধ পর্যণ থারা তাহা-দিগের পৃথকু পৃথকু উপাসনা করিতেছিল ॥ ৪৬॥

व्यश्रेत गर्वेटन है ज़िमानि अचर्या, व्यविकानि शक्ति अनः मद्दर्शति ह्यूर्विः अव्यक्ति अविकासि अविकासि

কাল স্বভাৰ সংস্কার কাম কর্ম গুণাদিভিঃ। স্বমহিধ্বস্তমহিভি মুর্তিমিউক্লপাসিতাঃ॥ ৪৮॥ সত্যজ্ঞানানস্তানন্দমাত্রৈকরসমূর্ত্তরঃ। অস্পৃষ্টস্থূরিমাহাস্ক্যা অপিছ্পনিষদ্শাং॥ ৪৯॥

• विश्ववामी।

কানাদিভিশ্চ তংসহকারিভি: তত্র স্বভাব: পরিণানহেতু: সংস্কার উদোধক: স্বমহিধ্বস্তমহিভি র্ভগবন্ধহিল্লা ভিরত্নত স্বাতদৈর-কুকৈ: সক্রেরণিমান্যে:॥ ৪৮ ॥

সর্বেবাং মৃর্ত্তিমন্তে ছিল বিশেষমাই সত্যজ্ঞানেতি। সত্যাশ্চ জ্ঞানরপাশ্চ অনস্তাশ্চ আনন্দর্কপাশ্চ তত্রাপি তদেক্মাত্রা বিজাতীয়-সম্ভেদরহিতাঃ তত্রাপিচ একরসাঃ সদৈক্রপে মূর্ত্তিয়া যেবাং তে। যদা। সত্যজ্ঞানাদিমাত্রৈক্রসং ব্দুক্ষ তদেব মূর্ত্তি হেঁবামিতি

বৈষ্ণৰভোষণী।

खनाः प्रचानमः। व्यानिभटनन काजिनामानमः॥ १৮॥

এবং মূর্ত্তবেংপি বিবিধবেংপি পরত্রকৈকরপত্তেন বৈশিষ্টমেকস্বমপ্যাহ সত্যোতি। তত্র সত্যা এক রসাক্ষ কালস্যাপি কারণজেনাগ্রার্থনে চ অক-প্রবাধ। তত্তকং। কাল অভাব ইত্যাদি। সর্বে হনিমিষা জ্ঞিনের বিহ্যতঃ প্রকাদধীতি ক্রতেঃ। বিশেষেণ বিবিধং বা দ্যোততে দীপ্তিং করোত্রীতি বিহ্যুৎ নিমেষাক্তরিমেষোন্মেষপ্রভাবাঃ কালাবরবা ইত্যুর্থঃ। যোহরং কাল অস্য তে হব্যক্তব্বেরা চেষ্টান্যাহ রিত্যাহ্যক্তবাহ। জ্ঞানরপাঃ অপ্রকাশবেনাজড়বাং। তত্তকং পশ্যতোহজ্বাং ত্রুকণাং ব্যদ্শান্তেতি ন চক্ষ্যা পশ্যতি রপ্রসা যমেবৈষ বৃণ্তে তেন লভা অন্যৈষ আহ্মা বিবৃণ্তে তহুং স্বাং। আদিতাবর্ণং তমসঃ পরভাং ইত্যাদি ক্রতেঃ। নিত্যাব্যক্রোহিপি ভগবানীক্ষতে নিজশক্তিতঃ। ইতি নোরায়ণাধ্যান্যাচ্চ।

অনস্থা: পরিচ্ছিরপ্রারবেছপ্যচিন্ত্যপক্তা বিভূষাং। যদ্ভেতমেব প্রাদেশমাত্রমভিবিমানমান্থানং বৈশ্বনরম্পান্ত ইতি প্রতে:। নচান্ত ন বহি র্যস্থ ইত্যক্তরান্ত। আনন্দমাত্রা: নির্পাধিপরমপ্রোলাপদস্বাংশন্ধাৎ তছকং কিমেতদভূতমিব বাহ্ণদেবে-ছবিলাম্মনি ইত্যাদি আনন্দং ব্রহ্মণোরপমিতিক্রতে:। বিদিতোছির ভবান্ সাক্ষাদিত্যাত্তকন্ধান্ত বছন্ধং চৈকস্যাবিভাবাভেদবিবক্ষা। আনন্দমাত্রমজরং পুরাণমেকং সন্তং বছধা দৃশ্যমানমিতি ক্রতে:। যুগ্পদনন্তগুণরূপনৈত্ব সত ত্তস্যেচ্ছান্থসারেণ বিশেষদর্শনাৎ। আনন্দমাত্রমজরং পুরাণমেকং সন্তং বছধা দৃশ্যমানমিতি ক্রতে:। যুগ্পদনন্তগুণরূপনিবক্ষা টীকার্যামাহ বহুতি। বক্ষাতেচ প্রত্যানিরপাদ তত্ত্ব নাগন্তকং। তছকং। মণি র্যথা বিভাগেন ইত্যাদি। অত্তবৈক্ষবিবক্ষা টীকার্যামাহ বহুতি । বক্ষাতেচ প্রমিতাক্র্বেণ বহুমুর্ত্তিক্মিতি। এবং ক্রতিপ্রমাণক্ষাং। অস্য চ স্ত্ত্যেত্যাদি বাক্যস্য পঞ্চমবেদলাং। সর্ক্রেদান্ত্রসারং হীতি। সর্ক্রেদ্রেভিত্যানাং সারং সারং সমূক্ত্মিতি নাবেন তৎসাররপ্রাক্ষান্ত। তৈত্বস্থাপনিক্রেকেন বেদান্তো না বাধাাত:। বক্ষাতেচ অত্যিরসনমূপ্রক্ষকমিতাবিতি। সদে র্যত্যগুলিক্ জ্ঞানার্থকন্ধং। তচ্চেশ্বক্রানাদ্বর মান্ধ্রসান্তাবিতি। সদে র্যত্যগুলিক্ জ্ঞানার্থকন্ধং। তচ্চেশ্বক্রানাদ্বর মান্ধ্রসান্ত । মাত্রপ্রেদন্ত ক্যোতি-

ে ক্রমসন্দর্ভঃ।

নত্যেতি। কিঞ্চ। সত্যাঃ সর্কারণছেন। জানরূপাঃ অপ্রকাশত্বেম। জনস্তা বিভূছেন। জানন্দা মিরুপাধিগরমান্দারছেন। এক-

वीविषमाधककवर्ती।

কালাদিভিক্ত তংশহকারিভি:। আন সভাব: পরিণামহেতু:। সংকার উদ্বোধক:। সমহিধ্যক্তমহিভি র্ভগবন্ধহিরা তির্ভ্বত-কাডেরে:॥ ৪৮ ॥

নচৈতৎ সর্বাং তগ্বতা মারবা দর্শিতমিতি মন্থবামিত্যাহ সত্যেতি। সভ্যাশ্চ জ্ঞানরপশ্চ অনবাশ্চ আনন্দর্যশাল্ট ভত্রাণি তদেকমাত্রাবিজ্ঞাতীর সভেদরহিতাঃ ভত্রাপ্যেকরসাঃ কালপরিছেদাভাবাৎ সদৈকরপা মূর্তরো বপৃংবি বেবাং ৫৩। যথা। সত্যং বিজ্ঞানমানকং ক্ষেত্তি সভ্যং বিজ্ঞানমন্তং ক্রেছি আনকং বন্ধণো রূপমিত্যাদি ক্রত্যুক্তং সভ্যাদিরপং বন্ধ ভাষে মূর্তরো বেবাং তে। নহু দৃশ্যের বৃহস্থ বিবিধয়াদিকং বন্ধণো নৈব ক্রবতে বেদাভাদর্শিন অবাধ অশ্টেতি। উপনিবদঃ পশান্তি ভক্তাভাবান্ত্ ক্রথং

পশিচ কাল সভাব সংস্কার কাম কর্ম ও গুণাদি যে সমন্ত পদার্থ, সে সকলের সহচর ভগবদ্মহিমা-খারা যাহাদের সভজ্ঞতা ভিরক্ষত হয়, সে সকলও মূর্জিনান্ হইয়া ঐ সমন্ত ব্যক্তির উপাসনা করিতে লাগিল ॥ ৪৮ ॥

হে সহারাজ! সত্য জ্ঞান এবং অনক-আনন্দমাতিকরপ কে এক তাহাঁই তাহাদিগের, মৃতি

এবং সক্তমদর্শাজঃ পরং ব্রহ্মাত্মনোহখিলান্। যক্ত ভাসা সর্বমিদং বিভাতি সচরাচরং ॥ ৫০ ॥ ততোহতিকুতুকোন্ত্যন্তিনিতৈকাদশেক্সিয়ঃ। তন্ধানাভূদলন্ত্ ফীং পূর্দেব্যন্তীব পুল্লিকা॥ ৫১॥

धीधवयामी।

অতএব উপনিষ্ণ আত্মজানং সৈব দৃক্ চকুর্যেবাং তেষামপি হি নিশ্চিতং অস্ট্ট্রেমাহাত্মাঃ ন স্ট স্পর্নযোগ্যং ভূরি মাহাত্ম্যং যেষাং তে তথাভূতাঃ সর্কে ব্যদৃশ্যস্ত ইভি ॥ ৪৯ ॥

এবং সক্ত সহ একদৈব দদর্শ পরব্রহ্মণো বিশেষণং যস্যেতি ॥ ৫ • ॥

অতিকুত্বেন আশ্চর্ণেণ উদ্বা দৃষ্টা: পরাবর্ত্তা হংসপৃষ্ঠে নিপত্যেতি বা। কুত্বশব্দে তৃতীয়ায়াশ্ছান্দসো লুক্। যথা। উদ্বা ইতিছেদঃ অতিকুত্বেনাদ্বাঃ বিশোডা: বিপর্যাবঃ সন্নিতি যাবং। অতিকুত্বোষ্ত ইতি পাঠাব্বরেকু অতিকুত্বেন উদ্বঃ কুভিতঃ। তেবাং ধায়া তেলগা অন্ধর্কেরিয়ে। বন্ধা তৃফীং নিশ্লোহত্থ। তত্ত্ব দৃষ্টাবঃ পুদেবী বন্ধাধিষ্ঠাতী কাচিদেবতা অস্থা

বৈষ্ণবভোষণী।

রাদি ধর্মাণাং শুক্লাদিগুণানামিব তদ্বন্দাণাং তংক্ষণান্তংপাতিছং বিবক্ষিতং প্রাকৃতাগদ্ধকত্বক নিষিদ্ধং। বথা। ন তস্য কার্য্যং কর-ণক্ষ বিদ্যুতে ন তৎসমশ্চাভাধিকশ্চ দৃশ্যুতে। পরাস্য শক্তি বিবিধৈব ক্ষমতে স্বাভাবিকী জ্ঞান বল ক্রিয়াচ ইতি প্রত্তে। অতএব প্রকৃতিক্ষোভাৎ পূর্বং স ঐকত স স্বাসীৎ ইত্যাদি॥ ৪৯॥

সক্রন্থগপদিতার্থ: পরং একা সত্যং জ্ঞানাদিরপং তর্হি কথং দৃষ্টিবিষরত্বং তত্তাহ যস্যেতি। অতঃ ব্যরং প্রকাশাত্বাৎ সর্বপ্রকাশত্বাচ্চ তদিন্দ্রিরাণি অশক্তা। প্রকাশ্য স্বয়মপি প্রকাশতে ইতি ভাবঃ। অতঞ্জব ব্যদৃশ্যস্ত ইতি কর্তারং বিনৈবোক্তমিতি দিক্। কিন্তনেন প্রকাবেণ পূর্ব্ব বংস বালকানাং মহিনৈব দর্শাতে আ। মম লীলেয়ং এতাদৃশ্যেব সিধ্যতি। অন্যথা মায়িক স্টেরেবাকরিষ্যত ইতি জ্ঞাপনায় ইতি গম্যতে॥ ৫০ ॥

অথ তস্য মোহমাহ তত ইতি। ভদ্ধামা তেবাং প্রভাবেণ অস্তি তেবামন্তিকে স্তিমিতৈকাদশেক্তিয়ো নিশ্চেষ্ট: সন্ ভৃফ্ণীমভূৎ কিঞ্চি-ৰক্তমুমণি ন শক্তবানিতার্থ:। তত্র কিরীটাদিশোভস্য স্তর্কস্য চ তস্য উপমা পূর্দেবী নানা পরিছেদে: প্রজনারাধ্যা প্রতিমেবেতি।

ক্রমসন্দর্ভ:।

রদাঃ কালকারণবেন। অতএবৈকত্বং পৃথক্প্রকাশত্বেন চ পৃথক্তমপীতি ভেরং॥ ৪৯॥

এবং চেৎ কথং দদর্শ ভত্রাহ যদ্যেতি। তস্য সর্বপ্রকাশকথাৎ স্বপ্রকাশকথাচেত্যর্থ: ॥ ৫০ ॥

তেষাং ধারা প্রভাবেন অস্তি তেষাদের স্মীপে কাচিৎ পূদে বী পুরজনারাধ্যমানা যথা সশোভা নিশ্চেষ্টা চ সৈব ইতি অনেন

এ বিশ্বনাথচক্রবর্তী।

জানত্তীত্যপনিষদ্শো দার্শনিকা তেবাং তৈর্ন প্রাণিক ক্রিমাহাত্ম্য যেবাং তে। ভক্তাহমেকরাপ্রান্থ ইতি ভক্তা মামভিজানাভি যাবান্ যশ্চাত্মি তত্ত্বত ইতি। ন চকুষা পশ্যতি রপমস্য যমেবৈৰ বৃথুতে তেন লভ্যন্তসৈয়ৰ আত্মা বিবৃথুতে তরুং ত্থামিতি। আদিভ্যবর্ণং তমসং পরতাদিতি আনন্দমাত্রমজরং পুরাণমেকং সন্তং বহুধা দৃশ্যমানমিতি বহুমূর্ত্ত্যেকমূর্ত্তিকমিতি। সর্বে নিজ্যাঃ শাখতান্চ দেহা ত্তস্য পরাত্মন: । হানোপাদানরহিতা নৈব প্রকৃতিজাঃ কচিৎ। পরমানন্দ সন্দোহা জ্ঞানমাত্রান্দ্য সর্বত্তু ইত্যাদি ক্রতি ত্রাসিদ্ধঃ বৃদ্ধপোহপ্যপ্রাকৃতরূপ গুণাদিমত্বং তত্ত্বিদ্ধরা ভক্তিমচকুর্গম্যসন্তীতি জ্বেরং ॥ ৪৯ ॥

दम् अत्रवस्ताः॥ १० ॥

অভিকোত্তেন উদ্তানি বিলোডানি স্থিমিতানি আনন্তকানি একাদশেক্তিয়াণি বস্যুসঃ। উদ্ত ইতি পাঠে অতি কুডুকেন কুডিডঃ তেবাং ধানা তেজসা তৃষ্ণীং কিমপি ৰজুং চেটিত্ঞাশক্তোহত্ব। অত দৃষ্টাতঃ পুদে বী বহুলোকৈঃ প্ৰস্নানা

হইরাছিল অভএব ভাহাদের মাহাত্র্য জ্ঞানচকু আত্মজ জনগণেরও স্পর্শ যোগ্য হয় নাই॥ ৪৯॥

হে রাজন্ এই অকারে একা ঐ সমস্ত আজাকে সেই পরএক রূপ দর্শন করিলেন, বাঁহার দীঞি ঘারা সমুদার চরাচর জগৎ প্রকাশমান হইতিছে। ৫০॥

্তুদনন্তর আশ্রুর্যেইছু দৃষ্টি পরাবর্ত্তন করিয়া অথবা নিজবাহন হংসপৃষ্ঠে নিপভিত হইয়া নিশ্চল

ইতীরেশেহতর্ক্যে নিজমহিমনি স্বপ্রমিতিকে পর্ঝান্ধাতোহতিমিরসনমুখত্রক্ষক্মিতো। অনীশেহপি দ্রেষ্ট্র কিমিদমিতি বা মুছতি স্তি চ্ছাদাজো জ্ঞাত্বা স্পদি প্রমোহজাজবনিকাং॥৫২

अध्यक्षामी।

অন্তি স্মীপে পুত্ৰিকা চতুৰ্মুখী কনকপ্ৰতিমেব॥ ৫১॥

এবং মোহমগ্রমজমুজ্জহারেড্যাহ ইতীতি। ইরেশে ইরা সরস্বতী তস্তা ঈশে বন্ধণি কিমিদমিতি সুষ্ঠিত সতি পশ্চাদ্র ইুমপ্যনীশে সতি প্রমোহজঃ প্রীক্ষঞঃ সপদি অভাজবনিকাং মায়ারপাং তিরস্করিণীং যয়া অভ্তং দর্শিতং তাং চছাদ বিভাষাভাব আর্বঃ। তিবোধত্ত অপদারিতবানিতার্থ:। অথবা অর্য্য লোকপালাভিমানী মমৈমর্য্য: দ্রষ্ট্রং অবোগ্য ইতি ডভোপরি মারাং≪াদারিতবানিতি ক মুক্তি দতি অতকো তকাগোচরে নিজোৎদাধরণো মহিম। যদ্য তিমিলিতি মোহে হেতুঞ্জঃ দর্শনাযোগ্যভার ত্রীণি বিশেষণানি অপ্রমিতিকে অপ্রকাশক তৎ কং স্থং চ তাম্মন্ অতএব অজাতঃ প্রকৃতেঃ প্রত্র প্রাম্মন্ অতএব অত্রিরসন্মুখেন ব্দ্ধকৈঃ শ্রুতি-

বৈষ্ণবতোষণী।

অন্যত্তি:। তত্ৰ দৃষ্টা: পরাবর্ত্তা তদৃষ্টানাং চতুর্দিক্ষ হিতমাতাভি: পর্যায়েণ দৃষ্টে তার্মা। তদিনিতি হংসপৃষ্ঠে ইতার্থ:। ধপ্সরভাবিসর্গ-লোপ: II ৫ > II

ইতি পূর্ববীত্যা বালবংসাদি রূপমেকমতুতং দৃষ্টং। ইদং বা কিমিতি বালস্বার্থঃ। জ্ঞাত্বা তল্মোহাদিকমবধার। জ্বন্যাইতঃ। অত্র প্রথমপক্ষে মামদ্বা অবিদ্যাবিদ্যাবৃত্তিকত্বাৎ অবিদ্যারূপেণ তিরম্বরিণীং এক্ষণো দৃষ্টিং প্রতি শ্রীক্রঞ্জপস্য ব্যবধায়িকাং। তথা যয়া বিদ্যারূপরাহতক্য ইত্যাদি পঞ্চবিশেষণকত্মাদন্যাদৃশ্যং তদ্ভূতং দর্শিতং তদ্ধণেণ প্রকাশিকামপি তাং অপ্যারিতবান্ ইচ্ছি তমেতং পক্ষং অবৈষ্ণবম্যুক্তঞাশঙ্কা পক্ষান্তর মাহ অথবেতি। অতা তস্য স্বপ্রকাশতাৎ স্বপ্রকাশতাশক্তিরেব দর্শনে হেতুঃ মায়াত্বৰিদ্যাব্রস্ত্যাবরণ-ধর্মৈব বিদ্যাবৃত্ত্যাচ ন তক্ত তদ্যা অপি প্রকাশকদ্য তদ্য প্রকাশন সমর্থা ইত্যুক্তং। তদেবাহ পর্যোক্সাত ইতি। অতত্তাদুশ বৈভবং প্রতি ব্রহ্মনৃষ্টিতো মায়াপদারণেন তদ্দর্শিতং। তত্র প্রদারণেন ঘাচ্ছাদিতমিতি প্রদারিতমপি প্রদারিতবার্নিতি ছলেরস্বভূভিণার্থছাৎ। মান্নামাশ্চাণ্যস্তকৰ্মছাৎ ইতিশব্দ: অথবেতি পক্ষসমাপ্ত্যহা। উত্তরগ্রন্থান্ত উভয়ত্রাধিতথাৎ। ক মৃহতি ইতি কৃত্র তদ্য মোহ:

প্রকারেণ তাং তত্তপরি চছাদ চ্ছাদয়ামাদেতাস্তভূ তণ্যর্থছাৎ।। ৫১॥

কুত্র মোহন্তত্রাহ নিজমহিমনি ব্যদৃশ্যন্ত ঘনশামা ইত্যাদি অবৈভবে তৰিশেষণানি অপ্রমিতিক ইত্যাদীনি i মা লক্ষীন্তয়া ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

গ্রামদেবতা তস্যা অস্তি নিকটে পুত্রিকা বালকেন খেল্যমানা অপুন্দিতা কুলা মৃথায়ী পঞ্চালিকেব ॥ ৫১ ॥

তাবনাত্রএব সঞ্মহিমনি নিমজ্জমফুভবাদমর্থং একাণমাণোক্য ততঃ পরঃসহত্তের্ দর্শরিত্ব্যেদ্দাধারণের্ নিজমহামঞ্মহি-মত্ম তমনাধিকারিণমভিমূব্য মঞ্মহিমদর্শনাং সমাপয়ামাদেত্যাহ ইতীতি। ইরেশে ত্রন্ধণি ইরাসরস্বতী তস্যা ঈশে মহাবৃদ্ধিমত্যপীত্যর্থঃ। কিমিদমিতি মুহুতি সতি পশ্চাদ্দ ই মপানীশে সতি পরমোহজঃ প্রাকৃষ্ণ: জাখা বৈশ্বগ্রস্ট্রুভবে তদ্বোগ্যতাং বীক্ষা সপদি অভাজ-विनिकाः योशमात्राक्रभार छित्रवृतिनीः ह्यान यमा श्वितन जुन्नामान् श्रीनामानियानकान् जुनः हत्रत्जा वरमान् वरमादवकः चन्नान्तान স্ত্রপভ্তান্ বংস্বালকাদীন্ পুনতানের চতুভূ জাদিছেন দর্শদাসাস ভাষতবেধাপদ্দিত্যর্থ:। বা বাতবং ব্যার্ণোতি অবাত্তব-ববেৰ দুৰ্শৰতি সা মালা ৰাজু বাতৰবক্ত নামপি মধ্যে কিমপ্যাৰ্ণোতি কিমপি দুৰ্শয়তি সা বোগুমায়েতি মানা যোগমায়লো জেনাদজা-শকেনাত বছিরদা বারা ন ব্যাথোরা। 🐐 মুছতি নিজমহিষনি দর্শিতচতুর্ভুজাদিরপ্রমহৈশব্যে। কীদৃশে অতর্ক্য। 🐍 বতঃ বঞ हरेलन। अ नक्न वानरकत राज्य जाहात नमूनात रिक्षिय निजन रहेन, रान जनाविज्ञी रान्यीत

সমীপে বালকের জীড়নক স্বরূপ একটা চতুমুখী কনক্প্রতিমা রহিয়াছে॥ ৫১॥

হে রাজন্! যে ব্রহ্মা তর্কের অংগাচর "তাহা নয়, তাহা নয়," এই রূপ সর্ব্ব নিরসন্ধারা সর্ব্ব প্রকাশক জ্ঞান স্বন্ধপ, প্রকৃতির পর এবং জ্ঞানহিত, বাঁহার মহিনা অসাধারণ, সেই জ্ঞাত ঐ थकारत, रेहा कि, विनन्ना चाम्तरी थकाम कत्रक मूक्ष ए पर्माक्रम रहेरल, अत्रम रुकः यत्रभ छगवान् বিষ্ণু জানিতে পারিয়া তৎকণাথ মায়ারূপ জবনিকা অপ্রত করিলেন ॥ ৫২ ॥

ততোহৰ্কাক প্ৰজিল্বাক্ষ: কং পরেতবছ্পিত:। কৃচ্ছাছুন্মীল্য বৈ দৃষ্টীরাচফেদং সহাজ্যনা॥৫৩॥ সপদ্যেবাভিতঃ পশ্যন্দিশোহপশ্যৎ পুরস্থিতং। বৃন্দাবনং জনাজীব্য ক্রমাকীর্ণং স্যাপ্রিয়ং ॥৫৪॥ যত্র নৈস্গতুর্বৈরাঃ সহাসন্মুগাদয়ঃ। মিত্রাণীবাজিতাবাসক্রতকুট্ তর্বাদিকে॥ ৫৫॥

वीधत्रवामी।

শিরোভি মি তি জানং য**ন্নিন্তন্নিন্নর**পে॥ ৫২॥

অর্ধাক্ বহি: প্রতিলক্ষানি অফ্টীণি যেন স:। পরেতবৎ মৃতো যথা কথঞ্চিৎ প্নক্ষত্তিঠিতি ওথা দৃষ্টা নে তাণি॥ ৫৩॥ জনানামালীবৈয় জে নৈরাকীণং সমাপ্রিয়ং সম্ভতানি আসমস্তাৎ প্রিয়াণি যশ্বিন্ ভং॥ ৫৪॥

তদাহ বত্রেতি। নিদর্গছবৈশ্বা: স্বাভাবিকাপ্রতিকার্য্যবৈরবস্তোহপি নরা: সিংহাদয়শ্চ মিত্রাণি ইব বত্র সইহ্যাসন্ অজিতস্যা-

বৈষ্ণবজোৰণী।

ইভ্যর্থ:। অরপে ঘনশ্যামাদিরপে নিজমহিমনি ইতি বছবীহি:। যথা। নিজমহিমনীত্যেব বিশেষ্যং কর্মধারয়াং। তাদৃশ চতু-ভূজিবুনে তবৈভব ইত্যর্থ:। অন্যৎ সমানং॥ ৫২॥

উথিত ইতি মোহেন হংসপৃঠে পতনং বোধয়তি। ইদং সমতাম্পদং বিশ্বং আত্মনা দেহেনাহস্তাম্পদেন সহিতং তদ্যাপি বিশ্বত ভাং॥ ৫৩॥

ততক্ষ পরমক্ষপরা শ্রীকৃষ্ণ স্থান্তরক্ষ বৈভবং প্রকাশিতবান্ ইত্যাহ সপদীতি ত্রিভি:। যদা পূর্ব্ধং বৃন্ধাবনাধিষ্ঠানক শ্রিক্
কাথাং পরমন্বরূপং ধরা মারাজবনিকরা আচ্ছাদ্য স্থান্তবিশেষেণ স্থার্কধিবভবান্তরং দর্শিতবান্ তাং অপসারিতবানিতি প্রাচীনত্তীর-শ্লোকার্থা। ততক্ষ স্বতেলোভি: সর্বাচ্ছাদকেন অপ্রাক্তেন পরমন্বরূপেণের প্রকাশত ইত্যাহ তত ইতি চতুর্ভি:। অর্বাচি সংপ্রত্যাবতীর্বে শ্রীকৃষ্ণাথ্য পরমন্বরূপে পূনর্ল নিদৃষ্টি: সন্ ইদং শ্রীকৃন্ধাবনমাত্মনা সহ ব্যচষ্ট। তদেব বিবৃণ্গোতি সপন্ধীতি। অভিতো দিশঃ পশ্যন্ স্পদ্যেব বৃন্ধাবনমপ্যাথ। সাক্রমা। নারা লক্ষ্যাঃ শ্রীরাধারপারাঃ প্রিরং। রাধা বৃন্ধাবনে বনে ইতি মাৎস্যপান্যাদিত্য:। বদ্ধা। মরা তবৈব লক্ষ্যা সহ বর্ততে ইতি সমঃ শ্রীকৃষ্ণ স্তাস্য আ সম্যক্ প্রিরং। বৃন্ধাবনং গোবর্ধনমিত্যাত্মকং। বদ্ধা। মারা স্তাস্যাথ্য প্রিরং শ্রীকৃষ্ণস্তের সহ বর্তমান্যিতি এবং চেৎ সমানাং আত্মারামাণামণি আ প্রিরমিতি কিয়ৎ॥ ৫৪॥

ভলক্ষণমাহ যতেতি। তৈ ব্ঞিতমেব। यथा। নিস্গৃহকৈরা অহিনক্শাদয়: সহৈবাসন্ ততঃ হুভরাং নৃষ্ণাদয় কি মিত্রাণীবাসন্ ক্রমসন্ধর্চ।

শ্রীরাধাদেব্যা সহিতঃ সমঃ শ্রীকৃষ্ণ: তস্য সা সম্যক্ প্রিরং। রাধা বৃন্ধাবনে বন ইতি ॥ ৫২। ৫০॥ বৃন্ধাবনং গোবর্জনমিতি প্রসিজেঃ ॥ ৫৪॥

অজিতাবাদরপঞ্জৎ ক্রত্মট্ত্র্বাদিকঞ্জৎ তথিন। । ৫৫।।

🕮 বিখনাথচক্রবর্তী।

মিতি শ্প্রকাশক তৎ কং স্থরপঞ্চ তশ্বিন্। অতএব অক্ষাতঃ প্ররুতেঃ পরত্র পরশ্বিন্। অতল্পরসনমূথেন ত্রন্ধকৈঃ অন্ত্রং অনপুঅভুস্মিত্যাদিকৈঃ শ্রতিশিরোভি ত্র ক্ষাভিবাঞ্কৈ মিতি জানিং যত্ত ত্থিন্ স্বরূপে॥ ৫২ এ

অৰ্থাক্ বহিং প্ৰক্ৰিকানি অকাণি থেন সং। পরেডবৎ মূজো যদি কথকিৎ পুনক্তিষ্ঠতি ডথেতার্থ:। ইদং ক্বগৎ মম্ভাম্পদং আত্মনা অহস্তাম্পদেন বহু অপশ্যৎ। তথেয়ারপি বিশ্বতপূর্ক্ষাৎ॥ ৫৩॥

তত্ত প্রমক্ষপদা ক্ষণত্তির স্মাধুর্ব্টবৈভনং প্রকাশিক্তবানিজ্যাহ সপল্যেবেভি। সম্যাসমন্ত্যাং প্রস্পানং প্রিদাণ্যের যত্ত জেও ॥ ৫৪॥ তদেবাহ নৈসর্গং নিসর্গোখং মিথো ছুইর্জনং যেবাং তেছপি মন্ত্র্যান্তাদেরা মিত্রাণীর সুইহ্রাসন্। অফিডস্যাবাসেন ক্রভাঃ

মহারাজ! মায়া অপসত হইবামাত্র জ্রন্ধা বহির্ভাগে লব্ধ দৃষ্টি হইলেন এবং মৃত ব্যক্তি ফ্রন্ধা কথঞিৎ উত্থিত হয় তাহার ন্যায় উত্থিত হইলেন। তদনস্তর অতিকক্টে নয়ন উন্মীলন করিয়া আপ-নার সহিত এই জগৎ দেখিতে পাইলেন॥ ৫৩॥

সকল দিক নিরীক্ষণ করিতে ২ হঠাৎ, সন্মুখবিত ছন্দাবন তাঁহার দৃষ্টি গোচর হইল। ঐ অরণ্য লোকদিপের জীবিকোপযোগি বছবিধ তক্ষণতায় আকীর্ণ অতএব তাহার চারিদিকেই নিরন্তর প্রিয় বস্তু সকল, বর্জ্যান ছিল। ৫৪॥

্ সুপর, যে সকল মনুষ্য সিংহাদি জীব ৰ্ছাৰ্ডঃ পরস্পর ক্ষপ্রক্তিনিবার্ষ্য বৈর ধারণ করে ভাহারও

তত্রোবহৎ পশুপবংশশিশুখনাট্যং ব্রহ্মাবরং পরমন্ত্রমগাধবোধং।

अधितवामी।

বাদেন ক্রতাঃ প্লায়িত। কট ভ্রাদয়ং ক্লোধলোভাদরো যশ্মৎ তথাভূতং বুলাবন্মপ্লাৎ । ৫৫ ॥

তত্র পরমেষ্টা ব্রহ্মা পূরা পূর্ববদেব ব্রহ্ম অচষ্ট অপশাৎ। কথং ভূতং পশুপবংশশিশুদ্বনাট্যমূদ্বহৎ নাট্যমিতীক হেতুং অবয়-

देवकवरजीवगी।

ইত্যর্থ:। তত্র হেড়: অভিতেদ্য যোগাদিনা মহাপ্রয়াদেন হৃদ্যপি বশীকর্ত্মশক্যদ্য প্রীভগবতঃ আবাদঃ দদাবস্থিতিঃ তেন তক্ষপেণ নিজমহিয়া ক্রতং কট্ তর্বাদিকং যন্ত্রাৎ তৎ॥ ৫৫॥

তত্ত তত্ত হৈ সর্বাহন সাকাৎ চকারেতাহ তত্তেতি। ব্রেজতি প্রাণঞ্চিকানাং তেষাং তেনৈবাবিভাবাদি দর্শনেন তদাদায়য়োরেকক্ষরণাদায়েন চ তত্ত্বক্ষণাক্রান্ত্রবাহ। নহু সম্প্রতি দৃশুমান প্রণঞ্চ্যান্তং কাবণমন্ত তত্তাহ অবসং একমেবাহিতীয়ং ব্রুক্ ইতি শ্রুতেঃ
সজাতীয়ভেদরহিতং ততাে দৃষ্টং পরিত্যজ্য কিমর্থ মদৃষ্টং কর্মেত তত্তেদমণ্যেকং তত্ত তত্ত্ব স্বশক্ত্যকমাত্রসহায়ং পূর্ব্যক্তাা বহমৃর্ত্তিক্রেছিল সত্যজ্ঞানাদিক্রইপকম্র্তিকমিতার্থ:। অনেন বিজ্ঞাতীয়সংভেদশ্চ নিবিদ্ধ:। কেষাঞ্চিৎ স্বগতভেদ নিষেধশ্য শক্তিশক্তিমতোরভেদ বিবলয়া। এবং সর্বাহার্থকেন সর্ব্যব্রুমনাত্ত্বং তথা সর্বজ্ঞদ্ব সত্য সংকর্ম সর্বাত্রক্য স্বরূপ ভদ্ধজিদাদিভিরগাঁধ
বোধত্বঞ্চ প্রসিদ্ধ:। মহাপ্রদাদিকারণনরাকৃতিছেনৈ সর্ব্যহ্তমন্ত্রাং ব্রুদ্ধরণ ব্রুদ্ধরণ নার্মান্ত তাদ্শনরাক্তিছোচিত্রপরমনীলামাধুর্গ্যপায় ভূতবান্ ইত্যাহ তত্র তাদৃশে শ্রীকুলাবনে পশুপবংশশিশুবং শ্রীগোপরাক্ষ্ক্যারলীলম্বনে নাট্যং বৈচিত্রীভিক্তরং পরম চমৎকারকার্কং উৎ সর্বোৎক্রইত্যা বহৎ যত্রেন বিভ্রদিতি তত্রত তাদ্শব্রক্ষনানিত্য। স্বর্ধং বিধিকৃতং ক্রক্ষ: সহসাব-

ক্রমসন্দর্ভ: ১

তত্ত্বেতি ব্ৰহ্ম অনৈয়ৰ অনুতেহংস্যত্যাদি ন্যায়েন নরাক্তিতবৈধৰ পরব্রহ্ম তদপশ্যৎ। অতএবাছমমিত্যাদি এবমপি লোকবন্ধ্ নীনা-কৈবল্যমিতি ন্যায়েন সর্বলীলাবিধানস্যাপি তদ্য তাদৃশাবিভাবাভীইলীলা মহন্ত্তুবানিত্যাহ তত্ত্বেতি। শ্রীগোপরাককুলতিলক

औविश्वनार्थहळ्कवर्खी ।

পলায়িতা কট্তবাদয়: কোধলোভাদৰো যন্নাৎ তন্মিন্।। ৫৫ ॥

তত্ত অস্বরপভ্তানি চতুত্ জ্বাদীনি যোগমাররৈবাছাদ্য একমেবাদ্যং ব্রেছেতি প্রত্যুক্তং দর্শিত সর্ব্যরূপভূতং স্বরপং তং দর্শরামানেত্যাহ। তত্র বুলাবনে পরমেটা ব্রহ্মা অচই অপশাৎ। কীদৃশং পশুপবংশশিওছেপি প্রৌচপরমচতুরোচিতং নাট্যং মংপ্রভু মরা মোহিত প্রেতি ব্রহ্মাণং মিধ্যাভিমানং গ্রাছ্যিতুং শাদ্ধনে বংসানদৃষ্ট্ পি পুলিনেথি স্থীন্দৃষ্টাপাদর্শনাভিনরং নটানাং কর্ম উত্তর্থ। দর্শিতানাং ব্রহ্মাদি অ্বপর্যস্তানাং বোগমাররাছ্যাদনাদ্বরং সর্বমূলভূতস্বরূপথাৎ পরং দর্শিতেতান্তিইছ-ভবেভ্যো হুপাপ্রেষাং চিদানন্দমন্ন পরংসহত্রমহাবৈজ্ঞবানাং বিদ্যানভাদনন্তং পর্যেষ্টিনো ব্রাহ্মান কা গণনা প্রবিদ্যাবন্ধ ভবেভ্যো ইপাপ্রেষাং চিদানন্দমন্ন পরংসহত্রমহাবৈজ্ঞবানাং বিদ্যানভাদনন্তং পর্বেষ্টিনো ব্রাহ্মান কা গণনা প্রবিদ্যাবন্ধ ভবেভ্যা হুপাপ্রেষাং বিদ্যানভাগি। বংসান্ স্থীংশ্চ পুরৈর পরিত ইত্তরে বিচিন্নতি বংসবালাহেন্তং পূর্বব্রে ব্রহ্মান মারামোহিত্ত্বাথ যথাপ্নেরাব্যতং। অধুনাতু মারানিম্ক্র্যাথ শাদ্ধেল ভ্লং চরতো বুৎসান্ পুলিনে চ ভূঞানান্ বালান্ পশাতা আপদ্যতালান্তিক বংসবালকাংশ্চ অপশ্যতা তেন মন্মোহনার্থিভিন্যমাত্র্যিদ্যিত্যবর্গতং। অভ্যুত্র নােমীডাতে ইত্যগ্রিমভাবের্ছ। স্ক্রপভূতানাং বাহ্মদেব্যুর্জীনাং বভেদানাং যোগমান্তরেবাজ্যাদ্দনাদেকং ভক্তমনোহর্যহামধুর্লীলাময়ন্থাৎ স্থাণিকবলং। অত্ন ক্রিপভ্লাবিরিণি নিক্তটে ধর্মধর্মিভাবের্ছিতং নিরাকারং

তথায় পরস্পর মিত্রবৎ বাদ করিতে ছিল, আর দে স্থানে ভগবান অচ্যুতের নিবাদ এই হেছু তথা হইতে ক্রোধ লোভাদি যেন পলামন পরায়ণ হইয়া অদৃশ্য হইয়াছিল। ৫৫॥

সে যাহা হউক, সেই বিপিনে একা। পূর্বের ন্যায় পরত্রক্ষকে গোপবালকের ন্যায় নাট্য ধারণ করিতে দেখিলেন। ফলতঃ অন্তমু অনন্ত এক এবং অগাধবোধ স্বরূপ হইয়াও ভগবান্ সে সময় ভক্ষ বংসান্ সথীনির পুরা পরিতো বিচিয়দেকং সপাণিকৰলং পরমেষ্ঠ্যচক্ট ॥ ৫৬ ॥ দৃষ্ট্যা স্বরেণ নিজধোরণতোহবতীর্য্য পৃথ্যাং বপুঃ কনকদশুমিবাভিপাত্য। স্পুক্ট্যা চতুমুক্টকোটিভিরজিয়ু যুগ্যং নম্বা মুদ্ঞাস্থজলৈরক্বতাভিষেকং॥ ৫৭॥

विधवचामी।

মিত্যাদিঃ অবরঞ্ বংসান্ বিচিশ্বং একঞ্চ স্থীন্ অগাধবোধঞ্ বিচিশ্বং অনস্তঞ্প পরিতো বিচিশ্বং পরঞ্চ শিশুত্বমূৰহং ব্রহ্মচ স্পানি-ক্বলমিতি নাট্যমেবোশ্বহদিত্যর্থ: ॥ ৫৬ ॥

নিজধোরণতঃ স্ববাহনাৎ স্বরেণ বেগেন অবতীর্য্য দণ্ডবন্ধতা চতুর্ণাং মুকুটানাং অত্যৈরজিবু যুগলং স্পৃষ্ট্। মুদশ্রস্থললৈরানন্দাশ্র-রূপেঃ স্বস্থানরভিষেক্ষকরোদিতি ॥ ৫৭ ॥

বৈষ্ণবতোষণী।

জগামহেতি তেষাং জ্ঞাতত্বাং পূরেব বিচিন্নদিত্যর্থ:। অন্যত্তৎব্যাধ্যাবৎ। এবং বৎসরং যাবত্তেনৈব রূপেণ বৎসবালকতয়া তৎপরোক-মবস্থিতি তত্ত গম্যতে। এজে গমনঞ্চ স্বস্থরপপ্রকাশবৈতেন জনকশ্রতদেবগৃহগমনবং। তৎপ্রকাশে কালগমনঞ্চ স্থীনামিব ভ্রতাপি সংক্ষেপেণৈব জাতং কবলাদীনাং তথৈব স্থিতেরিতি জ্ঞেয়ং॥ ৫৬॥ •

কথং নত্ব। ইত্যেতদাহ পৃথ্যানিতি। পাদৰবেদন তেন দেবাভিমানাপগমমপি বোধয়তি আন্যথা নহি দেবা ভূবং স্পৃষ্টীতি ন সিধ্যেৎ কিয়বেদং তঙ্গুরি ভাগ্যমিহ অন্ম ইত্যাদি বক্ষ্যমাণাং কনকেতি তত্বপূব ঈষদ্রজ্পীতবর্ণবাং। চতুর্মুকুটাইগ্রঃ স্পৃষ্ট্য ইতি চতুর্দিকু স্থিতানাং চতুণামপি ক্লতার্থতায়ৈ ক্রমেণ পরিবৃত্ত্যা ভূমো ললাটপাতনাং পশ্চাদানন্দোদ্যেন চুম্বনিবাজ্পিশানাং মুথৈরপি ক্লতবানিতি জ্লেবং। অক্লতাভিবেকমিত্যুপপত্তা। অনেনাশ্রণাং অত্যন্তবাহ্ন্যং বোধ্যতে ॥ ৫৭ ॥

क्रममन्दः ।

লীলত্বমেব নাট্যং তথচ্চমৎকারকারকং তহৎকৃষ্টতয়। বহৎ যদেন বিভ্রৎ তত্ত্রাপ্যপদক্ষ নীক্বতং পরব্রহ্মত্বতাবাং নিজ্জনপ্রেমবশতামরীং কাঞ্চিৎ তদস্তরীশাং লীলামসূত্তবানিত্যাহ বংসানিতি। স্বন্যৎ চীকাদৃষ্টং ॥ ৫৬ । ৫৭ ॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবন্তা।

জ্ঞানমাত্রং যন্ত্র প্রতি প্রদিদ্ধং তদপি বোগমায় কৈব তদ্ ষ্টাঃ প্রতি চিদানন্দময়ানামপি রূপগুণনামলীলাপরিকরধামাদীনামাচ্ছাদনাজ্জানমাত্রদৈর প্রকাশনাং সঙ্গতনিত্যেবমেব মিথোবিজন্ধার্থা অপি শ্রুতমো নিবি রোধমেব সঙ্গমন্বিত্যা ইতি দিক্ তত্র পশুপবংশ-শিশুত্বং নাট্যমেবোদ্ধরত্ব অরুপমিতি ব্যাখ্যানং প্রীভাগবতদ্য মোহিনী দ্বপ্রতিপাদকমেব। নৌমীড্য তে হত্ত্বপুষে ইত্যুত্তরত্র নৌমীত্যুক্ত্বণ প্রস্তৃত্য ভগবতঃ কর্মতে জ্ঞাতে প্রয়োজনাপেকায়ামেবস্থতো, ভগবানেব প্রয়োজনমিতি ব্যাচকাশানাং আমিচরপানামপি নাভিমত মিত্যবদীয়তে। নহ্বাত্তবীভ্তং বস্তু স্থিতি প্রয়োজনী ক্রিয়েতে ইত্যবধেনং ॥ ৫৬ ॥

দৃষ্টে তি। ইদনের নরাক্তি পরং ব্রহ্ম সর্কাম্ণভ্তমিত্যবগমা। ঘরেণ ছরয়া নিজধোরণতঃ স্থবাহনাৎ পৃথ্যাং বপুরভিপাত্যেতি নহি বেবা. ভ্বং স্পৃষ্টীতি নিয়নোল্লভানালু দ্বনোহস্য দেবথাভিমানাপগমো জ্ঞেয়ঃ। চতুর্ণাং স্কুটানামগ্রের জিলু যুগাং স্পৃষ্টে ততুর্দিক স্থিতানাং চতুর্ণামপি মুখানাং বলেন ক্ষ্ণাভিমুখীকরণাং অভিবেকমর্থাদিভি যুগ্মস্যাকরোদিজ্যখায়োথায় ভূমৌ ফ্রন্তপতনে ক্ষ্যাণাং বাহ্লোন প্রোবেগাচ্চরণয়ো নি পাতো জ্ঞেয়ঃ। ক্ষ্যাণাং ভক্তা ছভাবরপছেন পাবিজ্ঞাৎ স্বপদ্ধেরোগঃ॥ ৫৭॥

দ্রব্যের গ্রাস হত্তে করিয়া ইতন্ততঃ বৎস ও বয়স্যগণের অন্বেষণ করিতেছিলেন, রাজন্! যিনি অদ্বিতীয় তাঁহার বৎস অন্বেষণ, যিনি একমাত্র তাঁহার সধা, অগাধবোধরূপির জ্ঞানার্থ অন্বেষণ, অনস্তের ইতন্ততঃ অনুসন্ধান, পরপুরুষের শিশুছ এবং পরত্রক্ষের হত্তে ভোজনীয় কবল, এ সকল নাট্য ব্যক্তীত কিরূপে সম্ভবিতে পারে॥ ৫৬॥

সে যাহা হউক, ত্রন্ধা পরত্রন্ধ বিষ্ণুকে ঐ রূপ অবলোকন করিবামাত্র বেগে আপন বাহন হইতে অনতীর্ণ হইলেন এবং স্বীয় কলেবরকে ক্ষকদণ্ডবং ভূতলে পাতিত করিলেন। তদনন্তর মন্তক চতুন্টয়স্থ চারিটা মুক্টের অ্এভাগ দিয়া চরণহয় স্পর্শ করত প্রণাম করিয়া আনন্দাঞ্চের শোভন সলিলে অভিষেক করিতে লাগিলেন॥ ৫৭॥

উত্থায়োত্থায় কৃষ্ণক চিরক্ত পাদয়ো: পতন্। আতে মহিছং প্রাণদ্ কং আছা আছা পুন: পুন:॥৫৮
শনৈরথোত্থায় বিমৃত্জ্য লোচনে মুকুলমুখীক্য বিনত্তকলর:।

কৃতাঞ্চলিঃ প্রশ্রমবান্ সমাহিতঃ সবেপথু র্গদাদয়ৈলতেলয়া ॥ ৫৯ ॥

॥ *॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহুংস্থাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং দশমক্ষকে ত্রহ্মমো-হাপনোদনং নাম ত্রয়োদশোহধ্যায়ঃ ॥ *॥ ১৩॥ *॥

धीयत्रवामी।

চিরস্য চিরং পাদরোঃ পতন্ আন্তে॥ ৫৮ ॥

সবেপধু: দৃকশা:। অতথ্য গদগদম্বাহত্করণমেতৎ ইলরা বাচা ঐলত অস্তৌৎ ॥ ৫৯॥

॥ * ॥ टेंकि मन्द्रम क्रायामनः ॥ * ॥

देवक्षवरजायगौ।

উত্থারোপার পতন্ পুন: পুনশ্চিরমান্তে আসীৎ লকার ব্যত্যর শ্হান্দস:। সাক্ষাৎ পশ্রত ইবোক্তেরৌপচারিকো বা। তত্ত্র পতনে হেতু ম হিত্বমিতি। উত্থানে হেতুত্ব তচ্ছীরুধ দিদ্দৈক ক্ষেয়:॥ ৫৮॥

শনৈরিতি ভক্তাদ্রেকেণ প্রণামপরিত্যাগাশক্ষে। কিম্বা প্রৈমভরাক্রান্তা। সভাবত এব জাড্যাপন্তেঃ লোচনে বিমুজ্যতি গলদক্রধাররা সম্যুদ্দনালক্ষে:। অষ্টলোচনদ্বেংপি লোচনদ্বােজিঃ শ্রীভগবদভিমুথবর্ত্তাপেক্ষরা। মুকুন্দনিতি মুক্তিদাত্তার্থন্থেপি মুক্তিদাস্বাা ভক্তাবিপি সম্যুক্তার্থনে ব্রথা পঞ্চমে ব্রথাবর্ণবিধানমপর্বর্গন্চ ভবতীত্যারভ্যানম্ভভক্তিযোগলক্ষণ ইতি। উন্ধীক্ষ্য উচ্চৈবিলোক্য পন্চাহিলেবতা নত্রকন্ধরঃ সন্ অপরাধভয়লজ্ঞাদিনা। ইতি শ্রীক্রনোভজিবিশেবেণ বৎসাদি মার্গণ প্রােষ্কাহি ভ্রমণং বিহার স্থিনীভ্তভাহসাবিতি গম্যতে। সমাহিত ইত্যানেন স্বেপথুর্গদাদ্য়েতি প্রেমসম্পন্ধলক্ষণেন চ স্তোক্রম্ব পর্ম সম্যুক্ত্র স্তিং। প্রতি প্রতি প্রতি বিশ্ব ক্রারোচ্চারণং গদগদভাবান্ত্করণেননৈর ॥ ৫৯ ॥

অন্যোভং পূর্বপূর্বং চোত্তরোত্তরমপি ক্ষুটং। সর্বনেতক্ষহাশ্চর্যাং বিলোলয়তি মক্ষনঃ॥ *॥

॥ *.॥ देखि औदेवकवराखायनग्राः "मनमिष्टिश्रकाः व्यटमामनः ॥ *।

ক্রমসন্ধর্ভ:।

পূন: পুনশ্চির্মাত্তে ঐলৎ ঐট্ট॥ ৫৮। ৫৯॥

॥ 📲 । ইতি और नंस्य क्रमनन्दर्भ व्यापनः ॥ 📲

প্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

পত্তরাতে ইতি বছতরপ্রণামাতে আনন্দজাড্যোদয়াৎ বর্ত্তমান প্রয়োগো মুনে তাদানীং তৎসাক্ষাৎকারামূভবাৎ ॥ ৫৮ ॥
লোচনে ইতি বিদ্বং পাণিষ্ক্রেন লোচনব্রস্থৈব যুগপক্মার্জ্জনোপপত্তে:। গদগদয়া গদগদভাববত্যা ইলয়া বাচা ঐলত ঐট্ট
অত্তৌৎ ॥ ৫৯ ॥

॥ • ॥ । ইতি সারার্থনর্শিন্যাং হবিণ্যাং ভক্তচেত্রসাং। অরোদশোহত দশমে সক্তঃ সক্তঃ স্তাং ।॥ • ॥

আর ইতিপূর্ব্বে ভগবানের যে মহিমা অবলোকন করিলেন তাহা পুনঃ ২ স্মরণ করিয়া বারঘার উত্থান পূর্ববে অনেক কণ পর্যান্ত তদীয় পাদপদ্মে পত্তিত হইয়া থাকিলেন । ৫৮॥

তাহার পর ধীরে ২ গাত্রোখান করিয়া লোচনহয় মর্দন করিতে করিতে নতকন্ধর হুইয়া ভগবা-নের প্রতি দৃষ্টি নিক্ষেপ করিলেন এবং বিনীত ও বন্ধাঞ্জলি হুইয়া সমাহিত চিত্তে কাঁপিতে ২ গলগদ-বচনে তব আরম্ভ করিলেন ॥ ৫৯॥

॥ # ॥ देखि मन्द्रम खर्मान्य ॥ # ॥

শীত্রক্ষোবাচ। নৌমীড্য তে হত্ত্রবপুষে তড়িদম্বায় শুশ্লাবতংস পরিপিচ্ছলসমুখায়।

শ্রীধরত্বামী

চতুর্দশেহমুতং দৃষ্ট্ । পূর্বাগন্তক নিশ্চরং ৷ অনীশ: কর্ত্তু মন্তোবীৎ ক্লফং বক্ষা বিমোহিও: ॥ • ॥

স্বৰু তাপরাধেন ভিন্না সকম্পত্তরা ভগবন্মহিমানসনবগাহমানো যথাদৃষ্ট স্বরূপমের কীর্ত্তররাহ নৌনীতি। হে ঈড্য স্বত্ত তে তৃত্যং নৌমি দ্বিতীয়ার্থে চতুর্থী। অথবা। নৌনীত্যুক্ত্বা প্রস্তুত্ত ভগবতঃ কর্মন্তেহজ্ঞাতে প্রয়োজনাপেকারামেবস্থতো ভগবানের প্রয়োল জনমিতি তাদর্থো চতুর্থী। যদা। তে তৃত্যং থামের প্রসাদয়িতুং থামের নৌনীত্যর্থ:। অন্তুবং বপুর্যন্ত ভবৈ । তড়িদম্বং যস্য তবৈ ।

देवक्षवरकावनी।

ত্বং বস্য দ্ধপন্ত জ্ঞাতপরনৈশ্বর্য্যাধুর্যন্তজ্ঞপনেব নিজপরমপ্রধার্থবেন স্থোত্মপ্রক্রমন্তে নৌমীতি। ছে ঈড়া ইতি অমেব স্থাতিবি বােগা ইত্যর্থ:। পরব্রন্ধন স্থাবিল্লাবাদ্য সর্ক্রপাপি ক্লাব্রাপি কিলাবাপি কিলাবাপি কিলাবাপি কিলাবাপ কিলাবাপি কিলাবাপ কিলাব

ক্রমসন্দর্ভ:।

এবং শ্রীমল্পনন্দনচরণারবিন্দমেব প্রমপ্রধার্থতরা নিশ্তিত্য তজ্পমেৰ ক্ষোতু মুপচক্রমে নৌশীতি ॥ ১ ॥

🕮 বিশ্বনাথচক্র বর্ত্তী।

ভক্তিজ্ঞানমহৈশ্ব্যমাধ্ব্যাকো পতন্ বিধিঃ। অস্তৌং প্রীতিবিধে প্রশোভরকোকং চতুর্দ্দে। মম বরবণিগ্ভাবং বরান্য-পরিচিত্তঃ। হসত্ত সন্তো জিছেমি ন স্বাভবিনাদকং। শ্রীমাল কুপদাভোজধ্যানমাত্রৈকসাহসং। বিধিন্তবাদ্ধেং পারং বিঘানতি মনো মম। নিধিলসচিদানক্ষরপমূলভূতং শ্রীগোপেক্সনন্দনং সাক্ষাদমভূষ তবৈবাভ্তভক্তিনিষ্ঠন্তমেব বিধি বর্ণমতি। নৌমীতি। হে ঈভা অধুনৈব দৃষ্টপ্রকাদিন্তব্বপ্রস্থান্তম্বতঃ বাহ্দেবসহস্রাংশিছেন পরম তাবা তে তুভাং নৌনি স্বত্যা ঘামভিপ্রৈমি। পত্যে শেতে ইতিবদেতাং স্বতিং তুভাং দদামীতার্থঃ। যা বা ঘামেব প্রাপ্তং প্রসাদমিত্বং বা ছাং নৌমি। অন্ত তুলাবপুষে ভড়িছদস্বায়েতি ভূতলসন্তাপহারিত্বং ভক্তচাতকজীবনস্থক। গুলা চূড়াবর্ত্তিনী অবতংসঃ পৌলাঃ চূড়াবর্ত্তী ভোতাবর্ত্তী চ। পরিপিছং
উৎক্টবহ্ণ চূড়াপ্রবৃদ্ধি তৈ লাসমুখং যদোত্যসাধারণ লক্ষণবন্তং। বৈক্তীয়ান্ত্যরন্ত্রালকারেভ্যোহপি রন্ধাবনীয় গুলাদীনাম্ৎকর্ষণ্ড।
বন্যা বৃল্যবনীয়া এব প্রস্প্রম্যাঃ প্রজো বদ্যেতি নিপ্রেয়সবনস্থপারিজাভাদীনাং নিকর্ষঃ। কবলাদিভি লাসভিব্রব শ্রীঃ শোভা

চতুর্দশ অধ্যায়ে অন্তুত দর্শনের কারণ নিশ্চয় করিতে না পারায় ক্লক্ষার মোছ এবং তৎকর্তৃক্ শ্রীকৃষ্ণের স্তুতি॥ ॰॥

হে রাজন্! নিজকৃত অপরাধনিমিত ভীতিবশতঃ কম্পিত কলেবর হইয়া ভগবন্ধহিমার পার না পাওয়াতে যথাদৃত রূপমাত্র কীর্ত্তনপূর্ব্বর ত্রেজা কহিলেন, হে ঈডা! (স্তবনীয়) অপনাকে প্রসম করাইবার নিমিত্র, আপনারই তাব করি। প্রভা! আপনার শরীর নব নীর্দের স্থায় স্থামর্ক। বদান বিত্যুৎসদৃশ পীত, গুঞ্জার কর্ণভূষণ এবং ময়্রপুচ্ছের শিরোভূষণে আপনার ক্রেণ অভিগম শেল স্থান গলদেশে বন্মালা ধারণ করিয়াছেন। কবল (গ্রাস) বেত্র, শৃঙ্গ,বেণু, ইড্যাদি

বন্যস্রজে কবলবেত্রবিষাণবেণু-লক্ষজিয়ে মৃত্বপদে পশুপাঙ্গজায় ॥ ১॥ অস্তাপি দেব বপুযোমদমুগ্রহস্ত স্বেজাময়স্ত নতু সূতময়স্ত কোহপি।

शिषत्रवामी।

গুল্লাভিরবতংসৌ কর্ণভূষণে পরিপি**ছকে বর্থপীড়ং তৈ লুসিযুধং ষদ্য তদ্ম। বস্তা: প্রজো** যদ্য তদ্ম। ক্রলাদিভি **লুক্লভিঃ শ্রীঃ শো**ভা যদ্য তদ্ম। মৃদ্ পাদৌ যন্ত তদ্ম পশুপাসন্ধার পশুপদ্য অক্তার নন্দ্যাক্সার ॥ ১ ॥

নতু নৌনাতি প্রতিজ্ঞার কিং স্বরূপাত্বাদ্যাত্রং ক্রিরতে ইত্যত আহ অস্যাপীতি। ভো দেব অস্যাপি স্থলভত্বেন প্রকাশিত-স্থাপি তব বপুষঃ অবতারক্ত মহি মহিমানং অবসিত্ং জ্ঞাত্বং কোহপি ব্রহ্মা অহমপি ন ঈশে ন শক্রোমি। যথা। কন্চিদপি ন ঈশে সমর্থঃ আসীং। স্থলভত্বার বিশেষণছরং। মদস্প্রহস্য মুমাত্বগ্রহো যত্নাং তত্ত্বীদস্প্রহং তস্য কিঞ্চ স্বেচ্ছামন্ত্রস্য স্থীনানাং ভক্তানাং বথা যথেছ্যা বৈষ্ণবভোষণী।

পুজার তত্ত্বং কুমারত্বেন স্বতএব নিতাং তত্ত্বং সমবেতস্বাৎ । ইত্যেতৎ শ্রীবালগোপালরূপং স্বামত প্রাপ্তঃ স্বামেব নৌমীতি পরম-লালসরা প্রাগেব প্রয়োজনমুদ্দিইং ॥ > ॥

অস্থাপীতি তৈ ব্যাখ্যাতং। তত্ৰ নৰিত্যাদ্যম্ভে উৎকৰ্ষবৰ্ণনমেব হি ছতি ন'মেন্ডি হেত্রধ্যাহার্যঃ। তব বপুৰ ইতি চত্থ-চর্ণাদ্ব্রাপি তবেতি যোজনরা সাধিতং। তব বছপুৰ: কলিদবতারস্তস্তেত্যর্থ:। কীদৃশস্তাপি তস্য তথাই অস্যাপীতি। জগতি স্থলভছন প্রকাশিত্তবাং ত্রেদস্থানির্দেশং প্রাপ্তস্তেত্যর্থ:। মদস্প্রহস্তেতি মদীয়স্ট্রপালকদাদিতি ভাব:। তদেত্রস্তেত্ নমু ভূতময়-সোতি তবর্পপঞ্চমবাদিভাগমর এব পাঠ:। নতু তং পঞ্চমপ্রথমাদিভাগময়:। নতু বা তংপ্রথমপঞ্চমাদিভাগমর:। উত্তরব্যাখ্যায়াং তয়ে। ন'তু তয়োরস্পর্শাৎ তম্মান্তর প্রথমব্যাখ্যারাং নম্বিতি ব্যাখ্যাতং তংখলু স্থকারস্যৈব তুকারার্থত্যা, শীকারাজ্ব-জেয়ং। নেশে মহিত্বসিত্সমান্ত প্রার্দ্ধ বাজনরা বা অন্ত মুস্ত বিতর্কার্থো জ্বেয়ং। বিতীরার্থে নমু নিশ্চরার্থো জ্বেয়ং। নৰিতি তবর্গপঞ্চমান্তপ্রতি টীকারাং মূলেচ প্রায়ং সর্ব্বিত দৃশ্রতে। তম্মাদ্থবেত্যস্থ পাঠান্তর ইত্যেবার্থো জ্বেয়ং। সাক্ষান্তবেতি স্বয়ং ভগবতস্তবেত্যথং। কেবলস্থেত্যবেকারব্যাখ্যা তন্ত্রদবতারান্তীত্য বিরাল্যান্সম্ভিত্যর্থ:। গুণাতীতস্তেতি তত্রচ পুরুষ বিদেবী বর্ষত্

ক্রমসন্দর্ভ:।

পূর্বনহিদং দৃষ্টা বিমৃঢ়ক্তংস্কৃতিমুপেকমাণ ইব সসন্তমমাহ অস্যেতি ॥ ২ ॥

ঐবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

যদ্যেতি গোপবালোচিতাচরণদৈয়ৰ তদীয় সর্কাচরণেভাঃ শৈষ্ঠাং। সৃদ্ অতিস্কুমারে পদৌ বদ্যেতি তাভ্যাং বনত্রমণদর্শিনাং কারণায়ঞ্যমুক্তেশিংপাদক্ষং পশুপাদকারেতি শ্রীবস্থদেবাদিভাোহণি শ্রীমন্ত্রদ্যা সৌভাগ্যাধিক্যং ব্যক্তিও॥১॥

নমু তো ব্ৰহ্মণ্ডং জগবৈশধ্যাধিপতিঃ অহন্ত বন্যগোপালপুত্ৰছং পুরাতনঃ অহন্ত বালত্বং বেদার্থতাৎপর্যবিজ্ঞগাৎ প্রমবিধান্
সদাচারপরারণঃ অহন্ত বংসচারকর্বাং জ্ঞানলুনঃ স্মার্ভাচারগন্ধমপাজানংতিষ্ঠন, প্রামারপ্যোদনকবলং ভূঞানত্বং মারী প্রমন্থী সাক্ষাৎ
প্রমেশ্বর এব অহন্ত প্রায়ামোহিতো মনোহংখেন বনং পর্যাটং তব জ্ববং কর্ত্বং নাহণিনীতি বজোক্তিমাল্য্য সত্যমজ্ঞানামহাপরাধ্য মহমক্রম্বিতি ব্যঞ্জয়ন্নাহ অস্যাতি। হে দেব অস্যাপি বালচেষ্টামরস্য প্রকৃতিমৌগ্ধস্য তব বপুরো মহিনানম্বসির্তুং জাত্বং নেশে ন শক্রোমি
কিম্ত্ত কৈশোরলীল্যা প্রক্টরিব্যমাণ্যহাচাত্র্বাস্য বপুরোহপি মহি জাত্বং নেশে কিম্ত তব আত্মনো মনসো বা হুথাহুভূতি ত্বস্যা
নির্ক্তিশ্বস্থানশ্বমরোহপি বংসচারণাদিনা বাদৃশং হুথমন্থ্রত্বিস ক্রেন্যতার্থঃ। তথা বংসহচরাণামপি মনংহুথাহুভূতে ম'হি জাত্বং নেশে
কিম্ত সাক্ষান্তবৈব অন্তরেণ প্রত্যান্ধত্যান্ত বশীক্ষতেনাপি মনসা কিম্ভান্থ্রেণ। তথা কো বন্ধা হুট্টী পাদপদ্য অতিশায় মৃত্ব,
চিত্ত ভারা আপ্নার অতিশায় শোভা ভূইন্নাছে। প্রভো! আপনার তুইটী পাদপদ্য অতিশায় মৃত্ব,

চিহু বারা আপনার অতিশয় শোভা **হইয়াছে।** এভো! আপনার ছইটা পাদপদা অতিশয় মৃত্যু আপনি গোপরাজ-নন্দের অঙ্গন্ধ । ১ ॥

ভগবন্! আমি আপনার তব করিতে প্রতিজ্ঞা করিয়া যে এ রূপ স্বরূপাসুবাদ করিতেছি ইহার কারণ আছে। হে দেব! স্থলভত্বরূপে প্রকাশিত আপনার এই যে বপুঃ অর্থাৎ অবতার, ইহারও মহিমা-নিরুদ্ধ মনের দ্বারাওক্ষবগত হইতে, আমি সমর্থ ইইলাম না কিছা অন্যেও 'জানিতে পারিবে না।' ভগবন্! আমি আপনার এই অবতারকে স্থলভ বলিতেছি কেন, ইহা হইতে আমার মহৎ অমু-

নেশে মহি ত্বসিতুং মনসাস্তরেণ সাক্ষাত্তবৈব কি**র্ভাক্তথা**তুভূতে: ॥ ২ ॥

अध्यक्षामी।

তথা তথা ভবত:। তহি কিমিতি জাতৃং ন শকাতে অত আহ নতু ভূতমন্ত্রস্য ডদ্ধসন্তাত্মকস্য যদা অগৈয়বং তদা কথং পুনঃ সাক্ষান্তবৈব কেবলস্য আত্মহুথামূভূতেরের অস্থামূভবমাত্রস্য অবতারিশাে গুণাতীতস্য মহিমানং আত্তরেণাপি নিক্তদ্ধনাপি মনসা কে। জ্ঞাতুং সমর্থো ভবেং। অথবা ভূতমন্ত্রস্যাপি বিরটি ক্রণস্য তব ছিন্নমাস্য বপুবঃ মহি অবসিতুং কোহপি নেশে তদা সাক্ষান্তবৈবাসাধারণস্য নিন্নমানিমন্ত্রভদরহিত্ব্য উক্ত লক্ষণস্যাস্য মহি মহিমানং অবসিতুং কোহপি নেশে ইতি কিমুত বক্তব্যমিত্যর্থঃ॥ ২॥

বৈষ্ণবতোষণী।

বৈশুলা তত্তদান্ণ পরিছিয়াধিকারভেতার্থঃ। বহুথার্ছ্ভিমাত্রম্বা তত্তদবতারিয়ং মহিমবর্ধ। এত স্বানান্দভাভানি ভ্তানি নাত্রামূপজীবন্ত্রীতি কো ছেরাভাৎ কঃ প্রাণাদ্যদেষ আকাশ আনন্দোন ভাদিতি। পরাভ শক্তি বিবিধর ক্রয়তে স্বাভাবিকী জানবল্
ক্রিয়া চেতি প্রতিপ্রানাণ্ডান গম্যতে নচ নির্কিশেষত্র্য ভেদাবির্জাবিশেষভ ব্রহ্মণ এব হজের তাধিক্যমত্র প্রতিপাদ্যতে। তথাপি ভূমন্
নহিমা গুণভা তে ইত্যাহ্য ব্রবাক্যন্ত্রের স্বান্দের তদাধিক্যং ব্যাধ্যাভাতে। অথবেতি অত্র বিরাজ্ রূপস্যাপি হজের ছোজেখং স্বয়ন্ত
ভগরতি তাম্মন্ প্রমাক্ষর প্রতিপাদয়তি মা আমিরের পক্ষে তহুত্তমন্ত্রেতি চিংক্রপাঠঃ সঙ্গছতে। তহুভিঃ ক্রেরাক্রন্তন্তর্পর্যান্তর্বান্তর্বানিত হি তদ্বাধ্যা। পূর্বমিন্ পক্ষেত্র তহু ক্র্মাচিন্তাং বহুতং গুদ্ধ স্বান্ধকং ভগরত্ত্বং তৎ স্বর্ধনাত্রত্ত্বং। অস্য মহতো
ভূতভা ইতি প্রতে:। লোকনাথো মহন্ত্রনিতি সহল্রনামন্তোত্রাচ্চ। নিয়ন্ত্রনিয়ন্যভেদরহিতভাতি বিরাজ্রপত স্বির্মান্তেন্
ত্যক্রমান্ত ভাকতান। নচ স কভাচিনিয়ন্য ইতি বিবক্ষা। উক্তলকণভোতি অত্রব্র্রিত্যাদি বিশেষণৈ দর্শিতভাত্যাং।
অথ স্ব্যাধ্যা। নর মনৈতাদৃশং স্বর্ধনমন্ত্র কিং ভৌষীত্যাশন্ধ্য সমন্ত্রমং তত্র নিল্লাসামর্থ্যমহ অভাপীতি অভ্য স্কুগতো যদেব বপ্রাধি
দৈবিক্রপং নারায়ণাখ্যং তব বপ্রধুনা দর্শিতের চতুত্রজরণেছেক্মপি বপু স্বভাপীতি যোজ্যং। নারায়ণাহন্ত্রং নরভ্রনায়নাদিতি
হি বন্ধতে। বপুষো বিশেষণানি সদম্প্তিহ্নোত্যাদীনি। সাক্ষান্তবৈবেতি পূর্কবং। আত্রনা স্বয়মেব কন্ত্রা স্থামূভ্তি র্যায়।
অননাবেদ্যানন্দ্রেত্তি তদ্দন্নিবহিছ স্বাহিমা জ্ঞাত ইতি ভাবং॥ ২॥

ঐ বিশ্বনাথচক্রবন্তী।

পঞ্চকং মমাপি জ্ঞানসন্থাবনায়াং ন শাস্ত্রাভাসতপোরোগাদিকং হেতুং কিন্ত ক্লপাকটাক্ষকণ এবেতি ক্রবন্বপু বি শিন্তি। ম্যাপরাধিন্যপান্ত্রহো নহৈ খ্র্যদেশনোথমোহোত্তরকাল দর্শনদানাদ্মনিতা যদ্য তদ্য। অহগ্রহে হেতুং। সেছোময়দ্য স্থীয়ানাং প্রেমভক্তিনতাং
বথা বথা বা যা ইচ্ছা-দিদৃক্ষা-সিদেবিষাদি স্তন্ময়দ্য ভক্তবংসলন্তাং তন্তংসন্পাদকদ্যেভার্থঃ। অতো ম্যাপি ভক্তাভাসবন্ধাদিবছে প্রাকুগ্রহলেশপ্রাপ্তিকার ইতি ভাবং। নির্ছান্ত্রহেই নরবপূর্ধ্বাবিভাত আহ নতু ভ্রুমন্ত্রম্য ভ্রুমন্ত্রং হি বপূর্জ্বং নতু চিন্মন্তং। অভএব
বক্ষদংহিতায়ান্তং। অসানি যদ্য দকলেন্ত্রির্ত্তিমন্তীতি এভচ্চ সর্ক্রেম্বির্ত্তং তদেত্র্য গোবিন্দভাস্থানাং বথাকালং আন্যান্ অবতারান্ প্রভাব তদসানাং বথাকালম্যান প্রভাব নতু সাক্ষান্তং প্রাই। সতু স্বচক্র্ত্যামের পশ্যতি স্বন্ধ্রোভাগ্রেম্ব শ্ণোতি স্বমননৈর বিচাররতি। নতু স্বপাণিভামিপি পশ্যতি ইত্যাদি বিবেচনীরং। বথবা অভ্যাপি দেববপুরো দেবাকার্য্য অধুনৈর তরা দর্শিত্যা
বাহ্ণদেব্দ্র্তে ম দ্রুগ্রহ্য চতুংশ্লোকী ভাগবতোপদেই তেন ম্যান্ত্রের তঃ স্বীরভাংশিন স্তবেচ্ছাগংপাদক্ত ত্বিদ্যাপাদকভেহপি
ন ব্যমিব ভৌতিকা ইত্যাহ নতু ভূত্যমন্ত্র মহিমানং কো ব্রন্ধাি স্বন্ধ্রমানঃ বেদ্যন্ত্রং ক্রিভাগবতকাধ্যাপিতোপ্রংক্রাতৃং
নেশে কিন্ত্র স্ক্রান্ত্রির নরবপুরঃ সর্ক্ষারণের স্বন্ধ্র ভগবতঃ কথভ্ত্যা আন্ত্রন স্ক্রান্ত্রের দ্বিন্ত্রাস্থান্ত্রের স্ক্রান্ত্রের স্ক্রান্ত্রির ক্রব্রুর স্ক্রান্ত্রির ক্রেন্ত্র স্ক্রান্ত্রির ক্রেন্ত্র স্ক্রান্ত্রির ব্রুষ্ট্রের স্ক্রার্লির স্বন্ধ্র ভগবতঃ কথভ্ত্যা আন্তরঃ স্বান্ত্রির ব্রুষ্ট্রান্ত্রির অন্তর্গ্র স্ক্রান্ত্রির ত্র্যা স্বান্ত্রির ব্রুষ্ট্রির স্ক্রান্ত্রির ব্রুষ্ট্র স্ক্রান্ত্রির স্বান্ত্রাস্থার্ন স্বন্ধ্র জন্ত্র স্বন্ত্রির ব্রুষ্ট্রির স্বিন্ত্র স্বন্ত্রির ব্রুষ্ট্রান্ত্রির ক্রির্ব্য স্ক্রান্ত্র স্বন্ত্রির ক্রেন্ত্রির ক্রির্ব্য স্বন্ত্র স্ক্রান্ত্র স্বন্ধ্র স্বন্ত্রির ব্রুষ্ট্র স্বান্ত্রান্ত্র স্বন্ত্র স্বন্ত্র স্বন্ত্র ব্রুষ্ট্র ব্রুষ্ট্র স্বন্ত্র স্বন্ত্র স্বন্ত্র ক্রির ব্রুষ্ট্র স্বির্ব্য স্বন্ত্র স্বন্ত্র স্বন্ত্র বিল্বান্ত্র স্বন্ত্র স্বন্ধ্র স্বন্ত্র স্বান্ত্র স্বন্ত্র স্বন্ধ স্বন্ত্র স্বন্ধ্র স্বান্ত্র ব্রুষ্ট্র স্বন্ত্র স্বন্ত্র স্বন্ধ স্বন্তির স্বন্ত স্বন্ধ স্থা স্বন্ত্র স্বন্ত ক্রেন্ত্র স্বন্ধ স্বন্ত্র স্বন্ত্র স্বন্ত্র স্বন

গ্রহ লাভ হইল, আর এইরূপ ভক্তজনের যথা ২ ইচ্ছা, ভরজেপ হয়, কিন্তু হে দেব! অন্যান্য মূর্তির নায় ইহা ভ্তময় নহে, এ রূপ অচিন্তা ও শুদ্ধদর্ময়। প্রভা! যথন এই রূপেরই মহিমা জানা যায় না তথন কেবল আত্মহুখামুভবমাত্রশ্বরূপ গুণাতীত অবতারী যে আপনি, আপনার প্রকৃত মহিমা অবগত হইতে কোন্ ব্যক্তি সমর্থ হইবে । (অপর মূলপ্লোকে "নমু ভূতময়দা" এই পাঠ সঙ্গত হইলে তাহার অর্থ এই) যখন ভূতময় বিরাট্ রূপি আপনার অর্থাৎ আপনার নিযম্য বিরাট্ বপুর মহিমা অবগত হইতে কেহ সমর্থ হয় না তথন অধাধারণ নিয়ম্য ও নিয়ন্ত ভেদরহিত উচ্চা বর্গ আপনার মহিমা জানিতে কে সমর্থ হয় না তথন অধাধারণ নিয়ম্য ও নিয়ন্ত ভিদ্যার্গ প্রাপনার মহিমা জানিতে কে সমর্থ হুইবে । ২ ॥

জ্ঞানে প্রয়াসমূদপাস্য নমস্ত**এব জীবস্তি সমূখরিতাং ভবদীয়বার্ত্তাং।** স্থানস্থিতাঃ শ্রুতিগতাং ত**মুবান্ধনোভি র্বে প্রায়শোহজ্ঞিতজ্ঞিতোহপ্যসি তৈক্ত্রিলো**ক্যাং॥ ০॥ শ্রেয়ংস্তিং ভক্তিমূদস্য তে বিভো, ক্লিশ্যস্তি যে কেবলবোধলক্ষয়ে।

औशत्रश्रामी।

তহি কথং অজ্ঞা: সংসারং তরেয়ুরত আছ জ্ঞান ইতি। উদপাস্য ঈষদপ্যক্তবা সন্তিমুখরিতাং অতএব নিত্যং প্রকটিতাং ভবদীয়-বার্ত্তাং স্বস্থান এব স্থিতাঃ তৎসদ্ধিষিমাত্রেণ স্থতএব শ্রুতিগতাং শ্রুবণপ্রাপ্তাং তত্ত্বাদ্মনোভি: নমস্তঃ সংক্র্বস্তো যে জীবস্তি কেবলং যদ্যপি নামুৎ ক্র্বস্তি তৈঃ প্রায়শ দ্বিলোক্যাং অতৈ রন্ধিতোহপি স্থং জ্বিতঃ প্রাপ্তাহসীতি কিং জ্ঞানশ্রমেণেত্যুর্থ: ॥ ৩ ॥

ভক্তিং বিনা জ্ঞানং নৈব সিধ্যেদিত্যাহ শ্রেষীঃ স্তিমিতি। শ্রেষ্ঠাং অভ্যুদ্যাপ্রর্গলক্ষণানাং স্থতিঃ শরণং যশুাং সরস ইবু নিঝ'-বৈষ্ণবতোষণী।

অতএব ভক্তান্তদৰেষণশ্রমং পরিত্যক্তা ভক্তিবিশেষরপতয়া অদীয়র্মপঞ্চলীলাবার্ত্তামেব শৃণুন্তি তেন বশীকুর্বন্তি চ তাদৃশ্নপি বামিত্যাহ কানে ইতি। জ্ঞানে বদীয়য়র্মপৈর্যমহিমবিচারে। স্থানে স্তাং নিবাস এবাব্যপ্রতয়া স্থিতাঃ নতু তীর্থপ্যটনাদি রেশান্ কুর্বন্তঃ তথাদিভিয়্ম সং কুর্বন্তঃ তত্র তথা সৎকারঃ শ্রবণসময়েহপ্রলিবদ্ধনাদিঃ বাচাস্থমোদনাদিঃ মনসা চাল্ডিক্যাদিঃ। সন্মুথ্নিতাং সন্ধতাকৈ সর্বেজ্ঞির ক্ষোভপরিহারাদ্যর্থং প্রায়ো মৌনশীলা অপি মুধ্রিতা মুধ্রীকৃতা যয়া তাং আহিতাম্যাদিছিতি নিঠায়াঃ পরনিপাতোহি ভি ভবদীয়ানাং শ্রীমন্ত করাজাদীনাং বা বার্তাঃ অস্তরেঃ। যয়া ভবদীয়বার্তাঃ ক্ষীবন্তি উপদীবন্তি তদেক ক্ষীবন্বেন সন্ধ্যঃ শ্রম্থ স্থান্তর তার্থঃ। তথাদিভি ভবচেইয়া অন্ধিত অপ্রাপ্যা স্থ প্রকাশতেনেক্রিয়াদ্যগোচরত্বাং। যয়া ভ্রাদিভিঃ কৃত্বা তিরপি জিতোহি নি বশীক্ততাহি তিওছ দলা ক্র্মীত্র্যঃ যয়া ভ্রাদিভিঃরব সাক্ষাৎ প্রাপ্তো ভবসি অত্র তথা প্রাপ্তিঃ বহস্তাদিনা শ্রীপাদাক্ষম্পর্শনাদিঃ। বাচা আহ্বানাদিনা সমাগ্রমাদিঃ। মনসা চ সংকল্পেনির দর্শনাদিঃ। যয়া সহার্থে তৃতীয়া ভ্রাদিভিঃ সহিতোহন্তিও তব তথাদীভপি তৈর্বশীক্তানি ইত্যর্থঃ। তত্র ভনোক্ষশীকরণং তত্তক্তপার্শ্বে সদাবহিত্যাদিঃ বাচন্তলগুণকপনাদিঃ মনসন্চ তচিন্তনাদিঃ। অভৎ সমানং॥ ৩॥

নত্ব তবিধাং ভক্তিং ত্যক্ত্ৰ মন্মহিমপূৰ্ব্যবদানো দৰ্শনায় তহ্চিতশ্ৰৰণমননাদিভি: কেচিক্স্জানাভ্যাদিনোহপি দৃখ্যন্ত তত্ৰাহ শ্ৰেয়

ক্রমসন্দর্ভ:।

যত্মাজ্ জ্ঞান ইতি॥ ৩॥

শ্রীবিশনাপচক্রবর্তী।

নমু তহি তিমেব বিদিয়া অতিগৃত্যুমেতীতি শ্রুতেরজ্ঞানালোকাঃ কথং সংসারং তরেযুক্তরাহ জ্ঞান ইতি। উদপাস্য ঈষদপ্যক্তরা সন্থ্যরিতাং সন্থে মৌনশালিনোহপি স্বমুধ্বেগি মুধ্রিতা মুধ্রীকৃতা ষরা তাং। ভবদীয়ানাং বা বার্তাঃ স্থানে সতাং নিবাস এব স্থিতাঃ নতু তীর্থাক্সপাটন্তঃ সন্তঃ শ্রুতিগতাং তৎসন্নিধিমাত্রেণ স্বতএব শ্রুতিগতাং শ্রুবণপ্রাপ্তাঃ তছুবান্মনোভিরারক্ত পরিসমাপ্তাঃ নম্মুঃ। তত্র তথা পাণিভ্যাং সহ শীক্ষা ভূমি স্পর্নেন। বাচা কৃষ্ণক্রথাইয় তদাস্বাদকেন্ডো বৈষ্ণবেভ্যন্ত নমস্ত ইতি বচনেন মনসা শ্রুতাঃ কথায়াঃ অবধারিকরা বৃদ্ধা প্রণমন্ত্রে যে জীবন্তি কেবলং যালপি নাহাৎ কুর্বন্তি তদপি তৈঃ প্রায়শন্তিলোক্সামতৈরন্ধিতোহপি বং জিতোহপি বশীক্ততোহিপি ভবস। তর্তা ভবস্যতঃ সংসারতরণং কথাশ্রোতৃণাং কিং চিত্রমিতি ভাবঃ। অতত্বৎ কথৈক্যেশ জ্ঞানমেব তল্পজানং তেন সংসারমপি তরগ্রীতি শ্রুত্যপো জ্ঞের ইতি ভাবঃ॥ ৩॥

শ্রবণকীর্ত্তনাদিনামেকতর্বাপি ভক্তা কতার্থীভবন্তি। যহকেং নৃসিংহপ্রাণে। পত্রের্ প্রেপ্র্ ফলের্ তোমেনকীতলভাের্ সদৈব

পরস্তু হে ত্রহ্মন্! আপনার মহিনা এবছিধ হুজেয় হইদেও সংসার নিস্তারের অসম্ভাবনা দেখি না, যে সকল ব্যক্তি জ্ঞান বিষয়ে অত্যন্নও প্রয়াস না করিয়া স্থানেই অবস্থিতি করত সাধুজন কর্তৃক নিত্য প্রকৃতিত তদীয় বার্তা যাহা সাধুজনের সন্ধিধনাত্তে আপনাহইতে প্রতিপথে প্রবিষ্ট হয়, কায়কনোখাক্যে সংকার পূর্বক অবলম্বন করিয়া থাকে আহারা যদিও অন্য কোন কর্ম না করক, তথাচ ত্রিলোকীমধ্যে অন্যান্য সকলের অজিত হইয়াও আপনি তাহাদের কর্তৃক প্রায় জিত হয়েন, অর্থাৎ আপনি অন্যের মুদ্ধান্সা হইলেও তাহারা আপনাকে প্রাপ্ত হইতে পারে ॥ ৩ ॥ • • •

ক্তিত্ত যে স্কল প্রভাগ্য লোক পরম জোমের কর্ম অরূপ ছাক্তি পরিত্যাগ করিয়া কেবল বোধ

তেষামসৌ ক্লেশন এব শিষ্যতে নানাদ্যথা স্থুলতুষাবদাতিনাং ॥ ৪ ॥ । পুরেছ ভূমন্ বহবোহপি যোগিনস্তদর্পিতেহা নিজকর্মালক্কয়া।

धिभव्रयामी।

বাণাং তাং তে তব ভক্তি উদন্য তাক্ া শ্রেষণাং মার্গস্তানিতি বা তেবাং ক্লেশন এব শিষ্যতে। অয়ং ভাব:। যথা অরপ্রমাণং ধাসং পরিত্যকা অন্তঃকণ্ঠীনান্ স্থূলধাস্তাভাদাং অধান্যে অপশ্বতি তেবাং ন কিঞিং ফলং। এবং ভক্তিং তুচ্ছীক্বত্য যে কেবলবোধনাভাগ প্রযত্তে তেবামপীতি ॥ ৪ ॥

ভকৈত্ৰ জ্ঞানং ৰান্তথেতি অৱ সৰাচারং প্রনাণয়তি প্রেতি। হে ভ্ৰন্ ইহলোকে প্রাং যোগিনোহিপি সন্তঃ যোগৈ জ্ঞানমপ্রাপ্য

বৈষ্ণবতোবণী।

ইতি শ্রেদাং দর্কেবাদেব স্থতিনিতি অবাস্তবকলবেন স্বত্রব জ্ঞানমণি ভবিতৈব ইতি স্টিতং। তথাভ্তামণি মধুররপাদি বার্ত্তা নিয়াং ভক্তিং উদস্থ উচৈরবহেলয়া দ্বে কিপু হিতান্ত মনাদ্ভাতার্থ:। কেবলস্থ তিবিধ্নভক্তিশ্রতরা স্বিজ্ঞতামাত্রতাংপর্যান্য বোধস্থ লক্ষ্যে। তেবাং ক্লেশল এব শিব্যতে। তেবু ভবান্থ্রহাম্পরাদিতি ভাবং। ক্লিশ্রন্ত তহাহত প্রনাদ্ধিতি ভাবং। ক্লিশ্রন্ত বোধস্য লক্ষ্যে তেবাং ক্লেশল এব শিব্যতে তেবু ভবান্থ্রহাম্পরাদিতি ভাবং। ক্লিশ্রন্ত ত্বিধভক্তিশ্রতয় স্বিজ্ঞতামাত্রহাংশ্রাম্পরাদিতি ভাবং। ক্লিশ্রন্ত তহাহত প্রবাদনান্যবিদ্ধিত স্থাত্র বিষয়ে ক্রিক্তি। এবকারেণ চিত্তভ্যাদিকং কলঞ্চন নিরন্তঃ। নত্র বোগান্তাবাদিক্রনণ সিদ্ধিলাভন্ত ভবিতা ভত্তাহ নাল্যদিতি। স্ক্রামান্ত বিদ্ধান্য ক্রিকাং মূলং ভচ্চরণার্জননিতি ভাবেন। অত্যাহ বন্ধান্য বিজ্ঞান্ত ভীভগবতা। ব্যাং ন মে পাবনমন্স কর্ম্ম স্থিত্যুত্তবপ্রাধনিবোধস্য। লীলাবতারে ক্লিভ কর্ম বা স্যাং বন্ধাং গিরং তাং বিভ্যান্ন ধীর ইতি। ভ্রোপ্র্কেণ দৃষ্টান্তঃ। বণা, ভ্রান্ত্র্যাধিকার বিভাবিত্তি ভ্রান্ত্রান্তি। ত্রাম্পাতি চুর্ণিত্রানাং নাশং কেবলং হস্তাদিবেদনৈব চ স্যাং ভ্রান্ত্র্যাং। বিভোবে প্রতে ইত্যবশ্রভ্যান্ত্রীয়ভোকা। ৪ ॥

শ্রেষ:স্তিষ্ক ন কেবলং বাল্বাত্রেণ কিন্ত পূর্কং বহুশোহমুভূতং এবাজীত্যাহ পুরেতি। তৈব্যঞ্জিতমেব তত্ত লব্ধরা। ধর্ম: স্বস্থৃতিতঃ প্ংসাং বিষক্ষেনকথাত্র যা। নিশংপাদয়েদ্দদি রতিং শ্রম এব হি কেবলমিতি জায়েন কথাক্ষচিত্রপরা ভংসমীপং প্রাপিতরা

क्रशमनर्छः।

নমু কেচিম্বক্তিনপি পরিত্যক্র্য জ্ঞানে প্রযত্নানা দৃষ্ঠান্তে তত্রাহ শ্রের:স্তিমিতি ॥ ৪ ॥

কিঞ্চ পুরে হেতি। নিজকর্মণন্ধন কথারুচিরপকথোপনীতরা ক্রচিরপরা আত্মত্ত্বমারত্য শ্রীভগবন্তব্দর্গতমন্ত্র তে তব শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

সংস্। ভক্তা স্থলভ্যে প্রাণে মুকৈ কিমর্থং ক্রিয়তে প্রয়ত তাদি বে তাং পরিহায় জ্ঞানে প্রান্ত ছেবাং ভ্ংথনেব ফলতীতাহি শ্রেয়ামৃত্বাদ্রাপর্য লক্ষণানাং স্তিঃ সরণং যস্যাং সরস ইব নির্মানাং তাং তব ভক্তিং উদ্দেষ্তি শ্রীশামিচরণানাং ব্যাধ্যা শ্রেয়াংশি জ্ঞানকর্মাদি নানাসাধন সাধ্যানি ফলানি যদৈর স্থাতাং ভক্তিং তাঙ্কে তার্থাঃ। তেবাং জ্লো বাধাঃ ক্লেশলঃ ক্লেশ লাতি দলাতীত সং লিবাতে পর্যাবসিতো ভবতি। তর দৃষ্ঠাতঃ। স্ত্রাব্বাতিনাং জ্লেশনাং তথুলং পরিত্রে বৃত্ত ক্লেশনাঃ ব্যাধানীয় প্রত্রেমাণং স্ত্রস্থাং সঞ্জ্তা ত্রাাদ্ধানা ক্লেশনাং ব্যাদি স্পৃত্ত ত্রাাদ্ধান্ধ ক্রিয়ালীয় প্রত্রেমাণং স্ত্রস্থাং সঞ্জ্তা ত্রাাদ্ধান্ধ ক্রিয়ালীয় প্রত্রেমাণং স্ত্রস্থাং সঞ্জ্তা ত্রাাদ্ধান্ধ ক্রিয়ালীয় প্রত্রেমাণং স্ত্রস্থাং সঞ্জ্তা ত্রাাদ্ধান্ধ ক্রিয়ালীয় প্রতিরেদনামান্ত্রকার্থানঃ ॥ ৪ ॥

এবং শোক্ষরেনায়য়বাতিরেকাজ্যাং ভগবংপ্রাপ্তে ভক্তিমেব ছিরীকৃত্য ভত্র সদাচারং প্রমাণয়তি পুরেতি। হে ভূমন্ প্রতাে ইছ
জগতি নােগিনাে ভক্তিযােগবন্তঃ। এবং তবােরার্শিতা ঈহা চেষ্টা বৈষত্তগর্থমেব সর্প্রেরিরব্যাপারং কুর্পাণা ইতার্থঃ। ভক্তিবােগলাভার্থ ক্রেশ করে তাহাদিগের ভ্যাবৃদাতি লােকদিগের ন্যায় ক্রেশই অবশিষ্ট থাকে অর্থাৎ যেমন অল্লপ্রমাণ ধান্য পরিত্যাগ করিয়া অন্তরে কণমাত্র হীন স্কুল ত্য যাহা ধান্যবং প্রকাশ পায়, তাহা লইয়া
অবঘাত করিলে কোন ফল লক্ত্র না, তেমনি ভক্তিকে তুচ্ছ করিয়া কেবল বােধলাভার্থ যত্নকারিদের কিঞ্জিয়াত্র ফল লাভ হয় না, ক্রেশমাত্র পর্যাবসান হইয়া থাকে ॥ ৪ য়

হে ভূমনু ! * ইহলোকে পূর্বকালে বহু ২ যোগী হইয়াও বোগদারা জ্ঞানপ্রাপ্ত না ছওয়াতে তোমার প্রতি লৌকিক চেফা সকলও সমর্পণ করিয়াছিলেন, পরে ভোদাতে নিজ কর্মার্পণে লব্ধ এবং বিরুধ্য ভক্তৈয়ব কথোপনীতয়া প্রপেদিরেইক্সোইচ্যুত তে গতিং পরাং ॥ ৫॥ তথাপি ভূমন্ মহিমা গুণদ্য তে বিবোদ্ধ মহ ত্যমলাস্তরাত্মভিঃ।

शिधतत्रामी।

পশ্চাৎ ছদৰ্পিতেহাঃ দ্বি অৰ্পিতা লৌকিক্যপি ঈহা চেষ্টা ধৈঃ নিজকৰ্মণন্ধা দ্বদৰ্পিতে নিজা ক্ৰান্ত ল'ৰায়া দ্বদৰ্পিতেহাচ নিজানি কৰ্মাণিচ তৈল'ৰ্বেয়েত্যকং পদং বা। কথোপনীত্যা কথয়া ত্বংসমীপং প্ৰাপিত্যা ভতৈক্যব বিৰ্ধ্য আত্মানং জ্ঞাত্বা আঞ্চঃ স্থাপন তব প্ৰাং গতিং প্ৰাপ্তাঃ ॥ ৫ ॥

এবং তাবৎ সগুণনিপুণিষ্ট্রোক্সভয়ে। রপি জ্ঞানং ছ্র্যটনেবেতি ত্বংকথা প্রবেশেবার ত্বং প্রাপ্তিন ন্যথেত্যক্তং ইদানীং মহাভয়ো রবিশেবেণ ছজে ব্রম্কং তথাপি পুণাতীতস্য তব জ্ঞানং কথিকং ভবেৎ নতু সপ্তাপ্য তব অচিস্তানস্কপ্তাদিতি ভৌতি শ্লোক্ত্রেন তথা পীতি। হে ভূমন্ অপরিচ্ছিন্ন অপ্তণস্য তে মহিমা অমলাস্তরায়ভিঃ প্রভ্যাক্তেক্তিরৈ বিবিদ্ধং বোধগোচরীভবিত্মহতি যোগ্যা ভবতি অথবা বিবোদ্ধং জ্ঞাত্মহতি অর্হ্যতে শক্যত ইত্যর্থঃ। যথা। মহিমেতি মহিমানং কশ্চি দিবোদ্ধ্যু তীত্যর্থঃ। কথং স্বাশ্ব

दिक्षवरकावनी।

সতাং প্রদেশাদিতাদে। তজ্জোষণাদাধপবর্গবন্ধনি শ্রদ্ধা রতি রিত্যন্ত্রপারেণ কথনীয়ক্ষচিরপন্না আআমানং গুণরমাঝানং আং বিজ্ঞান্ন ভক্তি বিরিক্তি ভঁগবৎপ্রবোধ ইতি ভারেন প্রেমবৃদ্ধিক্রমতোহন্ত্র্য পরাং অন্তর্নদাং তব গতিং সামীপাং প্রপেদিরে প্রপত্তিসহিতং প্রাপ্রিত্যর্থ:। ভূমন্ হে অপরিচ্ছিন্নমাহাত্ম্যেতি অন্তর্জনেবেতি ভাব:। হে অচ্যুতেতি ইত তব ভক্ত্যা কথঞ্চিদপি ইইসিদ্ধেশ্যতি নাজ্যেবেতি ভাব:। যথোক্তং কাশীথণ্ডে। ন চাবস্থেহথ যন্তকা মহত্যাং প্রদাসদি। অভোহচ্যুত্তঃ স্কৃতো লোকে অনেকো বিষ্ণুরবায় ইতি॥ ৫॥

তদেবং যদ্যপি জ্ঞানে প্রয়াদমিত্যাদিনা জ্ঞানমাত্রদ্যামৃগ্যন্থকং তথাপ্যতি বিশেষ ইত্যাহ তথাপীতি দ্বাভাগে। অগুপুদ্য কচিদধিকারিণি অপ্রকাশিতগুণস্য সতঃ। বিবাদেং বৃদ্ধে প্রকাশিতৃং পচে বিক্লিভিবিকেদনাবং কর্মনিটো বিকারাদিং কর্জ্নিষ্ঠণত তদ্য হেতৃত্বলক্ষণো ভাবঃ সর্ক্রক্ষধাতো গৌণম্থাভাবেন বাচ্যো ভবতি অন্তর্ভুতগার্থছাং। অতো বৃধ্ধাতোরণি প্রকাশমাত্রহং ইন্দ্রিকরণকপ্রকাশকহেতৃত্বক বিদ্যতে। তদেবং কর্মনিষ্ঠপ্রকাশমাত্রবিক্ষা ওদনঃ প্রতীতিবং বিবাদে মহ্তীত্যপি দ্যাং। অহতি অহতি ত্রোক্ত ক্রাপ্র তাং-

ক্ৰমদন্দৰ্ভ:।

পরমান্তরকাং গতিং সামীপাং প্রপেদিরে সপ্রতিপত্তিকং প্রাপ্রিত্যর্থ: ॥ ৫ ॥

অথাপি ভূমন্ যদাপি বিৰ্ধোভূাকং তথ'পি তব কথিগিরিকেশেষজ্ঞানং দ্যাদিপি বিশেষগুণজ্ঞানন্ত স্যাদিত্যাহ ॥ ৬ ॥

এীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

শ্রদাবতাং বর্ণাশ্রমকর্মানধিকারারিজকর্মশ্রবণকীর্ত্তনাদেব তেন লক্ষা বিশেষতপ্ত কথরা শ্রুতকীর্ত্তিশ্বত্যা উপ আধিক্যেন নীতরা প্রাপিতরা ভক্তা প্রেমণকণ্টেয়ব বিবৃধ্য বিজ্ঞায় স্কলপগুণলীলাদিক মমুভূরেত্যর্থ:। পবাং প্রেমবং পার্যদেষলকণাং গতিং প্রাপ্তা:। যথা। বথা কেবলবোধো বিফল স্কথা কেবলযোগশ্রেত্যত্র সদাচারং প্রমাণরতি পুরেতি। বহুকালং যোগিনো ভূষাপি যোগং নিম্বাং জ্ঞান্বা স্বিয় অপিতা মহা চেষ্টাচ নিজকর্মার্চ তাভ্যাং লক্ষ্যা ভক্ত্যা জ্ঞানমিশ্রটেয়ব বিবৃধ্য স্বাং জ্ঞারা॥ ৫॥

এবং ব্দ্যাপি কেবলয় প্রেমভক্তাব তব সাক্ষাদেতৎস্বরূপামূভবো তবতি তথাপি কেবলজ্ঞানগ্য বিগীতস্বাস্থ্যজ্ঞানমপি তব নিবিশেষ ব্রহ্মস্বরূপামূভবে কারণং ভবতি কিন্তু জ্ঞানঞ্চ মন্ত্রি সংন্যদেদিতি তহুকে জ্ঞান সংন্যাগানস্তর মেবেত্যাহ তথাপীতি।
বদ্যাপি কেবলা ভক্তি ন্স্তান্ত্রদণীত্যর্থ:। হে ভূমন্ ভূংপ্রাহ্ভাবন্তদ্দ্ ক্রমধুরৈতক্রপপ্রাহ্ভাববন্ অগুণস্য প্রাক্তগুণরহিত্ত তব বহিনা মহন্দং বৃহত্তরপ একো ধর্ম:। মদীয়ং মহিমানঞ্চ প্রব্রেক্তি শক্তিং।

বেংশাভহগৃহীতং মে সংপ্রদৈ বিবৃতং হুদীতি ছছকে: সা ব্রন্ধণি স্বমহিমন্যপি নাথেতি ধ্রুবোকেশ্চ মহিমশ্রেন প্রসিদ্ধ তোমার কথাশ্রবণে উপজ্ঞাত ভক্তিযোগে আত্মতত্ত্ব অবগত হইয়া স্থাথে তোমার পরম গতি প্রাপ্ত হইয়াছেন অতএব সদাচারেও সপ্রসাণ হইতেছে যে ভক্তি ছারাই জ্ঞান হয় ॥ ৫॥

হে অপরিচ্ছিম ! যদিও সগুণ নিগুণ উভরই অবিশেষে ছুজের তথাপি প্রত্যাহত ইন্দ্রিয় সকল দারা অগুণের মহিমা সহজে জ্ঞানগোচর হইবার সম্ভব, যে হেতু আত্মাকার অন্তঃকরণের সাক্ষাৎকার

অবিক্রিয়াৎ স্বাস্ভবাদরূপতো ছনন্যবোধ্যাস্বতয়া নচান্যথা॥ ৬॥ গুণাত্মনন্তেহপি গুণান্ বিমাতৃং হিতাবতীর্ণস্য ক ঈশিরেহস্ত।

প্রীধবস্থামী।

ভবাং আত্মাকারান্তঃকরণসাক্ষাৎকারাং। নমু। অন্তঃকরণমপি সবিকার্মেব বিষয়ীকরোতি নুকথং আত্মাকারতা তদ্যেত্যত আছ অবিক্রিয়াদিতি। বিক্রিয়া বিশেষকার স্তন্তি বিশেষপরিত্যাগ এবাত্মাকারতেত্যুর্থ:। নমু। অন্তঃকরণসাক্ষাৎকার বিষয়ত্বেহনাত্মবপ্রসঙ্গঃ স্যাদত আহ অরপত ইতি। রূপং বিষয়ঃ অবিষয়াৎ বৃত্তিবিষয়ত্বনেবাত্মনো নতু ফলবিষয়ত্বনতোনায়ং দোষ ইতি
ভাব:। কথং তহি ক্রিঃ অনন্যবোধ্যাত্মতা স্থপকাশকত্বেনৈব নম্বন্ধা ইদং তদিতি বিষয়ত্বনেত্যুর্থ:। অথবা মা সুর্ব্ধতোহন্তর্বলা লক্ষীরপি অন্তণস্য তে মহি মহিমানং অমলৈরন্তর্ব তিভিরিক্রিয়েরপি তথা যাদ্ধন্ত: তেন স্বরূপেণ বিবাদ্ধ্ব কিমহ তি নাহ ত্যেবেত্যুর্থ:। কথং তহাইতি তদাহ স্থান্থভবাদিত্যাদিনা। উক্রাথ্যেবৈতং ॥ ৬॥

খুণাস্থান: খুণানামাস্থান: খুণাধিষ্টাতুস্তে তব খুণান্ ৰিমাতুং এতাবস্ত ্ইতি গণিয়িতুমপি ক ঈশিরে সমর্থা বভুবু রতন্ত ছিশেষবার্তা

বৈষ্ণবতোষণী।

পর্যাং। মহিমা মহিমানমিতি স্থপাং স্থপ ইত্যাদিন। স্থভাবাং। অন্যাবোধ্যাস্থত্যা চিদেকাকারাংশেন জীবেশয়োরভেদভাবন্দ্যা। অন্যাইঃ। তত্ত্ব বৃত্তি নি বিষয়ং চিন্তমেব ফলঞ্চ বিষয়াকারচিদাভাসযুক্তং তদেবেতি জ্ঞেয়ং। যদা যদাপি ভক্তাব বিবৃদ্ধোত্যক্তং তথাপ্যনন্ত কল্যাণ গুণ মহোদধে স্তব সম্যাগ্ জ্ঞানং ন স্যাদেব কিন্তু কস্যচিদেকস্য স্থাল্পা মাহাম্মাজ্ঞানং কস্যাপি জনস্য যং কিঞ্চিদেব ভবেদিত্যাহ তথাপীতি। তে গুণাং করণাদিলক্ষণান্তেষাং একোহপি তস্য মহি মহিমা তস্য মালক্ষ্মাঃ সম্পদ ইত্যর্থঃ। তাঃ কন্চিদিবোদ্ধ্র অর্থতি তচ্চ স্বায়ভবাং স্বায়ভবং স্বকীয়ামুশীলনং অমুস্ত্য যথা স্বায়ভব স্থপা নতু সর্ববেশত্যথঃ। কথস্থতাং অবিক্রিয়াই শিলিয়াই শিলিয়াই শিলিয়াই আন্যানিয়াই আন্যানিয়াই আন্যানিয়াই আন্যানিয়াই আনির্বাহিন্ত স্বায়ভবিয়াই আনির্বাহিন্ত স্বায়ভবিয়াই আনির্বাহিন্ত বিবাদ্ধ্য মহ্তীত্যথঃ। এবং শ্রীভগবাদ্ধ্য স্বাধি ব্রহ্মস্বরূপহ্মভিত্তের । ৬॥

গুণাত্মন ইতি তক্ৰ পূৰ্ববিদ্নৰে পূৰ্ট্বেরাবতারিকা উত্তরত্বিংশ্বিয়ং যথা বিশেষতঃ স্বয়মবতীর্ণস্যাস্য তব গুণানাং মাহাত্মমিয়ত্বমপি ন

ক্রমসন্দর্ভঃ।

গুণাত্মন ইতি হিতাবতীর্ণদ্য রূপয়া প্রকটিতগুণদ্যাপি॥ १॥

🕮 বিশ্বনাপচক্রবর্ত্তী।

পরং ব্রহ্ম বিবাদ্ধ্য স্বয়মেব বিবোধ্যা ভবিতৃ মহঁতি। পচ্চতে ওদনং স্বয়মেবেভিবৎ কর্মণঃ কর্ত্বং যথা কুঠারঃ স্বয়মেব বৃক্ষং ছিনত্তীত্যত্র কর্নস্য কর্ত্বং বিবক্ষিতং। কথাদ্দিমিতাৎ। অমলৈঃ ভকৈরত্তরাঅভিঃ স্বাহ্নভবাৎ স্বকর্মকাদহভবাৎ। নহহভবং থক্তঃকরণরত্তিঃ
সাচ ক্ষাদেহ বিকারমন্ধী নির্বিকারং ব্রহ্ম কথং বিষয়ী কুর্য্যাদিতাতো বিশিন্তি অবিক্রিয়াৎ ন বিদ্যুতে বিক্রিয়া বিকারো যত্র তথাভূতাৎ
বিকারো হি মান্নাধর্মঃ সচ মান্নোপরমে কুতঃ স্তাদিতি লিক্দেহাভাব এব ব্যক্তিং। নহ। তদপিব্রহ্মণেহবিষ মুজেনাহভববিষয়্তানেচিত্যাদিত্যতঃ পুনর্বিশিন্তি অরপতঃ রূপং বিষয় ভদিতরাৎ বিষয়াকার্ত্বহিতাৎ ব্রহ্মাকারাদিত্যর্থঃ। ব্রহ্মণো ব্রহ্মাকারাহত্ববিষয়ত্বং ন
দোষ ইতি। নম্বন্তি কিং তরোধে প্রকারান্তরং তত্তাহ অনন্যবোধ্য আত্মা স্বরূপং যত্ত তত্ত্বয় নৈবান্যথা স বিবোধ্যা ভবিতৃ মূহ্তীত্যয়য়ঃ। যথা বিষয়াকারাহভব ধূবে শক্ষম্পর্শাদীন বিষয়ীকরোতি ন ব্রহ্ম। তথৈব ব্রহ্মাকারাহভব এব ব্রহ্ম বিষয়ীকরোতি
ন শক্ষাদীনিত্যর্থঃ॥ ৬॥

অপ্রাক্ত কল্যাণগুণময়ং তদেবং ভগবৎস্বরূপং তু প্রেমভক্ত্যা বিনা বিজ্ঞাতুং কেছপি মায়াসিদ্ধৃত্তীর্ণা অপি বিদ্যাবস্থোহপি

হইয়া থাকে। বিশেষাকার রহিত হওয়াতে ঐ আত্মাকারতা অসম্ভব নহে, পরস্ত যদিও অন্তঃকরণ সাক্ষাৎকারের বিষয়, তথাপি ফলবিষয় না হওয়াতে অনাত্মত্ব প্রসক্তি নাই। প্রভো! স্প্রকাশত হেতু উহার স্ফুর্তি হইয়া থাকে, অন্প্রকার ইইলে তাহা হইত না॥ ৬॥

হে দেব! ছুমি এই বিখের হিতার্থ গুণাবিকার করত অবতীর্ণ এবং গুণসকলের অধিষ্ঠাতা,

কালেন থৈব্বা বিমিতাঃ স্থকলৈ ভূপিংশবঃ খে মিছিকা ছ্যুভাদঃ॥ ৭॥

औधत्रचामी

দ্রতঃ। কথভ্তদ্য তব অস্য বিশ্বস্য হিতার পালনায় বহুধা বহুগুণাবিদ্ধারেণ অবতীর্ণস্য। নন্ধ। কালেন নিপুণৈ: কিমশক্যমত আহ কালেনেতি। বা শ্ৰো বিতর্কে স্থক**লৈরতিনিপুণৈ ব হজন্মনা কালেন ভূপরমাণ**বো বিমিতা বিশেষেণ গণিতা ভবেয়ুং। তথা থে মিহিকা হিমকণা অপি তথাহাভাসঃ দিবি নক্তাদি কিরণ প্রমাণৰোহপি॥ ৭॥

देवक्षबर्खाम्नी।

কেনচিদপি জাতুং স্যাদিত্যুপক্রমবং শ্রীক্লফ এবীস্তর প্রকরণস্যাপ্যর্থং পর্য্যবসাধয়তি গুণেতি। यहा। গুণানামাত্মনশ্চেতয়িতুঃ পূর্ব্ব মব-তারান্তরৈ র্জগত্যপ্রকটনেন প্রস্থানামিব গুণানামধুনা প্রকটনেন প্রবোধনাৎ। গুণান্ প্রকটম্ব ইত্যর্থ:। यहा। গুণা আত্মন: স্বরূপভূতা যস্যেতি নিত্যমপ্রাকৃতত্বং চোক্তং। তথাচ ব্রন্ধতর্কে। গুণৈ: স্বরূপভূতৈত্ত গুণ্যসৌ হরি রুচ্যতে। ন বিষ্ণো ন চ মুক্তানাং কাপি ভিল্নো গুণো মত ইতি। তথাচ শীবিষ্ণুপ্রাণে। সন্ধাদয়ো ন সন্ধাশে যত চ প্রাকৃতা গুণা:। স গুন্ধ: সর্বাণ্ডনেভ্য: পুমানদ্য: প্রসী-দতু। জ্ঞান শক্তি বলৈশ্বৰ্যাবীৰ্য্যতেজাংস্যশেষত:। ভগৰচ্ছৰৰাচ্যানি বিনা হেলৈগুণাদিভি:। পাল্মোত্তরথণ্ডে । বোংগৌ নিগুণ-ইত্যুক্ত: শাস্ত্রেষু জগদীবর:। প্রাকৃতিত হেরিসংযুকৈও গৈ হেরিজমূচ্যতে ইতি। একাদশেচ। মাং ভল্লন্তাগুণা: সর্কে নিপ্তণিং নির-পেক্ষকং। অ্হনং সর্বভূতানাং সাম্যাসঙ্গাদয়ো গুণা ইতি। ব্যাখ্যাতঞ্চ তৈরেব। অগুণা গুণপরিণামান ভবস্তি কিন্ত নিত্যা ইতার্থ:। বিশেষেণ তাবনাহাম্মা ইয়ৎসংখ্যাবৃস্তদেটি। মাতৃং গণ্ডিতুং কে ঈশিরে অপিতু ন কোহপীতার্থ:। তত্র কৈমৃত্যং অস্য জগতঃ সূর্বেষামের জীবানাং হিতায়ারতীর্ণস্য তদর্থং প্রকটিতগুণস্যাপি। অমনর্থং। যুস্য জীবস্য যেন যথা হিতং স্যাৎ তথাদৌ গুণ-ন্তদুৰ্থং প্ৰকট্মিতুমপেক্ষ্যতে। তত্ৰ জীবানামানস্ত্যং তত্ৰচ স্বভাবানামানস্ত্যং তত্ৰাপ্যবস্থাদি ভেদেনানস্ত্যং অভন্তদৰ্থং গুণানামপ্যা-নস্ত্যং তত্তবিধিতেদেন প্রমানস্ত্যং স্যাদেবেতি তদগণনা ন সম্ভবেৎ .কিমুত কালদেশাদ্যপরিচ্ছিলে স্বলোকে বিহরত ইতি। হৈ-বি'মিতান্তেহপি ন ঈশিরে ইতি পূর্বেণাবয়:। যদ্যপি ভূপাংখাদীনামপি যথোভরং কল্ম তয়ানন্তাং তথাপি শ্রীসঙ্কর্যণাদিজ্ঞানেন তদ্য-ণ্নমপি সন্ধাব্যতে ত্রন্ধাতেনু পরিচিছ্নতাং অনন্তকোটি ত্রন্ধাও পরমাণু প্রমাণাশ্রয় লোমকুপবিবর গ্রাক্ষ্যা মহাপুক্ষ্যাপ্যংশিন-ন্তব তৎ কথং স্যাদিতি ভাব:। স্নোক্ষয়েহ মিন্ সগুণস্য শ্ৰীক্ষটেশ্যৰ মহিমি ছর্কোধাতিশয়ো দর্শিত:। তম্মাদপ্যনেন কৃতবির্তাব-স্যাপি দেববপুষ ইত্যত্র নিশুপাস্য বন্ধণো নামাবন্ধীক্বত:। এতব্যাহ্মসারেণ বিরাট্প্রস্তাবন্ত স্বতো বহিভ্তি এবেতি। সোহপি নাদৃতঃ। তত্মতিত্তরপ্যস্যাপীত্যাদি লোকবয়ব্যাখ্যাবয়মিতি পূর্বপক্ষতয়া দর্শমিষা লোকবন্বে ছত্মির তরপক্ষঃ ক্বত ইতি নাসামঞ্চন্যং মস্তব্যং॥ १॥

🖫 বিশ্বনাপচ ক্রবর্তী।

ন শকু বৃত্তি যদি ন মে জগজ্জনা অন্মদাদয়ত্বং পশ্যন্তো হপি ন জানস্তীতি কিং বক্তব্যং তব মহামধুরান্ গুণানপি সংখ্যাত্মপি ন শকু বৃত্তি তথাধুৰ্যান্ত্তবৰ্ণজন বুলি তথা আত্মানঃ স্বন্ধপূত্তা বস্যেতি গুণানাং নিতা্ত্যপ্রাকৃতবংশাকং। তথাচ বন্ধতি কে গুণানাং নিতা্ত্যপ্রাকৃতবংশাকং। তথাচ বন্ধতি কে গুণানাং নিতা্ত্যপ্রাকৃতবংশাকং। তথাচ বন্ধতি কি গুণায়ত্ব তৈ গুণায়ত্ব তব গুণানা বিমাতৃং এতাবন্ত ইতি গণায়ত্বং কে ঈশিরে শকু বৃত্তি অপিতৃ নৈব। আমভাব আর্ষঃ। অস্য বিশ্বস্য হিভার সংসাররোগনির্ভয়ে অবতীর্ণস্য বেতি বিতর্কে। যৈঃ স্বক্তা রাতিনিপুণ্ডাঃ সন্ধর্ণাদিভি ভূপ্রমাণবোহণি বিমিতা গণিতা ততোহপ্যধিকাঃ ধে মিহিকা হিমকণা অপি তথা ততোহপ্যধিকাছ্যভাগ: দিবি স্থ্যাদীনাং কিরণপ্রমাণব তথাপি তে সন্ধর্ণাদ্যা যান্ অদ্যাপি গারন্তো গায়ন্ত সমানং নৈবাগু বন্ধীত্যর্থঃ। যা গুণে বিশ্বপান্ধ আব্দা পালনার্থং মনো যায় তথা ভূতভাগি তব গুণান্ বিমাতৃং ন ঈশিরে কিং পুনপ্রশাতীতমহাচমৎকারি দ্বি চৌর্যাদি ক্রীড়াত্মন ইতি॥ १॥

তোমার গুণের বিশ্বেষ বিষরণ দূরে থাকুক "তাহা এক পরিমাণ" বলিয়া গণনা করিতেই বা কোন্ ব্যক্তি সমর্থ হইবে ? ভগবন্। যে সকল নিপুশব্যক্তি বহু জন্ম ও বহুকালে ভূমির পরমাণু আকাশের হিমকণা এবং স্বৰ্গন্থ নক্ষত্রাদির কিরণপরমাণু গণনা করিতে পারেন, তাঁহারাও আপনার গুণ গনণায় সমর্থ নহেন॥ ৭॥ তত্ত্বেহসুকম্পাং স্থসমীক্ষমাণো ভূঞ্জান এবাত্মকুতং বিপাকং। হৃত্বাগ্ধপুর্ভি বিনিধন্নম স্তে জীবেত যো মুক্তিপদে স দায়ভাক্॥ ৮॥ পশ্যেশ মে ২নার্য্যমনস্ত আদ্যে পরাত্মনি ত্বয়পি মায়িমায়িনি।

প্রীধরস্বামী।

তথাছক্তিবেব সঙ্গছত ইত্যাহ তত্ত্তেহকুক্পামিতি। স্থানীক্ষাণা কদা ভবিষ্যতীতি বহু মন্যমানঃ স্থার্জিতঞ্চ কর্মফলমনাসকঃ সন্ ভূঞান এব নাতীব তপ আদিনা ক্লিশ্যন্। এবং যো জাবৈত সম্জৌ দায়ভাগী ভবতি ভক্তস্য জীবনকাতিরেকেণ দায়প্রাপ্তাবিব মুক্তৌ নান্যত্পযুজ্যত ইতি ভাবঃ॥৮॥

তদেবং স্বতা ভগবস্তং ক্ষমাণয়িতুং স্থাপরাধং নিবেদয়তি পশ্যেতি। হে ঈশ মে অনার্যাং দৌর্জন্যং পশ্য যদহং মায়িনামপি মায়িনি

देवस्व वर जायनी।

তত্ত ইতি। এব শব্দো যথাপেক্ষমগ্রেহপারবন্ধনীয়া। আত্মনা ক্রতমর্জিতমিত্যবশ্যভোগ্যতোক্তা। অতত্ত্ব স্থবহংথাদিক-মমন্যান ইত্যবঁ:। বিপাকং বিবিধকর্মকলং। প্রেহ ভ্মরিত্যাদি রীত্যা তদিধকথয়াভিক্চিতীক্বতায় ভূভাং হ্বাথপুর্ভিন মো-বিদধদিতি তত্র স্বাশক্তিং কুর্মরিতি ভাবা। উপলক্ষণগৈতলৈন্যাম্বক্যা ভক্তান্তর্নায় মুক্তিনামকং পদং চরণারবিলাং। যেনাপবর্গাথ্যমদ্রবৃদ্ধি ভেঁজে থগেল্রহ্মজনাদমূলমিতি প্রথমে। যথা। অত্ম সর্গোবিসর্গণ্ট ইত্যাদৌ নবমপদার্থরূপায়া মুক্তেরপি পদে আশ্রয়ে দশমপদার্থরূপে। দশমে দশমং লক্ষাং ইত্যাদি নির্মীতে দ্বি স দায়ভাগ্ ভবতি ভাতৃবৃদ্ধন ইব স্থমেব তস্য দায়ত্বন বর্ত্তমে। অতো বরাক্যা মুক্তেরণি কা বার্তা ইত্যর্থ:। অত্ম তহাখ্যায়াং নান্যদিতি বৃদ্ধিপৌর্ষাদিকং নিষিদ্ধং ত্রিনাপি জীবর্তঃ প্রস্থা দায়প্রাপ্তেঃ অত্রাপি জীব্রং ভক্তিমার্গস্থিতহং জ্রেয়ং দৃত্র ইব শ্বসন্থীত্যাহ্যক্তেঃ॥৮॥

ভত্ত জ্ঞানস্যাপ্রযোজকতে স্বর্মের দৃষ্টাঞীকুর্মন্ তত্ত্র স্থাপরাধমপি ক্ষমাপরিত্মুপক্রমতে পশ্যেতি। আর্য্যাঃ স্থলন স্তস্য ভাবঃ

ক্রমদন্দর্ভ:।

তত্তে ইতি॥৮॥

পশ্যেতি আর্ব্যঃ স্থজন অস্য ভাবঃ আর্ব্যং তেন বিজ্ঞজনপি গম্যতে। তদ্পিরীত্মনার্য্যং দৌর্জন্যং মৃচ্ত্বঞ্চ তত্তদৌর্জন্যমাহ।

শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

তদেবমন্যৎ সর্ব্যাধনং পরিত্যক্তা ভক্তিমেব কুর্বংস্থাং লভতে ইতি প্রকরণাথোহবগত ন্তর্জ কীদৃশঃ সন্ কুর্যাদিত্যপেক্ষায়ামাহ ততে ইতি। যথাদেবং তর্মাদাত্মকতং বিপাকং ধর্মস্য হাপবর্গস্য নাথোহথায়োপকলতে ইত্যক্ত প্রতিপাদিতং ভক্তেরপানম্ সংহিত্যকং তদপরাধকলং হংথক ভ্রানএব তং তবামকল্পাং মুঠ্ সুমাগীক্ষাণঃ সময়ে প্রাপ্তং মুং হংথক ভগবদক্ষণাফলমেবেদ্নিতি জানন্। পিতা যথা স্বপ্তং সময়ে সময়ে হৃথং নিধরসক কপরেব পায়য়তি আল্লিয়া চুম্বতি পাণিতলেন প্রহরতি চেত্যবং মম হিতাহিতং পুত্রত্ত পিতেব মংপ্রভূরের জানাতি নত্ত্বং ময়ি মন্তকে নান্তি কালক্ষাদীনাং কেষামপাধিকার ইতি সএব ক্লপরা ম্প্রভাবে ভালম্বিতি চ। স্বং দেবয়তি চেতি বিম্পা। যথা চরেঘালহিতং পিতা স্বয়ং তথা জ্মেবাহ দি নঃ সমীহিত্মিতি পৃথুরিব প্রত্যহং ভগবস্থ বিজ্ঞাপরন্ ক্লাদিতি ন সমুর্বেশ্ নাতীব ক্লিশান্ যো জীবেত স মৃক্তিন্চ পদ্ধ তয়ো দ ক্লিং তল্মিন্ সংসারম্কৌ স্ক্রবণ্নেবায়াক্ষেত্যাম্বিদিকম্থাফলয়ো দ মিভাগ্ ভবতি যথা প্রস্য দায়প্রাপ্তে জীবন্ধের কারণং তথা ভক্তস্য জীবনং ভচ্চেই ভক্তিমার্কে ছিতিবের দৃত্য ইব স্বস্থাম্প্তি যুদ্ধি তেইছবিধা ইত্যাহাকেরিতি ভাবং ॥ ৮॥

অহত্ত ভক্তিলেশমপি ন কুর্বে প্রভাতাপরাধপ্রমেবেতি সাহতাপমাহপশ্যেতি। ছে ঈশ মে অনার্যাং আর্যাঃ স্কলেনা বিজ্ঞান

পরস্ত আপনার অমুকম্পা নিরীক্ষণ করিয়া আর্থাৎ কবে আপনার দয়া হইবে এই প্রতীক্ষায় স্বোপার্জিত কর্মফল ভোগ ও কায়মনোবাক্যে স্লাপনার প্রতি নমস্কার রচনা করত যে ব্যক্তি জীবিত থাকেন, তিনিই মুক্তি বিষয়ে দায়ভাগী হয়েন, ফলতঃ ভক্তব্যক্তির জীবন ব্যতিরেকে অন্য কিছুই দায় প্রাপ্তিবৎ মুক্তিবিষয়ে উপযোগী নহে ॥ ৮॥

হে রাজন্ ! ত্রক্ষা এই প্রকারে ন্তব করিয়া পরে ক্ষমা করাইবার নিমিত্ত আপনার অপরাধ নিকে-

মায়াং বিতত্যেকিত্মাক্সবৈভবং ছহং কিয়ানৈচ্ছমিবার্চির্যো॥ ৯॥ • অতঃ ক্ষমস্বাচ্যুত মে রজোভূবো হজানত স্তুৎপৃথনীশমানিনঃ।

औधत्रचामी।

বিনোহকে ছব্যপি স্থাবাং প্রসাধ্যাছে মুর্থ্যমীকিজুং ঐচ্ছং অভিলবিতবান্ অহো এবং কর্তুং ছব্যহং কিয়ান্ন কিঞ্চিৎ যথা অগ্নৌন কিঞ্চিত্তবং ॥ ১ ॥

রজোভ্বঃ রজনো জাতস্যাত্যেহজানতঃ অত্বএবাজাবলেপাত্তমোহত্তহাহ্বত অলো জগংকর্তাহমিতি মদেন গাঢ়তমো রূপেণাত্তী-

देवक्षवत्त्रावनी।

আর্ব্যং তত্ত্বিজ্ঞবদপি ক্রোড়ীকরোতি অতত্তবিপরীতং দৌর্জন্যং মৃঢ্বং চানার্য্যং পশ্যেতি তদ্য প্রাকট্যাদিকং বোধিতং। তত্ত্ব ঈশে স্বপ্রভৌ তত্র চাদ্যে পিতরি ব্যাপি দৌর্জ্জ্যং অনস্তে অপরিচ্ছিন্নদহিন্নি প্রাথানি আত্মনোহপ্যাপ্দনীতি মৃঢ্বং তত্ত্বজ্ঞানত্বেপি নায়িমারিনি মায়াং বিতত্যেতি প্রমমৃচ্বং কিং তৎ আত্মনত্ত্ব বৈত্তবং মাহান্মানীক্রিত্বং প্রক্রং বং। ত্রস্তুং মঞ্মহিদ্যক্তপশি-ত্যুক্তে:। হি নিশ্চরে। নম্ন মাহান্মাং ত্রস্তুং চেত্রহি কো দোব স্থতাহ স্বন্ধাহান্মাং ত্রস্তুং ত্রোপি মায়াং বিভত্য ত্রস্তুং কিয়ান্ কো বরাকোহহমিত্যর্ব:। কিয়বে দৃষ্টাস্তঃ। অল্লো অচিরিবেতি। বলা। আত্মনা স্বস্তু বৈত্তবং ত্রষ্ট্রমিতি দৈক্তেন পূর্বার্থমাচ্ছান্য প্রোক্তং ॥ন॥ অত ইত্যস্ত টীকারাং প্রভূত্বনেতি প্রভূত্মস্বন্ধেনেত্যর্থ:। বলা। অত্যে মমাপ্যতিভূক্ষবাৎ ত্রাতির্মহন্ধাক্ত ক্ষমন। অতিভূক্ষবনেব দর্শয়তি রক্ষোভূব ইত্যাদিভিঃ। অক্সানত ইতি ত্রোহংশক্ষ ব্যঞ্জিতঃ। পশ্চতামিপি রক্তক্রাঞ্চ তাভ্যানেব সগর্কবিমান্যঞ্চ ক্সাতিনি-

क्रममञ्जूष्टः।

আলো খব্যপীতি। মৃত্যং অনত্তে পরাক্ষনীতি পরমমৃত্যং মায়িমায়িনি মায়াং বিতত্তেতি বদ্যপি তাইং মঞ্মহিছমিত্যক্তং তত্রাপি অপর্বং পর্যবদ্যতীত্যাহ আহেতি। কিরতে দৃষ্টান্তঃ। আমৌ আচিনিবৈতি। বিজ্ঞোভ নীণি রূপাণি ইত্যাদ্যস্পাবেণ প্রথমপুরুষত্রা ভৌতি॥৯॥১০॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

ন্ত সা ভাব আর্ব্যং তি ছিপরী তমনার্ব্যং দৌর্জনাং মোচ্ঞ পঞ্চেতাবধার সমূচিতং দণ্ডং ক্ষমাং বা কুক্লাভাণা মাদৃশানাং দৌর্জভমোচেচ এব বর্দ্ধিলাতে ইতি ভাবঃ। কিং তলোজনাং বোচাঞ্চেতাত আহ আদো ক্ষারণভাং পিতরি তত্রাপি হিন্ন হংগন সহচরৈঃ সহ ভূজান দৌর্জনাঃ। অনতে ২পরিচ্ছিরৈর্বর্ব্যে পরাক্ষনি আন্ধানাংশ্যাত্মনীতি মৃত্তং। নারিমাধিনীতি প্রমম্চ্তং। এবভূতেংপি ছিন্ন মানাং প্রার্ব্য বালিক স্মান্তং। এবভূতেংপি ছিন্ন মানাং প্রার্ব্য বালিক স্মান্ত আহি আন্বান্ত কিশ্রিমাণকঃ অর্চি জ্বালা যথা মহাগ্রেক ভূষ তমেব দগ্র বিচ্ছেং। ১ ॥

পৌর্জন্যাচিত্তন্য দখন্য মৌনোচিতারা: ক্ষমারাক্ত সম্ভবেহপি মহাক্রপালোত্ত্ব ক্ষমবোচিতেত্যাহ অত ইতি। হে অচ্যুত বৃত্ত তঃ সহাক্রপান্বাদিগুবেন্ত্য-চ্যুতিরহিতঃ অহঞ্চ মহানীচঃ অতো মমাপবাধ্ধ ক্ষমত্ব। নীচে দ্যাধিকে স্পর্কেতি নীতেরিতি ভাবঃ প বহানীচন্ত্রমাহ রশ্বোজ্বঃ শ্বোধেশ রজনো ধূলেঃ পুত্রস্য অত এবাজ্ঞস্য অতএব দ্বঃ পৃথগেব ঈদুশো হহমিত্যভিমানবতঃ। ক্রশন্তিয়া বির্ণোতি। অজাবলেপঃ অজ্ঞাবলপ এবাজ্বতঃ স্মানাত্রাভাব আর্বঃ তেনাত্মানি চক্তৃংবি যস্য। তেন মরি দং-

দন করত কহিলেন হে ঈশ! আমার দেজিন্য দেখ, তুমি অনন্ত, আদ্য, পরমান্ত্রা, মায়াবিদিগেরও মোহনকারী, আমি আপনার, প্রতি স্বীয় মায়া প্রসারণ করিয়া আছ্মের্য্য নিরীক্ষণ করিতে ইচ্ছা করিয়াছিলার। অছো! যুদ্ধপ অমি হইতে উথিত শিখা অমির প্রতি কোন কার্যকর হয় না তত্ত্বপ আপনার প্রতি ঐ রূপ করিতে গিয়া আমি কিঞ্ছিৎকরও হইতে পারি নাই ৮৯॥

হে অচ্যত! আমি রজোগুণে উৎপন হইনাছি এ কারণ অজ্ঞ, স্কুতরাং তাহাতে আমার নেত্র্য স্কীভূত হইয়াছে,অভএব 'আপনা হইতে আমি পৃথক ঈশর' এই রূপ অভিমান করিতেছি। প্রভো!

অজাবলেপাদ্ধতমো**ংহ্দচকুৰ এবোহমুকন্প্যো ম**য়ি নাধবানিতি ৷ > ৷ কাহং তমোমহদহং থচরাগ্নিবা**ভূ সম্বেম্ভিতাওঘটনগুবিভ**ত্তিকায়:। কেদ্যিধাবিগণিতাগুপরাণুচর্য্যা বাতাধ্ব**রোশবিবরক্ত চ তে মহিত্বং ॥ ১১ ॥**

श्रीश्रत्यामी।

ভূতে নেত্রে যদ্য অতত্ত তঃ পৃথগীশমানিনঃ। অন্তাত এশভূত্বেন বর্তমানোহপি মল্ল নাথবান্ মভূত্য এব অত এবোহমুকল্প্য ইতি মত্বা ক্ষমস্বেতি॥ ১•॥

ব্রহ্মাও বিগ্রহন্ত্র মণীখন এবেতি চেৎ তত্তাহ ভাহমিতি। তম: প্রকৃতিম হান্ অহন্তার: খং আকাশং চরো বার্ **অগ্নিডেক:** বার্জলং ভূশ্য প্রক্ত্যাদি পৃথিব্যবৈত্রেরৈতঃ সংবেষ্টিভো যোহওখট: দএৰ ভশ্মিন্ বা আত্মমানেন সপ্তবিভত্তিকায়ো যদ্য সোহহং ৰু ৰুচ তে মহিত্বং কথং ভূতদ্য ঈদ্ধিধানি যান্যবিগণিতানি অণ্ডানি তান্যের পর্মাণৰন্তেষাং চর্ব্যা পরিশ্রমণং তদর্থং বাভাধবানো গবাক্ষা ইব রোমবিবরাণি বস্য তব অভোহতিভূচ্ছ্ড়াৎ দ্বরাম্কস্প্যোহহমিতি॥ ১১॥

বৈঞ্চৰভোষণী।

ত্যাহ অজেতি। হি প্ৰসিদ্ধৌ। দ্বমপি জানাসীতি ভাব:। হে অচ্যুতেতি দ্বমেবাচ্যুন্তনামা। অতঃ সত্কদেব প্ৰপল্লোৰ ইত্যাদি রূপ-ব্ৰভাদপি তবাচ্যুতি ৰ্যোগ্যৈব। অস্মাকঞ্চ অন্নামতানহ ছাদেব ভাদৃশচ্যুতিরপি ন সম্ভবতীতি ভাবঃ। এবোহংমমূকস্পাঃ কলং নাথ-বানিতি দাদ ইত্যেবং। নমু পর্মেষ্টন তাব দান্তং কিমর্থং তত্তাহ মন্নিতি। ভগবতি নিমিতে মদেকপ্রাপ্তার্থমিতি ॥ ১০ ॥

অহো অতিতৃচ্ছতমোহহং পরমনহত্তমং স্থাং ক্ষমন্তিতৃদ্পি নার্হামি। 'ষত জাস্তাং তাবৎ সর্বব্রেপঞ্চাপ্রপঞ্চব্যাপকবাস্থদেবত্বং সর্ব-প্রপঞ্চনাথত্বেহপি ত্বতো মম বহুবস্তরমিতি বক্ত**ুং সম্বর্ধণবিশেষমহৎশ্র**ষ্ট্ **প্রথমপুরুষত্বেন ত্তৌতি কাহমিতি। ব্রহ্মাণ্ডস্য ঘটরূপকত্বং শ্বর-**কালত এব নখরতাভিপ্রায়েণ কায়ক্ত সপ্তবিতত্তিতং নিক্কষ্টপুঞ্বত্ববিকল্পা মহাপুক্ষবক্ত তু নব বিতত্তিত্বনেব ইতি মূহ: স্পটিপ্রলক্ষয়ে। নিজিম প্রবেশাভ্যাং ঈদৃথিধেত্যাহ্যক্তং রোমবিবরত্বং কৃত্মতমৈকদেশত্বং। তহুক্তং **শ্রীবিষ্ণুপুরাণে। বস্তাযুতাযুতাংশাংশে** বিশ্বশক্তি-রিয়ং ছিতেতি। মহিত্বং মাহাত্মাং অতঃ স্বয়মেবাত্মকম্পাং কর্ত্ত্মহাসীতি ভাবঃ॥ ১১॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

কাহমিতি দিতীয়পুরুষতয়া স্তৌতি॥১১॥

२१०

শ্ৰীবিধনাথচক্ৰবন্তী।

কারুণ্যচন্দ্রোদয়েনৈর মদার্থ্য ত্মস্যপহৃতে সতি বং দুশ্যো ভবিষ্যসি নান্যথেতি ভাবং। কেন বিচারেণ ক্ষমে ইভি চেন্তজাহ। এৰ অংশ৷ অনুকৰেল্যা মদত্তকৰ্পাৰ্হ: যতে৷ হন্যত্ত নাথডাভিমানবানপি ময়ি<mark>তু নাধবান্দাল এব ৷ যুৱা মৌল্যাম্ব্যপি স্বাভন্</mark>তাং কুর্পনপি বস্তুতো মুরায়াধীনতাৎ অধীন এবেতি মতা। পরতন্ত্র: পরাধীন: পরবারাধবানপীতামর: ॥ ১০ ॥ 🦠

নমু বিষ্ফ্রন্তানি প্রাসিত্ধ এব নম্বনীশমানী মম তু কিমেম্বর্যাং তদ্ত্রহীত্যত আবাহ কেতি। তম: প্রকৃতিশ্চ মহাংশ্চ **অহ্মহন্ধার**শ্চ পমাকাশঞ্চরো বাযুশ্চ অগ্নিশ্চ বার্জলঞ্চ ভূশ্চেত্যেভি স্তব্ধৈঃ সংবেষ্টিতো বো ২ওবট শুক্ষিদ্ শাড়ালাদি সভ্যবোকাক্তিঃ অন্নানেন সপ্ত-বিতত্তি নিক্ষিত্তলকণ: কালো যস্য সো ২হং ক ভুদ্ধিধানি যান্যবিগণিতান্যগুনি তান্যের পর্মাণক তেখাং চর্যা নিক্রমঞ্চৰেশ-রূপং পরিভ্রমণং তদর্থং বাতাধ্বানো গ্রাক্ষা ইব রোমবিবরাণি বস্য জন্য তব মহিত্তমৈর্ঘর্য্যং কেঞ্জি মহৎ **লটা প্রথমস্করেণ ক্রক্টস্টেক্**ট বিবক্ষয়েকিং। তেন মনৈশ্ৰ্যাং বিক্ৰুমোৰা <mark>ছাং প্ৰতি শলভদ্য গৰুড়ং প্ৰতীব ন প্ৰনাই্মিতি ভাৰ: ॥ ৯১ ॥</mark>

"এ ব্যক্তি অন্যত্র প্রভূত্ব রূপে বর্ত্তমান হইলেও আমারই ভৃত্য অতএব এ আমার অনুকম্পনীয়" মনে করিয়া আমাকে ক্ষমা করুন ॥ ১০॥

ভগবন্! প্রকৃতি, মহৎ, অহঙ্কার, আকাশ, বায়ু, তেজঃ, জল এবং পুণিবী এই দকলে পরিবে ষ্টিত যে অওঘট, তাহাতে আত্মপরিমাণে সপ্তবিভত্তিমাত্র পরিমিত আমার শরীর, আমি কোথার? আর তোমার মহিমাই বা কোণায় ? অতএব ব্রহ্মাণ্ড বিগ্রন্থ বিলিয়া আমি আপনাকে ঈশ্বর বলিতে পারি না। বেক্সাও আমার শরীর বটে কিন্তু এতীদৃশ অসংখ্য বিক্ষাণ্ডরূপ পরমাণু সকলের পরিভাষ-ণার্থ গবাক্ষের ন্যার আপনার শরীরের প্রভেক্ত রেমাবিবর,অতএব আমি অভিভূচ্ছ,আমাকে অসুকম্পা

まくく 見を存

উৎক্ষেপণং গর্ত্তগতত পাদয়োঃ কিং করতে মাতৃরগোক্ষাগ্রেন্।
কিমন্তি নান্তি ব্যপদেশভূষিতং তবাতি কুক্ষেঃ কিন্তুপ্যনন্তঃ ॥ ১২ ॥ ।
জগত্রয়াত্তোদধিসংপ্লবোদে নারায়ণত্যোদরনাভিনালাৎ।

वीधंत्रवामी ।

অপিচ গর্ত্তগতস্য শিশো: পাদরোকংকেপণং মাতৃ: কিমপরাধায় ভবজি লোকেংন্তি নান্তি ব্যপদেশাত্যাং ভাবাভাবশন্ধাত্যাং স্থূল স্ক্ল কাৰ্য্যকারণ শকৈ বা ভ্ৰিতং অভিহিতং এতেবাং শন্ধানাং ভূবি বিষয়ে উবিতং হিতমিতি বা সর্বাং বন্ধিত্যধান হৈ অধোক্ষ তব ক্ষেরনত্তঃ বহিঃ কিরদ্পি কিঞ্মাত্রমপি কিমন্তি ন কিঞ্চিদ্তীত্যধান অতঃ সর্বস্য অংকুক্ষিগতত্বন মুমাণি তথাছাং মাতৃবদপরাধাঃ সোচ্ব্য ইতি॥ ১২॥

কিঞ্ বিশেষভোহপি ঘত্তো মম জন্ম প্রসিদ্ধমিত্যাই জগত্রয়েত্যাদি। জগত্রয়তাত্তে প্রকাষে য উদধীনাং সংপ্রবঃ সংশ্লেষ তামিলুদে

বৈষ্ণবভোষণী।

কিঞ্চ মাদৃশৈং ক্রিরমাণোহণ্যপরাধ তারি ন ঘটেতৈব যততাদৃশানস্তকোটিএক্ষাগুনাথোহিপি ত্বল্যৎস্কৃপরা এতদৈকএক্ষাগুর্যপি মাতেবোদরে বিধার বিরাজ্য ইতি বিতীয়পুরুষভেদহিরণাগর্তাস্তর্গামি প্রহার বিশেষ পুরুষত্বেন ভৌতি উৎক্রেপণমিতি। অধোক্ষজেতি অনিযম্যতেরনাধাক্ষতং ,অক্রজমিক্রিরং সামার্থ্যং যেন হে ভাদৃশেতি মমেক্রিরজ্ঞাণি ত্বশতার মির মৃচ্চে দীনেহপরাধো গৃহীতব্য ইতি ভাবাঃ। কুক্রিশবেদনাত্র সমষ্টিজীবস্য স্ক্রদেহ হিরণাগর্ত্ত স্থূল দেহরূপ বিরাজো ব্যাপকোহচিত্তাশক্তিমর তাদেহ এব উচ্যতে॥ ১২॥

বিশেষতশ্চ স্থপমা পিতৃতামপি প্রাণ্ডেন ছয়া ক্ষন্তব্যমেবেতি বিতীয়পুরুষভেদান্তরানিক্ষবিশেষবিরাভ্তর্থামিপুরুষছেনাপি ভৌতি জগলিকা লগলেরস্য সাবরণজ্ঞাগুল্যান্তে প্রাক্তপ্রলয়ে তদবসানে ইত্যর্থ:। তত্র ব্রহ্মকরাসৌ যহদধিসংপ্রবস্যাদমৰশিষ্টমুদক্ষ ত্বেত্যর্থ ইতি তেরামভিপ্রান্থ:। বহা জগল্মস্য যোহন্ত: সর্ব্বাধোভাগ তার বহুদধি সংপ্রবোদকং গর্ড্তোদকং গর্ড্তোদাধ্য একার্ণব তারেব্রাধান ব্যাধ্যান্তরং। ব্রহ্মণা জন্মকালং ব্যাহ্মকরাদিকং ন বোধয়তি ইতি উদ্যাদ্য ভদানীং ভদ্যতং সর্ব্বং পুচরতি নালং ক্ষলদন্তকেন কমলং লক্ষ্যতে। বহা। নলিনে তু নলং মতমিতি বিশ্বকারালং কমলং। স্বাধে ভিছিত:। ভশ্বাৎ তুশবেনাঞ্জতো বিশেবং

क्रममर्जः ।

উৎক্ষেপণুমিতি। তত্ত্ব স্বস্য বিশেষতঃ পুত্রস্থমের স্থাপরতি॥ ১২॥ জগত্রয়েতি। পুনঃ সন্তুমেণ ডা্ড্যাং বৈশিষ্ট্যং বদরণি তৎপুত্রস্থমের স্থাপরতি॥ ১৩॥

विविधनाथहळावडी।

কিঞ্চ সমাণরাধো হক্ষানোচ্বো যত সং মাতেতি। বিতীরপুক্ষবেশ পদ্মনাতেন সহৈক্যং ভাবয়রাহ উৎক্ষেপণমিতি। পর্ত-গতস্য শিশোং পাদরোক্ষংক্ষেপণং মাতৃঃ কিমপরাধার ভবতি নৈব। অতীতি নাতীতি বা ব্যপদেশেন ভ্বিভং পরমতং বিধত্য সমত-স্থাপনসমূচিতোপপত্তিভিঃ সত্যাস্থেন মিথ্যাস্থেন বা স্থান্থিরীকৃতং বস্ত জগদ্ধাং কিয়দ্পি এক্ষভ্বনাস্থকম্পি কিং তব কুল্ফে রস্ত-ব ছির্ভি অমি স্বত্তরের অভ্যোমবাপি স্থ কুলিগভ্যাৎ প্রস্য মাত্রাস্থ্য অপরাধ্য সোচ্ব্য এব পিতাহ্মস্য জগতো মাতাধাতা পিতা-মহ ইতি স্বহ্নেরিত্যর্থঃ॥ ১২॥

্লছ প্রে হি নাতৃঃ কুজেককাছভি। , নতু নদা কুকাবেব চিঠতীতি চেকত জাহ। অগুন্রস্থাত্তে প্রকল্পে উদ্ধীনাং সংগ্রহ

তে অংশক্ত । গর্ভত শিশু জননীর জঠরে থাকিয়া যে পাদ বিক্ষেপ করে তাহাতে কি জননীর প্রতি তাহার অপরাধ হয় ? লোকে ভাব অভাব শব্দে অভিহিত যত বস্তু আছে ত্রাধ্যে কিঞ্মিত্র বস্তু আপনার ক্ষিত্র হাছিংম নহে, সত্ত্ব সমস্ত বস্তু আপনার ক্ষিত্রত হওরাতে সামিও আপনার ক্ষিত্র সম্ভাৱিত্ব জননীর নায়ন স্থাপনাকে স্থান্ত অপনাধ সহা ক্ষিত্রত হইবে॥ ১২॥

হে ঈশর। "ত্রিজগতের অত্তে অর্থাৎ প্রলরকালে যথন সাগর গণের পরস্পার সন্মেলন হয় তথন জ্বর্ম-স্পানি মানান্দের উদয় হুংনাভিদাল ছইটেড আজি বিনিগতি হয়েন? এই যে একটা প্রদাদ আনুছে ভাহা বিনির্গতো হজন্তি বাঙ্ন বৈ মুধা কিং রীশ্বর ত্বল বিনির্গতোহক্মি॥ ১৩॥ নারায়ণন্ত্রং নহি সর্বদেহিনামাত্মান্তধীশাধিললোকসাক্ষী।

• श्रीयत्रचात्री।

উদকে নারায়ণস্যোদরে নাভিন্তস্যা নালাৎ অবো বিনির্গত ইতি যা বাক্ সা ভাবন্ধুয়া ন ভবতি বৈ নিশ্চিতং তথাপি হু হে ঈশ্বর ত্বতঃ অহং কিং ন বিনির্গক্তোহন্দি নোৎপন্নোহন্দি অপিতু ত্বত এবোৎপন্ন ইত্যথ':॥ ১৩॥

তহি স্থাং নারায়ণস্য পুঞা: সমা কিমায়াতং তত্তাহ নারায়ণস্থমিতি। নহীতি কাকা স্থমেব নারায়ণ ইত্যাপাদয়তি। কুতোহয়ং নারায়ণ ইতি চেদত আহ সর্বদেহিনামায়াদি। এবমপি স্থাং নারায়ণো ন ভবদি নারা জীবসমূহোহয়নং আশ্ররো ষস্য স তথেতি স্থমেব সর্বদেহিনামায়্মসায়ায়ায়ণ ইতি ভাবা। হে অধীশ স্থাং নারায়ণো নহীতি পুনা কাকুঃ অধীশঃ প্রবর্তকঃ ততক্ত নারস্য অয়নং

বৈষ্ণবতোষণী।

বোধয়তি বিনাপি মাতৃব্যববধানমুংপল্লছাং। অতএব বিশবশচ অতএব নির্গত ইতি চির্মুদ্রান্তঃস্থিতিঃ স্চিতা। হে ঈখরেতি পুন-র্ডগবতি পিতৃদৃষ্টিমযোগ্যাং মত্বা॥ ১৩॥

- আকং তবৈব রূপং একং অতে। মুখ্যক্ত নারায়ণক্ত তবাক্ষভাদেব তক্তচ নারায়ণত্বং নারাশ্রমভেন তু গৌণমিত্যাহ তচ্চেতি। অতে। হচিন্তাশক্তৈয়ৰ তৰিগ্ৰহক্ত পরিচ্ছিন্নাপরিচ্ছিন্নছং নতু নারাশ্রমছেন নারপরিচ্ছিন্নছমিতি ভাবঃ। অক্তব্তৈঃ। তত্ত্ব তচ্চেতি জলাদ্যাশ্রমছ-মিতার্থ:। বহা। পুন স্তংপ্রস্তাবব্যাজেন তাদৃশে শ্রীক্লঞ্চ এব অবাস্তরপ্রকরণমিদং পর্য্যবসারয়তি অধীশ ঈশো মহৎ্স্রষ্টা প্রথম: পুরুষ: হে স্বরং ভগবস্বাত্তস্থাপুনেরি বিরাজমান। যথোক্তং বিতীরে। আন্দোহবন্তার: পুরুষ: পরস্তেতি। তৈব ধ্যাতঞ্চ। পরস্য ভূর: প্রকৃতিপ্রবর্তক: ষদ্য সহস্র শীর্ষেত্যাত্মকৌ শীলাবিপ্রহ: স আদ্যোহ্বতার ইতি। অতো ন্রাণাং তৃতীরপুরুষভেদানাং তত্তমূতস্থানাং তথা তত্তদণ্ড-,সংস্থিতানাং দিতীয়পুরুষভেদানাঞ্ সমূহে। নারং তচ্চ তৎসমষ্টিরূপো মহৎঅট্টের ততত্ত্বস্যাপ্যয়নং প্রবৃত্তির্যমাদিতি স দমের মুখ্যো নারায়ণ ইতার্থ:। অত: নর্বদেহিনামাঝা দর্বজৃতত্ত্তীয়: পুরুষ: তথাধিললোকদাক্ষী অওছ্বিতীয়পুরুষ:। তথা নরভ্জলা-র্নাৎ নরাজ্ঞাতানি তবানি ইত্যন্ত্সারেণ যে নর ভূবো মহ্দাদয়: তৎ সাহিত্যপাঠাৎ জলঞ্চ নর প্রভব্মেব ততো আপো নারা ইত্যাদ্য-কুসারেন তদ্ধপশ্চাপো য়ঃ কারণজ্লার্ণবস্তদাশ্ররভাথ। প্রথম পুরুষশ্চ যো নারারণ: স ভং হি নিশ্চিতং নাসি কিন্তু তত্ত্রপো নারারণ-ন্তবাদং দং পুনরদীত্যর্থ:। যথোক্তং। বিষ্ণোস্ত ভ্রীণি রূপাণি পুরুষাধ্যান্তথো বিহু:। প্রথমং মহত: প্রষ্ট্ দিতীরং দ্বওসংস্থিতং। তৃতীরং সর্ব্বভুতত্বং তানি জ্ঞাত্বা বিমুচাতে ইতি। অতত্তদক্ষোৎপল্লত্বাদপি তবৈব পুল্লো ভবেরমিতি ভাব:। এবমেব দ্বিতীয়ে। ভূমে: স্থরেত-স্বেত্যাদে কল্মা সিতক্ষকেশে জাত ইত্যাদে শ্রীবন্ধবাক্যে যা সিতক্ষককেশঃ যত্র ততত্বর্ণস্থচকে সিতক্ষকে কেশে দেবৈ দ্ছোঁ সোহপি যস্যাংশেন স অন্নত্য জাত: স্ত্রিত্যর্থ:। সিতক্তফকেশত্ব মোক্ষধনী রনারারণোপাথ্যানদর্শিতনানারশ্বিচ্ছবিময়তাং। তথাচ সহস্রনামভাব্যধৃতং ভারতীয়ং শ্রীভগবহচনং। অংশবো বে প্রকাশন্তে মম তে কেশসংক্ষিতা:। সর্ধক্রা: কেশবং তশারামাহ মুনি-সত্তযেতি। এবনেব প্রথমে। জগৃহে পৌরুবং রূপং ভগবান্ মহদাদিভিঃ। সভূতং বোড়শকলমাদৌ লোকসিস্কুলর। ষস্যাভ্রসি শরানস্য ষোগনিজাং বিভৰ্ত:। নাভাছ্ৰদাৰ্জাদাদীৰু কা বিশ্বস্জাং পতি:। বদ্যাবয়বদংস্থানৈ: কল্লিভো লোকবিন্তর:। ভবৈ ভগবভো রূপং

ক্রমসন্দর্জ:।

নারারণবং হবা জাধীশ প্রথমপুরুষদ্যাপ্যপরি বর্ত্তমানো নারারণত্বং। নরাণাং বিভীর তৃতীর পুরুষভেদানাং সমূহো নারং তৎ শীবিশনাধ্চক্রবর্তী।

একীভাব তত্ত্বকে। অৱস্থিতি অনো নিৰ্গতো হস্ত নবান্ধিতার্থঃ। সু ভো তাদপি স্বত্বোহংং ন বিনির্গতঃ অপিতু নির্গত এবে-ভার্যঃ॥ ১৩ ॥

ভর্মি বং নারারণন্য প্রা: ন্যান্তেন সম কিং জ্ঞাহ নারারণকং ন হীতি কাকা নারারণো ভবন্যেবেতার্থ:। হে অধীশ স্থানারনারণি দিওত। বিপ্তভাহিদিদ কংলনেকাংশেন স্থিতো শুলগদিতি দহুকে: সর্বদেহিনামান্ত্রানি আন্তর্যানিকালার্থা সালীচেতাত ত্বেকাংশ এব না হবগরাত ইতি ক্ষেব স ইতার্থ:। নম বন্ধরণ ক্ষেব্রি মিধ্যা নহে, কারেণ আনি কি আপনা হইতে উৎপন্ন হই নাই ? অর্থাৎ আপনা হইতেই আমার উত্তব হইরাছে। ১৩ ॥

ছে সুধীশ! স্পাপনি কি নারায়ণ নহেন? আমি নিশ্চয় কছিভেছি আপনিই নারায়ণ, বে

299

নারায়ণোহঙ্গং নরভূজলায়নাত্তচাপি সত্যং ন তবৈব মায়া ॥ ১৪ ॥

ञीभवचामौ।

প্রবৃত্তি র্যমাণিতি স তথেতি প্নত্মবাসাবিতি। কিঞ ত্মথিললোকসাকী অথিলং লোকং সাক্ষাৎ প্রশ্নসি অতো নারং অয়বে জানা-সীতি ত্মেব নারায়ণপদ্বাৎপত্তী ভবেদেবং ততু অভ্যথা প্রসিদ্ধনিত্যাশস্থাই নারায়ণোহস্থিতি। নরাত্ত্তা যেহথাঃ চত্বিংশতি-তত্বানি তথা নরাজ্ঞাতং যজ্জলং তদ্যনাদেখা নারায়ণঃ প্রসিদ্ধ সোহপি তবৈবাসং মৃর্টিঃ। তথাচ স্বর্গতে। নরাজ্ঞাতানি ত্বানি নারাণীতি বিহ্রপুধাঃ। ত্সা, তাভায়নং পূর্কং তেন নারায়ণঃ স্বৃত্ত ইতি। তথা আপো নারা ইতি প্রোক্তা আপো বৈ নর-

देवकृष्टाश्वा ।

বিশ্বদ্ধ স্বাম্জিতিং। পশুস্তাদো রূপমানত চক্ষা সহস্রপাদোর ভূজাননাত মিতৃত্বা স্ত্র প্রথম দেবং কোমারং সর্গালিত ইত্যাদিনা বাবিংশত্যবজারাংশ্চ প্রোচ্য রুফ্স্যাপি তদস্তংপাতিবেন সাধারণ্য প্রাপ্তে বিশেষমাহ এতেচাংশকলাঃ প্ংসঃ রুফ্স্ত ভগ্ বান্ স্থামিতি। এষামর্থ:। ভগবান্ প্রমপ্রধারতঃ:। লোকানাং ব্রহ্মাণ্ডানাং সিক্ষ্ম্যা হেতৃনা পৌরুষং রূপং জগুহে প্রাহ্শতার কথড়তং মহদাদিতিই সংভূতং মিলিতং অন্তর্ভূতি মহদাদিতবং প্রলয়াদো সোহস্তঃ শ্বরীরেহপিতভূতক্ষ্ম ইতি ভূতীয়স্তরাং। বোড়শকলা এ প্রিচ্পাড়া কালি বিল্লে সপ্তরুগ্র মহদাদিতবং প্রলয়ালা নবেত্যেতা মুখ্যা বোড়শ শক্ষ্ম ইতি ভক্তিবিবেকাকে: তাং বোড়শকলা বস্য তং। ইদমাদ্যং পুরুষ্রপমূক্ বিভীন্নমাহ যন্তান্তসীতি। ব্রহ্মান্তস্ত্রী তদহপ্রবেশেনান্তদি প্রলয়কালীনগর্বোদকে শ্বানান্য বস্য। কীদৃশালাভিত্রদাম্ভাদিত্যত আহ যস্যাব্যবেতি। যস্য নাভিত্রদামুক্ষ্য। কিং স্বরূপং পৌরুষং রূপং তবৈ প্রসিদ্ধে বিশুদ্ধবাথাস্থরপ শক্তিবিশেষাভিব্যক্তবাং তং প্রচুরমিত্যর্থ:। নাতঃ প্রং প্রমুষ্বতঃ স্বরূপমি তিতৃতীয়োকে:। তচোর্জিচ্চোতং বলবং প্রমানন্দরপ্রথং। কো হ্যোন্সিলিত্যাদি শ্রুষ্থে প্রসাক্ষ্য কিল্ডার্ড এত ইতি। স্বান্য পুরুষ্ব্য এতে কৌমার্স্গাদ্যাং অংশুক্লাঃ তিহিবেক স্বত্র তৈরের রুডঃ। ক্রক্তন্ত ভগ্রান্ তুপ্রো ভিল্নোপ্রনা। তিহিবেক স্বত্র তৈরের রুডঃ। রুক্তন্ত ভগ্রান্ তুপ্রেলা ভিল্নোপ্রনা।

দঃ পৌকমং রূপং জগৃহে ক্ষা এব দ ইত্যর্থ:। তত্রাপি স্বয়মান্থনৈব নতু তৎপ্রতিরূপত্বন দীপাৎ দীপবৎ এবঞ্চ স্বয়ং শ্রীস্বামিপাদৈরপি অথাহনংশভাগেন ইত্যত্র ব্যাথ্যাত:। অংশেন প্রুষরপেণ ভাগো মার্রা ভজনমীক্ষণং যেন তেন সর্বাথ পরিপূর্ণরপেণ ইতি বিব্যক্তিয়াপি তথাচ বক্ষাতে শ্রীবস্থাদেবেন যস্যাংশাংশভাগেন বিশ্বন্থিভিল্যোন্তবা ইতি। তৈরেব ব্যাথ্যাস্যতে চ। যস্যাংশঃ পুক্ষ শুস্যাংশা মার্যা ইত্যাদি। যথা ব্রহ্মসংহিতায়াং ক্ষান্তবে। যইস্যুকনিশ্বনিত কালমথাবলম্ব জীবন্তি লোমবিল্লা জগদগুনাথা:। বিষ্ণু মহান্ স ইহ যস্য কলা বিশেষো গোবিন্দমাদিপুরুষং তমহং ভজামীতি। তন্ত্রাং সাধ্তং নারায়ণোহঙ্গনিতি। দৃষ্টঞ্চ তত্রৈব তাবং সর্বের বংস্পালা ইত্যাদি। বক্ষাতেচ অলৈয়ব স্বদ্তেস্যেত্যাদে। অথ প্রকৃত্যমুস্র্যায়:। নহু মার্যিকজলান্তঃপাতেন তদপি

. क्रममसर्जः।

সমষ্টিরূপ: প্রথমপুক্ষ এব তদ্যাপায়নং প্রবৃত্তি ধন্মাৎ স:। অতঃ সর্বদেহিনামান্মা ব স্তৃতীয়পুক্ষো যশ্চাধিশলোক সাকী বিতীয়পুক্ষো যশ্চ নরভূজলায়নাৎ তৃতীয় পুক্ষবো নারায়ণ: সন্নসি কিন্তু-স স তবালং জং পুনরদীতাঁথ:॥ ১৪ ॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

বাং ক্ষনানা বুলাবনত্বঃ। সত্ নারশলোকজনহত্বায়ারায়ণনামেতাতঃ। কথমহমেব স ইতি তআহ। নরভূজনারনাং আপো নারা ইতি প্রোক্তা আপো বৈ নরহনবঃ। অয়নং তস্য তাঃ পূর্বং তেন নারায়ণঃ শৃত ইতি নিজকে ন রাছ্তজনবর্তিষাং যো নারায়ণঃ স তবালং বুদংশ্বাদিতি ভাবঃ। অততংকুলিগতোহণ্যহং বংকুলিগতএব। কিম্ব ফ্রেছাময়স্য নত্ ভূতময়স্যেতিছ্ আপনি সর্বে দেহির আত্মা এরূপ হইয়াও আপনি নারায়ণ নহেন এমত নহে, কারণ নার অর্থাৎ জীব সমূহ আপনার অয়ন (আশ্রয়,) অতএব সর্বে দেহির আশ্রয়ত্ব প্রযুক্ত আপনিই নারায়ণ। অপর হে দের! আপনি অথিল লোকের সাক্ষী অর্থাৎ সমুদায় লোককে সাক্ষাৎ দর্শন করিতেতিছন, ইহাতেও নারায়ণ শব্দবাচ্য,কারণ নার অর্থাৎ লোক সমূহকে যিনি অয়ন অর্থাৎ পরিজ্ঞান করেন তিনিই নারায়ণ। ভগবন্! নর হইতে উদ্ভূত যে সকল পদার্থ অর্থাৎ চতুর্বিংশতি তত্ব, তথা তাহা হইতে উৎপন্ন যে জল, তন্মীত্র অয়ন আশ্রয় হওয়াতে যে নারায়ণ প্রসিদ্ধ, তিনিও আপনার মূর্তি ইহা সত্যই আপনার মায়া নহে॥ ১৪॥

তচ্চেত্ত্বলস্থং তব সজ্জগদ্বপুঃ কিং মে ন দৃষ্টং ছগবংস্তদৈব হি। কিংবা স্নৃদ্টং হৃদি মে ভদৈব কিং মো সপদ্যেব পুন ব্যদর্শি॥ ১৫॥

শ্রীধরস্বামী

স্নব:। অয়নং তদ্য তাঃ পূর্বং তেন নাবায়ণঃ শ্বত ইতি। নহু মন্মুর্ক্রেপরিচ্ছিন্নতাং কথং ক্লাদ্যাশ্রয়ং অত আহ ভচ্চাপি সভ্যং নেতি॥ ১৪॥

অপরিচ্ছেদনেবোপপাদয়তি তচ্চেদিতি। জগদাশ্রয়ভূতং তব তবপুর্জ্বস্থমিত্যেবং যদি সং সত্যং স্যাং তহি তদৈব ক্ষণনাল-মার্গেনান্তঃ প্রবিশ্ব সংবংসরশতং বিচিত্তাপি ময়া হে ভগবন্ধচিত্তৈশ্বর্যা তাত্র কিমিতি না দৃষ্টং বাহাদৃষ্টং সভব বপুরস্কাকরণদৃষ্ঠাং চেওদা হুদ্যাপি কিমিতি নো ব্যদর্শি ন দৃষ্টং তদা এব তপঃ করণানস্তবং সপদ্যেব স্থদৃষ্টমতো মায়েব। অতন্ত্রু মূর্ত্তে দেশিবিশেষপরিচ্ছেশঃ সত্যো নভবতীতি ॥ ১৫॥

देवकवट्यायगी।

মনাকং কিমু জগদিব মায়িকং নহি নহীত্যাহ তচ্চ তবাকং সত্যমেব নতু মায়া মায়িকমিত্যর্থ:। অগীতি সম্ভাবিতমেবেদমিত্যর্থ:॥ ১৪॥
সম্ভাবনামেব দশয়তি তচ্চেদিতি। তত্ত্ব সং পারমাথিক সত্যং এব বপু র্জনন্তঞ্চেৎ তত্ত্বেৰ জগদিতি জগদাত্মকঞ্চেৎ তত্ত্বি জগদাত্ত জগদাত্মকঞ্চেৎ তত্ত্বি জগদাত্ত্বক্ষেণ্ড তত্ত্বি জগদাত্মকঞ্চেণ তত্ত্বি কং মায়া সমষ্টিকীবত্যা সর্প্রজ্ঞাল্যকেনাপি ন দৃষ্টং। তথা কিং বা স্থাদি তৃতীয়োক্তান্থদারেদেব দৃষ্টং বাশক্ষ্যাবিয়াৎ প্রশাধ কিছা বহির্ ভৌ সত্যাং নো ব্যদশীতি ॥ ১৫॥

ক্রমসন্দর্ভঃ।

उट्टिक्क मस्मिलामाहेकः॥ ১৫। ১७ i ১৭। ১৮ i ১२। २०। २० i

🖺 বিশ্বনাথচক্রবর্তী।

ভূক্তা তব বালবপু বাস্তদেববপুশ্চ সচিদানন্দময়ত্বেনৈব বণিতং তথা তচ্চাপাঙ্গং নারায়ণাথাং সত্যং সর্বাকালদেশবর্গি ওদ্ধসত্মাত্মক-মেব নতু বৈরাজ্যার্জপমিব মায়য়া মায়িক্মিত্যর্থ:। চকারাদন্যদ্পি মংস্যক্ত্মাদ্যঙ্গং সত্যং॥ ১৪॥

নমু নারায়ণস্বরূপং তদ্দদি শুদ্ধদ্বাস্থাকং তথি প্রাকৃতে গর্ভোদে এব পরিচ্ছিন্নং কুতঃ সদা দৃশ্যতে নথি সর্ক্ব্যাপক্ষ্য তস্য গর্ভোদমাত্রপরিচ্ছেদঃ সন্তবেং তত্ত তস্য তজ্জলস্ত্র্মেব ন নিয়তমিত্যাহ তং নারায়ণাঝাং বপুত্ব সজ্ঞাং সং বর্তমানং জগং যত তং জালস্থনেব চেৎ তথি তলৈব ক্মলনালমার্গেনাস্তঃ প্রবিশ্য সম্বংসরশতং বিচিত্বতাপি মন্ত্রা হে ভগবন্ধবিচিন্ত্যযোগ্যায়ৈশ্বর্য কিং ন দৃষ্টং। নমু তত্তত্ত জলপুব স্থিতং স্বা স্ক্তানান্ত্রমিতি চেং তদা স্থাং ধ্যায়তা মন্ত্র তলৈব হৃদ্যপি স্বা চুইং। তৎক্ষণএব তত্তাপি কিং প্ন ন ব্য দশাত্যত অন্বপ্তরে জলস্ত্রন পরিচ্ছিন্নমপি অচিষ্ক্র্যাশক্যা স্ক্তিকগতীক্তজগৎক্ষেনাপরিচ্ছিন্ন । স্ক্তিব দেশে কালেচ বর্তমানমেবাপি স্বনীয়যোগ্যায়া স্বাবেরণপ্রকাশাভ্যামেব দৃশ্যতে ন দৃশ্যতে চেত্যবগতং॥ ১৫॥

হে দেব! জগতের অত্রিয়ভূত আপনার ঐ শরীর কল্লান্তে জলশায়ী ছিল, ইহা যদি সত্য হয় তাহা হইলে আমি আপনার নাভিকমলের নালরূপ বলু যোগে আপনার অভ্যন্তরে এবিই হইয়া শতবংসর পর্যান্ত অন্বেষণ করিয়াছি, সে সময়ে কেন তাহা দৃষ্ট হয় নাই। যদি বলেন আপনার শরীর বাহ্ দৃষ্ট হইয়া পরে অন্তঃকরণ দৃশ্য হয়, তাহাতেও বক্তব্য এই, তথন আমি তাহা হৃদয়েতেও দেখিতে পাই নাই পরস্ক তৎকালেই আমি তপস্থা করিবামাত্র তৎকাণে স্বন্দররূপে দৃষ্ট হইয়াছে, তাহাতে উহা মায়ামাত্র এখনও এমত বোধ হইতেছে। অতএব আপনার ক্রির দেশ বিশেষে যে পরি- ক্রেদ তাহাও সত্য নহে॥ ১৫॥

२१४

অত্রৈব সায়াধমনাবভারে হৃদ্য প্রপঞ্চন্য বহিঃক্ষুট্ন্য। কৃৎস্নদ্য চান্তর্জঠরে জনন্যা মায়াত্বমেব প্রকটীকৃতং তে॥ ১৬॥ যদ্য কৃক্ষাবিদং দর্ববং দাত্মং ভাতি যথাতথা। তত্ত্বয়পীকৃ তৎদর্ববং কিমিদং মায়য়া বিনা॥ ১৭॥

वीधत्रवामी।

অপিচ যদি জনাদি প্রপঞ্চ: স্যাৎ তহি তেন তব পরিছেনে। ভবেৎ সতু মায়াবিলসিত ইতি ওরৈব দশিতমিত্যাই স্লোক-জ্বেণ। হে মায়াধমন মায়োপশমন অবৈবাবভাবে বহিঃক্টস্যাপি জঠরমধ্যে জনস্থাঃ প্রদর্শনেন॥ ১৬॥

নমু বহি: সত এবাস্কর্জঠরে প্রতিবিশ্বাহন্ত কুত: সর্জ্বণা মায়াত্বং তত্রাহ। যস্য তব কুক্ষো সর্ক্ষমিদং যথা ভাতি তৎ সর্ক্ষমিহাপি ৰহিরপি তথৈব ভাতি কিঞ্চ সাত্মং তৎসহিতং তত্ত্বাভিদিদং ছিম মায়য়া বিনা কিং ঘটেত। অন্তং তাব: ছিমি প্রতিবিদ্ধশেচদাহা-

বৈষ্ণবতোষণী।

অত তদি তবাদং ন জ্বাদ্যাশ্রয়ং নাপি জগদিতি নিশ্চিতং তত্র ত্বেবং দৃষ্টাস্ত ইতি ব্যাজেন পুন: শ্রীকৃষ্ণবিগ্রহমের প্রমত্ত ত্বেপ্রেন সাধ্যতি অত্রৈবেতি ত্রিভি:। নায়াধ্যনাবতার ইতি তৎসম্বন্ধাত্রং ন সোঢ়ং অঘাদীনামণি তৎসম্বন্ধাপাকরণদৃষ্টেরিতি ভাব:। তচ্চ যুক্তং স্বয়ং ভগবত্বেন পরাৎ পরত্বাৎ। তথাচৈকাদশে। নারায়ণে ভুরীয়াথ্যে ভগবচ্ছ্কশিক্তে ইত্যত্র ব্যাধ্যাতং তৈরেব। বিরাড় হিরণাগর্জণ কারণং চেত্যুপাধর:। ঈশস্য যত্রিভি ই নং ভুরীয়ং তৎপদং বিছ্রিতি। অস্য বহি: ক্ট্র্যা প্রপঞ্চস্য নিজাস্তর্জাঠরে জনস্রাভাং প্রতি দর্শনেনেত্যর্থ:। মায়াত্রং পুর্বোক্তং যন্তদীয়জ্বাদি প্রপঞ্চাশ্রম্বস্য নায়িকত্বং তদেব ব্যক্তীকৃতং। যহা। বিশেষেণ তাৎপর্যাং জগদিদং বহিবের ক্ট্রং নাম্ভরিত্যস্যার্থস্যেতি অথোহমুব্যৈর মনার্ভক্যা য: কশ্চনৌৎপত্তিক আত্মযোগ ইতি তট্মব স্বাভাবিক।চিস্ত্যশক্তিময়পরিচ্ছেদাপরিচ্ছেদনির্গাৎ দেবমায়াত্বস্য পরিহারত্বান্ত। শ্রীশুকেন নচান্ত ন বহি র্যস্য ইত্যাদিনা তাদৃশ্র নির্বাৎ জগত: স্বাভাবিকনের ত্বাশ্রম্বর্থন ন সন্তর্বতীতি ভাব:॥ ১৬॥

তদেবোপপাদয়তি যদ্যেতি। যদ্য দাব্রণদ্য ব্রহ্মাণ্ডদ্য কুক্ষাবিদং দর্বং দাত্মং তৎসহিতং ভাতি তৰু ক্ষাণ্ডমিহ এতদ্রপে ত্ব্যুপি ভাতি

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্ত্তী।

নম্ যদৈয়ৰ জগতোহন্তৰ্বিধি জলে তথপুঃ স্থিতং তদেৰ জগতৎকুক্ষো তিৰ্ছতীত্যসঙ্গতং। নহি গৃহস্যান্তৰ্বিধি মটে তদেৰ গৃহং তিঠে দিত্যতং শুদ্ধৰ ৰাষ্মক বপুৰি তিমিম্মানায়িকাদন্যদমান্ত্ৰিকাদন্যদান্ত্ৰ জগতবেদিত্যবসীয়তে। এবঞ্চ সতি ন বং মংকুক্ষিগত ইত্যাশক্ষ্য কুন্দিগতস্য জগতো বহিষ্ঠজগদৈক্যং বদন্ত্ৰৰ মায়িকত্বং প্ৰতিপাদয়তি দ্বাভ্যাং। অত্তৈবেতি হে মায়াধমন মায়েপশমক অস্য বহিক্টুট্যাৰ প্ৰপঞ্চ্যা ক্বংস্যাপি অন্তৰ্জঠনে প্ৰদৰ্শনয়েতি শেষং। জনন্যাং জননীং শ্ৰীয়ণোদাং প্ৰতীত্যৰ্থং। মায়াত্বং মায়েকত্বং
আতো হন্তৰ্কযোগমান্ত্ৰৰ ত্বপুৰ্জগদন্তবৰ্ত্ত্যপি সৰ্বজগদ্যাপকং যুগপদেৰেতি ধ্বনিঃ। তেন চ সাক্ষান্তবাপি কুন্দিগতোহহ্মধুনাপিবৰ্ত্তেইতি সাক্ষাত্ৰমপি মন্ত্ৰতন্ত্ৰপ্ৰবিঃ॥ ১৬॥

কু কিন্তু বহিষ্ঠবো র্জগতোরনরোঃ সর্ক্র পৈবাঁভেদাদে বৈকাং ঐক্যাদের কু কিন্তু স্টা মায়িক স্বমবধারিত মিত্যাই যস্য তব কু কৌ ইদং বিশং যথাভাতি তথৈব ইহ বহিরপি স্থিতঃ বিশ্বং ভাতি। নমু বহিঃস্থিতস্য বিশ্বস্য কু কৌ প্রতিবিদ্ধ এবায়ং তথাহ সাহায় স্বং-সহিত্যের। নহি দর্পণে দর্শণো দৃশ্যত ইতি ভাবঃ। তেন বহিঃস্থিতং মায়িকমের বিশ্বং স্বংক্র দৃষ্টং। স্বাীতি। যথা কু ক্ষিত্তং বিশ্বং স্বদ্ধিকরণকং তথা বহিষ্ঠমপি বিশ্বং স্বদ্ধিকরণক মিত্যুর্থঃ। তত্ত্বাহৈলক গুগাগদ্ধস্যাগ্রাভাবাৎ ইদং জঠরগতং বিশ্বং কিং

অপর হে মায়োপশমন! আপনি এই অবতারেই বহিঃ স্ব্যক্ত এই সমস্ত জগৎ প্রপঞ্চ আপনার জঠর মধ্যে জননীকে দেখাইয়াছেন, তদ্বারাও এ সকলের মায়াছকেই প্রকটকরা হইয়াছে। অতএব জলাদি প্রপঞ্চ সত্য না হওয়াতে তদ্বারা আপনার পরিচ্ছেদ সন্তা নহে॥ ১৬॥

ভগবন্! আপনার সহিত এই সমন্ত জগৎ আপনার,কৃষ্ণিতে যে প্রকারে প্রকৃষ্ণ পায় সে সকল বাহিরেও সেই প্রকারেই প্রকাশ পাইয়া থাকে, প্রভো! মায়াব্যতিরেকে কি আপনাতে এ সকল ঘটিতে পারে ? অতএব বহিঃস্থিত জগৎপ্রপঞ্চ আপনার জঠরমধ্যে প্রতিবিন্ধিত হইয়াছে ইহাপ্র অদ্যৈব স্বদৃতেহ্ন্য কিং মম ন তে মায়াস্বমাদর্শিত-মেকোহ্নি প্রথমং ততো ব্রজস্ক্রম্বহুদাঃ সমস্তা স্বাপি। তাবস্তোহ্নি চতুর্জা স্তদ্ধিলঃ সাকং ময়োপামিতা-

श्रीरतचामी।

বিলোমত্যা প্রতীয়েত নতু তদন্তি তব চাদর্শহানীয়স্য ত্য়ি প্রতীতি ন্স্যাৎ। অতঃ সর্র্বণা মিথ্যাত্মেবেতি॥ ১৭ ॥

অপিচ ন কেবলং জনন্যা মমাপি তথৈব দর্শিতমিত্যাহ অলৈবেতি। ত্বদৃতে তাং বিনা অস্য বিশ্বস্য মায়াত্বং ত্বয়া মমৈব তদপ্য-লৈয়েব কিং ন দর্শিতং কিন্তু দর্শিতমেব তথাহি একোহসীত্যাদি। তততো ময়া সহাধিলৈতত্বাদিভিক্ষপাসিতাতাবস্তু এব চত্ত্

देवक्षवरकायनी । .

তত্ত্বাদুত্তর্কথাঝায়য়া বিনা তদিদং কিং সম্ভবতি তেন ত্বপ্রস্থাভাবাৎ ন সম্ভবত্যেবেত্যর্থ:। তত্মাচ্চ নেদং তামিমপার্মার্থিকং সং ইতি ভাব:॥ ১৭॥

জনতা অহতবাহপ্যান্তামিত্যাহ অদ্যৈব ইতি। তৎপদেনাত্র দাক্ষান্তজ্ঞপং বালবংসচত্ত্রাদিলকণং দাক্ষান্তজ্ঞপমপ্যচ্যুতে প্রোবদাক্য জীড়ন্তং দদ্শে দকলং হরিমিতি। তাবং সর্প্রে বংসপালাঃ পশ্ততোহজ্ঞস্য তৎক্ষণাং। ব্যদৃশুন্ত ঘনশ্রামাঃ পীতকোশেয়-বাসস ইতি। সত্যজানানন্তানন্দমাত্রৈকরস মূর্ত্ত্য ইতি চোক্তছাং। অন্যেত্যনেন চাত্র তদ্যুত্চতেতে। আয়াদিন্তভ্রপ্যতিত্ব মূর্ত্তিমিন্তিক্ষান্তানী ক্রাচবৈঃ। নৃত্যগীতাদি নৈকাহৈঃ পৃথক্ পৃথগুপাসিতা ইত্যাদৌ স্বমহিধ্বন্তমহিভিরিত্যক্তছাং। সমায়েত্যনেন স্বাধিষ্ঠানব্রহ্মাণ্ডদাতে। বিৰক্ষিতঃ। তত্মত জ্লুতে ছাং ছং সাক্ষাজ্ঞপবালবংসচত্ত্র্ত্বাদ্যক বিনা যদ্ধিলং দ্শিতন মস্য জগত স্বাহিমধ্বন্তমহিনত্যা দ্শিতিস্য কিং মায়িকত্বং ন সম্যাদ্শিতং কিন্তু দ্শিতমেবেত্যুর্থঃ। অথ সর্ব্যেব তদ্শিতং

শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

মান্য। বিনা অপিতৃ মান্তিকমেব। অত্ৰ স্বজ্ঞানাম্ভবো মদমুভবাচ প্ৰমাণমতো মান্তিক জগন্মধাবত গ্ৰং স্বংক্ষিণত এব ভবামীতি মৃত্বি জািপাদে উৎক্ষেপ্ণং গঠগতদােতাাদাতঃ ক্মন্তেতি ভাবঃ ॥ ১৭ ॥

কিঞ্চ অংক্লিগতং জগংবহিঠং তবাদিপ্কবৃদ্য রোমক্পগতং চ জগংসহত্রং সর্ক্ষং মায়োপাদানকর্বাৎ মায়িকমেবেত্যেতাবংকাল-পর্য্যন্তং নয়া অবধারিতনেব। কিন্তু জতর্ক্যনহামহৈশ্বগ্যা তব অদীয়ন্তর্ক্ষণভ্যান্মকং চিনায়মপি জগংসহত্রমন্তীত্য দৈয়বাহৃত্ত-মিত্যাহ্ অদৈয়বাদ্য মন্ত্র্মহিননি মন্ত্রিদ্য জগংসহত্রদা কিং অদৃত্তে জগংসহত্রদার কিং বস্তু অদিনাভ্তং অপিতু সর্ক্মেব অংশরূপভূত-মেবেতার্থ:। অতএব মন মাং প্রতিতে তায়া অদা ন মায়াজং আদেশিতং কিন্তু চিনায়জমেব দর্শিতমিতি ভাব:। কৃত ইত্যত আহ একোহদীতি প্রথমমেকজ্মদি। ততঃ স্বরূপশকৈয়ব ব্রজস্ক্রদো বালা বংসাং দমন্তা অপি অমেবাভূ:। ততো যোগমারের তানাছাদ্য প্রকাশিতাং স্বরূপশক্তিম্যাশ্চতুর্ আত্মভূত্য। কীদৃশাং অথিলৈরাজ্মাদিন্তর্পপর্যুত্তিশিক্ষরের ময়া মাদৃশেন ব্রজ্ঞাপি চিনায়েইনবোলালিতাং স্তত্শত তাবন্তোব জগন্তি চিনায়ব্রদানান্ত্র্য। তত্ততো যোগমারের অদিক্রমা তান্ সর্কানাছাদ্য প্রকাশিতং অপরিমিত্বেশিল্যম্পমং বা ব্রজ্ঞ পূর্ণং অলম্বমেকং শিষ্তে সম্প্রত্যাপ মন্ত্রাগাৎ যোগমায়মা মন্ত্রীঃ প্রত্যানিত্তমেব ভবান্ বর্ততে ইত্যর্থ:।

অত্র ব্যক্ত্রিতি নির্দেশিন ব্রজ্মহন্দাদীনাং জগন্তানাং ভগবতা মায়াশক্তিং বিনৈবাবিতাবিত আচিন্তর্ম্বম্বর্ধানীয়ং মায়্রা

বলিতে পারা গেল না, কারণ তাহা হইলে আপনি আদর্শ স্থানীয় হইয়া পড়েন তাহাতে আপনাতে প্রতীতি হয় না, স্বতক্কাং জগৎপ্রপঞ্চ মিধ্যামাত্র ॥ ১৭ ॥

প্রভো! আপনি যে কেবল জননীকেই মারা দেখাইয়াছেন এমত নয়, আপনা ভিন্ন এই বিশের
মায়াছ আমাকেও কি দেখান নাই? অদ্যই দেখাইলেন,তাহার নিদর্শন এই যে,প্রথমে একাফী ছিলেন,
তাহার পর আপনিই সমস্ত ব্রজবাসী বান্ধব এবং সমুদায় বৎস হইলেন, আমি সে সকলকে আবার
চতুতুজি নিরীক্ষণ করি, তদনস্তর আমি অথিলতত্বাদি সহিত উপাসনা করিলে সেই সমস্ত ব্যক্তি চতু-

ন্তাবন্ত্যের জগন্ত্যভূন্তদমিতং ত্রহ্মাদমং শিষ্যতে ॥ ১৮॥
অজানতাং তৎপদবীমনাজন্যাস্থাত্মনা ভাসি বিতত্য মায়াং।
স্ফাবিবাহং জগতোবিধান ইব স্বনেষোহস্ত ইব ত্রিনেত্রঃ॥
স্থারেষ্ ষিদ্বীশ তথৈব নৃষ্পি তির্যাক্ষু যাদঃস্থপি তে হ্জনস্য।

अध्यक्षामी।

অপি জগন্তি বন্ধাণানীতি প্রাগহকমণি দৃইনিতি জ্ঞাতবাং॥ ১৮॥

নমু ব্ৰহ্মনৃত্ব ময়া দৰ্শিতং শুদ্ধমেৰ চৈতন্যং কথং প্ৰপঞ্চবং মায়েত্যুচাতে সতাং কিন্তু অদিতীয়ে দ্বি নানাদং গুণাৰতাৰ মৎস্যা-দ্যবতাৰ্কৌদৰ কাৰ্য্যবশেন স্বতন্ত্ৰমায়ানিবন্ধনমিত্যাহ স্লোকন্বয়েন অজানতামিতি ত্বপদবীং দ্বস্থন্ধপং আলানতাং অনাদানি প্ৰক্লতৌ

বৈঞ্চৰতোষলী।

বির্ণোতি একোহদীত্যাদিনা। তত্র, মারিকামারিকদর্মদর্শনাদ্যস্তঃস্থিতং তবৈব কজপ্রের পূর্ণং ব্রন্ধেত্যপি দর্শিতং প্রস্নাক্ষণাক্রান্তদাদিত্যাহ ব্রন্ধান্তঃ শিব্যত ইভি অ্বস্থাদেন শাক্ষাস্তরপ্রসিদ্ধং বন্ধু ল তদশ্যেতদেব ইতি দ্যোতিতং। ন স্থানতোহপি প্রস্যোত্যশিক্ষং সর্বাব্র হীত্রি ক্লাব্রাং বিক্যান্তেচ স্বয়নেব অহো ভাগ্যমহোভাগ্যমিত্যাদি॥ ১৮॥

ভাষের গুলাবজার দিব বিধানে পালনে এব ইব এতংকার্য পরিছিল্ল ইব পালনমাত্র কর্তেবেতার্থ:। বিধোতনৈ লাল ক্রন্ধানিক ক্রানিবজানোকির ক্রিয়ালার কর্তেবেতার্থ:। বিধানে পালনে এব ইব এতংকার্য পরিছিল্ল ইব পালনমাত্র কর্তেবেতার্থ:। বিধানে পালনে এব ইব এতংকার্য পরিছিল্ল ইব পালনমাত্র কর্তেবেতার্থ:। বিধান প্রকর্তনার ক্রন্ধানিক বিদ্যালিক বিধান বিধান ক্রিয়ালিক বিধান বিধান ক্রিয়ালিক বিধান বিধান ক্রিয়ালিক বিধান বিধান ক্রিয়ালিক বিধান বিধা

প্রীবিখনাথচক্রবর্তী।

অভূরিতামুক্তে: ঘদৃতে কিমিত্যুক্তেশ্চ জগতান্ত স্থতরামেব ॥ ১৮ ॥

হুৰ্গমনহিমন্তব চিম্মনলগতাং বার্তা দ্রে তাবদান্তাং কহিপুথানাং মতে তু তমপি মারোপাধি মারাময় এব তবসীত্যাহ। অধানতামিতি বংপদবীং বংপ্রাপকং বন্ধ ভক্তিযোগমলানতাং জানিমানিনাত্ত মতে তমনাত্মনি প্রকৃত্তে ক্রি এব মাহৈত্ব ত্বং আত্মনৈব স্বাতত্ত্যেনৈবৈতি তব লীবাহিশেশং। মারাং বিততৈয়ব ভাগি আকারপ্রভাগপানারবদ্দেন ভাতো ভবসি। প্রতী মজো-ভণেন বর্ধা অহং। বিধানে পালনে স্বেন এব বং বিক্সুরিব। অত্তে তম্সা ত্রিনেত্রো কল্ল ইবেতি। নিরাকারস্যাপ্যাত্মনা মারিকারোঃ বধা ব্রহ্মবিক্সভাত্তথা মারিকমেব জলত্বং নারারগ্রপং অবতারান্চ সর্কে মারিকরূপা মার্বিয়ব বংস্বালচত্ত্রভ্রাদীন্ ক্রিকান্ ম্বরিয়ানৈতি তে প্রাহ্রিত্রথং॥

স্পততৈঃ স্বতকানাং পরাজ্যাতাবার্থং বং স্বপদ্ধীক্ষাপনং প্রায় গুদর্থনেব তব সর্কেহ্বতারা ইত্যাহ স্বরেদ্বিতি। স্বস্তামসাধ্নাং বয়বেব জ্ঞানবন্ধ ইতি বো দুটোমধন্তদ্য নিশ্রহায়। স্তাঃ ভক্তানাং স্বীয়স্চিদানন্দময়রপঞ্গণীসাম্বতাবনয়া সম্প্রহায়। যত্তকং।

পুল হবিয়াও তত সংখ্যক ব্রহ্মাও হয়। একণে অপরিমিত অষয় ব্রহ্মমাত্র অবশিষ্ট প্লাছেন ॥ ১৮ প্রতা। আপনিই প্রকৃতিত্ব আত্মা, যে সকল ব্যক্তি আপনকার স্বরূপ জানে না তাহাদের নিকট প্রাপনি স্বত্ত্ত্ত্ত্র প্রায়া বিস্তার করিয়া প্রকাশ পাইতেছেন, যেমন অগতের স্তিতে আমি, পালনে আপনি, সংহারে ত্রিলোচন প্রকাশ পান। ছে ইশ। হে প্রতা। হে বিধাতঃ। জন্মরহিত হইয়াও আপনি দেব, ঋরি, মনুষ্য, তথা সমূহ তির্যাক্ যোনিতে যে জন্ম তাহা অসং ও চুর্নাল্ডনের নিগ্রহ এবং

জন্মাসতাং তুর্মদনিগ্রহায় প্রভা বিধাতঃ সদম্গ্রহায় । ১৯॥
কো বেভি ভূমন্ ভগবন্ পরাস্থান্ যোগেখরোভীর্ভবভজ্রিলোক্যাং।
কাহো কথং বা কতি বা কদেতি বিস্তারয়ন্ জীড়িদি যোগমায়াং॥ ২০॥
তত্মাদিদং জগদশেষমসংস্ক্রপং স্বপ্লাভমস্তধিষ্ণং পুরুত্থেছঃখং।

श्रीभव्यामी।

স্থিত আয়ৈর স্বং **আত্মনৈর স্বাভয়ে**গ সায়াং বিতত্য ভাসি কথং জগতঃ স্প্টাবহমিব ব্রহ্মের বিধানে পালনে এব স্বমিব **অ**স্থে ত্রিনেত্র ইবেতি॥১৯॥

নমু স্বাতন্ত্রে কৃথং কুৎসিতের মৎস্যাদিষু জন্ম কথং বা বামনাদ্যবতারে যাক্রাদিকার্পন্যং কথং বা অন্মিরবতারে ক্লাচিন্তরপলায়-নাদি অত আহ কো বেতীতি। অষ্টর্য: সংস্থাধনৈ চুজে র্থমেবাহ ভূমরিত্যাদিভি:। তব উতী লীলান্ত্রিলোক্যাং কো বেত্তি ক বা কথং বা কতি বা কদা বেতি অচিন্তঃং তব সারা বৈভবমিতি ভাব:॥ ২০॥

নতু ভবতু অবভারাণামচিন্তামহিমা প্রণঞ্চ্যা তু অসতে কথং স্তপ্রতীভিরিতি ইমাং আশ্ছাং স্পরিকরামুপসংহরন্ পরিহরতি

বৈষ্ণবতোৰণী।

ভবেৎ এব বৈলক্ষণামিতি কিন্তু মায়াশক্ষ স্বরূপশক্তিবাচিত্বেনাপি প্রতিপাদয়িষ্যমাণবাত্তক্ষতস্বস্থ্যের দশীয়-ষ্যুতে ॥ ১৯ ॥

যশ্বাদেবং ছমেবৈর সর্বাকারণং তন্মান্মায়াতঃ প্রধানতঃ উদ্ভবৎ প্রশীনং তবচ্চ ছয়োব ছামাপ্রিত্যৈব সদিব। ছদীয়ং স্বরূপনিবং নিজ্যাধ্যাসং বা যৎ সম্বন্ধ তদিবাবভাতি ছদীয়তত্তৎসভয়ৈব যৎ কিঞ্চিৎ তত্তৎসত্তাং প্রাপ্নোতীত্যর্থঃ। মায়ায়া অপি ছচ্চজিত্তেন

🕮 বিশ্বনাথচক্রবর্তী।

সন্ধং নচেদ্ধাতরিদং নিজং ভবেদিত্যাদি॥ ১৯॥

নত্ব ক্রঞ্ম্য মম ভূভারংরণার্থমেব জন্ম রামস্য রাবণবদার্থমেব শুক্লাদ্যবভারগণস্য তত্তৎসমন্বর্ধপ্রপ্রবর্তনার্থমেবেতি প্রিদিন্ধ ন ত্ব জ্ঞানিমানিনাই হুম দনাশার্থং। সভ্যং। তব প্রাহ্বভাবাদিনীলানাং কুত্র কুত্র বিষয়ে কিং কিং প্রেয়েজনং কদা কদা বা কিন্নত্যো বা তা ইতি কার্থ না জাতুং কোহপি ন প্রভবতীত্যাহ কোবেজীতি। ভূমন্ হে বিশ্বব্যাপকানস্তম্ভতি। হে ভগবন্ ভূমত্বেহপি বউদ্বর্ধ্যপরিপূর্ণ হে পরাত্মন্ ভগবত্বেহপি পরমাত্মন্তর্কা। হে বোগেশ্বর যোগমান্ত্রবাহ্মভাব্যমানভূমত্বাদিমহামহৈশ্ব্য। উতী-জন্মাদিনীলাঃ ত্রিলোক্যাং ত্রিলোক্যা মধ্যবর্তিনীলালাঃ কো বেত্তি ন কোহপি। যতঃ কাছে। ইত্যাদি নহু তবানত্তা এব সূর্ত্রো বিশ্বব্যাপিকাঃ ষ্টেড্রগ্রহত্যঃ পরমাত্মন্তর্কা নতু ভৌতিক্যঃ ত্রেলোক্যান্তর্বর্তিনীরের ভক্তবিনোদনার্থা লীলাই কুর্বত্যঃ সর্ব্বা এব স্টের্ব্ব ব্যাপদেব জীড়ন্তীতি কথং সম্ভবেদিত্যত আহ বিস্থারন্ত্রিতি। অচিন্ত্যশক্ত্যা বোগমান্ত্রব তত্তহ্পাসকভক্তান্ প্রতি ভাসাং বর্থা সমন্ত্রং প্রকাশনাব্রণাভ্যামেব জীড়ানির্বাহ ইত্যর্থঃ। ২০ ॥

তত্মাৎ ইদকারাম্পদং জগদেব স্থায়িকং মধ্যমপরিমাণবজেহপোতৎপরিচ্ছেদকং ওছপুত্ত গুদ্ধবাস্থকমেবেতি প্রকরণমুপসংহরতি

সাধুদিগের প্রতি অনুগ্রহনিমিত্তমাত্র ॥ ১৯ ॥

হে ভূমন্! হে জগবন্! হে পরাত্মন্! হে যোগেশ্বর! ত্রিলোকীমধ্যে কোন ব্যক্তি কোথায় কি প্রকারে কর্ত এবং কবেই বা আপনার উতী (লীলা) জানিতে পারে?, ফলতঃ আপনার আজাবৈভব অচিস্তা! আপনি যোগমায়া বিস্তার করিয়া স্তাই ক্রীড়া করিতেছেন ॥ ২০॥

অভানা অসহ স্বরূপ, স্বপ্ন তুল্য, প্রতিভাস খূন্য, ছঃখ বছল, এই স্বশেষ জগৎ নিভা স্বশ্ত,

ছয়োৰ নিত্যস্থ বাধতনাবনন্তে মায়াত উদ্যুদ্ধি য়ৎ সদিবাৰভাতি॥ ২১॥

शिवतंत्रामी।

ত্মাদিতি। অন্তর্ধিষণং নিরস্ত্রপ্রতিভাসং মধ্যের উদ্যুৎ উদ্ভবৎ অপি ধং নশাং। স্বাদেবভূপেলকণ্মেতং। নিতামিব স্ব্যাদিব

বৈক্ষৰতোক্ষী i

তদাশ্রয়তানাত্রতঃ স্কারাদিতি ভাবঃ। তানুশ্বনাতিবেকেতু অসংস্করণং শণবিধাণ্ডুল্যং অন্ধ্রেছিল অদস্ত্রী স্থপ্লাভং স্থিরার্থ-প্রাপ্তাভারাৎ তত এবাত্তদিয়ণমিত্যাদি নিত্যা স্থধবোধরূপাচ ধেয়ং পরব্রশ্বভাবেন নির্মীতা তত্ব তংশ্বন্ধণে স্ভিদানন্দরূপায় ক্ষারাক্লিষ্টকারিণে ইতি তাপনীঞ্চিহ্যণীর্ধপঞ্চবাত্রয়েঃ। অত্র একদেশস্থিতদ্যাথে র্জ্যোৎকা বিস্তানিণীত্যাদি দর্শবিষ্যমাণ্রিফু-পুরাণবাক্যং বৈধর্ম্যাচ্চ ন অপ্লাদিবদিতি বেবাওহত্ত্রঞ্চ বিচার্য্যং অতৈতদ্পুক্তাং ভবতি মায়াশব্দেন ক্টিল্মিপ্যাভিব্যঞ্জকঃ শিক্ষাবিশেষ উচাতে কচিন্দুর্বিতর্কসতাব্যঞ্জকশক্তিবিশেষোহপুচোতে অত্র প্রথমং ইক্রজালপর্যাদ্বন্তেদ্বিক্তেরু দুষ্ট: সূচ স্বপ্রতাাণিতজ্লাদিনা তেষাম্ভ ন ল্লাং করোতি স্বাশ্রমান্যানাহকরাং। অন্যেষাঞ্চাপাতমাত্রে ভ্রমেহপি ন দুষ্ট্যাদিকং হয়তি মুগতৃষ্ণাভূলাত্বাং। বিতীয়ন্ত্র মুনিদেবাদৌ শ্রতঃ। যথা তৃতীয়ে খ্রীসনকাদিবৈকুপ্রগমনে। তদীয়বোগমামাশশুং স্বামিতি ব্যথাতঃ স চায়ং ন পুর্বভ্ন্যঃ খ্রীকর্ত্ব-মানীনাং তৎক্ষিতবিহারবিমানাদিভিঃ স্বার্থকরত্বাৎ ত্রীপ্রহায়ানীনাং যুদ্ধানৌ শত্রুছেলাদিদর্শনাক্ত। সোহরং মুজাদিযু তপত্মদি-ময়: শ্রীভগবতি তু স্বাভাবিক:। যথা। সর্বভূতেরু সর্বাত্মন্ যা শক্তিরপরা তব। গুণাশ্রমা নম স্তব্যৈ শামতায়ৈ সুরেম্বর ইতি শ্রীবিষ্ণু-প্রাণোক্তায়া অপরাধ্যশক্তে। অন্ধান্ধানী ক্জতে বিশ্বমেতদ্মিংশ্চান্যো মাননা সংনিক্ষত্ক ইত্যাদি শতে মানাখ্যনা ক্থিতনা স্বাভাবিক্তমনিধ্যাব্যঞ্জকতং বিষ্ণুপ্রাণ এব দর্শিতং। শক্তয়ং সর্মভাবানামচিন্ত্যাক্তানগোচরাং। অভোভো ব্রহ্মণন্তান্ত সর্গাদ্যা-ভাব শক্তমঃ। ভবস্তি তপতাং শ্রেষ্ঠ পাবকস্য যথোঞ্চতা ইতি। একদেশস্থিতস্যাগে র্জ্যোৎসা বিস্তারিণী যথা। পরস্য বন্ধণঃ শক্তি-ন্তথেদমখিলং জগৎ ইতি চ। মাধান্ত প্রকৃতিং বিদ্যান্তায়িনন্ত মহেশ্বরং ইতি প্রতিশ্বেন প্রভাবনাত নতু ভৎ পর্যান্তঃ বিদ্যাদিতি ভাপনতাংপর্যাত্যাংনুদ্য বিধেয়রপ্রাপ্তে: পর্যায়মাত্র কথনে লক্ষণভাতাবাজ্ঞানাসিদ্ধে:। মায়িনস্ত মহেশর্মিত্যত অনুদ্য বিধেয়ন্ত্রনার লব্দেশ্ট। কিন্তু মান্নিং মহেশব্রমিতি মহেশব্রস্য মান্নরাশ্রিতন্তং বোধন্নতি। ততশ্চ মহেশব্রস্থরেলং তদ-কৃত্রিমং-চেত্যায়তি। ইল্রো মায়াবান পুরুষ: শূর ইতিবং। মায়ায়া বহিরলত্বেংপি স্বাভাবিক্তমেকদেশস্থিতস্যাগেরিভি দৃষ্টাস্থেনৈব লক্ষঃ। মারামা বহিরদ্বতে নতদোবেণ মহেশ্বরতং লিপ্তং স্যাং। যথোক্তং প্রথমে শ্রীমদর্জ্জনেন। ত্বমান্যঃ পুরুষ: সাক্ষানীশ্বর: প্রকৃতেঃ পর:। মায়াং ব্রাদস্য চিচ্ছক্ত্যা কৈবল্যে স্থিত আত্মনি ইতি। সেরমেব চিচ্ছক্তি: পরাত্মেন বিষ্ণুপ্রাণে প্রোক্তা। যাতীতগোচরা বাচাং মনসাঞ্চ বিশেষণা। জ্ঞানিজ্ঞানপরিচ্ছেদ্যা বন্দে তামীশ্বরীং পরামিতি। অস্যাএব বরাত্বেনাম্ভরক্ষত্বং পর্মাচিস্কার্যং বিবিধ-বৃত্তিত্বং মহেশ্বরতাপর্য্যারকত্বমপ্) দিটে:। ন ভদ্য কার্য্যং করণঞ বিদ্যতে ন তংসমশ্চাভাধিকশ্চ দৃশ্রতে। পরাদ্য শক্তি বিবিধৈব শ্রমতে স্বাভাবিকী জ্ঞানবলক্রিয়াচেতি। অত্ থলু ন তংসমশ্চাভাধিকশ্চেতি পরাত্তাবোণোপজীব্য ব্রস্তরাভাবজ্ঞাশিত্ত স্বাভাবিকত্বন্য প্ৰমাচিস্তাত্বন্ত চ বোধকং। তৃতীয়ে শ্ৰীদনকাদিবৈকুঠগননে ধোগমায়েতি নিৰ্দিষ্টা চিচ্ছক্তিত্বেন স্বানিভি ব্যাখ্যাতা তববাদিভিশ্চ স্বভাষ্যে বোশ্মায়াচ তথেচ্ছাশক্তিরেব চ। মায়াশকেন ভণ্যক্তে শক্তবার্থবেদিভিরিতি। শক্মহোদ্ধিমুদাস্বত্য স্বরূপভূতরা নিত্যশব্দ্যা মায়াথ্যরা যুতঃ। অতে। মায়ামরং বিষ্ণুং প্রবদৃত্তি সনাতন্দিতি প্রতিমপি প্রমাণীকৃত্য যোগমারাশব্দুব-ন্মায়া শব্দোহপ্যেত্বাচিত্বেন দক্ষত:। শ্রীরামাগুজ্চরগৈশ্চ মারা বয়ুনং জ্ঞানমিতি নির্ঘণ্টস্থিতপর্য্যায়শ্র্পাঃ স্বভাষ্যে লিখিতা:। তৃতীয়ে স্বামিভিশ্চ সা বা এতস্য সংস্কটু: শক্তি: সদসদাজিক। মায়ানামেৰেত্যক প্ৰষ্ট্ দৃষ্ঠাহসদ্ধান দ্বণেতি। আল্লেছাহুগতাবাল্লেত্যকা-স্থেচ্ছামারেতি। কালব্ত্তাাতু মায়ায়াং ভণম্যামধোক্ষা। পুক্ষেণাত্ম ভ্তেন বীর্যামাধত বীর্যান্। ততো হভবকাহ্ত্তমব্য-ক্তাং কালচোদিতাদিত্যব্যক্তমণি মায়াশন্দেন বোচ্যতে ম। প্রায়োমায়ান্ত মে ভর্তু নান্যা মে ইপি বিমোহিনীত্যাদৌ মোহিনী শক্তি-রপি। স্যাৎ ক্বপাদস্ভয়োর্মায়েতি বিশ্বপ্রকাশে। মারা স্যাচ্ছাম্বরীবুরোরিতি তিকাগুলেষেত। কুণাদরোহপি তংপর্য্যায়াঃ

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

তশাদিতি। স্থান সার্ধকালিকসন্তারহিতং শর্মপং যস্য তং। অতুএব স্থাতং স্থান্মজ্ঞানবদলকালনঠি। নতু স্থাপ্লিকবন্তবদস্য জগতোমিধ্যান্ধং ব্যাধ্যেন্ধং প্রধানপুজ্যোং নরদেবস্ত্যক্তদিতি সপ্তমোক্তোং সত্যং হৈর্বদং বিশ্বমুক্ততেতি মাধ্যভাষ্যপ্রমাণিতৃ-

নিত্য জ্ঞানরপী অনস্ত ষে আপনি, আপনাতে মায়াদারা উদ্ভূত হওয়াতে যদিও শৈষে বিনশ্বর, তথাচ

একস্থমাত্রা পুরুষঃ পুরাণঃ সত্যঃ স্বয়ংক্যোতিরনস্ত আদ্যঃ।

शिषद्ववामी।

ৰোধনমিব চ অধিষ্ঠানভূত্যা তব ওলৈতথা তথা ভাতীতার্থ: ॥ ২১ ॥

ত্বেৰ তু নতা ইতাহ এক শ্বিতি। একশং সতা: কুত: আত্মা দুল্যমনতাং দৃষ্টং ন চাত্মা দৃষ্ঠ: অত: সতা: কিঞ্ য্ধিকাৰৰং তদ-সতাং নচ ব্যি জ্ঞানয়ে। বিকাৰা: সন্তীতাাহ আদা: কাৰণং অভান ৰক্ষ আদাৰে, হেতু: প্রাণঃ স্প্রাদি কার্যাং পূর্ব-মণি বর্তমান ইতার্থ:। অন হেতু: পুরুষ ইতি। তথাচ শ্রুতি:। পূর্ব্বেষ্ট্রেইাসমিতি তৎ পুরুষসা পুরুষম্মিত জ্লান্তরাতিত্বলক্ষণং বিকারং বানষ্তি নিতা ইতি সন্তিন ইতার্থ:। পূর্ণ: অক্স প্রথ: অক্সর: অমৃত ইতি চভূতি: পদে: ক্রমেণ বৃদ্ধিবিপরিণামাণক্ষয়

देवकवरकायगी।

দৃশ্যতে। অতৈব ত্যাং ত্যাবদৈশকং ইত্যাদে তছেকেন প্রতাবদাত্রমজ্ঞিতং সত্য তৎ প্রকাশনেহপি দোষাবিশেষাৎ দৃষ্টান্তেচ তাদৃশ্বাৎ তদৈবং তত্র তর ব্যাবদং মারাশ্বাে বােলনীয়ঃ। প্রীবামিবাাবাা চেতি সর্ক্ষে সমন্ত্রসং। অত্য প্রকরণে মারাশ্বেন ত্ত্ত-ক্ষণজ্ঞেরবাভিধানং। তত্বজ্ঞং। মংস্থানি সর্ক্ষভূতানি নচাহং তেববস্থিতঃ। নচ মংস্থানি ভূতানি পশ্য মে বােগমৈশ্বং ইতি। অতাে যজে বহু স্পর্ণো নান্তি তত্র তস্য হিত্তং মিথােতি মিথাাব্যাপি তব্যাথাাতং যুক্তং। কিঞ্চ যা প্রাধানজিক্ষেন উক্তা দৈব বৈকুপ্রচাদি স্বরূপবিভূতিবান্তিকা। বথা ন মত্র মারা কিমুতা পরে হরেরহত্রতা যত্র হ্বরাহ্রার্চিতা ইতি বিতীরে। দর্শরাদান লােকং স্বং পােপানাং তমসং পর্মিতাতাের ইতীরেশে তর্কা ইত্যাদিকং স্তাজানেত্যাদিকঞ্চ পূর্বতে। এতক্ররী বিভূতিস্চানশ্বা। বধা বিতীরে তত্তিব । নচ কালবিক্রম ইতি শ্রীবিঞ্পুরাণে। কলা কাঠা নিমেবাদি কালস্ত্রস্য গোচরে। বস্য শক্তি ন ভ্রম্য প্রাণীবৃত্ত স্বর্গাত্তাংশাংশে বিশ্বশক্তিরিয়ং হিতেতি। সর্কাদ্যা ভাবশক্তর ইতিচ। একার্যশেচ। এবা মারা ভগ্বতঃ স্কি বিভাক্তবানিশীতি তদেবমপি বথাহ্ব বিবেচনীরং॥ ২১॥

পুনরবাস্তর্থকরণং তথৈবোপসংহরতি এক ইতি। যশারারারণ অমিত্যাদি একোংসীত্যাদিচ ভশাৎ সপানিকবলোংখং অবেক এবাদ্ধা সর্ব্বোং প্রাণফিকাপ্রাণফিকানাং মৃশ্যরপং। ভমেকং গোবিদ্দং সচিচদানকবিগ্রহং ইতি সাকাৎ প্রকৃতিপরো বোহর-মাদ্ধা গোপালঃ কথং অবতীর্ণো ভূম্যাং হবৈ ইতি গোপালভাপনী শ্রুতে:। বক্ষ্যতেচ সর্ব্বোধেক ভাবানমিত্যাদি। কৃষ্ণমেনমবে-হিত্তমিত্যাদিচ। তত্তাত্মহমের সাধরতি পুরুষ ইত্যাদিনা তত্ত্ব পুরুষো বোৎসাবৃত্তমং পুরুষো গোপাল ইতি শ্রুতে:। পুরাণো গৃঢ়ঃ

क्रमममर्जः ।

धक्छ १॥ २२॥ २०॥

अविश्वनाष्ठकवर्श्वी ।

শ্রুতক্ষ অন্তা পুথা বিষণা জ্ঞানমবিদ্যা যায় তং। নিতামিতি সন্ধিনী স্থামিতি জ্লাদিনী বোধ ইতি সন্ধিত এতং স্বৰূপশক্তি-ত্রিত্যাবাক্তাং সদানল চিন্মহাঃ তনবো ৰদা তন্মিন্ ছবি অধিষ্ঠানে মায়াতঃ কারণাত্দাং উদ্পদ্ধং অপি ৰং অন্তং গঞ্চাশি সদিব সার্ক্ষালিক্ষিব। বৰা। যথাৎ সদম্প্রাহকানি তংশক্ষণাণ্যের বঙ্গলানি তথাদিদং অসদেৰ অসং স্বৰূপং অবক্ষণাত্মকং নম্ নিথ্যাভ্তস্য জগতঃ কিং ভন্তাভন্তবিচারেণ ত্রাহ স্থাভং স্থাবন্ধ ভাতীতি তংমিধ্যাত্মেন ন প্রতীত্মিত্যুর্থঃ। কিন্ত পত্থিবণছাং পুরুত্থেছঃগড়াদভন্তমণি সদিব বিষয়ানল্পন্তা উত্তম্মিবাভাতি॥ ২১॥

কিঞ্চ ত্বানন্তমূর্ত্তিবেহণি দ্বাচিন্তাশক্তা। একমূর্তিরেবেত্যাহ এক ইতি বং এক আত্মা প্রমান্মেত্যর্থঃ। জীবাত্মনাং বছদেনেকরা-ভাবাং। নহ পরমাত্মা নিরাকার এবু ন পুরুষ: পুরুষশন্দস্যাক্তিমত্যের পদার্থে রুড়ে। কিষন্যঃ পুরুষ ইবার্কাচীনঃ ন প্রাতনঃ। নমু নন্দপ্রবাদবাচীনোহপাহং প্রাতনো ভবতঃ ভাত্যে বাভূবং নতু বধার্থতয়েতি তত্তাহ্ সত্যঃ বং নন্দপ্রোহণি সত্যঃ কৈকানিক

নিত্যবং প্রকাশ পাইতেছে **অর্ধাং আপনি অধিষ্ঠান হওয়াতে আপনার গুণে দেই দেই প্রকারে প্রকা**-শিত হুইতেছে॥ ২১॥

ভগবন্! এক আপনি সত্য, যে হেছু আপনি আত্মা অর্ধাৎ দৃশ্য নহেন, হত্রাং যিনি আত্মা, তিনি অবশ্য সত্য, প্রভো! আপনি আদ্য অর্ধাৎ সকলের কারণ, অতএর আপনকার জন্ম নাই। ভগবন্! আপনি যে গাদ্য (কারণ) তাহার হেছু এই, আপনি পুরাণ অর্ধাৎ স্ফটাদি কার্যাের পুর্বাঃ-

নিত্যোহকরোহজঅহতথা নিরঞ্জনঃ পূর্ণোহম্বয়োমুক্ত উপাধিতোহমুক্তঃ ॥ ২২ ॥

अध्वयामी।

বিনাশান্ বারয়তি। পূর্ণত্বে হেতুরনস্তঃ অন্বর ইতি চ দেশকালপরিক্ষেদরহিতঃ। বস্তপরিক্ষেদরহিতোহিণ। অনুষ্ঠবোশণাদনার চতুর্বিধিক্রিয়াফলং বারয়তি স্বয়ংজ্যোতিঃ নিরক্ষন উপাধিতো মুক্ত ইতি পদত্রেগায়ং ভাবস্তত্তোৎপত্তিঃ আদ্য ইত্যনেনৈব নিরাক্ষতা প্রাপ্তিরপি ক্রিয়া জ্ঞানেন বা ভবেৎ ক্রিয়া প্রাপ্তিরাম্বপদেনেব নিরাক্ষতা। জ্ঞানতঃ প্রাপ্তির বারয়তি স্বয়ংজ্যোতিরিভি। বিকৃতিরশি তুমাপাকরণেনাব্যাতেন বীহীণামিব উপাধ্যপাকরণেন ভবেৎ তচ্চাসক্ষত্বায় সম্ভবতীত্যাহ্ মুক্ত উপাধিত ইতি। সংস্কারোহশি কিমতিশ-

देवकबरकावनी।

পুরাণপুরুষো বনচিত্রনান্য ইতি বক্ষানাগাং। সত্যঃ সত্যব্রতং সত্যপরং ত্রিসত্যনিত্যাহ্যক্তথাং। স্বয়ং জ্যোতিঃ। যো ব্রন্ধাণং বিদ্ধাতি পূর্বং যো বিদ্যা তথ্য গাপরতি ক্ষণ্ণ তং হ দেব মান্ধবৃদ্ধিপ্রকাশং মুমুক্রি শরণমম্থ ব্রন্ধেদিতি ভচ্চুতেঃ। অনন্তঃ। নচা-ভর্ন বহির্যসা ইত্যাদি। যোহয়ং কাল ভ্রম্য তে ইত্যাহক্ষথাং। আদ্যঃ। ঈশ্বঃ প্রমঃ ক্ষণ্ণ ইত্যাদি ব্রন্ধ্বমাইত্যামং। বিদিভোহসি ভ্রান্ সাক্ষাদিত্যানি প্রীবহুদেববাক্যাদেনি ত্যঃ নিত্যোনিত্যানাং চেতনশ্রেতনানামেকো বহুনাং যো বিদ্যাতি কামান্ তং পীঠগং যে মু যজন্তি বিপ্রান্তেশং সিদ্ধিঃ শার্মতী নেতরেষাং। এভিদ্বিদ্ধাঃ পরমং পদং যো নিত্যোন্ধকুলঃ সংঘরতার ন কামান্। তেবামসৌ গোপরূপঃ প্রমন্থাং প্রকাশরেদান্ধ পদং ভলৈবেতি ভচ্চুতঃ। অক্ষরঃ বন্ধাং ক্রমতীতোহরং অক্ষরাদ্ধি চোরম ইতি প্রীগীতাতঃ। অল্প্রম্থং ক্ষণাত্রকো নিত্যাননৈত্যকণং ইতি ভচ্চুতঃ। কেবলাত্মভ্রানন্ত্রমান্ধানিলা রাহীতি ভচ্চুতঃ ক্ষেরিভানিক স্বান্ধানিতি প্রনারদ্বাক্যাং পূর্ণঃ। তে হোচুক্রপাদনমেত্স্য গোবিন্দভাথিলাধারিলো রাহীতি ভচ্চুতঃ কোবেতি ভ্রম্বিভানি ব্রন্ধবাক্যাদেঃ। অব্যঃ অন্বিভানির তি ভালুতঃ কোবেতি ভ্রম্বিভানি ব্রন্ধবাক্যাদেঃ। অব্যঃ অন্বিভানির তি ভালুতঃ। মর্গ্রোমৃত্যুর্ব্যালভীতঃ পলান্ন লোকান্ স্বর্ধানিত্যাদি বাক্যাদেঃ। তথা জন্মজরাভাাং ভিন্নঃ স্থান্থরমাজেন্যোহয়ং। নোহসৌ সেইতি ঘেহসৌ গোপ্র ভিচতি যোহসৌ গোপান্ব তিতিত তথাবনং

ক্রমগন্শর্ভঃ।

নশামা ধলু ওদাবস্থা জীব এব মৃলং। ততভঙ্জানেশৈৰ জাতঃ **প্ৰশক্তজ্**জানেনৈৰ নশ্যেং। তত্ৰ তাদৃশমতজ্জানাং কিমিতি

बीविश्वमाथहळ्कवडौँ।

সভাবান্ পুরাণ পুরুষ ইত্যর্থঃ। নম্বস্য পুরুষণ্য কালকর্মানিপ্রকাঞ্চয়ানহ্মণি কিং তথৈব। ন। অরংক্রোতিত্বস্ত অপ্রকাশঃ। কিং স্থ্যানিবৎ পরিচ্ছিরঃ। ন। অনস্তঃ ন বিদ্যুতে হস্তঃ কালতো দেশতক বন্য সং। নরন্যেহপাবতারী এবস্তুতা এব তেরামহং কত্মস্তর্জাহ আন্যঃ স্বং তেরামপি মুল্টুতো হবতারীতার্থঃ। নমহং বিপরার্দ্ধান্তে কিংনতেংসরুপেনৈবাস্থান্যামি নবেত্যত আহু নিতাঃ। জগদিনং পুরাতনমপি স্তামণি নিপরার্দ্ধান্তে অরুপেনাস্থান্তিয়ানিত্যমূচ্যতে। স্বন্ধ তদাপি নন্ধপুরাকারেগালি স্থান্যাসীতি নিতা উচ্যুদে। স্বানাব্যয় পূর্বব্রম্বন্ধান্ত যোহদৌ সৌর্ব্ধানিত ভিন্নতীতাদের যা সাক্ষাৎ পরব্রমেতি গোবিলং সচিদানল্যিগ্রহং বুলাবনস্থান্ত কহনত ত্বাদীনমিতি বা তাপনীক্রতে। ব্রহ্মনোহি প্রতিষ্ঠাহমিতি স্বন্ধক্রতন্ত। ন্যাকার্বতঃ বৃত্তি বার্বান্ত গোপীস্তন্যত্থন দিন্তিয়ার কোনা আক্ষাং নামকার্বতঃ ক্রিনান্ত বা নামলার গোপীস্থান্ত ক্রান্ত ক্রিনান্ত বা নামলার ক্রিক্রান্ত ক্রান্ত ক্র

বধি বর্ত্তমান আছেন। তাহার কারণ শ্রুতিতে আপনাকৈ পুরুষ শব্দে বলিয়াছেন, পুরুষের অর্থ স্থাইর পূর্ব্বে বর্ত্তমান। অপর আপনি নিত্য অর্থাৎ সনাতন, ইহাতে আপনকার জন্মান্তর ও অন্তিয় লকণ বিকার নাই, আর আপনি পূর্ণ, অজন্মশ্বর, অকর ও অয়ুত, স্করাং আপনার বুদ্ধির বিপরিণান, অপ-ক্ষ স্থবা বিনাশ নাই, সপিচ আপনি অবস্তু ও অছয় স্কর্তাব দেশ ও কাল হারা পরিচেছদ এবং কোন

এবস্বিধং স্বাং সকলাক্সনানপি স্বাস্থানমাস্থাত্মত্মা বিচক্ষতে। গুর্ব্বর্কলক্ষোপনিষৎস্কচক্ষুষা যে তে তরস্তীব ভবানৃতাস্থুধিং॥ ২০॥ স্বাস্থানানেবাত্মতায়া বিজ্ঞানতাং তেনৈব জ্বাতং নিথিলং প্রপঞ্চিতং।

औधत्रशामी।.

য়াধানেন মলাপাকরণেন বা তত্তাতিশরাধানং পূর্ণছেনৈব নিরাক্ততং মলাপাকরণং বারয়তি নিরঞ্জন ইতি নির্মাল ইত্যর্থঃ॥ ২২॥

তশ্বাদেবসূতজ্ঞানাশুচান্তে ইত্যাহ এবিধিমিতি ছাজ্যাং। ছাং যে বিচক্ষতে সমাক্ পশান্তি কথং আগ্নাত্মত্মা আত্মা প্রত্যক্ তথ্য স্বৰূপহেন নটৈতৎ পূজাদিখিব গৌণমিত্যাহ স্কলাখনামিপ স্বাস্থানং কেন গুরুরেধার্কস্তস্থাল্ল উপনিষজ্জানং ওদেব স্তক্-স্বেন ভব এবানুতামুধি অং তে তরস্তীব ॥ ২০॥

শত্রচ জ্ঞানেন তর্থীতি। তচ্চ তর্পীবেতি তচ্চাত্মাতাুত্যা জ্ঞানেনেতার্থত্যং প্রতিজ্ঞাতং ক্রমেণোপপাদ্যতে। তত্রাতাুনি-মেৰাতাুতয়েত্যনেন শ্লোকেন জ্ঞানেন তর্প্তীভূগপাদ্যতে। জ্ঞানসংজ্ঞাবিত্যনেন তর্প্তীবেত্যেতং। ত্বামিত্যাদি শ্লোক্ছয়েন তু বৈশ্ববেতা্যণী।

ममाপग्रजीजार्थः ॥ २२ ॥

এতাদৃশবজ্ঞানেনানায়াদেনৈব সংসারাস্চাতে ইত্যাহ এবমিতি। এবধিধং পূর্ব্বাক্তপ্রকারকং দ্বাং প্রীকৃষ্ণং সকরাস্থনামণি জীবভেদানাং পূর্ব্বাক্তপ্রকারকং দ্বাং প্রক্ষাং সকরাস্থনামণি জীবভেদানাং পূর্ব্বাক্তপ্রকারকং দ্বান্ত্রাস্থান্ত্র সকলে করালিক কর্মানাং প্রক্ষাক্তর আন্ত্রান্ত্রিক তাদিনা যথোক্তং তথৈব নতু কেবলগুদ্ধান্ত্রান্ত্রিও নিক্তে আন্ত্রাদিতঃ সর্ব্বতঃ পরমপ্রোম্পদর্থেনাত্রত্বিও সাক্ষাব্রক্ষাবিধ তাদৃশো গুরুবেরার্কঃ নত্তন্যোপদেষ্ট্রণ দীপাদিস্থানীয়ঃ। তদিধশ্চ কৃষ্ণমেনমবেহি ত্বমান্ত্রান্ত্রান্ত্রান্ত্রাপ্রকাশ ইত্যাদ্বান্ত্রাক্র ক্রমন্ত্রাদিন্ত্রান্ত্রাপ্রকাশ কর্মন্ত্রাদিন্ত্রান্ত্রাপ্রকাশ করাক্র বিভাগ বোহিংসা বন্ধ পরং বন্ধ গোপাল ইত্যাদিরপা। ভবো জন্মন্ত্রাদিন্ত্রান্ত্রাব্রাক্রান্ত্রাব্রাক্র ত্বযুদ্ধাক্ষেত্রাদি রীত্যা গোবৎস্পাদায়মান্ত্রাদির শক্ষঃ ॥ ২০ ॥

নম্বাঝা থলু শুঝাবত্বে। জীব্এব মূলং ততভদজ্ঞানেন এব জাতঃ প্রাপঞ্জঞ্জানেনৈর নশ্তেৎ কিং ভগবজ্ঞানেনেতি বিপ্রতিপ্রা-মিরাকরোতি আ্যান্নেবেতি আ্যানং অ্যমেবাক্সত্যা মূল্পরপত্তেন বিজ্ঞানতাং জীবানাং ভবতঃ তু তত্ত্বপত্তেনাপা হিলানতাং

ক্রমদন্দর্ভ:।

কেষাঞ্চিন্নত্মিত্যাশক্ষাহ আত্মানমিতি আত্মানং শুদ্ধজীবমেবান্মত্য। মূলস্বরূপত্বেন বিজানতাং দ্বাং তু তক্ষপত্বেন।বিজানতামিত্যেব-কারার্থঃ। তেনৈব মূলেন স্বদ্ধানেনৈব হেতুনা লক্ষ্ডিন্ত্রা. মায়য়া নিথিলং দেহাদিকং প্রপঞ্চিত শুদ্ধে জীবে অহংমন্তয়াধ্যস্তং

শ্ৰীবিখনাথচক্ৰবৰ্ত্তী।

ত্রক্ষেতি প্রত্যুক্তমমৃতশব্দবাচ্যং নিকপাধি ত্রন্ধৈব। প্লেষেণ ন বিদ্যুতে মৃত্যু যুক্সাং স ইতি॥ ২২॥

কিঞ্চ ঘণীয়নির্বিশেষব্রহ্ম হরপোপাসক। অপি ঘয়ি পুরুষাকারস্বরূপে পরমান্মতেন ভজ্ঞা ভাগ্যবশাদ্যদি প্রাপ্ত নির্ভাঃ হাতর্হি তে শান্তভাঃ সংগীয়ন্ত ইত্যাহ। এবমিধা উক্তলকণং ঘাং সকলাআনাং সর্বজীবাজনাং স্বামানং মূর্বত্বন মনোনদানাক্লাদক ঘাং শোভননায়ানং পুরুষস্বরূপমের আল্লাল্লভাগ পরমান্মতেন ভক্ত্যা যে পশান্তি পরমান্মতন্ত্রা ক্লেন্ডভাগ শান্তীরতির্মতেতি প্রীভতিবসামৃতোক্তেঃ। কেন গুরুরেরার্কস্তমান্ন প্রাপ্তা যা উপনিষ্ধ সৈব স্বচক্ষ্তেন তদর্থাবগাহনোথেন জ্ঞানেন ভব এব অন্তাম্ব্রিভা তর্কীর ॥ ২০॥

নম্ব তরয়েব তে কিমিতি তরস্থীকেঁত ক্রমে তথা ভবস্য চান্তবং বা কুতন্তর তেবাং জ্ঞানিনামাশ্রণীয়ৈ বিবর্তবাদমতে শ্বাদিদমন্তমেব ইত্যত তত্ত্বপমন্তমেব তরস্থীবেত্যচাতে ইত্যাহ আস্থানং জীবং আস্বত্যা জ্ঞানানন্দময়াশ্ববেদ অবিজ্ঞানতাং কিন্তু অবিদ্যান্ত বস্তু দ্বারা পরিচ্ছেদ শূন্য। অধিকস্তু আপনি স্বয়ংজ্যোতিঃ নিরঞ্জন এবং বিদ্যাপ্ত অবিদ্যাদ্বিবিধ উপাধি হইতেই ভিম্ন। ২২ ॥

ভগবন্! আপনি এবন্ধিধ এবং সকলের আত্মা, যে সকল ব্যক্তি সম্যক্ প্রকারে আপনাকে আত্মস্বন্ধপে নিরীক্ষণ করেন তাঁহারা দিবাকরশ্বরূপ গুরু হইতে অধ্যয়নদারা লব্ধ উপনিষ্ধ রূপ স্থলর
নৈত্র দারা সংসার রূপ অনৃত সাগর উত্তীর্ণ হয়েন। ২০॥

. আত্মরূপে পরিজ্ঞাত না হইলে অজ্ঞানবশতঃ সমুদায় প্রপঞ্চ প্রকাশ পায় কিস্তু জ্ঞান হইকামাত্রই

জ্ঞানেন ভূয়োহপি চ তৎ প্রলীয়তে রজ্জ্বামহের্ভোগভবাভবো যথা ॥ ২৪ ॥ অজ্ঞানসংজ্ঞো ভববস্কনোক্ষো ধৌ নাম নাত্যো স্ত ঋতজ্ঞভাবাৎ।

द्धिभतत्रामी।

মাজ্যাজ্যভয়। ইজ্লপদালতে। নহ ভানেন ভবং কণং ভয়গীতি ভগাজানন্শগাদিভাগে মাজ্যান্দ্ৰবৈতি। তেনৈবাভানেনৈব প্ৰপঞ্চিতং প্ৰণঞ্চঃ। বুজ্জ্বাহে ভোগভবাভবাবিতি দৰ্শশ্ৰীৰন্যাধ্যাদাপ্ৰাদৌ যথেতি॥২৪॥

নত্ন জ্ঞানিন ভবত্তোব কিমিদমূচাতে তরভীব ইতি তত্তাহ অজ্ঞানমংজ্ঞাবিতি। অজ্ঞানেন সংক্রা মধ্যেতো ভববন্ধ**মান্দে।** ভবেন ব্যৱস্থাক্ষণ্ড ভৌদো নাম প্রসিদ্ধে শ্বতীজ্ঞ ভাবাং শ্বতশ্চাদো জ্ঞান্চতি যো ভাবতীশাদন্যে নতঃ। নত্ন ক্রং মহান্ প্রবাপ:

বৈষ্ণ বতোষণী।

ইত্যেবকাবার্থঃ। তেনৈর ম্বেন ভগবদজ্ঞানেনৈর হেতুনা নিথিবং প্রপঞ্চিতং জাতঃ তং দোষমসহিষ্ণা ভগবদজ্ঞান মায়মা বিস্তারিতং দেহাদিকং তেবাং জাতঃ। স্বরূপাক্তরান্দের তদীয়ত্বা সম্পন্ধং তথাজ্জানেন ম্বেন ভগবদজ্ঞানজেদকেন ভগবজ্জানেনির স্বরূপাজ্ঞানং তদধ্যাসহেতুবজ্ঞানমপি প্রলীয়তে তৎপ্রলয়মের দৃষ্টাস্তেন স্পষ্টং বোধয়তি বজামিতি। অইত্রুক্ষোনমপি প্রলীয়তে তৎপ্রলয়মের দৃষ্টাস্তেন স্পষ্টং বোধয়তি বজামিতি। অইত্রুক্ষোন্ধং গুরুলের স্থিয়া। ভরং বিতীয়াভিনিবেশতঃ স্যাদীশাদপেত্যা বিপর্যয়েহস্থতিঃ। তন্মায়মাতো বৃধ আভজ্ঞেং ভক্ত্যেক্ষেণং গুরুলের ভাষা ইতি তৈশ্চ ব্যাপ্যাতং। বতোভ্যং তন্মায়মাতো ভবেততো বৃধ্ধে বৃদ্ধিমাংস্তমের ভজ্ঞেং উপাসীত। নয় ভ্যাং বিতীয়াভিনিবেশতে ভবতি সচ দেহাহন্ধাবতঃ সচ স্বরূপাক্র্বণাং কিনত্র তদ্য মায়া করোতি অত আহ দ্বশাদপেত্যা ইতি। দ্বশিম্বস্য তন্মান্ধা অস্থতিঃ স্বরূপাক্র্তি ভবিত ততে৷ বিপর্যয়ে দেহোহস্মীতি ততে৷ বিতীয়াভিনিবেশান্তয়ং ভবতি। এবং হি প্রসিদ্ধং লৌকিকী-স্থাি নায়ান্ত। উক্তক্ত শ্রভাবতা। দৈবী হেবা গুণমন্ধী মন মায়া হ্রত্যয়া। মানের যে প্রপ্রায়েশেতাং তর্ম্বি তেই ইত্যাদি। বন্ধপ্রের তথ্যাত্রমাত্রেস্যালেক্ষ্যা তত্রচ প্রতিপত্তিমাত্রস্য নচাংশিনঃ নচাত্ত্বস্য শ্রীরাননামাপি ভজুবণাং। ত্রাং তত্র জ্যাবস্বরূপায়ন্ত্র এর সম্যাপ্রক্ষতে পরিপূর্ণাবিভাবস্য স্বয়ং ভগবতত্ত্বজ্ঞানং প্রমং মহদেবেতি ত্যাচ কলং স্বন্ধিচ গ্রমপ্রেনাদ্যাণ্ডি ভাবং ॥ ২৪॥

অনৃতবং দর্শরতি অজ্ঞানেতি। গত শব্দেনাত্রাবাভিচার্ত্রচাতে জ্ঞান্দেন জ্ঞাতা ভাবশব্দেন পদার্থবিশেষঃ। খতশ্চাদৌ জ্ঞশেততি মতজ্ঞা সচাদৌ ভাবশেতি ঋতজ্ঞভাবঃ। এষ এবাজস্রচিত্যাত্মনীত্রাম্বাদিয়তে তর ঋতাজস্রয়োরেকত্বং ব্যক্তনেব জ্ঞচিতোরেকত্বং প্রকাশর্মপদ্য স্ব্যাদেঃ প্রকাশনান্ধনভিত্তাংশি চেতনরূপত্বাং। যং ধলু ত্মপ্রকাশনজ্ঞানরিংতিক তল্জ্ঞাত স্যাদেব ভাবাত্মনোবেক্তর ভাবরতি প্রকাশযতি চেত্রগ্রাতি নিকজেঃ আত্মনীত্যাত্মানমিত্যাত্যাং জীবস্বরূপনেবাত্র পূর্মত্রচ প্রেচ গ্রেচাত ত্রিবা

ক্রনসন্দর্ভ:।

ছাতং। তত্মার্ জ্ঞানেন ন্বৰণজানভেদকেন অজ্জানেনৈৰ, তদ্ধ্যাসহেত্রজ্ঞানমপি প্রলীয়তে তংপ্রলয়মেৰ দৃষ্টান্তেন বোধ্যতি বজামিতি। তথা চৈকাদশে বক্ষ্তে। ভয়ং বিতীয়াভিনিবেশতঃ স্যাদীশদপেতস্যেত্যাদি॥ ২৪॥

অন্তত্তমের দর্শগতি অজ্ঞানসংজ্ঞাবিতি। আল্লশকেনাত পূর্বতি চ পদ্যে ভদ্ধীবশ্চোচাতে। নতু প্রীভগবান্ তত্তিবাজ্ঞানবদ্ধমোক্ষ-

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

আবরণাজ্জাতুমশক্ষুবতাং তেইনবাজানেন নিথিলং প্রপঞ্চিতং সর্বা: সংসারোহভূং। ভূম: পূনশ্চ সাংখ্যযোগবৈরাগাতপোভক্তিভি-বামনো দেহব্যতিরিকত্বন যজ্জানং তেন তৎ সর্বাং প্রপঞ্চিতং বিলীয়তে। যথা রজাং অহে প্রেগ্য সর্পশ্রীরস্য জ্ঞানজ্ঞানাভ্যাং ভবাভবৌ অধ্যাসাপবাদৌ ॥ ২৪ ॥

অতএব ত্বদ্যান্তরং অন্তরাদেব তত্তরণ্দ্যাপান্তরং স্পষ্টরতি অজ্ঞানেতি। অজ্ঞানেন সংজ্ঞা যথোজী ত্ববদ্ননাক্ষে তবং দংগারস্করণো বন্ধক তথাক্ষে তে বিলীন হইয়া যায়। অতএব সংদারের মূল যদি অজ্ঞান হইল তবে জ্ঞান বিলীন ইবা যায়। অতএব সংদারের মূল যদি অজ্ঞান হইল তবে জ্ঞান বাবা এ সংসার উত্তীর্ণ হওয়া অস্ক্রব নহে কারণ, জ্ঞান অজ্ঞানের বাধক ॥ ২৪॥ .

ভগবন্! অজ্ঞানদারা লক্ষণজ্ঞ যে ছুইটা প্রসিদ্ধ ভববন্ধ ও ভবমোক্ষ, সে ছুইটা পৃথক্ পদার্থ সত্য, কিন্তু শতজ্ঞভাব অর্থাৎ অন্যভিচারিজ্ঞান ইইতে পৃথক্ নহে, কারণ অথগ্রামুভব্যরূপ বিস্তৃদ্ধ অজঅচিত্যাম্বনি কেবলে পরে বিচার্য্যমাণে তরণাবিবাহনী॥ ২৫॥
স্থামাস্থানং পরং মতা প্রমাস্থানমেবচ। আস্থা পুনর্বহিমুগ্য অহো ২জ্জনতাজ্ঞতা॥ ২৬॥

औरत्रश्रमी।

ক্রিয়তে প্রমার্থবিচারাদ্িত্যা**হ অল্লেড়ি। অণ্ডান্**তবস্বরূপে পরে ওদ্ধে আতাুনি নাজানং নচ বরঃ অতএব ন জ্ঞানং নচ মেঞি. তরগৌ রাত্রহনী ইতি ৪২৫ ৪

নহ পর্যাতা জানাৎ অজ্ঞানকতো, বন্ধো নিবর্ত্তাং আত্যুতরৈর জ্ঞানাদিতি কোংল্লাগ্রহ ইত্যাশল্প যদধ্যাসাদাত্যুন: স্বরুপা-কুর্ত্তিধপ্রাদেন তব্রের জ্ঞানং যুক্তমিতীমুম্প্র বিশ্ববেনাক্রোশ্রিবাহ থামিতি। স্বাস্থাত্যুনং পবং দেহাদিং মন্ত্রা আত্যুনি দেহাদি বৈষ্ণবাহারণী।

জ্ঞান জ্ঞানাৰন্ধমোক বিচারার্হ্যাৎ। প্রকাণেহিশিনাভামনাত্র ভগবদাচিতাৎ বৃদ্ধবিদ্ধস্থাঃ সর্বাত্ত প্রযুক্তবাচন। তত্মানরমর্থঃ। যৌ ভববন্ধমোকৌ শুভজভাবাদনােই তঃ মারার্ডিরপথাং তৌ তত্মিরজ্জাচিনাত্মরপে শুভজভাবেতু বিচার্যাদােইন তঃ। তত্রানরোঃ স্বক্ষোহিতি নাতি বেতি বিচারে ক্রিয়মাণে তু তত্র নসম্ভবত ইত্যর্থঃ। তহি কথং তৌ ক্লুবত স্ভত্তাহ অজ্ঞানেনৈর সংজ্ঞা প্রতীতির্বরাে তৌ তথা দৃষ্টাত্মন দর্শরতি। যে অহনী লিজসমবারনাামেন রাত্রাহনী তরণেরনােই তা কাল্রভির্মপথাং তেতু তরণে তথা বিচার্যামানে বধা নসম্ভবত ইত্যর্থঃ ॥ ২৫॥

যেতু সকলাঝনামপ্যাত্মানং থাং আত্মমাত্ৰতথা বিচক্ষতে তে প্ৰতিমূৰ্থা এবেক্যাহ থামিতি। প্রমাত্মানমের থাং প্রং কেবলনাথানং ওজনীবস্থরপং মথা। অপ্যর্থে চকার:। আত্মা আতত্বাচ্চ নাতৃথাৎ আত্মাহি প্রমো হরিরিতি স ভবানপি অপুনর্কহিন্ গ্যঃ স্থাং। অভাবে ন হু নো নাচেত্যমর:। ন পুনর্কহিং শ্রীরূলাবনে মৃগ্যতে কিন্তু গুজলীবস্থরপডেদেন দেহান্তরে এব মৃগ্যতে ইত্যর্থ:। অহো বিশ্বরে ইয়মজ্জনতারা অজ্ঞতা। পূর্কোকত বিবিধবৈশক্ষণ্য হান্যনমুসন্ধানাৎ। যথা। আত্মানং সর্কোয়ং মৃশ্যরূপং থাং প্রং অনাত্মানং মথা তথা পরং প্রভাহনামের তাদৃশমাত্মানং মথা যং কশ্চিদন্যো ভবেদিতি কর্মিত্বা বহিশ্বংপাদাজন্দনাদক্ষানন্ত্র আত্ম মৃগ্যো ভবতি মৃগ্যত ইত্যর্থ: ইয়মহো অজ্ঞজনতারা অজ্ঞতা। যথা বং কেবলং আত্মানং জীবস্ত শুল স্বরূপ্যের মথা তত্ত উৎকর্ষাবাপ্তে পর্মাত্মানমন্ত্র পরিশিষ্যতে। বিইভ্যাহমিদং

ক্রমসন্মর্ভ:।

বিচারাহ থাং। প্রকরণেহশিরাভাগনাত ভগবদাচিত্বার যুমন্তবচ্ছকরোঃ দর্মত গুরুত্বাং ॥ ২৫॥

বে তু সকলা মনা প্যাশ্বানং দ্বাং জন্যথা বিচক্ষতে তেওতি মুখা এবেত্যাহ দ্বামিতি। আত্মানং সর্বেধাং মূলস্বরূপং বাং পরং জনাত্মানং মহা যং কশ্চিদন্যো ভবেদিতি করিছা বহিত্তপাদাক্ষসদনাদন্মান্যত্ম আত্মা মূগ্যা ভবতি মূগাত ইত্যর্থ:। ইয়মহো অজ্ঞজনতারা অজ্ঞতেতি। যথা। দ্বাং কেবলং জীবস্য শুদ্ধস্বরূপনেব মত্বা তত উৎকর্ষাবাপ্তে) পরমাত্মানমন্তর্বামিমাত্রঞ্চ বাং মথা তথা বথা যদি, মন্যতে তদাপীত্যর্থ:। অজ্ঞজনতারা অজ্ঞতবৈব পরিশিষ্যতে। বিষ্টভাহ্মিদং কুৎসম্কুশ্নেন স্থিতো জগদিতি ভগ্রহাক্যাং। যত্ত। আত্মা মুখার্ভতছেক বাচ্যো বহিমুগ্য এবেতাঞ্জলিনা শ্রীচরণো দর্শন্ত। যদ্যেবং শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

ভাবে ত্রিন্নজ্সচিত্যাত্মনি তৎস্বরূপে জীবে কেবলে দেহাদি সক্রহিতে বিচার্যামাণে সন্তি ন তঃ ন সম্ভবত ইত্যবন্ধ:। দৃষ্টাস্তেন দর্শরতি। যে অহনী লিজ সমবান্ধন্যায়েন রাজ্যহনী তরণেরন্যৌ তঃ। তে তু তরণৌ তথা বিচার্যামাণে যথা ন সম্ভবত ইত্যর্থ:॥ ২৫॥

বে পাত্রবিদ্যন্যা: প্রধাকারং বাই নাজিরত্তে তএব পূর্ব্বোক্তা: স্থূলত্বাবদাতিন ইত্যাহ পামিতি। চ অপার্থে। পরমান্ত্রান্ত্রানিপি বাং প্রধাকারং পরং ভদ্ধপরনাত্রতাহ্ন্যং মানাশরণং আত্যানং মবা আত্যা পরমাত্রা প্রথাবাহিরের মৃগ্য:। অহা তস্যা অজ্ঞজনতায়া অজ্ঞতা অত্যন্ত্রতার্থ:। অয়য়র্থ:। বিষ্ঠপরিগামাদরোবাদা: থলু চিন্তিরে মান্নিকে জগত্যের প্রবর্ত্তরে। নতু পূর্বচিতি বন্ধানি তথা শালং বন্ধ বপ্রধানিতি ভৃতীরাং। বত্বপূর্তাতি বিভূবগার্থেরবাক্তচিঘাক্তমধারম্বিভূ:। বভ্ব ভেনের আত্যা ও দেহাদি সঙ্গ রহিত আত্ম স্বরূপ জীবের বিচার করিলে অক্তান অথবা বন্ধ কিছুই থাকে না, অত্থব দিবাকরে বেমন দিবা এবং রাজি কিছুই নাই তত্বৎ তাহাতে জ্ঞান ও মোক্ষ কিছুই নাই ॥২৫॥ প্রত্রাণ ভূমি আত্যা, তোমাকে পর (মেহাদি) জ্ঞান করিয়া অর্থাৎ আত্মাতে দেহাদি অধ্যাস

ক্রিয়া, আর পরকে (দেহাদিকে) আক্সনান করিয়া **অর্থাৎ আক্সানে সম্ভা**ন করিয়া, আর পরকে (দেহাদিকে) আক্সনান করিয়া **অর্থাৎ দেহাদিতে আক্সান সম্ভান করি**য়া

অন্তর্ভবেহনন্ত ভবন্তমেব হৃতভাজন্তো মৃগয়ন্তি সন্ত:।

विधवयांगी।

মধাসা তথা পরং দেহাদিমাঝানং মতা দেহাদাবাত্মানমধাসা আন্ত নাষ্ট আত্মা বহি মৃগাতে ইতি চিত্রং। ন হি গৃহে নতং বনে মৃগাত-ইতি ॥ ২৬ ॥

বিবেকিনন্ত প্রত্যক্ষরপ্রমেব প্রমাত্মানং বিচিষ্ঠীত্যাই অন্তর্ভব ইতি। ভবতীতি ভবং চিচ্কড়াত্মকং শরীরং তর্মধ্য এব স্বাং

বৈক্ষৰভোষণী।

কংলনেকাংশেন হিতোজগদিতি ভগবছাক্যানমূল্যনাং যশ্চ আত্মা মুখ্যবৃত্তভ্জ্পনাচ্যো বহিদুল্য এবেতি তর্জনীযুগ্লেন চন্ধ্ৰণ কমলযুগলং দর্শগতি যদোবং ন স্থাং তদাহমণি অসদন এব হিছা মনসি সমাধান্তং ন পুনরত্ত শ্রীব্লাবনে সমাধাসাং। নহি গৃহে নইং বনে মৃগ্যত ইতি ভাবং। সন্ধিন্ধ্ৰোধেন। জ্ঞানাজনতারা অজ্ঞতেতি বা। বছা। বে জীবভবেশবংভ্রবিদোহণি সর্জং পরিত্যজ্য তাদৃশং শ্রীকৃক্ষং সংপ্রতি শ্রীবৃন্দাবন এব মৃগ্যন্তে তান্ ভৌতি। প্রথমং তাবং পরং কেবলং অহৈতোপাদনরা আমাআনং জীবস্থলপাদ-তিরিক্তমপুস্ব ততঃ পরমাত্যানমেব চাম্ভ্র পুনরধুনা আত্যা তলকণং সর্কেষাং মৃল্যন্তং ৰহিশ্চকুরাদি গোচরে মৃগ্যঃ সম্পদ্যতে তল্পাহে। বিজ্ঞানতারা বিজ্ঞতেতি। অজ্ঞানাজতেতি কৃতিং পাঠঃ। তত্র চাজ্ঞান্ধেনাম্ভ্রনশন্ধবিক্ত এবাত্র বাধ্যের:। অত্ মৃগ্য অহো ইত্যত্র রোক্ষাভাবং সদৈন্যরোদন বচনছেন মৃগ্য ইত্যকারস্য প্রভ্রাং অভো রোরপ্রস্থাদপ্রভূতি স্ত্রং ন প্রবর্ততে ইতি॥ ২৬॥

পূর্ব্ব হেডুমাই হে অনন্ত সর্ব্ব্বাপিন্ হি যন্ত্রাং অন্তর্তবে ব্যষ্টিসমষ্টিরপেস্য তবন্ত জগতৌ মধ্যে সত্তো বিবেকবন্তঃ তবন্তঃ প্রীকৃষ্ণমেব সুগরন্তি। সর্বাদেনইনিং সর্বন্তগণপূর্ণমেব প্রাপ্তঃ তেবাং মনোরথঃ স্বন্ধ তগবান্ তবানেবচ তাদৃশ ইতি কিং কুর্বন্তঃ। অতং ছ্বাতিরিক্রমন্যদন্যদপরিতোবেণ ত্যজন্তঃ। নমু জগদেব মমাবরণং তৎ কথমত্র সংপ্রোপ্তিঃ স্থাৎ উচ্যতে ভবেদেব মবিবেকিনাং বিবেকিনাত্ত গুচ্ন্য কারণস্য তব তত্তকা গুলেশাভাসভাবিতং কার্যজ্তং তদেব প্রত্যান্ত্রকং তত্তচান্ত নাম স্ক্রপমসক্রপদ্ধানবিব্যন্ তদ্বপ্রস্কাতো। দৃস্কত ইত্যাহ অসত্তমপীতি। সম্ভ ইতি সাধারণবিবেকিনঃ পুর্বেষাং ত্রিশেষাণাং দৃষ্টান্তাঃ। অত্ত ত ত্রংশত্যাগে ব্যষ্টি-

क्रथनमर्जः ।

তহ হিমপি স্বসদন এব বিবা মনস্যেব সমাধাস্যং ন পুনরত্র বুলাবনে সমারাস্যং। ন হি গৃহে নটং বনে মৃথ্যত ইতি ভাব:। সঞ্জিলা হলে ইহলো ইহলো ইহরোধেন। জন্মজনতারা অজ্ঞতেতি বা। বহা। সর্জং পরিত্যক্তা সম্প্রতি আফুকৈ মৃথ্যান্ ভৌতি। এবং পরং তাবং কেবলং অবৈতোপাসনরা হাং আহ্বানং জীবস্বরূপানতিরিক্তমমূত্র ততঃ পর্মান্তানমেব চাত্ত্র পুনরধুনা আত্যা সর্কেরা মৃলস্ক্রপং বহিশ্চকুরাদিগোচরং মৃগ্যঃ সম্পাদ্যতে। তত্মাদহো বিজ্ঞানতারাঃ আফুক্রাদির্গারং মৃগ্যঃ সম্পাদ্যতে। তত্মাদহো বিজ্ঞানতারাঃ আফুক্রাদির্গার বিজ্ঞাতিতি। অজ্ঞানক্তা ইতি ক্তিং পাঠঃ॥ ২৬॥

অত চাছত্তমশক্ষর বিজ্ঞ মুখ্যোহপি ব্যাথ্যাতৃং শক্যতে। পূর্বত হেছু:। ভবত্ত: 🕮 রুক্ষমের। অতত্ত্বভাতি বিক্তমন্যদন্যলপরিডো-

अविषनाथहळ्कवर्जी।

স বামন ইতাইমাৎ। সত্যজ্ঞানানস্থানন্দ্রাত্তিকরসমূর্বর ইতি দশমাৎ। গোবিন্দং সচিদানন্দ্বিগ্রহং বৃন্দাবনস্থরস্থকহতলাসীনমিতি তাসাং মধ্যে সাক্ষান্ত্রপোপালপুরী হীতি গোপালতাপনীশুতেক। পূর্ণবিদ্ধান্ত্রকে ভগবছপূর্ধার্মাদাবপি। যে তু শুভিন্ধতীক্ষণাভাবাদ্ দকাক্তর তত্রাপি বিবর্তমন্ধ্রপরস্পরকৈর প্রবর্তরপো প্রশান্তি তে ত্বো শব্দেন একণা অস্থ্রে শোচ্যেরু মধ্যে বিশ্বরস্ববিষ্ণীচক্রিরে ইতি। অজ্ঞানাক্ষতেত্যপি পঠিঃ ॥ ২৬ ॥

বিজ্ঞান্ত বাং মারোণাধিকেন মন্যতে কিও লীবান্থানমেবাতত্ত্বের মারামালিন্যতো বিচ্যুতীকর্ত্তুং ত্বেব কেবলং ওকং মূগ্যন্তী-ত্যাহ অন্তর্ভবে শরীরমধ্য এব বর্তমানং অনভত্তবং অনভাঃ অসংখ্যা তবা নানা বোনিরু জন্মানি বস্য তং প্রসিদ্ধমন্তকং জীবান্থানং

লোকেরা এই দেছের মধ্যে নই আত্মার অবেষণ বাহিরে করে, এ কি চমৎকার'? গৃছে নই বস্তুর কি কথন বনে অবেষণ করা উচিত ? যাহাহউক, অজ্ঞ ব্যক্তিদের এই অজ্ঞতা অতিশয় আশ্চর্য্য ?॥২৬ পরস্তু, সাধু ও বিবেকী জনগণ চিচ্জাভাত্মক শরীর মধ্যেতেই অসৎ পদার্থ পরিত্যাগ করিয়া

औरत्रवामी।

মুগান্তি। অতং জড়ং তাজ্বঃ অপবদন্তঃ। নবসতো জ্ঞানেনালং কিমসতো ২পবাদেনেতাশিকা অসতোহপবাদং বিনাধিষ্ঠানতবং

देवस्थवत्कावनी ।

প্রক্রিয়েয়ং প্রথমতো দেহাদীনাং জড় মলিনাদিছাৎ ক্রমশস্ত্যাগেন তচ্চেতনাদিহেতুঃ ৩৯ আত্মোপলভাতে নির্বিশেবব্রহ্মদৃষ্টিস্ত या निवृতি অহুভূতাং তব পাদপন্মধ্যানাছৰজ্জনকথা শ্রবণেন বা স্যাৎ। সা এক্ষণি স্বমহিমন্যপি নাথ মাভূদিত্যাদিঞ্ববাক্যা-দিত্যো ব্রহ্মণোহি প্রতিষ্ঠাহমিত্যাদি প্রীণীতাদিতাক পরিষ্ঠতৈব ততঃ ভঙ্কীবদ্যাপি একাশকঃ। কেচিৎ স্বদেহান্তর্জ দ্যাবকাশে প্রাদেশমাত্রং পুরুষং বসন্তঃ। চতুর্ভু জমিতি দিতীয়োক্তেন্তদ স্থর্গামী। তস্যাপি ততারগুণোলাদেন ততঃ পূর্ণো গর্ভোদশায়ী তৃতীযে ৰ্ণিতঃ সমষ্ট্যন্তর্গামী তদৰতারাশ্চ। ততোহপি সর্ব্বত্রশ্নাণ্ডদমষ্ট্যাম্বর্গামী আদ্যোহৰতারঃ পুরুষঃ প্রদ্যেতি হুচিতঃ। কারণার্ণব-শারী প্রথমপুরুষ:। ততো বিইত্যাহমিদং কুৎস্নমিত্যাদি। যদ্যাযুতাযুতাংশাংশে বিশ্বশক্তিরিয়ং স্থিতেত্যাদি দৃষ্টা সাক্ষাং বনেব। অগ সমষ্টাবিণি পূর্বনিজ্ঞচজ্ঞাদিময়ং বিরাভূপং মামেবেখরং মন্যত্তে পশ্চাত্ত্য্যাপি নখরত্বাদিনা তদন্ত্বামীত্যাদি পূর্ববিৎ। তত্মাদধুনা কেনাপি ভাগ্যোদয়েন সাক্ষান্তবৈৰ লাভে সতি সাধুক্তং স্বামাস্থানমিত্যাদি অত্যেরং শ্রীবৈষ্ণবপ্রক্রিয়া যহে বি মদেকং চিম্বন্ত মারা-শ্রবং বিদ্যামরং তত্তে বি তন্মারাবিষয়মবিদ্যাপরিভূতং চেত্যুক্তমযুক্তমিতি জীবাতা পরমাতানোর্বিভাগোহবগত:। ততশ্চ স্বরূপ-সামর্থাবৈলক্ষণ্যেন তদ্দিতমং মিথোবিলক্ষণস্বরূপমেবেত্যাগতং নচ পরিচ্ছেদপ্রতিবিশ্বধাদিব্যবস্থা বিভাগঃ স্যাৎ ভত্ত মহাপাধে-রনাদিবিদ্যকত্বেন বাস্তবত্বং তহু বিষয়স্য তস্য কথমপি পরিচ্ছেদবিষয়ত্বাসম্ভবः। নির্দ্ধক্ষস্য ব্যাপক্স্য নিরব্যবস্যু প্রতিবিশ্বতাযোগো-<mark>হপি উপাধিসৰদ্ধাভাবাৎ প্ৰতিবিষভেদাভাবাৎ দৃশ্বছাভাবাক উ</mark>পাধিপরিচ্ছিন্নাকাশহন্যোতিরংশস্যৈব প্রতিবিৰো দৃশ্যতে নত্বাকাশস্য দৃশাত্মাভাবাদেব। তথা বাস্তবপরিচ্ছেদাদৌ সতি সামানাধিকরণ্য জ্ঞানমাত্রেণ নতন্ত্যাগশ্চ ভবেৎ। শাল্পে কচিৎ প্রতিবিশ্বদাদাদীকা-বৃদ্ধিহ্বাসভাক্তমন্তর্ভাবাহ্ভরদামঞ্জস্যাদেবমিতি ভারেনউপাধে রাবিদ্যকত্বে তু বাস্তব-त्रक जरमामुरभारेनव अपूरम्थारगर । পরিচ্ছেদাদ্যভাবাৎ প্রাক্তনো মান্বাশ্রমত্যাগ্রভেন্নাত্মকো বিরোধ স্তদবস্থ এব স্যাং। তথা শুদ্ধায়াং চিত্যবিদ্যাকরিতোপাধৌ তস্যা-মীৰবাধ্যারাং বিদ্যেত্যসমঞ্চসাচ কল্পনা স্যাদিত্যাদ্যসূদক্ষেয়ং। তত্মাদেকমেৰ তৎ প্রমত্তবং বাভাবিকাচিত্যাশক্ষ্যা সর্কদৈৰ চতু-দ্ধাবতিষ্ঠতে। স্ব্যান্তম ওলম্বতেজ ইব বহিশাগুলতম্হির্গতর্শ্যাদিরপেণ। অচিন্তাশক্তিমং চ মণিমন্ত্রনংহীমধ্যাদীনাং কারণ-গণ কারণে তশ্বিদ্নাশ্চর্য্যং। স্ক্রণেজ্ঞ শব্দমূলত্বাদিতি আত্মনি চৈবং বিচিত্রাশ্চ হীতিচ স্থায়েন আত্মেশ্বরো ২তর্ক্যদহত্রশক্তিরিতি ষষ্ঠেষ্প্যতদ্দর্শিতং। অতম্বত্তংসমাবেশাদ্যমুপপত্তি শ্চাভিন্তাশক্তিষ্কেনৈব পরাহতা। হুর্ঘট্বটকত্বং হৃচিস্তাত্বং যেন ধলু সাশক্তিরপরিচ্ছি সা শক্তিশ্চ বিধা অন্তরনা ভটন্থা বহিরকা চেতি অবা-রমপি পরিচ্ছিরত্বেন দর্শরতি যথৈব দর্শরিব্যতে একদেশস্থিতস্যাশ্বেরিতি। স্তরন্ধ্যা অরপশক্ত্যাধারা পূর্ণেনৈব অরপেণ বৈকুণাদিঅরপেটবভবেন চাবতিষ্ঠতে। তটস্থারা রশ্মিস্থানীয় চিদেকাত্মরপণ্ডদ্বজীব-রূপেণ। বহির্দ্ধা নামাধ্যুরা আভাদগত্তবর্ণাব্দ্যস্থানীয়তদীয়বহির্স্পবৈভবজ্ঞ াঝুপ্রধানরূপেণ চেতি চতুর্ধান্ধ। যথোকং শ্রীবৈষ্ণবে। একদেশস্থিতস্যান্ত্রে র্জ্যোৎস্না বিস্তারিণী যথা। পরস্ত ব্রহ্মণঃ শক্তিন্তথেদমধিলং জগদিতি। শ্রুতৌ চ। যস্য ভাসা সর্বমিদং বিভাতীতি। অতএব তদাত্মদেন জীবস্যৈৰ ভটস্থশক্তিবং প্ৰধানগ্য চ মায়াস্ত ভূতিষমভিপ্ৰেত্য শক্তিত্ৰবং ভতৈত্ৰৰ দৰ্শিতং। বিষ্ণু-শক্তিং পরা প্রোক্তা ক্ষেত্রজ্ঞাধ্যা তথা পরা। অবিদ্যা কর্মসংজ্ঞান্তা তৃতীয়া শক্তিরিষ্যত ইতি। তত্র পরায়াভীত গোচরা বাচা মিত্যনেনোকা। কেত্রজাখ্যা জীবস্থৃতা দেগমপরা প্রথম ভৃতীয়য়ো ম'ধ্যবর্তিনীভৃতীয়া দেয়মপি পরেতি বা। তথাচ শ্রীগীতাহ ভুম্যাদিত্যা ভেদং প্রাপ্তা প্রকৃতিরইটেডুকুন। প্রাহ। অপরেমমিতখন্যাং প্রকৃতিং বিদ্ধি মে পরাং জীবভূতামিতি। সর্বভূতেবু-সর্বাত্মন্বিত্যনেনোক্তাতু অবিদ্যা কর্ম কার্য্যং যদ্যা অপরায়াঃ দা তংসংজ্ঞা মান্বেত্যর্থঃ। অভএব জীবদা রশ্মিদানীরভাৎ মণ্ডব-

क्रमननर्छः।

ষেণ ত্যজন্তঃ। ভূবস্য খং কাৰ্যাভূত হাং তদন্তৰাম্যাদ্যবস্থস্য তুজ্ঞপ্স্য চ খদংশখাতত তব দৰ্শনঞ্চ ফুক্তমেৰ। বতঃ কাৰ্যমাত দৃষ্টিনাম

🗃 বিশ্বনাপচক্রবর্তী।

মৃগরন্তি। কিং কুর্মন্তঃ স্নতং আন্তিরং মারিকং মারাঞ্ ত্যজন্তঃ অপবদন্তঃ। নমু চিন্মর্য্য জীবান্ধনো জ্ঞানেনাকং কিং চিত্তির-স্যাপবাদেনেত্যাশস্থাধান্তস্যাপবাদং বিনা অধিষ্ঠানতত্ত্বং ন সম্যক্ জ্ঞারত ইতি সভাং ব্যবহারেণাই অসপ্তমিতি অন্তি সমীপে অসপ্ত-মপ্যহিমন্তরেশ নায়মহিরিতি তদপবাদং বিনেত্যর্থঃ। সন্তং গুণং রক্ষ্ণ সন্তঃ কিমু যতি জানন্তি নৈব জ্ঞানন্তি তেখেব। অসলো-কুরং পুরুষ ইতি শ্রুতে জীবান্ধনঃ পূলস্ক্ষণেহণক্ষ্যো নৈক্তি তৎসম্মাভাবাদের দেহো দৈহিকাঃ লোক্ষোহাদরক্ষ ভক্ত নৈব-

269

অসন্তমপ্যস্ত্যহিমন্তরেণ সন্তং গুণং তং কিমু যদ্তি সন্তঃ ॥ ২৭॥ অথাপি তে দেব পদাসুজৰয়প্রসাদলেশামুগৃহীত এব হি।

ञीधतयामी।

নজ্ঞারত ইতি স্তাং ব্যবহারেণাই অসম্ভমিতি। অন্তি স্মীপে অসম্ভম্পাহিমস্থবেণ তাইবেদং বিনেতার:। সাধানতার বজ্ঞা সম্ভ

देवकदर्शिया

ৰিলকণং মাধাব্যৰধানতিরোধাপনীয়বৈত্বৰং যুক্তং। তদন্তরং হুক্তং। যথা কেবজগক্তিং সা তাবতন্যেন বউত ইতি। অবান্তবস্থত তইত্বৰহিৰস্বাদিনৈৰ তেষামেকাতাকানাং তত্ৰ সামাং নতু স্কাতানেতি তত্তংস্থানীয়ব্যেবোক্তং নতু তত্তজ্প হং তত্তভক্ষোযা অপি নাবকাশং লভতে। অত বিশেষবিবেকাং অভাগ্ৰতসন্ত্তিট্টীকয়োব্যলোকনীয়া ইতি দিক্। ২৭ ॥

শদ্যপ্যেবনপরিচ্ছিন্নং স্বনাহাত্যাং প্রক্র্টনেব তথাপি স্বংপ্রসাদেনৈব তরিবেকস্য তৎপবিসর্গমনং ভারত্বভাই অথাপীতি যোজনাত্র স্পানী। তত্র চাথাপি তব মহিন্ন স্কর্মান ভারতি তানেব পূর্বপ্রকরণে বিবর্ত্তবাদমন্যাধ্যাপনার্বঞ্জ প্রক্র্টনেব পদার্থান্ত দর্শান্তে। তের চাথাপি তব মহিন্ন স্কর্মান কর্মান ক্রিক্রানির বিশ্বন ক্রিক্রানির বিশ্বন কর্মান কর্মান কর্মান কর্মান কর্মান ক্রিক্রানির বিশ্বন কর্মান ক্রান ক্রান কর্মান কর্মান ক্রান কর্মান কর্মান কর্মান ক্রান ক

ক্রমসন্দর্ড:।

সভাপি কার্য্যে তত্ত্বৈর তৎ কারণং দৃশ্য ইত্যাহ। অসম্ভমিতি। সম্ভ ইতি সাধারণবিবেকিন: পূর্বেষাং সন্ধিশেষাণাং দৃষ্টান্ত: ॥ ২৭॥
তথাপি তবিবেকস্য স্বংপর্যান্তগমনং স্বংপ্রসাদেনৈর স্যাদিত্যাহ। অথাপীতি ভক্ত্যা পদাস্ক্রশন্প্রয়োগ:। লেশে হাকিতথ্য বিদ্ধিক্ষাং ক্রমেণ পূর্ণপ্রাপ্তাভিপ্রারেণ মহিম্ব: ঐশ্ব্যমাধুর্যাদিরপ্রশাহাত্যাস্য। মমকু তাদৃশপ্রসাদস্য কলং যক্ত্রানং

শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

সন্তি। তদপ্যবিদ্যবৈত স্থিন জীবাতানি দেহে। ২ধ্যন্তঃ। তত্ত কদাচিহ্ছুতেন জ্ঞানেন নায়য়াতা দেহ ইতি তদ্য দেহ-স্যাদতোহণ্য প্ৰাদং বিনা দতাং ওদং জীবাতানং কিং জানন্তি নৈব জানন্তীত্যুগ্ঃ ॥ ২৭ ॥

কিঞ্চ জীবাতানো ব্ৰহ্মস্থায়ভবন্ত কেবলেন ঘডজিলেশেনাপি ভবতি নান্নথেতাছে। অপাণীতি ষদ্যপি নাৰামান্ত্ৰিক্সমন্তাংশ বিচ্যুতঃ আৎ তথা সজীবাতানা। তদপি তব পদাৰ্ভ্ঞপাদলেশেনাস্গৃহীত এব ভগৰত শুব ংযো নহিমা নহিমাশল্বাচাং ব্ৰহ্ম তক্ত তথা লানাতি। বহুকং ঘরৈব নংসার্রপেণ। মদীয়ং মহিমানঞ্চ পরব্রহ্মতি শলিতং। বেংস্যায়গুহীতং মে সংপ্রদ্রৈবির্তং ক্দীতি। ব্যাথাচ তত্ততা শ্রীস্থামিপাদানাং। মে মন্ত্রা অনুগৃহীতং তৃচ্যং প্রদাদীক্ষতং পরব্রহ্ম বেংস্যাগীতি। অত্র প্রদাদলেশে গুণীভূতভজিবোগো জ্ঞানিনাং পূর্ব্ধনিছে৷ বর্তত এব। তেনাস্গৃহীত ইতি অবিদ্যান্ত্রাম্পরতান্ত্রাং বিদ্যান্ত্রাপেরন্মারতে জ্ঞানঞ্চ মন্ত্রি সংলাক্তর্ভাতিত উর্ব্বিতাং ভক্তিনেব কেবলাং বহু মান্ত্রং প্রান্ত্রামান্ত্রাম্পরতান্ত্রাং। বন্ধ ফানী তামেব প্রসাদলেশরণো ভক্তিযোগো হুস্কৃতীতার্থং। বন্ধ ফলপ্রাপ্তের্যাং ন সাধনোপ্রেশ্য ইতি মন্ত্রা জ্ঞানং ভক্তিঞ্চ তাত্ত্বা কেবল বন্ধান্ত্রত বহুণান্ত্রাভান্যায়েশেগাভানাভাাং।

তোমার অবেষণ করিয়া থাকেন। ভগবন্! অসং ত্যাগের কারণ এই তহ্যতিরেকে অধিষ্ঠান তত্ত্ব পরিজ্ঞাত হয় না। ফলতঃ যদিও সর্প না থাকে তথাচ তাহার নিষেধ না করিলে সাধু পুরুষেধা কি রজ্জু জানিতে পারেন ? কখনই পারেন না। অতএব আত্মরূপে জ্ঞান স্বারাই মুক্তি হয় অত একারে হয় না, ইহা নিশ্চিত হইল্॥ ২৭॥

হে দেব! হে ভগবন্! যদ্যপিও মোক জ্ঞানলভা তথাচ তোমার পাদপদ্ম দমের প্রসাদশেশে যে ব্যক্তি অমুগৃহীত, তিনিই দ্বনীয় মহিমার তত্ত্ব অবগত হয়েন, তত্ত্বতীত অন্য কোন ব্যক্তি অসং জানাতি তবং ভগবন্মহিম্নো নচান্য একোহপি চিরং বিচিম্বন্ ॥ ২৮॥ তদস্ত মে নাথ স স্থারভাগো ভবেহত্র বান্যত্ত্বতু বা তিরশ্চাং।

औशत्रवामी।

কিনু যতি জানস্তি। অতি সন্তমপি গুণমিতি বা নজানগ্রীত্যর্থ:। ওন্মাদাস্মতহ্যৈব জ্ঞানানুস্তিরিতি ভাব:॥ ২৭॥

নম্ এবং জ্ঞানৈকসাধ্যে মোক্ষে কিমিতি ভক্তিরুলেঘাষিতা অত আহ অথাপীতি। বদ্যপি হন্তপ্রাপানিব জ্ঞানমুক্তং অথাপি হে দেব তব পাদাপুত্র ধ্বস্ত মধ্যে একদেশস্যাপি যং প্রসাদলেশোহপি তেনামুগৃহীতেনামুগৃহীত এব ভগবত ন্তব মহিন্ন ন্তবং জানাতি হে ভগবন্ তে মহিন্ন শুব্মিতি বা একোহপি কশ্চিদপি চিন্নমপি বিচিম্ন অভদংশাপবাদেন বিচারমূলপীতার্থং ॥ ২৮॥

তত্তবাভ্রিভাগঃ মহঙাগাং অত ভবে ত্রক্ষক্মনি অন্যত্ত তিরশ্চামপি মধ্যে বক্ষক্ম তিমিন্ বা যেন ভাগোন ভবদীয়ানাং জনানা-

देवकवटलावनी।

নিঃসঙ্গং সরপীত্যর্থঃ। শ্রেছো ক্লডাদিরপীতি বা বিচিম্বন্ তবং কীদৃক্ কিয়মেতি শাজাভ্যাসেন বিচাররন্ বোগাভ্যাসেনচ মৃগরন্দীতার্থঃ। লেশেছ্যজিক্ত বর্জিকোঃ জনেণ পূর্ণপ্রাপ্তিপ্রায়েণ॥ ২৮॥

মমতু তাদৃশপ্রসাদস্য কলং বজ্জানং তস্যাপি য় ক্ষেত্রপাসনং তস্যাপি য় কলং সাক্ষাৎকার: সএব সহসা সংবৃত্ত গুমাদেতদেব প্রার্থির ইতি নৌরীত্যাদি প্রতিজ্ঞানের সঙ্গমরন্ সর্বং প্রকরণং তাদৃশে শ্রীকৃষ্ণ এব পর্যাবসাররন্নাই মাবৎসমান্তি। তত্তমাং নাথ হে সর্বকামপরিপ্রক পারমেট্যপদপ্রাপকং বন্ধম ভাগাং তন্মহন্ন ভরতি কিন্তু সএব ভূরিভাগাং মহন্তাগাং বভ্রবজ্ঞানানেকোহণীতি সেবালাং সম্যক্ষাদ্যপেক্ষরা অতএব নিশক্ষঃ। তত্ত্বত ব্রক্ষমনি অন্যত্ত তৎপ্রতিযোগিছুরিগাদিতির্যাগ্রোনৌ বা ন মমাগ্রহঃ। কিন্তু তত্তকাবেবেতি বাশক্ষাভ্যাং স্চ্যতে হরিণাদিযোনৌ সেবাচ স্বেহনে রঞ্জ্ঞাদিমার্জনান্নাবহেলনাদি রূপা গ্র্মা। সাচ তদ্বিধানাং দৃষ্টের কিল প্রার্থতে পদ্যম্বমিদং ইথং বা সঙ্গমনীয়ং। বদ্যপ্রেবং তব মহিনা তথাপি তৎপদাব্রম্বন্ধস বং প্রসাদো

क्रमनमर्कः ।

তিস্যাপি যথ কলমুপাসনং তস্যাপি যথ ফলং সাক্ষাংকার: সএব সহসা সংবৃত্ত জন্মদৈতদেব প্রার্থন্ন ইতি॥ ২৮॥

নৌমিত্যাদি প্রতিজ্ঞানের সক্ষয়ন্ সর্কপ্রকরণং শ্রীকৃষ্ণ এর পর্যাবসায়িত্মাহ। তদন্তিত্যাদিনা যারৎসমাপ্তি। অন্যত্র হরিণাদিযোনৌ বা সেবা চাত্র মেহেন রজনাদিমার্জনায়াবহেলনাদি রূপা সাচ তদিধানাং দিষ্ট্রৈব কিল তং প্রার্থতে॥ ২০॥

এ বিশ্বনাথচক্রবর্তী।

বিচারয়রপি ॥ ২৮ ॥

ভৌ বন্ধন্ সাধ্যসাধনতবজ্ঞশিরোমণে অতৈয়ব ব্যঞ্জিতলক্ষণরো উজিক্সানরে। মধ্যে তব কুত্র স্পৃহেত্যত আহ তদন্ধিত। হে নাথেতি সংখাধনেনৈব ব্যঞ্জিতারাং সত্যামপি দাস্যস্থারাং ভৌ বন্ধন্ উৎকর্বনিকর্বো স্যাক্তরা বিচার্য্যের সর্কোৎক্ষইং বন্ধ স্প্রইং বন্ধ স্প্রইং বন্ধ স্প্রইং বিভাগের মার্কারে তিবি সংক্ষাবিদ্যার ক্ষাবিদ্যার ক্ষাবিদ্যা

পরিত্যাগ না করিয়া চিরকাল বিচার করিরাও তাহা জানিতে পারে না॥ ২৮॥

অতএব ছে নাথ! এই অক্ষজনে অথবা পরে অন্য কোন পশু পক্ষাদি মধ্যে যে জন্ম ছইবে

যেনাহমেকোহপি ভবজ্জনানাং ভূত্বা নিষেবে তব পাদপল্লবং॥ ২৯॥ জহোহতিধত্যা ব্ৰজগোরমণ্যঃ স্তত্তায়তং পীতমতীব তে মুদা। যাসাং বিভো বৎসতরাক্সজাত্মনা যতৃপ্তয়ে হদ্যাপ্যথ নালমধ্বরাঃ।

धीधत्रश्रामी।

মেকোহপি यः কশ্চিদপি ভূষা নিষেবেহত্যর্থ: সেবেয় ইত্যর্থ: ॥ ২৯ ॥

দেবাদিজন্মনোহপি যত্র কুত্রাপি তন্তক্তিমজ্জনৈৰ শ্রেষ্ঠমিত্যৌংক্তেয়ন মপ্তভি: শ্লেকৈরভিনন্দতি অহো ইতি ধন্যা ইত্যা-

বৈষ্ণবতোষণী।

হম্প্রহঃ তস্য লেশােহপি যত্র কিমুত পূর্ণ: স তেনামূগ্হীত এবেতি ভবজ্জনানামমূগত রূপ একোহপি কশ্চনাপি ভূত্বেতি চ ॥ ২৯ ॥
নম্ ভবেয়ং নাম সর্বপূর্ণস্বয়াপি সেবিভূমবেষণীয়া। কিন্তু ভবান্ প্রমেষ্ঠীমজ্জনাশ্চাত্র গোপা গোরক্কাএব তত্মাং ক্রঞিং
যাদ্বাদি সঙ্গএব অংপ্রাপ্ত, মহির্যাপীত্যাশক্ষ্য এষামেব মহিনা সর্বতঃ পর ইতি তদেকদেশােদাহরপেন ব্যাঞ্যতি তেনচ স্থাভিলায়ঃ

যাদবাদি সঙ্গন্ত বংপ্রাপ্ত দ্বিষ্ঠানিত লাব্দু ব্রব্ধনার । কিন্তু ভবান্ শর্মে ভাবন্ধ শাব্দ বিদ্যালয় বিশ্ব কর্মান বিশ্ব কর্মান বিশ্ব কর্মান কর

ক্রমসন্দর্ভঃ।

কে তে তবংসাহিত্যযোগ্যামজ্জন। ইত্যাশঙ্কা তানেব ব্যঞ্জয়িপুমাহ অহো ইতি। যথা। অহো ইতি ন কেবলমত্র তাদামেবে দৃশ্যং ভাগ্যং তচ্চ তথ্বং কাদাচিৎক্ষেব নচ যভ্প্তয়ে ইতি বদেব ভবন্ম।হাত্ম্যং অপি তু তথাসিমাত্তেথেব নিত্যমেবচ কিম্পি তথিবাজতে ॥

ভবনাহাম্মানপি ন তাদৃশতাযোগ্যমিত্যন্তি অতিশয়াম্ভরমপীতি শ্বরন্তিব পুনরতীব চনৎকারমাহ অহে। ইতি। অহো আশ্চর্য্যে। ভাগ্যমনির্ব্বচনীন্নন্তংপ্রসাদঃ। বীঙ্গা তদতিশয়তাপ্রাগন্ধ্যেন। পুনঃ পুনশ্চমৎকারাবেশাৎ কেষাং তত্ত্রাহ। নলগোপত্রকোকসাং এজস্থমাত্রাণাং পশুপক্ষিপর্যস্তানাং। কিং তৎ যেষাং প্রমানলং মিত্রং স্বাভাবিকবন্ধুস্থনোচিতপ্রেম কর্ত্ব। ক্লীবৃত্বং ছাল্সং তেন চ বিজ্ঞানমানলং ব্রেম্বতি শ্রুতিবাচ্যং তৎ স্করেতি। বংকিঞ্চিদানল এব থলু সর্ব্বে তাদৃশপ্রেমকর্ত্তাবো দৃশ্যম্ভে নম্বানলঃ কুত্রচিৎ।

গ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী!

এব স্বোব্যস্তে হীত স্বত্যর্থতাৎপর্য্যনিষ্ঠ: ॥ ২৯॥

কিঞ্চ তত্র স্বয়ক্তেরতি নির্কাষ্ট সাইনতাবতোর প্রার্থনা সম্চিতা স্বংপ্রাদাং ফলবতী ভ্রাষ্ট্র বে তু স্বয়ক্তেরতি প্রকাশি ভ্রাণ্ড বি ত্রুলাং বিদ্যানির তি জালাং পদবী প্রার্থিয়িকুন্বোগ্যা স্বাদাদিভরতি হল্ল কেবলং তুমত এবেতাাই স্বংগ ইতি বাভাং। এই গাবো রমণ্যো গোপ্যান্ত স্বভিদ্যান্ত বাল্যান্ত বিভাগং। তথে বাহ বিভাগং বিদ্যানির স্বান্ধি বাল্যান্ত বিভাগং বিভাগ বি

বিভো! কি আশ্চর্য্য ! ভাজস্থ গো এবং গোপীগণ অভিশয় ধন্য, কারণ সমস্ত যজ্ঞ অদ্যাপি বাঁহার তৃত্তি নিমিত্ত সমর্থ হইল না সেই তুমি প্রতিক্ষণ তৃত্তিপ্রকাশ পুরঃদর ঐ দকল গো ও গোপীর

অহোভাগ্যমহোভাগ্যং নন্দগোপত্রজৌকসাং। যন্মিত্রং প্রমানন্দং পূর্ণং ক্রক্ষ সনাতনং॥ ৩০॥

প্রীধরস্বামী।

দিভি:। ব্রজগোরমণ্য: ব্রজস্থা গাবো গোপ্যশ্চ তে দ্বা বৎসতরাত্মজাত্মনা বৎসানাং আত্মজানাঞ্চ স্বদ্ধপেণ। যদ্য তব ভূপুরো অন্যাপি মর্বের বজ্ঞান সমর্থাঃ তেন দ্বমা প্রতিক্ষণং ভূপুতো বাসাং স্তন্যমমৃতরূপং পীতমিতি॥ ৩০॥

বৈষ্ণবতোষণী।

স চমৎকারমাহ অহে। ইতি। অহে। আশ্চর্য্যে। ভাগ্যমনির্শ্বচনীয়ন্তৎপ্রসাদঃ। বীঞ্চা তদ্ভিশয়িতা প্রাগন্তোন পুনঃ পুনশ্চমৎকারাবেশাং। নতু কথং প্রথমতশ্চমৎকারমাত্রং ব্যঞ্জয়দি যেবাং তৎ তান্ কথয় তত্রাহ শ্রীমলন্দরাজব্রক্ষাদিমাত্রাণাং প্রথক্ষিপ্র্যাস্তানাং কথমাশ্র্য্যঃ কথং বা ভাগ্যং তত্তাহ প্রমানন্দং মৃৎ তদেব যেষাং মিত্রং স্বাভাবিকবন্ধুজনে।চিতপ্রেম কর্ত্তাদৃশপ্রেমবিষয়ণ্চ ইত্যর্থঃ। তথাচ বকাতে জ্রীগোপে:। ছত্তাজশ্চানুরাগোহস্থিন্ সর্কোষাং নো বজৌকসাং। নন্দ তে তনয়েহস্মাস্ক তন্তাপ্যৌংপত্তিকঃ কথমিতি। আন-ন্দ্যা ক্লীবন্ধং ছান্দ্যং। তেন চ বিজ্ঞানমানন্দং ব্ৰহ্মেতি ক্ৰতিবাচ্যং তংস্ফ্রতি। যত্ত ক্লাপ্যানন্দ এব ধনু তাদৃশপ্রেমকর্তারো দৃশুদ্রে। নত্বানন্দঃ কুত্রচিৎ এবু ত্বানন্দোহপি তৎক্তী তত্ত চ্ শ্রুতিমাত্রবেদ্যত্বেন প্রমঃ থণ্ডামূততারত্য্যবং স্বরূপত এবালৌকিক্সাধুর্য্যঃ ষত আশ্চর্য্যং ভাগ্যং চেতি ভাবঃ। অন্যদপ্যাশ্চর্য্যময়মিদমিত্যাহ সনাতনী তত্তাদৃশমপি নিত্যং ক্সাচিৎ কুজানন্দোহপি ন নিত্যো দৃশ্যতে এযাত্ত তাদৃশোহপি,পুন: কথস্কুতং। **অথ কন্মা**ছ্চ্যতে ব্ৰহ্ণহৃতি বৃংহয়তি চেতিশ্ৰতে:। বৃহত্বাদৃ_ংহ্মত্বাচ্চ যৰু ৰূপর্মং বিছ্বিতি বিষ্ণুপ্রাণাচ্চ। রুহত্তমত্বেন ব্রহ্মসংজ্ঞমপি। অথানন্দস্ত মীমাংগা ভবতীত্যারভ্য যে তে শতমিতি বারং বারং মহুষ্যানন্দান্মৎপর্যাস্তা-নন্দং দশ্ধা শত শত গুণাধিক্যেন গণগ্রিত্বা মত্তো হৃপি শতগুণমানন্দং পরব্রহ্মণঃ। প্রোচ্যাপি সম্রমেণ যতো বাচো নিবর্ত্ততে অপ্রাপ্য মনসা সহ। স্থানন্দং ব্ৰহ্মণো বিশ্বান্ন বিভেতি কুতশ্চন ইত্যনেনানস্ত্যং স্মুদ্ধা বাশ্বনদাতীতে সৰ্বতো বৃহত্তমন্ত্ৰেন শ্ৰুতিভিগ্নতিমপী-তার্থ:। ততঃ আনন্দভৈতাদৃশ্বমেতাদৃশর্হতোহপ্যনেন মিত্রবং কচিদ্টমিতি ভাব:। নচৈতাবদেব কিং তহি পুর্ণস্পামৃতং সৌরত্যাদিভিরিব স্বাভাবিকরপগুণলীলৈশ্ব্যমাধুরীভিঃ সর্কাভিরেব পূরিতং সং। এতদ্পি কুতাপি ন দৃষ্টং ঐতং নচ তাদৃশ মিত্রমিত্যর্থঃ। অতাপরোক্ষেহপি প্রীক্বকে পরোক্ষবৎ নির্দেশঃ কৌতুকবিশেবার। কিঞ্চ মিত্রত্বমত্র বিধেনং প্রমানন্দমন্দ্যং। ততশ্চান্দ্যধর্মবিধেমবৈশিষ্ট্যায় প্রযুক্তাত্তে ইতি মিত্রতায়া অপি তত্তত্তাবো লভ্যতে। মনোরমং স্ক্রণমিদং কুগুলং জাতং ইতিবং যুক্সতে চ অনুদাস্ত বিধেয়তাদাঝ্মাপন্নবেন বিবক্ষিতথাৎ তত্র চ পরমানন্দথং পূর্ণগ্রঞ্চ তন্তাঃ সিদ্ধমেব তংপ্রেম রূপথাৎ সনাতনত্ত্বসি তম্ম সনাতনখাৎ নিৰুপাধিজেনোক্তৰাৎ , কালবৈশিষ্ট্যানিৰ্দেশেন কালদামান্যলাভাৎ। অভাত্ৰ শ্ৰীক্ষিণ্যাদে) দৃষ্ট্ৰাৎ এশামপি। তথৈব শ্রতি তন্ত্রাদৌ দৃষ্টত্বাচ্চ। এবং পূর্ববং শ্রীক্লঞ্চন্য স্বয়ং ভগবস্তমণি দর্শিতং। তথা নিজ্ঞাভিলাষদ্য যুক্ততা চেতি ॥ ৩০ ॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

এব্রানন্দ এব তৎকর্তা। তত্র চ শ্রতিমাত্র বেদ্যান্তেন পরমধ্যামৃত্তারতম্যবৎ স্বরপত এবালৌকিক মাধুর্যাং নাঠতাবদেব। কিং তং পূর্বনিপি অমৃতং দৌরভ্যাদিরিব স স্বরপত গুণলীলৈশব্যং মাধুরীভিঃ সর্ব্বাভিরেবামর্য্যাদমেব সং এতদ্পি কুরাপি ন দৃষ্টং শ্রত্তঞ্চ লচ তাদৃশং মিত্র মিত্যর্থাং। পুন: কথস্তুতমপি ব্রন্ধ আনন্দানস্তোন সর্বতো বৃহদ্পি। আনন্দস্য তাদৃশবৃহত্বং তাদৃশবৃহত্বং তাদৃশবৃহত্বং আন্দানস্তোন্ত বৃহদ্পি। আনন্দস্য তাদৃশবৃহত্বং তাদৃশবৃহত্বং আন্দানস্তি বৃহদ্পি। আনন্দস্য তাদৃশবৃহত্বং তাদ্ধবৃহত্বং তাদৃশবৃহত্বং তাদৃশবৃহত্বং তাদ্ধবৃহত্বং তাদ্ধবৃহত্বং তাদ্ধবৃহত্বং তাদৃশবৃহত্বং তাদ্ধবৃহত্বং বিশ্বত্বং বিশ্বত্বং তাদ্ধবৃহত্বং তাদ্ধবৃহত্বং তাদ্ধবৃহত্বং বিশ্বত্বং বি

बिरिश्वनाथक्क वर्डी।

মূদঃ প্রতিক্ষণবর্দ্ধি ছয়েব তত্রাপি গর্কীং বৎসতরান্ধনেতি দোহনাদি ব্যবধানস্যাসক্তম্বং গোপীনামাত্মজাত্মনেত্যন্যথা তৎপ্রাপ্তাভাবঃ তত্রাপি বিভা ইত্যতিলোভাৎ স্বস্যু বহুস্বরূপীকরণেনেতি তাসাং মধ্যে একস্যা অপ্যেক স্তনোথো রসোহপি ত্বা ত্যক্তুমশক্য ইত্যানন্দমাত্র স্বরূপমা তবাপ্যানন্দকত্বাত্তাসাং বপুষঃ সচিদানন্দত্বে কে নাম সংশেরতে ইতি ভাবঃ। যস্য তব তৃপ্তয়ে তৃপ প্রীণনে যং আং প্রীণয়িত্মিত্যর্থঃ। অদ্যাপি অনাদিকালতঃ প্রবৃত্তা অদ্যপর্যুম্ভা অপি সর্বেহিপি যক্তা অন্যদাদিকতা মন্ত্রাহ্মানপাবিত্তাাদ্যবিকলা অপি নালং ন সমর্থাঃ॥ ৩০ ॥

বৎসতর ও আত্মজ , স্বরূপ হইয়া মহাহর্ষে অমৃতরূপ ছুয়পান করিতেছ। অহো নন্দগোপ এবং ব্রজবাসি মানবদিগের অত্যাশ্চর্য্য ভাগ্য। প্রমানন্দ রূপী স্বনাতন পূর্ণব্রহ্ম তাঁহাদের মিত্র হইয়া-ছেন ॥ ৩০॥

এমাস্ত্ৰ ভাগ্যমহিতাচ্যুত তাৰদাস্তামেকাদদৈৰ হি বয়ং বত <mark>ভূৱিভাগাঃ।</mark>

औरत्रवामी ।

কিঞ্চ এবাং ভাগান্ত তাবং মহিতা মহিনা আন্তাং কন্তাং বজুং শক্ষোতি। শর্মাদয়ং শর্মোহছারাধিষ্ঠাতা আদির্ঘেষাং চন্দ্রাদীনানেকাদশনাং তে তথা বয়ঞ্চ বয়মিত্যান্ত্রানমেবাহ বহুমন্তমানঃ এবং মনোবৃদ্ধাহন্ধারচকুবাদ্যধিষ্ঠাতার অযোদশ দেবা এতাবং মত অং। ভূরি ভাগাঃ যন্ত্রানেতেয়াং হ্ববীকাণীন্ত্রিয়াণ্যেব চ্যকাশি পানপাত্রাণি তৈঃ। তে চতুর্দশন্ত চিন্তাধিষ্ঠাতুঃ অব্দ্রী এবং উদ্ধ্যে বারিজে তর্মোর্ম্মকর্ম্ম ত্রেবামৃতং সাত্র আসবং মাদকং পিৰামঃ। এতত্ত্বং ভ্বতি। যদা প্রত্যেকমিন্ত্রি।ভিমানিনে। বয়ং কীঠিসৌদ্র্যান

रिवश्चवरकावनी ।

ক্রমসন্দর্ভ:।

এষামিত্যাদি পঞ্চ । ৩১ ॥ ৩২ ॥ ৩৩ ॥ । ৩৪ ॥ ৩৫ ॥

শ্রীবিশ্বনাথচক্রবন্তী।

রাগাত্মকবাংসল্যপ্রেমবতীঃ স্তবা রাগাত্মকদণ্যপ্রেমবতঃ স্তবন্ধের তন্ত্রেণ বাংসল্যাদিসর্ববতীরতোহপ্যপ্রাোক্যতি অহি বি ভাগ্যমহোভাগ্যমিতি। বীলা অত্যানলচমংকারেণ। পরমানলমিতি স্নীবন্ধমার্যং। তেন চ সতাং বিজ্ঞানমানলং ব্রন্ধেতি প্রতিবাচাং ব্রহ্ম স্চরতি। পরমপ্রেন ক্রন্ধস্য তৎপ্রতিষ্ঠাত্তবং পূর্ণপ্রেন ব্রন্ধবন্ধান্ধান্ধাব্যরাগাং ব্যার্ত্তিং। এতালুলং ব্রন্ধ যেবাং শ্রীদামানিবালকানাং মিত্রং স্থা। মিত্রত্বস্য ত্বংকা ভবন্ধং বার্য়ন্ বিশিন্তি। স্নাতনং সার্ক্ষকালিক্মিতি মিত্রব্বস্য সার্ক্ষকালিক্ষেন শ্রীদামানিনামিপি সার্ক্ষকালিক্স্বং জ্ঞাপিতং। অন্যস্ত্রমো ব্রান্ধণ ইত্যুক্তে ব্রান্ধণ্যবিদ্যাবন্ধস্থাত্তিবিদ্যান্ত্রাপ্র ইতিবন্ধানি নিজন্ধস্য স্থানাভনত্বং বিবন্ধিতং। তথা মিত্রশন্ধস্য বন্ধ্যাত্রবাচক্ষান্বের্মণ্ড ব্যাব্যেরং। শ্রীমন্ধলবান্ধব্রন্ধবান্ধানাং পশুপন্ধিপ্রযান্ত্রাপ্র স্থান্তর্মান্ত্রালাং কর্মেরানেবাহো ভাগ্যমহোভাগ্যং কিং পুন ন শাস্ত্র ত্নীর্ন্তাপানাঞ্চ। কিং তৎ বেবাং বাৎস্ব্যান্দিস্ক্রিধ্বেশ্রম্বতাং প্রমানন্দ্র বন্ধ স্নাতনং মিত্রং বন্ধঃ। বন্ধবোচিতপ্রীতিকর্ত্ব। বন্ধক্ষাতে গোপেঃ। হন্ত্যন্ত্রশান্ত্রাক্ষত্রর্থ আয়তিং। তেন গ্রামানন্দ্রন্ধবিধ্বেশ্রম্বতার প্রাত্রাহ্য আয়তিং। তেন গ্রামানন্দ্র

হে অঁচ্যুত! ঐ সকল ব্যক্তির ভাগ্যমহিমার কথা একণে দূরে থাকুক, কে তাহা বলিতে সমর্থ হইবে ? আমি এবং একাদশ ইন্দ্রিয়ের অধিষ্ঠাতা সেই একাদশ দেব তথা অহস্কারের অধিষ্ঠাতা শর্কাদি,আমরাও মহাভাগ্যশালী, েয় হেডু ইন্দ্রিয়রপ চয়ক (পানপাত্র) দারা আপনার পাদপ্রেয় এতদ্বীকচষকৈরসকৃৎ পিবামঃ শর্কাদয়োহজ্যুদজমধ্বমৃতাসবং তে॥ ৩১॥ তদ্ভুরিভাগ্যমিহ জন্ম কিমপ্যটব্যাং যদেগাকুলেহপি কতমাজ্যুরজোহভিষেকং।

প্রিধরস্বামী।

সোধন্যাদ্যেকৈকদেশগেবিনোহপি ক্বতার্থান্তনা সর্ব্বেক্সিয়েঃ সর্ব্বদেবিনাং এতেষাং কিং বর্ণাতে ভাগ্যমিতি॥ ৩১॥

অতোম্যা প্রাথিত তদস্ত মে নাথ স ভূরিভাগ ইতি যন্তদেতদেবেতাাহ তন্তুরি ভাগ্যমিতি কিং তৎ ইহ মনুষ্যলোকে যৎ কিম্পি জন্ম ত্রাপি অটব্যাং যৎ ত্রাপি গোকুলে যং। অহো স্তালোকং বিহায় অত্র জন্মনি জাতে কো লাভঃ অত আহ অপি কত-মাজ্যে রজোহভিযেকমিতি। গোকুলবাসিনাং মধ্যেহপি কত্মস্য য্স্য ক্সাপাজ্যির্জসাহভিষেকো যশ্মিন্ তং। নমু কুতো

বৈষ্ণবতোষণী।

কত্বেন চাসবং তয়োৰ নৈক্যাং তদ্ৰপং। যথা এতেচ তে হৃষীক চ্যকাশ্চ তৈ:। এতছক্ত প্ৰয়োগাশ্চাত্যস্তচনৎকারেণ। অন্তা মৃত্যুহীনা মুক্তান্তেষামপ্যাসবং মাদক্মিত্যুৰ্থ:॥ ৩১॥

তদেবং তেবাং মহামাহাত্মমহবদন্ জাতদৈন্তজ্ঞনাস্তঃপাতিতয়া অচ্চরণদেবেছামপি ধার্টে নৈবাকরব্মিতি ব্যঞ্জয়ন্ ব্য কিঞ্চিতজ্ঞনচরণরজ এব বহু মন্যমানঃ প্রার্থিতে তদিতি তৎ প্রতিকৃশং মুক্ত্যাদি পঞ্চকং ইহেত্যাদি পদ পঞ্চকেন নিরস্তং তত্র জ্মেতি মুক্তিরিহ মথুরামগুল ইতি বৈকৃষ্ঠাদিকমপীতি স্বান্ধানি। অটব্যামিতি মথুরাদি। গোকুল ইতি মধুর্নাদি তত্রাপি কিমপি প্রাণি মুহতৃণঅমিত্যতিপ্রায়। তবৈবাভিনু রজোভিঃ সম্যাণভিষেক্সিন্ধেঃ। তচ্চরণদেবায়ামস্তরীণাভিলাবাচ্চ। অভিষেক ইতি সর্বান্ধানালাভাহকেং। অন্যত্তৈঃ। যথা। নমুক্থং সাক্ষাক্ষোপাদিজনৈব ন প্রার্থিতাং তত্রাহ বদিতি বদ্য গোকুল্য তথা নিনাত্র্যা নিথিলং ভগবান্ মুকুল এব তত্র যং স্বয়ং ভগবান্ পরাংপরত্বাং সাধ্যিত্ব্যাপক্য ইত্যর্থঃ। সাধিতোহিপি যো মুকুলঃ প্রায়শো মুক্তিমেব দাতা নতু ভক্তিযোগমাত্রমপি তনেতং বিনা মজ্জনঃ ক্ষণমপি যজ্জীবিতৃং ন শক্ষোতীত্যর্থঃ। ইতি পরমপ্রেমবিশেষবত্ত্ব-মুক্তা। আতাং তাবদনৈয়হ্ সোধ্যতং ছল্ল ভপ্রেমত্বক বদ্য পাদরজ্যক্ষতিতিরদ্যাপি ত্বি সাক্ষান্তাহিপি দৃশ্যত এব কত্মং ক্রা কিয়নহিমেতি জ্বাত্তু মিষ্যত এব নতু তদন্তঃ প্রাপ্যত ইত্যর্থঃ। যতো বাচ ইত্যাদি ক্রতেঃ। অতঃ পরমপ্রাচীনমাদৃশ্যক্ষিত্র ভিজ্ঞানে ত্বপাদাজক্মীগোপাদিজন্ম

ঐবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

ম্প্রানন্দরন্তি ব্রন্ধবাদিন ইতি তে সচ্চিদানন্দময়া এবাথচ প্রম্বিশ্বয়রস্বিষ্ণীভূতা ইতি ধ্বনিতং॥ ৩১॥

াককৈ তি ব্ৰহ্মানিতি ব্ৰমণি ভ্রিভাগাঃ ক্রিয়ামহ ইত্যাহ এবান্ত ভাগ্যায় মহিতা মহিমা তাবলাঝাং কন্তাং বক্তুং শক্রোতি।
বানেকাদশ এতেবামিক্রিয়াধিষ্ঠাতারোহণি ভ্রিভাগাঃ। বত এতেবাং হ্বীকাণীক্রিয়াণ্যের চবকানি পানপাত্রাণি তৈন্তব অল্যু দল্লোত্রণক্ষলবামে লীরঞ্জিতয়াম ধু তত্রত্যাভিমানাধ্যবদায়সকল শব্দ স্পর্ণ রূপ রস গন্ধ কীর্ত্তন সন্ধাহনান্তিকগত্যাত্মকং তদেব
অন্তং স্বাত্ন আসবং মাদকং শর্কাদেয়া ক্রন্তাদর ইত্যলীলম্যেক্রিয়ব্যব্যস্যাধিষ্ঠাত্দেবতাব্যস্য ত্যাগাৎ চিন্তাধিষ্ঠাত্ ব্যাহ্রদেবস্যাপি তদভেপ দৃষ্ট্যা ত্যাগাদেকাদশৈরপিবামঃ। অত্র যদ্যপ্রেমান্তরাত্মন এব বিষয়ভোগো নতু তত্তৎকর্ত্বণমিক্রিয়াধিষ্ঠাত্পামিত্যধ্যাত্মদিলায়ন্তথাপি বৃদ্ধৌ ব্রন্ধা তিষ্ঠতি চকুষি স্থ্যন্তিষ্ঠতি তং তমধিষ্ঠাতারং বিনা তন্তদিক্রিয়ং শ্রীকৃষ্ণনিষ্ঠানামিপি রূপরসাদীনাং গ্রাহকং
ন স্যাদিতি সামান্য দৃষ্ট্যা অধ্যাত্মবিদাঃ প্রবাদোহপি শ্রীকৃষ্ণে রত্যোৎক্ষ্ঠ্যবতাং ব্রন্ধাদীনামানন্দহেতুঃ কর্ত্বমাত্রেশৈব ভোক্ত্র্যভিন্ন
মানবীকারাৎ তথৈব স্বেবাং প্রাক্তন্ত্রহপি অপ্রাক্ষতন্তন্তাদীতি। অন্যথা চিদানন্দনমন্ত্র প্রস্থাং শ্রীভগবৎ পরিবারাণামিক্রিয়াদীনান্
মণি ভগবত ইব তন্মিয়্বনেব নতু প্রাক্তন্তং সম্ভবেৎ কুতন্তন্ত প্রপঞ্চাত্যানাং একা অন্ধন্তীয়া অন্ধ্রপ্রেত্যার্থঃ। দলৈব দুলাতি ব্রাণি ত্রাপ্রিলাভেন স্বেরামণি ভাগ্যনভিনন্তি গ্রামিতি ভাগ্যমহিতা একা অন্বিতীয়া অন্ধ্রণমত্যর্থঃ। দলৈব দুলাণি বরং

মকরন্দ, যাহা স্থসাতু মাদক স্বরূপ, তাহা পানু করিতেছি॥ ৩১॥

অতএব মসুষ্য লোকে, তন্মধ্যেও অরণ্যে, তন্মধ্যেও গোকুলে, যে কোন জন্ম হওয়া মহৎ ভাগ্য, হারণ তাহাতে গোকুল বাদি যে কোন ব্যক্তির পদ্ধূলি দারা অভিষেক হইবার সম্ভাবনা আছে। ্যজ্জীবিতং তু নিখিলং ভগবান্ মুকুন্দস্তাদ্যাপি যৎপদর্জঃ শ্রুতিমৃগ্যমের ॥ ৩২ ॥ এষাং ঘোষনিবাদিনামুত ভবান্ কিং দেব রাতেতি ন-

धीधतयामी।

গোকুলবাসিন এব অভিধন্যাঃ তথাহ যদিতি বেষাং শীবিতং নিথিলং মুকুল ইতি মুকুলপরমেব জীবনমিতার্থঃ। ছল্ল'ভতা মাহ অদ্যাণীতি। ফ্রতিমৃগাং বেদৈরপি মৃগ্যত এব নতু দৃশ্যত ইতার্থঃ॥ ৩২ ॥

অপিচ কিং বর্ণাতে ক্তার্থস্থনেতে বাং ধেবাং ভুক্তা তগবানপি ঋণী আতে। নত্ন। কিং দাভূমসমথোহংং যেন ঋণী দ্যাং অত আহ উত অপি ভবানপি এবাং ক্যাপি কিং বিশ্বফলাৎ সর্ক্ষলাত্মকাৎ স্বত্তঃ পরং ফলং রাতা দাদ্যতি ইতি নশ্চেতঃ অন্নৎ সর্ক্ত গচ্ছৎ

देवस्वद्यायनी।

প্রার্থনৈতি ভাবং। এবং অহোহতিধন্তা ইত্যারতা শ্রীব্রজবাসিভেদানাং যথা পূর্বনাহান্ধাকৈমৃত্যং দর্শবিদ্ধা শ্রীব্রজেশবয়ের তদ-ডীব বোধিতং সাক্ষাব্রদপ্রস্তাবশ্চ তৌ প্রশংসিত্নপি কোহহং বরাক ইতি বিক্যা স্থায়ন্ত স্থাপরাধন্তভ্যলজ্ঞাভ্যাং ন প্রস্ততা এব। অতশ্চ তদাচ্ছাদনায় লব্ধানন্দবিশেষাক্তরাত্র এব প্রথমত উপন্যস্তা ইতি জ্ঞেয়ং॥ ৩২॥

নহ তবিষ্ণায়াপি মদ্যেবং চরণরজ এব পরমফলত্বেন দাস্যে। কিঞ্চ। পূর্বং তবতা তাং লক্ষ্মেব তাং ভৌমীতি প্রতিজ্ঞাতং অধুনা পুনরেতচ্চরণরজ্পএর প্রার্থতে ভল্তেরং নিষ্ঠা তবিষ্ণানামিতি সন্ধ্প্রমাশক্ষ্য তথৈবাহ এরামিতি পূর্বেক্রিকমাহাত্মানাং। উত প্রেল্ল। বিশ্বকলাদপীত্যপি শকাষর:। ততশ্চাস্যাঃ প্রীব্রজ্ঞ্মেরর্জং তব স্থানং নাস্তি এতংস্বরূপাদৃর্জং চ ফলং নাস্তীতি কুলচ দাতেত্যর্থঃ। অয়দিতি নঞ্পূর্কমিন্ধাতোরপং। ত্বঃ পরং ফলং কুরাপালানদিত্যর্থঃ। মুহতীতি নিশ্রাশক্ষেঃ সতাং স্থাব-

বীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

দিক্পাল দেবতা ভূরিভাগা ভবাম:। কুত ইত্যত আহ। এতদিতি স্বতর্জন্যা স্বনেত্রশ্রোতাণি স্পৃশতি। দংসচারণায় বজানিকা-স্তব্য তব চরণদৌন্ধ্যমৌন্ধ্যামৃতং নেত্রশ্রোকৈঃ পিবাম ইতি॥৩১॥

তিমাজ্বগদৈর্য্যার প্রাপ্তায় প্রাপ্তব্যায় মোক্ষায় চ ময়া জলাঞ্জলির তঃ কেন প্রকাবেলৈয়াং ব্রন্ধরাসিনাং চরণধূলয়ে। লণ্ডায় ইতি বিভাব্য সনিশ্চয়মাই তদেব মে ভ্রিভাগাং ভবন্ধিতি শেষং। যদি শ্রীমংকুপাকটাকাঃ উদারা ভবন্ধীতি ভাবং। কিং তং ইহ মটন্যাং বুলাবনে যথ কিমপি কোমল্ডুগন্ধানিজন্ম যতুপরি বংপ্রিষস্থাদিরজনাসিক্ষনচরণবিন্যাসসৌভাগাং সন্তবেং। নথবিশ্বতিহল্পতি লাভং বিহায় স্বযোগ্যমন্যৎ প্রার্থয়স্বৈতি চেৎ তহি গোকুলেছপি ছনগর প্রান্তাদাবিপ কত্মস্য দেশীর সৌচিককাক হিজপোল্ডেক তরস্যান্তিম রজনাহিভিবেকা যত্র তথা ভূতং শিলাপীঠ পট্টিকাজিল্ম ভবতু। নংব্রষাং রজবাসিনামেতাবন্মাহাত্মবন্ধে কোহেতুং কথং বা জগৎ প্রাস্ত্র জগৎক্রইঃ গরমেন্তিন স্তবৈষাং নীচজাতীনাং পাদধূলিলিজায়াং নান্তি লজ্জিত ত্তাহ যেগাং জীবিতং জগবান্ ভগং প্রকামমাহাজ্যেজ্যজ্যমন্ত্রনাগারং। তেন বিনা সদ্য এবানী হিয়ত্তে ইতি ভাবং। নিধিলমিতি কিঞ্চিপপি জীবিতং ন ভোজনপানাদিহেতুক্সমিত্যর্থনে মম লজ্জা স্যাদিত্তি ভাবং। অতো ম্যা.তিদস্ত যে নতু প্রায়ং প্রাপ্তিহ ইত্যতোহহং রক্ষাপি কিং বেদেভ্যোহপ্যধিকো বৃত্ত এতংপ্রার্থনে মম লজ্জা স্যাদিতি ভাবং। অতো ম্যা.তিদস্ত যে বাণ্ডিহ যথ পূর্বাং প্রার্থিহে তং হৃদ্য বৈশ্বতিক্ষমন্ত্র এব বাদ ব্রজ্ঞানাল্যতিমন্ত্রন মাম বাগান্তগাস্ব্যক্তি হাবং। মিনজ্জ্যতি তনেবং প্রার্থিতং ॥ ৩২ ॥

কিঞা যেষাং পাদরজো ময়া লোভাৎ প্রাথাতে তল্পতাতাং ন লভ্যতাং বা ময়েতি ∞শাঠং ন ক্রমে চেৎ মা ক্রহি । কিন্তনাদেক∘ যং পূচ্চাতে তত্ত্রমবশ্যমের দেগীত্যায় এয়াং এভ্যো ভ্রান্ কিং রাতেতি কিংকলং দায়াতীতি । উত প্রমে । ইত্যহং পূচনামীতার্থং । নয়

প্রতো । গোক্লবাসিরাই এরপ ধন্য কেন ? তাহার কারণ বলি, তাহাদের সমুদায় জীবন সেই মুকুন্দ-পরায়ণ, যাঁহার পাদধূলি অদ্যাপি প্রতিগণ অস্থেষণ করিতেছেন ॥ ৩২ ॥

হে দেব! ইহা বিচার করিয়া আমাদের চিত্ত মুগ্ধ হইতেছে, বোধকরি এক্ষণে ঐ সকল ঘোষ-নিবাদিদিগের প্রতি সর্ব্ব ফলাত্মক আপুনা হুইতে প্রেষ্ঠ আরও কিছু অন্য ফলদান করিবেন, প্রভোগ শ্চেতো বিশ্বফলাৎ ফলং ছদপরং কুত্তাপ্যয়ন্ত্তি। সদ্বেশাদিব পূতনাপি সকুলা স্বামেব দেবাপিতা যদ্ধামার্থস্থপ্রিয়াস্মতনয়প্রাণাশয়াস্ত্রহতে॥ ৩৩॥

তাবদ্রাগাদয়ত্তেনান্তাবৎ কারাগৃহং গৃহং। তাবশোহোইছিমু নিগড়ো যাবৎ রুক্ষ ন তে জনাঃ ॥৩৪

ञीधतकामी।

বিচাররং মৃহতি। সামেব দম্বাহন্ণ: স্যামিতি চেৎ নহি নহি সংঘাদিব প্তনেতি। সতাং ভক্তানাং যো বেশ স্তদস্কারমাত্রেণ শাশিষ্ঠা প্তনাপি তামেবাপিতা প্রাপিতা। তংগ্রতংস্বন্ধিনাম্পি দাস্যামীতি চেক্তর্জীহ সকুলেতি। বকাঘামুরসহিতা এষাম্পি তাবদবেতি চেৎ স্বপর্যাপ্তমিত্যাহ্ যদিতি। যেষাং ধামাদর স্বংক্তে স্বদর্থমেবেত্যর্থঃ॥৩৩॥

নমু ৰিগত রাপাদিদোঘাণাং সন্নাসিনামনি ন মুক্তঃ পরং কিঞ্চিদন্তি কথমেষামপর্য্যাপ্তমিত্যত আহ তাবদিতি। হে ক্লঞ্চ রাগাদন্ত

देवस्थवरकावनी।

যুক্তানাং ব্ৰহ্ণবিশেষাণাং ধাত্ৰীন্ধনানাং বেশাৎ লৈভে গভিং ধাক্ৰাচিতাং ততোহস্তমিতি তৃতীরোক্তে:। ইবৈতি তত্তাপি হিংসামন্ত্ৰদন্তেনৈৰ নতু ভক্তেত্যুৰ্ত্তঃ। অভঃ সমান্ত্ৰলহাৰ কথং স্যাদিতি ভাবঃ। পূতনাপীত্যনাস্থ কা বাৰ্ত্তেয়ৰ্ত্তঃ। অপিশক্ষেহ্ণং
ফ্ৰথাবাগ্যমন্ত্ৰাপি যোল্যঃ। সকুলেভি প্ৰাক্তনাধুনিকতংকুলোংগ্ৰসহিতা। গোকুলপ্ৰতিকক্ষত্বেন নিৰ্দেশাৎ। বকাষয়োত্ত
ভত্ত এব ভংশ্পৰ্শোহস্তান্তেখিৰ বামেৰেভি পূতনাথাঃ সাক্ষাৎ। অভেষাত্ত ভগবহুবিগাং পূতনাত্ববিধিবনৈৰ। বকাষয়োত্ত বিরোধিবেশাস্ক্রিমাত্রমিতি জ্রেয়ং। আপিতা ব্রৈবেভি শেবঃ। স্ক্রেনিকপাধিহিতকারী প্রিন্ন জালৃশপ্রীতিবিষ্ত্রঃ। তত্ত্তত ইতি
প্রত্যেকং স্বাভাবিক্ষেৰ তেষাং তদেকার্থবং। তব পূনঃ ভত্তভেদেনানেকপ্রিয়ন্ত্রমার্থবিনত্যর্বঃ। তদেবং তে পূর্ণা এব প্রভিলগত্ত চরণান্ত্র প্রত্যুপকারাসামর্থোনাপূর্ণা ইব ভততন্তেভাঃ কিমিব দাস্যন্তি। অভোহ্মপি ভবতামৃণিক্ষেন পারবশ্তমাশক্ষ তাদৃশনিজাভিলাবসিদ্ধনে তচ্চরণবদ্ধাং প্রমণিকান্তঃ হিচিভ:। তাদৃশভ্বশীকারমন্ত্রেয় এব পরম্ফলবাধাং॥ ৩০॥

নমুধামাদীনাং মদেকার্থতদ্বৈব ধদি তেষাং মহিমা তর্হি ভবানপি নিজগৃহং তবৈবাচরেদিতি চেৎ আন্তাং তাবদেষামাত্মনোছপি

ঐ বিশ্বনাথচক্রবর্তী।

সর্কাবেদার্থত বজেন ত্বির চেতসা বিচার্যী ব্যুমের জায়তাং ত্রাহ নোহন্মকং চেৎ ইতি বছরচনেন ন কেবলং মনৈর অপিতু ক্রজত সনকাদীনাং নারদাদীনাঞ্চ সর্কোদের সর্বজ্ঞানাং চেতো মুছতি। চেতঃ কীদৃশং বিশ্বকলাৎ সর্বকলাত্মকাত্বেহিণি অপর্যন্যৎ কলং ক্রাপি দেশে কালে বা অয়ং বৃদ্ধা হেধা অধিয়াপি অপ্রাপ্ন বং।ইন্ পতৌ শত্রতঃ। অয়মর্থঃ। সর্বকলর প্রমেতিরনাদিত এব প্রাদির্মাত্রর এব বর্তমে। অত এব ময়া এবাং ভ্রানিতি। বন্ধিপ্রম্বতা। বদি তু ত্রেহিপাধিকমনাৎ কিঞ্চন বন্ধ প্রশালত এব মহাগ্রে তিটালিয়েকে গোগ্যমভ্রিয়ে তন্ত্রু নাজীত্যমাকং চেতোমোহে হেতুরিতি। নহা এক্ষন্ সতাং তং ত্রানিভজ্জিবাদি মারেকেরাং ভ্রিয়াত্তীমন্থরাগ্যয়ী মছুতাং ভ্রিতঃ লানতৈর ভৎসাধাকলভ্তঃ স্বাস্থা প্রাদিরণঃ প্রথমনের দত্ত ইতান্যে থল্ কৃত্ত্রা ভ্রম্ভি অহং তু করিয়ামাণ্রিক্ত ইতি মরের ক্রিভমিতি চেৎ সতাং প্রভো ভদপি দ্বন্ধ নামেনে প্রবিশ্ব মহালাদির সহেশাদেবেতার্থঃ। পূত্রনা পালিষ্ঠাপি অকুলসহিতাপি তামের আপিতা দ্বৈর হাং স্বাস্থানং প্রাণিতা। তথা বেরাং ধামাদয়ো মমতান্দ্রানি ত্রংকুতে স্বন্ধবিনত্ত তে চৈতে ব্রন্ধবাসিনাহিপি স্বন্ধ হামোণিতা ইতি বাক্যানেরা নামানেরাজ্ঞীবাভল্যৈর জ্ঞাপিতঃ। যত্র এব স্বান্ধ অভিনিক্তারের পালিষ্ঠারে প্রনাহির দত্তঃ স্ব এব স্বান্ধ অভিনেক্তার্যিত ভাবঃ দতে দ

নৰেতে গৃহস্থা: প্ত্ৰকল্ডাদিসংসারজালে নিশ্ভিতা ইতি সন্নাসিভিক্চাতে সতাং মনকণপ্তামকণকল্ডাদিসত এতে

তোমার ভক্তদিলার বেশের অমুকরণমাত্র করিয়া পাপিষ্ঠ পৃতনাও বন্ধুবান্ধব সহিত যধন আপনাকে প্রাপ্ত হইয়াছে, তপ্তন যাহাদের গৃহ, ধন, স্কন্তং, প্রিয়, আন্ধা,তনয়, প্রাণ, আশর এসমস্তই আপনাতে অপিত, তাহাদিগকে তদপেকা শ্রেষ্ঠ ফল না দিলে উচিত হইবে কেন ?॥ ৩০।

ু মুদি বলেন রাগাদিবিহীন সম্যাসিদিগেরও আমা-অংশকা শ্রেষ্ঠ ফল কিছু নাই, আমাকে প্রাপ্ত

बीधतवामी।

স্তাবদেব স্তেনাঃ চৌর। ভবত্তি ভথা তাবং গৃহমপি কারাগৃহং বন্ধনাগারং মোহোহপি তাবদন্তি নিগড়ং পাদশৃত্তলং যাবতে তনীয়া জনা ন ভব্তি স্বণীয়ানাত্ত বাগাদয়স্থগ্রিষ্ঠা মোচকা এবেতি ন যতিভোা বিশেষোভজনং স্বধিক্ষিতি ভাবং ॥ ৩৪ ॥

देवकदरजावनी ।

ওনেকার্থত্বনাঝারামগণেতে গাহপি মহতরং ভাবমাহাঝ্যং মাদৃশান্ত ভবছুল্থহমপি ছুইট্মিত্যাহ তাব্দিতি। অয়মর্থ:। রাগো বিষয-প্রীতি স্তদানয়স্ত্রম্ম - বিষয়লাভালাভহানিয়ু ু হর্ষবিষাদশোকাদ্যাঃ গৃহং বিষয়নাত্রং নোহোরাগাদিহেতুরবিবেকত্তেচ ভত্তছিক্রি-রাষাং রাগমুখনিরীক্ষা এর সর্ব্ধ ইতি প্রথমং স্এবোক্ত:। তল নিরুপাধিপ্রেমাম্পানস্যান্ধনোহপ্যান্ধবেন স্বমের রাগভ স্বাভাবিক-পরমনোগ্যাল্যায়। অতন্তরক্ষণনিজস্বামিনমন্ত্রপূলতৈ ত্রমন্নমৌ জনানাং শুভবাদনা রূপাং ছন্তজনসামগ্রীং হরংশেচীর এব তত্তকদ্ম-বর্তিনোহপি তাদৃশা:। অধ গৃহময়োবিয়য়োহপাবশিষ্টদওনাগৈব কারাগারীক্ততঃ তাও। তৎপাদাহক্ষরণবিরোধিবোধপ্রদদ্ধাও। মোহেশ্-২প্যদৌ তেন তেনাবস্থাবৈশিষ্ট্যং প্রাপ্তত্ত স্বয়ং নিগড়াবতে। নষ্টেংপি তার্ণকারাগৃহে রাগানিময়স্ত ভল্লাবশেষেণাপি তুৎপাদা-প্ৰস্বলোম্থ্যাশকে:। তদেব: দ্বদীরাম্পতৌ তে তাৰ্ভাদুশা ভ্ৰতি যাৰজনাত্তে তব ন ভ্ৰত্তি দ্বয়া ন স্বীক্রিয়ন্ত ইতার্থ:। জাতেত্ তাবক্ষে রাগাণীনামপ্যাত্মনোহপ্যাত্মনন্তব প্রাপ্তে। সত্যাং তৈনাত্মাপ্যাত্রিয়ত ইতি স্বয়মেব তে দোষা অপগচ্ছন্তীতার্থ:। অত্র রাগদ্য তৎপ্রাপ্তিঃ। যা প্রীতিরবিবেকানাং বিষয়েশ্বনপায়িনী। তামপুথরতঃ দা মে জ্বলায়াপদর্পতু। ইত্যথুদারেণ গৃহত ত্বদ পিতত্বেন মোহন্যত ত্ৎপ্রেমমন্ত্রেনেতি অতএব তে তাবতাবকানাং শিরোনণরো মাদৃশত্বে তচ্চরণরেণুপর্শিরণে বংকিঞ্চিতৎপ্রাপ্তা-ব্যাভিলাৰিণ এৰ কথ্যেত্ই কক্ষাং প্ৰাপ্ত ম ইতি ভাৰঃ। যদ্ধ। নমু তেখাং প্ৰাত্যুপকাৰাদমৰ্থমণি মাং দদা দেবমানান্তএৰ দুষণীয়ান্তত্তাহ হে ক্লফ সর্ব্বচিষ্টাকর্ষক যাবতে তব জনা ন ভবন্তি সাক্ষাৎ সেবাং ন প্রাপ্ন বঙা হার্থ:। অর্থাৎ বছকো ভাবং তেখাং তৎশ্বতৌ স্বাভা-বিকভোজনেজ্ঞাদয়ো নিবাসস্থানং কদাচিন্নিডাদিনা অধিস্মৃতিশক্ষণো নোহোহপি তাবৎ প্রমত্থেদা এব ন ভণ্ডি। যথা। তব রাগা দয়ন্তবলীলান্থানমপি তৎপ্রেমমূর্চ্ছাপি তাবং প্রমহঃধদা ভবন্তি যাবং সাক্ষাৎ স্বংদ্রাং ন প্রাপ্পরন্তীতি পূর্ব্বং। তদেবং সতি তব মোহন ৰুমেবৈষাং এজবাসিনামপি ত্বাহসরণে কারণং ত্থানেষাং কোদোষ ইতি ভাবঃ কিমর্থং ত্রাহ প্রপন্ধনতা নিজ্ঞজনরূপা মদাদিক্সপাচ। প্রথিতুং প্রথমিতুং। ঐশ্বর্য লীলাভোহগান্তা। গীলায়া ভক্তপরমানল প্রদত্তাদিত্যর্থং। তত্তকং নদ্যঃ কিমকরোদুক্ষন ইত্যাদৌ গারস্তেহদ্যাপি ক্রয়ো বল্লোক শমলাপহ্মিতি। বেন যেনাবভারেণ ইদ্যাদি যচ্চৃণুভোহ্দৈভারভিরিত্যাদি॥ ৩৪ ॥

শ্রীবিখনাধচক্রবর্তী।

গৃহত্বা বর্ত্তমাং দেশান্তরহা যে ওছজগৃহত্বাজ্ঞহিপ সন্নাসিভ্যোপাধিক। ইত্যাহ তাবদিতি। রাগাদয়ো রাগদেয়াদভিনিবেশান্ত চ
মহাচৌরা জীবনিষ্ঠজানানলাদিমহাধনান্যসহত্য পরমেখনে বাজনি একে মা ফুংকুর্বাজি বৃদ্ধা কর্মাধিকারণয়ে গাইল্যকারাগারে
মোহনিগড়েন নিবন্ধা জীবাং হাপাজ্ঞে। হে কুফ জনা জাবা যাবতে বছজাহুগ্রহভাজনানে বদীয়া ন ভবন্তি তাবদেব রাগাদয়ন্তেনাঃ
চৌরাঃ। অদীয়্রে সভি তেষাং অভ্যক্তবেব রাগং ভজি-প্রতিক্লে বস্তনােব হেবঃ। ওষোবাভিনিবেশ ইভি প্রত্যুত্ত্ ব্রিষ্ঠজানানলাাদিক্ষপ্যানীয় দধানাক্ত এব পর্মসাধ্বা ভূজা নিতাম্পর্কতে। এবমের গৃহং ভজাভজকর্মাধানং যৎ কারাগারমাসীত্রদেব তেবাং
অংপরিচর্যাকীর্ত্তনাদিসাধনং অদীয়নিত্যধানপ্রাপ্তকং ভবেৎ এবং নােহবিষ্ণ্যা অভজবাৎ সোহলি অংপ্রেমান্থভাবক্রপমোহআপক ইতি কথ্যেত্বস্মকক্ষতাং স্ক্যাসিনো অভজাং। যে, কুড্রোমহানিহ ভ্রাব্যমন্ত্রের । ধত্রর্পনক্রমস্থান তিতীর্বস্তীত্যজ্ঞান
মংপুত্রেণ সনংকুমারেণাপকর্ষিতান্তেভ্যং সন্নাসিভ্যোহণি ভক্তা পর্যাধিকা যে, দেশান্তরন্বর্গ ইত্তভাবিজভ্যং পরংসহক্রগুণতোহণি
প্রেমা অধিকত্যা হে ব্রন্তবাদিন তৈরেভিত্বং সাজাংপূর্ণব্রক্ষত্বক্ষপ্রস্থানি পু্লাদিকপ্রথন বাধীনীক্ত এব বর্ত্তদে ইভি ভাবং॥ ৩৪॥

হইলেও আমার ভক্তগণের পর্যাপ্ত ফল হইবে না এ কি কথা ?। উত্তর, হহ কৃষ্ণ ! রাগাদি তভ পর্যাপ্তই তক্ষর এবং গৃহও তাবৎ পর্যাপ্তই কারাগৃহ, 'আর মোহও তাবৎ পর্যাপ্তই পাদশুঘাল হইয়া থাকে,যতদিন এ. সকল আপনার জন্ম না হয়। ফলতঃ আপনার ভক্তদিগের রাগাদি আপনাতে অর্পিত হওয়াতে সে সকল বন্ধনের কারণ না হইয়া বরং মোচন কারণ হইয়া থাকে। অতএব, আপনার ভক্ত ও সন্যাদিদের কিছু বিশেষ নাই। বরং ভক্তদিগের ভজন অধিক আছে॥ ৩৪॥

প্রপঞ্চং নিচ্প্রপঞ্চোহপি বিজ্মারদি ভূতলে। প্রপন্ধনতানন্দদন্দোহং প্রথিছুং বিভো॥ ৩৫॥
জানন্ত এব জানন্ত কিং বহুক্ত্যা ন মে প্রভো। মনদো বপুষো বাচো বৈভবং তব গোচরঃ॥ ৩৬॥
শীধ্রমানী।

নত্ত অতএবাংনেতেবা পুজাদিরপেণ বর্তে ইতি চেত্ততাহ প্রপঞ্মিতি। প্রপন্ন যা জনতা জনসমূহস্তস্যাঃ আনন্দানাং সন্দোহং প্রথমিত্মিতি ন হি কপটপুক্রতাদিনা তাদৃগ্ভকেরানৃণ্যং সম্পদ্যত ইত্যর্থঃ॥ ৩৫ ॥

তদেবমাদিত আরভ্যাচিস্ত্যানস্থ গুণথেন স্বয়ং ছজেরিস্বস্কং। কেচিত্র জানীন ইতি। স্থিতান্তান্ত্রণহগরাহ জানস্থ ইতি। মম মন-আদীনাং তব বৈভবং ন গোচবো ন বিষয় ইতি॥ ৩৬॥

देवकवट्डाम्गी।

ন্বহো ভাগ্যমিত্যাদৌ মিত্রহদ্য কালবিশেষানির্দিষ্টবেন প্রমানন্দাদীনাম্ল্য ধর্মাণাং তর্মিন্ বিধেয়ে সংক্রমণেনচ ব্রজ্যোতিল নমং মন লীসায়। নিত্যহদ্যতিপ্রতা । এষাং দ্বিভাগানেকেত্যানে তলেবং নির্দিষ্টং। তত্ত্বীত্যাদৌ বৈকুণ্ঠাদিপরিত্যাগ্র্পুর্কেনেবাং চলপর্জনম্বেন অজন প্রার্থ্য প্রবেষামনাদিশুতিমৃগ্যমজ্রপপুরুষাপ্রাপ্তিক জীবনরূপাং সমর্প্য তদেব দৃঢ়ীকৃতং এবাং বোবেত্যাদৌ মন তদ্পবিগণনাদ্যম্ব নানাদিকরপরস্পরায়াং প্রাদির্দেশ্যত্তপ্রপ্রাপ্তা তদেবানীতং। তাবিদ্যাদৌ তত্র বিঘাতকা সম্ববাত্তদের পর্যাবদায়িত্য ত্রদপ্যাস্থাং নোমীড্যেত্যাদৌ ভেষাং এষাং সম্বন্ধি বন্দেত্রম রূপং তদেব নিজপুরুষার্থকেন প্রতিজ্ঞাতং। তত্র কৈন্তিং প্রপঞ্চরীতিদ্ধ্যা লীলের্ম্যথিব্যাদিরেত্ত ত্র কিং বক্তব্যং ত্রাহ প্রপঞ্চনিতি। নিত্যমেবৈত্তঃ সমং লীলায়মানস্থ নিস্পুপঞ্চ প্রপঞ্চনিত্যালাহিপি মধ্যে মধ্যে বেতৈঃ সমং ভূতলে বতীর্য প্রপঞ্চং বিজ্বমদি নরাস্তব্যজ্মাদিনীল্যাহ্বর্ক্রমণি নহাস্তব্যক্তি প্রশাস্থিক ক্রিনিশ্য তির্ধাং ক্রমাদিনীলায়ং প্রপন্ধজনপ্রতিদ্ধানীত্যানাং চাম্মাকং যথা স্বং দর্শনেন চানন্দো ভবত্যের তথাপ্যস্তাং ভূতলে প্রকট্যাং জ্মাদিনীলায়ং সানন্দানাং সন্দোহং প্রথিতা ভবতীত্যেত্বর্থমিত্যর্থঃ॥ ৩৫॥

তদেবম্ঞাপি দেববপুষ ইত্যাদিভি: সামান্যত স্তদ্য মহিয়ো ছস্তর্করং দর্শিতং। পুনশ্চ পশ্চেশ মে নার্যামিত্যাদিভি: স্বরূপশক্তি মারাশক্তা: স্বরূপস্যচ বিশেষত: অথ অহোহতিধস্থা ইত্যাদিভিন্তবিজ্জনপ্রেম:। এবাং বোষনিবাসিনামিত্যাদিনা কাকণ্যস্য।

ক্রমসন্দর্ভ:।

তদেবমন্যাপি দেববপুর ইত্যাদিভিস্তন্যানেকধা মন্তর্করমেব প্রদর্শ্য তত্তং নিরূপনং পরিত্যঙ্গন্ উপক্রমার্থমেবাভীপ্রবেনাভিপ্রায়ং কৃপসংহরতি জানত ইতি। হে রুফ সর্বেজিয়াকর্ষকগুণরূপ অন্নজানীহীতি গমনানুজ্ঞেনং নাত্মেছয়া প্রার্থাতে। কিন্তব স্থানা-শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

নম্ব ব্ৰেছিনিক্ষেত্ৰ পুত্ৰাদিভাবং পূৰ্বিন্ধণো মম ন বস্তু ইতি কেচিন্মন্ত্ৰে সভাং তে ভ্ৰান্তা এবেডাাই প্ৰপঞ্চনিতি। নিশ্ৰপঞ্চোধি প্ৰপঞ্চনিতি থাকিবলৈ সন্ধানি কৰিবলৈ কৰিবলিবলৈ কৰিবলৈ কৰিবলিকলৈ কৰিবলৈ ক

সত্যং তর্হি মংস্থরপদ্য মদু জবাদিনাং মদীয়লীলায়া মন্তকেশ্চ দর্বমেব তবং মদক্রেইপি সপ্রতিভ্যেবং ব্যাচকাণা ভবদিধা

কিন্তু আপনি তজ্জন্য ইহাঁদের পুত্ররূপে বঁর্ডমান নহেন, আপনি বস্তুতঃ নিপ্তাপঞ্চ, কেবল ভক্ত-জনগণের আনন্দবিস্থারার্থ এইরূপ প্রপঞ্চ রিস্তার করিতেছেন, প্রভো! কপট পুত্রত্বাদি কি তাদৃশী ভক্তির বিনিময় হইতে পারে ?॥ ৩৫॥

. হে ভগবন্! আর বাধাছল্যে এয়োজন নাই, যাঁহারা জানেন তাঁহারা জানুন, কিন্তু আপনার

অনুজানীহি মাং কৃষ্ণ সৰ্বাং স্বং বেৎসি সৰ্বাদৃক্। স্বমেৰ জগতাং নাথো জগচৈচতত্তবাৰ্পিতং॥৩৭

थि धवयामी।

জগদীশবাদ্যভিমানং পরিত্যজ্যাহ অনুজানীহি ইতি। স্বমহিমানং অক্সদাদীনাঞ্চ কানবলাদি সর্ব্যং ব্যাবে বেংসি হতঃ সর্বাদৃক্ জগতাং নাথস্তু ব্যাবেত্যেতাবং জ্ঞাতং অতো মমতাম্পাদং জগদেতৎ শরীর্ঞ্চ ত্রাপিতিং॥ ৩৭॥

বৈষ্ণবতোষণী।

প্রপঞ্চমিত্যাদিনা লীলায়াশ্চেতি তওমিরপণং এপরিত্যজ্যোপক্রমার্থমেব নিজাজীষ্টছে নাজিপ্রারমুপসংহবতি জানস্ত ইতি। প্রস্তো হে বিচিত্রানত্ত মহাপ্রতাব তব বৈভবং বেদাদিভিঃ শ্রুতমপি মম মনসো ন গোচরো ন পরিছেদ্যং সামক্ষ্যেন দৃষ্টাদিরপম্পি বপূর্-শুচকুরাদিগোল্কস্য ন অতথ্য ন বাচন্তবালোমীত্যাদিনা যং প্রাথিতিং তদেব প্রাথিসে ইতি ভাবং ॥ ৩৬ ॥

অথ তত্তৎ প্রকরণান্তে যা দৈন্যাত্মিক। ভক্তিরেব তৎপ্রাপ্তিকারণত্বন দর্শিতা তানেবাবিকুর্বরপ্রজাং প্রথ্যতে হৈ ক্ষা সর্প্রে ক্রিয়াকর্ষকরপণ্ডণ অন্থলানীরি। অনেন গননান্ত্রেয়া নায়েক্রয়া প্রার্থাতে কিন্তরাবন্থানার্ন্ত্রের ইতি সাচ প্রাথিতস্যাপি তস্য নৌনিতয়েতি ভাবঃ। ত্মিচ যুরুরোক্তং যুবা বক্তব্যং তৎ সর্বাং পুনরুক্তমেবেত্যাহ্ সর্বাং অবৈভবং নবৈভবঞ্চ অমনোগতং মন্মনো গতং চ স্থনিগুঢ়লীলবং নদযোগ্যবঞ্চ ইত্যাদিকং ত্থমেব বেৎসি ধনাহমিতি। অতন্থলাক্সাং বিনা তৃণাদিরপ্রণোপ্যেয়াং তৃণাদীনাং সৌভাগ্যং আসাদিয়িত্ব নশক্রোমীতি ভাবঃ। বিষয়মপি নত্যক্তব্ধ শক্রোমীত্যাহ ত্থমেবেতি। তব তরের মহুমর্শিতং। দাসস্যাজ্য স্থাপিতহ্বমেব যুক্তমিতি ভাবঃ। যদি চৈবং ক্রয়ে অপস্থতাত্মনাং বাসবৎসানাং দর্শনং বিনা কথ্মস্কুতাং যাচ্বে তত্রাপ্যেবং নিবেদ্যামীত্যাহ সর্বাং তং বেংসি সর্বাণ্টিত নাত্র জ্ঞাপিতং॥ ৩৭॥

ক্রমদন্দর্ভ:।

নহ তথ্যবেতি ভাব:॥ ৩৬॥

সর্বামিতি তথাপ্যত্রাবস্থানাজ্ঞায়া অলাভাৎ কথং স্থাস্যামীতি ভাবং। বিষয়মপি ন ত্যক্তুং শক্রোমীত্যাহ তবেতি। তব ইবৈব ম্যাপিতং দাস্যাক্ষাস্থায়িত্বমের চ যুক্তমিতি ভাবং॥ ৩৭॥ ৩৮॥

শ্ৰীবিখনাথচক্ৰবন্তী।

অশিন্ লগতি কিরন্তো বর্গন্তে। তান্ জিলাদে কথমেতি ব্যােকিমাশিয়া সাত্রপং সকলাং সাহতাপমাহ জানস্ত এবেতি। যে জানস্ত তে জানত অহন্ত মহামূর্য এবাশীতি ভাবং। নহু তহি কথমেতাবংকণপর্যস্তং জ্রন্তে এব তত্রাহ কিং বহুক্তোতি। ওদথো বহুক্তিবেব মূর্য্বদ্যাতনীতার্য:। নহু ব্রহ্মন্ নিক্পটং জ্রহীতি তত্রাহ নেতি। তব বৈশুব্দৈশ্বর্ত্তং মন মনসোন গোচর ইতি ধ্যানেনাস্ত-প্রাপ্তাভাবাৎ বপুর ইত্যধুনৈব চকুষাপি বাচ ইতি গুণান্ধানতেহপি গুণান্ বিমাতৃমিতি সন্ত্বা তাবহুক্তমেব। যরা। তব মনসো বৈভবং মন ন গোচর ইতি ছন্মনি যৎ কিমপ্রতি তব কাচ ইতি তব বেদলকণ্যারাং বাচি কিমন্তীতি রাক্ষান্তব তু মন্ত্রি মৌনবলাং বচনগন্ধস্যাপ্ত-প্রাপ্তিরেব। তত্রাৎ কে ধলু ভ্রদ্রে মদাদরো বরাকা ইতি ভাবং॥ ৩৬॥

নত্মৰ বৈভবং তব মান্ত গোচরন্তব বৈভবং লবং বেলি ন বেতি তত্ৰ কিমহমত প্ৰত্যুত্তবং কুৰ্যানিতি ব্যালয়ন্ স্বাচ্ছাং সনিব্দিন্নাই অফুলানীইছি। অন্তানিবিজ্যুৰ্থ অফুলানিবিজ্যুৰ্থ। অন্তান্ত ক্ষমপি স্থাত্মবাগ্যমতিনীচং সামাজ্ঞাপন । বাদ্শোহহং ভাদ্শং হলং সভ্যোক্ষমৰ গছেরমিতি ভাবং। হে কুফেতি চিত্ত অমতাক্ষ্যোব। কিন্তু তই বিভাগ্যমিই জন্মতি মংপ্রাণনানাং দ্গিলিভেনাপ্যানিতি প্রামান্ত ক্ষাং কুর্মেল্যুর্মানিবিজ্যানিক্র ক্ষান্ত ক্ষাং ক্ষান্ত ক্ষাং ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষানানান্ত ক্ষানিক ক্ষানিক্ষানিক্ষান্ত ক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্যানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্যানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্ষানিক্য

বৈভব আমার কারমনোবাক্যের বিষয় সহে॥ ৩৬॥

হে কৃষ্ণ ! শামাকে অনুজ্ঞা করুন, প্রস্থান করি, প্রভো ! আপনকার মহিমা এবং আমাদের জ্ঞান বল প্রভৃতি সমুদায় আপনিই জানিতেছেন, ভগবন্ ! আপনিই সমস্তম্ভগতের নাথ,অতএব মমতা-স্পদ এই জগৎ এবং আমার এই শরীর আপনাকেই অর্পণ করিলাম ॥ ৩৭ ॥

একি কার্ম বিকিক্লপুদর যোষদায়িন্ ক্মানিজ্জর **দিজপশৃদ্ধির্দ্ধিকারিন্।**

वीधत्रवामी।

তদেবং কিন্ধরং প্রস্থাপয়েত্যাদরেণ নমন্ধরোতি প্রীক্ষেতি। বৃষ্ণিক্ষা পদ্মস্য প্রীতিদাতৃত্বন হে স্থ্যোপম। ক্মাচ নির্জরাঃ দেবাশ্চ দিল্লাশ্চ পশবশ্চ ত এবাদধন্তবাং বৃদ্ধিকারিত্বেন হে চক্রোপম। উদ্ধর্মঃ পাষগুধর্মস্তদেব শার্ধরংতম উদ্ধরতীতি তথা। আনন দ্বোপম হে ক্ষিতিরাক্ষ্যক্ কিতৌ বে রাক্ষ্যাঃ কংসাদরঃ উদ্যান্ধেব তেভাো ফ্রন্থতীতি। পুনঃ স্থ্যোপম স্থ্যাত্যুপমাপি নানেতি মন্বাহ আর্কং অর্কমভিব্যাপ্য সর্কোবামহন্ পূজ্য ভগবন্ আক্রঃ ক্রপ্যান্তং তে ভুত্তাং নমঃ। সম্থ্যৎস্ক্মোক্ষণকৌতৃক্ফত-

বৈঞ্চৰতোষণী।

শ্রীতি সাদর সর্বসম্পদম্ভর পূর্বকং প্রণামার প্রথমতঃ ক্ষেতি স্বরূপনায়া সহোধনং পূনঃ ক্রমেণ বহিব হিবি শেষণং ব্রয়ন্ জন্ম কর্ম্ম নামভিরপি সহোধরতি বৃষ্ঠীত্যাদিনা। বৃষ্ধিকুলং শ্রীবন্ধদেবাদিকং শ্রীনন্ধাদিকঞ্চ পূর্ব্বাক্তপ্রামাণ্যাং তত্র প্রস্তুত্তের শ্রীনন্দাদিকংশ প্রাক্তির প্রাক্তির প্রাক্তির প্রতিজ্ঞাতত্বাং। স্মেত্যবিশেষেণ প্রাপ্তাহেছপি বিশেষবিবক্ষণা হিলপ্রাক্তপাদানং গোরাহ্মণহিতাবতারতাপ্রসিদ্ধেঃ। উদ্ধর্মে ওগবিষ্ক্রেথা ধর্ম্ম ক্ষিতিরাক্ষ্মণাঃ উদ্ধর্ম প্রবৃদ্ধাঃ কংসাদরশ্চ। চক্তস্ব্যারপোভয়বেন রূপক্রারা বিক্ষা কীর্তিপ্রতাপপ্রশংসাদ্যোতনেছয়া চ হে ভগবন্ এবস্কুত্তনীক্ষ্মরপত্বেন স্বয়ং ভগবারিতার। তথাকং স্ব ভূবি ভূবিনাক্রাপকপ্রকাশমর্কমারভ্য মহাবৈকুঠপর্যস্ত মহান্ পূজ্য। যথা। এতচাপুর্বং দৃষ্টং থমের কর্তুন্ নহিলি নান্যঃ কোহপীত্যাহ অহাতীত্যহান। হে সর্বং কর্তুং যোগ্য সমর্থেতি বা। স্বত আক্রম মজ্জীবনকালরপান্ ক্রানভিন্যাপ্য। যথা। আকরং ত্বীয়গুলাবতংস্বহাপীড়াদিকং বামহন্তস্ক্কবলাদিকং চ ভূষণমভিন্যাপ্য তথা আর্কং সর্কোনাম বৃক্ষেভগবদনহাপুলো বৈষ্ণবানাম্বাহাং। তেবাং

ঐবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

সহাসোকিপ্রত্যক্তিকৌতুকং ভোজনলীলাশেষং সমাপদ্ধেতি ধ্বনয়:। অয়মহস্বতিতারল্যাৎ পুন: পুন: কিং বা বিজ্ঞাপয়ামীত্যাই সর্বমন্দানীনাং মনোবপুর্বাচাং বৈভবং অমেব বেৎসি কিঞ্চ নাহমস্য জগতঃ প্রষ্টু আয়াথঃ কিন্তু অমেব জগতামন্যেয়ামপি বহুনাং নাথঃ। জত এতচ্চ জগ্ৎ কুদ্রতরং তব অদীয়মেব অয়াপিতং। যমিচ্ছসি যোগ্যমস্য জানাসি তমস্যাধিকারিণং কুর্বিতি ভাবঃ॥ ৩৭॥

যদ্যপি নামপরাধিনং বিজ্ঞায় ন ব্রবে তদপি খনেত্রাভ্যাং সামুগ্রহাবলোকনামৃতত্ত মহুং দেহি। যথা তেনৈবাহারেণ নিত্যং প্রাণান্ রক্ষন্ করপর্যান্তঃ প্রতিবৃং প্রভবিষ্যামীতি ব্যঞ্জয়ন্ প্রথমতি এককেতি। হর্ষান্তরংগং দক্ষিণং নেত্রমালক্ষাই ব্রিক্র্লপদ্মায় যোবং প্রভ্লবং তৎপ্রদায়িন্ নামপি পদ্মসন্তানং ক্রপন্না প্রফ্লরেতি ভাবং। চক্রব্দ্রপং বামং নেত্রমালক্ষাই ক্রাঃ ক্রার্ভ্রান্য নির্জ্রাঃ স্বর্গন্তা দেবা দিলাঃ পদবণ্ট বৃন্ধাবনক্ষাঃ পক্ষিণো গাবন্ট তএবাদধনন্তেবাং বৃদ্ধিকারিন্ মামপি দেবাধমং ক্রপন্না বর্জরেতি ভাবং। যুগপদেব নেত্রে দে এব পৃশ্বত্তাবালক্ষাই। উদ্ধর্মঃ পাষ্ত্রধর্মঃ দ এব শার্করমক্রমসং। শার্করম্বন্ধত্রম ইত্যামরঃ। তৎ হরতীতি তথা তেন স্বপ্রভাগ ব্যাপি মারাচিকীর্বালক্ষণং মম পাষ্তং ক্রপন্না হর যথা। পুনরেবং না ক্র্য্যামিতি ভাবং। ক্রিতৌ রাক্ষ্যা অঘাহ্রাদ্যন্তেভ্যো ক্রন্থসি জ্যোহণাপি স্বর্গতিং দদাসীত্যতম্বর্দ্যবৃন্ধবংসবৃন্ধবিদ্রোহিত্বাৎ সভ্যালাকত্রমরাক্ষ্যং মামপি দণ্ডপ্রদাননাপি সংস্কৃত্তে ভাবঃ। স্বপ্রভাগরম্প্রেইং নিপ্রহং বা দৃষ্ট্যা দামো জীবিত্রম্ংসহতে উদাসীন্যং দৃষ্ট্যা ভূন প্রাণান্য ধর্ত্ মীটে ইতি ভাবঃ। হন্ত হন্ত মহামহেশ্বরোহপি বেজপঞ্জাগৈরিকপিঞ্চাদিরটিতাক্রো গোচারক্বালকৈঃ সমং বেলন্ ক্র্ত্রীন্ত্রভাগনিতিত্যং মংপ্রভারিতি পূর্কং বিচারিত্বতাত্বমভিজ্ঞেন মন্ত্র বেলপরাহং তানপি প্রসাদ্যামীতি মনপি বিভাব্যাহ আক্রং ছ্রীন্ত্রভাদিকেশমতিব্যাপ্য আর্কং আর্কান ভ্রেক্রালি বেলপ্রভাগ ব্রক্রমভিত্রাপ্য হে আর্ক্ ক্রেরালি কেনি ব্রাপ্য জাকিং আর্ক্রা নাম বৃদ্ধোভায়ং মন্তর্ভাভন্তর

হে রাজন্! ব্রহ্মা এই প্রকার স্তব করিয়া পরে প্রস্থানামুমতি নিমিত আদরপূর্বক নমস্কার করিতে লাগিলেন, হে প্রীকৃষ্ণ! আপনি র্ফিক্লরপ কমলের প্রীতিপ্রদ অর্থাৎ সূর্য্যোপম এবং দেব দিজ পশু ও পৃথীরূপ সমুদ্রের বৃদ্ধিকারী অর্থাৎ চক্রোপম তথা পাষ্ঠুরূপ নৈশান্ধকারহারী এবং

২৯৯

উদ্ধান্মশাব্দরহর ক্ষিতিরাক্ষমগ্রণাক্ষমর্থন্ ভগবন্ধমন্তে॥ ৩৮॥

শ্ৰীশুক উবাচ॥

ইত্যভিষ্ট্য ভূমানং ত্রিঃ প্রিক্রম্য পাদয়ো:। নত্বাভীষ্টং জগদ্ধাতা স্বধাম প্রত্যপদ্যত ॥ ৩৯ ॥ ততোহকুজ্ঞাপ্য ভগবান্ স্বভুবং প্রাগবস্থিতান্। বৎদান্ পুলিনমানিন্যে যথাপুর্ব্বস্থং স্বকং॥৪০

वीधत्रवामी ।

বিলম্বিতপুত্রমুদেহছুতং। নিথিলরপমদোদধদ্যুতো হবতু স বঃ কলয়ন্ ব্রজমঙ্গলং॥ ৩৮॥ পাদরো ন'ব অভীটং সর্কতঃ পূ্জিতং অভিপ্রেতং বা॥ ৩৯॥

অহজাপ্য অহজাং প্রদাপ্য পৃষ্টে তার্থ: অভ্বং ব্রহ্মাণং। যথাপুর্বং সথারো যদ্মিন্ তৎ স্বকং পুলিনং ॥ ৪০ ॥

বৈষ্ণবতোষণী।

মুদে স্বতি ত্রািন্ধী ব্যাখ্যাতেরং ম্থামতি॥ ৩৮॥

ভূমানং সর্কবৈধাপরিজ্ঞিনং ইত্যেবং অভিষ্ঠ্য অভিষ্ঠ্তা অভিত: স্তথা। যথা সর্কব্যাপক তথাবস্থিতং ভক্ত্যা ত্রি: পরিক্রম্যা ভীষ্টং সামীপ্যথাক্রায়াং ক্রতমৌনেন শ্রীক্রফোনাভিপ্রেতং ধাম। যতো জগদ্ধাতা অন্যথা তৎপদত্যাগে বিশ্বস্ট্যাসিদ্ধে:। এবং যাবদ্ধিকারমবস্থিতিরাধিকারিকাণামিতি ন্যায়েন তদত্তে তদভীষ্টসিদ্ধি ভবিষ্যতীতি জ্ঞাপ্যতে । ৩৯॥

স্বভূবং আত্মকাং ইতি স্কাপরাধক্ষাদিকং স্চিতং। অনুজ্ঞাপ্যেদানীমপ্যানয়ানীতি সন্মিতং পৃ**ই। অনুজ্ঞাপনঞ্চেদং অ**সার্ক্জাদি-ব্যঙ্গনোপালান্তনোংপ্রাস্থিকাক্ষাম্প্রহ্বিনয়াদিব্যঞ্জক্ষপীদং ব্যঞ্জতি তাদৃশ্যর্ক্তপর্পি বালবংগৈ নম্ম মুখং কিন্ত তৈরেব

क्रममन्दः।

অভীষ্টদামীপ্য যাক্কায়াং ক্রতমৌনেন শ্রীভগবতাভিপ্রেতং স্বধাম । ভূমানমেবাভীষ্টং ॥ ৩৯ ॥

অর্জ্ঞাপনেন চৈবং জ্ঞাপিতং তাদৃশস্বরূপেরপি বালবংকৈ ন'মম নীলাস্থং কিন্তু তৈরেবেতি। স্বকং নিজ্ঞাজনস্থানং হথাপূর্ব্ব-স্থমিতি প্রাক্ প্রাক্ষেবাবস্থিতানিতি॥৪০॥ ৪১॥ ৪২॥

🗐 বিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী ।

কর্থ সমর্থ। তে তত্তংসহিতার ত্তাং নম:। সর্ধান্ধরণ সর্বভক্তিসিদ্ধান্তসন্ততি:। আন্ত ব্রহ্মন্ততিশিক্তভিত্তে মে চাকটিত্রিতা ॥৩৮ অভীষ্টং ভগবতা প্রস্থাপরিত্মিতি শেষ:। যতো জগদ্ধাতা অন্যথা সহসা তৎপদত্যান্তনে বিশ্বস্টেরসিদ্ধে:। তত্ত বাবদ্ধিকার-মবস্থিতি রাধিকারিকাণামিতি ন্যায়েনাধিকারান্তে তদভীষ্টং সেৎস্যতীতি বৃদ্ধাতে ॥ ৩৯ ॥

স্বভ্বং ব্রহ্মাণং অনুজ্ঞাপ্য আজ্ঞাপ্যতি মৌনেনৈব। অনুজ্ঞানীছি মাং ক্লফেত্যাঞ্চাপ্রাথনৈ ক্লতে মৌনং সম্মতিলক্ষণমিতি ব্রহ্মণা সহসাবগমাং। মৌনত্যাগাভাবস্ত পশুপবংশশিশুঘদশারাম্পীকৃতস্য ব্রহ্মনোহনার্থং নাট্যস্যারস্তপরিসমাপ্তিসিদ্ধার্থং। তক্র ততো বংসানদৃষ্টেবৃত্য পুলিনেহপিচ বংসপান্। উভাবপি বনে ক্লেখা বিচিকার সমস্তত ইতি বংসবালকাথেষণনাট্যারস্তঃ। নৌমীড্যেত্যাদি ব্রহ্মন্ত্রতী প্রবৃত্তারাং কৃতন্ত্যো হরং চতুসুর্ধঃ কিং চেইতে কিং বা মুহুর্জতি ইতি স্ববংসাথেষণ ব্যাগ্রোহং গোপশিশু-

ধরাতলে রাক্ষসহস্তা অথবা সূর্য্যাদি পূজনীয়গণেরও পূজনীয়, স্থতরাং কর্মকালপর্যান্ত আপনাকে আমি
নমস্কার করি ॥ ৩৮ ॥

শুকদেব কহিলেন, উক্তপ্রকারে স্তব করিয়া তিনবার ছই চরণে পরিক্রমাপূর্বক জগদিধাতা একা দেই অভীষ্ট অর্থাৎ পূজিত বা অভিপ্রেড ভূমা (মহাপুরুষকে) প্রণাম করিয়া নিজধানে প্রস্থান করিলেন ॥ ৩৯ ॥

ভগবান্ হরিও ব্রহ্মাকে জিজাসা করিয়া পূর্বাবন্ধিত বংস সকলকে আপনার পুলিনে আনয়ন করিলেন। তথায় তথনও পূর্ববং তাঁহার সকল স্থা উপন্থিত ছিল। ৪০। একিমিন্নপি যাতেহব্দে প্রাণেশং চান্তরাত্মনঃ। কৃষ্ণং মায়াহ্তা রাজন্ ক্ষণার্দ্ধং মেনিরেহর্ভকাঃ॥৪১॥ কিং কিং ন বিশ্বরন্তীহ মায়ামোহিত চেতসঃ। যমোহিতং জগৎ সর্ব্যভীক্ষং বিশ্বতাত্মকং॥ ৪২॥

ত্রীধরস্বামী।

নয় এতাবতং কালং কথং তে তত্ত্রোপবিষ্ঠা: কথ**ক কুৎপিপাসাদি বিশ্ববণং অত আ**হ এক শ্বিত্রিত শ্লোকত্ত্রেণ। অন্দেহপি জাতে প্রোণেশং শ্রীকৃষ্ণং অস্তব্যাচ বিনাপি প্রিয়বিরহে ক্ষণোহপি বর্ষাধিকো ভবতি তথাপি মাধাহতাঃ ক্ষণার্ধ্বং মেনিরে। ৪১॥ যয় মায়য়া মোহিতং জগং **অতীক্ষং পুনঃ পুনবিশ্বতাত্মকং বিশ্বত আবৈত্বব যেন তত্ত্ব**পা। ৪২॥

বৈষ্ণবভোষণী।

মম লীলাক্থং। ততো ব্ৰহ্মাক্স্পাপনানস্তরং প্রাক্ প্রাথদেবাবস্থা চেষ্টানিভিরবস্থিতান্ যথাপূর্কং পূর্ক্বদবস্থাচেষ্টাদনতিক্রমেণ বর্ত্তমানাঃ সথায়ো যত্র তৎ স্বকং স্বভোজনস্থানং পূলিনমানিন্যে তত্র সক্বলপাণেঃ ক্ষ্মস্যাগতস্য তৈঃ পূর্ক্বদেব দৃশ্যমানস্যাবস্থিতিশ্চ পূর্ক্বদেব জ্বো। এতৎসর্ক্সমাধানঞ্চ প্রক্রিক্তফাসম্বলিত্মায়াবৈভবমেব তথা মাত্রাদিভিব্যবহারোপ্রিকং হস্তনাদিতত্ত্বালকাদিচরিতং স্থতমপি প্রাচীনের সার্যান্ত্রং নেষ্ট্রমিত্যপি বোধ্যং ॥ ৪০ ॥

তথা তেষাং কালাজ্ঞানক মায়ব্যৈবেত্যাহ স্বদ্য প্রাণেশং আত্মানং শ্রীকৃষ্ণস্য মায়াহতা ইতি বা হতা: প্রতিবন্ধা:। মনোহত: প্রতিহত: প্রতিবন্ধো হতশ্চ দ ইত্যমর:। প্রাণেশত্বে হেতু: কৃষ্ণং বলবেক্তকুমারং। কিঞ্চ অর্তকা: ক্রণার্দ্ধং প্রপঞ্চকং মেনিরে। অত্র ক্রেষাং প্রতীতৌ মুহর্তবামদিবস্থাতাদিপরিবর্তনং বিনা এব তদ্য কাল্য্য স্থিতে:। হে রাজ্মিতি প্রমাত্ততাং॥ ৪১॥

তত্র দৃষ্টান্তমাহ কিং কিমিতি। ইহ জগতি অভীক্ষমিতি স্বয়ুব্দী শাস্ত্রে বাহজাতস্যাপি দেহম্মাতিরিক্তস্য তস্য মৃত্বি শ্বরণাং ইতি মারামহিমোক্ত:। অতো ভগবদিচ্ছাবলায়ান্তস্যান্তাদৃশেদ্পি মোহনত্বং ঘটত ইতি ভাবঃ॥ ৪২॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

ন বুদ্ধো ইতি ব্যঞ্জকেন মৌনেনৈব তদ্যৈব নাট্যস্য পরিসমাপ্তিরিতি। স্বাধীনপ্রক্ষণাহত্যে ক্ষেনে নিজমহৈখব্যস্যাজ্ঞানখভিনীৰতে স্মেতি তল্পটাশ্লেদেনোচাতে। তল্লোহংপশুববংশশিশুদ্ধনাট্যমিত্যাদিনা বাৎস্প্যাদিরসপরিকরপ্রজেখর্য্যাদীনামগ্রেত্ব তল্মহাপ্রেনাধীনেন ক্ষেনে নিজমহৈশ্বর্যস্য তল্মহাপ্রেনমাধ্ব্যরসাচ্ছাদি তস্যাজ্ঞানং ধ্থার্থমেবেতি তল্প ন তস্যাভিনর ইতি। ন তল্পট্যশব্দেন বাচ্যমিতি বিবেচনীরং। প্রাক্ প্রাথদেব তৃণচরণাদিচেষ্টাদিভিরবন্থিতান্। স্বকং স্ভোজনস্থানং প্লিনমানিন্যে কীদৃশং। ব্যাপ্রিং প্রেণিপবেশাদিকমনতিক্রম্য অপরিভাজ্য বর্ত্তমানাং স্থায়ো বল্পত। সমাসাস্থ্যার্থং। যথা যথাবদেব স্থিতাঃ প্রেস্থাং স্বর্গপ্ত স্থেভাঃ প্র্রিস্থায়ে বল্পত ও ॥ ৪০ ॥

অত্র তাবং কালাজ্ঞানং ডথৈব কবলপাণে: ক্লফ্য্যাগত্য্য তৈঃ সহ তথৈব ভোজনলীলাশেষাদিকং ছন্তর্কযোগমান্বাবৈভব্মেবে-ত্যাহ একস্মিরিত্যাদি চঙুর্জিঃ। আত্মন: স্বদ্য প্রাণেশং ক্লফ্যমন্ত্রা বিনাপি মোগমান্ত্রা আহতা আহুতাঃ॥ ৪১॥

মোহনদাধৰ্ম্মোণ ৰোগমারারা বহিত্তকমারাং দৃষ্টান্তরতি কিং কিমিতি। বিশ্বত আত্মা বেন তৎ তথৈব বোগমাররা বর্বং ব্যাপ্য কক্ষবিরহত্বংগং তে বিশ্বারিতা ইতি ভীব: ॥ ৪২ ॥

হে রাজন্! আপনাদের প্রাণের ঈশর প্রীকৃষ্ণ ব্যতিরেকে অর্থাৎ শ্রীকৃষ্ণরূপ প্রিয়বিরহে যদিও পূর্বোক্ত বালকদের পক্ষে কণকালও বৎসরাধিক বোধ হইত তথাপি তাহারা মায়ায় মুগ্ধ হইয়া থাকাতে সম্পূর্ণ এক বৎসর অতীত হইলেও তাবৎকালকে অর্ধক্ষণমাত্র জ্ঞান করিল॥ ৪১॥

রাজন্! মায়ামোহিত ব্যক্তিদের কি না বিশারণ হয় ? দেখ এই জগৎ মায়ামোহিত হওয়াতে পুনঃ ২ আত্মাকেই বিশাত হইতেছে॥ ৪২॥ উচুশ্চ স্ক্রনঃ কৃষ্ণং স্বাগতং তেহতিরংহসা। নৈকোহপ্যভোজি কবল এহীতঃ সাধু ভুজ্যতাং ॥৪০॥ ততো হসন্ স্বীকেশোহভ্যবহৃত্য সহার্ভকৈঃ। দর্শয়ংশ্চশ্মালগরং ন্যবর্ত্ত বনাৰু জং ॥৪৪॥ বহ প্রসূনবনধাতুবিচিত্রিতাঙ্গঃ প্রোদামবেণুদলশৃঙ্গরবোৎসবাঢ্যঃ।

टी धत्रवाभी।

অত এবমূচ্ন্চ তে শ্বরাহতিবেগেন শ্বাগতং সম্যগাগতং একোহপি গ্রাস স্থাং বিনা অশ্বাভি ন (ভোলি ন ভূক:। ইত এহি সাধু অধিকোপণ ভূজ্যতামিতি॥ ৪৩॥

অভাবহতা ভুকু । । ৪৪॥

প্রোদামো বো বেণ্। দিরবৈকৎসবস্তেনাত্যঃ সম্পর:। গুণন্ উপলালনৈরাছবয়ন্। গোপীছগুৎসবদৃশিং গোপীদৃশামুংসবরূপা দৃশিদ পনং

देवक्षवरकाषणी।

স্বাগতং সর্মবংশানয়নপূর্মকং স্থাবনাগতমিত্যর্থ:। এবং বর্ষেহপাতীতে তথৈব কবলাদিস্থিতি: শ্রীভগবদিছাবৈভবেন জ্ঞেয়। অন্যক্তি:। ব্বা। ত্ত্যাপোকোহপি কবলো নাভোজি শ্রীহতে পূর্মকবলর্ত্তে:। অতঃ ইতঃ অমিন্ সর্মেবাং অস্মাকং মণ্ডলমধ্যস্থানে এহি প্রবিশ সাধুবংসাব্যবেষণে সংপ্রত্যপি তৎসন্তালনে বা জাতং বৈয়গ্রাং ত্যক্তা সমাগ্ যথাসাত্তিথা ভূজাতাং ॥ ৪০ ॥

হদরিতি তেবাং মারামুগ্ধানাং বাক্যশ্রবণাৎ গ্রংগাদিবাঞ্জকোক্যশ্রবণেন প্রহর্ষোদরাচ্চ। দ্ববীকেশ ইতি তেবাং পরমপ্রের্চণাৎ ব্রক্তং প্রতি নাবর্ত্তত নিবর্ত্তেতি পাঠে স এবার্থ:। পরস্কৈপদমার্বং আজগরং চর্ম দর্শরন্ধিতি অবাহ্মরবধস্য ব্রজে কথনায়। ইতি ভচ্চর্মাণি শ্রীভগরতা তাবৎকালং মার্মাচ্ছাদ্য তথৈব বৃক্ষিতমাসীদিতি জ্ঞেয়ং॥ ৪৪॥

ইতি নিজপ্রিরসহচরবালকবংসসসভিজনিতহর্বভরতো বন্যবেশাদিবিশেষেণ অজহন্ত্তীজনানাং নেআনন্দং সঞ্জন্ এজান্তর্জগাম ইত্যাহ বহেতি। বনধাতু দৈরিকাদি:। বনপদং গৃহশভাস্থবণাদিব্যবচ্ছেদার্থং বহুণিদিভির্বিশেষেণ বিচিত্রিতানি ভূষিতান্যঙ্গানি যেন

ক্রমসন্দর্ভ:।

উচ্চ স্বস্থান ক্ষং স্বাগতং তেহতিরংহসেতি চ বংসানিতো বংসপান্ধীদানাত্রেত্যনেনান্যত্র সরুদীকিতানামপি তেবাং পুনস্তত্রাব-শাপনং। তেবাং তৃ তদপি ন জ্ঞাতমাসীদিতি জ্ঞাপরতি। অত্র সর্বা হৃত্বপপত্তি মান্নবৈব বারিতা সা চ মান্না বন্ধণোহপি আভগবদযু-মোদিতবাত্তদীবৈব জাতেতি জ্ঞােয়ং। অতঃ শ্রীসকর্বণেনোক্তং প্রারো মারান্ত মে ভর্তুরিতি। অভীক্ষং যরা মোহিতং॥ ৪৩। ৪৪॥

🗐 বিশ্বনাথচক্রবন্তী।

অর্ভকা উচু:। অতিরহ'না স্থেধনৈবাগতং। দূরগতবংসানরনে ঘটিকৈকা অবশ্যং ভবিষ্যতীত্যস্মাভিবিচারিতং স্বয়া তু ক্ষণার্দ্ধে-নৈবাগতমিতি ভাবং। একোহপি কবলোগ্রাসম্বরা বিনা নাভোন্ধি তম্মাদিত এহি॥ ৪৩॥

হসন্ধিতি তেবামানন্দর্শনাং। অভ্যবন্ধত্যেতি বর্ষে গতেহপ্যরব্যঞ্জনাদীনাং ক্ষণার্দ্ধমাত্রপরিণানিত্বং জাতং ওচ্চরণবৈরস্যং জন-যতীতি ভাবং। দর্শরন্ধিত্যহো সধায়: আদ্য মৃত্যেহরং সর্পো বসারস্তাদিকলিলো বর্তত এবেতি পশ্যভেতি তত্বধস্য একে প্রধাণনার্থং বোগমায়ৈর তাবংকালপর্যান্তং তত্তদাচ্ছাদিতমাসীদিতি ক্ষেয়ং বনাৎ বনবিহরণাৎ ব্রক্ষং জগামেতি শেষং॥ ৪৪॥

বস্ততঃ তাবৎকাল গত হইলেও ঐ সকল বালকের ক্ষুধা বা তৃষ্ণা কিছুই বোধ হয় নাই, যাহা হউক, তাহারা শ্রীকৃষ্ণকে দেখিতে পাইয়া কহিতে লাগিল মিত্র। তুমি বড় শীব্র আদিলে, তোমাকে রাধিয়া আমরা একগ্রাদও ভোজন করি নাই, এখানে আইদ, ভোজনার্থ উপবিষ্ট হও॥ ১০॥

তদনস্তর শ্রীকৃষ্ণ হাস্য করিতে ২ সেই সকল শিশুর সহিত ভোজন করিলেন, তাহার পর অজগর চর্দ্ম দেখাইতে দেখাইতে তাহাদের সহিত বন হইতে ত্রের প্রত্যাব্ত হইলেন ॥ ৪৪ ॥

হে রাজন্! ময়্রপুচ্ছ এবং পুষ্পা তথা বনধাতু দারা জীক্ষের সকলঅক চিত্রিত হইয়াছিল, তিনি স্বয়ং বংশী শৃঙ্গাদির উদামধ্বনি দারা উৎসবান্বিত হইয়াছিলেন, উপলালন দারা বৎস সকলকে

ৰৎসান্ গৃণন্নসুগগীতপৰিত্ৰকীৰ্ত্তি পোপীদৃগুৎসবদৃশিঃ প্ৰবিবেশ গোষ্ঠং ॥ ৪৫ ॥ অদ্যানেন মহাব্যালো যশোদানন্দসূমুনা । হতোহবিতা বয়ং চাম্মাদিতি বালা ব্ৰজে জগুঃ ॥৪৬ রাজোবাচ ॥

ব্রহ্মন্ পরোদ্তবে কৃষ্ণ ইয়ান্ প্রেমা কথং ভবেৎ। যোহভূতপূর্বস্তোকের স্বোদ্তবেলপি কথ্যতাং ॥৪৭
ভীধ্যবাদী।

क्ता नः ॥ ८८ ॥

যশোদানলক্ষুনা ইতি বহুনামুক্তি: সহৈব দর্শিতা। কেচিদার র্যশোদাক্ষুনা অপরে আছ ন লক্ষুনতি। বদা যশোদাং নন্দয়তীতি যশোদানন্দ: সচাসৌ ক্ষুণ্ডেতি তথা তেন অস্মানহাব্যালাং বয়ঞ্চ অবিতা রক্ষিতা: ॥ ৪৬ ॥

ব্রজৌকসাং স্বতোকেষু সেহবল্লাক্মবহমিত্যাদিনা স্বতোকেভ্যোহপি প্রপুত্রে ক্বঞে প্রেমাধিক্যমুক্তং তত্র পৃচ্ছতি ব্রহ্মদ্বিতি ॥৪৭॥

বৈষ্ণৰতোৰণী।

কিখা স্থিতি ব্ন্য অতঃ প্রোদামো অত্যুক্তঃ যো বেণ্দল শৃঙ্গাণাং রবঃ তেন স এব বোৎসবঃ কিছা সচ উৎস্বশ্চ নৃত্যক্রীড়া গীতাদি কপ্তেনাচ্যঃ প্রম্মম্দ্রিমান্। অতএবাসুগৈত্তৈরেব বালকৈর্মিতা হ্রভরেপ গীতবং স্ক্রবঃ তালাদিসহিত্যুক্তঃ কীর্তিতা পবিত্রা নির্ম্মলা জগংপাবনী বা কীর্ত্তির্ঘাস্করাদি বধরণা যস্য গোপীশব্দেন শ্রীষ্ট্রশোদাদায়ঃ স্বর্ধা এব ব্রম্করিয়ঃ। তাসাম্পীদানীমেব শ্রীষ্কৃষ্ণহর্ধ-ভরেণাধিক নেক্রানন্দোৎপত্তেঃ। এবং স্থাণ্যেন শ্রীষ্কৃষ্ণাবির্ভাবেভাবেভাবেভাবেভাবিষ্ঠা দর্শিতং ॥ ৪৫ ॥

মাতৃকুলোৎপ**রৈ বশোদাস্থনা অন্যৈ ন**ি**ন্স্থ্না ইতি প্রোক্তমিতি জে**য়ং। য**ছা। অ**তিসম্ভোবেণ ছয়স্ট্রোবিশেষতঃ প্রশংসা ছাভ্যামপি তাভ্যাং গোকুলকুলভাগ্যদ্যোতনায়॥ ৪৬॥

নমু ক্ষেহন্তাব্ত্রিধা দৃশ্যতে বিষয় সৌন্দর্য্যেণ মমতাবিশেষেণ স্বাভাবিক দৈছিকসম্বন্ধ বিশেষেণ চ তত্র প্রথমং প্রাথদেব যাবং বংগপেত্যাত্যক্তর্যাৎ। বিতীয়শ্চ ত্বদেব তত্তংসম্বন্ধস্যানতিরেকাৎ। যুশ্চ তৃতীয়: প্রীপ্রছায়াগমনে তন্মাতরি শ্রুত: সম্বত্র বিপরীত এব তহি কথং ব্রজৌকসাং স্বতোকে বিত্যাদিক মুক্তমিতাভিপ্রেতা বিশেষ বৃত্ত্ৎসয়া পর বিরোধি বিষয়া বা পৃচ্ছতি ব্রহ্মলিতি প্রীক্তষ্টে

ক্রমসকর্ভঃ।

(शांभाः श्रीयत्मानामत्रः॥ ८०। ८७॥

कुरक श्रिमामामिनामक्रभाजाः वारक त्या यावान् ॥ ८१ ॥

ঐবিশনাপচক্রবর্তী।

शृगन् উপলালনৈবাহ्বয়न् গোপীনাং বৎসলানাং দৃশামুৎসবক্রপা দৃশি দর্শনং यস্য স: ॥ ৪৫ ॥

যশোদাৰন্দরোর্ভাগ্যমানন্দো যশো বা যশ্বাত্তথাভূতেন স্থনেতি শাকপার্থিবাদিতারধ্যপদলোপী কর্মধারয়ভশ্বান্মহাব্যালাং বয়ং চ অবিতা: ॥ १৬ ॥

ব্রজৌকসাং স্বতোকেষু কেহবল্লাক্ষমন্তং। শনৈর্নিঃসীম বর্ধে যথা ক্লঞে অপূর্ব্ববিত্যাদিনা স্বতোকেভ্যোহপি পরপুত্রে ক্ষেত্রপানি ধিকাং ব্যঞ্জিতং। তত্র পৃদ্ধতি ব্রহ্মলিতি পরোন্তবে নন্দপুত্রে স্বোদ্ধবেষু স্বস্থান্তেছপি যং প্রেমা অভ্তপূর্বঃ ব্রহ্মমোহনাং পূর্বাং নৃত্তঃ। লোকে হি অতিগুলবন্তমাদপি পরপূত্রাং গুলহীনেহপি স্বপুত্রে প্রেমাধিকাং দৃশ্যত ইত্যাতো লোকবিরুদ্ধদাদিশং পৃদ্ধ্যতে ইতি ভাবঃ॥ ৪৭ ॥

আহ্বান করিতে ২ ব্রজে উপনীত হইয়া গোষ্ঠে প্রবিষ্ট হইলেন। গোপীগণ তাঁহাকে নিরীক্ষণ করিয়া নয়নের উৎসব বোধ করিতে লাগিলেন॥ ৪৫॥

তদনস্তর ঐ দকল ব্রজবালক স্বস্থ পিত্রাদির সমিধানে বলিতে লাগিল, অদ্য জীক্ষ বনে একটা মহাদর্প নিহত করিয়াছেন, আমরাও ইহাঁ কর্তৃক বিশেষরূপে রক্ষিত হইয়াছি ॥ ৪৬ ॥

রাজা পরীক্ষিৎ, কহিলেন ত্রহ্মন্ ! আপনি অগ্রে বলিয়াছেন ত্রজ্বাসিদিগের নিজপুত্রাপেক্ষা শ্রীকৃষ্ণে অধিক প্রেম হইয়াছিল, জিজ্ঞাসা করি আত্মজ তনয় সকলেও যে প্রেম পূর্ব্বে কখন হয় নাই অপরোৎপন্ন শ্রীকৃষ্ণে ত্রজ্বাসিদের তত্তোহধিক প্রেম কি প্রকারে জন্মিয়াছিল ?॥ ৪৭॥

909

শ্ৰীশুক উবাচ॥

সর্ক্ষোমপি ভূতানাং নৃপ স্বাজ্মৈব বল্লভঃ। ইতরেহপত্যবিত্তাদ্যা স্তম্বলভতীয়েব হি ॥ ৪৮॥ তদ্রাজেন্দ্র যথা স্নেহঃ স্বস্বকাত্মনি দেহিনাং। ন তথা মমতাবলম্বিপুত্রবিত্তগৃহাদিষু॥ ৪৯॥

द्यीभवशामी।

প্রিক্ষাস্য সাক্ষাদাত্মন্ত স্থিমাত্মীয়েভাঃ প্রেমাধিকাং যুদ্ধ্যত ইতি বক্তুং প্রথমং তাবদাত্মনঃ স্বতঃ প্রেষ্ট্রমন্যেষাদ্ধ তত্পাধিক্মিতি দুর্গায়তি পঞ্চিঃ সর্ক্ষোমিত্যাদিভিঃ॥ ৪৮॥

কুতত্তথা দশনাদিত্যাহ তদিতি। তত্মাদেব কারণাং। স্বস্থকান্থানি অহজারাস্পদে ॥ ৪৯ ॥

বৈঞ্চৰতোষণী।

শ্রীদামাদিনামরূপাভ্যাং ব্যক্তে নতু স্বস্থরপেণৈর ব্যক্তে তশ্মিন্ য: যাবান্ অত্র পরোত্তবত্বং নদৰাত্মজ উৎপন্ন ইত্যক্ত সিদ্ধান্তাহসাবে-থৈব উক্তং। অন্যথা শ্রীমন্দশ্যশোদে প্রত্যপি অরং পূর্বপক্ষ: প্রসক্তেত সচ প্রাণকৃত ইতি। যথা। যথা ক্লেফ তপুর্ববিদিতি দৃষ্টা-স্তিতে শ্রীকৃষ্ণ এব পূর্বপক্ষ এতংপকে বিষয়দৌদ্ব্যস্যাধিক্যমন্ত্যের কিন্ত ততোহপি মমতা দেহসম্বর্যারাধিক্যং বিব্ফিতং তচ্চ সিদ্ধান্তবিশেষবৃত্ৎসন্ত্রতি জ্ঞেয়ং॥ ৪৭॥

পরমাত্মা প্রীক্ষেণ্ট্রে সর্কেষামেব প্রিয়াদাত্মনোইপাধিকপ্রিয়: কিমৃত আত্মীয়েভাঃ স্থাদবিধয়েভা ইতি বক্সাদাবাত্মনঃ
বতঃ প্রেটত্বমন্যেমাং তত্পাধিকমেবেভাাই সর্কেষামিতি পঞ্চভিঃ। তত্ত্ব প্রথমং স্বাত্মেতি দেহদেহবিবেকেনাইস্তাম্পদমাত্রমূচতে
মমতাম্পদে ব্যবচ্ছেদার্থং। অপস্ক প্রতিষ্ণ অফ্ভরাপেক্ষয়া। হে নৃপেতি ত্বাদৃশস্যাস্য স্বধর্মতঃ প্রজাপালনম্পি তথৈবেতি ভাবঃ।
হীতি তত্ত্বাস্কুত্বপ্রামাণ্যং বোধয়তি॥ ৪৮॥

তদেব ব্যতিরেকেণাহ তদিতি। তত্রাহঙ্কারাম্পদ ইত্যুবৈশ্বর তেষাং ব্যাখ্যা পরত্র পদ্যেতু অহস্কারাম্পদেছুপি দেহ আত্মেতাাদিকা জ্যো। পাঠাস্তরস্থ ন সঙ্গতং অসৈয়ব বিবক্ষিতথাং। মমতাবদস্থীতি ষষ্ঠার্থন্য ব্যবহিতথাং ন্যুনতা যোগ্যৈবেত্যর্থ:। হে রাজেক্র ইতি সামাজ্যেহপ্যাত্মবং স্নেহোনান্তীতি ভবতা জ্ঞায়ত এব ইতি ভাবঃ॥ ৪৯॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

পরনারা এককোহনৌ সর্বেষামেব প্রিয়াদায়নোহপ্যধিকপ্রিয়: কিম্ভাদ্ধীয়েভা: ইতি বক্তুমাদাবাদ্ধন: শতঃ প্রেছ্রিম তত্ত্বাধিকমেবেত্যাহ্ সর্বেষামিতি পঞ্চতিঃ। অত্র প্রথমতঃ শ্বাদ্ধেতি দেহদেহিবিবেকনাহস্তাম্পদমাত্রম্চাতে মমতাম্পদে প্রেমব্যবদ্দেদার্থং। স্বশ্বস্ক প্রতিস্থং অমুভাবাপেক্ষা। ভূতানামিত্যৌপচারিকভেদেন ॥ ৪৮ ॥
তদেব ব্যতিরেকেশাহ তদিতি ॥ ৪৯ । ৫০ ॥

🖻 বিশ্বনাথচক্রবর্তী।

ভো রাজন্ মমতাম্পদেভা: পুশ্রাদিভা: সকাশাদহস্তাম্পদে আত্মনি প্রেমাধিক্যমিতি লোকরীতি: প্রথমং দৃশ্যতাং তত এবাস্য সিদ্ধাস্থো ভবিষ্যতীভাগ্য সর্বেষামিতি পঞ্চতি:। বল্লভ: লোকদ্ট্যা আত্যন্তিকশ্রীতিবিষয়:। কুসচ প্রতিদেহমেকৈক এব ন তথান্যে ইত্যাহ ইত্যের ইতি ॥ ৫৮॥

वथा निक्रभाधिकः॥ ४२॥

শুক্দেব কহিলেন রাজন্ ! সকল প্রাণির আজ্মাই পরমপ্রিয়, অপত্য ও বিত্তপ্রভৃতি অন্যান্য বস্তু আজ্মার প্রিয় বলিয়াই প্রিয়তর হইয়া থাকে ॥ ৪৮ ॥

হে রাজেন্দ্র ! এই কারণেই দেহিদিগের অহ্সারাস্পদ স্বস্থ দেহে যজ্ঞপ স্থেই হয় মমতাবলমি পুত্র বিত্ত গৃহাদিতে তজ্ঞপ হয় না ॥ ৪৯॥

দেহাত্মবাদিনাং পুংসামপি রাজন্যসত্তম। যথা দেহঃ প্রিয়তমস্তথা ন হৃদু যেচ ডং॥ ৫০॥ দেহোহপি মমতাভাক্ চেত্তহ সে) নাক্সবৎপ্রিয়ঃ। যজ্জীর্য্যত্যপি দেহেহক্মিন্ জীবিতাশা বলীয়সী॥ ৫১

वीधवयामी।

অহস্বারাম্পদেইপি দেহে আত্মাধ্যাসভারতম্যেন প্রেমতারতম্যং দৃশ্যমানং তল্লিবন্ধনমেবেতি দর্শন্তিত্ং মৃঢ়াম্চ্ভেদেন বিশেষ-মাহ দেহাত্মবাদিনামিতি দ্বাভ্যাং। তং দেহমন্থ যে ভবস্তি পুদ্রাদরতে তুন তথা প্রিয়তমা ইত্যর্থঃ॥ ৫০॥

যদ্যবাজীর্য্যত্যপি আসন্নমরণেহপি জীবিতাশা ভবতি। অরং ভাব: ন জীবিষ্যতীতি নিশ্চিতে দেহেহপি যংপ্রেমাম্পদত্বং তদাত্ম-গতমেব সংগচ্ছত ইতি। অথবা যৎ যশ্মিন্ দেহে জীর্যাত্যপি জীবিতাশা অবিবেকদশায়ামাসীৎ সোহপি বিবেকিনো যদা মমতা-ভাগ্ ভবতি তত্ম তদা নাতিবাহেতি॥ ৫১॥

देवकवरकावनी ।

দেহ এবাত্মেতি বাদিনাং অত্যস্তাবিবেকিনামিত্যর্থ: তন্মতেহপ্যাত্মন এব প্রিয়তমত্ব পর্য্যবস্যেৎ আত্মতরৈব দেহেইভিমানেন প্রিয়তমত্বাৎ। হি নিশ্চয়ে। হর্থে চকার:। হে রাজন্যসন্তমেতি কেচিন্তাজন্যা দেহাত্মবাদিনোহসন্ত এব আত্মবাদিনশ্চ সন্তঃঈশ্বরাদিন: সন্তরা: তেরু প্রীকৃষ্টিককপ্রিয়ত্বাত্বং সত্তম ইতি ভাব:॥ ৫০॥

মমেতি দেহং মন্যমানানামবিবেকিনাং মতমালম্বাই দেহেছিপীতি। তৈর্ব্যাখ্যাতং। তত্র প্রথমপক্ষেহপীতি সম্ভাবনামাং প্রাদ্যপেক্ষরা সম্ভবে বা দিতীয়পক্ষে হবিবেকদশায়াং ইতি বলীয়দীতি বিশেষণেনাক্ষিপ্যতে। এতংপ্রতিযোগিতয়া বিবেকিন ইত্যপি। অসৌ দেহেছিপীত্যনয়োর্ধিতয়োর্থং ব্যাচষ্টে সোহপীতি। নাতীবাস্থা ইতি গ্রিম্নতাং লীবতু বেত্যপেক্ষাধিক্যং নাতীত্যথং। ইদং নাত্মবং প্রে ইত্যস্য ব্যাখ্যানমিতি। বদা। আত্মবং পূর্বমবিমেকানাত্মতয়া গৃহীতোহহম্বাবিষয়ে দেহত্তম্বং প্রিয়োন ভবতীত্যর্থং। বদ্যপ্রাক্ষীর্ঘতি রোগাদিনাভিভ্তেহ্যিন্ মমতাম্পদে দেহবিবয়ে জীবিতাশা অয়ং দেহত্তিহতু ইতি বাস্থাপি অবলীয়সী পূর্বাপেক্ষয়া অয়াপিভবতি বিবেকতোহিম্মান্তিপিরম্বাভাবাং॥ ৫১॥

क्रममसर्जः।

নমেতি দেহং মন্থানানাং বিবেকিনাং নতমাল্যাহ দেহোহণীতি। অত্ত দেহাদহন্তা মমভয়োরপগমেনাত্মগতমেব সংগচ্ছত ইতি টীকা বোজ্যা। পূলাদ্যপেক্ষা সমুচ্চয়ার্থেহিয়মিণ শক্ষঃ। টীকায়াঞ্চ। অবিবেক্দশারামিতি বলীয়ন্তবিশেষণেনাক্ষিপ্যতে। এতৎ প্রতিধাগিতয়া বিবেকিন ইত্যাপি সোহণীত্যসৌ দেহোপীত্যনয়োর্ব্যঞ্জমিতি জ্ঞেয়ং সরলার্থয়য়:। যন্ত্রাম্মতা ভাতক্বাদেব পূলাদাবিব দেহে জীর্ঘাতি ভস্য দেহস্য জীবিভাশা বলীয়সী ভবতি। মমতা চাত্মসম্বন্ধাদেবেতি ॥১১॥

শ্ৰীবিশ্বনাপচক্রবর্তী।

সচাত্মামৃঢ়েদে হি এব জ্ঞায়তে ইতি তন্মতেনাই। দেহ এবাত্মেতি বদিত্ব শীলং ধেবাং তং দেহং অস্কৃত্তবন্ধি যে পূজাদয়তে তথা ন প্রিয়তমা ইত্যর্থ: ॥ ৫ • ॥

দেহাত্মবাদিনাং তেষামপি কদাচিদীৰ্ঘবিবেক সতি আত্মৈব প্রিন্ন: স্যান্নতথা দেহ ইত্যাহ দেহোহপি অহস্তাম্পদীভূতোহপি দেহ-ঈষ্চিবেকেন বিদ মনতাভাক্ স্যান্তদালোঁ দেহ আত্মবৎ প্রিন্নো ন ভবেৎ। কিন্তাত্মান্তবোধেনৈৰ প্রিন্ন: স্যাদিভার্থ:। তত্র লোকা-ভূভবনেব প্রমাণমতি যদিতি। দর্বত্র দেহত্যাপে আত্মনোইতিকটং দৃষ্ট্। ভদত্তিকটং মমাত্মনো মা ভবন্ধিতি বৃদ্ধৈর আত্মনাতিলেহাদেব দেহে জীবিতাশা অধিকা ভবন্তীতার্থ:॥ ৫১॥

বে সকল পুরুষ দেহাত্মবাদী অর্থাৎ দেহে আত্মাধ্যাস করিয়া থাকে তাহাদেরও দেহ যজেপ প্রিয়তর দেহের পশ্চাৎ হয় যে সকল পু্জাদি, ততাবৎ তক্ষপ প্রিয়তম নহে॥ ৫০॥

কিন্ত যদ্যপিও দেহ মমতার ভাজন তথাচ তাহা সাত্মবৎ প্রিন্ন হইতে পারে না, যেছেড় দেহ জীর্ণ হইয়া সাসম মৃত্যু হইলেও জীবিতাশা বলবতী হইয়া থাকে॥ ৫১॥ উচুশ্চ স্থছনঃ কৃষ্ণং স্বাগতং তেহতিরংহ্সা। নৈকোহপ্যভোজি ক্বল এহীতঃ সাধু ভূজ্যতাং ॥৪০॥ ততো হসন্ স্থীকেশোহভ্যবহৃত্য সহার্ভকৈঃ। দর্শয়ংশ্চশাঞ্চগরং ন্যবর্ত্ত বনান্ধ জং ॥৪৪॥ বহ প্রসূনবনধাত্বিচিত্রিতাঙ্গঃ প্রোদামবেণুদলশৃঙ্গরবোৎস্বাত্যঃ।

वी धत्रशामी।

অত এবমূচ্শ্চ তে ম্বরাহতিবেগেন স্থাগতং সম্যুগাগতং একোহণি গ্রাস স্থাং বিনা অস্মান্তি ন'ভোজি ন ভুক্ত:। ইত এহি সাধু অধিক্ষেপণ ভুজ্যতামিতি॥ ৪৩॥

অভাবহৃত্য ভুকু। ॥ ৪৪ ॥

প্রোদামো যো বেণ্ াদিরবৈর ৎসবত্তেনাত্যঃ সম্পন্ন:। গৃণন্ উপলালনৈরা ব্রন্থ গোপী দৃশুৎসবদৃশিঃ গোপী দৃশামুৎসবদ্ধপা দৃশিদ পিনং

देवकवरजावनी।

স্বাগতং সর্ববংসানয়নপূর্বকং স্থানাগতমিতার্থ:। এবং বর্বেহপ্যতীতে তথৈব কবলাদিস্থিতি: শ্রীভগবদিচ্ছাবৈভবেন জ্বো। অন্যতঃ ! বন্ধা। দ্বনাপ্যকোহণি কবলো নাডোজি শ্রীহতে পূর্বকবলরতে:। অতঃ ইতঃ অস্মিন্ সর্বেবাং অস্মাকং মণ্ডলমধ্যস্থানে এহি প্রবিশ সাধুবংসাদ্যবেবণে সংপ্রত্যাপি তৎসন্তালনে বা জাতং বৈষ্ত্রাং ত্যক্তা সম্যুগ্ যথাস্যাত্তথা ভূজাতাং॥ ৪৩॥

হসন্নিতি তেবাং মায়ামুগ্নানাং বাক্যশ্রবণাৎ ছংগাদিব্যঞ্জকোক্ত্যশ্রবণেন প্রহর্ষেদিয়াচ্চ। স্ববীকেশ ইতি তেবাং পরসপ্রেষ্ঠতাং ব্রকং প্রতি ন্যবর্ত্তত নিবর্ত্তেতি পাঠে দ এবার্থ:। পরশৈপদমার্বং আজগরং চর্ম দর্শরন্নিতি অধাস্থরবধদ্য ব্রজে কথনায়। ইতি তচ্চমাণি শ্রীভগরতা তাবংকালং মারয়াচ্ছাদ্য তথৈব রক্ষিতমাদীদিতি জ্ঞেয়ং॥ ৪৪॥

ইতি নিজ্ঞারসহচরবালকবৎসদস্তিজনিতহর্ষভরতো বন্যবেশাদিবিশেষেণ অজন্তন্ত্রীজনানাং নেত্রানলং সঞ্জরন্ ব্রজান্তর্জগাম ইত্যাহ বর্ষেতি। বনধাতু বৈরিকাদি:। বনপদং গৃহলভ্যস্থবণাদিব্যবচ্ছেদার্থং বর্ষাদিভিবিশেষেণ বিচিত্রিতানি ভূষিতান্যসানি যেন

ক্রমসন্ধর্ড:।

উচ্চ স্থল: রক্ষা স্থাগতং তেহতিরংহসেতি চ বৎসানিতো বৎসপানীস্থান্যত্রেত্যনেনান্যত্র সঙ্কদীক্ষিতানামণি তেষাং পুনন্তত্তাব-স্থাপনং। তেষাং তৃ তদপি ন জ্ঞাতমাসীদিতি জ্ঞাপয়তি। স্থাত্ত সর্বা ফুছুপপত্তি ম'রিবেব বারিতা সা চ মারা ব্রহ্মণোহণি শ্রীভগবদযু-মোদিত্বাত্তদীবৈব জাতেতি জ্ঞোং। স্থাতঃ শ্রীসম্বর্ধণেনোক্তা প্রারো মারাস্ত মে ভর্তুরিতি। স্থাতীক্ষা বরা মোহিতা ॥৪০।৪৪॥

ত্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

ব্দর্জকা উচ্:। অতিরহংসা স্থেইনবাগতং। দ্রগতবংসানরনে ঘটিকৈকা স্ববশ্যং ভবিষ্যতীত্যন্মভিবিচারিতং স্বরা তু ক্ষণাস্কে-নৈবাগতমিতি ভাবঃ। একোহপি কবলোগ্রাসম্বরা বিনা নাভোজি ভনাদিত এহি॥ ৪৩॥

হসন্নিতি তেবামানন্দৰ্শনাং। অভ্যবহুত্যেতি বৰ্ষে গতেহপান্নব্যঞ্জনাদীনাং ক্ষণাৰ্ছমাত্ৰপরিণামিত্বং জাতং ভচ্চরণবৈরস্যং জন-রতীতি ভাবং। দর্শন্নজ্বিতাহো স্থারঃ অদ্য মৃত্যোহয়ং সর্পো বসারক্তাদিকলিলো বর্ত্তত এবেতি পশ্যতেতি তত্বধস্য ব্রন্ধে প্রস্থাপনার্ধং বোগমানৈব ভাবৎকালপর্যন্তং ভন্তপাচ্ছাদিতমাসীদিতি জ্বেরং বনাৎ বনবিহরণাৎ ব্রন্ধং জ্বগামেতি পেরং॥ ৪৪॥

বস্তুতঃ তাবৎকাল গত হইলেও ঐ সকল বালকের ক্ষা বা তৃষ্ণা কিছুই বোধ হয় নাই, যাহা হউক, তাহারা শ্রীকৃষ্ণকে দেখিতে পাইয়া কহিতে লাগিল মিত্র। তুমি বড় শীঘ্র আদিলে, তোমাকে রাশিয়া আমরা একগ্রাসও ভোজন করি নাই, এখানে আইস, ভোজনার্থ উপবিষ্ট হও॥ ৪০॥

তদনস্তর শ্রীকৃষ্ণ হাস্য করিতে ২ সেই সকল শিশুর সহিত ভোজন করিলেন, তাহার পর অজগর চর্মা দেথাইতে দেধাইতে তাহাদের সহিত বন হইতে ব্রজে প্রত্যাব্তত হইলেন॥ ৪৪॥

হে রাজন্! ময়ুরপুচ্ছ এবং পুষ্পা তথা বনধাতু দারা জীত্তকের সকলতার চিত্রিত হইয়াছিল, তিনি অয়ং বংশী শৃরাদির উদ্ধাধননি দারা উৎস্বাহিত হইয়াছিলেন, উপলালন দারা বৎস সকলতে

বংসান্ গৃণশ্বসুগগীতপবিত্রকীঠি র্গোপীদৃগুৎসবদৃশিঃ প্রবিবেশ গোষ্ঠং ॥ ৪৫ ॥ অদ্যানেন মহাব্যালো যশোদানন্দসূত্রনা। হতোহবিতা বয়ং চাম্মাদিতি বালা ব্রজে জগুঃ ॥৪ওঁ রাজোবাচ ॥

ব্রহ্মন্ পরোন্তবে কৃষ্ণ ইয়ান্ প্রেমা কথং ভবেৎ। যোহভূতপূর্বস্তোকেয়ু স্বোদ্তবেম্ব পি কথ্যতাং ॥৪৭
শীধ্রসামী।

यमा मः॥ ८० ॥

যশোদানক্ষস্থনা ইতি বহুনাম্কিঃ সহৈৰ দৰ্শিতা। কেচিদাহ বঁশোদাস্থ্না অপরে আচু ন কিস্তুনেতি। যদা যশোদাং নক্ষতীতি যশোদানকঃ সচাসৌ স্থূপ্চেতি তথা তেন অস্মান্তাব্যালাং বয়ঞ্ অবিতা রক্ষিতাঃ॥ ৪৬॥

ব্রজৌকসাং স্বতোকেষু নেহবল্ল্যান্দমশ্বহমিত্যাদিনা স্বতোকেভ্যোহপি পরপুত্রে ক্লক্ষে প্রেমাধিক্যমুক্তং তত্ত পৃচ্ছতি ব্রহ্মলিতি ॥৪৭॥

देवश्वराह्यावती।

কিখা সথিভি র্বায় অতঃ প্রোদামো অত্যুক্তঃ যো বেণ্দল শৃঙ্গাণাং রবঃ তেন স এব বোৎসবঃ কিখা সচ উৎসবশ্চ নৃত্যক্রীড়া গীতাদি রূপতেনাঢাঃ পরমসমৃদ্ধিমান্। অতএবাসুগৈতৈরেব বালতৈক্সীতা হর্ষভরেণ গীতবং স্কুষরং তালাদিসহিত্মুকৈঃ কীর্ত্তিগ পবিত্রা নির্মালা জগৎপাবনী বা কীর্তিরঘাস্থরাদি বধরপা যস্য গোপীশব্দেন শ্রীযশোদাদারঃ সর্ব্ধা এব ব্রহ্মব্রিয়ঃ। তালামপীদানীমেব শ্রীকৃষ্ণহ্র্যভরেণাধিক নেত্রানন্দোৎপত্তেঃ। এবং স্থ্যাংশেন শ্রীকৃষ্ণাবির্ভাবেডাতেভোহপ্যোধামাধিকাং দর্শিতং॥ ৪৫॥ ।

মাতৃক্লোৎপ**লৈ যশোদাক্ষ্না অন্যৈ ন'নদক্ষ্না ইতি প্রোক্তমিতি জ্ঞেয়ং। যহা। অতিসভোষেণ হর্দি**স্থাবিশেষতঃ প্রশংসা হাত্যামপি তাত্যাং গোকুলকুল্ভাগ্যদ্যোত্নায়॥ ৪৬॥

নম সেহতাবত্রিধা দৃশ্যতে বিষয় সৌন্দর্যোগ মনতাবিশেষেণ স্বাভাবিক দৈছিকসম্বন্ধ বিশেষেণ চ তত্র প্রথমং প্রাথদেব যাবং বংসপেত্যাছাক্তম্বাৎ। দ্বিতীয়শ্চ তহদেব তত্তংসম্বন্ধস্যানতিরেকাং। যশ্চ তৃতীয়ঃ শ্রীপ্রছামাগমনে তন্মাতরি শ্রুতঃ সম্বত্র বিপরীত এব তহি কথং ব্রজৌকসাং স্বতোকেম্বিত্যাদিক মুক্তমিত্যভিপ্রেত্য বিশেষ বৃত্তংস্যা পর বিরোধি বিষয়া বা পৃচ্ছতি ব্রক্ষরিতি শ্রীক্রয়ে

ক্রমসন্দর্ভ:

(शिष्णः औय मिनिषः॥ ८८। ८७॥

क्रास्क क्षीमांमामिनांमक्ष्मां वारक त्यां यावान् ॥ ४१ ॥

শ্ৰীবিশ্বনাপচক্ৰবন্তী।

श्वन् উপलालरैनवास्वयन् व्यानीनाः वरमलानाः पृणामूरमवक्रमा पृणि पर्भनः यम् भः ॥ ८८ ॥

যশোদাৰলয়োজাগ্যমানলো যশো বা যত্মাত্তথাভূতেন হতুনেতি শাকপার্থিবাদিত্বাল্লধ্যপদলোপী কর্ত্মধারয়ন্তত্মাল্লহাব্যালাং বয়ং চ অবিতাঃ ॥ ৪৬ ॥

ব্ৰজৌকদাং স্বতোকেষু কেহবল্লান্তমন্ত্ৰ: শনৈনি:দীম বর্ধে যথা ক্বঞে অপূর্ব্বদিত্যাদিনা স্বতোকেভ্যোহপি পরপুত্রে ক্লেপ্রেমাধিকাং ব্যঞ্জিতং। তত্র পৃচ্ছতি ব্রন্ধতি পরোন্তবে নলপুত্রে স্বোদ্ধবেষু স্বস্থত্রেছপি মং প্রেমা অভ্তপূর্ব: ব্রন্ধমোহনাং পূর্বং ন
ভূত:। লোকে হি জতি গুণবন্তমাদপি পরপূত্রাং গুণহীনেহপি স্বপুত্রে প্রেমাধিক্যং দৃশ্যক্ত ইত্যতো লোকবিক্দ্ধবাদিদং পৃচ্চ্যতে
ইতি ভাব:॥ ৪৭ ॥

আহ্বান করিতে ২ ব্রজে উপনীত হইয়া গোষ্ঠে প্রবিষ্ট হইলেন। গোপীগণ তাঁহাকে নিরীক্ষণ করিয়া নয়নের উৎসব বোধ করিতে লাগিলেন॥ ৪৫॥

তদনন্তর ঐ সকল ব্রজবালক স্বন্ধ পি**ত্তাদির সমিধানে** বলিতে লাগিল, অদ্য শ্রীকৃষ্ণ বনে একটা মহাসর্প নিহত করিয়াছেন, আমরাও ইহাঁ কর্তৃক বিশেষরূপে রক্ষিত হইয়াছি॥ ৪৬॥

রাজা পরীক্ষিৎ' কহিলেন ত্রহ্মন্ । আপনি অত্যে বলিয়াছেন ত্রজ্বাসিদিগের নিজপুক্রাপেকা শ্রীকৃষ্ণে অধিক প্রেম হইয়াছিল, জিজ্ঞাসা করি আত্মজ তন্য় সকলেও যে প্রেম পূর্বেক কথন হয় নাই অপরোৎপন্ন শ্রীকৃষ্ণে ত্রজ্বাসিদের ততোহধিক প্রেম কি প্রকারে জন্মিয়াছিল ?॥ ৪৭॥

200

শ্রীশুক উবাচ॥

সর্ব্বোমপি ভূতানাং নৃপ স্বাজ্যৈব বল্লভ:। ইতরেহপত্যবিতাদ্যা স্তবলভত য়ৈব হি॥ ৪৮॥ তদ্রাজ্ঞেন্দ্র যথা স্নেহঃ স্বস্থকাত্মনি দেহিনাং। ন তথা সমতাবলম্বিপুত্রবিত্যুহাদিয়ু॥ ৪৯॥

প্রীধরস্বামী।

শ্রীকৃষ্ণগ্য সাক্ষাদাত্মন্তান্ত্রিরাত্মীয়েভাঃ প্রেমাধিক্যং যুক্তাত ইতি বক্তুং প্রথমং তাবদাত্মনঃ স্বতঃ প্রেষ্ট্রমন্যেষান্ত তর্ণাধিক মিতি দশ্যতি পঞ্চতিঃ সর্বেষামিত্যাদিভিঃ॥ ৪৮॥

কুতস্তথা দর্শনাদিত্যাহ তদিতি। তত্মাদের কারণাং। বস্বকান্মনি অহঙ্কারাম্পদে॥ ৪৯॥

देवकवरजावनी ।

প্রদামাদিনামরপাত্যাং ব্যক্তে নতু স্বস্থরপেণৈব ব্যক্তে তত্মিন্ যঃ যাবান্ অত পরোত্তবন্ধং নলন্ধাত্মল উৎপন্ন ইত্যক্ত সিদ্ধান্তাম্পাবে-লৈব উক্তং। অন্যথা শ্রীমন্নদ্দবলাদে প্রত্যাপি অন্তঃ পূর্বপক্ষঃ প্রসক্তেত সচ পূরাণক্তত ইতি। যন্ধা। বথা ক্লফে অপূর্ববিদিতি দৃষ্টা-ন্তিতে প্রীকৃষ্ণ এব পূর্ববিক্ষ এতংপক্ষে বিষয়সৌন্দব্যস্যাধিকামন্ত্যেব কিন্ত ততোহপি মমতা দেহসম্বদ্ধয়োরাধিক্যং বিবক্ষিতং তচ্চ সিদ্ধান্তবিশেষবৃত্ত্বস্থেতি জ্বেমং॥ ৪৭॥

পরমাত্মা প্রীক্ত ফোইসৌ সর্বেরামেব ' প্রিয়াদাত্মনোহপাধিক প্রিয়: কিমৃত আত্মীয়েভা: স্থপদবিষয়েভা ইতি বক্ মাদাবায়নঃ
বতঃ প্রেষ্ঠত্বমন্যেষাং তর্গাধিকমেবেতাাই সর্বেরামিতি পঞ্চতঃ। তত্র প্রথমং স্বাত্মেতি দেহদেইবিবেকেনাইস্কাপদমাত্রম্চতে
মমতাম্পদে ব্যবছেদার্থং। স্বশব্দত প্রতিস্বং অন্তর্গপেক্ষা। হে নৃপেতি ত্বাদৃশস্যাস্য স্বধর্মতঃ প্রকাপালনমপি তথৈবেতি ভাবঃ।
হীতি তত্রামূভবপ্রামাণাং বোধয়তি॥ ৪৮॥

তদেব ৰাতিরেকেণাহ তদিতি। তত্রাহক্ষারাম্পদ ইত্যবৈদ্যাব তেষাং ব্যাখ্যা পরত্র পদ্যেতু অহক্ষারাম্পদেহপি দেহ আত্মেত্যাদিক। জ্ঞেয়া। পাঠাস্তরন্ত ন সন্ধতং অস্যৈব বিবক্ষিতত্বাং। মমতাবলম্বীতি ষঠ্যপ্স্য ব্যবহিতত্বাং ন্যুনতা যোগ্যৈবেত্যর্থ:। হে রাজেক্র ইতি সামাজ্যেহপ্যাত্মবং স্নেহোনান্তীতি ভবতা জ্ঞায়ত এব ইতি ভাব:॥ ৪৯॥

ক্ৰমদৰ্শন্ত:।

পরমাত্মা এক্রিফোহদৌ সর্বেরামেব প্রিয়াদাক্ষনোহপাধিকপ্রিয়: কিম্তাত্মীয়েত্য: ইতি বক্ষাদাবাত্মন: শ্বতঃ প্রেঠখননেরাং তত্পাধিকমেবেত্যার সর্বেরামিতি পঞ্চতিঃ। অত্র প্রথমতঃ শ্বাত্মেতি দেহদেহিবিবেকেনাইস্কাম্পদমাত্রমূচ্যতে মমতাম্পদে প্রেমব্যবচ্ছেদার্থং। স্থান্দত প্রতিশ্বং অন্তর্ভাবাপেক্ষয়া। ভৃতানামিত্যোপচারিকভেদেন ॥ ৪৮ ॥
ভিদেব ব্যতিরেকেশাই তদিতি॥ ৪৯। ৫০ ॥

🚨 বিশ্বনাথচক্রবর্তী।

ভো রাজন্ মমতাম্পদেভাঃ পুলাদিভাঃ সকাশাদহস্তাম্পদে আত্মনি প্রেমাধিকামিতি লোকট্বীতিঃ প্রথমং দৃশ্যতাং ওত এবাস্য সিদ্ধাস্তো তবিষ্যতীভ্যাহ সর্কোষামিতি পঞ্জিঃ। বল্লভঃ লোকদৃষ্ট্যা আত্যস্তিকপ্রীতিবিষয়ং। সচ প্রতিদেহমেকৈক এব দ তথান্যে ইত্যাহ ইতরে ইতি॥ ৫৮॥

यथा निक्रभाधिकः । ८२॥

শুকদেব কছিলেন রাজন্! দকল প্রাণির আত্মাই পরমপ্রিয়, অপত্য ও বিত্তপ্রভৃতি অন্যান্য বস্তু আত্মার প্রিয় বলিয়াই প্রিয়তর হইয়া থাকে ॥ ৪৮ ॥

হে রাজেন্দ্র ! এই কারণেই দেহিদিগের অহ্সারাম্পদ স্বস্থ দেহে যজ্ঞপ স্নেহ হয় নমতাবলম্বি পুক্র বিত্ত গৃহাদিতে তজ্ঞপ হয় না ॥ ৪৯॥

দেহাত্মবাদিনাং পুংসামপি রাজন্যসত্তম। যথা দেহঃ প্রিয়তমন্তথা ন ছুকু যেচ তং॥ ৫০॥
দেহোহপি মুমতাভাক্ চেত্তর্হ সৌ নাত্মবংপ্রিয়ঃ। যজ্জীর্য্যত্যপি দেহেহক্মিন্ জীবিতাশা বলীয়সী॥ ৫১

वीधवचामी।

অহঙ্কারাম্পদেহপি দেহে আত্মাধ্যাসভারতম্যেন প্রেমভারতম্যং দৃশ্যমানং তরিবন্ধনমেবেতি দর্শরিত্ং মৃঢ়ামৃচ্ভেদেন বিশেষ-মাহ দেহাত্মবাদিনামিতি ঘাভাং। তং দেহময়ু যে ভবস্তি প্রাণয়ত্তে তুন তথা প্রিয়তমা ইত্যর্থঃ ॥ ৫০ ॥

যদ্যসাজ্জীর্যান্তাপি আসন্নমরণেহপি জীবিতাশা ভবতি। অন্নং ভাবঃ ন জীবিব্যতীতি নিশ্চিতে দেহেহপি যৎপ্রেমাম্পদত্বং তদাল্প-গতমেব সংগচ্ছত ইতি। অথবা যৎ যত্মিন্ দেহে জীর্যান্তাপি জীবিতাশা অবিবেকদশারামাসীৎ সোহপি বিবেকিনো যদা মমতা-ভাগু ভবতি তত্ম তদা নাতিবাহেতি॥ ৫১॥

বৈষ্ণবতোৰণী।

দেহ এবাত্মেতি বাদিনাং অত্যন্তাবিবেকিনামিতার্থঃ তন্মতেহপ্যাত্মন এব প্রিয়তমত্ব পর্যাবস্থেৎ আত্মতরৈব দেহেছভিমানেন প্রিয়তমত্বাৎ। হি নিশ্চয়ে। তথে চকারঃ। হে রাজন্যসভ্তমেতি কেচিজাজন্যায়্রদেহাত্মবাদিনোহসন্ত এব আত্মবাদিনশ্চ সন্তঃঈশ্বরবাদিনঃ সন্তরাঃ তেরু শ্রীক্রইফকপ্রিয়ত্বাত্বং সভম ইতি ভাবঃ॥ ৫০॥

মনেতি দেহং মন্যমানানামবিৰেকিনাং মতমালন্ব্যাহ দেহোহণীতি। তৈর্ব্যাধ্যাতং। তত্র প্রথমপক্ষেহণীতি স্কাবনারাং পুজাদ্যপেক্ষয়া সম্ক্রের বা দ্বিতীয়পক্ষে হবিবেকদশারাং ইতি বলীয়দীতি বিশেষণেনাক্ষিপ্যতে। এতংপ্রতিযোগিতয়া বিবেকিন ইত্যপি। আদৌ দেহোহণীত্যনয়োর বিত্রেরারর্থং ব্যাচষ্টে সোহণীতি। নাতীবাস্থা ইতি প্রিয়তাং জীবতু বেত্যপেক্ষাধিক্যং নাতীত্যর্থ:। ইদং নাম্মবং প্রের্ম ইত্যাস্য ব্যাধ্যানমিতি। যথা। আত্মবং পূর্মমবিমেকানাত্মতয়া গৃহীতোহহস্তাবিষয়ো দেহত্তমং প্রিয়ো ভবতীত্যর্থ:। যদাশাক্ষীর্যাতি রোগাদিনাভিভূত্হে বিন্নুমমতাম্পদে দেহবিবয়ে জীবিতাশা অয়ং দেহত্তিই ইতি বাহাপি অবলীয়সী পূর্মাপেক্ষয়া স্বয়াপি ভবতি বিবেকতোহিমিয়া মৃতাপগ্রমনাতি প্রিয়মভাবাং॥ ৫১॥

क्रममन्दर्धः ।

মনেতি দেহং মধানানাং বিবেকিনাং মতমালখ্যাহ দেহোহপীতি। অত দেহাদহস্তা মমতধোরপগমেনাত্মগতমেব সংগচ্ছত ইতি টীকা যোৱা। পূজাদ্যপেক্ষা সমুচ্চয়ার্থোহয়মপি শক্ষ:। টীকায়াঞ্চ। অবিবেকদশায়ামিতি বলীয়ন্থবিশেষণেনাক্ষিণ্যতে। এতৎ প্রতিধোগিতথা বিবেকিন ইত্যপি সোহপীত্যসৌ দেহোপীত্যনরোর্ব্যঞ্জমিতি জ্ঞেয়ং সর্লার্থন্থরং। যন্মান্মতা ভাজব্বাদেব পূজাদাবিব দেহে জীর্ঘাতি তথ্য দেহশ্য জীবিতাশা বলীয়দী ভবতি। মমতা চাত্মসম্বাদেবেতি ॥১০॥

প্রীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

সচামান্ডেদেহি এব জ্ঞান্নতে ইতি তন্মতেনাই। দেহ এবাত্মেতি বদিজুং শীলং বেবাং তং দেহং জন্মভবন্তি যে পুত্রাদরত্তে তথা ন প্রিরতমা ইত্যর্থ: ॥ ৫ • ॥

দেহাত্মাদিনাং তেবামণি কদািচদীবিদিবেকে সতি আদৈবে প্রিয়: স্যায়তথা দেহ ইত্যাহ দেহােহপি অহস্তাম্পদীভূতােহপি দেহদীব্দিবেকেন যদি মনতাভাক্ স্যাতদাসো দেহ আত্মবৎ প্রিয়োন ভবেং। কিন্তাআহ্বােশেনৈৰ প্রিয়: স্যাদিত্যর্থ:। তত্ত্ব লােকাস্তব্যেব প্রমাণয়তি যদিতি। সর্বত্ত দেহত্যাগে আত্মনােহতিকটং দৃট্। তদ্তিকটং মমাত্মনাে মা ভব্ছিতি বুদ্ধাৈব আত্মনাতিমেহাদেৰ
দেহে জীবিতাশা অধিকা ভব্তীতার্থ:॥ ৫১॥

যে সকল পুরুষ দেহাস্থবাদী অর্ধাৎ দেহে আত্মাধ্যাস করিয়া থাকে তাহাদেরও দেহ যজপ প্রিয়তর দেহের পশ্চাৎ হয় যে সকল পুঞাদি, তত্তাবৎ তত্ত্বপ প্রিয়তম নহে॥ ৫০॥

় কিন্তু যদ্যপিও দেহ মমতার ভাজন তথাচ তাহ। আত্মবৎ প্রিন্ন হইতে পারে না, যেহেতু দেহ জীর্ণ হুইয়া আসন মৃত্যু হুইলেও জীবিতাশা বলবতী হুইয়া থাকে॥ ৫১॥ তম্মাৎ প্রিয়তমঃ স্বাত্ম। দর্কেষামপি দেহিনাং। তদর্থমেব সকলং জগচৈতচ্চরাচরং॥ ৫২॥ কৃষ্ণমেনমবৈহি ত্বমাত্মানমথিলাত্মনাং। জ্গদ্ধিতায় সোহপ্যত্র দেহীবাভাতি মায়য়া॥ ৫৩॥

वीधवयामी।

ভদর্থনের সকলং প্রিয়মিত্যর্থ:॥ ৫২॥ প্রস্তুতমাহ ক্লফেনেমিতি॥ ৫০॥

বৈক্ষৰতোৰণী।

চরং দেহাপত্যাদি অচরং গেহাদি তদাত্মকমেতজ্জগচ্চাপি সকলমপি বংকিঞ্চিদিত্যর্থ:। এতেনাম্বন: স্থবরূপত্থক বোদিতং ॥৫২॥ এবং দেহত্বাতিরিক্তস্য গুলুসাত্মন: স্বতঃ প্রিয়ত্ম্ত্বা বিবিশিত্যাহ ক্রক্মিতি। ক্র্মিত্বাচক: শব্দো নশ্চ নির্কৃতিবাচক:। তয়োবৈক্যং পরং ব্রহ্ম ক্রঞ্চ ইত্যতিধীয়তে ইত্যেতল্লকণ্ডেন তয়ামানমেনং শ্রীবশোদানন্দনরূপং অথিলানামান্দ্রনাং স্থামওলস্থানীয়স্য তস্য রামিপর্মাণ্স্থানীয়ানাং গুলানামণি ক্রেজ্ঞানাং পর্মস্বরূপত্বেন পর্মান্ধানমবেহি তহি কথং লোকে দৃশ্যতয়া ভাতি তত্ত্রাহ জগিজতায়েতি। সোহপি সর্বান্ধ্রপর্মস্বরূপোহপি প্রমক্যাণগুণত্বেন পর্মকার্মণিক্ষাৎ স্বভক্তপ্রস্ক্রেন জগত্যাহিপি হিতায়াত্র জগতি ভাতি করে কল্পে স্বরূপশক্তা প্রকাশতে। নমু। যদি তাদৃশ এব ক্ষেত্বহি দেহান্ধ্রবিভাগাদিনা তদ্বিক্রধ্যে ইবাভাতি তত্ত্রাহ

ক্রমসকর্তঃ।

এবমায়ন: স্বত:প্রির্জেন মুধ্যস্বরূপত্ত বোধিতং॥ ৫২॥

অথ বিবক্ষিতমাহ। কৃষ্ণমিতি এবং শ্রীষশোদানন্দনরূপং অত্র জগতি জগতোহিতামাতাতি স্বয়ং প্রকাশতে। দেহীব দেহাস্থ-বিভাগাদিনা তদ্বিস্কন্ধর্ম্ব ইব মায়নৈবাতাতি ন কেবলং সর্কেষাং জীবানামেব প্রমন্বরূপং অপিতু অন্তে সর্কেষাং জড়ানাং॥ ৫৩॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

তত্মাদিতিচরং পুত্র কলত্রাদি। অচবং গৃহঘটপটাদি। তেন লোকদৃষ্ট্যা পুত্রাদিভ্যঃ সকাশাদাত্মন এবাভ্যস্তিক প্রীতিবিষয়ত্বং প্রতিপাদিতং॥ ৫২॥

বিবিক্ষিতং সিদ্ধান্তং প্রতিপাদরং কর্দ্ধীয় তস্যাপ্যাত্মন আপেক্ষিকপ্রীতিবিষর্থনেব আতান্তিকপ্রীতিবিষর্থং কেবলং ক্ষুণিসে-বেত্যাহ ক্ষমতি। অধিলামানাঝানাং জীবানামপ্যাত্মানং প্রমাত্মানমেব ক্ষুমবেহি তেন প্রাদিষ্ প্রীতির্বণা দেহাহরোদেন দেহে চ প্রীতির্বণ আত্মাহরোবেন তথিবাত্মনাপ প্রীতিঃ পরমাত্মাহরোবেন সচ পরমাত্মা ক্ষুণ্ণ এব । বছকং। বিষ্টভাহিমিদং কংসনেকাংশেন হিতো জগদিত্যকঃ ক্ষুণ্টেরাত্যন্তিক প্রীতিবিষর্থাত্তিবেব প্রীতেঃ পরাক্ষাটেতি অপুরেভোছিণ তত্র বং প্রেমানিকাং তহুপপাদিতং। কিষ্ণা দ্বীবানাং ভক্তাতারাং মার্মা জ্ঞানাবরণাক ভত্তৈসক্র ক্রাণ্টের আত্মান্ত্রনা মান্ত্রকারানাং কর্মানিকার প্রান্তিনিকার লোকানাং প্রীতিবিররত্বেনাস্থভবো ন তামিন্ ব্রুণাসিনাক মান্ত্রতিকপূর্ণহাচ্চ যথার্থ এবাহ্নত্ব ইত্যতন্ত্রেরাং স্পুলাদিভোছিণ ভন্মন্ প্রেমাধিকাং আভাবিকং বর্তত এবেতি স্নাধেনং। জগদ্ধিতান্ত্রনিকা মান্ত্রাপি বির প্রতীয়তে নতু স্ মান্ত্রোপানিকার্য মান্ত্রিক ইব ভৌভিকদ্বেহ্বানু প্রতীয়ত ইত্যর্থঃ। ব্যা। নার্ট্যের যো দেহত্ত্বানিক মান্ত্রোপানির প্রতীয়তে নতু স্ মান্ত্রোপানিকার্য ক্রান্তর্কার ক্রান্ত্রীপানির প্রতীয়তে নতু স্থান্তেতিয়া নার্বাব্রা মান্ত্রিকার ক্রান্ত্রান্ত্রিকার ক্রান্ত্রান্ত্র ক্রান্ত্রান্ত ক্রান্ত্রান্ত্র ন ভ্রেক্স স্বিদ্ধান্তর ক্রান্ত্রিকার ক্রান্ত্রন ক্রান্ত্রন ক্রান্ত্রন ক্রান্ত্রন ক্রান্ত্রন ক্রান্ত্রন ক্রান্ত্রন প্রতিবিদ্ধান্ত্র ক্রান্ত্রন প্রক্রান্ত্রন ক্রান্ত্রন ক্রান্ত্রন প্রত্রেভিত ক্রান্ত্রন প্রক্রিত্রিয়া ক্রান্ত্রন স্বান্ত্রন প্রক্রিত্রন ক্রান্ত্রন ক্রান্ত্রন ক্রান্ত্রন ক্রান্ত্রন প্রক্রিত্রিয় ক্রান্ত্রন স্বান্ত্রন ক্রান্ত্রন প্রক্রিত্রন ক্রান্ত্রন ক্রান্তর ক্রান্ত্রন ক্রান্ত্রন ক্রান্তর ন প্রান্ত্রন ক্রান্ত্রন ক্রান্ত্রন ক্রান্তর ক্রান্তর ক্রান্তর ক্রান্ত্রন ক্রান্ত্রন ক্রান্তর ক্রান্তর ক্রান্তর ক্রান্ত্রন ক্র

শতএব দেহিগণের আত্মাই প্রিয়তর, আত্মার নিমিতই চরাচর সকল জগৎ প্রিয় হইয়া থাকে ॥৫২ রাজন্ ! তুমি ঐ জীকৃষ্ণকে অধিল দৈহির আত্মা বলিয়া জান, তিনি অগতের হিতার্থ মায়া বারা জ্ঞানে দেহির ন্যায় প্রকাশ পাইতেছেন ॥ ৫৩ ॥

বস্ততো জানতামত্র কৃষ্ণং স্থাস, চরিষ্ণু চ। ভগবজ্ঞপমখিলং ন্যান্যছস্তিই কিঞ্ন ॥ ৫৪॥

शिश्ववामी ।

ন কেবলনামনামায়া অপিতৃ জগতামপীত্যাহ বস্তুত ইতি। সর্বজ্ঞগৎকারণমিতি ক্লফংজানতাং পুংসাং স্থাবরং ভঙ্গমঞ্চ সর্বাং ভগবদ্ধপং ভগবানেব রূপং যুদ্ধ তৎ নান্যং॥ ৫৪॥

বৈষ্ণবভোষণী।

মান্তব্যতি আত্মারামাণাং তৎপ্রিরজনানাঞ্চায়াধিকনিকপাধিপরমপ্রেমাম্পদসর্ব্বাংশব্দেন তঘ্যতিরিক্তবস্তমভালাবাদিতি ভাবং।
নির্ম্পাঞ্চিরমপ্রেমাম্পদত্তং থবাত্যুত্বমানন্দত্বপ্রতি অভএব শ্রীবঞ্জাচার্যাগ্ধতং মহাবারাহ্বচনং দেহদেহিবিভাগোহত নেশ্বরে বিদ্যুতে কচিং। ইতি। তদেবমস্থরাদীনাং মান্নাবরণান্ন তথা ভাতি। নাহং প্রকাশ: সর্ব্বায় যোগমান্নাসমাবৃত ইতি শ্রীভগবদগীতাস্থ চ। তত্ত্র যোগমান্না মুর্ঘটঘটনাকারি কিমপি মম বৃদ্ধি সৌষ্ঠবমিতি শ্রীত্বামিচরণাশ্চ। তংপ্রিরজনানাং ভংপ্রেমভাবিতাক্তংকরণে কীরে সিভোৎপলবদেকজাতীয়ত্বেন প্রেমাম্পদতাস্বভাবোহসৌ স্বমাধুরীতিঃ অধিক্ষাভাতি অন্যক্র যথোচিতমিতি স্থিতে সর্ব্বাতিশন্তিত প্রেমন্থভাবানাং শ্রীব্রজবাসিনাং কিমুতেতি ভাবং॥ ৫৩॥

ন কেবলং সর্বেষাং ক্ষেত্রজ্ঞানামের প্রমন্বরূপং অপি তু অতে সর্বেষাং জড়ানাং আদি। সর্বেষাং সাক্ষান্তজ্ঞপাণাঞ্চেত বজুং ত্যা ভূমত্বমাহ বন্ধত ইতি। বন্ধতন্তব্যতঃ। ক্ষমং অত্র জগতি জানতাং বিচাররতাং তত্বিচারজ্ঞানাং ইত্যর্থঃ। সং স্থাবরজ্ঞসমর্পন্থিলং মচ ভগবতোরপং নারায়ণাদ্যতিধম্বিলং তত্তৎ সর্বাং ইহ শ্রীক্লড়ে এব তদন্তপ্তিবেইনব ক্ষুরতীত্যর্থঃ নান্যং কিঞ্চন যত্ত্র নাত্তি তরাস্ত্যের ইত্যর্থঃ। কারণাংশিনো বিজ্ঞানে কার্যাংশরো বিজ্ঞানাং তত্বতিরেকেণ তত্বতিরেকাচে। মহাসমূদ্রস্য সাগরতরঙ্গ-কেনাদিবং। ক্র্যান্তরীণমণ্ডলাত্রক্স্য বহিন্দ্রভাকিরণপ্রমাণ্গণ মরী চিকাদিবদিতি জ্বেরং। তত্ত্তং বিতীরে। সোহরং তেইভিহিত স্থাত ভগবান বিশ্বভাবনঃ। সমানেন হরেন নিাদনালাহাৎ সহসচ্চ যদিতি ॥ ৫৪ ॥

ক্রমসন্দর্ভঃ।

আনে সর্ক্ষের সাক্ষাক্রণাণাং চেতি বক্তুং তস্য ভূমন্থনাহ বস্তত ইতি। বস্ততঃ তব্ততঃ প্রীকৃষ্ণং অত্র জগতি জানতাং জনানাং বিচারয়তাং তবিচারজ্ঞানামিতার্থঃ। যং স্থাবরজ্জমরূপমধিলং বচ্চ ভগবতো রূপং নারায়ণাদাভিধমধিলং তত্তং সর্কং ইহ প্রীকৃষ্ণ এব তদস্তভূতিবেদিব ক্ষুরতীতার্থঃ। নান্যং কিঞ্চন। যত্ত্বে নাস্তি তয়াত্তোবেতার্থঃ। কারণাংশিনোবি জ্ঞানেন কার্যাংশয়োবি জ্ঞানাং তথাতিরেদে ব্যতিরেকাচ মহাসমূল্যা সাগরভরক্ষ কেনাদিবৎ। স্থ্যস্যাস্তরীণ মগুলাস্থকস্য বহিন্দণ্ড লকিরণ পর্মাণ্গণ মরীচিকাদিবিদিতি জ্ঞায়ং॥ ৫৪॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্ত্তী।

কিঞাপেক্ষিক প্রেমান্সদানি যে চাল্পদেহপুদ্রাদ্যা জেপি বিচারবতঃ স এবেত্যাপেক্ষিকপ্রেমান্সদন্দন্পি তস্যৈবেত্যাহ বন্ধত ইতি। বন্ধত ভিত্তার্থ ক্ষিক্ত আনবাদে ক্ষিক্ত ক্ষিত্ত কারণদৈয়ৰ কার্য্যকার্থাদিতি ভাবঃ 1 এ৪।।

বস্ততঃ বে সকল পুরুষ সর্বজগতের কারণরপে প্রীকৃষ্ণকে জানেন তাঁহাদিগের সমক্ষে স্থাবর জ্সম সম্দার জগৎ ভগবজপে প্রকাশ পায়, ভাঁহারা নিশ্চর জানেন যে তথ্যতীত অন্য কোন বস্তুই এই জগমগুলে নাই॥ ৫৪॥

909

সর্কোষামপি বস্তৃনাং ভাবার্থো ভবতি ছিতঃ। তস্যাপি ভগবান্ কৃষ্ণঃ কিমতম্বস্ত রূপ্যতাং ॥৫৫॥ সমাজিতা যে পদপল্লবপ্লবং মহৎপদং পুণ্যয়েশামুরারেঃ।

खीभव्यामी।

কুত ইতি তত্তাহ সর্কেষামিতি। ভাষার্থ: পরমার্থে ভবতি ভবৎপরিণাম: প্রাপ্নুবৎ কারণ: তন্মিন্ ভস্যাপি ভবত: কারণস্যাপি ভগ্যান্ ক্ষো ভবৎকারণ: অত: কিং অতৎ শ্রীকৃষ্ণব্যতিরিক্তং বস্তু রূপ্যভাং॥ ৫৫॥

ভত্মাৎ ঐক্বিটের প্রমায়তাৎ তদেকশরণানামযত্নসিদ্ধো মোক্ষ ইতি প্রকরণার্থমুপসংহরতি সমাপ্রিতা ইতি। পুণ্যং যশো যস্য সং পুণ্যযশা: সচাসৌ মুরারিশ্চেতি তস্য। পদপল্লব এব প্রবস্তং যে সম্যক্ ক্ষাপ্রিতাঃ মহৎপদং মহতাং পদ্মাশ্রয়ং। যবা। মহচ্চ তৎ

বৈষ্ণবভোষণী।

বিচারনেবাহ সর্বেষামপি প্রাক্কভাপ্রকৃতবন্ধুনাং ভাষরপো যোহর্থং সন্তা স ভবন্তি তৎসন্তাপ্রসন্তাবতি উপাদানাদৌ বন্ধনি স্থিতঃ স্যাৎ। এবং যালহ্বপাদানাত্মকং বন্ধ তস্য সর্ব্বস্থাপি ভগবাংত্তবংসর্বাপজ্ঞিবিশিষ্টঃ শ্রীকৃষ্ণঃ একজাদৃশ ইতার্থঃ। অদ্যৈব হৃতহংস্য কিং নম ন তে ইত্যাদিকস্য শ্রীক্রেনিবাক্সভূত্যাদিতি ভাবঃ। তন্মাদেতংসর্বকারণাদিছেন ত্ময়ং ভিয়াদপি তন্মাদন্যৎ কিং বন্ধিতি ভায়রপ্যতামিত্যর্থঃ। ভদেবং তস্য সর্ব্বমূলাতাছে সিদ্ধে তেষাং বালবৎসানাঞ্চ তৎপ্রাম্প্রভাবিছে স্থিতে স্থভাবত এব ভাদৃশ-প্রেমাম্পাদকং পূর্ব্বক্র্যা শ্রীক্রন্ধবাসিষ্ তচ্চাধিকং যুক্তমেবেতি জ্ঞাপিতং। অথবা। নম্ম কথং এব্ শ্রীম্পোদানন্দন এব সর্বাদ্যোচ্যতে। যদি ভগবজ্ঞপদ্বেনোচ্যতে তহি সন্ত্যন্যানি বহুনি তজ্ঞপানীত্যাশ্র্যাহ বন্ধত ইতি। স্থানু সহস্র শীর্ষাদিচ্রিকৃ তত্ত্বদ্বতারাদি তত্ত্বদ্বতারাদি তত্ত্বদ্বতারাদি তত্ত্বদ্বতারাদি তত্ত্বদ্বতারাদি তত্ত্বদ্বতারাদি তাবানাং ভগবজ্ঞপং ইহ শ্রীকৃষ্ণে এব ইত্যাদি পূর্ববং। কিঞ্চ। সর্বেষামিতি ভাবানাং পদার্থানাং মধ্যে ভাবঃ প্রেমা তজ্ঞপ এবার্থঃ পুক্রবং। তং তিরোহিতসর্ববিলক্ষণগুণরপ্রপ্রতি স্বর্ধবং প্রাণ্রমানন্দ স্বন্ধপং বিনা তস্যাপ্যলক্ষপ্রতিষ্ঠাৎ তন্ধান্ততাহন্যছন্ত নির্ম্বপ্রতাহ বং প্রেমাযোগ্যং স্যাদিতি তদেবমণি পূর্ববং স্থাভাবিকপ্রেমাম্পদন্ধমেৰ স্থাণিতমিতি ॥ ৫৫ ৪

তদেবং প্রেমদম্বভাবাদিপি প্রীক্ষাদ্ধানুরাদিবং অষ্যুক্তানামের মোক্ষমাত্রং পরমং ফলং। তত্মাদ্ধানারাং তত্তমাধুর্যাজ্ঞানেন নোচকতামাত্রং গুণমুপাদায়াপি তৎপদমাশ্রয়তাং শ্রীব্রহ্মাদিবং পরমপ্রেম্বা তছ্চিত পরম তৎপদ প্রাপ্তিরের পরমং ফলং মোক্ষন্ত ভাবী ভবন্ ভূতোবেতি তদাশ্রয়ামোদেন নামুসন্ধান্ত্ং শক্যঃ স্যাদিতি সর্ব্যপ্রকরণার্থমুপসংহরতি সমাশ্রিতা ইতি পুণ্যং তদ্ধেতুশ্চাক্

ক্রমসন্দর্ভঃ

বিচারমেবাহ সর্বেষামিতি। সর্বেষামিণি প্রাক্কভাপ্রাক্ত বন্ধুনাং ভাবদ্ধপো যোহর্থং সন্তা সন্তবতি তৎসন্তাপ্রসন্তবিতি উপাদানাদৌ বন্ধনি ছিলে স্যাৎ এবং যদবং উপাদানাদ্যাক্ষকং বন্ধ তদ্য সর্বস্থাপি প্রাক্কভাপ্রাক্ষতস্য তগবান্তবং সর্বশক্তিবিশিষ্টঃ। শ্রীকৃষ্ণ এক ন্তাদৃশ ইতার্থং। তদেব তস্য সর্ব্বমৃপান্তে সিদিতেবাং বালবৎসানাক তৎপ্রাক্তবিবে বিতে কভাবত এব তাদৃশ প্রেমাপদাবং বাভাবিকপ্রেমাত্বস্থ শ্রীপ্রস্থানিক বৃদ্ধনি ক্রাক্তবিক্র ক্রেমাত্বস্থানিক বিশ্বস্থানিক বিশ্বস্থানিক

विवनाशक्कवर्छ।

কুত ইতি তদাহ সর্কেষামণি স্থাবরজন্মানাং ভাবঃ। ভবস্তাশাদিতি ভাবঃ কারণং প্রধান। তজপেহর্থঃ স্থিতঃ স্থিরো ভবতি তস্যাপি ভাবস্য ভাবঃ কারণং ক্রফ এব অতঃ কিং অতং শ্রীক্রফব্যতিরিক্তং বৃত্ত রূপ্যতাং। যথ। বজুনাং বৃদ্ধীস্রিয়াণাং ভাবার্থো ব্যল্যোহর্থঃ আয়া স্থিরো ভবতি তস্যাপ্যংশঘাভ্রাক্যোহংশী শ্রীক্রফঃ। অতঃ কিং অতং তত্তিরং বন্ধ কিং কিমর্থং রূপ্যতাং স এব কেবলং সেবা ইতার্থঃ॥ ৫৫॥

তদেবং সাধিতং 🕮 ক্লক্ষ্টেল্যব প্রেমাল্লদক্ষ ভচ্চরণাশ্রয়লৈক হেতুকায়ায়াতরণাদেবাম্ভবগোচরীভবতীতি ভচ্চরণাশ্রয়িণামেব

হে রাজন্! যাবতীর বস্তুর পরম অর্থ কারণেতেই অবস্থিত হয়, সেই কারণেরও কারণ ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ, অতএব শ্রীকৃষ্ণ ব্যতিরিক্ত বস্তু কি, নিরূপণ কর ॥ ৫৫॥

হে মহারাজ! ভগবান্ মুরারির যশঃ অতিপবিত্র যে সকল ব্যক্তি মহাজনগণের আশ্রয়রূপ পদপল্লবকে আশ্রয় করে তাহাদিগের নিকট ভবসাগর বৎসপদমাত্র হয় এবং তাহারা প্রম্পদ ভবাস্থ্য विश्व र ने पार भार भार भार भार या प्रभार न दिखार ॥

এতত্তে সর্ব্যাখ্যাতং যৎ পৃষ্টোহ্ছমিছ ছয়। যৎ কোমারে ছরিকৃতং পোগতে পরিকীর্ত্তিং ॥৫৬॥
় এতং স্বহৃতিকেরিতং মুরারেরঘার্দনং শাদ্দভেমনঞ।

ব্যক্তেরং রূপমলোর্বভিষ্টবং শৃণুন্ গৃণয়েতি নরোহথিলার্থান্।

শ্রীধরস্বামী

প্দঞ্চেতি তথা তেষাং ভবাস্থ্যিবংস্পদমাত্ৰং ভবতি। কিঞা। পরং পদং শ্রীবৈক্ঠাথ্যংপদং স্থানং ভবতি বিপদাং যথ পদং আশ্রয়ন্তং পুনঃ কদাচিদ্পি তেষাং ন ভবতি ন ততঃ পুনরাবর্ত্তস্ত ইতার্থঃ॥ ৫৬॥

স্থৃত্তিশ্চরিতং মৃষ্ণস্থেহিন্যোন্যশিক্যাদীনিত্যাদিনোক্তং অধার্দ্ধনঞ্চ শাৰ্শজেষনং ভোজনং ব্যক্তব্যং ব্যক্তাং জড়প্রপঞ্চাৎ ইত্তরৎ শুদ্ধসন্তমাত্মকং বংসবংস্পালরূপং। যথা। ব্যক্তেতরশ্চিৰিলাসন্তং। রূপ্যত ইতি রূপং অস্ত্রস্য উক্লর্ম হান্ অভিট্রবন্তং ব্রহ্মকৃতাং

বৈষ্ণবতোষণী।

বা যশো বদ্য তাদৃশতয় মিছিধবর্ণমান গুণো য ইত্যর্থ: । যশ্চ নরকাশ্বরসেনাপতেমুরিস্য হস্তা অঘনরকসদৃশানেকমোক্ষদতেত্যর্থ:।
তদ্য শ্রীক্ষাস্য পদমেব পল্লব: দৌকুমার্যাদিগুণৈ: স্বত: পরমন্থ্যদ ইত্যর্থ:। স এব পরম: তাদৃশস্থ্যদ্যাজ্ঞানেন তত্তরণোপায়
মাত্রতয়া জ্ঞাত ইত্যর্থ:। অত্র পল্লবপদেন তেবাং ক্রেমাদিকং পদ্য মহৌষধিপল্লববন্ধহাপ্রভাবস্থা স্চিতং। তাদৃশং তং তথা
বেসমাশ্রিতা তেরামপি বস্তু স্থাতবিত: স্থোদয়েন ভবাস্থিব বিসপদং ভবতি তর্ত্তব্যস্তীর্ণো বেত্যপি ন জ্ঞায়েত ত্স্য ন তংক্ষমিত্যর্থ:।
কিন্তু পরং পদং তল্লিত্যধানৈব নিজপ্রেমান্স্যারেণ পদং স্থানং ভবতি বিপদাং যথ পদং জ্বাং তত্ত্ব প্রথাত যদিতি। তালিত্যপার্বদানাং
পদ্যিতি। ব্দিত্যের প্রপঞ্ষয়তি যদিতি॥ ৫৬॥

শ্রীবন্ধণ শুং প্রাথিতং দেংস্যতি নবেতি সন্দিহানং প্রতি কৈমুড্যেনাই এতদিতি। ব্যক্তেরং ব্যক্তানিতরং প্রপঞ্চতীতমিত্যর্থ:।
সর্ব্রোপ্যবিতং ইদং অবার্দনাদীনাং সর্বেষাং শ্রীভগবংস্বর্গশক্তিবিলাস্থাং। অকারাস্তব্দার্থং শৃণ্ন্ গৃণন্ তত্তংপ্রবৃত্তিমাত্রেণৈবেত্যর্থ:। তদৈব কুন্ধুব্রা ফলোংপডেন্ড। নর ইতি চাধিকারানপেক্ষবমুক্তং।

கைக்கைக் ப

যদিত্যেব প্রপঞ্চরতি যদিতি। ৫৬ ॥

প্রীব্রহ্মণন্তং প্রার্থিতং দেংস্যৃতি নবেতি সন্দিহানং প্রতি কৈমতোনাহ এতদিতি ॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

সর্ব্বোৎকর্ষমভিব্যঞ্জয়তি সমাশ্রিতা ইতি। পুণাং চারু মনোহরং ধশো যদ্য তস্য মুরারে: পদপল্লব এব প্লবস্তং যে সম্যক্ কৈবলোনা-শ্রিতা:। কীদৃশং মহতাং পদমাশ্রমং। তেষাং ভবাধ্ধি ব'ংসপদং তীপ্তর্ত্তব্যবন্ধভানানাম্পদং ভবতি পরং পদং নিতাধাম শ্রীরন্দা-বন বৈকুঠাদি তেষাং প্রমাম্পদং বিপদাং বং পদং ছবি বরং তংখলু তেষাং কদাচিদপি ন ভবতীতি তেষাং মতিস্ততোহন্যত্র নাসক্ষতে ইত্যর্থ:॥ ৫৬॥

স্থান্ত ক্রিডং মুক্ষজোহন্যোন্যশিক্যাদীনিত্যাদিনোক্তং। ব্যক্তাং প্রপঞ্চাদিতরং। স্বকারার্ডমার্যং। স্বল্পয় উক্সর্থান্ স্বাভি স্ক্রিডাভাবেন স্তবস্তঃ॥ ट

অর্থাৎ বৈকুণ্ঠ ধাম লাভ করে, বিপদ সমূহের যে পদ (আগ্রয়) তাহা কদাপি তাহাদের হয় না অর্থাৎ বৈকুণ্ঠধাম হইতে তাহাদিগকে পুনরারত হইতে হয় না। রাজন্! আমাকে যাহা জিজ্ঞাসা করিয়া ছিলে অর্থাৎ কৌমারকালে হরিকৃত কর্ম পোগগুসমুয়ে কিরূপে কথিত হইয়াছিল ? তাই সমুদায় তোমার নিকট কহিলাম ॥ ৫৬॥ .

হে ভারত ৷ স্থাপাণ সহ ভগবানের এই চরিত্র, অবাস্থর মর্দন এবং শাদ্রলোপরি ভোজন তথা প্রাপঞ্চ হুইতে ভিন্ন অর্থাৎ শুদ্ধসন্থাত্মক ভগবজেপ, আর ত্রন্ধাকর্তৃক কৃত স্থমহান্ শুব, এসকল পাঠ ও এবং বিহারৈঃ কৌমারৈঃ কৌমারং জহতুর্ত্রত্ত । নিলায়নৈঃ সেতৃবলৈ মর্কটোৎপ্রবনাদিভিঃ॥৫৭ ॥ * ॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংদ্যাং সংহিতায়াং বৈয়াদিক্যাং দশমক্ষকে এক্ষন্তবো নাম চতুর্দশোহধ্যায়ঃ ॥ ১৪ ॥

প্রীবাদরায়ণিরুবাচ।

ততক্ত পোগণ্ডবয়ংশ্রিতো ব্রজে বস্থুবস্থুতো পশুপালসমতো।

ञीधतवामी।

স্তৃতিং এতং শৃণ্ন গৃণন্ নর: সর্বপুরুষাথ নি প্রামোডি ॥ ৫৭ ॥

ইতি শ্রীপরমানন্দ্রিংহপদষট্পদ:। ব্যাকরোং শ্রীধরস্বামী বধামতি বিধেঃ স্ততিং ॥

॥ * ॥ ইতি দশমে চতুর্দশ:॥ *॥

ততঃ পঞ্চলশে ধেরপালনং ধেরকার্দনং। কালিয়কেড়তো গোপরকাঞ্চ নিরুপ্ততে। অহিবক্ত প্রবেশেন রুখা থিরান্ স্থীনতঃ। কৃষ্ণঃ প্রাবেশরং প্রুক্ত তালালিকাননং॥ • ॥

পঙপালসমতে পগুপালনে সমতে পগুপালানাং বা সমতে ঈষ্ধয়োবলাভিরেকমন্ত্রভবন্তাবিত্যর্থ:। অতীব চক্রতু:। সর্বত:

বৈঞ্চৰভোষণী।

কোমারশীলামুপসংহর্তি এবমিতি। এবমেতত্বপলকণকৈরিত্যর্থ:। অহত্যু সংর্তবত্তী এল ইতি ক্লাচিদপ্যন্যত্ত কোমারলীলাস্থকো নাজীতি সর্বতো এলস্যোৎকর্ষং স্চয়তি। নিলায়নং নাম কলিৎ নিলীয় ছিতোহনোন পরিষুগ্য দৃশ্যত ইত্যেবং মর্কটোৎপ্রবন মাদিঃ প্রাণমং বেষাং তৈঃ সেতৃবকৈরিতি জীরঘুনাথলীলামুকরণং থবিদং। বছত্বং পৌনঃপুন্যাৎ। এবং চাল্যমান্যন্তমন্ত্রবারণাদি ভিন্যুদ্ধস্বান্যম্করণমণি গন্যাং॥ ৫৭॥

॥ *॥ विकि श्रीदिक्षवरकाषणाः मभमिष्रिभाः ठकूर्भभः॥ * ॥

ততঃ পঞ্চমবর্ষ ক্রীড়ানস্তরং দর্থে চকারে। ভিল্লোপক্রমাৎ। ত্রজ ইতি পূর্ব্ববং এবমগ্রেইপি ক্রেমং পশুপালস্মতাবিতি সমস্বতঃ শ্রীর্ন্ধাবনবিহারার্থং সাগ্রন্ধস্য শ্রীভগবতো গোপালনেছা চিরং জাতান্তি। সাচ বাল্যদৃষ্ট্য শ্রীনন্দাদীনাং দ্বেহভরেণ সম্মতা ন স্যাহ।

क्रयमसर्छः।

वर्करहे । अवना निर्धियाः देख व इवः (भीनः भूनगर ॥ ७०॥

॥ 🛊 ॥ देखि मन्द्रम ऋत्रमगर्स्ड हर्जुमनः ॥ 🛊 ॥

🕮 বিশ্বনাথচক্রবর্তী।

ব্ৰহ্মন্ কালান্তরকুতং তৎকালীনং কথং ভবেদিতি রাজপ্রশ্লোত্তরং সমাণ্য পুনতাং কথাদেবামবলম্বমান আহ এবমিতি। জহুতুঃ সংযুত্তবস্থো। নিলায়নৈঃ নিলীয়ন্তিতিজদৰেষণাল্যৈ সেতৃ্বদ্ধ লক্ষাপ্রয়াণকীরান্তিমণনাদিভির্বতাবান্তরচরিতৈঃ॥ ৫৭॥

॥ 🖈 ॥ हेिल नातार्थनर्मिनााः हिविगाः ज्ञक्टाहजनाः । हर्जून्लाध्दः नन्ता नन्न छः नन्न छः नर्जाः ॥ 🛊 ॥

ধেন্নাং রক্ষণং জ্যেষ্ট্রভি: খৈঃ সহ থেলনং। ধের্কস্য বধো রক্ষা বিষাৎ পঞ্চলে গ্রাং॥ ততঃ পঞ্চনবর্ধকীড়ান ছরং পশ্নাং পালনে সন্মতৌ গোপেঃ সন্মতীভূতৌ। তদিনত পাদে কার্তিকমাহান্মে দৃইং। তদাইমী কার্তিক তু ন্মতা গোপাইমী বৃধৈঃ। তদিনাভাবণ করিলে পুরুষের সমস্ত পুরুষার্থ লাভ হয়, হে মহারাজ! রামকৃষ্ণ ব্রজে থাকিয়া উক্তপ্রকারে নিলায়ন অর্থাৎ শুকারিতভাবে অবস্থিতি ও তদন্বেয়ণাদি, তথা সেতুবন্ধ,মর্কটগণসহ উল্লেফ্যন প্রোল্ফ-নাদি রিবিধ কৌমার ব্যবহারে কৌমারকাল অতিবাহিত করিয়াছিলেন॥ ৫৭॥

॥ # ॥ है जि नगरम छक्तम ॥ # ॥

পঞ্চদশ অধ্যায়ে জ্রীকৃষ্ণের কর্তৃক ধৈত্ব পালন করিতে ২ থেতুকান্তর মর্দন এবং কালিয়ের বিষ হইতে গোপ বালকদিগের রক্ষা, ইহাই বর্ণিত হইতেছে॥ ।॥

ভক্ষেব কহিলেন তদনস্তর রাম কৃষ্ণ পোগিও অর্থাৎ ষষ্ঠ বৎসর বয়ঃক্রম প্রাপ্ত হইলে এক মধ্যে

গাশ্চারয়ন্তে স্থিভিঃ সমং পদৈ র্শাবনং পূণ্যমতীব চক্রতৃঃ॥ ১॥
তন্মাধবোবেণুমূদীরয়ন্ রতো গোপৈ গৃণিদ্ধিঃ স্বয়শো বলান্বিতঃ।
পশূন্ পুরস্কৃত্য পশব্যমাবিশবিহর্ত্তুকামঃ কুন্থমাকরং বনং॥ ২॥

बीशत्रश्रामी ।

প্রসর্পণেন ॥ ১ ॥

স্বযশে! গৃণদ্ভির্গোপৈর ত জন্দনং প্রাবিশং ॥ ২ ॥

বৈক বতোষণী।

অধুনা চ যথাকালং কিঞ্ছিয়োবলাতিরেকপ্রকটনেন সন্মতাভূদিত্যর্থ:। পশুপালানাং সন্মতৌ ব্যাথ্যা ভূ তয়োঃ পশুপালন-প্রাবীণ্যইচিকা। পণ্ডিতসন্মত ইতিবৎ পশ্নাং পালানাঞ্চ সন্মতৌ সস্তৌ শ্রীভগবতা পালিতানাং মৃক্ষন্তন্যছেন মাতৃসঙ্গে মিলিতানাং অপি তং ত্যক্তমুমান্ত্র বংসানাং তন্মাতৃণাঞ্চ তদন্ত্রপত্মন ব্যাদীনামিপি সাহচর্য্যেণ নিক্ষামানানামিপি সর্বেষাং তস্যান্তিকে সমাগমাৎ তেন বিনা বনে পশ্নামগমনাচ্চ তত্র তাবিতি যুগলছেন নির্দেশাং সেহভর্ষদ্যোতনা ক্রীড়াসোঁচবার্থা। স্থিভিঃ সম্মিতি ততঃ প্রভৃতি পূর্বে গোপালনান্ত্রিতা ইতি ক্রেরং। যে খলু ততঃ প্রবেষ্যো গোপা ইত্যাদৌ বর্ণিতা ইতি ক্রেরং। অয়ং ভাবঃ। প্র্বেং স্বর্ধন্মবেণ গোচারণে তন্মিন্ পুত্ররূপস্য প্রতিনিধের্যোগ্যাথে শ্রীত্রক্ষের্বে স্বর্মেন গোচারণং। ততত্তৎসলামুরোধেন তৎ সব্যুকৈরেব স্বর্যোচারণং। অধুনা ভূ শ্রীক্রফেন তদারভেণ তৎসঙ্গরোধন তৎ স্বর্মকরেব তদিতি। এতচ্চ কার্ত্তিকভুক্তাইম্যাং। তথাচ পালো। কার্ত্তিকমাহাত্মে। শুক্লাইমী কার্ত্তিকে ভূ ন্মতা গোপাইমী বৃধিঃ। তদিনাছাস্থদেবাহভূদেগাপঃ পুর্বন্ধ বংসপ ইতি। সদৈব তাদুশগোসেবারাঃ গোপজাভিস্বধ্র্মত্বন পাছকাদ্যগ্রহণাং। সাক্ষাহ্নিতঃ শ্রীপাদাজচিক্রং পুণ্যং পুণ্যন্থনকং স্থলরং বা। অভীবেতি পূর্বাপেক্ষ্যা সর্বতঃ প্রস্থাণেন। ১॥

এবং সামান্যেন ছয়েরপি গোচারণাদিক মুদ্দিশ্যাধুনা বিশেষতো বিচিত্রমধুরক্রীড়াং বক্ষ্যন্ত্র চ প্রীভগবতঃ প্রাধানাং দিয়াভয়ন্ প্রথমদিনক্রীড়ামন্যবানির্দেশার্থমাহ তদিতাদিনা। তৎ প্রীর্ন্দাবনাথাং কিষা ক্রপ্রসিদ্ধননির্বাচনীয়ং মাহাত্ম্যং বা। তছক্ প্রয়োগন্ধ প্রেমভরেণ ক্ষরণবিশেষাং। মাধবো লক্ষ্মীকান্ত ইতি ব্ন্দাবনস্য সর্ব্যাশভারণাভিপ্রায়েণ। শ্লেষেণ বসন্ত ইব তছনাসকঃ। উচৈ রীরন্ধ বাদয়ন্। তচ্চ তদন্তঃপ্রবেশেন ক্ষম্যেব হর্ষোদ্যাং প্রীর্ন্দাবনবর্ত্তিনাং নিজপ্রবেশজাপনেন প্রহর্ষেণাংক্ষ্যান্ত। ব্যা বাদ্যা গৃণভিরিতি বিহারারভ্যে তেষাং তংপ্রেমময়হর্ষভরোদয়ঃ ক্তিতঃ। আবিশং আবিবেশ প্রীত্যান্তঃ বিবেশ প্লেষেণ পশুপক্ষিক্ষাদয়ত্বতাঃ সর্ব্বে প্রীকৃষ্ণাবিষ্টা বভূব্রিত্যর্থঃ। কুম্মানামাকর ইতি স্বভাবত এব সদা সর্বপ্রস্মান্ত্র। অনেন তথা পশ্বামিতি স্বত্রব পশ্নাং ক্রপেদিয়া তৎপালনপ্রয়াসাভাবেন চ তথা পোণৈর্বত ইতি বলান্বিত ইত্যেভাভ্যাং ক্রপ্রমান্ত্রী দর্শিতা অভএব বিহর্ত্ কাম ইত্যেবাক্তং॥ ২॥

শ্ৰীবিশ্বনাপচক্রবর্ত্তী।

ৰাস্থদেবো হভূদেগাপঃ পূৰ্বস্ত বংসপ ইতি। পদৈঃ পদচিকৈ ধর্বজাদিভিঃ। পুণ্যং চাক্স অতীবেতি পূৰ্বমূনবিংশতি চিহ্নানাং চন্নণন্নো-ল'বুৰাজেখাণামতিস্ক্সন্থেন স্পন্ধীভাবাৰ্থ ॥ > ॥

তৰনং পশব্যং পশুভোগ হিতং আসমস্তাদবিশৎ। মাধ্ব ইতি প্লেবেণ বসন্ত ইব তত্ত্বাসক: ॥ ২ ॥

পশুপালন কার্য্যে সম্মত হইলেন অতএব স্থাদিগের সহিত গাভীচারণ করত ইতন্ততঃ প্রস্পৃণ দ্বারা বুন্দাবনকে অতিশয় পবিত্র করিতে আরম্ভ করিলেন ॥ ১ ॥

তিনি বলদেবের সহিত অন্বিত হইয়া বিহার কামনায় বেণুধ্বনি করিতে করিতে স্থীয় যশোগায়ক গোপগণে পরিয়ত হইলেন এবং গাভীগণকে অথে করিয়া পশুগণের হিতকর কুসুমাকর বনমধ্যে প্রেশ করিলেন॥ ২॥ তশ্মঞ্ঘোষালিয়গৰিজাকুলং মহশ্মনঃস্বচ্চপয়ঃসরস্বতা। বাতেন জুফং শতপত্রগন্ধিনা নিরীক্ষা রস্তং ভগবান্ মনো দধে॥ ৩॥ স তত্র তত্রারুণপল্লবশ্রিয়া ফল্প্রসূনোক্লভরেণ পাদয়োঃ।

अधितचामी।

তথ্বনং নিরীক্য রস্তং মনো দধে। কথস্তু হা মঞ্ঘোষা যে অলিমৃগছিলা: ভ্রমরমৃগপক্ষিণতৈরাকুলং ব্যাপ্তং। মহন্মন: ছচ্চ্পয়: সব-স্বতা মহতাং মনসা তুল্যং স্বচ্ছং প্রো বন্ধিন্ তুং সর আশ্রয়ে দেনতি বস্য তেন বাতেনেতি শৈত্যমূক্তং। শতপত্রগদ্ধিনেতি পরিমল-স্বেন জুঠং বনমিতি মাল্যং স্চিতং॥ ৩॥

বৈষ্ণবতোষণী।

অন্যামপি তাং বর্ণয়ন্ শ্রীভগবতো বিহারারস্তমাহ তদিতি। মহাস্তো ভগবস্তকাঃ তন্মন:প্রথ্যম্বেনাত্যস্তম্বদ্ধং শ্রীভগবিহারে যোগ্যথং চোক্তং কিন্তুত্র সমাসপ্রবিষ্টঃ সরম্বদ্ধকো বইবচনাস্ত এব জ্যেঃ। তক্ষলকর্ণিকাব্যাক্তন মহন্মনোর্জ্য এবেতৃত্যপ্রপ্রকা চ ধ্বানতা। নিরীক্ষ্য সর্বতঃ প্রসন্মদৃষ্টিপ্রসারণেনামুমুদ্য মনো দধে প্রীত্যা মনোহভিনিবিষ্টং চক্রে। ভগবানপীতি তন্মোহনম্বাতিশয়ো দ্যোতিতঃ॥ ৩॥

ত্র তর স্থানে স্থানে স্ববির্বেত্যর্থ:। ক্রী: সম্পৎ। ভরো ভার:। অরুণেতি তৈ ব্যাখ্যাতং। যথা। তেন চ হেতুনা করণেন বা স্পৃশচ্ছিখান্ এবং শ্রৈট্যেন বনানাং পতীন্ মহার্ক্ষামিত্যুক্তং। যদাপি বানস্পত্যা ফলৈ: পুপাইন্তরপুশাধনস্পতিরিত্যমরোক্ত্যা বনস্পতিশব্দেন র্ক্ষসামান্যং নোচ্যতে তথাপি নিক্ষস্যবায়ন্যায়াভদ্ধেন্দন বানস্পত্যা অপি গৃহুত্তে। অর্মন্তি নর্মদ্যোত্তকং কুর্ক্ষি। গোপ্য ইবেত্যাদৌ তংগ্রাকট্যাং। তত্তনিভিচাঞ্চল্যক্রীড়োপোষ্বলক্ষেন এবমিত্যাদিনা বক্ষ্যমাণান্ত। তত্তিকাম্মেন স্বয়হত্যা সহ স্ক্রিক্রীড়াপরন্থেন বাল্যস্থ্যংশপ্রাবল্যাং তথৈবাত্রাল্য তদানীং গৌণ্ডমাল্যাহ অগ্রন্ধমিবতি। অঞ্জমপি অ্যান্নবেতি চতথৈবাভিপ্রায়:। দর্শবিষ্যতে চ তত্তাব্দয়ে ক্স্যাপি কদাচিছ্তুত্তং কচিং ক্রীড়াপরিপ্রান্ত ইত্যাদিভ্যাং অতোহগ্রেজভাবাংশস্ভাবেন নর্ম চেদং স্ততিরীত্যৈব কৃতং। নম্বেবঞ্চে শ্রেষ্ঠগাণগ্রন্থেনে কথং ন তথ্যে নর্ম্ম নির্মিতং ত্রাছ আদি গুণাদিনা প্রেষ্ঠশ্চাসী পুর্ব্ব

🕮 বিশ্বমাপচক্রবর্ত্তী।

তংগঞ্জেরাইলাদকং বনং নিরীক্ষা মঞ্ঘোষা অলয়ো মৃগা ছিজা: পক্ষিণশ্চ তৈ ব্যাপ্তমিতি বিবিধেন সৌহর্যোণ শ্রোক্রস্য বাতেন জুইং সেবিতমিতি ব্যঞ্জিতেন মান্দ্যেন মহতাং মনঃপ্রথাং মনঃসদৃশং শীতলমধুরস্বদ্ধং পয়ো যত্র তৎ সর আশ্রম্ভেনাতি যস্য তেনেতি শৈত্যেন চ। ত্রিজিরস্য মাধুর্যোণ রসনায়াঃ শতপত্রগদ্ধিনেতি সৌরভ্যেণ নাসায়াঃ শতপত্রস্য সৌন্ধ্যোণ রসনায়াঃ শতপত্রগদ্ধিনেতি সৌরভ্যেণ নাসায়াঃ শতপত্রস্য সৌন্ধ্যাণ নেত্রস্যাপ্যাহলাক্ষ্যা এ ॥

জরণপদ্ধবানাং জ্রীঃ শো । তয়া সহ অধাম্থত্বন পাদম্পর্ণনাৎ ফলানাং প্রস্নানাঞ্চের্ডরেণ পাদয়েঃ স্পৃষ্তঃ বিথা বেষাং তান্ বনস্পতীন্ বৃক্ষান্ বিলোক্য স্ময়ন্ স্ময়নান ইতি বিবিক্ষিত্স্য বনস্পতীনামুৎকর্ষ্য্য পর্যবসানং স্বোৎকর্ষ এব স্যাং। স্বোৎকর্ষ্য্য চ স্বয়ম্ক্রানোচিত্যাৎ। মুদেতি আনন্দর্জনিতেন গান্ধীর্যাভাবেনোক্ত্যা বিনা ছাতুমশক্তেশ্চ বামে সথ্যভাবোধেন স্মিতেনানেন স্মাহেণ্ডকর্ষারোপ স্তবৈত্ব ব্যক্তিতঃ। অতএবাগ্রিমলোকে আদিপুরুষেতি স্বনামাপি তস্য সম্বোধনাই করিষ্যতে। ইবেতি মদ্ভিপ্রায়মিমং মদগ্রকো মা বুধ্যতামিতি স্মিতনিক্রায়ত্ স্বয়্রিত্যথিঃ। তথাহি। প্রীবৃক্ষাবনতহাসিমাধুর্যোহ্বনচেত্সা। তৎস্তবে হরিণারকে নিজোং-

হে রাজন্! বন্দাবন অতিশয় মনোভাবন, স্বাধ্র রবকারি ভ্রমর এবং মৃগ ও পক্ষিগণে সর্বাদা পরিব্যাপ্ত, তথায় মহজ্জনগণের মানদের ন্যায় স্থনির্মাল জলে পরিপূর্ণ সরোবর থাকাতে তাহা আশ্রয় করিয়া পবন সর্বাদা গমনাগমন করে,আর শতপত্র সকলের গঙ্গে সেই বায়ুর স্থলক সৌগদ্ধা জন্মিয়া থাকে॥ ৩॥

সে যাহা হউক, আদিপুরুষ ভগবান্ ঐ বনে জ্ঞান করিতেই দেখিতে পাইলেন স্থানেই বনস্পতি

স্পৃশচ্ছিখান্ বীক্ষ্য বনস্পতীন্মুদ। স্ময়ন্নিবাহাগ্রজমাদিপ্রুষঃ ॥ ৪ ॥ অহো অমী দেববরামরার্চিতং পাদাক্ষ্মং তে স্কমনংফলার্হণং। নমস্ত্রগাদায়শিখাভিরাত্মনস্তমোহপহত্যৈ তরুজন্ম যৎ কৃতঃ ॥ ৫ ॥

वीधत्रवामी।

অকণপলবশ্রিয়া সহ স্পুশস্তাঃ শিপাঃ শাথাগ্রাণি যেষাং তান্॥ ৪॥

অংহা দেববর অমী রুক্ষা: তে পাদাধুলং নমস্কি শিথাভি: স্থমন:ফলাহ পমাদার ত্রুজন্ম যেন ক্কং তস্য তমসং পাপস্য অপহতৈয় নাশায়। অথবা যেন হবা ঈববেণ সর্বোপকারকং তর্জন্ম ক্তং তং ছাং নমস্কি এবং দ্লাঘ্যেছপি জন্মনি যদজ্ঞানক্রপং তমোহস্তি তস্যাপহতৈয়। ৫॥

देवश्ववरकावनी।

শ্চেতি এবং কৰিনা জু স্বিনোদং ত্তন্ত্ৰপ্ৰস্থীতমন্ত্ৰী স্বতির্পি ত্ত্মিশ্লেব প্ৰ্যব্দান্তি। এতদ্পি কর্ত্ব্যেষু র্মণ্রিশেষেষু চিত্তোলাসেন প্রথম্মেকং ক্রীড়ন্মেব রক্ত মনো দুধে ইত্যুক্তভাৎ। এবং সন্প্রচন্মপি ভগ্রন্তিশ্বিভ্যাৎ স্ক্রং ষ্থাবদেব জ্যেষ্ং ॥৪॥

অহো ইতি প্রহর্ষে আশ্চর্য্যে বা। জনী ইনে স্থাবরযোনরোহশি হে দেববর সর্জনেবোত্তম স্থানসং পূল্ঞ ফলঞ্চ তান্বার্হণং পূজোপ করণমাথানং শিথাভিরপ্রভাগে প্লেবেণ শিরোভিরপাদার উপাদেরত্বেন গৃহীয়া তে তব পাদাযুক্তং নদন্তি নদস্করিতঃ শিথাভিরেব তব পাদাযুক্ত সমর্পরিতীতার্থঃ। কীদৃশং । পাদাযুক্ত সমর্পরিতীতার্থঃ। কীদৃশং পাদাযুক্তং। জনরা ব্রহ্মাদিনেরা মুক্তাশ্চ তৈরপ্যক্তিতং। নহ কথং স্থাবরাণানীদৃশং জ্ঞানং ত্রাহ্ তম ইতি। যেবাং ঈদৃশো ভাবতেরামক্সানং নাতি এব প্রভাত তমোহপ্রতিত্য পঞ্চতাং শৃণ্তাঞ্চ তমোনাশার বং বৈঃ প্রাকৃশাবনসম্বন্ধি তক্ষজন কতং অস্থাকতং। যবা। তমোহপহতৈ পশুস্কাদিবং তংগকমাদক্তি ব্যাহ্মানার নমন্তি। কে তেথমী বং যৈ ক্ষেজন কতং প্রাপ্তমিতার্থঃ। এবং নিতা সিদ্ধান্ প্রতি বিবন্ধিতং সাধনসিদ্ধান্ প্রতি তু আয়ানঃ তমোহপ্রতিত তবাপ্রাপ্তি ছংখনাশার বদিত্যাদি বথা বন্ধণা প্রাথিতিমিতি ভাবঃ। এবং সর্ক্ত্র প্রচারেণ মুহঃ সর্কেবামেন্য স্থেং কার্যানিতি হৈরবিহারেছেরা প্রোক্তং। ৫॥

ক্রমসম্বর্ড:।

স্বয়নিতি নর্ম্মোতকং কুর্বস্থি। গোপ্য ইবেন্ড্যাদৌ তৎপ্রাকট্যাৎ তত্তদিতি চাপল্যক্রীড়োপোদলকত্বেন এবমিত্যাদিনা বক্ষ্যনাল্বাচ্চ তচ্চ সবয়স্কতয়া সহ সর্বদা ক্রীড়া- পরত্বেনকাস্মোন সথ্যাংশভাবাৎ তত্তৈবাহ অগ্রন্ধনিবতি। অতন্তত্তত্তাবেন নর্ম চেদং স্ত্রিক্রিক্তিব্যব ক্রতং এবং সন্মাব্চনম্পি ভাগবতস্বাৎ সর্বাং বথাবদেব জেন্নং ॥ ১ । ২ । ৩ ৪ ॥

অহো ইতি॥ ৫॥

ঞীবিখনাথচক্রবর্তী।

কর্ষাবসায়িনং। তমালোচ্য ততো রামমপদিশ্য ব্যধায়ি স:। অতোহত্র নৈব তাংপর্য্যং রামোৎকর্ষান্ত্রগনে। স্থ্যভাবাত্ত্র্ রামে নর্মনেদমূদীরিতং ইতি ভাগবতামৃতীয়া সার্ক্ষারিকা। আদিপুক্ষ ইতি তদমূল্যেহপি হুরং ভগবন্ধাত্তদাদি:॥৪॥

বীয় পুশক্লাদিভি: অপ্রভো: প্রাক্ষণ্য চরণাবর্চরাম ইতি মনোত্লাপং যুদ্ধাক্ষন্থ জ্বানাগীতি অবিজ্ঞাং প্রমভকান্ প্রার্নার বনীয়বৃন্দান্ কটাকেণ জ্ঞাপয়য়প্রজমাহ অহো ইতি। শিথাভি: অঅশিরোভিজপায়ন: তত্তপাদায় পাদার্জ্য নমস্তীতি ভক্তা শিরোভিত্রিব চরণযোত ভদপ্রস্তীত্যথ:। কিম্থা: আজুনস্তমসোহপরাধ্যাপহতৈত্য যেনাপরাধেন ক্রডমুৎপাদিতং ত্কজন্ম। হস্তাত্মাভিরপরাধ্য এব কশ্চিৎ ক্রতঃ বং ক্রফারিধিগমনাস্মর্থমন্ত্রাক্ষ ভক্তমন্ত্রি বিধালা ক্রতমিতি ভেরাম্থ্রাগোখং বচনমেবাল্বোচভগ্রান্ বস্তুতন্ত ব্লাদিভিরপি প্রার্থমান্যাত্ত্রজন্মনাপরাধ্যক্লমিভি জ্ঞেরং॥ ৫॥

সকলের শিথাএভাগ ফলপুজ্পের গুরুতর্জারে অবনত হইয়া অরুণবর্ণ পল্লবের কান্তি সহিত ত্বদীয়চরণ স্পর্শ ক্রিতেছে অতএব বিশ্বয়াদ্বিত হ্ইয়া হুর্বে বলদেবকে সম্বোধিয়া বলিলেন ॥ ৪॥

হে দেববর ! এই সকল রক্ষ শিখাগ্রভাগ দারা পুলা ফল উপহার লইয়া ভোমার পাদপদ্মে প্রণাম করিতেছে ইহাদের মানস এই যে, যে পাপে ভাগনাদের তক্ষজন্ম হইয়াছে দেই পাপ শান্তি পাইতে পারে॥ ৫॥

এতেহলিনস্তব যশোহথিললোকতীর্থং গায়ন্ত আদিপুরুষামুপথং ভজন্তে।
প্রায়ো অমী মুনিগণা ভবদীয়নুখ্যা গৃঢ়ং বনেহপি ন জহত্যনঘাত্মদৈবং॥ ৬॥
নৃত্যন্ত্যমী শিখিন ঈড্য মুদা হরিণ্যঃ কুর্বন্তি গোপ্য ইব তে প্রিয়মীক্ষণেন।
সূকৈশ্চ কোকিলগণা গৃহমাগতায় ধন্যা বনৌক্স ইয়ান্ হি সভাং নিস্গঃ॥ ৭॥

श्रीधत्रश्रामी।

্হে অন্য বনে গৃ্চ্মণি থাং ন ভাজ্জি গায় মন্ত্ৰাবেশেন নিগু্চ্ স্তি মুন্দ্রোহণি অলিবেশেন নিগ্ড়া আং ভজ্ঞীভার্থ: ॥ ৬॥ ইয়ান্ হি সভাং নিদর্গ ইতি যদক্তি স্বামন্ ভদণ্ হ্মাগভায় মহতে সমর্পায়ন্তীতি ॥ ৭ ॥

বৈষ্ণবতোষণী।

এত ইতি শ্রীনদঙ্গুল্যা দশ্রতি। অবিশেষণাথিললোকানাং তীর্থং সংসারমলপাবনং ছম্ভক্তমাহাজ্মাল্যাতক গুলুরূপং বা অফুপ্রথং পথি পথি ভল্লেষ্ট্রেইরে থাং। অফুপ্রদিতি পাঠেইপি তথৈ। তচ্চ যুক্তমেবেত্যাই হে আদিপুরুষেতি। সদা শ্বতঃ সর্বেষাং দংক্রেইরের থাং। অফুপ্রদিতি তাবং। অফ্রান্থনিত ইব প্রায় ইতি ভবদীয়া ভবতো নানা রূপজ্ঞোপাসকা যে তেল্পপূর্ণ্য মনগ্রজরণ্য ভবত উপান্তর্মান্থ্যা বে মুন্নাঃ। প্রণ্যন ননিন্চিতৈত জপ্রস্তুল্পনে তত এবান্যর মৌনশীলত্বেন চান্তা ইত্যর্থঃ। তেবাং গণাং অতএব শেষেণ মুন্যোইপি অফুগা বেষাং তে মুনীশ্বা ইত্যর্থঃ। শ্রীরন্ধণাপি হল্ল ভল্ল লাভাং তে বনে শ্রীর্ল্পবিনে গৃত্নক্রমেপাপাসকৈরজ্ঞাতমপি অবৈর্ক্তিই জ্রীড়াবিশেষায় নিলীব স্থিতমপি ন জহতি তরে হেতুরাল্মকৈরমিতি ভবদীরম্থ্যা ইতি চ অনয়োক্ত মিথো হেতুলং। তে অন্যন্ত ন বিদ্যুতে ভক্তানাং অবং যন্ত্রিন্ সং হে অপ্রাধার্যাহিন্ প্রয়কারণিকেতি যাবং। অন্যাল্যকৈনিমিত্যকং বা পদং। তদেব মেষাম্পীইসিরিঃ কার্য্যেতি ভাবঃ। প্রায় ইতি বিতর্কে শ্রীনার্দাদিব্দ্যশোগানপ্রম্বহন্তত্বদেষণামুগ্তাদিসাম্যাং। ৬ ॥

হে ঈভ্য স্বতিষোগ্য ইতি শ্বিষা বিমুখীভবন্তমিবাগ্রজনভিমুখীকরোতি। মুদেত্যস্থ সর্কৈরপা**ম্বল:। ঈক্ষণেন প্রি**য়ং প্রীতিং ভাবং তে ডুভাং জনমন্তি। ক্ষচার্থানাং প্রীয়মাণ ইতি সম্প্রদানত্তং গোপ্য ইবেতি বীক্ষণস্থ স্ক্ষুত্রা প্রোমা চ শামাৎ দৈর্ঘ্য চাঞ্চল্য

क्रममन्गर्छः।

ভবদীয়া ভবতো নানার্লপ্রোণাসকা যে তেল্পি পূর্ণন্য মদগ্রন্ত্রক্ষপদ্য ভবত উপাদক্ষাৎ মুখ্যা যে মুনন্ত্রেষাং গণা যনে শ্রীকৃন্দাবনে গুড়মনার্সপোপাদকৈরবজ্ঞাতমিতি ন জহাতি হে অন্য অপরাধাগ্রাহিন্॥ ৬॥ १॥

ত্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

তত্রত্যান্ জন্মান্ ভৌতি শাভাগে। এতে হলিনো ভ্রমরাঃ অন্পর্ণথং প্রদারভান্সারিবাং। বনে কচিজহদ্যলীলার্থং পূচং সহ চরাল্যগম্যনপি থাং ন কহতি ন ত্যন্তি । তে অন্থেতি অত গমনেপ্যেশাং প্রদং বং ন গৃহ্গাসি। তথ্যাদেতে ভ্রমীমন্থা। এব স্নিগণা রহ্ম্যলীলাম্মনশীলা ভ্রমরী ভ্রত্তি তোন ভ্রমরা মদ্ভিরহ্স্য কুল্লম্পি প্রবিশ্যাশ্বং সৌরভাম্যাদ্যতমাস্কুচতেতি তান্ প্রতি প্রসাদো ধ্রনিতঃ॥ ৬॥

ভে গৃহমাগতায় ঘাং গৃহৰাগতং সন্মানরিছুং স্থকৈঃ প্রিয়ং কুর্বান্তীতি পূর্বেশিবাধ্যঃ। ইয়ান্ সভাং নিস্থ ইতি নৃত্য সহর্ষাব-লোকনপ্রিরবচনৈগৃহাগতস্য সাধো সন্মানননিতি সভাং স্বাভাবিকো ধন্ম ইত্যর্থঃ॥ ৭ ॥

হে অনধ ! হে আদিপুরুষ ! এই সকল ভ্রমর অনীয় অধিল লোকপাবন যশ গান করত তোমার পথের অনুগামী হইতেছে। আমার অনুমান হয় ইহার। তোমার সেই সকল মুখ্য মুনি, তুমি ইহাদের অভীষ্টদেব, একারণ বনে গৃড় হইলেও তোমাকে ত্যাগ করিতেছে না অর্থাৎ তুমি মনুষ্যবেশে নিগ্ছ হওয়াতে, মুনিরাও মধুকর বেশে তোমার উপাসনা করিতেছেন ॥ ৬ ॥

অপিচ, হে ইভ্য (স্তবযোগ্য) ! এই সকল ময়ুর তোমাকে অবলোকন করিয়া সহর্পে নৃত্য করিতেছে, আর গোপীগণের আয় এই সমস্ত হরিণী দৃষ্টি দ্বারা এবং এই সকল কোকিল অমধুর রব দারা তোমার প্রিয় করিতেছে। প্রভো! সাধুদিগের স্বভাব এই আপনাদের ফাহা কিছু থাকে গৃহাগড় মহাজনকে তাহা সমুদায় সমর্পণ করে॥ ৭॥

ধত্যেয়নদ্য ধরণী তৃণবীরুণ স্বৎপাদস্পৃশো ক্রমলতাঃ করজাভিমৃষ্টাঃ।
নদ্যোহদ্রয়ঃ থগমুগাঃ সদয়াবলোকৈ র্গোপ্যোহস্তরেণ ভুজয়োরপি মৎস্পৃহা ঞীঃ॥৮॥

द्यीभव्यामी।

তৃণবিরুদশ্চ তব পাদৌ **স্পান্তীতি তথা করদাভিষ্টা: নথৈ: স্পৃটা: সদর্ব্যরবলোকনৈ: শ্রীরপি ষদ্রৈ স্পৃহণ্ঠি কেবলং তেন** ভূজযোবস্থবেণ বক্ষসা গোপ্যো ধতা ইতি ॥ ৮॥

বৈষ্ণবভোষণী।

সপ্রোমহাদিনা তৎশারণাচ্চ অতএব শ্রীরামপ্রোয়স্থাইপাস্থা জ্ঞেয়াঃ। ইশ্বং পৌগগুষারত্য তাস্থ তহ্য ভাবোদয়ঃ স্থচিতঃ প্রমতেজস্বি-যেন পৌগগুএব কৈশোরাংশাবির্ভাবাং তাদামপি তাদৃশ্বাং। স্থকৈঃ শ্রোত্রস্থদশব্দঃ তত্তৎক্বতঃ গৃহমাগতায় অভ্যাগভায়েত্যর্থঃ। তচ্চ বাক্ চতুর্গী স্নৃতেতি স্থায়েন যুক্তমেবেত্যাহ ইয়ানিতি॥ ৭॥

এবং তৎকর্ত্কদেবয়া তান্ স্বয়। প্রীরামকর্ত্কপ্রসাদেনাপি ধরণাদিসহিতানেব স্তৌতি ধল্লেছি। ইয়ুমাদিতো বর্ত্তমানা বিচি তাবতারস্পর্নাভাগাবতী বিশেষতঃ প্রীরাহশেষপ্রসাদাতিশয়লকমাহায়্মাপি অন্য অনবভার এব ধলা পরস্প্রশংসনীয়াভূং। আতাং তাবদলা ধলাবং তৎসন্তবানাং মধ্যে লঘিটা ইমাঃ প্রীর্ন্ধাবনবর্ত্তিল ন্তৃণবীক্ষধঃ তৃণলতাদ্র্কাদ্যা অপি ধলাঃ যতন্ত্বং পাদস্পাল এবমুন্তরন্ত চ ধলেয়মিতি বচনলিক্ষব্যতায়েনাম্বর্ত্তাং। অদিতি ছান্দ্রেসান্ত্বাল্ক্। অতো যথাস্থানমাকর্ষণীয়ং। যথা ক্রমলভাগত কর্ত্তিরন্ত্ব চ ধলেয়মিতি বচনলিক্ষব্যতায়েনাম্বর্ত্তাং। ওদিতি ছান্দ্রেসাল্ক্। অতো যথাস্থানমাকর্ষণীয়ং। যথা ক্রমলভাগত কর্তিরন্ত্ব লিখানা বিলিছেদনায় বা স্পৃষ্টাঃ সন্তঃ। মালত্যোইদেশি বঃ কচিচিন্ত্যাদিবং। কর্ত্তা নথা ইত্যার্থে তু তৈরভিমর্শো নাম নাগরতা স্ক্রক: কিশলয়াদী লেখে জ্ঞেয়ং। সচ প্রীরোগীনামুন্দীপনার্থঃ পশ্লতমালতা ইত্যাদি বং। তথা এতা নদ্য এতেহন্তরাহপি স্বংপাদস্পৃশঃ সন্তঃ ইতি গম্যং যোজ্যং বা। তেরু তত্তৈব প্রাধালাং লাম্বর্ত্তাদেশী গৃহত্তি পাদ্যুগলমিতি হন্তায়মন্ত্রিব্তাদেশী যন্ত্রামক্রক্তরণস্পর্শপ্রমাদ ইতি হক্ষ্যমাণাক্ত। অথ গোপীপ্র্যায়াং শ্লামন্ত্র্বিত্যাদেশী স্ব্রামক্রক্তরণস্পর্শপ্রমাদ ইতি হক্ষ্যমাণাক্ত। অথ গোপীপ্র্যায়াং শ্লামন্ত্র

ক্রমসন্দর্ভ:।

গোপ্য ইবেতি নেঅগুণেন তৎশ্বরণাৎ। স্বথ গোপীপর্যারাং শ্যামশারিবাং তহি কথঞ্চিদকোলগ্নাং দর্শয়ন্ শ্লেবেণ গোপ্য ইতি নেঅগুণেন তৎশ্বরণাং। রামপ্রিয়াভিঃ কাচিদ্রামস্য ভাবি বিশাসস্চনেরং॥৮॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

এবং তত্তৎকর্ত্কদেবয়া তান্ স্থা প্রীরামকর্ত্কপ্রসাদেনাপি তানেবায়্টকেরন্যৈন্চ সহিতান্ স্তৌতি। ধন্যেরং ধরণী অদ্যেতার বারগত স্বৃলকালমালঘ্যোক্তিঃ ক্তো ধন্যেরমিতি চেৎ ধরণীস্থানাং তৃণাদীনামপি অংসম্পর্কাদের ইত্যাহ তৃণানিচ বীক্ষণত তাস্ত্রং পাদাভাং স্পৃক্ স্পর্শো বাসাং তথাভ্তা বতঃ ক্রমা লতাশ্চ করকোঃ পূস্পত্রোটনার্থং নবৈরভিম্নীঃ স্পৃষ্ঠা যতঃ নদ্যাদ্য়ণ্ড সক্তপাবলোকৈঃ। বহা। দন্ অয়ঃ ভাতাবহো বিধির্যেভাস্তথাভূতৈর বলোকৈঃ সহিতা যতঃ। কিঞ্চিৎস্থগন্ধশীতলাং গোপীপ্র্যায়াং শারিবাং বল্লীং বক্ষিদি কৌতুকেন প্রিয়মাণাং বিলোক্যাহ গোপ্যঃ শ্যামবল্ল্যোহপি ভূজরোরস্তরং বক্ষন্তেন সহিতা যতঃ প্রীঃ শোভাপি যৌদ্য স্বৃহ্যতি সা। যা বল্লী শোভামপি শোভ্যতীত্যত এব বক্ষদি দ্বা প্রিয়ত ইতি ভাবঃ। পক্ষে। গোপ্যো ব্রজ্বস্বর্যঃ যৎ স্পৃহা যবিষ ভূজন্তরা লক্ষীরপি স্বৃহ্য়তি। তথাহি ভাগবতাম্তীয়াঃ কারিকাঃ। সদা বক্ষংহলস্থাপি বৈক্ঠেশিতুরিনিরা। ক্ষোরঃম্পৃহ্রাস্যৈর রূপং বির্ণ্তেহধিকং। পৌনানিকম্পাথানমত্র সংক্ষিপ্য লিথাতে। প্রীঃ প্রেক্য ক্ষমেদান্দ্র্যাং তত্ত লুদ্ধা ততন্তপঃ। কুর্বতীং প্রাহিতা কারণং। বিজিহীর্যে দ্বা গোঠে গোপীরপেতি সা ব্রবীং। তৎছ্র ভিমিতি প্রোক্তা লক্ষীন্তং পুনরব্রীং। স্বর্ণবেথব তেনাথ বস্তমিছামি বক্ষদি। এবমন্বিতি সা তম্য তন্তপা বক্ষদি হিতেতি॥ ৮॥

সে বাহা হউক, অদ্য এই রন্দাবন ভূমি এবং অত্তন্ত ত্ণলতাগণ ধন্য হইল, যে হেতু তোমার পাদ্দর স্পর্শ করিতেছে। এখানে তোমার নৃথরে স্পৃষ্ট হওয়াতে অত্তত্য এই সকল ব্রহ্ণলতাকেও ধন্য বলিয়া প্রশংসা করি। অপর এখানকার নদ নদী পর্বতি তথা মৃগ ও পক্ষিগণও ধন্য, যে হেতু স্থায় সদয় অবলোকন প্রাপ্ত হইতেছে। আর এই গোপীগণ ধন্য, কারণ লক্ষ্যীও এক সময়ে যাঁহার নিমিত স্পৃহান্থিত হন, ইহারা তোমার সেই ভুজন্বয়ের মধ্যভাগ (বক্ষঃস্থল) অনায়াসে লাভ করিতেছে ॥৮

এবং বৃদ্দাবনং শ্রীমৎ প্রীতঃ প্রীতমনাঃ পশূন্। বেমে সঞ্চারয়ন্ধক্রেঃ সরিদ্রোধঃস্থ সামুগঃ॥ ৯ কচিদগায়তি গায়ৎস্থ মদান্ধালিম্মুব্রতৈঃ। উপগীয়মানচরিতঃ পথি সন্ধর্যান্বিতঃ। অমুজন্নতি জন্নতঃ কলবাক্যৈঃ শুকং কচিৎ। কচিৎ সবস্তু কৃত্ততমমুক্ততি কোকিলং॥ ১০॥

এধরস্বামী

এবং শ্রীমদ্দাবনং প্রতি প্রীতঃ দন্ অদেঃ সমীপবর্তিদরিতটের পশুন্ সঞ্চাররন্ সাছগং প্রীক্ষনা রেমে ॥ ৯॥ তামের রতিমাহ দশভিঃ কচিদিত্যাদিভিঃ॥ > ০॥

देवकवरकावनी।

শারিবাং তহি কথঞ্চিব্রকো লগাং দর্শয়ন্ প্রেবেণাহ গোণ্য ইতি। মংপিত্ব্যাদ্বতীর্ণন্ত প্নমংপিতৃ ধর্মতাং প্রাপ্তত গোণকভা পরিণয়নমেব ভবিষাতীতি স্চয়য়য় ইতি ভাবঃ। তদেবং ভাবী যত্তন্ত প্রিয়াত্বং প্রাক্ষমানীভিঃ কাভিশ্চিদেগাণীভিঃ সহ বিহাবতভ স্চনা ক্রতা যংস্থাহিত প্রীবৈকুঠনাথবক্ষা স্থিতা লক্ষ্মীরপি যংস্থান কেবলং স্থামান্তং কিন্তু বক্ষাতে চাল্লয়াগপত্নীভিঃ। যবাজয়া প্রিয়ালনাচররপ ইতি। এবমন্তন্ত গোকুলে তদপ্রাপ্তিঃ শ্রীগোপীনামিব তদনভাবাভাবাৎ তাস্ত তদধিকারিণীত্বস্পত্বাচ্চেতি ভাবঃ। অন্তর্মান্ত বিশ্বেষ্ ত্বাধিকারিণীত্বস্পত্বাচ্চেতি ভাবঃ। অনুসর্মের্যাং সংব্রিষ্ ব্যাধিকারিণীত্বস্পত্বাচ্চিতি ভাবঃ। অনুসর্মের্যাং সংব্রিষ্ ব্যাধিকারিণীত্বস্পত্বাচ্চিতি ভাবঃ।

জবং সনন্দ্রবর্ণনাদিপ্রকারেণ শ্রীবৃন্ধাবনং ব্যাপ্য প্রীতঃ সন্ কালাগ্রভাবদেশানামিত্যাদিনা কর্মবং। অক্রেঃ শ্রীগোর্জনভ প্রীতম্প্রিত্যালয় সামাভবিশেষাভ্যাং ভেদঃ॥ ১ ॥

প্রতিমনদোরতিং দর্শরন্ বর্ত্তমানপ্রয়োগেণ সাধারণদিনগতামেবাই ক্চিদিত্যাদিনা। পূর্বং কেচিছেণূন্ বাদয়ন্ত ইত্যাদিনা। বালকানামেব প্রাধান্তেন ততংক্রীড়োকা ইদানীন্ত প্রীতমনন্তেন সাকাৎ প্রীক্তমন্তেবিত বিলেষঃ ক্ষচিৎ কমিংশিচৎ পণি। প্রথাতি পাঠে কমিংশিচং প্রদেশে কদাচিদিতি বা এবমগ্রেহপি। মদেন প্রীত্তমাবনপুশরসপানকেন প্রীতপ্রবংসারিধ্য সৌভাগ্যজেন বা অন্দের্ মহামত্তেব্ তাণ্শেষপীতি গানমাধুর্গ্যমভিপ্রেতং সহর্ষণশক্ষঃ প্রীভগবতা সহ তত্তাপ্থক্তরা গানাভিপ্রায়েন। অন্তর্ত তথেক প্রীতিপরৈ র্গোপেঃ। অত্ত ভ্রমরাণাং অ্কাতীয়ত অরম্বাগত গানং প্রীভাগবতত্ত্বসন্সারিশ্বরস্য তত্চিতরাগত চ। অন্তর্তানার ত্রো গাঁতবক্তক্রেত্ত চেতি মিথোন্মিলনং জ্বোং॥

কলবাকৈ।রিতি শুকাদপ্যত্তমজল্পনং বোধয়তি এবং বল্থিতিচ॥ ১•॥

ক্রেমসন্দর্ভঃ

এবং সন্মবর্ণনাদিপ্রকারেণ বৃন্দাবনং ব্যাপ্য প্রীতঃ সন্॥ ৯॥ ১০॥

बीविधनाथठक वर्डी।

এবমিতি প্রতিং। যথা। ইথমএজং পরিতোষ্য গোপ্যাহন্তরেণ ভূজয়োরিতি নিজোক্তাবোদীপ্তকন্দপ্তৎসঙ্গ এব গাং নথীংশ্চ
নিযুল্য ভোং শ্রীমদার্য ক্ষণমন্মত্র স্থবলেন সার্দ্ধং গোবর্দ্ধনকন্দরারোধনি বিশ্রম্যাগন্তান্দ্র সমত্র কালিন্দীরোধঃ তাবিহিংরভূক্তেণ ততো বিযুল্য পৌগতেহিশি কৈশোরাবির্ভাবাদ্রহদি ব্রহ্মবাণাভিঃ সার্দ্ধং রেমে ইত্যাহ এবমগ্রন্ধস্ত্তা তদ্বারৈর পশ্ন বৃন্ধাবনং
সঞ্চার্যন্ত মনেসগলায়া রোধঃস্থ রেমে ইত্যাহ্যঃ। শ্রীমতী ব্রহ্মবিষ্থান্যের প্রীতা প্রেমবতী যদিন্দঃ। ক্লানকর্তিকা ঘট ইতিবং প্রীতেত্যস্য বিশেষ্যন্থবিক্ষয়া পরনিপাভঃ। অতএব প্রীত্যনাঃ অহুগান্তঃ স্থীতিঃ সহিতঃ ব্যাধ্যান্যাস্য
রহস্যথাদেতস্যাব্যকং রন্ধ্য কনক্সপ্রাধীর ব্যাধ্যান্তর্মব্তারিকাঃ বিনৈবান্তি। তদ্বণা শ্রীমস্তো ৰঙ্গদেবাদ্যাঃ প্রীতা যদিন্ সঃ।
সান্থগঃ অনুবিঃ সহিতঃ। অন্যৎ সম্লাং॥ ১॥ ১ ॥ ॥

হে রাজন্ ! শ্রীকৃষ্ণ এবম্প্রকারে শ্রীসমন্বিত বৃন্দাবনের প্রতি প্রতিষনা হইয়া পর্বত সঙ্গীপর্বতি
নদীতটে পশুচারণ করিতে করিতে অমুচরগণের সহিত সহর্ষ মনে ক্রীড়ারম্ভ করিলেন ॥৯॥

কোথাও অলিকুল মদমত হইয়া গুণ গুণ শব্দে গান.করিলে পথমধ্যে বলদেবের সহিত অন্বিত হৈয়া যথন আপনি তদ্ধপ গান করেন, সেই সময় অমুচরগণ তাঁহার চরিত কীর্ত্তন করেন কোথাও শুকপক্ষিকে মধুরাক্ষুট বাক্যে জল্পন করিতে দেখিয়া তাহার সঙ্গে স্বয়ং জল্পন করেন। কোথাও কোকিলদিগকে মনোহরস্বরে রব করিতে দেখিয়া আপনি তদ্মুরূপ ধ্বনি করিতে থাকেন। ১০ ম

কচিচ্চ কলহংসানামনুক্জতি কৃজিতং। অভিনৃত্যতি নৃত্যন্তং বর্হিণং হাসয়ন্ কচিৎ।
নেঘগন্তীরয়া বাচা নামভি দুরিগান্ পশুন্। কচিদাব্যয়তি শ্রীত্যা গোগোপালমনোজ্যা ॥১১॥
চকোরক্রোঞ্চক্রাব্রভারদ্বাজাগ্যবহিণঃ। অনুরৌতি সান্দ্রানাং ভীতবদ্ব্যাত্রসিংহয়োঃ॥ ১২॥
কচিৎ ক্রীডাপরিশ্রান্তং গোপোৎসঙ্গোপবর্হণং। স্বয়ং বিশ্রাময়ত্যাব্যং পাদস্বাহনাদিভিঃ॥১৩

শ্রীধরস্বামী।

বহিণং নৃত্যস্তম্ম অভিনৃত্যতি বহিণ্মভিমুখো নৃত্যতীতি বা স্থীন্ হাস্মন্ ॥ ১১ ॥

চকোরাদীনমুক্তা নৌভীতার্থ:। কদাচিচ্চ সন্ধানাং মধ্যে ব্যাঘ্রসিংহয়োন্তাভ্যাং ভীতবঙ্কতি সন্ধের্ পলারমানের্ পলায়তে ইতার্থ:। তয়োঃ সন্ধানাং বলোডেকাণাং ভীতবঙ্কতীতি বা॥ ২২॥

আর্যামগ্রন্ধং বিলাময়তি বিগতশ্রমং করোতি॥ ১৩॥

বৈষ্ণবভোষণী।

চশব্দে। বল্ যিতি সম্চিনোতি অর্থস্থবৈ বহিশং অভিলক্ষীকৃত্য নৃত্যতি তদভিমুখঃ সন্ নৃত্যতীত্যর্থঃ তেষাং ব্যাধ্যানে উত্তর-আগ্যনুরাকর্ষণীয়ঃ। তজ্জাতিন্ত্যেনৈর তরির্জয়াং সধীন্ হাসয়ন্॥

পশ্নিতি শ্লেষেণ ঐক্তিপার্য তো দ্রগরারিক্ দিজমুক্তং। দেন পূর্কবিদাত্মপশ্চাৎ এব তৎক বুরণাৎ দ্রগুওজ্ঞানমিপি ন জাত-মিতি ভাবঃ। মেবেতি তদ্যার্জিতং লক্ষ্যতে তহলান্তীরয়েতি মহাপুক্ষ স্বভাবত এব॥ ১১॥

কচিদিত্যপ্ৰৱত এব চকোরশ্চন্ত্ৰিকাপামী ক্রোঞ্চিকাটকন্দভকী চক্রাহ্বশ্চক্রবাকঃ ভর্ষান্ধ এব ভারম্বান্ধঃ বার্থেংশ ব্যাঘ্যাটাখ্যঃ প্রকী চকোরাদীনাং কঞ্চিৎ কচিদমূরত্য রৌতি সর্বানের বৃগপদমূরত্য রৌতি সর্বানিকার্যাৎ ইত্যৈশ্বর্যাং তত্যাপি পূর্ববিধারং। ভীতবং ইতি ক্রীড়াকৌতুকেন বতি প্রত্যায় ন্তরোহিং প্রমাভাবেনাপি বন্ধতন্তাভাগং ভরাভাবাৎ অত্য তেষামূভ্রপকে ব্যাঘ্যাদি বলাতিশ্বানাং স্থকে ভীতা যত ইত্যর্থঃ। হলা। স্বানাং মধ্যে যো ব্যাদ্ধ সিংহয়োঃ স্বদ্ধে ভীতন্তম্বচান্থরোতি তেষামীষ্ত্র্যদর্শনকৌতুকার্থমিতি ভাবঃ ॥ ২২ ॥

আদি শব্দাং বিজনাদীনি॥ ১৩॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

এবং প্রথনগোচারণাদিপ্রসঙ্গে সাধারণ দিনগতাং লীলামাহ। কচিদিত্যাদিনা বহিণ্মভিলক্ষীকৃত্য নৃত্যতি পশ্নাং দ্রগাত্ম পশ্চাদের প্রীকৃষ্ণপ্রমন ক্রেঃ। সন্থানাং মধ্যে যো ব্যাত্মসিংহয়ে। জীতঃ ত্বচ্চাত্ররৌতি স্ম তেষামীবভ্রমপর্শনকোত্কার্থমিতি ভাবঃ॥১১।১২॥১০॥

গ্রীবিশনাথচক্রবর্তী।

বহিণিং অভিলক্ষীক্বতা নৃত্যতি স্থীন্ হাসয়ন্ বহিণিমেব রসোলাসয়ন্॥ ১১॥

কিন্তু সন্থানাং প্রাণিনাং মধ্যে ব্যাক্সিংহেয়ো: শব্দেন ভীতবভ্তবতি স্থিব প্রণায়মানের স্বন্ধন্দি প্রণায়তে। বস্তুতস্ত - স্বস্য স্বাভাবিক শৌষ্যেণ ভয়াভাবো বতিপ্রত্যয়েনোক্ত: ॥ ১২ ॥ উগবর্হণং শীর্ষোপধানং ॥ ১৩ ॥

কোথাও কলহংসগণের নিনাদ শুনিয়া স্বয়ং তদমুরূপ গান করিয়া উঠিতেছে। কোথাও কোন ২ সহচর বয়স্যদিগকে হাস্যান্থিত করাইয়া নৃত্যকারি ময়ুরের অভিমুখে আপনি নৃত্য করিরতেছে। কোথাও বা গো এবং গোপালদিগের মনোহর মেঘগম্ভীর স্বরে দূরগামি পশুগণকে সম্মেহে আহ্বান করিয়া প্রত্যানয়ন করেন॥ ১১॥

কোন সময়ে চকোর, বক, চক্রবাক, ভারদ্বাজ (গোলা ভারুই পক্ষি) তথা ময়ুরদিগের অমুকরণ করত তদসুরূপ ধ্বনি করেন। কোন সময়ে হিংত্র প্রাণিগণ মধ্যে ব্যান্ত্র ও সিংহ হইতে ভরাতুরের ন্যায় হন্ অর্থাৎ তাহাদিগকে দেখিয়া জন্তুগণ পলায়ন করিলে আপনিও পলায়নপ্রায়ণ হরেন॥ ১২॥

ে কোনস্থানে অগ্রজ (বলদেৰ) ক্রীড়ায় পরিশ্রান্ত হইলে গোপবালকের ক্রোড় উপধান করত শয়ন করাইয়া নিজেই পাদসম্বাহনাদি দ্বারা তাঁহাকে বিশ্রাম করান ॥ ১৩ ॥ নৃত্যতো গায়তঃ কাপি বলতো যুধ্যতো নিখঃ। গৃহীতহস্তো গোপালান্ হসন্তো প্রশশংসতুঃ। কচিং পল্লবতল্লেয়ু নিযুদ্ধশ্রমকর্শিতঃ। রুক্ষমূলাপ্রিতঃ শেতে গোপোৎসঙ্গোপবহুণঃ॥ ১৪॥ পাদসম্বাহনং চক্রুঃ কেচিভ্স্য মহাত্মনঃ। অপরে হতপাপানাে ব্যজনৈঃ সমবীজয়ন্।

ञ्रीधतवागी।

নিথো নৃত্যাদীন্ কুর্বতো গোপালান্ প্রশশংসভু: ॥ ১৪॥

देवकबद्यायगी।

ন্ত্যত ইতি কালি প্রশশংসতুঃ। বল্লতঃ উৎপ্লুত্যাৎপ্লুত্য গতিবিশেষং কুর্বতঃ। মিথোহস্তোভামাসক্যেতার্থঃ। অন্যবিঃ। যদা। তেরি কালি নৃত্যতঃ কালি গায়ত ইত্যেবং কালীতি সইবর্ধনি বোজাং। কিঞা। কালি মিথোগৃহীতহত্তী কালি হসন্তৌ ভবতঃ। যদা। পদ্দ্রমিদং বিশেষণদ্বেন সর্ববৈদ্ধ যোজাং। কালি গোপালান্ হসন্তৌ অহো ইমে গানেন গদ্ধর্বগণতিরন্ধারিলো নৃত্যেন বিদ্যাধরগণবিড়ন্থকা বুকোন ত্রিলোকীজিত্বরা ইত্যাদি পরিহানং কুর্ববেত্তা প্রশংসতুরেব তত্তের মাহাজ্মাবিশেষখ্যাপনাং। উপসংহরিষ্যন্ বিশামকীছাং বদন্ গোপানাং সৌভাগ্যভরং বর্গমতি কচিদিতি ত্রিভিঃ। পলবেত্যপ্রকর্পালনবদলকোরকপূলাণাং তদ্ধেষ্ বছরং পৃথক্ পৃথক্ পঞ্চর্মমিলিত্বা নির্মিত্তিনে বাছল্যাং। ততশ্চ বছতরেম্বলি তেরু তেষাং প্রীত্যৈ তত্তদলক্ষিত স্তত্তং প্রেমাধোদিতেন নির্মাক্তিবিশেবেণ বছরূপত্তীয়ব শেত ইতি বিজ্ঞাপয়তি। এবং ঈশচেষ্টিত ইতি বক্ষ্যমাণ্টমেখ্য্যমত্রাণি সঙ্গতং স্যাৎ। নিযুদ্ধং তৈরেব সহ বাছ্যুদ্ধং তেন শ্রমঃ শ্রীগণ্ডাদিবিষয়কমৌক্তিকস্থলরপ্রস্থেম্বদকণিকোদ্মাদিকরঃ। তেন কর্মিতো কুর্বল ইব। অনেন স্থীনামিলি তাদৃশং বলবত্বং স্থাচিতং। তথাচাগমে। গোলৈঃ সমানগুণশীলব্যোবিলাদৈরিতি। তদেবমিলি তেষাং স্থামহন্ত্রনাবাদে বিল্পার্গতি ত্রেলং পশ্রামঃ সর্ব্রভ্রের ক্রেরং পশ্রামঃ সর্ব্রভ্রের ক্রেরং পশ্রামঃ সর্ব্রভ্রের ক্রেরং পশ্রামঃ সর্ব্রভ্রের ক্রেরং পশ্রমঃ সর্ব্রভ্রের ক্রেরং পশ্রামঃ সর্ব্রভ্রের ক্রেরাঃ। ত্রেরাপ্রহিণ্ডাকর্ম্বরাভিনি তেন তির্মাং উন্তর্গালি। তেরাপ্রহিণর তেন তংকুর্গাভারের তেন তংকুতং। কিন্ধা রচিত্রস্যালি তেনের তদর্বং ত্যাগো জ্যেয় ॥ ১১॥

কেচিদিছি বছৰং ক্রমেণ পরিবৃত্তা শ্রীমংপাদান্ত্রাের্মইছিঃ সংবাহনাৎ কিয়া বছলশ্যায় প্রত্যেক্তিচতুরতয় তত্র প্রস্তুতর রভিপ্রারেশ। মহায়ন ইতি ছাল্দং। নহায়ানঃ পরমভাগাবস্ত ইত্যর্থঃ। বছা। তত্ত মহাগুণগাশ্চর্যার্রপায়। তত্ত্বাদৃশ তংক্রেরায়র্র্যাং পাপা। বৈঃ ইত্যায়ানমধিক্ষিপতি। তেবাং নিত্যতাদৃশত্বেহিপি অয়মায়াগহতপাপাে্তিবং তং প্রয়োগঃ। এবমিনং পদং প্রেণি পুপরেণাশি বোছাঃ। সমাক্ মন্সমধুরচালনাদিম্বরাহবীলয়ন্। তত্তাব্দর্যয় যোগ্যানি তগ্য শ্রীভগবতােহিপি সদৃশানি বা গীতাদীনিতি শেষঃ। বিশেষমপ্যাহ মনোজ্ঞানি চিত্তাকর্ষকাণি বিচিত্রাম্বত্রবালাদিময়্বাং। শ্রীবিতি বিশ্বাস্থ্য সংবিত্র বোগ্যহাত্তরবানমুদ্রিছাত বিহরারী ইত্যাক্রেরাক্রিগানস্বভাবতত্তংপ্রাক্ট্যবিশ্যোভিপ্রারেশ। যয়। পদ্রব্যাস্য সংবিত্রে

क्रममन्धः।

ভরেষিতি বহুৰং তত্র ভত্তানেকেন প্রকারেণেতি দ্যোতকং মহাস্থানঃ মহাস্থানঃ প্রমভাগ্যবস্থঃ। জ্পাং স্থাপো ভবত্তীভূপেদংগার্নেন্য১৪ তথ্য মহাওগগণন্যেতি হতঃ আদৃশ তৎ দেবাস্তরায়ক্ষপঃ পাপায়ু যৈ বিত্যাস্থান্যধিক্ষিপতি তেযাং নিত্যভাদৃশংবহপ্যযমাস্থাপহত-পাপোতিবত্তংপ্রয়োগঃ॥

ब्यैविश्वनाशहक्तवर्डी।

श्नारको क्र**क्**रास्मी नृज्यांचीन् कूर्यराजी श्रीभानान् अभगरमञ्हः ॥ ১८ ॥

কোথাও স্থাপনারা ছুই ভ্রাতায় পরস্পার হস্ত ধরিয়া হাসিতে ২ নৃত্য, গীত, উল্লাফন ও প্রোল্লফন নাদি করিয়া মল্লযোদ্ধা গোপালদিগের প্রশংসা করেন । কোনস্থানে নিযুদ্ধ অর্থাৎ বাত্রুদ্ধে পরিশ্রন বশতঃ স্থাবিলের ভায় হইয়া বৃক্ষমূলে প্রবশ্যায় গোপবালকের জোড়ে মন্তক দিয়া শ্যন করেন॥১৪॥

হে মহারাজ! ঐক্তি এইপ্রকারে শয়ন করিলে কতকণ্ঠলি পোপবালক তাঁহার' পাদসম্বাহন এবং কতক গুলি পুণ্যশালী বালক পল্লবাদি রচিত ব্যঙ্জন দ্বারা বায়ু বীজন করিতে লাগে। অপরে স্নেহার্ড্র- অন্যে তদক্রপাণি মনোজ্ঞানি মহাত্মনঃ। গায়ন্তি স্ম মহারাজ স্নেহরিশ্বধিয়ঃ শনৈঃ॥ ১৫॥ এবং নিগুঢ়াত্মগতিঃ স্বমায়য়া গোপাত্মজন্তং চরিতৈর্বিভ্নারন্। রেমে রমালালিতপাদপল্লবো গ্রাম্যেঃ সমং গ্রাম্যবদীশচেষ্টিতঃ॥ ১৬॥ শ্রীদামা নাম গোপালো রামকেশবয়োঃ স্থা। শ্বলন্তোককৃষ্ণান্যা গোপাঃ প্রেক্ষেদমক্রবন্॥১৭॥

थीधतपामी।

राक्तः अन्तरामिनियिरेजः ॥ ১०॥

ঈশচেষ্টিত ইতি নিগৃঢ়স্বভাবত্বেংপি অন্তরা অন্তরা ঈশস্যৈব চেষ্টিতানি দৃশ্যন্তে যদ্দিন্ সং ॥ ১৬ ॥

স্বৈশচেষ্টিতত্বমেব দর্শয়িতুমাহ শ্রীদামেতি। স্থোকঞ্ক: কন্দিৎ ॥ ১৭ ॥

বৈষ্ণবতোষণী।

নির্দেশাৎ পূর্মক্লোকে বাক্যমনোপি সম্বন্ধো এইবাঃ ॥ ১৫॥

অত্বন্ধান্যাং গোপণীলাম্দিশন্ তাদৃশলীলারাশ্চ তদতিপ্রিয়হং প্রতিপাদয়রুপনংহরতি এবমিতি। হাবিভাবান্তবে রমানালিতপাদপয়বাহিপি এবং বুলাবনবিহারপ্রকারেণ রেমে রতিং প্রাপ। তদেবমত্র প্রথে তাদৃশস্থস্যাপ্যনাদর: হৃতিত:। কিং ক্র্ন্ চরিতৈর্নল্বান্ধল উৎপন্ন ইত্যাদিরপৈরলোকিকৈ লোকিকং গোপাল্ধলহং বিভ্রন্থন হীনোপমারপং ক্র্ন অলোকিকং গোপাল্ধলহং আত্মনি দর্শয়িত্যর্থ:। নয় শ্রিভাবত: কথমাত্মলহং তত্রাহ সে যে শ্রীনন্দমাদাদয়ং পিত্রাদিরপাতেষাং মায়য়া রূপয়া বাংসল্যবশতয়েত্যর্থ:। অতএব নিতরাং গুঢ়া সর্বেষাং অপ্যথম্যা আত্মগতি মহাপ্রদান্তমাধ্রীবিশেষো যম্য। মতএব কৈশ্চিদ্ প্রামের্ক্তিঃ সমং কশ্চিদ্প্রামের বিভ্রাহ ক্রমির তাদৃশী সতী শ্রিভাবনম্পর্শহিত্যপ্রকাল কর্বং সম্পদ্রভাগত কথং সম্পদ্রভাগত ত্রাহ ক্রমং সর্বেশ্বর্যযুক্তং চেষ্টিতং যম্য তত্তনীলাশক্তিরেব তাদৃশী সতী শ্রিভাবনম্পর্শহিতাপি সর্বং সম্পাদয়তীত্যর্থ:॥ ১৬॥

এবং প্রথমদিনক্রীড়য়াহন্যদিনক্রীড়ামুপলক্ষ্যাধুনা কদাচিত্রিজপ্রিয়জনপ্রীত্যৈ গোপালনে কিঞ্চিদৈর্য্যমপি সাক্ষাং প্রক-টিতমিতি প্রবন্ধানাহ প্রীদানেত্যাদিনা। তত্ত শ্রীরাম্য্য সংখতি নির্দেশন্তদ্যুদ্ধে তদ্যৈব প্রাধান্যাৎ। স্কুবলাদ্যান্ট স্থায়:।

ক্রমসন্দর্ভঃ।

তদহরপাণি তদবসবাহ বি।। ১৫॥

এবং গোচারণগীলাসামান্যপ্রসঙ্গে কাদাচিৎক্মপ্যাহ শ্রীদামেতি। স্তোক্ত্বঞ্চ ইড্যেব নাম নতু স্তোক্তে বিশেষণং ভদুগ্রে ভন্নাম-

শ্ৰীবিখনাথচক্ৰবৰ্তী।

তদমুরপানি যশাংগীতি শেষ:॥ ১৫॥

খ্যোগমায়য়া আর্তাবৈশ্বর্যঃ স্বয়ং গোপাশ্বজোহপি চরিতৈ গোপাশ্বজ্বন্ন ভ্পালপ্ত্রন্থং বিভ্নমন্ কিরন্ধন্ সোহপোরং লীলাং কর্ত্ন জানাভীতি ভাবঃ। গোপো গোপালকে গোঠাধাকে পৃথ্বীপতাবলীতি শেদিনী। ঐশ্ব্যুদ্টা রমালালিতপাদপল্লবাহিপি তদাবরণাং কৈন্চিদ্যু বিমাব্দুভিঃ সহ কল্চিদ্যু মেয়াবন্ধনিব রেমে ন কেবলমাবৃত্যের তদৈশ্ব্যমিত্যাহ অক্সমারণাদিপ্রভাবে। ঈশব্মশ্ব্যম্বরং চেষ্টিতং যাস্য সঃ॥ ১৬ ॥

ঈশচেটিতবনেব দশ্যিত্মাহ শ্রীদামেতি। প্রেমেতি ক্ফরামাবেব বব্যাজেন তালফলানি ভোক্ষাভূমিত্যর্থ: ॥ ১৭ ॥

চিত্ত হইয়া তাঁহার অনুরূপ মনোহর স্ববে ধীরে ধীরে গান করিয়া থাকে ॥ ১৫ ॥

হে রাজন্ ! লক্ষ্মীদেবী বাঁহার পাদপদ্ম লালন করিয়া থাকেন সেই হরি এই প্রকার অলোকিক চরিত ছারা গোপাজ্যজত প্রকাশ করত গ্রাম্যসহচ্রগণের সহিত গ্রাম্য বালকের স্থায় ক্রীড়া করেন, বদিও তিনি অকীয় নায়াশক্তিছারা আপনার অভাব গোপন করিয়াছিলেন, তথাচ মধ্যে মধ্যে তাঁহাতে পরমেন্বরের থায় চেন্টাশীলতাই দেখা যাইত—॥ ১৬॥

'তাহার দূক্টান্ত এই যে, রামকৃষ্ণের দথা জ্রীদামনামক একজন গোপবালক তথা স্থবল, স্তোককৃষ্ণ-

রাস রাম মহাসত্ত্ব কৃষ্ণ ছুউনিবর্হণ। ইতোহবিদূরে স্থমছন্ত্বনং তালালিসঙ্কুলং। ফলানি তত্ত্র ভূরীণি পতস্তি পতিতানি চ। সন্তি কিন্তুবরুদ্ধানি ধেমুকেন ছুরাত্মনা।

देवकवरजावनी।

শীদার: প্রাভিন্দেশঃ সথিব ম্থাবেন বব্দে তমিরাস্য কেবলক্ষানারা প্রচারণায়ামন্যায্যভাং। স্তোককৃষ্ণ ইতি চতুরক্ষর-নেব নাম ক্রেরং। তত্র চেদমেব লভাতে বালস্যাস্য রূপং কৃষ্ণমন্থাচ্ছদেব বর্ততে। তমায়াম ৮ তমপুগমিষ্যত্তৎপ্রণারিশোষার সম্পাংন্যত ইতি বিচার্য্য সমাপ্তর্লসতা তৎপিত্রা তালৃশং নাম প্রকাশিতনিতি। প্রেয়াইতি নতু তালফললোভেন। নচ ক্রই-বধার্যং বা কিন্তু প্রিমন্থনপ্রতিবিশেষার্থং। ুকিঞ্চিনিইস্বাপ্রার্থনিলক্ষণপ্রেমন্বভাবেনৈব। বরা। অব্যান্তেন শ্রিক্ষাম্মের্বের তালৃশভোজনসম্পাদনেচ্ছাম্মেনেত্রওঃ। তত্রচ স্থাম্মপ্রপ্রেমেতি লভাতে। স্থাক্ষ সাল্লাভ্যেনের ভবতীতি মিথংপ্রভাবাদিক্তান-ম্বমেব। রূপোক্রং তৈঃ। অম্মান্ কিমত্র প্রসিতা নিবিষ্টানয়ং তথাচেদকবিদ্ধনক্ষ্যতীতি। বক্ষ্যতে চানস্তবং রাম রামেভি। ভতরাহ্র্প্রনেন তত্তবৃদ্ধসাহচর্যাপ্রার্থনাবং বীররস্বাভাবিকস্থাম্যপ্রপ্রেমৈতি ছিতং॥১৭৫

হে বামেতি বন্দে ক্রীড়দীতি ত্রামনিককেরেতামপ্যেকাং ক্রীড়াং কুরু কিবা ব্রম্প্র ক্রিয়ের স্থর্স বেতি ত্রাম্মান্ ব্রম্বেতি ভাবং। বীপা আদের প্রোৎসাহনার্থমত্র আমেবাদে স্বোধ্যাম ইতি ভাবং। হে মহাসবেতি তব কিমপ্যান্ধরণ নাজীতি ভাবং। হে ক্ষেতি প্রমানকপ্রদেষভাব্বেন স্বাক্রিক্রাদ্মানম্প্রি হুণ্ড কর্ত্মহানীতি ভাবং। হে হুইনিবহাণিত বংসাহ্রাদীনাং তত্মাৎ সাক্ষাবিষ্টেং। অত্তালবনরোধকধেহকবধার্থমপি তালপাতনাদিকং যুক্তমেবেতি ভাবং। এবং হুইনিবহাণিত শ্রীক্রবন্দ্র সার্থকত্বং বদ্বো মহাসবেতি ত্রল্যা বিকল্বং দর্শক্তমেবোত্তের্বান্ত। ইতঃ প্রীপোর্ব্ধনাদিত্যা । এবং হুইনিবহাণিত শ্রীক্রবংশে। তৎপ্রস্ক এব আল্বাহাত্রী সহিতী গোধনৈং সহ গামিনো। গিরিং গোবর্দ্ধনং ব্রম্বং বহুণেবহুতাবৃত্তী ইতি। অবিদ্বে অনতিদ্বে শ্রীগোবর্দ্ধন পূর্বতং ক্রোম্বর্তাবৃত্তী ইতি। অবিদ্বে অনতিদ্বে শ্রীগোবর্দ্ধন পূর্বতং ক্রোশ চত্ইয়াস্তবে ব্রেং। তথাচ বারাহে। অন্তি গোবর্দ্ধনং নাম ক্রেইলিহে । নথুবাপন্তিমে ভাগে অদ্বাদেবালনহয়মিতি। তথা। অতি তালবনং নাম ধেহকাহ্বরক্রিতং। মথুবাপন্তিমে ভাগে অদ্বাদেবালনহয়মিতি। তথা। অতি তালবনং নাম ধেহকাহ্বরক্রিতং। মথুবাপন্তিমে ভাগে অনুবাদিতমে ভাগে অনুবাদেবালনহয়মিতি। তথা। অতি তালবনং নাম ধেহকাহ্বরক্রিতং। ম্বুবান্তিংনে ভাগে অদ্বাদেক্ষেলনমিতি। অত্রতু নৈপ্রতপন্তিময়োরভেদং। যতু প্রাহিনিবংশে। গোবর্দ্ধনালাত্রতো যমুনাতীরনাশ্রিতং। দদ্শাতে ইতি ন্যাপ্রোবালিত্বি মধুবনমধ্যন্তিতায়া মধুপুর্ব্যা মধুবনদীয়া প্রস্তাদ্যিকোণহ্বম্নাভাগান্তমারভারে বেথারূপতা। হিত্য তস্য বন্দ্যাক্রপ্রাভ্রতীরভাগং তালসীনামাতু প্রানো মধ্যবালুগো ভাগ স্তংপুর্ঘা নৈপ্রতিক্রান্ত্রক্র ত্রালাং তালসীনামাতু প্রানো মধ্যবালুগো ভাগ স্তংপুর্ঘা নৈপ্রতিক্রান্ত্র ত্রা

ক্রমসন্বর্ভঃ ।

করণানহ ছাং। প্রেমা প্রিয়োগনোচিতপ্রার্থনাময়েন অব্যাজেন ভয়োরেব তাদৃশভোজনেছাময়েন চাঃ ১৭॥ ১৮॥ ১৯॥ ২০॥ ২১॥ ॥ ২০॥ ২৪॥ ।

ञ्जीविधनाथहळवळी।

ইতো গোবদ্ধনাদবিদ্বে কোশচভুইয়ান্তরে তারকর। ইতি তালদীতি খ্যাতপ্রদেশগতং বনং। অন্তি তাশবনং নাম ধেতুকাস্বরক্তিতং। মণুরাপশ্চিমে ভাগে অদ্বাদেশবোজনমিতি বারাহােকে:। পশ্চিমে পশ্চান্তবে ভাগ ইতি নৈশ্বতকাণে ইতি ব্যাধ্যেয়ং
তবৈব তদ্দনিং। তালানামালিভিব্যপ্তিং। শ্লেষেণ। তালানামলিবণ্ডেনাতি আহ্জাতীয়ত্বং ধ্বনিতং॥ কিন্তু ধেতুকেন অবক্ষানি
বশীক্তানীত্যত এব হে রাম তব মহাসত্বপরীক্ষা হে ক্লফ ভবাপি ছ্ইনিবহণ্ডপ্রীক্ষা অন্য কর্তক্ষাতি ভাবোহনং তয়েঃ স্বাভাবেন
বলিইছজানাল প্রেমি বিক্লাতে। প্রভাত বীরবসেংশাহােদীপনত্বন সংক্ষাত এবেতি জ্ঞেয়ং॥

প্রস্থৃতি গোপবালকগণ একদা প্রেম হেতু এই কথা বলিলেন—॥ ১৭ R

হে রাম ! হে রাম ! হে মহাবল ! হে শ্রীকৃষ্ণ ! হে ছুউদমনকারিন্ ! এই গোবর্দ্ধন পর্বতের অনতিদূরে একটা স্থমহৎ কানন আছে, সেই বন বহুতর তালতক্রতে সমাকীর্ণ, তথার নিরন্তর ভূরি ভূরি তালফল পতিত হইতেছে এবং পতিত হইয়া রহিয়াছে, কিন্তু ছুরাত্মা ধেমুকার্ম্বর দে সমস্ত তালফলকেই অবকৃদ্ধ করিয়া রাথিয়াছে। হে রাম ! হে কৃষ্ণ ! সেই অস্তর সমধিক বীর্যাশালী, তাহার রূপ্

সোহতিবার্থ্যাহস্থরো রাম হে কৃষ্ণ ধররূপধূক্। আত্মতুল্যবলৈরন্যৈজ্ঞাতিভিঃ পরিবারিতঃ। তত্মাৎ কৃতনরাহারাদ্ ভীতৈন্ভিরমিত্রহন্। বিদ্যন্তেহভুক্তপূর্ব্বাণি ফলানি স্থরভীনি চ॥ ১৮॥ এন বৈ স্থরভিগন্ধিহবিষ্চীনোহবগৃহতে। প্রযক্ষতানি নঃ কৃষ্ণ গন্ধলোভিতচেতদাং। বাঞ্জিত মহতী রাম গম্যতাং যদি রোচতে। এবং স্কন্ধচঃ প্রেছ(প্রয়চিকীর্যা।

क्षितवानी।

ভাবালি সমূলং ভালানাং পঙ্কিভিব্যাপ্তং॥ ১৮॥ বিবৃটীনঃ স্পতিঃ প্ৰস্তঃ॥ ১৯॥

देवकवरकावनी।

পশ্চিন্যাং তারফ্রনামান্যতথে ইতি। তথি শেষক প্রীইরিবংশে। সতু দেশ সমঃ বিশ্বঃ প্রথান্ কৃষ্ণ্ ভিক:। দর্ভপ্রার স্থানিত লোইপাষাণ্যজিত ইতি। ততঃ কিমিত্যাশক্ষা সাভিলাষমধ্বদ্ধি ফলানীতি। পতি পিতিতানি চেতি নির্ভর স্বরং পক্ষেনাতিমধ্বরং বৃথান্যরক্ষা ব্যক্তির তথা পাতনপ্রানোহিপি নিবস্তঃ। ইতি প্রায়ে ভাদ্মাদে ক্রীড়েয়ং তব্রিরেব সর্বেবাং তালানাং পাকাং। এবমিষং লীলা প্রীবিষ্ণুপ্রাণাছাক্রাল্যাবেণ গ্রীমক্রকালিয়দমনানস্তরং জ্ঞেয়ং। তত্র বিষ্ণুপ্রাণে ক্রমপ্রাপ্তরুদ্ধের কারণং। হরিবংশে তু। দমিতে সর্পরালে তুক্তকেন যমুনাছদে। ইত্যারভ্য সা লীলা বর্ণিতেতি স্পইমেব তদিতি। নম্ তহি যুলাভির্মিরা তানি বন্যযেন সাধারণানি স্বয়নানীয় স্লাং ত্রাছর্বক্ষানি। নম্ তস্য কিং হৈঃ প্রার্থাং জ্রাছর্বিয়াবিত। অতত্তং হয় নিপ্রহীতুং যুক্তান্ত এবেতি ভাবঃ। তত্তীত্যাচন কৈশ্চিদ্পি তংক্লানি ভূকানি সন্ত্রীত্যুবেজরিস্তি স্বর্ধার হিছি ছালাং। অতিবীর্য্যে মহাবল ইতি রামং প্রভালিক মাংস্ব্যাজননায় থ্ররূপর্যাতি কৃষ্ণং প্রের্থান্য বিদেশবিদ্ধান্য রাম্প্রিতির তথামাপ ত্রাভ্রমায়ার বিশেষবিদ্ধান্য স্বর্ধানিত সার্ক্ প্রান্তিরার হিত্ত স্বর্ধানিতি অত্তর নাম্বানিতি অত্তর নাম্বানিতি অত্তর নাম্বানিত ক্রমেন স্বাত্তির নিত্রের প্রান্তির ক্রমার ক্রিরের গ্রেরার বিশ্বনান্য স্বাদ্নি চ অত্তক্ত পূর্বাণামিপি সৌরভ্যেবির সাক্ষাদিবাবেদ্যন্তি এব ইতি বৈ নিশ্বর গ্রেরাহ্বস্থতে উপলভ্যত ইতি প্রায়েহিদ্বিদ্ধেশে ভারমানে বৃষ্ট্যকুল্পারস্ত্রবাতাং। এবং ফ্লানাং উংক্রপ্তরং নিক্টবর্তিরক্ষ হুচিতং। তদেতং স্বর্ধ শীক্ষরাম্বোরজ্রাত্যির মন্ত্রা বিজ্ঞান্ত্রির ক্রমাণ ত্রাভ্রমাণত জ্বের। তালাং নর্ম্বাণ ভ্যাজাতস্বের ক্রমশং স্পৃইয়াদিতি জ্বের। ১৮॥

চতুর্থ্যর্থে ষ্টা। ক্লফেত্যাদি মূত্কভয়সধোধনমভিবৈষ্ত্র্যং স্কল্পতি কৃষ্ণগল্পেতি। শ্লেষেণাস্থাকং কলাপি লোভো নাসীৎ নবনীতাদি-লুক্ষ্যাস্য সম্পর্কেণেব লোভিত্ততেত্সামিতি শ্রীরামং প্রত্যেবোক্তিঃ তেন্চ নর্মণা নিজ্জ্লভিপ্রার্থনদোষো নির্ভঃ এবং মূহঃ

ञीविधनाशहकवर्जी।

সোহতিবীর্য্যেত্যাদিনা তরোঃ পরাক্রমোতেজনং॥

আবরোরত্রে তদ্য তদীয়ানাঞ্জিবীর্যাং থপুশায়মাণং ভবিষ্যতাতি চেত্তহি চলতং ত্রত্যান্রানির্ভ্যান্ তালভোজিনশ্চ দত্ত্য-দাশিষঃ কুঞ্তমিত্যান্তস্মাদিতি। নতু ক্ষ্যাং দিশি তথনং তব্ ক্রতেত্যত আহিং। এধ বৈ গল্ধঃ ভাদুমাধীয়প্রাচ্যুম্মীরণেনানীত ইতি ভাবঃ॥১৮॥

অত্যন্ত ভয়ঙ্কর, দে একাকী নহে, আত্মতুল্য বলশালি-অন্যান্য বহুতর জ্ঞাতিবর্গে দর্বদা পরিরত থাকে। হে অমিত্রহন্! দেই অহার নরভোজী, অতএব তাহা হইতে ভীত হওয়াতে কোন মানবই দেই বনের হান্দর হারভি ফল কথন ভোজন ক্রিতে পায় না, হৃতরাং তথায় রাশি ২ ফল পতিত হইয়। রহিয়াছে ॥ ১৮ ॥

এই দেখ সেই "স্কল পক তাল ফলের স্কল দিকে প্রস্ত স্থরতি গন্ধ পাওয়া যাইতেছে। হে ক্ষা! সোগন্ধ্যে আমাদের চিত্ত প্রলোভিত হইতেছে আমাদিগকে ঐ স্কল ফল দাও। হে রাম!

প্রহৃদ্য জগ্মতু র্গোপের তো তালবনং প্রভু। বলঃ প্রবিশ্য বাহুভ্যাং তালান্ সংপরিকম্পয়ন্। ফলানি পাত্যামাদ মন্ত্রীপ ইবোজদা॥ ১৯॥

ফলানাং পততাং শব্ধ নিশম্যাফ্ররাসভঃ। অভ্যধাবৎ ক্ষিতিতলং সনগং পরিকম্পয়ন্॥ ২০॥ সমেত্য তরসা প্রত্যগ্ দ্বাভ্যাং পদ্যাং বলং বলী। নিহত্যোর্সি কাশব্ধং মুঞ্চন্ পর্য্যসরৎ থলঃ॥২১ পুনরাসাদ্য সংরক্ষ উপক্রোফা প্রাক্ স্থিতঃ। চর্ণাবপ্রে রাজন্ বলায় প্রাক্ষিপ্তফ্রা॥ ২২॥

धी धतचा भी।

সনগং সবৃক্ষং সপর্বতং বা॥ ২০॥

প্রত্যক্ রাভ্যাং পশ্চিনাভ্যাং ছাভ্যাং। কাশক্ষিতি গর্জভশকামুকরণং। প্র্যুসরৎ পরিতোহধাবদিত্যুর্থ:॥ ২১॥ উপক্রোটা গর্জভ:। প্রাক্ প্রতিমূখ:। অপবে) পশ্চিমৌ। বলায় বলং হস্তুং॥ ২২॥

देवस्व दर्जावनी।

প্রার্থনেহপ্যনঙ্গীকারমিবালক্ষ্য সপ্রধাররোবমান্ত্র ব'শ্বিত্যিদ।

বুতে। সাহায্যার পরিতো বেষ্টিতো প্রভূ তেষাং প্রহর্ষার্থং অসামর্থ্যং দর্শগ্রেষ্টা ॥

বলনেবস্যানে প্রবেশাদিকমানে প্রাথিতত্বাবতঃ শ্রীকৃঞ্স্যাপি তৎ কীর্ত্তয়ে তত্ত্ব গৌণায়্মানত্বাং। তালানিতি বছত্মেকস্য কম্পনেনৈব সংঘট্টিতানাং তেষাং বহুনাং কম্পাং সম্যক্ পরিতঃ। কম্প্যদ্মিতি বিকীর্য্য দ্বে পতনন্ত নতু শির্দীত্যেত্দিছয়ো॥ ১৯॥ স্পর্বতং ক্ষিতিত্তলং সর্বাং পৃথিবীং পরিতঃ কম্প্যদ্মিতি তম্য পুর্বোক্তং অতিবীর্য্যত্বং দর্শিতং॥ ২০॥

নিতরাং হয়া প্রস্থারতা বলী সাধারণদেবতাপেক্ষা বলববেন বলিমানীতার্থ:। কাশকং কুৎসিতশবং। আর্থ: কাদেশ:। পর্যাসরং পুনঃ পদ্যাং হননে ছিদ্রাবেষণায় পরিতো বভাম যতঃ থলতাদৃশহুদেটঃ॥ ২১॥

আাদাদা নিকটী ভূব। উপক্রোষ্টা নিকটে কা শক্ষং কুর্বন্। পরাক্ বিম্থং হিতঃ সন্পুনবেত্য॥ ২২॥

শ্ৰীবিখনাথচক্রবর্তী।

নোহস্মভ্যং প্ৰাবচ্ছ যতোহস্মাকং ৰাঞ্জি॥

প্রহন্যেত্যহো গৰ্দভোপ্যেবং ৰলীতাসম্ভাব্যন্তাম্ হৈব বা জগেতি ভাষং ॥ ২৯ ।

সনগং কুলপর্কতৈরপি সহিতং॥ ২০॥

প্রত্যগ্রাভ্যাং পশ্চিমাভ্যাং রাভ্যাং। কাশক্ষমিতি গর্মভশকামুক্তবণং পর্য্যসরৎ পরিতো ধাবং॥ ২১॥

সংবন্ধঃ কোপী উপক্রোষ্টা নিকট এব কাশদং কুর্মন্ পরাক্ পৃষ্টীক্তভান্থিতঃ ॥ ২২॥

প্র দকল ফল ভক্ষণার্থ বহুকাল ইইতে আমাদিণের সমধিক বাঞ্ছা আছে, যদি অভিলায হয় গমন কর। হে রাজন্! স্থানের এই প্রকার কথা শুনিয়া তাহাদিণের প্রিয়কার্য্যের সম্পাদন কামনায় দেই তুই প্রভু অর্থাৎ রাম ও কৃষ্ণ হাদ্য পূর্বক গোপগণে পরিবৃত হইয়া দেই তালবনের প্রতি যাত্রা করিলেন। বলদেব ভালবনে প্রবিষ্ট হইয়া মদমত গজরাক্ষের ন্যায় মহাবলে ভুজবুগলে তালবৃক্ষ দকলকে কম্পিত করিয়া দমূহ তালফল পাতিত করিতে আরম্ভ করিলেন॥ ১৯॥

হে মহারাজ । তাল পতনের শব্দ শ্রবণগোচর হইবা-মাত্র গর্দভাকার ধেমুকান্থর বেগে পর্যতি সহিত ভূতল কম্পিত করত তৎক্ষণাৎ সেই দিকে ধাব্যান ছইল ॥ ২• ॥

অপিচ, মহাবল ধেনুক সম্বর সমীপে আসিয়া পশ্চাৎ ভাগের ছুইটা পা দিয়া বলদেবের বক্ষঃস্থলে আঘাত করিল, পরে কুৎসিত গর্দভশব্দের অনুকরণ করিতে ২ চতুর্দ্ধিকে দৌড়িতে দাগিল॥ ২১॥

তদনন্তর রাসভ (গর্দভ) মূর্ত্তিকে পুনরায় নিকটে আসিয়া প্রচণ্ড কোথে সম্মুখে দাঁড়াইল এবং বলদেবের বিনাশকরণ মানসে রোষবশতঃ পশ্চাদ্ভাগের দুইটা পা উপহার প্রতি প্রসারণ করিল॥ ২২॥ স তং গৃহীত্বা পদয়োত্র মিয়িকৈপাণিনা। চিক্ষেপ তৃণরাজাগ্রে ভ্রামণত্যক্তলীবিতং। তেনাহতো মহাতালো বেপমানো মহচ্ছিরাঃ। পার্যন্থং কম্পায়ন্ ভগ্নঃ স চাম্মং সোহপি চাপরং॥২৩ বলস্থা লীলয়োৎস্ফুখরদেহহতাহতাঃ। তালাশ্চকম্পিরে সর্ব্বে মহাবাতেরিতা ইব॥ ২৪॥ নৈতচ্চিত্রং ভগবতি হানস্তে জগদীখারে। ওতং প্রোত্মিদং যক্মিংস্তস্ত্রস্থাস্থ যথা পটঃ॥

वीधवयामी।

ভূণরাজন্তাল: ॥ ২৩॥

উৎস্টেন ধরদেহেন হতৈরাহতাঃ চকম্পিরে অকম্পন্ত ॥ ২৪ ॥

देवक्षवरणायशै।

একেনৈব পাণিনা পাদয়োগ্রীয়া ভ্রাময়িশ্বাচ। প্রপদোরিতি পাঠশ্বার্য: পাদয়োরএভাগ ইত্যর্থ:। পূর্বস্ত তৎপ্রহারাঙ্গীকার:। স্থানবধান প্রকাশনেন স্বদ্য ভেনাকোভ্যম্বং প্রথাপয়িতুং ॥

চকারাদপরোহপি পর্মিত্যেবং বহবো বহুন্ কম্পায়ন্তো ভগা ইতি জ্বের: । ২৩॥

এবং সন্ধিক্টা ভয়া: দুৰস্থাস্ত কম্পিতা ইত্যাধ বশস্যেতি॥ ২৪॥

ইদঞ্চ। ন তদ্য চিত্রং পরপক্ষনিপ্রহন্তথাপি মর্ত্যাম্বিধদ্য বর্ণাতে। ইত্যেবং বক্ষ্যমাণরীত্যা প্রতিযোদ্ধাদ্যমূর্পমাত্রশক্তিপ্রকাশধাবিদ্যা নরলীলয়ৈব ক্বতমিত্যাশ্চর্যাত্তন বর্ণাতে নতু ঐশব্যলীলয়েত্যাহ নৈতদিতি। অচিত্রত্বে হেতু ওগবতি শক্ত্যা সমগ্রেখব্যাদি ব্রক্তেহ্বনত্তে স্বর্গেণাপ্যপরিচ্ছিল্লে তথোপাধিদস্বদ্ধনাপি জগদীশবে ওতং প্রোত্মিত্যাদি লক্ষণেচ। দৃষ্টাক্তেহপি তভ্নাং কারণজেন পর্তাদস্তবং। অত্র তাদৃশভগবত্বাদিকং প্রক্রিফাংশেষু মুখ্যধাদ্যুক্তমেবেতি ভাবং॥

क्रममन्द्रः।

কিঞ্চ ইদঞ্চ ন তদ্য চিত্ত্ৰং প্ৰপক্ষ নিগ্ৰহন্তথাপি মৰ্ক্তাহ্ববিধদ্য বৰ্ণ্যত ইতি ৰক্ষ্যমাণ রীত্যা প্রতিযোধাদাস্থ্ৰপমাত্র শক্তিপ্রকাশ কার্য্যাৎ ধারিণ্যা নবলীলয়ৈব ক্বতমিত্যাশ্চর্য্যত্বেন বর্ণ্যতে ॥ নৈতদিতি দৃষ্টান্তেছপি তন্তুণাং কারণত্বেন কার্য্যৎ পটাদন্যত্বং ॥ ২৫ ॥

এীবিশ্বনাপচক্রবর্তী।

তং ধেরুকং প্রপদো: পদয়োরগ্রভাগে ইত্যর্থ:। তৃণরাজন্তাল:॥ ২৩॥

উৎস্প্টেন থরদেহেন হতৈস্তালৈরাহতাঃ প্রাপ্তাভাঃ॥ ২৪॥

বিশ্বং ওতং অন্ত্র তম্ভবু পট ইব প্রথিতং প্রোতং তির্য্যক্ তম্ভযু পটবদেব প্রথিতং দর্বতোহমূল্যতং বর্তত ইত্যর্থ: ॥

হে রাজন্! বলদেব এক হাতে সেই ছুইটা পা ধরিয়া অনেক ক্ষণ ঐ অন্তরকে বারম্বার উৎক্ষেপণ পূর্বক ঘুরাইলেন, পরে পুনঃ পুনঃ ঘূর্ণনে তাহার জীবন ত্যাগ হইয়াছে জানিয়া তাল তরুর উপরি দিকে কেলিয়া দিলেন। হে মহারাজ! ধেমুকান্তরের শরীরক্ষেপণে মহচ্ছিরা রহৎ তালরক্ষ আহত হইয়া কম্পিত হইল এবং ক্ষণকাল পরেই পার্যন্ত রক্ষকে কম্পিত করিয়া ভাঙ্গিয়া পড়িল, সেই ভগ তরুর ভারে নিকটম্থ অন্তান্য বৃক্ষ কম্পিত হইয়া ভগ্ন হইল এবং তাহাও আর একটাকে কাঁপাইয়া ভাঙ্গিয়া পড়িল॥ ২০॥

ফলতঃ, বলদেবের লীলা বশতঃ প্রক্রিপ্ত ধেমুকান্তরের গর্দভদেহে যে দকল তালর্ক্ষ কম্পিত হুইল সেই দকল রুক্ষ কর্তৃক আহত হওয়াতে মহাবাতাহতের ন্যায় সমুদায় তালবন কম্পানান হই-রাছিল॥ ২৪॥ •

• হে মহারাজ ! বৈত্র যেমন তস্ততে ওত প্রোত, তজ্ঞপ এই বিশ্ব যে অনস্ত জগদীশ্বর ভগবানে কর্মিতাভাবে অনুসূত্ত হইয়া রহিয়াছে সেই ভগবানে ঐ বিষয় আশ্চর্য্য নছে। সে যাহা হউক,

ততঃ কৃষ্ণক রামক জ্ঞাতয়ো ধেমুকস্থা যে। ক্রোফারোহভাদ্রবন্ সর্কো সংরক্ষা হতবাদ্ধবাঃ॥
তাংস্তানাপততঃ কৃষ্ণো রামশ্চ নূপ লীলয়া। গৃহীতপশ্চাচ্চরণান্ প্রাহিণোতৃণরাজস্থ ॥ ২৫॥
ফলপ্রকরসংকীর্ণং দৈত্যদেইের্গতাস্থতিঃ। ররাজ ভূঃ সতালাগ্রৈ র্ঘনিরিব নভস্তলং।
তয়োস্তৎ স্বন্ধ্রহ কর্মা নিশম্য বিবুধাদয়ঃ। মুমুচুঃ পুষ্পবর্ষাণি চক্রু বাদ্যানি ভুক্তবুঃ॥ ২৬॥

धीरतवामी।

যদ্মিদং বিশ্বং ওতং উর্জ্বতন্ত্র পটইব গ্রাধিতং। প্রোতং ভির্যাক্ত্র তন্তব্ পট ইব গ্রাধিতং সর্কতোহসুস্থাতং বর্তত ইত্যর্থ:॥ ২৫ ॥ ঘনৈনভ ইব ভ্রত্তুশং ররাজ। তত্র ফলপ্রকর সংকীর্ণমিতি দৈত্যদেহৈঃ ফলতালার্গ্রেশ্চ সংকীর্ণমিতি অঙ্গুণেখতনীলঘনসাদৃশ্য-সম্পাদনং॥ ২৬ ॥

देवकबएकावनी।

রঞ্চনিত্যাদাবৃক্তি: প্রীবলদেবস্য পরাক্রমণৃষ্ট্যা ভয়াতত্ত্যাগেন তদভিত্রবণাৎ কিছা অপ্রজ্ঞেয়া স্বয়মগ্রতা গমনাং। রানঞ্জি পশ্চাদমূল্পেন্থেন তস্যাপি তৎপার্শ্বে গমনাং। অভিত্রবণেতু দ্বোরপি প্রাধান্যাচ্চকারে। ক্রোষ্টার ইতি মহাক্রোশনং কুর্বাণাঃ। হতবাদ্ধবা ইতিচ শোকেনাপ্যতিক্রোধান্নিক্ব শক্ত্যাতিশয়ং দশ্য়ত ইতি ভাবঃ॥

হে নৃপেতি প্রহর্জেদিয়াৎ। যথা। নৃপদ্যের লীলয়া রাজানোহি মৃগয়া ক্রীড়াকোতুকেন মৃগান্ মন্তীতি অনারাস এব তাৎপর্যাং। তৃণরাজ্বিতি সমাসান্তবিধেরনিত্যত্বাৎ॥ ২৫॥

গতান্থভিরিতি দেহানামপ্রশালনং বোধয়তি। অভএব ররাজ একিঞ্চপক্ষীয়াণামানশজনকত্বাং। ভূভূ মিরূপং তলং তালানাম-ধোদেশ:। কিস্বা। ভ্রিত্যব্যয়ং ভূগোকাদিবং। যথা। স্থপাং স্থল্গিত্যাদিনা ওম: স্থভাব:। ভাগবা সতালাথৈটের্নত্যদেইহরূপ-লক্ষিতা ভূং ফলপ্রক্রমংকীর্ণং যথাস্যাত্তথা ররাজ। নভত্তলং নভঃস্বরূপং। তলং স্বরূপধার্যোরিতি বিশ্ব:॥

গোপানামেব প্রীত্যর্থমপি তত্তদন্যেষাং জাতমিত্যাহ তয়েছিতি ছাষ্ট্যাং। তয়োগুদিতি বা পাঠ:। স্ন্মহদিতি স্পরিবারস্মৈৰ তস্যাবহেলয়াপি মান্নিতস্য পূর্বাকৃত দেবাদিভয়ত্বং ভয়ত্বরুত্বকৃ বোধয়তি। আদিশব্দাদিদ্যাধরাদ্যো মহর্যাদ্যশ্চ ক্রমেণ তেষাং তত্ত্বং কর্মা জ্ঞেয়ং। বাদ্যৈ গীতনৃত্যাভূপি জ্ঞেয়ানি প্রায়োহভোভাং তেষাং সঙ্গতত্বাং॥ ২৬॥

क्रममन्दः।

দৈত্যদেহৈরপলকিতা ভূ: ফলপ্রকরদন্ধীর্ণ যথাদ্যাত্তথা ররাজ নভতলং নতঃস্করপং ॥ ২৬ ॥

ত্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

হে নৃপ ॥ ২৫॥

ফলপ্রকর সন্ধীর্ণ বথাস্যাত্তথ্য ভূ ররাজ। কৈ: দৈত্যদেহৈ নি ভিন্ন তালাগ্রসহিতৈ:। তেখাং স্বত: শ্যামত্বাৎ ক্ষিরোক্ষিত-ভাচ্চ ঘনৈ: শ্যামরকৈ ন ভস্তলমিব। তলং স্বরূপাধাররোরিতি বিশ্ব:॥২৬॥

তদনন্তর ধেমুকাস্থরের যে দকল জ্ঞান্তি গর্দভ রূপ হইয়াছিল, তাহার। ক্রুদ্ধ হইয়া রাম ও ক্ষের প্রতি ধাবমান হইল এবং রোষবশতঃ তাঁহাদের বাদ্ধবদিগকেও আহত করিল কিস্তু সে দকল অস্তরকে আদিতে দেখিয়া রাম এবং ক্রফ পশ্চান্তাগের পদ্ধর ধরিয়া তালর্কে নিক্ষেপ করিলেন ॥২৭॥

অতএব দৈত্যদিগের প্রাণশূন্য দেহ এবং তালফল তথা ভগ্ন তালাগ্র দ্বারা সন্ধীর্ণ ইইরা সেই ভূমি দেইরূপ দীপ্তি পাইতে লাগিল, যেমন মেঘমালাগ্ন আকাশতল দীপ্তি পাইরা থাকে। দে যাহা হউক, রাম ও ক্ষের এই প্রকার স্থমহৎ কর্ম্মের বিবরণ দেবতাদিগের পরিজ্ঞাভ ইইলে তাঁহারা স্থগ্ন হৈতে পুপাবর্ষণ ও তুন্দুভি ধানি এবং নানা প্রকার স্তব স্থৃতি করিতে লাগিলেন॥ ২৬॥

অথ তালফলান্যাদন্ মনুষ্যা গতসাধ্ব সাঃ। তৃণঞ্চ পাশবশ্চের ইতধেনুককাননে॥ কৃষ্ণঃ ক্মলপ্রাক্ষঃ পুণ্যপ্রবণকীর্তুনঃ। স্তৃয়মানোহ্নুগৈর্গেপ্রোং সাগ্রজে। ব্রজমাবিশ্ ॥ ২৭॥ তং গোরজশ্ভুরিতকুস্তলবদ্ধবহ্বন্যপ্রসূনক্ষচিরেক্ষণচারুহাসং।

ঞীধরস্বামী

আদন্ অভক্রন্। ২৭॥

গোবজোভিশ্ছুরিতেয়ু কুন্তলেমু বন্ধং বহং বন্যানি প্রস্নানিচ যতা কচিরমীক্ষণং চাকহাসশ্চ যস্য তঞা তঞা দিদ্ফিতদৃশঃ

বৈষ্ণবজোষণী।

গোপালা ইতাহুজ্1 মহুষ্যা ইত্যুক্তে তেতু মৃতগৰ্দভপ্ৰসঙ্গেন ছুণাং বিধায় নাদন্ কিছন্য এব মহুষ্যা ইত্যুধ্য । হত্ৰেহুক্কাননে ইতি তৃণবাহল্যম্পি হুচিতং ॥

এবং প্রদক্ষেন দিনান্তবদ্য ধেতুক্বধলীলামপি সমাস্ত্র প্রথমগোচারণদিনসন্ধালীলাপি যথাযুক্তনিখং জ্বেরতি তদ্দিনসন্ধালীলামি বর্গান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধানী বিদ্ধানী বিদ্ধান বিদ্ধান

অথ তছ্মজ্যিতবাল্যৈ শ্রীগোপকুমারীবিশেষৈরপি দৃশুমানত্বেন তং বর্ণয়ংস্তেষামন্থরাগোৎপত্তিং স্চয়তি তমিতি ছাত্যা । ঈকণমবলোকনং। গোরস ইত্যাদিনা। উপরি মধ্যে তলেচ শ্রীম্থশোভা দর্শিতা। অন্যবেষসন্তাবেহপি তত্ত্রাত্রিস্তাব বর্ণনং সাধং
বনাদাগতবেন বৈশিষ্ট্যাং। বেণ্কণনং স্বভাবতএব তাদাং প্রহর্ষার্থমাকর্ষণার্থক। উপেতি রাগমাত্রগাননয়বেণ্কণনোপগায়নত্বেন
গীতা কীর্ষি বিস্যু তং! অত্র সাঞ্জতান্তিভিস্তায় তত্ত্রান্ত্রপায়তাং। অত্রব ছলেন ব্যবহিত্ত্বাদ্পুরজনসঙ্গতৌ হিত্সগাঞ্জতাভাব এব প্রবলতে। ত্যা ব্রজাগননির্দ্ধাবে গোরজাল্বু বিতেতি স্চিতগোরজ উক্তিবেণ্কণনমন্থগোপগীতকীর্ষ্তিবিভিত হেড্ত্রুবং

क्रममण्डः

্বদা সাধারণ মহস্যা এবাদন্ নতু গোপাঃ। মৃতগর্মভপ্রসঙ্গে ঘুণাং বিধায়েতি ভাবঃ॥

ত্র সামান্য ব্রহ্মন দৃশ্যমান্ত্রেন বর্ণয়তি ক্লফ ইতি। একেন অসপ প্রম তেজ্সিজেন ঝটিতি ত্রত্লজ্যিতবাল্যৈ প্রীগোপকু-মানীবিশেষেরপি দৃশ্যমান্ত্রেন বর্ণয়ংস্তেম্যাম্প্রাগোংপতিং স্পষ্টয়তি ত্মিতি ছাভ্যাং॥ ২৭॥ ২৮॥

🕮 বিশ্বনাণচক্রবর্তী।

মহ্যান্ত্রত্যাঃ পুলিন্দাদ্য এব নতু গোপালা আদন্ গর্দভরকোকিত্ত্বেন ফলেষু বুণোৎপতেঃ॥

বনালোষ্ঠপ্রবেশলীলামাহ ত্রিভি:। ক্লফ ইতি ব্রঙ্গলাং চিত্তাদ্যাকর্ষণং কমলপ্র্রাক্ষ ইতি নেত্রনাদ্যোবাকর্ষণং। পূণ্যে ধন্যে প্রবিণে কণ্যে বিত্তথাভূতং কীর্ত্তনং বেণুগানং যদ্য সং। ইতি শ্রোব্দ্যাপ্যাকর্ষণং ধ্বনিতং॥২৭॥

এজবালানাং বিশেষত আকর্ষণমাই। তং গোপ্যোহভাগমন্ গোরজোভিশ্ছ রিতেয়ু ব্যাপ্তেয়ু কুন্তলেয়ু বন্ধং বহং বন্যপ্রস্নানি চ

এদিকে ধেরুকাস্থরকে নিহত দেখিয়া সর্ব্ব সাধারণ মানবগণ নির্ভয়চিত্তে তালবনস্থ তালফল ভক্ষণ করিতে প্রবৃত্ত হইল এবং পশুগণ নিরুদ্বেগচিতে তৃণভোজন করিতে আরম্ভ করিল। তৎপরে বাঁহার প্রবণ ও কীর্ত্তন পুণ্যজনক, সেই পদ্মপলাশলোচন ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ অসুচর গোপগণের উচ্চারিত স্তব প্রবণ করিতে ২ অগ্রজ বলরামের সহিত-ব্রজমণ্ডলে প্রবেশ করিলেন॥ ২৭॥

. হে রাজন্ ! শ্রীকৃষ্ণকে দর্শন করিবার নিমিত্ত গোপীদিগের নয়ন উৎক্তিত হইয়াছিল। তাঁহারা প্রত্যেকে প্রবেশ সম্বাদ পাইবামাত্র সকলে মিলিয়া দেখিতে আসিলেন। গাভীগণের পশ্চাৎ পশ্চাৎ বেণুং কণন্তমনুগৈরুপগীতকীর্ত্তিং গোপ্যো দিদৃক্ষিত্দৃশোহভ্যগমন্ সমেতাং॥ ২৮॥ পীরা মুকুন্দমুখসার্ঘমক্ষিভ্সৈস্তাপং জহুবি রহজং ব্রজযোধিতোহহ্নি।
তৎ সংকৃতিং দম্ধিগম্য বিবেশ গোষ্ঠং স্ত্রীড়হাস্বিনয়ং যদপাঙ্গমোকং।

তীধ্যমানী।

निवृक्षिण व पूर्वारक्ष्यं कुछ। पृत्या योगाः जाः ॥ २৮ ॥

ম্কুলস্য মুখপন গছং সার্থং মধু অহিং যো বিবহ তথাজ্ঞাতং তাপং সচ তাসাং সংকৃতিং পূজাং কাং মংকৃতিং কথ্যা কৃতাং তামাহ স্বীডেতি। স্বীড়েন স্লভ্নেন হাসেন বিন্যো যথা ভবতি তথা যদেতং কিং অপাসনোকং ক্টাক্দ্দন্ন তথা তাসাং সংকৃতিং প্রাপ্তি ॥ ২৯ ॥

देवभवरङायगौ।

জ্ঞেবং। অভিগমনে হেছুং দিচুজিভাং সঞ্জাতদিদ্ধা দূশে। যাসাং ইতি দৃশাং করণছেপি দিদৃক্ষাকাই তরা নির্দেশঃ সাতস্তাং বোদ্যতি ভজ্ঞ গাঢান্তবাগমিতি। সমেতা অন্যোন্যং মিপিতা ঐকমত্যেন স্থাাং। অতএব ভ্রমজ্ঞাদিহানেশ্চ। তচ্চ স্বস্থান্তঃ স্বাধা সামেব বুগপদ্ধাবনাং একিকাধ্বনি বা পূর্বমেবাগতানাং উচ্চস্থানবিশেষে বা জ্ঞেয়ং॥ ২৮॥

তত্ত বদু তং তদাহ পীছেতি তৈব্যাখ্যাতং। যদা অল্যোধিতঃ পূর্ব্বোক্তা শুদ্ধিশাঃ মুকুন্সয় সর্বজ্ঃখনোচকরেন তাদ্ধ নামঃ জীক্ষণম মুখ্যবেদং মুখ্কনলভ সৌন্ধ্যবেদ নকৰন্দনিজভূকৈঃ বক্তিভিবেৰ ভ্লাৱৈঃপানপাইতঃ পীরা মমামাদ্যাহ্নি যওদিবসংগুন বতাপভদ প্রাপ্তিদ। ত্থা তাং জহঃ। রাজিল বিরহতাপং তু প্রাতর্দ্ধনেন জহবেৰেতি ভাবঃ। যং যত্ত্বৈ স্ত্রীড়ো হাস্বিন্ধে বিষ্ তাদ্ধনপাদ্ধনাক্ষং কটাক্ষনিক্ষেপ্রপাং তংসংকৃতিং ভাভিঃ কৃতং স্থানং সম্বিগ্যা, মুখা গোঠং গোঠাভনি জিলুহং বিবেশ্তি ॥

ক্রেমদন্দর্ভঃ।

অকীণোৰ ভ্ৰমাতংশানে বৃহং প্ৰবৃত্তীং হৈ ছবিভূতৈঃ ব্যম্পি পীয়া সংকৃতিমহে। স্বীড়ো হাসো ব্য তাদুশো বিন্যু রুচ্যা প্রিফ্নোটিত ব্যবহারে। যত্র এতাদৃশং যুগাস্যাভ্রা যুং স্যাৎ ভজ্ঞপামিত্যুর্থঃ। যদিত্যেতং প্রোক্রাং তাং কিং রূপাং অপাস্থমোকঃ কটাফ্দশ্নিরপামিত্যুর্থঃ॥ ২৮॥

শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তা।

নস্য কচিরমীক্ষণ চাক্ষণ্যক যায় ঈক্ষণ্যা শাক্ষাসো বা যায় তং। নিগুলিকাঃ সংজাতদশনৈজ্ঞা দুশো যাসাং ভা ইতি গোপীক কি লাজা ভয়ংহছুকং বজন মমান্যজ্যো দৃশস্তনাক্ষণৰাং পরিত্যজ্ঞা পতন্ত কাইন্বং প্রাপ্তা ইতি ধ্বনিঃ। তেন চ প্রতিবেশিনাং শ্রের ব্যাপ্ত বাবার হার্যাপ্ত পরিত্যজ্ঞা বাংশ ক্ষেপ্ত বাহান্য ব্যাপ্ত যোগীঃ পরিত্যজ্ঞান সম্পন্নী ভবিত্মির চাপল্যাং স্বয়নের ক্ষপার্থং চলিতা ইত্যুংপ্রেক্ষা ধ্বন্যতে। সম্যতা ইতি সর্বা। এব কুল্বপ্রঃ স্বস্থ গুলান্ বিল্যা চল্ডি পশ্য মান্যে কিং লং বার্যস্তী বধিষ্যানীতি স্বস্থ শ্রাপ্ত গুলুব্যস্তা ইতি ভাবঃ॥ ২৮॥

সভিগম কিং চকুরিতাত মাহ পীষেতি। মুকুল্লা মুথে দাবেং বিভরণ মধু অঞিভ্লৈ পীয়া নয়পালভ্লৈ প্রিভানেন ক্ষন্যাদ্ইগোপীক্সান্যমন্ধনাৰ যথ সাহজিকং বিভং তং তাভি নিংশিক্তয়া সম্পূর্ণ নেজৈরেন পীতনিতি গমতে। ততণ বিতীয় কলে ক্ষন্যা ত্তাবধানে সতি হর্গোবোহাসভাসাং যদৈবাদনি তদৈবোদ্ভয়া লক্ষ্যা সম্পূর্ণবিলাকো হাস্পারতঃ বানকরক্ষ্যের ওঠনক। কিন্ধিৎ সংবৃত্ত তদাবরণ ব্যঞ্জি বিনয়শ্চাভ্দিত্যেতৎ সর্ক্যাধুর্যমের ক্ষেত্র ভূবেভ্যাহ তৎসৎকৃতিং তাল্শাবলোক্ষরপাং সংকৃতিং তাভিং কৃতং কিন্ধিল্পান প্রদানকপং সমানন্মতার্থং সম্বিগ্লা সম্মূর্ণ বিন্ধনিবান্যাদ্বিগ্লা সর্মান্ত গ্লা ক্রাতে তাহাদের পুরোক্ষ্ত গ্লা দাবা শ্লীকৃক্ষের কুন্তল পুস্রিত হইয়াছিল, সেই ক্তলে মর্রপুছ তথা বন্যপ্রস্কৃত বৃদ্ধি দার তাঁহার দর্শন অতিশার ক্ষতির এবং হাস্য অত্যর্থ মনোহর,আর তিনি বদনে বেণু রাথিয়া বাদ্য করিতেছিলেন এবং অনুচ্রগণ নিরন্তর তাহার ক্টিরি গান করিতেছিলেন এবং অনুচ্রগণ নিরন্তর তাহার ক্টিরি গান করিতেছিলেন এবং অনুচ্রগণ নিরন্তর তাহার ক্টিরি গান করিতেছিলে। ২৮॥

ব্রজাঙ্গনাগণ স্বস্থ নেত্ররূপ তৃষিত ভূঙ্গ নিকর দ্বারা ডদীয় বদনারবিন্দ মক্রন্দ বিন্দু পনি করাত্বে তাঁহাদিগের দিবাভাগের বিরহ জন্য সন্তাপ পরিত্যাগ হইল এবং শ্রীকৃষ্ণও তাঁহাদের সলফুলহান্য দ্বারা তয়োর্যশোদারোহিণ্যে। পুত্রয়োঃ পুত্রবৎসলে। যথাকালং যথাকামং ব্যধত্তাং পরমাশিষঃ। গতাধ্বানশ্রমো তত্র মজ্জনোন্মর্দনাদিভিঃ। নীবীং বসিত্বা রুচিরাং দিব্যঅগ্রন্ধমণ্ডিতো।

रिक्थवरकायनी।

এবং তাদানানলং বাত্যামুক্ত্বা নাজোর্দ্ধবোরাই তয়োরিতি ধয়োরপি হো প্রত্যেব অপুত্রভাবেন লালনভরং বোধয়তি ম্থাকাল-মিতি শরলাদো সায়ং প্রদোষাদৌ চ সময়ে বিধেয়ায়সারেল ইত্যর্থ: যথা কামং পুত্রেয়া: অয়োর্বা ইচ্ছায়সারেল। য়থেত্যাদিকয়ো বিপর্যায়েল পাঠ: কচিৎ। পরমা উৎকৃষ্টা আশিষঃ উপভোগান্ সম্পাদিতবত্যো যতঃ পুত্রবংসলে। অনেন প্রাগন্ধারোপণালি-ধন চুধনাদিকং কুশল প্রশ্ন সর্বান্ধ নিরীকণাদিকঞ্চ তথা ওছায়াবার্ডবিত্রাদিকঞ্চ স্চিত্রং॥

ক্রমদন্দর্ভ:।

প্রকাশিয় উৎক্রেপিডেগগান্ ত্র গোঠমধ্যে নিজাবরোধ প্রাসাদে গতঃ আধ্বনঃ অধ্বসমন্ধি প্রমো যয়োঃ। টেরলোপ আর্যঃ গবিদর্পপাঠে গতাধ্বশ্রমাবিত্যর্থঃ। বঠ্গলুক্ ছাল্সঃ। সম্প্রতি ক্ষণং বিশ্রমলীলায়াং বিগতশ্রমাবিত্যর্থঃ এবং গোপালন ভূঙ্গাদ্যয়ু-ক্রণোক্ত প্রকারেণ॥

ত্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

প্রীক্তা গোঁঠং বিবেশ। অনু সংকার সমধিগম ক্রিয়ের ক্রেশে স্বীড়েত্যাদি বিশেষণ্দয়ং তেন চ ব্রীড়্যা সহিতো হাসো বিনয়ণ্চ যত্র তল্পগাস্যারণা তাসাং সংকৃতিং। বতং প্রাপুবতং অপাক্ষ্য মোক্ষো যত্র তদ্বথা স্যান্তথা সমধিগম্য গোঁঠং বিবেশেন্ত্র্যঃ। তাডিং কৃতা স্বীড় হাসবিনয়া তাদৃশাবলোক রূপা সংকৃতিং ত্যাশ্চাধিগমং ক্রেন তংপ্রাপুবদপাসমোক্ষ সহিতঃ কৃত ইতি ক্লিতং। অনু সম্পূর্ণ নেরাভ্যাং দর্শনে তাসাং লক্ষ্ম। সদ্যো বিম্থীভাবং স্যাদ্তত্তংকটাক্ষ প্রাপ্তার্থনেব ক্রুমেমপিতং তথেব স্বাধ্রপ্রবাজ্যনা ক্রেনি হর্মকারিপা স্বপরিজ্বনানীয় অপিতং হাসক্র্যক গৃহীত্বা এতদ্বস্ত্রন্থন্যাল্লগৃহে তত্র ভবতে দেন্ন্যভাবদেব বস্তুতি তংক্রপ্রাণ্যভাবিতি থলৈব তত্বগারনমানের স্বাক্ত্রাই সাক্রেন্ত্রাই প্রাণ্যভাবিতি থলৈব তত্বগারনমানের ক্রেন্ত্রাই প্রাণ্ড আসিং তাতিত্র স্বান্ত্রাই । সচ মহাচপল পূর্বনেব তদ্বগ্রং তাসামন্তর্গ হিল্ল স্বান্ত্রাই ক্রেনি বিদ্যালয় ক্রাত্র । সচ মহাচপল পূর্বনেব তদ্বগ্রং তাসামন্তর্গ হিল্ল স্বান্ত্রাই প্রান্ত্রাই ক্রিড্য ক্রিড্য ক্রিড্য ক্রিড্য ক্রিড্য ক্রিড্য ক্রিড্য ক্রিড্য ক্রেন্ত্রাই ক্রিড্য ক্রিড্য ক্রিড্য ক্রিড্য ক্রিড্য ক্রেন্ত্রাই ক্রিড্য ক্রিড্য ক্রিড্য ক্রিড্য ক্রিড্য ক্রেন্ত্রাই ক্রেন্ত্রাই ক্রেন্ত্রাই ক্রেন্ত্রাই ক্রেন্ত্রাই ক্রেন্ত্রাই ক্রেন্ত্রাই ক্রেন্স্যান্ত্র ক্রেন্ত্রাই ক্রেন্ত্র ক্রেন্ত্রাই ক্রেন্ত্র ক্রিড্র ক্রেন্ত্র ক্রেন্ত্র ক্রেন্ত্র ক্রেন্ত্র ক্রেন্ত্র ক্রেন্ত্র ক্রেন্ত্র ক্রে

যথাকানং পুত্রোর্বাস্থিতং ভক্ষ্যাদিকমনতিক্রম্য যথাকালং প্রদোষাদিকং ভোজনকালমনতিক্রম্য প্রমাশিষো ভক্ষ্যপরিধেয়াদি-ভোগান্॥

ন এনে। হলম: সচেখরছাররলীলয়া তদ্যাভাবন্তনপ্রম:। গতোহধ্বনোহনপ্রম: স এব ময়োতৌ। নীবীং পরিধানবস্ত্রং ॥

বিনয় প্রকাশক কটাক্ষ দর্শনরূপ সৎকার পাইয়া গোঠে প্রবিষ্ট হইলেন। তদনন্তর পূত্রবৎসলা বশোদা এবং রোহিণীদেবী সময় ও অভিলাষাসুসারে সেই ২ পুত্রের প্রতি পরম আশীষ প্রদান করি- ক্রেন। রামকৃষ্ণ ছই ল্রাতায় মজ্জন ও উন্মর্দনাদি দ্বারা পথ্ঞান্তি নিবারণপূর্বক মনোহর বসন পরি-ধন ক্রিলেন, পরে দিব্য মাল্য ও দিব্য গদ্ধে ভূষিত হইলেন। তাহার পর জননী হস্মাদ অম আনিয়া

জনম্যুপছতং প্রাশ্য সাদমমুপলালিতো। সংবিশ্য বরশয্যায়াং স্থথং স্বয়্পতুর্ত্র জে। এবং স ভগবান্ কৃষ্ণো রন্দাবনচরঃ কচিৎ। যথো রাময়তে রাজন্ কালিন্দীং স্থিভির্তঃ। অথ গাবশ্চ গোপাশ্চ নিদাঘাতপপীড়িতাঃ। ছফীং জলং পপুস্তস্যা স্তৃযান্তা বিষদৃষিতং।

বৈষ্ণবভোষণী।

মিব স্নানম্বাভাবেন তেষামপরিবর্তনাং প্রাতরেব তদাধিক্যোচিত্যান্ত। জননীভাামুপস্থতং পরিবিষ্টং প্রাশ্য প্রকর্ষেণ স্থেনাশিত্ব। উপলালিতৌ তাম্পাদি মুখ্যাসাপর্গ স্থেনাশিত্ব। তিথাচি পালোকরথণ্ডে বর্ণিডং। তিলাংক ভবনশ্রেষ্ঠে রম্যে দীপৈবি রাজিতে। শক্ষে বিচিত্রপর্যক্ষে নানা পূক্ষবিবাসিতে। তিল্পিন্তে হরিঃ ক্ষান্তং শেষো নারায়ণো যথেতি বরশ্যায়াং, দিব্যপর্যক্ষোপরি সংবিশ্ব শ্রীপাত্তং প্রসার্য্য জনেন ক্রীভার্থং নিদ্রাশং কণং বিলক্ষে বোধ্যতে। তদেব স্থাতি স্থাব্যাদিতি। স্থি দাসাদি ক্রভোপস্থত তামুল সমর্পন চামরান্দোলন পালাক্ষ স্থাহন ন্য গোঞ্জিত গানাদি স্থ্যকারেণেত্যর্থ:॥

অত্রাধ্যায় স্মাপ্ত্যকরণং ক্রম প্রাপ্তামিপ সর্ক ছংখ্যয় তয়া তাকাং কালিয় দ্মন লীলামহ্ম্বতা বৈচিত্তাং। অনুমূত্যাক ততাং আবেশাদের তাং প্রথম ভাগতোর জুমারদ্ধামিপ ত্মাত্রমূজ্যধায়ঃ স্মাপ্তিষ্যতে। প্নশ্চ বিংরতাপি তত্র স্বয়ং ভগরতি ব্যন্নায়াঃ স্বদোষোনাপ্রত ইতি শ্রোভূণামপরিতোষমাশক্ষা বিলোক্য দ্বিতাং ক্রফামিত্যেকেনের পদ্যেন নালীলা ক্র্যিষ্যতে। বাজপ্রশ্ন সমুদ্ধিত মনোবেগজাদেরতু বিস্তার্যিষ্যতে। অথ তথৈবোপক্রমতে এবমিত্যাদিনা এবং পুর্ব্বোক্ত প্রকারেণ গোপালন ভ্রমান্ত্রকরণাদিনেতার্থা। স ব্রজ্ঞানক জীবনভূতো কুলাবনচরো ভগরান্ ক্রফ ইতি ভগরতায়মপি সার্গ্রভিত্ত ছিশেষং মারতি। ক্রিটিং ক্রদাহিক বোলারস্তর্বস্য নিলাবে। রামং বিনা ইতি অভ্যথানেন তাদৃশ সাহস নিষেধ্যয় নাভূশিক্ষা কালিয়ার্লে প্রবেশো নিরার্যেতেতি সম্ভাব্য ত্মিন্ দিন এব তব্র গত ইতি ভাবং। বৃত্যে বেষ্টিতঃ শ্রীম্পদন্দর্শনাদ্যর্থং সর্ব্বোমের প্রেম্পদ্ধ্যা পরিতোভিকাগননাং বিশেষতঃ রেহেন ব্রজেখর্য্যা অন্ধ্রশাসনাত ॥

গাবশ্চ গোপাশ্চ অথানস্তরমের পপুরিতি গাবস্তাবদন্যত্ত চালিতা অপি নিদাঘাতপপীড়িতাং সত্য স্তক্ষলমূর্দ্ধাং যমুনাতীরাং দৃষ্ট্র পশু তথা তলোযাক্ষানাদের ক্রতগত্যা প্রবিশ্ব পপুঃ। গোপাশ্চ তং পীড়িতা এব কিন্তু প্রসিদ্ধাং তলোযাং জানস্ত স্তাসাং মৃতিং দৃষ্ট্র। শরীব জিহাস্থা পপুরিতি ক্রেয়ং। অতএব গোপাশ্চেতি তদনস্তরমূক্তং। তাশ্চ তেচাগ্রগামিনঃ কতিচিদের ক্রেয়া অতএব গোপাশ্চেতি তদনস্তরমূক্তং। তাশ্চ তেচাগ্রগামিনঃ কতিচিদের ক্রেয়া আইক্রেফস্যকাকিছেন পশ্চাদিত্যক্তং তৈরণকারাং। সংখ্যাতীত গোচারণায় সমস্বাদ্ধান এব গল্পং তেষাং থোগ্যহাং। পশ্চাশগামিনা আক্রিফেন দৃশ্যমানানাং গ্রাং অণি তংপানাসম্ভবাং দৃষ্ট্রে কারণমাহ বিষদ্ধিত্মিতি॥

क्यमन्द्रः।

ছ্টস্বকাৰণমাহ বিষদূ্যিত্মিতি।

🕮 বিশ্বনাথচক্রবর্তী।

এবং কার্ত্তিক গোপাইসীদিন লীলাং সমাপ্য তর্ষীয় নিদাঘগতস্য ক্সাচিদ্দিনস্য লীলামাহ এব্যাতি রামন্তে ইতি জন্মক শান্তিক সানার্থং মাতৃত্যাং তস্য তদিনে গৃহ এবোপবেশিতভাং ॥

গাব ইতি পশ্চাৎ শনৈরাগচ্ছন্তং রুঞ্চমনপেক্য ত্যার্তস্থাৎ ক্রতগামিন্যঃ তদরুক্রতাঃ কেচন গোপাশ্চ॥

দিলে ভোজন করিয়া রমণীয়শয্যায় শয়নপূর্বক পরমন্ত্থে নিদ্রা গেলেন। হে রাজন্। ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ রন্দাবনে পর্যাটন করত ঐ প্রকারে কাল্যাপন করিতেছিলেন। এক দিবদ বলরামকে না বলিয়া অন্যান্য স্থায় পরিবৃত হওত কালিন্দীকূলে গোচারণ করিতে লাগিলেন। হে মহারাজ! কালিন্দীর জল মধ্যে কালিয়নামে একটা ভয়ঙ্কর বিষধর ছিল, তাহার বিষে কালিন্দীর জল সর্বদা ভয়ানকরপে দ্বিত হইয়া থাকিত। গো এবং গোপগণ তম্মিকটে গিয়া নিদাঘ ও আতপে সাতিশয় আর্ত্ত হুইল

বিষাম্ভ শুজুপস্পূশ্য দৈবোপহতচেতসঃ। নিপেতু ব্যসবঃ মর্বের সলিলাত্তে কুরুদ্ধ।
বীক্ষ্য তান্ বৈ তথাভূতান্ কুক্ষো যোগেশবেশবঃ। ঈক্ষয়াহ্মতবর্ষিণ্যা স্বনাথান্ সমজীবয়ৎ ॥২৯
তে সংপ্রতীতস্মৃতয়ঃ সমুখায় জলান্তিকাৎ। আসন্ স্থবিস্মিতাঃ সর্বের বীক্ষ্যমাণাঃ পরস্পারং।
অন্ত্যংসত তদ্রাজন্ গোবিন্দাসুগ্রহেক্ষিতং। পীষা বিষং পরেত্স্য পুনরুখানমান্তনঃ॥ ৩০ ॥

শ্রীধরস্বামী।

সম্প্রতি সদ্যএন ইতা প্রাপ্তা স্মৃতি হৈ সে সম্প্রতীত স্মৃত্যঃ। যদা সম্যক্ প্রতীতা প্রতি প্রাপ্তা স্মৃতি হৈছে তথেতি॥৩০॥

বৈফ্যবতোষণী।

এতচে সর্ব্ধ: শ্রীভগবতো ভাবি লীলা বিশেষধিষ্ঠাতৃশক্তি বৈভবমেবেত্যাহ দেবো ভগবান্ তত্তেদং দৈবং লীলাশক্তিবৈদ্বং তেনোপহতং জ্ঞানং বেষাং তে তত্ত্বং ঈশচেষ্টিত ইতি বক্ষ্যতেচ ক্লফেনাছত কর্মণেতি উপস্পৃশ্য কিকিদাচন্য বিষাম্ভ ইতি পুন্কিজি শুদ্দিশ্য বিবক্ষা। ব্যাসৰ ইবাত্রচ তাদৃশ দৈবমেৰ কারণং॥

বৈএব ঈক্ষেত্যবিলদং বোধ্যতি যতঃ স্থনাথান্ অনন্যগতীন্ অতএবায়তবর্ষিণা। প্রাক্ত নন্তমিব তেষাং তদীনা নামেকং জীবনহেতুং কাক্ণাং বর্ষি হুং শীলং বজাঃ। বদ্ধা অনৃতং তাদৃশং কাক্ণ্যাশ্রুলং তদ্বিণা। বথোক্তং দিতীয়ে। এই বজে বজ্পশূন্ বিবতোয়পীতান্ পালানজীবয়দমুগ্রহ দৃষ্টিবৃষ্টোতি। সম্যগ্রানি শোকাদিনিরাসেন মূণপদেবাজীবয়ং স্থানকবোং। তাদৃশা শক্তিন ক্রিনা। কিন্তু স্বাভাবিক্যেবেত্যাহ যোগেশবেশ্বর ইতি বহুপাসনা বিশেষেধিণ যোগেশবাণামপি তুত্তক্তিবিত্যথং॥ ২১

স্থবিস্মিতাঃ স্কুম্পুরিব সর্কোষামেকদৈব সদ্যঃ সমুখানাং পরম্পরং বীক্ষ্যমাণা ইত্যস্তবি স্মিয় স্বভাবাং।

গোবিন্দ্য্য গোকুলেক্র্যান্ত্রহেক্তিময়নংসত অধুমিতবস্তঃ। যথা বিষং পীথা পরেত্যাপ্যায়নঃ পুন্রপান্মিতি এতদপ্যবাহ-রাং আয়নাং মোক্ষণমনুষ্ত্যেতি জ্ঞেয়ং হে রাজন্নিতি ভ্রাদৃশামেত্যযুক্তমেবেতি ভাবঃ ॥ ৩০ ॥

तक्यमन्दर्भः।

সক্ষাঞ্পপত্তি সমাধানার্থনাহ দৈবেতি। দেবো ভগবান্ তদ্যেদং ভাবিলীলাশক্তিঃ বৈভবং দৈনং। ব্যসন ইব অত্র হ তাদৃশ দৈব্দের কাবণং জ্ঞোং॥ ২৯॥

পুনকুখানং গোবিকাহুগুহেফিতং তদ্ধেতুকুমুহুমংসত ॥ ৩০॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

দেবো ভগৰাংতদ্যেদং দৈবং আলাশক্তিবৈভবং তেনোপহতবৃদ্ধয়। ক্ষেনাছ্ত কর্মণে ইতি বক্ষ্যোণসাহ। বাসৰ ইতি লাঁলা-সেঠিৰাথং বোপগায়য়ৈৰ নিত্যানামপি তেখামস্নাজাদ্য তথা দশনাহ॥ ২৯॥

তে জলান্তিকাং সমুখায় স্থবিশ্বিতা ইতি মৃতা এব বলং কেন জীবিতাঃ কেনাপ্যোদধেন বিষহ্বমন্ত্রেণ বা পরম্পরনিতি সথে কিং প্রেত্তভ্রুস্যং জানাদীতি প্রত্যেক প্রশ্লাং। এবং মহাদন্দেহে প্রবর্তনানে ভো বল্লা আং মনৈবৈত্তৎ কারণং জনেন সর্বত্যানি অনমঞ্জুরিষ্যথেতি গর্গাচার্য্যবচন শ্বরণাৎ সম্যাগবগ্রমিতি কেনাপ্যক্তে সতি সর্ব্বে এব সম্যক্ প্রকাবেণ প্রতীতা প্রতীতি বিষ্ণীক্তা আজি ত্তদীয়া হৈ তথাভূতা আসন্ধিত্যবৃদ্ধঃ ॥

অন্ন অনন্তর্মৈক নত্ত্যেন ব্রজরাজেষ্টনেব শ্রীনারায়ণেনাবিষ্টম্য গোবিদ্দস্য অন্তগ্রেফিতমেব কারণমন্দ্রত। যত্ত্বাং পীর্ষ বিষয়িক্যালিয়াওক দ

এবং পিপাদায় আকুল হওয়াঁতে সেই ছুই জলই যথেই পান করিল, হে কুরুদ্ধঃ! দৈবোপহতচিত্ত হইয়া দেই বিযাক্ত বারি পান করিবামাত্র দকল ব্যক্তিই গতাস্থ হইয়া জলোপান্তে পতিত
হইল। পরস্ত যোগেশ্বর দিগের ঈশ্বর ভগবান্ হরি যথন তাহাদিগকে তদ্রপ অবলোকন করিলেন
তৎক্ষণেই অমৃতবর্ষিণী দৃষ্টি দারা পুনজ্জীবিত করিলেন। হে রাজন্! ভগবান্ আপনি ঐ সকল
ব্যক্তির নাথ, ইহাতে তাহাদিগকে ঐরপে পুনজীবিত করা ভগবানের বিচিত্র কর্মানহে॥ ২৯॥

ি সে যাহাহউক সেই সকল ব্যক্তি জলসমীপ হইতে উত্থিত হইয়া পরস্পারকে নিরীক্ষণ করত দবিস্মানিতে কিয়ৎক্ষণ দাড়াইয়া রহিল। তাহাদিণের স্মৃতি সম্যক্পকারে প্রতি প্রাপ্ত ইয়াছিল

॥ # ॥ ইতি শীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংদ্যাং সংহিতায়াং বৈয়াদিক্যাং দশমক্ষে বৃন্দাবন ক্রীড়ায়াং ধেনুক্বধো নাম পঞ্চশেশহধ্যায়ঃ ॥ # ॥ ১৫ ॥ # ॥

বাদরায় পিরুবাচ॥

বিলোক্য দ্যিতাং কৃষ্ণাং কৃষ্ণঃ কৃষ্ণাছিনা বিভূঃ। তদ্যা বিশুদ্ধি ছিন্ম বিচ্ছন্ দৰ্পং তমুদবাসয়ৎ ॥১॥ রাজোবাচ ॥

কথমন্তর্জনেহগাথে ন্যগৃহ্লান্তগ্বানহিং। স বৈ বহুযুগাবাসং যথাদীদ্বিপ্র কথ্যতাং॥ ২॥

ञ्जीवत्रवामी ।

॥ * ॥ टेंकि की मणरम शक्तमः॥ * ॥

বোড়শে কালিয়সোকে। নিপ্রহো যম্নারদে। তৎপত্নীভি অভেনাথ ক্লেনাগুগ্রহঃ কৃতঃ। হছা রাণ্ডদৈভেয়ান্ ক্র্মিডাল ক লান্সং। প্রীভোহনুভাৎ ফণারদে কালিয়স্য কলানিধিঃ॥ • ॥

উদবাসয়ৎ নিঃসারিতবান ॥ ১ ॥

বছনি বুগানি আবাদো ষদ্য তম্হিং। স বৈ আহি: অজলচরোছপি তামিলস্তর্জনে যথা যেন প্রকারেণাদীং। অথবা ব্যনি

देवकबटकावनी।

॥ * ॥ ইতি औरवक्षवटकांवगाः मनगिव्यन्ताः शक्षमः ॥ *॥

কৃষ্ণামিতি বৰ্ণতো নামত ত অতঃ স্থাতিষ্যা ত্ৰিবিদ্ধিত ছেনাবশ্যপ্ৰতিকাৰ্য্যয় তিপ্ৰেতং। ক্লংখনাহিনেতি মহাত্ৰিবিষয় খমুকং ন কেবলং তদ্যা এব তদ্ধিতা যাতৃত্ব অপিতু সৰ্বেষামপি যতঃ ক্লফঃ কৰ্ষতি তুংখানীতি জলপানাদিদিদ্ধ্যা ব্ৰহ্ম মহাতীৰ্থেদ্ধেরণাদিনা জগতামপি দমনাদিনা কালিয়স্যাপি হিতাচরণাৎ বাল্যলীলারসাবিষ্ট্সাপি ত্স্য পূৰ্বেবং আবস্বে প্ৰথম্মপুদ্দন্ত ইত্যাহ বিভূবিতি॥ ১॥

ভগবান্ সর্কোণিপি প্রকারেণ কর্ত্তু সমর্থ: তথাপি কথং কেন প্রকারেণেতি বৈ চ। সূচ বছ্যুগাবাস্মিতি বিশ্লুছত্বাং ব**ুনি**

ক্রমসন্দর্ভ:।

॥ 🛎 ॥ 🏻 रेडि 🕮 नभरम जनमन्दर्छ शक्षणभः ॥ 🛊 ॥

বহুগুগাবাসমিতি বিশ্বতথাং বহুনি যুগানি আবাদো যত্র তাদৃশং যথা ভবতি তথা যথাস্যাতথা কথাতামিত্যেবারয়: ॥ ১॥ যব্যপি মুনীন্দ্রেণ তবিশেষত্থেশক্ষা সজ্জিপ্য কথিভং তথা তদজানেন বা তলীলা সামান্যাভিলাযাদেব তথা পৃষ্টমিতি দশ্যতি॥ ২॥

শ্ৰীবিশ্বনাগচক্রবর্তী।

॥ * ॥ ইতি সারাথিদর্শিন্যাং হর্ষিণ্যাং ভক্তচেতসাং। দশমেহন্মিন্ পঞ্চদশং সঙ্গতঃ সভাঃ ॥ * ॥
ন্যুগ্রুংং কালিয়ং ক্ষো দশ্রন্ স্বনপাছ্ জং। স্বতোহহিছিঃ প্রসন্ধান্ বোড়শে নিরসারয়ং॥ • ॥
ক্ষাং যম্নাং উদবাসয়ং তন্মারিঃসারিতবান্॥ > ॥

বহুনি যুগানি ব্যাপ্য আবাদো যত্ৰ তন্ত্ৰণা স্যাত্তণা আসীৎ বিশেষত: প্ৰকৰ্ষেণ কথ্যতাং ॥ ২ ॥

অতএব কালকৃট পান করিয়। মরণানন্তর আপনাদের যে পুনরায় জীবন লাভ হইল তাহান্ন প্রতি ভগ-বান্ গোবিন্দের অনুগ্রহ দৃষ্টিকেই কারণ বলিয়া মানিতে লাগিল ॥ ৩০ ॥

॥ अ॥ टें जि मन्द्रा প्रक्षम् ॥ अ॥

যোড়শ অধ্যায়ে যমুনাহ্রদে শ্রীকৃষ্ণকর্তৃক কালিয়নিগ্রন্থ এবং তৎপত্নীদিগের স্তবে তাহার প্রতি শ্রীকৃষ্ণের করুণা॥ • ॥

শুকদেব কহিলেন, হে রাজন্ ! কালসর্প কালিয়বার। কালিদ্দীর জল দুষিত দেখিয়। ভগবান্
শীকৃষ্ণ তাহার বিশুদ্ধি অয়েষণ করত দেই সর্পকে নিগ্রহপূর্বক তথা হইতে নিঃসারিত করিয়।
দিয়াছিলেন॥ ১॥

রাজা পরীক্ষিৎ জিজ্ঞাসা করিলেন হে বিপ্র! ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ কালিন্দীর অগাধ জলমধ্যে কালিয়

ব্রহ্মন্ ভগবতস্তস্য ভূমঃ স্বচ্ছন্দ্বর্ত্তিনঃ। গোপালোদারচরিতং কস্তৃপ্তাম্তং জুধন্॥ ০॥ প্রীশুক উবাচ॥

কালিল্যাং কালিয়দ্যাদীদ্ধুদঃ কশ্চি দ্বিষামিনা। শ্রপ্যমাণপ্রা যুস্মিন্ পতস্ত্রপরিগাঃ থগাঃ ॥ ৪॥

वीधतवागी।

যুগানি আবাসো যথা ভবতি তথা বেন প্রকারেণ স বৈ তত্রাসীদিতি কথাতামিতি॥২॥ গোপালেন গোপালনেন ষত্নারচরিতং তদেবামৃতং অতঃ কথাতামিতি॥৩॥ শ্রপ্যমাণং প্রামানং প্রো যস্য স: অতঃ উপরি গছস্তঃ থগা যশ্মিন্ পত্তি॥৪॥

বৈষ্ণবতোষণী।

যুগানি আবাদো যত্র তাদৃশং যথাস্যান্তথা যথাসীত্তথা কথ্যতামিত্যেবাষয়:। বিপ্র হে পরমবিদ্যাপ্রবীণ। তথাচ যাজ্ঞবক্ষঃ। জন্মন-আন্ধানো জ্ঞেয়: সংস্কারৈদ্বি জি উচ্যতে। বিদ্যয়া যাতি বিপ্রস্থং ত্রিভিঃ শ্রোত্রিয়লক্ষণমিতি॥ ২ ॥

ষদাপি শ্রীমুনীজ্রেণ তদ্বিশেষত্বংশশয়য়া সংক্ষিপ্য কথিতং। তথাপি তদজ্ঞানেন রাজ্ঞা তল্লীলা সামান্যাভিলাষাদেব তথা দৃষ্টমিতি তথাক্যেনৈব দর্শয়তি। ত্রন্ধানিত ভগবত ঐশব্যাদি ঘট্কযুক্তস্য ভূয়ং সর্বগাপি সর্বাতিশয়তস্য তত্রাপি অচ্ছন্দবর্ত্তিনঃ বৈর্বীলাপ্রকা শিনঃ এবমেবং ভূতস্য গোপালঙ্গাত্যমূর্পং উদারং সর্বতোহপি মহৎ প্রমানন্দাত্ বা যচ্চরিতং তজ্জ্মমাণঃ কল্পেয়ৎ অত্প্রেটি হেতুরমৃত্মিবেতি॥ ৩॥

প্রিজক উবাচ ইতি তদেবং নিশম্য স্বাসন্ত্বন ত্ত্মিন্ জাতন্তেই স্থত্ঃথাত্মকং সর্ক্ষেব তাদৃশায় নিবেদনীয়মিতাভিপ্রায়েণ।
প্রিজবাসিত্ঃথম্মনিজত্বঃথাত্মকম্পি ত্ত্মিবেদ্মন্ শুক্বদ্ধথাশ্রুত্মেবোবাচ নত্বন্ত্রেব বিস্তার্যাপীত্যর্থ:। কালিন্দ্যাং হ্রদ ইতি
তদ্যা দক্ষিণভাগে বর্ত্তমান্দ্য তদ্য ত্ত্মার্ত্তজ্বাং ভ্যাঃ প্রবাহস্ত্তরতঃ পৃথগেবোহাঃ। অন্যথা তদ্ ক্ষিজলেন বাদ্বক্লাবাস্থ্রীমধ্প্র্যাদিব্যাপ্তেঃ। স্তু কালিয়্স্য বিষায়িনা প্রপ্যাণ্পয়া আসাৎ উপরিগা উদ্ধং গছতেঃ থগা ইতি ত্ত্রাপি দ্বগত্মভিপ্রেতং॥ ৪॥

ক্রমসন্দর্ভঃ।

ব্ৰদ্মন্নিতি স তু তৎপ্ৰীতমে স্বত্নখকথানিবেদনায় চ নাত্যস্তমৰ্থেইভিনিবিশ্য যথা শ্ৰুতমেবোবাচেত্যৰ্থ:॥ ৩॥ ৪॥

ত্রীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

গ্ৰাং ক্লেৰেণ সৰ্ব্বভক্তশ্ৰোত্তাণীক্ৰিয়াণাঞ্চ পালনেনোদারং স্থপদাত্চরিতং ॥ ৩ ॥
কালিন্দ্যাং এদ ইতি হরিবংশোক্তের্যোজনপ্রমাণস্তম্যা দক্ষিণে ভাগে তৎপ্রবাহেণাস্পৃষ্ট এব । অন্যথা ত্তবিষ্ঠিন প্রমাণস্থ প্রাদিদেশস্থ্বনৈরব্যবহার্যোভবিষ্যাদিতি জ্বেয়ং । প্রপ্রামাণং পঢ়ামানং পরো যদ্য সঃ ॥ ৪ ॥

সর্পকে কি প্রকারে নিগ্রন্থ করিয়াছিলেন, আর সেই সর্প কি প্রকারে বহুযুগপর্যান্ত তমাধ্যে বাস করিয়াছিল বলিতে আজ্ঞা ইউক॥২॥

ব্ৰহ্মন্! ভগবান্ প্ৰীকৃষ্ণ সৰ্বব্যাপী, স্বেচ্ছাত্মসারে সর্বত্তি বর্তমান হয়েন, ভাঁহার গোপালনদারা যে উদার চরিত্র তাহা অমৃতস্বরূপ, সেই চরিতামৃত দেবা করিয়া কাহার ভৃপ্তি বোধ হইয়া থাকে !॥ ৩॥

শুক্দেব কহিলেন রাজন্! কালিন্দীর মধ্যে অন্যএকটা হ্রদ ছিল, তাহার অভ্যন্তরে কালিয় বাস ক্রিত। কালিয়ের বিষামিদারা সেই হ্রদের জল পাক হইয়া সর্বদাই ফুটিত। অতএব তাহার উপর দিয়া পক্ষি প্রভৃতি খেচরগণ গমন করিলে তন্মধ্যে পতিত হইয়া তৎক্ষণাৎ প্রাণত্যাগ করিত॥ ৪॥ বিপ্রদেশ বিষদেশির্মারুতেনাভিমর্ষিতা:। খ্রিয়ন্তে তীরগা ষদ্য প্রাণিনঃ স্থিরজঙ্গনাঃ॥ ৫॥ তং চণ্ডবেগবিষবীর্য্মবেক্ষ্য তেন ছুক্তাং নদীঞ্চ প্রদানবৈতারঃ। কুঞ্চঃ কদম্বমধিরুহ ততোহতিতুঙ্গাদাক্ষোট্য গাঢ়রদনোন্যপত্তিষোদে॥ ৬॥ সপ্রদঃ পুরুষসারনিপাতবৈগসংক্ষোভিতোরগবিষোচ্ছ্রসিতামুরাশিঃ।

. शिक्षतच्यां ग्री

কিঞ্চ বিপ্রতাত অধুকণাযুক্তন বিষোদকতরঙ্গপর্শিমাক্তেন স্পৃষ্ঠী যস্য তীরগাং শ্রিয়স্তে স হ্রদ আসীৎ ॥ ৫ ॥
তং কালিয়ং চণ্ডোবেগো যস্য তদ্বিমমেব বীর্যাং যস্য তং। কদম্বমিতি ভাবিশ্রীকৃষ্ণচরণস্পর্শভাগ্যেন একস্ততীরেছপি ন শুদ্ধঃ।
অমৃতমাহরতা গ্রুত্মক্রাক্তানিতি পুরাণান্তরং। আন্ফোট্য বাহুং করতলেনাহত্য গাঢ়া দৃঢ়বদ্ধা রসনা যেন সং ॥ ৬ ॥

তদা স্প্স্য হ্রদ: পুরুষ্প্রেষ্ঠ্য পতনবেগেন সংক্ষোভিতানাং উরগাণাং বিবৈক্লমিতোহমুরাশির্যাস:। পর্যাক্ পরিত: ধুরু:

বৈষ্ণবতোষণী।

বিশ্রমতেতি শ্রপ্যমাণপয়স্তয়া সনা জবেন তৎফণানামূচ্চলনাৎ ইতি মারুতস্যাপি দাহক স্বমৃক্তং। অন্যাস্চ বিশেষং শ্রীহরিবংশে। দীর্ষং যোজনবিস্তারং ত্তবং ত্রিদশৈরপি। গন্তীরমক্ষোত্য জলং নিক্ষপামিব সাগরং। হুংখোপসর্গং তীরের স্সইপরি পুলৈ বি লৈ:। বিষারণিভবস্যায়ের্ধ্নেন পরিবেষ্টিতং। তৃণেশ্বপি পতৎস্বপ্সু জলস্ত ইব তেজসা। সমস্তাদেঘাজনং সাগ্রং তীরেশ্বপি হুরাসদ্মিতি। এবং ভূমিগুহায়াং তৎপুরী জলস্তস্তবিদ্যয়া জলমধ্য এব বা ॥৫॥

বেগঃ শীঘ্রপ্রসর্পণং চণ্ডেতি অপ্রতিবাধ্যত্বাদিতোরং নিঃসাধ্য এবেতি ভাবঃ। তেন কালিয়েন হেতুনা। অধিকত্ব তচ্ছিধরে আকৃত্ব। তথাচ তত্ত্বৈব আকৃত্বপণঃ ক্লফঃ কদন্ধশিথরং মুদেতি। ততঃ কদন্ধং গাঢ়বসন ইতানেন কেশাদীনামপি গাঢ়বস্ধনমূপলকাতে। তথাচ তত্ত্বৈব বন্ধা পরিকরং দৃঢ়মিতি নাপতদিত্যক্ত হেতুং থলানাং সংযমনায় অবতারঃ স্থলোকাদ্বতরণং কিন্বা মৎস্যাদ্যবতারা অপি যদ্য স ইতি কালিয়দমনার্থমিত্যুথঃ॥ ৬॥

পুরুষসার্ত্বাদেব নিপাতে বেগ:। অন্যত্তি:। যথা। পুরুষস্য ভগবত: সারেণ কিঞ্ছিলপ্রাকট্যেন যো নিপাতত্ত্ব্য বেগেন

ক্রমসন্দর্ভ:।

বিঞ্ছাতেতি জলস্তম্ভবিদ্যা তনাধ্য এব ডংপুরী ছংখোপসর্পং জীরেষ্ সমর্গৈবি পুলৈরিতি জীহরিবংশদৃষ্ট্যা বিলেষণি ॥৫॥৬॥ পুরুষস্য ভগবতঃ সারেণ কিঞ্চিদ্বলপ্রাকট্যেনেত্যাদ্যপি গ্রাহং।

ত্রীবিখনাগচক্রবর্তী।

বিপ্রস্থাতা অমুকণগুকেন বিষোদকতরঙ্গম্পর্শিযারুতেন অভিমৃষ্টাঃ ম্পৃষ্টাঃ॥ ¢॥

তং কালিয়ং কদখমিতি ভাবিনা শ্রীক্লচরণস্পর্শভাগ্যেন স একস্তত্তীরে ন শুষ্কঃ অমৃতমাহরতা গরুত্মতাক্রান্তত্বাদিতি পুরাণাস্তব-মিতি শ্রীস্থামিচরণাঃ গাঢ়ং দৃঢ়ং বন্ধা রসনা রসনাপদোপলক্ষিতাঃ কুত্তলোফীযাদয়োপি যেন সঃ। আক্ষোট্য বাহং করতলেনাহত্য॥ ৬॥ ততশ্চ পুরুষস্য ক্লফ্স্য সারেণ বলেন যো নিপাতবেগস্তেন সংক্ষোভিতানাং উরগাণাং বিধৈক্লস্তোহস্থামির্যস্য সঃ। বিশেণ

অপর তাহার তীর দিয়া যে দকল স্থাবর অথবা জঙ্গম প্রাণী গমনাগমন করিত, তাহারাও বিব-জলের তরঙ্গম্পার্শি এবং ফুটবারিকণাবাহিবায়ুকর্ত্বক স্পৃষ্ট হইবা মাত্র তৎক্ষণাৎ মরিয়া যাইত ॥৫॥

হে রাজন্! ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ খলদমনার্থ অবতার গ্রহণ করিয়াছিলেন, তিনি ঐ ভয়ঙ্কর বিষধরের প্রচণ্ড বিষবীর্য্য এবং তদ্বারা ঐ হ্রদের জল নিতান্তদূষিত দেখিয়া তীরস্থকদম্বোপরি আরোহণ করিলেন। রাজন্! যদিও কালিয় কালকটের তেজে কালিন্দীতীরস্থ সমস্ত তরুলতা শুক্ষ হইয়া
গিয়াছিল তথাচ ভাবিশ্রীকৃষ্ণচরণস্পর্শ ভাগ্যবশতঃ তত্তীরবতী হইয়াও ঐ এক কদম্বতরু শুক্ষ হয় নাই
অথবা গরুড় অমৃতাহরণপূর্বক পূর্বের ঐ তরুর উপরে বিদিয়াছিল, সেই অমৃতস্পর্শ হওয়াতে তাহা
অমর হয়। সে বাহা হউক, ভগবান্ সেই কদম্বোপরি স্নার্ক্ হইয়া দৃচ্রপে রস্না বন্ধন করিলেন,
পরে বাহু আন্ফোটন পুরঃসর সেই অভ্যুক্ত তরু হইতে ঐ বিষ ক্ষলের উপর লক্ষ্ণ দিয়া পড়িলেন এঙা

হে রাজন্! শ্রীকৃষ্ণ পতিত হইবা মাত্র সেই সর্পত্রদ তৎক্ষণাৎ সকলদিকে শত ধনুঃ পর্য্যন্ত

পর্যাক্প্লুতো বিষকষায়িতভীষণোর্দ্মিধীমন্ ধনুঃ শতমনস্তবলস্য কিন্তৎ ॥ ৭ ॥ তিম্মিন্ ফ্রনে বিহরতো ভুজদশুর্থবার্ঘেমক বরবারণবিক্রমস্য । জাশ্রুতা তৎস্বসদনাভিভবং নিরীক্ষ্য চক্ষুশ্রুবাঃ সমসরত্তদম্য্যমাণঃ ॥ ৮ ॥ তং প্রেক্টারম্বনাবদাতং শ্রীবৎস্পীত্বস্নং স্মিতস্থলরাস্যঃ।

শ্রীধরস্বামী

শতং প্রতঃ প্রস্তঃ। বিষেপ ক্ষারীক্ষতা ভয়করা উর্থয়ো বদ্য সং। বৈতচিত্রমিত্যাহ অনস্ত বলদ্যেতি ॥ ৭ ॥

এদে বিহরতো ভূলদণ্ডাহতোদক্ষোবং শ্রাহা ততঃ অদদনাভিভবঞ নিরীক্ষ্য তদসহমানঃ সর্পঃ সমস্বং সমাজগাম ॥

প্রেক্ষীয়শ্চ সুকুষারশ্চ মুন্বজ্জালশ্চ ডং প্রীবংস্পীতবসনং প্রীবংদেন সংযুক্তমুচ্চলং পীতং বসনং যদ্য তং ভূজগাভোগেন চছাদ

বৈষ্ণবজোষণী।

জবেন সংক্ষোভিতঃ। সত্র এবোরগ বিষোজ্বনিত শাসুরাশির্বস্য সং ক্ষারিতেতি পাঠঃ প্রীচিচ্চুকপ্রীস্থানিপাদানাঞ্চ সন্মতঃ ক্ষারীক্ষতা ইতি ব্যাধ্যানাং। ক্ষাব্যাহত্র কাথ্যবদো রক্তপীতবর্গো বা নির্বাদেহপি ক্ষাব্যাহন্ত্রীত্যত্ত ক্ষীরস্থানিন। তত্ত্ব্যাধ্যানাং। ধীমন্ হে বিবেকিরিতি রাজানমাশাস্থাতি। ধহুঃ শত্তমিতি। ধহুঃ প্রমাণমূক্তং। অইডির্যমিধ্যঃ স্যাদকুলং দাদশাকুলং। তালং ত্রিতালকো হত্তো হত্তো কৌ কিছুক্ষাং ধহুঃ প্রোক্তমিতি। স্বতঃ পূর্বং তাবং প্রদেশমতিক্রমার বালা গাবেন্চ রক্ষিতা ইতি জ্ঞেরং। স্থানতং বলং শক্তির্যা। তংক্র্য। যবা। স্বন্ত্রস্থানাগ্রাজস্যাপি বিষাদি বলং ম্মান্তস্য তির্বিং কিং অপিতৃ ন.কিঞ্চিদপীতার্থঃ॥ ৭॥

বিহরতো বিচিত্রশ্ববাদাসন্তারাদিক্রীড়াং কুর্বজঃ। বরবারণো দিগ্ঘতী তছছিক্রমস্য অঙ্গেত্যব্যরং রাজঃ শোক নিরাসার্থং প্লালনসন্থোধনং॥৮॥

ভাদৃশোৎপি ছষ্টোহসৌ তথাহচেষ্টতেতি কালিরদ্য মহাপরাধং দর্শরন্ বিশিনষ্টি প্রেক্ষণীয়েভ্যাদিনা ক্রীড়ন্তমিত্যক্র হেতু: অপ্রতি-ক্রমদলর্জ: ।

ক্ষায়িতেতি পাঠ: শ্রীস্বামীটিংমুগদাপি মত:। ক্ষারীক্কতা ইতি ব্যাগ্যানাং॥৭॥৮॥

শ্ৰীযুক্তং বংসং বক্ষো যদ্য পীতং বদনং যদ্য দ চ দ চ তং ভূজাকারহাত্তদ্য ভোগ এব ভূজা যতো ভূজগ ইত্যপুচাতে। তত্মান্তোগে-শ্ৰীবিখনাথচক্ৰবৰ্তী।

ক্ষামীক্ষতা রক্তপীতবণী ক্রতা ভয়ধরা উর্ধয়ো যস্য সঃ। নির্যাসেহপি ক্ষায়ো ক্ষীরস্থামিনা তথা ব্যাখ্যানাং। পর্যাক্ পরিতঃ ধ্যু:শতং পুতঃ প্রস্তঃ। অষ্টভির্যবন্ধ্যঃ স্যাদস্পং তৈরিভির্তবেং। তালং ত্রিতালকো হত্যো হস্তো ছৌ কিছ্কচাতে। কিছ্বয়ং ধ্যু: প্রোক্ষাতি ॥ १॥

বিহরতঃ বিচিত্রজনবাদ্যনন্তারাদিনা ক্রীড়তঃ ভূজদণ্ডাভ্যাং ঘূর্ণা যেষাং তথাভূতানাং বারাং জলানাং ঘোষং শ্রণা তত্ততো ঘোষা-দেব স্থাদনস্যাভিত্তবং নিরীক্ষ্য তত্তং অসহমানঃ ॥ ৮ ॥

প্রেক্ণীয়মতি হথদমণি রূপং কালিয়ং প্রতি বিপরীতমভূদিত্যাহ তমিতি ঘনবছজ্ঞাং শ্রীবংসে বিহারবলাং কায়াতং পীতবদনং প্রতি হইল, কারণ পুরুষপ্রোষ্ঠ ভগবানের পতনবেগে তত্রস্থ সর্পগণ সংক্ষোভিত হইয়া উঠিল, তাহাতে তাহাদের বিষের তেজে হ্রদস্থ জলরাশি উন্নত হইয়া উঠিতে লাগিল। অপর উগ্রতর অহিবিষে ঐ হ্রদের ভয়ঙ্কর তরঙ্গ ক্ষায়ীকৃত হইল। হে মহারাজ! সর্প হ্রদের ঐরূপ প্রস্তুত হওয়া বিচিত্র নহে, ভগবান্ হরির অনন্ত বল, তাঁহার পক্ষে উহা কি আবার একটী কর্মা। ৭॥

শে যাহা হউক, বরবারণবং (শ্রেষ্ঠ হস্তিতুল্য) বিক্রমশালী ভগবান্ হরি দর্পব্রদে বিহার করিতে করিতে বাহদণ্ডে তত্রস্থ যে দকল জল আহত ক্রিতে লাগিলেন তাহার শব্দশ্রেবণ এবং তাহা হইতে আপনার দদনের অভিভব অবলোকন করিয়া কালিয়ের দহিষ্ণুতা হইল না, দে রোধবশতঃ তৎক্ষণাৎ বাহির হইয়া আদিল ॥ ৮॥

রাজন্ ! ভগবান্ শ্রীক্তাফে প্রেক্ষণীয় স্থক্মার, মেঘবৎ উজ্জ্বলশ্যাম, পীতবসনধারী, শ্রীবৎস শোভিত, তদীয়বদন ঈষৎহাস্যে পরমস্থদার এবং চরণদ্বয় লাক্ষারসভুল্য অরুণ, তিনি নির্ভয়ে হৃদ্যু ক্রীড়ন্তমপ্রতিভয়ং কমলোদরাজ্মিং সংদশ্য মর্শ্বস্থ রুষা ভূজগশ্চছাদ ॥ ৯ ॥
তদাগভোগপরিবীতমদৃষ্টটেন্টমালোক্য তৎপ্রিয়সথাঃ পশুপা ভূশার্তাঃ।
ক্ষেহপিতাক্সস্থদর্থকল্ ক্রকামা ছুংথানুশোকভয়মূঢ়্ধিয়ো নিপেতুঃ।
গাবো রুষা বৎসতর্য্যঃ ক্রন্দমানাঃ স্বছঃথিতাঃ। কুষ্ণে ন্যুস্তেশণা ভীতা রুদন্তা ইব তস্থিরে॥১০॥

ञीषतत्रामी।

व्यद्वष्टेयः ॥ २ ॥

স প্রিয়ো যেষাং তে তংগ্রিয়ােটে চ তে স্পায়ক্তেতি তথা তে ॥ ১০ ॥

रेवस्थवरकामगो ।

ভয়মিতি তচ্চ কালিয়দ্য নিৰ্ক্তিশ্বং স্চয়তি চক্ষু:শ্ৰবা ইতি প্ৰস্তত্ত্বাদেব জ্ঞেয়ং। কয়া ভূজয়া ভূজাকাৰ্য্বান্ত্ৰা এব সূচ। যতে। ভূজণ ইত্যপূচ্যতে তক্ষান্তােগনেত্যৰ্থ:॥ ১॥

ত্যা প্রিয়নখা ইতি প্রমসোহার্দ্ধসূকং। পশুপা ইতি স্বভাবদাবল্যে, স্থান্ধিচিত্তয়ং। ক্ষেণ্ড্রিয়নঃ স্থান্দিম্ল বৈতে তংসাহান্যায় কৃতসর্ধার্পনা ইত্যর্থ:। তত্র স্থান্ধ পিতৃলাব্রাদয়ঃ অর্থা ধনানি কামা লোকষয়ভোগাঃ। স্থান্ধকেন গৃহীতস্যাপি
কলত্রস্থাপ্তিবুর্দেশো বিশেষবিবক্ষা কিন্তু কলত্রপদেন কেচিল্লন্ধজ্ঞাপবীতা যে জ্যেষ্ঠান্তে চ স্থায়ো লভান্তে ইতি তেষাং সর্বেন্ধনিনন্যাপেক্ষরং। আত্রে ভ্রান্ধিলা আত্রে ক্ষেত্র কলত্রপদেন কেচিল্লন্ধতা যে জ্যেষ্ঠান্তে চ স্থায়ো লভান্তে ইতি তেষাং সন্ধান্ধনান্ত্রে বা অত্রব ত্রুখেনান্ত্রেলাকঃ বারং বারং শোচনং
ভ্যক্ত হৈ বিনা কথং ভবিষ্যাম ইতি ভাভাাং মৃট্ বিবেকহীনা ধী র্ষেষাং তথাভূতা নইচেতনা বা সন্তঃ। যদ্বা নাগভোগপরিবীত
মালোক্যানে ভ্রান্ত্রিটান্ত্রেক্ষালোক্য ভ্রোন্থনোকভান্তে মৃট্ বিদ্যান্তর্জান্তরাং ছিল্লন্ত্র্ক্রন্দিনা নিপেতৃঃ। মৃট্ বীষান্দেব ভং রবং ন প্রাবিশ্রিতি জ্বেরং। তজ্জনাল্লভ্রেন্সভ্রনেপ্রামাণ্ডিনান্ত্রিভাবেন রদ্যাপি নিবিশীনক্রণাং। অনুইচেষ্টিভঞ্চ কালিয়স্য নিংসার্বায় ভ্রিংগুর্প দ্বীষ্ত্র তদ্যোগাতিশয়প্রদর্শনার্থ।

ক্রন্দমানা আর্ত্তনাদমুকৈ: কুর্বজ্য:। ইবেতি লোকোকৌ। ক্রন্তয়া ক্রন্তয়া অঞ্জনি মুক্তয়া। তত্ত্বে ইতি প্রম বংস্লানাং গ্রাদীনামত্যন্ত শোকেনাপি গুক্তভাপত্তো। ক্রাচিছজ্বশেষ্যাতেন স্তস্যাপি প্রাণিন উদ্ধাবস্থিতিবং। আত্মন প্রমার্থ।

क्रगमन्द्रः ।

নেতার্থঃ। সূজ্য ইতি পাঠে ভোগেনেতি শেষঃ॥ ১।১•।১১।১২॥

चितियगाथहक्रवर्शे।

यना তং। यहा। ভ্রিয়ালক্ষ্মীবেশরা যুক্তং বংসং বকে। যদা পীতে বদনে যদা দ চ দ চ তং। উরোবংসঞ্জ বক্তে তামবং। ভুজরা। ভোগেন ॥ ১॥

পরিবীতং বেষ্টিতং। এনৃষ্টচেটমিতি কানিয়স্যোংসাহবর্দ্ধনার্থং ক্ষণং ভীতস্তন্ধবং স্থিতং। যথা। অবে কানিয় স্থ্যা যথেষ্ঠং প্রথমং দশ্যতাং বেষ্ট্যতাং অহং পশ্চাদ্ধবং দশ্বিষ্যামীতি বীরদর্পে। স্থিতং। পঞ্ডপাং কেচিদেগাপাং শানিক্ষেত্রছাং রুষকাশ্চ নীজ্মাধ্যাতাং তে কীদৃশাং রুষে হপিতা লালনার্থমাত্মাদ্যো বৈশ্বে॥

क्षमञ्जा हेरविक क्यारेनवराजां अलाः स्थापार ॥ २० ॥

মধ্যে বিহার করিতেছিলেন। কালিয় বহির্গত ছইয়াই রোষবশতঃ তাঁছার মর্মান্তানে দংশন করিল এবং আপনার শরীরাভোগে বেক্টন করিয়া রাখিল॥ ১॥

দর্পশরীরাভোগে পরিবেষ্টিত হওয়াতে শ্রীকৃষ্ণের চৈষ্টা দৃষ্ট হইল না। তাঁহাকে তজাপ নিরীক্ষণ করিয়া তদীয় প্রিয় অথচ সথা গোপগণ অতিশয়ঃ জুঃখিত হইলেন এবং জুঃখ ও ভয়প্রযুক্ত হতবৃদ্ধি হইয়া পড়িতে লাগিলেন। হে রাজন্! শ্রীকৃষ্ণের অনিউদর্শনে গোপদিগের এরূপ মোহ হওয়া বিচিত্র নহে, তাঁহারা আপনাদের আত্মা, স্কেৎ, অর্থ, কলত্র, কাম, সকলই তাঁহার প্রতি সমর্পণ করি-

অথ ব্রজে মহোৎপাতান্ত্রিবিধা অতিদারুণাঃ। উৎপেতুর্তুবি দিব্যাত্মন্যাসম ভয়শংসিনঃ॥ ১১॥ তানালক্ষ্য ভয়োদিয়া গোপা নন্দপুরোগমাঃ। বিনা রামেণ গাঃ কৃষ্ণং জ্ঞাত্মা চারয়িতুং গতং॥১২ তৈতুনি মিতৈনি ধনং মত্মা প্রাপ্তমতিদিঃ। তৎপ্রাণা স্তম্মনস্কান্তে তুঃধশোকভয়াতুরাঃ॥ ১৩॥

जी धत्रश्वामी ।

জুবি ভূকম্পাদয়:। দিবি উকাপাতাদয়:। আজুনি বামাসক্রণাদয়:। আসন্তরং শংসিতৃং শীলং বেষাং তে॥ ১১॥ তান্ আলক্য গোকুলারির্জগ্যুরিতি তৃতীয়েনাথয়:। ভয়োদিগ্রা ভয়হেতোভীতা ভূমেন কম্পান। ইতি বা॥ ১২॥ ন তং বিদ্যীতি অত্থিদ:॥ ১৩॥

বৈষ্ণবতোষণী।

গ্রাহ্যপলক্ষিতত্ত্বন মহিষ্যাদয়ে। হরিণ্যাদয়শ্চ জেয়া: । পশৃংশ্চেতি বক্ষ্যাণাৎ। তেষাং কিঞ্চিদুর্চরত্বেন পশ্চাদাগন্নাদ্তান্ত্তিরিষ-মিতি জ্বেয়:॥ ১০॥

অথানস্তর্মের দাকণাঃ স্বভাবতো মহাভয়ন্ধরাঃ মহোৎপাতাশ্চ মহাত্রন্ধিত্ত স্বভাবতঃ ॥ ১১ ॥

তানিতি ত্রিকং বিনা রামেতি প্রম্পমর্থস্য স্থিপ্র গন্ধীরস্য স্থা সাহায্যে রক্তস্য ক্যা সমক্ষে ক্রন্ত্র্য তাদৃশ্বাসন্তান স্থাবেদিতি ভাবঃ। অন্যতঃ। যধা। আলক্ষ্যের ভয়োধিগ্রা বভুবুঃ॥১২॥

অতএব নিধননেব প্রাপ্তং মহা নিতরাং ধনং স্বীয়যমূনাইদরূপং স্ববিহারসর্ক্সমিতি সরস্বতীসস্থাদঃ। অতদ্বিদঃ তন্মাহাস্মনরুসন্দ ধানা ইত্যুৰ্থঃ। নরু কথং তত্ত্বৈর তেষাং সন্দেহোজাতস্ততাহ স এব প্রাণো জীবনং যেষাং অভস্তস্থিরের মনো যেষামিতি॥ ১০॥

ক্রমসন্দর্ভ:

নিধনমিতি নিতরাং ধনং এীযমুনাছদরপমিতি বাস্তবার্থঃ॥ ১৩। ১৪॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

ত্রিবিধা: ভূবি ভ্কম্পানয়: দিবি উরাপাতাদয়: আত্মনি বামনেত্রক্রণাদয়:। ভগবত: থল্পমঙ্গণা শন্ধারাহিত্যেইপি যত্ৎপতি-প্রাকট্য॰ তদ্যবাং গোপাদীনাঞ্চ তৃঃথস্চনার্থং কিম্বা তত্তদ্ধিষ্ঠাতৃদেবানামপি ক্ষেঞ্চ প্রীতিমন্থেনৈম্বর্গ্যবিশ্ববণাং। ক্রফ্রেপ্য শুভ। শক্ষিন উৎপাতং প্রকট্যানাস্ক্রিতি॥ >> ॥

তানালক্য গোকুললিজ্গু বিভি তৃভীয়েনাৰয়ঃ। নিধনমেব প্ৰাপ্তং ময়া নিতরাং ধনং শ্রীষমূনাইদর্পং স্বিহারাস্পদ্নিতি সবস্বতী-স্থাদঃ মহাশোকাৎ পশ্নামিব বৃদ্ধিবিবেকপ্রতীকার জ্ঞানশূন্যা বৃদ্ধিং সভা দেঘাং তে॥ ১২ । ১০ । ১৪ ॥

য়াছিলেন। হে মহারাজ ! রুষভ, গাভী, রৃক্ষ, তথা বৎসতরীগণও ঐ ঘটনা অবলোকনে ছঃথিত হইয়া জ্বন্দন করিতে লাগিল এবং শ্রীকৃষ্ণের প্রতি দৃষ্টি অর্পণপূর্বক ভীত হইয়া রোদনপরায়ণের ন্যায় দাঁড়াইয়া রহিল॥ ১০॥

এই সময় ব্রজমধ্যে ভূকস্পাদি আধিভৌতিক এবং উল্কাপাতাদি আধিদৈবিক তথা বামাঙ্গফ ুর-ণাদি আধ্যাত্মিক এই ত্রিবিঙ্ক উৎপাত হইতে আরম্ভ হইল। ঐ সকল এপ্রকার দারুণ হইল যে, সক-লেই যেন আসম ভয় জ্ঞান করিতে লাগিল॥ ১১॥

স্থতরাং ঐ সকল উৎপাত অবলোকন করিয়া নন্দপ্রভৃতিগোপদিগের ভয়ে হৃৎকম্প উপস্থিত হৃইল, বিশেষতঃ বলরামকে না লইয়া শ্রীকৃষ্ণ একাকী গোচারণে গমন করিয়াছেন, ইহা যথন জানিতে পারিলেন তখন নিতান্ত অধৈর্য্য হুইয়া পড়িলেন ॥ ১২॥

তাঁহারা শ্রীক্ষের স্বরূপ জানিতেন না; একারণ ঐ সকল ছুর্নিমিত্ত হেতু তাঁহাকে নিধনপ্রাপ্ত মনে করিয়া তুঃখ শোক ও ভয়ে আতুর হইলেন, অধিকস্ত তাঁহার প্রতিই তাঁহাদের প্রাণ ও মন সম- পিতি ছিল॥ ১৩॥

আবাল র্দ্ধবনিতাঃ দর্কে বৈ পশুর্ত্য়ঃ। নির্জ্যা কোনাদীনাঃ ক্ষণদর্শনলালসাঃ॥ ১৪॥ তাংস্তথা কাতরান্ বীক্ষ্য ভগবান্ মাধবো বলঃ। প্রহ্ম্য কিঞ্ছিনোবাচ প্রভাবজ্ঞোহতুজিস্য সঃ॥ ১৫

धिदत्यामी।

পশুসুত্তয়ঃ অতিবংসলা: ॥ ১৪ ॥ কাতরান ভীতান্ ॥ ১৫ ॥

বৈষ্ণবতোষণী।

তে তদেক প্রিয়বেন প্রসিদ্ধা: পশুর্ত্তিকেন তদীয়বাংসল্যক্তাবতাবিতা ইত্যথিং। পশুবদ্ভিব প্রস্থাংশে যেষাং ইতি বা অত্রব দীনা ইতস্ততো মূহঃ শ্বন্তো নিপ্তস্তশ্চেত্যথিং। কুন্ধো ব্লহ্মনচিত্তাকর্ষকঃ কথং কুব্রান্তীতি তদশনোংস্কাঃ সফঃ। ফ্রা

তথা তাদৃশকাতগ্যং প্রাপ্তানপি তান্ বীক্ষ্য স গোকুলৈক প্রিয়োহপি বলং ভগবান্ সর্কাশক্তিম্কেছিপি মাধবং সর্কবিদ্যাপতিবলি অসমর্থ ইব কিঞ্চিন্ধতবান্ অস ইব চ ন কিঞ্চিত্পদিষ্টবান্ কিন্তু তদুংখেন হংখিতোহপি তেষামেব কিঞ্চিন্ধ্যার্থং। প্রেতি। প্রকটং বহিবেব হিসিন্ধ তৃঞ্জীমাসীং। অমং নিজানুজস্য তন্তজ্ঞ: নিম্মায় হসতীতি নাজ চিন্তেতি বোধমিতুমিতার্থং। এবং তেবাং প্রাণ্ডিকলাবোগ্যাবং নাশ এব ক্রদা ত্যাবিভূতিং স্বভাবত এব সর্ক্রমাধানশক্তিময়ভাঙ্গবলীলিয়া ইতি ভাবং। তহি কিথ্মীদৃশেহপি হংখ্যকটে স্বসামার্থাং ন ব্যক্তিতবান্ ন চ তং প্রভাবত প্রস্থাক্তিবান্ তত্তাহ প্রভাবত ইতি তল্প বেন তদিছাং বিনা তংক জুং ন শক্তবানিত্রিং। মাধ্বপদং চেদং হরিবংশে বৃৎপাদিতং। মা বিদ্যা চ যতঃ প্রোক্তা ত্যা ঈশো যতো ভবেং। তত্মান্মাধ্বনামাসি ধবং স্থাতি কীর্তিত ইতি ॥ ১৫ ॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

ভগবান্ সর্ক্রশক্তিযুক্তোহপি মাধবং সর্ক্ষবিদ্যাপতিরিতি। অসমর্থ ইব ন কিঞ্চিত্রপদিষ্টবান্ কিন্তু তদ্বুংখন তংগেছপি তেষানেব কিঞ্চিত্র্ব্যার্থং প্রকটং বহিবেব হসিত্ব। ভৃষ্ণীমাসীং। অসং নিজাহজস্য তত্তজ্ঞ: স্লিগ্ধন্য হসতীতি নাত্র চিত্রেতি বোধ্যিত্মিতার্থং। তত্মাচ্চ হেতোরভিত্থিতমাজ্ঞায় বিচার্য। তহি কথমীদৃশেহপি সকটে অসামর্থাং ন ব্যঞ্জিতবান্। ন চ তৎপ্রভাবং স্পষ্টমুপদিইবান্। তত্ত্রাহ্ প্রভাবজ্ঞ ইতি। তজ্জত্বেন তদিছহাং বিনা তৎকর্তুং ন শক্তবানিতার্থং মাধ্বপদং চেদং প্রীহবিবংশে ব্যুৎপাদিতং। মা বিদ্যা চ যতং প্রোক্তা তদ্যা স্কুশো যতো ভবেং। তত্মাত্রাধ্বনামাসি ধবং স্বানীতি কীর্ত্তি ইতি॥ ১৫। ১৬। ১৭। ১৮। ১৮।

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্ত্তী।

মা মবিদ্যা চ যতঃ প্রোক্তা ত্র্যা ঈশো যতো তবেং। তথ্যামাধবনামাসি ধবঃ খামীতি কীর্ত্তি ইতি ছরিবংশোক্তনিরুকেঃ প্রতাবং লীলেখর্য্য় জানাতীতি সং। তস্যু স্বাস্ক্রমহাপ্রেমব্দ্বেছিপি প্রেয়া তদৈখর্যানামাবরণং রুফেছায়ুর্ম্লিতলীলাশকৈয়ব জ্বন্যথা শ্রীনন্দাদীন্ শোকাবেগেন সর্পত্রদং মংকু শীঘং নিমংক্র্ন্ কো বার্মিতৃং প্রভবেদিতি ভাবঃ। প্রহুস্যেতি মংস্করণেণ শেবনাগেন সহ জীড়ান বোচতে কিন্তু প্রাকৃতকু কালিয়প্র্যাধনেনৈবেতি তস্যু নর্লীলন্ধস্ববাহ। কিঞ্চলোবাচেক্ত তেবাং শোকান্ধানাং ক্লকং দিল্কুণাং উদাব্রণ্যানৌচিত্যাদশক্যভাচ। কিন্তু স্প্রহাসশোকাভাবদর্শনং মতো ন কিঞ্চলনিষ্টাভাবমূহ্মিত্বা প্রাণ্জিহাসাং শিথিলয়ানায়॥ ১৫॥

অতএব আবাল বৃদ্ধ বনিতা সকলেই সাতিশয় কংসলতাপ্রযুক্ত কাতর হইয়া কুঞ্চদর্শনলালসায় গোকুল হইতে বহির্গত হইলেন॥ ১৪॥

ভগবান্ বলভদ্র অমুজের প্রভাব জানিতেন একারণ ঐ সকল ব্যক্তিকে ভাদৃশ কাতর নিরীক্ষণ করিয়া কেবল হাস্য করিলেন কিঞ্মোত্র কহিলেন না॥ ১৫॥ তেহমেষমাণা দয়িতং কৃষ্ণং সূচিতয়া পদৈঃ। ভগবল্লক্ষণৈর্জ্যাই পদব্যা যমুনাতটং ॥ ১৬॥
তে তত্ত্ব তত্ত্বাজ্যবাঙ্কুশাশনিধ্বজোপপন্নানি পদানি বিশ্পতেঃ।
মাগৈর্গবামন্যপদান্তরান্তরে নিরীক্ষ্যমাণা যমুরক্ষ সম্বরাঃ॥ ১৭॥
অন্তর্গ্রে ভুজগভোগপরীত্যারাৎ কৃষ্ণং নিরীহ্মুপলভ্য জলাশয়ান্তে।
গোপাংশ্চ মূচ্ষিণান্ পরিতঃ পশৃংশ্চ সংক্রেক্তঃ পর্মকশাল্যাপুরার্ত্তাঃ॥ ১৮॥

গ্রীধরস্বামী

ভপবন্তং লক্ষ্যন্তি যানি পাদানি তৈঃ পদৈঃ হুচিতরা পদব্যা মার্গেণ॥ ১৬॥

পদৈম গিজ্ঞানপ্রকারমাই ইতি। বিট্পতেঃ শ্রীকৃষ্ণস্য অন্যেবাং পদানাং অন্তরাস্তরে মধ্যে মধ্যে ডভনপোহেন গবাং প্রতীনাং মার্গে সম্বর। অপ্রমন্তা বোগিনস্তত্ত্পাধ্যপবাদেন যথা পরং তবং মুগরন্তে ত্বদিতি ভাবঃ ॥ ১৭ ॥

ততঃ সর্পশরীরবেষ্টিতং ঐক্তিক্ষং দ্রাল্লিরীক্ষ্য গোপান্ পশৃংশ্চ তথা নিরীক্ষ্য আর্ত্তাঃ পরং মোহমাপুঃ॥ ১৮ 🛭

বৈষ্ণবজোৰণী।

অবেষমাণা অবিচ্ছন্তঃ তত্ৰ হেতুদ দ্বিতং তত্ৰ হেতুঃ ক্বঞং॥

ত্ত তত্ৰ শ্ৰীচরণন্যাসভূবি। বিশোবৈশ্যাঃ গোপরূপাঃ। ভতো গোকুলপতেরিত্যর্থঃ ষদ্বাদ্যভাবশ্ছান্দসঃ। অন্যপদান্তরান্তর ইতি চিরং প্রস্থিতন্য পশু পশুপবর্গ পরিবেষ্টিতস্যাপি তস্য পদানি ন কেনচিদাক্রাশ্বনীতি বোধরিত্বা ভূম্যের তাবদাত্মভূষণত্বেন রক্ষিত্তবং সর্কেষামপি প্রেমাম্পদক্ষমচেতনৈর্বাম্বাদিভিরপাক্ষোভাত্বেন মহাপ্রভবত্বমিতি হেতৃত্তবং সন্তাবরতি এবমেবোক্তং ভগবল্লক্ষণৈরিতি ভত্তক সাক্ষান্তস্য তাদৃশানাং তাদৃশ প্রেমাম্পদত্বে কালিয়ালক্ষ্যত্বেচ কো বিশ্বর ইতি ভাবঃ॥ ১৭॥

মৃঢ়ধিষণান্ মোহগতান্ পরিত: সর্বমেব তীরং ব্যাপ্য ॥ ১৮ ॥

শ্ৰীবিশ্বনাপচক্ৰবৰ্তী।

ভগবন্তং লকরতি যানি তৈ: পদৈ: স্প্রচিতরা পদবা। ॥ ১৬॥

পদৈ: পদবীজ্ঞানপ্রকারমাহ তে ইতি বিশ্পতে: বিশাং বৈশ্যানাং গোপানাং পতুরেধ্যক্ষ্য ক্রঞ্স্য। বছাভাব আর্য:। অন্যেষাং পদানামন্তরান্তরে মধ্যে তদপোহেন গবাং প্রতীনাং মার্গে সম্বরা অপ্রমন্তা যোগিনস্তত্ত্পাধ্যপ্রাদেন মধ্য পরং তরং মৃগরন্তি ভাষ:॥ ১৭ ।

শানান্যতো গোপগোপীজনানাং বৈক্ষবামাহ ততশ্চান্তহুদৈ হুদমধ্যে ভুজগভোগপরীতং সর্পদারীরবেটিতং ভো বালকাঃ বৃত্তান্তং তাবিৎ ক্ষেত্রতি কালিয়েনৈৰ তীরাৎ ক্ষোবলাদাক্ষয় জলে পাতিতঃ কিখা কৃষ্ণ এব তীরাদবলুতা জলে পতিতঃ ত্রাপি অবৃদ্ধা অন্যান্ত ক্ষাচিদাদেশেন বেত্যাদি প্রশ্নে মৃ্ছিতিবৃদ্ধী ন বকুং কিম্পি চেটিতঞাসমর্থান্ গোপান্ বীক্ষ্য প্রমক্শলং ত্লুছেতিঃ স্কাশাদপ্তি মৃ্ছিগিঃ ১৮॥

তাঁহারা ইতন্ততঃ শ্রীকৃষ্ণের অন্বেষণকরত যে দকল পদে ভগবান্কে লক্ষ্য করাযায়, সেই দকল পদদারা সূচিত বল্ল যোগে যুমুনাতটে গমন করিলেন॥ ১৬॥

হে রাজন্! যেমন অপ্রমন্ত যোগিগণ শ্রুতিবর্জু যোগে গমন করত অন্যান্য পদের মধ্যে তত্তপুণধির অপবাদপূর্বক পরমতত্ত্ব অন্থেষণ করিয়া থাকেন, তেমনি ঐ সকল ব্যক্তি গাভীসকলের বজ্বে
গমন করত অন্যান্য পদের মধ্যে শ্রীকৃষ্ণের ধ্বজ,বজ্র, অন্তুশ, পদ্ম, যবযুক্ত পদ নিরীক্ষণ করত ত্বান্থিত
হইয়া গমন করিলেন॥ ১৭॥

তৎপরে যথন দূর হইতে দেখিতে পাইলেন ফ্রদমধ্যে এক্স সর্পশরীরে বেষ্টিত ও নিরীহ হইয়া রিহ্নাছেন এবং তৎসমীপে গোপালগণ মুগ্ধ হইয়া রহিয়াছে আর গাভীসকল চতুর্দ্দিকে রোদন করিয়া বেড়াইতেছে, তথন অতিশয় আর্ত্ত হইয়া পরম কশাল প্রাপ্ত হইলেন॥ ১৮॥

গোপ্যোহতুরক্তমনসে। ভগবত্যনম্ভে তৎদোহদিশ্বতবিলোকগিরঃ শ্বরন্তা:। এস্তেইহিনা প্রিয়তমে ভূশদ্বঃখতপ্তাঃ শূন্যং প্রিয়ব্যতিহৃতং দদৃশুস্তিলোকং।

बी वत्रवाती ।

অিমেণ একিকেন বিরহিতং ত্রৈলোকাং শ্ন্যং দদ্ভ: ॥ ১৯ ॥

देवकवरकावनी।

এবং সর্বেধামের সামান্যেন ত্রবহামুক্র। তত্ত্রব শ্রীগোপীনাং বিশেষমাই গোপ্য ইতি ভগবতি সর্বৈধ্যায়কেংতো ন বিদ্যতে আন্তো নাশো ভকানাং যন্মান্তগাভূতেহপরিঞ্চির ইতি বা ইত্যহিগ্রসনাসম্ভব উক্তঃ তথাপ্যহিনা প্রয়ে তদিছ্টোর ভোগেনাক্রাম্থে সতি অত্যর্থহংশুতপ্তাঃ যতোহমূরক্রমনসঃ স্বভাবতো নিরম্বরপ্রেমবত্য ইত্যর্থঃ। তথা তশ্মিরণি স্বভাবতঃ প্রিয়ত্তনে আয়া প্রিয়ঃ পরমান্ধা প্রিয়তরঃ ততোহপি বিশিক্ষাং শ্রীকৃষ্ণঃ প্রিয়তন এবেতি ততঃ প্রেমভ্রাক্রাম্বা তত্ত্বানম্সন্ধানাদিত্যর্থঃ। যদা ভগবতি পরমহন্দরে হনস্বেচ অপরিচ্ছিরগুণে তথা প্রিয়তমে কস্যচিং প্রিয়তরে তাদান্ধ প্রিয়তমে যতঃ সদাম্বক্রমনসঃ। অধুনাচ প্রস্তেবং সর্বতোভোগেন পরিবেষ্টিতে সতি তদ্য সৌহদেন প্রেয়া যাঃ শ্বিতাবলোক্যিরঃ তাঃ শ্বরম্ব্যা ভূশত্থেতপ্তাঃ সত্যঃ প্রিয়েব্যাবিক কর্ত্রা বিশেবেগাতিশয়েন ক্বতং স্বর্জস্তন দর্শনামাহন্ধবিরায়মাণতাং বিধার বিদ্যারিত্যবিত্যর্থঃ। প্রিয়ব্যতিক্রতমিতি পাঠে চ ব্যতিকরঃ দমাখ্যাতো বাসনে ব্যতিস্ক্রনে ইতি বিশ্বপ্রকাশাং। ব্যসনং বিপদি ভ্রংশ ইত্যমরকোষাচ্চ প্রিয়েণ হেতুনা ভ্রষ্টমিতি তথৈবার্থঃ। টীকারাং বিরহিত্যিত্যস্য চ ত্যাজিত্যিত্যর্থ ইতি তথৈব তাংপর্য্যং তত্ত্বাদৃশং ক্রগচ্ছুন্যং দদৃতঃ শুন্যমিতি শোকবেগেনাত্মন ইব জগতামপি স্ববন্মনাং নিজপ্রিয়ত্যা ভাবেন সর্বীস্যাকাকার্য্যননার্য॥

নম্ তরাতা হস্ত কীদৃশী জাতা ইত্যপেকায়াং শোকভরেণ কিঞ্চিদের প্রকাশয়ন্ সর্বসামের তাসাং দশাবিশেষমাহ তা ইতি তাং প্রেজিনঃ শ্রীষশোদাসংখাহন্যাং শ্রীগোপ্যংন পততি কমিন্নপি ছংখে কুলং যমান্তদপত্যং পরমমেরপাত্রপুল্নিত্যর্থ:। জত-এব তং জন্মলক্ষীকৃত্য তদর্থং প্রকর্থেন সর্বতাহধিকতরা তপ্তাং প্রেটিমিতি পাঠে ক্রদং প্রেবেই মার্জামিত্যর্থ:। তুল্যবাথা অপি স সমাক্ জন্ম নিরস্তরং গৃহীয়া ধ্রা ভচঃ শোকাশ্রণি প্রবস্তাঃ প্রেলাহরূপেণ মুক্তয়:। তালাং পূত্রাদিতা দৈবক্তরকাময়ী:। বংসবকাদিবধর্নপাং তছে। ইত্যাম্বীশ্চ ব্রজ্ঞ প্রিয়ক্বাং কণয়্ত্যঃ সত্যঃ তাদৃশা মহাতৃত্বী বহুবোহপি হতা অয়ং সর্পজ্ঞেকেঃ কো নাম বরাকঃ এনং হয়া অধুনৈবায়াস্যতীতি তল্মাস্পান্যবিভ্যন্থ:। তথা কঞ্চার্পতিন্দশ্চ সত্য আসন্ পশ্চান্মভকতৃল্যাশ্চাসনিত্যর্থ:। বিশেবভক্তায়াং শোকোক্রিঃ প্রীবিক্পুরাণে। সর্ব্বা যশোদ্যা সার্দ্ধি বিশামেহিত্র মহান্থনে। নাগরাজ্যা নো গন্তমশ্লাকং যুদ্ধাতে ব্রন্ধে। দিবসং কো বিনা ক্র্যাং বিনা চন্দ্রেণ কা নিশা। বিনা ব্রেণ কা গাবো বিনা ক্ষেক্তন কো ব্রন্ধ:। বিনা ক্রতা ন্যাস্যামঃ ক্ষেক্তনানেন পোকুলং। অবণ্যং নাতি-সেব্যঞ্চ বারিহীনং যথা সরঃ। যত্ত নেন্দীব্রদলপ্রথাকান্ধিরয়ং হরিঃ। তেনাপি মাতর্বাদেন ব্রিরন্ধীতি বিশ্বয়:। উৎফুল্ল

क्यमण्डः।

তাঃ পূর্বপূর্ব্বোক্তাঃ প্রাথশাদা সংখ্যাহন্যাঃ। তান্তাঃ প্তনাদিভ্যো রকামধীঃ॥ ১৯ গ

এীবিশ্বনাগচক্রবর্মী।

তত্রাপ্রাগ্রভীনাং বৈক্লবামাহ। ভগরতি প্রমন্থন্ধরে অনম্ভণ্ডণে তদ্য দৌহদং অবিষয়কং প্রেম্মিতং বিলোকং বৃহদি ক্লতাং গিরং দৌরতবার্ত্তাঞ্চ আরস্ক্রয় ত্রিলোকং প্রিমেণ বাভিক্কতং বিরহিতং ত্রিরহ্দাবাগ্নিত্ত্বীভূতদ্বাঞ্চন্যং ব্যতিস্তমিতি পাঠে প্রিমেন্ট্রবিব্যক্ষের বিশেষেণাতিশরেন চু হৃত্যং অদুশাস্তঃপাতীতি কৃতং দদ্ভঃ॥

তত্র বাৎসলাবতীনাং বৈদ্ধবামাহ তাঃ প্রশ্বিদ্ধাঃ প্রদ্ধাঃ অপতাং অমূলকীকৃতা প্রতিথ্যাং সম্বাপজজ্জ রাং প্রবিষ্টামিতি পাঠে অপতা এব লীনতাং প্রাপ্তাং মৃচ্ছি তানিতি যাবং। কৃষ্ণমাতবং যশোদাং সম্বগ্রপুত্তে তাধুনাপ্যসাঃ শরীরে প্রাণাঃ প্রায়ে বর্তত্ত তদিদং নাপেক্ষণীয়মিতি তদ্ভ্রাভাগমক্ষেক্তা শীতলস্বিলেনাঞ্লালাদ্ধিরং মুখং মৃত্রুত্থ প্রকাল্য ত্রজ্পির্দা কৃষ্ণয় কথাতাস্তাঃ

হে রাজন্! গোপীদিগের অন্তঃকরণ ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণের প্রতি অনুরক্ত ছিল অতএব সর্বদাই তাঁহার সোহদ্য, সহাস্ত দর্শন এবং সন্মিত বচন স্মরণ করিতেন, সেই প্রিয়তম সর্পগ্রস্ত হইলে তাঁহারা অত্যক্ত ছংখিত হইলেন এবং প্রিয়বিরহিত হওয়াতে ত্রিভুবন শূত্য দেখিতে লাগিলেন, তদনস্তর কৃষ্ণমাতা যেখানে সন্তানার্থ সন্তাপ করিতেছিলেন তথায় তাঁহার নিকট গিয়া ভুল্যবেদনা ব্যক্ত কর্ত

迷

তাঃ কৃষ্ণমাত্রমপত্যমনুপ্রত্থাং তুল্যব্যথাঃ সমনুগৃহ শুচঃ প্রবন্ত্যঃ।
তান্তা অজপ্রিয়কথাঃ কথ্যন্ত্য আসন্ কৃষ্ণাননেহর্পিত দৃশোমূতকপ্রতীকাঃ।
কৃষ্ণপ্রাণান্নির্বিশতো নন্দাদীন্ বীক্ষ্য তং হ্রদং। প্রত্যধেৎ স ভগবান্ রামঃ কৃষ্ণানুভাববিৎ ॥১৯
ইখং স্বগোকুলমনন্যাতিং নিরীক্ষ্য সন্তীকুমার্যতিত্বঃথিত্যাত্মাত্রহৈতোঃ।

जी धरकाशी ।

অনন্যগতিং আত্মানমিথং নিরীক্ষ্য অতএবাত্মহেতোঃ স্বগোকুলং অতি ছঃথিতমাজ্ঞায় উর্গবন্ধাং উদ্ভিচ্চিত্যর্থ: ॥ ২০॥

বৈষ্ণবজোষণী।

প্রজ্ঞদলস্পষ্টকাস্তি বিলোচনং। অপশ্যস্থো হরিং দীনা: কথং গোষ্ঠে ভবিষ্যথ। অত্যর্থ মধুরালাপ স্নতাশেষ মনোধনাঃ। ন বিনা পুওরীকাকং যান্যামো নন্দগোকুলং। ভোগেনাবেষ্টিত্ন্যাপি সর্পরাজন্য প্রভঃ। স্বিতশোভি মুধং গোপ্যঃ ক্ষ্ন্যাত্মদিলোকনে ইতি॥

কথঞ্জিলোহোপশনে কালবিলম্বেচ ইনং নিংশেষেণ প্রবিশতঃ নন্দাদীন্ সর্কানেব ব্রজ্জনান্। স ব্রস্কল্পং ভগ্রতা গৃহে তাকো যং বস্ত্রংসল্থেন প্রসিদ্ধা বা। নহ তেষাং সর্ক্ষেং প্রতিষেধনং স কথং কর্তুং শক্তস্তরাহ ভগ্রান্ সর্ক্ষাক্রিয়কঃ। কাংকিচ্দ্র্কুযুক্ত্যা কাংশিচ্বলেন কাংশিচ্বতঃ প্রেরণয়া চ। এবং সর্ক্রমণাদ্রামঃ। নহ সোহিপি নাম কৃতঃ স্বস্থ আসীং তত্রাহ কৃষ্ণস্য যং প্র-ব্রস্ক্রম্বতেভিগ্রতোহস্থভাবং বেতীতি তথা সং॥ ১৯॥

ইখননেন সর্বেষাং তেষামপি মোহাদিনা প্রকারেণ ন বিদ্যতে হন্যাগতিঃ রক্ষকো যদ্য তথাভূতং আয়ানমিতি শেষঃ। পতিমিতি পাঠে সএবার্থঃ। উদতিঠৎ প্রীক্ষণঃ অন্যতৈঃ। যদা দচ মূহূর্ত্তং স্থিমা উরঙ্গবদ্ধাহণতিঠৎ। মূহূর্ত্ত স্থিতে হতুঃ মর্ত্যপদবীং যং প্রতি দণ্ডোবিধীয়তে তদ্য দোষো লোকে দর্শতে ইতীদৃশীং তয়ীতিমহ্বর্তমান ইতি। উত্থানে হেতুঃ স্বমান্ধীয়ং গোকুলং ইত্যং নিজোখানং বিনা ন জীবিষ্যতি নেতি প্রকারেণ ন বিদ্যতে হন্যা গতিঃ রক্ষকো যদ্য কিছা ন বিদ্যতেহন্যা যত্যহিবেইনে স্বদ্যাবৃত্তিত স্থানপরা গতির্গমনং যথেতি তবৈ প্রবেশনিশ্বয়ো যদ্যত্যর্থঃ। তাদৃশং নিরীক্ষ্য তচ্চেষ্টাদর্শনেন নিশ্বিত্য। অমো লুগভাব আর্থঃ। তত্রাপি দল্লীকুমারং কংল্মিত্যর্থঃ। সাকল্যেহ্বায়ীভাবঃ। চেষ্টাদর্শনমেবাহ আত্মহেতোরতিহঃথিতং ছঃথপরা কাষ্টান্মাপন্নং সম্যুগ্ জ্ঞান্থ ইতি স্বভাবতো জন্মাত্রম্য ছঃথাসহিষ্কৃতা তন্মিন্ বর্ত্ত এব তত্রাপি স্বীর্দ্য তত্রাপ্যায়ানবাণ্ডিহেভূক-

क्यमनार्छः।

সচ মুহূর্ত্তং স্থিষা উরগবন্ধাহদতিষ্ঠৎ। তাবৎ স্থিতো হেতু: মর্ফাপদবীমন্থবর্ত্তমান উত্থানে হেতু:। স্বমান্মীয়ং ইখং গোকুলং নিজো-

শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

উচৈচঃ কথয়স্ত্যঃ তচ্চেতনা প্রাপনার্থমিতি ভাবঃ। তাঃ কীদৃশাঃ শুচঃ শোক্স্য প্রবস্ত্যো নদ্যঃ প্রবস্তীনিম্নগাপগা ইত্যনরঃ। স্বতরক্ষেনানান্দি প্লাবয়স্ত্য ইতি ভাবঃ। অস্তে তুম্তক্ষ্যের প্রতীকা অবয়বা যাসাং তাঃ॥

প্রত্যযেধদিতি ভো আর্য্যপাদাঃ অনেন সর্বহর্তাণি যুষ্মঞ্জরেষ্যথেতি গর্গবচনাদ্য্য ত্রেতাদৃশহর্গোত্তরণং কিং চিত্রমিতি বিচার্য্য বিবেকং ভন্ধত। যুদ্মান্ত ব্রুদং প্রবিষ্টেষু পশ্চাৎ অস্ত্যাগতস্যাদ্য মদমুজ্স্য লালনপালনাদিকং কৈঃ কর্ত্তব্যং গোপায়স্ব স্মাহিত ইতি গর্গমহর্ষিনিদেশ লজ্মনে প্রবৃত্তাঃ কথং স্থেত্যাদিবাকৈয়েরিত্যর্থঃ। ভগবান্ ইতি তক্ত সামর্থাং॥ ১৯॥

অননাগতিনিতি পুংস্বমার্যং। আজ্ঞায় সমাক্ জ্ঞাতা মুহুর্তং ঘটিকাদ্মং স্তব্ধ ইব স্থিতা কিং রে কালিয় স্বয়া বিক্রমনর্কস্বসহং

সেই সেই ব্রজপ্রিয়কথা কহিতে আরম্ভ করিলেন, পরে শ্রীকৃষ্ণের" আননের প্রতি আপনাদের নয়ন অর্পণ করিয়া মৃতকের ন্যায় নিশ্চেফ হইয়া রহিলেন। তদনন্তর শ্রীকৃষ্ণের প্রতি যাহাদের প্রাণ সেই নন্দাদি গোপগণ যথন ঐ ব্রদ মধ্যে প্রবেশার্থ উদ্মুখ হইলেন তখন ভগবান্ বলভদ্র দেখিতে পাইয়া তাঁহাদিগকে নিবারণ করিলেন, কারণ তিনি শ্রীকৃষ্ণের প্রভাব জানিতেন ॥ ১৯॥

্রাজন্! ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ আপনাকে এই প্রকার দেখিয়া এবং আপনার নিমিত্ত স্ত্রী ও বালক সহিত সমস্ত গোকুলকে অত্যস্তহঃথিত জানিয়া মুহুর্ত্তকাল অবস্থান পূর্বক উরঙ্গ (সর্প) বন্ধ হইতে উথিত আজ্ঞায় মন্ত্যপদবীমনুবর্ত্তমানঃ স্থিয়া মুহূর্তমুদতিষ্ঠত্রঙ্গবন্ধাৎ ॥ ২০ ॥ তৎপ্রথ্যমানব পুষা ব্যথিতাত্মভোগস্ত্যক্তেশুন্ধময্য কুপিতঃ স্বফণান্ ভুজঙ্গঃ। তক্ষে শ্বদন্ শ্বদনরন্ধু বিষাশ্বরীষ স্তব্ধেক্ষণোলা কুম্থোহরিমীক্ষমাণঃ॥ ২১ ॥ তং জিহ্বয়া বিশিথয়া পরিলেলিহানং বে স্কণীহ্যতিকরালবিষাগ্রিদ্প্তিং।

ঐধরস্বামী।

তদ্য প্রথমানেন বপুষা ব্যথিতাত্মশরীরো ভূজদং কুওলমুখ্চা তং তাজ্ব ক্পিতং ফণাহমমত খদন্ কেবলমীক্যমাণঃ তছে। কণভূতঃ খদনরদ্ধে নাদাবিবরেষ্ বিষং যদ্যতিথা অম্বরীষো মওপাকভাজনং তদ্বং দত্তানি ভ্রানি ঈকণানি যদ্য তথা উন্মুকানি মৃথেরু যদ্য দ চ দ চ দ চ দ চ । ২১॥

হরি চ ক্রীড়ন্তং অমুং দর্পং পরিদ্দার। অতিকরালা বিষামিগুকা দৃষ্টির্বদ্য তং। ছিহ্বয়া ছিশিথণেতি প্রতিম্বং॥ ২২ ॥

বৈষ্ণবতোষণী।

ছঃখস্য তত্রাপ্যায়হঃখহঃখিতস্যেতি ক্রমজ্ঞাপনেনোথানেতি ত্বরা বোধিতা। এবং তছ্থানাদিকা সর্কৈব লীবা ব্রজজনেন দ্ছেতি গ্নয়তে॥ ২০॥

উথানপ্রকারমের দর্শারন্ কালিয়ন্য প্রানিষাই তলিতি তদ্য প্রীকৃষ্ণন্য প্রথামানেন স্বয়ং বিস্তার্থ্যমানেন কিঞ্ছিছ্ছ্। ন্যামানেন বপুরা বাথিত: ক্টালির পীড়িত: আয়ভোগে। যদ্য আয়ুশকেন ত্রাত্যস্তমধ্যাদং সংবল্য পীড়াবৈশিষ্ট্যং দ্যোতিত:। স্থাক্ষান্য নাধারণতা বিবক্ষা। অন্তঃ অন্তঃ ক্রেলির ক্লিলির ক

স্কণী প্ৰকণী পৰিতো মুহলি হস্তমিতি যুগপদেব ঘাত্যাং ঘ্যোঃ পৰিলেহনাৎ অদ্য জাতি স্বভাবত্বেপ্যধুনা কোপেনাতিশ্যোহভিপ্ৰেতঃ তেনাতিবোৰত্বং স্চিতং। অতএব কৰালেতি পুনক্তিশ্চ। হি ক্রীড়ায়েব পৰিতঃ দ্যাৰ ভ্রমণায়ৈত্ব্য স্ক্তো বভামেত্যুৰ্থ:। ২থা খগেক্তঃ শ্রীগ্রুড় ইতি প্রবল্পেন ক্রীড়ায়াং শীঘ্রায়াং বা দৃষ্টাস্তঃ। সঃ কালিয়োহিণি দংশনাব্দরং প্রকর্ষেণ প্রতিপদং দ্যাগীক্ষ্য

ক্রমসন্ধর্ভ:।

থানং বিনা ন জীবিষ্যতীতি প্রকারেণ ন বিদ্যতেহন্য: পতিঃ রক্ষকো যদ্য তাদৃশং নিরীক্ষ্য দৃষ্ট্য তথানি দন্ধীকুমারং শ্রীকৃষ্ণনিত্যর্থ: প্রকারনেবাহ আত্মেত্যালি ॥ ২০। ২১। ২২। ২৩। ২৪। ২৫॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবন্তী।

দ্শিত এব সম্প্রতি গোণবালকোপায়ং বিক্রমলবং দর্শয়তি পশ্যেত্যুক্তা উরঙ্গ উরগঃ ভদ্ধাৎ উদ্ভিষ্ঠং ॥ ২০ ॥

উথান প্রকারমের দশরন্ কালিরস্য প্রানিমাই। তদিতি তেন ক্রফেন প্রথ্যমানং বেষ্টনসমরগতসদ্বোচনাং পরিত্যন্ধ্য বিস্তার্থ্য মানং যন্ত্রপু ভূজিজজ্বাদিকং তেন ব্যথিতঃ জাটারিব পীড়িতঃ আত্মনো ভোগো বস্য সং। বেষ্টনমুত্র্য ত ত্যক্রণ অফলান্ উন্নম্য ধসন্ কেবলনীক্যমাণ এব তত্থো। কীদৃশঃ অসনরন্ধে নাসাবিবরেষ্ বিষং যস্য। তথা অঅস্থীবং জলিষজভ্রপাত্রং ভাঁড় ইতি থ্যাতং তর্থ তপ্তানি স্তর্জানি ইক্লণানি যস্য। তথা উল্লুকানি নিঃসর্স্তি মুথেভ্যো যস্য সূচ্স চ স চ সং॥ ২১॥

দে খীষে হক্কণাৌ পুন: পুনর্লিহন্তঃ তমমুং পরি পরিতঃ সসার। তং ভ্রময়িতুহ তদ্য সর্বতো বলামেতার্থঃ। স কালিয়োহিপি

হইলেন,কারণ তৎকালে মর্ত্যপদবীর অর্ধাৎ মন্ত্র্যাধর্মের অনুবর্তী হইয়াছিলেন ॥ ২০ ॥

রাজন্! ভগবানের বিস্তারশালিশরীরে ঐ ভুজসের কলেবর ব্যথিত হইল, সে কুণুল উন্মোচন পূর্বিক তাঁহাকে পরিত্যাগ করিয়া কুপিত হইল এবং ফণা উন্নত করিয়া নিখাস ফেলিতে২ কেবল নিরীক্ষণ করিয়া দণ্ডায়মান থাকিল। তাহার নাসারশ্ব দিয়া বিষ বহির্গত হইতে লাগিল এবং নয়ন দয় পাকভাণ্ডবৎ সন্তপ্ত ও অত্যন্ত স্তব্ধ হইল আর বদন উ্ল্যুক (অঙ্গার) সদৃশ হইয়া রহিল॥ ২১॥ ভগবান্ হরি ক্রীড়া করত থগেন্দ্রের (গরুড়ের) ন্যায় সেই সর্পের চ্তুর্দ্ধিকে ভ্রমণ করিলেন। তাহার প্রত্যেক মুখে ছুইটা শিখা যুক্ত জিহ্বা ছিল, তাহার দারা সে বারন্থার স্কর্ষয় লেহন করিতেছিল,

জীড় মমুং পরিদ্যার যথা থগেন্দ্রে। বভাষ দোহপ্যবদরং প্রদ্যাক্ষয়াণঃ ॥ ২২ ॥ এবং পরিভ্রমহতোজ্ঞ মুম্মতাংদমানম্য তহপুথু শিরঃ স্বধির ছাদ্যঃ। তম্মুর্দ্রর ক্রনিকরম্পর্শাতিতা অপাদাস্ক্রোহিথিল কলাদি গুরুন নর্ত্ত। তং নর্ভু মুদ্যতমবেক্ষ্য তদা তদীয় গন্ধর্কিদিন্ধ মুনিচারণ দেববংবং। প্রীত্যা মুদস্পণবানক বাদ্যগীতপুষ্পোপহার মুতিভিঃ দহদোপদেলুঃ॥ ২০॥

গ্রীধরস্বামী

এবং পরিভ্রমণেন হতং ওজে। যদ্য তং উল্লতাবংসৌ যদ্য তং তস্য মুদ্ধস্থ যে রত্ননিকরাত্তেষাং স্পর্শেনাত্যরুণং পাদাস্কুজং যদ্য সং। নম্ম কথং চঞ্চলেমু শিরঃস্থাননত ত্রাহ অথিলকলানাং নৃত্যবিশেষাণামাদি গুকুঃ॥ ২৩॥

देवकवटडावनी।

মাণ অভীক্ষং বভ্রামেতি সর্পেণ ক্রীড়াকৌশলমুক্তং ॥ ২২॥

পরিত্রমহতৌজগমপি উন্নতাংসং অতএব আনম্য তং শ্রীহন্তেন। তথা শ্রীহরিবংশে। শির: স রক্ষো জগ্রাহ স্বহন্তেনাবনম্য চেতি। পৃথি তি তদ্রস্বোগ্যতোক্তা। তমুর্দ্ধেতি সৌন্দর্যাবিশেষ: স্পর্শেতি লাখববিশেষস্তর্থাপি অতিকোমলত্বাৎ তাম্রত্বং। আদি গুরুত্বে হেহুরাদ্য: অনেন কালিম্বস্য চ মহাভাগ্যত্বং স্কৃতিতং॥

নৃত্য স্থার্থং তছপকরণমাহ তমিতি অবেক্ষ্য অবেত্যেতি বা পাঠঃ সমানার্থঃ। ঈক্ষেরিনশ্চ জ্ঞানার্থছাৎ তদীয়াঃ শ্রীগরুড়াদ্যঃ পার্ষদাঃ। গদ্ধাদ্যাদা বাদবৈশ্চারণা উপদেহঃ অদেবন্তঃ। গীতৈর্গদ্ধাদ্ধ প্রেশিবেশিকা তছধবশ্চেত্যর্থঃ। উপহারা বিবিধগদ্ধস্থাদিয়কৈঃ দিশ্ধাঃ। স্থতিভিশ্চ মুন্র ইত্যেবং বিবেচনীয়ং। ক্রমাতি ক্রমোহর্ষভবেণ বাদরায়ণেরনমুসন্ধানাৎ। যহা প্রীত্যা সর্ক্ষোমাণি সর্ক্ত প্রবৃত্তিরভিপ্রেতা॥ ২৩॥

🗐 বিশ্বনাপচক্রবর্ত্তী।

দংশনস্য অবসরং সমীক্ষ্যমাপ এব বভাম ক্বঞ্কজ্বশণলাঘবাদংশনাবসরং ন প্রাপেতি তির্যগ্লমিথেলরাপি তং জিগারেত্যর্থ:॥২২
উন্নতাবৃচ্চাবংসৌ যস্য তং আনম্যতি পরিভ্রমহতৌজ্বাৎ ভ্রমণাসমর্থস্য তস্য শিরাংস্যেব একহস্তেনৈবানম্য তত্রাধিরতঃ সন্নতঃ।
শিরং স ক্বঞাজগ্রাহ অহস্তেনাবনম্যতি হরিবংশোজেঃ। তস্য মুর্দ্ধর্ যে রত্ননিকরান্তেষাং কঠোরাণাং স্পর্শেনাতিস্কুমারতাদতিতাম্রমত্যক্ষণং পাদাস্কং যস্য সঃ। স্থালী শরাবাদির্ কলা জ্ঞাপনাম্ব নটা নটন্তি অয়ন্ত স্ক্কিলানামাদিগুক্তাং চঞ্চলেষ্ কালিয়মুর্দ্ধন্থ ননর্ত্তি অকলাভিজ্ঞদর্শনেষং প্রজ্পকরীষ্ পূর্বরাগবতীষ্ জ্ঞের।॥

নর্জুং নর্জিত্ব তদীয়েতি বাদ্যাং বিনৈব স্বামুখেনৈবোচ্চারিতৈতহৈথেশলৈ প্রভুর্ভাতি। তথমং কং সময়ং প্রতি স্থিতা ইতি বিচার্ব্যেতি ভাবং॥ ২০॥

আর তাহার দৃষ্টি দাতিশয় ভয়ুঙ্কর এবং বিষাগ্নিতে পরিপূর্ণ হইয়াছিল, রাজন্। কেবল ভগবানই দেই ভুজঙ্কের চারিদিকে ভ্রমণ করিলেন এমত নহে, দেও দংশনের প্রতীক্ষায় ভ্রমণ করিতে লাগিল॥ ২২॥

হে মহারাজ! ঐ রূপ ভ্রমণ দ্বারা যথন দেই সর্পের সামর্থ্য বিনফ হইল তথন তাহার উন্নত কর অবনত করিয়া তদীয় বিস্তীর্ণ মস্তকে ভগবান্ আরোহণ করিলেন, অতএব মস্তকন্থ রত্ন নিকরের স্পর্শে ভগবানের পাদপদ্ম অপূর্ব্ব তাত্রবর্ণ হইল'। তখন তিনি নৃত্য প্রভেদের গুরু অতএব চঞ্চল মস্তকের উপরেও নৃত্য করিবার উপক্রম করেলেন। হে রাজন্! শ্রীকৃঞ্চকে নৃত্যার্থ ক্তোদ্যম দেখিবা মাত্র গন্ধর্ব্ব, সিদ্ধ, মুনি চারণ, এবং দেবতাদিগের বধৃগণ প্রীতি পূর্ব্বক দেই সময় মৃদঙ্গ, পণৰ, আণকবাদ্য তথা গীত এবং পুপোপপহার ও স্তব স্তুতির সহিত সহসা সমীপে আদিলেন॥ ২০॥

যদবচ্ছিরো ন নমতে হঙ্গ শতৈক শীষ্ঠ গুত্র মর্দ্ধ খলদ ওধরো হ জিবু পাতৈ । কীণা মুষো ভ্রমত উল্পান্যতো হস্ত গুলো বমন্ প্রমকশাল মাপ নাগঃ॥ ২৪॥ তদ্যা কিভি গ্রল মুৰমতঃ শিরঃ স্থান্থ সমুদ্মতি নিশ্বসতো ক্ষোটিচঃ।
নৃত্যন্ পদানুনময়ন্ দময়া স্বস্থু পুটিপাঃ প্রপ্জিত ইবেছ পুমান্ পুরাণঃ॥ ২৫॥
তচ্চিত্রতা ওববিরু গ্রফণ। সহত্যা রক্তং মুখৈরু ক্র বমন্নূপ ভগ্গাত্তঃ।

अध्यक्षामा।

শতমেকানি মুখ্যানি শীৰ্ষাণি যস্য তস্য ক্ষাণায়ুৰোহপি পুন ভ্ৰমিতো যং যং শিরো ন নমতে স্তক্ষতাং ন জহাতি নৃত্যজ্লেনাজিয়ু -পাতৈ স্তৰুমৰ্দ্দ তদাচ আস্যতো মুখেভ্যো নস্তো নাদিকাবিশবৈত্যোহস্ক্ ক্ষিৰিং ব্যন্॥ ২৪॥

পুনর সি ক্ষা উলৈ নি শ্বসতো যদ্যং সমুলমতি তত্তং পদাঘাতেনাত্বনমন্। ইং অমিলবদরে হুটে গ্রুকাদিভি: শেষাসনঃ পুবাণ পুক্ষ ইব যশোদানন্দনঃ পুলৈঃ প্রপ্জিতঃ। যদা। গ্রুকাদিভিঃ পুলৈঃ প্রপ্জিতো গোপৈঃ পুরাণঃ পুমানিব দৃষ্ট ইতি।

বৈষ্ণবতোষণী।

একশব্দেন মুখ্যবাচকেনান্যান্যপি বহুনি সন্ধি ইতি বোধ্যতে। অথ্যে ফণাস্হলোক্তে:। ক্ষীণায়্ৰ: মৃতপ্ৰায়স্যেত্যুৰ্থ: উল্ণং উদ্বটং প্ৰচ্যুমিত্যুৰ্থ:॥ ২৪ ॥

সর্কাঙ্গবৈবশ্যেহপ্রি অকিভির্গরলমুদ্ধমত ইতি ছ্ঠস্বভাবনির্দেশ:॥ ২৫॥

তদ্য তথা অনির্কাচনীয়ং চিত্রং বিবিধং ভ্রান্থিরেচকাদিগতিভেদং যন্তাগুবং তেন বিশেষতো ক্ষমং জাতব্রণং ভমং বা ফণানাং সহস্রং যন্ত সম:। অথ সাক্ষাং জ্রীচরণকৃত্তদণ্ডাং সহজান্তদে বিক্রমণে শ্রীবলিবত্তংম্পর্শাং বিশুদ্ধভাবোৎপত্ত্যাচ স্থীভগবস্থং জ্ঞাতবান্ প্রপদ্দেত্যাহ স্থ্যেতি। তং শ্রীকৃষ্ণং চরাচরাণাং গুরুং জনক্যাদেব যতঃ পুরাণং পুরুষং সর্কোবাদ্যানিত্যর্থ: যতো নারায়ণং লোক-

ক্রমসন্দর্ভ:।

তং এক্তি ক্ষাং নারারণং শ্বরা সপত্রীতাঃ প্রতমন্ত্রকায় এবং শরণাপত্তা। ক্ষান্তবস্তমণি তদপেক্ষা শিরদ্যেব স্থিতং তৎপত্নাঃ প্রপেশ-শীবিখনাথচক্রবর্ত্তী।

শতং একানি মুখানি শিরাংসি যদ্য তদ্য অতো ফণাসহস্তোকে:। যদ্যং ন নমতাজীভবতি তাতৈব সহসাক্ত অভিবুপাতৈ স্তানেব কণান্মদি। তদাচ আন্ততো মুখেভা: নজো নাদাবিবরেভাঃ অস্থ্যন্॥ ২৪॥

ত্ব্য শিরংক্র মধ্যে বং বং সমুল্মতি তত্তদেব পদা পাদপ্রহারেণ অন্ত্রমন্ত মিল্লব্দরে ছাই প্রক্রাদিভি বুধ্যমাণে: প্লেও প্রস্তিত ইব প্রসল্ল সন্তেষামেব হিতার্থং ছুইং তং দ্মলামভূব ॥ ২৫ ॥

প্রমভক্রাভিত্তৎপত্নীভি: কুপারূপং ভক্তিবীজং পূর্ব্যমুখনিপি পূর্ব্বপ্রাধন্ধনিতক্রৌর্গ্রেনিধব্যাথে কালিল্লা ত্র্যান্তঃ-করণে ছটকেত্রে ইব প্ররোচ্মুসমর্থমেবাদীং। তদা তু এচরণম্পর্ণেন তংক্তদগুপ্রাথ্যা চ তত্তদোষক্ষে সতি সংগ্রৈব তদ্ধকি

হে রাজন্! কালিয় নাগের একশতটা প্রধান মস্তক, সে ক্লীণায়ঃ হইয়াও পুনঃ ২ ভ্রমণ করিতেছিল অতএব তাহার যে মুগু নত না হইল ধলদগুধারী ভগবান্ হরি নৃত্যছলে চরণাথাতে সেই সেই মুগু মর্দিত করিয়া কেলিলেন, তাহাতে সেই ভুজঙ্গ মুখ ও নাসিকা বিবর দ্বারা উল্লণ শোণিত বমন করত পরম মোহ প্রাপ্ত হইল ॥ ২৪॥

হে ভারত । কালির নাগ তদনস্তর পুনরায় চকুর্বারা গরল উদ্গারণ করত রোমে নিশাস পরিতাগ করিতে লাগিল। শ্রীকৃষ্ণ তাহার মস্তকোপরি নৃত্য করিতে করিতে যে যে ফণা সমুদ্রত
দেখিলেন পদাঘাত দ্বারা তাহা ভাবনত করাইয়া তাহার দমন করিলেন। সেই সময় গদ্ধকাদি
দেবগণ হাই হইয়া শেষশায়ী পুরাণ পুরুষের ফায় যশোদানন্দনকৈ বিবিধ পুজ্পোপহাব দিয়া পূজা
করিলেন। ২৫॥

সে মাহা হউক, ঐ রূপ আশ্রুষ্ঠা দুজে যখন সহজ্ঞা বিরুগ এবং গাত্র ভগ্ন হইল তখন কালিয়

স্মৃতা চরাচরগুরুং পুরুষং পুরাণং নারায়ণং তমরণং মনদা জগাম। ২৬। কৃষ্ণদ্য গর্ত্তজগতোহতিছরাবদন্ধং পাষ্টি প্রহারপরিক্রমফণাতপত্রং। দৃষ্ট্রাহিমাদ্যমুপদেত্রমুষ্য আর্তাঃ পত্ন্যঃ প্রথছসনভূষণকেশবদ্ধাঃ॥ ২৭।

धीरवत्रामी।

যন্ত্ৰ পুলৈ: প্ৰপূজিত ইব প্ৰদল্পন দন্দমনামূহৰ কুপদা হিতং কুতবানিতাৰ্থ: ॥ ২৫ ॥

व्यत्न भद्रवः ॥ २७॥

গর্ব্ভে জগন্তি যন্ত তন্তাতিভরেণাবদলং আক্রান্তং। পান্ধি: পাদ্পৃষ্ঠং আদ্যং ঐক্তন্ধং লগন্তো বিশ্রংদমানা বদনাদলো বাসাং তাং॥ ২৭॥

বৈষ্ণবতোষণী।

পদ্মাকারনাভিমিতার্থ:। কিয়া। সর্ব্বজীবানামাশ্রয়ং এতে সর্ব্বর্থা শরণাপত্তী হেতবং স্থত্যতি প্রাচীনেন তেন শতশং শ্রতস্যাপি তম্ম দিরাব্যুমানরাহিত্যাং। মনসেতি প্রমার্জ্য তবাশীত্যুক্তাবপ্যশক্তে:। যথা। মনসা শরণ গমনে হেতুং প্রধ্যস্থামি তয় হল্বর-রপাণাং পুরি শেতে সদা বর্ত্তেইতি তথা তং। যথা। তং শ্রীকৃষ্ণং নারায়ণং স্ব্রথা স্বপত্নীভ্যন্তথাশ্রুতমন্ত্রমন্ত্রায়। শেষং প্রাথং ॥ ২৬ ॥ এবং শরণাপত্যা ত্যুক্তরেগাঘাতদত্তে সম্মক্র্রসন্ত্রে বাসাং স্বত্তকানামিপ হুইন্থামিসক্রোচাদনাগতচরীণাং স্বদ্ধেন স্বয়নের তস্য তাদৃক্বং সাধিতং তদপেক্ষান্তাব্যেতি তদর্থমের তাভ্যন্তাদৃশপ্রসাদদর্শনার্থমেবচ শিরস্যের বিশ্বমানে শ্রীভগবতি তাসাং প্রতিপতিসাহ ক্ষত্তেতি হাভ্যাং। গর্জজগত ইতি বিভূত্বাহ্নকং নচান্তর্ন বহির্ঘান্তিতি ন্যান্তেন গর্জশক্ষেন হুজান্তর্বাহ্নত্ত ততো ব্যাপ্তসর্ব্বেত্ত্বর্থ:। তথাপি জগৎস্পর্শাভাবন্ত দর্শিতঃ। মন্ন তত্তমিদং সর্ব্বনিত্যাদিনা। তন্মিংশৈবত্ত্বতে ভারতায়াঃ কৈম্ত্যান্ত্র কপ্রকাল্য প্রার্থমিক্র ত্যাত স্ব্যান্ত্র ব্যাহ্রির্ঘানি বিরংশ: স্চিতঃ। উপ্সেছঃ পার্শেক্র প্রাক্ত্যাদেশ স্ব্রস্ক্রনাদিকা ইতি মহাদৈন্যমূক্তং॥ ২৭ ॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

দিরে ইত্যাহ ক্লফস্তেতি ঘাত্যাং। গর্ভজগত ইতি বিভূষাৎ ভূবি কায়ং নিধায়েতি তত্ত্ব মধ্যনীপঃ স্থচিতঃ ॥২৬॥২৭॥ ২৮॥২৯॥ ৩০॥ ৩১ ॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

বীজমঙ্গুবিতং বভূবেত্যাহ স্ব্রেতি। মবৈরিণো গ্রন্ডাদপ্যদ্য প্রদ্সহত্রগুণধিকং বলং মরোপলন্ধং তত্মাম্মংপদ্ধীতিরূপদিইভক্তিকে কোহরনেব প্রমেশ্বর ইতি স্বীয়স্থতিগোচরীক্তত্যত্যর্থা। চরাচরগুরুমিত্যসাধারণং বলং দর্শয়হমেব প্রমেশ্বর উপাদ্য ইতি ম্চ্নিপি নাং জ্ঞাপয়ন ক্লপ্যামচ্ছিরোহর্পিতচরণো শুরু ভবন প্রদীদ্ভি। ভ্রমিমহমিদানীং শরণং ধামীতি। অরণং শরণং॥ ২৬॥

গর্ভে জগন্তি যস্য তস্য অতএবাতিভরেণ আদ্যং প্রীক্ষণং আর্তা ইত্যেতাবংকালপর্যন্তং যা পত্যাব্দাসীনা এবাসন্। বহিমুথো ২বং ভগবংকত দণ্ডেন ত্রিয়তে চেৎ ত্রিয়তাং। বন্ধং বিধবা ভূষা ভগবন্ধং ভল্পামেতি যদা ভূমনসা শরণং গতস্য তস্য পত্যদৈন্যানির্দে বিমাদবিত্তর্কমত্যাদিস্কারিলক্ষণং মুধাদ্যক্ষেষ্ দদ্ভ স্তদেবাহো অস্মন্তাগ্যবশাদ্যং বৈষ্ণবে। হত্তদ্স্য রক্ষণে বতামহে
ইতি সংহতাতা তাত্র জাতলেহতাদার্তাই শ্রীমচ্চরণসন্তিধিমাজস্মুঃ॥ ২৭॥

বহু মুখে রুধির বমন করিতে করিতে চরাচর গুরু পুরাণ পুরুষ নারায়ণের স্মরণ পূর্বক মনে মনে শরণাপন্ন হইল॥ ২৬॥

রাজন্! যে শ্রীকৃষ্ণের উদরমধ্যে ত্রিজগৎ বর্ত্তমান, তিনি ফণার উপর আরোহণ করিয়া রহিলেন, স্থতরাং কালিয়কে অতিভরে আক্রান্ত ও তাহার ফণারূপ আতপত্রকে পাঞ্চি প্রহারে সর্বতোভাবে কর্ম নিরীক্ষণ করিয়া কালিয়ের পত্নীগণ অতিশয় আর্ত্ত হইল,তাহাদের বসন ভূষণ ও কেশবদ্ধন গলিত হইয়া পড়িতে লাগিল। তদনস্তর তাহারা সেই আদ্য পুরুষেরই নিকট শরণাপম হইল ॥ ২৭॥

তান্তং স্থবিগ্ননসোহথ পুরস্কৃতার্দ্ধাং কায়ং নিধায় ভুবি ভূতপতিং প্রণেমুঃ।
সাধ্ব্যঃ কৃতাঞ্জলিপুটাঃ শনলশ্য ভর্তু মোক্ষেচ্ছবঃ শরণদং শরণং প্রপন্ধাঃ ॥ ২৮॥.
নাগপত্ম উচুঃ॥
ন্যায্যো হি দণ্ডঃ কৃত্কিল্লিষেহস্মিংস্তবাবতারঃ খলনিগ্রহায়।

প্রীধরস্বামী।

তাঃ সাধ্যঃ শরণং প্রাপ্তাঃ সত্যঃ তং প্রণেমু: স্থবিগমনসঃ অতিবিহ্বলচিত্তাঃ। ভূবীতি ত্সিন্ স্থানে জলাদধ্যাদা তীরে বা শ্মলহা পাপান্থনো ভর্মোক্ষেজ্বঃ ভর্বজ্মলং ত্সা বা ভূতপ্তিং প্রাণিমাত্রস্য প্তিং শরণদং আশ্রম্প্রদং ॥ ২৮॥

প্রথমং তাবং কুপিতং ভগবস্তং দণ্ডারুমোদনেন উপশময়স্তাঃ স্তবস্তি নায্য ইতি। তত্র। দণ্ডারুমোদনং ষড় ভিদ শিভিস্ত হবে স্থৃতিঃ। প্রার্থনং পঞ্চভিঃ শ্লোকৈ স্ততঃ পল্লগযোধিতাং। নচ নিগ্রহার্মগ্রহক্ষপং বৈষম্যমিত্যাত্বর্ধ হিদে দ্মমিতি। অনুশংসন

বৈষ্ণবভোষণী।

স্বিমং পতিমরণশক্ষা তদপ্যপরাধশক্ষা বা অতিজীতমতিত্ঃখিতং বা মনো যাসাং তাঃ। অয়ং প্রণামে প্রতিপত্তী বা প্রমটনত্যেন গুণবিশেষ উক্তঃ। ভূবি কায়ং নিধায় দঙ্বিদ্নিপত্যেত্যর্থঃ। এবং ব্রদন্ত মধ্যে কন্দিনীপো বোধ্যতে। যক্র ক্রীজাবিশেষার্থম্থিতঃ শ্রীকৃষ্ণঃ কালিয়েনার্তো গোক্লজনৈরদ্ভাতেতি বর্ণিতং পুরস্কৃতার্ভতং ক্রপালননার্থং। নম্ ভর্তুরপরাধেন ক্তোন বিভাতি স্ম তত্তাহ ভূতানাং প্রাণিনাং সর্কেষামপি পতিং তাসাং ভাদৃশতয়া ক্রিজং। তত্মায়্রেইপি ক্রান্ত গন্ধব্যমিতি ভাবঃ। সত্ত্ব ভর্তুঃ শমলত্য মোক্ষাগা তমিছেষ্যাঃ। কৃতঃ সাধ্যঃ পতিব্রতাঃ শ্রীকৃষ্ণভক্তিমত্যাত ॥ ২৮॥

অশিন্দণ্ডো ভাষ্য এব। তত্ৰ হেতু: ক্বতানি কিৰিষাণি গক্ষড়ে শ্ৰীষ্ম্নাক্ষাবনয়েত্তজীবসমূহে শ্ৰীভগৰতি চাপ্রাধা যেন তাদৃশো। যন্তবাবতার: প্রাকট্যমাত্রং থলানাং দাধুদ্রোহিণাং নিগ্রহায় ভবতি। এবং সাধ্নামন্থগ্রহায় চেতি স্চিতং। স্বভগাতু ন নিগ্রহোহপি ন চান্তগ্রহ ইত্যাহ রিপোরিতি। রিপুণাং স্বতানাঞ্চ সম্বন্ধে তুল্যা দৃষ্টি বদ্য তাদৃশস্য। ন থল নিগ্রহেংপি নৈমুণ্যমিত্যাই

ঐবিশনাথচক্রবর্তী।

তান্তং প্রথমং প্রণেম সুবীতি জ্বলা মধ্যে কশ্চিদ্বীপো বুদ্ধাতে যবৈর স্থিতঃ কৃষ্ণঃ কালিয়বেটিতো গোকুলজনৈরদৃশ্যতেতি জ্ঞেয়ং। পুবঃ কৃষ্ণসাথ্যে কৃতা অভা বালা যাভিন্তা ইতি কুপাজননার্থং॥ ২৮॥

প্রথমং স্তবতাঃ কোপমুপশমরিত্থ দণ্ডমন্থমোদয়ন্তি শ্যাব্য ইতি। আনেন সাধুজোহলক্ষণস্য অথলন্তম্য ক্ষমবৃধ্যপ্রাপাং প্রাপ্তঃ
মিতি ভাবঃ। শিষ্টপালনত্তনিগ্রহকৃত তবতু কাপি বৈষমাং নৈবান্তীত্যান্তঃ। রিপোঃ অতানাং রিপুক্তের অপিকারাং অক্তের চ্
তুল্যদৃষ্টেঃ। রিপোরপি পুদ্রম্য শিষ্টভ প্রস্থাদ্য্য পালনদর্শনাং অস্যাপি স্তত্য নরকাত্ত্রম্য ব্ধদর্শনাজেতি ভাবঃ। নচ থলনিগ্রহেহপি নৈম্বিগ্যিতিয়ান্ত্র্ধিংদে ইতি থলম্বহেতুকনানানরকজঃথোপশমপুর্ক্কনিত্যস্থময়মোকলক্ষণং ফলমেব দীরতে ময়েত্যন্ত্রশংসন্

তাহার। সাধ্বী দ্রী,একারণ কৃতাঞ্জলিপুটে নিকটবর্ত্তিনী হইয়া পাপাঝা পতির মোচন বাসনায় জলা-শয় তীরে নিজ নিজ শরীর স্থাপনপূর্বক সর্ব্বপ্রাণির পতি আশ্রয়প্রদ হরিকে প্রণাম করিতে লাগিল। রাজন্! তৎকালে ভয়বশতঃ নাগপত্নীদিগের চিত্ত সাতিশয় বিহ্বল হইয়াছিল। তাহারা ভগবানের আশু দয়া হইবে বলিয়া শিশু সন্তান গুলিকে অগ্রে করিয়া লইয়া গিয়াছিল॥ ২৮॥

প্রথমতঃ কুপিত ভবান্কে দণ্ডানুমোদন দারা শান্ত করত নাগপত্নীগণ বলিতে লাগিল ভগবন্ । আপনি থলদিগের নিগ্রহ নিমিত অবতার গ্রহণ করিয়াছেন। আমাদের পতি কালিয় খল; এ পাপ করিয়াছিল, ইহার এ রূপ দণ্ড স্থায়ে বটে। প্রভো! শক্রতে এবং পুজেতে আপনকার সমান

রিপোঃ স্থতানামপি তুল্য দৃষ্টি ধ'ৎসে দমং ফলমেবামুশংসন্॥ ২৯॥ অনুগ্রহোহয়ং ভবতা ক্বতো হি নো দণ্ডোহসতাং তে থলু কল্মদাপহঃ। যদ্দদশ্কসমমুষ্য দেহিনঃ ক্রোধোহপি তেহমুগ্রহ এব সম্মতঃ॥ ৩০॥ তপঃ স্থতিং কিমনেন পূর্বাং নিরন্তমানেন চ মানদেন।

व्यथतवामी।

व्यार-गठियम् ॥ २२ ॥

নিএহোহপান্থগ্রহারেত্যক্তং ইদানীমন্থ্রহ এব ন নিএহ ইত্যাহ্রম্থ্রহ ইতি। নোহন্দাকং যন্ত্রাদস্য সর্পর্যং দৃখ্যতে অতন্ত্রমূল পাপ নিবর্ত্তকো দণ্ডোহন্ত্রগ্রহ এব ক্রোধন্বেন প্রতীয়মানোহপীত্যর্থ: ॥ ৩০ ॥

নহাংশ্চার্যন্ত্রাহ ইতি ত্যা পুর্রপুণানভিন্দতি তপ ইতি। স্বয়ং মান্রহিতেন অন্যেত্যো মান্দেন চ সর্ব্বং জীব্যুতীতি

বৈষ্ণবতোষণী ৮

ধংগে ইতি ফলং নানানরকাদিছ:খহেতুখলছোপশমনপূর্ব্বকং নিত্যস্থদানলক্ষণং ॥ ২৯ ॥

হি নিশ্চিতং নোহন্দান্ প্রতিদণ্ডো দণ্ডখন দৃশ্চমানোহপায়মমুগ্রহ এব ভবতা কৃতঃ। সোহরমসতাং কল্মবাপহ এব স্যাং। বদবন্ধাং কল্মবাদম্যা দেহিনঃ কল্মভিন নিনাদেহং প্রাপ্ত সম্প্রতিদন্দশৃক্ষং জাতং ক্তেত্যমুগ্রহে নিরস্তরভবদাবেশেন জীবনুক্তরাং দলশৃক্ষাভাসএব স্থাপ্ততীত্যর্থং। তন্ধাং ক্রোধেহণীত্যাদি। বহা। অসতাং কল্মবাপহোহপি তে অয়া দণ্ডো নো ক্রতো ন ক্রতঃ। বদবন্ধাদম্ব্য
সপাধং শর্পনিরীরং তৎথবন্ধ্রহে নিমিত্তে তয়া সম্প্রতমেব তথা ক্রোধো জাতিকভাবেহিপি অন্প্রহে নিমিত্ত এব অয়া সম্প্রতঃ ক্রীড়াবৈ বােজিত ইত্যর্থঃ। ভোগপরিবেইনবীকারাৎ তথা ফণেযু ক্রোধেনোরম্যমানের পর্মহর্থেন নৃত্যাচরণাচ্চ॥ ৩০॥

তপঃক্ষদ্রাদি স্কর্চ্ তপ্তঃ ক্বতং। সৌষ্ঠবমেব দর্শয়তি নিরস্তেতি। বিশেষণখন্তেন তেন চ ঐচ্ছিকেন তস্য সন্তোষমসন্থাব্য পক্ষান্ত্র-মান্তর্ধ শ্ব ইতি। স্বধর্মো নিত্যঃ ক্বত ইতি শেষঃ। এবং স্বর্রপেণ সামর্থ্যমূক্ত্বা বিশেষণেনাপ্যান্তঃ সর্ব্বজনাত্মকম্পান্ন ইতি। অন্তব্যপান স্বা-স্মান হিতাচরবং তঃ পূর্ব্বক ইত্যর্থঃ। পূর্ব্বনিতি এতজ্জন্মনি তত্তদসন্তবাৎ যতো যাত্যাং তপোধর্মবিত্যাং কংসন্তোষার্থং ক্বতাত্যা-

श्चीतिश्वनाथहक्कवर्षी।

कुश्रम्या प्रमार प्राप्त धर्म ॥ २२ ॥

তন্মাৎ হুষ্টেৰ্পি তৰ বস্তুতন্ত্ৰত এব নিগ্ৰহাকার ইত্যাহুরহুগ্রহ ইতি। নো হস্মাকং দণ্ড: কলমং প্রাচীনবিবিধ্পাপং অপহন্তীতি স:। মৃত: কলমাৎ অসুষ্য দেহিনো জীবস্য দক্ষ্কজং। তন্মাৎ ক্রোধোহণীত্যাদি ॥ ৩০ ॥

ইদানীয় নিগ্রহাকারোছপি নৈবারমহ্গ্রহং কিন্ত শিষ্টজনতাক্ষ্টপভামপি ব্রুরমনায়াসেনৈব লভতে স্থ ব্য তু কিং প্রাচীনং স্বপুণামন্তীতি বিতর্কয়য়্য **আহন্তপ ইতি।** নিরস্তমানেন গর্মপ্ন্যারাদন্যক্তসম্মাননাভিলাবর্হিতেন মানদেন অন্যেভ্যামানং দদতেতি তুপ্রো বৈষ্ণবীরস্থং স্কৃতিঙং। বৈষ্ণবৈত্তরেষু তপস্বির্মানিত্মানদ্যাদর্শনাৎ। নাহং দানৈ ন তপ্রেভি প্রত্তেন ব্যত্তপদত্তপ্রামাদক্তাভাবাচ্চ। সর্মজনাত্তকম্পা উপলক্ষিতো বোধর্মঃ সক্ষত ইতি ধর্মস্যাপি বৈষ্ণবীয়তং। ক্রিণাং সর্মন

দৃষ্টি, আপনি ফলই আলোচনা করিয়া দণ্ড বিধান করিয়া থাকেন ॥ ২৯ ॥

ভগবন্! আপনকার দণ্ড অস্থ জনের কল্মষ নাশক, ইহাতে কোন সন্দেহ নাই, আপনি এই দণ্ড করিঃ। আমাদের প্রতি অনুগ্রহই প্রকাশ করিলেন, কারণ এ ব্যক্তির এক্ষণে যে সর্পশরীর দৃষ্ট হইতেছে ই হার সর্পশরীরের মোচন হইবে। অতএব সর্পত্তের মূলীভূত পাপ নিবর্তনের কারণ হওয়াতে, আপনার দণ্ড যদিও আপাততঃ কোণ রূপে প্রতীয়মান হউক্, তথাচ অনুগ্রহ বলিয়াই স্মানাদের সন্মত হইল॥ ০০॥

• ভগবন্ । এই ব্যক্তি স্বয়ং মান রহিত সত্য, কিন্তু অত্যের প্রতি মানপ্রদ হইয়া পূর্বে অপূর্ব তপস্থা অথবা সকল প্রাণির প্রতি অনুকম্পা করিয়া কি অনিব্রচনীয় ধর্মই যে অনুষ্ঠান করিয়াছিল, বলিতে

280

ধর্মোহথবা সর্ব্যঞ্জনাত্মকম্পয়া যতো ভবাংস্তব্যতি সর্ব্যজীবঃ॥ ৩১॥ কস্যানুভাবোহস্য ন দেব বিদ্মহে তবাজ্যিরেণুম্পার্শাধিকারঃ।

ञीधत्रवागौ।

সর্বাজীব:॥ ৩১॥

নচ তপ আদি নিমিত্ত এষ ভাগ্যোদয়: কিন্তুচিম্বাং তব ক্লপাবৈভবমিত্যাত্তঃ শ্লোকত্রয়েণ ক্ষানুভাব ইতি। তপ আদিনা হি ব্রহ্মাদয়োংপি যত্থা: শ্রিয়ঃ প্রসাদমিছম্বি সা শ্রীল লনাপি শ্রীরেব ললনা উত্তমা স্ত্রী যদ্য ত্বদক্তিযুবেণ্স্পশাধিকারত বাঞ্যা তপ-

देवश्ववत्जावनी ।

মিতি গমাং। দর্বেজীবা বহ্নেতি জীবেষু সর্বেষু স্মানান্তাবেন স্কাননাত্ত্বপাদিনাচ তব তৎপ্রভোস্তোষসিদ্ধে:॥৩১॥

তব প্রিগোকুলেশ্বরপ্রাক্তি রেণুনাং ম্পর্শস্ত বাদিকার: অস্থাপরাধিন: কালিরস্য কত্মস্য কারণ্স্যাস্থভাব: ফলং তর বিদ্য:।
তব্র হেসুর্যদিতি তাদৃশতপ্রমাদি প্রসাদ্যা শ্রীরপি ললনা প্রস্কুকোমলাপি যদ্মান্ন ব্রিধপর্মধ্বসঙ্গম্যতভ্রে গোন্
বিহার রুত্রতা বন্ধনিযমা সতী তপ আচরদেব নতু তং প্রাপেতার্থ:। প্রাপ্তৌ সত্যাং ক্যাস্থভাবেহিস্য ন দেব বিদ্যুক্ত ইতি
নোচাতে ইতি ভাব:। তচ্চ যুক্তমেব ইতি দ্যোধ্যস্তি দেব হে অন্ত ভানস্কমহিয়া দ্যোত্মানেতি। এতত্ত্তং ভবতি শ্রীরেয়ং বৈরু
ঠেপরাদিপ্রেরসীরপা নতু গোপরামারপা রেথাদিরপাচ। গোপাস্তরেগ ভুজ্যোরপি যংশ্রুহা শ্রীরিতি অন্তক্তে শ্রেমেব পর্যাবসানাং
ক্ষেত্র্বর্ণরপোরপেণ তৃষ্মবক্ষোভাগে স্থিতবাচ্চ। তপোহত্ত স্তাহাং স্পত্যারাধনং। অতএব পূর্ব্বত উৎকৃষ্টরং শ্রীকৃষ্ণস্য তেন সইহকাত্মা
জ্ঞানাত্তথাপি সৌন্দর্যাদিবৈশিপ্টেন লোভবিশেষাত্ত্বান্ত্রক্ষ যুক্তমিতি শ্রীত্বেন সর্বানাং তাদানৈকাত্ম্যে সত্যপি অন্যত্মায়া অভিলায়:। প্রাত্রভিবভেনেনাভিনানভেদাং যথা বৈসুষ্ঠনাথাদিসঙ্গিনীম্বপি তত্ত্বন্ধীয় সীতাদীনাং শ্রীরামবিরহান্যং শ্রমতে ইতি ত্যাশ্রত্বপ্রাদিনা ব্রিকালমপ্রাপ্তিরের বিবন্ধিতা। অপ্রাপ্তিকারণঞ্চ গোপীবত্তদনন্যস্থাভাব এবেত্বি চ। যদ্যপি তাসাং প্রমত্ত্বকানাং
সঙ্গ এব প্রীরন্ধাবনাম্বর্যমূন্যাব্য এব চ হেতুরন্তি তথাপি স্বাব্যাননাং ত্র্যাস্য চ তদ্রক্ষপ্রশ্বেন ফ্লাম্বংপাতাৎ তদপ্রস্থাব্য

क्रममन्दर्भः।

যথাজ্যতে শ্রীরিয়ং বৈকুঠেখরাদিপ্রেয়দীরণা। তপোহত জীম্বাং স্বপত্যারাধনং। অতএব পূর্বত উৎকৃষ্টহং। শ্রীরেছেজ-নন্দনরপাবির্ভাববিশেষেহন্দিন্ লোভবিশেষাত্তধাঙ্গ্রং চ যুক্তং। তস্যাশ্চ তপ আদিনা ত্রিকালপ্রাপ্তিবেদ বিব্দিত। ক্যায়ি-ভাবেহিস্ত্যোদেং। অপ্রাপ্তিকারণক গোপীবস্তদন্যম্বাভাব এব। যদ্যপি ভাসাং প্রমতম্ভকানাং সঙ্গ এব শ্রীকুলাবনাম্বর্দাস এব

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

ভূতাত্বকশাত্বপত্তে। যত ভপ্দো ধর্মাদ হেতো অব্যতি। অস্য শিরংহ রক্ষ্ণীরুতের প্রহর্ত্যাচরণাব। সর্ক্ষীবস্থান-নাহকশাদিনা সর্ক্ষীবেষু সম্ভোষিতেষু সর্ক্ষীবমন্দিরো ভবানপি সংভূষ্যতীত্যর্থঃ। শ্লেষেণ সর্কাংছং জীব্যুদি ওংস্ভোষ্কং ইনমেব কিং পাঞ্চিপ্রহারে হুংসীতি দ্যোতিতঃ॥৩১॥

কিশ্ব ন তপ আদি হেতুক এব ভাগোদের: কিম্বত্র্কাং তব কুপাবৈভবমেবেদ্মিত্যাহ: ক্লোতি ত্রিভি:। অন্য নংগনীচন্যাপি কালিব্দুন্য তাবদমুভাব: ফলং তর জানীমহে। ফলমেব কিংদৃষ্টং তত্রাহ:। তব নন্দপুত্রন্য অভিনুবেণারপি স্পর্শে অক কৃকে নােছ্বিকাব: সোহপি তপ্সাদিস্কর্ত্ত্র্লেভ: অরম্ভ অভিনুহরকর্ত্তং স্পর্শং তঞ্চ নৃত্যলক্ষণং তরাপি ইপ্রশিবংক্ত প্রাপেতি ভাগ্যম্য কিনান্ম হিনা বাচ্য ইতি ভাব:। ত্রনাদিস্কর্ভিজেভোইধিকাপি প্রীন্তব নারায়ণক্ষম্য ললনাপি যায় গোপাবারূপম্য তব চরণস্থাবাজ্যা

পারিনা, যে হেতু আপনি সকলের জীবন দাতা, আপনি ইহার প্রতি সম্ভোষ প্রকাশ করিতেছেন ॥০১॥
তগবন্! অক্ষাদি দেবগণও তপস্যাদি ছার৷ হয লক্ষ্মীর প্রসাদ প্রার্থনা করেন, সেই লক্ষ্মী
ললনা হইয়াও আপনার যে চরণরেপুর স্পার্শধিকারবাসনায় অভান্য কামনা বিস্কর্পনি বতধারিণী
হইয়া বহুকাল তপস্যা করিয়াছিলেন, এই সর্পের সেই চরণরেপু স্পর্শের অধিকার দেখিতেছি,
এ ব্যক্তির ইহা কোন্ পুণ্যের ফল বলিতে পারি না, আমাদের বোধ হয় এই রূপ ভাগ্যোদ্য

যদ্বাঞ্জ্যা শ্রীল লনাচরতপো বিহায় কামান্ স্থাচরং ধৃতত্রতা ॥ ৩২ ॥ ন নাকপৃষ্ঠং নচ সার্বভৌমং ন পারমেষ্ঠ্যং ন রসাধিপত্যং । ন যোগসিদ্ধীরপুনর্ভবং বা বাঞ্জি যৎপাদরজঃ প্রপন্ধাঃ ॥ ৩৩ ॥ তদেষ নাথাপ ছরাপমন্যৈস্তমোজনিঃ কোধবশোহপ্যহীশঃ। সংসারচক্রে ভ্রমতঃ শরীরিণো যদিচ্ছতঃ স্যাদ্বিভবঃ সমক্ষঃ ॥ ৩৪ ॥

धीधत्रवामी।

আদাচরং অসা সর্পদা স কিং ক্বত ইতি কো বেত্তীত্যর্থ: ॥ ৩২ ॥

य उत्भागतमः প্রশন্ধা: প্রাপ্তা পারমেষ্ঠ্যাদ্যপি ভুচ্ছং মন্যন্তে ॥ ৩০ ॥

অহো তদেষ: অযত্নত এব প্রাপ অন্যৈ: প্রাদিভিরপি ছরাপং। পুন: কথস্তুতং পাদরজঃ যদিচ্ছত: সেব্যং মে ভবত্বিতি প্রার্থয়ত: এব সমকঃ প্রত্যক্ষ এব বিভব: অপেকিতা সম্পদ্ধবতি ॥ ৩৪ ॥

देवस्वद्यावनी।

ইতি জেয়ং ৫ ৩২॥

অহো অন্ত তাবৎ ত্বপাদাক্তরার রোব হতররেগুনাং স্পর্নমাহাত্ম্যং তদেকস্য যথা কথঞ্চিদাপ্রয়েগ মাহাত্মমপ্যনির্বাচ্যমিত্যাহনে তি নাকপৃষ্ঠং ন বাছন্তি কিমৃত সার্বভৌমং এবং পারমেষ্ঠাং ইত্যাদি কর্মকলং কৈমৃত্যেনোক্ত্মা যোগাদিফলং সমৃচ্যেনাহঃ ন যোগেতি। অন্ত টীকারাং নাকপৃষ্ঠাদীতি লেখে পারমেষ্ঠ্যাদীতি লেখকজ্মাৎ॥ ৩৩॥

অনৈয়র্ত্র ক্ষাদিভি: প্রমোপাসকৈরপি ছাথেন প্রাপ্যং নজ্বদাপি প্রাপ্তং। এব মহাপরাধ্যপি বতন্তমোজনিন্তামস জাতিস্তত্র চ ক্রোধবশঃ তত্রাপি অহিষ্ প্রেটোহপি তদেব প্রাপ্তঃ। এতচ্চ সাধনসহস্রাদপি ন ঘটতে ক্রেবলস্বংকারুণাদেবেতি সম্বোধয়ন্তি। নাথয়তি দীনান্ যাচয়তীতি হে নাথেতি। কিঞ্চ। যদ্মিরানঃসম্বন্ধনাত্রেণ সর্বেধাং সদ্য এব স্বৈর্সিদ্ধিঃ স্যাং ইত্যাতঃ সংসারেতি। দেহাভিমানিনোহপি বিভবঃ ঐহিকী পারলোকিকী চ বিভৃতিঃ প্রেমসম্পন্ধা। এবং প্রাপ্যমৃদ্ধিষ্ঠং। অভাধুনা সাক্ষাৎ ত্বংপাদাক্ষম্বাসীকৃতক্ষণাগণোহয়ং ব্যক্তবিভববিশেষমেব থলু প্রাপ্ত মুহ্ তীতি ভাবঃ॥ ৩৪॥

ক্রমসন্থর্ড:।

চ হেতু রক্তি তথাপি **স্বাবমাননাত্ত্বাস**স্য তন্ত্ৰজ্পশূৰ্শ ম**স্কত্ত্বন ফলাস্তঃপাতাৎ তদপ্ৰস্তাব ইতিবজ্**জেরং॥৩২।৩৩।৩৪।৩৫।৩৬।৩৯।৪০॥

विविधनाथहक्कवर्डी।

তপ আচরৎ তদপি ন প্রাপ ॥ ৩২॥

এতাবন্মহিমন্তি ম'ৎপাদরেণুভিঃ কিং কলং স্যাদিতি চেন্মৈবং বাচ্যং তব চরণরেণব এব ফলং সর্বাফলেভ্যোহপ্যধিকমিত্যান্থ-নেতি। প্রপন্না এব বাশুন্তি কিং পুনন্তৎপ্রাপ্তাঃ অপবর্গমপি কিং পুনন কিপৃষ্ঠাদিকং॥ ৩০॥

অন্যৈৰ স্থাদিভিরপি। কিঞ্চ। সর্কাফলমুকুটভূতমপি বংপাদরজঃ সকামজন্যস্য ফলসাধনমপি ভবতীত্যাহঃ সংসারেতি। ইচ্ছতঃ সকামস্য শরীরিণঃ যং যতো বিভবঃ সমকঃ ইচ্ছাবিষয়ীভূতাদপি যতঃ অপেক্ষিতা সম্পত্তিঃ প্রত্যক্ষৈব ভবতীত্যর্থঃ॥ ৩৪॥ তপ্যাদি জনিত নহে, ইহা কেবল আপনার অচিস্ত্য কুপারই বৈভব॥ ৩২॥

প্রভো! আপনকার চরণরেণু দামান্য নহে, যে দকল ব্যক্তি ইহা প্রাপ্ত হন্, তাঁহারা স্বর্গপৃষ্ঠ অথবা দার্কভৌম পদ কিম্বা পারমেষ্ঠ্য (ব্রাহ্মপদ) অথবা পৃথিবীর আধিপত্য কিম্বা যোগদিদ্ধি অথবা অপুনর্ভব (যাহাতে আর পুনশ্চ সংদারে জন্মমরণাদি হর না তাদৃশ নির্বাণ মুক্তি) কিছুই বাঞ্চা করেন না, অর্থাৎ আপনার চরণরেণু প্রাপ্ত হইলে স্বর্গাদি পদ ভুচ্ছ বোধ হইয়া থাকে॥ ৩০॥

হে নাথ! কি আশ্চর্য্য, এই সর্পরাক্ত তমোগুণের অংশে উৎপন্ধ এবং স্বভাবতঃ ক্রোধের অধীন হাইয়াও আপনকার চরণরেণু প্রাপ্ত হাইল, অন্য ব্যক্তিদের অর্থাৎ লক্ষ্মী প্রভৃতির ইহা স্থলত নহে। প্রভো! সংসারচক্রে নিয়ত ভ্রমণশীল শরীরী পুরুষ যাহা ইচ্ছা করিলে অর্থাৎ "ইহ। আমার সেব্য

নমস্তুভ্যং ভগবতে পুরুষায় মহাত্মনে। ভূতাবাদায় ভূতায় পরায় পরমাত্মনে। ৩৫॥ জ্ঞানবিজ্ঞাননিধয়ে ব্রহ্মণে ২নস্তশক্তয়ে। অগুণায়াবিকারায় নমস্তে প্রাকৃতায় চ॥ ৩৬॥

ত্রীধরস্বামী।

নমস্বভ্যং ভগবতে অচিত্তৈ স্বাধ্যাদিগুণায় তছ্পপাদনায় দশভিঃ স্লোকৈবি শৈষণানি। পূৰ্ব্ অন্তর্গামিরপেণ বর্ত্তমানায় মহাত্মনে এব-মপি তাভিরপরিচ্ছিনায় কুতঃ ভূতাবাসায় আকাশাদ্যাশ্রয়ায় তদপি কুতঃ ভূতায় পূর্ক্মপি সতে কুতঃ প্রায় কারণায় কিঞ্চ প্রমাত্মনে কারণাতীতায়॥ ৩৫॥

কারণবং কারণাতীতত্বক সমর্থমিত্মাহ: জানবিজ্ঞান নিধম ইতি। জ্ঞানং জ্ঞানিং চিছেক্তিঃ তমোনিধিমে তাভাাং পূর্ণায় কৃথং তথাবং অত উক্তং বন্ধণেহনস্তশক্তমে ব্রহ্মণে কৃথং তথাবং অত উক্তং বন্ধণেহনস্তশক্তমে ব্রহ্মণে কথস্থতায় অগুণার অবিকারায় কথস্কৃতায় অনম্বশক্তমে প্রাকৃতায় প্রকৃতিপ্রবর্ত্তনির অপ্রাকৃতায় ইতি বা অপ্রাকৃতানস্তশক্তিযুক্তায়। অস্তমর্থং। অগুণবাদবিকারত্বং ব্রহ্মজ্ঞপ্তিমাত্রত্বাৎ কারণাতীতং প্রকৃতি প্রবর্ত্তক বাদনস্তশক্তিঃ বিজ্ঞান নিধিবাদীশ্বঃ কারণং তহুভয়াত্মনে নম ইতি ॥ ৩৬ ॥

देवक्षवरजावगी।

এবং দণ্ডমহুমোদমানা এবেদুশ্যেপ্যতাবদহুগ্রহেণাশ্চর্যাং মন্থা তৎপরিছারায় মিথোবিরোধিনানাধর্দ্ধাশ্রম্বং দর্শয়ন্তের্যাহতর্ক্যান্ট্রেম্য্যানিধয়ে হতএব সর্ব্বে বিরোধান্বারি বিলীয়ন্ত ইতি স্ববন্ধি পুরুষামেত্যাদিনা। এতচ প্রায়েহেতুহেতুমন্বাদিপ্রদর্শনেন তৈরপি ব্যক্তিতমেব। যন্ত্যা পুরুষামেত্যাদিনিশেষণানাং মধ্যে প্রায়ো বাত্যাং অতিহ্বতিত্যা কচিদেকৈকো বিরোধঃ কচিত্ব বিশ্ববৈশক্ষণ্যেন বিশ্বয়ো অইব্যঃ। তথাছি পুরুষামাপি মহাত্মনে ব্যাপকায় ভ্তাবাদার স্ব্বিজীবন্ধ স্থামিতয়া নিমামকায় অথচ ভ্তায় জীবানাং তদংশবেনাভেদাং জীবর্মণায় তজ্ঞপদ্ধেন নিযম্যামেত্যথা। বন্ধা। ভ্তাবাদার জননিবাদায় ভ্তায় গৃহীতজন্মনে। তথাচ বক্ষাতি স্ক্রাম্থে। জয়তি জননিবাদো দেবকীজন্মবাদ ইত্যভ্তহমেব। পরায় স্ব্বিতাহভিত্রত্বন স্থিতায় অথচ প্রমান্থনে সর্ব্বেষাং হৃদি বর্ত্তমানায়॥ ৩৫॥

জ্ঞানস্বৰূপায় অথচ বিজ্ঞাননিধন্তে। কৰ্মধারয়ঃ। ত্রহ্মণে সঙ্গাতীয়বিজাতীয়াদিভেদরহিতস্বরূপায় অথচানস্তশক্তয়ে অগুণত্বেনা-বিকাবায় অথচ প্রকৃতিপ্রবর্ষকায় ইত্যতাম্ভূতত্বমেব পরত্রাপ্যেবমেব জ্ঞেয়ং॥ ৩৬॥

ত্ৰীবিশ্বনাথচক্রবন্তী।

বজ্ভি: শ্লোকৈ: ক্পামেবং বির্ত্য দশভি: প্ন:। একাদশ নতীশ্চকুর্ভক্ত্যা কালিয়ধোষিত:। ভক্তেরপাদ্যদ্বেনাহ:। ভগবতে অপ্রাকৃত্যবিজ্যধ্যবতে। পুরুষায় নরাকারায় মহাম্মনে নরক্ত্যাপি দর্মব্যাপকায় ধোগিভিক্পাদ্যদ্বেনাহ: দর্মভূতনিবাদায় ভূতায় প্রমণি দতে॥ ৩৫॥

জ্ঞানিভিরুপাস্ত্রনাক:। জ্ঞানবিজ্ঞানয়ো: সম্পদোনিধিরিব নিধিন্তদ্ম:। পুনর্ভক্তোপাস্যে নরাকারে তদ্মিন্ মন্দ্রীভি: প্রস-ঞ্জিতান্ গুণবিকারাদি দেশান্ বারয়ন্তা আছে:। অনন্তশক্তয়ে অতর্ক্যানন্তশক্তিসমূলায়। অগুণায়াবিকারায় প্রাকৃতগুণবিকার-রহিতায়। অপ্রাক্তায় অপ্রাকৃতগুণবিকারসহিতায় ইত্যর্ধ:॥ ৩৬॥

হউক্" এইরূপ প্রার্থনা করিলে তৎক্ষণাৎ অপেক্ষিত সম্পত্তি প্রাপ্ত হয়, তাহা কি অনায়াদে লভ্য হইতে পারে ? ॥৩৪ ॥

ষাহা হউক, আপনকার ঐশ্বর্যাদিগুণ অচিন্তা, আপনাকে নমস্কার করি। আপনি সকল দেহে অন্তর্যামিত্বরূপে বর্ত্তমান এবং মহাস্থা, কিন্তু সকল দেহে ঐরপে বর্ত্তমান হইয়াও অপরিচ্ছিন্ন, যে হেতু আপনি আকাশাদি ভূতেরও আশ্রয় এবং পূর্বাধি বর্ত্তমান আছেন,অপিচ সকলের কারণ, পরস্তু স্বয়ং কারণাতীত ॥ ৩৫ ॥

আর আপনি জ্ঞপ্তি ও চিৎশক্তিতে অর্থাৎ জ্ঞান ও বিজ্ঞানে পরিপূর্ণ এবং নির্গুণ, নির্বিকার, প্রকৃ-তিপ্রবর্ত্তক, অনস্তশক্তি, ত্রহ্মস্বরূপ, স্তরাং আপনাকে নমস্কার করি॥ ৩৬॥ কালায় কালনাভায় কালাবয়বদাক্ষিণে। বিশ্বায় তত্ত্বপদ্ৰষ্ট্ৰে তৎকত্ৰে বিশ্বহেতবে॥ ৩৭॥
স্থানাত্ৰেন্দ্ৰিয়প্ৰাণমনোবুদ্ধ্যাশয়াস্কনে। ত্ৰিগুণেনাভিমানেন গৃঢ়স্বাস্থামুস্কুতয়ে॥ ৩৮॥
নমোহনন্তায় সূক্ষায় কৃষ্টস্থায় বিপশ্চিতে। নানাবাদামুরোধায় বাচ্যবাচকশক্তয়ে॥ ৩৯॥

গ্রীধরস্বামী

অনন্তশক্তিছাৎ তালশক্তা বিশ্বস্ত্রাদি রূপেণ ন্যায় কালার কালার কালাররপার কালনাভার কালশক্তাশ্রার কালাব্রবানাং স্ট্যাদিসন্বার্যানাং সাক্ষিণে তত্ত বিশার বিশ্বরূপার তহি কিং জড়োহহং ন হি তছুপদ্রটে নচ দ্রষ্ট্যাতার কিন্তু তং কর্মেন্ত্র কর্মাতার বিশ্বরূপার। ৩৭॥

তদেবাত্ঃ ভূতমাত্রেতাাদি। আশয়শ্চিতং ভূতাদিরপায় অতঃ সর্ব্বকারকরপায়েতি অহকারাত্মতরা নমস্যন্তি ত্রিগুণেনেতি। এবং স্ষ্টিকার্য্যে যন্ত্রিগুণোহভিমানন্তেন গূঢ়া স্বাংশভূতানামান্মনাং অন্নভূতির্থেন তলৈ॥ ৩৮॥

জন্ত অহস্কারানারত ইতি স্তবন্তি নমোহনস্থায় অহস্কারাপরিচেছদাং। অতঃ স্ক্রায় অদৃশ্যত্বাং। অতএব কুটস্থায় উপাধিকত-বিকারাভাবাং। অতএব বিপশ্চিতে সর্ক্ষঞায়। এবং বস্তুত্বেন স্তুত্বা অচিস্তঃমায়ত্বেন স্তুবস্তি নানাবাদায়ুরোধায় অন্তি নাতি সর্ক্তজঃ

देवकवरकावनी।

কালার কালশক্তিকভেন জজণার। অথচ কালস্য কালচক্রন্য নাভয়ে মধ্যবলরার ভদাশ্রয়য়েত্যর্থ:। সমাসাত্ত্যার্থ:। তথাপি কালাব্যবানাং সাহ্মিণ এব নতু তেরু প্রস্কায় তদোধালেপাং। বিখায় বিরাড্রপায় তত্নপ্রস্ত্রে বিখান্তর্যামিণে ॥ ৩৭॥

ভূতাদীনামান্তনে চেত্যিত্রে জ্ঞানপ্রদায়েত্যথ:। অথচ গূঢ়া মায়য়া আছোদিতা স্বাংশভূতানাং জীবানামন্ত্তিরায়তত্বজ্ঞানং যেন তথ্যে নম:॥ ৩৮॥

অনস্তায় প্রমম্হতে অথচ স্ক্রায় কৃটস্থায় নির্বিকারায় অথচ বিপশ্চিতে বিচিত্রবৈদ্ধিগুরবে নানাবাদানমূবোধয়তি প্রবর্ত্তয়তি ইতি তল্মৈ যতঃ বাচাবাচক্ষ্যো: অর্থ শক্ষো: শক্তির্যন্ধান্তলৈ ॥ ৩৯ ॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

কালবিশেষে দেশবিশেষে চ প্রাছর্ত্তি তন্মিন্ তত্তৎপরিচ্ছেদাদিদোষান্ বারয়ন্তা আত্ঃ কালার কালস্বরূপায় কালনাভার কালশক্তাশ্রয়ায় তথাপি কালাব্যবানাং স্ট্যাদিসম্বায়ানাং সান্ধিণে এব নতু তেরু সক্তায়। বিশ্বায় বিশ্বরূপায়। তহি কিং জড়ো-২হং ন হি তত্তপদ্রে । নচ দুই মাতায় কিন্তু তৎকর্ত্ত্ত্ত্ত্তি । নচ কর্ত্ত্মাত্রায় কিং বিশ্বহেত্বে বিশ্বস্য হেতুসমুদায়ায় ॥ ৩৭ ॥

নচ হেতুমাত্রায়াপি যতো ভূতাদীনাং আত্মনে,চেতরিত্রে হতোহঙ্কুতং চরিত্রং যতো জড়ানপি চেত্রসি চেতনানপি জড়ীকরোবী-তাহিং। ত্রিগুণো যোহভিমানত্তেন গূঢ়া আর্তা শোভনা আত্মনো জীবস্যাকুভূতি জ্রানং যেন তবৈ ॥ ৩৮॥

নত্ন কিষত্ৰ তবং তত্ৰাছ: অনস্তার অশ্যান্তং বহং ন প্রাপুদ ইত্যর্থ:। তত্র হেতু: ক্ষায় ছজেরত্বদিত্যর্থ:। নহ জীবামানং মদভিননেব পণ্ডিতা আছত্তৎ কিমহমামানমেব মোহয়ানি তত্র মৈবং বাদীরিত্যাহ: কৃটস্থার। একরপ্রতা তু ষং, কালব্যাপী স কৃটস্থ-ইত্যভিধানাৎ অমেকেইনবাপ্রচ্যুত্তকরপেন সর্ব্ধকালং ব্যাপ্নোষি স তু দেবমহুষ্যতিষ্যাগাদিভিরনেকৈঃ প্রচুটতঃ স্বর্ত্তীপ কিছিদেব কালং ব্যাপ্রাতীতি কথং অদভিন্ন সইতি ভাবং। দেবমহুষ্যাদিজং বস্ততো জীবস্য ন স্বর্গমিতি চেত্তদপি তত্তঃ স ভিন্ন এবেত্যান্তঃ।

ভগবন্! আপনি কালস্বর্রূপ, কালশক্তির আশ্রয়, কালাবয়ব সকলের অর্থাৎ স্ফ্রাদি, সমবায়ের সাক্ষী, বিশ্বরূপ, বিশ্বের দ্রফী, বিশ্বের কর্ত্তা, এবং বিশ্বের সর্ব্বকারণ, আপনাকে নমস্কার॥ ৩৭॥

প্রতো! আপনি সমস্ত ভুত, ইন্দ্রিয়, প্রাণ, মন, এবং চিত্তের স্বরূপ, স্প্রিকার্য্যে যে ত্রিগুণাত্মক অভিমান, তদ্বারা আপনকার অংশভূত আত্মার অন্মুভাব গৃঢ় হইয়া আছে, আপনাকে নমস্কার করি॥৩৮ ভগবন্! আপনি অপরিচ্ছয় অহঙ্কারে আর্ত নহেন একারণ অনস্ত,অদৃশ্য,এপ্রযুক্ত আপনাতে সূক্ষ্ম, উপাধিকত বিকার নাই, এই হেতু কূটস্থ অতএব সর্বজ্ঞ। প্রতো! আপনি মায়া দ্বারা দ্বিস্ত, নান্তি, সর্বজ্ঞ, কিঞ্জিজ্জ, বদ্ধ, মুক্ত, এক, অনেক, ইত্যাদি নানাবাদের অনুবর্ত্তী হন্। অপর আপনি বাচঃ

ননঃ প্রমাণমূলায় কবয়ে শাস্ত্রিয়োনয়ে। প্রস্তায় নির্তায় নিগমায় নমোনমঃ॥ ৪০॥ নমঃ কৃষ্ণায় রামায় বস্থদেবস্তায় চ। প্রজ্ঞায়ানিক্ষায় সাত্তাং পতয়ে নমঃ॥ ৪১॥

ञीधत्रवामी।

কিঞ্জিজ্জা বন্ধো মুক্ত: এক: অনেক: ইত্যাদীন্ নানাবাদান্ অহকণিদ্ধি মায়য়াইছবর্ততে যন্তলৈ। কিঞ্চ। বাচ্যবাচকশক্তয়ে অভিধেয়া-ভিধানশক্তিভেদাদপি নানাত্মেন প্রতীয়মানায়েত্যর্থ: ॥ ৩৯ ॥

অনার্তত্থনের হেত্তত্তের স্চয়স্তাঃ তারন্তি নমঃ প্রমাণমূলায় চকুরাদীনাং চকুরাদিরপায় অতএব কব্যে স্বয়ং তল্লিরপেকজ্ঞানায় কুতঃ শাল্রযোন্ত্রে বেদাত্মকনিশাসায়। কিঞ্চ। প্রবৃত্তায় নির্ভায় নিগমায় নমোন্মঃ ॥ ৪০ ॥

িকিঞ্জনাত্তৈখর্যাদেব চতুম্র্রিরপেণ সর্বোপাসাজেন নমন্তি নমঃ ক্লকাদেতি শ্লোকেন। রামায় সকর্ষণায় বহুদেবহুতায় চেতি।

বৈষ্ণবভোষণী।

অতঃ প্রমাণং শ্রীভাগবতশারসারসংগ্রহাঃ বেদান্তস্য মূলার কারণায়াশ্রয়ায় বা কব্যে অতঃসিছজানায় অথচ শার্রযোন্যে শার্নেব বে^{দানিঃ} প্রমাণং যস্য শার্রযোনিবাদিত্যত্র তথা তথা ব্যাধ্যানাং। প্রবৃত্তং নির্ভঞ্চ শাল্তং তত্তরকা অপি নিগমরপায় অভ্তত্বেন প্নন্মান মইতি॥ ৪০॥

কিঞ্চ বয়ং ভগবান্ প্রীক্ষেষ্টিপ অনেকশত্র্বিধশেতি বদস্তান্তত্তিব নতিং পর্যাবসায়য়ন্তি নম ইতি সাম্বাস্থাসকানাং পতরে ইতি পতিবেনৈকানের সাধিতং। অন্যথানর্থাপিত্তিঃ স্যাং। তথাচোক্তং পঞ্চমক্কে প্রীলন্ধীদেব্যা।স বৈ পতিঃ স্যাদক্তোভয়ঃ বয়ং সমন্ততঃ পাতি ভয়াত্রং জনং। স এক এবেতরথা মিথোভয়মিতি। অন্যতৈঃ। যথা।ক্ষাব্যেতি প্রস্তত্থাৎ শ্রীনন্দনন্দনরপায় বক্রং ব্রেশেস্ত্রোরস্থবেণ্জ্টং ইত্যাদি প্রদিদ্ধা রামায় চ তজ্ঞপায় বস্থদেবস্থতায় চ তদ্ম তদ্ম তংসংবোগেন প্রত্যায় অনিক্ষায় চ তদ্ব্যায়ার তিন্ত্রপাতিনে এবমত্র ক্ষামেতি বাস্থদেবাস্ভর্মা ব্যার্ভ্যর্থং রামায়েতি সম্ব্রাস্থল অতএব বস্থদেবস্থতায়েতি ক্রেশে ধর্মপুল্রাদে দ শব্যপ্রাদেশ্ব তত্তংসহবোগেন প্রত্যায়ানিক্ষরয়োশ্চান্যয়ায়িতি তেন সাম্বতা যাদবা এব তদেবং নিত্যমেপি স্টিতং। তথাচ প্রিগোপালভাপন্যাং। প্রাপ্য মথুরাং প্রীং রম্যাং সদা ব্রন্ধাদিনেবিতাং। শত্যাক্তর্গালা র্কিতাং ম্বলাদিভিঃ। যত্তাসৌ সংস্থিতঃ কৃষ্ণ ত্রিভিঃ ব্যামাদিভিঃ

ক্রমসন্দর্ভঃ।

্কৃষ্ণায় রামায় চ বাহ্নদেবায় কম্নেবহুতায়েতি বাহ্নদেবাদিচতুর্ভান্তরং ব্যাবর্টিতং॥ ৪১ ॥ ৪২ ॥

ত্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

বিপশ্চিতে সর্বজ্ঞায় সত্ অল্পন্ত এব প্রসিদ্ধ ইত্যর্থঃ। কিঞ্চ তদপি জীবাঁথা ঈশবাদ্ভিন্ন ইতি ঈশবাভিন্ন ইতি জড় ইতি চেতন ইতি এক ইত্যানেক ইত্যাদিনা নানাবাদান অন্ত্রুলংগিব কৌতুকার্থমবকাশর্মীতি তথ্যৈ। অতএব দ্বিজ্ঞাবশাদেব তত্র মিথো বিবাদিনো মিথঃ সম্বাদিনন্ত পণ্ডিতাঃ শব্দমেব প্রমাণীকুর্বস্তীত্যাহর্বাচ্যানামর্থানাং বাচকানাং শব্দানাঞ্চ নানাবিধাঃ শক্তয়ো যুমাৎ তথ্যৈ॥ ৩৯॥

শিষ্টশক্ষমাত্রস্য প্রামাণ্যেইপি শ্রীভাগবতস্য সর্কাধিক্যমাহঃ প্রমাণমূলার শ্রীভাগবতক্ষরপার কবরে তৎকত্রে বেদব্যাসরূপার স প্রামাণ্যার্থমেব ব্যাসরূপো ভবসীত্যাহঃ। শাস্ত্রঘোনরে অতএব শাস্ত্রস্য যোনরে প্রাহুর্ভাবকার শাস্ত্রং শ্রীভাগবতমেব যোনিঃ প্রমাণ্য যস্য শাস্ত্রঘোনিছাদিত্যত্রেব ব্যাখ্যানাই তথা চতুর্ব্বপ্রতিপাদকং শাস্ত্রমপি প্রমাণ্যিত্যাহঃ। প্রবৃত্তশাস্ত্রার ভিন্ত্রশাস্ত্রার ভন্ত্রশাস্ত্রার ভন্ত্রশাস্ত্রার ॥ ৪০ ॥

সর্কশাল্পপ্রতিথাদিতসারস্বরূপাণি তু তব চ্বার্যোবেতাছিন্ম ইতি চকারারলম্বতার্ক। সাম্বতাং সাম্বতবংশোংপর-

ও বাচকশক্তি অর্থাৎ অভিধের ও অভিধানশক্তি ভেদের কারণেও নানারপে প্রতীয়মান হয়েন॥ ৩৯॥ ভগবন্! আপনি প্রমাণসমূহের মূল অর্থাৎ চক্ষুরাদি ইন্দ্রিয়েরও ইন্দ্রিয়েস্বরূপ, অতএব আপনি কবি অর্থাৎ নিরপেক্ষ অথবা স্বতঃসিদ্ধ জ্ঞানবিশিষ্ট এবং নিথিবশান্তের যোনি, অর্থাৎ বেদ সকল আপন-কার নিযাস, আর আপনি প্রবৃত্ত ও নির্ত্ত নির্ম স্বরূপ, আপনাকে নমস্কার॥ ৪০॥

প্রভা ! শুদ্রসত্ত্বে প্রকাশমান জীক্ষা, সক্ষর্ণ, প্রচ্যুত্র এবং অনিরুদ্ধ আপকার এই চারিমূর্ভি,আপ-

নমো গুণপ্রদীপায় গুণাত্মাচ্ছাদনায় চ। গুণরভূপলক্ষ্যায় গুণদ্রট্রে স্বসন্থিদে ॥ ৪২ ॥ অব্যাকৃতবিহারায় সর্বব্যাকৃতসিদ্ধয়ে। হুষীকেশ নমস্তুভ্যং মুনয়ে মৌনশীলিনে ॥ ৪০ ॥

खीरत्रचामी।

বস্থদেবশন্তিং ওদ্ধনৰং তত্ৰ প্ৰকাশমানায় বাস্থদেবায়েত্যৰ্থনে সাম্বভামুপাসকানাং প্তয়ে সালোক্যাদিনা পালকায় এবং চতুমুর্ত্তিয়ে কৃষ্ণায় তুভাং নম ইত্যর্থ:॥ ৪১॥

देवक्षवरकायनी।

শক্ত্যা চ ক্ষিণ্যেত্য়যায়: । এবনেবাক্তং মথুরা ভগবান্ যত্তেতি বস্থদেবস্থতার চেতি প্রীক্ষণকে চকারাৎ প্রীনন্দগোপকুমারার প্রাগায়ং বস্থদেবস্য কচিচ্ছাত ইতি ন্যারেন বস্থদেবস্থতার চেত্যর্থ:। শ্রীরামপকে তাতং ভবস্তং মধান ইতি বক্ত্যুং এজেশস্ত্রোরিতি ব্যবহারেণ শ্রীনন্দগোপকুমারার চেত্যর্থ:॥৪১॥

তদেবং ভকান্ প্রতি গুণপ্রদীপার স্বরূপভূতানামৈর্য্যাদি গুণানাং প্রকাশকার। অভকান্ প্রতি তু গুণৈ: প্রাকৃতিরাজ্যান্দার। যদ্যপ্রের তথাপি তেবাং প্রাকৃ গুণানাং জড়ানাং অপি বৃত্ত্যা প্রবৃত্ত্যাপলক্ষ্যার তৎপ্রবর্ত্তবিদ্দার । তৎপ্রবর্ত্তন্ব কর্ষের কথং তকাহ জদু দ্রে বীক্ষামাক্রেণেতি ভাবং স্বয়ন্ত স্বস্থিদে স্বপ্রকাশস্বরূপ গুণরূপার। য্যা। এবং যাদবস্থদ্ধেংপি গোক্ল্ল্ল্র এব গরীয়ানিত্যাহং। প্রেমবশ্যভাদীনাং গুণানাং প্রকর্ষেণ প্রকাশকার তাদৃশগুণপ্রকাশেনাপ্যান্মান্দার চ আর্তনিজৈশ্বর্যার গুণাদার ক্রিল্লান্দার তথা তবৈ বা দামোদরত্বে শ্রীয়াশিত্বিদ্দানা তথাপি গুণানাং যমলার্জ্বনাচনাদি লক্ষিতানাং দায়ামেব বা বহুনামপ্যপর্যাপ্তানাং বৃত্ত্যা বর্ত্তনেন জ্বেরায়। কিঞ্চ গুণদ্র ইদমন্ত্র্তমেব ॥ ৪২ ॥

অব্যাক্তঃ প্রপঞ্চাতীতো বিহারো যদ্য অথচ দর্শ্বত ব্যাক্ততেন তত্তলীলবেন দিন্ধিঃ প্রদিন্ধিদ্য দর্শ্ব ব্যাক্তটেদ্যব দিন্দিস্তত্তলীলা

ক্রমসন্দর্ভ:।

অব্যাক্তবিহারায় প্রপঞ্চাতীতলীলায় ॥ ৪৩ ॥ ৪৪ ॥

এবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

শুরাদীনাং পর্যাণাদীনাঞ্চ পত্রে পালকায়॥ ৪১॥

যততে ছেব গুণানাং প্রেমবশ্যথাদীনাং প্রকর্ষেণ প্রকাশকায়। তথা প্রকাশিতেন প্রেমবশ্যথগুণেন আত্মছাদনায় আর্ত নিজবর্ষ্যায়। তদপি খং ভক্তিভবজ্তিক্সতি বন্ধর পথা তবসীত্যাহ:। গুণস্য ভক্তবাংসল্যাতিশয়স্য র্ত্তা অসাধারণস্ত্র্যা উপলক্ষায়
ব্যাং ভগবস্তং বিনা কোহপোবং ন ভবতীতি ক্সেয়ায়। যতো গুণস্তেই স্বভক্তস্য গুণমেব পশ্যতি নতু দোষগদ্ধমিপ যতকৈ । অতএব
বেষু ভক্তবেব সন্বিদ্যুভবো ক্সা তব্ধি ॥ ৪২ ॥

শীলা পুরুষোত্তমা তব লীলামার্কুগাধিক্যমিত্যাহ:। অব্যাস্কৃতঃ অনির্বাচ্যাদ্ব্যুৎপাদিতঃ প্রাক্ততা বা বিহারো যায় ওলৈ। যদা।
নাকে নমস্কার করি। ভগবন্! আপনি উপাসকদিগের পতি অর্থাৎ সালোক্যাদি মুক্তি দারা উপাসকের পালক, আপনাকে নমস্কার॥ ৪১॥

প্রভা ! আপনি অন্তঃকরণ অর্ধাৎ অন্তরিক্তিয়গণ প্রকাশ করেন স্নতরাং আপনি চিন্তাদির অধিষ্ঠাতা অতএব চতুর্গ্রি, অপিচ দেই দেই গুণে উপাসকদিগের ফলের বৈচিত্র্যবশতঃ আপনাকে আচ্ছন্ন করিয়া নানারূপে প্রকাশমান হন্। আর আপনি চিন্তাদির চেতনব্যবসায়াদি বৃত্তিদারা উপলক্ষ্য এবং সন্তাদিগুণত্রয়ের সাক্ষী ও স্বগোচর অর্থাৎ আপনিই আপনার বিষয়,আপনাকে নমস্কার করি ॥৪২ তুগবন্! আপনকার মহিমা তর্কের অগোচর, আপনি সমস্ত কার্য্যের উৎপত্তি ও প্রকাশের হেতু,

পরাবরগতিজ্ঞায় সর্ববিধ্যক্ষায় তে নম:। অবিশ্বায় চ বিশ্বায় জন্দু ট্রেচাস্য হেতবে ॥ ৪৪ ॥

अवत्रयामी।

হেতুছেন উপলক্ষণযোগ্যায়েত্যর্থঃ। উপুলক্ষণান্তরমাহঃ হারীকেশ করণপ্রার্থক কিং বিষর্গিলারা ন মুনরে আল্লারামার কিং সাধনবশেন ন হি ন হি মৌনশীলিনে মৌনমাল্লারামতা তৎস্বভাবার ॥ ৪৩ ॥

কুড: পরাবরগতিজ্ঞায় স্থূল স্কাণাং গতিজ্ঞাবেন ন কাপি সজ্জমানারেডার্থ:। অপিচ সর্বাধ্যিক্ষায় সর্বাধিষ্ঠাত্তে কুত এতৎ অবিশায় ন বিখং বিশিন্ন তরিবেধাবধ্যে বিশায় চ বিশারপায় তবিবর্তাধিষ্ঠানায়েত্যর্থ:। কিঞ্চ তদ্ধু অধ্যাসাপবাদসান্ধিনে: অপিচ অক্সচ বিশাধ্যাসম্য তদপবাদন্য চ অবিদ্যাবিদ্যাভ্যাই হেতবে। যথা। অবিশায় বিশ্ব তৈজ্ঞসাদ্যবহারহিতায় বিশায় চ মায়মা স্থাংশৈস্তদবস্থায় তদ্ধু তাসামবস্থানাং ভাঝাভাব সান্ধিনে। অন্যং সমানং। তথাং সর্ব্বগতিজ্ঞস্বর্তাস্থিতাত্ত্বায়ারাম্বাদিভি নির্তিশবৈশ্ব্যায় তৃত্যং নম:। বিশেষবৈশ্বস্থানীবিভাক বিশ্বস্থানীবিভাক বিশ্বস্থানী বিশ্বস্থানী বিশ্বস্থানী বিশ্বস্থ

বৈষ্ণবতোষণী।

সাধকতা যস্যেতি বা। তছকং। প্রপঞ্চং নিশ্রপঞ্চেংপীতি অব্যাক্তলীল্বাদেব। পরিনিষ্টিভোছিপি নৈওঁ গ্রেউন্তমংশ্লাকলীল্যা। গৃহীতচেতা রাজর্বে আখ্যানং যদধীতবান্ ইত্যাদিকং ঘটত ইত্যাহঃ হ্ববীকেশ হে স্থান্দ্রিরামপর্য্যান্তানাং সর্ব্বেজিরপ্রবর্তকেতি। মুনয়ে আত্মারামায় অথচ অকারপ্রশ্লেষে অমৌনশীলিনে তছিপরীত প্রীগোক্লানন্দনগীলায়। যথা। ন ব্যাক্তো ন ব্যক্তো বিহারো দ্বিপয়শ্চৌর্যাদিচেষ্টা যস্য তথাপি সর্ব্বেরে ব্যাক্কতা তন্মান্ত্রাদিভ্যো ব্যাথ্যাতা সিদ্ধিস্তভেষ্টা ফলং দ্বিপরোভক্ষণাদিকমপি যস্য তলৈ অহো তেন চ সর্ব্বেরা প্রীতিরেবাসীদিত্যাহঃ হ্ববীকেশ হে সর্ব্বেজির্য্বশীকারিগুণগণেতি। কিঞ্চ ত্রোপালস্কনাদৌ মুনয়ে মৌনশীলিনে ইতি স্বাস্তঃকরণনিহিত্তাদৃশব্যুনোছপি বহিমৌনন স্বপ্রতীকো যথান্ত ইত্যেবমুক্তরূপো যন্তমা ইত্যর্থঃ। শ্লোক্ব্রেহিন্মির্থান্তরাচ্ছরত্রােক্তিরিয়ং প্রভূতা ক্রুবণৎ সঙ্কোচেনেতি জ্বেষং॥ ৪৩॥

তাদৃশাতর্ক্য লীলতে হেতু: পরাবরগতিজ্ঞার তত্তদাত্তত্বন তত্তত্ত্তত্ত্তার নতু জ্ঞেরায় তথাপি সম্প্রতি সর্বেষামধাকার অকাণি অধিকতা বর্ততে ইতি প্রত্যকার। কিঞ্চন বিদ্যাতে বিখং যত্র তথাপি বিখার স্বোদরে তদ্পতিবতে ইতার্থ:। তদ্দু ট্রে বন্ধমোহান্দনেহিপি অনাব্তজ্ঞানস্বভাবেন স্পাণিকব্লরপেণ তদু ট্রেন্ত তত্ত্বাপারকত্ত্রে। তথা তত্তচ্চুক্ত ক্রপেণাস্য চ হেতবে

শ্ৰীবিশ্বনাপচক্ৰবৰ্ত্তী।

নবাকিতো বিবাহাদিব্যাকাররহিত এব বিহারো যস্য সঃ। সর্পেষাং ভক্তবিশেষাণামের ব্যাক্কতানাং তংসেবোচিতবিশিষ্টাক্কতীনাং সিদ্ধিস্মান্তমৈ। অতএব স্থাকিশ ভক্তসর্পেন্তিয়াকর্ষক। ভক্তিহীনেষু মূন্য়ে আত্মারামায় অতএব তেষু স্বাভীপিতপ্রাথকেষু সংস্থানশীলিনে ন কিমপি ক্রবতে তেভাঃ স্থং ছংখাভাবঞ্চন দদতে॥ ৪০ ॥

যতঃ পরেষাম্ৎকৃষ্টানাং ভক্তানাং অবরেষাং নিক্স্টানামভক্তানাঞ্চ গতিং প্রাপ্যং জানতে। সর্বাধ্যক্ষায় সর্বক্ত লাধ্যক্ষায় সর্বক্তাধ্যক্ষাথা জ্ঞাপা তত্ত্বসমূচিতক্তলস্য দাত্তে ইত্যর্থ:। কর্মক্তলদাত্ত্বেপে ল তব কর্মসম্মন্ত। যতোহবিশার প্রপঞ্চাতীতায় তদপি মায়াশক্তা বিশায় সময়ে বিশং প্রষ্ঠুং তস্য বিশাস্য প্রষ্টে। তথৈবাস্য বিশাস্য হেতৃং প্রধানঞ্চ চেত্রিতৃং বিকার্য্যিতৃং বা তস্য দ্রষ্টে। ক্রিয়ার্থোপপদস্যেত্যাদিনা চতুর্থা ॥ ৪৪ ॥

একারণ উপলক্ষণ যোগ্য। **হে ইন্দ্রিয়প্রবর্ত্তক** ! আপনি মুনি অর্থাৎ আত্মারাম এবং মৌনশালী অর্থাৎ আপনার স্বভাবই আত্মারাম, আপনাকে নমস্কার করি॥ ৪০॥

প্রভো! আপনি পরাবর গতিজ্ঞ অর্থাৎ সুল ও সূক্ষা ভ্তসমষ্টির গতি জানেন, একারণ কোনও ভূতে আসক্ত নহেন, অপিচ আপনি সকলের অধিষ্ঠাতা, আপনাকে নমস্বার। প্রভো! আপনি সর্বাধিষ্ঠাতা, কারণ আপনাতে বিশ্ব বর্ত্তমান নহে অর্থাৎ আপনি "তন্ম তন্ম "ইত্যাদি প্রভতিতে প্রপঞ্চনিষেধের অবধি, অথচ বিশ্বস্বরূপ অর্থাৎ তদ্বিবর্ত্তের (রজ্জ্মপর্বিৎ বিশ্বের আরোধের) অধিষ্ঠান, আর আপনি বিশ্বের দেউ। অর্থাৎ অধ্যাস ও অপবাদের সাক্ষী এবং অবিদ্যা ও বিদ্যা দারা আপনকার ঐশ্বর্য নিরতিশর আপনাকে নমস্বার করি॥ ৪৪॥

ত্বং হস্য জন্মস্থিতিসংয্মান্ বিভা গুণৈরনীহে। ২ক্কুতকালশক্তিপ্তক্। তত্তৎস্বভাবান্ প্রতিবোধয়ন্ সতঃ সমীক্ষয়ামোঘবিহার ঈহসে॥ ৪৫॥ তিসাব তেহমুস্তনব স্ত্রিলোক্যাং শাস্তা অশাস্তা উত মৃঢ্যোনয়ঃ।

ত্রীধরস্বামী।

এবং তাবদণ্ডামুনোদনেন নমস্কারৈশ্চ ভগবস্তং প্রসাদ্যেদানীং স্বদ্ধীনানাং প্রাণিনাং কোহপরাধ ইত্যাশন্তবত্য: প্রার্থরন্তে সং হীতি অস্য বিশ্বস্য জন্মাদীন্ স্বনেবাক্ত অকরো: অতশ্চ তাং স্তান্ সংস্থাররূপেণ সতঃ স্বভাবান্ দোরস্থাদীন্ প্রতিবোধন্ ইত্যে ক্রীড্সি। যদ্বা। অস্য জন্মাদীন্ স্বনেব ইত্যেদ্যঃ। কথস্তুতঃ। অকৃতা অনাদির্যা কালশক্তি থাং ধারম্বতীতি তথা। অন্যং সমানং ॥৪৫॥
অতস্তান্যের তবান্তানবং তন্যস্ত ইতি ক্রীড়োপস্বরাঃ তথাপি তবাধুনা শাস্তাঃ প্রিয়াঃ কুতঃ সতাং ধর্মপ্রতিপালনেছ্যা ইহতঃ

বৈষ্ণবতোষণী।

স্থিত্যাদি কারণায় ইতি। এবং সর্ববিরোধাশ্রয়ত্বেটনবাচিস্ত্যশক্তিত্বং তেটনব চৈশ্বর্তামিতি পূর্ব্বমণি প্রতিপাদিতং অতো বিশেষ বিরোধাশ্রয়ত্বারিগ্রাহ্স্যাণ্যস্থগ্রহোযুক্ত এবেতি ভাবং ॥ ৪৪ ॥

নয়স্য কো দোষঃ সর্পদ্ধাত্ম নৈবেষরস্য ইত্যাশস্থাতঃ দ্মিতি পঞ্জি:। হি এব। হে বিভো সর্বেষর। জনীহঃ তত্তদ্ভিলাষশ্ন্য এব স্বমীহসে করোষ। নম্বেত্রিক্দাং তত্তাতঃ সত ইতি। তত্র জন্মনি সতঃ প্রকৃতিলীনপ্রাচীনক্লগতসাধকভক্রন্স্য সমীক্যা তহুদ্বোধনায় তং দ্রষ্ট্রেমব ক্তেন প্রকৃতীক্ষণেন ইত্যর্থ:। স্থিতৌ জন্মন্ধ্যেইবতীর্য্য তমেব সম্যক্ কুপাপ্র্ক্বং সাক্ষাদ্বলোকিতৃং
ইত্যর্থ:। সংখ্যে ত্যেবালিস্যাপি স্মীকিত্মিত্যর্থ:। মন্তকানাং বিনোদার্থং করোমি বিবিধাঃ ক্রিয়া ইতি পাদাং। তত আমুসঙ্গিকতয়ান্যেঘামণি তৎ স্যাদিতি ভাব:। নম্ব মদর্থা সমীক্ষা তএবোদ্ধ্যন্তাং তত্তাহ্রমোদ্বিহারঃ যথা কথঞ্চিদ্পি তত্তৎসম্বন্ধস্যাব্যর্থহাদিত্যর্থ:। তেহামপ্যুহোধনে যুক্তিঃ অক্তকালশক্তিশ্বক্ কালস্বরূপরা স্বাভাবিক্শক্ত্যেত্যর্থ: তয়া গুণিক্সললক্ষিতান্
স্বভাবান্ প্রাচীন কর্ম্বংক্ষারান্ প্রতিবোধয়ন্ধিতি তন্মান্তথা কৃতং কর্মণোহন্যৈব দোষঃ নতু তব ঈশ্বরম্ব পর্যাণ্যবদ্ধুইব্য ইতি ন্যায়াদিতি ভাব:॥ ৪৫॥

যন্ত্রাদেবং সাম্যং তন্ত্রান্তবৈদ্যৰ ইত্যাদি ত্রিলোক্যাং বর্ত্তমানাং দর্কা। এবেত্যর্থ:। অশাস্তা ঘোরা:। উত অপি মৃঢ়য়োনয়োছপি হি নিশ্চবে বিশেষতত্ত্বধুনা শাস্তা ইত্যাদি। এবমপীদৃশ ছ্টাস্থাহকদ্য তব পর্ম কারণামেব তাদৃশে ত্বাপি অপরাধিনোহদ্য পর্ম

ক্রমসন্দর্ভ:।

নষ্য্য কো দোষ: সর্পত্নাতৃত্মনৈবেশব্দ্যেতি চেদিত্যত আহত্ত্মিতি পঞ্চতি:। হি এব হৈ বিভো সর্ক্ষের অনীহস্তত্তদভিলাষ-শূন্য এব ত্বমীহসে করোষি নত্তেত্বিক্ত্ত্বং তত্ত্বাহু: সতঃ প্রকৃতিলীনপ্রাচীনক্ত্রগতঃ সাধকতক্তবৃন্ধ্য্য সমীক্ষা তত্ত্বোধনায় তদ্ম ই ু-যেব ক্লান্তেন প্রতীক্ষণেনেত্যর্থ:। মন্তানাং বিনোদনার্থং করোমি বিবিধাঃ ক্রিয়াঃ। ইতি পালাৎ। তত্ত আহুসঙ্গিকতরান্যেষামণি তং স্যাদিতি ভাবঃ। তত্মান্তথা কৃতকর্মাণসৈয়ে দোষো নতু ভবেদিতি ভাবঃ॥ ৪৫। ৪৬। ৪৭। ৪৮। ৪৯। ৫০। ৫১॥

🖲 বিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

স্বস্থ্যা প্রধানং চেতনযুক্তং বিষ্ণুত্তক ক্বতা মন কিং ফলমিতি চেত্তত্তাছন্ত্রমিতি। সতঃ প্রধানস্য সমীক্ষা অস্য বিশ্বস্থ পূর্বং করান্তে তত্ত্বৈব লীনস্য তত্ত্বেভাবান্তুতাংভান্ সংসাবরপেণ সতঃ স্বভাবান্ বোরছাদীন্ প্রতিবোধয়ন্ জন্মাদীন্ ভবৈরজ্জাদিভিরীহসে করোবি গুণানাং কর্ত্বস্য ত্ব্যুপচারাত্ত্বতন্ত্র ত্মনীহঃ। অক্বতা ক্ণাদি বা কালশক্তিতাং ধারমতীতি সঃ। এবঞ্চ প্রধানগতক্লিক্পক্তবি বিহারোহমোবঃ॥ ৪৫॥

কেনাভিপ্রারেশৈবং তথের ইতি চেত্ততাহ:। তলৈয়ব পূর্ব্বোক্তলক্ষণম্য তব বিশহেত্তাবিশ্বরূপম্য অমৃ: শান্তাদ্যান্তনব:। শান্তাদি

বিভো! আপনি অনীহ অর্থাৎ নিজ্ঞির হইয়াঁও কালশক্তিকে ধারণকরত গুণধারা এই বিশের স্ষ্টি, ছিতি ও প্রালয় করিরা থাকেন, অতএব এক্ষরণ সমীকা হেতু সংসাররপে বর্তমান তত্তৎস্বভাব (শাস্ত বেগর ও মৃঢ়াদি অবস্থা) প্রকটিত করত ক্রীড়া করিতেছেন। ভগবন্! আপনকার বিহার অব্যর্থ॥৪৫॥

েহে দেব! এই সকল শাস্ত অশাস্ত মৃঢ়বোনি জন যদিও আপনকারই তকু অর্থাৎ ক্রীড়োপকরণ

শান্তাঃ প্রিয়ান্তে হাধুনা ২বিতুং দতাং স্থাতুশ্চ তে ধর্মপরীপায়েহতঃ ॥ ৪৬ ॥ অপরাধঃ দক্তত্ত্র দোঢ়ব্যঃ স্বপ্রজাক্তঃ। ক্ষন্তমন্থ শিল্পাত্তান্য মুদ্দ্য দ্বামজানতঃ। অমুগ্রুষি ভগবন্ প্রাণাংস্ত্যক্ষতি প্রসঃ। স্ত্রীণাং নঃ দাধুশোচ্যানাং পতিপ্রাণঃ প্রদীয়তাং ॥ ৪৭ ॥

श्विषतचामी।

প্রবর্তমানস্য অভস্তানবিতৃং স্থাতৃ: স্থিতস্য ॥ ৪৬ ॥ এবঞ্চ তবাপ্রিয়াচরণান্যপরাধ: সোচ্ব্য ইতি ॥ ৪৭ ॥

বৈক্ষবভোষণী।

পামরত্বনেবেতি ভাবঃ। তে বয়স্য বাক্যভেদার পুনক্জিদোবঃ স্যাৎ। মধ্যমন্ত তে পদং শাস্তা ইত্যস্য বিশেষণং ॥ ৪৬॥

কিং কর্ত্ব্যং ক্ষমা কার্য্যেতি। অন্ত্রাহ এব কর্ত্ব্রোগ্য ইত্যাহঃ অৰিভি। কুতো ভগবন্ হে পর্মন্যালো। বছা। হে সর্ক্জেতি নিজকারুণ্যমহিমানং স্বমায়বৈত্ত্বংচ অতএব জীবানামন্মাকং দৈয়ক ছং জানাস্যেবত্যর্থঃ। এতচাবিল্বংনেত্যাহঃ প্রাণানিতি। ঘছা। অলং হি প্রাণিনাং প্রাণা আর্ত্তানাং লরণং ছহং ইত্যাদিনিজপ্রতিজ্ঞাং ন্মরস্যেবেত্যর্থঃ। আর্ত্তাং দর্শরিস্ত প্রাণানিতি। আহো বত ন ক্রিয়তাং বান্ধরম্প্রহঃ অন্ধাববশ্রং কর্ত্মপ্র্কাত ইত্যাহঃ স্ত্রীণামিতি। সাধুভিঃ শোচ্যানাং জাত্ত্যৈর স্বাত্র্যাদ্যভাবাং ইতি পর্মদৈন্যং দর্শিতং। যদা। সাধু যথাক্রাং প্ররুমপরাধ্ছাদিসন্পাদনেনেত্রর্থঃ। পতিরেব প্রাণঃ জীবনং প্রকর্মেণ শরীরাক্ষতভাদিনা চ দীর্তাং ॥ ৪৭ ॥

এীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

স্বভাবান্ স্বমেব প্রতিবোধয়দি চেন্তত্ত্ব বোরস্বভাবোহয়ং কালিয়ঃ স্বস্বভাবং কৌর্য্যং কথং ত্যক্তব্ব শক্রোম্বিভি ভাবঃ। তথাপি তবাধুনা শাস্তাঃ প্রিয়াঃ। কুডঃ স্বতাং ধর্মপালনেচ্ছয়া ঈহতঃ প্রবর্তমানস্য স্বত্ত্তানবিত্ব স্থাতুঃ স্থিতস্য ॥ ৪৬ ॥

অতঃ শান্তলোকবিপ্রিয়কারিবলকণোহস্যাপরাধোহভূদেব সচ সক্তং সোঢ়ব্য ইতি। অধুনা দগুয়িত্বা শিকিতোহপারং জ্ণীয-শান্তজনেব্ যদি পুনরপাপরাধ্যতি তদা ন সোঢ়ব্য ইতি ভাবঃ। ক্তম্বর্গীতার্থপৌনক্ষকামভিবৈয়প্রা ব্যঞ্জকং। ক্ষুমিতাপ্রাধ্-মিতি শেষঃ। শান্তাম্বিতি ক্ষুত্বে হেভুঃ। মৃঢ়সাজানত ইতি ক্ষুব্যুদ্ধে হেভুঃ॥

নম্ চিকিৎসাস্য সাংক্ষ্য কৃতা রোগো গত এব। কিন্তু রোগদেষদ্রীক্রণার্থং সপ্তাষ্টাঃ পাঞ্চি প্রহার। অবশিষ্যক্ত তেমু স্মৃতিদীরতানিত্যত আত্রপ্রকীবেতি। সংদাবশেবােংস্থাহাম্তথালানেনৈব নাশনীয়ো নতু দগুভীত্রৌষধপামনেন। যতােহসৌ সম্প্রতি
থাাণাংস্তান্ধতি। নম্ম তাল্ল থাান্ কিমনেন বিগীতেন সর্পশরীরেণ অতঃ পরং দিব্যদেহো মন্তক এব ভবিষ্যতি তত্রাহঃ স্ত্রীণামিতি।
স্ক্রীণামন্ত্রাকং বৈধব্যে সভি কশ্চিদ্ন্যঃ পাপিষ্ঠঃ সর্পো বলাং কামস্থিতা ভবিষ্যতীত্যতঃ শোচ্যানামন্ত্রক্ষয়ব্যের সম্প্রত্বিষ্ণব্র
ভাক্তাং প্রাণঃ স্লেহাম্পদীভবন্ প্রাণভুলাঃ ॥ ৪৭ ॥

তথাপি আমাদের বোধ ছয় অধুনা শাস্তম্পনেরাই আপনকার প্রিয়, কারণ আপনি সাধুজনের ধর্ম প্রতি-পালনের ইচ্ছায় চেক্টা করিতেছেন,অতএব তাঁছাদিগের রক্ষা করিবার নিমত্ত অবস্থিত হইয়াছেন ॥৪৬

কিন্ত আপনি স্বামী, আপনার ভূত্য একবার অপ্রিয়তা আচরণ করিয়া যে অপরাধ করিয়াছে তাহার নার্কনা করিতে হুইবে। হে শান্তাস্থান্। এ ব্যক্তি অতি মৃত্, আপনাকে জানে না ইছাকে কমা করিতে যোগ্য হরেন। জগবন্! অনুগ্রহ করুন, নজুবা এই লাপের এখনি প্রাণত্যাগ হয়, ইহার বিয়োগে আমরা আপনার শোকার্হ হুইব, স্তরাং আমাছের অর্থাৎ সামুগণের শোকার্হ মাদৃশ স্ত্রীগণের প্রাণ্যরূপ পতিকে প্রাণান ক্রিতে আজা হুউক্॥ ৪৭॥

বিধেছি তে কিন্ধরীণামনুষ্ঠেয়ং তবাজ্ঞয়া। যজু দ্বসানুতিষ্ঠন্ বৈ মুচ্যান্ত সর্বতোভয়াৎ॥
শ্রীবাদরায়ণিরুবাচ॥

ইথাং স নাগপত্নীভি র্ভগবান্ সমভিষ্ঠ তঃ। মৃচ্ছি তং ভগ্নশিরসং বিসস্জাজ্যি কৃষ্টনৈঃ। প্রতিল্যাে ক্রিয়া শনকৈ হ রিং। কৃচ্ছাৎ সমৃচ্ছ্যুসন্ দীনঃ কৃষ্ণং প্রাহ কৃতাঞ্জলিঃ ॥৪৮ বয়ং প্রলাঃ সহােৎপত্যা তামসা দীর্ঘমন্তঃ। স্বভাবো ক্সন্তাকো নাথ ভূতানাং যদসদ্যুহঃ ॥৪৯॥

धीपत्रवामी।

নমু যুদ্মদুগ্রহেথনোয়াং মৃত্যুরেবেতি চেৎ নেত্যাছবি ধেহীতি। ছদাজ্বা প্রাণিনো নাদ্যামেতি ভাব ইতি। ৪৮ ॥ যদসংগ্রহ ইতি যতঃ অভাবোহসদ্পূহরপং। যদা। যতঃ অভাবাৎ অসতি দেহাদৌ গ্রহঃ অ্রন্তাক ইতি॥ ৪৯ ॥

বৈষ্ণবভোষণী।

ভবাজ্ঞরা যদম্ঠেয়ং বিধেয়ং তৎ কিন্ধরী: প্রতি সমাদিশ। ধবা। ভবাজ্ঞারৈব তব কিন্ধরীণাং সভীনাং অশ্বাক্ষমহঠেয়ং। তবাজ্ঞাতাস্য পরেণাথয়:। যদ্যশান্তবাজ্ঞরা অন্নতিঠন্ কর্ম কুর্মন্ যদম্ঠেরমিতি বা। বৈ প্রসিদ্ধৌ। সর্মতঃ সর্মশ্বাদিপি সর্মান্তিবা। যবা। সর্মতে ভ্যান্ত্যতে ইতি ভগবল্লোকপ্রান্তিবোভিত্রেতা ॥

স স্বতিমাত্রপ্রীতঃ শ্রীরন্দাবনশ্বজ্ঞ্লক্রীড়াস্থরদিকো বা। যথা। প্রতঃথকাতরো ভগবান্ শ্রীরক্ষঃ অব্যিত্র প্রতিনঃ প্রহারে-র্জ্যাশিরসং অতএব মুচ্ছিতিং তভ্যাব্ধ ॥

নিজহর্মদাদিদোবং হরতীতি হরিং যতঃ ক্রফং সাক্ষান্তগবস্তং। দীনো গতাভিমান আর্ত্তো বা। আর্ত্তমাদেবাশক্ত্যা পর্যীবন্ধ শওবং প্রণনামেতি জ্বেয়ং। প্রকৃষ্টং দীনজনানাং বক্তু মুচিতমাহেতি। অতো ভগবতি নিজ্ঞদোষারোপণ্যিব যৎ করিষ্যতে তদপি দৈন্তে নৈব স্বস্য ভদধীনতারামেব তাৎপর্যাৎ॥ ৪৮॥

ভথৈবাহ বয়মিতি চতুর্জি:। উৎপত্তা সহ জাতিকভাবেনৈবেত্যর্থ:। নাথ হে ঈশবেত্তি তমণি বং থওয়িতুং সমর্থোহসীতি ভাব: ॥৪৯॥

बीविधनाथहक्कवर्डी।

ভবন্ধয়ং যুদ্মভ্যং পত্তিদ ত্ত এব কিন্তু যন্ময়াদিশ্যতে তৎকর্জব্যমিতি তত্ত সদম্মমবশ্যমেবেত্যাহবিধেহীতি। তচ্চ ইতঃ স্থানা-দন্যত্ত শীঘং যাতেত্যতো ব্যক্তীভবিষ্যতি॥

অভিবৃত্যাং কুটনে: প্রহারের্জগ্নশিরসং কালিরং তত্যাক। তচ্ছীর্বেত্য: সহসৈবাবপ্লুত্য তদত্যে তত্থাবিত্যর্থ: ॥ কুচ্ছু াদিতি কষ্টাদেব কথঞিৎ কৃতাঞ্চলি: সর্বাক্ষরথাবেত্বাং নতু ভূমৌ দণ্ডবরিপত্য প্রণামসমর্থ ইতি ভাব: ॥ ৪৮ ॥ যদবতো হসতো বিক্লছেন জ্ঞাতস্যাপি রাগ্রেষাদেপ্রতি প্রহণং বিছ্যামপি কিং পুনম্তানামন্মাকমিতি ভাব: ॥ ৫৯ ॥

প্রভো! আমরা আপনার কিন্ধরী আমাদের প্রতি বিহিত আদেশ করুন, যাহা আজ্ঞা করিবেন তাহাই করিব,অর্থাৎ আপনি যদি আজ্ঞা করেন অতঃপর একেবারেই প্রাণিভক্ষণে ক্ষান্ত হইব। প্রভো! শুনিয়াছি যে, শ্রদ্ধাপূর্বক আপনার আদেশ পালন করিলে সর্ব্ব প্রকার ভয় হইতে পরিত্রাণ হয়॥

শুক্দেব কহিলেন যে, নাগপত্মীগণ কর্ত্ব এই প্রকারে ভগবান্ প্রীকৃষ্ণ স্তত হইয়া সেই ভগম্ও ও মৃচ্ছিত নাগরাজকে চরণদারা কুটুৰ অর্থাৎ আঘাতবিশেষ করিয়া ত্যাগ করিলেন। হেরাজন্! দীন কালিয় পরিত্যক্ত হইবামাত্র স্বীয়ইন্দ্রিয় ও প্রাণ পুনঃ প্রাপ্ত হইয়া অতিক্ষে নিশাস ত্যাগ করিতে করিতে কৃতাঞ্জলিপুটে হরিকে এইরপ নিবেশন করিল যে—॥ ৪৮॥

হে ভগবন্! স্বামরা জন্মাবিধি থল এবং তমঃপ্রস্থৃতি, স্বতএব স্থামাদের শোক স্বতিকক্টেও শাস্ত হইবে না। হে নাথ! প্রাণিদিগের স্বভাব তুস্তাঞ্জ, যে হেতু তাহা ছুক্ট গ্রহ স্বর্থাৎ প্রেডাদির ন্যায়॥ ৪৯ ॥ স্থা স্ফীনিদং বিশ্বং ধাতগুণবিসজ্জনং। নানাস্থভাবনীর্য্যোজোযোনিবীজাশয়াকৃতি ॥ ৫০॥ বয়ঞ্চ তত্ত্ব ভগবন্ সর্বজাজ্যুরুমন্যবঃ। কথং ত্যজামস্থ শায়াং ছুস্ত্যজাং মোহিতাঃ বয়ং ॥ ৫১॥ ভবান্ হি কারণং তত্ত্ব সর্বজ্যে জগদীশ্বঃ। অমুগ্রহং নিগ্রহং বা মন্যসে তথিধেহি নঃ॥
শ্রীশুক উবাচ॥

ইত্যাকর্ণ্য বচঃ প্রাছ ভগবান্ কার্য্যামুদঃ ॥ ৫২ ॥

শ্রীধরস্বামী

গুণৈবিবিধত্যা স্বাত ইতি গুণবিদক্ষ নি তত্তাপি নানাম্বভাবাদয়ে। যস্য তং ॥ ৫০ ॥ জাত্যা জন্মনৈব উক্তর্মস্থা র্যেষাং তে স্বয়ং কথং ত্যজামঃ ॥ ৫১ ॥ হি যস্মান্তত্ত্ব স্বায়াত্যাগে ভবানেব কারণমিতি । সম্প্রাহং বিধেহি নিগ্রহং বা ঈশ্বয়ত্বাৎ ॥ ৫২ ॥

বৈষ্ণবজোষণী।

ভদেবাভিব্যঞ্জরতি ছরেতি সার্দ্ধেন। নম্ বন্ধাণা ক্ষাতে নতু মরেত্যাশস্থাহ হে ধাতরিতি। ছমেব তজপেণ ক্ষণীতি ভাব:। স্বভাব: শাস্ত্রাদিঃ বীর্ব্যোজনোদে হৈন্দ্রিগশক্তিভেদেন ভেদ:। বোনিবীলয়োম তিপিতৃতভদেন ভেদ:। আশ্রো বাসনা। আকৃতি: রূপং॥ ৫ • ॥

ভগবন্ হে সর্কেখরেতি স্বকর্মনৈর সর্পা ইতি পক্ষো নিরন্তঃ কর্মণামপীশ্রস্থাৎ তত্মাদস্বাভয়্তোলৈবাদেশহরং জাত ইতি ভাবঃ। সতঃ কথমপি স্বটেন্তর্মিণ ক্ষ্যুজাং॥ ৫১॥

শ্বরং ত্যাপাশকৌ হেতুর্ভবানিতি দ্বরা হেতুনৈব সা ত্যাজ্যা স্যাদিত্যর্থ:। মন্যসে বমিছ্কসি তমেব বিধেহীতার্থ: তত্ত্র সর্বাং নিজ্মায়াবৈতবাদিক মন্মাক ক দৈল্লাদিকং জানাসীতি সর্ব্বজ্ঞ: ইত্যুক্তরে হেতু: জগদীশবঃ পরম শতর ইতি চ নিপ্রহে। তথাচ বিষ্ণুপুরাণে যথাহং তবতা স্ট ইত্যাদি। অভাতঃ। যদা। সর্ব্বজ্ঞ ইত্যুক্তরহনিপ্রহ্রো: কারণং বেৎসি। জগদীশব ইতি তরোবেকং বিধেহীতি ব্যাক্যার্থ:। তত্ত্বচ জগদীশব ইতি সত্যপি নিপ্রহকারণেহত্ত্বহমপি কর্তু: শক্লোধীতি ভাবঃ॥

ইত্যাকর্ণ্যেত্যর্ককং। মরা যদাদিশ্রতে তদনেনাবশ্রং কার্য্যমিতি তত্ত্ত্যভিপ্রারং জ্ঞাছেত্যর্থ:। কার্য্যং জপদ্ধিতং তদর্থং স্থেন মান্ত্ররপেপ প্রকটো যো ভগবান্। যদা। কার্য্যং ক্রীড়া মহুষ্যলীলয়ৈর মান্ত্রং নতু তত্ত্তাভিকদেহ বিশেষত্বেনেত্যর্থ:। যদা। কার্য্যা নিজপ্রেমভক্তিবিভারণাদিনা সম্পাদ্যা মাহ্রা যেন। মাহুষেক্রভারেণ ভেষামের প্রাধান্তাৎ। অভত্তস্য মূলস্থানে প্রীর্দ্যাবনে

ANDRES .

কাৰ্য্যং ক্ৰীড়া মন্থৰালীলা ভৱৈৰ মান্থৰো নতু ভৰৱোতিকদেহবিশেষদ্বেনাপীত্যৰ্থ: ॥ ৫২। ৫৩। ৫৪। ৫৫। ৫৬॥

角 বিশ্বনাপচক্রবর্তী।

গুণৈবিবিধং সক্ষানং স্টিৰ্যত্ত তৎ। বিবিধন্বমাহ নানাৰভাবাদয়ে। যস্য তৎ॥ ৫०॥

ভাত্যা জন্মনৈৰ বছকোপা: ॥ ৫১ ॥

তত্ত্ব মায়াত্যাগে ॥

কার্য্যের্ এক্ষকজাদিত্করেবপি কালিগনিগ্রহাদি কর্মান্ত্র নামূব এব নতু তত্তৎক্বতাসমূচিতচক্রপাণ্যাদিরপ ইত্যর্থ:। यहा। কার্যাং ক্রীড়া লীলা ভব্যেব মানূবং লীলাময়মানূবস্বরূপ ইত্যর্থ:। यहा। কস্য এক্ষণোহপ্যান্তর্যান্তরিক নানূবং তি স:। यहा। কার্যাং

হে দেব ! এই বিশ্ব গুণের প্রভাবেই বিবিধরপ দৃষ্ট হয়, ইহার বীর্য্য, সামর্থ্য, যোদনি, বীজ, আশয়(বাসনা) ও আফুতি (রূপ) নানাপ্রকার, আপনি এই বিশ্ব স্কুন করিয়াছেন॥ ৫০॥

ভগবন্! এই বিশ্বমধ্যে আমরা সর্প জাতি, জন্মবারাই আমাদের মন্যু গুরুতর। অপিচ, আমরা মোহাচ্ছন, ইহাতে আমরা আপনা হইতে আপনার মায়া কি প্রকারে ত্যাগ করিতে পারি ? ॥ ৫১॥

ভগবন্! যে হেছু আপনার মায়াত্যাগে সর্বজ্ঞ জগদীখন আপনিই কারণ, অত্এব অনুগ্রহ অথবা নিগ্রহ যাহা ইচ্ছা করেন তাহাই আমাদের প্রতি বিধান করুন। শুকদেব কহিলেন রাজন্! কার্যার্ধ নাত্র ক্ষেয়ং স্বয়া দর্প দম্কং যাহি মা চিরং। সজ্ঞাত্যপত্যদারাট্যো গোন্ভিভূজ্যতে নদী ॥৫৩॥
য এতৎ সংস্মরেমার্ত্য স্তভ্যং মদমুশাদনং। কীর্ত্তয়ন্ধ ভূয়োঃ সন্ধ্যো ন যুম্মন্তয়মার্থ রাৎ॥ ৫৪॥
যোহস্মিন্ স্নাহা মদাক্রীড়ে দেবাদীংস্তর্পয়েজ্জালৈঃ। উপোব্য মাং স্মরন্নর্চেৎ দর্বপাপেঃ প্রমূচ্যতে॥৫৫

श्रीधतवाभी।

যতো গোভি নৃভিশ্চ নদী ভূজ্যত ইতি ॥ ৫০ ॥ ন যুমতো ভয়মাপুরাৎ তদ্য যুমাভিভ্যং নোৎপাদনীয়মিত্যাকা ॥ ৫৪ ॥

ইতোহপি নিৰ্গস্তব্যমিত্যাহ যোহস্মিন্নিতি। ছবি স্থিতে তন্ন ভৰতীতি ভাবঃ॥ ৫৫॥

বৈফৰতোষণী।

সর্পাণাং স্থিতিরস্থৃচিতেতি ভাব:। যথা। কাং একাণোহপি আর্যা: পৃষ্ধাতমা মাহ্যা: শ্রীনন্দাদরো যস্য স:। এবং তেষাং স্থার্থ-মিতি ভাব:॥ ৫১॥

হে সর্পেতি তক্ত স্থিত্যযোগ্যতাং যানে শক্তিঞ্চ দর্শরতি। আতএব স্থস্য জ্ঞাত্যাদিভিযুক্ত ইতি। স্থশকেন তেষাং তাদৃশহর্বিষ্ময়ত্বং তদধীনত্বঞ্চ স্কৃতিতং ॥ ৫৩ ॥

ছাং প্রতি মমাত্মশাসনং নাত্র ত্বেরমিত্যাদিলক্ষণমপি অন্ত তাবদক্ত ক্রীড়াদিকং। সংস্ক্যাঃ সন্ধ্যাংরাঃ। কীর্ত্তয়ন্ বাং প্রবেং। তদেবং নাত্র ইত্যাদিপদ্যব্যং সর্পোচ্চাটনে মন্ত এব জ্বেয়ঃ। তথাচ ধ্বেদেহং মন্ত্রান্তরং। যদুনাহ্রদে হি সো বাজো বো নারারণবাহনঃ। যদি কালিকদন্তক যদি কাকালিকান্তরং। জন্মভূমিপরিক্রান্তো নির্মিবো বাতি কালিকঃ॥ ইতি ॥ ৫৪ ॥

জলৈত্তপ্রেদিতি বিষোদ-দোষাগমঃ হুচিত:। উপোষ্য তীর্থোপবাসং ক্রত্ব। মাং চিত্তরন্ জর্চারেৎ স সর্কৈত্রিবিধৈঃ পালৈ: প্রকর্ষেণ বাসনারাহিত্যেন মুচাতে ॥ ৫৫ ॥

🔊 विश्वनाथहळावर्शी।

মানুষদােব বসা সং ॥ ৫২ ॥

মতো গোভিনৃভিন্চ নদী ভূজাতে ভটপ্ৰবাহাগত ঘাদপত্ৰফলজলানাং ভোগোচিত্যাং ॥ ৫০ ॥

তব পাদস্পর্শে মম চ জদও ইত্যাবয়ো: কীতিরাচক্রার্কং স্থাস্যতীত্যাহ ব ইতি। ন যুশ্বতো ভরমাপুরাদিতি তেন পদার্বয়মিদং সর্পোচ্চাটনে মন্ত্র এব ক্রেয়:। তথাচ ঋথেদস্য মন্ত্রাস্তরং। যমুনাহুদে হি সো বাতো যোনারায়ণবাহন:। বদি কালিকদস্তস্য যদি কাকালিকান্তরং। জন্মভূমিপরিক্রাক্তো নির্বিধো যাতি কালিক:॥ ইতি॥ ৫৪॥

ইতোৎপি হেতোম্বরা নির্ণস্থব্যমেবেত্যাহ যোহস্মিরিতি ম্বরি স্থিতে তর সম্ভবতীতি ভাব: n ৫৫ ম

নরাবতার ভগবান্ এক্লিফ ঐ সকল কথা শুনিয়া এইরূপ প্রত্যুত্তর করিলেন যে,—॥ ৫২॥

হে সর্প । তুমি আর এথানে থাকিও না, পুজ্র, কলত্র, বন্ধু ও বান্ধব সহ সমুদ্রে গমন কর, বিলম্ব করিও না, কারণ পো ও মন্থুযোরা নদী উপভোগ করিয়া থাকে, তুমি এথানে থাকিলে তাহারা এখানে আসিতে পারিবে না॥ ৫৩॥

অপিচ, তোমার প্রতি স্থামার এই শাসন, যে মানব ইছা শ্বরণ এবং উভয় সন্ধ্যায় কীর্ত্তন করিবে সে ব্যক্তি কথন তোমাদের নিকট হইতে ভয় না পায় অর্থাৎ আমি আন্তা করিতেছি তোমরা কদাপি সে ব্যক্তির ভয় উৎপাদিত করিতে পারিবা না॥ ৫৪॥

তথা যে ব্যক্তি সামার এই উদ্যানন্থিত হ্রদের জলে সান করিয়া ইহার দ্বারা দেবাদিতর্পণ করিবে এবং উপবাসপূর্বক আমাকে ব্যরণ করিয়া অর্জনা করিবে,ভাহারা সর্ববিপাপ হইতে মুক্ত হইবে, একার-ণেও তোমার এন্থান ইইতে প্রস্থান করা কর্ত্তপ্য হইতেছে। যদি ভূমি এখানে থাক, তবে কোন ব্যক্তি এন্থানে আসিতেই পারিবে না, সান পূজা করিবার কথা ত দুরে থাকুক্ ॥ ৫৫ ॥ দ্বীপং রমণকং হিন্তা হ্রদমেতমুপাশ্রিতঃ। যদ্তয়াৎ দ স্নপর্ণস্থাং নাদ্যান্মৎপাদলাঞ্চিতং॥ শ্রীঋষিরুবাচ॥

মুক্তো ভগবতা রাজন্ কৃঞ্চেনাভুতকর্মণা। তং পূজয়ামাদ মুদা নাগঃ পত্নস্চ দাদরং। দিব্যাম্বরস্রহাণিভিঃ পরাক্তিরপি ভূষণৈঃ। দিব্যাম্বাস্থান্তিশেচ মহত্যোৎপল্যালয়া।

छिधद्रश्रामी ।

নচ তব গরুড়ভয়ং ভবেদিত্যাহ দীপমিতি॥ ৫৬॥

दिकावरकावनी।

রময়তীতি রমণং সজায়াং কন্। ইতি স্থাকারিস্কং। এতচ তৎপ্রৌৎসাহনার্থং। এতং কিঞ্চিদধিকযোজনমাত্রং। তদ্বীপাং প্রনাণেন স্কলতরমিত্যর্থঃ। উপাশ্রিত ইতি নিত্যাবাদ্যং নিরন্তং নাদ্যাং নাজুং শক্ষুষাং যতো মৎপাদেতি। তচ্চ পূর্বমেব নৃত্যগতিবিলানেন কিংবা অধুনৈব প্রসাদীকৃতং॥

মুক্ত ইতি বিদদজ্জে তাস্যাম্বাদমান্তং। এবম্কো ভগবতেতি বা পাঠা। অভুতকর্মণেতি নিগৃহীততয়া প্রসিদ্ধোহপাসী নিজপ্রক্ষবসতিহানং প্রাপ। যন্তয়াই তৎ হানং তত্যাক ত্মান্তদগতং। বিশেষতণ শ্রীবৈশ্ববার্ত্যা ত্মা স্থ্যং স্মান্তহক শ্রীভগবংশাদাজিচিহতো লাভং। কিঞা। ব্রহ্মাদিদেবালন্ধীপ্রার্থ্য তৎপাদাক্তরেণ্ভিত্তাদৃশন্ত্যনীলয়া চ পর্যাচিতাং সর্ব্ধে মূর্ধানং সফলাবভূর্ শ্রীব্রমাদ্যপেক্ষা শ্রীভগবদ্মশাদানং লক্ষং। তেন চ সাক্ষাব্রম্ব্রবচনামৃতং পীতং। পশ্চাং পরমভক্তবং পূজাদিকক কত-মিতীথং বহিদ্ হ্যা নিগ্রহ্মাপাত্রহবিশেবত্ব ক্রোধ্যাপি পরমপ্রবচনামৃতং পীতং। পশ্চাং তাদৃশাপরাধিনোহিপি ত্র দমিতীয়েব সতো হলা শরণাগতিমাত্রেণ তাদৃশান্ত্রহাং। চলসি বলু লাজার্মন্ পশ্ন নলিনফ্লরং নাণ তে পদ্মিত্যাদিগীয়মান-পরমদৌকুমার্যপ্রীপদাজস্পর্শেন রক্ষনিকরাচিতত্য ক্রিবর্ত্বনাং। তাদ্ধশর্ষ্যপ্রকটনসময়ে মুনিসির্দাদিশীকোপাদিসাক্ষাদেব মহান্ত্যকৌত্রকাং। ত্রাপি পরিভ্রমং বিলোলং ফণগণেষু গতিকলা রক্ষণাচ্চ ইতি দিক্। এতচ্চ তদ্য ভগবতাবিশেবপ্রকটন-মিত্যাহ ভগবতেতি। ইদঞ্চাশেষং সর্বজ্ঞাং শ্রীশুক্দবোহবদ্দিতি শ্রীধাহং সর্বহেদী উবাচেতি স্তোক্তিত। রাজন্ হে বৃদ্ধান

बीवित्रनाथहक्कवर्त्ती ।

নচ তে গর্জাম্বয়ং ভাবীত্যাহ দ্বীপ্মিতি॥

অন্ত্রকর্মণেতি কালিয়াধু জন্ত্জীবস্য আণং কালিয়স্যাপি সক্ষ্যাত্রাণমিতি হিংস্যহিংসক্ষ্যোকভয়োরপি কল্যাণমিত্যদৃত কর্ম। কুষ্ণেনেতি স্বভক্তাকৃত্যাপ্রাধস্য স্বপ্রিয়ন্ত্রজন্ত্জীবাপরাধস্য চ কর্ষণং প্রমভক্তকালিয়পদ্বীপ্রীভান্তরোধাং কুত্মিতি ভাবঃ॥

সাদরমিতি পূর্বস্নোকোকো: হে প্রতো ছইতায়া: পরমাবধিরপে ময়ি রূপায়া: পরমাবধিরপিত: অমা বন্ধে প্রাক্তাপ্রাক্ত লোকের্মদন্য: কোইপি ধ্বন্ধবন্ধার্ক্শদিচিয়ানি অম্ধিন বত্ত তদহং সাংগ্রহ শ্রীমদঙ্গানি সন্ধান নদন্তনংশোপবিদ্যাহতপ্রানি প্রগদ্ধনিত্বদন্তন্তন স্বাধিত: শুলন্। নম্ম শিতলচন্দনরসেন সন্ধীক এব পাশিতি: শুলন্। নম্ম শিলানি শৃক্ষারক্ষানি চেত্যত: ক্ষণমত্রৈর দিব্যাসনে উপবিশেত্যপ্রেশ্য অবাধিত প্রায়হা লক্ষার্বহ্বের দিব্যাসনে উপবিশেত্যপ্রেশ্য অবাধিত সাক্ষার্বহের । মণিতিরিতি রুক্ষপ্রাহ্রতারকালে তর্কন্ম এবাধীত যাত্ত কোলাকিত কালিয়কোযাগারমধ্যে প্রবিশ্বেষ্টিইভূই। অত্যাব বছরভালখাবপ্রদান

হে দর্প! এছান হইতে নির্গত হইলে তোমারও গরুড় হইতে কোন ভয়ের সম্ভাবনা নাই, শীঘ তুমি এই হ্রদ পরিত্যাগ করিয়া রমণকদ্বীপে গিয়া আশ্রায় লও,যাহার ভয়ে এই হ্রদ আশ্রায় করিয়াছিলে দেই স্থপণ তোমাকে ভক্ষণ করিবে না, বিশেষতঃ তোমার মস্তকে আমার পদচিত্র রহিল, ইহাতেও তোমার নিকট গরুড়াগ্যমন সম্ভাবনা নাই।

শুকদেব কহিলেন রাজন্ । এই বলিয়া অদ্ভকর্মা ভগবান কৃষ্ণ কালিয়কে ছাড়িয়া দিলে, কালিয়-নাগ এবং তাহার পত্নীগণ হৃষ্ট হইল, পরে মহাসমাদরে তাঁহার পূজা ক্রিতে লাগিল। উৎকৃষ্ট বসন, পূজ্যিষা জগনাথং প্রদাদ্য গরুড়ধ্বজং। ততঃ প্রীতোহভ্যমুজ্ঞাতঃ পরিক্রম্যাভিবাদ্য তং।

সকলত্রস্থপুত্রো দ্বীপমর্কে র্জগাম হ। তদৈব সামৃতজ্ঞলা যমুনা নির্বিধাভবং।

অমুগ্রহাদ্রগবতঃ ক্রীড়ামানুষরূপিণঃ॥ ৫৬॥

॥ %॥ ইতি শ্রীতাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং দশমক্ষকে কালিয়-দমনং নাম ষোড়শোহধ্যায়ঃ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

श्री धत्रशामी।

॥ * । ইতি দশমে বোড়শ:॥ *॥

বৈষ্ণুবতোষণী ৷

দিনা প্রকাশমানেতি এতদভূতকর্ম্বং সহেতুকং স্বয়াববুদ্ধাত এবেতি ভাব:। নাগ: কালিয়:। মুদেতি শ্রীভগবস্তভদস্এহাস্থদনানাং। সাদরং সপ্রেম। অতস্তাসাং হঠৈত্বের গন্ধান্থলেপনাদিকং জেয়ং॥

দিব্যেতি সাদ্ধৰমং। দিব্যেত্যাদিবিশেষণৈম'ৰ্ব্যেলোকিকতো বৈশিষ্টাং। অতএব মাল্যাদীনাং বিষ্টোষাম্পর্শাদিকঞ্চ জ্ঞেয়ং। প্রায়ব্যেষাং সঙ্কাসিদ্ধক্ষ। অগতাং নাথং পুজ্মিত্বেতি তৎপূজ্মৈবেহ লোকে প্রএচ জগতি সর্ববৈত্ব স্বতো মঙ্গলং বৃত্তমিতি। গক্ষড়ধ্বলং প্রদাদ্যেতি জ্ঞীগরুড়াদিপি ভয়ং নিবৃত্তমিতি ভাবং। প্রীতঃ সম্ভ্রষ্টমনাঃ। যদ্বা। তিম্দ্ প্রীতঃ আতপ্রীতিঃ। যদ্যপি তস্য গমনেন কল্রাদিসহিত্দ্যেব তস্য গমনং স্বত এব সন্তব্তি। তথাপি সকল্বেতি জ্ঞাত্যপত্যদারাট্য ইতি জ্ঞীজগ্রন্ধিদেশাম্বর্তিত্বং জ্ঞাপিতং। হ ক্টমেব॥

সা সর্ব্বোপদাতকছ্বিষময়জ্বাপি তত্র ব্রদ্ধিশিষ্টে প্রদেশে নির্বিষ্ঠাপত্তাব তস্যা নির্বিষ্ঠ মুক্তং। ন কেবলং নির্বিষ অমৃতজ্বা পরমমিষ্টতোয়া চ। প্রীজগবচ্চবণসংসর্কেণ পরমানন্দপ্রদল্ভাপি বাভবং। তাদৃশঞ্চ সমর্থ্যং তস্য কিঞ্চিদপীত্যাহ ভগবত ইতি। অত্র প্রয়োজনং ক্রীড়েতি। ক্রীড়ায়্ক্তশ্চাসো প্রসিদ্ধানুষ্ঠস্যাব ষ্ক্রপমাকারন্তিদ্যাতে যস্য সচ তস্য। তথাচ সা স্থমানুষ্ট্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাব

॥ ● ॥ ইতি দশমটিপন্যাং বৈক্ষবতোষণ্যাং বোড়শ: ॥ • ॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

॥ *॥ इे ि क्रमन्तर्ड श्रीमन्यम (शंड्नः ॥ *॥

শ্ৰীবিশনাথচক্রবর্তী।

সমবে কালিরপদ্ধীতিরপরিচিত এব স্থীয়রত্ববিশেষজ্ঞানেন কৌস্ততো দত্তঃ। বহুক্তং। কৌস্তভাপ্যো মনির্বেন প্রবিশ্য হ্রদমৌরগং। কালীয়প্রেয়ণীবৃন্দহকৈরাত্মোপহারিতঃ। ইতি গণোদ্দেশদীপিকারাং। প্রসাদ্যেতি ভগবানপি কালিরমূর্দ্ধস্বভ্যহন্ততলনিধানেন তদীয়সর্বান্ধব্যথামূপশন্যামাসেতি ভাবঃ। গরুড্ধাজং প্রসাদ্যেতি ভো গরুড্বাহন প্রভো সম্প্রত্যহং গরুড্স্য জ্যেটভাতুদ্পিসাহভূবং
আতঃ কদাচিদ্পুর্দেশস্য গস্কব্যব্দে সত্যহমপি স্ববাহনত্বন স্মর্ত্তব্যো নিমেষমাত্রেশৈর শতকোটিযোজনগামী দাসামূদাস ইতি ভত্তির্গমাতে। অতঃ কালিয়ারত্ব এব কংসনির্দিষ্টঃ ক্রঞো মধুবাং জগামেতি পৌরাণিকী কথা কচিৎ শ্রমতে ইতি॥

ক্রীড়ামারুষরপিণ ইতি নিত্যধোর্টে ইনি:॥ ৫৬॥

॥ *॥ ইতি সারার্থদর্শিন্যাং হর্ষিণ্যাং ভক্তচেত্তসাং। দশমে ষোড়শোহধ্যায়ং সম্বতঃ সক্তঃ স্তাং॥ •॥

মাল্য, মণি এবং পরমোৎকৃষ্ট বহুমূল্য স্থান, তথা দিব্য অনুলেপন এবং মহতী উৎপলমালা, এই দকল বস্তু উপহার প্রদান পূর্বক পূজা করিয়া গ্রুড়ধ্বজ জগনাথকে প্রদান করিল। তদনন্তর প্রীত ও অনুজ্ঞাত হইয়া প্রদক্ষিণ এবং অভিবাদনপূর্বক স্ত্রী, পুত্র ও মিত্র সমভিব্যাহারে দাগরমধ্যস্থ দেই রমণক দ্বীপে গমন করিল। হে রাজন্। ক্রীড়ার্থ নিত্যই মনুষ্যশরীরধারি ভগবান্ হরির অনুগ্রহে প্রদায় হইতে যমুনা বিষবিহীন এবং তাহার জল অমৃতবং স্থাদ হইয়াছে॥ ৫৬॥

. ॥ *॥ ইতি দশমে ষোড়শ॥ *॥

শ্রীরাজোবাচ॥

নাগালয়ং রমণকং কথং তত্যাজ কালিয়ঃ। কৃতং কিম্বা স্থপর্ণস্য তেনৈকেনাসমঞ্জসং॥ ১॥ শ্রীবাদরায়ণিরুবাচ॥

উপহার্য্যিঃ দর্পজনৈম াদি মাদীহ যো বলিঃ। বানস্পত্যো মহাবাহো নাগানাং প্রাঙ্ক্রিপতঃ॥২ স্বং স্বং ভাগং প্রয়চ্ছস্তি নাগাঃ পর্ব্বণি পর্ব্বণি। গোপীথায়াস্ক্রনঃ সর্ব্বে স্থপর্ণায় মহাত্মনে॥ ৩॥ বিষবীর্য্য দাবিষ্টঃ কাদ্রবের স্তু কালিয়ঃ। কদর্থীকৃত্য গরুড়ং স্বয়স্তু বুভুজে বলিং॥

धीधतवारी।

নাগং সপ্তদশে নাগালমং তং নির্যাপ্যং। বৃষ্কু হৃত্থেত: **আস্ন স্থাংভত দ্বাদ্পাং** ॥ • ॥ অসমঞ্জগমপ্রিনং ॥ ১॥

উপহার্থ্যৈ উল্ফোঃ। সর্পজ্জনৈঃ সর্পায়ত্তৈজনৈঃ। বানস্পত্যঃ বনস্পতেম্ লে দেয়ঃ। নাগানাং তল্বাধপরিহারায় যো বলি নিক্পিতঃ ক্রিতঃ॥২॥

তেচ নাগাঃ স্বং স্বং ভাগং তৈৰ্জনৈদ তিং স্থপণীয় প্ৰায়চ্ছন্তি। ততো ভীতাঃ। গোপীণায় রক্ষণায়॥ ৩/॥

বিষৰীয্যাভ্যাং যো মদক্তেনাবিষ্টঃ কাজবেয়ঃ কজস্বভো। গ্ৰুড়ং কদ্বীক্কত্য অবিগণ্য । যদা। উপহার্থ্যৈঃ স্থপ্ণা ভক্তৈঃ। স্পা এব

বৈষ্ণবতোষণী।

অভীষ্টলীলাসিদ্ধাা শ্রীভগবতত্তদভাদয়দর্শনেন শ্রীব্রজ্পা চ স্বস্থতামাকর্ণ্য স্বস্থ: প্রীয়মাণ: সন্ কথামধ্য এব কথাসোষ্টবায় তৎপূর্ববৃত্তং পৃচ্ছতি নাগেতি। নাগানামালয়ং স্বভাবতঃ সর্পবর্গস্ত বস্তিস্থানং নতু গ্রুড্সেত্যর্থঃ। অতো বহুবো নাগাস্ততান্যে নিব্সস্থ্যেবেতি ভাব:। নহু যছয়াদিতি তৎক্চিত্নেব ততাহ কৃতং কিমিতি।বা শবাং কটাকে॥১॥

উপেতি ত্রিকং। হে মহাবাহো ইতি যথা মহারাজস্ত পরাক্রমেণ বৈরিণোহপি রাজানো বলিমুপহরস্তীতি ভাবঃ॥ ২॥

পর্কাণি পর্কাণি প্রতিপঞ্চলগ্রস্তং। মহাত্মনেহপরিচিছ্নশক্তমে ইত্যর্থ:। অয়ং ভাগপ্রদানে হেতু:॥৩॥

পশ্চাধিববীব্যাভ্যাং মদাবিষ্ট: সন্। কাজবেয় ইতি ভ্ৰাতৃত্ব মদে হেত্তবং জ্ঞেয়ং। কদৰ্থীকৃত্য তদনাদরেণ তজুত্বতি বক্ষামাণা

ক্রমসন্দর্ভ:।

শ্রীভগবতো ব্রহ্মা চ স্বস্থতামাকর্ণ্য স্বস্থ: কথামধ্যত: এব তৎসোষ্ঠবায় পৃচ্ছতি নাগেতি ॥ ১ ॥ ২ ॥ ৩ ॥ ৪ ॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

তাক্ষ্যান্ত্রীতিঃ কালিয়দ্য তাক্ষ্যে দৌভরিশাপনাক্। ক্রফাপ্তির্গোছ্থাং দাবাত্রাশং সপ্তদশেহভবং॥১॥

উপহার্যোভক্ষ্যজেনোপহারীক্রিয়মালেঃ সর্পক্রপৈজনৈঃ। বানস্পত্যো বনস্পতেম্ লে দেয়ঃ। নাগানাং নাগৈর্গকড়াৎ স্ববাধ-পরিহারায়। নিরূপিত উপকল্পিতঃ॥২॥

তত্র সর্ব্বে নাগান্তং হ: স্বং ভাগং প্রথচ্চন্তি। পর্ব্বণি প্রবৃত্তিপঞ্চাশি। গোপীথার রক্ষণায়। কিন্তু কালিয়স্ত তং ন প্রয়চ্ছতি প্রত্যতান্যৈদ′ভ্রমণি স্বয়মেব বৃভূজে ॥ ৩ ॥

সপ্তদশ অধ্যায়ে নাগালয় হইতে কালিয়ের নির্গমন এবং ভগবান্ কর্তৃক স্বত্বুংখিত আন্ত ও স্প্ত বন্ধুগণকে দাবানল হ্ইতে পরিত্রাণ বর্ণন॥ । ॥

রাজা পরীক্ষিৎ জিজ্ঞাদা করিলেন ত্রহ্মন্! কালিয় কি নিমিত্ত নাগালয় রমণক দ্বীপ পরিত্যাগ করে, আর সেই কালিয় গরুড়ের কি অপ্রিয় কার্য্য করিয়াছিল ?॥ > ॥

শুকদেব কহিলেন রাজন্! নাগদিগের অধীন স্তরাং ভক্ষণীয় জনগণ নাগের পীড়াপরিহারার্থ যে বলি মাদে ২ বৃক্ষমূলে অর্পণ করিবার নিয়ম নির্দ্ধারিত ক্রিয়াছিল—॥ ২॥

নাগেরা আস্তরক্ষণার্থ দেই বলির স্ব স্থ অংশ, প্রত্যেক পূর্ণিমায় ও অমাবদ্যায় মহাত্মা গরুড়কে অর্পণ করিত। ৩॥

কিছু কাল পরে কক্রতনয় কালিয় বীয় বিষ ও বীর্যাজনিত মদে আবিষ্ট হইল অতএব গরুড়কে

ভচ্ছুত্বা কুপিতো রাজন্ ভগবান্ ভগবৎপ্রিয়ঃ। বিজিঘাংস্থর্ম হাবেগঃ কালিয়ং সমুপাদ্রবৎ ॥৪॥
তমাপতত্তং তরদা বিষায়ুধঃ প্রত্যভায়াছখিতনৈকমস্তকঃ।

দিছিঃ স্থপর্ণং ব্যদশদ্দদায়ুধঃ করালজিন্থোচ্ছসিতোগ্রলোচনঃ॥ ৫॥ তং তাক্ষপুত্রঃ স নিরশ্য মন্ত্রুনা প্রচণ্ডবেগো মধুসূদনাসনঃ।

औरवश्वामी।

জনাত্তি ন'গিনিং সম্বন্ধী যশ্মিষেকৈকে। নাগো দীয়তে তথা ভূতো যো বলিঃ স্থপণীয় নির্দ্ধিতঃ তত্ত্র স্বং স্থং ভাগং সর্কো নাগাঃ প্রযু-চ্ছপ্তি কালিয়ন্ত ন প্রয়ন্ছতি কিন্তুনিয়দ তিমপি তং ৰলিং স্বয়মেব বুভূজে॥ ৪॥

বিষমেবায়ুধং যস্য সঃ। প্রত্যভায়াং যোজুং প্রতি জগাম। উথিতনৈকমন্তক উন্নমিতানেকফণঃ। দদাযুধঃ দন্তায়ুধঃ। করালজিহ্ব-শ্চাসাবৃদ্ধ্বিতোগ্রলোচনশ্চ উচ্ছ্বিতানি উজ্জিতানি উগ্রাণি লোচনানি যস্য সং॥ ৫॥

তাক পুত্রো গকড়ঃ মধুসুদনস্যাসনং যত্মিন্॥ ७॥

বৈষ্ণবতোষণী।

ত্তদীশেভ্যো বলাদ্গ্রহণেনৈব বা কদর্থীকৃত্য। সময় সমুদ্রের ॥

হে রাজনিতি বলিপ্রদরাজবিপ্রতিপত্তা ভবদাদিবদিতি ভাবং। যতো ভগবান্ সর্মাজিযুক্তং। ভগবতঃ প্রিন্ধ পার্ষদপ্রবর-ইতার্থং। অতো ভগবন্দু ইনিগ্রহপরতয়া মহাবেগং সন্ সম্যঙ্গারণোদ্যতভয়া সমীপ এবাগচ্ছৎ তদ্য ভূচ্ছেছে২পি ধাষ্ট্রাৎ তাম্যবেন ভগবদনাদরস্বভাব্যাচ্চেতি ভাবং॥ ৪॥

বিষায়্ধঃ দ্বাদেব জুংকারাদিনা তলোচকঃ সন্ প্রত্যভায়াৎ নিকটেতু দলায়্ধঃ সন্ব্যদশৎ। করালছর্কিষনয়তরা স্পর্শনাত্রণ হিংসকা জিহবা যদ্য উচ্ছৃসিতানি প্রদারিতানি উগ্রাণি দৃষ্টিমাত্রেণ ভক্ষীক্রাণি লোচনানি যদ্য সূচ সূচ ॥ ৫ ॥

ভূকোে মরীটিঃ ভভঃ শিবাদিখাদদস্তাদ্যপাণ্তভস্তননস্তরাপত্যস্য **ভাক্স্প্র ঐকশাপস্তমহামুনেঃ পূলঃ**। ইতি জন্মনা তৎপ্রভাবঃ স্চিতঃ।

ক্রমসন্দর্ভঃ।

विषायुषः क्रकात्रांपिना पृतार। पनायुर्धा निक्ठोर ॥ ८॥ ७॥ १॥

ঐবিশনাথচক্রবর্তী।

কদৰ্থীক্বত্য অনাদৃত্য তত্ৰত্য কৰ্ণেজপদৰ্পমুখাভদ্ৰুছা॥ ৪॥

বিষায়ুধঃ দুরাৎ ফুৎকারেণ তন্মোচকঃ নিকটে তু দদায়ুধো ব্যদশং। করালা জিহ্বা বদ্য উদ্ভং খদিতং বদ্য উগ্রাণি লোচনানি ষণ্য সচ সচ সচ সঃ ॥ ৫॥

তাক্ষি কশাপ্রা পুল:। মধুস্দন গাসনং ধক্ষিন্ স:॥ ৬॥

গণ্য না করিয়া স্বয়ং সমুদায় বলি ভোজন করিতে আরম্ভ করিল। অথবা গরুড়ের ভক্ষ্য সর্পাণ এক এক নাগ দিব বলিয়া গরুড়ের নিমিত্ত যে বলি নিরূপিত করিয়াছিল, সকল নাগই তাহাতে স্বস্থ ভাগ প্রদান করিত, কেবল কালিয়ঃমদোন্মততা প্রযুক্ত তাহা প্রদান করিল না, নিজে দেওয়া ত দূরের কথা অন্যের প্রদত্ত বলিও নিজে ভোজন করিতে লাগিল। এই র্ত্তান্ত প্রবণগা্চের হইলে ভগবংপ্রিয় অর্থাৎ ভগ বানের শ্রেষ্ঠ পার্ষদ গরুড়ের অতিশয় কোপ হইল, তিনি প্রাণব্ধ কামনায় মহাবেগে কালিয়েন্দ্বিধানে ধাবমান ইইলেন॥ ৪॥

হে রাজন্! গরুড়কে আসিতে দেখিয়া বিষায়্ধ কালিয় আপনার অসংখ্য ফণা উন্নমিত করিয়া যুদ্ধার্থ তাঁহার প্রতি গমন করিল। কালিমের জিহবা অভিশয় ভয়ানক, নিশাস বায়ু স্থদীর্ঘ এবং লোচন উগ্র হইয়া উঠিয়াছিল, সতএব দক্তরূপ অস্ত্রধারী ঐ নাগ দশনরূপ শস্ত্রধারা স্থপর্ণকে দংশন করিতে আরম্ভ করিল॥ ৫॥

মহাত্মা গরুড় ভগবান্ মধুসূদনের আদন (বাহন), ইহাতেই তাহার বেগ অতিশয় প্রচণ্ড ছিল।

পক্ষেণ সব্যেন হিরণ্যরোচিষা জঘান কদ্রোঃ স্থতমুগ্রবিক্রমঃ॥ ৬॥
স্থপর্গপক্ষাভিহতঃ কালিয়োহতীববিহ্বলঃ। হ্রদং বিবেশ কালিন্দ্যাস্তরণম্যং ছুরাসদং॥ ৭॥
তব্রৈকদা জলচরং গরুড়ো ভক্ষ্যমীপ্সিতং। নিবারিতঃ সৌভরিণা প্রসন্থ কুধিতোহহরং।
মীনান্ স্ত্রংথিতান্ দৃষ্ট্বা দীনান্ মীনপতে। হুতে। কুপ্যা সৌভরিঃ প্রাহু তব্রতাক্ষেমনাচরন্।

তন্ত গৰুড়ন্ত অগন্যং অগাধতয়া চ ছ্বাসদং ॥ ৭ ॥ তদগম্যকে কারণমাহ তরেতি নিবারিতােইপি ॥ ৮॥

देवक्षवत्जावनी ।

औधत्रवामी।

ভাক্ষী তি বা পাঠঃ। গৰ্গাদিভ্যো যভিতি গোত্ৰাপত্যবিক্ষয়া। গৰুত্মান্ গৰুত্বাক্য ইত্যপ্তেতে। সচ কালিখন্ত কিয়ানিতি আভাবিক-বিশেষা হ্বরমপ্যাহ মধ্বিতি। কালিয়েত্ তাদৃশবভাবে মাতৃরেব গুণসঞ্চাব ইত্যাহ কজহতমিতি। শ্রীগৰুড্সাতৃ সৌন্দর্য্যস্থাহ হিব-গোতি। সব্যেনেতি অবহেলাং বোধয়তি॥ ৬॥

অবন্যরপি হ্রাসদং হৃষ্ণুবেশং॥ १॥

একদেতি চতুর্বিংশততুর্গাদিশ পূর্ব্ব শীরঘুনাথপুর্বজনাদ্ধাত্মহারাজে পূণীং শাসতীতি জ্বেরং। জলচরমিতি সর্বেধামের সবে নাধারণমিত্যর্থা। তথ্য ভক্যং পক্ষিজাতুরিতকীল্স্য ত্যাহারজেন প্রাপ্তঃ। অত্তবেপিতং। তথাপি মুনিবাক্যমাদরণীয়-মিতি চেত্তবাহ ক্ষিত ইতি। শীভগবছদের লীল্যাকীক্তক্ষ্দপি ক্ষান্তানাং ভক্ষণানহ্স্যাপি ভক্ষণে দোষাম্বতে:। এবং শীগক্তস্যাপরাধ্য পরিক্তঃ। কিন্তু ত্যা মুনেরেবাপরাধ্ ইতি ভাবঃ। ক্ষিত্স্য মহত্তমস্য ভক্ষণবিশ্বাচরণাৎ॥

অন্যম্পি মহাপ্রধিং ত্যাহ মীনানিতি দ্বাভ্যাং। দীনান্ শ্বভাবত এব জলচরতেন কিঞ্চিদ্পি কর্তুম্পক্তে:। মীনপতে দর্শ্ব মংস্য বক্ষকে হতে স্বস্টু ছংথিতান্ দৃষ্ট্। এতেন ত্যায়েসংখ্যবিলক্ষণং সজানন্ধ জ্ঞাপন্থতি দীন ইতি । সপ্তন্যস্থপাঠে দদৈব গ্রুড্ড্যে-নার্ব ইত্যুর্থ প্রথমান্তপাঠো বা। মহাপার্ধদে ধ্রিগিদিনা বিবেক্রহিত ইত্যুর্থ:॥

क्रममन्दः।

ष्यत्नाङ् तात्रमः इच्छात्वमः॥ १॥

ভক্ষাং পশ্চিজাতাুচিতলীলস্য আহারখেন প্রাপ্তং। অতএব ঈপ্সিতং। অতএব লীল্যা ভগবহদের ক্ষিতং।

ত্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

भूतांनमः **व्य**गांधलनायनारेनात्रिम भूत्रात्रमः॥ १॥

গঞ্জাগম্যতে কারণমাহ তত্ত্তেরি মাভূজেকৃতি নিবারিতোহপীতি তল্মিন্ প্রমুম্বতি গ্রুড়ে অজ্ঞাগ্রানং ত্রিষ্টপ্রাতিকুলাং হৈছি গৌভরেরপ্রাধ্যয়ং। তদাজাস্থ্যনং প্রাণিহিংস্নঞ্জ্যেপ্রাধ্যয়ং গ্রুড়্য্য নাভূত্তঃ যকাশাদ্তিতেজ্ববিদ্যাদিতি জ্যোং॥

তত্র তৃতীয়মশরাধং তদ্যাহ মীনানিতি। ত্বপথেতি মীনান্ প্রতি যথা তদ্য ক্বপা তথা গকড়ং প্রতি কোপন্চ গ্র্মাঃ। তত্রত্যানাং জীবমাত্রাণামের ক্ষেমং ক্র্ডুবিভি ততন্চ কালিগাগমনেন তেষাং সর্কোবানকেগমেবাভূদিতি মহদপরাধিনঃ ক্রপাণি বিপ্রীতফলৈর ভবেদিতি দ্যোতিতং॥

এই ব্যাপারে তাঁহার বিজাতীয় ক্রোধ হইল, রোষবশতঃ কক্রপুত্রকে নিরস্ত করিয়া স্বর্ণবং দেদীপ্য-মান বামপক্ষের আঘাতে অতিশয় আহত করিলেন॥৬॥

রাজন্! গ্রুড়ের পক্ষরারা আহত হইবামাত্র কালিয় অতিশয় বিহলে হইল এবং গরুড়ের অগম্য ও অগাধতা হেতু তুর্ম কালিন্দীব্রদে প্রাণভয়ে প্রবেশ করিল॥ ৭॥

হে পরীক্ষিৎ। কালিন্দীব্রদ গরুড়ের অগম্য কেনং, কারণ বলি শুন। একসময় গরুড় ব্রদের প্রধান একটী জলচরকে আপনার ঈপিতভক্ষ্য বোধ করিয়া ধরিতে যাইতেছিলেন,দৈবাৎ সৌভরির নয়নগোচর হওয়াতে তিনি বারণ করিলেন,কিন্তু কুধার্ত্তভাপ্রযুক্তগরুড় সে নিবারণ শুনিলেন না,প্রত্যুত্ত ব্যথ্র হইয়া ঐ ভক্ষ্য হরণ করিলেন। সেই জলচর মীনদিগের অধিপতি, সে হাত হইলে মীনসকল ছংগিত হইল, ভাহা দেখিয়া সৌভরির চিত্ত দয়ার্ক্র হইল অতএব তিনি ঐ জলাশয়ন্ত জলচরদিগের মঙ্গলাকাভ্যায় অত্র প্রবিশ্য গরুড়ো যদি মৎস্যান্ স খাদতি। সদ্যঃ প্রাণৈর্বিয়ুজ্যেত তথ্যমেতদুরীম্যহং ॥ ৮॥ তৎকালিয়ঃ পরং বেদ নান্যঃ কশ্চন লেলিহঃ। অবাসীদগরুড়াস্ভীতঃ রুফেন চ বিবাসিতঃ॥ ৯॥ রুফং ব্রদাদিনিজ্ঞাস্তং দিব্যস্রগ্গন্ধবাসসং। মহামণিগণাকীর্ণং জাঘুনদপরিষ্কৃতং॥ ১০॥

গ্রীধরসামী

নেলিহঃ সর্পঃ। অতন্ততাবাৎসীৎ॥ ১॥ জাধূনদং স্থবর্ণ তেন পরিক্ষতং ভূষিতমিতি॥ ১০॥

বৈক্ষবতোষণী।

অত্ত ব্রুদে মৎস্যানিতি জলচরোপলকাং। স মন্বাক্যাবমস্তা শ্রীভগবংপার্ধদপ্রবরোহপীতি বা। অহমিতি তপোবলান্যভিমানাং। এতেনৈব কিল বৈশ্ববাপরাধেন তস্য তপোভঙ্গাদিপরমানর্থ: 'ফলিত:। তচ্চ নবমস্কদ্ধে বর্ণিতং। কিঞ্চ তত্ত্বতাক্ষেমার্থং সহলোহিপি বিপরীত এবাভবং তত্ত্রাস্ত তাবং জলচরাণাং বার্ত্তা কালিয়নিবাসেন তীরবর্ত্তিনাং বৃক্ষাদীনামপি তথোপরি গচ্ছতাং থগাদীনামপি মরণং প্রাপ্তমিতি কেবলং শ্রীবৃন্দাবন্যম্নাশ্রমমাহান্মেন শ্রীভগবংক্কপরা জনতিচিরেণ তদপরাধ: সদ্য: ফলমিব। বিবেকিনাং নরকত্ব্যমেব বিষয়ভোগং ক্কর্মা তেন পশ্চাদ্ধিতীণমিতি॥৮॥

তংপ্রোক্তরতং কালিয় এব পরং কেবলং বেদেতি জ্ঞীগরুড়ছেষেণ তদ্তীত্যা সর্ব্ব নির্ভয়স্থানাছেষণাৎ পূর্বজন্মশতকুতভাগ্য-বিশেষাচ্চ। কুষ্ণেন সর্বানন্দকরেণেতি ভাবঃ॥৯॥
•

এবমুপোদবাতং সমাপ্য প্রস্তুতমাহ ক্ষামিতি যুগাকং। জাঘূনদং দিবাস্থ্বৰ্ণ ভক্তা। নাগরন্দপরির্তত্বাৎ তলাদ্ধু দাহিশেষেলৈব নিজ্ঞান্তং সন্তন্পলভ্য দৃষ্ঠ্ব তাবদপি শক্ষ্যা ন্তক্ষাৎ। নিজ্ঞমণমপি গতিলাঘবেনৈৰ জলোপ্যুসিরি ক্রাইস্বৈতি জ্ঞোং॥১০॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

মংস্যানিতি জলচরোপলকণং ॥ ৮ ॥
বেদেতি শ্রীনারদম্বারেতি জ্ঞেয়ং ॥ ৯ ॥
বিশেষেধিব নিজ্ঞান্তং উপলভ্য দৃষ্টা ॥ ১০ ॥

बैविश्वनाथहळ्व वर्जी।

সত্র যদীত্যনেন পকান্তরমণি লভাতে। ততশ্চায়মর্থ:। অত্র প্রবিশ্ন ধদি মৎস্যান্ থাদতি তদা সদ্যন্তৎক্ষণ এব প্রাণৈ বিষ্ত্রেত যদিচ মংস্যায় থাদতি তদাত অসদ্যা কিঞ্চিলেশ্ব এবেতি হ্রদপ্রবেশমাত্র এব শাপ: মৎস্থাদনে তু শাপাতিশয়:। অত্ত্যেতিশাপং গক্ড: সর্বজ্ঞবাদেব জ্ঞাত্মা নায়াত: কালিয়ত্মাত্মীয় তত্ত্রত্য সর্পম্থাজ্জ্ঞাত্মৈবাগত:। সৌভরেশ্ব গঙ্কড়ায় কুপ্যতো যদ্মিন্ কুপাংজ্লিট তদ্য মীনস্যৈব সন্ধাত্মিতা ত্র্কাসনৈবাপরাধ্যক্ষং যতশ্চ বিল্প্তর্ক্ষানন্দ: স্বিরস্ক্ষিত্তপ: স্টেস্থ্যোবনেনের মূল্যেন কামিনীবৃন্দং ক্রীয়া তত্ত্বিব নরকত্ল্যে বিষয়ানন্দে নিম্জ্ঞাপরাধ্তাগান্তে শ্রীক্দাবন্যমুনাশ্রিয়মাহাত্মেটনের পশ্চালিস্তারেতি নবনে কথা ॥৮॥ ১॥

উপোদ্বাতং সমাপ্য প্রস্তুতমাহ ক্লঞ্চমিতি বাভ্যাং বিশেষেণ নিজ্ঞানন্তমিতি জলোপ্যু গ্রেপ্তার চরণাভ্যামের সম্ভরণলাগ্রেনৈত্বতি কালিয়াদিষ্টং কমপি সর্পমলক্ষিতমারু হৈবেতি জ্ঞেয়ং। অন্যান্ধানাং জলাগ্লুতত্বে দিব্যস্ত্রগৃগন্ধবাসসমিতি বিশেষণং সাধুনোপপদ্যতে॥১০

কহিলেন, অতঃপর গরুড় যদি এখানে প্রবেশ করিয়া মৎস্য খায়, তবে সদ্যই প্রাণে বিষুক্ত হইবে, আমি নিশ্চয় কহিলাম ॥ ৮॥

হে রাজন্! ঐ বিবরণ কেবল কালিয় জানিত, অন্য কোন দর্প অবগত ছিল না। অতএব গরুড়ভয়ে ভীত হইয়া কালিয় তথায় বাস করিয়াছিল। শ্রীকৃষ্ণ তাহাকে সে স্থান হইতে নির্বাসিত করিয়া
ইহা দিলেন॥ ৯॥

সে যাহা হউক, এদিকে জীকৃষ্ণ দিব্য বসন, দিব্য মাল্য ও দিব্য গন্ধ ধারণ পূর্ব্বক স্থবর্ণে ভূষিত এবং উৎকৃষ্ণ মণিসমূহে অলম্ভত হইয়া কালিন্দীব্রদ হইতে নির্গত হইয়া আসিলে পর—॥ ১০॥

উপলভ্যোথিতাঃ সর্বে লক্ষপ্রাণা ইবাসবঃ। প্রমোদনিভ্তাক্সানো গোপাঃ প্রীত্যাভিরেভিরে ॥১১ যশোদা রোহিণী নন্দো গোপ্যো গোপাশ্চ কোরব। কৃষ্ণং সমেত্য লক্ষেহা আসঞ্জা নগা অপি॥ রামশ্চাচ্যুত্যালিস্য জহাসাস্যানুভাববিং। প্রেম্না ত্যক্ষ্যারোপ্য পুনঃ পুনক্ষদৈক্ষত ॥

ত্রীধরস্বামী।

অপৰ ইন্দ্ৰিয়াণি প্ৰমোদনি হৃতামান আনন্দপূৰ্ণমনস: ॥ ১১ ॥ লক্ষেহা: লকচেষ্টা: । নগা বৃক্ষা অপি পূৰ্বহ শুক্ষা: সন্তঃ সদ্য এব বিক্ষৃতা ইত্যৰ্থ: ॥ ১২ ॥

देवक्षबरजावनी।

সর্বে বক্ষ্যমাণাঃ অচেতনানামের স্তর্নামিপ তেয়ামেকদোখানে হেতুমাহ লরপ্রাণা ইতি। তত্ত্ব মেলনে ক্রমঃ প্রমোদেতি সার্দ্ধেন। গোপাঃ মথায়ঃ। পূর্বত এব তীরাগ্রমবলম্বা স্থিতরাৎ অভিরেভিরে পরিরেভিরে॥ ১১॥

ত ৩: শ্রীষণোদাদর: সেহক্রমেণাগ্রতোহগ্রত আগত্য তত্ত্রৈব স্থিতষাঁৎ। তত্র শ্রীষণোদা ব্রহাৎ প্রস্থিতনাং সর্বেষামগ্রগামিনী তস্যা এবাসমাদ্ধিবাৎসল্যাৎ। ততঃ শ্রীরোহিণী তরা সংখ্যন স্বাসন্দ্ধেন্দ তৎসহযোগাৎ। ততঃ শ্রীনন্দক্ষণত্বাৎসন্যাৎ গোগোগ গোপাশ্চ ক্রমেণ দম্পত্যোনি কটন্তা ক্রেয়া:। কেষাঞ্চিৎসব াসনদ্ধাৎ কেষাঞ্চিৎ অনুবারিছাক্ত। সমেত্যেতি পূর্ববং। তাবং ক্তরীভূয় কেবলং দ্রুটার এবাসন্। পশ্চাং সন্ত্রমেণোখিতমাত্রং নতু ধাবিত্বং শক্তাঃ। সমেত্য তু আলিঙ্গনাদিচেষ্টাবজ্ঞো বভূব্রিতার্থঃ। কিং বহুনিত্যাহ শুলা ইতি। নিকটে তাবং বৃক্ষোৎপত্তিরের নান্তি দ্রতন্ত্র যে বায়গ্র্যা শুলা শ্রদানীং এব তাদৃশ্বীক্রফলীলয়া বা হংশকুনাস্তর্বং শুলান্তেইপি অনুবাদিবিকাশচেষ্টাবজ্ঞো বভূব্রিভার্থঃ। লক্ষনোর্থা ইতি পাঠস্ক স্বাম্যস্মতঃ॥

অথ তাদৃশত্ঃথিব্রজ্জনসঙ্গনার দত্তাবসরেণ শ্রীরামেণ সঙ্গনং বর্ণয়তি রামশ্চতি সার্দ্ধকং। চকাবাৎ পূর্বং ব্রজ্বাসিশোকেন রামশ্চাস্তঃশুক্ষঃ পশ্চাং লব্দেহস্তমালিক্ষ্য জহাদেত্যর্বঃ। অচ্যুতং ন কথকিদপি মাহাত্মাচ্চ্যুতং। কুতো জহাদ তদাহ অস্যাচ্যুত্

क्रामसर्भः।

্তাবদ্ধি শঙ্ক্ষা স্তৰ্ক্ষাং পূৰ্ব্বে ঈক্ষমাণাই সূৰ্ব্বে গোপাঃ স্থায়োহপূৰে নানাবিধাঃ॥ ১১॥

সমেতিতাবালিসনে চেটাবজো বভূব্রিতার্থ:। তদানীং ব্রজবাসিসধর্মতাপ্রাপ্তা। নগা অপি পূর্বং শুকাং পশ্চান্তরেহা:। অজুবোদগমনাদি চেটাবস্ত আসন্। তরিষভকাণামতিপ্রাচীনত্বাচিক্লান্যপি তদা নাগরিতি। জহাদেত্যত্ব হেতুরস্যেতি। অতো নিজ্ঞজ্ঞগ্রমধিদং ভদ্রং কৃত্যিত্যগাল্ভনপূর্বকমেবেতার্থ:। গ্রাদিষু তত্তৈব বিদ্যানিশ্বপি কুধাদিক্ষিত্ত তেবাং বিষ্ণপর্কশক্ষা শ্রীক্ষায়ায়-

শ্রীবিখনাথচক্রবর্ত্তী।

অসব ইক্রিয়াণি প্রমোদনি সূতামান: আনন্দপূর্ণমনস:। গোপা: স্থায়: তেয়ামের তারল্যেন প্রাথমােচিত্যাৎ॥ ১১ ॥

ততো হা পুত্র জীবসীতি গলাদস্ববাগুললজ্জাভয়প্রশ্রমাদিনিরপেকা অতিবিহ্নলা শ্রীমণোদা ততত্তৎস্থীষতিনিবিত্তয়া তদভিতঃ প্রাণাশ্রমণে মুখ্যা বোহিণী। ততঃ প্রেনোৎকটাচুল্কিতগান্তীগো বিলম্বাহিষ্ণুঃ স্ত্রীদংমর্দ্মধ্য এব প্রবিশ্য নলঃ। ততেহিন্যা গোপো বংসলা গোপাশ্চেপনন্দাদ্যঃ। চকারেণাম্রাগিণঃ পূর্ব্রাগবত্যো গোপাশ্চ দ্রতো লোচনাঞ্জনীভিরেব সমেত্য পরিষ্কাদিভিঃ সক্ষতীভ্ব লক্ষ্মেট্রা লক্ষ্মিতা মৃতা ইব জীবস্থো বভ্বঃ। কিং বছনা নগান্তীরে বৃক্ষাভাবিদ্ধুরে বৃন্ধাবনস্থা বৃক্ষা মপি তৎসাধন্ত্যাগ্রাগান্তা ক্ষমদৃষ্ঠী শোকাং ওকাতঃ পুন্ধিট্রা লক্ষের অম্ব্রপ্লবপ্লাছাকান্বতঃ॥

জংাদেতি ধনৌহস্যেবং কর্তু গুজাত ইত্যুক্। তংপ্রভাবজ্ঞোহপি প্রেয়া পুনঃ পুনক্তকর্পে প্রক্তিত কালিয়হতকেন কচিত কতন্ত্র নাভূবিতি নাভালয়ৎ ॥

বিগত প্রাণ পুনশ্চ সমাগত হইলে ইন্দ্রিয়গণ যেরপ হয়, তজ্রপ গোপগণ জীকুফকে দেখিবামাত্র উথিত হইলেন এবং আনন্দপূর্ণ হইয়া প্রীতিপূর্ব্ধক আলিঙ্গন করিতে লাগিলেন॥ ১১॥ ছে কৌরব ! যশোদা,রোহিণী তথা অন্যান্য গোপী এবং নন্দ ও আরহ গোপসকলও জীকুফকে দেখিতে পাইয়া স্বস্থ বিনক্ট চেক্টা পুনঃ প্রাপ্ত হইলেন, আর শুষ্কর্ক্ষগণও তাঁহার দর্শনে মুদ্যঃ জীবিত হইয়া উচিল। বলদেবও জীকুফকে দেখিয়া আলিঙ্গন করিলেন। যদিও তিনি জীকুফের অনুভব জানিতেন বলিয়া অথে হাস্য করিলেন। তথাপি স্বেহবশতঃ ক্রোড়ে আরোপণ করিয়া পুনঃ২ নিরীক্ষণ করিতে

भारत। द्वा वरमञ्ज्या (लिज्जि शतमाः मूनः ॥ ১२॥

নন্দং বিপ্রাঃ সমাগম্য গুরবঃ সকলত্রকাঃ। উচুন্তে কালিযত্রীত্তো দিষ্ট্যা মুক্তস্তবাগ্নজঃ॥ ১০॥ যশোদা চ মহাভাগা নষ্টলব্ধপ্রজা সতী। পরিষজ্যাক্ষমারোপ্য মুমোচাশ্রুকলাং মুত্রঃ॥ ১৪॥ তাং রাত্রিং তত্রে রাজেন্দ্র ক্ষুত্তৃত্যাং শ্রমকর্ষিতাঃ। উষুর্রজৌকদো গাবঃ কালিন্দ্যা উপকূলতঃ।

शिधतवामी।

নশং তে বিপ্রা উচু:। কিং ডৎ দিষ্টোভ্যাদি॥ ১০॥

নইনৰপ্ৰজা নইপ্ৰায়া পুনর্ম্বরা প্রস্কা যয়া গা॥ ১৪॥

শ্ৰমেণ কৰিতা: উপকৃলভ: কুলোপান্তে॥ ১৫॥

देवसम्बद्धांस्त्री।

ভাবং ইচ্ছামাত্রেণ সর্বাসার্থাং বেত্তীতি তথা স:। অতো নিজন্তর্জ্বংখনয়মিদং ভদ্রং ক্বতং ইত্যুপালস্তুনপূর্বকমেবেত্যর্থ:। নগা অত্যেহপি সর্ব্বে। গাবো সুধা বৎসতরা ইতি পাঠ: কচিং॥ ১২॥

তবৈর বিশেষতো ত্রাহ্মণানাং হর্ষভরেণ বাক্যমাহ নন্দমিতি গুরুবঃ পুরোহিডাঃ। অস্তে চ বিপ্রা: সমাগত্যেতি প্রাণেব তেন সহ এফারির্গতাঃ অধুনা তরিকটমাগত্যেতার্থঃ। তে প্রমবৈক্ষবত্বাদিনা প্রসিদ্ধাঃ। দিষ্ট্যা ভক্তঃ। অহো ত্বাহ্মকং চ ভাগ্যমিতার্থঃ। অতোহতিহ্নষ্টো ভূষা স্নমহোৎসবং বিধেহীতি ভাবঃ॥ ১৩॥

মহাপ্রেমা পূন: শ্রীবশোদয়া মিলিডমিত্যাহ বশোদেতি। তথে চিকার: গ্রীনন্দতোহপি বিশেষাং। মহাভাগতমাহ নটেতি। যতঃ নতীতি তস্যাঃ কথমজ্ঞপা স্যাদিতি ভাববিশেষেণাভিপ্রেতং। যদা। শ্বভাবতঃ শ্রীকৃষ্ণস্বেহাদিনা সর্ব্বোৎক্রটা। যদা। তাদৃশী ভবস্তী কলাং ধারাং মুছরিতি কদাচিং পূর্বার্ত্তগ্রহা ছঃথোদয়েন কদাচিক্র প্রাপ্ত্যানন্দেনাশ্রধারাষোচনক্ষ বিরামেহপি উফশীতভাভেদেন পৌনঃ-পুরাং॥ ১৪॥

কথাজ্ঞমেণান্তামপ্যভ্তলীলামাহ তামিত্যাদিনা। রাত্রিমিতি শ্রীক্ষণ্ড কালিয়দমনাদিনা তেন সহ এজজনানাং প্রত্যেকমেশনে নচ দিনাবদানতঃ। তাং তদ্দিনসম্বন্ধিনীং তাদৃশপরমানন্দমনীং বা। যত্র ক্ষেনে সহ দক্ষমন্তন্মিন্ প্রদেশে এবোরু:। তত্ত্বৈ হেতুঃ কুত্ত্ভাং রোদনাদি শ্রমেণ চ কশীক্বতাং দৌর্বাল্যং প্রাপিতা ইত্যর্থ:। তত্ত্ব ধেবাদিমু তত্ত্বৈর বিদ্যমানাম্বণি ক্ষ্ধাদিক বিত্তং তাগং

ক্রমসন্ত:।

প্রয়োজনাই॥ ১২॥ ১৩॥ ১৪॥

উপকূলত: কিঞ্চিৎ কূলং পরিভাজ্যেতার্থ: ॥ ১৫ ॥

শ্ৰীবিখনাথচক্রবর্তী।

প্রবো ভাগুর্যাদিপুরোহিতা:॥ ১৩॥

স্বাদৌনপ্তপ্রায়া পশ্চাল্লকা প্রেক্ষা বল্পা বল্পা পরিষজ্যেতি পূর্বং বহুলোকাপেক্ষাবশাং ভাদৃশপরিষ্পালাভাদিতি ভাব: ॥১৪॥

অতঃ পরমদ্য রাত্রৌ বরং ক্লফং নির্নিদেবং পশ্যন্ত এব স্থাস্যামঃ। ভাগ্যাদগতোহপি কালিরঃ পুনর্যদি বৈরং সিষাধ্যিদুরায়াভি তদা মিনিতীভূম লকুটে বারয়ামঃ। নতু দর্শনব্যধ্ধায়কং স্বন্ধ্বপৃহং যাম ইতি সর্বেষ্ধাং মনোরথমালক্ষ্য নন্দাদ্য ত্রজৌকসঃ উপ-

লাগিলেন। অপর শ্রীকৃষ্ণকে দেখিয়া গোর্য তথা বৎসতর সকলও পরমানন্দ প্রাপ্ত হইল॥ ১২॥

অনন্তর গুরু ও বিপ্রগণ সন্ত্রীক হইয়া নন্দ সন্ধিধানে আগমনপূর্বক আনন্দে কহিতে লাগিলেন যে হে গোপরাজ! তোমার পরম ভাগ্য তাহাতেই তোমার পুত্র মহাদর্প কালিয় কর্তৃক গ্রন্ত হইয়াও পুনর্ববার মুক্ত হইয়া আদিল ॥ ১৩॥

যশোদাও মহাভাগ্যশালিনী, কারণ নউপুক্ত পুনর্বার লাভ করিয়া অঙ্কে স্থাপনপূর্বক আলিঙ্গনকরতঃ মুহুমূ হিঃ আনন্দাশ্রু মোচন করিতে লাগিলেন ॥ ১৪ ॥

হে রাজেন্দ্র! ব্রজবাসিগণ এবং ধেনুগণ যদিও কুধা ও তৃষ্ণাবশতঃ পরিপ্রাপ্ত হইয়াছিল

তদা শুচিবনোছূতো দাবাগ্নিঃ সর্বতো ব্রজং। স্বপ্তং নিশীথ আর্ত্য প্রদান্ধু মুপচক্রনে।
তত উপায় সম্রান্তা দহসানা ব্রজোকসঃ। কৃষ্ণং বযুত্তে শরণং মায়ামসুজমীশরং।
কৃষ্ণ কৃষ্ণ মহাভাগ হে রামামিতবিক্রম। এষ ঘোরতমো বহ্নিস্তাবকান্ গ্রাসতে হি নঃ॥১৫॥
হাজ্তরামঃ স্বান্ পাহি কালাগ্রেঃ স্কুদঃ প্রভো। ন শকু মস্বুচ্চরণং সংত্যক্ত মুক্তো ভয়ং।

এিধরসামী।

কালাগ্রে: মৃত্যুক্পাগ্রে: ন মৃত্যোধিভিম: কিন্তু আজেরশবিরোগালিতাছি ন শিকুম ইতি। বিমোহা নহি দত্তেন ততঃ স্বং শ্বণং

বৈকাবতোধণী।

বিষদম্পর্কশঙ্করা শ্রীক্ষণায়াত্রপ্রোজনাই। ততঃ স্বয়নপাত্রপ্যোগাই কালিন্দ্যা উপকূলতঃ বিষজলাদি ভ্যেন তদ্ধু দত্ত জলান্তিকং পরি-তাজোতার্থঃ। অত্যথা দাবাগ্নিনা সর্বত স্বাবর্ণাসিলেঃ॥

তদা তদাত্রামের শুচিপ্রার্থনার তংশধন্ধি বনং শুকারণামিত্যপুঃ। তত্রোরুতঃ অয়ঞ্চ দাবাগ্রিরূপঃ কালিয়স্থঃ কংসামূচরঃ কশ্চিদমুর ইতি কেচিদাত্তঃ॥

সম্বাত্তাং সদ্যত্তং প্রতিকারাদ্যজ্ঞানাং। যথা। নিঃসারণার্থমিতত্ততঃ কৃত প্রিদ্রমণা ইত্যর্থঃ। যতো দ্য্যানা দ্ধুমুপ্রুম্যানাণাঃ মার্যা কাপট্যেনৈর মহক্ষের প্রাক্তমহ্যুবেন ক্রন্তঃ। বস্তত্ত নরাক্তিপ্রব্রক্ষেন তরুপেণৈবেখবদং কিয়া মার্যা কুপা তদ্যুক্তং মহক্ষ দিভূল্যাদি সাম্যান। যথা। নার্যালক্ষা দিখবং আনিন্যপি মহুলং মহ্ব্যলীলং ইতি কাকণ্যাদ্যতিশরং ক্তিতঃ। ত্রাপি কৃষ্ণং ত্র ব্রক্ষন প্রাণনাথং অতঃ শ্রণং য্যুঃ॥

তং প্রকারনেবার ক্ষেতি। বীপা সন্ত্রনেব প্রেক্তর্বভাবেন বা নহান্ ভাগো ভাগ্যমন্ত্রাদ্দানাং যন্ত্রাদিতি তৎসাক্ষাং অন্যাকং ত্রংং নোপযুক্তনিতি ভাবং। অনিতোহনস্থা বিক্রম: শৌর্যং যস্য ইতি বগদেবং প্রতি সংঘাধনং তব বীর্যোণ দাবান্নিরপি নির্পাতীতি ভাবং। এবং তদাপি তেষাং মহাপ্রভাবত্বজ্ঞাননেব জাতং নত্বৈম্যাজ্ঞানমিতি ভাবং। এব ইতি প্রত্যক্ষরং শীল্লবং বা বোধ্যতি ঘোরত্যঃ অপ্রতিকার্যাদ্বাহ যুন্ত্রদান্ত্রিকপ্রাপ্তরাদ্বা। প্রসতে নিংশেষেণ সংহরতীত্যর্থং তাবকানিতি কুপালননার্থং প্রসন্বাহাগ্যম্ব বোধনার্থং বা তবকনমকাবেকবচন ইতি তদ্ধিত্রকাদাদেশ স্বাদ্বদ্বৈক্রস্যুব স্বন্ধঃ প্রতিপদ্যতে। হি নিশ্চিতং। তং বিশ্ব হ্রেরিভেদপ্রতিপাদনার্থমিতি জ্লোং॥ ১৫॥

খান্ জাতীন্ আত্মীযান্ বা অংশাভনং স্দেষবাং তান্ সভাবেন তদেকনিঠানিতাহঃ । প্রভো হে সর্ধং কর্ঃ সমর্থ ন কুতোগি ভবং যেখাতং। অতো নিজ্চরণপ্রিত্যাগভয়মপাকং আশু বিনাশয়েতি ভাবঃ। অতঃ সম্যক্ কণ্মপি বিযুক্ত যা তাতশুং ন শক্ষ ইতি ॥

ক্রসদন্দর্ভ:।

অকুতোভয়মিতি ওচ্চরণপ্রাপ্তিং বিনা অন্যং সর্বমেবাত্মাকং ভয়হেছুরিত্যর্থ:। অপিবং রূপাবেশেন পানাভিন্যেনৈর সংগ্রহ শ্রীবিখনাগচক্রবরী।

কুলত: বিষক্তলাদিভয়াৎ কুলসমীপং পরিতাজা উবু:। অন্যথা দাবাগ্নিনা সক্ষত আবরণাসিদ্ধে:॥

শুচিত্রী ম: দাবাগ্রির হং কংসাত্মতর: কালিয়সখ্য কল্চিদত্ত্ব ইতি কেচিদাত: ॥

ব্ৰজৌকসং ব্ৰস্তস্থাৰণাল্যাঃ মাৰ্বা অৰ্থেশৈৰ মনুষ্ঠং অৱপভূত্যা নিতাশক্তা নায়াগ্যয়েতি শতেঃ। শ্বণং ন্যুবিত্যগো অকাকং প্ৰাণসক্টসমূহে অক্সিন্তেৰ বালকে অপ্ৰসাদোভূতে নাৱাষণ আবিশাবোন্ পালয়তি অনেন সৰ্বত্যাণি স্মন্ত্ৰপ্ৰিয়ণেতি গৰ্গোকেন্ত্ৰমিমং সম্প্ৰতি শ্ৰীনাৱাৰণাবিষ্টং কৃষ্ণনেৰ নাৱায়ণ্ডেন বিপ্ৰভাবিপত্ৰিগাৰ্থং শ্ৰণং নাম ইতি বিষ্ণ্ডেতি ভাবঃ॥

হে রামেতি তন্তাপি তদিনে সর্বজ্ঞত্ব দর্শনাদ্যমণি রুফ্ডলাতা দেবাবিষ্ট ইন্ডায়ুমানাৎ ॥ ১৫ 🕏

কালো মৃত্যুক্তজ্ঞপাৰয়ে:। মৃত্যো সতি ২৬চরণেন সহ বিয়োগো ভবেং সতু ছঃসহ ইত্যান্ত্র শকুম ইতি ॥

তথাচ সেই রাত্রি কালিন্দীর তীরসমীপেই থাকিল। নিশীথকালে দৈবাৎ শুচিবন হইতে উদ্ভূল নাবাঞ্জিপ্ত ব্রজবাসিদিগকে চারিদিকে বেক্টনপূর্পকি দক্ষ করিতে উপক্রম করিল। ব্রজবাসিরা অগ্রিস্পর্শ নাত্র সমস্ত্রমে নিজা হইতে উথিত হইলেন এবং মায়াকশত সানবরপধারি পরমেশ্বর শীকৃষ্ণের শরণাপন্ন হইন্না কহিতে লাগিলেন যে, হে কৃষ্ণ! হে কৃষ্ণ! হে মহাভাগ! হে রাম! হে অপরিমিত্বিক্রম! এই ঘোরতম দাবানল স্বদাশ্রিত মাদৃশগণকে গ্রাস করিতেছে॥ ১৫॥

হে প্রভো! এই কালাগ্রি অতিশয় হস্তর, আমরা তোমার স্থন্দ, আমাদিগকে ইহা হইতে রক্ষা

ইত্থং স্বজনবৈক্লব্যং নিরীক্ষ্য জগদীখরঃ। তমগ্রিমপিবন্তীব্রমনন্তোহনন্তশক্তিধৃক্॥ ১৬॥
॥ * ॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং দশমস্বন্ধে রুন্দাবনক্রীড়ায়াং দাবাগ্রিমোক্ষণং নাম সপ্তদশোধ্যায়ঃ॥ * ॥১৭॥ * ॥

শ্রীশুক উবাচ॥

অথ কৃষ্ণঃ পরিবৃতো জ্ঞাতিভিমু দিতাত্মভিঃ। অফুগীয়মানো ন্যবিশদুজং গোকুলমণ্ডিতং॥ ১॥

औधत्रवामी।

গতান্। গোপানপাদনভোহসাবনস্তবনবহ্নিত:॥১৬॥

॥ • ॥ ইতি দশমে সপ্তদশ:॥ • ॥

অষ্টাদশে ততো গ্রীমে বসস্ত গুণলক্ষিতে। ' অঘাতয়ম্বলেনালং প্রলম্বং লীলয়া হরি:। কৃষা নৃত্যং ফণাগ্রের্ কালিয়ভ সংক্তিত্কং। বলং প্রলম্ভুকাংসমারোহয়দরাতিহা॥ ১॥

বৈষ্ণবতোষণী।

ইখং স্বপ্রেনিকম্লকানেককাক্ ক্যাদিপ্রকারকং নিরীক্ষ্য অন্তত্ত্ব তং তাদৃশং অতন্তীব্রং হংসহং তথাভূতমণি অপিবং। কার্নগ্যম্য প্রেমাবেশেনৈবেতি ভাবং। নত্ন ভবতু তদাবেশন্তেন কথং তৎপানং স্যাদিত্যাশক্ষ্য গূঢ়মণি তদৈখর্য্যং স্বয়নেব ব্যক্তীভবতীতি অভিপ্রেতা সিদ্ধান্ত্র ক্যাতামপীশ্বঃ সর্বেষ্ তত্তচ্চু ক্রিপ্রেদ ইত্যর্থং। তত্মাদেবাগ্নেরপি শক্তেং কো নাম বিত্মষ ইতি ভাবং। নত্ন গোপবালকরপঃ সমস্তাত্মগ্রিং কথং অপিবং তত্ত্বাহ অনস্কন্তাদৃশদ্যৈ বিগ্রহ্য বিভূত্বেন স্বর্মপি সমস্তাং প্রকাশমান ইত্যর্থং। নচ তত্মাত্র-শক্তিত্বমপ্যাশ্ব্যমিত্যাহ অনস্কশক্তিশ্বিতি। অত্তবে শ্রীগোপা অপি নিবার্যিত্থ নাবসরং লক্ষ্বস্ত ইত্যর্থং॥ ১৬॥

॥ * ॥ ইতি শ্রীবৈষ্ণবতোষণ্যাং দশমটিপ্পন্যাং সপ্তদশঃ॥ * ॥

ষ্মণ প্রাত্তর্গতিভিরিতি তদাপি তম্ভাবমাধুর্গ্যাপরিত্যাগো দর্শিতঃ। পরিতোর্তঃ স্নেহাতিরেকেণ সর্ক্ত আবরণ্ত্যা বেষ্টিতো

ক্রমসন্দর্ভ:।

বান্। তত্র হেতুঃ জগদীখরঃ অধ্যাদীনাং সর্কোষামেব তত্তজ্ঞিপ্রবর্ত্তকনিবর্ত্তক:। সমস্তাদগতাগ্নিপানে গুকি:॥ অনস্ত সর্কাত প্রকাশমান স্ববিগ্রহ:। তাদৃশশক্তাবনভ্তত্তং অনস্তশক্তিধুগিতি॥১৬॥

॥ ॰ ॥ ইতি দশমে ক্রমসন্দর্ভে সপ্তদৃশঃ ॥ • ॥

অণ প্রাত গোঁকুলেন গোসমূহেন মণ্ডিতং যথাক্তাৎ ॥ ১॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

স্বজনবৈক্ষব্যং দৃষ্টে তি স্বজনবিষয়কস্তৎপ্রেটনৰ তেষাং ব্রহ্মণার্থং তেইমর্য্যনমুসদ্ধাপয়ামাসেতি ভাবঃ। নমু প্রমস্কুমারঃ কথং ভীত্রমন্মিমপিবত্ততাহ অনন্তশক্তিশ্বক্ তম্ম সংহারিকা শক্তিরেবাপিবৎ। তত্মিন্ শক্তিমতি তৎপানোপচারমাত্রমিতি ভাবঃ॥ ১৬॥

॥ * ॥ ইতি সারার্থদর্শিন্যাং হর্ষিণ্যাং ভক্তচেত্সাং । দশমেহস্মিন্ সপ্তদশঃ সঙ্গতঃ সঞ্জঃ স্তাং ॥ * ॥

গ্রীমর্জু বর্ণনং কেলো কৃষ্ণ: প্রীদামবাড়ভূৎ। রাম: প্রলম্বমারু হাহহরিত্যপ্রাদশে কথা॥ ১॥

কর, আমরা মৃত্যু হইতে ভীত নহি, কিন্তু পাছে তোমার চরণ হইতে আমাদের বিয়োগ হয় তজ্জন্যই ভয় করিতেছি, যে হেতু তোমার চরণে কোথা হইতেও ভয় হয় না, অতএব আমরা ইহা পরিত্যাগ করিতে পারিব না। হে রাজন্! জগদীশ্বর ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ আত্মীয়জনগণের এইপ্রকার কাতরতা নিরী-ক্ষণ করিয়া সেই ভীষণদাবানল পান করিলেন। তিনি নিজে অনস্ত ও অনস্তশক্তি ধারণ করেন, তাঁহার ঐ কর্মা বিচিত্র নহে॥ ১৬॥

॥ ०॥ ইতি দশয়ম সপ্তদশ॥ ०॥

অফীদশ অধ্যায়ে বসন্তগুণে লক্ষিত **এীম্মন**য়ে শ্রীকৃষ্ণকর্তৃক বলভদ্র দ্বারা প্রলম্বাস্থ্রের বধ এবং কালিয়ের ফণাপ্রে সানন্দে নৃত্য করত প্রলম্বের স্কন্ধে বলদেবের আরোহণ বর্ণন ॥ ০ ॥

'শুকদেব কহিলেন তদনন্তর জ্রীকৃষ্ণ হৃষ্টচিত জ্ঞাতিগণে পরিবৃত হইয়া ধেনুগণমণ্ডিত ব্রজমণ্ডলে

ব্রজে বিক্রীড়তোরেবং গোপালচ্ছদ্মনায়য়া। গ্রীম্মো নামর্ত্র ভবন্নাতিপ্রেয়াঞ্ক্রীরিণাং। সচ রন্দাবনগুণৈব্রস্ত ইব লক্ষিতঃ। যত্রাস্তে ভগবান্ সাক্ষাদ্রামেণ সহ কেশবঃ॥ ২॥ যত্র নির্বরিক্রিদনির্ভ্যবনিক্রিকং। শশুক্রচ্ছিকর্জী যক্রনমণ্ডলমণ্ডিতং॥ ৩॥

धिधववागी।

८गाशांनछ्यमायुवा ८गाशांननस्मव छ्वा यमााः ख्या मायुवा ॥ २॥

বসস্তসাম্যমাহ চতুর্ভিঃ। যত্র গ্রীক্ষেৎপি নির্মারণাং নির্মাদেন ঘোষেণ নির্ভস্বনাঃ ছয়ধ্বনয়ঃ ঝিল্লিকাঃ কঠোরধ্বনিস্ক্ষ্মকীটা যশ্মিন্ তথাভূতং বৃন্দাবনং ভবতি। কিঞা। শখণ্ডেষাং নির্মারণাং শীকরৈরমুক্তিঃ ঋজীবাঃ মিঝা যে ক্রমান্তেষাং মণ্ডলৈম ভিজঃ॥ ৩॥

বৈষ্ণবতোষণী।

অমুগীয়মানশ্চ গোকুলমণ্ডিতনিতি প্রাক্ গবাং প্রবেশাং ক্রিয়াবিশেষণং বা প্রাতবেব গোপ্রবেশনং তহপদ্রবক্ষোরকত্বেন দব্দগুছেন চ তংপ্রদেশং ত্যুক্ত্বা ক্রোশমাত্রস্থিতস্য ব্রজ্য পরতশ্চারণেচ্ছ্য়া ইতি জ্ঞেয়ং। তাদৃশকুদময়গত্তদ্বাত্রাপরিবর্তনেচ্ছয়েতি বা। বিশেষ-তস্ত্র কারণং মহয়্যা ইব গশবোহপি তং ব্রজং প্রবিশস্তং ত্যুক্তুং নাশক্ষুবন্ধিতি॥ ১॥

গোপালনং ছামতি যা মায়া তস্য ছন্মতা বাদিনাং বঞ্চনং তয়া ক্রীড়তোন্তান্তান্ বঞ্চাম্বা বিহরতোরিত্যর্থ:। ব্যা।গোপালনমপি ছন্মক্রীড়ান্তরাভিপ্রায়শালি বত্র তাদৃশী যা মায়া জনবঞ্চনং তয়া ক্রীড়াতোঃ বিচিত্রক্রীড়াবিশেষানপি কুর্বতোঃ। নাম প্রাকাশ্রে গ্রীম্বতি গ্রীমান্তরমভবদিত্যর্থঃ নাতিপ্রেয়ানিত্যতিশব্দো জলকেল্যাদীনাং কিঞ্ছিৎ প্রিয়তাপেক্ষয়।

সচ সোহণি তলগুণানাং নিত্যবসম্ভসানিধ্যকরত্বং কিন্তবা মাহাত্মামিত্যভিপ্রেত্যাহ ্যত্তেতি। তত্মান্ট্রব ছষ্টাত্মা হতঃ কেশী জনার্দ্দনা। তত্মাৎ কেশবনামা তং লোকে গেয়ো ভবিষ্যসীতি শ্রীবিষ্ণুপ্রাণোক্তরীত্যা কেশবোহত্ত শ্রীকৃষ্ণ এব অতএব ভগবান্ পরিপূর্ণ সর্বভিগঃ। আতে নিতামেব বিহরতি। বর্ত্তমানপ্রয়োগন্ত শ্রীশুক্স্য ত্মস্প্রত্ম্সারেণ ॥ ২ ॥

যত্রতি পঞ্চকং তম্বনমবিশদিতি পঞ্চমেনাম্মাং। তথাপি পৃথগঙ্কমিষাতে বৈশ্যায়। যত্র কুলাবনে সামান্যেন সর্ব্ধনেব স্থানং নিঝ রৈত্যাদি লক্ষণং শখদিত্যাদি লক্ষণঞ্চ। যদা। নিঝ র নিম্নাদেন বর্ধাভ্রমজনকেন নিবৃত্তমা যে ঝিল্লয়ং তৈঃ কং স্থণং ছংথাভাব-ইতি যাবং। তাদৃশক্রমমগুলৈম গুলক্ষ যত্র ভবতি ভাবে নিষ্ঠা। অত্র টীকায়াং তেষামিতি যন্তিনির্দেশাং মগুলৈরিত্যেব ত্র্গতে।

क्रगमन्द्र ।

ত দিনে তংপ্রদেশস্থ দাহাৎ ব্রজাৎ প্রতশ্চারণার্থং গোপালনং ছল্লেভি। যা মায়া তদ্য চ্ছেল্লতা বাদীনাং বঞ্চনং তয়া ক্রীড়ভো: তান্ বঞ্যিষা বিহরতোরিতার্থ:। তল্পুণানাং নিত্যবসন্ত্রদারিধ্যকরমাহাম্মানিত্যভিপ্রেত্যাহ য্রাস্ত ইভি। নিত্যমেব বিহরতি ॥ ২ ॥ যুত্র বুলাবনে তদ্বন্যবিশ্দিতি পঞ্জির্বয়:॥ ৩॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

গোপালনং ছন্ম বনগমনায় মিধং যতাং তথা ভূতা যা মায়া প্রচ্ছেশ্বকামতামন্ত্রী জনবঞ্চনা তয়া বিক্রীভৃতোর জিবালাভিঃ সহ বিহ-রতোরিভি। বলদেবস্যাপি পুণক্ কান্তা গোপ্যঃ আনন্দর্বদাবনে দৃষ্টাঃ। মুলেহপ্যপরিষ্টান্ত্রীভবিষ্যন্তি॥ ২॥

বসস্তসাম্যমাহ চতুর্জি:। যত্র বৃন্ধাবনে গ্রীমেহপি নিঝ রাণাং নিক্রাদেন থোধেণ নির্ত্তস্বনা আছেরধ্বনয়ো ঝিল্লিকা: কঠোর-ভাষিস্ক্ষকীটা যন্ত্রিন তথাভূতং স্থলং ভবতীতি শেষ:। শশত্রেষাং শীকরৈবন্ধুক্টেগ্রেজীয়া: নিশ্ধা যে জ্রুমান্তেয়াং নগুলৈন শ্তিতং ॥ ৩ ॥

প্রবেশ করিলেন। ভাঁহার অনুগামি লোকেরা সঙ্গে ২ যশ কীর্ত্তন করিতে ই চলিল॥ ১॥

হে রাজন্! যাহাতে গোপালনমাত্র ছল্ দেদীপ্যমান, তাদৃশী মায়াযোগে রামকৃষ্ণ ত্রজনধ্যে ঐ প্রকারে বিহার করিয়া বেড়ান্ ইত্যবদরে শরীরিদিগের অনতিপ্রিয়তর এীয় ঋতু আদিয়া আবিভূতি হইল। কিস্তু সেই গ্রীয় যেথানে ভাগান্ কেশব, বলদেবের সহিত বাস করিতেছিলেন সেই
রন্দাবনের গুণে বসস্তের ন্যায়, লক্ষিত হইল॥২॥

যে হেতু নিদাঘ সময়েও বৃন্দাবন মধ্যে নিঝর সকলের ধ্বনি দ্বারা কঠোরভাষি ও কুদ্র ঝিল্লী-নামক কীটদিগের ধ্বনি আছেম হইয়া গেল আর সকলপ্রদেশ নিরস্তর ঐ সকল নিঝ রের জলকণায় সরিৎসরংপ্রস্ত্রবণার্শ্বিবায়ুনা কহলারকঞ্জোৎপলরেণুহারিণা।
ন বিদ্যতে যত্র ব্রজ্ঞোকসাং দবো নিদাঘবহ্ন্যুর্কভবোহতিশাদ্বলে॥ ৪ ॥
অগাধতোয়হ্রদিনীতটোর্শ্বিভির্দ্রবৎপুরীষ্যাঃ পুলিনৈঃ সমস্ততঃ।
ন যত্র চণ্ডাংশুকরা বিষোল্পা ভুবো রসং শাদ্বলিতঞ্চ গৃহুতে ॥ ৫॥

धीरवर्षामी।

বত্র গ্রীমে বনে বা নিদাঘো গ্রীমন্তেন তৎকালীনবস্থাকাভাকি ভবতি যো দবস্তাপঃ। অতিশাদ্ধে অতিহ্রিতত্পাকীর্ণে। যথা। অতিকাশ্তশাদ্ধণেহপি স্থানে ॥ ৪ ॥

নমু শাঘলমেৰ কুতন্তাং তত্তাহ অগাধেতি। অগাধানি তোয়ানি যাসাং তাসাং ইদিনীনাং তটপ্পৰিভিক্তিভিঃ পুলিনৈৰ্ভ্ৰৎ পুৰীষং পঞ্চো যস্যান্ত্ৰস্যা ভূৰো রসং শাঘলিতং শাঘলক্ৰপতাঞ্চ বিষৰছ্**ৰণা অপি স্থ্যুরশ্বমো ন গৃহতে ন হৰন্তি তদ্ধনং অ**বিশ্বিভাৱেৰোহয়য়া৫

বৈষ্ণবতোষণী।

মণ্ডপৈরিতি পাঠে তু কথঞিদেব দা যোজ্যা॥ ৩॥

যত্র চ বৃদ্ধাবনে স্বিদিত্যাদিনা বামোঃ স্থানৈত্যাদিকমুক্তং। অন্তমেকো দ্বাভাবে হেতুং। অতি শাবন ইতাক্তঃ। তথাচ খ্রীবিষ্ণু-পুরাণে। ততন্ত্রাতি রক্ষেহপি বর্মকালে দিজোত্তম। প্রার্ট্কালে ইবোডুতং নব শস্পং সমন্তত ইতি। দকার্মধ্য এব পাঠঃ। নজ্-শাদাত্তলচ্ ইতি স্থাতেঃ॥ ৪ ॥

কুতত্তদাহ অগাধেতি। অগাধতোরত্বন সদৈবোর্মীণামুদ্ধবং স্থোল্যঞ্চ স্থচিতং। উর্মিভিরিতি নিমিত্রং পুলিনৈবিত্যুপাদানং তত্ত্রগ্রহণ দ্বাং পুরীবং মূল্বস্যান্তদ্যা ইত্যর্থঃ। তীষর্থং গৌরাদৌ পঠনীয়ং। শাদ্ধলিতমিতি আচারার্থ কিবস্তাভাবে নিষ্ঠা। অন্যক্তোঃ। যথা। অগাধেত্যাদিকং পুলিনবিশেষণং। সমস্থত ইত্যস্য পরেণাধ্যঃ যত্র চ শ্রীকৃন্ধাবনে সর্ব্ব্রোপীত্যর্থঃ। হুদিনীনাং বাহুল্যাং॥ ৫॥

क्रयमन्छ।

উর্বিভিরিতি নিমিতং॥ ৪॥

পুলিনৈরিভাপাদানং। এবং সদার্ভং পুরীষং মৃদ্যতা স্ততাঃ শাধ্বিতমিত্যাচারার্থকিবস্তাভাবে নিষ্ঠা ॥৫॥

श्चितियनाथहळावडौँ।

সরিদাদীনামূর্দ্রে। যতন্তেনেতি শৈতাং। কহলারাদীনাং বেণূন্ হর্তুং নিঃশব্দ নালক্ষাত্য। চোরন্তিং শীলং বস্যেতি সৌগন্ধা নাল্যে দবস্তাপ:। অন্যত্ত নিদাঘো দাবানলভবস্তাপো ভবতি সোহত্ত নাজীত্যাহ। অতিশাদলে অতিকোমলহরিতত্থাকীর্ণে॥ ৪ ॥ অর্কভবতাপাভাবে পূর্দেরিক্রেমমগুলমণ্ডিতত্বমের হেত্বস্তি হেত্ত্তরমপ্যাহ। অগাধতোয়া ইদিনান্তাসাং তটম্পশিভিক্রির্মিভিদ্র্বিং সদৈবার্দ্ধং পূরীষং পদ্ধং সভাস্তথাভূতায়া ভূবো রসং ন গৃহতীত্যবয়:। গৌরাদিত্বাৎ ভীষ্। রসং কীদৃশং সমন্ততঃ পদ্ধিলাং পূলিনা

শাহলিতং শাহলগৃক্তীকৃতং। বিশ্বতো লুগিতি মতুপো লুক্॥ ৫॥

হিমাধি র্কামণ্ডলে মণ্ডিত হইল॥ ৩॥

অপিচ, ঐ সময় দরিৎ,সারোবর এবং প্রস্ত্রবণ সকলের তরঙ্গে সঙ্গত হইয়া কমল কহলার ও উৎপল রেণুহ্রণপূর্বিক প্রন বহ্মান হইল, অতএব স্থানসমূহ অত্যন্ত হ্রিছর্ণ ভূণে স্থাতিল না হইলেও অর্থাৎ উত্তপ্র স্থানেও ব্রজবাদিদিগের উপর গ্রীষ্মকালীন দিনকর অথবা অনল জনিত সন্তাপ হইল না॥৪॥

হে রাজন্! যে হানের নদী সকলে অগাধ জুল এবং সেই সকল জলের তরঙ্গ তটস্পর্শ করিয়া চলিত হওয়াতে পুলিন দারা ভূমির পঙ্ক নিরস্তর দ্রব হইতেছিল, অতএব তিথাংশু সূর্য্যের কিরণ বিষবৎ উল্লণ হইয়াও যে হানে রভূমির রস এবং শাদ্ধভাব অর্থাৎ শীতলত্ব হরণ করিতে সমর্থ হয় নাই॥ ৫॥

বনং কুস্থনিতং শ্রীমন্নদিত ত্র্গিষিজং। গায়মার্র ভ্রমরং কৃত্বৎ কোকিলসারসং॥
জীড়িষ্যমাণস্তৎ কৃষ্ণো ভগবান্ বলসংষ্তঃ। বেণুং বিরণয়ন্ গোপৈগোধনৈঃ সংর্তোহবিশৎ।
থ্রালবহ স্তবক প্রশাতৃক্ত ভূষণাঃ। কৃষ্ণরামাদয়ো গোপা নন্তু যুর্ধ্র্পগ্রঃ।
কৃষ্ণম্য নৃত্যতঃ কেচিজ্জ্ঞঃ কেচিদবাদয়ন্। বেণুপাণিদলৈঃ শ্কৈঃ প্রশাশংস্র্থাপরে।
গোপজাতিপ্রতিচ্ছনা দেবা গোপালরপিণং। ঈড়িরে কৃষ্ণরাম্ঞ্চ নটা ইব নটং নৃপ॥ ৬॥

टी धतवामी।

নৰভ°িচতা মৃগা ছিজা*ত যদিন্ গায়ভো মুখুবা ভ্ৰমবা*ত যদিন্ কু**লভঃ কোকিলা সাৱসা*ত** যদিন্ ভছনমবিশং ॥ ৬ ॥

বৈষ্ণবতোষণী।

পঞ্চকান্তরেব বনমিতি যুগাকং। শ্রীমবং স্বতঃ বিশেষতশ্চাহ কুস্থমিত্যাদিনা কুস্থমিতং প্রফুল্লাশেষপূশ্ব্যাপ্রমিত্যগং। গ্রীমেছপি বসস্তপ্তলৈ:। এবং দ্বিজ্ঞানানি ময়্রাদীনাং পৃথপ্তক্তিরনার্জ শ্রীণামপি সম্বলনং বোধয়তি। ক্রীড়িয়মাণং ক্রীড়িয়াদিলে ক্রীড়ামিলি ক্রীড়ামিলের ক্রিড়ামিলের ক্রিডার ক্রিড়ামিলের ক্রিড়ামিলের ক্রিড়ামিলের ক্রিড়ামিলের ক্রিড়ামিলের ক্রিড়ামিলের ক্রিড়ামিল

গোপা ইতি গোপকীড়ায়াং নিজাভীইছং স্পট্যন্ তত্র চ বামক্ষাদ্য ইতি প্রম্বিচ্বোংপি স্বস্য তদানীমনানির্কিশেষত্য। শ্রীবান-ক্ষরো গোপরফ্র্ডা ত্যোরপি তদাবেশাভিমানো সংমন্যমানস্তাদৃশকীড়ায়াঃ প্রমাতিপ্রমানশ্মমতং ঝঞিতবান্। অথ ত্রীলা-বেশাদিক্ষেব ব্যায়তি নন্ত্রিত্যাদিনা ॥

তত্ত্ব বৈদেশিক সোনিব নটবেশেন শ্রীদাঘদভায়াং সমাগতয়োঃ শ্রীকৃষ্ণবাময়োমুখাছেন প্রথমতঃ শ্রীকৃষ্ণস্য নৃত্যং বর্ণমতি শ্রীকৃষ্ণেতি ছালাং। অপরে শ্রীদামান্ত্রং সভাপত্তয়ং। অথ কার্ৎস্যেন সাধুসাধিবতি প্রশশংস্থা। এবমন্যতোছপি বিশিষ্টং তস্য নৃত্যকৌশল-মক্তং॥

ষ্প শ্রীদামাদীনাং সভাপতিভয়া নিবিষ্টানামগ্রতঃ সমুপার স্থিতানন্যায়টবেশান্ প্রশংসকানপি গোপান প্রশংসনীরশ্রীক্ষানি বৈশিষ্টার প্রশংসতি গোপেতি। দেবাঃ শ্রীক্ষণোগনপট্লাদৌ তত্ত্বপাদ্যবেন প্রসিদ্ধা ইতি সমানমহিমবং ব্যঞ্জিতঃ। তহি ক্থং তাদৃশমহিমব্দেন ন কৈশ্চিৎ প্রতীয়স্তে কথ্যা ভবস্তিঃ প্রতীয়স্তে তত্তাই দেবা স্বপি গোপন্সাত্যৈর প্রতিচ্ছয়া গুণাদিভিস্ত স্পটাঃ স্ববি-

• क्रममन्दर्धः।

প্রশংসনীরমহিমদ্যোতনার প্রশংসকান্ প্রশংসতি গোপেতি। গোপা: শ্রীক্তফোপাসনপটলাদে ত্রহুপাসাত্ত্বন প্রণিদ্ধান শ্রিদাস স্থামবস্থদামাদর:। ইতি সমানমহিমতং ব্যক্তিত। তহি কথং কৈশ্চিত্তাদৃশমহিমত্তেন ন তে প্রতীয়ত্তে কথং বা ভবত্তি: প্রতীয়ত্তে তত্ত্বাহ। দেবা অপি পোপদ্ধাত্ত্যের প্রতিচ্ছরা গুণাদিভিত্ত স্পষ্টা:। নত্ত্ব। তেয়াং গোপজাতিত্বং কুতত্ত্ত্তাহ গোপালক্ষপিণমিতি। নিত্য

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ষবর্তী।

গোপা ইতি। রামগাপি গোপাভিমানছাং ॥

কৃষ্ণস্ত নৃত্যত: কৃষ্ণে নৃত্যতি সভীত্যর্থ:। কৃষ্ণোশাসকৈ উকৈক কৃপাস্ত্যানাগমাদিসু তথা প্রসিদ্ধান্ত বেবা: কিন্তু গোপজাত্য প্রতিছ্যা ইতি। তেবাং দেবানামণি গোপজাতিত্মিত্যর্থ:। যথা। গোপজাতিরু কৃষ্ণসংধ্যু মধ্য এব প্রতিছ্যা নরবেশেন

অপিচ, যে বন সর্বপ্রকার কুন্ত্রপরিপূর্ণ এবং অতিশয় শোভায়্ক, আঁর যেখানে মুগ ও বিহস্কগণ বিচিত্র রব এবং এমর ও সমূরগণ স্থাধ্র গীত আর কোকিল ও সারসগণ অব্যক্ত ধ্বনি করিতেছিল, সেই বনে জুণিড়া করিবেন বলিয়া গোপ ও গোধনে পরিবৃত হইয়া ভগবান্ জ্রীকৃষ্ণ বলভদ্রের সহিত বেণুধ্বনি করিতেই প্রবেশ করিলেন। হে রাজন্! র্শাবনে প্রবিত ইইয়া রামকৃষ্ণ প্রভৃতি সমস্ত গোপ নবীন পত্র, ময়ূরপুছে, স্তবক এবং মাল্য তথা গৈরিক ধাতুতে বিভূষিত ইইয়া নৃত্য গীত এবং বাছ্যুদ্ধ করিয়া জ্রীড়া আরম্ভ করিলেন। যথন জ্রীকৃষ্ণ নৃত্য করেন তথন কতকগুলি গোপাল বাদ্য করে, কতিপয় বালক গান গায়, অপর গোপালের। বংশী, করতল ও শৃঙ্গ বাজাইয়া প্রশংসা করে। হে নৃপ!

ভামণৈর্লজ্ঞানঃ ক্ষেপৈরাক্ষোটনবিকর্ষণৈঃ। চিক্রীড়তুর্নিযুদ্ধেন কাকপক্ষধরো কচিৎ। ক্ষচিন্ন্ত্যংস্থ চান্যের গায়কো বাদকো স্বরং। শশংসতুর্মহারাজ সাধু সাধ্বিতি বাদিনো ॥ ৭॥ ক্ষচিন্ধিস্থঃ ক্ষতিং কুজ্ঞৈঃ ক্ষামলকর্ম্নিভিঃ। অস্পৃশ্যনেত্রবন্ধাদ্যৈঃ ক্ষিন্ন্গ থগেহয়া॥ ৮॥

श्रीभवामी।

কাৰপক্ষঃ চূড়াকরণাৎ প্রাক্তনাঃ কেশাঃ। প্রামণাদিতিঃ প্রকারৈর্নিযুদ্ধেন বাহযুদ্ধেন চিক্রীড়ডুং॥ ৭ ॥ কুল্ডে: কুন্তবুক্ষফলৈঃ অস্পূল্যং অস্পূল্যছং নেত্রবন্ধদ তদাদৈন্দ্রগাণাং থগানাঞ্চ চেষ্ট্রা॥ ৮ ॥

देवकवटलावनी ।

বেকিনাং যৎকিঞ্চিৎ সাধারণ্যেন ভ্রান্তি র্ডবিত নতু বিবেকিনাং প্রভ্যুত তাদৃশেন তাদৃশলীলোপিয়িক্ষেন পরমগুণাবিকারেণ চ চমৎকারাত্বিশ্ব এব স্যাদিতি ভাব: । নহ । তেবাং গোপজাভিদ্বনেব কৃতস্তরাহ গোপালরপিণমিতি । নিত্যযোগে মন্বর্ণীয়: । ততত্তদত্যক্তাভীইন্ধং তস্য রূপস্য দর্শয়িদ্বা তেবাং তদমূরপদ্মেবাম্বরপমিতি ধ্বনিতং । এবং সমানরপবেবন্ধক ব্যক্তং । সমানগুণদ্বক ব্যনক্তি নটা
ইবেতি । এবমন্যেদ্বি গুণেরু জ্বেরং । সভঃ সর্বধা তদেখাগ্যন্থাৎ দেবয়ি জীড়য়ি দেবা ইতিচ প্লেবাজিঃ । হে নৃপেতি নরোত্তমন্তেন
ভবতৈবেদং জ্বায়তে এবেতি ভাব: ॥ ৬ ॥

অথ নৃত্যকৌতৃকানত্তরং কৃতং বৃহকৌতৃকং বর্ণয়তি ভ্রামণৈরিতি অন্যোন্যহত্তগ্রহণাদিনা ভ্রামণৈ লক্ষ্টনঃ অধোনিপাত্যা-রোহণৈঃ ক্ষেটপঃ প্রতিলোমবিনোদনৈঃ আন্ফোটনৈঃ করতলেন ভূজমূলাঘাতেঃ বিকর্ধণেরাক্র্মণঃ নিযুদ্ধেন বাছ্যুদ্ধেন কাকপকঃ কেশগুন্ফিতবেশীঅয়মিতি কেচিৎ ॥

অথ নিযুদ্ধ শ্রমানস্তরং কৌতুকেন বরং নাট্যগুরুষমাণাভ্যাং গানাদিকমণি কুর্বন্ত্যাং শ্রীরামক্কাভ্যাং প্রশাসামানানাং অন্যেষানি নিপিন্তামাহ কচিদিতি। চকারঃ পূর্ব্বোক্ত শ্রীকৃক্ষনৃত্যাপেক্ষরা। সাধু সান্ধিতিবাদিনে সজৌ শশংসতৃঃ তওদগতিবিশেষং বিশিষ্য স্নাঘাং চক্রতৃঃ। এবং নির্ভরক্রীড়ারসো দর্শিতঃ। মহারাজ হে রাজবর্গমধ্যে শ্রীকৃক্ষক্তজিবিশেষেণ প্রমশ্রেষ্ঠিতি ভবানেবেদং শ্রোতৃমহ্তীতি ভাবঃ। এবং নৃত্যমিশ্রগানাম্সারেণ ক্রমপ্রাপ্তং তদমিশ্রগানমপ্র্যুম্বিতি প্রকরণাভিপ্রায়ঃ ॥ ৭॥

অন্যা অপি যুদ্ধাদি বিচিত্তলীলা: সংগৃহাতি কচিদিতি ত্রিকেণ। বিশ্বাদিভি: ক্বন্ধা যাঃ ক্রীড়ান্তাভিন্চেরতু: এবং লোকসিদ্ধাভিরন্যা-ভিশ্চ ক্রীড়াভিন্টেরতুরিত্যধয়: ॥ ৮ ॥

क्रमनवर्षः ।

বোগে মন্বৰ্ধীয়:। ততন্ত্ৰপত্যস্তাভীষ্টহং তক্ত রূপক্ত দর্শয়িত। তেবাং ভদমূরূপকং দর্শিতং ॥ ७ ॥ ७ ॥ ৮ ॥ ৯ ॥

बीविश्वनाश्वकवर्ती।

ন্তব নারদাদঘো ভক্তান্তল্লীলাম্বাদার্থনি ত্যর্থঃ। গোপালরূপিণমিতি নিত্যযোগে ইনি:॥ 🗢 ॥

আন্তোটনৈঃ ক্রতলেন ভূজমূলাঘাতৈঃ। নিযুদ্ধেন বাহ্যুদ্ধেন। কাকপকাণ্চ্ ড়াকরণাং প্রাক্তনাঃ কেশা ইতি স্বামিচরণাঃ। কেশ-গুল্ভিবেশীত্রমেতি কেচিং। ক্লাপ্রলাধ্বক্রালকা ইত্যান্যে॥ ৭॥

কচিবিবৈরিতি। নিকিপ্যমাণয়ো বিবফলয়ো: পরস্পরাবাতৈ:। এবং কুল্ডৈ: কুন্তবৃক্ষকলৈ:। অস্প্রাতি স্পর্শার অদিৎসাচিকীর্বাভ্যাং ক্রীড়া তক্ত স্পর্শকর্ত্ পর: স্পরিতিনাতি।
চিকীর্বাভ্যাং ক্রীড়া তক্ত স্পর্শকর্ত্ পরাজয়:। অলক্ষিতমেব পৃষ্ঠদেশমাসাদ্য পাশিতলাভ্যাং নেত্রবন্ধকং পরিচিনোতি।
চেৎ অয়: নচেৎ পরাজয়:। সর্বাক্ত ক্লুপরাক্সম্বোক্তিনিকং

দেবতা সকল গোপজাতির বেশে অবতীর্ণ হইয়াছিলেন, নটেরা যেমন নটের সেবা করে তাহার ন্যায়

সে যাতা হউক, কাকপক্ষ অর্থাৎ কেশগ্রবিত তিনটা বেণী ধারণ করিয়া বলরাফহরি ভাষণ, উলক্ষন, উৎক্ষেপণ, আক্ষোটন এবং আকর্ষণ ইত্যাদি বিবিধ কোতৃক তথা বাত্যুদ্ধ করিয়া কোনস্থানে জীড়া করিলেন, কোথাও অন্যান্য গোপ বালক নৃত্যে প্রস্তুত হইলে আপনারা তুইজনে গায়ক ও বাদক হইয়া সাধুবাদ প্রদানপূর্বক তাহাদের প্রশংসা করিলেন ॥ ৭॥

কোথাও বিশ্বফল দারা কোথাও কুম্বফল দারা, কোথাও অস্পৃশ্যত্ব ও নেত্রবন্ধত্ব ইত্যাদি ছল

कि कि पर्भू तक्षारिवि विरेधक्ष भहागरिकः । कपाछि श्रामालिकत्रां कि विष्णु भलीलयां ॥॥ ৯॥ এবং তৌ লোক দিছাভিঃ জীড়াভিশ্চের তুর্ব নে । নদ্য দ্রিজো শিকু প্লেষ্ কাননে মু সরং হা ৮০॥ পশ্ংশ্চার মতো গোপৈত্ত ছনে রামকৃষ্ণরোঃ । গোপর শী প্রলম্বোহণা দহর তাজিক হীর্ষ । তিছিদানপি দাশার্হো ভগবান্ সর্কাদশনঃ । অন্যাদত তৎস্থাং বধং তস্য বিচিত্ত মন্॥ ১১॥

শ্রীধরস্বামী

দৰ্বপ্লবৈ: মঙ্কপুতিভি:। ভলোণিকরা দোলালরনেন । নৃপাণামিব লীলয়া॥ ১॥

ननाः जजरः त्यानमः क्यानि ह এवू॥ ३०॥

চারমভো: সভো: তখনে তলিলেব বনে। তরোলিং বিরা॥ ১১॥

বৈক্ষবভোষণী ৷

উপহাসকৈ হাস্যজনকৈ বি চিত্রাস্করণাদিভি:। কচিদিভি ছিরাবর্তনীরং। নৃপচেট্রা গিরিশিলাসিংহাসনকোত্মসজ্ঞচামরাদি-পরিজ্ঞদম্পাঞ্জ্রপ্রঃসরস্বাদিম্যা॥ ৯॥

নলােহজনঃ জােণাশ্চাজিসন্ধরঃ কাঠাগারেহব্বাহিন্যাং শৈলসন্ধী চ যােবিভি। জােশী ন স্ত্রী মানভেদে জােণঃ কাকে কুপীপতে ইভি ত্রিকাওশেবাং। বনে শ্রীকুলাবনে কাননের ভদস্তর্গতেষ্ কাম্যকবনাদির। তত্র ভ্রোবিহারবেশবিশেবশ্চাক্তঃ শ্রীহরিবংশে। চারস্থেটা বির্দ্ধানি গােধনানি ভভাননাে। স্ফীভশস্পপ্রক্রচানি বীক্ষ্যমােণাে বনানি চ। খেলরতেটা প্রগার্ভৌ বিচিবত্তা চ পাদপান্। নামভিব্যাহরত্তা চ সবংসা গাঃ পরস্তপাে। নির্বােগপাশৈরাস্কৈঃ হন্ধাভ্যাং ভভলক্ষণে। বনমালা কুলােরন্থাে বালশ্লাবিবর্বভাে। স্বর্ণাঞ্জনবর্ণাভ্যাং অন্যোন্যসদৃশাব্রে। মহেক্রায়্ধসংসকেটা কুক্তভ্রাবিবাব্দে।। কুশাগ্রকুত্বমানাঞ্চ কর্ণপূরং মনােহরং। বনমার্গের্ কুর্মাণাে বন্যবেশধরাবুভাবিভি॥ ১০॥

এবনৈশ্ব্যবিশেষগর্জাং মধুরমধুরাং লৌকিকীং লীলামুক্ত্বাধুনা প্রীবলদেবছারা বিহিতাং প্রকটেশব্যাং অলৌকিকীমাহ পশ্নিত্যা-দিনা। যং কোহপি গোপত্তদিনে গৃহে তিন্ত তল্পীতার্থ: ॥

দাশাহ হিতি প্রলম্বকচান্রেত্যাদিনা বহুকুলকদনে মুখ্যতন্ত্রাদৌ নির্দিষ্টস্য প্রলম্বস্য বধেন বহুকুলছিতবিশেষাপেক্ষা । তছেদনে হেতু: সর্বাদর্শন: সর্বজ্ঞ: যতো ভগবান্। বিচিত্তন্ন বক্যমাণপ্রকারেণ বিচারন্ত্রন্য স্থাং স্থাং কর্ম চেষ্টামিতি যাবং ॥ ১১ ॥

ক্রমসক্ষর্ভ:।

জোণাশ্চান্তিসন্ধয়:। ছস্বাস্তত্বং বিচার্যাং। কাননেষু অন্তর্বনেষু ॥ ১০ ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ ১৩ ॥

विष्नाश्वाक्षावर्थी।

কদাচিৎ প্রাবণগুরুত্তীরামারভ্য **ওন্দোলিকরা দো**ান্দোলনেন নৃপচেষ্টরা দানঘট্টপ্রদেশে নৃপস্যের চেষ্টা ঘট্টকরজিম্বকরা ব্রজবালানিরোধস্তরা স্রেণাণ্টালিসন্ধর: ॥ ৮ ॥ ১০ ॥

চারয়তোঃ সভোঃ গোপরূপী যঃ কোহপি গোপত্তদিনে কিঞ্চিৎ কুত্যার্থং গৃহে স্থিতক্তক্রপধারী তারো র্জিছীর্যা । বিচিত্তরন্ অনেনৈব প্রকারেশেমং বাডিরিয়ারীতি চিত্তরা নিশ্চিয়ন্ ॥ ১১ ॥ ১২ ॥

করিয়া কেলি করিলেন, কোথাও বা মৃগপক্ষ্যাদির চেফা করত ক্রীড়ায় মুগ্ন হইলেন॥ ৮॥

কোথাও মণ্ডুকের ন্যায় উল্লুফ্ন, কোথাও নানাবিধ হাস্যপরিহাস,কোথাও দোলাবলম্বন, কোথাও নরপতিদিগের তুল্য লীলা ঘারা খেলা করিলেন ॥ ৯॥

তে রাজন্! এই প্রকারে রামকৃষ্ণ ছাইজনে লোকপ্রসিদ্ধ বিবিধ ক্রীড়া করত, রন্দাবনে নদী, পর্বত, গহার তথা কুঞ্জসমূহে এবং ক্রীড়াকাননে ও সরোবরে ক্রীড়া করিয়াছিলেন ॥ ১০॥

এক দিবস গোপগণের সহিত ছুইজনে পশুচারণ করিতেছেন, জ্বিষত সময়ে প্রলম্বাহ্তর গোপরূপী হুইরা তাঁহাদের ছুই জনকে হরণ করিবার মানসে ঐপনে আগমন করিল, যদিওভগবান জ্বীকৃষ্ণ ঐ অহ্বের অভিপ্রায় জানিতে পারিলেন তথাচ তাহার বিনাশবিষয়ে সঙ্কল্ল করিয়া তাহাকে স্থা বলিয়া গুইণ করিলেন ॥ ১১ ॥ তত্তোপহুয় গোপালান্ রুক্ষঃ প্রাহ বিহারবিং। হে গোপা বিহরিষ্যামো ছন্দীস্থূয় যথাযথং॥১২ ভত্ত চক্রুঃ পরিবৃঢ়ো গোপা রামজনার্দনো। কুক্ষণজ্ঞটিনঃ কেচিদাসন্ রামস্য চাপরে। আচেরু বি বিধাঃ ক্রীড়া বাফ্বাহকলক্ষণাঃ। যত্তারোহস্তি জেতারো বহুন্তি চ পরাজিতাঃ॥১০॥ বহুন্তো বাহ্যমানাশ্চ চারয়স্তশ্চ গোধনং। ভাণ্ডীরকং নাম বটং জ্বগাঃ কৃষ্ণপুরোগমাঃ॥

<u>ज</u>ीभतवागी

নথাযথং বয়োবলাদ্যস্কুত্রপং ছন্টীভূয ॥ ১২ ॥ পরিবৃঢ়ৌ নায়কৌ তত্র কেচন ক্লফসম্বাড়িন: ক্লফপক্ষীয়া: ॥ ১৩ ॥ বাহ্যমানা: পৃষ্ঠেনোহ্যমানা: ॥ ১৪ ॥

বৈষ্ণবুতোষণী।

ভত্র তম্বধে নিনিত্তে প্রকর্ষেণাই প্রলম্বস্যাপি মনোরমন্তাৎ বিহারবিৎ ষত্ত: স এব তত্র সর্ক্সতোইউক্স ইত্যর্থ: ॥ ১২ ॥
ব্যাপা ইতি সভ্যপি স্থাসামানো বর্গভেদেন তয়ো: পৃথক্ পৃথক্ তদিশেষবতাং তেষামসক্ষোচাতিশারবং ক্রীড়ারসায় বৈপরীত্যেন
পারিরটো চকু:। এবনেব চ তমোমিথি: প্রণমোহপি বিবৃত্ত: স্যাং। যথা হরিবংশোক্তজ্মক্রীড়ায়াং স্বস্থতাঃ প্রীবলরামপক্ষে তংস্তঃশ্চাত্মপক্ষে তেন হাতাঃ ততঃ প্রীদামাদয়ো রামসক্ষ্টিনো জাতাঃ। রামেতি রমণাভিপ্রায়েণ। জনার্দনেতি তত্তৎক্রীড়াভিঃ
ব্যানার্থপূর্কত্যা সর্ক্রের্যাচ্যমানস্থাভিপ্রায়েণ॥

বিবিধা: হরিণা ক্রীড়নাথাাদয়:। তথাচ বিষ্ণুপ্রাণে। হবিণা ক্রীড়নং নাম বালক্রীড়নকং ততঃ। প্রক্রীড়িতাহিতে সর্বে ছৌ দ্বৌ যুগপত্ৎপতন্ ইতি ॥ ১৩ ॥

বাহ্যানা উহ্যানাঃ স্কর্ত্রার তাওীরক্মিতি সংজ্ঞায়াং কন্। নাম প্রসিজৌ। সচ বর্ণিতঃ প্রীহরিবংশে। দদর্শ বিপুলোদগ্রশাথিনং শাথিনাং নবং। বিতং ধরণ্যাং মেঘাভং নিবিড়ং দলসঞ্চয়েঃ। গগনাদ্ধোত্থিতাকারং পবনাভোগকারিণং। নীলন্চিত্রাঙ্গবর্ধেশ্চ দেবিতং বহুডিঃ ধরণাঃ। ফলৈঃ প্রবালেন্দ ঘনেঃ দেব্রচাপধনোপমং। ভবনাকারবিটপং লভাপুশস্ক্ষণিওতং। বিশালম্লাবনতং পবনাজ্যাদ্ধারিণং। আধিপত্যমিবানোয়াং তদ্য দেশস্য শাথিনাং। কুর্বাণং ভতকর্মাণং তিরোবর্ধমনাতপং। ন্যগ্রোধং পর্বতাগ্রভং ভাগিরং নাম নামত ইতি। তত্র গমনং নিদাবকীড়োচিত্যাৎ॥

ক্রমসন্পর্ভ:।

वांस्माना উरुमानाः ॥ ১८ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ २०॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

भविवृत्ति नावत्को कृष्णमा मध्वत्वे। पृथछकाजाः भ

কিন্তু বাহ্বাহকলক্ষণাঃ। অস্তার্থং বির্ণোতি বত্তেতি। পিহিতফ্লাদিজ্ঞানবস্তো জেতারং আরোহস্তি তদজ্ঞানবস্তঃ প্রাদ্বিতা বহস্তি॥ ১৩॥

ভা গীরকং বটং জগ্মুবিতি স এব বটো হবরোহণছানক্ষিত ইত্যর্থ:। তথৈবারোহণছলমপি তৎসমীপবর্তি চ্ছেন্নং ॥ ১৪ ॥

তদনস্তর বিহারবিজ্ঞ শ্রীকৃষ্ণ সেই স্থানে গোপালকদিগকে স্বাহ্বান করিয়া এই বাক্য বলিলেন, স্বাহ্বে গোপগণ! আইদ স্বামরা বয়স্ও বল ইত্যাদির স্বস্পারে দ্বীস্ত্ত(মুগ্ম)হইয়া ক্রীড়া করি ॥১২

এতৎ প্রবণে গোপগণ সেই স্থানেই রামক্ষণকে নায়ক স্বর্থাৎ ক্রীড়ার অধ্যক্ষ করিল, পরে কতক গুলি বালক ক্ষেত্র পক্ষ হইল এবং অন্য কতকগুলি বালক বলদেবের পক্ষ আপ্রয় করিল। তাহার পর বাহ ও বাহক রূপ বিবিধ ক্রীড়া আরম্ভ হইল। হে, রাজন্। সেই দকল ক্রীড়ায় যাহারা জয়ী হইল, তাহারা বাহ্য হইয়া এক ২ জনকে বাহক করিয়া তত্ত্পরি আরোহণ, আর পরাজিত ব্যক্তির। বাহক হইয়া রহন করিতে লাগিল॥ ১০॥

এই প্রকারে শ্রীকৃষ্ণাদি গোপালগণ পরস্পর বাহক এবং বাছ হইয়া গোচারণ করিতে২ ভাতীরক

রামসজ্ঞান্তিনা যহি প্রীদামর্ষভাদয়:। ক্রীড়ায়াং জয়িনস্তাংস্তানুছঃ রুঞ্চাদয়ে। নূপ॥
উবাহ কুফো ভগবান্ প্রীদামানং পরাজিতঃ। রুষভং ভদ্রদেনশ্চ প্রলম্বো রোহণীস্কৃতং॥ ১৪॥
অবিষহং মন্যমানঃ রুফঃ দানবপুঙ্গবঃ। বহন্ ক্রুতত্তরং প্রাগাদবরোহণতঃ পরং॥ ১৫॥
তমুদ্ধন্ ধ্রণিধয়েক্রগৌরবং মহাস্করো বিগতরয়ো নিজং বপুঃ।

শ্ৰীধৰস্বামী

ক্বফ্রদৃষ্টিবঞ্লার অবক্রছতেহন্মিরিতি অবরোহণং মর্যাদা ততঃ পরং দ্রমগাং ॥ ১৫ ॥

ধবণিধরে দ্রবং গৌরবং যদ্য তং নিজং আহ্বং বপুরান্থিতঃ। পুরটপরিচ্ছনঃ স্বর্ণালভাবঃ। তড়িদ্যুমান বিহাদীপ্রিমান্। ইত্যালভাবোপমা। উভূপতিবাড়িতি রামোপমা। উভূপতিং বহতীতি উভ্পতিবাট্। যদি যথোচিতভানের ছিলা বিহাতে ভবিষ

देवक्कवरजायनी ।

पर्वि (य य श्रीमानवृष्ठामयः क्रीकांशाः अधिता वकृत्त्ववि जाः खान् कृषामय खेरुतिजाययः ॥

ভগবানিতি মুখাকং যো ভগবান্ সোহত্বাকং ব্ৰুবাসিভিঃ প্রাঞ্জিত ইতি নর্ম চ ব্যঞ্জিতং। রোহিণ্যাঃ প্তমিতি তেন ডংগ্রহাবা-জ্ঞানস্যাপেক্ষা ॥ ১৪॥

নহ তপাপি কংসদা দ্থানিং শ্রীক্কাং হর্ত কথমরং নাচেইত ইত্যাহ অবিসন্থমিতি। শ্রীরামন্বারা নাররিত্ব শ্রীক্ষেন তত্ত্ব-আর্ত্য বতেজস আবিদ্ধতে:। অতএব কৃষ্ণপন্ধীরো ভূষা বলদেবং বহন্ সন্ যতো দানবের পুষ্পবং বলাদিনাতিশ্রেষ্ঠঃ অবরোধণতঃ ভাতীরস্কারণ তথাচ শ্রীবিষ্ণপ্রাণে।তে বাহয়স্তব্ন্যানাং ভাতীরস্ক্রমেত্য বৈ। পুননিবর্তিতাঃ সর্ব্ধে যে যে পূর্পং প্রাফ্রিডাঃ। স্কর্ষ্পক্ত স্ক্রেন শীল্লমুংক্ষিপ্য দানবং! ন তত্ত্বী প্রজ্ঞানৈব স্ক্রেইব বারিদ ইতি॥ ১৫॥

ধরণিধবেক্ত: স্থানকত্তস্থাদণি গৌরবং ভারো ষদ্য দীমাতিক্রনে জাতে বিহৃদ্য বিশ্বিত্য বিশ্বয় চ ক্রমেণ ভাগাতিবেক প্রকটনাং উৎ উচ্চৈ: স্থান বৃহদ্ধিতার্থ: দ মহাস্থারোহণি অতএব নিজমাস্থারং বপুরান্থিত:। তথাচ তবৈর । অধহন্ রোহিশেষদ্য দ ভাবং দানবো

श्चीविषनाथठकवर्त्ती।

কৃষ্ণনবিষ্যং মনামান ইত্যত এব রামং হর্তুমনাঃ কৃষ্ণাকীরো হতুদিতি ভাবঃ। স্পনকরতে হান্দিভানবোহণং ন্যাদিছিলং। কৃষ্ণবৃত্তিব্যানায় ভতঃ প্রমণি প্রাগাং॥ ১৫॥

ভং উংকটবলভারেব বহন্। যতো ধরণিধরেশ্র: স্থমেকঃ ভবং গৌরবং স্বস্ম তং। তাস সীমাভিত্রিকগ্রনদর্শনেন বিশ্বিত্য স্ভাবাধিক্যপ্রকটনাং। ততাত বোচুম্সামর্থাদেব বিগতবেগঃ। ততাত তেন বপুষা স্বম্বাপবাক্ষং অমহাস্থাপকা স নিজঃ বপু-রান্থিতঃ বডৌ পুবটপরিচ্ছেদ স্বর্ধাল্লারবান্ অধ্বত্তিভিদ্যুতিহামান্ উডুপতিং বহতীতি যঃ। অলাস্বস্যাধ্দ উপ্যা অধ্যক্ষার্ম্য

নামক বিখ্যাত বনদন্ধিনে গিয়া উপনীত ছইলেন। হে রাজন! বলদেবের পক্ষীয শ্রীদাম ও রুষভাদি বালকগণ যথন জ্রীড়ায় জ্বন্নী হইত তথন শ্রীকৃষ্ণ প্রভৃতি গোপালগণ তাহুদিগকে পৃঠে করিন্না বহন করিতেন। একবার ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ পরাজিক হইনা শ্রীদামকে এবং ভদ্রবিন বুমভকে আর প্রালখান্ত্র রোহিশ্বনন্দনকে পৃঠে করিয়া বহন করিতেছিল ॥ ১৪॥

এই সময় দানববর প্রলম্ব শ্রীকৃষ্ণকে স্বদহ্য মনে করিয়া তাঁছার দৃষ্টি পরিহার বাসনায় (শ্রীকৃষ্ণ যাহাতে স্বামাকে দেখিতেও না পায়েন এই জ্ঞানে) মলদেবকে লইয়া দূরে গমন করিল। ১৫।

হে রাজন্। বলভদ্র শ্রমেরূপর্বতিসদৃশ অতিশয় গুরু,ষ্ঠাহাকে বহন করাতে মহাস্থর প্রলম্বের শের বিগত হইল। অতএব সে খীয় আস্করিক কলেবর অবলমন করিল এবং স্থবর্গে অলঙ্গত হইলা, মদি মধোচিত স্থানে স্থিরবিত্যুৎ ও উপরে উড়ুপতি চন্দ্র থাকেন তাহ। সুইলে বালিধরের মন্দ্রপ শোভা স আস্থিতঃ পুরটপরিচ্ছদো বভৌ তড়িদ্যুমানুড়ুপতিবাড়িবাসুদঃ ॥ ১৬॥
নিরীক্ষ্য তদ্বপুরলমন্বরে চরৎ প্রদীপ্ত দৃগ্তুকুটিতটোগ্রদং ষ্ট্রকং।
জলচ্ছিখং কটককিরীটকুগুলজিষাদ্ধুতং হলধর ঈষদক্রসং ॥ ১৭॥
অথাগতস্মৃতিরভয়ো রিপুং বলো বিহায় সার্থমিব হরস্তমাত্মনঃ।
ক্ষাহনচ্ছিরিস দৃঢ়েন মুষ্টিনা স্থরাধিপো গিরিমিব বজ্ররহংসা॥ ১৮॥

শ্রীধরস্বামী

উপরি চোড়ুপতিস্তদা দোহমুদো যথা ভাতি তম্বভাবিত্যর্থ:॥ ১৬॥

অলং অতিবেগেন প্ৰদীপ্তে দৃশৌ যশ্নিত্ত জকুটিতটসংলগ্না উগ্ৰাদংখ্ৰী যশ্বিন্তং প্ৰদীপ্তা দৃক্ জকুটিতটং যশ্বিন্ উপ্ৰাদংখ্ৰী যশিন্তক্ত তচেতি বা। জলস্তা: শিখা: কেশা যশ্বিন্তং ॥ ১৭ ॥

ষ্মাগতস্থতিরতয় ইব। আত্মনঃ সার্থং গোপসমূহং বিহায় হরস্তং রিপুং অহনং। অথবা বিহায়দা আকাশমার্গেণ আত্মনঃ প্রাপ্তং অর্থমিব হরস্তং। বক্সবংসা বক্সবেগেন মৃষ্টিনা॥ ১৮॥

বৈঞ্চবতোষণী।

ভন:। বরুধে স্থমহাকায়: প্রারুষীব বলাহক ইতি॥ ১৬॥

ঈবদত্রসং বাল্যক্রীড়াবেশেনেতি পূর্ব্ব পূর্ব্ববং॥ ১৭॥

অথানস্তর্মিতি কিমরং মাহবো ভাবো ব্যক্তমেবাবলখ্যতে। সর্পাত্মন্ সর্পগুহানাং গুহুগুহুগুহুগুনা প্রেত্যাদিকাং ঐ বিফুপুরা-পাছ্যকাতং প্রতি ঐ ক্ষণ্য বচনাৎ সদ্য এবাগতা ত্মতি দৈ ত্যিবধার্থনিজাবতারপ্রয়োজনত্মরণং যুস্য সং। বলো মৃষ্টিনা রিপুমহনৎ অহন্ কং কেন ক্মিব স্থ্যাধিপো বজ্বহংসা গিরিমিব ॥ ১৮॥

बीविचनाषठकवर्ती।

তড়িদ্যুতিঃ বলদেবস্যোজ্পতিঃ॥ ১৬॥

অলমতিবেগেন প্রদীপ্তে দৃশৌ যত্মিন্ ক্রকুটিতটদংলগা উগ্রা দংখ্রী যত্মিংস্তচ্চ তচ তৎ। বপুনিরীক্ষ্য ঈষদত্রসদিতি দাকাং প্রমাত্মনেহিপি তদ্য তাদোহয়ং ডলৈখব্যজ্ঞানস্য ক্ষেটেনৰ অযোগমান্ত্র্যা আবরণাং। ডল্লাছ্দাকারমন্ত্রবপুরেতত্ত্যা। বৰ্জতাং যথা মদগ্রজ ৰপুশ্চক্রপ্রদেশ এবোত্তিটেদিতি ক্ষণস্য কৌতুক দিদ্দৈক কারণং ডদৈখব্যজ্ঞানানাবরণেতু অন্তর্বপুং প্রাকট্যারস্ত এব নায়ং। গোপঃ কিছন্তর এবেতি বিছ্বা ব্লদেবেন সদ্যন্তৰ্ধে তৎ কৌতুকং ন সিন্ধোদিতি ক্রেয়ং॥ ১৭ ॥

লকাভীষ্ট: ক্লঞ্চ: সাগ্রজে বিভাতি সতি তত্র প্নরৈশ্যাজ্ঞানং সহসৈবার্পরামাসেত্যাহ অথ আগত শ্বতিরিতি কিমরং মানুষো ভাবো ব্যক্তমেবাবলম্বাতে সর্বায়ন্ সর্বাগুহানাং গুহুগুহুগানা হয়েতি বিষ্ণুপ্রাণোক্তক্ষ্ণবাক্যালকনিকৈশ্ব্যজ্ঞান:। বিহারসা আকাশ-মার্গে। আজুন: প্রাপ্তমর্থং ধনং হরস্তমিব রিপুং মৃষ্টিনা অহনং। ক: কেন ক্মিব স্থ্রাধিপো ব্যক্তরংহ্সা গিরিমিব॥ ১৮॥

হয় তদ্ধপ শোভা পাইতে লাগিল॥ ১৬॥

তাহার দৃষ্টি সমধিক দীপ্তি⁴ালিনী হইয়া উগ্রদংখ্রা ও ক্রক্টিতটে সংলগ্না হইল, আর মন্তকের কেশ-কলাপ জ্বল্ড অনলশিখার সদৃশ্দীপ্তি পাইতে থাকিল, বিশেষতঃ কিরীট এবং কুগুলাদি-ভূষণের জ্যোতিতে অন্তুত হ্যাতিমান্ হইয়া উঠিল। অতএব ঐ অম্বরচারি কলেবর অবলোকন করিয়া হলধর দ্বাধ এক্ত অর্থাৎ কিঞাং ভীত হইলেন॥ ১৭॥ •

পরস্তা, তৎপরেই তাহার স্মৃতি অপগত হুইল, অতএব সভয় হইয়া সমভিব্যাহারি গোপগণকে পরিত্যাগপূর্বক আত্মাপহারি সেই রিপুর মস্তকে ক্রোধে এমনই দৃঢ়তর মুষ্টিপ্রহার আরম্ভ করিলেন, যেমন দেবরাজ ইন্দ্র বক্রবেগ মুষ্টি দারা পর্বতোপরি আঘাত করিয়াছিলেন ॥১৮॥

শ আহতঃ দপদি বিশীর্ণমন্তকো মুধাদমন্ধিরমপক্ষতোহহুরঃ।
মহারবং ব্যন্তরপতৎ সমীরয়ন্ গিরির্থা মঘবত আয়ুধাহতঃ।

দৃষ্ট্য প্রলম্বং নিহতং বলেন বলশালিনা। গোপাঃ স্থবিশ্বিতা মাসন্ সাধ্ সাধ্বিতি বাদিনঃ ॥১৯ আশিবোহভিগ্ণস্ততং প্রশশংস্ক স্তদর্হণং। প্রত্যাগতমিবালিদ্য প্রেমবিজ্ঞলচেত্সঃ।

পাপে প্রলম্বে নিহতে দেবাঃ প্রমনির্বতাঃ। অভ্যবর্ষন্ বলং মাল্যেঃ শশংস্কঃ সাধুসাধ্বিতি ॥২০
॥ * ॥ ইতি শ্রীভাগবতে মৃহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং দশমক্ষকে প্রলম্ববদো নামান্টাদশোহধ্যায়ঃ॥ * ॥ ১৮ ॥ * ॥

ञिकायामी।

অপস্ত: পতস্তি: মহাববং স্মীরগুন্॥ ১৯॥ তদহ'বং প্রশংসাহ'ং॥ ২০॥

॥ * ॥ इें छि मन्द्र रहीमनः ॥ • ॥

বৈষ্ণবজোষণী।

অপন্ত ইতি অপন্ধার ব্যাধিনেবাতিব্যাকুলঃ সন্নিত্যর্থ: ॥

বলশালিনেতি তংগ্রন্থতিবলবিশেষাভিব্যক্তে:। তথাচ গ্রীহরিবংশে। বলস্ক বলদেৰস্য তদা ভূবি জনা বিছং। প্রণাধে নিহতে দৈত্যে দেবৈরপি হ্রাসদ ইতি। স্থবিশ্বতা: সস্কঃ ভৎকপটগোপ্বেশাদিনা॥ ১৯॥

আশিষ ইথং চিরং সামুদ্ধ: অথং বিহরমুদ্ধান্ পাহীত্যাদি প্রকারা:। অতি অভিতঃ তত্ত তত্ত্ব সর্বাক্তির হেতু: প্রেমেতি॥

ন কেবলং তএব সম্বন্ধী বভূব্ং দেবা অপি প্রমানন্দং প্রাপ্তা ইত্যাহ পাপ ইতি। প্রমন্ত্রে অগছণজাবক ইত্যথা। নিতবাং হতে অপুনরার্ত্তিমুক্তিপ্রাপ্তো। তথাচ দিতীয়ন্ধনে। যে চ প্রলন্ধ ধর দছর কেশ্যরিষ্ট মন্ত্রেভ কংস ববনাং কুজ পৌ গুলাদাা:। অন্যে চ শাব কপি বন্ধন দত্তবক্ত সপ্তোক্ষ সম্বন্ধ কিদ্রুথ কল্মিম্থাাঃ। যে বা মুধে সমিতিশালিন আত্তাপাং কাম্মেজ মংস্য কুক্ত ক্তঞ্জয় কেকমাদ্যাং। যাস্যস্তাদর্শন্মলং বলপার্থভীম ব্যাজাহ্বয়েন হরিণা নিলম্বং তদীয়মিতি। অত্র কেচিদ্মলদর্শনো প্রক্ষায়ম্প্রাদি কেচিত্তমিল্নামিতি বিবেচনীয়ে॥ ২০॥

॥ 🛎 ॥ । ইতি শ্রীবৈষ্ণবতোষণ্যাং দশ্মটিপ্পন্যামপ্রাদশঃ ॥ 🛎 ॥

ক্রমন্ত:।

॥ 🛊 ॥ ইতি ক্রমননতে দশমেহটাদশ: ॥ 🛊 ॥

শীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

অপস্তঃ গৃতস্তিঃ অপসারবাধিগ্রস্ত ইবেতার্থঃ। মহারবং সমীরয়ন্॥ ১৯॥ তদ্হ ণিং প্রশংসাহ (।। ২০॥

॥ * ॥ ইতি সারার্থদর্শিনাং হর্ষিণ্যাং ভক্তেতসাং। দশ্যেষ্টাদশোষ্থায়ঃ সঙ্গতঃ সভতঃ সভাং॥ * ॥

হে রাজন্ ! আহত হইবামাত্র তৎক্ষণাৎ ঐ অস্ত্র বিশীর্ণশিরা হইল এবং স্মৃতি অপগত হওয়াতে শোণিত বমন করিতে ২ চীৎকার করিয়া প্রাণ বিয়োগানন্তর, যেমন দ্বেরাজের বজে আহত হইয়া পর্বত পতিত হয় তজ্ঞাপে পতিত হইল। যাহা হউক, বলশালি বলদেবকর্তৃক প্রদম্ব নিহত হইলে গোপগণ তাহা দেখিয়া সাধ্বাদ করত যারপর নাই আশ্চর্যান্বিত হইল॥১৯॥

এবং আশীর্কাদবাক্য উচ্চারণ করিতে ২ প্রশংসার্হ ঐ মহাত্মার যথেউ প্রতিষ্ঠা করিতে লাগিল। অপর মরণানস্তর পুনঃ প্রত্যাগত ব্যক্তির ন্যায় তাঁহাকে পুনরায় প্রাপ্ত হইয়া আলিঙ্গনপূর্কক প্রেনবেশ বিহলচিত্ত হইলে দেবগণও পরম স্বন্ধ হইয়া বলদেবের উপর মাল্যবর্ষণ করিলেন এবং সাধু ২ বলিয়া বারতার প্রশংসা করিতে লাগিলেন॥ ২০॥

॥ ०॥ ইতি দশমে व्यक्कोप्तभ ॥ ०॥

বাদরায়ণিক্রবাচ॥

ক্রীড়াসক্তের গোপের তলাবো দ্রচারিণীঃ। বৈরং চরস্ত্যো বিবিশুস্তৃণলোভেন গহরে:॥১॥ অজা গাবো মহিষ্যশ্চ নির্বিশন্ত্যো বনাদনং। ঈষিকাটবীং নিবিবিশুঃ ক্রন্দস্ত্যো দাবতর্ষিতাঃ॥২ তেহপশ্যতঃ পশূন্ গোপাঃ কৃষ্ণরামাদয়ন্তদা। জাতাসুতাপা ন বিভূবি চিম্বন্তো গবাং গতিং॥ ৩

भिभवश्वामी।

ঊনবিংশে নিবিইস্ত গোলগোকুলমচ্যতং। মুঞ্বিণ্যমরণ্যামে ররক্তরিপানতঃ ॥ ० ॥ দূব্চারিণীঃ দূরচারিণ্যং ॥ ১ ॥

বনাঘনাপ্তরং নির্বিশত্যো দাবেন তর্ধিতাস্থ্যিতাঃ ক্রন্সস্তঃ ঈষিকাটবীং অত্যচ্ছ্রিতঘনতৃণ্বিশেষারণ্যং নিবিবিশুঃ ॥ ২ ॥ কুফুর্বান্সে আদী যেযাং তে নতু তৌ॥ ৩॥

বৈষ্ণবজোষণী :

প্রদাসায়োকি কথেংপানৌকিকীনেবান্যাং লীলাং ক্রমপ্রাপ্তামেবাহ ক্রীড়েত্যাদিনা। তেষাং বা তা অসংখ্যা গাব:। সমাসাস্তদাভাব আর্থ:। গহরঃ ছর্গমবনং তৃণলোভেনেতি শ্রীপ্রেলানন্দকর্ত্বকার্পানন্দাচ্চারপাবেশ:। ততগুলোভন্তেনেতি জ্রেয়ং। বজ্জীবিভস্ত নিথিলং ভগবান্ মৃকুন্দ ইত্যাদৌ তথা প্রসিদ্ধে:। শ্রীবুন্দাবনে যত কুর্তাপি মৃত্ত্বমাত্রেলােদরপূন্নপ্রাক্ত ॥ > ॥

ন কেবলং গাব এবানোহপি দর্ব্বে গশব ইত্যক্তপোষন্যায়েনাহ জন্ধা ইতি অজ্ঞানীনাং গমনে ষ্ণাপূর্ব্বং শৈল্লাপেক্ষা তৎক্রমেন নির্দেশ:। উমিকটিনীং প্রায়েষমুনাতীরপরিত্যক্ততদূরবর্ত্তি ক্লক্ষেকতজ্ঞাং। অতএব দাবেন অগ্নিসদৃশেন গ্রীম্মকালীনতাপেন তর্বিতা: তৃষং প্রাপিতা: অতএব ক্রন্ধন্তো বভূবু:॥ ২॥

ক্ষতি তৈ ব্যাখ্যাত্মেৰ তথাপি তয়ে: সাক্ষান্ত্ৰিমানয়োরপি গোপানাং পশ্দর্শনাদিকং তয়ে: কৌতুকপরভয়েতি জ্ঞেরং। যথা। ক্লফারামৌ আদৌ বর্ত্তেতে ধেষামিতি উভাবপি বনে ক্লেগ বিচিকার সমস্তত ইতিবদ্ধাবাদিক্ষেংময়লীলাবেশপক্ষে তদ্ধাব্দ স্থিজানঃ॥৩॥

क्रमम्बर्धः।

इक्कामानव रेंकि जला नमःविद्धानत्यन नीनात्वनः ॥ > ॥ २ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ৫ ॥

ঐবিশ্বনাপচক্রবর্তী।

উনবিংশে মুক্তিকান্ মুঞ্টিব্যাং দ্বান্লাং। রকন্ তাণ্ডীর্মাণ্য স্থান্ মুক্তাকান্ ব্যুধান্নিঃ ॥ • ॥ তত্তদনস্করং দ্রচারিণীঃ দূরচারিণাঃ ॥ ১ ॥

ঈষিকাণাং শরাথ্যভূণবিশেষাণামটবীং। দাবেন গ্রীম্ম স্থ্যাতপোথতাপেন। ভর্ষিতাঃ ভৃষ্ণাং প্রাণিতাঃ ॥ ২ ॥ জাতাযুতাপা ন বিহু ন বিবিহঃ। গোবিষয়ক প্রেইয়বাবুত জ্ঞানাঃ ॥ ৩ ॥

উনবিংশতি অধ্যায়ে শ্রীকৃষ্ণ কর্তৃক মুঞ্জারণ্যে প্রবিক্ত গোপ ও গোকুলদিগকে অরণ্যামি হইতে তৎপান দারা রক্ষাকরণ বর্ণন ॥

শুকদেব কহিলেন রাজন্। গোপাল সকল ক্রীড়াসক্ত হইয়া থাকিলে তাহাদের গো সকল দূরে গিয়া চরিতে আরম্ভ করিল এবং স্বেচ্ছাক্রমে চরিতে ২ তৃণলোভে গহরর মধ্যে প্রবিষ্ট হইল ॥ ১॥

অজা, গাড়ী ও মহিধীগণ এক বন হইতে অন্য বনে গমন করিয়া তৃণাহার করিতেছিল, হঠাৎ বনাগ্রি তাপে সন্তাপিত ও তৃষিত হওয়াতে চীৎকার করিতে ২ ঈ্যিকাট্রী মধ্যে নিবিষ্ট হইল ॥ ২ ॥

এ দিকে রামকৃষ্ণ প্রস্থৃতি গোপ বালকগণ পশুদিগকে দেখিতে না পাইয়া সমধিক সন্ততাপিত হইলেন, যে হেছু নানা প্রকারে অন্থেষণ করিয়াও সে সকল কোথায় গেল, জানিতে পারিলেন না ॥।॥।

তৃণৈস্তৎপুরদচ্ছিনৈর্গোপ্পদৈরক্ষিতৈর্গবাং। মার্গমন্বগমন্ সর্বেন মন্টা জীব্যা বিচেতসং॥ ৪॥
মুঞ্জাটব্যাং ভ্রমগর্ণ ক্রন্দমানং স্বগোধনং। সম্প্রাপ্য তৃষিতাঃ প্রাস্তাস্ততন্তে সংন্যবর্ত্তরন্।
তা আহুতা ভগবতা নেঘৃগন্তীরয়া গিরা। স্বনামাং নিনদং প্রুদ্ধা প্রতিনেজঃ প্রহর্ষিতাঃ॥ ৫॥
ততঃ সমন্তাদ্বধূমকেতুর্বদৃচ্ছয়াভূৎ ক্ষরকৃষনোকসাং।

मभीति जः माति शत्माखा पाला देक विताल निरामः खित अश्रमान् महान्।

শ্ৰীধবস্বামী

ভাসাং খুবৈদ ডিশ্চ ছিলৈজ্বৈ গোষ্পবৈঃ অভিতৈশ্চ জ্প্ৰদেশৈ জ্বৈৰ্মা গ্ৰাং মাৰ্গমন্থা নষ্টাজীব্যাঃ গ্ৰজীবিকাসাধনাঃ॥৪॥ মুঞ্চিব্যাপি বৈৰ॥ ৫॥

গোপানাং নাশহেতু ব্নিবহিং স্কৃতিং প্রাহ্রভূং সার্থিনা বায়ুন্ধ ৪ ৬ ৫

বৈষ্ণবতোষণী।

গোষ্পদৈর্গোভিঃ দেবিতৈম তিওঁঃ। যতোহদ্ধিতৈঃ তংখুরাদিভি লিখিতৈঃ। গোষ্পাদং দেবিতাদেবিতপ্রমাণেদ্বিতি শক্ষুতেবন্যত্র হুরভাবাং॥ ৪॥

সমাক্ সর্ধান্ধলার দিনৈক তৈবে প্রাপা। সমাক্ হয়া একী করণাদিনা নাবর্ত্তয়ন্ ততকু বিতা প্রাস্থানক বছলণ রিপ্রনণাদভবন্ ॥
সম্প্রাপ্যাত্মকং তংপ্রকাবং বদন্ প্রিগোপাল চ্ডামণিনা গোগোপদস্ভারণনাহ তা ইতি। মেঘগঞ্জীরয়েতারে মেঘপদ্দেন মেঘগজ্জিতিং
ল ভাতে সর্প্র তুগভীরশদ্য থলু ত্রদৃশ্যতলস্য গর্তম্য বিশেষণং ভবতি লক্ষণয়া তু তর্ত্ত্তলমণি বিশিন্তি তথা প্রিভো নাদশ্চ
প্রায়ে গুরুজ্বন্ গঞ্জীরতয়া উপচর্যাতে মেঘল্য নাদস্ত তহং গুরুঃ স্যাৎ তন্ত্রগতা গীশ্চ স্ববত্তা দৃশী স্যাদিতাভিপ্রেভাহে মেঘগভীরয়া
গিরেতি। ততশ্চ মেঘগভীবয়া গিরা বং স্বস্থ নাম তত্তারণং তেনাহুভাঃ স্তান্তংস্থানিং নিন্দং মধুরভারস্থরিথেবং লাল্য প্রভ্ বিভাঃ প্রস্থাঃ স্তাঃ প্রতিনেত্য প্রত্রেভয়া শবং চকুঃ ॥ ৫॥

ততস্ত্রিরের সময়েহভূহ উদ্ভূত: । যদৃদ্ধা অকলাং। অযমণি প্রালয়স্থঃ কশ্চিদৈতা ইতি । কেচিদাতঃ বৃদ্ধাননে দ্বনিষ্ণোং উদ্ধোল্যুকৈঃ উকাসদৃশক্ষিকৈঃ বিলেলিহানঃ বিশেষেণ গোলিহন্ দংদহ্মান ইত্যুৰ্থ: । যতো মহান্ ব্যাপকঃ ॥

जीविधनाशहळवडी।

ভাসাং গ্ৰাং খুবৈদ দ্বিক্তিক ছিলৈজ্বৈঃ গোপ্পদৈ নিজিত ভূপিদেইশশ্চ লক্ষিতং গ্ৰাং মাৰ্গং। নষ্টাঞ্চীব্যা বিগতজীবিক সোধনাঃ ॥ ৪ ॥ মুঞ্জাটব্যাং ভট্টেৰ শ্বৰনে সম্প্ৰাপ্য ভা গ্ৰাণ্যাঃ ন্যবৰ্ষমন্ প্যাবিভ্ৰামাস্থঃ ॥ ৫ ॥

সম্প্রাণ্যেত্যক্তং ৩ৎ কেন প্রকারেণেত্যাকাজনায়ামাহ রুফ ইতি। আয়োনং দর্শয়ন্ থা আছবয়ামাস। তা গবাদয়: ॥ ৬ ॥ তদেবং গোভি: সৃঙ্গতীভূর যদৈব তথনাগ্লিজনিতুনৈচ্ছংস্তদৈব তে দাবানলেনাগ্রিয়ন্তেত্যাহ তত ইতি। দ্বোবনং তৎসম্বনী ধুমকেতুরশ্বি:। যদৃদ্ধ্যা আন্মাক ইতায়ম্পি প্রলথ্যগংক্তিকৈতা ইত্যাহ্য। সাব্থিনা বায়ুনা। উত্থগৈরতিতীবৈক্সাকুঃ॥

পশুগণই গোপালদের জীবন সাধন, দেই পশু বিনষ্ট হওয়াতে সকলে অচেতন হইলেন এবং পশু-দের ধুর ও দশনে সংছিন্ন তৃণ তথা গোম্পদে অফিত ভূপ্রদেশ লক্ষ্য করিয়া তাহাদের পথ অনুসন্ধান করিতে আরম্ভ করিলেন ॥ ৪ ॥

অনেক স্কুপ পরে মুঞ্জাটবীর (শরবনের) মধ্যে জ্রন্টমার্গ হইয়া ক্রন্দনকারি গোধন সকল নয়নগোচর হইল অতএব যদিও আপনারা ত্ষিত ও প্রান্ত হইয়াছিলেন তথাচ তথা হইতে নির্ভ ইইলেন না। রাজন্! ভগবান সেই সকল গাভীর চিহ্ন পাইয়া যখন গন্তীর বাক্যে তাহাদিগকে সাহ্লান করেন ভৎকালে তাহারা স্থানামের ধ্বমি শুনিয়া সহর্ষে প্রতিধ্বনি করিয়াছিল ॥ ৫॥ •

় সে যাহা হউক, তদনন্তর বনবাসিদিগের ক্ষয়কারী মহান্দাবানল অনিলপ্রেরিত হইয়া ভয়ানক শিখাসঞ্চালনপূর্ব্যক স্থাবর ও জঙ্গমকে গ্রাস করিতে২ যদৃচ্ছাক্রমে চতুর্দিক্ হইতে উদ্ভূত হইল। চারি- তমাপতন্তং পরিতো দবাগিং গোপাঃ দগাবঃ প্রদমীক্ষ্য ভীতাঃ।
উচুশ্চ কৃষ্ণং সবলং প্রপন্ন। যথা হরিং মৃত্যুভয়ার্দিতা জনাঃ।
কৃষ্ণ কৃষ্ণ মহাবীগ্য হে রামামোঘবিক্রম। দাবাগ্রিনা দছমানান্ প্রপন্নাং প্রাতুমহ্ থঃ।
নূনং তথাস্কবাঃ কৃষ্ণ ন চাহ স্ত্যুবদাদিতুং। বয়ং হি স্ক্রধর্মজ্ঞ ছন্নাথাস্থৎপরায়ণাঃ।

देवक वरकावनी।

আপতত্তং বেগেনাগছতত্তং প্রদমীক্ষা অত্যুদ্ধটাং অহন্তরক্ষ বিচার্য্যেত্যর্থ: । অত্য প্রোপা গোপালনায় নিন্ত দে সাধারণা এব জীবানাদীনাত্ত তদক্ষদিআলিবদনাপেক্ষা নাজীতি। অতঃ প্রপন্ন দবসমীপাদাগম্য শর্লমাগতাঃ ভীতত্বে হেতুং স্থাবং গোভিঃ সহিতা ইতি গোরিয়ােরপ্সজ্জনিস্যেতি হ্রপ্রভাব আর্ষ:। গোপাশ্চ গাব ইতি পাঠে গাবশ্চেচ্রিত্যায়াতি তত্র ব্যুগ্রত্যারন্ত লাং তা অপ্যুচ্রিত্যায়াতি গাব ইতি পাঠে ল প্রসিদ্ধে। হরিমিতি তদৈয়েবৈশ্বর্যাংশে দৃষ্টান্তঃ। মৃত্যোমর্বণপরম্পরালক্ষণসংসারাৎ ভ্রেনাদিতা জনা ইতি সভ্যার্গ্র্যেকে দৃষ্টান্তঃ নতু মরণমাত্রত্তাগাংশে অতশ্চ কেবলং প্রভিগ্রহিয়েগত এব ভীতা ইতি পূর্বব্দোধ্যং তচ্চাগ্রে ব্যক্তং ভাবি॥

মহন্বীর্যাং প্রভাবো যদ্য ইভি অবিষহং মন্যনানঃ কৃষ্ণং দানবপুস্ব ইভি দৃষ্টরীত্যা প্রীকৃষ্ণং প্রতি সংঘাধনং। অমোদবিক্রমেতি প্রীবলদেবং প্রতি মহাদৈত্যস্য মৃষ্টিনৈকেটনৰ বধাং। অমিতেতি পাঠোহপি তথাভিপ্রায়াৎ এবং ত্রাণদামধ্যমুক্তং প্রপন্নান্ শ্রণাগতানিতি মহাভয়স্বভাবেন॥

এবং তৎকালোচিত্যাৎ প্রথমং ধাবেব প্রার্থ্য সেহবিশেষেণ প্রভাববিশেষামূভবেন চ শ্রীক্ষণ্ডমেব বিজ্ঞাপয়ন্তি। নৃন্মতি নিশ্চবে ব্যবাধবাস্থৎস্বক্ষমাত্রবস্তোহিপ। চকারোহপ্যর্থে। অবসাদিত্ব অবসমস্তাৎ সাদা যেষাং তে অবসাদাত্ত্বদাচরত্তি ইতি কিপ্ ততন্ত্রন্ ছংথিতজনবদাচরিত্ব অপি নাইন্তি কৃতন্ত্র দাবাগ্রিদাহমিত্যর্থ:। হি বিশেষে। বয়ন্ত ব্যলাথা ব্যদেকাশ্রমা ইত্যর্থ:। হি পাদপূর্বে হেতৌ বিশেষেপ্যবধারণে ইতি বিশ্ব:। কিঞা। ব্যবাধ পরং অন্তর্না যেষাং তে ব্যদেকনিষ্ঠা ইত্যর্থ:। অতত্ত্বপাদান্তং ত্যক্তব্রু ন শকুম ইতি ভাব:। দাবাগ্রিভয়েন গোভি: সমমেবাত্র ব্যমাগতা: আসাং জীবনমেব চাল্লাকং জীবনমিত্যের স্বরক্ষার্থং প্রার্থানহে ইতি স্বান্থভবন স্বয়ং জানাসি। অতো যথায়থং বিধ্নিস্থাতাভিপ্রেভাহাই স্বর্থব্যক্তিতি। হে স্বস্য চাল্লাকঞ্চ ধন্মস্যাভিক্তেভার্থ:॥

ক্ৰমসন্দৰ্ভ:।

জ্বান্ধবা জংসম্বন্ধনাত্ত বজোহপি। চকারোহপ্যথে। অবসাদিতুং অব সমস্তাং সাদে। যেষাং তদ্বদাচরিত্নপি। ততকেতি বিশেষেণ নিশান্য। নিশন্যযোগস্য ছুৰ্ঘটনায়া বীৰ্য্যং মাহাস্মাং দাবাগ্নেঃ সকাশাদাত্মনঃ ক্ষেমং রক্ষাহেতুং বীক্ষ্য তদীৰ্য্যস্যাগন্তক জং নির্স্যতি যোগমায়ায়া স্বাভাবিক্যা চিচ্ছক্যাস্ভাবিতং॥

এীবি খনাথচক্রবতী।

উচ্দেতি। অনেন সর্বত্র্গান্তি ইতি গর্গোজিমহন্মত্যেত্যর্থ:। গোপাশ্চাগান ইতি গোপা: স্থান ইতি গোপা: স্থান ইতি ক্রম: পাঠা:। তত্র স্থান ইতি গোপ্তিয়োরিত্যাদিনা হ্রতাভাব আর্য: ॥

অবসাণিত্ং অব সমস্তাৎ সালো বেষাং তে হবসাদাত্ত্বদাচরিতুমপি নাহ প্রীত্যাচার কিবস্তাত মুন্॥

দিকে দাবানল দর্শন করিয়া গো এবং গোপগণের যৎপরোনান্তি ভয় হইল এবং মানবগণ যেমন মৃত্যু ভয়ে পীড়িত হইয়া ভগবান হরির শরণাপদ্ধ হয়,তাহার ন্যায় সকলে বলভদ্রের সহিত প্রীক্ষের শরণাপদ্ধ হইয়া কহিছে লাগিল, হে কৃষ্ণ। হে কৃষ্ণ। হে মহাবীর্যা। হে রাম। হে অমোঘবিক্রন। আমরা দাবাগ্রিতে দহমান হইয়া শরণাপদ্ধ হইতেছি, আমাদিগকে পরিত্রাণ করিতে যোগ্য হও। হে কৃষ্ণ। এই সকল ব্যক্তি তোমার বান্ধব, ইহাদের অবসাদ হওয়া উচিত হয় না। হে স্ক্রধর্ণক্ত।

೨१৯

শ্ৰীশুক উবাচ॥

বচো নিশম্য ক্পণং বন্ধুনাং ভগবান্ হরি:। নিমীলয়ত মা ভৈষ্ট লোচনানীত্যভাষত ॥ ৬॥ তথেতি মীলিতাক্ষেরু ভগবানগ্রিমুল্লণং। শীজা মুখেন তান্ কুচ্ছাদেযাগাধীশো ব্যমোচয়ৎ ॥ ৭॥

ত্রীধরস্বামী

কুজুাৎ গৃহৰরপ্রবেশভূট্ শ্রমাদি জনিকাৎ তৎক্ষণমের ভাগ্রীরং নীয়া তানমোচ্যদিত্যর্থ:॥ १॥

देवभवरकावनी ।

সভাবত এব হরিঃ সর্বাহংথহঠা তত্রচ ভগবান্ ভক্তবাৎসন্যাদিনিজবিশেষগুণপ্রকটনপর:। তত্রাপি বন্ধুনাং যক্সিতং পরমানদন্দিতি ন্যাবেনালৈ কমিলালালৈ কমিলালালৈ কমিলালালৈ কমিলালালৈ কমিলালালৈ কমিলালালৈ ক্ষেত্র ক্ষেত্র বিজ্ঞান বন্ধতি বৃদ্ধা এতে মদেকবেহাক্রান্তিভি নিজকেমানপেক্ষয়াপি মৎক্ষেম্যর নিজকীবনতোহপ্যপ্রেক্তর। অতো ম্যামিপানং নিরীক্ষ্য মন্নিষ্ট-শক্ষয় সহসা দাবাগ্নিপ্রতাহ কিল প্রবিশেষ্ঃ। অতোহমুমেবালক্ষিত্যের পাস্যামীতি। কিঞা। অলক্ষিতং ক্রীড়ার্থং ভাতীরং তান্ক্রিং নেতুং তথোক্তং। নর্ভো প্রমকৌত্কিন্ লোচননিমীলনেন কথ্যথিপরিহারগুরাহ মাভৈষ্ট। রক্ষিতাশ্লীতি ভাবঃ॥ ৬॥

তথা এবমবিত্যথ : ইত্যেতহৃক্ । ইত্যথ :। নমু তাদৃশাগ্নি: শ্রীমুখেনাহোবত কথং পীতস্তরাহ যোগাধীশ: ছবিতেকৈয় মর্ঘ-বিশেবৈক স্বামী। তছেক্যা পানকগভূষতামিব গভমিতি ভাবঃ। বিশেবেণামোচয়ৎ ভাতীরপ্রাপণাৎ। মুখেন পানাভিপ্রায়ঃ প্রাগেবোদিইঃ॥ १॥

बीविधनाथठकवर्छी।

নিমীলয়তেতি তেষাম্মিপানদুশনানোচিত্যং তথৈবালকিতং ততঃ স্থানাতেষামতিশ্রাস্থানামতিসম্ব্রধানামলিকতমেবাতিত্বশীতল-স্ক্ষোষ্টাতীরতক্তলপ্রাপ্ণোচিত্তাক প্রামুশ্যেতি ভাবং। ন্যাহো কৌতুকিন্ লোচননিমীলনে কথ্মমিপরিহারস্করাহ মা তৈট্টেতি। ততে। হন্যথাদ্য ন ত্রাণহেতুবস্তীতি ভাবং॥ ৬॥

ভো বয়স্যাঃ বহ্নিবিধানীনামুপশ্যকং মণিমন্ত্রমহাধাদিকময়ং ক্লফো বহুতরং জানাতীতি তচ্চ বিবিক্তং বিনা ন সিদ্ধ্যেদতোহন্ত্র জনস্ত্রমট্ট অল্লাকং লোচননিমীলনমেব বিবিক্তমিত্যভিপ্রেতিতাবৈবং ক্রতে তথ্যং দৃঢ়তরমেব স্বস্থনেত্রে নিমীলগাম ইত্যুক্তা তে ন্যুনীলগ্ন বিত্যাহ তথেতি ভগবান্ নহৈখব্যশক্তিয়ক:। তীব্রমণি তং পীত্বেতি তৎপিপাসাগ্রাং জাতাগ্রাং ভদিছাপ্রতিক্লমাচরিত্রম্পমর্থ:। সোহধিরেব মহাবিত্যং সদ্য এব প্রমন্ত্রীত্রস্থাক্রমধ্ররস্থানকীভূম্ন তদীয়করক্মলতলে যদৈব গণ্ডু ম্মাত্রীবভূব তদৈব যোগাধীশো মুথেন পীত্রেতানেন তদীয়া যোগামাধ্যেব শক্তিঃ প্রকটিভূম্ন তদপ্যেতং স্মরতামন্ত্রাগার্জিভিভ্তকানাং হংসহ হংগপ্রদ্যান্ত্রকা তং করতলাদাছিল্য সৈব মুথেন পণাবিতি লভাতে যোগা যোগামাগ্র ভস্যা অধীশন্তান্তিরিহের তৎপানোপচারো হ্রুদিতি ভাবঃ। মহা। মুথেন উপায়েন পীত্রা কংগলি বিলিতা বিগা ঐশ্বর্যশক্তিরেবৈতি ভাবঃ। মুথংপ্রস্বনেবক্তে প্রার্ভ্তাপায়ম্বোবণীতি নেদিনী। কংজাং কংব্রপ্রবেশ্ইত প্রান্দিলনিতাং তংক্ষনেব ভাণ্ডারং নীয়া তানমোচ্যদিত্যর্থঃ। তত্ত্বত ভাগে স্থায়ে পতীকারো ম্যা ক্রতঃ সাম্প্রত্রকাণ্যাল্যতিত ক্লেনোক্তান্তেন পুন্রক্ষীগুন্মীল্য আত্মানং মোচিতং গাল্য মোচিতা নিশন্য জ্ঞান্বা বিশ্বিতা আদিনিভাব্যঃ। কীদুশাঃ ভাণ্ডীর্মাপিতা তেনৈবেতি স্ব্রত্র যোজ্যং ॥ ৭॥

আমরা তোমাকে আপনাদের নাথ এবং আপনীদের পরম আশ্রয় জানিয়া থাকি।

শুকদেব কহিলেন ভগবান্ হরি বন্ধুবর্গের ঐ রূপ কাতর্য্যপূর্ণবাক্য শ্রবণ করিয়া করুণাপ্রকাশ পুরঃ-সর কহিলেন ভয় নাই তোমরা নয়ন নিমীলন কর॥ ৬॥

রাজন । এতং প্রবণে 'গোপগণ তাহাই' করিতেছি বলিয়া নিমীলিতলোচন হুইলে যোগাধীশ্বর ভগবান্ সেই উল্লণ দাবানল আনন ছারা পান করিয়া নির্বাণ করিলেন। অনন্তর গোপদিগকে ভাণ্ডীর বনে আনিয়া গহারপ্রবেশ, পিপাসা ও প্রান্ত্যাদিজনিত ক্লেশ হুইতে পরিত্রাণ করিলেন ॥ ৭ ॥

ততশ্চ তেহক্ষীগুর্দ্দাল্য পুনর্ভাগ্ডীরমাপিতাঃ। নিশম্য বিশ্মিতা আসন্ধাত্মানং গাশ্চ মোচিতাঃ। ফ্রক্ষ্ম্য যোগবীর্যাং তদেযাগমায়ানুভাবিতং। দাবাগ্নেরাত্মনঃ ক্রেম্যং বীক্ষ্য তং মেনিরেহ্মরং। গাঃ সংনিবর্ত্ত্য সায়াক্তে সহ রামো জনার্দ্দনঃ। বেশুং বিরণয়ন্ গোষ্ঠমগান্গোপৈরভিষ্ঠুতঃ।

देवकवरकांबनी ।

ত ও পানানস্করণ নৃনং প্রীভগবছকা এবাক্ষণিয়নীল্যাত্মানং মোচিতং গাশ্চ মোচিত্বা নিশম্য নিশাম দৃষ্ট্য বিশ্বিতা আসন্।
ন কেবলং মোচিতাঃ পুনর্ভা গুননাপিতাশ্চ নিশাম্যেত্যের পাঠঃ কচিং। মোচিতাইত্যর্থবশাধিভক্তিবিপরিণামেনোভয়েরবরঃ।
ত ও প্রীরম্নাদিন্দিণ্ক্লে প্রীর্লাবনমধ্যে স্পানোইতি প্রাস্কিনিবালয়গ্রামতো বায়বাদিনি ভাগ্ডীর ইতি যঃ প্রসিদ্ধেহ্মাভিদৃষ্টিচরো মন্দ্রশা যংসম্বন্ধেনাদ্যাপি তয়ায় থ্যাতক্তংপ্রদেশে যমুনাঘ্টশ্চ বিস্পষ্টঃ স এব ভাগ্ডীরবটো জ্বেয়ঃ ভদ্দিলভঃ ক্রোশপঞ্চকং
বাবন্ধুঞাটনী চ তলিকটভঃ অলিবারেতি প্রসিদ্ধ গ্রামান্তে গ্রাহ্মা। তথা মধ্যে চাস্য মহাশাথো ন্যগ্রোধ ইত্যাদিনা প্রীক্রবিধংশে
প্রীর্লাবন এব ভাগ্ডীরস্য বর্ণনং। ভবিষয়োর্বের চ মল্লঘাদীপ্রসঙ্গে। ভাগীরে যো মলক্ষণী প্রীক্রফো নির্মাতক্তম্য তবৈর মহামল
ইতি প্রাসিদ্ধি। অতো বাহ্মদেবেতি প্রসিদ্ধা তন্দেবতা চ সৈব জ্বো। এবমেব বহস্তো বাহ্মমানাশ্চ চারমন্তশ্চ গোধনমিত্যক্তং
প্রীর্লাবনত আরক্ষায়া জীড়ায়া অবিচ্ছেদে সঙ্গছেত। অনন্তগ্রাদীনামুত্তারণিদিনা তদ্দিদ্ধে। এবং কিং বিশ্রামানি ক্ষডভোগিভবনে ভাগ্ডীরভূমীকহীত্যাদি প্রাচীনবৈষ্ণবক্ষনীনামপি মতমব্যাক্লং স্যাৎ ততশ্চ প্রীব্রাহোক্তং লোকে ভাগ্ডহবেতি থ্যাতং
ভাগ্ডহদাগ্যতীর্থমের যমুনায়া উত্তরক্লে জেয়ং॥

অথাপি তেষানিথং সতাং ব্রশ্নপ্রথাসূত্ত্যেত্যাদিয় সর্ব্ধেদিশাবিতশুদ্ধনৈত্তীসভাং তদাছোদকনৈ মর্য্যজ্ঞানং ন বভূব কিন্ত কথকিং প্রভাবজাননেবালায়তেত্যাহ। রুক্ষণ্য বোগনায় বাভাবিকাচিন্তা শক্তা অনুভাবিতং ব্যঞ্জিতং। বোগো হপূর্ব্বার্থদংপ্রাপ্তাবিতি
বিশ্বপ্রধাশাদপূর্ব্বার্থদন্তাপ্তিদন্দাদকং ব্যবিহং প্রভাবস্তবীক্ষ্য মন্ত্রা তং অনরং দেববিশেষং মেনিরে । কীদৃশং বীর্যাং দাবায়ে দ্বাশাদ্দাম্মন: কেনং নলগংহত্মিতি। ব্লা। ন বিশ্বতে মরো মরণং যন্ত্রান্তং এতদাশ্রমেণ মরণাদ্দি ন বিরংং প্রাক্ষ্যাম ইতি ভাবং।
জনার্দন ইতি ব্রহ্গন: সদা দুইং বাচ্যত ইত্যভিপ্রামেণ॥

ঐ বিশ্বনাথচক্রবর্তী।

তাদৃশৈষ্য্যদর্শনেহণি তেবাং বিশুদ্ধপ্রেমনৈত্রীমতাং তদাচ্ছাদকনৈষ্য্যজ্ঞানং অর্জুনাদীনামিব ন বভূবেত্যাহ। ক্ষুস্য যোগমায়া শক্ত্যা অর্জাবিতং জ্ঞাপিতং বোগবীর্য্যং। মোগোহপূর্ব্বার্থসম্প্রাপ্তি বিশ্বকোষাদপূর্ব্বার্থ সম্প্রাপকং বীর্যাং প্রভাবং। তৎ আত্মক্ষেণ বীক্ষ্য তং শ্রীকৃষ্ণং অমরং দেববিশেষং মেনিরে নতু তদণি এষাং সম্বন্ধার শিথিল্যগদ্ধোহণি জ্ঞেয়ং। যতঃ থব্যমন্মাকং স্থা মহ্যাশক্য কর্ম্বকরণাদেব এব ন মার্ষ ইতি ততকৈতং বধ্বাব্যমণি দেবা এবেত্যভূগ্যন্থে সংখ্যাসন্তবাদিত্যসূদায় আনন্দমতাত্তে বভূবু রিতি ভাবং॥

জনান্ বনস্থাবরছসমলোকান্ স্ববিরহং দিৎস্থ: পীড়মতি একস্থলনাংক স্বসন্ধাং দিৎস্কৃতং যাচয়তীতি সং #

হে মহারাজ। ক্ষণকাল মধ্যে ভাণ্ডীরবনে আনীত ইওয়াতে তাহার পর চক্ষু উদ্মীলন করিয়া গোপদিগের সাতিশয় বিশায় জন্মিল, যে হেছু আপনাদিগকে এবং গো সকলকে আপদ্ হইতে সর্কাতোভাবে মুক্ত দেখিতে পাইল। তাহারা শ্রীকৃষ্ণের অনির্বাচনীয় যোগবীর্য্য এবং যোগমায়ার অমুত অমুভাব তথা দাবানল হইতে আপনাদের ক্ষেম অবলোকন করিয়া তাঁহাকে অমর জ্ঞান করিতে লাগিলেন। সে যাহা হউক, ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ ঐ প্রকারে গোধনগণকে নির্ভ করিয়া সায়াহের বল-দেব সহ বংশীপ্রনি করিতে ২ আপনাদের গোঠে আসিলে গোপগণ তাঁহার স্তব করিল এবং গোপী-

গোপীনাং প্রমানন্দ আদীৎ গোবিন্দদর্শনে। ক্ষণং যুগশতমিব যাসাং যেন বিনাহভবৎ॥৮॥
॥ अः॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং দশমক্ষদ্ধে দাবায়িমোক্ষণং নাবৈদকোনবিংশোধ্যায়ঃ॥ ॥ ॥ ১৯॥ ॥ ।

डी धरवामो।

কণেনৈৰ ভাঞীৰং প্ৰাণিতাঃ তত"চ অকীবানীল্য বিশ্বিতাঃ। শ্ৰীদাৰাদি স্বগোপানাং স্বাঙ্গমার্জ্য হ্ৰাতাং। বৈশ্ব্যমাবিরক্ বোৰনবহিনিপানতঃ ॥৮॥

॥ * ॥ इेकि मन्द्रम छन्तिःनः ॥ * ॥

িবিংশে প্রার্ট্শরজেছাভাবর্ণনেন বনোচিতাঃ। প্রার্ট্কীড়া নিরপ্যস্তে গোপরামযুক্ষো হরেঃ॥ • ॥

देवकवट्याधनी।

শ্রীগোপানাং দাবায়িতো মোচনপূর্বকং স্বপ্রাপ্তিপরমানন্ধং যথা দদৌ তথা শ্রীগোপীনামপি বিরহায়িত্তংপূর্বকং তং দদাবিতি নিতামপি প্রভাবদাদ্শ্যন তদ্দিনলীলান্ত এবাহ গোপীনামিতি। পরমঃ পরাং কাষ্টামাপন্ন আনন্দ আসীং। কাষাং গোপীনাং তথাই কণ্মিতি। কৃটিলকুত্বলং শ্রীমৃথঞ্চ তে ইতি। ক্রটি যুগায়তে তামপশ্যতামিতি চ তাষামেব তাদৃশবচনশ্রবাং। যদশনে দৃশিষ্ পক্ষকতং শপদ্বীতি তা এবাদ্দিশ্য শ্রীমন্মনীক্রেণাপি সর্ব্বাতিশয়প্রেমদর্শনায় বর্ণিতত্বাং। তংপ্রেম্বনীক্রপাণামিতার্থঃ। কীদৃশং তস্তানন্দশ্ত পরমত্বং তথাপ্যাহ ক্রণমিতি। অক্ষরাভ্রান্যাগোচরত্বাং স্কর্মেপণ নির্দেষ্ট্রং ন শক্তাতে কিন্তু কথিকিং প্রতিযোগিমৃথেইনবেতি ভাবঃ। গোবিন্দদর্শন ইতি সপ্তমী নির্দেশক্রদাপি তাষাং নিমেষাদি ব্যবধানে পূর্ববং বিরহাবন্তবে দর্শিতা। ক্রণমিতি ন পুংসকত্বনার্বং। এবনয়মাসাং ভাবপ্রেমপ্রপ্রমানরাগান্তবাগমহাভাবাথ্যতম্বা সপ্তমকক্ষানাক্র্যায় রতেঃ পরীপাকঃ শ্রীসন্মন্ত্রজনবৈর্বিনিচিতোজ্ঞননীক্রমণ অবলোকনীয়ঃ॥ ৮॥

॥ * ॥ रेजि बीरेवकवरकांबन्ताः मममहिक्षनाम्निवःमः ॥ • ॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

॥ * ॥ ইতি দশমে ক্রমসম্পর্কে উনবিংশ: ॥ * ॥

শ্ৰীবিশ্বনাগঢক বত্তী।

গোষ্ঠ প্রবেশসন্যে ব্রজ্ঞ্বানাং সর্বেধানের তৎসঙ্গনাদানন্দে সত্যপি ব্যক্ত্রেধ্যাদীনাং প্রন্নবংসলানানান্দাধিক্যং চাহুদিশাধ্যায়ে বইপ্রস্থানেতাদিনা গোপীদৃগুৎস্বদৃশিং প্রবিবেশ গোষ্ঠমিতি পদ্যেন বণিত্যের অত ইদানীং প্রেয়দীনাং গোপীনানানন্দ্মাহ গোপীনামিতি। প্রন্মানন্দ ইতি মুক্তপ্রগ্রেয়া আনন্দ্যা জাতিপ্রমাণাভ্যামাধিক্যমাত্যন্তিক্ষেব নত্বাপেক্ষিকং জ্ঞেশং। নত্র কাল্যা গোপান্তদ্যাধারণলক্ষণেন পরিচায়রেত্যত আহ ক্ষণমিতি। ক্ষীব্রমাধং। যেন প্রক্রিক্ষেন বিনা ফুল্লাভমিবেতি ক্ষণ্যা ফুল্লামান্ত্রে রতিপ্রেম্বেহ্মানপ্রবাগ্যবাগ্যবাগান্ত্রো র্রাপ্রমান্ত্র ক্ষামান্ত্রে ক্রিক্সা নহাভাবিস্যা নহাভাবিস্যা লক্ষণমি হ্যজ্ঞলনীল্মণে দৃষ্ট্যক্ত্রা মহাভাবিত্যা বৃষ্টাম্বনিক্সীপ্রভূত্য এব জ্ঞেয়াঃ ॥ ৮॥

॥ * ॥ ইতি সারার্থদর্শিন্যাং হর্ষিণ্যাং ভক্তচেত্যাং। একোনবিংশো দশনে সঞ্জীতঃ সঙ্গতঃ সভাং॥ * ॥ উপনানেন বস্তুনামুপাদেয়ত্ত্যতে। বিংশে প্রার্ট্শরচেছাভাবণনে হদ্যোত্যসূনিঃ॥ • ॥

দিগের গোবিন্দদর্শনে পরম আনন্দ হইল, কারণ তদ্যতিরেকে তাঁহাদিগের পক্ষে কণকালও শত্যুগ তুল্য বোধ হইত॥ ৮॥

॥ ः ॥ ইতি দশ্যে ঊনরিংশ ॥ * ॥

বিংশ-কাধ্যায়ে বর্ষ। ও শরৎ গাতুর শোভা বর্ণন এবং গোপ ও বলদেব সহ ঞীক্ষের প্রার্ট্-কালীন ক্রীড়া বর্ণন ॥ ০ ॥ প্রীপ্তক উবাচ॥

তয়োস্তদত্তং কর্ম দাবামেনে ক্ষিমাত্মমঃ। পোপাঃ স্ত্রীভ্যঃ সমাচখ্যঃ প্রলম্ববধমেব চ।
গোপরদ্ধান্চ গোপ্যন্দ তত্তপাকর্ণ্য বিশ্মিতাঃ। মেনিরে দেবপ্রবর্গে কৃষ্ণরামৌ ব্রজং গতৌ॥১॥
ততঃ প্রাবর্তিত প্রার্ট্ সর্বসন্থ্যবা। বিদ্যোত্মানপরিধিবি ক্রিজিনভস্তলা॥২॥
সাজ্রনীলাস্ট্রেরেগ্য স্বিত্যুৎ স্তন্যিত্ন ভিঃ। শুস্পাইজ্যোতিরাচ্ছমং ব্রেশেব স্বগুণং বর্তো॥৩॥

बीधत्रवामी।

হেষাদেয়োপমানেন প্রার্ট শরদৃত্লিয়ো:। বর্ণনং বংকতৈখর্যক্রফলীলাবিবক্ষা 🕯 ১ ॥

তত্র প্রার্ট্ বর্ণনং তত আদি ধাবিংশত্যা সর্কোষাং প্রাণিনাং সমুদ্ধর উৎপত্তিতো জীবনত চ যস্যাং সা প্রার্ট্। বিদ্যোতমানাঃ পরিধয়ং প্রিবেশাং দিশো বা যস্যাং সা। বিক্তুজিতং সংক্তিতং নতন্তলং যস্যাং সা॥ २॥

সাকৈনি বিজৈনী লাখুদৈবি ছিদ্দাজি তদহিতৈরাচ্ছয়ং সঞ্জণং গুলৈরাচ্ছয়ং জীবাখ্যং বিজ্ঞালজি তাখুদানাং সম্বরজ্ঞ মোভি-

বৈষ্ণবতোষণী ।

তরোঃ শ্রীরামকক্ষোদ বিধিমোক্ষণরপং প্রশাস্থবধরপঞ্চ যথা স্থং তৎ কর্ম্ম সাময়িকবৃথক্রমনির্দেশঃ প্রাধান্যাপেক্ষয়। স্ত্রীভ্যঃ স্বমাত্রাদিত্যঃ স্বস্কোচাং তা এব শ্রাবয়িত্মিত্যর্থঃ। সম্যক্ তত্তৎ বিশেষত আচপুঃ ॥

তত এব সর্বেষামপি শ্রুতবতাং ভাবমাহ গোপেতি। সৎস্বপি যুবস্থ গোপবৃদ্ধা ইতি তেষামপি চমৎকারাতিশয়েন রসাধিক্যাপেক্ষ্যা অতো গোপ্যোহপি তাদৃখ্যো জ্ঞেয়া:। দেবেষু প্রবর্জে কারপি বন্ধুজনোচিতপ্রেমাক্রান্তচিত্ততয়া নিশ্চয়াভাবাৎ ॥ ১ ॥

ক্রমপ্রাপ্ত: প্রীভগবত: প্রার্ট্ শরৎক্রীড়াং বর্ণয়িত্ব: শ্রীর্ন্ধাবনসম্বন্ধেনাতান্তমূল্লসন্তীং তহন্দীপনরূপাং গ্রীমবন্তন্ত্ প্রিল্পেবাদৌ বর্ণয়তি। বর্ণনালকারায়ায়্মসিক্রতন্ত্রনারভাগিক্রমেবাদৌ বর্ণয়তি। বর্ণনালকারায়ায়্মসিক্রমেবাদির্দ্ধানির তিত ইত্যাদিনা যাবং সমাপ্তি। তত্র তথােরারভাগিক্রমেবাদির বর্ণনালকারায়ায়্মসিক্রমেবাদির বর্ণনালকারায়ায়্মসিক্রমেবাদির বর্ণনালকারায়ায়্মসিক্রমেবাদির বর্ণনালকারায়ায়্মসিক্রমেবাদির বর্ণনালকারায়ায়্মসিক্রমেবাদির বর্ণনালকার বর্ণনালকারায়ায়্মসিক্রমেবাদির বর্ণনালকারায়ায়্মসিক্রমেবাদির বর্ণয়বর্ণমালকার বর্ণনালকারায়ায়্মসিক্রমেবাদির বর্ণনালকারায়ায়্মসিক্রমেবাদির বর্ণনালকারায়ায়্মসিক্রমেবাদির বর্ণমালকার বর্ণনালকারায়ায়্মসিক্রমেবাদির বর্ণমালকার বর্পমালকার বর্ণমালকার ব

অস্পষ্টং জ্যোতিঃ চক্রত্ব্যাদিকং যুত্র তাদৃশং সৎ ব্যোম বভৌ। তদ্দ্বাবা স্বপ্রকাশান্তরং ব্যঞ্জামাণ। অস্পষ্টজ্যোতিষ্টে হেতুঃ

ক্রমসন্দর্ভ:।

বিক্ষৃ 🌉 তং গৰ্মিতং॥ ১॥ ২॥ ৩॥

ত্রীবিখনাথচক্রবর্তী।

দেবপ্রবর্গাবিতি প্রেমপ্রাবল্যেন স্বসম্বন্ধন্ত দার্চ্যাং পূর্ববন্মাধুর্যাল্যের পোষণং নডেষান্মর্য্যক্রানং ক্রেয়ং। তৎকার্য্যস্য স্বসম্বন্ধিল্যস্য তৎসংযোগে কুত্রাপ্যশ্রবণাৎ ১॥

ততো গ্রীমানস্তরং সর্বেষাং সন্থানাং প্রাণিনাং সমুদ্ধর উৎপত্তিতো জীবনতশ্চ বদ্যাং দা। প্রার্ট্ বর্ষা। পরিধিশুক্রাক্রোম গুলং। বিক্জিজ তং গজ্জি তং তদমুক্তং নভস্তলং যদ্যাং দা॥ ২॥

সাক্রেনিবিড়েনী লাস্ট্রেনির্যাণাজ্জি তিসহিতৈরাছে মনাছে রখেন প্রতীতং সঞ্জণং একা সমষ্টিবিরাড়াত্মা। বিহাদগজ্জি তামুদানাং স্বরজ-

শুক্দেব কহিলেন হে রাজন্! গোপগণ গৃহে প্রত্যাগমন করিয়া রামকৃষ্ণের অন্ত কর্ম এবং দাবামি হইতে আপনাদের রক্ষণ তথা প্রলম্বাস্থর বধ প্রভৃতি সেই সকল র্ভান্ত গোপীদিগের নিকট বর্ণন করিল। তৎপ্রবণে রূজ ২ গোপগণ তথা গোপীদিগের যারপর নাই বিস্ময় জন্মিল। তাহারা চমৎকৃত হইয়া এই রূপ অনুমান করিতে লাগিল যে, রামকৃষ্ণ কখনই মানব নহেন, ইহারা দেরপ্রবর, (দেবপ্রেষ্ঠ) লীলার্থ ব্রেজে আগমন করিয়াছেন । ১॥

অনস্তর যে কালে উৎপত্তি ও জীবন দারা সর্বাপ্রাণির উদ্ভব হয় এবং যাহাতে পরিবেশ অথবা দিক্ দকল বিদ্যোদিত হইয়া থাকে আর যে সময় নভস্তল সতত সংক্ষৃতিত দেখা যায়, সেই প্রার্ট্ কাল প্রবর্তিত হইল॥ ২॥

বিছ্যুৎ ও গর্জন সহিত নিবিড় নীলজলদে আচ্ছন্ন হওুয়াতে গগনমণ্ডলের জ্যোতিঃ অস্পন্ট হইল

অক্টো মাদান্নিপীতং যন্ত্রম্যা উদময়ং বহু। স্বগোভিমে ক্রিমারেভে পর্জ্জন্যঃ কাল আগতে ॥৪ তড়িছজো মহামেবাশ্চওশ্বনবেপিতা:। প্রীণনং জীবনং হুস্য মুমুচুঃ করুণা ইব ॥ ৫॥ তপংকুশা দেবমীঢ়া আসীঘ্যীয়দী মহী। যথৈব কাম্যতপদস্তম্বঃ সম্প্রাপ্য তৎফলং।

अध्वयामी।

ক্পমা॥৩॥

পর্জন্য: হুর্য্য: হুর্যোভি: হুর্ফ্রিভি:। কালে যথোচিতসময়ে। তত্ত্র রাজোপমা। করাদানত: স্বয়ে পুনদ্বিত: হুচিতা:॥ ১ ॥ অন্য বিষদ্য প্রীণনং আপ্যায়নকরং জীবন্ধং উদকং মুমুচু:। কুপালবো যথা তগুং জনং নিরীক্ষা অনুকল্পমানাস্তদাপ্যায়নায় স্বজীবনমপি ত্যজ্ঞতি তদন্মহাস্তো মেঘান্তড়িরেকৈন্তপ্তং বিশ্বং নিরীক্ষ্য স্বসনৈর্বায়ুভিবেপিতা জীবনং মুমুচুরিতি॥ ৫ ॥

বৈষ্ণবতোষণী।

সাক্তনীলাধুদৈরাচ্ছন্নমিতি। কীদুদৈত্তেঃ বিছাদ্তিঃ জনব্রিজুভিন্স সহিত্তৈঃ জনবিত্রবোহত কথঞ্চিক্ত্রপরতাকার্জিতমেবোচাণ্ড । কিমিব বভৌ তত্রাহ ব্রক্ষৈব। জীবাথ্যব্রশ্বাংশ ইব তচ্চ কীনৃশং সপ্তণং সম্বরজন্তমোভিন্তংকার্যোক্তার্তস্বরূপজ্যোতিরিত্যর্থ:। স্বাদি-স্থানীয়াংশাম্বত্র যথায়থং বিবেচনীয়া:॥ ৩॥

সন্তাদিবস্থান্ত্রপ্রকৃমুদক্ষ্য কর্ত্বং ব্যঞ্জয়তি। তচ্চ পর্জন্যা রাজত্বং অতএর নিপীত্যান্ত্তমিত্যর্থ:॥ ৪॥

তড়িশ্বস্ত ইতি। তৈ ব্যস্থাতং। তত্ৰ ক্বপালৰ ইতি ক্ষণা ইত্যদ্য ব্যাখ্যানেন স্বভাবকথনং। অমুকম্পমানা ইত্যমুকম্প্যা তৎ-কালমুদিতয়া বেপিতা; সন্ত ইত্যৰ্থ: স্বন্ধীবনমণীতি ভিন্মিস্তাক্তে যদি তপ্তানামাপ্যায়নং স্যান্ত্ৰদি তদ্পি তাল্জীত্যৰ্থ:। বায়ুভি-রিতি বছত্বঞ্চ ওপজেন লভ্যতে হি নিশ্চযে। যহা। তড়িত্বস্ত ইতি অরূপাতিশয়দ্যোতনার্থং করণা ইবেত্যুৎপ্রেক্ষা ত্য্যা ঘটনা হু স্লেষেণ চণ্ডশাসকম্পায়্ক্রাঃ সম্ভো রস্তিদেবাদিবক্ষীবনহেতুজ্বশস্থি মুম্চুরিতি॥ ৫॥

তপ ইতি সাম্ভ্ৰমাৰ্ধং॥

বস্বিতি করাদানং তেন চ রাঞ্চৌপম্যং ধ্বনিতং অতএব পীতমান্ত্তমিত্যর্থঃ॥৪॥৫॥ তপ ইতি সাম্ভ্ৰমপি। তপস্ত তপসা সহেতি দ্বিরূপকোষাৎ ॥৬॥ १॥ ৮॥ ১॥

बीविधनाथठळवर्डी ।

স্তমোতিরপমা। অত ব্যোমো নিলেপিতেন। বস্তত্ত্বনাচ্ছনতেনাস্থান্যধিষ্ঠানমাত্রতাদু হ্রপা সংহাপমেরং যোগিভি: স্বীয়োপাস্য দৃষ্ট্যা डेभारमग्रा ॥ ७ ॥

পর্জন্তঃ সূর্য্যঃ। অংগাভিঃ স্বরশ্বিভিঃ। কালে সময়ে। অত পর্জন্যস্য রাজত্বং উদক্ষ্য করতং নিপান্স্য গ্রহণত্বং মোচন্স্য দানত্ব স্চিতমিতি বন্ধন: স্প্রজাভ্য আদানত: সময়ে পুন: প্রদানত চ রাজোপমেরং নীতি দৃষ্টা রাজভিফপাদেরা॥ ৪॥

খসমো বায়ু:। 🖯 অস্য বিশ্বস্য সম্ভপ্তস্য প্রীণনং আপ্যায়নকরং। । অতএব জীবনং জীবনতুল্যং জলং করণা রূপালবে। দাভার ইব । তৎপক্ষে শাসবেপাৰমুভাবৌ। জীবনং জীবিতমপি তপ্তং জনং বীক্ষতে তাজন্তি ব্যন্তিদেবাদয়ো জীবনং স্বমাঞাপ্যায়কং জলমপীতি ইয়-मुलमा তङ्का हो। नवाबी बनानवी देवक्र लाइनवा। द ॥

তপ্সা। পক্ষে প্রীত্মেণ ক্লশা ততো দেবৈরুদ্রাদিভিঃ পর্জনোন চ মীঢ়া কামিতবস্তপ্রদানেন দ্বুলবৃট্টা চ সিক্তা। বর্ষীয়দী প্রাঙ্গ-স্তরাং নভন্তল সগুণ ব্ৰহ্ম অর্থাৎ সত্তাদি গুণাবচ্ছিন্ন জীবের ন্যায় দীপ্তি পাঁইতে লাগিল। ৩॥

অপর সূর্য্যদেব নরদেবের ন্যায় স্বীয় কিরণদ্বারা আট মাদ অবনীর যে জলমন্ত্র ধন আকর্ষণ করিয়া-ছিলেন উপযুক্ত সময় উপস্থিত হওয়াতে মোচন করিতে আরম্ভ করিলেন॥ ৪॥

আর যেমন করুণান্বিত সাধুজন সংসারতাপে সম্ভপ্ত জনকে নিরীক্ষণে অমুকম্পান্বিত হইয়া তাহার রক্ষার্থ জীবন পর্যান্ত বিদর্জন করেন তাহার ন্যায় বিহ্যাদ্যুক্ত মেঘমণ্ডল বিহ্যাৎরূপ নয়ন দার। জগৎকে নিদাঘ তপ্ত দেখিয়া দয়াদ্র হইল ও জগতের প্রীতিকর বহু২ জল মোচন করিতে লাগিল। ৫ ।

যদিও পৃথিবী গ্রীষ্ম হেডু অতিশয় কুশা হইয়াছিল তথাচ বারিদবর্ষণে সিক্ত হইয়া তদ্বৎ পুঠ হইতে

নিশামুখেষু থদ্যোতাস্তমদা ভান্তি ন গ্রহাঃ। যথা পাপেন পাষণ্ডা ন হি বেদাঃ কলো যুগে ॥৬॥ শ্রুছা পর্জ্জন্যনিনদং মণ্ডুকাঃ সক্তম্পু গিরিঃ। তুফীং শয়ানা প্রাগ্ যদ্ধান্তায়ে॥ ৭॥ আসমুৎপথগামিন্যঃ ক্ষুদ্রনদ্যোহমুশুব্যতীঃ। পুংসো যথাহস্বতন্ত্রস্য দেহদ্রবিণসম্পদঃ॥ ৮॥ হরিতা হরিভিঃ শল্পৈরিক্রগোপৈশ্চ লোহিতাঃ। উচ্ছিলীকু কৃতছায়া নৃণাং শ্রীরিব ভূরভূৎ॥৯

শ্ৰীধরস্বামী।

তপদা এীম্বেণ রশা দেবমীঢ়া পর্জন্যনিকা বর্ষীযদি উচ্ছ্না পুষ্টা কাম্যং তপো যদ্য ভুদ্য তন্ং কামান্ প্রাপ্য যথেতি ॥ ৬॥ নিজ্যকর্মাবদানে আচার্যানিনদং শ্রুষা তচ্ছিষ্যা যথা অধীয়ত্তে তম্বদিতি॥ ৭॥

অমুভ্রাতী: অমুভ্রাত্ত:। অস্বভন্নগা ইন্দ্রিগপরতন্ত্রণা স্বভন্নসা নির্ছুশ্সোতি বা ॥৮॥

হরিভিনীলৈ: শটেশব লিভূলৈ: নীলবণা কচিৎ। কচিদিক্সগোলৈ: কীটবিশেবৈলে হিতা। তত্র তত্র উচ্ছিলীরৈ শুভ্তাকারে-

देवकवरकावनी।

গ্রহান্ত ন ভাত্তি পাবণ্ডাক্তছাল্রাণি॥ ৬॥

বাস্ত্রন্ বিবিধং বিস্তার্যামাস্থ: প্রাক্ ভৃষ্ণীং শ্রানাঃ নিজাণবরিন্টেইছেন বৃত্তাঃ মণ্ডূকাঃ ব্রাহ্মণাশ্চ নিভ্যধ্যানজপাদ্যর্থক্তমৌন-ছেনেভি॥ १॥

ক্লাচিছ্ৎপথবাহিন্য এবাসন্ ক্লাচ্দ্স্ভ্ৰয়স্ত এব চাসন্। নতু সৎপথগামিন্যো নতু বৈক্লারহিতাঃ। যগু স্বতন্ত্রস্থান্ত্রনন্ত্র-সরতঃ পুংসো দেহসম্পদো অবিপসম্পদশ্ভেতি ॥ ৮,॥

ইক্রগোপে: জীবৃন্ধাবন ইক্রচুড়েতি খ্যাত কীটবিশেষে: হরিতাদিকত্বং চেদং পটগৃহাদীনাং ॥ ৯ ॥

ঐবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

উচ্ছুনা চ। কাম্যং তপো ষ্প্য ওদ্য পৃংসন্তহ্ন: কামান্ প্রাণ্য। বথেত্যপ্রন্ধা পরিণাম দর্শিভি: সন্তির্হেণ। দ পাষ্ডা: পাষ্ডশাক্রাণি হেক্রেবেয়মুপ্রা॥ ৬ ॥

নিত্যকর্মাবসানে আচার্য্যাহ্বানশবং শ্রুষা তচ্ছিষ্যা বধা অধীয়ত্তে তথদিতি ব্রহ্মচাবিভিক্লপাদেয়া॥ ৭॥

অমুগুষাতীঃ অমুগুষাস্তাঃ। বুষামাণৈরলৈরপি জলৈকৎপথগানিনাঃ স্বতন্ত্রসা শান্ত্রশাসনং অমানয়তঃ দেহস্য সম্পদে। যৌবনসামর্থা-বিদ্যাদ্যা দ্রবিণসম্পদঃ পঞ্চমগ্রামাধিপত্যং। তা যথা নিক্ট্স্য কুমতেঃ প্রোদেজ্বিত্থেতি হেলৈবেয়ং॥৮॥

হরিভিনী লববৈ: শইস্প: কোমলৈ:। কচিৎ নীলবর্ণা ইক্সগোটপরকণবর্ণকী্টবিশেলে: কচিৎ লোহিতা। উচ্ছিলীক্সৈ শুভুআকারে-

লাগিল, যেমন কাম্য তপস্বির তপঃ ফল কাম প্রাপ্ত হইয়া পুষ্ট হয়, রাজন্! সকল সময়েই নিশামুখে গ্রহ সকলের দীপ্তি প্রকাশ পায় কিন্তু যেমন কলিযুগে পাপি পাষগুজনগণ দীপ্তি পায়, ত্রহ্মজ্ঞ ত্রাহ্মণদের প্রকাশ হয় না, তদ্বৎ এই কালে প্রদোষ সময়ে খদ্যোৎ সকল ছ্যুতিমান্ হইল, গ্রহদিগের প্রকাশ হইল না ॥ ৬॥

হে মহারাজ। ভেক সকল পূর্ববিধি ভূঞীভূত হইয়া শয়ান ছিল এই সময় মেঘধ্বনি আবণ করিয়া তদ্বং বাক্য ব্যয় করিতে আরম্ভ করিল, যেমন নিত্যকর্মাবসানে আচার্য্যের ধ্বনি শুনিলে শিষ্যগণ অধ্যয়ন করিয়া থাকে॥ ৭॥

হে মহারাজ ! ক্ষুদ্র ২ নদী সকল নিদাঘকালীন প্রথরতর দিনকর কিরণে শুক্ষ হইতেছিল একণে বর্ষাগমে সে সকল জলপূর্ণ হইয়া, ইন্দ্রিয় পরতক্ত পুরুষের দেহও দ্রবিণসম্পদের ন্যায় উৎপথবর্তিনী হইল॥ ৮॥

এই স্ময়ে অবনী কোথাও নীলবর্ণ নবীনত্ন ছারা নীলবর্ণা,কোথাও ইন্দ্রগোপ কীটছারা লোহিত-বর্ণা এবং স্থানে ২ ছত্রাকার উদ্ভিদে ছায়াছিতা হওয়াতে নরপতিদিগের স্নোসম্পদের ন্যায়

ক্ষেত্রাণি শস্যসম্পদ্তিঃ কর্ষকাণাং মুদং দতুঃ। মানিনামনুতাপং বৈ দৈবাধীনমজানতাং॥ ১০॥ জলস্থলোকসঃ সর্কে নববারিনিষেবয়।। অবিজ্ঞন্ রুচিরং রূপং যথা হরিনিষেবয়া॥ ১১॥ দরিদ্তিঃ সঙ্গতঃ সিন্ধুন্চ কোভ শ্বনার্শ্মিনান্। অপক্ষোগিনন্চিত্তং কামাক্তং গুণযুগ্ যথা॥ ১২॥

विधतवागी।

ক্ষিদৈ: ক্বতছায়া নৃণাং রাজ্ঞাং শ্রী: সেনাসম্পদিব ॥ ১ ॥

ক্ষেত্রাণীতি তদাহি বৃষ্টেরবিচ্ছেদেন সন্তঃ প্রিয়ঙ্গু াদ্যো মুদং দদতি বিচ্ছেদেম শুষ্যন্তো হত্ত্বাপঞ্চেত ॥ ১০ ॥

অবিজ্ঞন্ অবিভক্ষঃ। যথা হরিনিধেবয়েছি হরিদেবায়াং প্রার্তা হি সদ্য এব সর্কে রুচিরা ভবম্বি তস্যাঃ প্রমধ্যতাৎ প্রমন্ত্রণ-ভাচ্চ তথদিতি ॥ ১১ ॥

কামাক্তং কামৰাধনাযুক্তং ইতি খননোশিসামাং তেনৈবিবরৈযুক্তাত ইতি তথেতি সরিংসঞ্জতি দাসাং॥ ১২॥

বৈষ্ণুবজোষণী।

সমুক্তরে বৈশক্ষঃ। শস্যসম্পত্তিঃ তদ্ভাবাভাবৈরিত্যর্থঃ। মুদ্মুতাপ্রোহেঁতুঃ মানিনাং তদ্ভিমানবতাং দৈবাধীনং সর্কমিত্যজানতাং ব্র্থান্যেষামপি ক্ষেত্রাণি দেহাঃ অন্যাভিঃ সম্পদ্ধিরিতি জ্ঞেয়ং॥ > ০ ॥

জ্লেতি তৈব্যাথ্যাতং তত্র সাধনাবস্থায়াং প্রমধ্যত্তং প্রসিদ্ধমের স্থ্রপত্তক। কর্মণ্যক্রিরনাত্মানে ধৃমধ্যাত্মনাং ভবান্। আপায়-যতি গোবিক্সপাদপ্রমান্তং মধু ইত্যমুসারেণ সাধ্যাবস্থায়ান্ত পরমস্ত্রপর্ক প্রদিদ্ধমেবেতি বিবেচনীয়ং॥ ১১॥

শ্রীর্লাবনেহত্রাবর্ত্মানস্যাপি সিঙ্কোর্কর্ণনং প্রার্ট্শভাববর্ণনাং। কিখা সিন্ধ্রির সিন্ধ: শ্রীমণুরামওলপশ্চিমসীমায়াং বর্তমানং মানস্পশাপ্রভ্যকোটরাধ্যমহাস্করা জ্ঞেয়ং॥ ১২॥

ক্রমদন্ধর্ভ:।

্লৈবাধীনমন্ধানতামতএৰ মানিনাং অহং ময়তাপরাণাং। কর্মকাণাং শস্যসম্পত্তিঃ তৎসদ্ভাবাতাবদা মূদমত্তাপঞ্চত্:॥১০।১১।১২।১৩)১৪। ১৫।১৬)১৭॥

श्रीविधनाधहकवर्ती।

কদ্রিকৈন্তঃ কৃতচ্ছান্তা কৃতবেতকান্তিঃ। নূণাং রাজ্ঞাং জ্রীঃ সেনাসম্পৎ হরিতাদিবর্ণপট্গেহযুক্তা। ইয়ং রাজ্ঞামুপাদেয়া ॥ ৯ ॥

মানিনামিতি ক্বৰিং নিকৃষ্টং কর্ম্ম বয়ং প্রতিষ্ঠিতা ন কুর্মহে ইতি গর্ম্ববতাং অমৃতাপং হস্ত হস্ত যদি কৃষিং ব্যমপ্যকরিষ্যাম তিন-তাদৃশী: শন্যসম্পদ: প্রাপ্যামেতি পশ্চাতাপং ছহ্মানিতা এবেতার্থ:। যতো মুদ্মতাগাদিকং দৈবাধীনং তে ন জানস্থীতার্থ:। বংগ নিবৃত্তিকর্মপ্রান ব্রহ্মলোকং গৃচ্ছতো দৃষ্ট্। প্রবৃত্তিকর্মপ্রাঃ স্বর্গন্থা অমৃতপ্রীতি গম্যোপ্যা ভকৈর্হো॥ ১০ ॥

স্থবিত্রন্ স্থবিতক:। মধেতি হরিদেবারাং প্রবৃত্তা স্থাপি সদ্য এব সূর্বে ক্চিরা ভবস্তি তিস্যাং পরমধ্যীছাৎ পরম্প্রণাজ্য । ভ্রম্বিত্রপাদেরা ॥ ১১ ॥

সিক্ন দীবিশেষ: পাশ্চাত্য:। বিশেষণ্দ্য পুংক্মার্বং। কামাক্তং কামবাদনাবুক্তং ইতি স্বদনোর্শ্বিদাম্যং। গুণৈবিষয়ৈযুঁ জ্ঞাতে ইতি। স্ত্রিংসক্ষতিসাম্যমিতি হেরা॥ ১২ ॥

মানা হইল॥ २॥

পরস্তু এ সময় ক্ষেত্র সকল শাস্য সম্পতিদারা র্ষকদিগকে হর্ষ প্রদান করিতে লাগিল অর্থাৎ এই কালে অবিচ্ছেদে বৃষ্টি হওয়াতে ক্ষেত্রস্থ প্রিয়ঙ্গু প্রভৃতি শাস্য অবলোকনে ক্ষেত্রতাদের আনন্দ জন্মিল কিস্তু যে সকল ব্যক্তি শাস্যাদি দৈবাধীন, ইহা না জানে, বৃষ্টির বিচ্ছেদে যথন শাস্য শুক্ষ হয় তথন ঐ সকলই তাহাদিগকে সমধিক মনস্তাপ প্রদান ক্রিয়া থাকে ॥ ১০ ॥

সে যাহা হউক, যজ্রপ হরিদেবায় প্রবৃত জনগণ সদ্যই রুচির হয়, নববারি-নিষেবণ ছারা জল ও স্থলবাসী সকল জীব তজ্রপ অচিরেই রুচির রূপ ধারণ করিল ॥ ১১॥

রাজন্। অপক যোগির কামাসক্ত ও বিষয়তৎপর চিত্ত যজ্ঞপ ক্ষুক্ত হয়, এই দর্শয়ে সরিৎ সকলে সঙ্গত এবং বায়ুৰেগে তরঙ্গিত হইয়া সাগর তজ্ঞপ ক্ষুক্ত হইয়া উঠিল॥ ১২॥ গিরয়ো বর্ষধারাভিছ ন্যমানা ন বিব্যপুঃ। অভিভূষমানা ব্যসনৈর্ঘথাধোক্ষজচেত্সঃ॥ ১৩॥
মার্গা বভুবুঃ সন্দিগ্ধান্ত বৈশ্ছমা অসংস্কৃতাঃ। নাভ্যস্যমানাঃ শ্রুতায়ো বিজৈঃ কালেন চাহতাঃ॥১৪
লোকবন্ধুষু মেঘেষু বিদ্যুত শচলসোহালাঃ। কৈছিগ্যং ন চক্রুঃ কামিন্যঃ পুরুষেষু গুণিষ্বিব॥ ১৫॥
ধকুর্বিয়তি মাহেন্দ্রং নিপ্ত ণঞ্চ গুণিন্যভাৎ। ব্যক্তে গুণব্যতিকরেইগুণবান্ পুরুষো যথা॥ ১৬॥

अधितवामी।

অধোক্ষ এব চেতো যেষাং তে॥ ১৩॥

অসংস্কৃতা: অকুণ্ণা: নাভ্যস্মানা ইত্যয়ংস্কৃতসাম্যং। কালেন চাহতা ইতি তুণাচ্ছাৰ্শ্য সাম্যং॥ ১৪॥

যথা কামিন্য: পুশ্চল্য: ॥ ১৫॥

নি প্রণিং জ্যারহিতমপি প্রণিনি গর্জিতশব্দবিত অভাং অশোভতগুণব্যতিরাশ্বকে ব্যক্তে প্রপঞ্চে অপুণবান্নি ও বিঃ পুরুবো যথা ইতি ॥ ১ ৬ ॥

देवस्थवटकावनौ ।

বর্ষধারাভিরিতি গিরিষু বৃটেরাধিক্যাৎ। অভিভ্রমানাঃ অভিভবচেষ্টাবিষয়ীক্রিয়মাণা অপি ন বিব্যুপ্: ন বিব্যুপিরে হুঃখং ন প্রাপু: কিন্তু রজ্জাদ্যপামাদশোভতৈত্বত্যর্থ:। ব্যুসনৈরোগাদিবিছেঃ প্রারক্ষ্যাবশ্যভোগ্যবাং। বাং সেবভাং স্থরক্তা বহুবোহতরায়া ইতি ন্যায়াচ্চাভিভ্রমানা অপি ন ব্যুপত্তে প্রভ্রায়াইতি ন্যায়াচ্চাভিভ্রমানা অপি ন ব্যুপত্তে প্রভ্রায়াইতি ন্যায়াচ্চাভিভ্রমানা অপি ন ব্যুপত্তে প্রভ্রায়াইতি ন্যায়াচ্চাভিভ্রমানা অপি ন ব্যুপত্তে প্রভ্রায়াহিত্ব হুক্র্যাপর্মাদিনা ভগ্রুৎস্মরণবিশেষপ্রসিদ্ধে:। টাকায়ামেব-কারস্তদ্ব্যুগায়াং হেভু: ॥ ১৩ ॥

নাভ্যস্যমানাঃ জ্বনভাস্যমানাঃ কালহতাঃ কালেন কলিযুগাদিনা হতাঃ শ্রুতয় ইব এব এব পাঠো বছত্র তেবাং ব্যাখ্যা দৃষ্ট্যা কেচিৎ কালেন চাহতা ইতি পাঠং কুর্বস্তি তন্মতে চ ইবার্থ: ॥ ১৪ ॥

खिनियु देवमक्षामिविविधखनबुदक्क्यू अभि॥ ১৫॥

অগুণবান্ মায়া গুণাতীতোহপি পুরুষ: ॥ ১৬ ॥

वीविधनाशहक्तवही।

ন বিৰয়থু ন´ বিব্যখিবে প্ৰভাত রজ আদাপগমাদশোভইম্ভবেত্যৰ্থ:। ব্যসনৈরাধ্যাত্মিকাদিভিত্তাপৈরধোক্ষজ চেত্ত্বাদেব ন ব্যথস্তে। তপন্তি বিবিধান্তাপা নৈতান্মক্ষতচেত্স ইতি ভগ্বহুক্তে:। প্ৰভাত দৈন্যবৃদ্ধ্যা গৰ্কাস্থাদিমালিন্যরহিতা এব ভ্ৰন্থীতি সম্ভিক্ষপাদেয়া॥ ১৩॥ .

নাভ্যস্তমানা ইভ্যাশস্কৃত সাম্যাং কালহতা ইতি তৃণাচ্ছাদন সাম্যাং অভএব মার্গাঃ শ্রুতয়ন্দ সন্দিল্পা ইতীয়ং বটুভির্হের।॥ ১৪॥ যথা কামিন্যঃ পুংশ্চল্যাঃ। গুণিযু পুরুষেষু বৈদক্ষাদিগুণবংশ্বপীতি হেবৈর।॥ ১৫॥

নিও ণিং জ্যারহিতং ওণিনি গজ্জি তশব্দবতি। ব্যক্তে প্রপঞ্চে গুণব্যতিকরাত্মকেহগুণবান্ মায়াগুণাতীতঃ পুরুষো ভগবান্ ভাতি। বিবিধলীলাভিরিতি ভট্তেরপাদেয়া॥ ১৬॥

যেমন ভগবানের প্রতি বাহাদের চিত্ত আসক্ত, তাহারা ঝিবিধ ব্যসনে অভিভূত হইয়াও ব্যথিত হন না, তজপ এই কালে গিরি সকল রম্ভিধারায় আহত হইতে থাকিলেও ব্যথিত হইল না॥ ১৩॥

রাজন্! বর্ষার প্রভাবে দাঁকল স্থানের পথ সংস্কারের অভাবে তৃণাচছন্ন হইয়া তাজপ সন্দেহাস্পদ হইয়া উঠিল যেমন দ্বিজাতিগণ কর্ত্ত্ব অনভ্যস্ত অতএব কালবশতঃ আহত হইয়া "প্রুতি সকল আছে কিনা ?" বলিয়া সন্দেহাস্পদ হয়॥ ১৪॥

যজ্ঞপ পুংশ্চলীগণ গুণিপুরুষ সকলে স্থৈয় অবলম্বন করে না তজ্ঞপ এ সময় চলসেছিল বিচ্যুৎ পটল লোকবন্ধু মেঘ সকলে স্থিরতা ধারণ করিল না।। ১৫।।

ইন্দ্ৰধন্ম বিভি নিগুৰ্ণ (জ্যারহিত) তথাচ গুণি অর্থাৎ গর্জ্জিতশব্দ গুণমুক্ত আকাশে তবৎ প্রকাশ-মান হইল, যেমন সন্থাদি গুণসমূহাত্মক ব্যক্ত প্রপঞ্চ অগুণ পুরুষে (আত্মার) প্রকাশ হয় ॥ ১৬ ॥ ন ররাজোড়ু পশ্চন্ধঃ স্বজ্যোৎসারাজিতৈর্ঘনিঃ। অহম্মত্যা ভাসিতয়া স্বভাসা পুরুষো যথা॥১৭॥ মেঘাগমোৎসবা হুক্টাঃ প্রত্যনন্দন্ শিখণ্ডিনঃ। গৃহেরু তপ্তা নির্বিধা যথাহচ্যুতজনাগমে॥ ১৮॥ পীত্বাপঃ পাদপাঃ পদ্তিরাসন্ধানাস্মুমূর্ত্য়ঃ। প্রাক্ ক্ষামান্তপ্সা প্রান্তা যথা কামানুসেবয়া॥ ১৯॥

अधवत्रामी

স্বভাস। ভাসিত্যা অহমতোতি স্বচৈতন্যেনৈৰ প্ৰকাশিতেনাহকারেণ ছলো জীবো যুখা। যহা। অহং বিহান্দাতা শূব ইতি

মেবাগমেনোৎসবো যেষাং। অতো হৃষ্টা:॥ ১৮॥ নানাত্মমূর্ত্রয়: অনেকরপদেহা:॥ ১৯॥

বৈষ্ণবতোষণী।

স্বীয়র। ত্বারমব্যা স্থোৎক্ষয়া রাজিকৈ: প্রকাশিকৈ: সম্বন্ধিতৈ দ ১৭॥

মেঘাগম এব উৎসবো যেবাং তে অতএব হাঁটাঃ প্রভানলন্ মেঘগজ্জি তাদানস্তরমূচৈন দিদিকমক্র্নন্। যথা বৈষ্ণবগৃহত্যাঃ সমাগতে বৈষ্ণবে গীতানস্তরং নৃতাগীতাদিকং কুর্বস্তি তথেতাথা এবং চাতকা অপি জ্ঞেয়া ইতি ভাবঃ॥ ১৮॥ তপদা এতাদিনা কামাঃ ক্লাকাঃ প্রাস্তাশ্চ নির্বাং। এবং গ্রীমেণ পাদপানামপুছেং॥ ১৯॥

वीधवयांगी।

মেবাগমে এবাদবো বেষাং অতএব স্বৃত্তীঃ তান্ মেঘান্ প্রত্যনন্দয়ন্ ॥১৮।১৯॥

এ বিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

উস্পশ্চল্র: অজ্যোদ্ধারাজিতৈর্ঘনৈস্তধারময়ৈঃ কুহেড়িকাথৈয়েমে হৈশ্ছন আছে ম্বাভাবেহপ্যাছন্তমন প্রতীতো ন বরাজ। বভাষা স্বীয় গুণময়ছ্ছবিদ্ধানা অহংমত্যা অবিদ্যুয়া স্থশত্যা কীদৃশ্যা ভাষিত্তয়া স্বেনের প্রকাশিত্যা পুরুষঃ প্রমেশবো যথা ঘন্ছ্রেদ্টির্ঘন্ছন্নক্ষিতিবং ছন্নবেন প্রতীত ইত্যুর্থ:। জ্ঞানিভিরিয়মুপাদেয়া॥ ১৭॥

মেঘাগমেনোংসবো যেষাং তে। প্রত্যনন্দন্ মেঘসমূদ্ধগর্জিতাদ্যনস্তরমুক্তৈরানন্দনাদাদিকমকুর্বন্ যথা বৈক্ষবগৃহস্থাঃ সমাগতবৈক্ষব-সপ্রেমানন্দগীতানস্তরমানন্দগীতনৃত্যাদিকং কুর্বস্তীতি বৈক্ষবানামুপাদেয়া॥ ১৮॥

নানাবিধা আন্মনঃ স্বদ্য মূর্ত্যোহস্কুরপত্রপল্লপপ্রাদ্যা বেষাং তে পক্ষে নানাস্থানঃ পানভোজনরবণাদিনানাস্বভাববস্ত আন্ধানো মইবো দেহা বেষাং তে। নিজামাণামিয়ং হেয়া॥ ১৯॥

অপর স্থীয় চৈতন্য দ্বারা প্রকাশ পায় যে অহঙ্কার, তাহাতে আচ্ছন্ন হইয়া অথবা আমি বিদ্বান্ আমি দাতা, আমি শূর ইত্যাদি স্থীয় প্রতীতিতে আরোপিত হইয়া জীব যদ্রপ দীপ্তি প্রাপ্ত হয় না, তেমনি আপনার জ্যোৎস্নায় উদ্দীপিত মেঘে আচ্ছন্ন হওয়াতে চল্ডের স্থাপন্ট দীপ্তি প্রকাশ হইতে পারিতেছে না।। ১৭।।

যজপ গৃহাজ্রমে সন্তপ্ত জনগণ ভাগবতজনের সমাগমে আনন্দিত হয় তজ্ঞপ ময়ূরগণ মেঘাগমে উৎসব বোধ করিয়া হুট হুইল অতএব তাহার প্রতি আনন্দ প্রকাশ করিতে লাগিল। ১৮॥

এই সময়ে রক্ষ সকল স্থা মূল দারা জল পান করিয়া তজ্ঞপে অনেক প্রকার দেহশালী হইল, যেমন প্রথমাবস্থায় ক্ষীণ ও তপঃপ্রান্ত পুরুষেরা অভিল্যিত বিষয় প্রাপ্ত হ্ইয়া তৎদেধায় অনেকপ্রকার মূর্ত্তি ধারণ করিয়া থাকেন ॥ ১৯॥ সরঃস্থান্তরোধঃ স্বৃষ্রঙ্গাপি সারসাঃ। গৃহেষশান্তকৃত্যের প্রাম্যা ইব ছরাশয়াঃ ॥ ২০॥ জলোঘৈ নিরভিদ্যন্ত সেতবো বর্ষতীশ্বরে। পাষ্টিনামস্থাদৈ বেদ্মার্গাঃ কলো যথা ॥ ২১॥ ব্যুম্ঞন্ বায়ুভিকুলা ভূতেভ্যশ্চামতং ঘনাঃ। যথাশিষো বিট্পতয়ঃ কালে কালে ছিজেরিতাঃ॥২২॥ এবং বনং তর্ষিষ্ঠং প্রথজ্জুরজন্মুন্থ। গো গোপালৈর তোরস্তঃ স্বলঃ প্রাবিশদ্ধরিঃ॥ ধেনবো মন্দর্গামিন্য উধোভারেণ ভূয়দা। যযুর্ভগ্বতাহুতা ক্রতং প্রতিয়া স্বৃতস্তনাঃ॥ ২০॥

এীধরস্বামী

অশাস্তানি প্রকণ্টকাদিযুক্তানি রোধাংসি ভটানি যেযাং তেছপি নৃষ্নি তরামবসন্¢। সারসাশচক্রবাকাঃ। অশাস্তানি ঘোরাণি অমুপ্রতানি বা কুত্যানি যেযু তেছপি গৃহেযু ॥ ২০ ॥

क्रेचदत हेट्स ॥ २०॥

सूत्राः ८ श्रीतिखाः । আশিষः কাম।ন্। বিট্পতয়ো রাজান: । বনিজাং পতয়ো বা। বিজেরিতা: পুরোহিতৈরুক্তা: ॥ ২২ ॥ প্রাব্যি কুতা: ক্রীড়া বর্ণয়তি এবং বনমিতি স্প্রভি: । বর্ষিষ্ঠং সমৃদ্ধং ॥ ২৩ ॥

देवक्षवरंजावनी ।

অশাস্তানি তরঙ্গাতিশয়েন মূহ: পত্তি রোধাংদি ষেষু। সারসাং খনায়ৈর থ্যাতাং পৃষ্করাহ্রয়া:। গ্রাম্যাঃ অবিবেকিজনাঃ। অতাপি গুরাশয়াঃ গৃহমেব সর্বার্থপ্রদনিতি হুটাভিপ্রায়া অতএব যথা নিতরাং বস্তীতি নিশকার্থঃ। অতএবাশ্চর্যোণ থেদেন বা অঙ্গ ছে-রাজনিতি॥ ২০॥

ঈশ্বর ইত্যতিবৃষ্ট্যা শৈবতাভিপ্রায়েণ। তদংশেনৈব তদ্য পাৰ্থি স্থানীয়তা॥২১॥

চ পূন: অনবচ্ছিরবর্ধানস্করং। অথেতি পাঠেছপি দএবার্থং। ভূতেভাঃ কালে কালে যোগ্যং কালং প্রাপ্যান্তং জলং দছ্বিতি বর্ধাস্তে জলস্ভোপাদেয়তাদমূতশব্দন্যাসং। এবং বিশব্দো বিশিষ্টার্থো জ্ঞেয়ং। দিইজং প্রেরিতা বিট্পত্য ইত্যবয়ং॥ ২২॥ এবং বর্ধাকালং বর্ণায়ত্বা তৎফলং প্রীভগবতঃ ক্রীড়াবিশেষং বক্ষারাদৌ বনপ্রবেশমাহ এবমিতি উক্তপ্রকারেণ যথা যথাহং বর্ণিতবান্তথা বর্ণায়িত্বতার্থং। তদমুসারেণেবাহ্মবর্ণয়মিতি ভাবঃ শ্রীমৃধশোভালোভেন॥

ক্রীভাষাহ ধেনব ইতি বড় ভি:। মন্দগামিন্যোহপি প্রীত্যাহ্তাঃ প্রীত্যৈব জ্রুতং বযুদ্দেত্যম্বয়:। প্রীতৌ লিঙ্গং স্তুত্তনা ইতি।

ক্রমসন্দর্ভঃ।

সাৰ্দাঃ পুছুরাহ্বয়াঃ অশাস্তানি তরঙ্গাতিশয়েন মুহুঃ পত্তি রোধাংসি বেষু। দ্বিজঃ প্রেরিতা বিশ্বত ইত্যুদ্ধঃ ॥ ২০।২১।২২।২৩॥

ঞীবিখনাথচক্রবর্তী।

অশাস্তানি পক্ষকণ্টকভঙ্গুরত্বাদ্বিদোবযুক্তানি রোধাংগি তৃটানি যেবাং তেম্বপি ন্যুনি তিরানেবাসন্। ইয়ং হেব্যৈ ॥ ২০ ॥ স্বিবে ঈশ্বর্ডাভিমানবশাদ্তিবর্ধোপদ্রবং কুর্বতি সতি । ইক্স ইতিকলিসাম্যমিয়ং হেয়া ॥ ২১ ॥

যুরা: প্রেরিতা:। আশিষ: কামান্। বিট্পতয়ো রাজানো বনিজাং পতয়ো বা। দিলৈবিথৈরীরিতা: প্রেরিতা ইতি রাজভিকপাদেরা॥১২ বর্ষা বশীষ্যা তাদাম্বিকীং লীলাং বর্ণয়তি এবমিতি সপ্রভি:। বর্ষিঠং সমৃদং॥

স্তস্তনী: স্তস্তন্য ইতি প্রীতিচিহ্ণ ॥ ২৩ ॥

যজপ জুরাশয় প্রাম্য পুরুষের যাহাতে ঘোরতর কৃত্য দেদীপ্যমান,তাদৃশ গৃহেও বাস করে,তজ্ঞপ চক্রবাকগণ যে সমুদায় সরোবরের তট ঘোরপঙ্ক ও কণ্টকযুক্ত, তাহাতেও বাস করিয়া রহিল ॥ ২০॥ রাজন্! এইকালে দেবরাজ অনবরত বারিবর্ষণে প্রস্তুত হইলে জ্লপ্রবাহ সকল সেই প্রকারেই সেতুভেদ আরম্ভ করিল, যেমন কলিযুগে পাষ্ণুদিগের কুত্রবাক্য বেদমার্গকে ভর্মকরে॥ ২১॥

যেমন রাজগণ পুরোহিতদিগের কথিত বাক্যাবলী কালে২ গ্রহণ করেন তত্রূপ মেঘগণ কালে কালে বায়ুকর্ত্ব প্রেরিত হইয়া প্রাণিগণের প্রতি অমৃতবর্ষণ করিতে লাগিল। ২২ ॥

হে রাজন্। এই প্রকার বর্ধার সময় ক্রীঞ়া করিবার মানসে গো এবং গোপালগণে পরির্ত হইয়া বলদেবের সহিত ভূগবান্ জ্রীকৃষ্ণ পক খর্জ্ব ও পক জন্মবিশিষ্ট এক বিপিনে প্রবেশ করিলেন। খনৌক্ষাঃ প্রমূদিতা বনরাজীম ধুচ্যুতঃ। জলধারা গিরেন দিদাসন্ধা দদৃশে গুহাঃ।
কচিম্বনস্পতিকোড়ে গুহায়াকাভিবর্ষতি। নির্বিশন্ ভগবান্ রেমে কন্দমূলফলাশনঃ।
দংখ্যাদনমূপানীতং শিলায়াং দলিলান্তিকে। সম্ভোজনীয়ৈর্ভুজে গোপৈঃ সক্ষর্ণান্বিতঃ।
শাদ্ধশাস্তি দংবিশ্য চর্কতো মীলিতেক্ষণান্। তৃপ্তান্র্যান্ বংসতরান্ গাশ্চ স্বোধোভরশ্রমাঃ।

बीधत्रवामी।

বনৌকস: প্রিকী: প্রমৃদিতা: ভগৰান্ দঁটুশে তথা বনরাজী ম ধুচুতো মধুশ্রবা: দট্শে গিরে: সকাশাজ্জলধারাণ্চ তাসাং নাদা-দাসরা নিকটবর্ষিনী প্রতিশিচ। যথা। বনৌকস: প্রমৃদিতা আসন্ তথা বনরাজীব নরাজয়ে মধুচুতে আসন্ গিরেজদধারাণ্চাসন্ তানেবস্থৃতান্ আদদৃশে সর্বতো দদ্শি ভগবান্। তথা জলধারাণাং নাদাদগৃহাণ্চেতি ॥ ২৪ ॥

বৈক্ষবভোষণী।

ন্তনীরিতি পাঠে স্তত্তনা ইতি প্রার্ট্কালে বিশেষভো জ্ঞানিসম্পদ্ধা শোভাবিশেষং ভততভোগানিসম্পত্তী অপি নিগংপ্রেমবিশেষ-শ্চ ক্রীডাপরিকরক্ষেন দর্শিতঃ ॥২০॥

বনৌক্ষঃ পুলিন্যাদীন্ শুহানাং দৰ্শনে নাদ্স্য হেজুতা দূৰবৰ্তিনীনামপি জ্ণাদিতিরা**জ্লানাম**পি তাসাং প্রতিশ্বস্থাদয়েনাভিব্যক্ষে। দদ্শে দদ্শি ॥

কচিৎ কলিংল্ডিং কণাচিমা তগবানপীতি। অহো অস্যা লীলাযা: পরমমাধ্যানিতি ভাব:। কলম্লরোর্বর্জুলদীর্ঘতাভ্যাং ভেলো লোকপ্রসিম:। তয়ো: প্রার্থি কোমলম্বাদিনা উপাদেয়ম্বাৎ ফলত: প্রান্তি দুর্দশ:॥

উপানীতং স্বগৃহজনৈব স্থিক কৈবৰ নিৰ্বাপিক প্ৰাপিজং সভোজনীলৈঃ সহ ভোজস্বিভবৈয়ঃ আভীলৈঃ সহ। সংবাসাদিশকৰৎ সং-শংকাহত সহাৰ্থঃ। সভুজাতে এভিরিতি তৈঃ ভেমনৈঃ সহেতি বা। সক্ষণ ইতি তত্ৰ স্ক্ৰেল্যাভিপ্ৰাৰেণ ॥

শাঘল ইতি যুগাকং। চর্কান্তঃ রোমস্থারনানাং। নিরীক্ষোভি পরেণারনঃ ॥

প্রীবিশ্বনাগচক্রবর্তী।

তত্র চ ক্লো বনৌকস:। পুলিন্দী: প্রমৃদিতা: দদুশে দদর্শ। বনরান্ধীর ধুচাত: মধুনাং চুরৎ ক্লবণং যাত্র তথাভূতা দদশ গিরে: স্কাশাজ্বধারা দূরবর্ত্তিনীরপি নাদাছেতোর্গেয়া নিকটবর্ত্তিনী দদেশ গুহাল্চ দদশ্॥

মেণেংভিতো বর্ষতি সতি বৃশ্লোড়ে গুহারাং বা নিংশেবেণ জ্বন্ভিজ্তা বিশন্ জবিশন্ কল্ম্ল্রোবর্তুল বলীপ্যভ্যাং ভেগে।
জ্বেরঃ ৪

উপানীতং ছাক ইত্যাধ্যয়া প্রসিদ্ধং পুহল্পনৈঃ প্রাপিতং শিলাগাং স্থিনাতিক ইত্যাদ্যপি কুওডটে ভোজনহাল্যে। দৃশাতে সর্কৈ-বুপি জনৈঃ ॥ ২৪ ॥

স্তনভরে মন্দগামিনী ধেনু দকল শ্রীকৃঞ্চকর্তৃক আছুত হইয়া সত্তর দঙ্গে ২ চলিল কিস্তু তাহাদের স্তন হইতে ত্বন্ধ গলিয়া পড়িতে লাগিল। ২০।

হে কোরব্য! সেই বিপিন মধ্যে বৃক্ষ সকল প্রান্ত্রিক, বনরাজী মধুক্ষরণশীল এবং পর্বাত হইতে জলধারা পতিত হইতেছিল। প্রীকৃষ্ণ চারিদিকেই সে সকল দেখিতে পাইলেন। তথায় জলধারার ধ্বনিতে গুছা সকল শব্দায়গান হইতেছিল। সে যাছা হউক, বনমধ্যে যথন বারিবর্ষণ হইল, তথন শ্রীকৃষ্ণ কোথাও বৃক্ষসূলে, কোথাও বা গুছামধ্যে অবস্থান করিলেন আর কল্দ সূল ও ফলমাত্র আহার করিয়া বেড়াইলেন। অপর সমীপে যে সকল দ্বি অন্ন আনীত হইল জল সন্নিছিত শিলার উপর বিসিয়া সমভিব্যাহারি সক্ষর্ষণাদি গোপগণ সহিত তাহা ভোজন করিলেন। হে রাজন্! সেই সময় শান্তনের উপর শ্যান হইয়া নয়ন-নিদীলনপূর্ব্বক পরিতৃপ্ত রুষ ও বংসতর তথা স্তনভরাক্রান্ত গাভী-

প্রারট্ প্রিয়ঞ্চ তাং বীক্ষ্য সর্বকালস্থাবহাং। ভগবান্ পূজয়াঞ্চক আত্মশৃক্ত্যুপর্ংহিতাং ॥২৪॥ এবং নিবসতোন্ত ব্যিন্ রামকেশবয়োর্জে। শরৎ সমভবদ্যব্তা অচ্ছাম্ব্পরুষানিলা॥ ২৫॥ শরদা নীরজোৎপত্যা নীরাণি প্রকৃতিং যয়ুঃ। ভাষীনামিৰ চেতাংসি পুনর্যোগনিষেবয়া॥ ২৬॥ ব্যামোহব্ত্রং ভূতশাবল্যং ভূবঃ পদ্ধমপাং মলং। শরক্ষহারাশ্রমিণাং কৃষ্ণে ভক্তির্যাহশুভং।।২৭

डी धत्रचामी।

শরদং ৰণ্যতি এবং নিবসভোরিত্যষ্টাদশভিঃ। বিগভানি অব্জাণি যদ্যাং সা অচহানি অসূনি মদ্যাং। অপ্রুষ্ণ শান্তোহনিলো যদ্যাং সা চ দা চ ॥ ২৫ ॥

নীরজানাম্ৎপত্তি র্যয়া তয়া শরদা ক্লতয়া নীরজানাম্ৎপত্তা বা ॥ ২৬ ॥ ব্যোম ইতি ব্যোমাদীনাং চতুর্গাং চতুরো মলান্ শরদহরৎ। আঁশশিমাণাং চতুর্গাং ক্লফে জাতা ভক্তি র্যথা অঙ্ডমহ্বংং হরতি। তথাহি

বৈঞ্চবভোষণী।

তত্তাপি অলীলাযোগ্যতাপাদনার্থমাত্মশক্ত্যাহ্লাদিনীনায়্যা উপর্ংহিতাং। অতঃ পুজয়াঞ্চক্রে সাধু অমন্যত। অন্যচ্চ তত্ত ক্রীড়াদিকমুক্তং শ্রীপরাশরেণ। উন্নতশিধিদারকে তদ্মিন্ কালে মহাবনে। ক্রফরামৌ মুদা মৃত্রে গোপালৈঃ সহ চেরতুঃ। কচিনেগাভি
সমং রম্যাং গেয়তালরতাবৃত্তী। চেরতুঃ কচিদিত্যর্থং শীতবৃক্ষতলাশ্রের। কচিৎ কদৰ্যক্চিত্রৌ মায়ুরশ্রগলক্ষ্ত্রৌ। বিচিত্রৌ কচিদাসাতাং বিবিধৈগিরিধাত্তিঃ। পর্ণশ্যাহ্বসুপ্রৌচ কচিন্নিজান্তরৈষিণা। কচিন্সার্জতি জীমুতে হাহাকাররবৈষিণাবিতি॥ ২৪॥

এবমুক্তপ্রার্ট্ক্রীড়াবিশেষেণ তত্র এজে নিতরাং প্রমাসক্তা বসতোরিতি। তত্র শর্জ্জীবিশেষস্পত্তিহেত্রক:। অত: সম্যগ্ ভবং॥২৫॥

তেষামুত্তরপক্ষে নীরজোৎপত্ত্যা সহ ইতি যোজাং ॥ ২৬॥

যথা ক্লফে জাতা ভক্তিরেকা সর্বেধামেবাশ্রমিণামণ্ডভং মহাকষ্টময়ং তত্তজ্বাস্থানং হরতি। তাবৎ কর্মাণি কুর্বীত ন নিবিদ্যেত যাবতা। মৎকথাশ্রবণাদৌ বা শ্রদ্ধা যাবল্ল জায়ত ইত্যাদেঃ। তথা শর্দপ্যেকা ব্যোমাদেরাব্রক্তাৎ কট্টময়মব্লাদিকং জহার।

क्यमन्दर्धः।

তত্রাপি স্বলীলাযোগ্যাযোগ্যতাপাদনার্থমাত্মশক্ত্যা হ্লাদিনীনায়্যা উপরুহিতং ॥২৪। ২৫। ২৬॥

ব্যোমোহব্ ভ্রমিতি। সাধনক্রেশেন তুল্যং ক্লেশ্চাত্ত ক্লেশেছধিকভরতেধানব্যক্তসক্তচেতসামিত্যক্ত শ্রীগীতাস্ক্ত: ॥২৭।২৮।২৯।৩০। ৩১। ৩২।৩৩।

वीविधनाशहकवर्ती।

শরদং বর্ণরত্যেবং নিবস্তোরিত্যপ্রীদশভিঃ স্বজ্ঞানি অস্থান যাগাং অপ্রুষো ইনিলো যাগাং সা চ সা চ সা ॥ ২৫ ॥
নীরজানামুংপত্তির্বস্যাং তয়া শরদা হেতুনা। অত্র ভক্তিযোগনিবেবয়া সাম্যং শরদোভগবৎক্রণেন সাম্যং নীরজস্মৃতীয়ম্পাদেয়া ॥২৬
ব্যায় ইতি ব্যোমাদীনাং চতুর্বাং চতুরোমলান্ শর্জ্জহার। যথা আশ্রমিণাং চতুর্বাং সৎসক্ষপ্রাহ্ত্ তা ভক্তিরভাভং আশ্রমায়সকল রোমন্থন করিতেভিল । ভগবান্ তাহাদিগকে সর্ব্বকালীন স্থাবহ দেখিতে লাগিলেন। পরে

হে মহারাজ ! রামকৃষ্ণ তুইজনে এই প্রকারে র্ন্দাবনে বাস করিতে থাকিলে ক্রমে ২ বর্ষা অতীত ও শরৎ সমাগত হইল। অতএব মেঘ অপগত, জলাশয় স্বচ্ছ এবং পবন অপরুষ হইয়া উঠিল ॥ ২৫ ॥ শরৎকালে স্বভাবতঃ জলাশয় সকলে কমল উৎপন্ন হয়, স্থতরাং ঐ কমল উপস্থিত হওয়াতে সম্দায় জলাশয়ের জলা সেই রূপে নিজস্বভাব প্রাপ্ত হইল, যেমন ভ্রম্ভ ব্যক্তিদের চিত্ত যোগসেবা করি-লেই পুনরায় স্বীয় প্রকৃতি প্রাপ্ত হয় ॥ ২৬ ॥

বর্ষার শোভা নয়নগোচর হওয়াতে তিনি আপনার শক্তিতে বর্দ্ধিত ঐ শ্রীর সমাদর করিলেন॥ ২৪॥

অপর, যেমন শ্রীকৃষ্ণের প্রতি উৎপন্না ভক্তি ব্রহ্মচারী, গৃহী, বানপ্রস্থ, ভিক্ষু, এই প্রকার আশ্রমি-

সর্ববং জলদা হিত্বা বিরেজু: শুভ্রবর্চস:। যথা ত্যক্তৈষণাঃ শাস্তা মুনয়োমুক্তকি লিষাঃ।। ২৮।।
গিরয়ো মুমুচুক্তোয়ং কচিন্ন মুমুচু: শিবং। যথা জ্ঞানামৃতং কালে জ্ঞানিনো দদতে ন বা॥ ২৯।।

शिवत्यामी।

ব্রদ্ধারিণা শুর্কথোদকাহরণকুন্তং যথা ভক্তি ইরতি তয়া পূর্ণদ্য তেনামুপ্যোগাৎ শুক্তরিপি রুতার্থস্য তস্যা নিয়োগাৎ এবং ব্যামঃ অব্ বং শরজ্জহার। যথা চ গৃহিণোহপত্যাদিসান্ধর্যাং ভক্তি হরতি বিবিক্তবাসকচ্যৎপরে:। তথা ভূতানাং শাবল্যং সান্ধর্যাং শরজ্জহার বর্ষাস্থ হি বৃষ্টিভিয়। সন্ধ্বা নিবসন্তি। যথা চ বতীনাং কানাদিবাসনানলং শীক্ষে ভক্তি হরতি। এবং অপাং মলং শর্দিতি॥ ২৭ ॥

তাজৈষণা: তাক্তা: পুত্ৰবিত্তলোকৈষণা থৈতে ॥ ২৮ ॥

গিরম ইতি। অন্ধং ভাব:। নহ পাধ্যারা: কর্মবিদ্যামিব জ্ঞানিনো জ্ঞানামৃতং সর্বতো বিতরতি অপিতু ক্লপমা কচিদেব। এবং গিরম:

বৈষ্ণবতোষণী।

এবং কটনয়ত্বেনৈব সামাং। ক্রমরীত্যা তত্তিধিশেষয়োঃ কথিকং সাম্যব্যাখ্যারাং অপি লক্ষণাপরস্পরয়া তত্তদহুষ্ঠানসামাত এব পর্যাবসানাং। কামাদিবাসনানাং গুরুসেবাদিবদাশ্রমান্তঃপাভাভাবাত্তবাসনাক্যার্থ্যমনির্মাদাস্থান এব তাংপদ্যাং। কিং বহুনা বতীনামব্যক্তাসক্তচিত্যাদিত্বমপি কটমেব। ক্রেশোহধিকতরত্তেষামব্যক্তাসক্তচেত্যাং ইতি শ্রীভগবলগীতাভাঃ। অনাতঃ। তত্ত্ব গুরুর্থাদিকাহবণকুত্তমিতি গুরুর্থমুদককুত্তাহরণাস্থ্যমিত্যর্থঃ। কামাদিবাসনামলমিতি তহাসনাক্রপাস্থ্যমিত্যর্থঃ। এবং সাক্ষ্যদিপ তজ্জনিতাপ্রথমিত্যর্থঃ। কিন্তাশ্রম্পমিত্যর্থঃ। ক্রিলাশ্রম্পমিত্যর্থঃ। ক্রিলাশ্রম্পমিত্যর্থঃ। ক্রিলাশ্রম্পমিত্যর্থান ব্রক্তিত আদ্বাদ্রশেশ্ব ন বিবক্ষিতঃ । ২৭॥

কিবিষং সংসারহেতুকর্মতন্ত্যাগাদের ত্যকৈষণাঃ তন্মাদের শান্তা অকুভিতচিন্তাঃ ॥ ২৮ ॥

গিরম ইতি তৈব্যাখ্যাতং। তত্ত রূপায়াং হেতুং পাত্রদালা বাং জেয়ং। গিরিপকেছিপ গলাঘমুনাদিখাতরেখাত্বেব নতু ক্রণাত-

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

ষ্টেয় কৃত্যক্রপং অমঙ্গলং ছংখং যথা হরতি। ভক্তিমতাং বর্ণাশ্রমধর্মানধিকারাদের তত্তদকরণাথ। তথাছি ব্রন্ধচারিণাং কর্মি গুরুপ-সত্তিপ্রাপ্তগোচারণাদিকেশং ভক্তির্যথা হরতি তথা শরং ব্যোমোহব্লুং আবরকং মেঘং। অলমিতি চ গাঠঃ। মথা চ গৃহিণং শ্রাদ্দি বিধিপ্রাপ্তকুট্থাদিসান্ধ্যাক্রেশং ভক্তিহ্রিতি। তথা শরং ভ্তানাং সাবলাং বর্ষান্ত বৃষ্টিভয়াদেকতা বসতাং সম্মন্ধং হরতি শবদারন্ত-এব তেয়াং পৃথক্ পৃথক্ স্থানগনাথ। যথাচ বনস্থ্যা মলধারণক্রেশং ভক্তি হ্রতি এবং ভূবং পৃষ্ণ শর্থ। যথাচ যতীনাং প্রশ্বজীবৈক্য-ভাবনাক্রেশ্রপং মালিনাং ভক্তিহ্রতি। ক্লেশোহধিকতরন্তেশামব্যকাসক্তচেত্সামিতি গীতোকে:। এবমপাং মলং শর্দিভূগণাদেমা॥২৭ ভাকেলগান্তাক্রাং পুত্রবিভলোকৈষণা বৈত্তে। ইতীয়মুপাদেয়া॥ ২৮॥

জ্ঞানানৃতং ভগ্ৰত্তবোপদেশং জ্ঞানিনো নারদভ্রতপ্রস্লাদাদয়ং। ব্যাধ্রহুগণ্দৈত্যবালকাদিৰু দদতে অন্যত্র ন দদতে ইতি

দিগেরই অশুভ হরণ করে, তাহার ন্যায় শরৎ ঋতু আবিভূতি হইয়া আকাশাদি চারিভূতের চারিটা মল অপহরণ করিল। অর্থাৎ যদ্ধপ ব্রহ্মচারির ভক্তি জন্মিলে তাঁহার গুরুর নিমিত্ত উদকাহরণ কর্মনিরত হয়, কারণ ভক্তিতে সন্তুট্ট হইয়া কৃতার্থ শিষ্যকে গুরু আর কোন কর্মে নিয়োগ করেননা, তেমনি শরৎ প্রবৃত্ত হইলে আকাশের মেঘ সকল নির্ত্ত হইল। এবুং যদ্ধপ গৃহস্থাশ্রমির নির্দ্দনবাদে অভিলাঘোৎপত্তি হেতু পু্লাদির সম্বর্তা অপগত হয়, তদ্ধপ, শরদাগমে ভূতগণের সম্বর্তা অপগত হইল। অপর, যেমন বানপ্রস্থাশ্রমির মলধারণজন্য ক্রেশ হরিভক্তির প্রভাবে বিন্ত হয়,তবং শরহ প্রতি হেতু ভূমির কর্দ্দম বিন্ত হইতে আরম্ভ হইল, আর যেমন যতিদের কামাদিবাসনারপ মল কৃষ্ণভক্তিতে দ্রীভূত হয়, তবং শরদাগমে জলের আবিলতা দ্রীভূত হইল॥ ২৭॥

এই কালে মেঘগণ সর্বাস্থ পরিত্যাগপুর্বাক শুল্রবর্ণ হইয়া তজ্ঞপ বিরাজমান হটুল,যেগন পাপশূন্য মুনিগণ পুত্রও ধনাদিবিষয়ক বাসনা পরিত্যাগ করত শান্তভাবে শোভা পাইয়া থাকেন ॥ ২৮॥ •

এই সময় পর্বতগণ দেইরূপে কোথাও নির্মাল জল বর্ষণ করিতে লাগিল, কোথাও বা কিছুই

নৈবাবিদন্ ক্ষীয়মাণং জলং গাধজলেচরাঃ। যথায়ুরশ্বহং ক্ষয়ং নরা মূঢ়াঃ কুটুন্ধিনঃ।। ৩০।। গাধবারিচরাস্তাপমিনন্দন্ শরদর্কজং। যথা দরিদ্রঃ কুপণঃ কুটুন্ধ্যবিজিতেক্রিয়ঃ।। ৩১।। শনৈঃ শনৈজ্ঞঃ পক্ষং স্থলান্যামঞ্চ বীক্লধঃ। যথাহং মমতাং ধীরাঃ শরীরাদিয়নাত্মস্থা। ৩২ !।

শ্রীধরস্বামী।

শিবং নির্মালং তোমং কচিকুমৃচু: কচিন্ন ন পুন: প্রার্মীব সর্বাত ইজি ॥ ২৯ ॥

গাধে কুদ্রে জলে চরস্তীতি তথা নীনাদয়: ॥ ৩০ ॥

ष्यविमन् लिखित ॥ ७১॥

শনৈঃ শনৈরিতি অত্র চ মমতানিব পঙ্কং অহস্তামিব আমতাং অপক্তাং জহুরিতি॥ ৩২ ॥

देवकवरङावनी ।

রেথাস্থিতি কচিদশু হণাং। মোচনবিষয়দৈয়ৰ উভয়ত্র বিবক্ষিতবং নতু **তদাশ্রর**দ্যেতি ॥ ২৯ **॥**

গাধজলচরত্বেন জলক্ষ্মজ্ঞানহোগ্যভোজা। তথাপি নৈবাবিদন্। দৃষ্টাত্তে চ কুটুবিবেন কুটুব্যরণাদিদর্শনাদায়; ক্ষ্মজ্ঞানং সম্ভাবিত্যের ॥ ৩০ ॥

নচ তেষাং জলক্ষ্মানেন ভয়াদিরাহিত্যাং স্থাং কিন্ত হংখং মহৎ স্যাদেবেত্যাহ গাধেন্তি। শরদর্কম্পনিতি তাপস্য তৈক্ষমুক্তং। দবিদ্যোনির্ধানিতর কুপণং ধনার্ধোদ্যমক্লিইন্তরাপি কুটুষী স্ত্রীপ্রাদিভরণার্থবহলধনাপেক্ষক ইত্যর্থং। তত্ত্রাপ্যবিজিতে ক্রিয়ং লোভাদিপর ইত্যর্থং। তাপং ত্রিবিধং শভাতে ॥ ৩২ ॥

মমতায়া বাহুবিষয়ৰাৎ পৰেনাহস্তায়াশ্চান্তরবিষয়বাদামতয়া সামাং॥ ৩২ ॥

শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

ক্কতার্থীবৃত্ধহৈবোপাদেয়া। তেখাং গিরীপাঞ্চ স্বভাব এবায়মচিস্তাত্তান্ধাত্ত ব্যক্তনীয়া। পাত্রসাক্ষ্পাদেহে তুতে তেখাং জুল্য-দর্শিত্বং তৎক্রপায়ান্চ নিরুপাধিত্বং ব্যাহতং স্যাদিত্যবধেষং ॥ ২৯॥

গাধে ২ল্লপ্রমাণে জলে চবন্তীতি তে মীনাদয়:। ইতীয়ং হেরা॥ ৩০॥

অবিনান্ লেভিবে যথা দরিতা ইতাতঃ পূর্কালোকে সম্পালাঃ কুটুঝিনো জ্ঞেয়াঃ। যথা। তেবানেব তাপং বর্ণয়তি গাধেতি ॥ ৩১ ॥ আন্তা ভক্তান্ত্রো জীবাত্মা প্রমাত্মা কৃষ্ণত তথাতিরিকেন্ত্ শ্রীরাদিষ্। তত্র তত্র তু অহস্তামনতে যদ্পেন তাবয়িছেতি ভাবঃ। ইত্যুপাদেয়া ॥ ৩২ ॥

করিল না, যেমন জ্ঞানিগণ ক্লপাপরবশ হইয়া কোন ব্যক্তির প্রতি জ্ঞানাম্ভ বিতরণ করেন, কাহাকেও বা কিছুই প্রদান করেন না, অর্থাৎ উপাধ্যায়গণের কর্মবিদ্যা উপদেশের ন্যায় সর্বত্ত জ্ঞানিরা যেরূপ জ্ঞানাম্ভ বিতরণ করেন না, তক্রপ বর্ধাকালের ন্যায় শরৎকালে পর্বত্রগণ সর্বত্ত নির্মাল বারিবর্ধণ করিল না॥ ২৯॥

এই কালে দিনকরের প্রাঞ্চর কিরণে প্রতিদিন জলাশয় সকলের জল পরিক্ষীণ হইতে আরম্ভ হইল কিস্তু যে সকল মীনাদি অন্তাল্ল জলে চরিয়া বেড়ায় তাহারা তদ্বৎ তাহা জানিতে পারিল না যেমন কুটুম্বাসক্ত ও মৃচ্ মানবগণ প্রতিদিন পরিক্ষীয়মাণ পরমায়ু জানিতে পারে না॥ ৩০॥

পরস্তা, যেমন অজিতেন্দ্রিয় দরিদ্র কুপণ কুটুম্বী জন সন্তাপ প্রাপ্ত হয় তাহার ন্যায় অল্ল জলচর মৎস্যাদি জন্তগণ শরৎকালীন রবি জন্য সন্তাপ প্রাপ্ত হইল॥ ৩১॥

যেমন ধীর পুরুষেরা অল্লে ২ অনাত্ম (শরীরাদিতে)''মমতা ও অহস্তা' ইত্যাদি ভেদবৃদ্ধি পরিত্যাগ করিয়া থাকেন তেমনি শরৎকালের আগমনে স্থলী সকল মমতার ন্যায় পঙ্ক আর লতা সকল সহস্তার ন্যায় অপকতা অল্লে ২ পরিত্যাগ করিল ॥৩২॥



নিশ্চলামুরভূত্ঞীং সমুদ্র: শরদাগনে। আত্মসুপরতে সম্বা নির্পিরতাগমঃ।। ৩০।। কেদারেভ্যস্তপোহগৃত্ধন্ কর্ষকা দৃঢ়দেতুভিঃ। যথা প্রাণেঃ অবজ্জানং তর্মিরোধেন যোগিনঃ॥৩৪॥ শরদর্কাংশুজাংস্তাপান্ ভূতানামুড়ুপোহহরং। দেহাভিমানজং বোধো মুকুন্দো অজ্যোষিতাং॥৩৫॥

<u>ज</u>ीधत्रशागी

আর্ত্রপরতে ত্যক্তক্রিয়ে মুনিরিব নিশ্চলাত্ম স এব ব্যুপরতাগম: নির্ত্তবেদণোষ ইব ভূফীমভূদিতি ॥ ৩০ ॥
কেদারেভ্যা বদ্দেত্রভাগা তুট্ছে সেভূভিঃ অপোহগৃহুন্ ততঃ পরং বৃষ্ট্যভাবাং । প্রাণৈরিজ্ঞিষ্য । ভ্রিরোধেন ইক্সিয়প্রত্যাহারেণ ॥ ২৪ ॥

দেহাভিমানজং বোধ ইব। ব্ৰজ্যোষিতাং মুকুন্দ ইব চেতাৰ্থ:॥ ৩৫॥

देवक्षवरणावनी।

সমুজ ইতি পূর্বোক্তসির্বং। সমাশুপরতে পরিতাক্তকিরে। আয়নি স্বন্ধি অন্টে:। তত্র সূত্র সমুজ এব তৃফী-স্বভূবেতায়য়ঃ। ব্পেরতেত্যাদি দ্যং মুনিবিশেষণং ক্লেরং। যদা। কামাদিভ্যো বিরতে চিত্তে যতো মুনিরাত্মারামঃ অতএব ব্পেবতাগমঃ গৃহীতমৌন ইতার্থঃ॥ ৩৩॥

ভবিঃ সেতৃভিঃ কেদারেত্য: ব্রবস্থীরপঃ দৃঢ়ৈঃ সেতৃভিরগৃহন্ অরকন্। প্রানৈরিক্তিরৈঃ ক্ভিতি ছবিভৃতিঃ ছেভাঃ ব্রহন্জানং যথা রক্ষীত্যথঃ ॥ ৩৪ ॥

শরদিতি লুপ্তোপমেরং। ব্যবহারিকাণাং ভাদৃশভাপ্ছরণে উড়ুপো বিশিষ্টঃ পারমার্থিকানাং বোধ আত্মজানং তদেকায়ুবক্তানাং এজবোধিভাত্ত মুকুন্দ এবেতি ভাগাং বৈশিষ্ট্যং বোধিতং। আসাং তাপশ্চানির্ব্ধচনীয়তাবিবক্ষরা প্রসিদ্ধত্যাচায়ুকোইপি ক্ষণং ম্থা-শতমিব যাসাং বেন বিনা ভবদিতামুসারেণ ক্ষেয়ং। বক্ষ্যভেচ আলিষ্য ইত্যাদে গোপ্যোহপি কৃষ্ণকৃতচেত্স ইতি॥ ৩৫ ॥

ক্রমসন্দর্ভঃ।

কালে প্রাপ্তসান্ধূণ্যধাত্রাবসরে অন্যথা ভদভাবে কেদারেভ্য: স্তবস্তীরিভি লিক্ষবিপরিণামেন॥ অত্র প্রণালীভিরিভি শেষ:। স্বর্দিত্যত্র চাত্মন ইভি শেষ:॥ ৩৪॥

দেহাভিমানজমিতি শসঃ স্থানে অমাদেশঃ। ব্ৰজ্যোষিতামিতি সন্ধ্যাদিসময়ে দুর্শনাদিনা বিরহতাপানিতি স্ক্রেং॥ ৩৫। ৩৬। ৩৭॥

🔊 বিখনাথচক্রবর্তী।

আৰম্ভণরতে ত্যক্তক্রিয়ে স্তি নিশ্চলচিত্তো স্নিরিব নিশ্চলাখুঃ সমুদ্রঃ মথুরাপশ্চিমদিশি শাতোবাস ইতি থ্যাতঃ। ব্যুপরতা-গমো নির্ভবেদঘোষো ম্নিরিব। তৃষ্ণীমিতীয়মুপাদেয়া ॥৩০॥

কেদারেভাঃ অবস্তীরপঃ দৃঢ়ৈঃ সেভ্ভিরগৃহন্ ররক্ষঃ। যথা গোণৈরিক্সিরৈক্রিয়কেটিভঃ অবজ্ঞানং তেষামিক্রিযাণাং নিবোধেন প্রত্যাহারেণেত্যুপাদেরা॥ ৩৪॥

যথা দেহাভিমানজং তাপং বোধঃ। যথা চ ব্ৰজ্যোৰিতাং বিরহতাপং মুকুক্ষ ইত্যুগাদেয়া ॥ ৩৫ ॥

হে রাজন্! আখার ক্রিয়া পরিত্যাগ হইলে মুনি যজ্ঞপ নিশ্চল হর্ম তজ্ঞপ শরদাগমে সাগর নীরব হইয়া উঠিল ॥ ৩৩ ॥

অপর যেমন যোগিগণ ইন্দ্রিয়গণ দ্বারা বিগলিত জ্ঞান ইন্দ্রিয়প্রত্যাহরণ করিয়া গ্রহণ করেন, এই সময়ে কৃষক লোকেরা তজ্ঞাপ স্বস্থ ক্ষেত্রে দৃঢ়তর সেতু করিয়া সেতুবদ্ধ কেদার হইতে জল গ্রহণ করিতে লাগিল ॥ ৩৪ ॥

রজনীযোগে চন্দ্র শরৎকালীন দিনকরজন্য প্রাণিগণের সন্তাপ তদ্বৎ হরণ করিলেন, ষেমূন বোধ (আত্মজান) দেহাতিমানজন্য সন্তাপ এবং মুকুন্দ ব্রজাঙ্গনাদের মনস্তাপ হরণ করিয়া থাকেন॥৩৫॥

খনশোভত নির্দ্ধেবং শর্রদ্বিদ্ধারকং। সত্ত্যুক্তং যথা চিত্তং শব্দব্রহ্মার্থদর্শনং। অথওমণ্ডলো ব্যোহ্মি ররাজোড়ুগুটণঃ শশী। যথা যতুপতিঃ ক্ষোে র্ফিচক্রার্তো ভূবি॥ ৩৬॥ আফ্লিয়্য সমশীতোফং প্রসূনবনমারুতং। জনাস্তাপং জহুর্গোপ্যোন কৃষ্ণহৃতচেত্যঃ॥ ৩৭॥

श्री ध्रयामी ।

শবদা বিনলান্তারকা যশ্মিন্ তং। শক্সক্ষণো বেদস্যার্থান্ পূর্ব্বেভিরমীমাংশানির্বীতান্ দর্শয়তীতি তথা তদিব ॥ ৩৬ ॥ সমঃ অন্নোধিকঃ শীভঃ উষণ্ট তং। নতু গোপ্যঃ ক্লফ্ডচেডখেন তাসাং শ্র্যসূহ ইতি। বহা নকার উপমার্থঃ তদা কুক্ষ্তচেতস ইতি চেত্সা কুষ্ণমালিয়্য যথেতার্থঃ॥ ৩৭ ॥

देवकृवट्यायनी।

থমিতি থস্য স্থানে চিত্তং জ্ঞেয়ং। নির্দেষতায়া: সত্ত্যুক্ত ও তেন মেঘস্থানীয়রজন্তমোনিষেধাং। শরদ: শক্তরজ। তারকাগাং তদর্থা: তারকাশক্ষেন্চ চন্দ্র এব মুখ্যবেন গৃহতে। তদীশবাং। তহ্কেং। নক্ষত্রেশঃ ক্ষপাকর ইত্যাদেঃ। তত্র চন্দ্রস্য ভগবস্তবং অন্যেষাং বন্দেহথা ইতি॥

তথৈবাহ অথণ্ডেতি। চক্রদ্য পূর্ণিমাপেক্ষয়া শ্রীক্ষণস্য চ স্বয়ং ভগবত্তাপ্রাকট্যাপেক্ষয়া তত্র যদ্যপি বর্ষাস্থপি শশিনস্তাদৃশন্য সোড়ু-গণস্য স্বতো রাজ্যনানত্ত্বমন্তেয়ব কিন্তু ঘনাচ্ছন্নতন্ত্বা ন দৃশ্যতে শরদি তু তদভাবাৎ দৃশ্যতে তথা যহপতেরপ্যপ্রাকট্যসময়াইসারেণ যোজ্যং। যহপতিরিত্যধিকোক্ত্যা যহ্ভি: সহ তস্য নিত্যসম্বন্ধো জ্ঞাপ্যতে। বৃক্তিশন্তনিধিশোহত্ত যহ্বু তেবাং প্রাধান্যাপেক্ষয়া॥ ৩৮॥

নতু গোপ্য ইতি বিশেষোক্তিত্তত্ত্ব হেতুমাহ ক্ষেতি। ততত্তেনোদীপনাং। প্রত্যুতাধিকং তাপং প্রাপুরিতার্থঃ। ষধাতুপ্রয়োগ-স্তমেব স্পষ্টীক্বতবান্। যোগিনাং মনসি প্রবিশ্ব সম্পদে কল্লিতুং আসান্ত মনো হলা বিপদে কল্লিতুং যুক্ত এবেতি ভাবঃ। মুকুন্দো ব্রজণোধিতামিতি তাসাম্বরাবয়া দৃষ্টান্তিতা। অনেন তু পূর্কাবেস্থেতি॥ ৩৭॥

🗷 বিশ্বনাথচক্রবর্তী।

শক্ষত্রক্ষণো বেদস্য অর্থাঃ নির্ভ্তকর্মজ্ঞানভক্তিযোগাঃ তেষাং দর্শনং জ্ঞানং যত্র তং। চিত্তং কীদৃশং সত্ত্যুক্তং সাধুত্যুক্তং। তত্র থস্য চিত্তেন সাম্যং। নিমে হিত্বস্থা সত্ত্যুক্তত্বেন। শক্ষত্রক্ষণা শবদঃ। নির্ভ্তকর্মজ্ঞানতপোযোগৈস্তারাণাং। ভক্তিযোগেন তারাপদগম্যস্য তার-কেশস্য। ইতীয়মুপাদেয়া॥

সম্পূর্ম ওলত্ত্ব্য স্বয়ং ভগবত্ত্বেন সান্যং। যত্থতিত্ত্বন ওষধীশত্ত্ব্য বৃষ্ণিচকৈন কোপনন্দ্ৰত্ত্বেশ বিজ্পতিশ্ব দৃশ্যানাম্ভূগ-গানামিতীয়ং ধ্যানার্ম্পাদেয়া॥ ৩৬॥

সম: অন্নাধিক: শীতশেচাকাণ্ট তং। নতু গোপাস্তাপং জহুৰ্যত: কৃষ্ণস্তচেত্ৰাে বিবহিণা: প্ৰত্যুত তং মাক্তমালিবা তাপং প্ৰাপ্রেবিভি ভাব:। অত্ৰ প্ৰক্ৰমভঙ্গাভাবাৰ্থং কেচিদেবং ব্যাচক্ষতে। গোপা ইত্যনস্তবং কৃষ্ণমিবেতি শেষো দেয়:। কীদৃশ্য: ন কৃষ্ণ-স্তানি অপি তু হতান্যেব চেতাংসি যাসাং তাঃ। শিরশ্চালনে নঞ্। নৈক্কীর্তিনিক্যশা ইতি বল্লোপাভাবঃ। চেতশ্চৌরা-ত্রাব্লাং স্বয়েচেত আদাহ্মিবি তমালিবাস্থাহিপি তা স্থন প্রাপ্রিতি ভাবঃ॥ ৩৭॥

শরদাগম হেতু গগণমণ্ডলে তারকা দকল বিমল হইয়া উঠিল, অতএব যজপ শব্দত্রকোর (বেদের) অর্থ অর্থাৎ পূর্ব্বমীমাংসা (জৈমিনিকৃত কর্মকাণ্ড মীমাংসাদর্শন) ও উত্তরমীমাংসা (ব্যাসকৃত জ্ঞানকাণ্ড ব্রহ্মমীমাংসা — শারীরক সূত্র — বেদান্ডদর্শন) দ্বারা নিণীত পদার্থেরদর্শক এবং সত্ত্বওণযুক্ত বস্তু শোভা পায় তক্রপে গগনমণ্ডল এই সময় নিশ্মেঘ হইয়া শোভা পাইতে লাগিল। অপর আকাশের উপর নিশীথনাথ চন্দ্র অথণ্ডমণ্ডল (সম্পূর্ণ) হইয়া নক্ষর্ত্তগণ সহ তক্রপ বিরাজমান হইলেন,যেমন যতুপতি কৃষ্ণ ব্রফিচক্রে পরিবৃত্ত হইয়া ভূমণ্ডলে বিরাজমান হয়েন ॥ ৩৬॥

ি থেমন কফছতচিত্ত গোপীগণ চিত্ত দারা শ্রীকৃষ্ণকৈ আলিঙ্গন করত সন্তাপ পরিহার করেন, তহুৎ এইকালে জনসকল সমশীতোষ্ণ পুষ্পাবন আশ্লেষ করিয়া তাপ পরিত্যাগ করিতে লাগিল॥ ৩৭ ॥ গাবো মৃগা থগা নার্য্যঃ পুষ্পিণ্যঃ শরদাভবন্। অশ্বীয়মানাঃ স্বর্ধৈঃ ফলৈরীশক্রিয়া ইব॥ ৩৮॥ উদহুষ্যন্ বারিজ্ঞানি সূর্য্যোত্থানে কুমুদ্ধিনা। রাজ্ঞা তু নির্ভয়া লোকা আসন্ দৃদ্যূন্ বিনা নৃপ॥৩৯॥ পুর গ্রামেষাগ্রয় গৈরিন্দ্রিষ্টের্শ্চ সহোৎসবৈঃ। বভৌ ভূঃ প্রশাস্যাত্যা কলাভ্যাং নিতরাং হরেঃ ॥৪০

श्रीधत्रवागी।

পুশিণোগির্ভিগঃ অধীয়মানাঃ স্বর্থের স্বপতিভিঃ অনিচ্ছস্ত্রোহপি বলাদমূগম্যমানাঃ। ঈশ্বরারাধনার্থাঃ ক্রিয়া বলাৎ ফলৈরমূগ্ম্য-মানাঃ সমস্ত্রভাগগর্ভা যথেতি ॥ ৩৮॥

কুমুং কুমুদং কুংসিতে মূল্বস্যেতি দক্ষ্যাম্যং॥ ৩৯॥

আগ্রয়ণৈন বান্নপ্রাণনার্থে বৈ দিকৈ:। ঐক্তিয়ৈরিজিয়ার্থে লে কিকেশ্চ মহোৎসবৈ:। কলা আভাং বানক্ষাভাং দর্শনাদি-মহোৎসবাভাাং॥ ৪০॥

देवकवट्यावनी ।

মৃগাং থগা ইত্যার্যং। মৃগ্যং থগাঃ। অভারেঃ। পৃশাং ঋতুকারী ধাতুরিশেষত্ত্বতাঃ সত্যঃ অর্বরং প্রস্ববিশেষস্পাদকস্বস্ব-পুংতিঃ প্রার্থনাং বিনাপ্যস্বীয়মানা বভূব্ঃ। ফলৈঃ ফলবিশেষস্পাদকৈরপূর্ককৈরপূর্কেঃ॥ ৩৮॥

বারিজশব্দেনাত্র বার্গ্রবপূপমাত্রং গৃহতে নতু ক্মলমেব। কুম্দনিষেধারপপতেরেশেকিশক্ষবং সামাজমেব আছ্সিতি। কুম্দানাং বাত্রিবিকাশিরাদ্যসামাং। রাজ্ঞা তভোগানে সিংহাসনপ্রথমারোহে উদ্যমে বা লুপ্রোপমেয়ং। যথা দ্যানিতি বা পাঠ: নূহপতি দৃষ্টাস্তম্যাপি দৃষ্টাস্তস্চনা॥ ৩১॥

প্রের্ শ্রীমথ্রাদির্ প্রামেদ্ব প্রামের্ শ্রীনন্দাবাদাদির্। আগ্রাইণরিতি। নবারং নৈব নন্দারাং নচ স্প্রে জনার্দিনে। ন ক্ষণ-পক্ষে ধহবি ত্লায়াং নৈব কার্ছে। ইত্যুহ্লারেণ বৃশ্চিকে প্রেষোধ্যনস্কর্মেব ইনং জ্ঞোং শর্দস্কর্মাত্ব শর্দার্বহার:। ঐক্রিইয়েচ মহোংসবৈরিতি ইক্রমিন্সির্কামস্ক ইত্যুক্ত ছাৎ ইক্রপূজামরৈরিত্যর্থ:। কার্ত্তিক্রমধ্যে হি তৎপূজা ব্রজাদৌ পূর্ব্যাদীৎ। তাং গগনিব্র শ্রিক্রিতা গোবর্দার্ক্য প্রবিত্তিতি। ইক্রপূজায়াত্ত লোকপ্রশার্পাপ্রস্ক শ্রিক্রাজন মংস্তে। কীনূশী চুহ বেঃ

ক্রম**দন্দর্ভঃ**।

মুগাঃ মৃগাঃ থগাঃ পুশিণাঃ ঋতুমতাঃ। তাঃ স্বর্ধৈরবশা মধীয়মানা অভবন্ ফলৈরীশক্রিশা ইব ॥ ৩৮। ৩৯॥ হবেঃ কলা পুথী। আভাগং রামক্ষাভাগং॥ ৪০। ৪১॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্ত্তী।

নুগা: মৃগ্য: থগা: থগা:। স্বর্ধা: স্বস্থতিভির্বীয়মানা: অনিচ্ছস্তোহপি সম্ভোগার্থমহুগম্যমানা: ঈশক্রিয়া ভগবদাবাধনলকণা: ক্রিয়া নিদ্ধামা অপি ফলৈ: স্থতোণাদিভি:॥ ৩৮॥

কুমৃৎ কুমৃদং কুংসিতেষু মৃং যস্যেতি দহ্যসাম্যং॥ ৩৯॥

আগ্রাই নিবারপ্রাশনার্থি বৈ দিকৈ:। নবারং নৈব নশারাং ন চ হ্বপ্তে জনার্দনে। ন ক্ষণদক্ষ ধর্ষি তুলারাং নৈব কার্মেদিতি ব্রুতে:। প্রবোধন্যক্ষে বৃশ্চিকে ইতি জ্ঞেয়ং। শরদস্তমান্ত্র শরদাবহার:। ইন্দ্রিরিক্সদেবতাকৈ:। ইক্সমণ্ডকাং পূর্কিদ্যা: শরদো বর্ণনিদিং। কীদৃশী ভূ: হরে: কলা শক্তি:। আভ্যাং রামক্কাভ্যাং। বহা। হরেশ্চক্রদ্য কলাভ্যাং শুক্ষিতীয়া সায়মুদিতাভ্যানুং-

রাজন্! শরদাগমে গো, মৃগ ও পক্ষিগণের নারী, ইহারা অনিচ্ছ ইংলেও স্বস্ব পতি কর্ত্ক অনুগ-ম্যমানা হইয়া তদ্বৎ গর্ত্তবা হইল,যেমন ঈশ্বরের আরাধনার্থ ক্রিয়া বলে ফলকর্ত্ক অনুগম্যমানা হইয়া ভোগগর্ত্তা হয় অর্থাৎ সমস্ত স্বর্গাদি স্থথভোগের অবত্বে প্রদায়িনী হইয়া থাকে॥ ৩৮॥

অপর হে নৃপ! এই সময়ে দিবাকরের প্রকাশে কুমুদ্যতীত যাবতীয় জলজপুষ্প উৎসূল হইল, যেমন রাজার প্রকাশে দ্যু ব্যতীত সমস্ত লোক নির্ভয় ও প্রফুল্ল হয় ॥ ২৯॥ •

এই সময়ে পুর ও গ্রাম সকলে লোকিক বৈদিক মহোৎসবধারা পকশস্যুক্তা ভূমি শোভা পাইতে লাগিল সত্য, কিন্তু ভগবান্ হরির কলা (পৃথিবী) রাম ও কৃষ্ণদারা তাহাদের অত্যর্থ শোভা হইল ॥৪০ বণিঙ্মুনিনৃপস্নাতা নির্গম্যার্থান্ প্রপেদিরে। বর্ষক্ষা যথা সিদ্ধাঃ স্বপিশুন্ কাল আগতে ॥ ৪১ ॥ ৯॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং দশমক্ষে বৃন্ধাবন-ক্রীড়ায়াং প্রারুট্শরঘর্ণনং বিংশোহধ্যায়ঃ ॥ ॥ ২০ ॥ ৯॥

শ্ৰীশুক উবাচ॥

ইথং শরৎ স্বচ্ছজ্ঞলং পদাকরস্থান্ধিনা। ন্যবিশ্বায়ুনা বাতং দগোগোপালকো বনং ॥ ১॥

শীধরস্বামী

বণিজো বতথো নৃপাঃ মাতকাশ্চ দৃষ্টান্টাত্যাং বর্ষজ্বাঃ সভো নির্ম্যার্থান্ বাণিজ্যস্বাছ্ছিল্য দিখিজ্যবিদ্যাণীন্ প্রপেদিরে প্রাপ-দ্যস্ত । যথা মন্ত্রোগাদিসিদ্ধা স্বায়্বা ক্লাঃ কালে স্থাগতে স্বপিতান্ যোগাদিপ্রাপ্যান্ দেবাদিদেহান্॥ ৪১॥

॥ • ॥ रेडि मन्य विश्नः॥ • ॥

একবিংশে শর্ডমার্লাবনগতে হরো। তথেপুসনমাকণ্য গোপীভিগীত্মীর্যাতে॥ • ॥

ইখং এবস্তং বনং তদেকাই শরদা অচ্ছানি জলানি যন্তি তাৰুনা বাত্মসুগতং ব্যাপ্তমিতার্থ: ॥ ১॥

देवकवटडावनी ।

কলা শক্তি:। আভাাং রামক্রফাভাাং॥ ৪০॥

বর্ষণক্ষঃ কালস্যাপি বাচীতি আয়ুরিতি ব্যাখ্যা। ভতত জীবনার্থপরিমিত্তৈর ৎস্বৈরুদ্ধা ইত্যর্থঃ। স্নাতকানামুর্থান্তীর্থাটনাদিরূপাঃ সিদাঃ ভক্যাদিসিদ্ধাং স্বপিঙান্ প্রাপ্তব্যপার্ষ্দদেহান্॥ ৪১ ॥

॥ * ॥ देखि खोरेवळवटखायगाः मनमिष्यमाः विःनः ॥ • ॥

এবং শরদং বর্ণরিত্বা বর্ষাবৎ তত্ত্ব প্রীভগ্রবংক্রীড়াবিশেষমার ইখনিজ্যাদিনা বাবংসমাপ্তি। তত্ত্ব তত্ত্পকরত্বেনাদৌ মনোহব-

ক্রমসন্দর্ভ:।

॥ • ॥ क्रीमण्य क्रमनन्तर्छ विश्मः॥ •॥

যাদবত্বাদেশাপাশ্চ মধবন্তেৰাং পতিরিতি ক্রীড়ারাং সামগ্রীবিবক্ষিতং। শ্লেষেণ মধো ঋঁতুরাক্ষদ্যাপি পতিরিতি তং-শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

রাজকীয়পুরুষপ্রভৃতিকৃতৈ র্যথা সৈব ভূরিতি ব্যাথা। যথেতি পদস্য শেষতে প্রক্রমভঙ্গাভাবার্থমুপাদেয়া। হরিশচন্ত্রার্কবাতাশ্বলক-ভেক্যমাহিদিতি মেদিনী॥ ৪০॥

বণিজো বত্যো নৃপা: মাতকাশ্চ যে বর্ষেণ রুষ্টা। ক্রজা আসংজে বর্ষাত্তে নিক্রমা অথীন্ বাণিজ্যস্বাচ্ছ-কা দিখিজরবিদ্যাদীন্ প্রপে দিরে প্রাপদ্যন্ত। যথা সিদ্ধা বর্ষে: স্বায়ুর্ঘটকৈ ব'ৎসরৈ ক্রজা: কালে হস্তসময়ে আরাতে স্বপিগুান্ পার্বদাদিদেহান্ ইয়মুপাদেয়া॥ ৪১॥

॥ 🛊 ॥ ইতি সারার্থদর্শিন্যাং হর্ষিণ্যাং ভক্তচেত্রসাং। বিংশোহধ্যারোহত্র দশমে সঙ্গতঃ সঙ্গতঃ স্বতাং ॥ *॥

একবিংশে বেণুগীভন্মরার্কা গোপিকা মূহ:। বেণুর্ন্দাবনমূগী দেব্যাদীনাং যশো জ্ঞা। ব্যক্ষনং গতঃ ক্লফ্লচরিত্রং মধুরং ব্যধাং। প্রেমনেত্রেক্ষিতং গোপ্যো গোঠছক্ষদবর্ণয়ন্।। শরদং বর্ণয়িকা ভাদািজ্বিকীং বেণুগানলীলাং বর্ণয়িষ্যংক্তরাধুরিষমণ্ডিতে বৃন্দাবনে

হে রাজন্! বণিক্, মুনি, নৃপ ও সাতক বিপ্রাণ বর্ধাপ্রযুক্ত একস্থানে অবরুদ্ধ হইয়াছিল এই সময়ে তাহারা স্বস্থ স্থান হইছে নির্গত হইয়া তদ্ধপে আপন্য অর্থ অর্থাৎ বণিগ্জনে বাণিজ্ঞা, ঋষিগণ স্বাচ্ছন্দ্য, নৃপগণ দিখিজয় এবং স্নাতকগণ বিদ্যাদি প্রাপ্ত হইতে লাগিল, যেমন মন্ত্রষোগাদি প্রভাবে দিন্ধ পুরুষেরা আয়ুর দ্বারা অবরুদ্ধ হইয়া থাকেন এবং তৎপরে কাল আগত হইলে যোগাদি প্রাপ্য নিজ নিজ দেহ প্রাপ্ত হইয়া থাকেন ॥ ৪১॥

॥ *॥ देखि मुनैत्य विश्म ॥ *॥

একবিংশতি অধ্যায়ে শরৎকালীন রম্য রুলাইবনে জ্রীক্ষের প্রবেশ এবং তদীয় বংশীধ্বনি প্রবণে গোপীদিগের গান বর্ণন ॥ ॰॥

ত্বিদেব কহিলেন হে রাজন্ ! শরদাগমে যেথানকার সলিল নির্মাল হুইল এবং যেথানে পদাকর-

কুস্মিতবনরাজিশুপিছিস্পদিজকুলমু**উসরঃসরিমাহী**ধং। মধুপতিরবগাহ্য চারয়ন্ গাঃ সহ পশুপাল বলশ্চুকুজ বেণুং॥ ২॥ তদুজস্ত্রিয় আশ্রুত্য বেণুগীতং স্মরোদয়ং। কাশ্চিৎ পরোক্ষং কৃষ্ণস্য স্বস্থীভ্যোহম্বর্ণয়ন্॥০॥

औरत्यामी।

ততঃ কুন্তমিতাক বনরাজিষু ভূমিণে। মতাঃ ভূলা **বিলাশ্য তেবাং কুলানি** তৈ সুষ্ঠাঃ সরাংসি সরিতো মহীএাশ্য যদিন্ তছনং প্রীক্ষোহ্বগাস্থ প্রবিশ্য বেণুম্বাদ্যং ॥ २ ॥ भ

তঃ শ্রীকৃষ্ণপ্ত বেণুগীতং শ্বরশ্ত উদরো যশ্বাৎ তং শ্রন্ধা পরোক্ষং যথা ভবতি ব্রন্ধে ছিতত্বাং ॥ ৩ ॥

বৈঞ্বতোষণী।

জনবায়ুদ্দাশ্রয়বেন প্রতণ্ট মনোহরতয়া বনমম্বদ্তি সার্দ্ধেন তত্তেখনিতি যত্তাহং বণিত্রান্ প্রারম্ভণা বর্ণন প্রকারেণেতার্থ: । সংগোলিলে মধুপ্তিরিত্যব্য: । যথ।। হৃৎপ্রাপ্তবর্ণনীর রূপদীলাদিনা ভাববিশেবাবিশ্বাবতা বিশেষ্যস্যাম্চলারণাশকেবর্ণ শ্রীকৃষ্ণ ইতি বাক্যশেষো জ্বো:। এব্যত্তা বর্হাপীড়মিত্যাদাবপি। অচ্যুত ইতি পাঠশ্চিংম্প্রস্থাস্থতা অত তুবন্যতি শেষ:॥১॥

বাদবহান্দোপাশ মধবং তেষাম্পতিরিতি ক্রীড়ায়াং সামগ্রাং বিবক্ষিতং। শ্লেবেণ মধোশ তুরাজস্যাপি পতিরিতি তৎপ্রবেশে স্থাপি বনশোভা সম্বিটকৰ দর্শিতা। অবগাছ অবঃপ্রবিশুতি বনস্য সর্বতঃ প্রবেশেন তথ্জানং ধ্বনিতং। সহ পশুপাসববঃ ইত্যয় গাশ্চারর্ব্বিতানেনৈবাধ্যে। যোগ্যং নতু চুক্লবেণ্মিতানেন চ। তথু জল্লির আশ্রুতা ইত্যুত্ব বাক্যে পূর্ববৈদ্ধবিদ্ধান্ত নেন চ। তথু জল্লির আশ্রুতা ইত্যুত্ব বাক্যে পূর্ববৈদ্ধবিদ্ধান্ত প্রতিদ্ধান বিশ্বাধান ব

তত্ত্ব তদেব বা ক্ষদ্য বেণ্ণীতং অমুণীতানস্তরং নিরম্ভরং বা অবর্ণবন্। তত্ত্ব হেতুং শ্বর্দ্য উদয়ং প্রাকটাং যত্র তাদৃশং বথা স্যাত্তথা আঞ্জ্য। যদাপি তদা তদা বেণ্বাদন বিনোদো বর্তত এব তথাপি তদানীং বয়েছিল্যেন শ্বরশ্বীবিলাদাবলোকনেন চ দীপ্রভাবদ্য তাং দনাক্রপ্তুং বেণ্বিল্যানভাদ্যতম্বয়া তাদাং তাদৃশত্তং আত্তর তদানীমেব তাভিত্তদম্বর্ণনঞ্চ। আঞ্জ্য দ্বতাংপি দ্বাক্ত ক্ষা। কলত্ত্বেপি দর্ব্বাশিষভাবাং। ঈষদ্পি শ্বত্তি বা কাল্ডিড্রাবিশেষ মুক্তাং প্রীর্ধাদেব্যাদ্যা ইতি দর্বাদামেব ব্রশ্বীশাং তচ্ছুবণেহপি দর্বভ্তমনোহর্মিতি বক্ষ্যাণাশ্বান্যাদীনাং বাৎসল্যাদেবেবোদ্যো নতু শ্বর্দ্য ইতি তাংপরিষ্ঠাং।

ক্রম্পর্ক:।

প্রবেশে নর্বাপি বনশোভা সম্ধিকৈব দর্লিতা। ইপ্রমিত্যাদি ॥১।২॥

· কান্চিং প্রেরদীরূপান্তা এব ইতার্থ:। সর্বান্তান্থেব সর্বভেদাঃ ॥এ৪।৫।৬॥

क्षीत्रनाथककवडी।

প্রথমং কৃষ্ণসা প্রবেশমাই ইঅমিতি। পদ্মাকরম্পন্ধিনেন্ডি পদ্মাকরসম্বন্ধি দৌগদ্ধাং লৈত্যক ক্রেয়ং বার্ভিরিত্যুক্তে বার্নেত্যক-বচনেন বাতস্য মাল্যাক। সা গোপালকসহিতঃ। অত মধুপতিরিতি বিশেষাপদেনোত্তরলোকছেনাম্বরঃ॥১॥

কু স্থিতিবনরাজিণু গুলিণো মন্তা ভূসা হিজাক ভেষাং কুলৈছু हানি সরাংসি সরিতে। মহীথাক্ত বন্ধিন্ তহনং মধুপতিঃ কুঞ্চ: অব-গাছেতি যুসাবিগাহনেন বনং শোভতে তহু মধো বসিস্বস্তাশি পতিরিত্যাতিশোতা লেণ্ডে ধনিতা। চুকুল কুলয়ামান। সহ পশুপান বল ইতি বনাবিগাহনে গোচারণে চ সাহিত্যং নতু বেপুকুজনে। উত্তরলোকে কুঞ্চস্য বেণুগীতনিভুক্তেঃ ৪ ২ ॥

তংকৃষ্ণত বেৰুদীতং আশ্ৰন্ত্য পরোকং মধা ভারধেতি তাসাং ব্রন্ধে হিতৰংং ॥ ৩॥

হুগন্ধি বায়ু সকলদিকে প্রবাহিত হুইল, তাদৃশ বুন্দাবনে গো এবং গোপালগণ সহ জীকৃষ্ণ প্রবেশ করিলেন ॥ ১॥

জ্ঞীকৃষ্ণ প্রবিষ্ট হুইয়াই পশুপাল বালক তথা বুলভন্ত বহু গোচারণ করিতেই বংশীধানি করিলেন, হে মহারাজ! সে লময় তথায় পর্বতে, সরিৎ এবং সরোবর সকলের সমীপত্ত পূল্যিত বনরাজী মধ্যে পক্ষী ও মধুকুর নিকর মন্ত হইয়া সধুরভারে কব করিতেছিল ॥ ২ ॥

त्म याहा रूछेक, **अक्ट्रक**त त्य त्नभूतील र हेटल भगत्मत छेड व रुप्त, त्कान २ खबात्रना त्मरे त्वभू

তম্বণিয়িতুমারকাঃ সারন্তাঃ কৃষ্ণচেষ্টিতং। নাশকন্ সারবেগেন বিক্ষিপ্তমনদো নৃপ ॥ ৪ ॥ বহাপীড়ং নটবরবপুঃ কর্ণয়োঃ কর্ণিকারং বিভ্রমানঃ ক্রক্কপিশং বৈজ্যন্তীঞ্চ মালাং।

গ্রীধরত্বামী।

বিক্লিপ্রমনসঃ ব্যাকুলচিত্তা: ॥ ।।

যাদৃক্ শ্রীকৃষ্ণত শ্বরণং তাসাং মনসঃ কোতকং জাতং তদাহ বর্ছাপীড়মিতি। নটবর্বপুর্বি দ্রং বুলাবনং প্রাবিশৎ কথন্তু জং বনং স্বপদৈর্গিইত রমণং রতিজনকং গোপদুদৈ গীতকীর্ত্তিঃ তথা বর্ষ মন্ত্রমাপীড়ং শিরোভূষণ্ বিদ্রুৎ বর্ষ মাপীড়ো যশ্মিলিতি বপুষো বিশে-

বৈষ্ণবভোষণী।

অতঃ স্বীয়াভ্যঃ স্বীভ্যঃ শ্রীনলিতাদিভ্যঃ নিজমনোবাম্পোদিরণার তা অপি শ্রাবরিত্মিত্যর্থঃ। স্বশক্ষেন স্থ্যাঃ স্থ্যোঙ্পি ব্যাবর্ত্ত্যক্ত ইতি। তাসাং পর্ম শালীনদং দশিতং কিং বহুনা তর্ত্তাপি প্রোক্ষং অর্থাস্করাছেরং স্বিহিশং যথা স্যান্ত্থা॥ ৩॥

শ্ববোদয়ত ক্রমমেবাহ তদিতি। ততাদৃশং পরোক্ষং যথা স্যান্তথা বর্ণয়িতুমারকাঃ আরক্রত্যাহিপি নাশকন্ তথা বর্ণয়িতুং নাপারয়-ক্লিত্যর্থ:। তত্র হেতু: শ্বেতি। কুত: কৃষ্ণন্য সর্ক্রিভাকর্ষকত চেষ্টিতং তদ্বেণ্গীতময়ং শ্বরন্তঃ অনুসন্দধানাঃ হে নৃপেতি। তৎ কথনেন শ্বয়মেব ভাববিশেষ প্রাপ্তা কাতর্যোণ কিয়া তদ্যৈর ভাববিশেষোয়মালকা তৎসম্বরণার্থং সম্বোধনং॥ ৪॥

তত্ত্বাবিশেষাত্তদেব বির্ণোতি বর্ছেতি যুগাকেন। নটবরবপুরিতি। বছারীহিরভেদেহিপি ভেদোপচারাৎ। যুগান্তাপিরিকং ব্যোগনায়াবলং দর্শয়তা গৃহীতং। বিশ্বাপনং অন্য চ সৌতগর্জেং পরং পদং ভূষণভূষণাঙ্গমিতি ভস্যাপি বিশ্বাপকতা নির্ণয়েন অভাবত-এব তাবত্তরটবরবপুং সর্বতিদীয়রূপবৃন্দবিষ্ঠিং তত্ত্বাপি তদানীং নটবেশমিতার্থং। যহা। তাদৃশবপুর্বিত্রৎ শখচ্ছোভাবিভাবেন পুফন্। নটবরেতি পাঠোহিপি কচিদ্ অতে। কর্ণিকারং পীতবর্ণমুৎপলাকারং পূলং বৈজয়ন্তীনামপি পঞ্চবর্ণপুল্পার্থিতা মালা তাং। বেণোরন্ধাণি অধর স্থারা পুরয়নিতি ভক্তা ইব ভন্নালভাপি পরমমোহনত্ত্বং হিতিং। বৃন্দায়া অরণামিতি ভক্ষিষ্ঠাতা তয় ঐভিগ্রত এটিবিশেষে ত্বতামভিপ্রেতা বিশেষতঃ সংস্কৃতমিতার্থং। অতঃ কৈরসাধারণৈঃ পদেঃ স্বর্ক্তান্ধিতেঃ রমণং তস্যাঃ সর্বেষাঞ্চ স্থাকরং। যহা। অপাদরোঃ রমণং হুত প্রিয়েশেন রম্যকোমলধূলীপুল্পব্রাপতাদিময়ত্বন চ রতিজনকং ব্রজভাপি বৃন্দাবনাস্তর্কার্তিরে তম্বহিরেব বনত্ব্যক্তাপেক্ষয়া বিশেষতঃ তৎপদোপাদানং গোপর্টন্দগীতা কীর্ত্তিং বিচিত্রসৌন্দর্যানিপ্রশংসারূপা যন্ত্র। তত্ত ভাববিশেষনালক্য গীতা কীর্তির্গোপীনাং যন্ত্রিন্ ত্রাণাং সাক্ষাদহক্তির জন্মা। মৌক্তিকহারস্থাক্ষদাদ্যলঙ্কারস্যাবর্ণনং স্বত-

শ্ৰীবিখনাথচক্ৰবৰ্তী।

্তদ্বেগুগীতং বৰ্ণয়িতুং আরক্কাঃ আরক্কবত্যোহপি বৰ্ণয়িতুং নাশকন্। তত্ত্ব হেতুঃ শ্বরবেগেনেভ্যাদি॥ ৪॥

তদৈব তাবাং মনৌবিক্ষেপকস্থরবেগজনকং ক্রফচেষ্টিতং কিমিত্যপেক্ষারাং শ্রীপ্তক এব সর্বজ্ঞতাবর্ণয়তি। বর্ছমাণীড়ঃ শিরোভ্বণং যত্র তথাভূতং নটবরবপ্রি বং কর্ণকারমেক্ষেব কর্ণয়োঃ ক্লাচিন্নামেক ক্লাচিন্দাক্ষণ ইতি স্বস্ত যৌবনমন্ততামভিব্যঞ্জয়িতুং। বিভ্রমিতিতু ক্ষেচেষ্টিতং তাদামতিশ্যেন স্থরবেগজনকং ভবতি। বৈজয়তীং পঞ্চবর্ণপুশ্রাথিতাং। বেণুবাদনমুৎপ্রেক্ষতে। রন্ধানিতি তেন স্ববেণ্ং স্বাধরস্থধবৈর নিশ্ছিত্রীকরোনীতি ক্রফস্যেছা। স্বধরস্থধা তু বেণুং নিস্পাণমিপ সংস্পর্শেন চেতয়িত্বা স্বাণীক্রত্য তেন জ্রিজগদ্প্রাদ্য পশ্চাতং কঠোরমচেতনস্বভাবসন্ধিকারিণং জ্ঞাত্বা তদীয়ছিড্রেভ্যো নিঃস্বত্য ব্রন্ধবাদানাং কর্ণবারেণ তন্মনঃ প্রবিশ্য সংস্কারকত্য তবৈর স্বস্ক্রিক্রমান্ দর্শয়্রীমাণ্যতি দ্যোতিতং। স্বপদ্বো রাগলাস্তক্ষনাদিতীরমণং যত্র ত্লিতি ব্রজাইন্সিষ্টাং প্রাবিশ্ব

গীত শুনিতে পাইয়া পরোক্ষে নিজ ২ সখীদের নিকট শ্রীক্বঞের বিষয় বর্ণন করিতে লাগিলেন। ৩॥

কিন্তু শ্রীকৃষ্ণের বিষয় বর্ণন করিতে আরম্ভ করিয়াও তদীয় চেন্টা স্মরণ হওয়াতে গোপীগণ তাহাতে সমর্থ হইলেন না,কারণ শ্রীকৃষ্ণ স্মরণে ভাঁহাদের কামবেগ প্রবল হইল হুতরাং আপন আপন চিত্ত ব্যাকুল হইয়া উচিল ॥ ৪ ॥

তে রাজন্ ! কি প্রকারে প্রক্রিয়ের স্মরণে ব্রজাঙ্গনাদিগের মন ক্ষুত্র হইল, বলি প্রবণ কর। গোপীরা মনে করিলেন শ্রীকৃষ্ণ নটবর শরীর ধারণ করিয়া স্বীয় পদে অক্ষিত রমণীয় বৃন্দারণ্যে প্রবেশ

রদ্ধান্ বেণোরধরস্থ্যা পূর্যন্ গোপর্দৈর্শারণ্যং স্বপদর্মণং প্রাবিশদ্যীতকীর্তিঃ ॥ ৫॥ ইতি বেণুরবং রাজন্ দর্কভূতমনোহরং। তাজা ব্রজন্ত্তিয়া দর্কা বর্ণয়স্ত্তোহভিরে ॥ ৬॥ গোপ্য উচুঃ ॥ .

অক্ষণুতাং ফলমিদং ন পরং বিদামঃ সখ্যঃ পশ্নমু বিবেশয়তো ব্য়স্য়ে।

ञीधतवामी।

ষণং বা। বেণুবাদনমুংপ্রেক্ষাতে রক্ষুান্ বেল্বোরিতি অতো ন্নমধরস্থধৈব পূর্ণা বেণোরচ্চলস্তী সা গীতবৎ প্রদর্গিতুমহাতীতি ভাবঃ॥৫ অভিবেভিবে বর্ণয়স্তাঃ সত্যঃ পদে পদে পরমানন্দমূর্তিং শ্রীকৃষ্ণং পরিরন্ধবত্যঃ ॥ ৬ ॥

অন্ত্রন্মেবাহ অক্ণৃতামিতি ত্রোদশভি:। চকুমতাং তাবদিদমেব ফলং প্রিয়দর্শনং পরং অন্তং ন বিদান: ন বিমুইতার্থ: তচ্চ ফলং স্থিভি: সহ পশূন্ বনং প্রবেশয়তো রামক্ষন্মেবি জুং বৈ নি পীতং তৈরেব জুইং দেবিতং নান্যৈরিতার্থ:। কণ্ডুতং বজুং

বৈক্ষবতোষণী।

এব তম্ভ নিভাসিদ্ধথাং। যথা। বন্ধবেশলৈব মাহনখাং। কিখা শরং প্রথমদিনে বন্ধবিহারবেশার্থং বনপ্রাস্তমাগতা ক্বতেন কেবলব্যবেশেনৈব বনে প্রবেশাং। অত্র গোপবুলৈরিতি বলদেবাহিপি গৃহীতঃ। তদ্য যুগ্লখেনাস্কিঃ শ্রীগোপীনাং শ্রীকুইছক নিষ্ঠ ছং তংপরিকরত্বৈর তু তংসাহিত্যেন বর্ণনিমিতি ব্যঞ্জয়তি ইত্যুক্তপ্রকারেণ। সর্বাস্তাম্বেব প্রেটিট্রালাদিভেদেন বর্ত্তমানাঃ। অভিবেতির হৃদ্যকার্ত্তা শ্রীকৃষ্ণং ভাবনয়া। কিখা ভাববিশেবোদয় সম্পোহেনাস্থোহন্তা ছং তং মন্ধা কিখা ভাববিশেবোদয়ম্বভাবেনৈর পরপরং সর্বা এব পরিব্রন্তাঃ। সর্বব্রের হেতুঃ সর্বেধামপি ভূতানাং প্রাণিনাং মনোহরং কিমুত তাদামিতি অভিরেভিরে ইতি পাঠন্ত চিংস্কেইটের সম্মতঃ। অভিতো রতিং প্রাপ্রিত্যর্থঃ। হে রাজ্মিতি পূর্বেকিক নৃপেতিবং ॥ ৫ ॥ ৬ ॥

শ্রীগোপ্য উচ্রিতি। তেবামসম্মতং লক্ষ্যতেংমূবর্ণনমেবাহেতি লিখিতত্বাৎ পুনরুক্তত্বেন একত্বাযোগ্যত্বেন চ তদনহাং। কিন্তু স পাঠঃ সর্ব্ববিদ্ধান্ত । যাসাং ব্ধ্যেত বাগর্থো যাসামেব প্রসাদতঃ। গোপীঃ প্রপদ্যে তা যাভিঃ স গন্তীরাশরো জিতঃ। অথ পুর্ব্বোক্তামুসারেনাহবহিত্থয়া রামসহিত্যেব বর্ণয়ন্ত্যোহিপি স্বভাবব্যঞ্জিতার্থ বিশেষেণ তথা ন শেকুরিতি দর্শয়তি অক্ষণুতামিতি। তত্ত্ব তেবাং ব্যাখ্যাসম্পতিঃ ক্রিয়তে চক্ষ্তাং তাবদিদমেব ফলং বিদ্ধঃ পর্মশ্রহ প্রিয়ল্যন্দিনমিপি ফলং ন বিদ্ধঃ। নিষ্দিমিতি কিং তত্ত্বাহ

ক্রমসন্দর্ভ:।

গোপ্য উচ্রিতি ন টীকাসক্ষতং। অনুবর্ণনমাহেত্যত্ত পুনরুক্ত্যাপাতাৎ একছাযোগ্যছাচ্চ ॥৭॥৮॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

দিত্যুক্ত পোষন্যাবেনৈব ন পুনক্তিক: তত্ত ক্তিচিৎ ক্ষণানস্তরং ক্ষচেষ্টিত স্মরণোথস্মবেগবৈষ্ণ্রাক্তোপশ্মে ,বৃত্তে সতি বেণুণীতং বর্ণমিতুং সম্যাগশক্ষণীত্যাহ। ইতীতি স্মাপ্তার্থকং স্মরবেগবিক্ষেপে সমাপ্তে সতীত্যর্থ: ॥ ৫ ॥

ইতি হেতুপ্রকরণপ্রকারাদি সমাপ্তিষিত্যমর:। সর্বভূতমনোহরং। নমু রাসারস্থসমরগতমিব গোপীমাত্র মনোহরং বর্ণরস্কোহিডি-রেভিরে স্থিত্বং মন্মন: প্রবিষ্টাবৈবং ক্রয়ে যতোহ্ছমণ্যেবং বিবক্ষ্যে ইতি প্রত্যেক্ষমুক্তবসাম্যোপলক্ষা প্রস্পরালিজনং তাসাং॥৬॥

বেণুনাদ হৃধাবৃষ্ট্যা নিজ্ঞনযোজি মাধুরীং। বাসাং নাং পারয়ামাস কৃষ্ণতা এব নো গতিং। ভোং সংখ্যা যুয়িছ গৃহনিগড়ে ত্বিভা বিধারা দতানি চক্রাণীজিয়ানি কেবলং বিফলী কৃষ্ণের এব তদিতোহন্য বনং জতমেব গছা কিমপাত্তং বস্তদর্শনানৈয়রমূভব গোচরীক্তা সফলজ্মানোভবতেত্যাহাং। অকণ্তামিত্যার্থং। অকিমতামক্লামিদমেব ফলং নতু পরং বিদামং বিদ্ধা ইত্যত্তমতে অন্যত্তকু নাম। অস্মতে তু নান্যং কিং তং। ব্রন্ধেহতয়োরামকৃষ্ণরো ব কৃং অম্কুলইব্দেবিতং বৈ নি পীতমিতি প্রকটোকরিলেন। তাঁহার মন্তকে ময়ুরপুচ্ছময় মুক্ট, কর্ণছারে কর্নিকার পরিধান কনকবং কপিশবর্ণ বসন, গলদেশে বৈজয়ন্তী মালা। তিনি স্বয়ং অধ্রম্থা দিয়া বেণুরদ্ধ পূরণ করিতেছেন, আর গোপগণ চারি দিকে তদীয় কীর্তি গান করিতেছে॥ ৫॥

সে যাহা হউক, শ্রীকৃষ্ণের সর্ব্বভূত মনোহর সেই বংশীরব প্রবণ করিয়া যাবতীয় ত্রজাঙ্গনা ঐরূপ বর্ণন করিতে ২ প্রমানন্দমূর্ত্তি ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণকে আলিঙ্গন করিলেন । ৬॥

গোপীরা কহিলেন হে দখীগণ! চক্ষুমান্ ব্যক্তিদিগের প্রিয়দর্শনই চক্ষুর ফল, তদ্যতীত অন্য ফল আছে আমাদের বুদ্ধিতে এমত উদয় হয় না। পরস্ত যে সকল ব্যক্তি বয়স্যগণ সমভিব্যাহারে পশু সহ

বক্তুং ত্রদ্রেশস্থতয়োরমুবেণু জুউং যৈর্বৈ নিপীতমনুরক্তকটাক্ষমোকং॥ ৭ ॥

औरत्यामी।

অণুবেণু বেণুমস্বর্ত্তমানং তং বাদয়ৎ তথা অনুরক্তকটাক্ষমোক্ষং স্নিগ্নকটাক্ষবিদর্গং। অথবা থৈ নিপিটিং তয়োব ক্রং হৈ ভ্ ছিং ইদমেব অকণ্ তাং অক্লো: ফলমিতি ॥ ৭॥

বৈষ্ণবতোষণী।

নিপীত্ৰমস্ভূতং জুইং আহাদিতং। অথবেতি যৈনি পীতং তয়ের্ব্বেক্তং তৈ যাং জুইং তাদিদমেব তেষানক্ষোঃ ফলনিত্যর্থঃ। উত্যত্ত তেষামাধাদবিষয়ক্তদিতি অক্তে কথং বোধায়িত্বং শক্যক্ত ইতি ভাবঃ। কিঞা। বিশেষত্যা নির্দেশমক্ষা প্রথমিদন্তরৈব নির্দেশঃ স্থাপাছেন সহসা নামপ্রকাশনাযোগ্যথাং। যথা। প্রেমভরোদরবৈবশ্যেন সদ্যন্তবিশেষ নির্দেশমক্ষা প্রথমিদনাতথা তত্ত চাতেঃ সঁহিতস্যাভ্যদাহত্তবা বা দর্শনমণীতি বিবক্ষিতঃ। ডওচাক্ষোঃ ফলং ন বিল্লো বয়নিতি। অক্তনাদ্দাভ্যনানক্ষ নাম ইত্যর্থঃ। এবা সোল্লু গৈজিঃ। অভোহত্মাকং চক্ষুং সাফল্যং ন কিমপি বৃত্তং। ভ্রমানীং তথা ভ্রমণাভাবাদিত্যর্থঃ। যদ্যপি যত্ত তত্ত্ব ঘদা তদা যেন তেন প্রকারেণ তত্ত্ব ভ্রমণ্ডেম চক্ষুং ফলং। ব্রদ্ধান্ত তথা ভ্রমণাভাবাদিত্যর্থঃ। যদ্যপি যত্ত্ব তথা তদানোং হত্ত্বান তথা ভ্রমণাভ্যমিত তথা ভ্রমণাভাবি তথা ভ্রমণাভাবি বিশেষকৃষ্ণঃ অভাবঃ হে সঞ্চা ইতি যুঘাভিরেতন্নিতরাং। আয়ত এবেতি ভাবঃ) অস্থ পশ্চাং খ্রমণে হি নির্ভর্তনা হত্ত্বাান্তিবিশেষকৃষ্ণঃ অভাবঃ হে সঞ্চা ইতি যুঘাভিরেতন্নিতরাং। আয়ত এবেতি ভাবঃ) অস্থ পশ্চাং খ্রমণে বিশিবেণ প্রবেশেন সঙ্কেত মধুনশন্দানিনা প্রবেশনতোঃ। ব্রেশেণী প্রীনন্ধ বস্থদেব ইতি থ্যাতো গোসু ভিষ্ঠিতি ভূত্ত ইত্যাদি। প্রতিরিবংশোক্তাম্পানে বহুদেবজ্ঞানি বহুদেবজ্ঞান বহুদেবালা বিদ্যাল প্রত্তান বৃত্তান বৃত্তান বৃত্তান প্রামণ্ড এব ভ্রাভর্মন স্থত ইত্যাদে তাতং ভবত্তং মহান ইতি প্রবিহণেবাক্তেং অভএব তত্ত পুনর্ত্র পাগননে রামোহভিবাদ্য পিতরা বাদীন্তি রভিননিক ইতি বক্ষাতে চ। অথ শ্বরত্তাঃ ক্ষচেটেন্টিভনিতি দর্শিতং। ব্রভাবনান্ধিতারে বর্ণা ক্রমণ্ড নিতরাং পীত্রমিত্যনেন বন্ধুন্ত স্থামন চক্রন্তপকৃষ্ণ ধ্বন্ততে। বৈ প্রসিদ্ধং। বহা। ছন্দির ব্যবিহিতাদেনতি গিং ভাবিবিহাং। অভএবৈকৃদ্ধং নিতরাং পীত্রমিত্যনেন বন্ধুন্ত স্থামন চক্রন্তপকৃষ্ণ ধ্বন্ততে। বৈ প্রসিদ্ধং। বহা। ছন্দির ব্যবিহিতাদেনতি ভিলিতেতি।

অথবা বৈ শব্য: সমৃত্যে । মানিনামন্তাণং বৈ ইতিবং। বেতি পাঠোহণি কচিং। বৈ নি পীতং সাদরং সমৃত্ দৃষ্টং তথা বিশ্বকটাক্ষমোক্ষা বথা ভাতথা জুইক। বহা। অনুবক্তজনানাং বৃদ্ধাকং কটাক্ষমোক্ষা বিশ্বন্। বহা। অনুবক্তজনেৰ কটাক্ষমোক্ষো বভা তদিতি সেবাছাং অথবিশেষসম্পত্তি হৈত্য়। তেষামক্ষণতাং ইন্ধিষ্বতাং ইন্ধং নিপানং জোষণকৈ কলং সর্কেজিষসাফল্যং বিশ্বঃ নচাভং কিমণি তিরিপানাদি রূপন্ত পরম্ফলরূপত্রা সর্কেজিষ্ককর্মসাফল্যসিদ্ধে:। অন্তমণি নিগুঢ়োহভিপ্রার:। ইদমেব পরং কেবলং কলং ন বিশ্বঃ কিং তৎ জুইং প্রীত্যা দৃষ্টং বং। তহি কিমন্তৎ ফলং তদান্তঃ বৈরধ্বামৃত্যানদারা নিপীতং তেষাং বিরপানক্ষণং ফলং কিং নিম্বারেতি। যক্ষা বক্তং জুইং যথ ইন্ধ্যেৰ চক্ষ্মতাং চক্ষ্য ভলং দ্বর্থে বৈ শব্যঃ বৈশ্ব জনৈঃ বসনেজিন্তৈর বা নিপীতং তেষাং ফলং কিং বক্তবামিতি শেষঃ। তৎশ্ববদমান্তেশ বাশাক্ষকপ্রতায় ব্যক্তং বক্ত মুশক্তঃ কিখা বিদ্যাক্ষনবর্গপ্রস্থাপাদানাং তাগাং প্রেমোক্তি

ঐविधनाषहक्रवर्थी।

হর্থ: শীয়ভাবগোপনার্থ এব বদাক্ষচিন শক্ষননান্ধ প্রভিবেশিজনা: কণৌ দদতি তির্গি দদতু নাম কা তত্ত্ব চিন্তা সর্ব্য এব এজবাসি প্রীপ্রংসজনা রামকৃষ্ণরো ব'ক্তু মাধুর্য্য: বুধা বর্ণরন্তি তথা বর্ষাদি বর্ণরাম ইতি স্বাভিগ্রার জ্ঞাপনাৎ। অত্ত পশুপদিপর্যন্তানাং সর্ব্যপ্রিলিনামের তদকু মানন্দপ্রদং কেবলং দবীরদীনাং যুশাক্ষের নেতি ব্যক্তিও। এজেশস্কৃতরোরিতি ভাতং ভবতং মবান ইতি বস্ব-দেবোক্তে রামোহভিবাদ্য পিতরাবিতি শুকোক্তেশ । বলদেবদ্যাপি একেশস্কৃত্যং একে প্রসিদ্ধের। অভীন্দভোহর্থন্তরং । এজেশস্কৃতবির্দ্ধি অনুপশ্চাদ্রিনা মন্ত বকুং বেণুক্তইং তৎ। বৈ বেণ্ডি বা শব্দেন বৈক্তিং দৃষ্টং শুক্তমান্তাতং হৈ ব'া নিজরামভিশরেন পীতং বের্থি পাঠে বৈ নিশ্চিত্রনের বৈ লাজ্যাধৈর্য্যে অপি তাক্ত্বা-নিপীতং ডেবামেবাক্ষবতাং জনানাং চক্ত্রাদীক্ষিরাণাং সাম্বন্ধ নান্যবাং ডিদ্যা দিল্যো অলাঞ্চলিরিতি ভাবং। নসু দর্শশ্ববাদ্যক্ষিক্ষশ্বাক্ত কুলবতীনাং সম্ভব্তু নাম। বক্তু ক্রেক্তির নিপানং তু রীনতীনাং কর্থং সপ্তবেত্তরাক্তঃ। অনুক্রেক্তবু কনের কটাক্ষণ নোর কেবিক্তি তেবা বেন ডং তেন তর্থা সন্ধার কটাক্ষণরো

বন প্রবেশকারি ত্রজ্পতিতনা রামকৃষ্ণের বদনারবিন্দ পান করিতেছে, যাহাতে নিরস্তর বেণু সংলগ্ন আছে এবং যাহাতে স্নিগ্নকটাক নিক্ষিপ্ত হয় তাহাদেরই সেই সেই ফলক্ষুস্ত হয়, ততিম

805

চুতপ্রবালবর্ষ স্তবকোৎপলাজ্যালারুপৃক্ত পরিধানবিচিত্রবেশো। মধ্যে বিরেজভুরলং পশুপালগোষ্ঠ্যাং রঙ্গে যথা নটবরো কচ গায়মানো ॥ ৮॥

में। सत्याती

শ্বজা আহশচ্তেতি। চৃতপ্রবিদ্যালীনাং চিত্রাভিন লি।ভিবন্তপুক্তে ঈষদন্তরান্তরতঃ সংস্ক্রে গবিধানে নীলগীতান্তরে ভাজ্যং বিচিত্রো বেশো ব্যোভো কচ কদাচিং প্রপালগোষ্ঠ্যাং গোপালানাং সভাষাং মধ্যে অলফ্ডার্থং বিবেছতঃ। অংধ গোপানাং পুণ্যান্ মিতি ভাবঃ॥৮॥

देवकावटकावनी ।

পান্তীৰ্য্যদৈয়ৰ তাদৃশস্বভাবাং। অভাং সম্মনং॥ ৭॥

তদেবমপার্থান্তবেণ নিজভাবক্ত ব্যক্তিং বিতর্ক্য প্নর্যাচাবধানেন বিতীয়পদ্যে তাং অপ্লেপ্:। পুনর প্রমন্ধরবেগেণ তৃতীয়েন ন শেকুং। চতুর্থাদৌ কিঞ্চিদপি শেকুরিত্যাহ পঞ্চভ:। চ্তুস্য প্রবালো নবপল্লবং স্তবকং পুশ্পগুছে:। তত্র চ্তপল্লবো নহং স্তবকশ্চ শীফি। উংপলং তদন্তঃ কোষঃ কর্ণযোরজ্ঞং প্রীলাকমলং দক্ষিণে করে এতানি চ মালাম্পুক্রপরিধানানি চ যানি তৈ বিচিত্রবেশৌ। পশুপালানাং গোষ্ঠাং মণ্ডল্যাং ত্ত্রাপি মধ্যেহতো বিশেষেণ তেরু পৃথক্ পৃথক্ তত্তছোভাপ্রকটনেন। কিম্বা বিবিধং রেজতুং শুশুভাতে। যথা নটবরের রক্ষে বিবীল্লেতে ইত্যাদি দৃষ্টান্তেন তরো নৃর্ত্তাদিকং স্বাছক্ষ্যযুথাদিকঞ্চ গোপানামপি তাদুশ্বেশবৈদ্যাদিকং বাদ্যাদিপবত্তক প্রক্রে ক্রিলিছেতে ইত্যাদি দৃষ্টান্তেন তরো নৃর্ত্তাদিকং স্বাছক্ষ্যযুথাদিকঞ্চ গোপানামপি তাদুশ্বেশবৈদ্যাদিকং বাদ্যাদিপবত্তক প্রক্রে ক্রিলিছেল। অলুপানাদ্যভাবাং বিরাজমানতাসম্পত্তে:। অথবা। অত্র প্রপাঞ্চল্য তদানীং তথা তছুক্তন্দ্রান্ত ক্রিলিছানাং মিথং সম্বন্ধং কার্যঃ। তথাহি। অত্যে গোপানামের তেষাং চক্ষ্যাক্ষয়ং তদানীং তথা তছুক্তন্দ্রান্ত ইতি পূর্বল্যোকাভিপ্রায়ঃ। ন কেবলং তেরাং তন্ধর্শনমাত্রং বনমধ্যে বন্যবিচিত্রবেশয়োক্তরো নিজমণ্ডলীমধ্যে সাজকোন নৃত্যপিতালিছ ক্রিলিছগানাং ক্রেলিছালাছত্বন্ধ স্থাদিতাভিশ্বতেতি। গায়নানো গায়ন্তেল। বছা। গায়েন গানেন মানং পূজা ব্যোং সর্বতোবিশিইগানাং ক্রেল্যগাইত্রব বাষয়ঃ। নৃত্যাদাবেশেন সদা গানাক্রণাং। যদ্ধ। ক্রিদিগায়মানে মানং আবাত্যাং সন্ধে বেন প্রক্রেবিশি স্বাল্য হন্ত গায়্রিলিছেল। বিত্র গোক্তরাদিন স্বাল্য বেন প্রক্রেবিশিল্যানাধ্রীবিশেষঃ। অতো গোপা এব ধন্তা এব তেন প্রক্রেবিশ্বভাবেশক্রের বিলাক্র বাদ্য হিলাক্র বালিক স্বালান্য সিক্রের বিলাক্র প্রালিক্র বালিক্র বালিক স্বালান্য সিক্রের বার্যঃ। নির্বালিক ক্রিলানান্য সিক্রের বাল্য হন্ত্রাদিনী স্বালান্য সিক্রের বিলাল্য সিক্রের বাল্য হন্ত্রাদিনী স্বালান্য সিক্রের। এব্যন্তের স্বাল্য ক্রিলিলিক বাল্য বিলাক্র বাল্য হন্ত্রানিলিক স্বালান্য সিক্রের বাল্য হন্তর বাল্য বিলাক্র বাল্য সিক্রের বাল্য হন্ত্র বাল্য বিলাক্র বাল্য বিলাক্র বাল্য বিলাক্র বাল্য বিলাক স্বালিক স্বালিক স্বালিক স্বালিক ক্রিলান্য বিলাক্র বাল্য বিলাক স্বালিক স্বালিক স্বালিক স্বালিক ক্রের স্বালিক স্বালিক ক্রের বিলাক স্বালিক স্বালিক বিলাক স্বালিক স্বালিক স্বালিক স্বালিক স্বালিক স্বালিক স্বালিক স্বালিক স্বালিক স

শীবিশ্বনাথচক্তবর্তী।

ন্চাতে যথ। তদাঘাতেন বিহলগীভূয় লজ্জাধৈয়াদিকমপি বিজ্ঞা তথ পাস্তথেতি ভাবঃ ॥१॥
এতাদৃশং বিজ্পনং স্বাস্থা কথং কুর্মান্তমান্ত নাম ইতি চেলাবং। বলদেবদাহিত্যে দতি তলাম্মজ্জিগমিষাণা অভাবাং তন্ন ভবিষ্যতাতো
দ্বতো বল্লিপলবর্দ্ধে নৈব তথা স্বর্মাণ্যা মৃতং গানামূতং চাস্বাদ্য নৃত্যাদিকঞ্চ দৃহ্। জ্ঞতনায়ানান ইত্যাক্ত ভূষা প্রবাদে।
নবপলবং বহ প ন্তবকং পুশা গুদ্ধান্য উৎপলে তলম্বংকোষৌ কর্ণয়োঃ অজং লীলাকমলং দক্ষিণকরে নালান্য গলে তথা অন্তর্গল
তথা প্রতানি গাত্রসংলগ্নানি পরিধানানি নাট্যোচিতরক্ষপীত্রসিত্বাসাংগি চ তৈ বিচিলো বেষে। যয়োন্তে। । নটবরাবিতি স্বিস্থ গায়
কেষু নৃত্যান্থী কচ কদাচিচ্চ গায়মানৌ তাচ্ছীলো শানচ্। যন্ধা। গায়ে গানে মানঃ স্কৈদ্পি আদ্বো যুয়োন্তে। । যন্ধা। গায়ে
গানে নানো গর্মো ব্যোহাঃ স্বাম্ব ভূল্য ব্রিলোক্যান্সি গায়কো নান্তি কে যুয়ং গোপা বর্মকা ইতি প্রকারঃ ॥ ৮॥

অন্য কোনজন তাহার আস্বাদ প্রাপ্ত হয় না॥ ৭॥

অন্যান্য গোপীরা কহিলেন আহা! গোপদিগের কি আশ্চর্য্য পুণ্য, রাম ও কৃষ্ণ দময়ে ২ তাহাদিগের সভামধ্যে নীল ও পীত অমরে বিচিত্র বেশ হইয়া যেমন রঙ্গছলে নটন্বয় খোভা পায় তাহার
ন্যায় বিরাজ করিতেছেন। ভাঁহাদিগের সেই নীল ও পীতবসনে আত্র মুকুল, ময়ূরপুচ্ছ, উৎপল এবং
পদ্মমালা কিঞ্ছিৎ ২ অন্তরে সংলগ্ন আছে এবং ক্থন ক্থন তুইজনে গান্ত করিতেছেন॥৮॥
•

গ্রীধরস্বাসী

জন্মা উচ্: হে গোপাঃ অয়ং বেণুঃ কিং আ পুণামাচরৎ ক্বতবান্। কথং যদ্যআৎ গোপিকানামেব ভোগাাং সভীমপি দামোদরাধর-স্থাাং অয়ং আতয়্যেণ যথেষ্টং ভূঙ্তের। কথং অবশিষ্টরসং কেবলমবশিষ্টরসমাত্রং যথা ভবতি। যতঃ যাসাং প্রসা অয়ং বেণুঃ পুটঃ

বৈষ্ণবতোষণী।

অহোবতান্ত তরাং গোণানাং ভাগ্যং বেণোরপি ভাগ্যং কিং বক্তব্যমিতি মহাভাবন্যুরছুনাদত্যা মিণ্যাকলনাপূর্ব্বকং দেখ্যাভি-লাষমাত র্ণোপ্য ইতি। অয়মল্লাভিদু শ্রমান ইব নীরসদারুময়ো বেগুঃ কিং কতমৎ পুণ্যং কতবান্ অন্মিন্ জন্মনি পূর্বানিম্ব তৎপুণ্যে জ্ঞাতে বয়মপি তদর্থং যতাম ইতি ভাবং। শ্বেতি বিশ্বয়ে। তল্লিক্ষাত্য যাত্রান্দামোদরেত্যাদি দামোদরশব্দেন তস্যাস্থাকঞ্চ তাদৃশবাল্যমারভ্য জাতেদুশভাবাঙ্কুরতয়া স্বাভাবিকং সম্ধ্রবিশেষং স্চয়স্তি অতএব গোপিকানামশাক্ষেব ভোগ্যং। অনুমিতি পুংল্বনির্দ্ধেশন তস্য তর্যোগাযোগ্যতা চোক্রা। তথাপি ভুঙ্ক্তে তদেক্ভোগ্যবেন সদা পিবতি তস্য তদন্তভোগাদর্শনাৎ। নত্ দামোদরাধরত্তৎসঙ্গানস্তরমপি সরদ এব দৃশুতে নতু শুক্তস্মাদসৌ ন কিঞ্চিদপি ভূঙ্কে তত্তাহরবশিষ্ঠো রদো রসমাত্রং যত্র তল্মথা স্যাং। স্থধাং ভূঙ্ কৈব কেবলং দ্রবমাত্রমেবাবশিষ্যত ইত্যর্থঃ। হে গোপ্যঃ ইতি তন্মাধ্যেক্সমনৈব সৌভাগ্যং নতু গোপীক্ষনেতি কুতো যুয়ং গোপ্যো জাতা ইতি ভাব:। অস্বাকমিতি বক্তব্যে গোপিকানামিত্যুক্তি র্গোকুলবাসিত্বেনাম্বৎকোটপ্রবেশেহপি গোপিকা-বিশেষস্বাভাবাৎ ন তদ্বিধন্যাধিকার ইতি নিজাভিমানবিশেষাৎ বৈদগ্ধীরস্বিশেষাচ্চ। শ্লেষেণ তদেকাশ্রৈব দেহাদিরক্ষিকাণামিতি। কিঞ। তস্য যুম্মণীয়কান্তস্য করে জন্মে বদনে চসদা বর্ত্তাং নাম অধর মধামপি স্বয়ং যুম্মৎসম্মতিং বিনৈব ভূঙ্তে ইতি ভাবা-স্তবং। অথবা তচ্চ কথং ভূঙ্ক্তে তত্তাহুঃ অবেতি বণিষ্ঠং অবশিষ্ঠং। বষ্টি ভাগুরিরল্লোপমিত্যাদেন বিশিষ্ঠং অবশিষ্ঠং অনবশিষ্ঠং ইত্যর্থ:। তাদুশো রুদো যত্র তথাভূতং যথা স্যাৎ রসমাত্রমপি নাবশেষয়তীত্যর্থঃ। यद्या। অবশিষ্টরুসো রাগো যত্র তদ্যথা স্যাৎ রাগস্যাবশিষ্টহাৎ ন কদাচিদ্পি বিরুমেৎ কিন্তু মুহুর্ভোক্যত এবেত্যর্থ:। যশ্ব। স্থধাং কথস্কুতাম্পি গোপিকানামবশিষ্টো যো রস:। তদেকাপেক্যা তদিতরা-শেষরসপরিত্যাগাৎ তক্ষপামপি। অথবা কুশলাচরণে লক্ষণাস্তরমপ্যান্তর্ম দিন্যো হুষ্যাত্ত ইতি তদ্য তাদৃশং ভোগং দৃষ্ট্য প্রমপুণ্যা হদি-স্তোছপি লোভাদিক্ষিতক্মলমিষেণ ক্ষাৰ্চো জাতরোমহর্ষা বভুব্রিতার্থঃ। অথবা যদবশিষ্ট্রদমিতি তু অত্রৈব যোজাং। বচ্ছকং বিলৈব পূর্ব্ব হেতুত্বমদ্য চ প্রাপ্তে:। যদ্য বেণোরবশিষ্ঠ উচ্ছিষ্টো যো রদ্যো নাদরপত্তং হ্রদিন্যোহপি ভূঞ্জতে আসাদয়তি যত চ স্বয়

ক্রমসন্দর্ভ:।

यमा বেলোরবশিষ্ট উচ্ছিটোরদো নাদরপত্তং স্নানপানাদৌ হুদিনো। জগংপাবন্যো ভুঞ্জতে অহো তদর্শনাত্তরবোহপি হ্রমাত্তঃ

শীবিখনাথচক্রবর্তী।

কিঞ্চাখান্ বিভ্রনারে নিঃক্ষিপরয়ং বেণুরেবানর্থকারীত্যাহ:। হে গোপাঃ বেণুর্বলী কিং ঝিৎ কুশলং পুণ্যাচরং। বংশীমুবল্যাদিশলানাং স্ত্রীলিঙ্গবেহপি তৎপর্যায়ন্য বেণুশল্য পুংলং দারশল্বজ জ্ঞেয়ং। যলা। কিং মঙ্গলমাচরং অপি তুন কিমপি ছাবরলাতিছেনৈব লক্ষ্যত ইতি ভাব:। তদপি দামোদরস্যাধরস্থা ভূঙ্কে ইতি কগং বয়ং সোদুং প্রভাবাম ইতি ভাব:। তত্র হেতুর্গোপিকানামিতি অধরস্থায়াং হি গোপিকানাম্মাক্ষমেব সলং কৃষ্ণস্য গোপলাতিছাদ্মাকং গোপলাতিন্ত্রীছাদিন্যামপ্রাপ্তে:।
নিতাং রাত্রাব্যাভি: সংস্ক্রমানল্বাচ্চ বেণুস্ত বিজ্ঞাতীয়স্তত্রাপি কৃষ্ণরমিতছমাত্মবানা মছা কৃষ্ণপ্রেম্বীছাভিমানং ধতে। তত্রাপি
ধাঠোন পুন: পৌরুষমাবিদ্বত্য সংভ্তিষ্পুক্ত তত্রাপি পরকীয়ং ধনং তত্রাপি বয়মেব নছন্যং জনমেক্মপি সঙ্গিনং করোতি তত্রাপি
চৌর্যাব কিন্ত ধনত্বামিনীরশ্বান ভূংকারেণ জ্ঞাপয়্বিছা এব। কিঞ্চ। নায়ং ফুংকারং কিন্ত স্বভোগোখং মণিতমেব তচ্চাগ্রান্ প্রাব্যিতৈব তত্রাপি ন বনিট: ন অবশিষ্টোরসঃ কিঞ্চিন্মাত্রোহপি যত্র তদ্যথা ভার্থা তেত্বে। বিষ্ট ভাগুরিরল্লোপমিত্যাদিনা অকার
বোপ:। ধনস্বামিনীনান্যাকং ক্তে সভ্তাবশিষ্টমপি কিঞ্চিন্ন রক্ষতীত্যহো ধাষ্টা মিতি ভাবং। কিঞ্চ। অকুশলবর্ত্তিনঃ সর্ব এব জনা

অন্য ব্রজাঙ্গনারা কহিলেন হে গোপীগণ এই বেণু কি অনির্বাচনীয় পুণ্য করিয়াছিল বলিতে পারি না, যে হেতু প্রীকৃষ্ণের যে অধরস্থা কেবল গোপীদিগের ভোগ্যা, এই বেণু তাহা সাতস্ত্র্যে যথেউ পান করিতেছে, তাহাতে কেবল রসমাত্র অবশিষ্ট আছে, এই বংশীর আরও সৌভাগ্য দেখ, যাহা-দের জলে উহা পরিপুষ্ট হইয়াছিল সেই সকল হ্রদিনী (নদী)ও বিকসিত ক্মলছলে সেই প্রকারে

ভূঙ্ক্তে স্বয়ং যদবশিষ্টরসং হ্রদিনাে হৃষ্যন্ত্রেচাইশ্রু মুমুচু স্তরবাে যথার্যাঃ॥ ৯॥ রন্দাবনং সথি ভূবাে বিতনাতি কীর্ত্তিং যদেবকীস্থতপদাসুজলব্ধলক্ষি।

बीधतवामी।

তা মাতৃত্ব্যা হ্রদিনাঃ হাষ্যবটো বিক্ষিতক্ষব্যাহিণ রোমাঞ্চিতা বক্ষান্তে। যেষাং বংশে জাতাত্তে তববোহপি মধুধারামিষেণ আনন্দাশ মুমুচ্য। যথা আর্যাঃ কুলবুদ্ধাঃ স্ববংশে ভগবংসেবকং দৃষ্ট্য হৃষ্যস্তচাহশ্রু মুঞ্জি তলং॥ ১॥

কান্চিদান্থ হে স্থি বৃন্দাবনং ভূবঃ কীর্ত্তিং স্বর্গাদ্পি বিশেষেণ তনোতি কথস্ত তং যদেবকীস্থত্যা পাদাসুল।ভাাং লকা লক্ষীঃ শোভা সম্পৎ যেন তং। কিঞ্চ। গোবিন্দা বেগ্নত্ব বেগুনিনদশ্রবাগানস্করং মন্দার্জিতং নীলমেবং তং মহা মত। যে মন্বাজেষাং নৃত্যং

স্তচো ভবস্তীতার্থ:। কিঞা বস্য স্বজাতিসম্ভবস্য বেণোন্তাদৃশং সৌভাগ্যং দৃষ্ট্য সর্কে স্থাবৰজাতয়োহপি নধুনিষেণাশু মুমুচু:। তত্র দৃষ্টান্ত: যথার্যা: পিতর: স্বক্লসম্ভবস্য তাদৃশং সৌভাগ্যমন্ত্রীশু মুঞ্জীতার্থ:। ঈর্যাপকে তত্মাং সমাজ এব তাদৃশন্তস্যৈ-কস্য বা কো দোষ:। অতায়ং গোশ্য: নিভ্তং কুতাপি সংগোপ্য বহুণীয় ইত্যর্থ:॥১॥

অহা কিং বক্তব্যং শ্রীহস্তাদৌ বর্ত্তমান্য বেণাম হাম্মাং র্ন্দাবনক্ত সৌভাগ্যং কিয়বর্ণা ভামিত্যান্তর্ লৈতি। হে স্থি বিভনোতি বৈক্ঠেভ্যোহিপি বিশেষেণ বিস্তার্যতি যদ্যমাৎ যদ্ নাবনমিতি বা। দেবকীস্থতস্য শ্রীকৃষ্ণ পাদাস্থাভ্যাং ক্রয়া লক্ষা লক্ষাঃ স্ক্র্নাভামহিয়োঃ সম্পাদা বেন তং। তসৈয়বাসনাের্দ্ধরপতাং। তত্ত চ সাক্ষাৎপাদাস্থাভ্যামেন মতু পাল্কাভ্যামিত্যনেন শ্রীর্ন্দাবনভ্নেং পরনসােভাগ্যং স্চিতং। তাসাং দেবকী স্বতেত্ত্তিং প্রাগরং বস্থদেবস্য ইত্যাদি গর্ণবাাক্যাক্সারাং। তথাচাক্তি গোপনাায় এবং গোবিন্দালয়ে পরিধাদেহপি গোবিন্দা হিতি কোষকার্মতমাশ্রিত্য তিম্বিন্দ্ বিভত্তা। শ্রীগোবিন্দাভিষেক্ নিস্তব্যাম বিশাদানেক তি তু গোপনাশকে:। যদ্বা। দেবকী ব্রদ্ধের্যা এব নাম। দেবনী নন্দভাগ্যায়া বশোদানেক তিপি অতঃ স্থামভ্তায়া দেবক্যা শৌরিজায়য়েতি বৃহ্দিপুর্বাণবচনাং। বিশব্দোকং বৈশিষ্ট্যমান্থঃ। গোবিন্দেতি গ্রামিন্দো গোবিন্দ ইতি গোপবর্গচ্ছামণি গোগোপালপরিরতো বহুত্বগো বিচিত্রক্রীড়ারসিকঃ শ্রীবশোদানন্দনাে লক্ষিতঃ। অতো বৃন্দাবনস্যাগি ভাগ্যমম্বাভিরতিব্যাণীয় বিষয়মেবেতি ভাবঃ। অন্যাক্তঃ। তত্ত মন্দগজিতং নীলমেবং তং মন্বেতি ম্যুরাণাং মত্তবে নৃত্যবে চ হেতুঃ। অন্যাক্ষাভ্যেত্ত

ক্রমসন্দর্ভঃ।

সঙ্বাদিনিযেন বোমাঞ্চিতাঃ সত্তো মধুমিষেণাঞ্ছ মুমুচুঃ। কীদৃশা অপি যথাগ্যা মুনয়ন্তলগু গৈতথাভূতা অপীত্যৰ্থঃ॥ ৯॥ তস্যাং সমাজ ইত্যক্তাফুদাবেণ তয়াচোকিৰ্ণোপনাৰ্থ। ১০॥

चौविश्वनाथहळावछौ।

স্তান্ধা এবেত্যাহা। যং ৰতোহধরস্থাভোগাং তং বীক্ষোতার্থ: হ্রদিন্যো নদ্য: স্ব্যান্থচা উৎক্লকমলাদিমিধেণ পুলকবত্যে। বছুবুঃ তববো মকরন্দমিধেণাঞ্চ মুমুচ্র্যণা আর্থ্যা ভগবদগুণান্ ঞারা অঞা পুলকাদি মন্তো ভবন্তি তবৈ তে বেণােম নিতং ঞালেতি হুদিন্যোহ্যা স্থান্তরবোহ্যা স্থান্যে দ্তা এবেতি বেণুহুদিনী তরবঃ সর্বা এবাম্বাকং বৈরিণ এবেতি ভাবঃ। আতা হ্যং গোপ্যঃ নিভ্তং কুত্রাণি রক্ষণীয়ে। যথা কুষ্ণাধরং ন প্রাপ্রোতীতাস্থাধ্যঃ স্কারী ব্যক্তিতঃ ॥ ৯॥

তদীয়তাদৃশবিলাসাম্পদ্য বৃন্ধবিন্দ্য সম্প্রতি মাধুর্য্যধিক মূল্লসতাত ত্তাদেব দিদৃক্ষমাণান্তক গছামো বরং নাক কোহপি দোষ ইতানা আহং। বৃন্ধবিন্দিতি ভূবং কীর্জিং স্থাদিভাগবিশেষেণ তনোতি যদ্যতো দেবকীস্থতস্য যশোদানন্দ্রন্য পাদাস্থাভাগং লকা লক্ষীং ধ্বন্ধকাদিচিইম্মী শোভাসম্পৎ যেন তৎ নহ্যেবস্তুতং বৈকুঠবন্যপি সন্তবেদিতি ভাবং। দ্বে নামী নন্দভার্য্যন্ন যশোদা দেবকীতি চ। অতং স্থামভূত্তা দেবকা। শৌরিলায়্যেতি বৃহ্দিক্প্রাণং। এবস্তৃতং গোর্ভহ্লমপি সন্তবেদিতি চেদত আহং। লোমাঞ্চিত লক্ষিত হইতেছে, আর যাহাদের বংশে উহা উৎপন্ন হইয়াছিল দেই সকল তক্ত মধুণারা ছলে দেই প্রকারে আনন্দাশ্রু মোচন ক্রিতেছে, যেমন কুলবৃদ্ধ পুরুষ্যেরা আপনাদের বংশে ভগবৎ-দ্বেক দেখিতে পাইলে রোমাঞ্চিত হ্যেন এবং আনন্দাশ্রু মোচন ক্রেন॥ ৯॥

কোন ২ গোপী কহিলেন হে সথি ! একণে বুলাবর স্বর্গ অপেকাও ভূমির কীর্ত্তি বিস্তার করি-তেছে, কারণ দেবকীস্থত ভগবানের পাদপদ্মদ্বয় হইতে ইহার সম্পত্তি লাভ হইয়াছে, অপর এই রুদ্দা-বনে গোবিন্দের বেণুনিনাদ শ্রবণ করিয়া মন্দ্র গর্জ্জন বোধে তাঁহাকে নীলমেঘ জ্ঞান করত যে সকৃল

গোবিন্দবেশুমনুমন্তময়ুরনৃত্যং প্রেক্ষ্যান্দ্রিসাশ্বরতান্যসমস্তদত্ত্বং ॥ ১০॥ ধন্যাঃ স্মানূচগতয়োহপি হরিণ্য এতা যা নন্দনন্দনমুপাতবৈচিত্তবেশং।

श्चीभवत्रामी ।

প্রেক্ষ্য সত্যসস্থাত তত্র অন্তিসাহয়, অবরতানি উপরতক্রিয়াণি অন্যানি সমস্তানি সন্থানি যশ্মিন্ তং। নৈতদন্যেরু লোকেরু বিদ্যুতে অতো দুবঃ কীৰ্ত্তিং বিতনোভীত্যৰ্থঃ॥ ১০॥

অপরা আছঃ ধন্যা ইতি। হে সধি মৃত্গতয়ঃ তির্য্যগ্জাতয়োহপি হরিণ্য এতা ধন্যাঃ ক্লতার্থাঃ বাঃ বেণুরিফিতং বেণুনাদমাকর্ণ্য देवकवटकावनी।

মিব তেষামপাবরতম্বনেব স্যাং। তথাপ্যকৌকিকস্বং অধিকমন্ত্যেব ইতি। অথবা তাদুশঞীক্ষক সভাবিকপ্রীত্যতিশয়বতাং শ্রীবু-ন্দাবন ময়ুবাণাং সম্বন্ধেন সন্ধ্যামণি ভজ্ঞাতৌ ভগবৎপ্রসাদাদন্যত্রতা। অপি এতৎসাদৃশ্রেনৈব মেঘে প্রীতিনম্ভো জ্ঞোঃ। তত্ত গোবিক্ষস্য বেঁণুমত্ব তল্পাদশ্রবণান্তর্যায়ভাগে সর্ব্বতামুবর্তনীয়ং। यहा। গোবিক্ষ্য বেণোর্ম্মাই নাদাত্মকণর্যমোহনমন্ত্রন্তেনৈর মন্তানাং ময়ুরাণাং নৃত্যং যঞ্জিন। যদ্যপি তদ্বেপুনাদ এব যথা ময়ুরাণাং নৃত্তে হেতুল্তথান্যেধানবতীরত্বেহণি তথাণি নৃত্যুরীতিমুংপ্রে-ক্ষিত্মেবান্যেয়াং সভাসদহনিরূপণযোগ্যং প্রেক্ষেত্যুক্তং। কিশ্বা মূহুঃ খ্রীভগবদাসনতাপ্রাপ্ত্যা সর্বেষাং পরমাবলোকনীয়া অদ্রি-সানবো যে। বছা। প্রেক্ষ্যা নৃত্যেক্ষণে বৃদ্ধাবিতি বিশ্বপ্রকাশাৎ। প্রেক্ষাং অইম্ভি যে তেবু উচ্চেয় তদ্ধনস্থানেযু অবরতানি জনতাং প্রাপ্তানি। অন্যানি ময়ূরব্যতিরিক্তানি সমস্তানি স্থানি প্রাণিনো যদিন্। যথা। মতময়ূরন্ত্যং প্রেক্য গোবিলবেণ্-ম্বিতি বাৎক্রমেণ যোজাং। অত্যেদং বিবক্ষিতং বহাবতংসদ্য মধুরপ্রিয়দ্য তম্ম বনাগমনসন্দর্শনমাত্রেণ প্রীত্যা মত্তানাং ময়বাণাং নৃত্যং তংপ্রেক্ষ্যা হর্ষেণ গোবিন্দস্ত বেণ্ স্তেন তদাদনমিতার্থ:। তমন্থ অদ্রিসানব্ অবরতানি বিরতানি অন্যানি ঐভিগবদ্ধনাদি-ব্যতিরিক্তাশেষপ্রয়োজনানি যেষাং তথা ভূতানি সমস্তদত্তানি যক্ষিন্। ঈদৃশং শ্রীবৈকুঠেছপি নান্তি ইতি ততোছপি কীর্ত্তিবিশেয়ো-হুসাা: বিদ্ধ এব। অহো বতাত্মাকং তত্র তথা তাদৃশ্যবস্থানসিদ্ধোদিতি বয়মধন্যা,এবেতি ভাব:। তচ্চ তাসাং প্রেমবিশেষসভাবিকা তপ্তার্ত্তিলকণমেবেতি সর্বত্যোহং॥ ১০॥

অংহা অস্ততরাং হরিপ্রিয়দর্মজীবাশ্রয়ন্ত শ্রীবৃন্দাবনদ্য মাহাত্মাং তদাশ্রমিকানাং পণ্ডজাতীনামপি ভাগ্যং কিয়ঘণ্ডাং ইত্যাহ-র্ধ লা ইতি। মূঢ়া বিবেকহীনা গতিজানিং যাদাং তথাভূতা অপি। মতর ইতি পাঠে তথৈবার্থ:। হরিণা ইতি বনচারিণ্যোহপি এভা দখনান। ইব। নক্ত প্রীবল্লবেল্লত নক্নমিতি ধাত্বর্থবিলাদ্থিলগুণমহিষ্ঠত্বং স্চতিং। এবং গুরোরপি ততা নামগ্রহণমিতি কোভ-

ক্রমসন্ধর্ভঃ।

উ ত্তর্ত্ত শ্রীনন্দনন্দনমিতি তু গোপনাশক্তে:। বেণোরণিতং যত্র তথাভূতং ॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

গোবিন্দ্স্য বেণ্ড বেণ্ডাদ্যং লক্ষ্যীকৃত্য বন্মন্তানাং মুখুৱাণাং নৃত্যুং তৎ প্রেক্ষ্য অক্সিমান্ত্র অবরতানি উপরতক্রিয়াণি অন্যানি সমন্তানি সভানি যত্র তং । অত্যামার্ল্ডয়েতি মুট্রেঃ প্রাথিতিদ্য গোবিন্দ্যা বেপুবাদনং তদীয়ং তালগতৈয়ে মণ্ডলীভূয় নৃত্যতাং তেষাং মধ্য এব ত্যাপি সন্ত্যং বাদনং। তত্তভাল্যেন সন্ত্যাকাং তেষাং পারিতোষিকস্বীয়দিব্যবহ প্রদানং তল্মৈ। তেন চ বাদকলোকরীত্যা সাহনাদং তলা হীয়া স্থাপিরস্থাফীষদ্যোপরি তন্ধারণং তত্তোর্যাত্রিকমাস্বাদয়তামদ্রিদাস্থ্ প্রবিষ্টানাং সভ্যানাং ক্ষসার কপোতাদি মুণপ্রিক্লামানন্দ জাত্যমিত্যাদিকং সর্বং দিদৃক্ষামহে ইতি ভাব:॥ >०॥

অহো খনমণং তমনভিস্তা বয়ং ই জিমতোহিপি স্বজনবিফলীকুর্ন্মহে। যতো মূঢ়া অপি সফলীভবন্তীতি দর্শয়স্তা আহর্ধন্যা ইতি। মেতি বিমরে থেদে বা। এতাদৃশং ভাগ্যং অস্মাকং নাভূদিতি ভাবং। বা বেণুরণিতং। বেণুরিফিতমিতি পাঠ্ছয়ং। তুল্যার্থং

ময়ৄর মত্ত হইল তাহাদের নৃত্য দেখিয়া তত্তৎ পর্বতের গুহায় অন্যান্য প্রাণি সকল উপরত ক্রিয় হই-তেছে, এ ব্যাপারত অন্যত্র কোথাও নাই অতএব রন্দাবনই পৃথিবীর কীর্তি বিস্তার করিতেছে স্কতরাং অবশ্যই বলিতে হইল ॥ ১০॥

অন্য ব্ৰজাঙ্গনারা কহিলেন হে দথি ! এই সকল হরিণী যদিও তির্য্যগ্যোনিগত তথাচ ইহারা ধন্য, যেহেতু বংশীধ্বনি শ্রবণ করিয়া বিচিত্রবৈশধারি নন্দনন্দন জীক্ষের প্রতি প্রণয় অবলোকন আকর্ণ্য বেণুরিফিতং সহ কৃষ্ণদারাঃ পূজাং দধুর্ব্বিরচিতাং প্রণয়াবলোকৈঃ॥ ১১॥
কৃষ্ণং নিরীক্ষ্য বনিতোৎসবরূপশীলং প্রুছা চ তৎ কনিতবেণুবিবিক্তগীতং।

औधत्रभागी।

নন্দনদনং প্রতি প্রণয় সহিতৈরবলোকনৈবি রিচিতাং পূজাং সন্মানং দধুং ক্তবত্যা। কিঞ্চ। ক্রফ্সারে: পতিভি: সহিতা এব দধুং অন্ত পত্যস্ত গোপাং কুদ্রাঃ সমক্ষং তর সহস্ত ইতি ভাবং ॥ ১১ ॥

অনা উচুঃ। হে গোপাঃ আশ্চর্যাং শৃণ্ত। বনিতানামুংসবো যশ্বাং ভদ্দপং শীলঞ্ যসা তং কুঞং নিবীক্ষা তেন বাদিভবেলো-

বৈষ্ণবতোষণী।

বৈৰণ্ডেন বিক্ষিপ্তননদ ইত্যুক্ত হাৎ উপাত্তা: স্বীকৃতা: বিচিত্রা বেশা বন্যালা বহুণি । গুলাবতংদাদি রূপা যেন তং। বেণ্বিফিত-মিতি রাগত্বেনাপর্য্যবিদিত: প্রথম কুংমাত্রমুক্তং। অহকরণশক্ষেহং। রিণিতমিতি পাঠোহিলি কৃতিং। অর টীকা পুন্র জ্বাতাং কৃষ্ণ এব দার: প্রনোপাদেয়ো বেবামিতি শ্লেষেণ চ স্থাত্তয়ো নিশিকা: পূজামিতি তাবতৈব দর্রোপচাব পূর্ণ হাজানিতি প্রনিতং। অতএব দৃধ্য পূর্ণ:। সর্প্রাত্যাহিধিকং চকুরিত্যর্থ:। অতঃ ক্রিলাতেহিলি বৈশিক্ষা বিশেষেণ রচিতং ইতি তক্র দর্মত হৈত্য প্রাধাবলোকৈরিতি ভাবমাত্রগাহিণত্ত হৈ তৈরেব পূজাদেশেন্ত:। বহু বং প্রশেষ। বিবক্ষরা ক্ষেত্ত বিক্ষরে ধেনে বা অহাে বতাক্ষাকং স্বিদ্যাং ভাগাং নাজীতি ভাবা। অনাত্রঃ। অথবা বেনােরিফিতং যক্র তাদৃশং দৃষ্য আকর্য প্রবাদারা জ্ঞাজা উপাত্তবেশং দৃষ্য প্রাবানিত ভাবি যাব ক্রিলারভা দধন্দান চুর্চ্বেশক্ষয় ইতি মার্থকার্যং। সংশৃণ্ন বদ্মানাং তান্ রাবণ্যা গুণান্ জনানিতি ভট্টকাব্যক্ত। প্রীমন্ত্রশন্দন্য প্রবাজিয়ান কর্মত্ব তেয়ং। অন্যং স্মানং ॥ ১১ ॥

অহো আতাং শ্রীর্কাবনবর্তিনীনাং ক্ষণ থিকে চৰস্তীনামাসাং মাহান্তাং খেচরীণামপি ভাগাং কিং বর্ণ মিত্যান্তঃ ক্ষনিতি। চিত্তাকর্ষণ বিনিভা ওদহবাগ্যোগাঃ স্ত্রীজাভয়ঃ। শীলন্ত স্বস্তাবঃ তেন কণিত্বা বেণোঃ বিনিজং প্রতিক্ররাগামিশ্রণেন গুরুং। কিলা পূলাবাদি ব্যবন্ধবিভাগং গীতং বিমানগভয় ইতি স্বপতিদাহিত্যং বৈমানিক্ষেনাক্ষাদাগমনং শ্রীক্ষণস্ক্ষাবোগ্যয়ঃ চোকং। তথাপি কামহতবৈষ্যাঃ সভ্যো মৃষ্কঃ। অত ব্র তদ্ধনিন বিশেষতো বেণ্ণীত শ্রবণেনচ তাল্শমোহো যুক্ত এব। কিলা। বদা ধনৈব ক্লাদাস্ক্তবন্ধদা তদৈব মোহ ইভি। নিরীক্ষা শ্রমা চেতি ছয়োরাণি মোহে কারণম্কু ব্রুণ তেরোবৈ প্রীতামপি ক্মনি মতং যদৈব ধনু ক্ষমপ্রাপ্তং বতীতি মোহেনৈব বিমানতোহবতীয়া শ্রীক্ষাধিক্ষাগরংন শক্তা ইতি

ক্রমদন্দর্ভ:।

আকর্ণা শ্রোত্রবিষয়ীকতা বিভিত্রবেশং সঙ্কং প্রশ্বাবলোকৈ দুর্ধু ব শীক্ষতবতাঃ তৈরেব পুজাঞ্চ দুর্ধু: ক্ষতবতাঃ । ১১ ॥১২।

ঐবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

বেগ্নাগৰাকণ্ঠ নন্ধনন্ধনং প্রতি প্রথমপ্রকাবলোকৈবেব পূজাং দধুং পূপুন্ং। তাদাং তৈরপি য আয়নঃ পূজাং পূষ্ঠা" মনাতে স নন্ধনন্ধনাছন্তাকং তৈঃ পূনং ক্ষুত্তি ভাবং। কিঞা। তাং সহ ক্ষণবারাং পতিভিং সহিতা এব। অযন্ধং। ক্ষা এব প্রতিবিধন্ধন্দ নামের বেষাং তে যথাবনামানস্ভাবাং পতনং অপদ্ধীং ক্ষায়বাগিনীর লক্ষ্য অগাহ্যস্থমের ধনাং মান্য ষোহ্ তিদ্বাদ্ধে অয়্প্তভাঃ ক্ষণভিদার স্থিত অয়ংপত্যস্ত ক্ষণবারাপি কৃষ্ট বিগমজীবিত্নিতি ॥ ১১॥

কিঞ্চাত্মকং গোপীনাং গোপে ক্লঞে রতি ন'তিবিহিচিতা। যতে। দেব্যোহপি নাহ্নৰে ত্রাধুপি গোপে ক্লঞে য়তিমতাং সত্য এব ত্বদেব্যুম্পি স্ফল্যুম্ভীতাশ্চ্যাম্ভান্ত: ক্লফ্মিতি। বনিতানাং স্ত্রীমাতাণাম্বোহ্রাগিণীনাম্বস্বো যত্মাত্তণাভূতং ক্লপং শীল্ঞ য্য্য তং

দারা বিরচিত পূজা প্রদান করিতেছে। হে দ্বি ! ইহারা আপনাদের ক্ষণার প্রিদিণের সহিত ঐ কার্য্যসম্পাদন করিতেছে, ইহাদের পতিরাও ধন্য আমাদের ভর্গণ গোপ, অতিকুদ্র, সমক্ষে তাহা স্হিতেও অক্ষ্য ॥ ১১ ॥

অপর কতকগুলি ব্রজাঙ্গনা কহিলেন হে গোপীগণ! যাহা হইতে বনিতাজনের উৎসব হয় তাদৃশ রূপ ও শীলশালি প্রীকৃষ্ণকে দর্শন এবং তাঁহার বাদিত বংশীনিনাদ ও অসঙ্কীর্ণ গীত প্রবণ করিয়া বিমান- দেব্যো বিমানগতয়ঃ স্মরস্থাসারা ভ্রশ্যৎপ্রসূনকবরা মুমুত্রিনীব্যঃ ॥ ১২ ॥ গাবেশ্চ কৃষ্ণমুখনির্গতবেণুগীতপীযুষমুত্তভিতকর্ণপুটিঃ পিবস্তাঃ।

वीधत्रवामी।

রসন্ধীর্ণগীতঞ্চ শ্রুবা বিমানৈর্গছন্তো দেবো দেবোনামন্তেছপি স্থিতাঃ স্মরেশ স্থলসারাঃ বিক্ষিপ্তবৈর্গা সুমূহঃ। নোহে লিঙ্গমাহ-ভ্রশ্যংপ্রস্কাঃ কবরাশ্চুড়া বাসাং তাঃ বিগতা নীব্যো যাসাং তাঃ॥ ১২॥

জত্র সর্বাত্ত বক্ত্রীভেদারাতীব সঙ্গতি ব ক্রব্যা করণশঙ্করৈব উত্তভিতৈকরমিতে: কর্ণপুটে: পিবস্তা: সত্য: তথা শাবাশ্চ বংসাশ্চ স্তনপানে প্রবৃত্তা: সমনস্তরমেব গীতং শ্রুদা তদেব পীযূষমূত্তিতকর্ণপুটে: পিবস্তা: মুতস্তনপয়:কবলা: কেবলং স্তনেভ্য: করিত-

বৈষ্ণবভোষণী।

ভাব:। মোট্টান্নিতাথ্যো হত্বভাবেহিয়ং। যথোক্তং। কান্তশ্বরণঝর্তাদৌ হৃদি তদ্ভাবভাবিত:। প্রাকট্যমভিলাষদ্য মোট্টায়িতমুদীর্য্যতে ইতি। অহো বত্ত প্রমমূদানাং হরিনীনাং প্রমবিদ্ধানাং স্থরস্ক্রীণামপি মোহনদ্যৈবস্ভৃত্স্য সর্ক্রোভাগ্যামৃতসিদ্ধোর্য্য দর্শন-মপ্যনাপ্লবস্তীরশ্বানৃ ধিগিতি। কিয়া। বনবিহারিণঅস্য তত্ত্ব তথা দর্শনাদ্যভাবাৎ বয়মধন্যা এব তাস্ত ধন্যা ইতি ভাবং॥ ১২॥

অথা অন্তা গোপ্যা বাক্যমাহ গাব ইতি ত্রিভি:। তত্র প্রথমতো নিজ্ঞাববিরোধিমাতৃভাবাদীনাং গবাং বর্ণনং পূর্ববদ্বহিথার্থ প্রীতি সামান্তাংশে বিরোধাভাবাদ্বিক্ষিতোপ্যোগার্থঞ্চ। অপ্যর্থে চকার:। লোকে সারাদারবিবেক্থীনত্বেন থ্যাতা গাবোহিপি পীয়্বরূপকেণ মুখ্যা চক্রত্বং কৃষ্ণমুখ্শব্দেন অতিকোটিচক্রতাব্যঞ্জকেন পীয়্বসৈয়ে বৈশিষ্ট্যং স্বচ্যতে। কৃষ্ণঃ ধলু প্রমানন্দ্যনমূর্তি-ক্ষচতে। স্বোতি। বিশ্বয়ে তম্বত্তকতালক্ষণং সান্তিকবিকারং প্রাপ্তা ইত্যর্থা। গোবিন্দং নিজপ্রভ্যু ইতি প্রীত্যা স্পর্শনং বোধ্যতি। অন্যবৈত্ত:। তদ্যন্তিত স্বত্তবন্ধর ইতি পাঠে স্কৃতং কেষাঞ্চিদভিনবানাং মুখাৎ ক্ষরিতং তন্পরঃ মাতৃত্তনক্ষীরং কেষাঞ্জিতু ত্ণ-চরাণাং তৃণপুরিতঃ কণ্ঠাদ্যশ্রণাং অত্তব্ব সন্তব্তর্যা ক্ষরিতঃ কবল্যত তৃণগ্রাদো যেবাং তে। যদা। আত্মনি মন্সি গোবিন্দং স্পৃশস্ত্যঃ

ক্রমসন্দর্ভ:।

গাৰ ইত্যাদিত্ৰয়ং গোষ্ঠান্তরস্য ॥ ১৩॥

ঐবিখনাথচক্রবর্ত্তী।

দেব্যো দেবানামকে স্থিতা অপি বিমানগতয়ো বিমানচারিণাঃ। স্মরেণ হয়শ্চালিতঃ সারো ধৈর্যাং যাসাং তা মুম্তঃ। মোহে লিঙ্গমাহুল্র শ্রুৎপ্রস্থনাঃ কবরা যাসাং তাঃ। বিগতা নীব্যোহপি যাসাং তাঃ। মোটায়িতমিদং। বহুক্তং। কান্তস্মবনার্ত্তাদি হুদি তন্তাবভাবিতঃ। প্রাকট্যমভিলাষস্য মোটায়িতমিতীর্য্যত ইতি। পরমবিদগ্ধাঃ স্ক্ষধিয়ো দেবান্তজ্জাত্মাপি স্ত্রীভ্যোন ক্রহুন্তি প্রত্যুত স্বীয়ং
ভাগাং মানয়স্থো নিত্যমেব তাঃ ক্রহুং দর্শয়িতুং বিমানমারোহ্ আনয়ন্তি অস্ত্রংপতয়ন্ত ক্রহুস্তেরেত্যতো নিক্নন্তা মৃগ্য উৎক্রন্তী
দেব্যোহপি ধন্যা মধ্যন্থা মানুষ্য এব বয়মধন্যা ইতি ভাবঃ॥ ১২॥

নচ ন্ত্ৰীন্ধাতীনাং সর্বাসামেতৎ কামবিজ্জিতমেবৈতনোহনমিতি বাচ্যং। যতো বৎসানাং গ্রামপি মোহনং পশ্যতেত্যাহং। গাবশ্চেত। ক্ষরণশক্ষরৈবাত্তভিতৈক্ষমিতৈঃ কর্ণপূটেঃ পিবস্তা এব তঙ্গুঃ। নচ তত্রাপি বাৎস্লাভাব এব মোহনে হেত্বজীতি বাচ্যং। যতো ভাবশ্ন্যানামপি তলীয়শাবানাং মোহনং পশ্যতেত্যাহ্য। শাবা বৎসাঃ স্তনপানে প্রবৃত্তাঃ সমনস্তর্মেব গীতং শ্রুষা তদেব পীয্যমৃত্তিতকর্ণপূটিঃ পিবস্তঃ শুন্পানাসামর্থাৎ স্তনেভ্যঃ মৃতানাং প্রসাং কবল এব মুখেন তু নিগিলনং যেষাং তে তঙ্গুঃ জাড্যোদ্যেন স্তব্য বভ্রুরিত্যর্থঃ। তত্সত তন্মাত্রো গোবিন্দং দৃশা দৃষ্টৈ বাক্ষ্যানীয় নেত্রের ভ্রুরেগৈবাস্তঃ প্রবেশ্য আত্মনি স্বমনসি

যোগে গমনকারিণী দেবাঙ্গনাগণ দেবতাদের ক্রোড়ে থাকিয়াও কামে অধৈর্য ইইয়া মুগ্ধ হন্। মোহের প্রমাণ এই, তৎকালে সেই সকল দেবীর কবরী হইতে কুস্থম পরিভ্রম্ট এবং নীবী শ্বলিত ইইয়া পড়ে॥ ১২॥

আরও কহিলেন এই দকল গাভী উন্নমিত কর্ণপুট্বারা জ্রীক্তফের বদনারবিন্দ-বিনির্গত বেণুগানা-মৃত পান করিতে ২ এবং এই দমস্ত বৎদ স্তনক্ষরিত ক্ষীরগ্রাদ মূথে করিতে ২ বিস্মৃতক্রিয় হইয়া শাবাঃ স্মৃতন্তনপয়ঃকবলাঃ স্ম তমুর্গোবিন্দমাত্মনি দৃশাশ্রুকলাঃ স্পৃশাস্ত্যঃ॥ ১০॥ প্রায়ো বতান্ব মুনয়ো বিহুগা বনেহস্মিন্ কুষ্ণেক্ষিতং তত্ত্বদিতং কলবেণুগ্লীতং।

व्यथतयामी।

ক্ষীরগ্রাসা মুথেষু যেষাং তে তত্ত্বং বিশ্বতাকিয়া বভূব্রিত্যর্থং। তত্ত্ব হেতুং গোবিলং দৃশা মার্গেণ আত্মনি মনসি স্পৃশস্ত্য আলিলস্তাং অতএব অঞ্চণাং কলা লেশা লোচনয়োর্বাসাং তা গাবন্তে চ শাবাং॥ ১৩॥

ভো অম্ব মাতঃ অম্বিন্ বনে যে বিহগাঃ পক্ষিণস্তে প্রায়েণ মুনম্নো ভবিত্যহ স্তি কুতঃ ক্লফেকিডং ক্লফনর্শনং পুষ্পফলাদ্যস্তরং বিনা যথা ভবতি তথা ক্লিয়াঃ প্রবালা যেযাং তান্ ক্রমন্ বুক্ষাণাং শাখা আক্ল তেন শ্রীক্লেন উদিতং প্রকটিতং কলবেণ্গীতং কেনাপি

বৈষ্ণবতোষণী।

অর্পয়ন্তঃ সাক্ষাৎ সম্যাদর্শনাশক্তে:। তত্ত্ব হেতুমাহ দৃশা নেত্তেণাশ্রাণি কলয়ন্তি বর্ধন্তীতি তথা তাঃ। অশ্রুধারয়া দৃট্যাঞ্চাদুনান্মনদৈব পশাস্ত ইত্যর্থ:। অতস্তদর্শনমাত্রাভাবেন বয়মধন্যা এবেতি ভাবঃ। ১৩॥

অহো অন্তত্তবাং প্রীকৃষ্ণপাল্যমানানাং গবাং ধন্যত্বং বন্যানাং বিহগানামিপি ভাগাং কিং বর্গমিত্যাহ:। প্রায় ইতি বাহল্যে মন্বাদীনাং কেষাঞ্চিৎ প্রেমন্ত্যাদিনা প্রমভক্তসাম্যাৎ। বতেতি বিশ্বরে। হে অন্থেতি অয়ং ভাবাবিষ্টপ্রমদান্তনকথাস্বভাব: যৎ থলু
তচ্চ্নোহপি তৎসম্বোধনং। স্বস্থীভ্যো হ্মবর্গমিত্যুক্তছাং। ক্লফেক্তিতং স্বকর্ত্কং কৃষ্ণস্য দর্শনং তৎকর্ত্কং বা স্বদর্শনং যত্ত তৎ
যথা দ্যাৎ তথা ক্রমভূজানাক্ষ্প ক্লচিবপ্রবালানিতি তেষামপ্যক্রমিণিবিকারো দর্শিতঃ। বিহ্গানামিণি তদ্দনে ব্যবধানং প্রথভোগসাধনক্ষ্ণ দর্শিতং। তথাপি ক্লফেক্তিং যথা স্যাত্তথা শৃণ্ডি মীলিত দৃশঃ অর্ক্মৃত্তিভদ্শঃ। মহাপ্রেমসম্পত্যা অলস্ট্টর ইত্যর্থঃ।
বিগতা মনঃশ্রবণবাগিক্রিয়েভ্যো নির্গতা অন্যা মূরলীবাধ্যতিরিক্ষা বাচো বেষাং! অতন্তত্তবে ধন্যা ইতি ভাবঃ। অন্তর্তঃ। তত্র
ভাবার্থে ক্লচিরশক্ষাভ্যবদ্পিতক্র্মাণীতি বোদ্ধব্যমিতি। অথবা প্রায় ইতি বিতর্কে। মূন্য আয়ারামাঃ শ্রীসনকাদ্যোহন্মিন্ বনে

ক্রমসন্দর্ভ:

ক্লফেক্ষিতং তেনৈব প্রথমমবগতং তত্মাছদিতং ব্যক্তঞ্চ। ক্লচিরেতি ক্রমাণামপি বিকার: স্থাচিত:॥১৪॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

ম্পৃশস্ত্যঃ স্বমনসঃ ক্রোড়ে এব বাৎসল্যাৎ স্থাপয়স্তান্তস্থঃ। তথা অশ্রাণ্যানন্দাৎ কলয়স্তি ধারয়স্তীতি তাঃ। এবঞ্চ সর্ব্বপ্রাণিনাং রুফে নিরুপাধিরেব প্রেমা কিন্তু তে সংযোগাৎ ধন্যা বয়স্ত বিচ্ছেদাদধন্যা এবেত্যেতাবানেব বিশেষ ইতি ভাবঃ॥ ১৩ ॥

বৎসা অপি বিষয়গ্রাহিণো বিষয়রস এব ত্রোপাধিরস্তীত্যত আত্মারামা মুন্যো জ্ঞানেন সর্বানেব ভাবাংস্তাকরন্থা নির্বিকারাঃ ক্ষেন্ন ক্ষোভায়িত্ব ন শক্যা ইতি বাচাং যতন্তানপি স্বমাধুর্যোগাক্ষয় সম্মোহয়তীত্যাহঃ প্রায় ইতি। বতেতি বিশ্বয়। অন্ত্রিস্থীং প্রতাপি সম্বোধনং ভাবাবিউপ্রমদানাং স্বভাব এবৈষঃ। বিহগা মুন্য এব ভবেষুরিত্যর্থঃ। বনবাসদৃঙ্গ্নিশননাননৈশ্বলাদ্যাধারণধর্মদর্শনাৎ। যে ক্রমভুজান্ আক্রহ বেণুগীতং শৃণু স্থি। ক্রচিরপ্রবালানিতি ক্রমভুজানামপি বেণুগীতানন্দাং মুনিজনস্পর্যানন্দাং চাঙ্করাদিবিকারো দর্শিতঃ। কলয়তি জগচিতঃ ক্ষোভয়তীতি কলবেণুগীতঃ। কীদৃশং। ক্ষেক্ষতং ক্ষেণ্ড এব ঈক্ষিতং নতু শক্রপরমেন্তিক্রন্তবিক্ষ্র্ গানপ্রস্থিপ দৃষ্টং মুনীনামেবমেষামতিপ্রাচীনত্বাৎ তত্ত্র সর্ব্বোবারিতগতিত্বাৎ বছশোহবক্লিতত্ত্বন্দগীত্বাচ্চ তত্ত্ব ক্রসঙ্গীত- শাস্ত্রাভিজ্ঞরাচ্চেতি ভাবঃ। নচাস্য গানস্য কোহপ্যায়ঃ প্রত্য সন্তেবেদিত্যাহঃ। তছদিতং তত্মাৎ ক্ষা

পড়িতেছে, ইহার কারণ এই বোধ হয় ইহারা দৃষ্টিপথছারা মনোমধ্যে যেন শ্রীকৃষ্ণকে আলিঙ্গন করি-তেছে, তাহাতেই ইহাদের লোচনে অঞ্জলেশ দৃষ্ট হইতেছে॥ ১০॥

আরও কহিলেন হে মাতঃ! এই বনে যে সকল বিহণ আছে তাহারা প্রায় মুনি হইবার যোগ্য, যে হেতু যে প্রকারে শ্রীকৃষ্ণ দর্শন হয় সেই রূপ ক্রিয়া মনোহর প্রবালশালি তরুশাখায় আরোহণ পুরঃসর শ্রীকৃষ্ণের বাদিত মধুর বংশীগীত প্রবণ করিতেছে। ঐ দেখ কোন প্রকার অনির্কাচনীয় স্থানাদ্য হওয়াতে ইহাদের নয়ন নিমীলিত হইতেছে,ইহাদের বদনে আর বাক্য নাই। ফলতঃ,মুনিগণ যেমন যে রূপে শ্রীকৃষ্ণ দর্শন হয় তত্ত্বপ করিয়া বেদোক্ত কর্ম্মকল পরিত্যাগ করত বেদরপ তরুশাখায় আরো-

আরুছ যে দ্রুমভুজান্ রুচিরপ্রবালান্ শৃণুন্তি মীলিতদৃশো বিগতান্যবাচঃ ॥ ১৪ ॥ নদ্যস্তদা ততুপধার্য্য মুকুদ্দগীতমাবর্তলক্ষিতমনোভবভগ্নবেগাঃ।

शिधवत्रामी।

স্থানে নীলিতদৃশঃ তাকোন্যবাচঃ সন্তঃ যে শৃণ্**তীতি** তথা হি মূন্যঃ শ্রীকৃষ্ণদর্শনং যথা ভবতি তথা বেদোককর্মকলতাাগেন বেদজ্ঞ-শাথাক্যা ক্ষিত্র প্রবাল স্থানীয়ানি কর্মান্যেবোপাদদানাঃ স্থানঃ সন্তঃ শ্রীকৃষ্ণগীতমেব শৃণ্তি অতস্থতীবতে ভবিতৃমর্থীতি॥ ১৪॥ আসাঃ তাবং সচেতনানাং কথা নদ্যো**ইণি আবঠিঃ** পবিভ্রমণৈল ক্ষিতেন স্চিতেন মুনোভবেন ভগ্গো বেগো যাসাং তাঃ আলিজ-

देवकवटकावनी।

বিহগা এব বভূবু বিতার্থঃ। অত্র প্রয়োজনমাত্য ক্ষেত্যাদিনা। ক্লেনে ঈকিতং স্বয়মেবোৎপ্রেকিতং করিতং পূর্বং তাদৃশাভাবাৎ তেনৈবাদিতং উত্তরোত্তরপ্রকটিত গুণমিতি বেণুগীতস্য ক্রন্ধসমধিতোপাকর্ষকতা দর্শিতা। কলয়তি জগচ্চিত্রমাকর্ষতি ইতি কলং বেণোগাঁতং তাদৃশ মুনিবে লিঙ্গনাত্য কচিরপ্রবালান বিচিত্রোপশাধাম্যান ক্রমভূপান্ বেদশাধারপান্ আক্রাভিক্রম্য তদভিনিবেশ-মিশি পরিত্যাল্য মীলিতা মুদ্রিতা আছেরা দৃক্ দেহাদিজ্ঞানং বৈশ্বপাভূতা অপি সন্তঃ বিগতা অন্যেষাং ক্ষেব্যতিরিক্তানাং বাক্ কংগপি কিং পুনর্ষিচারাদিকং বেভাঃ ॥ ১৪ ॥

এবং পূর্ব্বদ্বহিত্থামণি কর্ত্ মশকু বত্যঃ স্বর্গান্ত্রপ্রপ্রেবান্ত্বর্গস্থাে রাগোৎকট্যেন স্থং ভাবং স্বচেতনাহপ্যুৎপ্রেক্ষণ্ডে নদ্য ইতি প্রকালিনীমানসগন্ধাদ্যান্তনা তৎকণ এব তত্তাদৃশপ্রস্মোহনং উপধার্য স্থত এব নিক্টারাতং সাবধানং ক্রপ্তেগর্থঃ। সর্বানন্দ-শিরোমণিনা নিজসক্ষমেন সর্বত্থাস্থান্তিং দদাতীতি মুকুক্তা গীতং প্রমানন্দননিত্রাগং আবর্জেভাতিক্ষোভো দর্শিতঃ। উর্দ্বিভ্রেং ক্মণোপহারাঃ সভাতৈরেবালিকনেন স্থাতিতাম্বতং যথা স্যাত্তথা তৈরেব মুরারেঃ পাদযুগলং গৃহুক্তীত্যবয়ঃ। তত্র চারং ক্রমঃ। প্রথমং তাবদাবদ্ধি বিভিন্নানি ক্মলাম্পহরত্তি। তৎপশ্চাং পাদযুগলং গৃহুক্তি তদনন্তর্গ প্রস্কৃত্যা বক্ষঃস্থলপর্যাত্মনি বেইমিঘা বিশেষত্ত বৃদ্ধানন্দ্রানি ক্মলাম্পহরত্তি। তৎপশ্চাং প্রস্কৃত্যাং স্বপ্রতিস্কৃত্যাতিক্ষমনত্ত্রাং বিস্কৃত্য জাত্যৈর প্রীকৃত্য প্রিমানি বিশেষত্ব ক্রমান্ত্রাক্র ক্রমান্ত্রানি ক্মলানোবোপহারো যাদাং তথাভূতাঃ সত্য উর্ন্নিভিন্নের দীর্ঘের ছিভিত্ ক্রমুরারেঃ পাদযুগলং গ্রহণাণিক্রাভাগি ক্রমান্ত্রাক্র তি তর মুরারেরিভি। বামনপ্রাধোক্ত প্রস্কান্তর্গ প্রস্ক্রাত্ত বিশ্বত্য মুর্গা হস্তা নারায়নেন স্বেম্বিভি নাস্য ভলনে গাভিত্রভাল্রংশ ইতি ভাবস্বন্তীতি চ। অভন্তাএর প্রমধন্যা বরন্ত হর্তগা এব বতোন তথ্বপুরীভ্রত্য স্তনাদির গাঢ়েন্ত্র। নান স্বপ্রিভ্রত্য স্তনাদির গাঢ়েন্ত্র। নান স্বপ্রিক্রত্য স্থনাদির গাঢ়েন্ত্র। নান স্বপ্রিক্রত্য স্থনাদির গাঢ়েন্ত্র। নান স্বপ্রিক্রত্য স্থনাদির গাঢ়েন্ত্র। নান স্বপ্রিভ্রত্য স্থনাদির গাঢ়েন্ত্র। নান স্বপ্রিক্রত্য স্থনাদির গাঢ়েন্ত্র লাপ্রাক্র বহুবে। ভূজা দীর্ঘা বা বৈত্রৎ পাদপ্রমেক্ষপ্রি স্থিবিক্রতা স্থনাদির গাঢ়

ক্ৰমদন্দৰ্ড:।

নদ্য ইতি বেণুবাদ্যমাধুর্যোণ জলক্তপ্তাদের্জনবৃদ্ধ্য ডচ্চরণপীঠপর্যস্তাগমনাং এবমনুদাগমনমপি ॥ ১৫ ॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

নেব উদিতং আবিভূতিং কৃষ্ণ এবাদ্য অষ্টেতি গীতদ্যানভাবেদাত্বং বাজিতং অতএব অক্সন্তাদিভিরিব ক্লেষ্টেন স্বস্থীতশাস্ত্ৰমণি প্ৰাহকা সম্ভাবাদেব ন ক্লুত্নিতি জেলং। অতএবাত্যপূৰ্ব্বগীত্রদায়াদ্বশানীলিতদৃশঃ। বিগ্ৰা অনাদ্য অকানকাফ্ডবদ্যাণি বাক্ প্রস্পাবক্থনং যেষাং তেইতি সম্প্রতি তম্পি পরিতাজ্য আমী ক্ষণানক্ষতা এবাভ্বন্নিতি ভাবঃ॥ ১৪॥

কিঞ্চ। কৃষ্ণস্য সর্ক্ষেয়েন্দ্রেংপি নারীজাতিমাত্রমােহনত্বমতাধিকমিত্যান্ত ন'দ্য ইতি। আবেঠিঃ পরিভ্রমৈ ল'কিতেক মনো-ভবেন কামেন ভগ্নো বেগাে যাসাং তাঃ । অতএব ধৈর্যালজ্ঞাদ্যপগমাং সমুদ্রং অপতিং প্রত্যাগমনাং জলাতিবৃদ্ধাা উর্থায় এব ভূজা-তৈর্যাদালিস নং তেন স্থগিতঃ সংবৃতং নিশ্চলীভূতং কুল্ভিত্য মুরারেঃ পাদযুগলং গৃহুন্তি আলেবু ধার্যন্তি ক্ষলং পলমুপ্ছরন্তাঃ। যবা । স্থীতলং সুগদ্ধং জলং। সলিলং ক্মলং জলমিত্যমরঃ। স্থীয় জলেন কালনার্থং পাদ্যোপহারং প্রেদদ্তা ইবেত্যর্থঃ। কিশা । ক্মলা

হণ করিয়া রুচির প্রবালবং কর্ম্ম সকল সম্পাদন ক্রেন এবং তাহাতেই স্থা ইইয়া প্রাকৃষ্ণ গীতই প্রবণ করিয়া থাকেন, অত্রত্য পক্ষিগণও তজ্ঞপ করিতেছে, অতএব ইহারাই সেই সকল মুনি হইতে পারে॥১৪ আরও কহিলেন দথি। সচেতনের কথা কি, অচেতন নদী সকলও প্রীক্ষের বেগুগান প্রবণ করিয়া যেরূপে আলিঙ্গন হয় তজ্ঞপ করিয়া তরঙ্গরূপ হস্ত দিয়া ক্ষলোপহার আহ্রণ করত তাঁহার পাদমুগল আলিঙ্গনস্থ গিতমূর্মিভুলৈমুরারে গুরু কি পাদযুগলং কমলোপহারা: ॥ ১৫ ॥ দৃষ্ট্বাতপে ত্রজপশ্ন ্দহ রামগোপেঃ সঞ্চারয়স্তমসুবেণুমূদীরয়স্তঃ।
প্রেমপ্রবৃদ্ধ উদিতঃ কুসুমাবলীভিঃ সধ্য ব্যধাৎ স্ববপুষামূদ আতপত্রং ॥ ১৬ ॥

अधिकवामी।

নেন স্থাতিমাচ্ছাদিতং যথা ভবতি তথা উর্ময় এব ভূজা**তৈঃ কমলোপহারাঃ কমলাত্মপহরস্তঃ মু**রারেঃ পাদযুগলং গৃহুস্তি ধারয়িত ॥১৫ লোকার্ত্তিরণশীল্ডাদিসাম্যাৎ স্পাঃ **এক্ল**ফ্স্য ভ**জন্দ স্তত্**পরি উদিতঃ পুনঃ **গোমা** প্রস্কার্তীভিঃ পুপ্সম্হৈঃ ততুলাস্ত্রহারে বা সহ প্রপুষ। ছত্তং বিহিতবান্॥১৬॥

বৈষ্ণবতোষণী।

মালিকাম: ইতীদমত্র তবং। যথা প্রীক্রকচক্সভাদৃশং বেণ্গানমাচরতি তদা শুক্ষশাথাত্বরশিলান্তবপ্রবাহস্তস্ভাদয়ো ভবস্তি। ততো জলস্তস্থেন প্রবৃদ্ধলা নদ্যভিষিত্র চেপ্রেল্ড সক্ষলতরকাঃ স্মাগভ্য তৎপাদক্ষলং স্পৃশত্তি তচে দৃষ্ট্য তাঃ সচেতনত্বন প্রতিষ্ঠীতি॥ ১৫ ৪

অথ দৃষ্ঠ্ । ইত্যাদিবয়েন পূর্বব্বহিথা তদশক্তিত্যাং গোষ্ঠান্তরং তত্র পূর্বব্বচেতনে ভাবং ক্ষয়স্ত্যোষ্ঠি স্থাময়রস্বর্ণনিয়া নিজরসমাজাদয়স্তা ইবাহং দৃষ্ট্রে । বিহ্যুন্ময়চকুষেতি শেষ: । আতপ ইতি তাপাধিক্যং। ব্রুপশ্নিতি তদাহল্যাং তৃণবাহল্যাং পেক্ষয়াবশ্যং তত্র স্থিতি: । সংহতি বহুলজামাপেক্ষয়া অনু পশ্চাং মেবাকর্ষণার্থমুক্তরীরয়স্তং তত্রেব প্রেম প্রেমাণং ব্যাপ্য উদিত: প্রব্দেত উৎক্লতম্বাং। কুষ্মং মেবপূপ্পং জলং। মেবপূপ্পং বনরস ইত্যাভিধানাং। তত্তাবলীভিবি লুনিকরৈ: সহিত্তনেত্যর্থ: স্থারিতি বর্ণাদিসামাণে স্বস্য বপুষা সজলদেহেনৈব অনুদেত্যক্তে: স্বপুরেব ছত্তং কৃত্বানিত্যর্থ: । ছত্তমপি কুষ্মাবলীযুক্তং ভবত্যেব। এবং স্থান নিজং দেহং ধনঞ্চাপিতবান্। অতোহসৌ পরমধন্য: অন্যাকঞ্চ তদানীং তদ্দর্শনিস্যাপ্যসম্পত্তে: ভাগ্যহীনতরৈবেতি ভাব: । অত্য চেদং তবং যদাতপে গাশ্চারমন্ত: স্থায় থিয়া ভবন্ধি গাবশ্চ বিক্ষিপ্তগত্যো ভবন্ধি তদা তাসাং মেঘানাং চাকর্ষণায় তণ্ডলামা মলাররাগং বাদয়তি। তত্তাদৃশলীলা স্কূর্ত্যা কাশ্চিদেবমুৎপ্রেক্ষন্ত ইতি ॥ ১৬॥

ত্রীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

স্বদৰ্শ্বসম্পত্তিস্তামৰ্পয়স্তাঃ স্বয়মণং প্ৰীণয়িতুমিতি ভাবঃ। তাসাং পতিঃ সমুদ্ৰোহপি তা নৈব ৰেষ্টি যথাস্থপতয়ো হস্থানিত্যহো বয়য়ে-বাধন্যা ইতি ভাবঃ॥১৫॥

হস্ত হস্ত স্থাভাববস্তোহণ্যাত্মানং কৃতার্থয়ন্তীত্যাত্য। দৃষ্টে তি প্রেইরব প্রবৃদ্ধা যাবত্যা স্ববৃদ্ধ্য গোণোপালসহিত্স্য আতপনিবারণং ভবেন্তাবতীং বৃদ্ধি প্রাপ্ত ইত্যর্থা। কুন্তমাবলীভিরিতি মেদপুশাং খনরস্ইত্যভিধানাং জলকণাবলীভিঃ সহ স্বব্যুষা স্থাঃ কৃষ্ণস্যেতি রস্বৃষ্ট্যা সন্তাপংবিদ্দেন স্বব্যুৰ স্থায় কিন্তা প্রাপ্ত বিশ্বুর বিদ্ধান বিশ্বুর বিশ্বু

গ্রহণ করিতেছে। হে গোপীগণ! ঐ দেখ পরিভ্রমণদারা নদীসকলের মনোভব সূচিত হইতেছে এবং তাহাতে তাহাদের বেগ ভয় হইয়া থাইতেছে॥ ১৫॥

অপর গোপীগণ কহিলেন সথি! জলধর স্বয়ং যেমন লোকের আর্তি হরণ করে প্রীকৃষ্ণও তজ্ঞপ লোকার্তিহারী অতএব প্রীকৃষ্ণ অসুদের বন্ধু, ঐ দেখ ,বারিধর নিজবন্ধ প্রীকৃষ্ণকে গোপগণ সহ রোদ্রে রোদ্রে পশু চরাইতে এবং কণে ২ বেণু বাজাইতে দেখিয়া ছঃখিত ইইয়া অত্যে প্রীকৃষ্ণের উপরে উদিত হয় এবং পুনরায় প্রেমবর্শতঃ প্রবন্ধ ইয়া পুল্পসমূহ অর্থাৎ ছৎসদৃশ ভূষারবিন্দু এবং স্থায় শরীর দারা ছত্ত্র রুচনা সম্পাদন করিয়াদিল ॥ ১৬ ॥

পূর্ণাঃ পুলিন্দ্য উরুগায়পদাব্ধরাগঞ্জীকুরুমেন দয়িতান্তনমণ্ডিতেন।

🗐 धत्रवामी ।

স্ণীংকাব্যাতঃ পূর্ণাঃ ক্রতার্থাঃ পূলিল্যঃ শ্বরাঙ্গনাঃ কথ্মিত্যত আহে। প্রথমং দ্রিতানাং স্তনেষু মণ্ডিতেন অমুলিপ্তেন পুনশ্চ রতিসময়ে উরুগায়স্য শ্রীকৃষ্ণক্ত পদাক্তয়োরাগেণারুণেন শ্রী: কাস্তির্যক্ত তেন কুস্কুমেন পুনন্তস্য বনস্থলীযু চংক্রমণেন তৃণেযু

বৈষ্ণবতোষণী।

অথ নিজ্ঞভাবপ্রকটনময়েন পদ্যেন নিজরসবর্ণনং। সঙ্গতিত্বেবং আন্তাং তাবং। তৎস্কাস্য মেঘস্য ভাগ্যং অন্তঃজ্ঞীণামপি কিং বর্ণামিত্যান্ত: পূর্ণা ইতি। তত্র পূর্ণা ইত্যানেনাহে। বয়মপি যথাকথঞ্চিত্তংসম্বন্ধেন। তথা ভবিতুং পারয়াম: কিন্তু নাত্তি তাদৃগ্ভাগ্যমিতি পুলিন্দ্য ইত্যানেন তাদৃশীভ্যোহপি শোচ্যা বয়মিতি। উরুনা বেগুনা গায়তীত্যুরগায় ইত্যানেন নিজাধৈর্গ্যে তৎকর্তৃককারণবিশেষোপ্য-ন্তীতি পা**ন'জ্বোরাগরূপং যৎ তত** এব হেতোরস্বাদৃশৈকগম্য কাস্ত্যামোদাদি শ্রীবিশেষযুক্তঞ্চ যতেন কুস্থুমেন ইত্যনেন তাদৃশ পাদাৰ প্ৰশিনায় মন: স্পৃহয়তীতি। দয়িতা তাদৃশ নাগরদ্য তাদৃশীং বিনা প্রিতেরদস্তবাং যা কাচিৎ প্রেয়দী নিগুঢ়ং বিদ্যুতে তদ্যাঃ ন্তনাভ্যাং মণ্ডিতং শোভাবিশেষমানীতচরং মত্তেনেত্যনেন তাদাত্ত্ব তত্ত্বিশাদাত্মকং তাদৃশং ভাগ্যমন্মাকম্ভিদ্রাদ্রতর্মেবেতি। ভদ্দশ্নেত্যনেন তৎসম্বন্ধিনোহপি ঝটিতি তল্লীলাহুসন্ধাপনেন স্বভাবেনৈব বা তাদৃশ মোহনত্বং কিং পুনস্তস্যেতি। তৃণেত্যনেন তাদৃশ-জ্মাপ্যশাকং ভবিদ্যিত শিশ্পস্ত্য ইত্যাদিনা। অহো হর্ষভরস্তাদামিতি চ বোধয়ন্তি। প্রথমং তাদৃশলোভনস্বভাবারুইতয়া আণ-দর্শনার্থং মুথসন্ধিহিতং নীতং ততন্তত্ত্র লিম্পন্ত্যঃ পশ্চাৎ শারবেগেন কুচেষু লিম্পন্ত্য ইত্যর্থং। - একিফাঙ্গসন্ধিবন্তদর্শ্বনেন তবস্তমাত্রভাপি প্রান্তলা ভবস্থিতি জাতক্ষরাধিত্তৎপ্রাপ্ত্যা ভদংশেন শাস্তো ভবত্যের ততন্তাসামভবদক্ষাকন্ত ন তদংশেনাপীত্যর্থ:। ততন্তা অপ্যক্ষদ-পেক্ষয়া পূর্বা ইত্যাহো ছ্রভাগ্যমিতি ভাব:। অত্তৈতছকং ভবতি। তদিদং তাদামথিলং বচনং ভাবমাত্রাবগতমপি মণাবদেব। তাদুশ-গাঢ়ভাবস্য দুরতোহপি স্ববিষয়দাক্ষাণ্ডুকারহেতুত্বাং। যস্যান্তি ভক্তির্ভগবত্যকিঞ্চনা ইত্যাদিভাঃ। স্বতন্তবেদতদহবদিষ্যতে পট্টন-হিষীভিরপি। কাময়ামহ এতদ্য শ্রীমংপাদরজঃ প্রিয়া। কুচকুকুমগন্ধাঢ্যং মুদ্ধা বোঢ়ুং গদাভৃতঃ। এজস্তিয়ো যথাছন্তি পুলিন্দান্ত ণ-বীক্ষধ ইতি। তত্ত্ব সত্যুক্তগায়পাদাক্তরাগেত্যনেন সহ দয়িতান্তনমণ্ডিতেনেত্যুক্ত্যা তৎকুত্ব্যং দয়িতা গুনতন্তস্য পাদলগ্নমিতি লক্ষাতে। সাচ দ্বিতা শ্রীপদেনান্দিতা তদিদং বর্ণয়ন্তীবু তাম্বপি বিশিষ্টা। ক্রিণী দ্বিবত্যান্ত রাধা বৃন্দাবনে বন ইতি মাৎস্যাদি-প্রসিদ্ধ্যা শ্রীরাধৈব লভ্যতে। শ্রিয়: কাস্তা: কাস্ত: পরমপুরুষ ইতি ব্রহ্মসংহিতা দর্শনাঘু জনেবীমাত্রাণাং শ্রীতে প্রাপ্তেহপি। দেবী ক্লফনরী প্রোক্তা রাধিকা প্রদেবতা। সর্বলক্ষীমন্ত্রী সর্বকান্তিঃ সম্মোহিনী পরা ইতি বৃহদেগতিনীয়ে তু তদাধিকাং দৃশ্যতে।

ক্রমসন্দর্ভঃ।

পূর্ণা: পুলিন্দ্য ইতি। অত দয়িতা কাশ্চিদেণুনাক্টা মৃচ্ছি তাশ্চ ততা মৃচ্ছাশান্তয়ে যে চরণপল্লবেন স্পর্শমাত্রকৃতমিতি বিবেচনীয়ং। শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

ইদানীং সৌন্দর্যাদি বেণুগানাদিরপগুণাবপ্যনপেক্ষমাণং কিঞ্চিৎ সম্বন্ধমাত্ত্বেলৈব তত্মোহনত্বং প্রতিপাদয়ন্ত্যঃ প্রেমঃ সপ্তম্যা ভূমিকারা মহাভাবত মাদনাথ্যং মহাদারং ভাবমভিব্যঞ্জয়ন্তা: জ্রীর্ষভামুকুমারীচরণপত্কজহাতর আহু: পূর্ণা ইতি । পুলিন্দ্য: সবদাদনা এব পূর্ণা বয়ত্তপূর্ণা এবেত্যতত্তদীয়ং তপোজিজ্ঞাসমানাশ্চিকীর্বাম ইত্যমুরাগোধ্বনিত:। নমু কেন পূর্ণান্তআহ: উরুগায়পদাজক রাগোরঞ্জনং ষত্র তেন একুজুনেন। নমু তংপদ্ভিজ্গতং তংকুজুনং কুতস্তাং তাবততাহঃ। দয়িতান্তনমণ্ডিতেন দয়িতাসভোগান্তদীয়ন্তনসন্থ-ন্ধীতি ভাবং। অতন্তদীয়পরমসৌভাগাঁত স্বতাবভিলাষে চ সাহসং কর্তুমশকুবতীভিরস্মাভিং পুলিন্দ্য এব ন্তুয়ক্ত ইতি ভাবং। যদ্যপত্র দয়িতা দৈব শ্বয়ং শ্রীবৃষভামুকুমার্ব্যেব তদপামুরাগাধিক্যেনৈব তদমাননং। নমু তেন পুলিন্দীনাং তাসাং কিং ততাছ:। ত্ণেবু ক্ষবিভেন লাখেন। দ্যিতাসভোগানস্তরং কৃষ্ণস্ত বনবিহারাদিতি ভাবং। নমু ততোহপি কিং তঞাহুং তস্য তৃণলগ্রকুষ্ণস্ত দর্শনেন শ্বরুক্ কন্দর্পপীড়া যাসাং তা:। ন জানীমহে কৃষ্ণদর্শনে তাসাং কিম্ভবিষ্যদিতি ভাব:। তত্তত কৃষ্ণাদ্দেরিভা ঝিল্বকরা স্থাননের্

অন্য গোপীগণ কহিলেন অহে৷ ! শবরন্ত্রীগুণ ধন্য, তাহারা ক্বতার্থ হইল, করিণ যে কৃন্ধুম প্রথমে দয়িতাদের স্তনে অসুলিগু, পরে রাত্রিকালীন রতিসময়ে এক্সের পাদাক্ষের অরুণিনায় কান্তিপ্রার্থ এবং যাহা পুনঃ ২ বনস্থলীপরিভ্রমণহেতু তৃণসকলে সংলগ্ন, সেই কুছুম লইয়া আপনাদের স্থন ও

তদর্শনস্মররুজন্ত্র্ণরূবিতেন লিম্পন্ত্য আননকুচেয়ু জন্তু দাধিং ॥ ১৭ ॥ হন্তায়মদ্রিবলা হরিদাসবর্ধ্যো যদ্রামকুঞ্চরণস্পর্শপ্রমোদঃ।

व्येषत्रकामी।

ক্ষিতেন লগ্নেন তথাভূত্স্য কুষুমভ দশনেন স্বরুজ: স্বর এৰ কৃতা জক্ তাপো যাসাং তাঃ তেন কুষুমেন আননেষ্ কুচেৰু কামতথেষ্ লিম্পন্ত্যঃ তদাধিং কামব্যথাং জহঃ অভ্যাঃ কৃতাধা ধিগন্যা মাদুশীঃ যা এবং ভূত্মপ্যাধি শমনং ন লভছে ॥ ১৭ ॥

হত্তেতি হর্বে হে স্থাঃ অয়ম্রির্গোবর্দ্ধান ক্ষান্ত ইরিদানের প্রেটঃ কল্চিং তাং কৃত ইত্যত আহ্ ক্ষান্তামক্ষ্চরণস্পানিন

বৈষ্ণবভোষণী।

অন্যাঃ প্রিয়ঃ ক্যান্ত্রাবো হল্য ন দেব বিশ্বহে ইত্যাদৌ নিরস্তবাং। রুপ্থিলাণ তদানীনসম্বাণিতি সঙ্গমশ্যায় দিবস এব ইতি সন্তাব্যতে তবৈৰ পুলিন্দীনাং প্রমণাং। কুম্মানাং লেপনকর্মণাপ্রতিব্যান্ত। ব্যোঃ সম্বন্ধশায় ন সন্ত্রোগবিশেষরপঃ রাসপ্রসঙ্গে। ভগবানপি তা রাজীঃ শারদোংকুয়মিরিকা ইতি তবৈর নবদঙ্গমগ্য প্রতীয়মানস্থাং। অন্যথা তৎপরীক্ষার্থং পুনক্ষেনোপ্রকাবিদ্যাদ্য বহুন্দ্যাদ্য কর প্রতীতেঃ। তদিদং বেণুপ্রকরণে ভণিত্রাং বেণুস্বক্ষেনৈবেতি গম্যতে উন্ধ্যাব্যত্যনেন এব বেণুসম্বাঃ। এব হি স্টিতঃ। তত্মাৎ কণাচিং বেণুক্তাকর্ষায়ান্ত্য্যা লব্ধ মৃক্র্মে বিল্ল বক্ষাস্থাসমতঃ কেবলেন চরণসঞ্জীবনীগল্পবেন পূণারেবাগাপি সম্যক্ সক্ষোচানপগনান্ধ ত্মের স তত্মারিশ্ক্রাগেষিত লভ্যতে। কান্চিং পরোক্ষং ক্ষপ্রস্যেত্যক্তরাং যান্ত তদন্যাঃ তালান্মের পূর্ণাঃ পুলিন্দ্য ইত্যাদি বচনং। তালাঞ্চ প্রায়ে জাত পূর্বাম্বাগাণামীর্যানবসর্যাদন্য সঙ্গম ক্রণেংপি রাগ এব বিশুলিতঃ। ব্যাহান্তিকর কুমারীণাং স্বিমিংস্তংস্বীক্বত্বমের হৃত্র তংল্পর্শনত্রাতিদিষ্টং। অভিরামিতা আনন্দিতা ইত্যার্থঃ ॥ ১৭ ॥

গোঠান্তরবার্ত্তাপি তথৈব রসান্তরাচ্ছনা অতএবমাছর্ছাভ্যাং হস্তেতি। অয়মিতি তদানীং প্রীগোবর্দ্ধনান্তিক এব তাসাং নিবা-দেন সাক্ষাদঙ্গুল্যা দর্শনাৎ জগতোহশেষং পাপং হৃঃথং চিত্তঞ্চ যণাযথং হরতীতি হরিঃ। তদধিষ্ঠার্তী দেবঃ শাল্পে লোকে চ প্রসিদ্ধা তং-অভাবকেষু তস্যু দাসেষু মধ্যে শ্রেষ্ঠাঃ। তত্বর্যান্থ্যের ফলাভিব্যক্তিষারা দর্শয়তি যন্ত্রামেতি। প্রকৃষ্টোমোদো হর্ষঃ রোমাঞ্চ তেদানক্ষাশ্রাদি

ক্রমসন্দভঃ

অভাবসংক্ষাপনাশক্তি পক্ষে রমণং রাম: ক্রীড়া তদ্যুক্তস্য ক্রফাস্য চরণয়োঃ স্পর্শেন প্রমোদো যস্ত তয়ো শ্চরণয়োঃ ॥১৮॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্ত্তী।

তৎক্রতসম্ভোগলিপ্রা কুচেষু চ লিপ্সন্তাঃ কৃষ্ণসভ্কন্ত তদাধিং কন্দর্পপীড়াং জহ:। অহো তৎকুষুমন্তাপ্রাং কোহণি শক্তি বিশেষ ইতি ভাব:। বরত্ত তচাপি জন্মধাহণি সক্তদপি ন প্রাপ্ন ইতি ভাব:। পদ্যমিদং শ্রীমহজ্জ্ননীলমণৌ মাদনমধিকতা সদা ভোগেছপি তথ্যদ্ধনাত্রাধার স্ততির্যথা ইত্যত্রোদাক্তং। সদা ভোগেছপীতি মাদনত্ত ভাবসমন্তিরাৎ সর্বে সম্ভোগাঃ সর্বে বিহারাশ্চ মাদনে বর্ত্তপ্ত এব জার বিহারেছপি সম্ভোগত্তদানীং সহসৈব কৃষ্ণতাবিভাবাৎ তেন সহ জ্ঞায়। অতএবাত্র প্রক্রমে বর্ণমন্ত্রোহভিরেছিরে ইত্যত্র সহ সৈবাবিভ্তিং কৃষ্ণমালিক্তিবতা ইত্যপার্থমাহ:। সর্বভাবোদগ্রোলালী মাদনোহন্তং পরাৎপর:। রাজতে হলাদিনীসারোক্রাধারাদেব বঃ সদ্বেতি তত্ত্রিবাজ্যেরাবক্রীক্ষেনাপি নেদং ব্যাথ্যারং॥ ১৭॥

হস্ত সংখ্যা মহদাশ্ররণং বিনা নৈব মনোরথঃ ফলতি। সহস্কৃত হরিভক্তানামেব তেষামপি মধ্যে শ্রীগোবর্দ্ধনোগিরীক্ত এব মুখ্য ইতি গালী সুখাৎ শ্রুতং তদদ্য তত্ত্বত্য মানদগলায়াং স্বাধা তদ্ধিদৈবত্ত্য শ্রীহরিদেবনামো নারায়ণদ্ দর্শনার্থং যাম ইত্যত্ত গুরুজনানামপি নৈব বিপ্রতিপতিঃ ক্লেছাংশি তত্ত্বৈ খেলতীতি যুক্তিং নিশ্চিত্বত্যঃ স্বর্মণং তমভিসিধীর্ষবঃ শ্রীগোবর্দ্ধনমের দগণকুষ্ণবাঞ্চিত্রনাধকং স্বৰাজ্বিতিসদ্ধার্থং স্বর্থা হরেদানা যুধিটিবোদ্ধ গোবর্দ্ধনাব্দের্দ্ধনাব্যে স্থায় ব্যক্তার হরিদানা যুধিটিবোদ্ধ গোবর্দ্ধনাব্যেশ্বিদ্ধিপি সংখ্য অনুম্বিদ্ধির ক্লকং সংস্থারয়ন্ রেমে

বদনে লেপন করত কামব্যথা বিদর্জন করিতেছে। যদি বল শবরাঙ্গনাদের কামব্যথা কি প্রকারে হইল ? উত্তর তাহার এই যে, উল্লিখিত কুরুমদর্শনেই তাহাদের কামতাপ জন্মিয়াছিল ॥ ১৭॥

হে দখীগণ! এই অন্তি (গোবর্জন) নিশ্চয়ই হরিদাস সকলের মধ্যে ত্রেষ্ঠ, যে হেডু এই গিরি

মানং তনোতি সহ গোগণয়োস্তয়োর্যৎ পানীয়সূযবসকন্দর্যকন্দমূলৈঃ ॥ ১৮ ॥ গা গোপকৈরমুবনং নয়তোরুদারবেণুস্থনৈঃ কলপদৈত্তমুভূৎস্থ সংগঃ।

প্রমোলো যস্য স:। তৃণাত্মলামনিষেণ রোমহর্ষদর্শনাৎ। কি**ঞ্চ বদ্যসাম্মানং পূজাং তনোতীতি সহ** গোভির্গণেন স্থিসমূহেন চ বর্ত্তমানয়ো ত্তরো: কৈ: পানীরৈ: স্ববলৈ: শোভনত্টণ: কন্দরৈ: কট্ন মৃ লৈর্ঘণোচিতং অতোহয়মতি ধন্য ইতি ভাব: ॥ ১৮॥

হে স্থাঃ ইদং ছতিচিত্রং গোপেঃ সহ গাঃ বনে বনে স্ঞারমতোভ্তয়ো রামক্রফমো: মধুরপদে: মহাবেণুনাদৈঃ পরীরিষু যে গতি-মন্তব্যেষামম্পন্দনং স্থাবর ধর্মঃ তর্নণাং পুলকে। জঙ্গমধর্ম ইতি। নিযুক্তান্তে গাব আছিভরিতি নির্যোগাঃ পাদবন্ধনরজ্জবং অধ্যা-

বৈষ্ণবতোৰণী।

স্বরূপ তুণাত্মদামার্ক্রতা জলবিন্দুপ্রাবাদিলকণ:। তনোতীতি সর্বৈধরনৈয়রপি ক্রিয়মাণং মানময়ং বিস্তারেণ করোতীত্যর্থ:। পানীরানি প্রোনি র্ফার্নধাদীনি। দীর্ঘত্তনার্যং ছলোহছরোধাৎ। স্ববসাদি কোমলানি পৃষ্টিবর্দ্ধনানি ছগ্ধসম্পাদকানি। যথা। পানীয়ং স্ববতে কর্ম্তি পানীরস্থবো নিঝারা:। ভূ ইতি কচিৎ পাঠ:। উপবেশাদ্যর্থং স্বন্দরস্থানমিতার্থ: কন্দরা গুলা: তৈন্চ তত্ততা রত্বপর্যান্ধ পাঁঠ-প্রদীপাদর্শাদ্যোপাপলক্যাঃ যথাসম্ভবক তৈত্তেবাং মনো জ্ঞেরং। হে অবলা ইতি তত্ত্ তত্ত্ব মুন্নাকং শক্তাভাবেন এতাদৃশ সেবা ভাগ্যং ন ংটেত ইত্যহো বতাভাগ্যবৈভবমিতি ভাব:। অতঠেত:। অত চ অকণুতামিতি বদবহিপায়ামপ্যথান্তর ব্যক্তির্যথা রামে। নীল চারু শিতে ত্রিশ্বিত্যমরকোষাক্রামো রমণীয়ো যা ক্রফক্ত চরণয়োঃ স্পর্শেন প্রমোদো যক্ত সং। তরোশ্চরণয়োঃ। যদা। তাদুশ কুষ্ট্রগ্রো: ম্পর্শপ্রযোগে যত্মাৎ ঋত্যুক্তপ শৈত্যাদি গুণকত্বেন ত্বশিলানাং বিধানাৎ। যত্ম রাসক্রীড়ারপং যজ্জীকৃষ্ণস্থ চরণং আচ-রুণ্য তক্ত স্পর্শনেন দানেন প্রমোদো যস্য সং। বিশ্রাপনং বিভরণং স্পর্শনমিত্যমরং। সর্কাদা সদা তৎ ক্রীড়াসম্পাছনোৎস্ক ইত্যর্থ:। যথা তেন প্রমোদয়তি তমশ্বান জগচেতি তথা সঃ। যথা। তাদৃশ কৃষ্ণচরণয়োরিব স্পর্শ প্রমোদে। যক্ত এতৎ স্পর্শনেন তৎ স্পর্শনানন্দ-থেব সিদ্ধে নিরস্তর বিচিত্তপ্রেমবিহার শ্রেণীভিত্তজরণম্পর্শময়ত। ইবান্মিন্ সম্পত্তে । তত্তেতি বক্তব্যে তয়োশ্চরণয়োরিত্যাদরেণ ॥>৮॥ অহে৷ কিং বক্তব্যো হরিদাস্বর্যাত্ত্বন যথার্থ নাম্নোস্যাহজিপতেন হিমা কিন্তু সর্ব্বেপ্যঅত্যাশ্চরাচরাঃ পরম ধন্য৷ ইত্যাহঃ গা ইতি :

क्रममन्दः।

নরতো: দতো:। উদারেতি[বিশেষণাৎ শ্রীক্রকজৈব বেণুর্বোধ্যতে দর্কতোপি গুণদংঘাত্তদ্য তন্ময়তাং ক্রীড়াময়তাং ॥১৯॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

श्तिमात्मा उत्कोकनामिष्ठाक्षत्व रखात्रमिष्ठत्वना श्तिमानवर्गः देञात्मन् शर्वत्विन श्तिमाननमध्यत्रांगारः। यत्राजामकृकत्यान्वत्रः। স্পর্নেন শিলাদ্রবাদ্যভিব্যঞ্জিতঃ প্রমোদো ষত সং। চরণস্পর্শে সতি শিলানাং প্রসাধর্ম্ম প্রাপ্ত্যা ধ্রম্পবক্তার্শাদিষচ্চরণচিত্রং নির্বার্ত্বােলামাদরােশপুলকাদরােহপি প্রমাদব্যঞ্জকা জেলা:। অত রামপদপ্রয়ােগো ভাব গোপনার্থ:। শ্লেষেণ রামো নীল চাফ দিতে ত্রিম্বপীত্যমরকো বারমণীয়ো য: ক্লফস্তস্ত। হে অবলা ইতি পতিপারবশ্ববভীনাং যুত্মাকং তদাশ্রয়ণমেব বলং বুদ্ধাতে ইতি ভাব: বং বৃত্তঃ প্রেমোদাদের হেতোঃ মানং তৎ প্রসাদনীং পূজাং তনোতি সহগোভি গণেন স্থিসমূহেন চ বর্তমানয়োত্তরোঃ। कৈ:। পানী-यानि भानग्रहमनीय नेभानार्थः ऋगक्षनी उन्नित्व विक्रमानि ज्ञथा नैतिवनगर्थः भानीयाः भ्या मध्तायशीचानिवनानः । ऋषवमानि व्यक्तार्थः प्रता गवार **आगार्थः ऋगसञ्**रकामनभूष्टिवर्धनञ्जानकानि छ्गानि छ। मीर्थवमार्थः। यदा। भानीतः **ऋवर७ हे** छि भानीतस्या নিঝ'রাণ্ড কন্দর। উপবেশশয়্যবিলাসাদ্যর্থং শীতোঞ্চসময় প্রথমা গুহাণ্ড গুক্ষণার্থং কন্মসূলানি চ। তত্তিতা কন্মপর্ব্যবসীঠপ্রদীপা-मर्नोमद्राश्वाशनकारेखः॥॥ ५৮॥

কিঞ্চ তত্রাভিসরণে বিল্লোন কার্য্য ওস্থাত্গণীনস্য বনাশ্বর গমনসভবাদিত্যাত্য। গা ইভি। গোপবৈরিত্যত্তক পারাং কন্। অতো গোপারত্তি ক্রফং স্নেহাৎ পাল্যস্তীতি শ্লেষক্ষ প্রতিপ্রাভরেষ। প্রীমশোদরা তথৈব তরিয়োগাং। বনে বনে গান্তরোন রতোঃ

রামক্ষের চরণস্পর্শ বারা প্রমোদিত হইয়া পানীর, শোভন তৃণ কন্দর এবং কন্দ (মূল) বারা গো ও वयमा मम्ह महे वर्छमान बामकृतकः व शृका विखान कितिएए । अने ।

्टर मधीगर्गः तमाश्रद्धान्त महिल वटन वटन दिशानात्रवकाती बामकृष्य देशा मकटलंब लागवकान ब्रेक्ट **এবং তাহাদের পাশবারা চিহ্নিত হইয়া আছেন** वर्षार जाहाता बेखटक भागवस्त तब्स अवर केट्स অস্পন্দনং গতিমতাং পুলকস্তরূণাং নির্ঘোগপাশকৃতলক্ষণয়োবি চিত্রং॥ 🔖 এবস্থিধা ভগবতো যা বৃন্দাবনচারিণঃ। বর্ণয়স্ত্যো মিথো গোপ্যঃ ক্রীড়ান্তশ্ময়তাং যবুং॥ ১৯॥

ত্রীধরস্বামী।

গ্ৰাং ধর্ষণার্থা: পাশাশ্চ তৈ: ক্লতং লক্ষণং চিহুং যয়ো: শির্দি নির্যোগ্রেইনেন স্বন্ধত্ব পাশেন চ গোপপরিবৃঢ় প্রিয়া বিরাজমানয়ো-

বৈষ্ণবজোষণী।

অনেন তাসাং গ্রামসংখ্যেরবাং দূরগামিটিয়ন বিস্তীন্দেশগজীবগণস্থানাত্তং বিবক্ষিতং। অমুবনমিতি অত্রাপ্যবাস্তরভেদেন ততঃ স্বেষামের তন্বঞ্চনেন সর্ব্ধতঃ পুণাহীনত্বং গোপকৈরিতি দ্যায়াং কন্। তৎ পরিবারত্বেন মেহবিষয়ত্বাৎ। অতো গোপায়ন্তি ত্ব:খভয়স্থানাৎ এক্সিঞ্চং রক্ষন্তীতি শ্লেষণ্ট। অস্মাকন্ত ন তাদৃশপ্রেমদেবাদোগ্যতেতি ভাব:। নরতোরিতি তত্র তত্র গমনে তয়ো: স্বাচ্ছল্যং ঘটতে হা কট্টা নম্বন্ধংসিরিধাবিত্যেতং উদারেতি তত্র তেষ্•তদ্য প্রমান্দ্রদাত্তং। বেণি,তি তদীয়স্বনেইপি বৈশিট্যং কলপদৈরিতি ধ্বনৌ তু মধুরাক্টে কল ইত্যভিধানাং। মাধুর্বোণৈর তাবন্মনোহরতং তত্র চাক্ট্রাং কেয়ং সঙ্কেত্যেকিরিতি নানাভাবাক্রান্তা তদতিশ্যিকং। यदा। নৃপ্রকলশকার্কৈ: পদে: পাদবিক্ষপৈরিতি ত্বিলাসন্ধরণং বছকং গৌরবেণ। তহভুৎ-বিভি এব কম্বন্ত্ৰদেন পতেদিত্যেতে। সধ্য ইতীদং ভবত্যোহপি জানৰীত্যেতে। অম্পন্দনং কিঞ্চিলনস্যাপ্যভাব: গতি-মতাং প্রশস্ততচ্চক্রিযুক্তানাং অপি নিত্যতংস্বভাবানাং নদ্যাদীনামপি বা। অতঃ কিম্তাম্মাকং দ্রগ্যনমিত্যতং প্লকান্তরণামিতি অরোমকাণামপি অন্থুরোন্তেদমিষেণ রোমাঞো যুগপদেব জায়তে ইত্যেতং। অতঃ কম্পোহপি লক্ষিতত্তেন স্থাবরজঙ্গময়োর্ছ রো ধর্ম-বৈপরীত্যমপি। নির্বোগ্যেতি সর্ব্বাসামেৰ গ্রাং স্থানীলড়েন পাশান্তরামূপযোগাৎ নির্বোগাধ্যঃ পাশো নির্বোগপাশঃ সচ চপলস্বভাবানাং পশূনাং দোহন্যমনে গোবানজ্ব্বাসক্তাপাদবন্ধনরজ্জুত্তেন ক্তলক্ষণৈ:। গুণৈ: প্রতীতেতু কৃতলক্ষণাহতলক্ষণাবিত্যমরাৎ পর্মসৌন্দর্য্য-গুণেন প্রতীতে । ততশ্চানেন মৃকা তবকজুরাপ্রবয়পট্ময়তা তসা ধ্বনিতা সোহয়ং চোফীষাত্মপরি শোভাং দধানো গোপবেশ: সর্কোষাং মনোহর্ত্তাপি তাদাং শ্রীগোপস্থলরীণান্ধ বিশেষতো জেয়া। খদেশজাতিবয়ঃদৃশং বেশাদিকং হি সর্কোষ্ঠীব রোচকং স্তাদিতি। বিচিত্রমিতি তত্ত তত্ত্র স্বেষাং বিশ্বর মোহ: ইদং যথাযোগ্যং বহুত্ত যোজনীয়ং। অথ পূর্ব্ববং কেবলকুইফকবিষয়ভাব-ব্যঞ্জক দাম্মর্থ:। আহো দ্বাঃ ক্টং গোচারণমিষেণ সগণসভাত্কোংদৌ বনং ভ্রমন্ কিতব ইব লক্ষ্যত ইত্যান্ত গাঁ ইতি। নির্যোগ-পাশাভাাং ক্বতং সিদ্ধলকণং কিতবোচিতপদবন্ধনচিহ্ণ যয়োত্তথাভূতরোর্গোপকৈল্পদিপরসোল তেয় বত্ত্নাঞ্চ রক্ষকৈঃ পৃষ্টপালাবৈ।ঃ महानत्त्राः शा वनाधनः नय्रत्वाम (धा य উদার: সর্ক্ররীয়ান্ তদা বেণুস্থনৈর্জক্ষানাং অপ্পক্ষনমূহ স্থাবরাণাঞ প্লকোংছ:। কীদুলৈ মেহিনমন্ত্ৰবন্ধনোহরাব্যক্তপলৈ:। অতো মহাবৈণৰিক এৰাত্ৰ কিতৰ মূপা:। অন্যে তু তদম্বায়িন এব। তত্মানত্মাভিবিব তক্ত তু মোহনবিদ্যাত্মকো বেণুর্ভবতীতি ন' শ্রোতব্য:। অন্যথা ডাভ্যাং নির্যোগপাশাভ্যাং এব নৃনং ভবন্মনোবদ্ধং ভবিষ্যতীতি ভাবঃ এবং সর্বাপা স্বমোহত্বংখমেব বিবক্ষিতমিতি স্থিতং ॥

্তবং ব**হুণীলাবর্ণশ্লামাসিরে কভি বা মধা বর্ণনীয়া ইত্যুপসংহরতি ঈদুভো অগ্যমে**ছিন্যো যাঃ জীড়াঃ। তবং বিবিধ্যে হেডু-

ত্রীবিশনাথচক্রবর্তী।

সতোরিদং বিচিত্রং ভবতীতাবর: কিং তং। হে সধাঃ তহুভূৎস্থ শরীরিদু মধ্যে যে গতিনস্বস্তেষাং বেণুস্থনৈবস্পদ্দনং স্থাবরধ্যঃ। তরূণাং পূলকো জলমধ্য ইতি। নির্যোগাধাঃ পাশো নির্যোগপাশঃ সচ চণলানাং বৎসানাং লোহনসমুদ্রে গোবামজজ্ঞাসঙ্গতা গলবন্ধনবজ্জুঃ।
তেন কৃতলক্ষণরোঃ দৌন্ধ্যবিশেষ লাভেন খাতেয়োঃ। গুণৈঃ প্রতীতেতু কৃতলক্ষণাহিত লক্ষণাবিত্যমবঃ। তত্তিগ্রং মুক্তাত্তবক্
ভূইাগ্রহরঃ পীতপ্টমর উধীববন্ধভূষণবিশেষ ইব গোপালকপ্রবাঞ্জকোড়েই গাং মনোমোহন এব জ্ঞোঃ॥

উপসংহরতি। এবমিতি বৃশাবনচারিণো ভগবৃত এবদিধা অন্যা অপি যাঃ ক্রীড়াবর্ণরস্কোর বভূব্তকারতাং তৎপ্রচুপতাং ক্রীড়া প্রাচুর্ব্যং বর্ং প্রাপুঃ। স্বকারমভিস্তা তত্তৎক্রীড়াবতাো বভূব্রিতার্থঃ। যহা। সময়ে হডিসরস্কীতামা গোপাঃ এবদিধা ভগবতঃ ক্রীড়া

পাশস্থাপন করিয়া পোপদিগের জীর সহিত বিরাজ করিতেছেন। আর মাধ্য্যাস্পদ বেণুর নিনাদদারা শরীরিদিগের মধ্যে জীব সকলের যে অস্পদ্দন এবং তরু সকলের যে পুলক হইতেছে ইছা অতিশয় বিচিত্র। হে রাজন্! রুন্দাবনচারি ভগবান্ হরির এবদিধ ক্রীড়া প্রস্পার বর্ণন করিতে ২ গোপীগুণ ॥ 🗱 ॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং দশমক্ষমে শ্রীগোপি-কাগীতং একবিংশোহধ্যায়ঃ ॥ # ॥ ২১ ॥ # ॥

গ্রীশুক উবাচ॥

८ इगस्य धारम मामि नन्म बक्रकूमातिकाः। **८ इक्ष्ट्** विष्युः चुक्षाना काल्याग्रन्यक्रनबलः।

শ্রীধরস্বামী

রিতার্থ:। গোপীনাং কামত: ক্বফে নিংদীম প্রেমদক্ষম:। কাত্যায়ভচ্চ নােছ্ত তৎপ্রভ্রাদমহাংসব:॥১৯॥

॥ * ॥ ইতি দশমে একবিংশ: ॥ *॥

ন্ধাবিংশে গোপকজানাং বস্তাহরণলীলয়া। বরং দ্বা গতঃ ক্লফো যজ্ঞশালামিতীর্যতে॥ • ॥ প্রথমে মাসি মার্গনীর্বে॥ > ॥

বৈষ্ণবতোষণী।

ৰ্ভগৰত: নিজাশেষমাধুৰ্য্যং প্ৰকটমত:। তত্ৰ বৃন্দাবনচারিণ ইতি তাচ্ছীলোন তত্ত নিত্যতাদৃশলীলবং তাদাঞ্চ নিত্য তাদৃশ ভাৰত্বঞ ব্যক্সিত:। বৃন্দাবনবিচারিণ ইতি পাঠেতু তবৈশিষ্ট্যং তত্ত তাঃ সর্বা এব ক্রীড়া বর্ণমন্ত্যং সত্যন্তব্যমন্তাং ক্রীড়ামনতাং যযুঃ ভদাবিষ্টতাং প্রাতঃ॥ ১৯॥

॥ * ॥ इ जि बीरेवक्षवरावनाः जीमभूमग्रीक्षनारम्बविः ॥ * ॥

এবং প্রায়োরজাম্বরাদাগতানাং ব্ঢ়ানাং পূর্বাহ্রাগং শরৎপ্রসঙ্গে বর্ণয়্বা হেমন্তপ্রসঙ্গে কুমারীগাং পূর্বাহ্রাগপ্রক্রিয়ামাহ হেমন্ত প্রাদিনা ব্রন্ধনিতানেন। তিদিং বর্ণয়য়ং শ্রীহরিবংশে বিবিক্তং। য্বতীর্ণোপকন্যান্ট রাজৌ স্কাল্য কালবিদিতানেন। নত্ন তত আরভ্য নন্দস্ত ইত্যাদিনা শ্রীধিকাদীনাং প্রমর্মাত্বং স্থাপিতং। যত্ত্বাহ্রা শ্রীপ্রন্ধন চ ব্রন্ধ ইত্যাদিনা দুর্গিষ্যতে চ। দামোদরাধরস্থধামপি গোপিকানাং ইত্যানেন চ তদেব দূঢ়ীকৃতং। রাসপ্রসঙ্গে কৃষ্ণবিধ্ব ইতি চ বক্ষাতে। আগমে চাস্তাম্পৃষ্টতরিত্যক্রেয়সীত্বেন চ তত্ত্বাসনা বিধীয়তে। শ্রীমদ্দাক্ষরস্থ তরামব্যাথ্যাত্ম গোতমীরে শ্রীনারদেন গোপিকানাং পতিরেবেতি পর্য্যাপণং কৃতং। শ্রীক্রম্বাহিতি বিদ্যাধার প্রতি চ বক্ষাতা চ স বো হি স্বামী ভবতীতি তদেব সাক্ষাৎ শ্রমতে। তথা যদ্ধার্থস্কংপ্রিয়াত্মতনয় ইত্যাদিনা তথেব নিশ্চীয়তে। তাপনী শ্রুতো চ স বো হি স্বামী ভবতীতি তদেব সাক্ষাৎ শ্রমতে। তথা যদ্ধার্যপ্রস্থ শ্রেষ্ঠানাত তদেক্যোগ্যানাং তাসাং দানং ন শ্রুরীয়তে দানে চ সতি জ্বাম্বন্ ব্রত্তর্গাস্থতজন্মভিঃ স্থাদিন

ক্রমদক্তঃ।

॥ *॥ देखि जीमगरम क्रममनार्ड এक विःगः ॥ *॥

এবং বাঢ়ানাং পূর্বামুরাগং শরৎপ্রদক্ষে বর্ণয়িত্বা হেমন্তপ্রদক্ষে তদু জকুমারীণাং বর্ণয়তি হেমন্ত ইত্যাদিনা ব্রজমিতান্তেন ॥ ১ ॥

ঞীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

ভগবৎকর্ত্তকা: ভগবৎকর্মকাশ্চ মিথো রহসি যয়ু: প্রাপ্: ক্রীড়স্ত্য ক্রীড়স্ত্যশ্চ বভূব্রিত্যর্থ:। মিথো হন্যোন্যং রহস্যপীত্যমর:। ততঃ পরং তন্মতাং ক্রীড়া তাদাক্যমানন্দমোহক প্রাপু:। ব্যাধ্যেম্মবশ্যোপাদেয়া অগ্রিমগ্রন্থে যহাত্ত্বাক্রেত্যক স্বয়াভির্মিতা ইভূয়কে:॥১৯

॥ 🛊 ॥ ইতি সারার্থদর্শিন্যাং হর্ষিণ্যাং ভক্তচেতসাং। একবিংশোহত দশ্দে সক্ষত: সক্ষত: সতাং ॥ 🛊 ॥

षाবিংশে চণ্ডিকাপূলা গোপীভিব[®]শসাং স্বৃতিঃ। সংলাপো বরদান**ত্ত স্তৃতিঃ ক্লেন কীর্ত্ততে॥ •**॥

বাঢ়ানাং শর্মি ক্ষাসুরাগং বর্ণদ্বিত্বা অন্ঢ়ানামপি গোপীনাং তমছবর্ণদংস্তানাং নিত্যসিদ্ধক্ষতথেরসীভাবানামপি কৃষ্ণপ্রাপ্তিকামন্য

তশ্যুকা প্রাপ্ত হইয়াছিলেন॥ ১৯॥

॥ *॥ इंछि म्मर्य धकविःम ॥ *॥

দ্বাবিংশতি অধ্যায়ে বস্ত্ৰহরণ লীলাবারা গোপকন্যাদের প্রতি শ্রিক্ষের বর্ষান, তদনন্তর যজ্ঞ-শালায় গমন বর্ণন ॥ ০ ॥

শুক্দেব কহিলেন হে রাজন্! হেমস্তের প্রথমে অর্থাৎ অগ্রহায়ণমাসে নন্দরজের কুমারিকা

আপ্রুতান্তিদি কালিন্দ্যা জলান্তে চোদিতেহরুণে। কৃষা প্রতিকৃতিং দেবীমানর্জু নূর্প দৈকতীং। গক্তিমানিয়ঃ স্থরভিভিব লিভির্ধু পদীপকৈঃ। উচ্চাবচৈন্চোপহারৈঃ প্রবালফলতণ্ডুলৈঃ॥ ১॥ কাত্যায়নি মহামায়ে মহাযোগিন্যধীশবি । নন্দগোপস্থতং দেবি পতিং মে কুরু তে নমঃ॥

বৈক্ষৰভোষণী।

ত্যাদি শ্রীকরিণী হ্রচনবত্তদেকালখনং জীবনমপি ন সন্থাবাতে। অন্তপুরুষসম্বেদ্ধন স্তরাং তথি কথম্চাতে ব্ঢ়ানামিতি অত্র সমাধীয়তে তত্তংক্রার্থাস্পপত্যার্থাপিত্তি প্রমাণেন লীলাশকৈয়ব মায়াদিয়ায় মিথৈয়ে তং প্রপঞ্চিতং। য এতংপিতরং তাশ্চ সর্ক্রে ব্রহ্মবাসিনশ্চ তথাসূতা ভ্রান্তা বভূব্ং। তথাপি স্বাভাবিকবাসনা মন্যা শ্রীকৃষ্ণৈকপত্যাশায়া তা অপি জীবনং ব্রক্তঃ পুরুষান্তর সম্বন্ধ তাসাং স্বদ্রক্রনরা মায়য়া। মন্তমানাঃ স্বপার্মস্থান্ স্বান্ত্রান্য ক্রেক্সনরা মায়য়া। মন্তমানাঃ স্বপার্মস্থান্ স্বান্ত্রান্য ক্রেক্সার মায়য়া। মন্তমানাঃ স্বপার্মস্থান্ স্বান্ত্রান্য ব্রহ্মাক্র ইত্যুপলক্ষণীকরিষ্যতে তদেতদিপ যথাহধনে। লন্ধনে বিনষ্টে তিচিন্তরাক্র প্রিভ্রেল বিশ্বা স্থিতির বৈচিন্ত্রী পােষার্থমেবেতি দিক্। রাসপ্রসক্ষে তু বিশেষতঃ স্থাপার্ময়তে অথ প্রস্তমস্বসরামঃ শ্রীনন্দন্ত ব্রহে বা কুমারিকা ইতিস এবার্থঃ। তত্ত্বং যুবতীর্গোপকন্যান্ট ইতি। কন্ প্রত্যায়ে বান্যবিবক্ষরাহ্রার্থে কাত্যান্য নী বৈঞ্চনী শক্তিস্বস্যার্চনরূপং ব্রহং॥

তাসাং তাদৃশীং তদপ্রাগচেষ্টাং দর্শরংস্ক চিকীয়ু ন্ জনানপি বোধয়ন্ তংপ্রকারমেবাহ আপুত্যেতি সাহৈ ব্রিভি:। আপুত্যেতি যুগ্দং অন্তর্গাদিনা হেমন্তরতে কৃদ্ধং দর্শিতং কালিন্দ্যা এব জ্লান্তে অন্যাপি ঘট্টবাদিনী দেবীনায়া প্রাদিনে ব্রুঘটে। অকণে স্থ্যসারথৌ দেবীং কাত্যায়নীং সৈকতীং প্রতিকৃতিং কৃষা তদভিম্বেন প্রতিষ্ঠাপ্য ইত্যর্থ:। সৈকতীমিত্য চিরাং সাধ্যসাধনদেন। হে নৃপ ইতি অপ্রাপ্তবােবনা অপীদৃশেন রাগেণ ভজন্তি ইতি বিচারয় প্রকৃষ্ণমোহনতামিতি ভাব:। স্বভিভিরিতি যথাপেকং সহর্বিধি যোলাং। বছবং তব্রঘল্যাং বলিভিব ক্রন্থবাহ্যপচারে: উচ্চাবটেরনান্দ্র বিবিধৈকৈ:। তানেবাহ প্রবালেতি। অত্র ক্রমভঙ্গঃ প্রকৃষ্ণহ্রতমনন্থাং তাবাং তদ্বিশ্বতে:। প্রবাদরায়ণেরের বা তহুত্ব কথনে সন্মোহাং॥ ১॥

কাত্যেতি দাৰ্দ্ধকং। কাত্যায়নীতি তন্মনিংশপ্ৰকাশকভাং মহাধৰ্মদাতৃত্বং স্থচিতং। হে মহামায়ে হে ভগৰতো মহাশক্তিরূপে ইত্যভীষ্টপ্রাপ্তিযোগ্যাং শক্তিমন্মভ্যমপি দাতৃং সমর্থাসীত্যর্থং। অত্র কাপি ছর্ঘটিতা চেত্ততাপ্যাহ্য হে মহাযোগিনি ছর্ঘটিছানাসমর্থে নম্বন্যাং কাঞ্চিদ্দেবতাং ভব্দধং ইতি স্বনিষ্ঠাং পরীক্ষমাণাং প্রত্যাহঃ। হে অধীমরি ন স্বত্ত উর্দ্ধং কাচিদ্দেবতা ইত্যর্থঃ। নন্দগোপস্থতং গ্রীমন্ত্রন্

ক্রমদন্দর্ভ:।

কাত্যায়নী বৈষ্ণবীশক্তি:॥

बैविश्वनाथठकवर्डी ।

লোকরীতৈয়ব হেমস্তে দেবীপূজামাহ হেমস্তে ইতি। প্রথমে মার্গণীর্ধে তাদাং ক্লফকাস্তানাং ভেদবন্ধমিদং শ্রীহরিবংশ বিষ্ণুপ্রাণ ব্রহ্মপুরাণাদাধপি দৃষ্টং। যুবতীর্গোপকন্যাশ্চ রাবৌ স্কাল্য কালবিদিত্যাদিভি:॥

विण्डिव जिल्ल्य गरेन द्वारा श्राप्त । ३॥

হে কাত্যায়নি নন্দগোপস্থতং মে পতিং কুরু। নমু কুর্বিত্যনেন মধ্যেব কিমিতি তত্র স্বাতস্ত্রমর্প্যতে। অহন্ত তদর্থং ত্ৎ-পিতরৌ প্রেরম্ব্যামি মাত্রং তত্মাৎ কার্বেতি দেহীতি বা প্রযুজ্যতামিত্যাশক্ষ্য সবৈক্ল্যমাহ। হৈ মহাধোগিনীতি তেন সংযোগ-ক্ষরেব শীঘ্রং সম্পাদ্যো নতু পিত্রাদিব্যবধানোপত্রবেব। প্রমোৎকঠাবতীভির্ম্মাভিঃ কাল্যবিল্যম্যাসম্ভূত্মণ। কুঞ্স্য সম্প্রত্যমূপ-

সকল হবিষ্য ভোজিনী হইয়া কাত্যায়নীর অর্চনরূপ ত্রত আরম্ভ করিলেন। অরুণোদয়কালে যমুনা জলে সান করিয়া তাঁহারা জলসমীপে সৈক্তী অর্থাৎ বালুকাময়ী প্রতিমান্থাপনপূর্বক স্থান্ধি গন্ধ, মাল্য, ধূপ, দীপ, বলি (পূজার উপহার) প্রবাল, ফল, তুওুল, তথা অন্যান্য উচ্চাবচ (নানাপ্রকার) উপহার দিয়া দেবীর পূজা করিতে লাগিলেন॥

সেই সকল কুমারী " হে কাত্যায়নি ! হে মহামায়ে ! হে মহাযোগিনি ! হে অধীখরি ! অনুগ্রহ

ইতি মন্ত্ৰং **লপভ্যতাঃ পূজাঞ্জ**ুঃ কুমারিকাঃ॥ ২ ॥

শ্রীধর খামী

মহামায়ে ইত্যাদিসধোধনৈ তাব ন কিঞ্চিদশকামিতি স্চরকো মে ইতি প্রত্যেকং প্রার্থ্যন্তে॥ ২॥

देवश्रवरञावनी ।

রাজকুমারমিতি নিজভাবান্নরপালখন নির্দেশতেন তদাৈব সর্ব্বোপাদেরত্বন ক্রুবামিপ স্চিতং। অত্র নন্দেতি নাক্ষান্মহাগুরুনাম গ্রহণং গোপেতি বিশেষণঞ্চ তভছেৰস্যাভাগতিবশৃষ্মা। নমু তৎপ্রাপ্তরে তমেবারাধুরত তত্রাহা। হে দেবি ক্রীড়ারসাভিজ্ঞে তদর্থং পাক্ষাৎ তৎপ্রার্থনান ন রসাবহমিতি জানাস্যোবত্যর্থং। মে ইত্যেকত্বঃ প্রতি অং পৃথক্ জপাৎ ইতি এতং মন্ত্রং প্রতঃ প্রাক্ষাক্ এবালো প্রীরক্ষণক্ষণ পতিপ্রদা মন্ত্রং ততশাস্যা দেব্যাঃ অরপশক্তিব্বেৰ মন্তব্যংন বহিরক্ষ জগৎকারণশক্তিবং পূর্বস্যাঃ। ন বিষ্কুনা বিনা লক্ষী ন হিরিঃ পদ্মলাং বিনেতি ভগবদৈক্যাৎ। উত্তর্জাঃ যস্যাংশাংশাংশাংশাংশালানে বিশ্বন্তিপ্রস্তাদিনা তদপেকরাতিপুষ্কেরে। যাতীতগোচরাবাচাং সনসাঞ্চাবিশেষণা। জ্ঞানিজ্ঞানপরিছেন্দ্রা বন্দে তামীখরীং প্রাং। সর্ব্বভ্তেম্ সর্বাত্মা বা শক্তিরপর। তব। গুণাশ্র্যা নমন্ত্রশৈর শার্ষতারৈ ম্বরেষর। ইতি বিষ্কুপুরাণপদ্যাভ্যাং তালুশভেদপ্রাপ্তঃ।

তথাচ নারদপঞ্চরাতে প্রতিবিদ্যাপ্যাদে। জানাত্যকা পরা কান্তং দৈব ছুর্না তদান্থিকা। যা পরা প্রমা শক্তিম হাবিষ্ণুস্বর্গপিনী। যাসা বিজ্ঞানমাত্রেণ পরাণাং প্রমাদ্ধনা। মুহুর্তাদেব দেবসা প্রাপ্তিভবিত নানাথা। একেরং প্রেমস্বর্ধস্বভাবা
গোকুলেশরী। জনয়া স্থলভো জ্ঞের আদিদেবোহবিলেশর:। জস্যা আবরিকা শক্তি ম হামায়াথিলেশরী। যারা মুগ্ধং জগং
সর্ব্ধং সর্ব্ধে দেহাভিদানিন ইতি। জতঃ প্রথমবাষ্টাদশান্দরীত্যধিষ্ঠান্ত্রীতি গমাতে। ছুর্না মহামারেত্যাদিনামাদিসাম্যেনৈব তু
লমো ভবতীতি জেয়া। অথবা মন্ত্রেহ শিংস্তৃতীয়ঃ পাঁদো নিজাভীষ্টনায়া যোজ্য ইত্যেব বিধিঃ স্যাব। ততো ব্রন্ধায় লোকর্লীলম্বাং মারোপাসননেক লভ্যতে তাসাঞ্চ প্রমপ্রেমালাস বিলসিত্যের তথোপাসনং প্রেমের চ তথা তৎপ্রাপ্তি ন তথোপাসনেন ইতি
বিবেকবাং। অত্র কেচিদননান্দ্রতা যদন্তব্ধ সন্তর্গত কেন ভদীরপ্রেমগন্ধসম্বন্ধগন্ধবাহ্মণি স্পৃশন্তি সর্ব্ধিত্র ভন্ধভগবংপ্রেমির হি
পুর্বার্থা। সর্ব্ধমন্ত্র দৈবতোপাসনাদিকত্ত তৎসাধনমেবৈতি শ্রীমন্তাগবতসিদ্ধান্ত:। সচ তাসাং সিদ্ধ: সর্ব্ধসমৃদ্ধিক্তশেক্ত কিং সাধনবিচাবেণ প্রস্বসাধ্যস্বরূপপ্রেমবিচারে তু সচ প্রেমা কেবল মাধুর্যাক্সভাবিভিনিবী। অনন্তভক্তিপ্রবৃত্তিকারণেন পারনৈশ্বর্ধ্যান্ত্রভবনে নতু সন্তর্গাৎ নিমাং বিরিক্ষ ইত্যাদৌ ইথং সভাং ইত্যাদৌ

ক্রমসন্দর্ভ:।

ইত্যেবং মন্ত্র: অতঃ প্রাক্ নিদ্ধ এবাসৌ। তত্র যদি তৃতীয়পাদাভীইনাম্বো যোজনীয় ইত্যেব রিধিঃ স্থাতদা লোকবল্লীলয়া মায়ো-পাসনমেব যদি তু সোহপি পুর্বাসিদান্তদা স্বরূপ শক্ত্যপাসনমেবেদং॥ ২॥

ত্রীবিখনাথচক্রবর্তী।

নীতবেন বিবাহাযোগ্যবাৎ। হে দেবি মুখ্যং বিবাহং বিলৈব কেবলগান্ধবিবাহেনৈব মে পতিং কুৰ্মিতাৰ্থ:। অধীশ্বীতি তত্ৰ তব কিমপ্যশ্বাং নান্তীতি ভাবঃ। নহু তব ক্ষে পতিভাবক্ত ছংপিত্ভামজাতবে ছদভীইঃ ক্ষালসলঃ কথং সাধু সেংগুতীত্যভ্জাহ মহামারে মায়ন্না মংপিতবৌ তথা মোহর বথা কদাচিদপি গোপান্তরেণ মহিবাহ ছাভ্যাং ন ভাবতে ক্ষালসল রহস্তক নচ জাতুং শকাতে। হয়। দীবাতি ক্রীভৃতি দেবয়তি ক্রীড়ন্তীতি বা দেবী স চাসৌ পতিশেতি ভং। তাদৃশং পতিছং বিবাহং বিনৈব সিদ্ধাতীতি মম গোপান্তরব্যুত্তেহপিংন কাপি ক্ততিরিতি ভাবঃ। ইত্যেবং প্রত্যেকং মন্ত্রার্থং পৃথক্ পৃথক্ বিচিন্ত্যেত্যর্থঃ। ইনং তাভিক্রপাসিতা চিচ্ছক্তি বৃত্তিস্বরূপভূতা যোগমানৈর নতু বহির্দ্ধা মান্না বহুক্তং নারদগঞ্চরাত্রে প্রতিবিদ্যাসন্ধাদে। জানাত্যেকাপরা কাজং সৈব হুর্গা তদান্থিক। যা পরা পরমা শক্তিম হাবিক্স্থনপিনী। যক্তা বিজ্ঞানাত্রেণ পরাণাং পরমান্তন:। মূহুর্তাদ্বেব দেবস্য প্রাপ্তিকবিত নাক্রপ। একেরং প্রেমসর্বাহ ছভাবা ক্রিক্সেশ্বরী। জন্মা হুলতো ক্রেম্ব জ্বাহিত্যিত্যেবতেত্যাগদে তদ্ববন্ধক হামান্নাধিলেশ্বরী। যন্ত্রা স্বর্গতেত্যাগদে তদ্ববন্ধকার ভাব করিবাশক্তিম হামান্নাধিলেশ্বরী। যন্ত্রা স্বর্গত কর্পে সর্বাহে কর্গত সর্বাহ ক্রাহিটাত্যেবতেত্যাগদে তদ্ববন্ধকার স্বিত্তিক বৃত্তিঃ ক্ষণ্ডগিনিতাকানংশাভিধানা যোগমান্তির মন্ত্রাহিটাত্য ক্ষণ্ডার্গদি নাম্যদি

করিয়া আমাদিগকে নন্দগোপের হুতকে পতিরূপে প্রদান করুন, আপনাকে নমস্বার করি" এই মস্ত্র জপ করত পূজা করিলেন॥ ২॥ এবং মাসং ব্রতঞ্জের কুমার্য্য: কৃষ্ণচেতসঃ। ভদ্রকালীং সমানর্চ্চু স্থান্ধলম্বতঃ পতিঃ॥ ৩॥ উষম্যুখায় গোত্রৈঃ বৈরন্যোন্যা বন্ধবাহবঃ। কৃষ্ণমুক্তৈর্জগুর্যাস্ত্যঃ কালিন্দ্যাং স্লাভুমন্বহং।
নদ্যাঃ কদাচিদাগত্য তীরে, নিঃক্ষিপ্য পূর্ববং। বাসাংসি কৃষ্ণং গায়স্ত্যো বিজহু; সলিলে মুদা ॥৪

কৃষ্টেতত্ত্বমেবাহ ভূরাদ্রন্দ্রভঃ পতিরিত্যানর্চ্ রিতি॥ ৩॥

ত্রতক্ত পূর্বাঙ্গমাহ উষদীতি। গোত্তৈন মিভি: অক্টোক্তা বন্ধবাহৰ: পরম্পরং গৃহীতপাণয়:॥ ৫ ॥

বৈষ্ণবজোষণী।

নামং শ্রিমোধকেত্যাদৌ শ্রীজকাদিন এব সর্ব্বোপরি প্রশংস্যক্তে তথৈবাজোক্তং নন্দগোপস্থতনিতি নতু শ্রীভগবস্তমিতি। তৃত্মাত্তাসাং শুদ্ধমধুরপ্রেম এব কিল বিলাসোধমং নাজদিতি সর্ব্বোপর্য্যেব স্থিতমিদং ॥ ২॥

্মাদেতি স্বরেটন্ব কালেন তাদাং তাদৃশ্যপি দিছিরিতি ভাব:। ক্লফে চেতো যাদামিতি তদ্যা: সমর্চনমপি র্ফার্চনমেবেত্যভি-প্রেতং অতএবাতো চ'বরদানায় শ্রীক্লসৈবাগমনং বন্ধাতি ভূযাদিতি পূজাদৌ সহল:॥ ৩॥

প্রেয়া বিশ্বতমণি প্নতাসাং অম্বাগণরিপাটীনয়ং ব্রতপূর্বাঙ্গং শ্বরয়াই উইদীতি উইম্যাথার ইতি তাসামুংকঠা গোতে ন'মিভি: বৈরতি পরস্পরকার্যসাধকতং। হেতে তৃতীয়া। নিথতত্বরমন্ডিরাইতা ইত্যথং। শ্বৈর্থ গৈঃ সই ইতি বা অন্যোহন্যাইতি শ্রীকৃষ্ণরাগময়ৈক মত্যেন মিথঃ ক্রেইবিশেষঃ ক্র্যুমিভি চেতোবছ্চনস্যাপি তদেকনিষ্ঠতা তত্রাপ্টেচরিতি তদাবেশঃ। কালিল্যাং স্লাত্মশ্বহমিতি দ্বণগননং নিত্যমেক রসত্বক্ষ দর্শিতং এবমনুরাগবৈশিষ্টামেব সর্ব্বথা বর্ণিতমিতি॥

ক্লাচিত্তঝাসাত্তে পৌর্থনাসাং। পূর্ববিদতি স্টাব নগ্নতথা সান্মিত্যাদিকং বোধাতে এতক বালাভাবাদেব। মুদা বিহারে হেতৃ: কৃষ্ণং গায়স্তা ইতি তালানানন্দন হেমন্তজ্ঞানেহিপি শীতাদ্যক্তে:। যথা। মুদেতি এতস্য তাদিনে পূর্ণহাৎ অতএব কৃষ্ণং গায়স্তা বিজহুরিতি দেহানমুস্থানেনচ কৃষ্ণচেত্ত্বনেব বিশেষতং। এবং মানস্বাচিককাশ্লিকৈকতানত্বং দর্শিতং॥ ৪॥

ক্রমসন্দর্ভঃ

रेचर्र्तारेजः वर्रेनः मह॥०॥८॥७॥७॥०॥৮॥२॥४०॥ २०॥ २२॥

ঐবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

সাম্যেনৈর লোকানাং ত্রমো ভরতীতি জ্বেরং। ব্রহ্মসালোকবল্লীলম্বানারোপাসনেহপি ন দোর:। জত্র কেচিদনন্যশ্রন্যা যদন্যথা মন্যত্তে ন তে তদীরপ্রেমগন্ধসম্বন্ধরবাহ্মপি স্পৃশকীতি শ্রীবৈষ্ণরতোষণী॥ ২॥

নন্সুতঃ পতিভূ বালিতি সকল্যেতি শেষ:॥ ৩॥

আপু ত্যান্তনীত্যক্তং তৎ পূৰ্বক্ৰমমন্ত্ৰতাহ উষদীতি। খৈঃ বৈৰ্ণোতৈন মিভির্যি ধন্যে ক্তাদি কিমিতি বিলয়দে ইত্যেবমাহৃত। ইত্যর্থ: । কদাচিদিতি বতপূর্ণদিনে পৌণমাসামেব এবং মাসং এতং চেক্রিতান্তরেক্ত্রভাগং। কতেবোৎসবার্থং কুমারীভিন্তাভিঃ সমানবাসনত্বন প্রণয়াম্পদীভূতা ব্রভায়নন্দিন্যাদ্যা ক্ষপি নিমন্ত্রানীতাঃ পুকাসমধ্যেনহুবং তাভিঃ সহৈবাবভূধ সানদেশ্যাহ্যং হলবিহারো প্রেরঃ ॥ ৪ ॥

হে রাজন্ ! শ্রীকৃষ্ণে চিন্তার্পণপূর্ব্বক ব্রজকুমারীগণ এই প্রকারে একমাস কাল ব্রতাচরণ তথা "নন্দস্থত স্বামাদের পতি হউন্" এই কামনায় ভদ্রকালীর স্বর্চনা করিতে লাগিলেন॥ ০॥

তাহারা প্রভূষে গাত্রোত্থান করিয়া স্বং নাম সন্থ পরস্পার হস্ত গ্রহণ পূর্বেক যমুনায় সান করিতে যাইতেন এবং চলিতে করিতে উচ্চৈঃস্বরে শ্রীকৃষ্ণের গুণ গান করিতেন। একদিন অর্থাৎ মাসাস্তে পূর্ণিমার দিবস নদীতীরে উপস্থিত হইয়া অন্যান্য দিনের ন্যায় বসন স্থাপন পূর্বেক শ্রীকৃষ্ণের গুণ গান করিতে ২ জলমধ্যে কেলি আরম্ভ করিলেন॥ ৪ ।

ভগবাংস্তদভিপ্রেত্য ক্ষো যোগেশরেশর:। বন্ধন্যৈরাগতন্তত্ত রুতত্তৎকর্মসিদ্ধয়ে ॥ ৫॥ তাসাং বাসাংস্থাদার নীপ্সারুছ সম্বরঃ। হসন্ভিঃ প্রহাসন্বাচ হ ॥ ৬॥

विधववामी।

যোগেশ্বরাণামীশ্বর ইতি প্রত্যেকং তাদৃঙ্যুনোরথপুরণসামর্থাং দর্শয়তি তাসাং কর্মণঃ সিদ্ধয়ে ফলদানায়েতি ॥ ৫ ॥ নীপং কদস্বং বালৈ: সহ ॥ ৬ ॥

বৈষ্ণবতোষণী।

ষোগেশরাণাং লব্ধ সার্বজ্ঞানি সিন্ধীনাং আরাধ্যঃ অতএব ভগবান্ নিত্যবাভাবিকসার্বজ্ঞানিশক্তিযুক্তোহপি তত্তপ্য ব্রত্যাব্যিকার্ব্য অভিপ্রেত্য নিজ্গানাদিরীতিবিশেবেণাস্মীরৈবেতি তদ্য তাদৃশত্বংপ্রেমন্যলীলামাধুগাবেশো দর্শিতঃ। তথাপি দেবতাস্তব্যাপাদকেভ্যোহপি স্বয়ং ফলদানে যুগপদ্ধিল ব্রহ্রণে চ শক্তিদ শিতা। ত্র হেতুঃ ক্ষেত্তাদ্শত্বনৈব প্রাণিদ্ধ ইত্যবঃ। বালৈরিতি জ্ঞেয়ং। তৈ বৃতিঃ স্বাগত ইতি তে চ পর্মাস্তরক। দামস্থানব্যাম কিকণ্যো জ্ঞেয়াঃ। যথোকং গৌত্মীয়ে। দামস্থানব্যাম কিকণ্যো জ্ঞেয়াঃ। যথোকং গৌত্মীয়ে। দামস্থানব্যাম কিকণ্যো ক্ষেত্তি। অস্তঃকরণরপাত্তে ক্ষ্প্য পরিকীর্ষিতাঃ। আল্লাভেদেনৈব পূজা যথা ক্ষাত্তিগব তে ইতি। অস্তঃকরণরূপা ইতি ক্রেনেণ বৃদ্ধাহকার চিত্তমনোরূপা ইত্যর্থঃ। তৈর্ত ইতি হাসাদিবিলাসার্থং জ্ঞেয়ং॥ ৫॥

বালৈ: সহ সত্তরং ভীত ইব ত্রায়ুক্ত: পরপ্রেরং তৃঞীমাসাদ্য তাসাং বাসাংসি প্রয়োজনবিশেষায় উপাদেয়ত্বেন, গৃহীতা নীপমাক্ষ্ চ বৈর: সন্ তৈরেব হসন্তি: সহ স্বয়ঞ্চ প্রহসন্ তেন চ হাসেন কুতাত্মসদ্ধানা: সপ্রণয়ের্ধ্যং জ্ঞাত্বৈবাজ্ঞাত্বেব চাক্রবাণা: প্রতি পরিহাস-মিতি। কথং শীতজ্ঞলে চিরং বত কম্পমানান্তিষ্ঠথ উথায়াদ্র পরিত্যেক্য শুক্ষমেব বাস: পরিধীয়তামিতি তদেবং কর্ম ভ্রানেব ভ্রা-

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্ত্তী।

যোগেখরাণামপীশ্বর ইত্যনেন সর্বজ্ঞং। তাসাং প্রত্যেকং তাদৃখ্যনারথপূরণদামর্থ্যং। তাভিঃ স্বেকণপথে এব স্থাপি তানান্মধিলানামিপি বস্ত্রাণাং চৌর্যুদামর্থ্যং। প্রাণত্যাগাদিপি তাদৃশলক্ষাত্যাগমধিকং নিশ্চিষতীনাং তাসাং কুলকুমারীণাং জলাহ্রখাপন স্বপ্রধানাদিদামর্থ্যং। দৃঢ়দর্বাঙ্গানাং রহঃ প্রাপ্তানাং স্বশ্যানামিপি তাসাং তাদাঝিক সম্ভোগাভাবসামর্থ্যক্ষ দ্যোতিতং। বর্ষদ্যের্থ্ ইতি বালৈরিতি বক্ষ্যমাণ্ডাং। দ্বিরবর্ষীয়াঃ স্ত্রীপুংসভেদবিবেক শ্ন্যাঃ পৃথুকা দিয়াদদ এব স্থিবেনাভিমতাঃ। গোচারণাদাবিপি কৃষ্ণস্বং অত্যক্ত তো জ্বোঃ। বহুকেং ক্রমদীপিকায়াং। জল্মান্ত্রপীবরকটীরতটীনিবন্ধব্যালোল কিছিণিঘটাতিতৈরটিঙ্কঃ। মুঝেন্তরক্ষ্নথক্রিতক্ষিত্ত ক্রমন্ত্রক্ষ্রব্যক্তমঞ্বচনৈঃ পৃথুকৈঃ পরীতং ইতি বৈঞ্বতোষণ্যাং তেতু দাম স্থদাম বস্থদাম কিছিণয়ঃ কৃষ্ণান্তঃকরণক্ষপাত্তে গৌতন্মীয়তক্ষ দৃষ্টা ইত্যক্তং॥ ৫॥

হসন্তিব বিদ্যালি বালালি বালালি বিদ্যালি তি ভাবঃ সহ প্রকর্ষেণ হসন্তি হাস্যালকেনৈব তাঃ স্বন্ধাপন্তি ভাবঃ। পরিহাসনিতি ভা ব্রন্ধানিকাঃ অন্ধ্র কদৰণাথাবেতাবন্তি বল্লাণি কেন নিবদ্ধা স্থাপিতানি যুবং কিং জানীথ ন বা। মন্ন তু গাণ্চাব্যতা দ্বাদেব দৃই। কিমন্নমন্ধাকীনঃ কনৰোহদ্য বিচিত্র বাসাংস্যেব পূশ্ফলানি দধাবেত্যাশ্চর্যাদর্শনোল্লিতেন জ্বত্যাগত্যাক্ষত্তিতি । নহু ভো অন্মনীনানেট্বতানি বাসাংসি মৈবং উহি কথমেতাবহুচ্চ কদৰণাথামান্ধানি। নহু ভোল্ডের চোরিয়ে আবেরহিতানি। সত্যং সত্যমেতাবস্তমণি পরিবাদং দাছে বলং ধন্ধে নন্দ্য রাজঃ পুল্লোহহং চৌরস্তদ্য যুবং মধ্রাহ্ন্য কংসরাজ্য পার্যং বিষাস্থেত্যম্নীরতে। নহু ভো মাকুধ্য বল্লাণ্যেব নিভাল্য বিচাব্য কিমেতানি স্ত্রীবল্লাণ পুংবল্লাণি বা সত্যমনি ধীমত্যো নিভানি তান্যেতানি স্ত্রীবল্লাব। তৎ কিং জগতান্ত্রিন যুন্ধমেব জ্বিঃ স্থঃ জন্যাঃ স্থিবো নহু ভোঃ সম্প্রাহ্ন্য ক্ষেত্র নির্দ্ধান বল্লা বিলাকা ব্রাহ্মান প্রিয়ে কং ভাল হুর্গাপুলিকা যুন্ধমেব নান্যাঃ। সন্ত্যং নালা এব। অনি মুধ্যাং প্রতি নিশীপ্তান্ধান্ধান কিং ভাল হুর্গাপুলিকা যুন্ধমেব নান্যাঃ। সত্যং নালা এব। অনি মুধ্যাং প্রতি নিশীপ্তান্ত্র কিং ভোল হুর্গাপুলিকা যুন্ধমেব নান্যাঃ। সত্যং নালা এব। অনি মুধ্যাং প্রতি নিশীপ্তান্ত্র কিং ভোলকা বিলাকা বিল

যোগেশর দিগের ঈশর ভগবান্ প্রীকৃষ্ণ ভাহা অবগত হইয়া ভাঁহা দিগের কর্মের ফল দান নিমিত বয়স্য বালকপণ সহ সেই স্থানে আগমন করিলেন ॥ ৫॥

় এবং তাঁহাদিগের বসন হরণ করিয়া সত্ত্বর ক**দ্যতরূপরি আরোহণ করিলেন। পরে হা**স্যকারি

জত্রাগত্যাবলাঃ কামং স্বং স্বং বাসঃ প্রগৃছতাং। সত্যং ক্রবাণি নো নর্ম্ম যদযুমং ত্রতকর্শিতাঃ॥৭ ন ময়োদিতপূর্বং বা অনৃতং তদিনে বিছঃ। একৈকশঃ প্রতীচ্ছধ্বং সচৈবেতি স্থমধ্যমাঃ॥৮॥

औरद्यामी।

হে অবলাঃ নো নৰ্ম ন পরিহালো ক্ষাং যুগং ব্রতপ্রাস্তাঃ ॥ ৭॥ একৈকশো বা আগত্য স্বীকুক্ত সহৈব বা। ন ত্রামাক্ষাগ্রহ ইত্যর্থঃ ॥ ৮॥

বৈষ্ণবভোষণী।

নিব ইতি ন্যায়েন নাযুক্তমিত্যাদি মিথংসন্বাদপ্রংসরং সনন্দ্রবাক্যমিত্যথং। হ ক্টমেবোবাচ ইত্যথং। বালৈরিতি তংখেলনাথং পুরৈব প্রোঢ়ানাং তরিকটসন্ধিনাঞ্পরিত্যাগেন বালকৈরেব স্থিভিন্ততো নাৰ্দ্যং॥ ৬॥

পরিহাদোক্তিমেবাহ অত্রেতি ছাডাাং। অত্রাগত্য ইতি নির্ভর বদৃষ্টিবিষয়ং দর্শরতি তবৈর বল্পকে পর্যান্তিরিতি ব্যাজেন। কামং যথেইং প্রকর্ষেণ গৃহতামিতি কটিত্যাগমনায় তাং প্রোংসাহরতি তথা অন্যোদাসীন্যেন চৌর্ছেহপ্যোদাসীন্যমত্র চ ইমানি কেনচিচ্চোনেগাপ্রত্য কদবেহিমিন্ গোপ্যমানানি ময়া দ্রাদৃষ্ট্র সমাগতমিতি স্বচয়তি বং স্থমিতি। সর্ব্ধাভিরেবাগত্য নিজং নিজং গৃহতাং নহেকয়া বিত্রাভিং কতিভিশ্চিষা সর্বাসামের প্রহীতব্যং কদাচিক্ত মাস্ত্র কপটবতীভিং পরিবর্তিতাশীতি ভাবং। গৃহঢ়াভাবস্থন্য এবোহং। নহু তবোক্তৌ ন প্রতীমন্তর্বাহ সত্যমিতি ক্রবাণীত্যার্থং ব্রবাণীত্যের কচিং পাঠং। নহু নর্মণা মিথ্যাপি ক্রয়াং তরাহ নো নর্ম ইতি নবেতদ্পি তব নর্মেবৈত্যাহ। হে অবলা যাক্ত ম্বাহিত অবলাস্থ তাঙ্গণাদ্যপ্রাপ্তা বলমপ্রাপ্তাক কর্মান্ত্রপ্রিমীর্ নর্মেণোহত্যযোগ্যম্বাদিতি ভাবং। অনেন চ স্বয়ং ন চোরিতং কিন্তন্যেনবৈতি ব্যল্য প্রবিদ্যানীন্যাঞ্জকনর্মণা তাসাং মনং ক্রোভ্রতি অধুনা কিং কর্তুং শক্ত্রেতি ভীতিদর্শননর্মণা সান্তর্বেতি চা ৭॥

নমু সপ্রহাসোকে রসত্যতৈবাবগম্যতে তত্তাহ নেতি। উদিতপূর্কং পূর্বপূর্বং উক্তং যতৎ অনৃতং মিথ্যা নৈব ভবতি। यथ। অনৃতং ন ময়া উদিতপূর্বং কদাচিদপানৃতং পূর্বং নোদিতমিত্যর্থং। তচ্চ ইমে মম সহচরা বিছঃ এবামেব মদীয়াশেষর্ভিজ্ঞানাং। নমু তথ-

গ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

মেব বৈমানিকীভি দে বীভিরত্রাগত্য হুর্গাদেবী পূজাতে। নহ ভোঃ পূজ্যত্ব নাম দেবীং বজাণি ত্যক্ত্বা তাঃ কথং গতাঃ অয়ি বালা-ন্তবং ন জানীথ অদ্য রজন্যাং পূনঃ পূজ্যিষ্যন্তীভিন্তাভিঃ স্বাহা পরিধাতুং রক্ষিতানি ভোঃ ক্লফ হমেব তবং ন জানাদি। অদ্য দিন এব পূজ্যিষ্যন্তীভিরস্থাভিরেব স্বাহা পরিধাতুং বনদেবতাহারা উচ্চশাধোপরি বজাণি রক্ষিতানীতি॥ ৬॥

হ শব্দোক্তং স্পষ্টং পরিহাদমাহ অত্তেতি। সত্যং যুয়াকমেবৈতানি বস্ত্রাণি চেৎ কামং যথেষ্টমেবারাগত্য বং বং পরিচিত্য মং প্রাঠ্য রার্থং শপথং করা ধনরক্ষকায় মহং পারিতোষিকমেবৈকং হারং দরা বাদো গৃহতাং। বং ব্রমিতি সর্বাভিরেবাগত্য নত্তেকয়া দ্বিরাভির বি আগত্য বন্ধনোভবতীনাং ব্রীণামধিক গ্রহণদ্যাপি সম্ভবিষ্ণুরাং। নমু গঙ্কং ন শকুমন্তর সহাসমাহ। হে অবলাঃ মন্যে ব্রতকাঞ্চাদেবারাগন্তং ন শকুপেতি ভাবং। বছা। তহি ন দাস্যামি প্রবল্পয় মম কিং কর্তুং শকুপেতি ভাবং। নমু কপটিনন্তবাক্তে ন প্রতীমন্তরাহ। সভ্যং তথ্যমেব ক্রবাণীত্যার্বং ব্রবাণীত্যপি কচিৎ পাঠং। বছা। সত্যং শপথং কছা ব্রীমি। সভ্যং শপ্থতথ্যয়েবিত্যসরং। নমু নর্মাব্রতা ব্রতেন ক্রশীকৃতা যুয়ং। তপ্রিনীর যুয়াম্ম দয়াভক্তিক ধ্যাভ্যক্ষোৎপাণ্ড ইতি ভাবং॥ ৭ ॥

নমু মিথাংবাদিনস্তব শপথেছপি ন বিশ্বসিম ইতি তত্ৰ সরসনাদংশমাহ নেতি। উদিত পূর্বীমিতি স্থপ স্থপেতি সমাস:। অনৃতং ন পূর্বমুদিতমিতি এতজ্জনানি এতাব্যয়: পর্যায়ন্ত অনৃতং ন পরিচিনোমি অত্র কিং প্রমাণমিতি চেদিমে বালা এব বালানাং বথা দুও-গ্রাহিশ্বভাবত্তাদার্জনাচেতি ভাব:। নমু দূরতো ছত্র জলে বক্লানি ক্লিপান্তাং বাল্ছারা বা দীয়ন্তাং তত্র হস্ত এতানি সুম্দীয়ানা

বালকদের সহিত হাসিতে ২ পরিহাসপূর্বক বলিলেম॥ ৬॥

মহে অবলাগণ ! তোমরা এখানে আসিয়া যথেচ্ছাক্রমে স্ব স্ব বসন গ্রহণ কর, আমি সত্য বলি-তেছি পরিহাস করিতেছি না, যে হেতু একণে তোমরা ব্রতশ্রাস্ত মাছ ॥ ৭ ॥

আমি এখনও মিথ্যা বলিতেছি না, পূৰ্ব্বেও কখন মিথ্যা বলি নাই, এই সকল বালক তাহা জব-

তস্য তৎ ক্ষেবিতং দৃষ্ট্বা গোপ্যঃ প্রেম পরিপ্লুতাঃ। ব্রীড়িতাঃ প্রেক্ষ্য চান্যোন্যং জাতহাদা ন নির্যয়ঃ।
এবং ক্রবতি গোবিনের নর্মনাক্ষিপ্তচেডসঃ। আকণ্ঠমগ্রাঃ শীতোদে বেপমানাস্তমক্রবন্॥ ১॥

श्रीधत्रवामी ।

কে নিতং পরিহাসং প্রেমপরিপ্লুতাঃ প্রেমরসম্মাঃ ॥ ১ ॥

देवकवट्टावनी।

রস্যা অপি তংসদৃশা ইতি চেক্তরাহ একৈকশ আগত্য স্বীরং বস্ত্রং গৃহীত। যদি পূর্ব্বপূর্বস্যামন্যথা স্যাত্তদৈব উত্রোজরাভিম বচনং মিথায় মন্ত্রা নাগস্তব্যমিতি ভাবং। অহো প্রথমোশানে সর্বাসামসন্ধতিং স্যাহিতিরাক ক্স্যাকিদন্যাসাং ক্রমণ্টনা হুর্ঘটা স্যাদিতি কিমেবং বিলম্বাচরণেন বা মম বচসি মনসি চ কাপি বক্রতা নাজ্যেবৈতি বোধয়ন্ পক্ষান্তরমাহ সহেতি। উত বাশকার্থে। হে ক্রমধ্যমা ইতি ক্রশমধ্যানাং যুদ্ধাকং শীতান্তসি চিরম্বিভিডিম হৈ ক্রপরতীতি ভাবং। যুদ্ধাকং মধ্যভাগাদিসৌল্বগ্রমেব প্রষ্টুমিয়তে নচ বজৈবিত মবিত মবিত্রমান্ত্রমিত তু নিগৃঢ়ো ভাবং॥ ৮॥

প্রেমপরিপ্লু তা ইতি গোণীবিশেষণথেন স্বভাবত এব প্রেমবিশেষবতাঃ সম্প্রতি তু তৎকে নিতঃ পরিহাসোকিং দৃষ্ট্। জ্ঞারা অধিক-প্রেমরদে নিমগ্রা ইত্যর্থঃ। তত্র চ জাতিস্বভাবেন ত্রীড়িতাঃ ত্রীড়গা হর্ষেণ চান্যোনাং প্রেক্য জাতহাসাশ্চ সত্যো ন নির্যয়ঃ॥

এবং ক্রবতীতি পুন: পুনন্তথৈব নানাপ্রকারং বদতীত্যর্থ:। গাং বাচং নিজবশ্যতয় বিন্দতীতি গোবিন্দত্তন্মিলিতি শরমবাগ্যিতাতি-প্রেতা নর্মাকৃষ্ট চেতত্তেবৈবাক্রবন্ অন্যথা নাবদিয়লিতার্থ:। কিঞ্চ। বেপমানান্তত্ত হেতু ল'জ্জরা শীতোদকেহপ্যাক্ঠনগ্রা:॥৯॥

এবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

দীরানি বা মরা জাতুমশক্যানি কথং দীয়ন্তাং। অন্ধবিধ ধার্মিকৈং পরন্তব্যাণি নথাগ্রেণাপি ন স্পৃশান্তে তন্মাং বৃহনেবাগত্য প্রতীচ্ছত বং স্থং পরিচিত্য গৃহীত বতঃ পারকাং বন্ধ ন গৃহামি ন দদামি নাপি স্পৃশামীতি মন নিরমং। নমু ব্যা ধৃষ্টেন করিয়মাণাহিত্যনানীতাৰ কুলকুমার্য্যো বয়ং ত্বংসমীপং ন বামস্তব্যাহ একৈকশ ইতি। প্রথমং যুমাক্ষররা কাচিদিহাগদ্ধ তু তস্যামবিভ্ষিতারাং সত্যামনা জন্যা অপ্যায়ার। সহৈবোক্তে ঘৃগপদ্ধনীনামাগমনে জ্রীণাং বিভ্যনাস্ভবাচ্চেতি ভাবং। হে স্থমধ্যমা ইতি শিবাংসি থ স্ত্রমাক্ষশক্ষেনোচান্তে তানাতি স্বন্ধরাণি ভবত্যঃ কুপরা মাং যদি দর্শরস্থের তদা মধ্যমাক্ষান্যপি স্বন্ধরাণি মাং দর্শরিভ্ং কা লক্ষেতি ভাবং ॥ ৮॥

ক্ষেণিতং রহস্যপরিহাসং দৃষ্ট্ব প্রেমপরিপ্লুতা ইতি মন্যামহে ইমমেব কাস্তং স্থ্রপরিত্রন্দাকমহস্তাম্পদান্যস্ক্রপাণি কিং ভবিষ্য-স্তীতি মনোহত্বলাপানন্দেন মগা বহিত্তভাতং প্রেক্য ত্রীড়িতা ইত্যয়ি কমলেকণে ত্বামাহ্বয়ন্তারং তথাছি অন্ধি স্থাম্থি ত্মেব বাহি স্থাং পার্যস্তীতাভোতং জাতহাসাঃ পরিজহস্তবেব নতু নির্যয়ঃ॥

এবং নানাপ্রকারং নর্দ্ম ক্রবতি সতি গোবিলে গা নর্দ্ম মধুরবাচো বিন্দতীতি তন্মিন্। তচ্চেদং নর্দ্ম ডোঃ থপ্রনাথ্যঃ বিদ যূবং নাগছ্থ তদা এতৈরেব বাসোডিঃ শাখানিবলৈ হিলোলিকামুপধানাদিকক বিরচ্যা ময়া শধ্যতে রাজাবদ্য কৃতভাগরং মাং নিজ্ঞানিতারি ডো গোপাল তব গাবস্তুণলোভেন গহরং প্রবিষ্টান্ততন্তাঃ পরাবর্ত্তিছেং ক্রতমিতো যাহি ভো ভো গোপবালা ক্রতমিতো গৃহক্বতার্থং ব্রহ্ম ব্রহ্মত পিজাদি গুক্জনান্ মা অসমগ্রসমভাহর্থ। ভোঃ পিছচ্ছ বয়মিতো মাসং ব্যাপ্য গৃহং ন যামঃ পিজাদি গুক্জনাদেশেনৈব কাভাগ্রনীব্রতং সমাগ্য থাসমাক্রমুদবাস্ব্রতং কুর্দ্মঃ। ভোন্তপন্বিন্যঃ অহমপি ব্রহ্মণনিপ্রভাবাহ্ন ত্র্ত্ববাদবৈরাগ্যঃ

গত আছে, অতএব ছে স্থমধ্যমা স্থানরীগণ! তোমরা একে ২ অথবা সকলে মিলিয়া আসিয়া বসন গ্রহণ কর ॥৮॥

হে রাজন ! শ্রীকৃষ্ণের এইরূপ পরিহাদ অবগত হইরা গোপকুমারীগণ প্রেমরদে ময় হইলেন এবং পরস্পার পরস্পারকে নিরীক্ষণ করিয়া হাদিতে লাগিলেন, কিন্তু কেহই জল হইতে নির্গত হইতে পারিলেন না, শ্রীকৃষ্ণ বারস্বার ঐ প্রকার করিতে থাকিলে পরিহাদ বাক্যে তাহাদের চিত্ত আকিও হইল এবং শীতল সলিলে কণ্ঠপর্যন্ত ময় করিয়া শীতপ্রযুক্ত কম্পান্থিত কলেবরে বলিতে লাগিলেন॥৯॥

মানয়ং ভোঃ কথাস্থাস্ত নন্দগোপস্থতং প্রিয়ং। জানীমোহঙ্গ ব্রজপ্লাঘ্যং দেহি বাসাংসি বেপিতাঃ ॥১০
শ্যামস্থন্দর তে দাস্যঃ করবাম তবোদিতং। দেহি বাসাংসি ধর্মজ্ঞ নোচেন্দ্রাজ্ঞে ক্রবাম হে॥

श्रीश्वत्वामी ।

তত্র মুগ্ধা উচ্: অঙ্গ ভো: প্রীকৃষ্ণ অনরং অন্যাব্যং মা কৃথা: ॥ ১০ ॥ প্রোচা উচ্: নোচেৎ রাজ্ঞে নন্দায় কংসায় বা ক্রবাম হে প্রীকৃষ্ণেতি ॥১১ ॥

বৈষ্ণবজোষণী।

আদে সায়াহ: মেতি প্রাগেব মা শক্ষ নির্দেশে ব্যগ্রতয়া অনয়া করণদার্ত্যধিং বা। তো ইতি অঙ্গেতি সপ্রেমারি-সন্বোধনেহতএব দ্বিক্জি: নন্দােপাস্য স্কৃতং জানীম ইতি। তং গোপকুমার: বরঞ্চ গোপকুসারা ইত্যন্ত্রান্ প্রত্যেতাদৃশম্যায়্যং কর্ত্থং নাহ সি শ্লেষেণ নন্দমতি ব্রজমিতি। নন্দাে বাা গোপঃ ব্রজমান্তর্য্য স্কৃতমিতি প্রকার আমার ম্বরাকত তব আয় এবােচিতঃ নতু স্বপিত্প্রতিক্লং ছংখদানাদি কর্ম ইতি। যথা নন্দত্ত গোপং স্কৃতমিতি সর্ক্রভ্জনাজীব্য রক্ষকত তব বিক্লাচরণং ন ম্কৃত্মিতি ভাবঃ। অত্র তু তয়ামগ্রহণং সংরক্ত তৌদাসীগ্রহত ব্যক্তমায় । তচ্চ স্বভাববাক্ষেণী লক্ষ্মা। তত্র চ প্রিয়ং প্রিয় ইতি জানীমঃ অতােহিশাক্ষমিতাবাদ্যাক্ষিপ্রাচরণমন্ত্রাম্যানেবেতি ভাবঃ। কিঞ্চ। বজে ব্রজমধ্যে ব্রজেন বা য়াঘ্যঞ্চ জানীমঃ অতাে ব্রজনিন্যৈতংক্ষাচিরণমন্ত্রক্ষমেবিতি ভাবঃ। দানে হেতুঃ বেপিতা বয়ং। যথা বেপিতাঃ প্রতি ইতি কুপাং জনয়ন্তি॥>•॥

অধুনা দানং প্রদর্শন নি । দাতঃ স্থাম ভবেমেতি চিৎক্ষকসন্মতঃ পাঠঃ। এবং দাস্যেনান্মসমর্পর্ণাদিকমেব দানমূছং। তত্রাপি তবোদিতঃ করবামেতি বিশেবাক্তিভাববিশেষং ব্যঞ্জয়তি। স্থামেতি তালব্যাদি কচিং। তত্র দাস্যঃ সত্য ইতি বোজাং কিন্তু ভগবান্ পৃথগোবাহ্বাদং করিষাতি অধুনা ভেদং প্রযুক্তে ধর্মজেত্যাদিনা অন্তথা নগ্নন্তীসন্দর্শনেন পরস্বহরণাদিনা চ ধর্মতো ভয়নিতি ভাবঃ। অদৃষ্টান্তস্য ভয়মনালোচ্য দৃষ্টভয়মুৎপাদয়ন্তি নোচেদিতি দিখিখো ভেদঃ। রাজ্ঞে গোপরাজার প্রেবেণ নন্দগোপ কতং অর্থান্তবিস্থাব প্রিমতি প্রির্যাব প্রিমতি প্রির্যাবন ন স্বং কিঞ্চিবলাচ্ছিক্ষিতোহিদি তথাই করেব ব্রক্ষে লাখাং নতু গুণেধর্মজেতি সোন্ঠোজ্যা ধর্মপরিত্যাগ ইত্যক্র তস্য তৎ কে লিভমিত্যারভাতৎপর্যাক্তমন কিল্কিঞ্চাখ্যোহকুভাবোহক্ষদদ্ধয়ঃ। যথোক্তং। গর্মাভিলাবক্ষিত-ন্দ্রতিক্ষাভয়কুধাং। সন্ধ্রীকরণং হর্ষাছ্চাতে কিল্কিঞ্চিমিত।

बीविश्वनाथठकवर्धी।

সম্প্রতি মাসং ব্যাপ্য অত্তৈব নভোধাসত্রতং চিকীর্ধামি। যদি চার্ছক পথের তদান্তিতোহ বরুত্ব যুশান্তি: সমমুদ্রবাস ত্রতমের কর্ত্তু প্রয়ামীতি নর্ম্মণা আদ্বিপ্তচেতস: শঙ্ক্ষা ততোহপাধিকজলে আকণ্ঠমগ্না: বেথমানা: শীতেন শঙ্কাহর্ষোৎস্ক্যাদিভিশ্চ ॥ ১॥

প্রথমং সায়া আছে: অনর্মস্থায়ং মারুণা:। নমু মুঝা যুয়ং মাং নৈব পরিচিম্ব। যতো ম্যাপানীতি কল্কং দাতুং ন শক্ষেৰ তত্রাহা। ত্বান্থিতি অস্থান্ ব্রজ্বানিপি ন জানীম এব তান্তিপ্রপ্রসিক্ষ নন্দরাজ্ঞা সূতং জানীম এব গোপোভূপেংপি দৃষ্ণতে ইত্যবিধানাং। তত্রাপি ব্রজ্বমাত্রস্থাপি প্রায়ং তত্রাপি প্রিয়ং। ভো নির্ক্ত্ময়ং । যদ্যহং রাজ্ঞঃ পুরুত্তহি কবং মহানীতিঃ। রাজপুরা অপি কচিদনীতিমন্ত ইতি চেং কথমহং ব্রস্ত্রান্থা প্রস্তুম নহ্নীতিমংক প্রায় প্রতিবর্গ সভবেদিতি ভাবঃ। নমু সত্যং ব্রেয়ো ব্রং বন্ধ মন্ডিজান্তরাং কুপরৈবাপ্রাধং কাল্বা বাসাংসি দেহি বেপিতা ব্যমিতি কুপাং জনয়ন্তি॥ ১০॥

পুনরপি সামৈবাছ:। স্থাম দাস্যোভবামেতি দন্তাসকারপাঠ-িচংস্থাসম্মত:। স্থামেতি তালবাশকারপাঠে দাস্ত: সত্যক্তবোকং করবামেতি। রাজ্ঞি দ্বির প্রজানামন্দ্রাকং দাস্তং স্মৃচিতমেবেতি তাব:। বস্তুতন্ত তানিবেবৈ স্থান্ধানমর্পরামান্ত:। স্থান্ধরস্য তবাদ্বাভির্যদাস্তং সম্ভব্তে অব্যক্তং করবামেতি। কান্চিৎ প্রথরা ভেদং প্রযুদ্ধতে। হে ধর্মজ্ঞেতি স্ত্রীধনহরণালগ্রীদর্শনাচ্চ তবাধর্মের
ভাবীতি ভাব:। তত্তাধর্মান্তর্যান্ত দৃষ্টং ভ্রং দর্শরস্থি। নোচেন্ত্রাজ্ঞেতি বিবিধে। তেলং। রাজ্ঞে নন্দার কংসার বা ॥

অহে প্রীকৃষ্ণ। অন্যায় কার্য্য কেন·করিতেছ ?, আমরা জানি তুমি নন্দগোপতনয়, ত্রজের স্লাঘ্য এবং আমাদের প্রিয়, আমাদের বস্তুগুলি দাও, এই দেখ আমরা শীতে কাঁপিতেছি॥ ১০॥

প্রোঢ়া গোপীগণ বলিতে লাগিলেন, হে শ্যামহন্দর ! আমরা তোমার দাসী, তুমি যেমন বলিবে আমরা সেই প্রকার করিব, হে ধর্মান্ত । আমাদের বসন প্রদান করে। যদি না দাও তবে রাজাকে বিয়ানিব।

শ্রীভগবাসুবাচ ॥

ভবত্যো যদি মে দাস্যো ময়োক্তঞ্চ করিষ্যথ। অত্তাগত্য স্ববাসাংসি প্রতীচ্ছত শুচিস্মিতাঃ। নোচেন্নাহং প্রদাস্যে কিং ক্রুদ্ধো রাজা করিষ্যতি॥ ১১॥

ততো জলাশয়াৎ সর্বা দারিকাঃ শীতবেপিতাঃ। পাণিভ্যাং যোনিমাচ্ছাদ্য প্রোত্তেরুঃ শীতকর্শিতাঃ॥১২ ভগবানাহতা বীক্ষ্য শুদ্ধভাবপ্রসাদিতঃ। স্কন্ধে নিধায় বাসাংসি প্রীতঃ প্রোবাচ সন্মিতং॥১৩॥

वी धत्रवामी।

প্রোত্তেক: নির্গতা: ॥ ১২ ॥

আহতা जेवनक्र जरपानीवीका ॥ ১०॥

বৈষ্ণবতোষণী।

তাসাং তথালীকারেলৈব পরালয়ং করোতি ভবতা ইতি সার্ধকং। আদরব্যঞ্জকতবচ্ছকপ্রয়োগশ্চায়ং প্রোৎসাহনার্য:। স্বশব্দেন চ নিজপরিধান্মবিশ্রমাশুগৃহীত্মুপ্রুলত ইতি ভাবং। হে শুটিস্থিতা ইতি ঈদৃশেন শুদ্ধমিতেনাবগম্যতে শীতাদিহংখং নাস্তি বেপনঞ্চ কপ্টেনৈবেতি। যথা। শুটিস্মিতাং সত্যঃ প্রতীচ্ছত মুধ্মানৌ চ সত্যাং ন দাস্যামীতি ভাবং। নোচেদিত্যন্ধং কাচিৎকং ন প্রদান্তে প্রকর্ষেণ ন দাস্যামীতি যদি বা কিঞ্চিদ্দাং তদা থগুশো বিদার্য কিঞ্চিৎ কিঞ্চিদেব প্রত্যেব দাস্যামীতি হচ্যতে। রাজা গোপরাজঃ কুদ্ধোহপি সন্ কিং করিষ্যতি অপিতৃ ন কিঞ্চিদেবেত্যর্থং। পুত্রে ময়ি সেহবিশেষাৎ ইত্যুক্ত্বা কানিচিত্তাদাং বস্ত্রাণি স্বস্তাসনানি কথা কানিচিৎ শ্ব্যাং রচয়িত্বা কানিচিৎ ধ্বজ্পতাকাবিতানাদিত্যা নীপশাথোপশাথাদিষু বন্ধা কানিচিৎ দোলাং রচয়িত্বা দোলয়ন্ কাচিদিতস্তত্ত্বগুরি চিক্লেপেতৃয়েহং ক্বন্ধে নিধারেতি বিচিতৈয়ক্ত্ব নিধানত বক্ষ্যাণ্ডাং॥ ১১॥

তত্ততং তদাগ্ৰহং দৃষ্ট্ । ইত্যৰ্থ:। দারিকা ৰালা: শীতেনৈব বেপিতা: কম্পিতদেহা অপি পাণিভ্যামাচ্ছাদ্য বেপনঞ্চ সাত্তিক-মেব প্রেমস্বভাবজং প্রোত্তরণে হেভু: শীতেন কুণীকৃতা হীনবলন্ধমাপাদিতা ইত্যর্থ: ॥ ১২ ॥

ভদ্মেন ভাবেন প্রেমা প্রাদিতঃ পূর্বত এবাধুনা চ আহতাঃ হস্তেপ্ত্যর্প্রাদাগতা বীক্ষ্য প্রীতঃ সন্ বাসাংগি সর্বাগেবাবচিত্য

ক্রমসন্ধর্জঃ। আহতা আগতাঃ। যদা। আহতা শীত পীড়িতাঃ। তথাচ বিশ্বঃ। আহতং গুণিতেহপি স্যাবাড়িতেপ্যানকেহপি চেতি॥ ১৩॥

ঐবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

তাসাং বচোভিবেৰ তাঃ পরাজিত্য নির্কাচনী কুর্বনাহ ভবত্য ইতি প্রথমমেতেনৈব ভবতীনাং সত্যং পরীক্ষে। সত্যাৎ প্রচুতাভাস্ত ভবতীভাো নৈব প্রদাস্যে ইতি ভাবঃ। শুচিশ্বিতাঃ সত্য ইতি যদ্যত্ত ধর্মপরীক্ষায়াং মুখন্নানিঃ স্থান্তদ্পি নৈব দাস্যে ইতি ভাবঃ। বস্তুত্ত শুচিঃ শৃক্ষারস্তন্ত্রশ্বশ্বিতা ইতি। স্বশ্বিনুদ্ধৃতং ভাবং জ্ঞাপন্তি। কিঞ্চ। মন্ত্রিপ্রবেশ সামৈব বঃ কার্যসাধকং নতু ভেদ ইত্যাহ নো চেদিতি ॥ >> ॥

তত্ত তে অয়ি স্থা: স্বাচিব প্রাভূতা বয়মভূমিব যদি প্নর্থাপি বিশ্বিষামহে এত লগ্য এব কশ্চিদন্য মন্বাশ্চেদায়াতি তদা ক্টমিতোহপি মহাবিড্যনাৰ্থে পতিব্যাম:। কিঞ্। এতদলস্পশিপ্তাশা মহাবলবতী হ্বারা বভূব যা ধ্বত্তিব নিমজ্য মর্জুমপি ন দদাতি। তদেতবিধাতালাকং ললাটে লিখিতমন্যথা ন ভবেদিত্যতোহস্য প্রিয়তম্বৈয়ৰ হঠং প্রস্কৃত্য স্বাহঠং রসাতলে প্রস্থাপ্য লক্ষায়ৈ জলাঞ্জলিং দ্বা নেত্রাণি মুদ্রিষ্বা প্রাইপ্তর্ককারৈরেব স্বশ্রীরাণ্যাজ্বাদ্য জলাদ্যাত্তিং গজ্বাম ইতি মন্ত্রণাং নিথোদ্দীক্ত্য তাঃ ক্ষণমীপং জ্যারিত্যাহ তত ইতি প্রোভ্রেফঃ নির্প্যাঃ॥ ১২॥

আ স্মাক্ প্রকারেণের হতা মুতা ইব বীক্ষ্য কুলজানাং মরণাদপ্যধিক ঈদুদো লক্ষাত্যাগঃ সোহপি মদমুরোধেনৈবাভিঃ ক্বত ইতি

শ্রীকৃষ্ণ কহিলেন, হে শুচিস্মিতা অবলাগণ! তোমরা যদি আমার দাসী হইলে এবং আমি যাহা বিলিব তাহা স্বীকার করিতেছ, তবে আমি বলিতেছি এখানে আদিয়া আপন আপন বদন গ্রহণ কর, আমার নিকটে আদিয়া না লইলে কথনই দিব না, রাজাকে বলিয়া দিবে, দিলেই বা ক্ষম্ভি কি, রাজা ক্রেছ ইইটা আমার কি করিবেন॥ ১১॥ •

হে রাজন্! সেই সকল অবলাই ব্রতকর্ষিত হইয়াছিল, ভাহারা শীতে অতিশয় কম্পিড, আপন আপুন করতল দিয়া অধোদেশ আছোদন করত জলাশয় হইতে নিগতি হইলেন ॥১৩ ॥

শীকৃষ্ণ তাঁহাদিগকে ঈষ্ৎ অক্ষতযোনি নিরীক্ষণ করিয়া তাঁহাদের শুদ্ধভাবে প্রসম হইলেন, পরে

যুয়ং বিবন্ত্ৰা যদপো ধৃতত্ৰতা ব্যগাহতৈতভহুদেবছেলনং।

डीधव्यामी

ধৃতব্রতা: সভ্যো বিবস্তা অপোবাগাহত অপসুসাতা ইতি যং তদেতং উ এব দেবছেলনং অপরাধ এবেতার্থ:। ব্রতবৈথাণা

देवकवटलावनी ।

বৃক্ষদ্য ক্ষমে নিধায় প্রকর্ষেণ শিক্ষার্থমিব নায়ুরপ্রদর্শনেনোবাচ সন্মিতমিতি তাসাং চিরং তথা স্থাপনে বক্ষ্যমাণেছণি নর্ম্যপর্শাণিং। নর্মহাতা ইত্যন্ত্রাগতা ইত্যথোঁ নযুক্ত: অপ্রযুক্তবাহ্চাতে কাব্যক্পবর্তিনামিদং মতং। নতু বেদাদিশক্ষমহোদধিবর্তিনাং বথাহ। মহাভাষ্যে সপ্তরীপা বস্থমতী এয়ো লোকাশ্চমারো বেদাং সাদাং সরহস্তাঃ অনেকধা ভিন্না একশত মধ্বযুগাথাঃ সহস্রবন্ধা সামবেদ-একবিংশতি বাহ্বিচাং নবধাথর্কাণে বেদাং বাকে। বাক্যমিতিহাসঃ, পুরাণং বৈদ্যক্ষেতাবন্ধং শব্দপ্রেগামনিশ্যাপ্রফুকাঃ শব্দ ইতি বচনং কেবলং সাহসমিত্যাদি কোবকারমতেছপ্যাহতা ইত্যক্ষাক্তার্থে ঘটতে বথা। বিশ্বপ্রকাশে। আহতং গুণিতেছপি স্থাৱাড়িতেছপ্যানকেপি চ ইতি গুণিতত্বগান্ধ বিন্তানি গুণিত্যা পূর্বাস্যাহ্বস্য ডোরিকাদের্থা সক্ষরিকরণং তম্বন্ধাপি ক্ষাতঃ ব্যং আত্মহ তথাকরণং কিস্তাহত্বসক্ষয় ব্যাখ্যায়াং কীরস্বামী আহতমুদ্বোধিত্যিতি প্রাহ্ব ক্ষত্র তাসাং বিধ্যাতন্ত্ব সম্যতে তচ্চ তাসাং তথা বীক্ষণে চন্দব্যাভিশ্বদ্যোভক্ষিত্যলন্তেমা কর্মন্যা॥ ১৩ ॥

নমু বাল্যে ন দোষ ইতি চেত্ততাই ধৃতত্ততা ইতি। বদেতদিতি সাক্ষায়রামূত্ত্বাদক প্রতারণং ন কিঞ্ছিৎ সন্তবেদিতি ভাবং।
দেবতা জলাধিঠাতুর্বরুণতা নারায়ণস্য বা হেলনমবজ্ঞাংঞ্জলিং বদ্ধা তঞ্চ মুর্দ্ধনি নত্ততাত্তি ভিরাভিপ্রারং। ততল্চ নমং ক্তোত্যুক্তে
একহত্তেন নমনোদ্যমমালক্ষ্য একহত্তপ্রশামশেত্যাদিবচনপাঠেনাঞ্জলিং বন্ধতি তল্পাধেধঞ্জলিবদ্ধনমভিপ্রেত্য মৃদ্ধী ত্যুক্তমিত্যুক্ং।

🚨 বিশ্বনাথচক্রবর্তী।

মনদৈবাধিগতো যং শুদ্ধো নিরূপাধির্ভাবং প্রেমা তেন প্রসাদিতং। ক্ষদ্ধে নিধারেতি তাসামক্ষ্যৌরভ্যপ্রাপ্তিলোভানের অথচ ভব-তীনামধোবস্ত্রাণাপি ময়া অক্ষন্ধে ধার্যতে ইতি তাস্থ অপ্রধায়ং আদরক্ষ দর্শিতং। প্রকর্ষেণোবাচ সপরামর্শম্বাচেত্যর্থং ভ্রায়ং পরামর্শং। স্ত্রীলাতিমাত্রেণাপি ত্রুরং কৃত্যমাভিম প্রেমোপরোধেন ক্বতং। কিঞ্চ। ইতোহপাঞ্চদাত্যন্তিকং ত্রুরং ক্বত্যমন্তি। ভদেভাভিঃ শক্যমশ্ব্যং বৈতি মহিষয়ক প্রেম্বঃ শক্তেরিয়তাং দিদ্কে ইতি সন্মিতমিতি। ভোঃ অমুপেনৈবালীক্ষত মদ্দাস্যং করবাম ভবোদিত মিতি যুম্মবচনস্য পরীক্ষা মধুনাহং করিষ্যে ভতো যত্যত্তীর্ণা ভবিতৃং শক্রপ তদৈব যুম্বননানি মদীয়াল্মমনঃপ্রাণশরীকৈঃ সহিতান্যেব ক্রুয়া দাস্তামীতি ভাবং॥ ১৩॥

হস্ত হস্ত পূঢ়োহয়মপরাধো যুয়াকং ব্যক্তো হস্থানিতাহ যুয়ং বিবস্তা সন্তো যদপো বাগাহত বাগাহধ্বং তদেতৎ উ এবার্থে দেবজ
জলাধিষ্ঠাতু ব'য়ণয় নারায়ণস্য বা হেলনমপরাধঃ। নয় দেশাচারোহয়ং বিশেবতো বালানাং নাপরাধন্তবাহ য়তবাতা ইতি। অয়ভিতজাল এতয় ফলভাবত্বৠয়াবীতি ভীবয়তে হস্ত হস্তৈতাদৃশ বিভ্রমমভূষ্ তফলঞ্চ ন ভবিয়তাতো মৃতা অপি বয়ং বিশেবতঃ
য়য়্ঠ মৃতান্তদলং প্রাণত্যাগবিল্যেনতি মনোহয়লাপ্বতী বিশীর্ণ সর্বাদীবিবর্ণা অতিবিহ্বলা বীক্ষ্য হস্তাসাং মা প্রাণাঃ প্রথানিতি
সদ্য এবাতিরূপয়া শ্বেমের তদ্য প্রান্ধিত বেলন্ ভোঃ য়শাল্যো মা ভৈষ্টেত্যাখাসয়তি। বছেতি ব্রিয়ো হি যদ্য দান্যো ভবন্তি স
এব তাসাং সর্বাদেবমরো নারায়ণ ইতি শাল্রাদেশাৎ নারায়ণসমোগুলৈরিতি গর্ণাদেশাত। সম্প্রতাহমের যুয়াকং নারায়ণত্তমদভিম্বে
এব ছিতাঃ ক্ষক্রোহালসাপয়ন্তয়ের নিয়ন্তয়ের নমঃ ক্ষাহধো বসনং অন্তমীয়বন্তঃ গৃহতাং দ্বীণামন্তরীয়বালোভিঃ প্রন্যো ক্রেয়াণে তংহো
ক্রমাভাবান্তান্তেব দালামি উত্তরীয়াণি তু শ্বসাবোন্তয়ীয়াণি করিব্যামীতি ভাবঃ। ততক্ষ শিরোভিরের প্রণামে ক্রিয়াণ্য হিল্পান্ত

ভাহাদের ব্যক্তিল ক্ষত্তে রাখিয়া প্রীতিপূর্বক হাস্য করিতে ২ বলিলেন ॥ ১৩॥

তোমরা ত্রতক্ষ ব্রয়া বিবত্ত হওত কলে যে অহপাহন করিয়াছিলে ভাহাতে ভোষাদের দেবছেলন অপরাধ হইয়াছে: সেই পাপের অপনোদনার্থ আলন ২ মন্তকে অঞ্চলিবন্ধন করিয়া অংগভাগে প্রণাম বদ্ধাঞ্চলিং মৃদ্ধ্যপত্তরেহংহসঃ কৃষা নমোহধোবসনং প্রগৃহতাং ॥ ১৪ ॥
ইত্যচ্যুতেনাভিহিতং ব্রজাবলা মতা বিবস্ত্রাপ্লবনং ব্রতচ্যুতিং ।
তৎপূর্তিকামান্তদশেষকর্মাণাং সাক্ষাৎকৃতং নেমুরবদ্যমৃণ্ যতঃ।
তাস্তথাবনতা দৃষ্ট্যা ভগবান্ দেবকীস্লতঃ। বাসাংসি তাভ্যঃ প্রায়চ্ছৎ করুণস্তেন তোষিতঃ ॥১৫

শ্রীধবস্থামী

ভীতানাং প্রায়ন্চিত্তমিবাহ অস্য অংহসৃঃ পাপস্য নিব্তব্যে মৃদ্ধি অঞ্জলিং বদ্ধা অধোনমুঃ প্রণামং ক্রত্বা॥ ১৪॥

ইতি দোৰত্বেনাচ্যুতেনাভিহিতং বিবস্তাপ্লবনং ব্ৰত্জ চ্যুতিহেতুং মহা তজ ব্ৰত্স্য পূৰ্বিকামা তদশেষকৰ্মণাং তস্য ব্ৰত্স্য অভেষা-মশেষকৰ্মণাঞ্চ সাক্ষাং ক্ষতং ফলভূতং ত্যেব নেমুঃ। যতঃ সত্ৰব অবদ্যমৃক্ পাঞ্চমাৰ্জনঃ॥ ১৫॥

বৈষ্ণক্ত হাৰণী।

অধো বসনং পরিধানবস্ত্রমেব উত্তরীন্নবস্ত্রঞ্চ তথাপি ন প্রাপ্তব্যমেবেত্যর্থ: ॥ ১৪ ॥

অচ্যুতেনেতি কদাচিং কথঞ্চিৎ অপি তথাকাক্ত সদর্থাচ্চ্যুতিন জিতীতি তাসামভিপ্রায়: হুচিতঃ যতো ব্রক্ত অবলাঃ দ্বিয়ঃ তত্রচ অবলাশবেন কথঞ্চিদিপি তথাকাত্র্যশক্ত ইতার্থঃ। প্রেমবশন্ধাদিতি ভাবঃ। মন্থেতি বস্তুতো দেশাচারবাল্যাচারপ্রাপ্তবেনা-দোষাৎ অভ্যান্ত প্রকাতে সাক্ষাৎ ক্বতং পতিরূপং ফলং তত্ত্বপন্তাদেবাবদ্যমূগিতিত তাসামভিপ্রায়ঃ॥

তথা তেন স্বোক্তেন প্রকারেণ বাসাংগি সর্বাণ্যেব পরিধানীয়োত্তরীয়াদীন্ প্রকর্ষেণ প্রেমসন্বোধনাদিনা নীপাগ্রাদ্বরুঢ়: সন্নিতি জ্ঞেরং যতঃ কয়প স্বত্রব সর্বান্ত বিশেষতশ্চ তেন তোষিতাঃ যদর্শনোৎকঠয়া নাগরজনোচিতভাবাবির্ভাবেছপি প্রাকৃতবালচাপল্য-মিবেদমাবিদ্ধতঃ। তেন তাসামভিমানলজ্জাচ্ছেদ রূপে। পূর্বামুরাগজেন পরমার্থিমরেন দশাবিশেষেণ লক্ষননোর্থ ইত্যর্থঃ। দেবক্ষীস্থত ইতি শ্রীক্ষিতং প্রতি মুনীজ্রোজিঃ। সা হি ত্রোচিতা শ্রীকৃষ্টীপ্রপৌত্রস্য শ্রীস্থতদাপোত্রস্য তদ্য তক্ষপালম্বনেন এব স্থধ-বিশেষাৎ তথের ভবতাং প্রপিতামহীতি শ্রীভবেলাজিঃ। তথৈব চ দশমার্থে তৎপ্রেম ইতি তন্ত্রাদেবাহসে ভবতামালম্বনীভূতঃ সোহপি নাসাং প্রেষ্ট্রেবং চপলীক্বতস্থানাং মহিমা বিচার্য্যতামিতি ভাবঃ। এব মন্যত্রাপি জ্ঞেয়ং॥ ১৫॥

क्राप्रसर्भः

অধোবসনং পরিধান বস্ত্রমের নম্বনাদিতি কাঠিন্যমিব॥ ১৪॥ সাক্ষাংকৃতং পতিরূপং ফলং ডজ্রপদ্বাদেবাবদ্যমৃগিতি তু তাসামতিপ্রায়:॥ দেবকীস্তুত ইতি শ্রীপরীক্ষিতং প্রতি মুনীক্রোক্তিঃ। মদালম্বনরূপান্তরূপ্যেণ এবমন্যত্রাপি দৃঢ়ং॥ ১৫॥

খ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

অঞ্চলিং তাঃ কার্যামাসিরে। তত্ত্রাপ্যধোহঞ্জনমভিপ্রেত্য মৃদ্দীভ্যুক্তমিত্যাদ্যস্থং॥ ১৪॥

ততণ্চ ব্ৰ তবৈগুণাং মা ভবতু ভবজৰাকং জাতিকুলধৰ্মলজ্জাদি সৰ্মনাশোহণীতি নিশ্চয়বতীভিন্তাভিৰ্যথাবধৈব প্ৰেয়ান্ প্ৰাহ তথৈব কৃত্মিত্যাহ ইভি দোৰজ্বনাচ্যুতেনাহভিহিতং বিবল্পাপ্ৰবলং ব্ৰভ্যা চ্যুতিহেত্ং মন্বা ভদ্য ব্ৰভ্যা পূৰ্ত্তিকামান্তান্তদশেষকৰ্মণাং ভদ্য ব্ৰভ্যান্তোৰামশেষকৰ্মণাঞ্চ দাকাং কৃতং নাধ্যকলম্বরূপং ভং নেমু:। স্ব্যক্ত মন্ত্ৰের সন্ত্রেই কিং ফলমবশিষ্টং দ্যাদিতি ভাব:। নমু কলপ্রাপ্তিরপ্যন্ত দোৰোহপি ভবিষ্যুতীত্যত আহ। যতোহচ্যুতাদেব অবদ্যমূক্ স্ব্যদোবনিবৃত্তিরিত্যর্থ:। মৃগিত্যার্বং। ন হি ভৎপ্রসাদবিষ্যীভূতানাং প্রভাবায়াদিলকাশ কোহপি দোৰ ইতি ভাব:॥

বাসাংসি সর্বাণ্যের যতন্তেন প্রণামেন স্ববাহিতার্থ সাধকেন তোষিত:॥ ১৫॥

कत्र, পद्रि रमन नहेख। ১৪॥

হে রাজন্ ! ভগবান্ অচ্যত বিবস্তা হইয়া অবগাহনকে এই প্রকারে দোষ বলিয়া বর্ণন করিলে ব্রজালনারা মনে করিলেন ইহাতে বুঝি আমাদের ব্রতভঙ্গ হইল, অতএব ব্রতপূর্ণতা কামনা করিয়া সেই ব্রতের এবং অন্যাম্য অশেষ কর্মের সাক্ষাৎ ফলস্বরূপ সেই ভগবান্ ছরিকেই প্রণাম করিলেন, অতএব সেই সকল অবলাকনে তক্রপে প্রণত দেখিয়া তাহাদের বসন প্রদান করিলেন। ১৫॥

দৃঢ়ং প্রলক্ষাস্থাবহাপিতাঃ প্রস্তোভিতাঃ জীড়নবচ্চ কারিতাঃ। বস্ত্রাণি চৈবাপছতান্যথাপ্যমুং তা নাভ্যসূত্রন্ প্রিয়সঙ্গনির্তাঃ॥ ১৬॥ পরিধায় স্ববাদাংদি প্রেষ্ঠসঙ্গমসজ্জিতাঃ। গৃহীডচিতা নো চেলুস্তন্মিন্ লজ্জায়িতেক্ষণাঃ॥১৭॥

अध्वयामी ।

দৃঢ়মতার্থং প্রণকাঃ বঞ্চিতাঃ যুরং বিবক্স ইত্যাদিনা। অপরা লজ্জরা অবহাপিতান্ত্যাজিতা অত্যাগত্য অবাসাংসি ইত্যাপ্রহেণ প্রস্তোভিতা উপহসিতাঃ সত্যং ক্রবাণি নোও নর্ম ইত্যাদিনা। ক্রীড়নবৎ কারিতান্ত বন্ধাঞ্লিমিত্যাদি প্রারন্তিভছেলেনাভ্যস্তরন্ দোষদৃষ্ট্যা নাপ্যখন্॥ ১৬ ॥

প্রেষ্ঠ সলমেন সজ্জিতা: বশীক্ষতা:। অতো গৃহীত চিত্তা: সত্যোন চেনু: গৃহীত চিত্ত মাহ তল্মন্ শ্রীকৃষ্ণে লক্ষারিতেকণা: লক্ষা-বিলসিত্মীকণ: যাসা: তা ইত্যর্থ:॥ ১৭॥

বৈঞ্চবভোষণী।

তেনেত্যুক্তমেব বির্ণোতি দৃঢ়মিতি। ক্রীড়নং ক্রীড়োপকরণং যন্তপুত্রিকাদি। প্রিয়ন্ত ওত সংখন সক্ষতাব নির্ভা:। यहा। প্রিরস্কেন প্রত্যুত নির্ভাশ্য বভূর্:। অহো পশ্য গাঢ়প্রেমমাহাম্মামিতি ভাব:॥১৬॥

স্ববাসাংদি নিজনিজবল্পাণি তেন পরিবর্ত্তা দন্তান্যপি পরিচিত্যান্তোহাং স্বীরস্বীরাতের পরিধারেত্যর্থ:। অন্তর্ত্ত:। বন্ধা। ক্রেইন্ত ক্রীক্ষান্ত সক্ষেন সন্ধিন সন্ধিন বিশ্বাস্থানির ক্রিক্তা:। অত আক্রইন্তগানিত বাঃ। অত এব নিথোলাববিশেবাদ্যান্ত্রাক্র প্রদানে ক্রেক্ত বা দ্বিরা ন চেলুত্তত এবেত্যর্থ:। পঞ্চমার্থে বা সপ্তমী। বন্ধা। বাসংপরিধানানন্তরং লক্ষাতিশরাপগনে সতি গৃহীতচিত্তা উদিতভাবা: অতএব প্রেইসক্ষার তদৈব রহং পাণিগ্রহণার সক্ষিতা: সক্ষাইব বর্ত্তমানা: অতএব প্রেইসক্ষার তদেব রহং পাণিগ্রহণার সক্ষিতা: সক্ষাইব বর্ত্তমানা: অতএব প্রের্ত্তমার ক্রিক্তা ক্রেক্তর্তা ক্রেক্তর্তা কর্ত্তমির্বারাং ক্রপং বিক্ততাথায়েমক্রভাবো ক্রের:। বংপাক্তং। ব্রীমানীর্বাদিভির্ত্ত নোচ্যতে স্ববিবিক্ষিতং। ব্যক্তাতে চেইইরবেদং বিক্ততং তদ্বিত্র্থা ইতি॥ ১৭॥

🕮 বিশ্বনাথচক্রবর্তী।

তিরক্কতোংপি অপ্রিক্সায়ক্ল্যং তাভিঃ কৃত্মন্যৈ ছ'ক্র্ডাবিশ্বরেনাভিনন্দতি। দৃঢ়মত্যর্থ প্রলক্ষা বঞ্চিতা যুবং বিবল্লা ইত্যাদিনা। অপরা চাবহাপিতান্তাজিতাঃ। অত্যাগতা অবাগাংশীত্যাগ্রহেণ প্রেন্ডান্ত উপহ্দিতাঃ দত্যং ক্রবাণি নো নশ্ম ইত্যাদিনা। ক্রীড়নং ক্রীড়োপক্রণং ষন্ত্রপ্রিকাদি তবং কারিডাঃ ক্রতাঃ। বদ্ধান্দিতাদি প্রার্ক্তিজ্ঞানে নাভ্যস্থন্ দোবদ্ট্যা নাপখ্যন্। প্রিক্স তথা ক্রত্বতোহপি সঙ্গেন নির্তাঃ প্রিক্সাদেব প্রিক্সতং হংধ্রদানম্পি স্থ্পেনেবাস্ত্রতাইতি ভাবঃ॥ ১৬॥

প্রেষ্ঠত সক্ষমন সজ্জিতান্তন্মিরেবাত্যধিকমাসকীকৃতা:। বধা কৃষ্ণেন তাসাং বসনানি গৃহীতানি তথা গৃহীতং ততাপি চিতং যাভিত্তা ইতি প্রম্পরপ্রেমাশ্রর্জ্ব:। জত্র মধ্যেতা: প্রমাস্কা ইতি কৃষ্ণেন যথা জাতং তথৈব কাত্যায়নীপ্রসাদাদমায়পি অন্নাসক ইতি ডাভিরপ্যব্যম্য তদ্মিন্ শ্রক্কি লক্ষারিতং প্রাপ্তঃ ঈক্ষণং যাসাং তথাভূতা: সত্যো ভাবোধলাড্যাদেব ন চেলু:। যা থলু কৃষ্ণেন নিল্লাধিতা তাভিরপি ভিরক্কতা ভদক্ষেতাো নিস্তা দুরং গতাভূৎ সা লক্ষা পুন: প্রার্ত্তা যাত্তী নরনেন কৃতং তৎসাহায়েন

অহে পরীক্ষিৎ! তদনস্তর প্রীকৃষ্ণ সেই সকল অবলাকে সংখাধন করিয়া পরিহাসবাক্যে লক্ষা প্রদান করত বলিতে লাগিলেন 'বিবস্তাবগাহনে অপরাধ হয়' ইত্যাদি বলিয়া। কেমন তোমাদিগকে বঞ্চনা করিয়াছি, 'এখানে আদিয়া আপন আপন বদন গ্রহণ করহ, এই আগ্রহ করিয়া কেমন লক্ষা বিসর্জন করাইয়াছি, 'মস্তকে অঞ্জলিবন্ধনপূর্বক অধোতাগে প্রণাম কর, ইত্যাদি বচনে কেমন তোমাদিগকে খেলানা তুল্য করিয়াছি, কেমন তোমাদের বদন হরণ করিয়াছিলাম। রাজন্! প্রীকৃষ্ণ এই প্রকারে আপনার ধৃষ্টতার পরিচয় দিলেও দেই সকল অবলা 'দোষদৃষ্টিতে তাঁহাকে দর্শন করিলেন না যে হেতু প্রিয়সক্ষারা তাঁহাদিগের দোষদৃষ্টি নির্ভ হইয়াছিল॥ ১৬॥

তদনন্তর ব্রস্তাপনাগণ স্বন্ধ বসন পরিধান করিয়া প্রিয়তমসঙ্গমে বশীভূত হইলেন অতএব গৃহীত-চিন্তা হওয়াতে সেই স্থান হইতে বিচলিত হইতে পারিলেন না। রাজন্! প্রীকৃষ্ণের প্রতি তাঁহাদের তাসাং বিজ্ঞায় ভগবান্ স্বপাদস্পর্শকাম্যয়া। ধৃতত্ততানাং সক্কশ্লমাহ দামোদরোহবলাঃ॥ ১৮॥ সক্ষল্লো বিদিতঃ সাধ্ব্যো ভবতীনাং মদর্জনং। ম্য়াসুমোদিতঃ সোহসৌ সত্ত্যো ভবিতুমহ্ তি॥১৯

विधत्रयामी।

দামোদরপদেন ভক্তবাৎসল্যং দর্শরতি অবলাঃ প্রতি ॥ ১৮ ॥

ভো: সাধ্বা: ভবতীনাং মদর্চ্চনমেব সঙ্করো মনোরথং স চ লক্ষ্যা যুয়াভিরক্থিতোহপি মরা বিদিত: স ময়া অহুমোদিতত অত: সত্যো ভবিতুমহ তীতি ॥ ১৯ ॥

देवस्थवटकायगी।

সহরং বিজ্ঞার পূর্ব্ধাক্তভাবাভিব্যক্ত্যা সাক্ষাদমূভ্য সহরমেব দর্শরতি স্বন্ধ পাদরোঃ স্পর্শঃ পদ্ধীবেন ভক্ত্যাত্যন্তসারিধ্যমিত্যর্থঃ।

যরা। স্পর্দাং পার্লিনা পতিবেন তামু স্বসমর্পণং তৎসবোপপাদনং তক্ত কাম্যরা ধৃতং নিরমেনাম্বান্তিবং রক্ষিত্য। ব্রতং যাভিস্তাসাং

স্বপাদস্পর্শিক্ষাময়ং সহরং। তত্র পাদস্পর্শপ্রেন প্রেমবিশেষেণ পতিস্বং স্টিতং। দামোদর ইতি দামোদরব্যারভাব তামু প্রেমবান্
ইত্যর্থঃ। অবলাঃ কন্যবাদিনা স্বাভন্তরীনাঃ প্রতি ইত্যাবৈশ্বক্ষাধাভীইবং বিভর্ক্য তামু তদ্য তাদৃশী রূপা যুক্তৈবেতি ভাবঃ ॥ ১৮॥

তত্র তদভীইপ্রাপ্তিং তথাপাক্তবৈলক্ষণ্যক প্রতিপাদয়তি। হে সাধ্ব্যঃ পরমপ্রেমব্যবদায়গুণরপ্রত্যঃ তেন চ মদেকাপেক্ষিতেত্যর্থঃ। যবা। সাধ্ব্যো মদপেক্ষিকাঃ ভবতীনাং মদর্চনং মন্বিষ্ক্রক পতিভাবময়প্রেমাত্মকসহল্লো ময়া বিদিতঃ জ্ঞাতঃ দর্বার্থঃ স্বাহ্রমোদিতঃ ভত্তং ক্রত্মিতি স্বাভিলাবদিল্যা সমাস্বাদিতঃ অতো ভবতীনাং কামনাস্করাভাবান্ ময়াম্যমোদিত্যাক্র স চাসে সত্যঃ সদাপ্যব্যভিচার্য্যের ভবিতৃং যুক্সত এব। কিং তত্র মমান্তপ্র বা বরাদিপ্রস্কাদেনত্যর্থঃ। সম্ভাবনং যোগ্যতাধ্যবসানঃ। অহর্পং যোগ্যতং।
ইতি কাশিকায়াং। সম্ভাবনে হল্মিতীই অহের্প ক্রত্যেতি স্বের্যার্ভেদো বিবিক্রোহন্তি অধ্যবসানমারোপণং রূপকালকারাদৌ প্রিসিদ্ধ

ত্রীবিখনাথচক্রবর্তী।

ক্বফুসমীপং নীয়মানা ক্কাল্লভাতিপ্ৰদান পুনস্তাসামকেষু পূৰ্বভোহপ্যধিকারং প্রাপেত্যুৎপ্রেকা ধ্বনিতা॥ ১৭॥

মেৰেতি সম্ভাবনাৰ্থছে চ কলিতে মহতাং সম্ভাবিতং সত্যমেবেতি তথা ব্যাখ্যাতং॥ ১৯॥

ভো রিদিকশেথর অন্নাভিত্র তিফলং প্রাপ্তমেব যদসাধারণং বিজ্বনং তথা ক্বতং তেনাপি প্রাণান্ নির্যাপিতাঃ প্রত্যুত ত্বদ্ধরোধন সম্বোধিতা এব। কিঞ্চ। জনাদ্মাহ্পাপ্য নানাচাত্র্যস্থা অম্বংস্কালানীকিতা অম্বংপরিধানীরবাসাংগি স্বীয়ক্ষপ্রতানি কবৈবাম্মতাং স্বমনোরত্বেন সার্দ্ধং দত্তবতা ত্বয়া যংকিঞ্ছিক্তং। তদ্য চ প্রত্যুত্তরতয়া অম্বাভিঃ সলজ্ঞাবলোকনমেব তৃত্যং দত্তং অনেনাম্মাকং ত্বয়পরাধো বা তৎপ্রীণনং বেত্যজানতীরমান্ত্র্যাঃ প্রতি যতে বিবিক্ষিতং তং প্রস্তুত্বর্গাহ জিভিজ্বাস্থায় প্রতি যতে বিবিক্ষিতং তং প্রস্তুত্বর্গাহ জিভিজ্বাসামিতি॥ ১৮॥

হে সাধ্যঃ ভবতীনাং মদর্চনং মদীয়ন্থবোৎপাদকমিছবন্নকারাধনমেব সহরো মনোরথং স চ লচ্ছরা মুন্নাভিরকথিতোৎপি মরা বিদিতোহনুমাদিত চ। নিকৈতবদ্ধাৎ সত্যক্ষ অতএব ভবিতুমহ তোব ভবতীনাং মংস্থতাৎপর্যাথ মমাপি প্রেমবক্ষরাথ কাত্র থবসন্থাবনেতি ভাবঃ। অব্য ক্রপাশক্তিরেব তাস্থধিকমুম্ভ বিতং তৎ প্রেমবশমপি ত ব্রনীলাবিষ্টমপি ভগবস্তুমের্যয়াং ক্যোরিয়ার তৎ প্রোপ্তার্থককাত্যায়ন্যর্চনকুছুং জ্ঞাপরামাস। তৎকলক প্রদাপরামাস। তান্ধ নারারণদম ইতি গর্গোক্তিয়বান্ধং স্বং নারারণং মন্যতে শ্বেতি জানন্তি শ্বেতি ক্ষের্থ প্রেষ্ঠা স্বেম্ন ক্ষিত্র প্রেষ্ঠা ক্ষেত্র ক্ষেত্র ক্ষেত্র ক্ষেত্র ক্ষেত্র ক্ষেত্র ক্ষেত্র ক্ষেন্ত ক্ষেত্র ক্ষেন্ত ক্ষেত্র ক্ষেত

লজ্জা বিলসিত হইয়াছিল, ইহাতে অনুমান হয় প্রীকৃষ্ণই তাঁহাদের চিত্ত গ্রহণ করিয়াছিলেন ॥ ১৭ ॥
সে যাহা হউক, ভগবংপাদস্পর্শ কামনায় ধৃতত্ততা সেই সকল অবলার মানস অবগত হইয়া
ভগবান্ দামোদর সম্বোধনপূর্বক কহিলেন ॥ ১৮ ॥

অহে সাধ্বীগণ! তোমরা আমার অর্চনা করিয়াছ, তোমাদের বাহা মনোরথ লক্ষাপ্রযুক্ত তাহা বিজ্ঞাপন না করিলেও আমি জানিতে পারিয়াছি, তোমাদের দেই মনোরথ আমি অসুমোদন করিয়া লইলাম, তাহা সত্য হইবার যোগ্য॥ ১৯॥ নময্যাবেশিতধিয়াং কামঃ কামায় কল্পতে। ভর্জিতাঃ কথিতা ধানাঃ প্রায়ো বীজায় নেশতে॥২০॥ যাতাবলা ব্রজং দিদ্ধা ময়েমা রংক্তথ ক্ষপাঃ। যতুদ্দিশ্য ব্রতমিদং চেরুরার্য্যার্চ্চনং সতীঃ॥

धीधत्रवामी L

অর্থতীতি সন্তাবনোক্যা আতান্তিকো ন ভবিষাতীতি হচিতং। তং কুত ইত্যত আছ ন মনীতি। কামায় পূন: কামভোগার বিষয়মহিয়া কামভাপি শান্তিহেতুবাদিতি ভাবং। কামপ্ররোহে দৃষ্টান্তঃ ভর্জিতাঃ দগ্ধাঃ কথিতাঃ পরু। ধানাঃ যবাদরো বীজায় অন্থ্রোকামায়। প্রায় ইতি স্বেচ্ছয়া পূন: প্রেরাহ্মপি স্চয়তি॥ ২০ ॥

বিদ্ধাং পূর্ণমনোর্থাং তদাহ ইমা স্মাগামিনীরাত্রী ম'রা রংস্থেতি। স্বার্থ্য কাত্যারনী। সতীং স্ত্য: ॥ ২১ ॥

বৈষ্ণবজোষণী।

গুক্তখনেবাহ ন মন্নীতি। মব্যাবেশিতধিয়াং ননসাপি , মাং সেবমানানাং তন্মাত্রাণাং কামো রাজ্যখারাজ্যদিবিবন্ধঃ কামান্ন কামভান্ন ন কল্পতে পর্যবস্তি। সত্যং দিশতার্থিতমথিতো নৃগাং ইত্যাদৌ প্রীকর্দমাদৌ চ। প্রীবিষ্ণু পাসনাবং কিং পুনম ংসেইনকপুরুষার্থানাং ভবতীনামিত্যর্থঃ কামভাকলনে দৃষ্টান্তো ভজ্জিতা ইতি। প্রান্ধো বিতর্কে। ধানা ভ্রষ্টববাঃ ধানা ভ্রষ্টবে প্রোক্তা ধন্যাকে হিভিনবাস্থ্যে ইতি বিশ্বঃ। তাঃ স্বন্ধতএব ভর্জিতাঃ পুনঃ কথিতা রন্ধিতাশ্চেত্যতিশন্নবিবক্ষনা বীলান্ধ বীলভান্ধ নেশতে ন কলতে। অথবা মহ্যাবেশিতধিন্ধঃ মদেকপুরুষার্থানালাগিত্যর্থঃ। তেবাং যঃ কামঃ মহপ্রেমসেবৈকবিবন্ধঃ স কামান্ধ কামনাস্তরান্ধ ন কলতে কিন্তু অনেবাজাগো ভবতীত্যর্থঃ। কিং পুনর্ভবতীনামিতি ভাবঃ। তত্র বোগ্যো দৃষ্টান্ধঃ। ধানাঃ স্বত্যব ভ্রষ্টাঃ পুনঃ স্বাদ্বিশেষান্ধ স্বতাদিনা ভর্জিতা গুড়াদিনা কথিতা নিশ্বকাশ্চ বীলান্ধ নেশতে কলান্তরোৎপাদনান্ধ ন সম্পাদনীন্ধ ভবন্তি কিন্তু স্বন্ধনাবাদ্যা ভবন্তি তথা জবতীনামিপি কামনাস্তর্গরহিতভাববিশেবসংস্কৃত্যবপ্রেমসেবাকামোহপীত্যর্থঃ এতাদৃশী মম কাপি মাধুনীতি ভাবঃ তথাচ ভাভিরেবান্ত্র্ত্বে বক্ষতে স্বত্যবর্ধনং শোকনাশনমিতি। এবমাসাং ভাবন্য পরমপ্রক্ষার্থশিবোমনিল্যং প্রভাগবতামূতে বিবৃত্যবন্ধি প্রভাগবত্যক্ষতে চ। কিন্তু। বিশ্বক্তি ন্যান্ধেন পরমপান্ধানাং তেবাং বাঞ্চা বিষ্ক্রসাস্য কথং শান্ত্যন্তরাপেকা স্যাৎ। ভন্মৎ সভ্রেজিতভাদেরঃ একবচনান্তা নেহতেইতি চ স চিৎস্থপন্মতঃ স্পষ্টার্থন্ড। ২০॥
কচিভর্জিতেত্যাদ্যঃ একবচনান্তা নেহতেইতি চ স চিৎস্থপন্মতঃ স্পষ্টার্থন্ড। ২০॥

ষ্পভীষ্টং সম্পাদয়তি যাতেতি যম্মদভীষ্টমঙ্গীক্তমিতি ভাব:। তচ্চ ময়া এব সম্পাদ্যমিত্যভিপ্রায়েশাহ স্বাবলা ইতি পূর্ববং। তহি কুত্র যামেত্যপেক্ষয়ামাহ ব্রন্ধযিতি। এবঞ্চেত্তহি কথমবলাক্ষাহ্ম কাক্ষণ্যমিত্যাশ্ভ্য ক্টুমেব তৎসম্পাদয়তি সিদ্ধাইতি। যথা সঞ্চলং

ঐবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

যচ্চ কাচিংকং মদর্চনং সকৈতব্যাদসত্যমযথার্থং তদপি ময়া অসালগুণাৎ সত্যমেব ভবিতৃমহঁ মেবং কর্তৃং শক্যতে কিং প্নঃ পরমশুদ্ধমহোত্তমহালা ভবতীনাং মদারাধন মনোরথ ইত্যাহ নেতি। কাম: সকামস্বলকণং কৈতবং কামায় তংকলার অযথার্থার কামভোগায় ন কলতে কিল বিষয়মহিয়া কামলাস্তায় এব তত্ত দৃষ্টাস্তো। ভর্জিতা ইতি। অত্ত ধানাশ্বেদন যবা এবোচ্যন্তে। তে চ যবাঃ থলু পদ্ধিলে ভূমাব্প্তাঃ প্রয়েছাইতি তএব ক্র্যাকাস্তর্মবৃত্তান্তালৈন ভর্জিতা ভবস্তি ততো বৃষ্টিজলেন সিক্তাঃ ক্ষিতা বীজায় অস্থ্রোলামায় নেশতে ন সমর্থাঃ স্থাঃ। প্রায় ইতি মথেতার্থঃ। যথাহ বিশ্বপ্রকাশঃ। প্রায়শ্চানশনে মৃত্যো। প্রায়োবাছল্য-ভূলারোরিতি মেদিনী চ। নেষ্ত ইতি চ পাঠশিচৎস্থপদ্যতন্তকৈক্ষমার্থঃ ॥ ২০॥

প্রাথমিকস্ত রমণদ্য শুল: সময়ো রাত্রিরেবেত্যভিপ্রেত্যাহ বাতেতি। সিদ্ধা এব যুবং মাধুর্যাপোবকেণ নর্লীলক্ষেনৈর সাধকত্বা-ভিমান ইতি ভাবং। ইমা: স্ত্রিহিভা:। রংস্থে রংজধ্বে। যং রমণং। আর্থ্যা চুর্গা। সতী: স্ত্যো ভ্রত্য:॥

হে ক্ষরীগণ! যে সকল ব্যক্তির চিত্ত আমাতে আবেশিত হয়, তাহাদের কামনা বিষয়ভোগার্থ কল্লিত হয় না,কারণ যবাদি বীজ ভর্জিত ও ক্থিত হুইলে তাহা হুইতে সম্বুরোৎপত্তি হুইতে পারে না॥২০

হে অবলাগণ! তোমরা সিদ্ধ হইয়াছ এখন ব্রেক্তে গমনকর, আগামিনী সমূহরক্তনীতে আমার সহিত্ত ক্রীড়া করিতে পাইবে, বাহার নিমিত্ত এই ব্রত আচরণ করিলে এবং বাহার জন্ম কাত্যায়নী অচিতা হইলেন ॥

প্ৰীশুক উবাচ॥

ইত্যাদিষ্টা ভগবতা লব্ধকানাঃ কুনারিকাঃ। ধ্যায়স্ত্যস্তৎপদান্তোজং কুদ্রাদির্বিবিশুর্জং। অথ গোপৈঃ পরিরতো ভগবান্ দেবকীস্তঃ। রন্দাবনাদ্যতো দূরং চারয়ন্ গাঃ সহাগ্রজঃ। নিদাঘার্কাতপে তিথে ছায়াভিঃ স্বাভিরাত্মনঃ। স্বাতপত্রায়িতান্ বীক্ষ্য ক্রমানাই ব্রক্ষেক্সঃ।

বৈষ্ণবতোষণী।

ময়াদীক্বতা এবেত্যর্থ:। এবমন্ধীকারময়ং বিবাহমেব সম্পাদ্য ভদস্পত্তং ফলবিশেষমূপি সম্পাদয়তি ময়েতি। ইমা: সন্নিহিতা এব তাদৃশপ্রাপ্যাবশ্যকপ্রতাপনার্থং দাধনসাধুবাদেনৈবোপসংহরতি যন্ত্রংপানীত্তং চেকর্ভবত্য ইতি শেষ:। সতী: হে সত্য: অভএব তা অপ্যাপ্রহেণ পত্যন্তরং নাদীক্তবত্য এবেতি তথাপি রহোব্যচ্ত্রেনাপ্রবৃদ্ধেনাপ্র্যাধ্বমান্ত চ বুধ্যতে। এভদন্যা এব হি পরকীয়াম্মান্য ইতি তদেবমুক্তঃ। যুবতীর্গোপকস্থান্চেতি ॥

ইতি ব্ৰহং যাতেত্যাদিষ্টা:। লক্ষঃ কামো নিজবাশিতং যাতিত্তা: অতএব দেবীং তদু তোলাপনাদিকমপি প্রমাননাদ্বিশ্বতবত্য ইতি ভাব:। লক্ষ্কামত্বেপি কৃদ্ধানুংথেনৈব ব্ৰহং প্রাবিশন্। কৃতঃ তদ্য পদাস্থোক্ষং ধ্যায়স্ত্য এব নতু সাক্ষাং পশুস্তঃ তিহিছেদাদিত্যথ:। পদাস্থোক্ষমিতি বিশেষনির্দেশ: পতিভাবেন গৌরবাং তদানীং লক্ষ্যা নথ্রীভূয় স্থিতানাং তদ্মাত্তদেশনেন তদমুস্তেরেব প্রকৃতহাদা নিঃশস্থ: পুনর্তার্থং ব্রজাদ্বমূনাগমনাভিপ্রায়েণ॥

অধুনা গোপকন্যান্ধ প্রশাদমূক্। তততৎপ্রতাবদাদৃশ্রাদ্যজ্ঞপন্নীর প্রদাদং বক্তুমারভতে। অথ লীলান্তরারত্তে দচ নিদাদসমর ইতি বিজেয়ং নিদাদার্কাতপে তিয়ে ইতি বক্তুমাণাৎ। অতএব সহাগ্রন্ধ: শ্রীবলদেবেন সহিতঃ গোপকন্যাবন্তরহরণদিনে তত্র তেন সাহিত্যভাবাৎ গোপৈ: পরিতো বৃত ইতি প্রাপ্তকিবক্ষ্যমাণলীলায়াং তেষামপেকাবিশেষাৎ। দেবকীন্ত ইতি প্রক্ষাদেব হেতোঃ। বৃন্ধাবনাদ্যতো দ্রমিতি। প্রথমং তাবদিগরি ব্রজ্ময়ং কাম্যকবনং গতঃ। তত এবাস্য ধাত্রাগ্ময়বেশো বর্ণরিয়তে। পশ্চারিদাদ তৃষ্ণাগমিতধেক্ত্রলপারনার্থ ব্রজং দকিলে বিধায় ষম্নামাগতঃ তক্ত ব্রজ্ঞানাগ্রন্ধ্যাক্তভাজ্ঞাবঞ্চনার্থ তক্ত প্রবিজ্ঞপানী ব্রজ্ঞপানী বর্ত্ত তি প্রক্ষাধানারপ্রক্ষাণ্ড বিধায় ষম্নামাগতঃ তক্ত ব্রজ্ঞানাগ্রহ্মধ্যাক্তভাজ্ঞাবঞ্চনার্থ তক্ত প্রবিজ্ঞপানী বর্ত্ত স্থাপ্তি বিজ্ঞায়ঃ॥

তত্র রুলাবনক্রমণপ্রকারমাহ নিদাবেতি সপ্ততিঃ। আত্মান ইত্যুপলক্ষণং স্বস্য স্বেষা≄ ছত্রায়িতান্ একৌক্সোত্রজ্বনবর্তিনঃ জ্মান্ বীক্যাহ॥

ক্রমসন্দর্ভ:

অথেতি লীলান্তরারজ্ঞে স চ নিদাবসময় এব ॥

নিদাবার্কাতপ ইতি বক্ষামাণাৎ।

অথ গোপৈ: ব্রজৌকদো নিজ্পহ্বাসিন ইত্যর্থ:। অথ পূর্ক্বদ্বিনোদবাক্যমেবেদং। শ্রীভগবদীয়ত্বেন প্রমার্থতামপি বহতীতি ভাব:।

ঐবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

রুচ্ছাদিতি। তেন তাসাং মনোধনতাদ্যাহরণাং॥

গোপকসাপ্রসাদস্য প্রস্তত্যারোহিতঃ কৃতৌ। বঞ্জপত্নীপ্রসাদে। ২ততঃ বিবক্ষরভূক্ষিঃ। অথেতি সমরাত্তরব্যঞ্জকং কর্লাচিৎ নিদাঘার্তাবিত্যর্থ:॥

শুকদেব কহিলেন রাজন্। ব্রজকুমারীগণ ত্ঞাবান্ কর্তৃক এই প্রকার আদিউ হইরা লবকান হইলেন এবং তদীর পাদপন্ম ধ্যান করত অভিক্টে তাঁহাকে ত্যাগ করত ব্রজে গমন করিলেন, তদ-নিস্তর ভগবান্ দেবকীনন্দন গোপগণে পরিস্ত হইয়া গোচারণ করিতে ২ রন্দাবন ইইতে অধিক দূরে ৬য়া পড়িলেন। নিদামকালীন তীক্ষ দিনকর কিরণে তরুসকলকে ছায়ায়ারা আপ নাদিগের আতপত্র

হে স্থোককৃষ্ণ হে অংশো শ্রীদামন্ স্থবলার্জ্ন। বিশাল ব্যভৌজ্মিন্ দেবপ্রস্থ বর্ণপ ॥২১॥ পশ্যতৈতান্ মহাভাগান্ পরার্থৈকান্তজীরিতান্। বাতবর্ষান্তপহিমান্ সহস্থো বারয়ন্তি নঃ ॥২২॥ অহো এবাং বরং জন্ম দর্বপ্রাণ্যুপজীবনং। স্থজনদ্যেব যেবাং বৈ বিমুখা যান্তি নার্থিনঃ ॥ ২০॥

<u>ज</u>ीधतवागी

ভক্তাহ্ৰপ্য কন্তান্তান্তি বিজ্ঞিত যজনাং। পদ্মপ্তাহততে ৰামহন্ কৰ্ম মহানদং॥ বিপ্ৰভাষ্যায়া অফ্তাহায় যক্তবাটং গ্ছেন্ বিপ্ৰাণাং কাঠিন্যৰভিপ্ৰেত্য তেভাোহপি ক্ৰমণ শ্ৰেষ্ঠা ইতি তানভিনন্ধতি চতুৰ্জিঃ। পশ্যতেতি হে ভোকক্ষাদয়ো গোপা এতান্ ক্ৰমান্পশ্যত প্রাথমেব একান্তেন জীবিতং বেবাং তান্। তদাহ বাত বৰ্ধাদীন্ধ্যং সহমানা অস্থাকং বারয়ন্তি॥ ২২॥

স্থলনদ্য কুপালো: অর্থিন ইব॥ ২৩॥

देवकवटावनी।

অথ প্রার্থিতিব্যান্ যাজিকানপ্যনাদরণীয়তয়াবজ্ঞায় স্থিম্থ্যানভিম্থীকৃত্য তান্ ক্রমানস্তব্দিত্যাই হে স্থোকেতি যুশ্মকেন। সম্বোধনে ক্রমোহয়ং যথাদৃষ্টিপ্রাপ্তমেব জ্ঞেয়:। এতে দশস্মীকৃষ্ণস্য দশদিক্বেক্লণার্থং প্রেয়া বর্ত্তস্ত ইতি কেচিৎ সন্তাবম্বত্তি দশসংখ্যা-ক্রাং তত্ত্ব জ্ঞোকক্ষণাদয়োহটাবইদিক্ দেবপ্রস্তবর্গপৌ ছত্রধারণ বর্ত্বশিধনাদিনোর্কাধোদেশয়ো:। একাদশো ভল্রসেনস্ত গোপ-সেনাধ্যক্ষ: রামশ্চ সর্ব্বাপেক্ষকস্তদানীং দূরে স্থিত ইতি লভ্যতে ॥ ২১ ॥

মহান্ ভাগোভাগাঁঃ যেযাং তান্। তলকণমাহ পরেতি। নোহত্মাকং। কেচিঘাতাদীন্ত্রং সহস্তে তপত্তিন: নত্তন্যাং বাররতি বিশ্বাশয়াশ্চ দ্যালবো বা কেচিৎ প্রেযাং বাররতি অয়ন্ত ন সহস্তে কিন্তু তৎপ্রতীকারং কুর্কতে। এতেচ অয়ং সহমানাঃ পরেষাং বাররতীতি মহাভাগত্ত ॥ ২২ ॥

নচ কেবলং বাতাদিছ:খাৎ রক্ষান্তি সর্বার্থক সম্পাদরতীত্যাহ্ অং। ইতি ছাভ্যাং। অংহা ইতি বিশ্বরে হর্ষে বা। বরং সর্বতঃ শ্রেষ্ঠং কুতঃ সর্বেবাং প্রাণিনামুপজীবনং জীবিকাহেতুঃ। জীবিনানিতি পাঠেছপি স এবার্থঃ হেতুণিজন্তাং ণিনিঃ। তদেবাহ যেষাং বেভ্যো বিমুখা ন যান্তি জনাঃ। বৈ প্রসিদ্ধৌ ॥ ২০॥

ক্রমদন্দর্ভ:।

ষ্মতো বিনোদেনৈব প্রত্যেকসুধ্যত্বাৎ সম্বোধয়তি হে ন্তোকেতি॥ ২১। ২২। ২০॥

ঐবিখনাগচক্রবর্তী।

বরমুদার বৃক্ষবোনাবপি জন্ম সন্ধিঃ প্রার্থাং নতু রূপণকর্মিবিপ্রজাভাবিতীমমর্থং জ্ঞাপয়িতুং বৃক্ষান্ স্ত্রোতি সথীন্ সংখাধ্য পশুতেতি চতুর্জিঃ। তোকরক্ষাদরোহঠাবইদিকু কৃষ্ণস্য রক্ষণকর্মস্থা হিতাং। দেবপ্রহ্বরূপণৌ ছত্রধারকব্ম শোধকাবিত্যূর্দ্ধাধাদেশ-কৃত্যুরোং স্থিতৌ। একাদশো ভদ্রসেনত্ত গোপসেনাধ্যক্ষঃ সর্বাবেক্ষকঃ॥ ২১॥

ভদানীং দূরে স্থিত ইতি লক্ষাতে বে বাতবর্ষাদীন্পায়ং সহমানা হলাকং বারয়ন্তি॥ ২২ ॥

ञ्चनक प्राठिर्धित वर्षिता वाहकाः॥ २०॥

ভুল্য নিরীক্ষণ করিরা শ্রীকৃষ্ণ ভ্রজবালকদিগকে বলিতে লাগিলেন হৈ স্তোককৃষ্ণ। হৈ অংশো। হে প্রীদামন্। হৈ স্বল। হে অর্জুন। হে বিশাল। হে ব্যভ। হে ওজ্বিন্। হে দেবপ্রস্থ। হে বর্ষপ।॥ ২১॥

এই সকল বৃক্ষ নিরীক্ষণ কর। ইহারা মহাভাগ্যবৃান্, পরার্থ ই ইহাদের জীবন, ইহারা স্বয়ং বাত বর্ষা ও হিম সন্থ করিয়া আমাদের তক্ষন্য ক্লেশ নিবারণ করিতেছে॥ ২২॥

আহো! ইহারা সকলের উপজীবন, ইহাদের জন্ম অতিশয় শ্রেষ্ঠ, দয়ালুজনের নিকট যাচকদের ন্যায় ইহাদের নিকট হইতে প্রাণিগণ কখন বিমুখ হইয়া যায় না॥ ২০॥ পত্রপুষ্পফলচ্ছায়া মূলবক্ষলদারুভি:। গন্ধনিষ্ধাসভস্মান্থিতোরৈ কামান্ বিতরতে।

এতাৰক্ষমসাফল্যং দেহিনামিহ দেহির্। প্রাণৈরবৈধি রা বাচা শ্রেয় আচরণং সদা॥ ২৪॥
ইতি প্রবালস্তবকফলপুষ্পদলোৎকরৈ:। তর্রণাং ন্য্রশাখানাং মুধ্যতো যমুনাং গতঃ।
তত্র গাঃ পায়য়িছাপঃ স্মুফীঃ শীতলাঃ শিবাঃ। ততো নূপ স্বয়ং গোপাঃ কামং স্বাত্ন পপুর্জলং॥২৫
তস্যা উপবনে কামং চারয়ন্তঃ পশূর্প। কৃষ্ণরামাবুপাগম্য ক্ষ্ধার্তা ইদমক্রবন্॥ ২৬॥

अधवनामो

নির্যাদো খনরস:। তোক্সা: পল্লবাদ্যকুরা:॥ ২৪॥

ইত্যভিনন্দন্ ফলপুষ্পপ্ৰবালাদিসমূহৈ ন তিশাথানাং তক্ষণাং মধ্যতো যমুনাং প্ৰাপ্ত: ॥ ২৫॥

কুমারিকাভ্য: পূর্বমেব তর্মাকুলতরা অগৃহীতভোজ্যানামেন নির্মমাৎ কুধার্তা ইত্যুক্তং ॥ ২৬ ॥

বৈষ্ণবতোষণী।

তদেবাহ পত্রেতি। গন্ধো রসাদিভব:। অন্থি সারাংশ:॥

ফলিতমাহ এতাবদিতি। দেহিনাং বিচিত্রবহুলদেহভূতাং কর্ভূতানাং প্রাণাদিতিঃ ক্লতা দেহিবু জীবেষু প্রের আচরণং যং। পাঠা-স্তবে শ্রের এবাচরেৎ সদা ইতি যদেতাবজ্জন্মসাফল্যং ইতি তত্র প্রাণেরিতি প্রাণানাদরেণ কর্মভিরিত্যর্থঃ। ধিয়া সহপায়িচস্তনাদিনা বাচা উপদেশাদিরপরা এবাং সমুচ্জনশক্ত্যভাবে পরপরোপাদানঞ্চ জ্ঞেরং॥ ২৪॥

অবকা: পুশাণাং গুচ্ছা: মধ্যেন মধ্যবর্তিনেত্যর্থ:। এবং তিগ্মভাপাপ্রাপ্তি:॥

তত্র তস্যাং স্বয়ুষ্টা অতিখছো: শিবা আরোগ্যকরবেন পুণ্যপ্রদত্বেন চ মঙ্গলকরা: ততত্তদনন্তরমেৰ যতো গোপা: তাদৃশধর্মা এব হে নৃপেতি তব প্রস্থাপালন্বভ্রেমাপি গোপালনং ধর্ম ইতি ভাব:। স্বাহ্ বহু পশুসকৈত্তংকোভেইপি স্ব্যূইখাদি গুণ্যুক্তমেবেত্যর্থ:। ইতি জলমাহাদ্ধাস্ক:। অতঃ কামং যথেষ্ঠং অতএব পুনর্জলপদং সাধ্কং॥ ২৫॥

উপবনে প্রায়েহশোকতক্ষণ্ডিত ইতি জ্ঞেরং অগ্রে তথোকে:। অতঃ ফলাদ্যভাবোহণি হচিতঃ। কামং পশ্নামিচ্ছাত্নসারে ণ-

ক্রমসন্দর্ভ:।

অস্থি সারাংশ:॥ ২৪॥

স্মৃষ্টা: অতি কছা: বাহ পশুদক্তিব স্তলোভেহপি স্মৃষ্টবাদি গুণমুক্তমেবেতার্থ:॥

অথ কামং যথেষ্টং অতএব পুনৰ্জলপদং সাৰ্থকং ॥২৫॥

কুধার্ত্তা ইতি জীক্ষুসামন্বোরপি কুন্তুমানেন বিশেষার্ত্তি জেরা। নিজ তছল্লেণস্তংপ্রেম্বটিত ইতি জেরং॥ ২৬॥

এবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

নির্বাদো নিবিভ্রদ:। অন্থি সারাংশ:। তোক্সা: পল্লবাদ্যকুরা:॥

জন্মনঃ সাফল্যমেতাবদেব ॥ ২৪ ॥

প্রবালাদিভি ন তশাখানাং ॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥

ইহারা পত্র, পুষ্প, ফল, ছায়া, মূল, বন্ধল, কাষ্ঠ, গন্ধ, নির্যাস(ঘনরস) ভত্ম, অন্থি, তথা পল্লবাদি অঙ্কুর ঘারা সকলের কামনা: নিরস্তর পূর্ণ করে, না হইবে কেন ? দেহিদিগের প্রতি ধন, প্রাণ, বৃদ্ধি, বাক্য ইত্যাদি ঘারা যে কল্যাণাচরণ তাহাই ত দেহিদিগের জন্মের ফল ॥ ২৪॥

হে রাজন্! এই প্রকারে আনন্দ প্রকাশ করিতে ২ ভগবান্ হরি সেই সকল বৃক্ষের মধ্য হইতে যমুনার গিয়া উপনীত হইলেন। হে মহারাজ! প্রবাল, স্তবক, পূষ্পা, ফল এবং দলসমূহে সেই সকল তরুর শাখা বিন্তম হইয়াছিল। সে যাহা হউক, গৈগোল সকল যমুনা প্রাপ্ত হইয়া তথায় গাভীগণকে স্থীতল ও শুদ্ধ জল পান করাইলেন এবং আপনারাও প্রচুর পরিমাণে স্বাহু উদক্ষারা পিপাসার নিইতি করিলেন॥ ২৫ ॥

. হে নৃপ! যমুনার উপবনে সেই সকল গোপাল পশুচারণ করিতে ২ ক্লুখার্ত হইয়া রামক্ষ্ণস্মীপে

॥ # ॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং দশমক্ষে যম্নাগমনং নাম দ্বাবিংশোহধ্যায়ঃ ॥ # ॥ ২২ ॥ # ॥

শ্রীগোপা উচুঃ ॥

রাম রাম মহাবাহো কৃষ্ণ ছুফীনিবহ'ণ। এষা বৈ বাধতে কুন্নস্তচ্ছান্তিং কর্তু মহ'থঃ ॥১॥

শ্রীধরস্বামী

॥ * ॥ ইতি দশমে वाविः नः ॥ * ॥

ত্রযোবিংশে ততো গোপৈরয়বাক্রাপদেশতঃ। তৎপদ্মন্থগ্রহাৎ ক্রফো দীক্ষিতানম্বতাপরং ॥ ১ ॥

বৈক্ষবভোষণী।

ভার্থ:। কুধার্ত্তা: ইতি প্রীকৃষ্ণরামরোর পি কুনমুমানেন বিশেষার্তিজের। নিজতছ্লেপন্ত প্রেমণরিপাটী যাজিকান্ প্রতি তুবক্ষাতে রামাচ্যুতে বা লগতে বুভূক্তিভাবিতি দিনান্তরবন্তদিনে দধ্যোদনাদ্যনান্তনক কেনচি মিবেণ যজ্ঞপদ্ধীনামন্ত্রহায় প্রীভগবতৈর ঘটিভং যাদামুংকর্ধার্থনের যাজিকানাং নিকর্বো দর্শবিষয়তে তেষাং ভদ্শনার্থনের বৃক্ষাঃ দ্বাধিতা ইতি জ্বেরং। উপ সমীপে আগত্য বক্ষ্যমাণার্থন্য গৌরবায় ইদং বক্ষ্যমাণং অত্যানবস্বেহধ্যায়াপাতো বক্ষ্যমাণনীলাবিশেষং স্বত্যা পূর্ববং ক্ষণং প্রীবাদরায়ণে: গুরুত্মা তৎকণাবিজ্ঞেদাং এবমন্যত্রপূন্থং। হে নূপেতি বক্ষ্যমাণাশ্চর্যালীবাশ্রবণেহত্যজ্ঞাবধানার্থং॥ ২৬॥

॥ * ॥ देखि औरेवस्ववर्णावगाः भाषान्यपित्रनाः वाविः ॥ * ॥

অথ তে কুণার্ত্তা অণি স্থাস্থভাবারশ্বিশেষমবলয় তেন প্রস্তাং বৃক্ষাণাং সর্বার্থদতামমন্যমানাঃ , সর্বার্থদানার্থং মন্থ্যাণাং প্রচারং পরিত্যজ্যাসানিহানীতবস্তং ত্যেব প্রার্থন্তে রামেতি। অশ্বানপি রময়েতি ভাবঃ। বীপা কুণার্ত্তা। হে মহাবাহে। ইতি সামর্থামুক্তং মহাবীর্য্যেতিপাঠে স এবার্থঃ রুষ্ণ হে পরমানন্দ্রনমূর্ত্তে ২তন্ত দীয়ানাং কুদ্ধুংথম্যুক্তং ইতি ভাবঃ। বিশেষত চ হে ছইনিবহ গৈতি কুৎ থলু বৈ মন্থ্যক্ত ভাতৃত্য ইতি প্রত্তা আহাকং হঃথপ্রদ্মেতং কুদরিমপি নাশ্রেতি ভাবঃ। স্বেহ্বিশেষণ ত্রোরভেদাৎ বৌ প্রত্তাব প্রার্থনং। ত্রানে রামস্থাধনং ত্রেরামেড়িতঞ্চ লোক্মর্য্যাদারূপেণ ত্রেশার্বেণ্ব প্রীকৃষ্ণক্ত স্থ্ণাং। স্বর্গ্ণ বক্ষাতে কীর্ত্তার ইত্যাদি এবা হঃসহস্বেনামুভ্রমাণা অর্থং বোগ্যো ভবথঃ। ইত্যাবশ্যক্ষমপি স্টিতং। বস্তুত ইয়মপ্যেকা ক্রীট্ডের ॥ ১॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

॥ 🛊 ॥ ইতি ক্রমসন্দর্ভে দশমে বাবিংশঃ ॥ 🛊 ॥

ভক্তায়া ইতি জাতাবৈক্ষদনং শ্বভাৰতঃ কুঞ্চপ্ৰধানচেত্ত্বেনাতঃ॥ ১।২॥

ঐ বিশ্বনাথচক্রবর্তী।

॥ * ॥ ইতি সারার্থনর্শিন্যাং হর্ষিণ্যাং ভক্তচেত্যাং। । বাবিংশো দশ্যেহধ্যায়ঃ সঙ্গতঃ সঙ্গতঃ সতাং॥ * ॥ অয়োবিংশেহর্যাক্ষানানৃতৈর্গোটিশঃ পুনশ্চ সা। পদ্মীনাং প্রেমবিপ্রাণামসূতাপশ্চ বর্ণাতে॥ • ॥

ক্ষ ইতি ক্ং থলু বৈ মন্ব্যক্ত প্ৰাভ্ব্য ইতি শ্ৰুভেরস্মাকং ক্ষাহাশক্ষমধুনা হন্তং চেৎ শঙ্কুপুত্তদৈব যুবদ্যোম হাবলছটহন্ত্ছে সাৰ্থকে জ্ঞান্যেতে ইতি নশ্ম ব্যঞ্জিতং॥ ১ ॥

আগমনপূৰ্বক ক্ষ্যমাণ বাক্য বলিতে লাগিলেন ॥ ২৬ ॥

॥ # ॥ टैंजि मनस्य चाविश्न ॥ # ॥

ত্রয়োবিংশ অধ্যায়ে ছলপূর্বক গোপালগণ দারা। যজ্ঞদীক্ষিতদিগের নিকট অন্নযাক্রা এবং তদীয় পূজীগণের প্রতি অসুগ্রন্থ হেতু তাহাদিগকে অসুতাপিত করণ বর্ণন ॥ ০ ॥

গোপবালকেরা বলিলেন হে রাম! হে মহাবাহো! হে ছুউদমন! শ্রীকৃষ্ণ! আদাদিগকে সুধায় অভিশয় ক্লেশ দিতেছে, অনুগ্রহ করিয়া সুধা শান্তি করিতে যোগ্য হও॥ ১॥ ইতি বিজ্ঞাপিতো গোপৈ ভগবান্ দেবকী হতঃ। ভক্তায়া বিপ্রভার্যারাঃ প্রসীদম্বিদমত্ত্রবীৎ।
প্রযাত দেবযজনং ত্রাহ্মণা ত্রহ্মবাদিনঃ। সত্ত্রমাঙ্কিরসং নাম স্থাসতে স্বর্গকাম্যরা। ২॥
তত্র গম্বোদনং গোপা যাচতা স্মন্ধিসন্ধিতাঃ। কীর্ত্তয়ন্তো ভগবত্র আর্য্যস্য মম চাভিধাং।
ইত্যাদিন্তা ভগবতা গত্বা যাচন্ত তে তথা। কৃতাঞ্কলিপুটা বিপ্রান্দশুবৎ পতিতা ভুবি।

शिधवचागी।

ভক্তায়া ইত্যেকবচনং সদ্যঃ সাযুজ্যাভিপ্রায়েণ॥

অন্মধিসন্ধি তাঃ আৰাভ্যাং প্ৰহিতাঃ সম্ভো যাচধ্বং যুদ্মাকং কা তত্ৰ গজ্জা মন্থ তথাপি অপাত্ৰছাদশাকং কিমিতি দাস্যমীতি চেৎ-তত্ৰাহ কীৰ্ত্তনম্ভ ইতি ॥ ৩ ॥

देवक्षवरकाषणी।

ভগবান্ সর্কশক্তিমানপি ইদং বক্ষ্যমাণমত্রবীং। কুতঃ বিপ্রভাগ্যায়া ইতি জাতৌ একতং সর্কাসাং তাসাং অবিশেষেণাপাদানার্থং তাঃ প্রতি প্রসীদন্ অন্থ্যহং কর্ত্তুঃ তক্ত হেতুঃ ভক্তায়াঃ চিরং ভগবতি জাতরতেঃ তথাপ্যাদৌ বিপ্রের্ যাচনং তাসামের মাহাত্মা-প্রদর্শনায়। তচ্চাগ্রে ব্যক্তং ভাবি। নমু তাসাং ভক্তত্বং কথং জাতং তত্তাহ কগদীখরঃ তদানীং কগতাপি মধুর্মৈখর্গ্যং প্রকাশরতি তিন্দ্ প্রমন্ত্রকামলন্ত্রদানাং তাসাং ভক্তিঃ কথং ন জায়তামিতি ভাবঃ। দেবকীস্থত ইতি পাঠশ্চ কচিং॥

দেব্যাজনং যজ্ঞবাটং ব্ৰহ্মবাদিন: বেদঘোষণশীলা: নতু বেদার্থবিদ ইতি গুঢ়োহভিপ্রায়:। অতএব স্বর্গকাম্যয়া সত্রং যজ্ঞনাসতে অহুতিষ্ঠস্তীত্যর্থ:। হি নিশ্চিতং॥ ২॥

যদি তু সঙ্কোচং মন্যধ্বে ত স্থাবদ্যোরের নিদেশকারিত্বেনাত্মানং থ্যাপয়ত নতু পিত্রাদিনায়েত্যতিপ্রেত্যাই অস্মদিসর্জিতা ইতি। ভত্ত চ বিশেষমাহ কীর্ত্তয়স্ত ইতি। ভগবতো মহাপ্রভাবস্যেতি তত্ত যুক্তিশ্যেকা। মমচ তৎসম্বন্ধেন ইত্যর্থ:॥

ইভাদিষ্ঠা ইতি তদাদেশগোরবেলৈবেতার্থ:। যাজ্ঞিকানাং দৌ:শীল্যং বিশেষয়িত্ং তেষাং সৌশীল্যমাহ ক্ততেতি ॥

🗐 বিশ্বনাথচক্রবর্তী।

বিপ্রভার্য্যায়া ইতি জাতাবেকত্বং ভক্তারা ইতি তাদাং ভক্তিমসূস্ত্য দদ্য এব প্রদীদন্। কিঞ্চ। তাবেকস্যাস্ত ভবিষ্যতীং দশমীং দশামসুস্বত্য প্রকর্ষেণ সীদন্ শোচমানশ্চেত্যর্ধ্বরলাভার্থমেকত্মিতি কেচিং॥

তপোবিদ্যাধন্মাদিমং হিপ বিপ্রের্ ভক্তাভাবার মে প্রসাদন্তপ আদিরহিতাহিপি তৎপত্নীর্ ভক্তিসম্ভাবান্ধংপ্রসাদ ইত্যর্থয়য়-নেকস্যাং ব্রাহ্মণজাতাবেব ক্রমেণ জ্ঞাপয়িতুং প্রথমং গোপান্ ব্রাহ্মণসন্নিধৌ প্রস্থাপমন্নাহ প্রযাতেতি ॥ ২ ॥

যাচত যাচধ্বং। কীর্ত্তরন্ত ইতি আবাভ্যামপি অনামাপি প্রবোধ্য়িতুমশক্যা ঈদৃশী তেবাং বিহুষাং নিজেতি জ্ঞাপয়িতুমুক্তং আর্য্যস্য বলদেবক্ত প্রথমমভিধাং কীর্ত্তর ইতি মত্তো বৈশুক্তাতেঃ সকাশাদার্য্যং ক্ষতিষজাতিং কিঞ্চিদভাহিতিছেন দানপাত্রং মন্বাপি বদি তে বহিদ্বিশিনো বং কিঞ্চিদাস্যন্তি তদপি ভদ্রমিত্যভিপ্রায়েণ॥

কুতাঞ্জলিপ্টা ইতি স্বেষাং সৌশীল্যমভিব্যঞ্জয়িতুং তচ্চ তদানীং ভিক্ষাপ্রাপ্ত্যর্থকমেব। দণ্ডবৎ পতিতা ইভি শীরব্রন্ধর্থবৈশ্রেভ্যোহপি সকাশান্তারতিতেজ্ববিনো মন্তা ইত্যর্থ: ॥

শুকদেব কহিলেন রাজন্! গোপবালকগণ ঐ প্রকার বিজ্ঞাপন করিলে দেবকীনন্দন ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ নিজ ভক্তা বিপ্রভার্যার প্রতি প্রদম হইবার মানদে তাহাদিগকে কহিলেন তোমরা দেবার্চন স্থানে গমন কর, প্রশ্নবাদি প্রাশ্ধবোরা স্বর্গনামনা করিয়া আঙ্গির্গ নামক যজ্ঞ করিতেছেন॥ ২॥

সেধানে গিয়া অন চাহিয়া আন, আমরা স্থ জনে পাঠাইতেছি ইহাতে ভোনাদের সজ্জা কি? যদি এমত আশকা কর যে অপাত্র বলিয়া জাষাদিগকে অন্ন দিবে না, জামি বলিতেছি ভার্যা ভগ-বান্ বলভাজের এবং আমার নাম গ্রহণ করিও। হে রাজন্। ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ কর্ত্তক এই প্রকার আদিই হইয়া গোপবালকপণ যজ্জানে গ্রম করিশেন এবং ভূতলে দণ্ডবং পতিত হইলা কৃতাঞ্জি হে ভূমিদেবাঃ শৃণুত কৃষ্ণস্যাদেশকারিণঃ। প্রাপ্তান্ জানীত ভক্রং বো গোপালো রামচোদিতান্॥৩ গাশ্চারয়স্তাববিদ্র ওদনং রামাচ্যতো বো লয়তো বুভূক্ষিতো। তালাছি জা ওদনমর্থিনো ইদি প্রদা চ বো যহত ধর্মবিত্তমাঃ॥ ৪॥ দীক্ষায়াঃ পশুসংস্থায়াঃ সোতামণ্যাশ্চ সত্তমাঃ। অন্যক্র দীক্ষিতস্যাপি নামমন্ত্র হৃষ্যতি ॥৫॥

धिशतवामी।

অবিদ্বে বর্ত্তমানৌ সত্তো বৈা যদরং তল্লুকা অভিলয়ত:। ওদনং শ্রহ্মা চ বো ষদ্যন্তি তর্হি যজতেতি॥ ৪॥
দীক্ষিতা বর্ষভোজ্যালা ইতি বদিবাস্তীতি স্বয়মেবাশস্ক্যাহ: দীক্ষামার্ভ্য আধীবোমীয়পশাল্ভনাৎ পূর্বং দোর: ন ততো হন্যত্র বৈষ্ণবভোষণী।

হে ভূমিদেবা ইতি ভক্তা সংখাধনং স্বভাবতঃ ক্রঞপ্রধানচেতজ্বোতঃ ক্র**ফস্যেতি প্রীক্রফোজিক্র**মবিশ্বভিমন্ত্রাহঃ পামেতি। তত্র প্রেষণে তুরামানেশ এব মুখ্য ইত্যর্থ:। অতএব তৎসম্বরণার্থং মধ্যে ভক্তং ব ইতি সসন্ত্রমাদরোক্তিঃ॥ ৩॥

কিমর্থং প্রাপ্তাঃ স্থ তত্ত্রাহ্র্পা ইতি। নহু কথমবিদ্রে তৌ তত্ত্বাহর্পাশ্চারমন্তাবিতি। মানরক্ষামৈ তত্ত্বাহার্থাগমনং পরিহতং। অন্নমিতি বামিপাঠঃ। ওদনমিতি পাঠো বহুত্র অর্থস্থ সমানঃ। ভিদ্সা স্ত্রী ভক্তমন্ধোহরমাদনোহন্ত্রী সদীদিবিরিত্যমরঃ। বদা। কুতো বুভূকিতৌ তত্ত্বাহর্পাশ্চাররত্ত্বী গোচারণেন তত্ত্ব চু দ্রাগমনেন পরিশ্রমাদিত্যর্থঃ। বুভূকিতাবিতি তরোরের বুভূক্ষরাহরপ্রাপ্তিসিন্ধেঃ। বদা। তৌ কুতোহত্ত্ব নায়াতৌ তত্ত্বাহর্পাইতি। তৌ বিনা গবাং রক্ষা ন ভবেদিতি। নহু সম্প্রতি কুত্র তৌ তিঠতঃ তত্ত্বাহর্বিদ্রে প্রায়োনিকট-এবেত্যর্থঃ। ইদং নিজবচনপ্রামাণ্যার তেষাং সন্ধোচনায় চ। রামাচ্যুতাবিতি ত্রাহ্মণেভ্যো ভ্রেন জ্যেইজন্মণ নির্দিষ্টং। লোকরমণাদ্রামঃ নর্প্তণাচ্চুতিবহিত ইতি মাহান্ম্যমন্ত্রনর প্রনিতং। বো যুম্মাকমেবান্নমিতি তদিত্রান্নং নিরস্তং। নমু তথাপি সত্রং পরিত্যক্ষ্য গন্ধং ন শক্যতে তত্ত্বাহর্থছতে অন্নাম্থের সমর্পরত ইতি। যদ্যস্তীতি বিনমঃ অণ্চ স্তোহ্থিভ্যোহপ্রদানমধ্য এবেতি গুলো ভাবঃ। অত-এবাছর্ধ প্রবিত্তমা ইতি। তমপ্রত্যয়ং স্তত্যর্থনের নতু তত্ত্বঃ ধর্মত্বাক্সানং এবমপ্রে সত্তমা ইতি চ॥ ৪॥

দীক্ষায়া ইত্যাছ্যক্তিন্থেষাং স্বাভাবিকপাণ্ডিত্যং ব্যনক্তি অভঃ পশুনংস্থা চ জাতেতি অমুষ্ঠানবিশেষেশ পরিচিতং হীতি শাস্ত্রপ্রসিদ্ধা ক্রমসন্দর্ভঃ।

কৃষ্ণস্যেতি শ্রীকৃষ্ণেক্তি:। ক্রমবিশ্বতিমভিনীয় তংসম্বরণার্থ গোদরং কিঞাদাহর্জন্মিতি। শ্রীকৃষ্ণাদেশবদাহ: রামেতি ॥ ৩ ॥৪ ॥ দীক্ষামারভা পশুসংস্থানত: পূর্বং হ্যাতি। সৌ্আমণ্যাশ্চ সর্বদৈব হ্যাতি। ততোহনাত্র ন হ্যাতীতার্থ:॥ ৫ ॥ ৬ ॥ ৭ ॥

ত্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

ক্লফান্যাদেশকারিণ ইতি তস্য নন্দরাজপুল্রখেন রামতঃ সকাশাদৈশব্যাৎ রামচোদিতানিত্যক্ষদারা রাম এবালং প্রথমং ভিক্ষতে ইত্যভিপ্রায়েণ॥ ৩॥

বো যুমান্ লমত:। ভিকতে ওদনং অরক্ষেতি পাঠবয়ং তুল্যার্থং। দমু তৌ ব্রাহ্মণৌ ন ভবত ইতি ব্রাহ্মণভোজনাৎ পূর্বাং কথং দাস্যানন্তবাহ: বুভূক্ষিতৌ। অনস্য ক্ষিতঃ পাত্রমিতি প্রমাণং জানীথৈবেতি ভাবং। কিমপাপ্রতিবদতন্তানালক্ষ্য প্নরাহ:। ছে দ্বিলা তয়োর্থিনো বে বি মদি প্রদ্ধা অন্তি তহি বিদ্ধৃত নো চেল্লেতি ক্রত বয়ং পরাবৃত্য যাম ইতি ভাবং। ধর্মবিত্তমা অতা খ্বহমবাতি-বেক্রো ধর্মাধ্যে বিরুপ্ত ক্রে ক্রেম ইতি ভাবং। প্রেবেণ ব্রেম্বান্টিমন সর্ব্দেশক। তিজ্ভীভূমামুন্ত তৌ রামক্ষাবৃতিক্র্যান্ত্রীক্রিন্তিপ্ত বিধ্নীত্লকণ্য। ৪ ॥

দীকিতারং ন ভূমীতেতি বচনাৎ দীকিতা বরমভোলারা ইতি বদিষান্তীতি বরমাশহাহে। দীকারা দীকানন্তরং পশুসংস্থারা উপদেশামুসারে যাদ্রার্থ কহিলেন হে ভূদেব সকল। প্রবণ করুন, আমরা প্রীকৃষ্ণের আদেশকারী, আপনাদের নিকটে আসিলাম, আপনাদের মঙ্গুল হউক, আমাদিগকে বলভদ্রের প্রেরিত গোপাল বলিয়া জামুন॥ ৩॥

হে বিজর্প ! রাম ও কৃষ্ণ এই স্থানের অদৃরে গোচারণ করিতেছেন, তাঁহারা বুস্কিত হইয়া আপনাদের অন্ন অভিলাষ করিতেছেন, আপনারা ধর্মজ্ঞথবর যদি তাঁহাদের প্রতি আপনাদের আদা থাকে. সেই চুই মহাস্থার প্রাধিত অন্ন প্রদান করুন।। ৪।।

GR मुख्य मुक्त ! मीका जात्र कृतिया जायित्यांगीय প्रश्नातत्वत शृत्क्र मीकिणात अहत्। त्याय,

ইতি তে ভগবদ্যাক্রাং শৃণুস্তোহপি ন শুশ্রুবঃ। কুলাশা স্থ্রিকর্মাণো বালিশা বন্ধনানিনঃ ॥৬॥
দেশঃ কালঃ পৃথগ্ দ্রব্যং মন্ত্রতন্ত্রন্থিকিঃ। দেবতা যজমানশ্চ ক্রত্ত্রন্থিক যন্ময়ঃ॥ ৭॥
তং ত্রক্ষ পরমং সাক্ষান্তগবন্তমধোকজং। মনুষ্যদৃষ্ট্যা ছুপ্রাক্তা মর্জ্যান্থানো ন মেনিরে।

थी भवतामी ।

তথা সৌত্রামণ্যাশ্চান্যত্র ॥ ৫॥

কুদে বর্গাদাবাশামাত্রং যেষাং তে। ভূরীণি ক্লেশাধিকানি কর্মাণি বেষাং তে অতোহুজ্ঞাঃ রূপা জ্ঞানর্দ্ধা ইতি মানমন্তঃ॥ ৬॥
নম্থ কর্মক্রমমূলজ্য অনেশকালে অন্যার্থমন্ত্রমন্ত্রীক কথং দেলং ততাহ দেশ ইতি। পৃথক্ চরুপুরোড়াশাদি দ্রব্যং। তন্ত্রং প্রেরাগঃ।
ধর্মোহপুর্বং॥ ৭॥

শহয়েহিয়মিতি দৃষ্টা মর্ত্তাজ্বান: দেহাভিমানিনো বান্ধণা বয়ং মহান্ত ইতি মন্যমানা: ॥৮॥

বৈষ্ণবতোষণী।

নিশ্চিষ্কিং। দীক্ষামারতা প্রসংস্থাতঃ পূর্কং.হ্যাতি ততোহন্যত ততঃ পরং ন হ্যাতি সৌতামণ্যাশ্চান্যত ন হ্যাতি সৌতামণ্যাস্ত হ্যাতীত্যর্থং। তদেবমপ্রম্পি সময়াসময়াদিবিচারং জানত এব যাচামহ ইতি ভাবং ॥ ৫ ॥

ইতি শ্রীগুকোজির্জগবতঃ সর্কৈষ্য্যপরিপূর্ণস্যাপি ক্লপরা যাক্রা তেনৈবারার্থং প্রেষিডদ্বাৎ ন শুক্রব্য মহাজিমানেন তাং নালৃত-বন্ধ ইত্যথ :। তত্র শ্রীভগবত্যনাদরেণ তান্ বিপ্রান্ সক্রোধং নিন্দপ্তি ক্রেডি সার্ধরেন ক্রোধা অপি ভূরিকর্মাণঃ বতো বালিশা অরব্দরঃ তথাপি বৃদ্ধমানিনঃ। যদা। শ্রমশ্রমণাপি ভগবস্তজ্যা সহার্থ : সিদ্ধোৎ তদজ্ঞানাৎ বালিশা এবেতি। নম্ কথং তত্ত্বং নাধিবান্ধি তত্রাহ বৃদ্ধতি। আয়ানং জ্ঞানবৃদ্ধং মন্যন্ত ইতি ॥ ৬॥

ব্দপ তবদৃষ্ট্যা তেৰামজ্জ জ্ঞাপন্নৱাহ দেশ ইতি মুগ্মকেন। পৃথগ্ৰহ্বিধং॥ ৭॥

ভগবতো দেশাদিমরতে হেড্: পরমং এক্ষেতি। অতো ভগবন্তং সকৈষ্ঠ্যপরিপূর্ণ অতো অধোকলং ইন্সিরাগোচরমিত্যপ:। তথাপি কুপরা সাক্ষান্তাং। তমপি মন্ব্যুদ্ট্যা মন্ত্যুদ্ধান মেনিরে নাদৃতবন্ত ইত্যর্থ:। কুত: হুল্লঞা: বিচারহীনা: তদপি কুত: মন্ত্যান্থান:॥

ক্রমসন্দর্ভ:

প্রাক্তমিত্যেকদেশদৃষ্টান্তঃ ॥৮॥৯॥১०॥১১॥১২॥১৩॥১৫॥১৫॥১৬॥১৭॥১৮॥১৯॥২০॥২১॥২২॥২৩॥২৪॥

बैविश्वनाथहळावडी ।

আগীবোমীয়প্শালন্তনাৎ পূর্ব্বং দোব:। ন ততোহনাত্র ততঃ পরস্ক অন্নমন্ন হ্ব্যতীতি পশুসংস্থা চেদানীং জাতৈবেতি ভাব:। তথা সৌতামণ্যা অন্যত্র ন হ্ব্যতি সৌত্রামণ্যান্ত সর্ববৈদ্ব হ্ব্যতীত্যর্থ:॥ ৫॥

নম্ম তে শাস্ত্রজ্ঞা ত্মপি কথং ন শুশ্রব্ত্তত্ত্ব ন বন্ধতঃ শাস্ত্রজ্ঞাঃ প্রত্যুত শাস্ত্রমধীত্যাধ্যাপ্য চ মূর্যা এবেতি সক্রোধং তানাক্ষিপতি সাহিব্যেন। ক্ষুটো অর্গাদাবাশামাত্রং যেবাং তে বৃহ্ধমানিন এব নতু তে জ্ঞানবৃহ্ধাঃ ॥ ৬ ॥

নম্ম শাস্ত্রবিহিতদেশকালপাত্রাদিক্রমমূলজ্য কথমন্যার্থমন্ত্রমন্তর্গৈদেয়ং তত্রাহ দেশ ইতি। পৃথগ্রহ্বিধং। চরুপুরোড়াশাদি দ্রব্যং। তত্রং প্রয়োগঃ। ধর্মোহপূর্বং। যক্সরঃ যদংশাংশবিভৃতিরূপঃ। তং প্রমং বন্ধ অধোকজং ইক্সিয়াগোচরম্পি রূপয়া প্রত্যক্ষীভৃত্মিত্যর্থঃ। মন্ত্রো জীববিশেষোহয়মিতি দৃষ্ট্যা মুর্ক্ত্যাস্থানো দেহাভিমানিনঃ॥ १॥

তন্তিমন্থলে এবং সোঁকামনী হইতে অন্য দীক্ষিতের অনভোজন করিলে দোষ হয় না. অতএব তাঁহার। আপনাদের নিকট অন চাহিয়াছেন।। ৫।।

হে রাজন্! সেই সকল আহ্মণ এই প্রকারে ভগবানের যাদ্ধা শুনিয়াও শুনিল না, ক্ষুদ্র স্বর্গাদিতে তাহাদের আশামাত্র ছিল, বস্তুত ক্লেশাধিক কর্মই করিত অতএব তাহারা অজ্ঞ আপনাদিগকে র্থা জ্ঞান র্দ্ধ বিশিয়া মানিত।। ৬।।

হায় ! দেশ, কাল, চরু পুরোড়াশাদি পৃথক্ ২ জব্য, মন্ত্র, প্রয়োগ, ঋষিক্, অগ্নি, দেবতা, যক্ষান, যজ্ঞ এবং অপূর্ব্ব এ সকল যাঁহার স্বরূপ ॥ ৭ ॥

সেই সাক্ষাৎ পরব্রন্ম ভগবান্ অধোক্ষজকে "ইনি মানুষ" এইরূপ মনুষ্য দৃষ্টি করিয়া দেই শৃকল

ন তে যদোমিতি প্রোচু ন নৈতি চ পরস্তুপ। গোপা নিরাশাঃ প্রত্যেত্য তথোচুঃ কৃষ্ণরাময়োঃ ॥৮
তত্তপাকর্ণ্য ভগবান্ প্রহুদ্য জগদীশ্বরঃ। ব্যাক্তহার পুনর্গোপান্ দর্শায়ন্ লোকিকীং গতিং ॥৯॥
মাং জ্ঞাপর্যত পত্নীভ্যঃ সদক্ষর্ণমাগতং। দাস্তি কামমন্ধং বং স্লিগ্ধাঃ মহা্ষিতা ধিয়া।

विषत्रवामी।

লৌকিকীং গতিমিতি ন হি কার্য্যার্থিনো নির্বিদ্যন্তে কো বা যাচকো ন পরাভূয়ত ইত্যাদি লোকস্থিতিং দর্শন্ম ম। কেবলং দেহেন গৃহে বসন্তি ধিয়া তু মবেদ্রবোধিতাঃ। যতো ময়ি স্থিগ্নাঃ অতো দাস্যন্তীতি ॥ ১০ ॥

বৈষ্ণবজোষণী।

ওমিতি স্বীকারে। দাস্যাম ইতি ন প্রোচু: ন দাস্যাম ইতি চ ন প্রোচু:। ছরভিমানগ্রন্তভয়াহত্যন্তাবজ্ঞানাং। হে পরস্তপেতি পরং মদলকণং শত্রুং ভবাদৃগেব নিয়ন্তং শক্রোতি নত্বন্য ইতি ভাব:। তথেতি নিজোক্ত্যাদিকং বিপ্রচেষ্টিতকোচু:॥৮॥

যদাপি বাবেব প্রতি গোপৈরুক্তং তথাপি প্রীরামঃ শ্রীরঞ্চাজ্ঞাহনাদরজাতক্রোধাং শ্রীরঞ্চাভিপ্রায়াজ্ঞানারা নৈবাবদং শ্রীর্ক্ষ এব প্রত্যাহেন্ডাই তদিতি। উপ সমীপ এবাকণ্য তদনাদরহুংখন গোপৈঃ দনৈবেবাক্তেঃ। প্রহস্য উচৈহি দিয়া তত্র হেতুর্জগদীখরঃ সর্কনিয়ন্তা ভগবান্ সর্কেশ্বর্গপূর্ণত অতঃ কৌতৃক্মাত্রার্থাই তথা বাচনং তরিরাশে চ হাস এবোচিত ইতি ভাবঃ। অন্যবৈঃ। বহা। যত্র পুর্কনিয়ন্তা ভগবান্ সর্কেশ্বর তৎপত্নীর বাচিতব্যমিতি বাচকান্ শিক্ষারিত্যপাঁঃ। দেরমপ্যেকা কৌতৃক্মারী লীলৈব বন্ততন্ত পূর্কনিজপ্রোক্তরীত্যা বুক্তেন্ডা মন্থ্যাণাং নিকর্ষে জ্ঞাপিতে বিশেবাহপ্যতান্তীত্যভিপ্রেত্য স্থানারভক্তানাং বেদপাঠবাগৈকপরত্বাদিকং হরভিমানাদিদোবার হংথারৈর চ করতে নচ ক্ষেমার অতন্তপ্রহিতা অপি মন্তক্তাঃ পরমোন্তমা ইতি তহিপ্রপদ্মীব্যবহারেণ লোকে দর্শরিত্মিত্যর্থ:॥ ১ ॥

মামাগতমেব জ্ঞাপরত নচ বৃত্কিতং নাপ্যর্ঘাচনাদিকং কুক্ত যতো মদাগমনজ্ঞাপনাদেব দাস্যন্তীত্যথ:। পত্নীভ্যন্তেবাং যজ্ঞ-সম্বন্ধিনীভ্যো ভার্য্যাভ্যঃ পত্যুনে বিজ্ঞসংযোগ ইতি করণাং। অনেন ধর্মসক্ষ এব তৈঃ সহ তাসাং অবশিষ্টোহন্তি নতু কামসক্ষঃ

ত্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

ওমিতি ন প্রোচ্রিতি সম্প্রতি রাহ্মণভোজননিম্পতেঃ পূর্কমেব গোণালকেড্য: কথং দাস্যাম ইতি ভাব:। নেতি চ নাপ্রোচ্রিতি বিদি রাহ্মণাদিভোজননিম্পত্যন্তর্বিরতানি ভবিষান্তি তদা দাস্তামেহিপীতি ভাব:। তদা রাহ্মেহিপি কোধমুভূত্মালক্ষ্য সম্বোধয়তি হে পরস্তপেতি। তদানীং যদি বং রাজ। ২ভবিষ্যন্তদা বহ্মণাচ্ডামণিরপি তান্ বাহ্মণান্ শক্রনিব অবশ্রমণভ্ষিষ্য ইতি ভাব:॥৮॥

প্রহয়েতি অজ্ঞবিপ্রেয়্ কোপানৌচিত্যাদিতি ভাব:। লৌকিকীং গতিমিতি ন হি কার্য্যার্থিনো নিবিদ্যায়ে কো বা যাচকো ন পরাভূয়ত ইতি লোকছিতিং দর্শয়ন্॥ ৯॥

े মামাগতমেব জ্ঞাপথত নতু বিবক্ষিতং বৃভ্কালকণমদুঃধঐবণস্য সদ্য এব তদ্ভিস্তাপকভাৎ। নতু তৰুভ্কাজা জ্ঞাপনং বিনাক্থমলং তাদাস্তি তত্তাহ। বোযুলভ্যং মৎস্বল্লেনৈব যুল্লভুজ্কাদর্শনেনৈব দাস্যতি। নতুতংপতলো বারয়িয়তি ততাহ।

ছুপ্রজ্ঞ ব্যক্তিরা মানিল না। তাহারা দেহাভিমানী, "আমরা ত্রাহ্মণ, আমরাই নহং" এই অভিমানে উদ্মন্ত ছিল। অতএব গোপালদিগের উক্তি প্রবণ করিয়া হাঁ, না কিছুই বলিল না। হে রাজন্! গোপ-গণ নিরাশ হুইয়া প্রত্যাগমনপূর্বক রামকৃষ্ণ সন্ধিকটে সকল র্তান্ত অবিকল বর্ণন করিলেন।। ৮।।

তাহা শুনিয়া ভগবান্ জগদীশ্বর হাস্য করিলেন, পরে লোকিকী গতি অর্থাৎ কার্য্যার্থি লোকের ক্র হওয়া উচিত হয় না, কোন্ যাচক পরাভূত না, হয়, ইত্যাদি লোকস্থিতি বুঝাইয়া দিয়া পুনরায় গোপদিগকে কহিলেন।। ১।।

ুঁতোমরা এবার গিয়া সেই আহ্মণগণের পদ্মীদিগকে বল, বলভদ্র সহ প্রাক্ত অধানে অসিয়াছেনা ক্রেই সক্ষু অবলা কেবল দেহবারা গৃহে বাস করে বস্তুতঃ মনের সহিত আমাতেই সদা অবস্থিতি

· ·

গত্বাথ পত্নীশালায়াং দৃষ্ট্বাদীনাঃ স্বলঙ্কতাঃ। নতা বিজ্ঞসতীর্গোপাঃ প্রশ্রিতা ইদম্ফ্রবন্ ॥ ১০ ॥ নমো বো বিপ্রপত্নীভ্যো নিবোধত বচাংদি নঃ। ইতো বিদ্রে চরতা ক্ষেনেছেষিতা বয়ং॥১১ গাশ্চারয়ন্ স গোপালৈঃ সরামোদ্রমাগতঃ। বুভূক্ষিতস্য তস্যান্ধং সাক্রস্য প্রদীয়তাং॥ ১২ ॥

औरत्यामी।

ইথিতা: প্রে**ষিতা: ॥ >> ॥** স জীক্ষ: গোপালৈ: দহ ॥ ১২ ॥

বৈষ্ণবভোষণী।

যয়ি গাঢ়ভাবতাদিতি মতং। কিঞ্চ। স্বন্ধিংতাসাং ভাববিশেষেণ তত্ত্ব শ্রীবলদেবস্য গৌণতয়া সম্বর্গনহিতমিত্যক্তং। সম্বর্গতি তস্য মহিমনার্মধাৎ সাক্ষাৎ গ্রহণং। নমু পতীনামহজ্ঞাং বিনা কথকতা অপি দত্যঃ কথঞ্চিদ্দদানা অপি পতিভিঃ বার্য্যিতব্যা এব তত্ত্বাহ বিশ্বা ইতি মদপেক্ষয়া তাসাং তেষু নাদ্র ইতি ভাবঃ॥

অথ দিয়া ইত্যাদি শ্রীভগবন্ধচনানস্তরমেব অন্যথা পুনর্যাচনার্থং যানমযুক্তং স্যাৎ। তাসাং সদবসর এব তেষাং গমনং জাতং ইত্যাহ আসীনা ইতি সন্তায়ত্বং থলু ঝিধা স্থথায় স্যাৎ অব্যগ্রচিত্তব্বেন স্থবেশবেন সন্থাবহারব্বেন চ। তত্রাসীনা ইতি পতিপারব-খ্যেনবেশ্যকং পাকাদি বৈয়গ্রামুত্তীর্যা স্নানা দিপুর্বকং পরস্পারং ভগবৎকথাবেশেন নিশ্চলতয়া রুত্যোপবেশা ইত্যর্থ:। অলক্ষ্ডা ইতি স্পবাহ ব্যবহারাত্তাবদলক্ষ্তা এব প্রীভগবৎপ্রেমাবেশমরপুলকাদিভিত্ত স্থাচ্চ চালক্ষ্তা ইত্যর্থ: পর্মসন্তমায়াং বিজ্ঞাতাবিপি সতীরিতি ভগবত্তক্যা আতেন সর্বাত্তবাদ্যেন পর্মসন্থাবহারত্তণযুক্তাশেচত্যর্থ:। প্রস্রিভাবে স্থভাবত এব কিছা তাসাং প্রীকৃষ্ণবিষয়ক্ষেহবিশেষপ্রবেশন ॥ ১০॥

রিগ্ধা ময়াবিতা ধিয়া ইতি জ্বীকৃষ্ণবচনবদেব বীক্ষ্য তাঃ সমবধাপদ্বস্তি নমো বো যুল্লভামিতি বিপ্রপদ্ধীভ্য ইতি নমস্বার্থোগ্যতোক। তথাপি পূর্ব্ববদেব নাভিবহিশ্চিত্তাঃ প্রত্যাহঃ নিবোধতেতি। বচাংসীতি বহুত্বমর্থগৌরবেশ অবিদ্রে নিকট এব ক্লেন যুল্লচিত্তাকর্বকে-শেতি ভাবঃ॥ >>॥

সদা শ্রীকঞ্চং রময়তীতি ইতি তত্মাৎ সঙ্কোচো নিরস্তঃ স্বয়ং ভগবতা মাহাম্যুথাপনায় পূর্বং সন্ধ্বনামোক্তং এভিস্ত এতয়ায় তদভিক্চিত্বথাপনায়েতি যত্তদৰ্কনেব। সর্বাত্ত গৌরবাধিক্যসৈয়েবোচিত্যাৎ। উত্তরত তুপদ্বীনাং তথৈবাভিক্চে: অদ্রমিত্রু পুনক্জি: অতিনৈক্ট্যেন তাসামাগনাথ সাহ্যস্য শ্রীরামগোপবর্গসহিত্স্য। প্রকর্ষেণ সরস্মিষ্টায়পানভ্তপাত্রাদিঘারা দীয়তাং

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্ত্তী।

নিয় নিয়া: স্নেহৰত্য: পতিবারণং ন মান্যিষ্যন্তি যতে। মধ্যেব ধিয়া উষিতা: কেবলং দেহেনৈব পতিগৃহে বসন্তীত্যর্থ: ॥ > ॰ ॥

অং। হতৈতাঃ কৃষ্ণ নামৈবানন্দমূদ্ভিতা অভ্বং তদিমাঃ প্রবোধয়িতুং তব্তান্তমুক্তমেব তং কিঞ্ছিশিয় পুনকলৈকজারয়ায় ইতাভিপ্রেতাছে:। গাইতি। অদ্বং নিকটমেবায়াতঃ। তদপি সমাগ্ প্রবৃদ্ধা আলক্ষা তদ্যাদ্ধাকাক্ষাং প্রাৰম্ভিদা অতিমেহবতীতা

করিতেছে। আমার প্রতি তাহাদের অতিশয় স্নেহ, আমার নাম গ্রহণ করিলেই তোমাদিগকে প্রচুর অন্ন দিবে কোন দলেহ নাই, ছে রাজন্! শ্রীক্বফের এই কথায় গোপবালকগণ পত্নীশালায় গমন করিলেন এবং তথায় উপবিষ্ট ও উত্তমালস্কারে অলঙ্কত দ্বিজ্ঞসতীদিগকে প্রণাম করিয়া দবিনয় কনে বলিতে লাগিলেন॥ ১০॥

হে বিপ্রপত্নীগণ! আপনাদিগকে প্রণাম করি, আমাদের বাক্য প্রবণ করুন, এত্মানের অদ্রে শ্রীকৃষ্ণ আদিয়া ভ্রমণ করিতেছেন, আমাদিগকে পাঠাইয়া দিলেন॥ ১১॥

তিনি গোপবালকের সহিত গোচারণ করিতে ২ বলদেবের সঙ্গে দুরে আসিয়া পড়িয়াছেন, অ

শ্রুদানুত্রমূপায়াতং নিত্যং তদর্শনোৎস্থকাঃ। তৎকথাকিপ্তমনসো বস্তুক্তিসন্ত্রমাঃ॥ ১৩॥ চতুর্বিধং বহুপ্তশমন্ত্রমালায় ভাজনৈঃ। অভিসক্তঃ প্রিয়ং সর্ব্বাঃ সমৃদ্রমিব নিম্নপাঃ।
নিবিধ্যমানাঃ পতিভিঃ পিতৃভিত্রা তৃবন্ধৃতিঃ। ভগবত্যুত্তমশ্লোকে দীর্ঘশ্রমূপ্তাশয়াঃ॥ ১৪॥
যমুনোপবনেহশোকনবপল্লবমণ্ডিতে। বিচরস্তঃ বৃতং গোপৈর্দপৃশুঃ সাগ্রন্ধং ক্রিয়ঃ॥ ১৫॥

धीधत्रवामी।

তৎকথান্ধিধনন্দান্দৰ্শনোৎস্থকাঃ অভন্তমুপাগতং শ্ৰুদা লাভসন্ত্ৰমা বভূব্বিভি 🛭 ১৩ 🗈

ভোক্ষাভোজ্যনেছচোষ্যতেলৈ চতুর্বিধং বছগুণং সংস্থারবিশেবৈর্ব হনো গুণাঃ রসসৌরভ্যাদরো বন্মিন্ তং। ভাজনৈঃ পাত্রৈর্ভাইগু-ব্য পত্যাদিভিব্যার্থমাণা অপি প্রিরং শ্রীকৃষ্ণং অভিসক্রভিজ্মাঃ। অপ্রতিবন্ধে দৃষ্টাত্তঃ। সমুজং নিম্নগা নদ্য ইবেতি। অ্ত হেতুঃ ভগবতীতি। দীর্ঘং বহকালং শ্রুতেন শ্রবণেন ধৃত আশ্রো যাভিন্তাঃ॥ ১৪॥

তথাগতা: সত্যো দদৃশু:॥ ১৫॥

বৈষ্ণবজোষণী।

পূর্বং তদাদেশন কেবলং ব্যোরেবার প্রার্থনং অধুনা তু তদাদেশং বিনাণি সাম্গ্রেচাতি। তত্তাণি প্রকর্বেণ্ডি ভাসাং ভগবতি ভজি-বিশেষপ্রবাণাদেঃ সন্দৈর্ব। ত্রারভাগোনাণ্যাগ্যনসম্ভাবনপূর্বকঞ্জ ॥ ১২॥

হৃদয়াৎ ক্লাচিদপি ন চাতো ভবতীতাচ্যুততং উপায়াতং সমীপ এব সাক্লানায়াতং। অন্যতৈঃ। যহা। বিশেষতণ্চ তৎক্থ্যা তস্য বুভুক্ষাবার্ত্ত্যাকিপ্রমনসঃ॥ ১৩॥

চত্রিতি যুগাকং। ভাজনৈ: ভোজনপাত্রৈ: পাকপাত্রৈর্বা ক্লমা অল্লোঞ্ডাদিছিত্যর্থং সন্ত্রমাদের বা,অভিসক্ষরিত্যাদিনা তদেকাতি-মুখ্যং স্টিতং। টীকারাং ভক্ষাং চর্কাং চোরাং চ্বাং ইতি। পতিভিরিত্যাদিকং যথা নিকটং জ্রেয়ং। নিবিধ্যমানা ইতি ভবৈ দেরঞ্চেদরং প্রস্থাপাতাং স্বরন্ধ মা যাতেতি তাসাং গমনমের বর্জাতে ম্বেভার্থ:। প্রীভগরতা তদরশীকারাং॥ ১৪॥

যমুনেতি যুগাকং দদৃশুঃ ক্লফমিতি শেষঃ। ন ভিছতি শোকো যশাদিতি লেষেণ তস্য বনস্য তাসাং তদপ্রাপ্তিশোকহারিত্বঞ

, play

🕮 বিশ্বনাগচক্র বৃত্তী।

বিহবলয়ানাম্বরিত্যাহ বুভূকিতন্যেতি ॥ ১২ ॥

ু তস্য কথয়া বুভূকাবার্ত্তয়া আক্ষিপ্তানি অবে পাদর মনঃ কথং প্রিয়তমস্য বুভূকাশ্রবণেনাপি ন মূর্ছাতো জাগর্ষি ধিক্ তামিত্যেবং ক্ষিত্রস্কৃতানি স্বস্থমনাংসি যাভিত্তাঃ ॥ ১০ ॥

े छक्षात्रवात्र्यात्मक्ष्म्यत्वेष । সংশ্বারবিশেবৈর্বহবোগুণা রসদৌরভ্যানরো যদ্মিংস্তৎ। অভিসক্ষরিতি তাসাং তদানীং কৃষ্ণং আঁতি সর্বাসাং নারিকাছাতিমানমালক্ষ্যোক্ষং। তত্ত্ব প্রতিষ্ক্ষকাগণনে দৃষ্টাব্বঃ। সমুদ্রং নিম্নগা নদ্য ইব। তত্ত্ব হেতু:। ভগবতি দীর্ঘং বহুকালং শ্রুতেন প্রবণেন ধৃত আশরো যাভিস্তাঃ॥ ১৪ ১৫॥

চরগণ সহিত তাঁহার অত্যন্ত কুধা হইয়াছে, তাঁহার নিমিত্ত অন্প্রদান করুন ॥ ১২॥

রাজন্! বিপ্রপদ্মীদিণের চিত্ত কৃষ্ণকথাতেই আক্ষিপ্ত (আকৃষ্ট) ছিল, তাঁহারা নিত্যই কৃষ্ণদর্শনার্থ উৎস্থক থাকিজেন, 'ভিনি সমীপে আসিয়াছেন' এই কথা শুনিধামাত্র ব্যস্ত হইলেন॥ ১০॥

তৎক্ষণাথ বছ ২ পাত্রে বছত্তণমুক্ত আন এবং চর্ব্য, চ্ব্য, লেছ, পের এই চভূব্বিধ ভোজ্য গ্রহণ করিয়া বেমন ননীসকল বেগে সমৃত্রে গমন করে তবৎ শীত্র প্রিয় প্রীকৃষ্ণের অভিমূপে গমন করিলেন। ব্যাহাদের পঞ্জি পিতা, জাতা এবং পুলাদি সকলেই বারম্বার নিমারণ করিল, কিন্তু তাঁহারা কোন ব্যাহ্বী মানিবেন না, ইহার কারণ বছকাল অব্যি শুনিরা উত্তমান্ত ভগবানে বস চিত ধারণ

अवस्था मकरम मकत मिकरहे छेशनीछ इरेश राशिसम बहुनात दय छेशवन परणारकत नवश्रहरेव

শ্যামং হিরণ্যপরিধিং বনমাল্যবর্হধাতুপ্রবালনটবেশমসুব্রতাংসে ॥
বিন্যস্তহস্তমিতরেণ ধুনানমজ্ঞং কর্ণোৎপলালককপোলমুখাজহাসং ॥ ১৬॥
প্রায়ঃ শ্রুতঃ প্রিয়তমোদয়কর্ণপূর্বৈর্যিন্দ্রি নিম্যমনসন্তমধাক্ষিরদ্ধৈঃ॥

ञ्जीभत्रवामी ।

হিরণ্যবং পরিধিং পরিধানং যস্য তং পীতামর্মিতার্থ:। বনমাল্যৈব হৈ ধি তুভি: প্রবালৈণ্চ নটবংহশো যস্য তং অন্ত্রতস্য স্থারংদে বিস্তর্জ্ঞা নিহিতো হত্তো যেন তং। ইতরেণ হতেন শীলয়া অবং ধুনানং ভ্রাময়তং। কর্ণয়োরংপলে যস্য অলকাঃ ক্পোল্যো-র্যস্থাকে হাসো যস্য তঞ্চ তঞ্চ এ ১৬॥

বুত্তেরপি লয়েন সামরস্যাহ প্রায় ইতি বছণ: শ্রুতা বে প্রিরতমন্য উদরা উৎকর্ষান্ত এব কর্ণপুরা: কণৌ পুরম্বতি ক্লতাথৌ

বৈষ্ণবজোষণী।

ধ্বনিতং। বিচরস্তঃ ক্রীড়স্তঃ গোপৈস্তত্ত্বৈব স্থিতিরনৈয়র্ তমিতি শোভাবিশেষঃ স্থচিতঃ। কিলা বৃতমপি দদৃশুঃ তস্যৈবাধিকং প্রকাশনানত্বাৎ। সাগ্রজনিতি সর্ব্বস্থারতোহপি তস্য সৌন্ধ্যাবিশেষং জ্ঞাপয়তি জগ্রজনে সহেতি বিগ্রহে সহার্ধযোগে ভূতীয়ায়া অপ্রধানে বিহিত্তাৎ। স্ত্রিয় ইতি তৎপতীনামভাগ্যঃ স্থচিতঃ ॥ ১৫ ॥

হিরণ্যপরিধিং নটবেশমিতি বক্ষ্যমাণয়াং অ্বর্ণরসরঞ্জিতভক্তিচ্ছেদকুঞ্জিত কটিবেষ্টনবন্ত্রং নটোচিতমেব। বনমালাং বনসম্বন্ধান্য বন্যবিবিধপুলৈরচিতং। দক্ষিণবামস্করাদারভ্য বৈক্ষিক্ষয়ং বর্ধাণি প্রবালাশ্চ মৌলিভ্যণানি ধাতবং দৌগন্ধিকনামঃ কাম্যক্রনপর্বতবিশেষাল্লরাশ্চিত্রালতয়া রচিতাঃ তৈ ন টবেশধরং। অন্ত্রতস্য নিরস্তর পার্শস্থপবিশেষস্য ক্ষরে বিন্যতহত্তং। ইতরেণ দ্ফিণ্ছত্তেন লীলাক্ষনলং ভ্রাময়ন্তং। কর্ণোৎপল্যোর্লকানাং কপোল্যোর্শ্বাক্ষ্য চহাসঃ প্রকাশো যত্ত ত্যিতি ॥ ১৬॥

অথানস্তরং সদ্য এবাক্ষিরদ্ধৈ রপগ্রহণে সাধকতমনেত্রেরেছা ক্রিয়ৈছা রস্তুতৈরস্তর্যনসি প্রবেশ্ব তেনৈব মনসা স্থাচিরং পরিরভ্য কজ্জরা নেত্রাণি তানি হারাণীবার্ণানাঃ স্বাচ্চক্যেন তত্মিরিলীয়েত্যর্থ: । তাপং তদস্পর্শক্ষং ক্লেশং বিজত্ব: । বিশক্ষেন পুনস্তদাপাতো নিরস্তঃ ।

শ্ৰীবিশ্বনাপচক্রবন্তি।

হিরণ্যং হিরণ্যরসাক্তং বল্ধং পরিধানং ষস্য তং। বনমাল্যেন পঅপূব্দারের চরণপর্যান্তলন্থিতেন আহেণি চূড়োপরিছেন ধাতৃতিরঙ্গরাগ্রেন করিতে: প্রবাদ্য প্রবাদ্য তুল্বকা তর্তেছ ন চিস্যের বেলো যস্য। কিঞ্চ। আভিযোগনপি তা অভ্যাবরান মানেতাহ। অত্যতস্য প্রিয়সধস্যাংনে করে বিহার আলোধ পরিপাট্যা অপিতো বামহন্তো যেন তং। ইতরেণ দক্ষিণহন্তেন অবং লীলাক্ষলং ধুনানং খুর্ণযন্তং এতাদৃশ দর্শনপ্রদানন ভাববতীনাং ভবতীনাং হলরক্ষলং আহতগতং রুছা ওংক্রেন খুর্ণামীতি আনীতিতি দ্যোত্রস্তং। বহা। ভবতীতাবিবতীঃ পশ্যতো মন হাদ্যক্ষণনামীত হলেতাৰ খুর্ণতে ব্যান্তর্যান কর্ণোৎপল্যোশ্যক্ষণা অলকা যস্য। কপোল্রো: প্রস্তুত্তে মুখাজ্বস্য হাসো বস্য তঞ্চ তঞ্চ তথা ১৬॥

প্রামো বছণ: প্রতা যে প্রিয়তমস্য, উদয়া উৎকর্ষান্তএব কর্ণপূরা: কর্ণালক্ষারা: কর্ণো পূরয়ন্তি ক্তার্থয়ন্তীতি তথা তৈ ইন্মিন্ প্রাকৃষ্ণে নিনগ্রমনস্ এব এতাবন্ধিনপর্যান্তং আসন্। তং সম্প্রতি নেএছারেরতঃ অন্তক্ষনকমলতরে প্রবেশ্ব স্থাচিরং অন্তল্পেনের চূড়ং

মণ্ডিত, তথার অগ্রজ দহ জীকুক গোপগণে পরিবৃত হইরা ভ্রমণ করিতেছেন ॥ ১৫ ॥

তাঁহার শরীর শ্রাম বর্ণ, পরিধান শীতাম্বর, বনমালা, মর্রপিচ্ছ, মর্ণাদি ধাতু এবং প্রবাদ এই সকলে নটবৎ বেশ, তিনি অমুত্রতি স্থার ক্ষেত্রে একটা হস্তবিক্সন্ত করিয়া আছেন, সম্ভাততে দীলাক্ষ্ণ ঘুরাইতেছেন, কর্ণনাম উৎপল, কুপোলে অলকা এবং বদনক্ষলে মনোহর হাতা ॥ ১৬ ॥

হে নরেন্দ্র ! বহুবার প্রিয়তমের উৎকর্ষ থাবণে কৃতার্থীভূত থাবংশিক্রিয় তথা লোচনরজুবার। গেই সকল অবলার চিত্ত প্রিকৃষ্ণে আবিই হুইয়াছিল, তাঁহারা তলেবাগে ভগবানের অভ্যক্তর প্রিকৃ অন্তঃ প্রবেশ্য হাচিরং পরিরছা ভাপং প্রাক্তং যথাভিমত্তরা বিজন্থ নরেক্ত । ১৭॥
তাত্তথাত্যক্তসর্কাশাঃ প্রাঞ্জ আফুদিদৃক্ষা। বিজ্ঞান্নখিলদৃগ্দ্রকী প্রাছ গ্রহসিতাননঃ ॥১৮॥
ত্রিভগবাসুবাচ॥

স্বাগতং বো মহাভাগা আন্তভাং করবান কিং। বদো দিদুক্ষয়া প্রাপ্ত। উপপন্নমিদং হি বঃ ॥১৯॥

धीरत्यामी ।

কুর্বন্তীতি তথা তৈঃ কর্ণাভরণৈরিতি বা বিশ্বন্ শ্রীকৃষ্ণে নিমগ্রমনসঃ আবিষ্টচেতসঃ লোচনছারৈরত্তঃ প্রবেশ্য স্থচিরং উপগুত্ব তাশং জন্তঃ। অভিনত্তরোহতংর্ত্তরঃ প্রাক্তঃ সুষ্ঠিসান্ধিশং পরিপ্রত্য তদ্মিন্ লরং প্রাপ্য বথেতি ॥ ১৭ ॥

অধিবদৃক্ উটা দর্কবৃদ্ধিদাকী তাতথা প্রাপ্তা বিজ্ঞায়াপি তথেও্টেত দিবৃণোতি ত্যক্তদর্কাশাং ত্যক্তাঃ দ্র্কা আশা गাডিডাং। কেবলং আত্মনং স্বদ্যৈব দিদৃক্ষেতি ॥ ১৮ ॥

হে মহাভাগাঃ স্বাগতং গুভমাগমনং। তদেবাহ বন্ধরাৎ প্রতিবন্ধতিরভারেণ অস্মাকং দিদৃক্ষা প্রাপ্তা ইতি । ইদঞ্চ ব উপপন্ধং সম্পন্ধং যুক্তমিতি বা ৪ ১৯ ॥

देवक्षवरकावनी।

হা ন স্প্টোহনাবিত্যংশত ধ্বংদাৎ। অন্ত তৈ:। ভতা সামরতাং যথাপূর্ব্বরম্বনিতার্থ:। বৃত্তেরপীতি বহির্ভেরপীতার্থ:। যথা। অভি-প্রাক্তাহিতিমূপী মতি র্বেবাং তে যথা প্রাক্তং পরসভাগবতং পরিরভা নেত্রাদিভিরালিয় তাপং দর্বং জহতি তথং॥ ১৭॥

আন্মনিদৃক্ষরেতি প্রথমং তরাতাতিলাবাৎ অথিলদৃশাং দর্কবৃদ্ধীনাং দ্রন্তা সাক্ষীতি বিজ্ঞায়েত্যতা হেতৃঃ । যহা । অথিলদৃশাং বৃদ্ধাদি দ্রন্ত বাং জীবানামপি দ্রন্তা। প্রহৃদিতানন ইতি মাধুর্বামরবঞ্চনাচাত্র্বাং ॥ ১৮ ॥

তথৈব সাদরমাহ স্বাগ্রতমিতি। আন্ততাং বিশ্রাম্যতাং। ততক কিং করবামেতি আদিশ্রতামিত্যর্থঃ। তথাচ করবায়েতি নোহস্মাক-মিতি চ বছত্তনির্দেশঃ সাধারণ্যাপাদ্দেন স্বৈতনিষ্ঠতাচ্ছাদনার্থমোদাসীন্যার্থক দিদৃক্ষ্যেতি দর্শনাজ্ঞাত্মিচ্ছান্তরং নির্ভাতি ॥ ১৯ ॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবন্তী।

পরিরভা পরিরক্তদাতে টেক্বানন্দর্ভিত ভাতাত্তেন সইংক্যে সতি তাপং তদক্ষপর্শাভাবন্দনিতং ক্লেশং বিজহ:। তত্ত্ব দৃষ্টাতঃ। অভিমত-য়েংহংবৃত্তরঃ প্রাক্তং ক্ষুব্ধিসান্দিশং পরিরভা তদ্দিন্ সরং প্রাপ্য থপা ॥ ১৭ ॥

তাঞ্বাভূতা অনহালীঃ পুর:ছাপদিবৈব স্চ্ছিতা ভবস্তী দ্ ই। অথিবানামপি দৃশাং বৃদ্ধীনাং এটা ॥ ১৮ ॥

কাসাভিসারিশী শ্লেপিরিব মহাপ্রেমবভীতা অপ্যাহ স্থানতমিতি বং শুভ্যেবাগনদং। যং যক্ষাং প্রভিবদ্ধকোটীরপি তিরস্কৃত-বত্যো দিল্ক্রা নং প্রাপ্তা ইবং ব উপপরং উপপরতে দ্বৈবেতার্থঃ। মষতু এতং প্রত্যুপকরণাসামর্থাং ন কিমপি উপপরমিতি ভাবঃ। অভো ব; কিং কর্বাম কেবলং বণী তবামেতার্থঃ। অভএব সহাক্ষাগাঃ মন্তোহপি মহাভাগ্যবতাঃ আস্যতাং ক্রণমিহোপবিশ্যতাং মন্দর্শনার্থমেবেতার্থঃ ৫ ১৯ র

হওয়াতে চিক্নাল ভাঁহাকে আলিঙ্গন করিয়া তজ্ঞপে মনঃসন্তাপ পরিত্যাগ করিলেন, যেমন যোগি-গণ হুবুপ্তির দাক্ষি প্রাক্ত (চৈতন্য) ক্লে আলিঙ্গন করিয়া দন্তাপ ত্যাগ করিয়া থাকেন তজ্ঞপ ॥ ১৭॥

নে বাহা হউক, এই সকল অবলা আত্মনিদ্নার অথিল আশা পরিহার প্রঃসর আসিয়াছেন, বলিও সর্বান্ত্রামী ভগবান হরি ইহা অবগত হইলেন, তথাচ হাত্ত করিতে তাঁহাদের প্রতি এই বাক্য প্রায়োগ করিলেন ॥ ১৮॥

ভগৰান কহিলেন হে ভাগ্যবতীগণ! তোমাদের আগমন শুভ, যে হেছু কোন প্রতিবন্ধক না কানিয়া আমাদের দর্শনাকাজনায় উপস্থিত হইলে, ভোমাদের ইহা উচিত বটে ॥ ১৯ ॥ 880

নয়জা মরি কৃষ্ণতি কৃশলাং স্থাপদিশিং। তহৈতুকাবাৰহিতাং ভতিমাক্ষিয়ে বলা ॥ ২০॥ প্রাণবৃদ্ধিমনংস্থাত্মণারাপভাধনাদয়ঃ। ষৎসম্পর্কাৎ প্রিয়া আসংস্কৃতঃ কোসু পরঃ প্রিয়ঃ ॥২১॥ তালাত দেব্যজন পতয়ে। বো বিজাতয়ঃ। স্বসত্তঃ পার্মিয়ান্তি মুলাভিগৃহিমেধিনঃ॥ ২২ ॥

ख्येथद्रवामी।

যুক্তৰমাহ নবিতি। আশ্বিধিবে আত্মা চাসে প্রিয়ণ্ড তশ্বিন্ মির কুশলা বিবেকিনঃ অন্তএব স্বস্যাত্মনোহর্থং পণ্যস্তি যে তে বধাবভাগে কুর্ববি। যথাবভাগাহ। অন্ধ সালাং। অন্ধ হেতুং। অহৈতুক্যবাবহিতাং ফলাস্থ্যনানরহিতামতএবাব্যবহিতাং নিরভ্রাং ॥ ২০॥ আত্মনঃ সর্বাতঃ শ্রেষ্ঠভামাহ প্রাণেতি। ত্বাঃ জ্ঞাতর আত্মা দেহঃ এতে সর্ব্বে যংসম্পর্কাৎ যস্যাধ্যাদেন উপক্রণত্বেন বা ॥ ২১ ॥ ভত্তশ্বং স্কৃতার্থা যুবং যাত দেব্যজনং যজ্ঞবাটং গদ্ধত কৃতার্থাঃ কিমিতি যাস্যাম ইতি চেনত, আহ পত্র ইতি। পার্মির্যান্তি সমা-প্রিয়ান্তি পতীনামন্ত্রহায়েত্যর্থঃ ॥ ২২ ॥

देवकवरकावनी ।

ভত্ত ভাসাং নিজসক্তিপ্রাপ্তীছাং সম্প্রতি বঞ্চয়াই নহছেতি। অহা সাক্ষাদেব বিশুদ্ধামিত্যর্থ: । যতোহহৈতুকীত্যাদিনা। তত্ত ভক্তের্থা বছম্বং এবাই অহৈতুকীতি আন্ধন: সকাশাদিপি প্রিয়ে পরমান্ধ্রমে । পরমান্ধ্রমে চ মম নিরম্ভরমূম্বংসদিম্বার সর্বপ্রত্যক্ষ-সঙ্গায়াগ্রহং কর্ত্তব্য ইতি ভাবং ॥ ২০ ॥

পরমাত্মন এবাজ্মন: সকাশাৎ। প্রিরত্বং সাধ্যতি প্রাণেতি। আত্মাত্র জীব:। যস্য মম পরমাত্মন: সম্পর্কাৎ আত্মনোহপি মদংশত্তে-নৈব তথাতাদিতি ভাব:॥ ২১॥

ভাষাত দেববজনমিতি তু পাঠতেরা সক্ষতে শিক্ষাতে তথৈব পাঠধারণাং। তাৰাত সাধ্বোগ বজনমিতি তু পাঠঃ প্রারঃ সর্ক্রোপি। অসত্রং স্বীয়ত্বাং অবশ্যসমাপনীয়ং সত্রং যজ্ঞং পার্যায়তাত আরক্ষং সমাপ্যিবাত্তি। অপক্ষেন অন্যথা কথঞিং পরকীয়মেব কার্যিতু-মহত্তি নতাত্মন ইতার্থঃ। যতো গৃহমেধিনঃ যুগাভিবি না গাহত্যাভাবেন যজ্ঞাত্বপত্তেঃ অতএব ভদপেক্ষয়া দেবযজনং যাতেত্যুক্তং

अविश्वनाथहळ्कवे ।

পরমপ্রেমবতীনামপি তাসাং তদানীমের মনোরপপূর্ত্তি ন' রসপূষ্টিং বহতি রসপূষ্টা চ বিনা লীলাচমৎকরোত্যতো ভগবতন্তংপ্রেম-বশ্বসাপি ভদর্শনোথয়া রত্যা স্বাভিযোগং কতবতোহপি মনস্যক্ষাদের লীলাশকৈয়র ক্ষোরিতমৈশ্বয়ে ভাসাং শৃষ্থং প্রতি পরাবর্তনে কারণমভূৎ। যদ্যপি প্রায়: প্রেমবজ্ঞনসনিধাবৈশ্বয়াং নাবিভবিষ্ণু ভবেষদি লীলাসেটবার্থং বিরহেইৎক্ষাবর্জনয়া ভাসাং প্রেমবর্জনার্থকাবির্জবদের ভত্তগবতোরভ্যাখ্যং ভাবং শময়িছা বিবেকম্ৎপাদয়ামাসেত্যভো ভগবাংতদম্কুলমেবাহ নছিতি ছাভ্যাং। ন কেবলং ময়ি ভবতা এবাসজ্বে কিছ বহুবো হনোহপি ময়ি পরমেখরে ভক্তিং প্রীতিং কুর্মছি। কে ভে কুশলাক্ষ্মাঃ। চাত্র্যানিবাহ স্থাধদিনিঃ। লোকে হি স্বার্থসাধকা এব চতুরা উচ্যস্ত ইতি ভাবঃ। মহৈতৃকী স্বীয়ফলাভিসন্ধিরহিতা চ। স্বার্থহিতা প্রীতিব্যবধায়ক্ষানকর্মাদিবস্বত্ত্বস্থায়ক্ষানকর্মাদিবস্বত্ত্বস্থায়ন ক্ষাক্ষানকর্মাদিবস্বত্ত্বস্থামন চিতাং। তার দৃষ্টায়ঃ। স্বাত্তিরে দেহাপত্যাদে মধা ॥ ২০ ॥

বৃদ্ধিপ্রবেশার্থমের দৃষ্টারো দর্শিতঃ। বস্ততন্ত দৃষ্টাস্তান্দেহাদেং সকাশাদপি দার্টান্তিকঃ পরমাত্মাহমতি প্রির এবেতি যুক্ত্যা প্রবোধ-মৃতি। প্রাণেতি। বং দেহং আত্মা ক্রীবং যদ্য পরমাত্মনং সম্পর্কাৎ সম্বন্ধাৎ। ততঃ পরমাত্মতঃ ॥ ২১॥

ৰশ্বাৎ সচ প্রমান্ত্রী অহমেব যুৱাভির্গর্গদিম্থাৎ শ্রুত এব যুৱনশান্যালিব্য সদাবর্ত এব। তত্ত্বাৎ দেববজনং বজাবটিং বার্ত। নাম জন্ত্রী সাক্ষায় ব্রং প্রমান্ত্রানং বাং হিন্তা কথাং গৃহং বামজ্জাই পতর ইতি। পারবিয়াতি বুয়াতিঃ সহৈব সমাগরিব্যক্তি। স্ত্রান্তি কর্মান্ত্রি বের্ল্লপেন মরেবোক্তমিভি মংকার্যান্ত্রেবিয়নের বাস্ত্র। শ্রুক্তির ফুরন্তং মুর্তং মাং জন্ত্রাক্তি তানঃ ॥ ২২ ॥

যে সকল ব্যক্তি বিবেকী, বিচৰক ভাষা জীপনাৰ অৰ্থ দেবেন, উছোৱা প্ৰিয় আছা যে আদি আমাতে সাজাই ফলাসুসমান বহিত নিৰ্ভাৱ অঞ্চি ক্ৰিয়া পাকেন। ২০ %

ে হে অবলাগণ। আত্মাই সৰ্বাপেকা (এই বিয়। ফলতঃ বীহার সম্পর্কে ব্লাগ, বৃদ্ধি কবং, কেই, পুত্র, কলতা, জাতি, ধন ইত্যাদি প্রিয় হইয়া থাকে, উহার অপেকা প্রিয় আর কে ইইটে পাঁইে ছবঃ অতএব তোমদা রভার্থ ইউলে একাণ সমাজানে গাম কর গাদিত কোলালেক আছি ক্রিয়া বিশি পত্ন্য উচুঃ॥

মৈবং বিভোহর্ছতি ভবান্ গদিছুং নৃশংসং সত্যং ক্রুম্ব নিগমং তব পাদম্লং॥ প্রাপ্তা বয়ং তুলসীদাম পদাবস্ফং কেশৈ নিবোদুমভিলজ্যা সমস্তবন্ধুন্॥ ২৩॥

भिषद्रवागी।

নৃশংসং পরুষং নিগমং প্রতিজ্ঞাং ন মে ভক্তঃ প্রণশাতীতি বেদং বা ন স পুনরাবর্তত ইতি পদাবস্টাং অবজ্ঞয়াপি দক্তং বছমানেন কেশৈনি বোঢ়াং দাসীভবিত্থ ॥ ২৩ ॥

বৈষ্ণবতোষণী।

নচ গৃহানিতি। অতঃ শ্রীভগবদাঞ্জয়া এব তাসাং বহিমুখিপতিপার্শ্বেগমনং। তথা তদাজ্ঞা চ সর্বাহ্তদারালাং সম্বন্ধেনাত্তিরক্ষ্-আচেতি জ্ঞেমং॥ २२॥

এবনীদৃশং বিভো হে বহিরম্বর্গাপকেতি অস্নাকং বাহ্নান্তরং চ সর্বং হ্মেব বেংসীতি ভাবং। ভবানিতান্যা বদত্ নাম ক্বপাকোমলচিত্তো ভবাংস্ত বক্তুমপি ন যোগ্যো ভবতীতার্থং। যতো নৃশংসং ক্রুরং। যথা। রসার্থবক্তক্রোভবান্ নৃশংসং করিং নীরসং বক্তুং
নাইতীতার্থং। নচ কেবল্যেবং তব বচসো নৃশংসতা মিথ্যাত্বমপি তাদিতাাশরেনাহং সত্যমিতি করবাম কিমিত্যেব বা নিগমো জ্বেয়ঃ।
প্রাক্ ভবানিতি ভক্তান্ত্নায়র্থং পশ্চাং কুরুষ অমিতি প্রেয়েতি ক্রেয়ং। অত্র ভাভিভগবতো আন্ধানতিক্রমরূপা নিগমমর্যাদাত্যুৎকর্ত্বরা
নাবহিতেতি জ্বেয়ং। নয় মদর্থং কথমিব কুট্রানি তাল্পান্তে তত্তাভ্রভিল্ডেঘাতি তত্তু ক্রাতমিতি ভাবং। নয় আন্ধানীনাং যুয়াকং
পত্যাদি পরিত্যাগো নযুক্ত ইত্যাহং প্রাপ্তা ইতি অত্যন্ত তির্ন্ত্রন্তবাচ্যান্তনিরয়ং বাচ্যার্থং পরিত্যক্সা বালার্থমেব বোধ্যতি তত্নচ
সর্বাং ত্যক্ত্বা দাত্তমেবালীকৃতবত্য ইত্যর্থং। তত্র তুল্গীদায়ং পদাবস্তর্ত্বং তিমিন্তর্য্যং নিশ্চিত্য সর্বাধর্মান্ পরিত্যক্সা ইত্যেত্বিধতহাক্য রীত্যা স্থানারং প্রত্যাধ্যাতঃ ॥ ২০ ॥

ত্রীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

রাদারত্তে মহাপ্রেমবজ্যা গোপ্য ইবাছ:। মৈব্মিতি নৃশংসং পরুষং। নিগমং ন স পুনরাবর্ত ইতি বেদবাক্যং। যে যথা মাং প্রপান্ত ভাংগুথৈব ভলাম্ছমিতি নিগমরূপং স্ববাক্যঞ্চ সত্যং কুরুর। নহু ভবতীভি বিপ্রিলাতাভিমানো ছ্ন্তালন্ত গোপ্যাপি পাদমূলং বয়ং দাসার্থং প্রাপ্তাঃ। ন ছি বিপ্রলাতাভিমানে সভ্যেবং কোহপি লনে। বকুং শর্লোতাভে ইম্বাক্টেনব নিশ্চীয়ভাং নান্ত্যাকাং লাত্যভিমান ইতি ভাবঃ। নহু গোপ্সা মম গোপ্য এব দাসাঃ প্রেয়স্যুশ্চ সম্চিতা ভবন্তি তাশ্চ বহেয়ান্বিজ্ঞেনাং। সভ্যং বর্ত্ত বাং বিরাল্ডাং নাম যদি স্বং বাহ্মনীদানীঃ কর্তুং বর্ত্তা লিছে বিত্তি ক্থং স্বাং হেপেরাম্বংপুরং নৈব যামো বৃন্দাবন এব বনদেবতা ইব বর্ত্তিবামহে স্বংসম্বন্ধনৈব কুতার্থাভিবিদ্ধবো বয়মিত্যান্তঃ। বয়য় দ্রে স্থিয় পদাবস্ত প্রপদাৎ স্বদান্তি প্রেমনীনাং পদসংসর্গান্ধ জাটিতীভূয় স্বস্ত গর্মান্ত গ্রেমান্ত ভবিত ভবিঃ। নহু তহি ভবন্ধবঃ কিং বদিষ্যন্তি ভবাহঃ। স্বভিন্ত ত্বাহঃ। স্বভিন্ত ত্বাহঃ। স্বভিন্ত ত্বাহঃ। স্বভিন্ত ত্বাহঃ। স্বভিন্ত ত্বাহঃ। স্বভিন্ত । ২০॥

যজ্ঞ আবশ্যক নাই তথাচ তোমাদের পতি বিপ্রগণ তোমাদের দারা গুহমেধী হইয়া আপন ২ সত্র সমাপন করিবেন ॥ ২২ ॥

এতৎ শ্রবণে বিপ্রপদ্ধীগণ বলিতে লাগিলেন বিভো! অর্থাৎ হে বহিরন্তর্ব্যাপক। এরপ পরুষ বচন বলিতে যোগ্য হয়েন না "আমার ভক্ত কখনই বিন্ট হইবে না" আপনিই প্রতিজ্ঞা করিয়া-ছেন, সেই প্রতিজ্ঞা সত্য করুন। আমরা সমুদয় বদ্ধ বাদ্ধব বিসর্জ্ঞন করিয়া অবজ্ঞাতেও প্রদত্ত আপন-কার চরণতলের তুলসীদাম স্থন্ন মন্তক্ষারা বহুমানপূর্বকে বহন করিবার নিম্ভি ভবদীয় পাদমূলে উপস্থিত হইয়াছি॥ ২০॥ গৃহুন্তি নো ন পতয়ঃ পিতরে স্থতা বা ন ভাত্বন্ধ্স্ছদ: কৃত এব চান্যে।

ক্সান্তবংপ্রপদয়োঃ পতিতাত্মনাং নো নান্যা ভবেদগতিররিক্সম তিবিধেছি॥ ২৪॥

শীভগবানুবাচ॥

পতয়ো নাভ্যসূমেরন্ পিতৃভাতৃত্বতাদয়ঃ। লোকাশ্চ বো ময়োপেতা দেবা অপ্যমুমশ্বতে ॥২৫॥

बीधतयामी।

কিঞ্চ ন গৃহত্তি নোহমান্ হে অরিবলম কামলোডপাপাদিদমন ভবতঃ প্রপদয়োঃ পাদাগ্রহাে নি পতিতদেহানাং অন্যা ক্র্পাদি-গতিরপি ন তাবং মাভূৎ তমাত্তদাস্যমেৰ বিধেহীতি॥ ২৪ ॥

ময়া উপেত। অহজাতা: প্রত্যক্ষং দেবান প্রদর্ভাহ দেবা অপীতি ॥ ২৫ ॥

বৈষ্ণ বজোষণী।

নমু সাধবোঁ দীনবংসলা ইতি তেষাং হিতার্থং যাত। যথা। মদাজাতোহকুতামপি কর্তু মুপ্যুক্তাতে তত্তাত্ গুরুত্তীতি। নিজনিষেধোল আনাৎ তত্ত গতান্ অপ্যামান্ তত্ত্ব ন স্বীক্রিষান্তীত্যর্থ:। অত্যে তু প্রতিবৈশ্রাদয়ং সম্ভাষামপি ন ক্রিষ্যন্তীত্যর্থ:। তম্মাৎ পত্যাদি-ভিরত্রহণাৎ প্রপদ্যোঃ পাদাগ্রসমীপে পতিতাম্মনামনজগতিত্বন তদেকাপ্রিতানামিত্যর্থ: ॥ ২৪ ॥

বো যুঘান্ ইতি যুঘভামিতার্থ:। নাভাস্যেরন্ দোষদৃষ্টিমপি ন কুর্যু: কথং ন গৃহ্লীয়ুরিতার্থ:। অন্তে সর্বে লোকাশ্চ নাভাস্যেরন্ কিমৃত স্নিয়া তেথপীতার্থ:। কীদৃশীর্ম য়া উপেতা: অহজাতা: মমাফ্জাপ্রভাবেণৈবেতি ভাব:। অস্তবি:। তত্তাফ্জাতা ইতি সলে ভগবিতারিকার স্বীকারাৎ তাদৃশভৈব চার্থভ যুক্তে:। প্রত্যক্ষিতি সন্তাবনাময়প্রকৃতি লিঙ্পরিত্যাগেন বর্ত্তমন্নময়লট্প্রেয়াগাৎ প্রত্যক্ষিবিত্যর্থ:। যথা। ময়া সহ উপেতা: সমীপং সঙ্গতা বো যুঘান্ পত্যাদয়েরা নাভ্যস্যেরন্। অহমীশ্বর ইতি তৈরপি জ্ঞান্তমানহাৎ ইতি ভাব: । যতো যজ্ঞকর্থনি তৈ: প্রত্যক্ষিকৃতা দেবা অপি অনুমন্তে স্পৃষ্টা: সন্তো মামীশ্বরত্বন মন্তন্ত ইত্যর্থ:॥ ২৫॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

ময়া উপেতা **অহুজাতা: সঙ্গ**তা বা বো যুখান্ অহ্মীখর ইতি তৈরপি জাতবাদিতি ভাব:। যথা যজকেশ্নণি তৈ: প্রত্যক্ষীকৃতা দিবা অপি অহুমন্বতে। পৃ**টা: সভো মামীখর্জেন মন্যন্ত ইত্যর্থ:॥ ২৫**॥

এ বিশ্বনাথচক্রবর্তী।

কিঞা। খনগরস্থালিকতাষ্ লিকাদিবনিতাজনম্থালাকর্ণিত জ্জ্রপগুণমাধ্র্যা যদবধি বন্ধ: বন্ধ:সদ্ধিমারতৈয়বাভূম তদিনত এব জ্যি ভাববতী গৃহিক্ষণাপ্যদাসীনা জ্যান্ ব্যভিচারিণীবিব দৃষ্ট্রা সন্দিহানা: পত্যাদেয়ে। নৈব প্রায়োব্যবহরস্ভীত্যাহ:। গৃহস্ভীতি স্থতা: সপদ্ধীপ্তা: অন্যে প্রতিবেশ্যাদয়:। ততল্চাতিবৈয়গ্রোণ ক্লত্য: প্লাগ্রে মৃষ্ট্রা প্রথমস্তঃ: সগলাদমাহস্তমাদিতি। জ্ব্যাকং অন্যাগতি ব্যান ভবেত্তথা বিধেহি। হে অরিকাম স্থপ্রাপ্তিপ্রভিবন্ধকীভূতা ত্রিভাদর এবারয়স্তান্ স্থমব ক্লপ্রা দময় ॥ ২৪ ॥

ময়ি প্রেমবত্যো যুষং মংক্ষপরা এবাতো মদনভিপ্রেতং চেষ্টিতং নার্হণ স্বহঠং মারুত্বং গৃহান্ গছতেত্যুকে ভো অভিজ্ঞানিরোন মণে অহর্যালপ্র্যা: কুলবত্যোবয়ং বচনোল্লখনাং যাংস্থীর তা প্রাছহিত্ব এতাবদ্ধে স্থিত্যা লম্পট্ডেন ব্রম্পে থাত্যা ভবতঃ সমীপ-মাগছাম: স্ব প্রত্তৈব গছত্তীরস্বাংত্তে পত্যাদর: প্রেষু প্রবেষ্ট্ ম্পাদদানাঃ কোপাদদা বধিষ্যস্ত্যেবেতি জানীমন্তবাহ পত্য ইতি। বো যুমতাং নাত্য স্থেরন্ দোষদৃষ্টিনপি ন কুর্তা: কিমিত্যনিষ্টং শহুধের ইতি ভাবঃ। কিমৃত পিত্রাদয়ঃ অভ্যে চ লোকাঃ কীদৃশীম্বা সহ উপেতাঃ সক্তা অপি কিমৃত সম্প্রতাসক্তা এবেত্যর্থঃ। অহমীশ্ব ইতি তৈরপি জ্ঞাত্যাদিতি ভাবঃ। যতো দেবা অপি

অপর একণে আমাদের পতিগণ অথবা পিতা মাতা কিম্বা পুত্র অথবা ত্রাত্ বন্ধু হুছালগণ আমাদিগকে এহণ করিবে না। হে অরিন্দম (কামক্রোধাদিদমনকারিন্!) আপনকার চরণাঙ্গ্রে পতিভ হুইলাম আমাদের অন্ত গতি নাই, অতএব দাস্তই বিধান করুন । ২৪॥

ভগবান্ কহিলেন তোমাদের পতিগণ অথবা পিতৃ ভাতৃ পু্জাদি তোমাদের প্রতি দোষারোপ করিবে না, আর আমার অনুজ্ঞায় লোক সকলও কিছু বলিবে না। এই বলিয়া প্রত্যক্ষে দেবতা দিগকে দেখাইয়া দিয়া বলিলেন ঐ দেখ দেবতারাও অনুমতি করিতেছেন॥ ২৫॥ নথীতারে হমুরাপায় ছঙ্গদঙ্গো নৃণামিছ। তমানো ময়ি যুঞ্জানা অচিরাম্মামবাপ্স্থ। আবণাদর্শনাদ্যানাম্মারি ভাবোহমুকীর্ত্তনাৎ। ন তথা সন্নিকর্বেণ প্রতিয়াত ততো গৃহান্॥ ২৬॥ প্রীশুক উবাচ॥

ইত্যুক্তা বিজপত্মন্তা যজ্ঞবাটং পুনর্গতাঃ। তে চানসূয়বস্তাভিঃ স্ত্রীভিঃ সত্রমপারয়ন্ ॥ ২৭ ॥

<u> এ</u>ধরবামী

তথাপি স্বাং ত্যক্র ন শকুন ইতি চেক্তরাহ নেতি। প্রীতরে স্থার অহ্রাগার বেহর্ছবে অঙ্গস্ক: অঙ্গাভ্যাং সঙ্গ: ॥ ২৬ ॥ অনস্যবং অদোষদৃষ্টর: ॥ ২৭ ॥

বৈষ্ণবভোষণী।

নৰত্বং প্ৰাৰ্থিতিয়া কা বাৰ্বেত্যালয় সমাধতে ইহ আক্ষণজন্মনি যুম্মতিম মালসংলা যুম্ম্ছ দিষ্ট দাস্যময় সান্নিধ্যং। নৃণাং জীবমাজাণাং প্ৰীত্তয়ে স্থানাজ্য ন ভবেৎ নিতরায় সুরাগায়েতার্থ:। ততত্বাং লোকবিদ্বিষ্ট্র থে যি নিজভাবেন মন এব যুজানাঃ অচিরাদ্দেহান্ত- এবেতি। অত্যেদন্ত বিবেক্তবাং। শ্রীক্রঞ্চয় ভক্তাঃ থকু দিবিধাঃ। ততত্বাঃ লীলান্তঃপাতিনক্ত। অত্য তটন্তাঃ পরোক্ষ্যাপি তথ্য পার্থমন্ত্র বিধান কর্মালন্তাইবিধান্ত তংগ্রতিমান্ত্রকতরাং কেনমানা জানস্তো বা অজ্ঞানস্তো বা চ তে আক্ষণাল্যান্তে চরণদেবাচরণোদকগ্রহণাদিনিজ্ঞতিক্ পরোক্ষ্যমুমানত্ত । লীলান্তঃপাতিনক্ত দিবিধাঃ। তত্ত প্রথমান্ত্র পার্থমন্ত্রমান্ত লাল্যান্তন পার্থমন্ত্রমান্ত পার্থমন্ত্রমান্ত্র পার্থমন্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত

তাতিঃ খ্রীভগবদহগৃহীতাভিরিতি সত্রস্য শ্রীভগবছপেক্ষয়া দোবং পরিষ্তঃ সাদ্যুণাবিশেষকাভিপ্রেতঃ। স্বাভিরিতি পাঠে নিজ-নিজাভিঃ ॥ ২৭॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

নম্ তহ'ল্পদোহণি ভবতু তত্তাহ। অহো বাদ্ধণজন্মনি ভবতীনাং ময়ালসকে মৃণাং প্রীতয়ে সুথায় ন ভবতি অমুরাগায় তু স্বভরাং নেত্যর্থ: ॥ ২৬ ॥ ২৭ ॥

প্ৰীবিশ্বনাগচক্ৰবৰ্তী।

যজ্ঞকর্মানি তৈঃ প্রত্যক্ষীকৃতা অত্রার্থে পৃষ্টা ভবতীরত্মনতে অত্যংস্যস্ত এব। মাং সর্কেশ্বরং। বিহুষাং দেবানামপ্যত্রার্থে অত্মতি-বেব কত্বনত্মতিরিত্যর্থঃ ॥ ২৫ ॥

অস্মানোবান্থিতং কদাপি দেংভতি ন বেতি সাকৈরপালৈর্থং পৃদ্ধে তত্ত্বান্তরং পৃণ্ডেত্যাহ নেতি। প্রীদ্বরে প্রীতিং সম্পাদ্যিতৃং অনুবাগঞ্চ সম্বন্ধয়িতৃমিত্যর্থ:। কিন্তু মন্বিহৌৎকণ্ঠামেবান্থ্রাগাতিশয়বর্জকমিতি ভাব:। তত্ত্বাং ॥ ২৬॥

ইত্যক্তান্তা: ক্লম্যাভিপ্ৰায়ং জ্ঞাদ্বৈৰ গতা রাসারস্তে গোণ্যন্ত তদভিপ্ৰায়ং জ্ঞাবৈৰ স্থিতা ইতি প্ৰেমি ন কাপি কাপি হানিরিতি জ্ঞান্ত ॥ ২৭॥ .

হে অবলাগণ! কেবল অঙ্গ সঙ্গ মানব সজ্যের হৃথ অথবা অনুরাগ বৃদ্ধির নিমিত হয় না, আমাতে মনোনিবেশ করিতে থাক, অচিরে আমাকে প্রাপ্ত হইবা। দেখ, জাবণ, দর্শন অথবা অনুকীর্তনে আমাতে যজ্ঞপ ভাব জ্বামিতে পারে, নিকটে থাকিলে তজ্ঞপ হয় না, অতএব বলি তোমরা নিজ নিজ ভবনের প্রতি গমন কর । ২৬॥

শুক্রদেব কহিলেন, সেই সকল বিপ্রবনিতা এই প্রকার কথিতা হইয়া পুনরায় যজ্ঞহলে গমন করিলেন। সেই বিপ্রগণও দোষ দৃষ্টি না করিয়া সেই সকল যোষার (জ্ঞীর) সহিত সত্তকর্ম (ষ্ঠ্রীয় কার্য্য) সমাপন করিলেন। ২৭॥

তবৈকা বিধ্বা ভত্ত্র ভগবন্তং যথাঞাতং। ছদোপগুছ বিজহোঁ দেহং কর্মাসুবন্ধনং। ভগবানপি গোবিন্দস্তেনৈবামেন গোপকান্। চতুর্বিধেনাশয়িত্বা স্বয়ঞ্চ বুভুজে প্রভুঃ ॥ ২৮॥

टी शतकामी

দেহমিতি তদীয়ং দেহং বিহায় চৈতনেয়ন ভগৰস্তং প্রাপ্তা ইত্যর্থ: ॥ ২৮ ॥

বৈষ্ণবভোষণী।

অচিরানামবাপ্যথেত্যক:। তচ্চ কেবলং নাখাসনাথ্যৈ কিন্তু বাদ্মদীকারায় ইতি দৃষ্টান্তেনাই তত্ত্তে । তত্ত্ব যজ্ঞবাটে একা সর্বাসামতিপশ্চাংছিতা বিশেষেণ বলাক্ তা ভগবন্ধমিতি সর্বাতিশয়ি গুণক্ষপাদিকং হাছিত:। যথাক্রজমিতি তত্ত্বাপি শ্রীক্ষক্ষপ:। হুদা প্রেমময় সন্ধ্রসিদ্ধেন দেহান্তরেশেপ গুল্ ভ্যার্ত্তরা সন্ধাচপরিত্যাগেন শরণাগতাং মাং রক্ষ রক্ষ ইতি গৃহীন্ত্ত্যেই:। তস্য চ দেহস্য ভগবংপ্রেমময়ত্বেন ভগবংসদ্ধি নিদ্ধেলদ্বগামিতাং সিদ্ধেমপি। ততঃ কর্মান্ত্বন্ধনমেব দেহং জহাবিতি সবিশেষণোক্তেন তৃত্বালিদ্দন্দাধনং প্রেমান্ত্বন্ধনমপীত্যাই:। বিশক্ষঃ প্ররার্ত্তিং নিষ্ধেষ্তি। অতঃ পতিসন্ধ্রনং দেহং পত্য এব দন্ধা বা শ্রীভগবংপ্রেমসিন্ধেন তং প্রাপ্তমিতি বিব্যাহতঃ। যং যং চাপি ক্ষুণ্য ভাবমিত্যাদেং যে যথা মাং প্রপদ্যন্তে ইত্যাদেশ্চ শ্রীগীতাতঃ। প্রাপ্তিশেষং শ্রীগোলোকাথ্যগোক্লসৈন্য প্রকাশবিশেষে জ্রেমা। প্রকাশেকি নির্মিত্যাৎ অঞ্চে চ নির্পন্ধিত্যত্তি ॥

ইখং তাসাং ভক্তিবিশেষো ব্যঞ্জিতঃ তাহ শীভগবদম্গ্রহবিশেষণাহ ভগবানিতি তত্ত্বৈবং রুজং জাতং শীভগবানপ্যেব্যক্ষেরাদিতাপি শক্ষার্থঃ। গোবিল্ফঃ শ্রীগোকুলেক্স ইতি গোপপালনে যুক্ততা। তেনৈবেতি গোপাপেক্ষমান্নসান্নত্তং বোধ্যতে তথাপি পূর্ত্তেং তুর্ভগবান্ সর্ক্ষপপাত্তাশ্রঃ গোপকানিতি.তদ্মক ম্পিতত্ত্বং বোধ্যতি তের্ শীরামোহপি গৃহীতঃ তেছিব তামিনপি তদাগ্রহসম্ভবাৎ। যতঃ প্রভ্বত্তেছে ইত্যর্থঃ। স্বয়ঞ্চ তান্ প্রতি পরিবেষ্য স্বয়মপীতি তাহে তাদৃশপ্রসাদে শীম্নীক্রস্য চমৎকারঃ। অত্রাপ্যর্থে হেতুঃ প্রভ্বনির্গলাহ্রগ্রহ ইত্যর্থঃ। ২৮॥

ক্রমসন্দর্ভ:

যথাক্রতং তাদৃশ্যের তং প্রাষ্থ্যতার্থ:। তচ্চাপ্রকটলীলায়ামেবেতি জ্ঞেয়ং॥ ২৮॥

🕮 বিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

তত্র যজ্ঞবাটে এক। সর্বাসায়তি পশ্চাংশ্রিতা। অতএব বিশেষেণ বলাং ধৃতা কর্মান্ত্বন্ধন্যৰ দেহং জহৌ নতু প্রেমান্ত্বন্ধনং দেহং তদানীমেব মহাবিরহেং কণ্ঠাং প্রবন্ধননার্থেনোডাবিতং ভগবত। ক্রিপ্রাপ্তেনোপপূহিতঞ্চ তন্মাৎ তেন দেহেন চিন্ময়েন সর্বজনালক্ষিতেন যুক্তা সতী সাশীঘ্রমেব ততঃ স্থানাদভিস্তা প্রীভগবস্তং প্রাপেতি। কর্মান্ত্বনমিতি পদস্ত বৈয়্থ্যাদেবং ব্যাখ্যাতং। কিঞ্চ। মমতাম্পানি পত্যাদীং স্তাক্তে কিং চিত্রং অহন্তাম্পাণং দেহমপি তাক্ত্বা কাচিং স্বং প্রিয়ং ক্ষণমভিসসারেতি প্রেয়: প্রভাবজ্ঞাপনার্থং ভগবৎক্রপা তানেকামভিসারসময়ে কর্মান্ত্বন্ধং দেহং ত্যাজ্যিবৈর প্রেমান্ত্বন্ধং চিন্ময়দেহং প্রাহ্মানাস। তদাজাসাং সর্বাসাং ভূক্মান্ত্বনানেব দেহান্ স্পর্নমান্ত্রন প্রেমান্ত্বনাংশিলেম্বানেব চকারেতি তদ্দিনত্তাসাং ন স্বস্থ পত্যান্ধেই ইতি কিমশক্যং ভগবংক্রপায়া:। ত্র্যামেকাংশেনোংকর্মন্ত নাংশেনোংকর্ম ইতি তাসাং তার্তম্যং তু ভক্তিশাস্ত্রেমনিণী তত্বান্ধ শক্তে বক্তুং। স্বাসামেব তাসাং ভগবংক্রপাসিদ্ধমেব। যত্তকং। ক্রপাসিদ্ধা যজ্ঞপত্নীবৈরোচনি শুকাদ্য ইতি ॥

ভগবানপীত্যপিকারাৎ সা দেহং জহে ভগবানপি গোবিদ্ধা তস্যা গাং সর্বেজিয়াণি রনণার্থমলক্ষিতং তদৈব বিদ্ধৃতি মেত্যর্থে ব্যাথ্যেয়। তত্তত তেনৈবেত্যের কারেণ গোণাপেক্ষয়া অলস্যালত্বং বোধিতং। প্রভূরিতি তদপি তেনৈব সর্বেষামুদরাণি পুরমান্দরত্বং। গোপকানিত্যস্কম্পায়াং কণ্ চকারেণ স্বয়ং ভোক মনিচ্ছয়পি বৃত্ত ইতি লভাতে। অনিচ্ছা চ প্রেমবতীনাং তাসাং ক্রতেন সক্লভস্কেন পশ্চাত্তাপোদয়াং ॥ বৈচা

সেখানে একটা অবলা স্থানিকর্তৃক ধৃতা হইয়া গৃহে অবরুদ্ধা হইয়াছিলেন, অতএব তিনি ষেপ্রকার প্রবাণ করিয়াছিলেন ধ্যানযোগে সেই প্রকারে আপনার হৃদয়ে ভগবান্কে আলিঙ্গন করিয়া কর্মানুব্ধি কলেবর পরিত্যাগ করিলেন, অর্থাৎ চৈতক্ত দারা ভগবানে সঙ্গতা হইলেন। সে যাহা হউক, বিপ্রবাণ প্রতিনির্ভ হইলে পর জ্রিক্ষ ভাহাদের আনীত সেই চতুর্বিধ অন্ধ দারা সকল গোপালকে ভোজন করাইলেন এবং আপনিও আহার করিলেন॥ ২৮॥

এবং লীলানরবপু স্বোকষমুশীলয়ন্। বেষে গোগোপগোপীনাং রময়ন্ রপবাক্ততৈঃ॥ ২৯॥
অথামুশ্বতা তে বিশ্রা অবতপান্ কৃতাগদঃ। যবিশেষরয়ো বাচ্ঞামহন্ম নৃবিভ্রয়োঃ॥ ৩০॥

व्यवस्थामी।

আমুনীলরন্ আমুকুর্বন্। গোগোপগোপীনামিতি কর্মণি যজ। রূপবাক্রুতৈরপেণ বাচা রুতি করিতে: রমরন্তা রমরিকুং রেমে ইত্যর্থ: ॥ ২৯ ॥

অনুস্থতিপ্রকারনাহ নরাসুকরণবতোবি⁹বেশবরেরার্যাক্ষাং বতোৎহল্ম হতব**ত্তঃ তৎকুতা**গদো বর্ষিতাসুস্থত্যেতি ৪ ৩০ ৪

বৈক্ষৰভোষণী।

এতচ্চ যজ্ঞপদ্মসূত্রহাদিকং তস্যাধিবং চেষ্টিতং সৌন্দর্যাদিকঞ্চ প্রীএজজনপ্রমোদনারৈবেত্যুপসংহর্তি এবমিতি অনেনেদৃশং। বহুলং শীলান্তরমপ্যন্তীতি স্চিতং শীলাময়নরাকারবপুরস্পীলয়ন্ অস্পিক্ষন্ মহ্ব্যলোকে নিজতক্তিং প্রাথঠয়য়িত্যর্থ:। যহা নৃলোকং তৃত্বাবহারং অহ্পীলয়ন্ স্লাচর্ত্রিত্যর্থ:॥ ২৯ ॥

পতরো নাভ্যস্ত্রেরন্ ইত্যাদিনা লক্ষতাদৃক্ভগবং প্রসাদানাং পদ্শীনাং সক্ষেতাবেণ তংগতীনামশি সৰু ক্ষিতাতেতি তাসাং ৰাহাদ্বামেব দশ্বিত্যাহ অংশত্যাদিনা বাবংসমান্তি। অথ তং প্রয়েটনাকরং তে ছর ডিমানগ্রতা অশি অবত্যান্। নমু বিশেষররোর্যাক্তা কথং সম্ভবেত্তাছ নুবিড্বয়োলোঁ কিকলীলাং বিভাররতোরিত্যর্থ:। যহা। নুনন্মান্তত্তি ইতি
তথা তরোঃ। অন্মহাচ্যে প্রয়োগভ্যানীমশি ত্রভিমানগন্ধানুর্ভে ল'জ্যাতো বা ॥ ৩০ ॥

क्रममन्द्रः।

এবং তস্য সর্কমণি শ্রীগোকুলসৌধ্যায়ৈবেত্যাহ এবমিতি। অথেতি। পতরো নাভ্যস্বেরন্নিত্যাদিনা লক্ষণবংশ্বসদেনাল্পরবং জ্বেরণ ক্রেরং॥ ২৯॥ ৩৯॥ ৩১॥ ৩১॥ ৩৪॥ ৩৫॥ ৩৭॥ ৩৭॥ ৩৭॥ ৩১॥ ৩৫॥ ৩৫॥ ৩৭॥ ৩৭॥

श्रीविश्रमाथहळावर्थी।

এবং ব্যক্তিকপত্নী ম' রমরামান পোপপত্নীস্ত রম্যামানেত্যাহ এবমিতি। নীলামরনরবপুরিতি সর্কান্ত্যাহণি স্তাসকরতানিশক্তিভ্যো নীলাশক্তেরভাহি তিরাধান্ত্রমন্ত নীলাসোঁচবাভাব এব হেডুরিতি ভাবঃ। অধুনীলয়ন্ অধুসরন্ গোগোপগোপীনামিতি কর্মনি বৃত্তী। বংসলা গোপীনামপ্রামলিকর্বাধসামরিক্বাচ্চ গোপোহত্ত মুবতর এব নভাভে। রূপেন বাচা কুতৈশেটিভৈন্ত রমরন্ রেমে ইতি রানাং পূর্বং ত্রভ্রেবীভিঃ সহ ন রমণমিতি মতং পরাত্তমিভোবিধা বহেলা হলা অণি ত্রলনীলা ম্যানুকা বর্ততে ইতি
ভাবঃ ॥ ২০ ॥

অধানুষ্ত্যেতি তেবামনুষ্বৰনিৰ্ফোদিকং তাসাং দৰ্শনভাগ্যাদিতি জেবং। তেবামনুতাপপ্ৰকারমাহ যদ্যমাহিৰেখববোরপি বাজ্ঞাং অহল হতৰতো বৰং তক্ষাৎ ভুতাগ্ৰো হতুমঃ। কীল্শব্যো: নূন্ অম্পান্ বিভ্যেতে ইতি তবো: অন্প্ৰাৰ্থনেনৈবামান্ বঞ্চিতব্তোৱিত্যৰ্থ: ॥ ৩০ ॥

হে রাজন্ শীলার্থ নরদেহধারী ভগবান্ হরি এই প্রকারে মানবব্যবহারের অমুকরণ করত শোক্ষ্য বাক্য এবং চরিত্র ঘারা গো পোপ তথা গোপীদিগকে ক্রীড়া করাইবার নিমিত্ত স্বয়ং জীড়া করেন্ন বিন্ধ

অবস্তার সেই সকল আক্ষণের বোধ হইল নরাসুকারী রামকৃষ্ণ সাঞ্চাৎ বিশেষর তাঁহাদের প্রার্থনা অথায় করাতে আনরা অপরাধী হইয়াছি; অভএব ঐ বিবর স্মরণ করিয়া অনুতাপ করিতে অধিবানন এও ম দৃষ্ঠ বিশাং ভগৰতি কৃষ্ণে ভজিমনোকিকীং। আত্মান ক ভয়া হীনমস্ততা বাগহ রন্॥ ৩১॥
বিক্ জন্ম নিজ্ঞিতভিন্ধ তং ধিবছজ্ঞতাং। ধিক্ কৃলং ধিক্ জিয়ালাক্সং বিমুখা বে ছধোকজে।
নৃনং ভগৰতো মায়া যোগিনামপি মোহিনী। যবরং গুরবো নৃণাং স্বার্থে মুহাম হে বিজাঃ॥ ৩২
অহো পশ্যত নারীণামপি কৃষ্ণে জগদগুরোঁ। ছরস্কভাবং যোহবিধ্যন্ ভ্যুপাশান্ গৃহাভিধান্॥৩৩

अध्यक्षामी।

তদাচ ভাষ্যা গুরুনিব মানরস্তো ভগবস্তক্তিরহিত্যাত্মানং ব্যনিক্ষন্ ইত্যাহ দৃষ্ট্বেতি। অনোকিকীং লোকাতীতাং ॥ ৩১ ॥ ত্রিবৃৎ শৌক্রং সাবিত্রং দৈক্ষমিতি ত্রিগুণিতং জন্ম। ব্রতং ব্রন্মচর্য্যং ক্রিয়াঃ কর্মাণি দাক্ষ্যঞ্চ। ক্রিয়াদাক্ষ্যমিত্যেকং বা পুদং। ধিগি-ভ্যাধিক্ষেপে যে ব্যমধোক্ষকে বিমুখাত্তেযাং নো যৎ জন্মাদি তৎ সর্বং ধিগিতি ব্যগর্হ শ্লিত্যর্থ:॥ ৩২ ॥

যোহবিষ্যৎ অফ্টিনৎ তং ছরস্কভাবং ভক্তিং পশ্যতেতি ॥ ৩৩ ॥

বৈষ্ণবতোষণী।

ভগবতি নাক্ষাৎ প্রমেশ্বরে তত্তাপি কৃষ্ণে নিজাপেইখর্যাপ্রকটনেন সর্কৃতিভাকর্ষকে। ন কেবলম্মভপ্যন্ কিম্ম্বত্ত্বাঃ সভো বিশেষেণ নিজাপেষাভিমানত্যাগাদিনা অগ্র্যুংক ইত্যর্থঃ। অলৌকিকীং লোকম্মাপেক্ষাত্যাগাৎ ক্লকাপ্রাপ্তা সদ্যোদেহত্যাগাচ্চ॥৩১ ভেচ্যোক্ষকে প্রভাৱ ক্রে প্রাত্তাবিনি প্রমান্ত্রনাপ্তি বিম্থাত্ত্বাং জন্মাণীনি ধিগিতি শৌক্ষ্য জন্মনঃ। কিং পুনর্জামণাঃ পুণা-

বেহধোক্ষতে প্রজ্ঞান্ত প্রাহ্র্ডাবিনি পরমান্তন্যপি বিম্থাতেবাং জন্মাদীনি ধিগিতি শৌক্রস্য জন্মনঃ। কিং পুনর্রাহ্মণাং পুণ্যাভক্তা রাজর্বরন্ত্রণা ইতি ন্যাবেন তত্তকৌ উপ্যুক্তমন্তেহপি অন্বোদনাং। সাবিত্রস্য তদভিধানিছেন গায়ত্রজানাং। গায়ত্রাক্তং
পরস্বক্ষ তদর্থবিস্তাররূপস্য শ্রীমন্তাগবতস্য তৎপরভাং। তত্তকং পায়ত্রীং জগবৎপরত্বেন ব্যাধ্যায়ান্তিপুরাণেহপি। যত্তাধিকুত্য গায়ত্রীং
বর্গতে ধর্মবিস্তর ইত্যাদি দৈক্ষ্যান্যদীরোপাসনাম্যন্তাং বিদ্যারাঃ অহং হি সর্ক্ষ্যজানাং ভোকা চ প্রভুরেব চ। নতু মামভিন্তানিত্তি
তব্বেনাতশ্যবন্তি তে ইতি তত্তাজ্ঞানাং। এবং ব্রতাদীনামপি কুলং বংশপরস্পরাং। অহো কৃষ্টং মায়ামোহিতানাম্যমেব ইত্যাহঃ।
ব্যমিতি বোগিনাং কর্মান্তন্তানান্তান নিষ্ঠানামপি ইত্যান্মনো যোগিনাভিমানাং। যহা। যোগিনামপি কিম্তান্মাকং কর্মিণামিদং।
নৃগাং যোগ্রম্ভিক্ষান্তনাং সর্ক্রেমান্সীত্যর্থঃ। তহকতং তাহ্দিশ্য শ্রীশুকেন বালিশা বৃদ্ধানিন ইতি। গুরবং শ্রেষ্ঠা অপীত্যর্থঃ
বর্ণানাং ব্রাহ্মণো গুরুরিতি ন্যায়াং উপদেষ্টারোহপীতি বা। মুহ্যাম মোহং প্রাগ্মুম। হে দ্বিলা ইত্যন্থতাপেনান্যোন্যং সংবাধ্যন্তি।
বন্ধা। বিজ্ঞা বয়ং মুহ্যামহে ইত্যান্মনেপদমার্ধং॥ ৩২॥

আহো বত জ্রীভোছিপি বনং নিক্স্তা ইতি শোচন্তি আহো ইতি ত্রিভি:। অহো আশ্চর্ব্যে। নমু জ্রীণাং পড়ারিতরশ্মিন্ ভাবোহমুচিতঃ

बैविश्वनाथठकवर्ती।

ভত্তক বভার্যা অপি গুরুনিব মামরস্তো ভৃত্তিরহিতমাত্মানং ব্যানন্দরিত্যাহ দৃষ্টেবৃতি। অলৌকিকীং লোকেবসন্তবাং। ৩১। তিরুৎ দৌক্রং সাবিত্রং দৈক্ষমিতি ত্রিগুণিতং জন্ম নোহত্মাকং যন্তবিহ্ব ব্যান্ধিক বিজ্ঞানিক বাণি। যে বয়নধাক্ষকে শ্রীকৃষ্ণেত্ বিমুখা এব।

বোগিনামট্টালবোগবভামণি কিং পুনরত্মাকং কর্মিণাং। গুরবং পরেবাং নৃণামর্থোপদেটারোহণি স্বার্থে মাররা মুক্তামহে। ৩২ । যাসাং পতিস্বস্তুরাদির্দেশ বরং গুরবন্তা ইমাং ক্লভার্থা অভ্যবনু বয়মজকুণে পতিতা এবেতাছেরহো ইভি। তুর্গমোহত্মাভিকছ

আর আপনাদের বনিতাদিগের শ্রীকৃষ্ণে অলোকিকী ভক্তি এবং আপনাদিগকে সেই ভক্তিতে বিহীন দেখিয়া অনুতাপ করিতে করিতে অত্যন্ত আত্মনিশা করিলেন ॥ ৩১ ॥

তাহারা কহিলেন শুক্র, সাবিত্রী এবং দীকা এই তিন প্রকারে আমাদের যে জন্ম হইরাছে পেই ত্রিবিধ জন্মকে থিক্, আমাদের ত্রন্ধার্য্যকেও ধিক্, বহুজ্ঞতাকেও ধিক্ ক্লকেও ধিক্, কারণ ক্ষান্ধারী অধোক্ষত ভগবানে বিমুখ। একণে নিশ্চয় ব্যোধ হুইতেছে ভাগবতী মায়া বোগিদেরও মোহমুক্তিকা, যে হেছু আমরা ত্রান্ধার, সকলবর্ণের শুক্ত, আমরাও আপন বিষয়ে মুখ্য হুইরাম। ৩২।

অহো নারীদিগেরও জগদগুরু প্রাকৃষ্ণে ভ্রন্তভাব (ভক্তি) দেশ, এই ভাবে গৃহসংক্ষক ভুতুত্রী

নাসাং বিজ্ঞাতিসংস্কারো ন নিবাসো গুরাবপি। ন তপো নাজমীয়াংসা ন শৌচং ন ক্রিরাঃ শুভাঃ॥
তথাপি ফুড্রঃস্নোকে ক্বফে যোগেশরেশরে। ভক্তিদ্তা নচাম্মাকং সংক্ষারাদিমতামপি।

अधवयामी

ছিলাতিসংকার উপনবনং। ক্রিয়া: সক্যোপাসনাদর: ॥ ৩৪ ॥

বৈষ্ণবভোষণী।

তত্ত্বাহর্জগদপুরৌ পতিভোষপ্যসৌ পরমাপেক্ষা ইতি ভাবঃ। ছ্রস্তং সর্ব্বাধকং ভাবং প্রেম অবিধাদিতি অতীতনির্দেশস্তাসাং সদ্য এব গৃহাদ্যাসক্ষ্যপগমাভিপ্রারেণ॥ ৩০॥

আশ্চর্যান্থমের ব্যানক্তি নাগামিতি যুগ্মকেন। বিজ্ঞাতিসংস্থান্থ উপনন্ননাদিন্তবুর্মবারং তথা শৌচং সামান্যধর্ম:। গুরুনিবাসাদন্ধ ক্রমেণ ব্রন্ধারিবানপ্রস্থাতিগৃহিধর্মা:। তত্র চ শোকাবেশেন ক্রমাতিক্রম:। কিছা। গার্ছ গুধর্মস্য বহুমানেন পশ্চান্নির্দেশঃ অতএব শুভা ইত্যুক্তি:। অথাপি তত্ত্রাহিতত্বেহপি ক্রফে দৃঢ়া ভক্তিরাসাং জ্ঞাতা। তত্ত্য মাহাছ্ম্যেন বাধ্যিত্বং তং বিশিংবন্তি। উত্তম:ক্লোকে বৈরিণামপি মোক্রাদিদানাৎ প্রমস্থ্যাতিমিতি। যোগানামীশ্বরা ভক্তিযোগবন্তব্যেমীশ্বরে সেব্যাদ্দেন লভ্যে ভক্তিদৃ ঢ়া ক্রতবিরোধ্যের ছাত্তিরপি পরিচ্ছেত্র মশক্যা। পুনরাশ্ব্যমেব ব্যতিরেকেণ ক্রম্বৃত্তি। নচেত্যক্র বিশ্বাতিসংস্থান্য স্বয়ং ভক্তে: কারণানি ন ভবস্ত্যের তদ্যুণক্সংপ্রস্থাসাং তৎকারণ্ড্যান অমীভিরমুমাত্বং শক্ত ইতি প্রশুক্র দেবাভিপ্রায়: ॥

উত্তমংশোকস্বমেব দর্শয়প্ত। নৃনং নিশ্চিতং সর্বাসামপি সিদ্ধীনাং মূলং তচ্চরণার্চনং ইতি নাারেন তত্তকিং বিনা সর্বসাপার্থসানিকে। স্বাথে বিম্চানাং অত্যস্তাজানাং যতো গৃহেহয় গৃহক্ত্যেন প্রমন্তানাং অনবহিতানাং নোহমান্ সারয়ামাস আত্মানং। যতঃ স্তাং স্বাধিকারপ্রাপ্তবেদোকতৎপরাণাং গতিঃ। যহা। স্তাং ভক্তানাং গতিরপি কেবলকার্লটেনবেত্যর্থ:। যহা স্ত এব তাবৎ পরমন্ত্রালবঃ। স্তু তেষামপি গতিরাশ্র ইতি। অহো আশ্রেণ্ট উত্তমংশ্লোকস্বাত্তন বোধিতা অপি বয়ম্বিবেকা ন বুদ্বস্ত ইতি ভাবঃ॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্ত্তী।

ভবিত্মশক্যোহন্ত ইয়ন্তা যস্য তথাভূতং ভাবং। হা প্রাণিরমণ ক্ষেত্যাদি গদাদাক্ষরবচনকল্পাশ্রপুলকবৈবর্ণ্যাদান্ত্রাবজ্ঞাপিতং ক্ষেত্রপ্রমাণং পঞ্চত। নম্থ বীশাং পত্যবিতর্দ্মিন্ ভাবোহন্থচিতন্তনাহ। ক্ষণদার বিদারোপাদের পত্যো দ্বীশাং গুরুত্বং বিহিতং সাক্ষান্ত তে ভিমিন্ ধন্ কো বিচার ইতি ভাবঃ। যো ভাবঃ মৃত্যুপাশান্ অবিধাৎ সদ্যাদিচছেদ। গৃহাভিধানিতি গৃহপত্যপত্যাদিবাসামাসজিক গদ্ধেহিপি সম্প্রতি ন দৃশ্যত ইত্যাদারভ্য এভাএবাস্থাকং গুরুব ইতি পতিভিরপ্যদারভ্য ক্ষণান্ত্রমিগণা ইমা আদরণীয়া এব নতু মনসা ভাব্যা এব মন্তব্য ইতি ভাবঃ॥ ৩০ ॥

নৰাসাং কৃষ্ণাছরাগে হেত্রস্থলাম্য ইত্যাহন সামিতি। যোগেখরেশর ইতি সএব সভকেতে তুং জানাত্যপণাদরতীতি চ মান্য ইতি তাব:। তেন কৃষ্ণরপত্তপপ্রধাণি ব্রস্থমানিকাদিবনিতাজন সংসক্ষণো মৃশহেত্তৈর্জ্ঞাতভালোক্ত ইতি ভক্দেবাভিপ্রার:॥ কু ভগবত: কাক্ষণং কু বাস্থাকং দৌরাম্বামিত্যাহ্ন হিতি॥

चनाथा निक्शाधि कांक्रमाः दिना शूर्यकाममा चचाचिः किः क्षात्राकृतः न किमगीकार्यः । चैनदेगाकमवक्षार्थनः सन् विक्वनः नावव-

मर्किम एम ॥ ७७ ॥

ন্নং স্বাধবিষ্টানাং প্ৰসন্তানাং গৃহেছ্যা। স্বাহা না সাময়ামান গোপবাকৈঃ সভাং গভিঃ।
আন্যথা পূৰ্কামস্য কৈবল্যাদ্যাশিষাং পতেঃ। স্থাশিতব্যৈ কিম্মাভিরীশসৈত্বিভূষনং ॥ ৩৪ ॥
ছিদ্যান্যান্ ভজতে যং জ্ঞীঃ পাদস্পশাশ্যাহসকুৎ। স্বাস্থাদোষাপবর্গেণ তদ্যাদ্ধা জনমোহিনী।
দেশঃ কালঃ পৃথক্ দ্রব্যং মন্তন্তন্ত্রিভাহ্যাঃ। দেবতা যুজ্মানশ্চ ক্রেডুর্শ্মশ্চ যদ্ময়ঃ॥ ৩৫॥

ची धत्रवामी ।

चाच्यामायाभवदर्गन हाक्षनागर्का मिखारान ॥ ७० ॥

देवक्षवरकावनी।

নমু গোপুৰাকৈ ব্রন্থনা সাজু অথাচত নচ সার্যানাস তত্রাত্য। অন্যথাস্থ গ্রহম্যা স্থারণমন্তরেণ। নমু পূর্ণকামত্বন তস্যারে প্রেরাজনং মাল্ত কুধার্ত্তগোপনিমিত্তং যুজ্যত এব তত্রাত্য কৈবল্যতি। কৈবল্যং মোক্ষঃ প্রেম বা। কলা স্থানা সহদ্ধেন শুভভাবরূপভাৎ তদাদীনামা শিষাং অর্থানাং গতেঃ পত্যুরীশস্য তত্তৎপ্রসাদনে সামর্থস্যেত্যর্থঃ। ঈশিতবৈয়নি মুন্মঃ কিঞ্চিৎ কর্তু মপ্যশক্তৈঃ
কিং ন কিঞ্চিদ্পি প্রেয়োজনমিত্যর্থঃ। কিন্তীশস্যাপ্যতি ভিড্রনং দ্যামাত্রেণা মুক্রণমেব ভবতীতি॥ ৩৪ ॥

নত্ন যদ্পোসৌ সারয়ানাস তর্হি ভবন্তঃ কথং ন সক্ষরতাত হিছেতি। অন্যান্ হিছেতি কীরে।দনধনাত্তে ভস্যা নরমিবাবিভূতিায়াঃ
ব্যাবরলীলাক্করণদৃষ্ট্যা প্রোক্তং। অসক্ষরতাত সেবতে স্বং স্বয়মেবাস্থা যস্যান্তস্যান্তদংশাভাসভূতায়া জগলস্থা যে দোবান্তলস্পর্শেন ইত্যর্থঃ। এবং কথমপি ভদ্যাক্তা ন ঘটেতৈবেতি বোধিতং। তথাপি তস্য যাক্তা জনানামস্থিধানাং সর্কেধামের জীবানাং
নোহিনী নায়নীশ্বর ইতি মোহমুৎপাদয়তীত্যর্থঃ ৪

শতোহপি নোহং দর্শয়ন্তি দেশ ইতি যুগাকেন। স এব সাক্ষাৎ ভগবান্ শ্রীনারায়ণ: তস্য দেহাদিয়য়তে হেতু: বিফু: সর্কবাাপুকইতি তস্যচ সইক্রেবেপাস্যম্মাইর্বোগেশরাপাং মুক্রানাসপীশ্ব: অতো যজ্ঞাদীনামন্ত্রাকং অপি সএব সেব্য ইতি ভাব:। যয়। মএব
সাক্ষাৎ ভূতএব অতএব ভগবান্ সইর্বাধ্যপূর্ণ স্তত্রাপি অলেইয়শ্ব্যপ্রকটনেন বিশ্ববাপকত্বাহিক্ত: অতো যোগেশরাপামপীশ্ব: সেব্য
ইত্যর্থ:। যয়। কিমর্থং জাত স্তত্তাহ:। যোগেশরা: স্থানিভাজি র্বোগান্তেবামীশ্ব:। নিজ্ভক্তর্থার্থমিত্যর্থ:। হিশব্দেন তত্র শাক্ষাদি
প্রমাণ: স্চয়ন্তি। তচ্চ প্রসিদ্ধমেব মন্তক্রানাং বিনোদার্থমিত্যাদি বচনেত্য: মুঢ়া: শাক্রার্থানভিজ্ঞা:। আড্যাং বাক্যাভ্যাং বথা পূর্বমন্মাভি নির্মিতং তথা তৈরপি বিচারিতমিতি শ্রীক্তদেবাভিপ্রায়:॥ ৩৫॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্ত্তী।

মেব যক্ষাদিত্ত্র্য:। यथा। তক্ষাদেতৎ ঈশস্য ঈশকর্ত্কং অক্ষৎকর্মকং বিড়ম্বনং তিরস্কার: ॥ ৩৪ ॥

নতু ক্ধার্ত্তাদেবেদমর প্রার্থনং নতু কারুণ্যং নাপি পূর্ণকামন্তাদিকং গোচারণাণ্যস্পপতে তাত্তি ছি ছি আসকং মুহ: আ: সম্পল্লনী: স্বান্তানা দোষণ্য চাঞ্চাগ্য অপবর্গেণ ত্যাগেন বিশিষ্টা চাঞ্চাং পরিত্যজ্যেত্যর্থ:। ত্যাপি বং ৰাজ্ঞাদিকং জ্ঞান্ অস্থিধান্ মোহয়তি নায়মীশ্বর ইতি প্রত্যাব্বতি ॥

মোহমেব বিরুণ্ স্তি দেশ ইতি॥ ৩৫॥

দৃঢ়া ভক্তি হইয়াছে, আমরা সৃংস্কারাদিবিশিষ্ট হইয়াও তাহা উপাৰ্জন করিতে পারিলাম না, নিশ্চয় বোধ হইতেছে গৃহব্যাপারে প্রমন্ত হইয়া আমরা স্বার্থবিষত্য বিমৃঢ় আছি। যাহা হউক, গোপদিগের বাক্য আমাদের স্কাতি স্মরণ করাইয়াছিল,নচেৎ কৈবল্য হেতু পূর্ণকাম এবং সর্বকল্যাণ পতি পরনেখ্রের অস্মাদিতে প্রয়োজন কি! ইহা যে সেই পর্মেশ্রের বিভূম্বন মাজে। ৩৪।

ফলতঃ স্বরং লক্ষ্মী পাদস্পর্শ প্রত্যাশায় আপনার চাঞ্চল্যাদি দোষ পরিহার পূর্ব্বক অন্ত স্কলকে পরিত্যাগ করিয়া বার্ম্বার বাঁহার উপাসনা করিয়া পাকেন, উছোর যাদ্রা ক্ষমণের জনদোহিনী বাহা হউক, দেশ, কাল, দ্রব্য, মন্ত্র, ঋত্বিক, আমি, দেবতা, যজমান, দক্ষ এবং ধর্ম এ সক্ষ্মণীহার স্বরূপ ॥ ৩৫ ॥

দএব ভগবান্ দাক্ষাৎ বিষ্ণুর্ধোগেখনেখন:। জাতো বছ্ছিত্যাশৃথা ছপি মৃতা ন বিশাহে। তথ্য নমো ভগবতে ক্ফায়াকুঠনেখনে। যন্মায়ামোহিতধিয়ে অমাম: কর্মবর্জ্ম । দ বৈ ন আদ্যঃ পুরুষ: স্বমায়ামোহিতাজ্মনাং। অবিজ্ঞাতাকুভাবানাং ক্ষুমহ্ত্যতিক্রমং॥ ৩৬॥ ইতি স্বাধ্যমুস্থত্য কৃষ্ণে তে কৃতহেলনাঃ। দিদৃক্ষবো ব্রজ্মধ কংগান্তীতা নচাচলন্॥ ৩৭॥

श्रीभव्यामी ।

ইত্যাশৃগ্ম: এবং সর্বান্ত ক্রেড বয়ং হি তথাপীতি ॥ ৩৬ ॥ নচাচলন্ ত্যোর্দিশনায় ন জগা; ॥ ৩৭ ॥

বৈষ্ণবতোষণী।

মৃত্তমেব দর্শয়ন্ত তংকারণ মায়াপ্রভাবেন বিশ্বিতাঃ সন্ত ত্তদপগমার ভক্ত্যা সর্বজ্ঞং তদীখরমেব প্রণমন্তি নম ইতি। ভগবতেইচিজ্যান নিইখর্যায় অকুঠমেধ্সে অলুপ্রজ্ঞানায় স্বেষাং তবৈপরীত্যমাহর্যমায়য়েতি। ভ্রমামঃ প্নঃ প্রন্তব্রেবাভিনিবেশং প্রাপুমঃ জলাবর্ত্তাদিব কদাচিদ্পি ততো নির্বস্তঃ ন শকুম ইত্যর্থঃ॥

এবং প্রনিদ্ধাং গতা: শ্রীভপ্রত্তঃ ক্ষমন্তি স ইতি। স কৃষ্ণ দোহশাকং অভিক্রমণরাধং ক্ষত্তমইতি বোগ্যো ভবভি। তথা হৈত্য।
স্বস্ত ততিত্ব মান্নন্ন মোহিতি তিবানাং অভএব ন বিজ্ঞাতোহস্থাৰ স্থনাহান্ত্যাং হৈত্যেবাং। বদি চাশাক্ষণপরাধ তথাপি স আদ্যঃ পুক্ষং
সহস্রশীর্ষাদিরপং তন্থাদেবোৎপ্রানাং বিপ্রাণাং পিত্বদপ্রাধক্ষমা যুক্তেতি ভাবং। বর্ষ। আদ্যঃ সর্বশ্রেষ্ঠঃ অতো নির্দ্ধানাম্মাক্ষমপ্রাধং ক্ষত্তমহত্ত্বে। কিঞ্চ পুরি শ্রনাৎ প্রবোহস্থামী অভভেন তথা নিযুক্তাঃ মাং তবৈব ক্ষতবত্তা ব্যমিতি। যথা আদ্যঃ
পুক্ষঃ পুক্ষোত্তম ইত্যুৰ্থং। দীনবাংস্ব্যা ব্যক্ষণাদেবত্বাদিতি নিক্ষাভাবিক্ষাহান্ত্যাৎ ক্ষত্তহত্তি ভাবং॥ ৩৬॥

শ্বনসাধারণং অধ্যপরাধং তদেব দর্শরিত। কৃতং হেলনং মহ্বাদ্ষ্টাবিজ্ঞা বৈত্তে। অতএব দিদৃক্ষবে হিশি সাধক্ষাপণায় মিলিক্ষিছ-বোহপি ব্রন্ধ: প্রতি নচাচলন্ সক্কদপি পাদবিকেপং ন কৃতবস্ত ইত্যথ:। তত্ত্ত হেত্রণ কার্ণবিদ্ধান কংসাতীতাঃ শ্রীভগবতি দৃঢ়বিখা-সাধুৎপত্তা নিজ্ধনিষ্টশক্ষেত্যর্থ:॥ ৩৭ ॥

গ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

অপরাধাদতিব্যপ্রাঃ প্রণমন্তি নম ইতি ॥ অতিকৈম্যপ্রতা ভগবত্তং ক্ষমগতি স বৈ ইতি । .অতিক্রমং অপরাধং ॥ ৩৬ ॥

নমু তহি তদানীমেব তজালোকবনে গছা বিলয় ব্ৰজং বা গছা কথং ভগবস্তং শ্রণং ন গতা স্তব্রাহ দিদ্কব ইতি। তদানীং শোকাহভাপাদিমবাং সংক্রিকমত্যাভাবাচ্চাশোকবনং ন গতা বিলবে দতি সামাহে ব্রজং প্রতি গতা বৈকমত্যে সতি নচাচণারিতি চকারাচ্চলছো হপীভাক্ষেপ্লছাং। তত্র হেডুং সংক্রিমপি মনভোকঃ সহসৈবোদ্ধ্ ইত্যাহ কংসাদ্ভীতা ইতি। স্চকৈরকামধ্ ভাতঃ কংশো হলৈয়বামাকং জীবিকাং হরিষ্যতীতি ভয়ব্যাক্লা ইত্যথং। অতঃ পত্যাদিকর্ত্ব বধত্যাগাদিলক্ষণং তয়ং ব্রহ্মণীনাং ক্ষম্পানি কিল ন প্রতিবধ্যতি স্বেত্যাত্র প্রেটেশ্বর হেডুং। ব্রাহ্মণানান্ত মনংক্রিভোভ্যাভাগ এব তত্র প্রতিবধ্যতি স্বেত্যাত্র ভগ্বন্থাবির হেডু জেরিঃ ৩৭॥

দেই ভপনান সাক্ষাৎ যোগেশরদিপের ঈশর, বিফু, যতুকুলে জ্মা প্রহণ করিয়াছেন, যদিও এইরাপ স্বাত্ত প্রবণ করিতেছি, তথাপি আমরা এমত মৃঢ়, যে, তাঁহাকে জানিতে পারি নাই, একণে
অক্পনেধা দেই ভগনান প্রিক্ষকে নমন্ধার করি। বাঁহার মায়ায় মোহিত হইয়া আমরা কর্মমার্গে
ভ্রমণ করিতেছি। সেই আদ্য প্রেষ-আমাদিগের এই অপরাধ ক্ষমা করিতে যোগ্য হয়েন, তাঁহার
মায়াতেই আমাদের চিত্ত মোহিত হইয়াছে, তাহাতেই আমরা তদীয় অনুভাব জানিতে
পারি নাই। ৩৬।

হে রাজন্। সেই সকল বিপ্র এই প্রকারে জ্রীকৃফের প্রতি অবচ্ছেলন জন্ম আপনাদের অপরাধ স্মরণ করিয়া যদিও তাঁহাকে দর্শন করিতে ইচ্ছুক হইলেন ওথাচ কংসভয়ে ভীত হওয়াতে কিছুতেই তথায় ঘাইতে পারিলেন না ॥ ৩৭ ॥ ॥ # ॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং দশমস্কলে যজ্ঞ-পদ্মপ্রচর্য্যাগ্রহণং ত্রেয়াবিংশোহধ্যায়ঃ ॥ # ॥ ২০॥ # ॥

শ্রীবাদরায়ণির বাচ॥

ভগবানপি ত'ত্ত্রেব বলদেবেন সংযুক্তঃ। অপশুদ্ধিবসন্ গোপানিক্রযাগস্কুভোদ্যমান্।

শ্রীধরস্বামী।

॥ 🛊 ॥ टेंजि मन्दम ज्याविश्नः ॥ 🛊 ॥

চতুবি^{ংশে} মহেক্সসা মধং বাবির্তা হেডুভি:। ক্লফ: প্রবর্তরামাস গোবর্জনমধোৎসবং। ভূস্বাণাং ক্রিয়াগর্কং নির্ভাষাস্থ্রে-যুচ। মঘবৃদ্ধদভদার তর্মধং সর্বাব্যবং॥ •॥

ব্ৰাহ্মণাঃ কংৰাজীতাঃ স্বাহ্মস্থা এব ভগবস্তমভজন্ ভগবানপি তত্তিব নিবসন্ ইক্সবাগক্তোদ্যমান্। গোপানপশ্যদিতি সক্ষঃ ॥>॥

বৈষ্ণবতোষণী।

॥ *॥ देखि व्येटेवक्कवटलावणाः प्रभाषिक्षनाः खर्गाविः ॥ * ॥

পূর্বাং ব্রহ্মনারীঃ প্রতি যাতাবলা ব্রহাং সিদ্ধা ময়েমা রংগুও ক্ষপা ইতি হেমন্তপতা যা নিজ্ঞালীকতা তাই শর্দ্রাবিশ্ তাভিঃ সহ প্রক্ষারার প্রতিত্পরৎসইছিল এব সন্তবন্ধি তদ্রণারস্কৃত শর্ৎপূর্ণিনায়ামের নির্দেক্ষতে সাচ শর্মধাহাবিনপূর্ণিমের সংবধাতে। কার্ত্তিক্রপ্রতিপদি বেষা গোবর্জনপূলা সাচ রাসলীলায়াং ব্রুদ্বৌতিরস্কৃতা গোবর্জনপূলানস্কর্মের ব্রুদ্বোক্ষমন ততঃ পূর্কাং শর্দমেবারভ্যাগামিনীং যাবৎক্রমালোবর্জনপূলা ব্রুণ্লোক্ষমনবন্ধহরণবঙ্গপত্বিগ্রাহাণরামালীলা ক্রেরা:। তত্র তত্তবর্ধনির্দ্ধা কংসবধাতে করিষ্যতে বৈপরীভ্যোক্তির প্রেমবৈব্র্যাং কৃতিৎ সঙ্গাতীরস্বাচ্চ। তার তারবানিপি তেরেবেতাভারমর্থ:। তার তার্বাগ্রেমার্কারতার হানবিলেবে সঙ্গান নির্দ্ধা গোপাঃ কুত্যালামা বভূব্ং তত্র ভাগবানিপি তর্ত্রেবেবভারমর্কার নির্দ্ধা নির্দ্ধা ক্রেরালয় বালাক্র ক্রের্ণার্কার নাম্বান্ধ্র হিন্দার্কার বিল্লেবন সংঘ্রে নির্দ্ধা ইত্রবাগরুতোল্যান্দ্র গোলান্দ্রক্র কালে চাভ্যাগতে। ব্রুলং। দলন্দ্রমহারভায়োদ্যভাগতান্ ব্রেন্ত্রাক্র ক্রিক্রক্রবান্ ইত্রর্থ:। যতু প্রিবিশ্বপুর্বাণে বিমলান্বরক্রক্রে কালে চাভ্যাগতে। ব্রুলং। দলন্দ্রমহারভাযোদ্যভাগতান্ত্র ত্রুল ভশ্রবত্রতান্ত ব্রুল ভশ্রবত্রতান্ত ব্রুল ভশ্রবত্রতান্ত করিক্রিক্র তালিক্র মধ্যদেশীরানামাচারস্যত। তত-এব প্রবৃত্তে:। অপর্ক্রতির বৃদ্ধাং বর্ষমিতি বক্ষ্মাণাচ্চ। তথা চোক্রং পালে। দীপান্বিতা অমাবাস্যাক্রত্যান্তে। প্রাতর্গোবর্ণোং বর্ষাণাং বাল্যক্রস্ক্রের ব্রুণাং বর্ষাবিন্ধনান্ত্রান্তর ক্রিক্রির্ণার বর্ষাশার্ক্র বর্ষান্ধন্ত ক্রিক্রির্ণার বর্ষাশার্ক্র ব্রুণাং বর্ষাবিন্ধনার নান্ত্রান্তিৎ মধ্যদেশেহপি তরানীং বর্ষাণাং বাল্যন্ত্রনার ক্রেনিক্র ক্রিরিন্র নাল্যবর্গান্ত ক্রিকিন্ত্র স্থাবিন্ত ব্রুণাং বর্ষাবিন্ত কর্মাবিন্ত্রান্ত্র ।

क्रथमन्द्रः।

॥ • ॥ ইতি জ্রীদশমে জ্রীকীবগোস্বামিক্বতক্রনসন্দর্ভে ত্রয়োবিংশঃ ॥ ०॥

ভগৰানপীতি। অত্যাণিশক্ষেন তত্ত্বৈৰ নিবসন্ধিতীখং চৈবং লভ্যতে। এবং তে পদ্মীসম্বন্ধেনাতিবিশ্বস্তা অসন্ধিহিতানাচলন্। শ্ৰীবিশ্বনাধচক্ৰবৰ্তী।

॥ 🛊 ॥ 🗦 ইতি সারার্থদর্শিন্ন্যাং হর্ষিণ্যাং ভক্তচেতসাং। অয়োবিংশোহত দশমে সক্ষতঃ সক্ষতঃ সভাং ॥ 🛊 ॥

স্থাপিতা সহ সংলপ্য মধং ব্যাধ্য বিজ্ঞিন:। চ্জুবিবিশে গিরীজাস্য মধং প্রাবর্ত্যক্ষি:। গোঠস্যাস্থান্যাং নিবসন্ প্রাতৃতিঃ সহ নক্ষ ইক্রবাগসংভারসিদ্ধার্থং গোপাছকেয়ালয়ামাস। ভগবানপি ততৈরে নিবসন্ ইক্রেলাগ্রুতোল্যান্ গোপান্ স্পঞ্চিতি স্থান্ ॥

পূর্ব্বপূর্ববর্ষ্ট্রবান্তস্যাভিজ্ঞাহণি। সর্বাচ্ছেতি। বদাপান্তর্যামিবরূপেণেজবাসে বর্মেব প্রের্জি ভদ্পি দীলাকৌতু-

॥ 🛊 ॥ 🛚 ইভি দশমে ত্রেয়াবিংশ ॥ 🛊 ॥

চতুর্বিংশ অধ্যাত্ম হেতৃপ্রদর্শন পূর্বেক ইন্তরেযজনিবারণ করিয়া **জীকৃষ্ণকর্ত্ক পোবর্ধনন্দে।** সবের প্রবর্তন (আরাম্ভ বর্ণন) ॥ ॰ ॥

क्षकरामव किहरतान, विधानन करमण्या य २ जाव्यरम थाकियार क्रीकरका क्रीकरण मानिन

তদভিজ্ঞোহপি ভগবান্ সর্বাস্থা সর্বদর্শনঃ। প্রজ্ঞাবনতোহপৃদ্ধভূদারক্পপুরোগমান্॥ ১॥ কথ্যতাং মে পিতঃ কোহয়ং সন্ত্রমো ব উপাগতঃ। কিং ক্লাং ক্স্য বোদ্দেশঃ কেন বা সাধ্যতে মুখঃ॥২ এতদ্ ক্রছি মহান্ কামো মহুং শুক্রায়বে পিতঃ॥ ৩॥

विभव्यामी।

বুণা সম্ভ্ৰমোন ভৰতি মথোহয়মিতি চেং কিম্ত্ৰ ফ্লং কা দৈবতা কেনাধিকারিণা কেন সাধনেন বা সাধাতে ॥ ২ ॥ এতৰু হি মহান্ কামো মম প্ৰবণে বৰ্ত্তে । যহা। তব মহান্ কামো দৃশুত ইতি ॥ ৩॥

देवस्थवरकावनी ।

ততক তস্য পূর্মপূর্মণ ইক্সমধস্য তথ। প্রীরন্ধরাজন প্রস্থান্তরিষ্বামাণস্য তদ্ধিকস্যচার্থস্যাতিজ্ঞাহিণি অপ্চছং। তত্ত তগবানপি সর্ম্বাক্ষ্ণনিধিকেন বিনয়বনম এব সম্বৃচ্ছং অভিজ্ঞানে-হেডু: সর্ম্বস্যাত্মা পর্মাজ্ঞেতি প্রান্ধ হৈডু: সর্মান্দর্শিরতি তার্থে প্রবর্ত্তরিতি তথা সং। ভবতু নাম পূর্মেবাং মন্ব্রহিতানাং মন্বহির্দ্দেবতাপূজাদিকং কিল্পেবাং মংস্কিহিতানাং মদ্তর্দপূজ্ঞ-বৈর মংস্থাকরী মংপিত্রাদীনাত্ত তত্ত্বিভাগ্যমিত্যাদিলক্ষণমহামহিম্বাদ্ভিক্ত্স্য তত্ত্বপি মহাগর্মস্বেস্থ্য পূজা মম হংথকরীতি স্প্রতি পর্মান্তরক্ষগোবর্দ্ধনপুজাপ্রবর্তনেচ্ছবৈর বৃদ্ধের্ তত্ত্বৈর মুখ্যতা আত্মীর্তাপেক্ষা বিশেষত্তঃ ত্বপিতরি প্রশ্ন এব জ্ঞোঃ॥ ১॥

কথাতামিতার্জকং। মে মহুং কথাতামিতি সর্বেহতে জানন্তি কেবলং মহৈব ন জায়তে ইতি মাং প্রত্যেব কথাতামিতি ভাবং। এবা চ পিতৃসন্তোষ্প্রিমার্থনার নাই আবশ্যকতংশ্রবণায়। বো যুমাকং সর্বেধানেব নতু কেবাঞ্চিং। অত্রচ সম্ভব্যাবিশেষ বৈষ্ণ্রাং বা। শ্লেষেণ সমাক্ ভ্রম এবেতার্থং। উপাগতো দ্বে স্থাতুং যোগ্যোহিপি সমীপং প্রাপ্ত উপর্যাপতিত ইতি বা॥ ২॥

কেনেতি তৃতীগান্তপদেন কর্ত্বগ্রোঃ প্রশ্ন:। এতদ্জহীতি পুনক্তিনিজ্ভকাবাতিশ্যবোধনার মহুং মাং প্রীণরিত্মিত্যর্থ:। যথা নতু বালকে ছয়ি তৎকথনেন কিং তত্রাহ। ভক্ষাববে পুত্রভোচ্ছাং পুর্যিত্মবভাং যুক্সত ইতি ভারঃ। প্রেষণ ভক্ষাযুং ধর্মমাজারাৎ ইতি ভারেনাবভাকতোকা পিতরিতি পুনঃ স্থোধনং সেহ্বিশেষজননায়॥ ৩॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

চকারাক্ষংকিঞ্চিং তংসামুখ্যেন যজ্ঞমেব কুর্নজাে হতিষ্ঠন্ অথ কিঞ্চিংকালাস্করে ভগবানপি বলদেবেন সংযুত তাত্রৈব নিবসন্ শর্ষ যত্র নিবসতি তত্রাপীত্যর্থ:। ইত্যভিলাবদমঞ্জনস্বং দর্শিতং। ব্রহ্মাদিছ্র ভং তৎ সংবাসমহেত্মেন্তা তেন্তা ইক্স্যাতিকোদিয়ত্বাং। বলদেবেন সংযুত ইতি স কলাতিং সোঢ়ুং শক্রোতি বলদেবস্ত তংপরমন্তকৌ নৈবেত্যর্থ:। তস্য যক্ষ্য অভি সর্ক্রোভাবেন সিদ্ধান্তায় ভানাদি প্রকারেণ জানাতীতি তদভিজ্ঞাদ্শোহণি পূর্কপূর্ক্মণায়ং জানাত্যেব তথাপি যং পৃছ্তি তৎ পুনরিক্তং প্রত্যাদ্রেণৈ-বেতি গমাতে॥ ১॥ ২॥ ৩॥ ৪॥

अविधनाशककवर्ती।

কার্থমিতার্থঃ। দর্কং ইন্দ্রগর্কথণ্ডনদপ্তরাত্রপর্যন্তপ্রিয়লনদহরাদ্বিলাদাদিক ক্লকং পশুতীতি দঃ॥১॥

মধে। ভবিষাতি তংসিদ্ধার্থনদং সম্ভন ইতি চেৎ কিমত্র ফলং ক্সা বেদিশঃ কো দেবোহত্র পূজাদ্বেন নির্দিষ্ট ইত্যর্থঃ। কেস কর্ত্রা করণেন বা ॥২॥

নতুবালক্স্য তব কিমেডৎ প্রেলন ত্রাহ মহান্কামোহভিলাবো মনাত বর্তত। যথা। মহান্কামো মুখদাদীনামত্র দৃষ্ণতে অভএব তং ঋশববে অভার্মাং প্রীণরিত্মিভার্থ: ॥৩॥

লেন, এ দিকে বলদেবের সহিত ভগবান্ সেই স্থানেই অবস্থান করিয়া গোপদিগকে ইন্দ্রযাগার্থ উদ্যোগ করিতে দেখিলেন। ভগবান্ সর্ব্বাজ্ম। এবং সর্বাদশী, ইহাতে যদিও স্বয়ং ঐ বিষয়ের তত্ত্ব অবগত হইলেন তথাচ বিনয়াবনত হইয়া নন্দ প্রভৃতি বৃদ্ধ ২ গোপগণকে জিক্ষাসা করিলেন ॥ ১॥

हि शिजः। जाशनामिरभन्न रकान् विषया धाँ छिएम्यांग छेशिक्षिण ? देशो छिएम्यांगल हरेरल शास्त्र ना, त्वांश कित रकान यक्त हरेरन, यि जाहा हम जरने धाँच कि कम, रमनजारे ना रक, कि धाकान काक्तिरे ना रहारल जानकाती, कि नायन चानारे ना जाशकान कितरल हम ? ॥ २ ॥

তে পিতঃ ! এ বিষয়ে আপনকার হুমহৎ কামনা দেখিতেছি গতএব আমি শুনিতে বাসনা করি, স্বিশেষ করিয়া বনুন ॥ ৩॥ নছি গোপ্যং হি সাধ্নাং কর্ত্তং সর্কাজনামিহ। অন্ত্যস্থপরদৃষ্ঠীনামমিত্রোদান্তবিধিষাং ॥ ৪॥ উদাসীনোহরিবদ্বর্জ্য আত্মবৎ স্থহতুচ্যতে ॥ ৫॥

श्रीधतवागी।

তৃষ্টীং স্থিতঃ প্রত্যাহ নহীতি। সর্বাদ্মনাং সর্ব্বাদ্মণীনাং অতএব ন বিদ্যতে স্থঃ পর ইতি দৃষ্টির্যেষাং পর ইতি দৃষ্টাভাবাদেব তদ্ভেদামিত্রাদ্মেশ্বিপি যেষাং ন সন্তীত্যাহ অমিত্রেতি। ন মিত্রং উদাস্থীনাং বিশ্বিদ্ধৃচ যেষাং তেম্বাং কর্ত্তং কর্ম নহি গোপনীয়ং কিঞ্চিদ্বীত্যর্থঃ ॥ ৪ ॥

সভ্যপি ভেদদর্শনে উদাসীন: শত্রুবর্জ্য:। আত্মত্ল্যতাৎ স্ক্রমন্তের্ন বর্জনীয় ইত্যাহ উদাধীন ইতি ॥ ৫ ॥

देवकवर्ष्ठामणी ।

পূর্ব্বপ্রমণ্যরং জানাত্যের তথাপি যৎ পৃচ্ছতি তত্তি দোল্ঠিনির যৎ পৃচ্ছতি তৎ পুনরিক্রং প্রতি অনাদরেশৈরতি গম্যতে নারারণসমগুণখাং তজ্জানানবর্ম্বাতিরাচে ইতি সংশ্যা তৃষ্ণীং স্থিতং প্রত্যাহ নহীতি সার্দ্ধেন। তত্ত্ব নহীত্যেকং উদাসীন ইত্যাধিকং সাধ্নামিতি তেষাং বিকর্মার প্রত্যা গোপ্যভাবাৎ সাধ্নামের লক্ষণং সর্বাত্মনামিত্যাদিবিশেষণত্ত্বেগ প্রমাত্মা তদ্ধানাং ইহ জগতি কুরাপীত্যর্থ:। অত অত্তরক্ষণবিদ্ধিতির গোপ্যিতুং যুজ্যত ইতি ভাবঃ ॥ ৪ ॥

নমু নিজহিতার্থং দেবতারাধকানাং কুতঃ সর্বায়তা যুক্তা অতোহস্বপর দৃষ্টিম্বাদিকং তব নাস্তোব ইতি ভবতু তথাপি নিয় গোপিয়িতুং ন যুজ্যত এবেত্যাহ উদাসীন ইতি। ধর্জ্যঃ মন্ত্রজ্জ্যাৎ অহন্ত স্থহংস্থ প্রমান্তর্জঃ পুত্র এবেত্যতো ন বর্জ্য এবেতি ভাবঃ ॥ ৫ ॥

ক্রমসন্সর্ভঃ।

নারায়ণসমগুণখাং। তজ্জিদানবহৃদহননাচেতি সংশ্যা তৃফীং স্থিতং প্রত্যাহ উদামীন ইতি॥ ৫॥

শ্ৰীবিশ্বনাগচক্ৰৰতী।

রহস্যভাদনতিকোবিদবালকাদিষু বক্তুমনহ মিতি চেতত্ত্ব অস্যাতিকোবিদত্মকিবৈচিতৈত্বৰ দ্যোত্মলাহ ন হীতি। সর্বা এবাঝান আত্মত্ত্যা যেয়াং তেষাং অতএবায়ং সোহস্তিলকঃ অয়ং প্রো বহিরক ইতি ন বিদ্যুতে দৃষ্টি র্যেষাং তেষাং অতএব তত্তেদা-মিকোদাসীনবিদ্বা ন সন্ধীত্যাহ অমিত্তেতি ॥ ৪ ॥

গৃহত্বা ব্রমেবস্থতাঃ সাধবো ভবিতৃথন শকুম ইতি ৫5তনিপি মধ্যেতদেশাপরিতৃথ ন বুজাতে ইতাহি উদাসীনো ধরিবদিতি।
তুল্যার্থকবিতপ্রতারেনারিণা তুল্য উদাসীনো বর্জ্য ইতার্থ: । অরিসাধর্ম্মাল্যারিমিত্রবেনাপচিকীর্বাবদান্তপকারব্রাদিতি
জ্ঞেনতএব। যো বিপক্ষ: স্ক্থেক্ষ: স তটত্বো নিগদ্যতে। ইত্যুজ্ঞ্বনীলমণো তল্লকণং দৃষ্টং। ষ্ট্র্ দাসীনো নারিণা তুল্যোনাপি স্ক্লা
তুল্য: স তুন বর্জ্যো নাপ্যপাদেনঃ স্ক্রত্যেষিতাত এব স ন উইকিত:। স্ক্লাম্মিত্রাদাম্মবিশ্বায় ইত্যুর্থ:। অহত্ব পুত্র: স্ক্লঃ
স্কাশাদপান্তরক্ষ ইত্যুর্থ: ॥ ৫॥

তথাপি পিতাকে ভূফীভূত থাকিতে দেখিয়া পুনরায় বলিলেন পিতঃ! যাঁহারা সর্বত্ত আত্মানির আত্মদর্শী স্থাবর জন্মানিতে ও আত্মা ভিন্ন কিছুই দেখেন না অতএব যাহাদের ইনি আত্মীয়, ইনি পর,এতজ্ঞপ তেদদৃষ্টি নাই, ভেদজ্ঞান না থাকা প্রযুক্ত ভাহাদ্বিগের মিত্র উদাসীন ও শত্রু কেইই নাই, শে সক্ল পুরুষের কোন কর্মই গোপনীয় নাই ॥ ৪ ॥

স্থার যদিও ভেদজান থাকে তথাচ উদাসীন ব্যক্তিই শত্রুর ন্যায় পরিত্যক্ষ হয়, স্থাক্ষর শাষ্কি-ভূল্য, তাহাকে মন্ত্রণাবিষয়ে ত্যাগ করা উচিত নহে॥ ৫॥ জ্ঞাত্বাজাত্বা চ কর্মাণি জনোধ্য়মসূতিষ্ঠতি। বিহুষঃ কর্মাসিদ্ধিঃ স্থান্যথা নাবিছুষো ভবেৎ ॥ ৬॥ তত্ত্ব তাক্ষ্য ক্রিয়াযোগো ভবতাং কিং বিচারিতঃ। অথবা লোকিকস্তব্যে পুদ্ধতঃ সাধু ভণ্যতাং ॥৭॥ জ্ঞীনন্দ উবাচ।

পঙ্জ ন্যো ভগবানিস্তো মেঘান্তস্থাস্থাসূর্তর:। তে২ছিবর্ষন্তি ভূতানাং প্রীণনং জীবনং পর: ॥৮॥

ध्येषत्रचामी ।

় কিঞ্জ স্বৰ্ত্তঃ সহ বিচাৰ্য্য জ্ঞাবৈৰ কন্দ্ৰীকৰ্ত্তব্যং নতু গভাগগতিকমাজেশেত্যাহ জ্ঞাবেতি অজ্ঞাদাচ তত্ৰ বিহুদে। যথাৰৎ কৰ্মফলং স্যাৎ ॥ ७ ॥

ভবতামরং ক্রিয়াঘোগঃ শাল্পতো বিচারিতঃ প্রবুত্তঃ লৌকিক মাচারপরিপ্রাপ্তো বেতি সাধু সোপপত্তিকং ভণ্যতাং কথ্যতাং ॥৭॥ মাচারপরিপ্রাপ্ত এবেতি সহেতৃক্মাহ পর্জন্য ইতি। সাম্মুর্ত্তরঃ প্রিরমূর্ত্তরঃ। ততঃ কিমত মাহ ত ইতি ॥ ৮॥ • •

देवक्षवरकावनो।

অক্সান্ধাচ দৃষ্টপরস্পরদেত্যর্থ:। কর্মাণি দৃষ্টাদৃষ্টফলানি রুব্যাদিষাগাদীমি। যথা যথাবং ॥ ७ ॥

তত্র তেরু কর্মার ক্রিয়াবোগ ইদমণ্ট ফলং কর্ম ভবভাং কিং ধলু বিচারিত: শারৈকপ্রমাণদাৎ ভবিচারপ্রাপ্ত: কিমথবা লোক-পরস্পার্মা এব প্রাপ্ত ইভি সাধু সোপপদ্ধিকং ভণ্যভাং। তাবদিতি প্রদান্তরং পশ্চাৎ কর্প্রয়মিত্যর্থ:। জনেন তত্তদভিজ্ঞদ্বাপি স্চিতং। নিজ্ঞোহণায়॥ ৭ ৪

পर्करना। वृष्टिवाता जनवानीश्वत देखि जिल्लियिनारम् श्रीमनः मखर्मकः कीवमः मृज्ञावानाः कृगावीनाः व्यागनः ॥ ৮ ॥

क्षमनमर्खः।

कर्जानि ष्टेष्टिकनानि ॥ ७ ॥

ভতাদৃষ্টফল: ক্রিয়াযোগো বিচারিত: শাক্সবারা জ্ঞাত: ॥ ৭ ॥ ৮ ॥ ৯ ॥ ১০ ॥ ১১ ॥

গ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

क्रिक বৃদ্ধিনদক্তরসজনেন সহ বিচার্য্য কাঠিখন কর্ম কর্তন্যং নতু গতামুগতিক ভাবেনেত্যাহ কাছেতি। জ্ঞাছা জ্ঞাছাচ কর্মাণি দৃষ্টাদৃষ্টকলানি ক্ল্যাণি বাগাণীনি॥৩॥

ৰিচাৰ্য্য জ্ঞাবৈদ্য ক্ৰিয়ন্ত ইতি চেলত আহ। তত্ৰ কৰ্মস্থ মধ্যে ক্ৰিয়াযোগো ভ্ৰতাময়মদৃষ্টফলএব কিং শান্তপ্ৰাপ্তদেন বিচারিতঃ অথবা লৌকিকঃ লোকাচারপ্রাপ্তদেন ॥ ৭ ॥

লোকাচারপ্রাপ্ত এবেতি সোপপত্তিকমাত পর্জন্ত ইতি। প্রীণনং সম্বর্গকং জীবনং মৃতপ্রায়াণ্যপি ভূণাদীমি জীবরতীতি তৎ ॥ ৮॥

অপর লোকে আনিয়া ও না জানিয়া কর্ম করিয়া থাকে সত্য, কিন্তু হুছলগণ সহ বিচারপূর্বক জানিয়াই কর্ম করা উচিত, জানিয়া কর্ম করিলেই বিধান্ব্যক্তির ধ্থাবঁৎ কর্ম ফল হয়, অবিধানের হয় না ॥ ৬ ॥

শতএৰ জিন্তালা করি, শাপনাদিগের এই যে ক্রিয়া আরক হইয়াছে এতছিবরে কি কি বিচার করিয়াছেন ? ইহা কি লাস্ততঃ প্রবৃত্ত শ্ববৃত্ত প্রবৃত্ত করিয়াছেন ? কি লাস্ততঃ প্রবৃত্ত প্রবৃত্ত করিয়াছেন । প্রতিষ্ঠ স্থিত বিষয়ণ বর্ণন করুন ॥ ৭ ॥

नम कहिलन ८२ छाछ । अभवान् देख शक्क छन्नभी, त्मचनका छारात्र श्वित्रम्छि, तारे गुकल दम्म श्रानिभरणत श्रीजिक्तन अवर भीवन कात्रम् मात्रि वर्षण कतित्रा शास्त्र ॥ ৮ ॥ তং তাত বয়মফেচ বার্ম্ চাংপতিদীশ্বরং। দ্রে ব্যৈন্ত দ্রেত্র সা সিদ্ধৈ র্যক্ত ক্রম্পুর্ভর্বরাং । ৯ ॥
তচ্ছেবেণোপজীবন্তি ত্রিবর্গফলহেতবে। পুংসাং পুরুষকারাশাং পর্ক্তফাং ফলভাবনং।
য এনং বিস্তক্তেদ্র্মং পারম্পর্য্যাগতং নরং। কামান্দ্রেষান্তরালোভাৎ স বৈ নার্ব্রোভি শোভনং॥>•

শ্রপ্রামী

ভমিব্রং। বামু চাং মেঘানাং। তত্তেতদা তবু ইপরসা 🛭 🗢 🗈

উপদীবত্তি দীবিকাং করমত্তি ধর্মার্থকামসিদ্ধরে। নমু কুব্যাদিতি দীবতাং কিনিজের্ম ডত্তাই পুংসামিতি। ফলভাবনঃ কলসাধনঃ পর্চ্চনাং বিনা কুয়াদি বৈফল্যাদিত্যর্থ: n > n

বৈষ্ণকভোষণী ৷

তাতেতি দ্বালনং স্থোধনং। নিজোকৌ প্রহার্থ তথবিস্থানিক বরং গোপাং নচ গোপালনার্থ কেবলং বর্ষেব কিন্তন্যের নরাং সর্বে। নমু প্রাঃ স্বর্নান্তি ভৌমং রসমার্ব্য বর্ষতীত্যাদি বচনাং প্রাঃর্দ্ধী প্রান্ধি তরাই। বামু চাং মেঘানাং পতিং নেঘলপাশং স্থার্দ্ধীনামপি স্থাবেশ্বর ইত্যর্থঃ। তথাই শ্রীবিষ্ণুপ্রাণে। ভৌমমেতং প্রোছ্ঝং গোভিঃ প্রাঞ্জ বারিদৈঃ। পর্জন্তঃ নর্জনোকন্ত ভবার ভূবি বর্ষতীতি। কৃতঃ ঈশ্বরং দেবেক্সদালিত্যর্থঃ। অক্তথা তরমুংপাদরেদ্দীতি ভাবঃ। যথা বৈষ্ণব্যব্যাণাং তবতাং নাম্ভুদ্বতাপুলা যুক্তা তরাই ঈশ্বরং অন্তর্থামিদ্টোত্যর্থঃ। অক্তথা তরমুংপাদরেদ্দীতি ভাবঃ। যথা বৈষ্ণব্যব্যাশাং স্বাম্যাভাবেনাদে তিত্তংপুলৈব যুক্তেতি ভাবঃ। অক্তথাহিক্তজন্তাদিদোবপ্রদক্তেঃ। বলন্ত ইতি প্রথমপুক্ষব্যার্থং স্বাম্যাভাবেনাদে ইতি। বল্ব পুন্নাভিপ্রায়জ্ঞানেন তল্বাগুলুজ্মনত্যান্নিজ্বদোবপ্রিহার্ন্ব্যন্ত্র্যাং প্রাণান্তবিবক্ষর হৈঃ সহ বিশেষস্থক্ষন প্রথম-পুক্ষব্যং॥ ১॥

নমু তর্হি তৈরমাকং কো নামোপকারঃ তত্তাহ তচ্ছেষেণেতি। ত্রিবর্গঃ ধর্মার্থকামাঃ সএব ফলং তত্ত হেতবে সিদ্ধার্থং। এবং দৃষ্টাদৃষ্ট-ফলহেতুতোকা। পুংসামিতি তৈ ব্যাধ্যাতং। যথা নমু পুরুষপ্রয়ইর ধর্মাদিকং সেংস্থতি তত্তাহ পুংসামিতি। দেবতাপ্রসাদেনৈব ধর্মাদিসিদ্ধোঃ। পর্জ্জন্ত চ দেবরাজ্বাদিতি ভাবঃ। পুরুষকারাণাং উদ্যমানাং॥

ব্যতিরেকে দোষমপ্যাহ য ইতি। কামাৎ অনৃষ্টবিষরাৎ বেষাৎ দেবতাবিষরাৎ তত্পাসকবিষরাথ। ভয়াদ্বিরোধিকনছেতুক্তাৎ লোভাং দৃষ্টবিষরাং। বাশকো হত্রাধ্যাহার্য্য:। শোভনং নাপ্নোতীহামূত্রচ তত্ত ক্ষেমং ন তাদিত্যর্থ:। অতৈরাং শ্রীত্রজবাসিনাং ত্রিবর্গ-লিপ্সা তদ্যোধলিহীর্যা চ শ্রীকৃষ্টৈককনিবন্ধনেতি প্রতিপাদিতমেব। ততঃ সর্বস্বাসনাশিরোমণিতামেব ধত্তে ইতি বিবেচনীয়ং॥ ১০॥

ত্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

তাতেতি স্বালনসংঘাধনেন। তাদৃশপুষ্যাদেবতানামেবায়্এহেণৈব তাবলগুণবান্ যং পুত্র: প্রাণ্ডোৎস্যততংপুলা প্রত্যাধ্যানং স্বয়া শুভংযুনা ন ক্রব্যমিতি দ্যোতিতং। বস্তুতল্পজ্ঞে কর্ড্যাভিমানোংপি নোচিত ইত্যাহ। তল্তেসা তঘুটপয়শ্ব সিলৈঃ॥ ১॥

তচ্ছেষেণ তদ্যজ্ঞাবশিষ্টেনাল্লেন উপজীবন্তি জীবিকামুপকরয়ন্তি। নচ জীবিকাহিণি যথেষ্টবিষয়ভোগার্থেত্যাহ ত্রিবর্গেতি। পুরুষ-কারাণাং ত্রিবর্গার্থমূল্যমানাং ফলং যক্তিবর্গ্এব তম্ম ভাবনঃ সাধকঃ। পর্জ্ঞভাছ্ ষ্টি বুটেররং অল্লাজ্ঞীবিকা জীবিকাতো ধর্ম্মো ধর্মাই ফুদ্যম ইত্যের্থঃ। যতো বস্তুতঃ পর্জ্জ্ঞভাব ত্রিবর্গে মূলহেতুরতঃ পর্জ্জ্ঞ এবেল্যুত ইতি ভাবঃ ॥

ব্যতিরেকে দোবনাহ ব ইতি। কাঁমাং প্রেচ্ছাত: লোভাং স্তব্যব্যমাভাববিষয়াং শ্রীবণা লোকহেতুকাং। দেবাৎ দেবভাবিষয়ং কাং॥ ১০॥

আমর। এবং অফান্য মানবগণ মেঘপতি ঈশ্বর দেই ইন্দ্রকে তাঁহারই বর্ষণকরা বারিতে হৃসিছ। স্লব্যক্রাত ঘারা যজ্ঞ করত অর্চনা করিয়া থাকি ॥ ১॥

তাহার অবশিষ্ট অংশ ঘারাই ধর্ম অর্থ কাম এই ত্রিবর্গ নিমিত সকলের জীবিকা কলিত হয়। হে বৎস। ক্ষাণিখারা জীবিকা হয় এমত বলিতে পাদা যায় না, কারণ পক্ত গ্রন্থ পুরুষদিগের পুরুষদারের, সকলের ফল সাধ্য অর্থাৎ বারিধরের বারিবর্ষণ ব্যতিরেকে ক্ষাণি কদাপি সফল হইতে পারে না। হে তাত। এই ইপ্রার্কন ধর্ম পারস্পর্যাগত আচারপ্রাপ্ত, যে মানব কান অথবা বেষ কিখা ভয় অমবা লোভ হেতু এই ধর্ম পরিত্যাগ করে তাহার কথনই কল্যাণ হয় না॥ ১০॥

बिवानबादिकवात ।

বচোনিশম্য নশক্ত তথান্যেয়াং একোকসাং। ইন্দ্রার মন্তুং জনয়ন্ পিডরং প্রাহ কেশবং॥ ১১॥ শীভগবাদুবাচ ॥

কর্মণা জায়তে জন্তঃ কর্মণৈব প্রদীয়তে। ত্বং ছঃবং ভয়ং ক্ষেমং কর্মণোবাভিপদ্যতে ॥ ১২ ॥ অন্তি চেদীশ্বঃ কশ্চিৎ ফলরূপ্যুহস্তর্মণাং। কর্তারং ভজতে সোহপি নহকর্ত্তঃ প্রভূহি সঃ॥১৩

व्यिभन्नचारी।

ইক্রার মন্থ্যং অনরন্ধিতি কোপজনন্ধারা গর্কপর্কতাদিজ্ঞমবতার্রিভূং দেবতানিরাকরণং নম্বর্মেবাভিপ্রারঃ ॥ ১১ ॥ প্রথমং তাবং কর্মবাদেন দেবতাং নিরাক্রোতি কর্মণেতি ॥ ১২ ॥

নমু অড়াৎ কর্মণ: কেবলাৎ কথং কলসিদ্ধিঃ স্যাৎ অহো অশীকিতমীমাংসানাং শ্বমতিবিলসিতপ্রদ্ধাকর্মণঃ ফলকারগথে বচনতো-হবগতে ক্রিং ততোহমূপপন্নং নাম কেচিৎ পুনরতিসাহসভীভাঃ কর্মপরতন্ত্রমীধরং মন্যত্তে তল্পতমন্দ্য নিরাকরোতি অতি চেদিতি। মরং কর্মান্তি রলিপ্রোহণ্যন্যেয়াং জীবানাং কর্মণাং ফলরূপী ফলদাতা কর্তারং ভক্ততে তৎ কর্ম ফলদানেন ॥ ১৩॥

देवकवरकावनी ।

ভবাদ্যেমাং ব্রজ্ঞোকসাং বচোনিশ্যোতি ভেছপি শ্বরং বা প্রীনন্দেনৈব প্রমাণিতা বা ভবৈবোচুরিতি। ইক্সায় মহাং জনরন্নিতি ত ভ বহিরজ্জমনাদরণীয়ত্ত জ্ঞাপিতং পিতর্মিত্যভ প্রমান্তর্জ্জং প্রমান্তর্গীয়ত্ত ব্যঞ্জিতং। কো ব্রহ্মান্ট্রশাক্ষ ভৌ বয়তে নিজ-মহিন্না ব্যাপ্রোতীক্তি কন্তর বরাক ইক্স ইতি বোধয়তি ॥ ১১ ॥

এবাং মংগিঞাদিরপনিত্যপরিকরাণাং পূজাগ্রহণে কো নাম ইন্দ্র ইতি তম্মদহরণং যদ্যপ্রি মনসি বর্ত্ততে তথাপি নরনীলা-পালনায় তদমূল্যাট্য কর্ম্মবাদশু সর্ব্ঞাতিপ্রসিদ্ধর্যাং তন্মতাশ্রমণেশৈব প্রথমং পিত্রোক্তং পরিহরতি কর্মণেতি। প্রমীয়তে ফ্রিয়তে। জ্ঞাত্ত কর্মণেত্য কর্জার তৃতীয়া। প্রলীয়ত ইতি পাঠেহপি দ এবার্থাঃ। হিলীয়ত ইতি পাঠে। তু হেজাবেব হি নিলিতে। এবং জ্ঞান্ত্রণ উক্তে জন্মনরণানত্তরঞ্চ কর্মণিব স্থাদিকমাহ স্থমিতি। ক্ষেমং জ্ঞারং। কর্মণেতি পুনঃ পুনক্ষজিত্বদেকহেত্তাবিবক্ষ্যা ভেলার্ড্যার্থমের শক্ষ্মরঞ্জ॥ ১২॥

ফলং রূপরিত্ং দর্শবিতুং দাতুং শীলং অন্তেতি ফলরূপী। ভলতে অনুসরতি। কর্মান্সারেশৈর ফলদানাং। ব্যতিরেকেণ দ্রুত্বতি নেতি। হি যতঃ কর্মাভাবে ফলং দাতুং ন শক্ত ইতার্থ:॥ ১৩॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

এষাং মংপিত্রাদিরপনিত্যপরিকরাণাং পূজাগ্রহণে কো নাম ইস্ত ইতি মন্মনহরণং যদ্যপি মনসি বর্ততে তথাপি নরলীলাপালনায় তদ্মুদ্বটাঃ কর্মবাদ্যেবাবলয়াহ কর্মপেতি॥ ১২॥ ১৩॥

धैविषनाथहळ्वत्रती ।

ইন্দ্রায় ইন্দ্রমায়জননস্য প্রয়োজনং তালার্মণগুনপ্রতিবর্ধগোবর্দ্ধনোৎসবপ্রবর্ধনতত্ত্বরণনিধিলপ্রিয়জনসহরাসলীলাবিলা সাদিকমুপরিষ্টাজ্জাস্যতে॥ ১১॥

নরলীলতবৈব ইন্দ্রমথভলে কর্তব্যে যুক্তিমুখাপরন্ সন্তির্বিগীতমণি কর্মবানমান্ত্রিতা দেবতাং নিরাকরোতি কর্মণেতি॥ ১২॥
নমু জড়াং কর্মণ: কেবলাং কথা কলসিন্ধিরতঃ কর্মকললতে। ঈর্বরোহ্বপ্রাপেক্য ইত্যাপি কেবাফিয়াতং তত্রাহ অন্তি চেদিতি।
ফলরূপী অঞ্জনকৃত্তকর্মণাং ক্লদাত। সোহপি কর্তারং ভলতে অনুসরতি কর্মান্সারেশের ফ্লদানাং। ব্যতিরেকেণ প্রভূমতি নেতি
হি যতঃ কর্মান্তাবে ফল্যু দাতুং ন লক্ত ইত্যর্থ: ৪ ১৩ ॥

তকদের কহিলেন, নন্দ এবং অন্যায় ব্ৰজবাসিদিগের ঐ দকল বচন প্রবণ করিয়া ক্রোধোৎপাদন দারা গর্বারূপ পর্বত ইন্তেইন্তে অবতারণ করাইবার অভিপ্রায়ে ভগবান্ কেশব পিতার প্রতিনিম্ন লিখিত বাক্য প্রয়োগ করিলেন । ১১॥

ভগবান কৃষ্টিলেন জীবনাত্ত কৰ্ম ৰাৱা উৎপদ হয় এবং কৰ্ম ৰাৱাই বিলগ্ন প্ৰাপ্ত হইয়া থাকে, অপিচ, স্থুৰ ভুঃৰ ভয় ও ক্ষেম কৰ্ম ৰাৱাই লাভ হয় ॥ ১২ ॥

ভারং কটের নিলিপ্ত হইয়াও অন্ত জীবদিগের কর্মকল দাতা কোন ঈশ্বর যদ্যপি পাকেন তিনিও কার কল দান বারা কর্তারই ভালনা করেন, কেন্দা যে ব্যক্তি কর্ম দা করে তাহার তিনি আছু নহেন ভারাৎ কল দানে সক্ষম হইতে পারেন না ॥ ১৩॥ কিমিদ্রেণেই ভূতানাং বং বং কর্মানুবর্তিনাং। অনীশে নাজধা কর্ত্ত্ব্রাবারিইডং নৃণাং ॥১৪॥ বভাবতত্ত্রোহি জনঃ বভাবমনুবর্ততে। বভাবছমিদং সর্বাং সদেবাহ্যরমানুবং॥ ১৫॥ দেহামূচ্চাবচান্ জন্তঃ প্রাপ্যোৎস্কৃতি কর্মণা। শত্রুমি ত্রুদাসীনঃ কর্মের গুরুমীশরঃ॥ ১৬॥

धिशतयामी।

অতঃ কর্মণ এব কলসিছেত্তংপারতত্ত্যে চ অজাগলন্তনভূল্যভার দেবতরা ক্লৃত্যমিত্যাহ কিমিল্রেণেতি। নমু কর্মণাপি প্রবৃত্তি-রস্তর্থাম্যপেক্ষরৈব কথং সর্কাথা দেবতায়ামম্প্যোগ ইত্যাশস্ক্যাহ অভাববিহিত্যমিতি। অজ্বাবেন প্রাক্তনসংকারেণেব বিহিতং যৎ কর্ম তদন্যথা কর্জুমনীশেন॥ ১৪ ॥

এত্ত্বিবেশতি স্বভাৰতক্স ইতি। প্রবৃত্তেঃ সংস্থারাধীনত্বাং কিমন্তর্যামিণেত্যর্থ: ॥ ১৫ ॥ তত্মাৎ, স্বস্থাবতো নিশারক্ত কর্মণ এব সর্মকারণতাব। কন্মৈর পুরুমিত্যাহ দেহানিত্যাদি সার্ক্ষেন ॥ ১৬ ॥

देवकवट्यावनी.।

ভত্তাপি ভূতানাং প্রাণিমাত্রাণাং কর্মান্থবির্তিনাং প্রাক্তনকর্মান্থসারেণ হৃপত্বং ভূঞানানামিজেণ কিং কর্মণ এব ভত্তত্তোগকার-ণ্যাং। তেরু নৃণাঞ্চ কর্মান্তরোপার্ক্সনাং বং বং ব্যাববিহিত্মভ্যথা কর্তুমনীপেন তেন কিং ব্যাবজ্তিব ভত্তৎকর্মপ্রত্তি-কারণ্যাং॥ ১৪ ॥

সর্কমিত্যনেন গৃহীতানামপি দেবাদীনাং পৃথগুক্তির্বিচারাদিলয়াবেছপি ভদ্ভিক্রমণাশক্তে: ॥ ১৫ ॥

প্রাপ্যোৎস্কৃতি প্রাপ্নোতি ত্যক্তি চেত্যর্থ:। শৃত্র্বাদ্যোহপি কর্মের একলৈর ক্লাচিচ্ছক্রতায়া: ক্লাচিচ্ছিল্রতায়া: ক্লাচিচ্ছলা-সীনতায়াশ্চ দর্শনাং। নম্ জ্ঞানং বিনা কর্মম্ ক্পপ্রস্তুত্তে: জ্ঞানার্থমূপদেষ্টায়মবশ্বমপেক্ষতে তত্তাহ স্কর্মিত। অনৃষ্ঠং বিনোপদেশাঞাপ্তে: প্রাপ্তেম্প্রাপদেশে তৎফলাদিসিছে:। নম্ কর্মণো ক্রড্ছেন তৎফল্লাতা প্রাক্ত্রপক্যতে তত্তাহ ঈশ্বরশ্বেতি। ঈশ্বর্জাপি কর্মামূগ্রাং তত্ত্বৈর তালৃশশক্ষে: ॥ ১৬ ॥

ক্রমসন্ধর্য:।

ভূতানাং প্রাণিমাত্রাণাং কর্মান্থবর্তিনাং প্রাক্তনকর্মান্থারেণ স্থতঃখং ভূঞানানামিক্রেণ কিং কর্মণ এব তত্ত্বাগকারণছাৎ তেরু নৃণাঞ্চ কর্মান্তরোপার্জ্জকানাং স্বং স্বভাববিহিতমন্যথাকর্তু মনীশেন তেন কিং॥ ১৪॥
স্বভাবস্যৈব ভত্তংকর্মপ্রবৃত্তিকারণভাগ ॥ ১৫॥ ১৬॥

श्रीविधनाथहळ्वा ।

অতোহনাগালতানতুল্যন্তার দেবতরা ক্বত্যমিত্যাহ কিমিল্লেণেতি। নমু কর্মণাপি প্রবৃত্তিরন্তর্থাম্যপেক্ষরৈর কথং সর্বাধা অনুপ্রোগ ইত্যালঙ্ক্যাহ স্বভাববিহিতমিতি। স্বভাবেন প্রাক্তনসংস্কারেণ বিহিতং কর্ত্তব্যেনোগস্থাপিতং যথ কর্ম তদেব কর্ত্তু মন্তর্থামী দ্বীবং প্রেরন্ত্রতি নন্ত্রাদিত্যতঃ স্বভাববিহিতমেব কর্ম অক্সথা কর্ত্ত, মসমর্থেন ইক্রেশ পুন্ধনীরেন কিং ম কিমপি ফলমিত্যর্থ: ॥ ১৪ ৮

এতি বির্ণোতি। স্বভাবতর: প্রাক্তনসংস্থারাধীন:। স্বভ: স্বভাবমন্ত্রকীক্ষত্য তত্তৎকর্মণি স্বর্থেব প্রবর্ততে ইতাস্বর্থানি-ণাপি ন কিমপি ফলমিতি ভাব:॥১৫॥

তত্মাৎ স্বভাষতো নিশান্নস্য কর্ম্মণ এব সর্মকারণদাৎ কর্মেন পূজামিত্যাহ দেহানিতি সার্দ্ধেন ॥ ১৬ ॥

অতএব কর্ম হইতেই যদি ফল সিদ্ধি হইল এবং সকলে যদি কর্মেরই পরতন্ত্র হইরা পড়িল,তবে কর্মানুবর্ত্তি প্রাণিগণের ইন্দ্রে প্রয়োজন কি ? অজাগলন্তনত্ত্ল্যত্ব হেতু তাহাতে কোন কার্মাই দৃত হর না। যদি বল অন্তর্গামি ব্যতিরেকে কর্মে প্রবৃত্তি জন্মে না, ইহাতে কোন দেবতার উপযোগিতা নাই এমত বলিতে পারি না, উত্তর, প্রাক্তন সংকার কর্তৃক কর্ম সকল বিহিত হয়, তাহার অক্তথা করিতে ইক্স বা অক্য কোন দেবতারই ক্ষমতা নাই ॥ ১৪॥

ফলতঃ প্রাণিমাত্রই স্বভাবের পরতন্ত্র, সকলে সভাবেরই অসুবৃত্তি ক্রিয়া থাকে অভএব স্থার, অহার, মানব সই এই সমস্ত জগৎ স্বভাবেই অবস্থিত। ১৫।

অপর জীব সকল কর্ম বারাই উচ্চাবচ (বিবিশ) দেহ প্রাপ্ত হইরা পুমরার তাহা পরিত্যান করে, কর্ম বারাই শক্ত অধবা মিত্র কিয়া উদাসীন হয়, অতএব কর্মই সকলের ভক্ত, কর্মই করে অবীৎ অভাবতঃ নিজার কর্মই সকলের কারণ, হস্তরাং কর্মই পুজা। ১৬। ভস্মাৎ সংপূজ্যেৎ কর্ম স্বভাষম্বঃ স্বকর্মকৃৎ। ১৭ ॥ অঞ্চসা যেন বর্ত্তেত তদেবাস্ত হি দৈবতং ॥ ১৮ ॥ আজীব্যৈকতন্ত্বং ভাবং দত্ত্বসূপজীবতি। ন তত্মাদিদতে ক্ষেমং জানামাধ্যসতী যথ । ॥ ১৯ ॥ বর্ত্তেত ত্রহ্মণা বিপ্রো রাজজো নক্ষয়া ভূবং। বৈশ্যস্ত বার্ত্তয়া জীবেচ্ছৃদ্রস্ত দিজসেবয়া॥ ২০ ॥

धिशतकात्री।

मः शृक्दाद मः मानस्य ॥ ३৮ ॥

নমু দেবতোদ্ধেশন্ত্র ব্যত্যাগাল্যাক্সকাৎ কর্মণং কথং দেবতাং বিনা সিদ্ধিরিত্যাশক্ষ্য কর্মাক্ষ্মাত্রং দেবতেতি পক্ষমুপসংহর্মির হেতুবাদমান্ত্রিত্য অন্যামের দেবতাং সমর্থয়তে অঞ্চলেতি ॥ ১৮॥

হেতৃবলেনৈব বিপক্ষে দোষমাহ আলীবোতি উপজীবতি সেবজে ৷ ১৯ ৷

অত্তিং বজুং দৃষ্টাস্তত্বেন বৰ্ণানাং ব্যক্তিভেদমাহ বর্ত্তেতে জি আন্ধণা বেদাধ্যাপনেন ॥ ২০ ॥

देवकवटज्यमा ।

তত্মালা ক্ষেত্র রত্থানে হেঁতোঃ অভাবত্বঃ সংস্থারত এব অবং কর্ম নিশাদাতে ইত্যেতদ্তিঃ সন্নিত্যর্ধ:। যথা। যথাৎ অভাব এব কর্মান্তরপ্রবর্তকঃ কর্মের ফলদাত্ তত্মাৎ কেনচিলোবেশ আহ্মণাদ্যনর্হভাবান্তরান্থমেছিশ যত্থাৎ অভাবস্থতদর্হভাবস্থ এব সন্স্থত্ম-ইং তদর্হকর্মান্ত্রদের্চ দন্ কর্মেডি কর্মানীব্যমের সংপ্রয়েৎ নতু বহিন্দ দেবাদীনিত্যর্থ: অগ্রে তথৈর ব্যক্তে:॥ ১৭॥

ভদেবাহ অন্তেতি। दि यতঃ তুথপূর্ককং যেন যো বর্ত্তে যৎ ব আজীবোৎ তদেবাল্ল জনল দৈবতং ॥ ১৮ ॥

একতরং ভাবং একং পদার্থং আজীব্য-জীবনোপায়ং ক্লবা তত্মানজন্মং জারাদিতি তৎ সামানাধিকরণোন দৃষ্টাতঃ। জার্মিতি জ্বিং শাঠঃ তথাপি তবেব তাৎপর্ব্যং পিআদিবত্যভৌদ্ধতামিদং তৎ কর্ত্ব নীচারাধনজেন কোপেটেরুব ইতি জ্ঞেয়ং ॥ ১৯ ॥

অধুনা অকশানীব্যপ্তামেব নাধরিভূমাদাবান্মমো গোর্ভিত্মাহ বর্ত্তেতি বাভ্যাং ॥ ২০ ॥

ক্রমসম্বর্ড:।

ৰশ্বাং শভাব এব কৰ্মান্তরপ্রবর্তকঃ কর্মেরচ ফলদাত ভন্মান্দোষেণ আন্দাদ্যনহভাবান্তরাহ্গমনেহিপি বন্ধাং সভাবস্থানহ ভাবস্থ এব সন্। স্বক্ষাক্তং ওদহ কর্মান্ধনেরচ সন্। কর্মেতি কর্মান্ধীব্যমের সংপ্রবেং। নহু বহিরস্পদেবাদিমিতার্থ:। সংগ্রে তথৈব ব্যক্তে: ম ১৭ ৪ ১৮ ৪

ভশাদনাশাং জারাদিভি তং সামানাধিকরণোন দৃষ্টাল্ড:। পিআদিখণেশ্রৈকভানিদং তং ক'র্ছক নীচারাধনজেন কোধেনেভি জ্ঞেয়ং॥১৯
শ্বকশালীবাপুজামেব সাধ্যিতুমান্থনো গোবৃতিত্বসাহ ঘাড্যাং॥ ২০॥ ২০॥ ২০॥

এবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

সংপূত্তৰেৎ সংখানয়েও কৰ্মসামাধ্যাস্যাহণি পূজাত্বেপি কৰ্মবিশেষকরণে শাস্ত্রণের প্রমাণমিত্যাহ। অভাবত্বঃ আজ্ঞালিবর্ণত্বঃ অস্থ বিহিত্তং কর্ম করোতীতি সাঃ॥ ১৭॥

নতু তদপ্যত্ত দেবতোন্দেশেন দ্ৰব্যত্যাগাত্মকত্বাৎ যাগত কথং দেবতাং বিনা সিছিরিত্যাশত্ত্য কর্মাঙ্গমাত্রং দেবতে তি মতমঙ্গীকুর্বন্ হেতুবাদমান্ত্রিত্যান্যামের দেবতাং সমর্থয়তে অঞ্জমা স্থাপন বর্ত্তে জীবেত ॥ ১৮॥

হৈতুবলেনৈব বিপক্ষে দোষমাহ আজীবোজি। উপজীবভি সেবতে॥ ১৯॥

ত সাদসাকং য় এবাজীব্য: সৈব দেষতেতি বক্তু: দৃষ্টান্তছেনালেখামপ্যাহ বর্জেতেতি বিপ্রান্ত বেদশান্তাশ্যেব দৈৰতানি। রক্ষা ভূব ইতি ভূরেব তদা দেবতা। ৰার্ট্রেতি বার্ট্রেব ডক্ত দেবতা বিজ্ঞভন্তাব্যতি বিজ্ঞা এব তন্ত দেবতা ইতার্থ:॥ ২০॥

অভএব সভাবস্থ হইয়া স্বীয় কর্মকারি পুরুষের কর্মেরই পূজা করা কর্তব্য ॥ ১৭ ॥ বস্তুতঃ যে যাহার দারা বর্তুমান হয়, তাহার তাহাই দেবতা ॥ ১৮ ॥

নতুলা যে কাক্তি এক প্রকার ভাব অবলম্বন করিয়া অসতী নারীর জারসেবার স্থায় পুনরায় অস্থ

ভাব সেবা করে, ভাছার ঐ ভাব হইতে কখনই কল্যাণ হয় না ॥ ১৯॥

্ৰতএৰ বিশ্ৰন্থতি বেদাধ্যয়ন খারা, ক্ষিয়গণ পৃথিবীপালন খারা, বৈশ্বন্ধতি কৃষিবাণিজ্যাদি খারা এবং শুত্রগণ বিভশুশ্রেষা খারা বৃত্তি করিয়া খাকে॥ ২০ ॥ কৃষিবাণিজ্যগোরকাকুশীদং ভূষ্যমূচ্যতে। বার্ত্তা চভূর্বিধা উত্ত বয়ং গোর্ত্তরাইনিশং ॥ ২১॥ সত্ত্বং রজন্তম ইতি দ্বিভূত্বপত্যন্তহেতবং। রজনোৎপদ্যতে বিশ্বমন্তান্তং বিবিধং জগৎ। রজনা চোদিতা মেঘা বর্ষন্তান্ত্ব নির্বাত ॥২২॥ ন নঃ পুরো জনপদা ন গ্রামা ন গৃহা বয়ং। বনৌকসন্তাত নিত্তাং বনশৈলনিবাসিনঃ ॥ ২০॥

श्रीधत्रश्रामी ।

বৈশ্রব্যক্তভাতুর্বিধ্যমাহ স্ক্রবীতি ক্রবিবাণিজ্যসহিতা গোরক্ষা এবং ত্রেং কুশীদং বৃদ্ধিলীবনং চতুর্বং ॥ ২১ ॥

নমু গ্ৰামণি বৃত্তিম হৈক্ৰাধীনৈবেত্যাশকা নিরীশ্বসাংখ্যমতা শ্ৰেমে নিরাক্রোতি সন্ধাতি লোকক্ষেন অফোন্যং স্ত্রীপুরুষ-যোগেন। সর্ব্বত ইতি সমুজশিলোধরাদিশণি বৃষ্টিদর্শনাৎ ন প্রেক্ষাবং পূর্বকন্তং বৃষ্টেছিতি ভাবং। তৈরেব মেলৈরের নিদ্ধাক্তি জীবিত্ত। ২২ ৮

তথাপি বোগক্ষেমার্থং দেবতাপেক্ষেতি চেদত আছ ন নঃ পুর ইতি। 'পুরঃ পত্তনামি জনপদা দেশাঃ অত্মাকং বোগক্ষেমহেতু ব'ন-শৈলাদয় ইতি ভাবঃ॥ ২৩॥

বৈষ্ণবতোষণী।

অনিশমিতি বৈশ্রেঘপি গোপছাৎ ন স্কুষ্যাদিকাপি বৃত্তিরিতি ভাব:॥ ২১ ।

পূর্ব্বপূর্বং কারণক্লপং বিবিধং বিশ্বমন্তোজ্য স্ত্রীপুরুষাদিযোগেন বিবিধং জগদ্ধপং সহৎপদ্যতে। সন্ধাদীনাং স্থিত্যাধিহেতুত্বং অভাবত এবেতি জ্ঞেয়ং॥

মহেন্দ্র ইতি সোপহাসং মেঘানাং ততাপি রজোধীনভাৎ ॥ ২২ ॥

বনাল্লেব ওকাংসি যেষাং তথা ভূতা জাত্যৈব বয়ং অতএব ন কদাপাগুত্র প্রমাম ইত্যাহ নিত্যমিতি। হে তাতেতি তমার্ক্সতি এবং শ্রীম্বাবর্দ্ধনসমীপে নিজ্বাসক স্টিতঃ ॥ ২৩॥

ক্রমসন্দর্ভঃ :

্ন ন ইভি ছাভ্যাং। তদানীং শ্রীগোবর্দ্ধনসমীপ এব ব্রজং বোধয়তি ॥ ২৩॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

স্বস্য বৈশ্যভাত্তন্তামপি বৈশ্যবাৰ্ত্তাং বিশিষ্যাহ ক্ষৰীতি। ক্বৰিবাশিল্প্যাভ্যাং সহিতা গোৱক্ষা কুশীদং বৃদ্ধিলীবিকা। গোর্ডসঃ গোরক্ষণবৃত্তমঃ অনিশমিতি ক্দাপ্যাপংকালেহপি ক্ষ্যাদিক্মস্মাভি নক্তিয়ত ইতি গাব এবাস্মাকং দৈবতন্তাং পূজ্যা ইত্যৰ্থ:॥ ২১॥ নমু গ্ৰামপি বৃত্তি ম'হেক্সাধীনৈবেত্যাশভ্য নিরীশ্বর সাংখ্যমতাশ্রবেণ নিরাক্রোতি সন্তমিতি দ্বাভ্যাং। অন্যোন্যং স্ত্রীপুক্ষবয়ো-

বোগেন॥

সর্বাত ইতি সমুত্রশিলোধরাদির্থাপি বৃষ্টিদর্শনায়াপ্রেক্ষা পূর্বাকতং বৃষ্টেরিতি ভাবং। তৈরেব মেবৈরেব সিদ্ধান্তি জীবন্তি ॥ ২২ ॥
কিঞ্চ গা বৃদ্ধয়ন্তীতি গোবদ্ধন ইতি বৃহপত্তে থাথার্থোনৈবায়ুভূয়মানত্বালগবাং বৃত্তি গোবদ্ধনাধীনৈবেতি গোবদ্ধনশ্চ পূজ্য ইত্যাহ
নৈতি ছাত্যাং। পূরং পত্তনানি জনপত্না দেশাং কিন্ত গোধনচায়কত্বাৎ বনৌকসং ॥ ২৩ ॥

তন্মধ্যে বৈশ্যদিগের বৃদ্ধি চতুর্বিধ, কৃষি, বাণিজ্য, গোরক্ষা এবং কুশীদ। আমরা গোপজাতি, গোরকাই আমাদের বৃত্তি, নিরস্তর তাহাই করিয়া থাকি॥ ২১॥

পিতঃ! সত্ত, রক্ষা এবং তমঃ ইতি তিনগুণ স্থান্ত স্থিতি প্রলায়ের হেডু, রজোগুণ দারা বিশ্ব উৎপদ হয়, তদনন্তর পরস্পার হইতে অফাফ বিবিধ জগৎ হইয়াছে। ঐ রজোগুণকর্তৃক প্রেরিত হইয়া মেঘ সকল সর্বত্রে বারিবর্ষণ করিয়া থাকে, প্রজাগুর সেই মেঘ দারাই জীবিত হয়, মহেন্দ্র করি-বেন । ২২ ।

হৈ তাত ৷ আমরা বনবাসী, বন ও পর্বতে বসতি করি, প্রুন, দেশ ও আম এ স্কুল আমটিলর কল্যাণ হেডু হইতে পারে না, বরং শৈলাদিই আরোদের যোগকেমের কারণ ৪ ২০ ছ ভদ্মদিরবাং ত্রাক্সণানামত্রেশ্চারভ্যক্তাং মধঃ। য ইক্সমধনংভারাক্তৈররং সাধ্যকাং মধঃ॥ ২৪॥ প্রচ্যক্তাং বিবিধাঃ পাকাঃ সুপান্তাঃ পায়দাদয়ঃ। সংযাবাপুপশস্কুল্যঃ সর্বলোহশ্চ গৃহতাং॥ ২৫॥

धीशवचामी।

বামণানশি সংগ্ৰুন্ নিগময়তি তত্মাদিতি। ত্ৰয়স্ৎপ্ৰেকিত্যাগপ্ৰয়োগকলনামাহ ব ইজ্মণসভাৱা ইতি সাৰ্ভণক্তিঃ। সভাৱাঃ সাধলানি ॥ ২৪ ॥

স্থাং মৌলাং। পারদং কেবলে প্রদ্ধী প্রং। সংযাবাদয়ো গোধ্যাদিবিজিয়াঃ। ক্রমণ্ট স্থপগ্রসরোঃ ঞ্ত্যা দোহস্যার্থভো-ইন্যোবাং পাঠতঃ ॥ ২৫ ॥

বৈক্ৰতোষণী।

ভশাদাদীবাদাৎ তত্র ত্রাদ্ধানাং গ্রাদিবং প্রাগছকি: সর্বাদ্ধার্ত্র। সামাস্ত্রত ব্রাহেরিতি ভাব:। তথাচ মছ:। উত্তমাদোহবাজ্যৈগ্রাছ্দ্রশন্তিব ধারণাৎ। সর্বতিবাজ সর্গজ ধর্মতো ত্রাদ্ধণ: প্রভ্রিত। আদীব্যত্রোক্তম্পেণ বনজাম্ভিদ্রেবিভাগ্নি
প্রান্তি:। অআন্তরের বা মুখ্যথাং। যথা স্থান্দে। অহা বৃদ্ধাবনং রমাং যত্র গোবর্দ্ধনো গিরিরিভি। অত্র দেবতানাং সম্করাং।
মথক চৈকবচনোক্তে দেবতাত্র্যারাধনাত্মক এক এবারং মথো জ্বেয়:। বন্ধ্যতে চ তদ্ধুব্যেণ গিরিছিদ্ধানিত্যাদি। ইত্যক্তিগোদ্ধিদ্ধান্ধ্যি
দিতিটা ওথাপি কৃষ্ণবৃত্তত্বমং রূপমিত্যাদিনা তত্তিব মহিষদর্শনাং। তদতেদদর্শনাক্ত শৈলকৈর মুখ্যথাং অবগম্যতে। যদ্যপি প্রীর্দ্ধাবনভূমৌ নন্দীব্রাইকুট বরসায় ধবলগিরিসোগিন্ধিকাদয়ের বহবোহজয়ের বর্ত্তত্ব। তথাপ্যত্রান্তি: প্রীগোবর্দ্ধন এব ভ্রামনিকজিবলাং।
পক্ষমে কুলাচলমধ্যে গণনেন তৎ পাদস্বরূপতভাদজেস্থতৈর মুখ্যথাং লোকশান্ত্রয়েতিতাব পূল্লনপ্রসিদ্ধাং প্রভিত্ত তত্তিব জ্বেয়বার্ত্রতিব ক্লোচলমধ্যে গণনেন তৎ পাদস্বরূপতভাদজেস্থতৈর মুখ্যথাং লোকশান্ত্রয়েবিভাগেন তত্তির স্থিতত্বেন্দ্র তত্তির ক্লিয়বার্ত্তিতাদিপ্রসিদ্ধেন্দ। তরামগ্রহণ অতিস্থিতিত্বেন ব্রন্ধান্তিবান্দির ক্রিল্ডান্তি দেবতানিরাকরণেন ইক্রন্তা প্রধান্ত্রতাক্তে:। এবং জ্ব্যাহরণপরিশ্রমীভাবন্দ স্তিত:। এতচ্চ তত্তাধিকলোণ্যসাত্রসান্ত্রমান্ত্রাগত্তিব বিশিষ্ট্যাং। ২৪।
নাবিলেষাং প্রত্যুত বৈশিষ্ট্যাং। ২৪।

নহে ক্রমণগাদপ্য হং মধো বিশেষতঃ সংপাদ্য ইত্যাশ্রেন তরিধিবিশেষমুপদিশতি পচান্তামিতি চতুর্জিঃ। পাকাঃ পচনীয়া অন্নব্রঞ্জনাদ্যঃ। ত্পা ব্যঞ্জনাদি। আদিশব্দেন গৃহীতানামপি সংযাবাদীনাঃ পৃথগুজিঃ প্রাচুর্যাপেক্ষর।। সর্বাদেহর বিবরণং যথা হরি-বংশে। ত্রিরাত্তিগেব সন্দোহঃ সর্বাদেষয় গৃহতামিতি। অন্যবৈঃ। ত্র ক্রত্যা আদ্ভাশক্রপমিত্যর্জনে। দোহস্য ক্রম্য আর্তঃ প্রয়োজনবশাৎ প্রথমত ইত্যর্থঃ ॥ ২৫ ॥

क्रयमन्दर्धः ।

জন্মাণালীব্যথাৎ। সত্ৰ সৰ্ব্বত্ৰ প্ৰসিদ্ধেঃ ব্ৰাহ্মণা অপি সংগৃহীতা। দেবতানাং সমূচ্ছ্যাৎ মধস্য চৈক্ষাৎ দেবতাত্ৰয়াৱাধনাত্মক-এবায়ং মধঃ। তথাপি গোবৰ্জনস্য মাহাত্মাবিশেষদৰ্শনাত্ত্মীয়তা প্ৰসিদ্ধিঃ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥

🗃 বিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

প্রাক্ষণানামাশিষো হল্মাকং প্রত্যক্ষকণা ইতি তেহপি পূজা ইতি শ্বমতে তানপ্যসূত্রররাক্ষীতত্মাদিতি। সংভারাঃ সাধনানি ॥২৪॥

রু পাকা অন্নব্যক্ষনাদরঃ। স্থান্তা ইতি স্থাস্য ঔষ্ঠাং। পারসাদর ইতি পারস্স্য শৈত্যমপেক্ষিতং ভবজীতি ভাবঃ। সংখাবাদরো গোল্যাদিবিজিনাঃ। সর্কেবাদেব ব্রন্থসিনাং দোহে দোহেশ্বিত্রদধ্যাদিসক্ষরঃ॥ ২৫॥

অতএব গো, ত্রাহ্মণ এবং পর্বতের যজ আরম্ভ করন। ইস্ক্রেযজার্থ বে সকল দ্রব্য সামগ্রী সংগৃহীত হইরাছে তদারাই এই যজ সম্পূর্ণ হউক ॥ ২৪॥

া পায়সাদি মুন্স ও সূপ পর্যন্ত বিবিধ প্রকার পাক তথা গোধুমাদি বিকার, পিউক এবং শকুলী প্রস্তুত হউক, আর সর্বে প্রকার দোহন গ্রহণ করা যাউক ॥ ২৫ ॥ হুয়স্তামগ্র: সম্যণ্রাক্ষণৈ র স্থাদিভিঃ। অন্ধং বৃহগুণং তেভ্যো দেয়ং বো বেমুদক্ষিণাঃ। অন্যেভ্যুদ্দাশ্বচাগুলপতিতেভ্যো যথাহতঃ॥ ২৬॥

যবসঞ্চ গবাং দন্ত্রা গিরয়ে দীয়তাং বলিঃ। স্বলঙ্কতা ভূক্তবন্তঃ স্বস্থূলিপ্তাঃ স্থবাসনঃ। প্রদক্ষিণক কুরুত গোবিপ্রানলপর্বতান্। এতন্মম মতং তাত ক্রিয়তাং যদি রোচতে ॥ ২৭॥

औरतवारी।

যাগশোভার্থ: শ্রেছাৎপাদনার্থঞাত তুয়ন্তামিতি। ধেলুদক্ষিণা: ধেলুসহিত। দক্ষিণা: তা এব বা দক্ষিণা: বো যুম্মাডি: ॥ ২৬ ॥ যবসং ভূণ: ॥ ২৭ ॥

বৈষ্ণদতোষণী।

ক্রমবিধিমাহ হুয়স্তামিতি। বেদাভ্যাদপরৈত্র ক্রিনৈরেরর: সম্যক্ হুয়স্তাং। যদ্বা। সম্যগ্তির ক্রিণৈরিঞ্বত্রাক্রণৈরিত্যর্থং। বছৰং পার্হপত্যাদিত্রয়াপেক্ষয়া দক্ষিণাগ্রেরপি তত্ত্র রক্ষ আদিহননাপেক্ষয়া গ্রহণং বছগুণমিতি বছবিধমিতি বা পঠিং॥

অন্যেভ্যা ঋত্বিগতরেভ্যো বিপ্রেভ্যো বৈষ্ণবেভ্যো দীনেভ্যো যাচকেভ্যশ্চ। কিং বিশেষনির্দেশেন খাদীনভিব্যাপোবারাদিকং দেয়ং। যথাইতো যথাযোগ্যং দেয়ং কেবলমিস্কং বর্জরিত্বেতি ভাবঃ ॥ ২৬॥

গ্ৰাং গোভ্যঃ বলি ৰ্গৰপুষ্পাছ্যপচারঃ॥

নচান্যক্তাবদিদং ছংখদাধাং কিন্তু পরমন্থ্যময়মেবেডাাই স্থলমিতি। ভূকবন্ত ইতাত্র প্রাক্ পশ্চাং ইব শব্দাপ্রয়োগো দরিদ্রং প্রত্যেব ভ্রচনৌচিত্যাও। যদ্যপ্রেক্টিবাত্র গবাদীনাং পরিক্রমবিধানং ভ্রথাপি তত্তংপুলান্তে পৃথক্ পৃথগেব জ্ঞেয়ং। পূলান্তক্তিবাত্রান্তমা। অতএব গোধনানি পূরস্কৃত্য গিরিং চক্রু: প্রদক্ষিণং ইতি গিরে: পরিক্রমঃ পৃথগেব বক্ষাতে। উদাহরিষ্যমাণহরিবংশ-বচনেন্চ নান্যথার্থ: কল্পাতে। স্থলস্কৃত্য ইত্যাদিকানিত্র নতু বিশেষণানি কিন্তু প্রেরোচনার্থম্পলক্ষণানি ততো নাঙ্গরে প্রিক্রিক্তান্তি তাবেছপি ভলিঃস্পৃহত্বেপি ভংগিদ্ধে:। ভঙ্গাদাবাদীনাং ভোজনাও পূর্বামেব পরিক্রমঃ। অন্তেম্ব মহাভোজনসমাধানারেব তৎপশ্চাদিতি গবাঞ্চ পূজা ন স্কাসাং অসংখ্যত্বাং কিন্তু ম্থ্যানামেব। ভতন্তাসাং পরিক্রমশ্চার ইতি॥

হে ত্তাতেতি যদি মন্ত্রি কোঁছো বর্ততে তহি ক্রিয়তামিতি গুঢ়োহভিপ্রায়ঃ যদি রোচত ইতি পুঞ্জেয়ু তথৈবাকের্যোগ্যস্থাৎ। তেনচ বিনয়বিশেষেণ তৎক্বতাতামেব সম্পাদয়তি॥ ২৭ ॥

ক্রনসন্দর্ভ:।

ক্রমবিধিমাহ। হ্যস্তামিতি। স্বলঙ্কৃতা ইত্যাদিকানি প্ররোচনার্থমুপলক্ষণানি নতু বিশেষণানি তানি বিনাপি ফলসিছে:। অত শুক্তানস্তরং তত্তংপ্রদক্ষিণা ভোজনানস্তরং শ্রীপোবর্দ্ধনপরিক্রম:। গোধনানি পুরস্কৃত্যেত্যাদি পৃথগুক্তে:॥ ২৬ ॥ ২৭ ॥

औ বিশ্বনাপচক্রবন্তী।

যাগশোভার্থ: শ্রেষ্পাদনার্থকাই হ্রস্তামিতি। ধেমুসহিতা দক্ষিণা: বো যুদ্ধাভি:। স্বমতে অন্তাঞ্পর্যস্তান্ সর্কানেব এজ-বাসিনো হয়ুকুলররাই অন্যেত্য ইতি ॥ ২৬॥

বলির্গন্ধ পূসাত্যপ্রার:॥ ২৭ ॥

অপর ত্রহ্মবাদী ত্রাহ্মণগণ সম্যক্ প্রকারে অমিতে হোম করুন, আপনারা তাঁহাদিগকে বছণ্ডণাই বিত অম এবং ধেমু সহিত দক্ষিণা দিউন। কুরুর, চণ্ডাল ও পতিত প্রভৃতি অন্যান্ত ব্যক্তিদিগকেও যথাযোগ্য দান করা যাউক॥ ২৬॥

সম্প্রতি গোসকলকে তৃণ দিয়া পর্বতকে পুজোপহার প্রদান করুন এবং উত্তম রূপে আহার করিয়া শোভন বসন পরিধান পূর্বক হুন্দর রূপে অলঙ্কত তৃথা অনুলেপিত হইয়া সো, আলাণ, অনল এবং পর্বত এ সকলকে প্রদালিণ করুন। হে তাত। আমার এই মত, যদি ইছো হয় তবে এই প্রকার করুন। ২৭॥

षप्तः भाजान्त्रगासीगाः मञ्च मित्राजा मथः।

खिलक छेबाठा

কাল্বাস্থনা ভগৰতা শক্রনপজিবাংসয়া। প্রোক্তং নিশম্য নন্দাদ্যাঃ সাধ্বগৃহ্স তৰচঃ।
তথা ক্রিদ্রাদশুঃ সর্বাং যদাহ মধুসূদনঃ॥ ২৮॥
বাচয়িছা স্বস্তায়নং তদ্বোণ গিরিভিজান্। উপছত্য বলীন্ সম্গাদ্তা যবসং গবাং।

अधवयांगी

সর্কান্ শিরঃকম্পেনাস্থ্যোদয়রাহ গোব্রাহ্মণান্তীণামিতি। মঙ্গ মমচ ॥ ২৮ ॥
· তন্দুব্যেণ তেন মহেক্রমধন্তব্যেণ গিরিধিজান্ প্রতি যথাযথং বলীমুপজ্ত্য দক্ষা আদৃভাঃ সাদরাঃ ॥ ২৯ ॥

देवकवरकीयगी।

কিঞ্চ অন্নং গোত্রাহ্মণাস্ত্রীশ্বং মধ্যে মহুং চ দ্বিতো হিত ইতার্থ:। হিতার্থযোগে হি চতুর্পী ভবতি। কথমণি অহিতং জ্ঞাত্বা মদ্ধিত-তৈবচ ভবদেককর্ত্তবাতামহুভূর ভবস্তমিদং প্রার্থনে ন কেবলং যুক্ততামেব নিশ্চিত্যেতি ভাব: ॥

কালস্যাপ্যাত্মনা প্রবর্তকেনেতি সর্ব্বোং তদেকাধীনত্বং স্টিতং। আরং তহুটোগ্রহণে হেতু:। বহা। পরমণজিসত্বং। অত-ইজনপতিল্যেইংকর ইতি ভাবং। বহা বদা পক্ষবাগঃ প্রবর্তিভন্তনানীং সএব প্রবৃত্তঃ। অধুনা চারনেবেতি তদিছ্টেরব সর্বাং প্রবর্তিতে তামতিক্রমিত্ং কং পক্ষোতীতি ভাবং। বহা। কালং খ্যামল আ্যা দেহো বন্তেতি খ্যামন্ত্র্পরেণভার্থঃ। তংশোল্পরিটেব সর্ব্বে বনীক্বতাঃ কিং পুনর্ব্চনেনেতি ভাবং। বহা। কলরতি লগচিত্রনাকর্বতীতি কাল আ্যা অভাবো বদ্য তত্তহচনাক্রিক্রপ্রিদং ন চিত্রমিতি ভাবং। পক্রস্য যো দর্পঃ প্রস্থানান্যাপি অপিত্রাদির প্রাক্তগোপদৃত্তা তেবাং সহজেন ক্রিরূপি মার্ত্য দৃত্তা বাদ্মনাদ্যাভ্রতংগ। বিত্রমান্যাভিত্য বে চক্র্দেবহেলনমিতি প্রাক্তিটা বাদ্মনাদ্যাভ্রতংগ তার ক্রম্পর্বানিত্য বে চক্র্দেবহেলনমিতি প্রাক্তিটা লক্ষ্যমান: তদ্য ত্রমং জ্ঞারমানদ্য জিঘাংসর্হত্তেব মন্থাং জনব্রিক্র্তেং। অন্যথা ভর্মেব স্যার্মন্থ্যঃ। মন্থালননঞ্চেদং তন্মস্থাস্বন্ধেনৈব তদ্যত্যক্তক্রত্তি॥

শত এবাহ তথা চেতাৰ্ককেন। তৰিশেষণ্ট শ্ৰীহরিবংশে। আনন্দলননো বোষো মহামুদিতগোকুল:। তুর্যপ্রশাদঘোষণ্ট বুষভাগাঞ্চ গজিতৈ:। হৰারবৈশ্য বংসানাং গোপানাং হর্ষক্ষন:। দল্পে এদঃ সরাবর্ত্তঃ পরঃকুল্যা সমাকুল ইত্যাদি মধুসদন ইতি পরম্নামর্থাস্ক্রনেন শক্রাত্ত্বোং ভরাভাবং বোধয়তি স্নেবেণ মধুপবং সারগ্রাহী মিষ্টর্মন্য বিশেষেণ ভোক্তা চেতি। ত্যা প্রিয়ভমদাস্বর্থামধ্যবর্ত্তনং তত্ত্বচ বক্ষ্যমাণভছলিভোক্ষনাদিকং যুক্তাত এবেতি ভাবঃ ॥ ২৮ ॥

বাচয়িছেত্যাদি সাৰ্দ্ধৰয়কেন সকলবৈ্যবান্দাতে ক্ৰমস্ত একিফোজৰবিধান্ত্সারেশৈব জেয়:। আদৃতা ইতি কর্ত্যার্ধং॥ ২৯॥

ক্রমসন্দর্জ:।

জন্নং গৰাদীনাং মথো মহুং মম চ দ্বিতো হিজ:। শক্রণ্য দর্শেহিরং শ্রীগোকুলে শ্রীক্রফেচ অবজ্ঞান্মক:। অহো শ্রীমদমাহাত্ম্য মিজ্যাদিনা ব্যক্তীভাবিতাং ॥ ২৮॥

বাচশ্বিছেত্যাদিকং অধুবাদমাত্রং ল ক্রমতাৎপর্যাকং ॥ ২৯ ॥ ৩ • ॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্ত্তী।

मंदर वम । कानायाना हेळ्मथनः हात्रक्त ॥ २৮ ॥

ভদুবোণ ইক্রমণজবোণ গিরিবিজান গিররে বিজেতাশ উপজ্তা দবা আদৃতাঃ কৃষ্ণেন গবাং গোতাঃ। অনভ্তিরনোরাংকৈ-

এইরপ বজ্ঞ গো বিপ্র প্রভৃতির প্রিয় এবং আমারও অভীপিত। শুক্দেব কহিলেন হে রাজন্! কালক্ষণী ভগবান হরি ইন্দ্রদর্শসূর্ণকরণ বাসমায় ঐ রূপ বলিলে নন্দ প্রভৃতি গোপগণ শুনিয়া সর্বতো-ভাবে তদীয় বচনু গ্রহণ করিলেন, আর তিনি যে প্রকারে যাহা ২ বলিলেন সেই প্রকারে তৎ সম্-দায় বিধান করিলেন। ২৮॥

भारत चिख्यामन कतारेवा रिक्यस्कार्य खेवा बाँता क्षत्र ७ क्एमविमिट्गत यथारवागा विन क्षान्त

গোধনানি পুরস্কৃত্য গিরিং চক্রুং প্রদক্ষিণং ॥ ২৯ ॥ অনাংস্থনভূদযুক্তানি তে চারুছ স্বলঙ্কাঃ। গোপ্যশচ কৃষ্ণৰীর্য্যাণি গায়ন্তঃ স্থিকাশিমঃ ॥ ৩০ ॥ কৃষ্ণন্ত কৃষ্ণন্ত কৃষ্ণা কৃষ্ণন্ত কৃষ্ণা কৃষ্ণা

श्रीभव्यामी ।

অন্তুল্ কানি উত্তমান্ত্তিয়্ কানি সৰিজাশিবঃ বিজাশীর্ডিঃ সহিতাঃ ॥ ৩০ ॥ গোগবিস্তত্ত্বং গোপানাং বিশাসজনকং রূপং গতঃ প্রাপ্তঃ সন্ ব্লিমুপ্হারং আদৎ অর্কুন্দরং ॥ ৩১ ॥

देवस्थवरकावनी।

কথং চকু স্বত্তাহ অনাংসীতি। তৰিশেষশ্চোকো হরিবংশে। ততো নীব্রাজনার্থং বৈ বৃদ্ধশো গোকুলানি বৈ। পরিবজ্ঞ গিরিবরং সব্বাণি সমস্কতা। তা গাবং প্রক্রতা হুটাং সাপীড়কনকালদাং। সল্রগাপীড়পুলাগ্রাং লতপোধ সহস্রশা। অফুলগ্মুন্চ গোপালাঃ কালরন্তাে ধনানিচ। তক্তিছেলাফুলিপ্রালা রক্তপীতাসিতাম্বরাং। মায়ুর্চিত্রালছিনো ভূকৈং প্রহরণাবৃত্তিঃ। ময়ুর্পত্রচিত্রন্দ কেশ-বিদ্ধান্ত ব্যাজিকৈঃ। বল্লাকুর্ষিকং গোপাং সমবারে তদাড়ুতে। অস্তে ব্রানাক্ষক্র্তিরিশ্ব পরে মুলা। গোপালাম্বরে প্রিক্তির বর্গগামিন ইতি। অতা গোকুলানীতি গোকুলন্তা জনা ইত্যর্থঃ। সর্বাণীতি তানিচ নিজনিক্ত্রেটাং সহ বর্ত্তমানানীত্র্যা। গোপাল্টানাংলাক্ষ প্রদ্দিণং চকুরাভ্যামুভরেবামপি প্রাধান্যন পরিক্রমণে নির্কিশের মুক্রা শ্রীগোপীনাং কঞ্ছিবিশেব্যান ক্ষান্ত বীর্যাণি শ্রীগোর্বন্ধন্যক্ষ প্রবর্ত্তনান্তানি গারন্তা ইতি সন্ধ্রাশির ইত্যনেন বিপ্রা অপি সন্ত্রীকাং প্রদক্ষিণং চকুরিতি স্চ্যতে ॥ ৩০॥

ইক্রযাগাদপি অপ্রবর্তিরা যাগভাভ পরমোত্তমত্ব দর্শরন্ তামিন্ বিখাদং নিতরাং জনরন্ শ্রীগোবর্জনমিবেশ পৃথক্ স্বরং তক্রিনিবিভূবি তহলিম্বানিনং নিজদাদক্র্যাং তং গোপাংশ্চ সর্কানানন্দরন্ বলিদানানস্তর্মেব সাক্ষাত্তবলিং বুভূজে ইত্যাহ কৃষ্ডিতি। তুশকং

ক্রমসন্দর্ভঃ।

অন্যতমমিতি তমপ্রতায়েন তদানীং তত্তংসমাধানার্থং অভাভপি বহুনি রূপাণি প্রাহ্রতানীতি লভ্যতে। বহুনাং প্রকর্ষে

🗷 বিশ্বনাথচক্তবর্ত্তী।

বুঁ বৈ যুঁকোনি। তে গোপাশ্চ গোপ্যশ্চ প্ৰদক্ষিণং চকুঃ। সৰিজ্ঞাশিষঃ গীয়মানাভি বি জ্ঞাশীভিঃ সহিতাঃ। বিজক্তৃকাশিষোহিপি গায়ন্তা ইত্যৰ্থঃ॥ ৩০॥

স্থাবর্ত্তিযাগদ্যাদাধারণমূৎকর্বং দর্শরংস্তত্ত দর্শেবাং বিখাদং জনয়ন্ স্থামেব দেবতারপেণ প্রত্যক্ষীবভূবেত্যাই কৃষ্ণিতি। অন্যতমং গোবর্দ্ধনপর্বতোপরি বিভীয়ং পর্বতমিব সর্প্রেক্তিয়বং স্থাক্রত্বং আগুঃ গোপানাং বিস্তন্তং পর্বত এবায়মিতি বিখাদো
যত্ত । শৈলোহন্দীতি এতদ্বেশাধিপতিরহমেব যুদ্ধক্ত্যা প্রদল্প: প্রাত্ত্রত্বং স্থাভিমতং বরং বৃগ্তেতি ক্রবন্ বলিং নৈবেদ্যং দ্রুইছেনি কটছৈ নিক্রামাদিবর্তিভি বা অলবাসিজনৈরপরোক্তঃ পরোক্ষতো বা ধ্যানেন সমর্প্যমাণং সহস্রকোটহত্তত্ততঃ স্থানাদতিদীর্ঘানতিদীবীক্তপানিভিরাদার তাংখ্যানানক্ষরাদং ভূঙ্কে ম ॥ ৩১ ॥

করিলেন এবং সাদরে গাভীর্দিগকে তৃণ দিলেন। তদনন্তর গোধন সকল অগ্রে করিয়া পর্বত প্রদক্ষিণ করিলেন॥ ২৯॥

তাঁহারা সকলেই উত্তমরূপে অলঙ্কত হইয়া প্রকৃষ্ট র্যভ মুক্ত ভূরি ২ শকটে আরোহণ করিয়া-ছিলেন। গোপীগণও আক্ষাণিগের অশীর্বচন সৃহিত জীক্তের বীর্য্য গান করত শকটারত ভ্রেমাণ ছিলেন॥ ৩০॥

ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ গোপদিগের বিশাসজনক অক্ত প্রকার রূপ গ্রহণ করিয়া "আমি শৈন" এই বাক্য উচ্চারণ করত পুজোপকরণ ভক্ষণ করিয়েন। তৎকালে তাঁছার কলেবর বাভিনয় দিশাল তিমে নমো ব্রক্সনে: সহ চক্রে ইত্মনাত্মনে । অহো পশুত শৈলোইসো দ্বপী নোইমুগ্রহং ব্যধাৎ ॥৩২ এবোইবজানতো মর্ত্যান্ কামরূপী বনৌকসঃ। হস্তি ছব্মৈ নমস্থামঃ শর্মণে চাত্মনো গ্রাং।

विधन्नवासी।

ভদ্মৈ জান্ধনে জান্ধনা স্বরং এজজনৈঃ সহ নমশ্চক্রে। জহো ইতি সার্দ্ধলোকং পঠন্ ॥ ৩২ ॥ কামরূপী স্পাদিরূপঃ ভদ্মৈ জনুরে শর্মণে কেনার। কন্মিবালং প্রাক্ স্বভাবো গুণো বা ক্সালং বা, ভদ্মো বা মহেশঃ। বার্কা-

देवंकवरकावनी।

পূর্বতোবিশেষে। অন্তর্জনিতি বহুলাং প্রাকর্ষণ মছিধানাও। অতত্তলা সর্বাক্ষণ সমাধানার্থং সর্বাগোপগোষ্ঠীসস্থোবার্থমলকিতং বছনি ক্ষপাণি আবিদ্ভানীতি লভাতে। তামিন্ প্রকর্ষণ বৃহস্বাপেক্ষরেতিক্ষণমাকারং অতএব বৃহস্পর্যত তং। অতএব ভূরিং প্রাচ্রতরমণি বলিং তং সর্বামের অভ্তকে। এবং সর্বাগৌকুলবাসিনাং তাণুলপ্রেমেক্ষাতত্তত চ তথা লালসাত তথা ভোলনমিতিচ জ্বেং। তছকং হরিবংশে। তং গোপাং পর্বভাকারং দিব্যত্রগন্ধলেপনং। গিরিম্দ্রি ছিতং দৃষ্ট্র দ্বন্তী জন্মঃ প্রধানত ইতি॥৩১॥

তামা ইতার্দ্ধকং কৃষ্ণ ইতান্থবর্ততে। প্রজ্বনিং সহেতি প্রস্তানানামপ্রাধান্যং ব্যক্তা কৃষ্ণত ভক্তাতিলয়ব্যক্ষকত্বং ব্যক্তিছং। চক্রেংস্থানেতি আকাবিহণি পূর্বাক্ষপ্রমার্থং। আল্লনা স্বয়মের তার নানাজনবচনং অহো ইতি সান্ধিকং ক্রণী প্রত্যক্ষঃ সন্মিত্যর্থঃ অন্তর্গাহং ব্যধাৎ। ক্রণিয়েন সাক্ষান্ত্যাদানাদিনা চ॥৩২॥

অভকাংশ্চ নিহ্তীত্যাহ এব ইতি অবজানতঃ অবজ্ঞাং কুৰ্বতঃ। সর্বেষাং সাক্ষান্তদবশেষবলেঃ স্বয়মেব ভক্ষণং দৃষ্ট্ ভি ভাবঃ।
বৰা যাগাকরণেনানাদরং কুর্বত ইতি পুনঃ পুনতদ্বাগোহভিপ্রেতঃ। মর্ত্যান্ মরণধর্মশীলান্ ভক্রাপি বনৌকসঃ গৃহহারাদ্যাবরণশুন্যানিতি হননে স্কর্বং দর্শিতং। হে বনৌকস ইতি বা। চকারাদ্যাবাদীনাং রোগোংপাদনাদিনা পীড়য়ভি চেতি। পাঠাস্তবে হি যুদ্মাং হস্তি অতো বয়ং নমস্যামঃ বন্দেমহি আয়ুনো গ্রাঞ্চ শর্মণে। যহা আয়ুনো যা গাবজ্ঞানামিতি গ্রাং শর্মণৈব তেহাং
জীবনসিকেঃ। অতা পিত্রাদিছপি নমস্বারপ্রেরণেয়ং তেন রূপেণাবতারাস্তরেশৈব পুত্রভাভাবাং ন বিক্রনা। নারায়ণাদিরু তেহাতথা ব্যবহারাং। এতদনস্তরং সাক্ষান্ত্র্যা বৃহ্মুর্ভেরাদেশশ্চ শ্রীহরিবংশে। অদ্য প্রভৃতি চেজ্যো হহং গোষু চেদ্ভি বো দ্যা। অহং
বঃ প্রথমা দেবঃ সর্বকামকরঃ শুভঃ। মম প্রভাবাচ্চ গ্রামম্তান্যের ভক্ষ্যথ। শিবশ্চ বো ভবিষানি মন্তকানাং বনে বনে। রংস্যোহ্রং
সহ যুম্বাভির্যথা দিবি গতন্তথা। যে চেমে প্রথিতা গোপা নন্দগোপপুরোগনাঃ। এবাং প্রীতঃ প্রযুদ্ধামি গোপানাং বিপুলং ধনং।
পর্য্যাপুরন্ত বিপ্রা মাং গাবো বংস্সমাকুলাঃ। এবং মম পরা প্রীতি ভবিষ্যতি ন সংশ্যু ইতি॥

বাস্থদেবেন সর্বাধিষ্ঠাত্রা প্রচোদিতা ইতি তেষাং জত্পদিষ্টবিধানতিক্রম:। তত্ত্ব সর্বান্ধনা স্থপসমতিবিশেষোহণি দর্শিতঃ।
যথা যথাবং। সহক্রফাঃ ক্রফেন সহিতা ইতি প্রীতিবিশেষোদয়েন তং তাক্তুমশক্তান্তেন মিলিছৈব গোবর্দ্ধনেশানকোণস্থশীরাধা-

ক্রমসন্দর্ভ:।

. जमअक्षेष्ठक तृरुचमारवान ॥ ७১ ॥ ७५ ॥ ७५ ॥

এবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

ততণ্চ তব্দ্ব আত্মনে আত্মনা দেহেন স্বয়ং ব্রক্জনৈঃ সহ নমণ্চক্রে। আত্মনে ইত্যাকারন্যোপ আর্বঃ। অহো ইতি সার্ক্রনোকং পঠন্ ॥ ৩১ ॥ ৩২ ॥

कामक्रभी मर्नामिक्रमः। हि छत्राए॥

ব্দিরীশ্রমীমাংসাদাঝ্রোক্ররীকৃতিভাদিজ্ঞমণ্ডলার্থ: নভু তে সক্ষতে সভাই। যথাতঃ শ্রীশ্বিদিচর্ণা:। ক্রেরালং প্রাক্

更刻 || の2. ||

তদনন্তর ব্রেজবাসিনিগের সহিত আপনি আপনাকে নমস্কার করিলেন এবং এই বাক্য বলিতে লাগি-লেন, কি আশ্চর্য্য দেখ, এই মূর্ত্তিমান্ পর্বতে আমাদিগের প্রতি অমুগ্রন্থ বিধান করিতেছেন ॥ ৩২ ॥ কামরূপী এই শৈল লগাদিরূপ হইরা, যে সকল বনবাদী অবজ্ঞা করিতেছিল ভাহাদিগকে হত্যা করিতেছেন, আইস, স্থাপনাদের এবং গো সকলের কেমার্থ আমরা ইইটকে নম্কার করি। তে রাজন্। ইত্যন্তিগোদিজমথং বাহ্ণদেবপ্রচোদিতাঃ। যথা বিধায় তে গোপাঃ সহক্ষা জ্ঞাই যরু:॥ ৩০॥
॥ #॥ ইতি প্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং দশমক্ষে ইন্দ্রমথভঙ্গশ্চত্রিংশোহধ্যায়ঃ॥ #॥ ২৪॥ #॥

ত্রীবাদরায়ণির বাচ॥

ইক্সন্তদাত্মনঃ পূজাং বিজ্ঞায় বিহতাং নৃপ। গোপেভ্যঃ কৃষ্ণনাথেভ্যো নন্দাদিভ্যশ্চুকোপ হ॥১॥

औधत्रवात्री।

কৰ্ত্ৰী দেবতেতীয়মূক্তা দেবক্ষোভেষন্মতী নম্বভীষ্টা॥ ৩০॥ ॥ #

॥ *॥ रेिंछ मन्द्रम ह्यू विर्मः ॥ *॥

পঞ্বিংশে ক্ষমা শক্তে ব্রন্ধনাশায় বর্ষতি। উদ্ধ ত্য গিরিমাগারাদরক্ষৎ গোকুলং প্রাভূ: ॥ • ॥ 💎 ক্লো নাথো যেষাং তেভা: ॥ > ॥

বৈষ্ণবতোষণী।

কুণ্ডাৎ ক্রোনৈকোপরি হিতং ব্রজং ব্যুরিভার্থ:। ইথং দেবতানিরাকরণকর্মবাদাবভারণেন কর্মণাং প্রাধান্যং স্থাপিতং। তত্রচ সংস্কারবদেনৈর কর্মপ্রবৃত্তিরিতি সংস্কারস্য কর্মন্তবন কর্মনিষ্ঠতৈবাভিত্রতা। অতোহস্কর্মানা বধা প্রের্যান্ত তথাস্থারত ইতি ন্যায়েন ঘটনানা কর্মানাস্ক্রিরণি পরিস্কৃতা। তত্রচ সন্থাদিগুণস্বভাবেন জীবিকাবশ্যং দিদ্ধোদিভি ভদর্থপ্রসাসভাবেন কদাচিৎ কর্মণো লোপক নিরন্তঃ। যোগক্ষেমক্রিলোপজীব্যাবশাপ্জোকে:। ইতি সর্মণা কর্মণাং প্রাধান্যমেব দৃদীকৃতং তচ্চ সর্মমশেষ-কর্মপ্রধাননিকভক্তিপরতার্থমেব। ভক্তিপরতারাক্ষ মুখ্যলক্ষণং তন্তকার্চনমিতি হরিদাস্প্রিগোবর্জনপ্রনমিতি সিদ্ধান্তঃ। তত্র নিগৃত্তারং প্রক্রাভিপ্রারঃ। যোহহং পূর্ণপরমেশ্বঃ সত্রব তেবাং প্রাদিরপঃ তথা কোনাম্যমীশ্বঃ কা বা দেবতা অন্যা প্রক্রিক তৎপ্রেমমন্ত্রঃ সভাব তব স্থাৎ। যদিচ নরলীলয়া দেবভাস্বীকারন্তদা মরিকটসন্থনিন্য তব যুক্ষ্যেরন্ তথাপি নরলীলা-রক্ষার্থং ন তব্যপ্রিত্যুৎসহে ভ্রমারিরীশ্বরমীমাংসাসাংখ্যবাদাপদেশেনের তন্তবোধ্যিত্বা তথা প্রবর্ত্তরামীতি। তব্যনাত্রাপি সর্মন্তেন্তাহং॥ ৩৩॥

👞 ॥ *॥ देखि क्रिटेवक्षवटकाषणार प्रमाणिश्रनारः ठकूविर्मः ॥ *॥

বিজ্ঞার সাক্ষাদমূভ্য বিহতাং দ্রব্যাণামপান্যত্র ব্যরাৎ। ক্রফানাথেভ্য: তত্তাপি গোপেভ্যন্তাদৃশত্রজ্বাসিভ্যন্তত্তাপি শ্রীনন্দাদিভ্য-ইতি কোপেন হুর্মুদমত্ততা হুর্কু ্রিতা চ স্থতিতা। হ ক্টুমের। তদহুরূপবাবহারাৎ। স ইতি কচিৎ পাঠ: প্রমহ্র্কু ্রিরিভার্থ: ॥ ১॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

॥ * ॥ ইতি ত্রীদশমে ত্রীজীবগোশ্বামিক্তক্রমদলতে চতুর্বিংশঃ ॥ * ॥

উত্ত অপ্যর্থে সচ্ গর্ছারূপ:। দেবেক্সপ্যাপ্যযোগ্যপ্রবৃত্তে:॥১॥২॥৩॥৪॥৫॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

স্বভাবো গুণো বা কর্মাঙ্গং বা তরশো বা মহেশ:। বার্ত্তা কর্ত্তী দেবতেতীয়মূক্তা দেবকোভেষয়তী নম্বভীষ্টা॥ ৩৩॥

॥ * ॥ ইতি সারার্থনর্শিন্যাং হর্ষিণাং ভক্তচেত্রাং। চতুর্বিংশোহত্ত দশমে সক্তঃ সক্তঃ সভাং ॥ * ॥ পঞ্বিংশে সকোপোকাবিক্তে নাশার বর্ষতি। ব্রহ্মস রকামকরোছক্ ত্যাচলমচ্যতঃ॥ • ॥ কৃষ্ণনাণেভ্যোহপি চুকোপেতি ইক্তক্ত মৌঢাং তৎকোপস্য চ বৈষল্যং প্রথমত এব দর্শিতং ॥ > ॥

সেই সকল গোপ বাস্থদেবের মন্ত্রণায় উক্ত প্রকারে পর্বত গো এবং বিপ্রদিগের যজ্ঞ যথাবৎ সমুষ্ঠান করিয়া তাঁহার সহিত পুনরায় ব্রজে প্রত্যাগত হইলেন ॥ ৩০ ॥

॥ 🗰 ॥ - 🕏 छि मणरम ठ छूर्विः ण 🕫 ॥ 🕸 ॥

পঞ্চবিংশ অধ্যায়ে জোধ বণতঃ ইস্ত কর্তৃক জ্বজ বিনাশার্থ বারি বর্ষণ এবং জীক্ষকর্তৃক গিরি ধারণ পুরঃসর পোক্ল রক্ষা বর্ণন ॥ • ॥

শুক্ষের কৃত্তিনের রাজন্। সেই সময় কেবরাজ আপনার অর্চনার জিছেদ ক্ষরণত হইয়া নলাদি যে সকল গোপগণের শীক্ষই নাথ (প্রস্কু) জাহাদের প্রতি অভিশয় কুপিত হইলের ি ১ ম পশং সম্বর্ধকং রাম মেখানাঞ্চাজকারিশাং। ইন্দ্রঃ প্রাচোদয়ৎ কুছো বাক্যঞ্চাহেশনাস্থাত ॥ ২ ॥
আহো জীমনমান্তাজ্যং পোপানাং কাননোকসাং। কৃষ্ণং মর্ত্ত্যমূপাঞ্জিত্যপ্রেষ চকুর্দেবহেলনং।৩॥
যথাদুট্যে কর্ম্ময়েঃ ক্রতুভির্নামনৌনিভৈঃ। বিদ্যামানীক্রিকীং হিন্তা তিতীর্যন্তি ভবার্বং॥ ৪॥

श्रीपत्रचामी।

কুছঃ সন্ ইস্তঃ সম্বৰ্তিং নাম সম্বৰ্তঃ প্ৰসন্ধঃ তৎ কৰ্তারং মেঘানাং প্ৰসিদ্ধং গণং প্ৰাচোদয়ৎ প্ৰেষরামাস। নমু কথং ক্লকনাথানাং বাতে প্ৰবৃত্ত ইত্যাশক্ষ্য আত্মসন্তাবনয়া নিষ্ণুত্তবিবেক্ছাদিজ্যাশয়েনাহ বাক্যঞ্চাহেত্যাদি পঞ্চিঃ ঈশমানী অহমেবেশর ইতি গর্কনিবান্। ২॥

८ प्रवट्टननः ८ प्रवश्च मर्भावस्ताः ॥ ७ ॥

অদৃঢ়ৈ অসমবৈ: কর্মানের ক্রিয়ানির্বতৈর পতএব নামনোদিতৈও নামমাত্রেণ বা নাব ইতি ব্যবহিন্ততে তৎ সুদৃট্য: জারী-ক্লিকীং আত্মান্ত্রত্বপাং ॥ ৪ ॥

देवकवरकावनी ।

- ক্লম্ভঃ প্রালয়ত্তংকারিণাং জতএব সম্বর্তকং নাম অপ্যর্থে চ শক্ষঃ। যদা চকারাদাবহুপ্রবহাদিবাতগণক। প্রাকর্ষেণ গর্মোক্যা তেখামুংসাহবর্দ্ধনাদিনা প্রেরয়ামাস। উত অপ্যর্থে স চ গর্হারূপঃ দেবেক্স্যাপ্যবোগ্যে প্রবৃত্তেঃ॥ ২॥

অহো আশ্রুণং কাননোকসানিতি নিক্তরমজ্জকাভিপ্রেতং। পত্যুপপতিশব্দবাপ্ররো নাম কুম ধর্মারি প্রাপ্তঃ উপাশ্রমজ্জোবিচ্যুত্য কতঃ তদেব মর্ত্যমুপাপ্রিত্যেতি দেবদেনার্থনো মর্ত্যাশ্রাহাত্মাসিংবাং দেবেত্যুক্তং ন চ মনেতি। তথা অমরত্যাংগন মর্ত্যাপ্ররপল্পাবোগ্যতাবোধরার্থকেতি মরি তাবদেববৃদ্ধিপি ন চকুং। অন্তত্যাং দেবদেববৃদ্ধিরিতি ভাবং। অত্র চ বনবাসিদেন গোপদেন চ
পর্মসাত্মিকাদিকং তেবাং কৃষ্ণং পরব্রহ্মাদিমসুব্যরূপং ইতি তক্ত চ ভক্তবাংসল্যং। অতত্ত্বর্থং ভক্ত দেবহেলনং যুক্তমেবেতি সরস্বতীবাঞ্জিতত্ত্বার্থ: ॥ ৩ ॥

অদৃদ্যৈ ক্ষিক্ষণকৈ: ৰত: ক্সমিয়ে: তথা তিতীৰ্ষন্ত মৃঢ়া: তথা শ্ৰীক্ষম্পাশ্ৰিত্য সমাপ্ৰিয়ং গোপাশ্চক্ৰুৱিত্যবিচাৰেণাবোগ্যা-চৰণমাত্ৰে দৃষ্টান্ত:। যৰা তথা মাং হিছা ক্ষণাশ্ৰৰেণ গোপা ভয়ত্যখাদিকং তিতীৰ্ষতীতি ইক্সম কোধাৰেশেনাসমাধ্য বাক্যং ক্ষেয়ং। তৰাৰ্থশ্চায়ং মুখা বৈষ্ণবা: ক্সম্ভি: সহাধীক্ষিকীং হিছা কেবলক্ষণাশ্ৰয়েণ ভবাৰ্বং ভিতীৰ্ষতীতি ॥ ৪ ॥

बिविधनाथहळावर्छी।

় কোপং বিরুণোতি পণমিতি। সংবর্জ: প্রলয়ভৎক্রারং মেঘানাং গণং চকারাদাবহঞ্জবহাদিসাংবর্ক্**ৰাতপণ্ঞ প্রাচোদরৎ** প্রেয়রামান। ঈশমানী অহমেবেশ্র ইতি গর্কবান্ ॥ ২ ॥

শ্রীশ্চ নদোহর্ষণ্ড মাহাস্ক্রাঞ্চ তেবাং ছবৈষ্কাং। মর্জ্যং মর্প্তেভ্যো হিডং। দেবন্য মম হুইছ হেলনমিতি সর্প্বভারণী বাজবং ॥ ৩ ॥ অদৃহৈ: অসমব্র্যং কর্মনের: কেবলক্মপ্রচুইররভএব নায়েব নৌতুল্যৈর তুবস্তুত। আৰীক্ষিকীমাত্মায়রমনানরপাং। বস্তুজ্জ কর্মনির: ক্রভুডি: সহ আৰীক্ষিকীং হিছা অবজ্ঞরা ত্যক্ত্ব। কৃষ্ণনাপ্রিভ্যৈব বৈষ্ণবা বথা ভবার্গবং ডিভীর্বতীতি কৃষ্ণাপ্রস্থাননিচিছাং। তেবাং ডিভীর্যানাত্মিতি ॥ ৪ ॥ °

ইক্স কুদ্ধ হইয়া অন্তকারি বারিদপ্টলীর যে প্রসিদ্ধর্গণ প্রলয় করে ভাহাদিগকে পাঠাইয়া দিলেন এবং আমিই ঈশ্বর এই গর্বে শব্বিত থাকাতে এই বাক্য বলিলেন ॥ ২ ॥

ব্যবাদি বোপদিসের ধনমদের কি আশুর্যা, মাহান্ত্যা। ভাষারা মাতুষ একটা কৃষকে আপ্রয় করিয়া আমি যে দেব আমার শ্ববজ্ঞা করিল। ০।

বৈষ্যা আৰু প্রভাৱন আক্ষান্ত্রারাণ কলা আইনিকনী কিন্যা প্রতিন্ত্রাক করিয়া প্রচুড় (ক্রিয়ানির্বর্ত্ত) বে সকল বাগ যক্ষ্য, বাছা নাম মাতে নোক সমুল, ভদারা ভবসাগর পার হইতে বাসনা করে॥ ৪ ॥

গ্রীধরত্বামী।

বাচালং বহুভাষিণং বালিশং শিশুং পণ্ডিতমানিনং পণ্ডিতম্বনাং অতস্তক্ষং অবিনীতং ইতি নিন্দায়াং বোজিতাপীক্রস্য ভারতী শ্রীকৃষণ স্তৌতি তথাছি বাচালং শাস্ত্রবোনিং এবমপি বালিশং শিশুবল্লিরভিমানং। স্তক্ষং অন্যস্য বন্যস্যাভাবাৎ অনমং। অজ্ঞং নান্তি জ্ঞোবম্বাক্তং স্বাজ্ঞানিত্যখানি । পণ্ডিতমানিনং ব্রহ্মবিলাং বহুমাননীয়ং কৃষ্ণং সদানন্দর্পং পূরং ব্রহ্ম। মর্ত্ত্যং তথাপি ভক্তবাৎসন্যামন্ত্র্যু-ত্যা প্রতীয়মানমিতি॥ ৫॥

অবলিপ্তানাং মন্তানাং গ্রাপিতাত্মনাং বৃংহিতদেহানাং ধুরুত অপনয়ত শ্রীমদেন বঃ স্তম্ভো গর্ক স্তং ॥ ৬ ॥

বৈষ্ণবজোষণী।

বাচালমিত্যাদিকং সতর্ককর্কশকর্মবাদাবতরণাদ্যভিপ্রায়েণ গোপাইতি নিরুষ্টবং মে ত্রিলোকীশ্বরেশত হর্মদভরেণ স্থচিতং। অশুক্তিঃ। তত্ত্ব স্বতিপক্ষে বাচালমিতি বাচা হেতুনা অলং সমর্থ ইত্যেবার্থঃ। মত্বীয় নিচ্প্রতায়স্থ নিন্দায়ামেবাভিধানাৎ। শিশু-বিশিত বালিশঃ শাবকে মূর্থে ইতি বিশ্বপ্রকাশাং। ত্রহ্মবিদাং মাননীয়মিতি তংকত্কো মানো বিদ্যতে ধত্তেতি ॥ ৫ ॥

এবং ছবৃত্তাতিশয়ার্থং তেষাং দোষং তেনায়্বলেষ বােষভরং চ বােধয়য়াহধুনা অকতামাদিশতি এষামিতি ক্ষেন হেতুনা প্রিয়া পশুবর্গলকণশন্তা মন্তানাং ইতানয়রং বৃংহিতদেহানাকৈতি বাহুং প্রথং দর্শিতং। তত্র চ ক্ষেক্ষেতি তংকতগোপালনাদিনা ক্ষীয়াহাপ্রেলিজি ভাবং। অন্তাইতঃ। তত্র ধমনং নাম সতেজবীকরণং তচ্চ বৃংহশতাৎপর্যকং পিচ্ প্রয়োগন্ত তেষাং কঠ্ বং ক্ষান্ত হেতুক্ত্ ছিমিক্যপেক্ষেতি জ্ঞেরং। যথা স্বতঃ প্রিয়া সগর্মাণাং বিশেষতঃ ক্ষেন সতেজবীকতি ভানামিতার্থঃ।

क्रयमण्डः।

স্বতঃ শ্রিমাব্লিপ্তানাং বিশ্বেতঃ শ্রীক্ষেন সতেজ্বীকৃত্চিন্তানামিত্যর্থ:॥ ৬॥ १॥ ৮॥ २॥

ত্রীবিখনাথচক্রবর্তী।

্বাচালং মীমাংসাসাংখানভিমতবিক্ষবহুভাষিণং। বালিশং মুর্থং অনধীত তওজাত্রহাদিতি ভাবং। শুরুং স্থপিতুর্থে-পাতিধার্ট্রান্দ্বিনীতং। অজঃ নিতাগোচারণাথ কিনপালানস্তং অথ চ পণ্ডিতমন্যং মর্থামান্তিত মে দেবসাথিারং চক্ত্র্ব্ধৃথিচ বাচয়া সরস্বতা অলঙ্কতো বালিশে। মূর্থেছিপি যন্তারং। বাচা শক্ষীবম্বোহ্যং। গুরুং বন্দ্যস্যান্যস্যাভাবাদন্ত্রং। নাজি ক্ষো যন্তারং পণ্ডিতকর্ত্বো মান আদ্রো বর্ততে যস্য তং॥ ৫॥

অবলিপ্তানাং মন্তানাং যতঃ ক্লফেন শ্বাপিতঃ সতেজভাকত আয়া মনোযেষাং বন্ধৰ্পত প্ৰিয়া চলনচৰ্চ্চয়েব অবলিপ্তানাং লিপ্তালানাং শ্ৰীমান্ যঃ প্ৰস্তেভঃ জাড়াাভাবতঃ ধুম্ত দ্বীকুকত। তেন তথা বৰ্ষণ যথা তেষাং শীতজনিতগুল্ভ ঔষ্ণানিধৰ্তকো ভবেদিতাৰ্থঃ।

তৰ্থ গোপদকল বাচাল, বালিশ (শিশু) ন্তব্ধ (অবিনীত) অজ্ঞ, পণ্ডিতদ্মতা মাসুষ যে কৃষ্ণ তাহাকে আশ্রেয় করিয়া গোপগণ আমার অশ্রিয় করিল !॥

অর্থান্তর। দেবরাজ নিন্দা করিবার নিমিত্ত যে সকল কটু শব্দ প্রয়োগ করিলেন, অর্থপর্যালো-চনা করিলে তাহাতে প্রীকৃষ্ণের ন্তবই বোধ হয়। তিনি ভগবান্কে বাচাল বলিলেন, বাচাল শব্দের অর্থ শাস্ত্রযোনি, প্রীকৃষ্ণ তদ্ধপ হইয়াও বালিশ অর্থাৎ শিশুবৎ নিরভিমান। অপর 'স্তব্ধ' এই শব্দ প্রয়োগের তাৎপর্য এই যে তাঁহার অন্য বন্দনীয় নাই একারণ অন্তর। আর অজ্ঞ এই শব্দের অর্থ তাহা অপেকা জ্ঞানবান নাই, পণ্ডিতন্মন্য শব্দের অর্থ ব্লুবেতাদিগেরও বহু মাননীয় 'কুষ্ণ' অর্থাৎ সদানন্দ রূপী পরবেন্ধা, তথাপি মামুষ অর্থাৎ ভক্তবাৎসল্য প্রযুক্ত মনুষ্যবৎ প্রতীয়মান ॥ ৫॥

অতএব সকল গোপই ধনমদে মন্ত এবং কৃষ্ণকৰ্ত্ত বংহিতদেই ইইয়াছৈ সন্দেহ নাই, ভোনির।
নীত্র গিয়া ভাহাদের বনমদক্ষনিত গ্রে অপনমুদ্ধ কর এবং ভাইাদিগের সভাসকলকে করি করিয়া
কেল ॥ ৬॥

1 00

্ত্রহারতং নাগগারুত্যাত্রতের জ্রজং। মরুদ্গগৈর্মহাবেগৈর্মশগোষ্ঠজিযাংসয়া ॥ ৭ ॥ জ্রিক উবার ॥

ইঅং মঘৰতাজ্ঞপ্তা মেঘানির্ম্মুক্তবন্ধনাং। নন্দগোকুলমান্নারেঃ পীড়য়ামান্ধরোজসা ॥ ৮॥ বিদ্যোতমানা বিহ্যান্তিঃ স্তনন্তঃ স্তনয়িছুভিঃ। তীত্রৈর্মক্রদ্যবৈদ্ধা বর্ষুর্জলশর্করাঃ॥ ৯॥

श्री पत्रवामी ।

বিভ্রতন্তান্প্রতাহ অহঞ্তি। অহুরজে অনস্তর্মের গমিষামি মকণগণৈর্দেরগণৈ: সহ॥१॥

মথবতা ইত্রেণ নিমুক্তিং বন্ধনং বেবাং তে প্রশেষাভিপ্রায়েণ যে বন্ধা আনুন্ত তদা নিমুক্তবন্ধনাঃ সন্তঃ আদারে ধারাসম্পাতৈঃ পীড়ায়মান্যঃ ॥ ৮ ॥

ন্তনিরিজ্ ভি: অশ্নিভি: তানতো গর্জন্ত: মকলগণৈ: আবহপ্রবাদিবাযুসমূহে: হুরা: প্রেরিভা: জ্লশর্করা: জ্লোপ্লান্ ॥ ৯ ॥

বৈষ্ণবতোষণী।

ভক্তিলক্ষ্যা সম্কানাং তথা তবৈবেজ্জলিত চিত্তানাং ইতি তুত কাৰ্থ:। কথং ধুনবাম ইতাপেকালামাহ পশ্ন সমাক্ ক্ষাং নয়ত পশ্নামেৰ শ্ৰীমদাক্ত্কাং। তকাৰ্থে সমাত্নিবাসং স্বাহ্যমিতাৰ্থ:॥ ७॥

ঐরাবতমারুহেতি যুদ্মাকং জলাভাবে সতি সোহয়ং সাহায়্যং করিষাতীতি ভাব:। মরুল্যনৈরেকোনপঞ্চাশবায়ভিঃ সহ। নন্দগোচেতি উত্তরে বর্ষণীরং নতু মধুপুর্যামিতি চ সহ কংসেনাপি মৈত্রীচিকীর্বরাপি হতিতং জিঘাংসয়া জিগমিষয়া ইতি ভাত্তিকোহর্য:॥ १॥

ওজ্বা বলেন ॥ ৮॥

় পীড়নপ্রকারমাহ বিদ্যোতমানা ইতি দ্বাভ্যাং। বিশেষেণ দ্যোতমানা ইত্যাদিনা বিদ্যাদদীনামতিবাছ্ল্যং ভীষণত্বঞ্চ স্চিতং। স্তন-গ্লিফুভি গর্জস্তিরংশবিশেষৈঃ তাঁইব্রিত্যক্ত পূর্ব্বোপ্যদ্বয়। জ্বলানি শর্করাশ্চ তদীয়াঃ করকাঃ॥ २॥

ঐবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

তথা পশূন্ধুহত শীতেন কম্পায়ত। ততণচ ক্লক্ষেন গোবৰ্জনে উদ্ভে সতি সংক্ষয়ং সমাঙি,বাসং তৰণং নয়ত। অতিহ্ৰণদ-গোবৰ্জনতলনিবাসং প্ৰতিনয়নে যুয়মেৰ কারণী ভৰতেত্যৰ্থ: ॥ ৬ ॥

বিভাততান প্রত্যাহ অহঞ অহুব্রলামি জিলাংসয়া জিলমিষয়েতি বর্ষাঃ॥ ৭॥

নিমুক্তবন্ধনা ইতি যে থবেকাণ্ৰীকরণপট্রঃ প্রলয়কাল এব নিমুচ্যতে। তেৎপি মেখা কোপেন লুগুবিবেকখাদপরিণাদদর্শি-নেক্ষেণ মোলিতাঃ ॥ ৮ ॥

অন্ত্রিজু বিশ্নিভি তানতঃ গৰ্জতঃ। মফলগণৈ: সহ আবহপ্রবহাল্যৈ: মুরাশ্চালিতা জলশর্করা জলোপলান্ বরুষ্:॥ ১॥

হে বারিদ্চয়। তোমরা কেহ ভীত হইও না,আমিও নন্দগোঠের বিধ্বংসন বাসনায় এরাবত গজে আরোহণ করিয়া মহাবেগশালী মুকুনুগণ রহিত তোমাদের পরেই ব্রফে যাইতেছি॥ ৭॥

শুক্দেৰ কহিলেন, যে স্কল মেল প্রদান্তিপ্রায়ে বন্ধ ইইয়াছিল তাহার৷ দেবরাজের ঐ প্রকার আজ্ঞার বন্ধনোমুক্ত ইইয়া মহাবলে ধারা সম্পাত করত নম্পের গোকুল নিপীড়ন করিতে আরম্ভ করিল । ৮ বা বুলি বিশ্ব সাম্পান্ত সমান্তি বিশ্ব বিশ

বিত্যাপ সমূহ খারা বিল্যোতন ও ভূরি ১ জুখুনি খারা গর্মন করত আরহ প্রবাদি প্রবল নায়-সমূহতে প্রেরিত হইরা করকাবর্ষণ করিতে লাগিল ॥ ১॥ সুণাসুলা বর্ষধারা মুঞ্চংস্বভেষভীক্ষশঃ। অনোধিঃ প্লাব্যমানা ভূনাদৃশ্যত নতোমজং ॥ ১০ ॥ অত্যাসারাতিবাতেন পশবোজাতবেপনাঃ। গোপা গোপ্যশ্চ শীতার্তা গোবিন্দং শীন্ধং যয়ঃ॥১১ শিরঃ স্তাংশ্চ কায়েন প্রাচ্ছাদ্যাসারপীড়িতাঃ। বেপমানা ভগবতঃ পাদম্লম্পায়য়ঃ॥ ১২ ॥ রুষ্ণ কৃষ্ণ মহাভাগ অমাথং গোকুলং প্রভা। ত্রাভুমহিনি দেবামঃ কৃপিতান্তক্তবংসল॥ ১০ ॥

व्यवस्थामी।

গোপগোপীপ্রার্থনামাহ। কৃষ্ণকৃষ্ণেতি ছমেব নাথো যস্য তৎ গোকুলং গবাং কুলং বংশং নোহস্মাংল্ড দেবাৎ ইস্তাৎ আতুং রক্ষিভূমইনি॥১৩

বৈষ্ণবতোবণী।

স্থা গৃহস্তভান্তবং স্থা: প্লাব্যমানা ভ্রভ্থ। যথা প্লাব্যমানা সভী ভূনাদৃশ্যত। অতো নতোরতঞ্চ স্থলং নাদৃশ্যতেত্যর্থ: ॥ > । । ভাতবেপনা ইতি শীতার্তা ইতি চ পথাদীনাং সর্ক্ষেবামপি বিশেষণং। তত্ত্ব পশ্নাং বহিঃস্থলেনাদৌ নির্দেশ:। বহিঃস্থপ্রার্থেন তং পশ্চাদেশাপানাং অন্তঃস্থার্থেন গোপীনামিতি বিবেচনীয়ং। ইত্যাদিকঞ্চ সর্কাং প্রীভগবতো ব্রন্ধনপ্রেমবর্জনগোবর্জনো-জ্বণ ক্রীড়েচ্ছবৈব শক্রাদীনাং শ্রীমদশ্য প্রমানর্থহেত্তা প্রদর্শনেক্ষ্রা চ অক্তথা ভগবংপ্রিরাণাং তেষাং তত্ত্বদশন্তবাৎ ॥ >> ॥

প্রছাদ্য প্রয়াদেনাচ্ছাদ্রিত্ব। নতু কথতে তাদৃশক্ষানা লাভাততাহ তগবতঃ অলৌকিকপ্রণহাতেবামপি তাদৃশপ্রভাবদয়াদি-গুণবত্তরা ফুরত ইত্যর্থ:। অতঃ পাদম্লমুপাবযুং অত্যন্তনিকটং প্রাপ্তাঃ॥ ১২॥

ক্ষণেতি সর্বাহংথাকর্বণাতিপ্রায়েণার্ত্যা বীপনা হে মহাভাগ অম্মাকং পরমভাগ্যক্ষপং। নোহম্মাকং গোকুলং গবাং কুলং এজমেব বা সর্বাং আতুমইসি। যথা নোহমাংশ্চ দেবাদিক্সাং তল্পামাগ্রহণং থেষেণ পাপবৃদ্ধ্যা বা। যথা দেবাত্তআপি কুপিতাদিতি তৎপ্রতী-কারাসমর্থানম্মান্ থ্যেব আতুং যোগ্যোহসীত্যর্থ:। তহি মমাণি তত্ত কা শক্তি তত্তোহঃ প্রভো হে সর্বাশক্তিযুক্তেতি কালিয়-

ক্রমসম্বর্ড:।

প্লাব্যমানা ভূরভূং। অতএব নতোগ্লতং স্থলং নাদৃশ্যত ॥ ১০ ॥ ১১ ॥ শির ইতি অতো ব্ৰুক্তপশূনামণি তাদৃশক্ষানং স্চিতং ॥ ১২ ॥ ১৩ ॥ ১৫ ॥

শ্ৰীবিশ্বনাপচক্ৰবন্তী।

সুণারত্তে ২পি বেশান ইত্যমর: সুণাবং সুলা অত্রেয়ু বর্ষংক প্লাব্যমানা ভূরভূৎ। ততশচ নতোরতং স্থাং নাদৃশাও ॥ ১০ ॥ ১১ ॥ শিরাংসিচ স্থাতা বংসাশ্চ তান্ কায়েনৈবাচ্ছাদ্য ॥ ১২ ॥

অনেন সর্বহর্ণাণি ব্রমঞ্জরিষ্যথেতি গর্গোক্তিমহত্বতা এতাদৃশ্মহাবিপতে) জীনারারণ এব রক্ষণবিশ্যাত্মান্ রক্তীতি বিশ্বতা-

হে রাজন্! মেঘ সকল স্থাবৎ অর্থাৎ শুষ্টের ন্যায় স্থল জলধারা অজত্র বর্ষণ করিতে থাকিলে ভূমি জল রাশিতে আপ্লাবিত হইল অতএব কোন স্থান নিম্ন ও কোন স্থান উন্নত তাহাও দৃষ্ট হইল না ॥ ১০॥

অত্যর্থ বারিধারা পতন ও প্রবলতর প্রবর্তন যাবতীর পশু ক্ষণিতকলেবর এবং গোপ ও গোপীগণ শীতে সাতিশয় আর্ত্ত ইয়া গোবিদের শরণাপন হইলেন। ১১॥

অর্থাৎ পশু সকল বারিধারায় শীড়িত ছইরা স্থা ২ কাল বারা মন্তক ও বংসগণকে আফাদিত করত কাশিতে ২ ভগবানের পাদমূলে আসিয়া পড়িশ ॥ ১২ ॥

আর গোপ ও গোপী সকল এই বলিয়া প্রার্থনা করিতে লাগিলেন, হে ক্ষণ হৈ ক্ষণ হৈ ক্ষণ হৈ ক্ষণ হৈ ক্ষণ হৈ ক্ষণ বিশ্ব তাপ । প্রথল আপানিই এই গোকুলের নাথ, হৈ ভক্তবংসল বিশ্ব ক্ষণ হৈছে আমিনিগকে এবং এই গোকুলকে পরিত্রাণ করিতে যোগ্য হিন্দ বিশিষ্ট বিশ্ব বিশ্

শিলাবর্ষাতিবাতেন হস্তমানসচেতনং। নিরীক্যা ভগবান্ নেনে কুপিতেন্দ্রকৃতং হরিঃ॥ ১৪॥ অপর্ত্ব জুবোণং বর্ষমতিবাতং শিলাময়ং। স্বযাগে বিহতেই স্মাভিরিন্দ্রোনাশায় বর্ষতি॥ ১৫॥ তত্ত্ব প্রতিবিধিং সম্যগাত্মযোগেন সাধ্য়ে। লোকেশমানিনাং মৌঢ্যাদ্ধনিষ্যে শ্রীমদন্তমঃ॥ ১৬॥

धीयत्रवामी।

বিজ্ঞাপনাং পূর্ব্যেব কুপিজেনেক্রেণ কৃতং তথ্বং মেনে ॥ ১৪ ॥

কণং মেনে তদাহ অপথি তি অপগত শ্বীতুর্গদা তদ্বং অভিশন্নিতো বাতো যশ্মিন্ তং শিলামন্নং শিলাপ্রচ্রং ॥ ১৫॥
তত্ত্ব প্রতিক্ষাপূর্ব্বকং গোবন্ধনোদ্ধরণমাহ তত্ত্বতি প্রতিবিধিং প্রতিকারং অসামর্থেন সাধ্যিব্যামি তেনচ মৌঢ্যাৎ লোকেশ্মানিনাং শ্রীমদলকণং তমো হরিব্যামি। বহুবচনেন বরণাদীনভিপ্রৈতি॥ ১৬॥

देवस्व वट छ ।

মৰ্দনাদৌ তবাবৌকিকশক্তিদৰ্শনাং ইতি ভাবং। নমু দেবেৰু নিজশক্তিং দৰ্শন্তিত্ব নোপযুজ্যত তত্ত্বাহুং হে ভক্তবংসলেতি ভক্তাৰ্থং তবাকুত্যং ন কিঞ্চিদণীতাৰ্থ:॥১৩॥

শিলাবর্ষগৃক্তেনাতিবাতেন পাঠান্তরে শিলাবর্ষদ্য নিপাতেন হন্তমানং অতএব অচেতনং মুদ্ধিত প্রায়ং গোকুলমিতি প্রকরণাৎ কৃতং কৃতিং॥ ১৪॥

পশ্চাৎ ক্রোধারবশেন স্বগতম্বাচেত্যাই অপস্থিত্যাদি পঞ্চেন ইস্থাক্তে পরেণাধ্রাৎ। পৃথক্তু ব্যাখ্যায়তে বর্ধং বর্ধতীতি তপন্তপাত ইতিবন্ধবং করোতীত্যর্থ:। অস্মাতিরিতি বছরং শ্রীনন্দাদ্যপেক্ষয়া। শক্রমদভন্তনার্থং নিজপ্রোট্পেকটনেন বা নাশার গোঠত তব্তন্ত নিজ্যপ্রতার। ১৫ ॥

সমাক্ সর্বেষাং অথপূর্বক নিজ্লাসবর্ষ্যমাহাক্সপ্রদর্শনাদি প্রকারেণ সাধ্যমি বর্ত্তনানসাদ্ধীপ্যে লট্ আক্সযোগেন সাধ্যে যোগ্যায়াঝ্যা খাভাবিকশক্ষ্যেত্যর্থ:। লোকেশ্যানিনামিতি বছরং ভদণ্ডেনাস্থেমামিপি শিক্ষাভিপ্রায়েণ॥ ১৬॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

আত্মযোগেন যোগমারাধ্যরা আভাবিকশক্তোত্যর্থ:। লোকেশমানিনামিতি বছরং ভদ্দণ্ডেনানোরামিণি শিক্ষাভিপ্রায়েণ মন্ত্র ব নান্ড:॥১৮॥১৭॥

श्रीविधनायहज्जवत्री।

গোপা: প্রার্থায়ে। ক্লেফিচ দেবাদিক্সাৎ॥ ১৩॥

কুপিতেনেক্রেণ ক্বতং তছর্বং বিজ্ঞাপনাৎ পূর্বনেব মেনে ভগবলিতাপার্যদানারপি তত্তৎ কটা লীলাশক্তাব প্রেমানন্দরদদ্যোৎ-কর্বেণাস্থাদনার্থমুপস্থাপিতং লোভবতাং বৃত্তকুণাং কুৎ ক্টমিব স্থােদক্রাং স্থান্মকমেবেতি জ্ঞেমং॥ ১৪॥

কুপিতেন্দ্রকারং মাধা বগতম্বাচ অপদিতি পঞ্চ কং তগবানেবেত্যাহ। অপগত ঋতুর্বস্য তথ্বং শিলাময়ং শিলাপ্রচুরং॥ ১৫॥ প্রতিবিধিং প্রতিকারং আত্মনো যোগেন যোগনায়মা গোকেশমানিনাং শ্রীমদলক্ষণং তমোহরিয়ামি বছ্বচনং বরুণাদীনপান্তি-প্রৈতি॥ ১৬ ॥

হে রাজন্! গোপ ও গোপীদিগের বিজ্ঞাপনের পূর্বেই ভগবান্ শিলাবর্ষণ ও অতিবাতে গোক্-লের অচেতনে বিনাশ অবলোকন করিয়া অনুমান করিয়াছিলেন যে, ইন্দ্র কুপিত হইয়া এই সকল ক্রিতেছেন ॥ ১৪॥

ভগবান্ বলিলেন বর্ধার সময় পত হইয়াছে তথাচ এই যে শিলাপ্রচুর বর্ষণ ও অত্যর্থ বায়ু প্রবা-হিত হইতেছে ইহার কারণ বোধ হয় আমরা যে ইস্তায়জ রহিত করিলাম তত্জন্য কোধে আমাদের বিনাশার্থ ইস্তা এই সকল করিতেছেন॥ ১৫॥

ভয় কি, আমি আপন দামর্থ্যানুসারে এ বিষয়ের প্রতিকার দাধন করিব। মৃঢ়তা প্রযুক্ত যাহার। আপনাদিগকে লোকপাল বলিয়া মানে, তাহাদের শ্রীমদজনিত তমঃ বিনাশ করা কর্ত্তব্য হয় ॥ ১৬,॥ নহি সদ্ভাবষুক্তানাং স্থরাণামীশবিস্মায়ঃ। মতোহসতাং মানভঙ্গঃ প্রশমায়োপকল্পতে ॥ ১৭ ॥ তক্মামাচ্ছরণং গোষ্ঠং মন্নাথং মৎপরিগ্রহং। গোপায়ে স্বাত্মযোগেন সোহয়ং মে ব্রত আহিতঃ॥১৮ ইত্যুক্তিশুকেন হস্তেন কৃত্মা গোবৰ্দ্ধনাচলং। দধার লীলয়া বিষ্ণুম্ছ্তাকমিব বালকঃ॥ ১৯॥

श्रीभवत्यामौ ।

নমু দেবা: সাঝিকা ভ্রন্ত: কুতত্তেবাং তমন্ততাহ নহীতি। সন্তাব: সবং সন্তক্তিবা তদ্যুক্তানাং স্থরাণামীশা বয়মিতি বিশ্বরো-গর্ম্বো হি যন্ত্রাম্বটতে অতোহসম্ভব্যে কিঞ্চ তেষাং মানভঙ্গোহত্তাহ এবেতাহে মত ইতি ॥ 💆 ।

গোপায়ে রক্ষয়িব্যামি কিঞ্চ সোহয়ং মে ময়া ব্রতোনিয়ম: সংক্রো বা আহিতঃ ধৃত ইত্যর্থ:॥ ১৮॥

ক্বৰ। উৎক্বত্য ছত্ৰাকং উচ্ছিলীব্ৰুং যণা॥ ১৯॥

देवकवद्यांवरी।

অসতাং শ্রীমদেন ছ্শেটে তানাং। অন্তরৈ:। যদা শ্রীমদং হরিষ্য ইত্যত্ত হেতুমাহ হি যতঃ স্থরাণামীশোহহমিতি বিশেষেণ স্মরোগর্ম। নোপকলতে যোগোলান ভবতি যতঃ সম্ভাবযুক্তানাং অতঃ শ্রীমদেনাসভামিপি ভেষাং হিতমেব করিষ্যামীত্যাহ মন্ত ইতি নাম্ভতঃ। মদৈশ্ব্যিক্ তাবেৰ তাদৃশ্যোগাড়াদিতি ভাবঃ॥ ১৭॥

যশান্মাত্মনির্বিশেষত্বেনাশ্রচ্ছেদক্রোড়ীক্বভানাং মৎপিত্রাদিগোষ্টবাসিনাং নাশায় ইক্রো বর্ষতি তত্ত্বচ প্রতিবিধিং সম্প্রত্যেব সাধ্যিষ্যামি তত্ত্বচাম্বলিকজ্ঞ লাকেশনাত্রাণাং তমা হরিষো। তচ্চ যুক্তং তন্মাদহনেব তদিদং গোষ্ঠং আত্মযোগেন সাধ্যে অসাধারণ আভাবিকপ্রভাবেন গোপায়ে সম্প্রত্যেব গোপায়িষ্যামি। ন কেবলং সম্প্রত্যেব কিন্তু সং পূর্ব্ব সিদ্ধঃ। অয়ং গোষ্ঠত পালনরপো মন ব্রভা নিয়ম এবাহিতো বিহিত ইত্যর্থঃ। কীদৃশং গোষ্ঠং তত্ত্বাহ অহমেব শরণং রক্ষিতা যত্ত তৎ যতো হহমেব নাথ ঈশবাে যত্ত তৎ। কিঞ্চ মন পরিগ্রহং কুটুম্বং অতা অক্সত্যেনাপি রক্ষ্যমিত্যর্থঃ। বুদ্ধেচি মাতা পিতরৌ সাধ্বী ভাগ্যা স্থতঃ শিশুঃ। অপ্যকার্য্য শতং কৃত্বা ভর্তব্যা মহুরব্বীৎ ইত্তিবং। যত্বা মন শরণং আশ্রয়ং মন নাথং পরিপালকং কৃত্য অহমেব পরিগ্রহাে ধন পুল্লদারাদি সর্ব্বং যত্ত তৎ যদেক প্রিমিত্যর্থঃ। তদেবমিক্সন্ত মচ্ছরণডাদি বিকদ্ধর্মত্বৈ হত্তচ্ছরণাদিরপ গোষ্ঠবাসিনাং বিরোধায় প্রব্রেত্বান্মানভঙ্কোহপি গোষ্ঠবাসিনায় যোগ্য ইতি বিবিক্ষিতঃ॥ ১৮ ॥

ইত্যুক্তি মহামেঘারস্তাদেব গোবর্জননিকটে সর্বেধানানয়নমবগমাতে। একেন বামেন সব্যেন পাণিনেতি হরিবংশোকে:। কৃষা ছিছেতি মূলতোর্জতশ্চ জ্ঞেয়ং মানসগলায়া উত্তরতো বিচ্ছিন্নথাং। তেষাং সংরক্ষণার্থায় ধৃতো গিরিবরো ময়া। সোহন্নত্ট ইতি থ্যাত: সর্ব্বত: শত্রুপ্জিত ইতি বারাহ প্রসিদ্ধত তথা ভাগভাদাপি পৃথক্ প্রসিদ্ধে:। ন কথমপি কদাচিদপি চলতীতাচলপদশ্লেষ:।

ক্রমসন্দর্ভঃ।

গোপায় ইতি বুর্তমান প্রয়োগেন স্বাভাবিকত্বং ব্যঞ্রতি ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ ২১ ॥

ঐবিশ্বনাথচক্রবত্তী।

ন চৈব্যিক্রায়াভিক্রোণীয়নে ২হং স্পর্দ্ধে কিন্তু ভ্রস্য মন্তক্রন্যোভূতং দোষ্মেব রূপরৈব চিকিৎসরস্থীত্যাহ ন হীতি সন্তাৰ: সরং সন্তক্তিবা ভালবুক্তানাং অ্রাণামীশা বয়মিতি বিশিষ্টস্ময়ো গর্কোহি হলার ঘটেত ভক্সাং সংপ্রত্যসন্মার্গে স্থিত্থানসভাং ভেষাং মানস্যাদরস্য ভঙ্গ এব প্রশমায় গর্করোগ্নোগ্রশাবৈষ্ট্য ॥ ১৭ ॥

কিঞ্ যতন্তং কৃত্মিদমত্র স্কটমুপস্থিতং জন্মাদেগাঠমেতদেগাপারে মম শরণং গৃহরূপং। শরণং গৃহরক্ষিত্রোরিত্যনেকার্থবর্গ:। গৃহস্যাস্যাহ্মের নাথ ইত্যাহ মন্নাথং মই পরি,গ্রহাঃ পিতৃ ভ্রাতৃ প্রেয়স্যাদ্যো যত্র তৎ। ন কেবলমন্মাদের স্কটাদেগাপায়ে স্বশি তু স্ক্রিয়াদ্পি স্কটান্মহাপ্রলয়কালাদ্পীত্যাহ স্প্রসিদ্ধোহয় প্রভোনিয়মো মে ময়া আহিতো গৃহীতঃ ॥ ১৮॥

ইতি অগতমূক্ত্ব একেন হত্তেনেতি বামেনৈব। যহকেং হরিবংশে। স ধৃতঃ সক্ষতো মেবৈ গিরিঃ সব্যেন পাণিনা। গৃহভাবং

দেবগণ সত্ত্য অথবা সম্ভক্তি যুক্ত, তাঁহাদের আমরা ঈশ এরপ গর্ব সম্ভবে না, অতএব ঐ সকল ব্যক্তি অসং, আমি অসতের মানভঙ্গ করিয়া থাকি, তাহা শান্তির নিমিন্তই হইয়া থাকে॥ ১৭॥

এই গোষ্ঠ আমার শরণাপন হইয়াছে, আমি ইহার আশ্রয় ও নাথ স্বত্তব আপনার আন্থা দিয়াও ইহাকে রক্ষা করিব, আমি এই প্রতিজ্ঞা করিলাম ॥ ১৮॥

ভগবান শ্রীকৃষ্ণ এই প্রকার কহিয়া এক হল্তে গোবর্জন পর্বত উত্তোলন করিয়া বালক যেমন ছত্রাক ধরে তাহার স্থায় অবলীলা ক্রমে ধারণ করিলেন । ১৯ ॥ অথাহ ভগবান্ গোপান্ হে হম্ব তাত ব্রজোকসঃ। যথোপজোষং বিশত গিরিগর্তং সগোধনাঃ। ন ত্রাস ইহু বঃ কার্য্যো মন্ধন্তান্তিনিপাতনাৎ। বাতবর্ষভয়েনালং তন্ত্রাণং বিহিত্ং হি বঃ ॥ ২০ ॥

<u>ज</u>ी४ द्वागी

यर्णात्रकासः यथाञ्चरः ॥ २०॥

বৈষ্ণবভোষণী।

লীলয়াহনায়াদেন। যদা কটিতটে দক্ষিণ শ্রীহন্তন্যাসাদি ভঙ্গীবিশেষেণ দধার। তবৈব প্রাচীন শ্রীমৃত্তি দর্শনাং। যতো বালক শ্ব্যাক্ষিব বাল্যালীলামতিক্রমেণবেত্যর্থ এবমনায়াসোহপি দশিতঃ। নহু বালমৃত্তে শুদ্ধারণানি সায়বেশঃ কং ঘটতে তয়াহ বিষ্ণুঃ আচিন্ত্যশক্ত্যা তজ্ঞপত্বেইপি বিভূঃ। ক্বঞ্চ ইতি পাঠেপি সএবার্থঃ। তবৈও সহস্রনামন্তোত্রে। অনির্দ্দেশা বপুঃ শ্রীমানমেয়াত্মা মহাজিধুগিতি। অতো যথেচ্ছমের পর্বতালীনামুক্তপদাদিন্থিতিজাতেত্যর্থঃ। ততঃ শ্রীবৈশন্পায়নোক্রিরপি ঘটতে। সধ্তঃ সঙ্গতো মেইঘরিতি। তথা। আপ্লুতোয়ং গিরিঃ পকেরিতি বিদ্যাধরোরগাঃ। গদ্ধর্বাপ্রসক্তর্ক বাচামুক্ষন্ত সর্বাশ ইতি। তচ্চ শ্রীগোবর্দ্ধনশৃলাত্রৈ
মের্ঘিরেলিন্দাটনক্রীড়াথমেবেতি জ্বেয়ং। ততা ব্রন্ধক্র্বিক্রায় শোভাবিশেষায় শ্রীক্রক্ষকর্ত্ক ধারণমেসাকর্যায় চ ইদং
কলতে উত্থাপনসময়ে লীলাশক্র্যামুক্লোন পর্বতমধ্যাধেভাগাং বিচ্ছিদা কুট্টিমায়মানো মহাশিলাসমূক্তর একো মধ্যগর্তে
স্থিতঃ। যং শিলাসমূক্তয়মাক্রন্থ যং নিয়ং পর্বতমধ্যদেশং শ্রীহন্তেন বিষ্টভাচ স্বর্থং দধারেতি অন্ত গর্তমধ্যে বহির্দ্ধলপতনাগমননিবারণাদিসমাধানশতমাপ লীলাশক্র্যামুক্লোনৈর জ্বেয়ং। তথাচ শ্রীহরিবংশে। স ধৃতঃ সঙ্গতো মেই গিরিঃ সব্যেন পাণিনা।
গৃহভাবং গতন্ত গৃহাকারেণ বর্কসেতি। এবং বামকরেণ লীলয়া তন্ধারণং বন্ধতঃ নিজনীবনানপেক্ষয়া তদেকস্থাপেককাণাং
ব্রন্ধনানাং তেষাং শ্রীয়াশ্রমবোধনেন স্থার্থমেব। অন্যুণা তেষাং সর্বনাশতোহপি মহাছংগাপত্তেঃ। এবমন্যক্ত তন্য সর্ব্ধেবিত্রিং ১১॥

হে হংষতি মাজুরাদৌ সংবাধনং সেহবিশেষেণ । পুলহেত্কেলকোধর্টিণৃট্যা তথা বা পুলহংগণকথা। চিন্তা হংগাকুলায়াং সাস্থনেচ্ছেয়াচ ততশ্চ হে তাতেতি মেহাকুলমাং তদ্য প্রবেশে সত্যেব তস্যাং প্রবেশাচে। উপলক্ষণকৈত হীরোহিণ্যাদীনাং। হে ব্রেলৌকদো যথোপজোধনিতি। যথা ব্রেল বাসতথৈবাত্রাপি সম্পংস্যত ইতি ভাবং। নহ মধ্যে যোলনবিতারং তাবিদ্ধিণ মায়তমিতি শ্রীহরিবংশে ব্লবিতারস্য বণিতহাৎ কথং গোবর্জনগর্তে ব্রেলোমাতি। উচাতে। তদ্যাচিন্তা মহন্তাপতেরিতি। তথাচ

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

গত স্তর গৃহাকারেণ বর্চদেতি। ছত্রাকং শিলীন্ধুমিব দধারেতি দিধীর্ষা সময়ে যোগমায়াংশভ্তয়া সংহারিক্যা শক্তা তাবত্যপি-বৃষ্টিরাকাশ এব তথা সংস্কাহে যথা স্বগৃহালিন্দাদতিবেগেন গোবর্দ্ধনমূর্ত্ব মিভিক্তত্বতো ভগবত উক্ষীয়াদি বাসাংস্যুপি নাতি স্তিমি-তানীতি জ্ঞেয়ং॥ ১৯॥

যথোণজোবং যথামুথং নমু ক্রোশত্রয়মাত্রস্থ গোবর্জনস্য তলে সর্ব্রজন্থা: কথং মাজ। উচাতে ভগবং পাণিম্পর্ণানন্দাদেব লকা চিন্ত্যোজনা শ্রীগোবর্জনেন কুপিতেল্রপ্রক্রিপ্ত কুলিশভ্রাভমিপি স্বপৃষ্ঠে কুম্মহার প্রহারমিবাম্ভবতা তথা সম্যাবৃদ্ধ্যত যথা বোজনচত্ইয় প্রমাণত্রজনগরত্বা জনাঃ সর্ব্রে এব গবাদি পশবশ্চ স্বতলে বথাবকাশমেব নিবাসমানিরে। অভএব হরিবংশে ভগবতোকং। শৈলোৎপাটন ভূরেষা মহতী নির্দ্ধিতা ময়া। ত্রৈলোক্যমপ্যুৎসহতে রক্ষিত্ং কিঃ পুন শ্রীজমিতি। কিঞ্চ। গোবর্জনোপরিত্বানাং হরিণবরাহাদীনাং পশ্নাং পক্ষিণাঞ্চ সৃধ্তঃ সঙ্গতো মেইবিতি হরিবংশোক্তে তারিতহার গোন্বতা মেঘানালক্ষ্য ভদ্দি শৃঙ্গাগ্যাব্রেভাং ন ভিল্মাত্রমপি ক্রমভূদিতি জ্বেরং॥ ২০॥

পরে গোপদিগকে সম্বোধন করিয়া বলিতে লাগিলেন হে অম্ব ! হে তাত ! অহে ব্রজবাসিগণ ! তোমরা গোধন সহ যথাসথে এই গিরিগর্জে প্রবেশ কর । আমার হস্ত হইতে পর্বত পতিত হইবে- এ আশক্ষা করিও না, আর বাত রৃষ্টি জন্ম ভয় করিতে হইবে না, তাহা হইতে এই তাণের উপায় বিহিত হইল ॥ ২০ ॥

তথা নিবি বিশুর্গর্ত্তং কৃষ্ণাখাসিত্যানসাঃ। যথাবকাশং সধনাঃ সত্রজাঃ সোপজীবিনঃ ॥ ২১ ॥
কুতৃড় ব্যথাং স্থাপেক্ষাং হিত্বা তৈ ত্রজিবাসিভিঃ। বীক্ষ্যমাণোদধানাদ্রিং সপ্তাহং নাচলৎ পদাৎ।
কৃষ্ণযোগামুভাবং তং নিশাম্যেক্রোহতিবিক্ষিতঃ। নিস্তম্ভো ভ্রন্ট সংক্লঃ স্থান্ মেঘান্ সংখ্যারয়ৎ।

बीधत्रवामी।

সৰকা: শক্টমণ্ডলীসহিতা: সোপজীবিন: ভৃত্যপুরোহিতাদিসহিতা:॥ ২১॥ পদাৎ স্থানাৎ ॥ ২২॥

रेवकवरकावनी ।

ছরিবংশে তেনৈবোক্তং। শৈলোংপাটন চ্বেষা মহতী নির্মিতা ময়া। তৈলোকামপ্যংসহতে রক্ষিত্ং কিং পুনর জমিতি। গিরের্গর্জং ভক্ষুলোংপ্লাট্নভূভাগং গর্ভএব সমাধানক বাতাদ্যাবরণাপেক্ষুমা। গাবং পশব এব ধনানি। বরা গাবো ধনানি চান্যানি তৎ সহিতাং। তদেবং স্ক্রিজ্বাসিনাং তৎ পশ্চাদেবাবগতবং ভ্রচনক্ষত স্ক্রিশ্ববং ধ্বনিতং॥

মম হস্তাদদ্রে: নিতরাং পাতনং পতনং তদাশক্ষা স্বার্থে ণিচ্। যদা ইন্দ্রাদিনা কেনাপি পাতনং তত্মাজ্রাস: মদনিঠশক্ষা বো যুমাকং কার্যা: কর্ত্তুং যোগ্যোন ভবতি ক্লড়ানাং কর্ত্তরি বেতি ষষ্ঠী। অতো বো যুমাকং বাতবর্ষাভ্যাং ভয়েনালং প্রয়োজনং নান্তি। হি স্মান্তেনাজিধারণেন ত্রাণং বিহিতং ময়েতি শেষ:। বো যুম্মাভিরেব বিহিত্মিতি বা। শ্রীগোর্ম্ধনার্চ্চেনাদিভিরিতি ভাব:॥ ২০॥

তথা তেন প্রকারেণোক্তিচাতুর্যোগ সাক্ষাধানকরে লীলয়া গিরিধারণেনচ ক্রমা ক্লফেন সর্কচিত্তাকর্যকাদ্ভানস্তলীলেন ভগ্ বতা আখাদিতানি মান্দানি যেষাং তে। ধনানি গাবোহন্যানিচ বিবিধন্তব্যাণি তৎ সহিতাঃ ॥ ২১ ॥

কুন্ত্ভ্যাং যা ব্যথা তাং মুগং শয়নাদি তদপেকাঞ হিছা বিশ্বত্যেত্যুর্থ:। তৈন্তদেকজীবনৈ: তদ্বাক্ষর প্রনাসিভি-র্নোপ্রাণিনিছি:। বিশেষেণ মহাবিশ্বর প্রমমেহাদিনা ঈক্ষ্যাণ:। ইতি তত্ত্তাগে কারণং প্রয়োজনঞ্চ। ক্ত্রা প্রভারণ বীক্ষণারম্ভ এব তদপগ্যাং। তবিশ্বভাত তদ্ধারণে সাহায্যমেব দর্শিতং। তেন মৃত্য ক্ষীভ্যনন্তাং। তবৈৰ শ্রীবিষ্ণুপ্রাণেহিপি। ক্ষেছাহিপি তং দধারেব শৈল্যভান্তনিশ্বনা এইজক্বাসিভিহ্র্বিশ্বিতাকৈ নিরীক্ষিতঃ। গোপগোণীজনৈত্ব প্রীভিবিশ্বাবিতে ক্ষেণে। সংস্কৃষ্যানচ্রিতঃ কৃষ্ণ: শৈল্যধার্মদিতি। যথা হিছেতি কৃষ্ণকর্ত্ত্বং জ্বেরং। আনেনেক্ষণেন ত্যোপি তত্ত্ব নাদীদিতি গ্রাতে। পদ্যদেকস্থাদ্পি পদাক্রনপ্রানারাচল্যিতি ধারণেতান্তানায়াস উক্তঃ॥

কৃষ্ণত যোগং স্বাভাবিকশক্তিবিশেবং তভাত্তাবং প্রভাবং নিশম্য দৃষ্ট্। তথাচ বিশ্বং। শ্রুতে দৃষ্টো নিশমন্মিতি। নিত্তা নষ্ট মদং কুতঃ ভ্রষ্টা অধোগতং সকলো গোটজিঘাংসালকণো যন্ত সং। স্থান্ মকদগণান্ মেঘাংশ্চানিবারণে স্থানিষ্টাপতেরিতি ভাবং।

क्रममन्द्रः।

সত্রলা: শক্টমগুলীসহিতা: ৷ বোপজীবিন: ভৃত্যপুরোহিতাদি সহিতা: ॥ ২১ ॥

কুন্ত্ত্বাথাং হিছেতি ভমিরস্তর দর্শনানন্দাদেব। বহুক্তং বৈঞ্বে। এজৈকবাদিতি ইব্বিমিতাকৈ নিরীক্ষিতঃ। গোপগোপী জনৈষ্টিরিতি। অতা সপ্তাহ বাণিন্যা সাম্ভক্নেঘবৃষ্টাণি যন্তাব্যং নগুলং ন মমজ্জ তং খলু ভগবচ্ছকৈয়েব সদ্যং প্রং শোষণা-

হে রাজন্ ! ঐক্ষের ঐ কথায় গোপদিগের চিত্ত আশস্ত হইল, তৎক্ষণাৎ গোধন, শকট মণ্ডলী তথা ভূত্য পুরোহিতাদি সহিত সকলে স্বচ্ছন্দে গিরিগর্তে প্রবেশ করিলেন ॥ ২১॥

ভগবান ক্ষুৎ পিপাদার ক্লেশ এবং স্থাপেক্ষা বিদর্জন করিয়া অবিচ্ছেদে দপ্তাই কাল গোবর্জন ধারণ করিয়া রহিলেন,তমধ্যে এক বারও স্বস্থান হুইতে বিচলিত ইইলেন না। ব্রজবাদিরা বিসায়াপন্ন ইইয়া তাঁহার প্রতি দৃষ্টিপাত করিয়া রহিলেন। সে যাহা ইউক, প্রীকৃষ্ণের যোগামুভব অবগত ইইয়া দেব্রাজ বিস্মিত ইইলেন এবং সংকল্প ভ্রফী ইওয়াতে নিস্তস্ত ইইয়া, যে সকল মেঘকে বর্ষণ করিতে আদেশ করিয়াছিলেন তাহাদিগকে নিবারণ করিলেন। আকাশ নির্মেষ ইইল, দিবাকর প্রকাশ পাই-

১•%। ২৫%]

• খং ব্যব্জমুদিতাদিত্যং বাতবর্ষণ দারুণং। নিশম্যোপরতং গোপান্ গোবর্জনধরোই এবীৎ ॥২২ নির্যাত ত্যক্ষত ত্রাসং গোপাঃ সন্ত্রীধনার্ভকাঃ। উপারতং বাতবর্ষং ব্যুদপ্রায়াশ্চ নিম্নগাঃ॥ ২০॥ ততত্তে নির্যযু র্গোপাঃ স্বংস্থমাদায় গোধনং। শকটোটোপকরণং স্ত্রীবালস্থবিরাঃ শনৈঃ। ভগবানপি তং শৈলং স্থানে পূর্ববং প্রভুঃ। পশ্যতাং স্ক্রিভ্তানাং স্থাপয়ামাস লীলারা॥ ২৪॥

वीधतवागी।

ৰুদিপ্ৰান্না বিগতোদক প্ৰায়াঃ স্বল্লজণা ইত্যৰ্থঃ ॥ ২৩ ॥ শকটোঢ়োপকরণং শকটৈ লঢ়ং উপ্করণং যথা ভবতি তথা ॥ ২৪ ॥

বৈষ্ণবজোষণী।

সংশক্ষেন দ্রভোহপি স্থিতি নিঁবারিতা ॥

অতএবোদিত: দৃষ্টিগণং গত আদিতো যশ্বিংস্তং। দারুণং ভীবণং উপরতং নিবৃত্তং অত্রচ নিশমা দৃষ্ট্ । ইত্যর্থং। উপারতং বাতবর্ষমিতি স্বয়নেব বিজ্ঞাপনাৎ। দুর্শনক তির্যুক্রতহন্তেন গিরিং ধ্রৈতি জ্ঞেরং। গোবর্দ্ধনধর ইতি শ্রীশুক্দেবত সোৎসাহ নিজক্তিময়ং বাক্যং॥ ২২॥

হে গোপা ইতি ভবন্তি বৃষ্টিতোহধুনা গ্ৰাং রক্ষাকৃতেতি লেখঃ। ঝটিতি নিম্নগানাং ব্যদপ্রায়স্থং চ নাশ্চর্য্যং বৃষ্টানাং জ্লানাং প্ততামেব ঞ্জিগ্রংপ্রতাপতপনেন প্রায়ো বিলীনস্থাং। অভ্যথা প্রলম্ম্কারিনৈথেঃ সর্বায়াবনং ভাং। ধনানি গাবো প্রাদীনি বা॥ ২০॥

ভততাদৃশ গিরিধারণ তাদৃশ বচনান তরং। তে ইতি তথা তথা ভগবদঙ্গীকারেণ নির্জিতমহেজ্রা তদেক জীবনাশ্চ যে তাদৃশা ইত্যর্থ:। উপকরণং ধনাদিকং স্ত্যাদয়শ্চ শনৈ নির্যযুং শৈছ্যেণ সংমন্দাপত্তে: ॥

গোপাদরো নির্যয়: ভগবানপি তং স্থাপয়ামাসেতাপিশলার্থ:। তত্র স্বস্থান ইতি স্থানাতারো নিবিদ্ধ:। পূর্ববিদিতি পর্বত বৈপরীত্যাদিকং নিরস্তং। প্রভূরিতি তত্র শক্তি দ শিতা। অতএব লীলয়া সর্বেবাং মনোহারিণ্যা অনায়াশচেষ্টয়া অতএব বিশ্বরে-, নানন্দেনচ সর্বভূতানাং ব্রজস্থানাং দিবিছালাঞ্চ পশ্যতামিতি সপ্তমার্থে যটা ॥ ২৪ ॥

क्रममञ्जूष्टः।

পারতমিত্যাদি জ্ঞাপনাৎ॥ ২২ ॥ ২৩ ॥ ২৪ ॥

श्रीविषमाथहळ्ववर्षी।

দিতি জেবং তথা বৃষ্টিকলৈ কালস্য দিবসন্ধাৎ ঘটিকাগণনেনৈব ব্ৰহ্মনাং সপ্তদিবসজ্ঞানমভূদিতাপি জেবং ॥
নিজজ্ঞা নষ্টমদঃ ন্যবারম্বদিতি ন জানেহদ্য ক্ষোমস্থং কং দণ্ডং দাস্যতীত্যতিভয়াৎ ॥ ২২ ॥
ব্যদ্পারাঃ বিগতোদক প্রায়া অন্তল্গাইত্যর্থঃ ॥ ২৩ ॥
শক্টেৰাক্ষ্যাস্থাক্ষবণানি যত্ত তদ্বধাস্যাভ্রধা নির্জন্মঃ ॥ ২৪ ॥

লেন এবং দারুণ বাত বৃষ্টি উপরত হইল অবগত হইয়া, গোবর্জনধারী ভগবান্ হরি গোপদিগকে সম্বোধন করিয়া বলিলেন॥ ২২॥

অহে গোপদকল। তোমধা এখন গোধন ও পুত্ৰ কলত সহ গিরিগর্ভ ইইতে বহির্গত হও, আর ভন্ম নাই, বায়ু ও বর্ষণ নিব্রত ইইয়াছে, নদীসকল সম্মালন হইয়। আসিল । ২০॥

ভাষার পর সেই দকল গোপ শক্ট খারা দ্বব্য সামগ্রী বহন পূর্বাক বং গোধন গ্রহণ করিয়া নির্গত হাইয়া আসিলেন। তদনন্তর দর্শন কারি দকল ভূতের সমক্ষে ভগবাদ্ সেই পর্বাভটাকে স্বস্থানে পূর্বাবং স্থাপন করিয়া দিলেন ॥ ২৪॥ তং প্রেমবেগালিভ্তা ব্রজোকদো যথা সমীয়ুঃ পরিরম্ভণাদিভিঃ।
গোপ্যশ্চ সম্মেহ্মপুজয়মুদা দধ্যক্ষতান্তি যু্যুজ্ঃ সদাশিষঃ॥
যশোদারোহিণীনন্দো রামশ্চ বলিনাম্বরঃ। কৃষ্ণমালিক্ষ্য যুযুজ্ রাশিষঃ স্লেহকাতরাঃ।
দিবি দেবগণাঃ সিদ্ধাঃ সাধ্যা গদ্ধবিচারণাঃ। তুফী বুমুমুচ্ স্তটাঃ পুভাবর্ষাণি পার্থিব।

वी भत्र या भी।

নিভ্তাঃ পূর্ণাঃ ষথা যথোচিতং পরিরক্তণাদিভিঃ সমীরুঃ উপজগ্মুঃ সদাশিষঃ শ্রেষ্ঠানাশীর্কাদান্ ॥ ২৫ ॥

বৈষ্ণবজোষণী।

অধুন পরমহর্ষেণ প্রীভগবত। সহ সর্বেষাং তত্রত্যানাং স্মাগমঞ্চ বৃদন্ প্রেমোন্ত্রেকণ গায়রিবাহ তমিতি গোষ্ঠরক্ষার্থং ধৃত গোষ্ঠ্রনাং। বহা প্রকটিতেখার্য্যে ময়ি ব্রজৌকসং সর্বেব্রজবাসিজনাঃ পরিরস্তাগাদিভিঃ সমীয়ুং মিলিতবস্তঃ। তত্র হেতুং প্রোমোন্ত্রেঃ আনিমন্ত্রকপ্রাসেন উল্লেখ্য তের হৈতুং প্রোমোন্ত্রেঃ আনিমন্তর্কপ্রাসেন উল্লেখ্য তের তের্বান্তর্বিং। আদিশকেন শুভাশীর্বাদে শ্রীমন্তর্কাছাণচুহনপাদ্রহণ বামবাহসক্ষন তদকুলিক্ষোটন স্তবন শ্রম ছংধাভাব প্রশ্লাদয়ঃ। বথা যথোচিতং শুরু সম লঘুবর্গভেদেঃ। সম্বেহং যথাভাবেং বা স্থেহং। আশিমঃ ছ্টান্ দ্ময় শিষ্টান্ পালয় সর্বৈশ্ব্যসেবিতো ভব নিজানাননার ইত্যাদ্যাঃ॥

গোপগোপ্যাদ্যপেক্ষা পশ্চাং স্থিতানাং প্রমন্ধিনাং মাত্রাদীনাং সন্ধৃতিমাই যশোদেতি শ্রীয়শোদা সাহচ্র্যে শ্রীনন্তাদর বিশেষেণ বা তন্ধাৎ প্রাক্ শ্রীরোহিণ্যা নির্দেশঃ বলিনাং বর ইতি। যদ্যপি তন্তাপি গোবর্দ্ধনধরণসামর্থ্যকি শেষরপেণ স্থাংশেন মুর্দ্ধৈ কদেশে হেলয়া পৃথী ধারণাৎ তথাপি তত্রাপ্রস্তি ন্তিধি লীলায়া তাদভীইষাদিতি ভাবঃ। যদা বলিনাং বর ইতি নির্ভ্তর গাঢ়ালিক্সমতিপ্রৈতি স্বেহাতিশয়েন এপ্রভাব জ্ঞানেনচ সর্ব্ধ শ্রীকৃষ্ণেচ্ছায়াং সম্মত্যা মৌনং গোবর্দ্ধনোদ্ধরণাদে তৎ কীর্ত্ত্যপক্ষা বা সাহায়্যমিতি পূর্বং তন্ধামাশ্রবণমিতি জ্ঞেয়ং। আশিষঃ এবং চিরমন্ধান্ পালর সদা স্থাত্তব নিত্যং পূর্ণমনোরথ এধ্যেত্যাদ্যাঃ। স্বেহেন কাত্রা অধীরাঃ সন্তঃ। অত্র প্রাচীনগোবর্দ্ধনধরপ্রতিক্ততৌ কচিদ্প্রতে। মাত্ত্যাং নবনীতাদি সমর্পণং পিতা ভ্রাত্ত্যাঞ্চ শির্সা শ্রীগোবর্দ্ধনাবইস্তনাদিক্মিতি। তচ্চ স্নেহকাতরা অধীরা ইত্যনেন স্বিত্তমিত্যবগ্যতে॥

ন কেবলং ব্ৰফ্ষোকসাং দেবানামপি প্ৰহৰ্ষোক্ষাত ইত্যাহ দিবীতি ৰাজ্যাং। নিৰ্দ্ৰেশ্ত মদতৃক্ষত্বংখেহণি তাদৃশে কথং তে তথা ২কুৰ্ব্বত ভক্ৰাহ তুষ্টাং। হৰ্মদেনাক্বত্যে প্ৰবৃত্তকেক্সস্ত মাদভক্ষেন শ্ৰীক্ষম্ভত মধুব্ৰৱক্ৰীড়া প্ৰদৰ্শনেন হৰ্ষোদ্যাদিত্যৰ্থং। হে পাৰ্থিবেত্যাশ্চৰ্য্যেণ সংখাধনং দেবেক্সম্ভ হংথেছণি তেৰাং প্ৰহৰ্ষাৎ যৰা রাজ্ঞোপেক্ষয়া প্ৰজানাং দেশাধিকারিণো হনপেক্ষাবত্তেষাং শ্ৰীভগ্ৰদপেক্ষয়া শক্ৰান-

শ্ৰীবিশ্বনাগচক্রবর্তী।

নিভ্তাঃ পূর্ণাঃ। যপা যথোচিতং গুরু সম শঘুবর্গভেদৈঃ। পরিরম্ভণাদিভিঃ সমীয়ুর্শিলিতবস্তঃ। আদিশকাৎ শুভাশীর্ঝাদ মতকালাণ চুখন বানবান্ত সংমদিন তদস্লিম্ফোটন স্তবন শ্রমত্ঃধাভাব প্রশাদরে। গুরুবর্গদে। হাত পরিহাসাদরঃ সমবর্গত। পাদপতন পাদসংমদিনাদ্যো লঘুবর্গদা ক্রেরাঃ। গোপ্যোবংসলাঃ। চকারাৎ পুরোহিতপ্রঃ। দধ্যাদিভি ম শল্পভবিতঃ অপুজ্য়ন্ সংমানয়ামান্তঃ। শুভাশিষঃ ছঠান্ দমর শিষ্ঠান্ পালর পিতরাবানন্দর ধনৈখব্য সম্পারো ভবেত্যাশিষে। যুমুজু বৌজ্য়ামান্তঃ॥

নিজমাত্রাদীনাং অভিবিশেষমাহ ধূশোদেতি রামশ্চেতি তদ্যাশি বাংসন্যবন্ধর্গে নিদেশো জ্যেষ্ঠনাদের নামুপপন্ন:। নতু প্রম-স্নেহ্বতা তেন শেষাখাস্বাংশেন পৃথীমপি দধতা স্বামুজস্য গোবর্দ্ধনধারণে কথং সাহায্যং নাচরিতং। উচাতে। ইক্সমখতক গোব-র্দ্ধনমধ্পাবর্তনয়ো ম'য়েব কৃতভাদহমেব গোবর্দ্ধনং ধুলা একং রক্ষিয়ামি সোহন্ধং কে এত আহিত ইভি তদীয় সংক্রস্য তদংশেন রাদে-

পরে ব্রজবাসিগণ প্রেমবেগে পূর্ণ ছইরা যথে। চিত আলিঙ্গনাদি দারা শ্রীকৃষ্ণের নিকটে গমন করিতে লাগিলেন, আর গোপীসকল স্নেছ প্রকাশ পুরংসর পরম ছর্ষে পূজা তথা দিধি অক্ষতাদি দারা অশীর্কাদ প্রোগ আরম্ভ করিলেন। হে রাজন্! যশোদা রোহিণী নন্দ এবং মহাবল রাম ইইারা স্নেহে কাতর হইয়া শ্রীকৃষ্ণকে আলিঙ্গন করত আশীঃ প্রয়োগ করিলেন। স্বর্গে দেবতা, সিদ্ধ, সাধ্য,

শশ্বদুভ্রো নেছ্দি বি দেবপ্রচোদিতা:। জগুর্গন্ধপতয় স্তমুরুপ্রমুধা নৃপ ॥ ২৫ ॥ ততোহকুরক্তৈ: পশুপৈ: পরিশ্রিতো রাজন্ স্বগোষ্ঠাং স্বলোহত্রজন্ধি:। তথাবিধায়াস্থ কৃতানি গোপিকা গায়ন্তা ঈয়ু মুদিতা ছদিম্পৃশ:॥ ২৬॥

॥ *॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং নৃশমক্ষদ্ধে গোব-র্দ্ধনধারণং পঞ্চবিংশোহধ্যায়ঃ ॥ ৽ #॥ ২৫॥ #॥

श्रीधत्रवामी ।

ততো গোবৰ্দ্ধনস্থানাথ অস্য শ্ৰীকৃষ্ণস্য তথাবিধানি গোবৰ্দ্ধনোদ্ধরণাদি ক্ষণাণি ক্লতানি কৰ্মাণি গায়ন্ত্ৰ্য ঈয়ুং যযুং। কণং ভূতাং এবং প্ৰেমা হৃদি স্পান্তীতি হৃদিস্পান্তাং যদা কথং ভূতস্য প্ৰেষ্ঠব্যে ক্ৰাসাং হৃদি স্পাতীতি হৃদিস্পৃক্ তস্য ॥২৬॥ • •

॥ 🛊 ॥ ইতি দশমে পঞ্বিংশ: ॥ 🛊 ॥

বৈঞ্চবতোশ্বী।

পেক্ষা যুক্তিৰ তচ্চ বলা জ্ঞায়ত এবেতি ভাব:। মদভকেনবিক্সতাপি তঞান ক্রোধ ইতি জ্ঞেয়ং॥

দেবৈ: প্রকর্ষণ বিচিত্রতয়া বাদিতা ইতার্থ:। যথা স্বয়মেব নৃত্যাচরণাদিনা প্রেরিতা বাদক্ষারা প্রবর্তিতা: সম্ভঃ দিবীতি পুনকল্পি: ইক্সভয়াভারেন দিবোব তেষাং তওদাচরণভ বোধার্থং। হে নৃপেতি প্রহর্ষণ যথা ভব্দিধস্য রাজ্যোমহোৎসব ইতি বা॥ ২৫॥
প্রহ্রেণের তভ্ত গোঠপ্রবেশং পূর্ক্বদ্গায়িরবাহ তত ইতি পরিতঃ শ্রিতঃ বৃত্তঃ যতো হয়ুরকৈ:। সত্রজরকার্থং ধৃতগোবর্দ্ধন:।
স্বগোঠনিতি কচিৎ পাঠা। মধ্যে গোঠং শ্রীনকভ স্বীয়াবাসপর্যাস্তঃ প্রবিবেশ ইতার্থঃ। প্রহর্ষোয়েকেণ সর্কেবামেব তেষাং তেন

স্বগোষ্ঠমিতি কচিৎ পাঠা। মধ্যে গোষ্ঠা শ্ৰীনকান্ত স্বীমাবাসপর্যান্তং প্রবিবেশ ইত্যর্থা। প্রহর্ষোন্তেকেণ সর্কোষামের তেরাং তেন সহ তঠিত্রব গমনাং। হরিঃ শত্রুত্মনগোষ্ঠার্তিহরণাৎ তৎ ক্রীড়য়া সর্কমনোহরণাচ্চ শ্রীগোপীনাঞ্চ সর্ক্তো হধিকং স্থমজনীত্যাহ তথেতি গায়ন্তা ইতি তৎক্রণমের গীতক্রণশক্তি দিশিতা॥ ২৬॥

॥ 🛊 ॥ 🛮 हेकि ब्रीटेवस्ववटकांबनारि मन्मिष्टिश्रनारि शक्षविरमः ॥ 🛊 ॥

ক্রমগন্দ ড:

শঙ্খেতি। অন্যেষাং দেবানামপি হর্বকৌতুকং দর্শরতি॥ ২৫॥ ২৬॥

॥ *॥ देशि श्रीमनाम श्रीकीवाशाचानिक्छ क्रमनमार्ड शक्षविः मः ॥ •॥

শ্ৰীবিশনাপচক্ৰবৰ্তী।

ণান্যথা কর্ত্ত্ব্যাদশক্ষাল তলৈ বিশ্বত্ত্ব সর্কালিক বাং। তলিজ্বৈর তলংশের যথোপযোগি তলীয়শক নুলয়াচেতা বিশ্বব্যাহিংপি যথাস্থানং দিয়া ত্ত্বিয়াল ক্রিয়ালি তল্প প্রাচীন শ্রীগোবর্ত্বনধর প্রতিক্রতৌ ক্রিম্পাতে। সাত্ত্যাং নবনীতাদি সমর্পণং পিত্রা ভ্রাত্তাচ শির্দা গোবর্ত্বনাবন্ধ স্থাতি । তং সেহকাতরা ইত্যানেন স্চিত্যবগ্যাত ইতি বৈক্ষবতোষণী ॥

बद्धोकरमा यथा कक्ष्य खथा स्मर्वा ष्मनी जाह मिरीि । २०॥

তং প্রেরদীনাং তু সর্বজনাশক্ষিতং দ্রতঃ কটাকৈরের মিলনং রুত্তং গৃহগমনসময়ে সপ্রেমগানঞাহ। ততো গোবর্দ্ধনকানাংকৃতানি চরিআনি গায়স্তা ইতি তৎক্ষণ এব গীতকরণে সামর্থাং। হানি প্রেমা স্পৃশক্তীতি তা ইতি যাঃ কৃষ্ণং সদা ধ্যায়স্তীতার্ধঃ। যদা
দ্বিক্সিম মনসিচ স্পৃশতীতি হানিস্কৃত প্রেষ্ঠস্তান্তি কৃষ্ণসা বিশেষণং॥ ৩৩॥ . . . *

॥ 🕳 ॥ 💆 ইতি সারাধিদ শিন্যাং হবিশাং ভক্তচেভসাং । পঞ্বিংশোহত দশ্মে সম্বতঃ সম্বতঃ স্তাং ॥ 🖝॥

গন্ধর্ক এবং চারণগণ ভূষ্ট হইয়া স্তব ও পুষ্পার্ম্নি করিতে লাগিলেন, আর দেবর্দ্দ কর্তৃক প্রমোদিত হইয়া দেবলোকে শহাও ভূন্দুভি শব্দায়মান হইল এবং ভূমুক প্রস্তৃতি গন্ধর্ক রাজগণ আনশ্দে সঙ্গীত আরম্ভ করিল ॥ ২৫॥

হে রাজন্। তাহার পর অনুরক্ত গোপরশে পরিরত হইয়া বলভন্ত সহ ভগবান্ হরি আপনার গোঠের প্রতি যাত্রা করিলেন। গোপীগণও তদীয় তথাবিধ হাদয়ঙ্গন কীর্তি কদন্থ গান করিতে২ পরম-হর্ষে ব হানে প্রস্থান করিলেন॥ ২৬॥

া। 🛊 ॥ ইতি দশনে পঞ্বিংশ ॥ 🕫 ॥

बापतांग्रिककां ॥

এবং বিধানি কর্মাণি গোপাঃ কৃষ্ণশু বীক্ষাতে। অত্থীষ্যবিদঃ প্রোচুঃ সমভ্যেত্য স্থ্রিশ্মিতাঃ॥১ বালকশু যদেতানি কর্মাণ্যত্যমূতানিচ। কথমর্হত্যসৌ জন্ম প্রাম্যেম্বাল্মমুগুল্পিতং॥ ২॥

<u>ज</u>ीधत्रचागी।

বড়্বিংশে বিশ্বিতান্ গোপান্ কৃষ্ণসামূতকৰ্মভিঃ। নন্দো গর্গোক্তমাশ্রাব্য ভটেদখর্গুধ্বর্গরং ॥ • ॥ সমভ্যেক্তা নন্দমভিগমা ॥ ১ ॥

যদ্চ্ ওদাহ বালকদ্যেতি যদ্যসাদতাত্ত্তানি কর্মাণি তসাদ্থাঘ্যেষু গোপেষু কথং জন্ম অইতি আশ্বস্থুপিতং আস্থানহং ॥ ২॥

বৈষ্ণ বতোষণী।

ইখং শ্রীভগবতঃ শক্তাতিশয়দৃষ্টা ঐশব্যজ্ঞানেন ব্রজ্জনানাং তশ্মিন্ কদাচিৎ প্রেমহাসমাশস্কা তৎ পরিহারার্থং বিশেষতশ্চ গোপবর্গন্ধত শক্ষায়াঃ শ্রীনন্দেন নিরসনাং প্রেমবির্দ্ধমিঞ্জি বোধনার্থং তৎ প্রসঙ্গমার্ভতে এবমিত্যাদিনা যাবং সমাপ্তি ঈদৃশান্তানিকিকানি ইত্যর্থঃ। বছতং পূর্ব্বাপেক্ষয়া ন তহ্ম বীর্ষাং ঐশব্যং বিন্দপ্তি অমুসন্দধতীতি তথা তে। যতন্তে ইতি সদা তৎক্ষেত্বিবশ-ত্বেন প্রেসিদ্ধা ইত্যর্থঃ। অতএব স্থবিশ্বিতাঃ সন্তঃ সম্যুগ্ভক্ত্যা প্রণতিপূর্বকং গোপরাজমভিগম্য। যথা মিথঃ সন্ত্র। প্রকর্ষেণ ন্যায় প্রদর্শনাদিনা প্রেম পর্যবসানত্বন বা উচুঃ॥ ১॥

বালকস্য চেত্যৰয়: অপ্যর্থে চকার: বৈ ক্চিছাল্যে বর্ত্ত্মানস্যাপীত্যর্থ:। গ্রাম্যের গ্রাম্যন্তাৎ উত্তমতা হীনেরু আত্মনো ভুগুপ্সি-তং নিন্দা যত্মাৎ তৎ অসাবিতি পারোক্য নির্দেশেন তদাসে বনং গত ইতি লক্ষ্যতে পরোক্য এব রসাপত্তে:॥ ২॥

ত্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

ষড় ব্লিংশেতু তদৈখগ্যানৈখর্য্যেকণশক্ষিন:। গোপান্ প্রবোধয়ামাস্ নন্দগর্গোক্তিগৌরবৈ:॥ • ॥

ইং কিল প্রীগোবর্দ্ধনধারণসমরে প্রীক্ষঞলাবণ্যামৃতরসাস্বাদনিম্মানাং গোপানাং মনসি কোংপি বিচার উদ্ভবিত্ মবসরং ন প্রাণ। তদনস্করং স্বস্থ গৃহং গতানাং তেষাং সর্বেধামেব ফ্লি সন্দেহ এক উদপদাত। অহো সংপ্রতি সাক্ষাদ্ষ্টেন গিরিধারণেন পূতনাবধাদ মোহপি দাবানলোপশমনাদ্যোহপ্যবৈদ্ধা কর্মাণি প্রতীম তদা তদাত রাক্ষণশির্ধাদাং নলভাগ্যাতিরেকাং নারায়ণপ্রসাদপ্রাপ্তে হিন্দিন্ব বালকে নারায়ণাবেশাঘা তেতে হভ্বরিতি বিতর্ক। বৃথৈব কতা বস্তুত্ত সাপ্তবর্ধিক বালকস্যাস্য সপ্তদিনাবধি শৈলেক্ষধারণং অনুনর্জং নিষিদ্ধা প্রমেশ্রত্ত্বেব কথয়তি কিঞ্চামাকং সাংসারিকাণাং গ্রাম্বগোপানামেতৎ পিতৃপিত্ব্য মাতৃলাদীনাং লালনৈঃ প্রক্রমন্ত্রিকা বৈর্প্তাং তথা কুং পিপাসা দ্বিপ্রশেষ্ট্র দন্তান্ত্র প্রশাসন বংসগোচারণাদিকং প্রমেশ্বরত্বে সতি কথং সম্ভবেদেত কু প্রমেশ্বর্জং নিষিদ্ধা নর্জনেব প্রতিপাদয়ত্যতোহক্ত তবং নিশ্বেত্মসমর্থা মহাবৃদ্ধিমন্তং ব্রহ্বালনেব পৃট্বা নিঃসংশয়া ভ্রাম ইতি মনসি ক্রয়া তবৈস্ব মহাস্থানীং প্রবিশ্ব তং পপ্রভ্রাত্তাহ এবমিতি॥ ১॥

অত্যস্তানীত্যতো নায়ং প্রাক্তোবালকঃ কিন্তীশবএব ইতি চেদত আহ কথমিতি অসাবিতি পরোক্ষনির্দেশেন তদাসৌ বনং গত ইতি লভাতে। পরোক্ষ এব রসাপত্তো। আয়ুজ্ঞিসিতমিত্যাত্মনো জ্ঞুপায়াং নিক্টোছিপি ন প্রবর্মতে কিমুত সর্বা প্রকৃষ্ট ক্ষম ইতি ভাবা ॥ ২॥

ষ্ড্বিংশাধ্যায়ে শ্রীকৃষ্ণের অন্ত কর্ম দর্শনে বিশ্বিত গোপদিগের নিক্টে নন্দ কর্ত্ক গর্গ কথিত তদীয় ঐশ্ব্য বর্ণন ॥ ॰ ॥

শুকদেব কহিলেন সেই সকল গোপ শ্রীক্ষকের ঐ রূপ ভূরি ২ অমূত কর্ম অবলোকন করিয়া তদীয় বীগ্য অনবগত থাকা প্রযুক্ত অতিশয় বিশিষ্ঠ হইলেন এক নক্ষ স্বীপে গমন করিয়া করিছে লাগিলেন॥ ১॥

তোমার বালকের এই সকল কর্ম অভ্যাশ্চর্যা, ইনি গ্রাম্য গোপজাতি মধ্যে কি প্রকারে জন্ম গ্রহণ করিলেন এতাদৃশ জন্ম ইহার আপনার অনুষ্ঠ অর্থাৎ অযোগ্য ॥ ২ ॥ ষঃ সপ্তহায়নো বালঃ করেণৈকেন লীলয়া। কথং বিজ্ঞানিবরং পুক্তরং গল্পরাড়িব॥ ৩॥ তোকেনামীলিতাক্ষেণ পুতনায়া মহোজসঃ। পীতস্তনঃ সৃহ প্রাণৈঃ কালেনেব বয়ন্তনোঃ॥ ৪॥ হিন্নতোহধঃ শয়ানস্থ মাস্যস্থ চরণাবুদক্। জনোহপতদ্বিপর্যন্তং ক্লদতঃ প্রপদাত্তং॥ ৫॥

প্রীধরস্বামী।

জত্যকুত কর্মাণ্যাছদ দিশভি: য: সপ্তহায়ন ইতি কথং বিত্রৎস্থিত ইতি পুষরং পদ্মং গল্পরাট্ মহাগল ইব॥ ৩॥ মহৌজসঃ মহাবলারা: তনোর্বয়: আয়ুর্যোবনং বা কালেন যথা পীড়য়তে তদ্বৎ কথমিত্যসূবর্ত্ততে॥ ৪॥ জনসোহধঃ শ্রানস্য মাস্যস্য মাসান্তর: পরিচ্ছেদকা যস্য উদক্ উর্জং চর্মো হিরতঃ চালয়তঃ প্রণদেন পাদাগ্রোণাইতং বিপ্রাব্তং

देवकवरलावेगी।

বালস্কত্রচ সপ্তথারনঃ সপ্তবর্ষনাত্রবর্ষাঃ ভত্তাপ্যেকেনৈর ন কলাচিৎ পরিবৃত্তা করাস্করেণ ভত্রাপি গিরিষু বরং শ্রেষ্ঠং পরম শুক্ষণতর্মিতার্জঃ। তরাপি লীলয়া কথং বিভ্রুৎ স্থিত ইতাসন্ধাব্যদেনাত্যমুভজংব্যক্ষিতং। বো বালঃ স কথমিতাধ্যাহারেণাছরঃ। দীলয়া ধারণে দৃষ্টাজঃ। পুছরমিতি এতেন সৌন্ধ্যাদিবিশেষেহিপি স্টিতঃ। ক্ষভোহসৌ লৌকিকবালকো ন ভবতীতি ভাবঃ। বজু বিশুপুরাণাদৌ গ্রীষ্ণকালে বুলাবন্মাগতসা সপ্তমবর্ষে গোপালনে প্রবৃত্তিরিতি। তথা চোক্তং। কালেন গক্ষতা তৌ তু সপ্তবর্ষে মহাত্রজ। সর্বস্বা জগতঃ পালৌ বংলপালো বভ্রত্তিত। অস্যার্থঃ শ্রীশ্বামিপালৈরের ভট্টীকারাং ব্যক্ষিতোহন্তি। এবং বংলপালো সমন্ত্রী কালেন গক্ষতা সপ্তবর্ষে গোপালনে সমর্থে বভ্রত্তিতি। অব্যার্থঃ শ্রীশ্বামিপালৈরের ভট্টীকারাং ব্যক্ষিতোহন্তি। এবং বংলপালো সমন্ত্রী কালেন গক্ষতা সপ্তবর্ষে গোপালনে সমর্থে বভ্রত্তিতি। বংলপালো তু সংবৃত্তী রামো দামোদরৌ তত ইতি পূর্বমুক্তর্যাও। তদনভরক্ষ ভিশ্বিরাবান্দে পরন্ধিন্ বা প্রার্ট্ ক্রীড়া ভতঃ কালিয়মর্দনং ভতে। ধেক্তকপ্রলম্বর্মেধঃ ভতঃ শর্দি শ্রীগোর্কনোছরণ্-মিতি তস্যচ কর্মভেদব্যবন্থরা ভতশ্ব পৌগগুবরঃ প্রতাবিত্যাদিনা বিরোধঃ পরিহার্য্য ইতি দিক্ ॥ ৩ ॥

পূর্ব্বমিতিবাল্যে ছ্রাংবেন তৎকৃত্বে দন্দিগ্ধান্যপি পূতনাবধাদীন্যধুনা সাক্ষাজ্বীগোবর্গনোদ্ধরণদৃষ্ট্যা ভদীয়ান্যেবেতি নিন্দিবর গণাহ্যোকেনেতি নবভিঃ। আ সম্যক্ মীলিভাকেন ইত্যুক্তদিশা তেন চাত্যন্তবাল্যখা বোধিতং। পানপ্রকার্শ্চ ছ্রেগিন্দিতি দৃষ্টান্তেনাহঃ কালেনেতি ইতি শক্তিবিশেষঃ স্চিতঃ। কথমিত্যস্য সর্ব্বোগ্রেহপ্যস্ত্বুক্তঃ। সর্ব্বোমেব তত্তৎ কর্ম্বানাশ্চর্য্যক্রানা গ্রামের ক্ষান্যোগ্যতামেব সাধ্যন্তি বছা কথমিত্যস্যানন্ত্রভ্যাপ্যভূতানীত্যুক্ত্যা সোহর্থঃ অতঃ পর্যাব্দ্যতি ভোকেনেবেত্যাদিভিশ্বাস্কুক্রাণ্যব্রাক্তানি ॥৪॥

প্রপদেন আ ঈবৎ হতং প্রস্তৃতঃ। রুদত ইতি পূর্ববং বাল্যাতিশরঃ স্বচাতে। তেন চাতুতত্বে হেতৃতরা শক্তিবিশেষ এব বোধ্যতে। এবমগ্রেহণি। অস্তৃতিঃ। তত্র মান্ত্রপ্যতি মাসমাত্রং ব্যাপ্য জাতবাল্যস্যেতার্থঃ। কালাদিত্যধিকারে তমধীষ্টোভৃতো ভূতো ভাবী বেহ্য-

बैविषनाथहळ्यकी।

বদিচ নেশব শুহি কথমেতানি কর্মাণি সম্ভবেমুরিত্যাত্ র্যাদশভিঃ। ব ইতি বিভং স্থিত ইতিশেষঃ। পুছরং পদাং কথমি হাস্য বিভক্তিবিপরিণামেন যজ্জন্য চাগ্রিমঙ্গোকেশ্রস্তি কেবি।॥৩॥

ভোকেন বেন বালেন ঈষমুদ্ধিতাকেণ অগক্ষামাণতে দৃষ্টাতঃ তনো ব্যোঘোষনং কালেন যথা পীয়তে তহও ॥ ৪ ॥
অননোহধঃশহানস্য মাস্যস্য মাসত্তহবৰসঃ মাসাছহসি যও থঞাবিতি যও। চরগৌ উদকু উর্ছং হিষতঃ চাল্যতঃ যস্য প্রাপদেন

ইনি বালক, বয়:ক্রম সপ্তবর্ষ মাত্র তথাচ মহাগজ যেমন পদ্ম ধারণ করিয়া থাকে তবৎ এক হত্তে ক্রবলীলাক্রমে কি প্রকারে গিরিবর গোঁবর্জন ধারণ করিলেন ?॥ ৩॥

অপর, কাল মদ্রেপ কলেবরের আয়ুং আকর্ষণ করে তবৎ ঈষৎ নিমীলিভাক্ষ এই বালক কি প্রকারে মহাবল প্তনা রাক্ষ্পীর স্তনপান করিয়া ছিলেন। ॥ ৪ ॥

ইহাঁর যথন তিন মাস বয়স, তথুন একটা প্রকাণ্ড শকটের অধোভাগে শয়ান হইয়া উর্দ্ধে চরণদয় চালন করত রোদন করিতে ছিলেন, সেই চরণ দ্য়ের অগ্রভাগ দারা আহত হইয়া সেই শকটটা কি একহায়ন আসীনো ব্রিয়মাণো বিহায়সা। দৈত্যেন যক্তৃণাবর্তমহন্ কণ্ঠগ্রহাতুরং ॥ ৬॥
কচিদ্যৈক্রবৈত্যের মাত্রা বন্ধ উদ্ধলে। গচ্ছমর্জ্নয়াম ধ্যে বাহুভাগে তারপাতয়ৎ ॥ ৭॥
বনে সঞ্চারয়ন্ বৎসান্ সরামো বালকৈর তঃ। হস্ককামং বকং দোভাগং মুখতোহরিমপাটয়২।
বৎসেয়ু বৎসরপেণ প্রবিশস্তং জিঘাংসয়া। হয়া ন্যপাতয়তেন কপিথানি চ লীলয়া।

अधिक चामी

অন: কথমপত ।। ৫॥

যো দৈত্যেন ব্রিমাণ: দ তং তৃণাবর্ত্তং দৈত্যং কথমহরিতার্থ: ॥ ৬ ॥
হৈয়কুবটুন্তত্যে নকনীতচৌর্য্যে বাহত্যাং গচ্ছন্ রিঙ্গরিতার্থ: ॥ ৭ ॥
মুখতো হন্তং কামো যদ্য তং বকবেশমরিং বাহত্যাং মুখতঃ কথমপাট্রেং ॥ ৮ ॥

देवस्थवत्कावगो।

ধিক্বত্যমাদাঘন্তি যথ থঞাবিত্যনেন যদিধানাথ। তাত্ৰ দিতীয় স্ত্ৰে তং ভূত ইতি তাবন্তং কালং ব্যাপ্য লব্ধসভাক ইত্যৰ্থে সভীতি ব্যাখ্যানাথ। তৃতীয়স্ত্ৰে বন্ধদীতি বিশেষোপাদানাচ্চ। কিন্তু মাদশ্চ মাদশ্চ মাদশ্চ মাদশ্চ মাদশ্চ মাদা ইতি অন্নাণামেবৈক্শেষ্ত্বকরণাথ বৈমাদিক্ত্যচ পদা শক্টোপর্ব্ধ ইতি। তাত্ৰ মাস্ত ইতি শৈশিকো যথ। আন ইতি মাদানাং বছদ্বেছপি আছি এব বিশ্রামাৎ কাপিঞ্লাধিকরণন্যাকেন। আনি বিন্দাদিক্ত্যত পদা শক্টোপর্ব্ধ ইতি প্রামাণ্যাচেতি জ্বেশং। দিতীয়ক্ষক্ত সন্ধাদঃ কর্ত্বাঃ॥ ৫॥

আসীন ইতি অত্যন্তবাশ্যমেবাভিপ্রেতং। সম্যক্ চশিত্মপি পদা ন শক্ষোতীত্যভিপ্রায়াৎ কণ্ঠগ্রহণমাত্রেশৈবাতুরং বিহরলং ॥৬॥ কচিৎ ক্যাচিৎ অস্যাগ্রেহপি সর্কার্তিবাহুর্তিঃ। বাছভাাং ভদগ্রভাগাভ্যাং ক্রাভ্যামিত্যর্থঃ। উল্থলকর্ষণায় তয়োরেকাধি-কোন প্রণোদনাৎ॥ ৬ ॥ ৭ ॥

সরামো বালকৈর্জ ইতি রামে বালকেষ্চ তত্ত্রেব সংস্থ সএবাপাটরদিতি সর্বেভা: শক্তিবিশেষো ধ্বনিত: । সুথতো মুখনারত্য আরিমিতি তামসযোনিতাং যদৃচ্ছয়। হস্কামং । অপিতৃ অরিং ভগিনীবধলাতশক্তভাবাদাগ্রহেণাপীত্যর্থ: । পুর্বোক্ততত্ত্বধর্যং-ক্রমন্তথা ব্যোমবধাতিক্রমশ্চ পরমবিশ্বরেনাক্রান্ততিক্রাং । এবমগ্রেহপি ॥

क्रमनन्छः।

বাহভাং গচ্ছন্নিতি উল্পলাকর্ষণায় অরিং শত্তেষোসদাগ্রহণরমপি ॥ ১॥ २॥ ৩॥ ৪॥ ৫॥ ৬॥ ৭॥ ৮॥ ৯॥

ত্রীবিখনাণচক্রবর্তী।

পাদাগ্রেণাহতং অনঃ শক্টং বিপর্যান্তং সৎ কথ্মপতৎ॥ ৫॥

যো দৈত্যেন ক্লিয়মাণ: সন্ তং তৃণাবর্ত্তং দৈত্যং কণমহন্ ॥ ৬॥

रेश्यक्षवरिखाना नवनी उक्तिर्या वाष्ट्याः शब्दन् त्रिकतिष्ठार्थः ॥ १ ॥

দোৰ্ভ্যাং ধৰা মুখতঃ মুখমারত্য কুথমপাটরং॥

প্রকারে বিপর্যন্ত হইয়া পড়িয়াছিল ?॥ ৫॥

হে গোপরাজ! জ্রীকৃষ্ণ এক বংসর বয়ংক্রমে বসিয়া থাকিতে ২ ভূণাবর্ত্ত দৈত্য কর্তৃক আকাশে অপহত হইতেছিলেন, তথন কি প্রকারে কণ্ঠ গ্রহণ দারা কাতর করিয়া সেই দৈত্যকে নিহত করেন ! ॥ ৬॥

আর জিজাদা করি নবনীত চুরি করিলে ইহাঁর মাতা ইহাঁকে উদুধলে বন্ধন করিয়াছিলেন, ইনি তদবস্থায় বাছ্রয় বারা ছুইটা যমলাক্ত্নের সঞ্জে গমন পূর্বক কি রূপে সেই বৃক্ষরয়কে পাতিত করেন ? ॥ ৭ ॥

.অপর ইনি বালক্রন্দে পরিবৃত হইয়া বলদেব সহ বনমধ্যে বৎসচারণ করিতেছিলেন, সেই সমর বকাহার ইহার প্রাণবধ কামনায় আসিয়াছিল, ইনি স্বীয় বাহুদক্ষ দারা বকবেশধারি সেই স্থিরিয়া কি প্রকারে বিদারিত করিয়া ফেলেন ? আরু বৎস বিনাশ বাসনায় বৎস রূপ ধরিয়া বৎসাহ্মর হন্ধ রাসভদৈতেয়ং তৰজুংশ্চ বলাবিত:। চক্রে তালবনং ক্ষেমং পরিপক্ষণলাবিতং।
প্রলম্বং ঘাতয়িঘোত্রং বলেন বলশালিনা। আমোচয়য়ুজপশূন্ গোপাংশ্চারণ্যবহ্নিত: ॥ ৮ ॥
আশীবিষতমাহীক্রং দমিতা বিমদং হ্রদাৎ। প্রসহোধাস্য যমুনাং চক্রেছসৌ নির্বিষোদকাং ॥৯॥
ফুস্তাজশ্চামুরাগোহিত্মিন্ সর্বেষাং নো ব্রজৌকসাং। নন্দ তে তনয়েছ্মাহ্ন তস্তাপ্যোহপত্তিকঃ কথং॥১৭

औधत्रवागी

আশীবিৰভম: অভিক্রবিব: সচাসাবহীক্সশ্চেভি তং॥ ১॥

ঔংপত্তিক: স্বাভাবিক: কথমিতি কিং সর্কেবামান্মায়ং স্যাদিতি শঙ্কা॥ ১ •॥

देवकवरकावनी ।

জিলাংসয়া সরামক্ত তক্ত লীলয়া হথা পশ্চাৎ পাদভয়গ্রহণেন ভ্রমণাৎ কপিখানি চেতি মহারুক্ষাগ্রবিক্ষেপদ্যোতনেন শক্তি-বিশেষ: স্বচিতঃ॥

বিদাৰিত ইতি ধেল্লকবধেহণি তদ্যৈৰ প্ৰাধান্যধিবক্ষা নৃন্মেতংপ্ৰভাবেণৈৰ ব্লক্তাহণি বলোদ্যাদেতদৈয়ককৰ্ত্ৰ্মিতি ভাব:। ক্ষেমং নিৰ্ভয়ং সংক্ষাপ্তেগ্যমিত্যৰ্থ:॥

বলেন খাত্যিছেতি তত্ত্বাণি তথ্য মুখ্যছং হৃচিতং। কুতো বলেনৈবাঘাত্ত্মন্ত্ৰন্যেন তত্ত্বাছঃ বলেতি তং প্ৰভাবলব্ধবদ্বিবতা। অভত্ত্বিন বিদ্যানে অন্যেন ঘাতনা ন যোগ্যেতি ভাবঃ ॥ ৮ ॥

বিমদং বৰা স্যাত্তথা দময়িছা। বছা। বিমদং সন্তং ভ্রদাত্ত্বাস্য ॥ ৯ ॥

কি ক ছন্তাজশ্চেতি তে তনরে তবৈব তনয়ৈ হয়ং নামাক্ষিতি বিচারিতে ছপি তাক্তু মূলকাঃ ম্বাভাবিক ইতার্থঃ। ত্রাপি সর্কেরাং অতো ভবতু বা স্কান্ধতি এক তিয়ুল্পরে স্ক্চিতাক্র্যক্তন্যাগতীনাম্মাকং অনুরাপো ছন্তাজন্যাগ্যাম্বাহিং গ্র

ক্ৰেসন্দৰ্ভ:

কিঞা হন্তাজন্চতি তথাবিক্ষধৰ্মান্ধেতোঃ॥ ১০॥

গ্ৰীৰিখনাখচক্ৰবৰ্তী।

রাসভবৈতেরং ধেছকং। বলাধিত ইতি তত্রাপি ক্রফস্য প্রাণান্যং বিবক্ষিতং ॥৮॥ আশীবিষত্যোহতিক্রবিষশ্চাগাবহীক্সণেতি তং বিমদং যথাস্যাতথা দমিখা॥৯॥

এবনভেশবতে গিরিধারণাদয় এডরিটা ধর্মা এব হেতবে দর্শিতা:। অন্তদাদিসর্বপ্রজবাসিনিটকৈকো ধর্মো দুশুভামিতাাই হুয়ালকেতি।তে তনয়ে তবৈব তনয়েনাংমাকমিতি সম্বাহিচারিতে সভ্যপীতি ভাবং। ন কেবলম্মাকং বাংসল্যভাবতায়েব গোপানাং অপি তু সর্বেরাং বালাদীনামপি সংখাদিভাববতাং ত্রীপ্ংসামপি জাত্যভয়াগাদিপ বনৌকসাং মুগপক্ষাদীনামপি অহরাগং প্রতিক্রণং নব্দ প্রতিক্রণং নবনবায়মানা বর্জমানা প্রতিরহয়রাগশক্ষা তথাভ্তার্থকরাং নত্ প্রতিমাত্রং। কিন্ধু। হুয়্মাল ঔংপতিক্রাং সম্প্রতীখরম্ব লক্ষণে দৃষ্টেইপি তাক্তম্মলকাং। তেন প্রবিত্তাদিদেহজীবাদ্ধভাো মধোত্তরাধিকপ্রেমাল্পদেভোহিগ্যাতান্তিকপ্রেমাল্পদং পর্মাইরায়মিতি বৃদ্ধাতে। ন হি কেবল নরছে সভ্যেবং সন্তব্তীতি ভাবং। সভাং তহি পরয়ায়ৈরায়ং নিন্দীয়ভামিতি ভেল্ডআহং। বহুসগণ মধ্যে প্রবেশ করিলে ইনি বধ করিয়া কি প্রকারে অবলীলাক্রমে তাহাকে এবং তাহার স্বার্মাকপিত্র ফল সকলকে নিপাতিত করেন ? অপিচ ইনি বলদেব সহ মিলিয়া রাগভ (গর্দ্ধভ) ও তাহার বান্ধবগণকে কি প্রকারে বিনক্ত করিয়া তালবনকে মাঙ্গল্য ও পরিপক তালফলে সমন্বিত করেন ? অধিকস্ত ইনি বল্দালি বলদেবের সহিত মিলিড হইয়া কি প্রকারে প্রল্খাহ্বের নিপাত পূর্বক ভ্রেকানি পশু তথা গোপদিগকে দাবাদল হইতে পরিজাণ করেন ? ৪৮ ৪

অপর ইনি কি রূপে অতিক্র ভুজগেন্ত কালিয়ের দমন পূর্বক বলে তাহাকে নির্মাণ ও নির্বাদিত করিয়া যমুনার জল বিষশুন্ত করেন ? ॥ ৯ ॥

আর হে নক। তেমার এই ভননের প্রতি আমাদের সমুদার ব্রজবাসির দৃঢ়তর অসুরাগ এবং ইহাঁ-রও আমাদের প্রতি আভাবিক হ্রেছ কেন ছইয়াছে । ইনি ত সকলের আজা নহেন। ॥ ১০ ॥ ক সপ্তহায়নো বালঃ ক মহাদ্রিবিধারণং। ততো নো জায়তে শক্ষা ব্রজ্ঞনাথ তবাত্মক্ষে। ১১॥ শ্রীনন্দ উবাচ।।

শ্রানাতাং মে বচো গোপা ব্যেতু শকা চ বোহর্ভকে। এনং কুমারমুদ্দিশ্য গর্গো মে যতুবাচ হ। বর্ণান্ত্রয়ঃ কিলাস্যাসন্ গৃহুতোহ্মুযুগং তমুঃ। শুক্লো রক্তন্তথা পীত ইদানীং কৃষ্ণতাং গতঃ। থাগায়ং বহুদেবস্য কচিজ্জাতন্তবাত্মজঃ। বাহুদেব ইতি শ্রীমানভিজ্ঞাঃ সম্প্রচক্ষতে।

वीधत्रवामी।

উক্তমপ্যতিবিশ্বয়েনাভিনয়েন বদন্তি ক সপ্তহায়ন ইতি ॥ ১১ ॥

প্রাক্ ক্ষেক্ষেব পর্ণাচার্য্যবাক্যং ভচ্চরিতপরিশীলনেন নির্তাশেষাসভাবনস্য নন্দস্য প্রাক্ষতবারেদ্যোভকং জাতং স ইদানীং

.देवकवटकावनीं।

ছপি ঔংপত্তিকঃ জন্মদিনমারভা দৃষ্টঃ স্বাভাবিক এবেতার্থঃ। স্বত্তান্মিরিতি তত্তবৈলকণ্যেন সম্প্রতি প্রস্তৃয়মান ইভার্থঃ। স্বন্যাইতঃ স্বাক্ত কিমিত্যাতাংশ্রেকারাং মিথো দেহদেহিনোর্যথা তহৎ ইতার্থঃ॥১০॥

কে তায়মর্থ:। সপ্তহায়নত্বন জন্মবৃদ্ধাদর: তদবস্থা গৃহীতা: তাজিশ্চ বালত্বং নিশ্চিতং। তচ্চাত্যস্তং বালাশ্বরেষু ব্যাপ্তিদর্শনাৎ তথা মধ্যজিধারণেন পুতনাদিবধহেত্প্পভাবত্বং স্বাভাবিকপ্রেমবিষয়াশ্রম্বক গৃহীতং। তাভ্যাং বালাদন্ত্বং ওদন্যত্বেহপি দেবাদিবং তথাপি পরম বিলক্ষণত্বং নিশ্চিতং। বালাশ্বরাদৌ ত্ত্তদদর্শনাং। তদেদং সপ্তেত্যাদিত্বে বালাদন্ত্বং ন সম্ভবতি গৃহাজীত্যাদিব্দেচ ধালত্বক্ষ ন সম্ভবতীত্যর্থ:। তত্তস্মাদেকস্মিন্ মিপো বিরোধি ধর্মব্যাৎ শঙ্কাবিপ্রতিগন্তিত্বঃ সংশর:। বালোহরং বালাদন্যঃ
প্রমাশ্বন্ধক্ষ দেবাদিক্ষেতি॥১১॥

নিশাশেষভগবত্তাপ্রকটনার্থনবতীর্ণাহয়ং সাক্ষাং প্রভিগবানেবেতি ব্যক্তমুক্তে কলাচিলৈর্য্যজ্ঞানেন ভরগৌরবাদিনা সেহহানি: স্যাদিতি শহম প্রীগর্গেণ সাক্ষাৎ পরমের্য্যমন্তকা বাপদেশেলৈব তহায়য়তা যান্যক্ষরাণ্যকানি তৈরেবেদৃশ্যাভাবিকগুণবালকতা প্রতিপাদকতয়াবধারিতৈ গোঁপান্ প্রবোধয়য়াহ শ্রেয়তামিতি মে মম গর্গহারা শ্রুতিতৎপ্রভাবস্য বচ: । ব: শহা ব্যক্ত্ কীয়তাং। অর্জক ইতি অস্য বালবেনেব নিশ্চরং বোধয়তি। বহা বো যুমাকং বো হর্জক ন্তামিতি মমেব যুমাকমপ্যয়ং বালক ইতি সেহবিশেষমেব বর্জয়তি। এনং ভবতাং পরমায়রাগবিষয়ং পরোক্ষেহপাপরোক্ষবত্তি:। সদা তস্য সাক্ষাদিব হৃদি ক্রেঃ। মে মম কুমারং প্রমিতি পূর্ববিং পূন: পুনন্তথৈবেতি নিশ্চয়ায়। যহা। মে মাং একাকিনং বর্চঃ হ ব্যক্তমেব নচ সংস্কৃতাদিনেতার্থ:।
বহা হ হর্ষে।

ক্রমসন্দর্ভ:।

비약 기·비정: II >> (I

বালএব বা পরম বিলক্ষণা দেবাদিবে ভি শ্লয়ভামিভ্যাদি ॥ ১২॥

🕮 বিশ্বনাথচক্রবন্তী।

অত্বাহ্ন সর্কের্ ব্রজ্বাদির্ বনৌকঃ স্চ্ছ তদ্যাপি অর্ছরাগ উক্তলকণঃ কথং সম্ভবেৎ তদ্যাত্মারামত্বেন সর্ক্রোদাসীন্যাদত্বাস্থ্ সাংসা-রিকেলোংপত্তিক্যা শক্তি ন' ষটত ইতি, ভাবঃ ॥ ১০ ॥

উক্তনপ্যর্ত্তিধারণং প্রস্তৃত্তভাদতিবিস্ময়েন পুনরান্ত: কেতি॥ ১১॥

আহো মন্বালকে হলিন্ প্রাক্ সিন্ধনহাপ্রভাবে মদিউদেবসা জীনারায়ণস্য ম্যাভিক্সপরা মন্বিপদোহভিংন্তমাবেশমালকৈয়তে সংশেরতে

হে জন্মনাথ! সপ্তবর্ষ বয়ক্ষ বালক কোথায়,আর প্রকাণ্ড পর্বাত ধারণ কোথায়? অথাৎ তাদৃশ শিশুর

ঐ কর্ম অত্যন্ত অসন্তব,এই সকল কারণেই তোমার আত্মজের প্রতি আমাদের দ্রশীদ্ধা জন্মতেছে॥১১

এতৎ-প্রবেশ নন্দ কহিলেন অহে গোপগণ! আমার বাক্য শুন, এই বালকের প্রতি তোমাদের
ভয় অপগত হউক, এই কুমারটার উদ্দেশে গর্গমূনি আমাকে এইরপ বলিয়াছেন, বুণা—প্রইংশাক্ষ
প্রতিব্যো শরীর প্রহণ করিয়া থাকেন তাহাতে ইহার "শুরু,রক্ত এবং শীত্ত এই তিন প্রকার কা হিইরাগিরাছে, একণে কৃষ্ণত্ব প্রাপ্ত ইইরাছেন, পূর্বে কোন সময়ে ইনি বস্ত্রদেবের গৃহে জন্মপ্রহণ করিয়া-

বহুনি সন্তি নামানি রূপাণি চ স্থতন্য তে। গুণকর্মামুরূপাণি তান্যহং বেদ নো জনাঃ।

এষ বঃ শ্রেয় আধাস্যদেগাপগোকুলনন্দনঃ। অনেন সর্ব্বতুর্গাণি যুয়মঞ্জারিষ্যথ।

পুরানেন ব্রজপতে সাধবো দহ্যপীড়িতাঃ। অরাজকে রক্ষ্যমাণা জিগুড়ার্দসূন্ সমেধিতাঃ।

য এতিমান্ মহাভাগে প্রীতিং কুর্বন্তি মানবাঃ। নারয়োহভিভবস্ত্যেতান্ বিষ্ণুপক্ষানিবাস্থরাঃ॥১২

তন্মারন্দকুমারোহয়ং নারায়ণসমো গুণৈঃ। প্রিয়া কীর্ত্যামুভাবেন তৎকর্মস্থ ন বিশ্বয়ঃ॥১০॥

धीपत्रवामी।

ভেনৈৰ বাক্যেন গোপামুপদিশতি ক্ষয়তামিতি॥ ১২॥

তত্মান্তস্য কর্মস্থ বিশ্বয়ো নাজীতি নন্দ্রোক্তি:॥ ১৩॥

देवक्षवटञ्चायशी ।

গর্গোক্তিমেবাছ বর্গা ইত্যাদিনা ন বিশায় ইত্যান্তেন। প্রাচীনপ্রকটার্পোছ্মুসজের:। কিঞাত্র তশার্মসকুমারোছ্মমিতি প্রথমশ্চরণ: তৎ কর্মান্ত ন বিশায় ইতি চতুর্থ:। গর্গবাক্যেত্ব তলার্মসাল্লাছেমিং তে ইতি প্রথমো গোপায়ন্ত্র সমাহিত ইতি চতুর্থ:। ইত্যদ্ধা
মাং সমাদিশ্য ইতি বক্ষ্যমাণাৎ। প্রীনন্দ্রাক্যান্ত্র তলাক্যমেবানেনান্দিত্মিতি লভ্যতে তলাল্লিরার্থং স্বপ্তে সর্কেষাং স্বসাধারণ্যেন
মমতায়া গোপয়িত্রগতায়াশ্চ ব্যঞ্জনার্থ্যেব কিঞ্ছিৎ অন্যথা বিধায়ান্দিত্মিতি স্লেষ্ণে যথার্থত্যা সম্পাদ্যতে স্ব ॥১২॥

নন্দকুমারোহয়মিত্যত্র নন্দস্য তব কুমার ইতি ষ্টাতংপুক্ষাৎ তথা তৎকর্মস্থ ন বিশ্বয় ইত্যত্র তথাপি স্প্প্রভাবেন প্রভয় লক্ষ্য তস্য নারায়ণভোৱাত কর্মস্থ বিশ্বরো ন কার্য আন্চর্যাং মন্ত্রা গোপায়নাছ্দাসীনেন ন ভাবাং ইতি তাৎপর্যাবগমাৎ। কিঞ্চ। তৎকর্মস্থি-ত্যুপলক্ষণং স্বাভাবিকপ্রেমবিষ্যাশ্রয়ন্তেইপি ন বিশ্বয়ং কার্য্যইতি শ্রীনন্দাভিপ্রায়ং। বস্ততন্ত্র মিথোনিত্যস্বাভাবিকস্বন্ধো হৈত্রিতি ন জ্ঞায়তে স্ব। যদাপি পূর্কং ভৈর্গর্ববিশৃং জ্ঞাত্যবোত্তি বক্ষবানস্তর্মহো ব্রহ্মবিদাং বাচ ইত্যাদি বচনাৎ। তথাপ্যধুনা তত্তদক্ষরে

ক্রমসন্দর্ড:।

তংকর্ম্মর ন বিশ্বর ইতি শ্রীগর্গসৈয়বাভিপ্রায়কথনং। তত্তর ইতি শব্দোহপ্যহেতি গোপায়স্ব সমাহিত ইতি দ্বস্পযোগালো-দাহতং। অংশং শব্দ্যাবেশিনং॥ ১৩॥

ত্রীবিখনাপচক্রবর্তী।

তদেতান্ শ্রীগর্গোইক্যেব প্রবোদ্যামীত্যাশয়েনাহ শ্রয়তামিতি॥ ১২॥

হে নল তথাদাং ক্মার ইতি গগোঁতে ন কেবলমন্তঃ মনৈব কুমারোহণি তু যুদ্মকমণীতাতোহন্দিন্ ঐথর্যে দৃষ্টেহণি বাংসলাং প্রতিনিন্দানীঃশতঞ্চ ন ত্যাজামিতি বিবক্ষরৈর তথান্তলাহারে ইতি গগোঁকেরছক্তিঃ। নারারণসম ইতি নারারণাবেশানের নম্বারণঃ যথা প্রাকান্তলিশিনি প্রাসমেত্যাতাতে তথাদাং নেশ্বঃ নাপি নিক্টো জীবং কিন্ত লোকোজনকর্মা কোহণায়মখণ্ডকুল্ভুগ এব অতএব তেল গগোঁনের স্বান্ধিতে প্রোক্তং তৎকর্মান্থ ন বিষয় ইতি। তস্য লোকাতীতকর্মান্থ অত্যকৃত্যুট্টা অমমীখন ইতি বৃদ্ধিন কর্মবাতি তেনৈর নিবিদ্ধান্দিন্য যুদ্দেকক্ষান্ধ নিবানীনিবের কার্যা ন ছৌদাসীভ্যমিতি কলতো গোগান্তৰ সমাহিত্তিলেন সেই হেতু অভিজ্ঞ জনগণ এখনও ইহাঁকে বাহ্মদেক বিলা থাকেন। নন্দ। তোমার পুজের শুণ ও কর্মের অমুরূপ বছ ২ নাম রূপ আছে, সে সকল অনুক্রানি, অন্য ব্যক্তিরা তাহা অবগত নছে। ইনি গোপ ও গোকুলের আনন্দজনক হইয়া তোমাদের মঙ্গল বিধান করিবেন। তোমরা ইহাঁর ছারং বস্তুতঃ সমস্ত তুর্গ (বিপদ্) উত্তীর্ণ হইবে। হে ব্রজপতে। পূর্বকালে একদা অরাজক হইলে সাধুগণ দহ্যুক্তিত হইরাছিলেন, ইনি রক্ষা করাতে সেই সকল সাধু সমেধিত অর্থাহ বস্তুতীতি করেন, যেমন অমুরূপণ বিষ্ণুপক্ষীরদিপকে অভিভব করিতে সম্বর্ণ হর না, তেমনি সেই সকল ব্যক্তিকে অরিগণ ক্ষুত্রপতি বিষ্ণুপক্ষীরদিপকে অভিভব করিতে সম্বর্ণ হর না, তেমনি সেই সকল ব্যক্তিকে অরিগণ ক্ষুত্রপতি বিষ্ণুপক্ষীরদিপকে অভিভব করিতে সম্বর্ণ হর না, তেমনি সেই সকল ব্যক্তিকে অরিগণ ক্ষুত্রপ্রতি করেন, সেমন

ছে নন্দ। তোমার এই পুত্র গুণ, সম্পত্তি, কীর্ত্তি এবং অসুভাব ছারা নারায়ণের সমান। এই সকল

ইত্যন্ধা মাং সমাদিশ্য গর্গে চ স্বগৃহং গতে। মন্যে নারায়ণস্যাংশং কৃষ্ণমক্লিইকারিণং। ইতি নন্দবচঃ প্রুত্তা গর্গগীতং ব্রজ্ঞাকসঃ। মুদিতা নন্দমানর্জ্যুঃ কৃষ্ণঞ্চ গভবিস্ময়াঃ॥ ১৪॥

द्यीधत्रवामी।

ইত্যদা সাক্ষাৎ মাং প্রতি সমাদিশ্য গর্গেচ অগৃহং গতে সতি তদানীং তথা অমন্যমানোহপি ইদানীং ক্লকং নারারণস্যাংশং মন্যে তত্র হেতু: অক্লিটকারিণমিতি ॥ ১৪ ॥

देवक्रवरकावनी।

সমগ্রতয়েতি বিশেষ ইতি সপ্তবাক্যানি॥ ১৩॥

বজোহহং পিতাপি ততঃ প্রভৃতি তং খ্রীনারায়ণোপমমেব মন্যে ইত্যাহ ইতীতি কংশং তচ্ছক্ত্যাবেশিনং মন্যে বিভর্করামি॥

क्रममन्दः।

গর্পদা গীতং যত্র তং। আনন্তু: স্বস্থাহেভ্যোগন্ধনাল্যবস্তাদিনা। এতচ্চ সন্ধার্ত্তং। সংবাদক্ত আক্রুকে বনং গতএবেতি গম্যতে॥১৪

এ বিশ্বনাথচক্রবর্তী।

ইতি গর্গোক্তিরেবোক্তা। গোপানাং বিশ্বয়নির্দনেন সংশ্রাপনোদনঞ্চ ক্রতমিতি॥ ১৩॥

আংশং তচ্ছক্তাবেশিনং মন্যে বিভর্কয়ামি। আস্থান্ আক্রিটান্ কর্তুং শীলং ষ্স্য তং ॥

আনর্চ্ছে বক্তর হবণ মুজোপহারেণ সম্মানয়ামান্তঃ। ক্লঞে বনাদাগতে সতি সায়ঞ্জ তং পীতাম্বরহার কটককুণ্ডল কিরীটেরলস্কৃত্য আমু জয় অঅভ্যাত্যণ চিরং জীবেতু। পর্লালয়ামান্তঃ ম ১৪ ॥

গর্গোক্তি পুনরুক্তি করিয়া নর্দ বলিলেন, অতএব হে পোপগণ! ইহার কর্ম সকল বিস্ময়ের বিষয়

মুনিবর গর্গ সাক্ষাৎ আমাকে ঐ প্রকার আদেশ করিয়া স্বস্থানে প্রস্থান করেন, যদিও তৎকালে আমার মনে এইরূপ প্রতীতি হয় নাই তথাচ একণে আমি কৃষ্ণকে নারায়ণের অংশ বলিয়াই মান্ত করি, যে হেতু ইনি আমাদিগের অক্লিউকারী (হুধকারী)।

হে রাজন্! অজবাসী গোপগণ ঐ প্রকার গর্ম-গীত নন্দবচন প্রবণ করিয়া সাতিশয় হর্ষিত হই-লেন এবং বিশায় পরিত্যাগ করিয়া জীকুফের অর্চন করিতে লাগিলেন ॥ ১৪ ॥ ১৯১৮ চন ১৮ জন্ম

দেবে বর্ষতি যজ্ঞবিপ্লবক্সবা বজ্ঞাশাপরুষানিলৈঃ সীদৎপালপশুল্লিরাত্মশরণং দৃষ্ট্রামুকম্পুত্শারন্।

श्रिक्षामी।

পোবৰ্দ্ধনোদ্ধনণ সপরিকরং পরিক্ষর প্রকটিতৈবর্যাস্য শ্রীকৃষ্ণস্থাতিং প্রার্থিত দেব ইতি বন্ধবিপ্লবেন যা কট্ তরা দেবে ইক্সে বর্ষতি সতি। বন্ধাপাস্বানিলৈঃ অদনিক্ষণশর্করাতীরবায়্তিঃ সীদং পালপতান্তি সীদন্তঃ পালাঃ পদবশ্চ ন্তিব্লক্ত যক্ষিন্তং। তথা আত্মা ক্ষমেৰ শরণং বস্য তল্পেষ্ঠিং দৃষ্ট্। অন্ত্বস্পী উৎক্ষয়ন্ হস্নু প্রৌচিমাবিক্র্পন্ বা শৈলমুৎপাট্য অবলো বালোলীলার্থমুদ্ধি-লীক্ষ্ বথা তথা একেন করেণ বিত্রং দধং গুলাঠং অপাৎ পালিতবান্ এবং মহেক্সমন্তিং গ্রামিক্স ইত্যুত্রাধারার্থক ক্ষরতি স এব-

বৈষ্ণবজোবণী।

জ্যাদি। তচ্চ শ্রীনন্দোররেণ হতদলেহা অণি পরমৌৎস্থক্যেন সাক্ষাজ্ঞীজগবর্থাদেব শ্রোভুং দ্রচ্যিতুং চ ত্থেবোচ্রিত্রি করনরা-পরিচার্যানিতি॥ ১৪॥

এবং সমাপাণি পরমানন্দেন তবে পোর্বর্ধনাত্ত্ববং সপরিক্রমহত্বরন্ তত্র চ নিজ্ঞাবাশ্রহা গোঠন্য নিজ্ঞাববিষ্কে গবেক্রেরাহ্খাতেন শ্রীভগবতা কুঠাং রক্ষাং ভদর্থমিক্রমধভক্ষভদীং চাহত্বতা বাঢ়ং প্রীয়মাণ তাং প্রীভিষেব সর্বপুদ্ধার্থধিকভরাহ্বভবন্ তাঞ্চ পুন: শ্রীগবেক্রবিরচিতপ্রীতাহুগৃহীতত্ব সতি পরমাত্মাদবতীং জানংত্তংপ্রীতিষেব প্রার্থতে দেবেতি। তত্র দেবে বর্ধতীতাত্র প্রতিকার্যান্থং সত্রাসমিব দর্শিতং তত্রাপি যজ্ঞবিপ্লবক্ষরেভাতিশরঃ। ত্রেরাপ্রতিগাচপাতিশরং আল্পার্লিভিঃ নীদন্তঃ পালাঃ গোপাঃ পশবঃ দ্রিরণ্ট যত্মি মর্থারিঃ। ত্রাপ্রতিপারঃ আল্পারণমিতি ভত্মান্তর্ক্রমিত্যাদেঃ।
তত্রাপাতিশরং দৃহ্বী ত্বরং চক্রবি ব্রীক্রত্যেতি অভ্যান্তর্ক্সপীতি ভূমি মর্থারঃ। এবং কুপারাগ্রেহিণি ভত্মিন শোর্ব্যং ব্যাগ্রমেনাসীদিত্যাহ উৎত্মরিত্যাদি ইক্রং প্রতি সোংপ্রাসংক্ররিত্যর্থঃ। তাদুশ এব সন্ শৈলমুংপাট্য ত্রাপ্যেকেন বামেন করেণ। ত্রাপি
বালো লীলাপ্রয়োজনকম্জিলীন্ধুং যথা তবং। ত্রাপি বিভ্রং সন্তাহোরাত্রানেকরীত্যা দধং। ত্বেবং বিস্মর্হেরিংক্রম্বান্তিভিরাবিই আর গোঠমপাদিতি সগর্ব হর্বমাহ মহেক্রমনভিনিতি। গ্রামিক্রোহিণি মহেক্রস্থ মদন্তের্ভীইতি সোংপ্রাসং। ব্রত্তর্জ গর্বান্তিভাবঃ। তথৈব গোঠজনভাবেনাহ ইক্রো গ্রামিতি লোহালাকং গোকুলেক্রো বা। তবেবং তদেব অপুন্ধর্বনেন দর্শিতং শ্রীক্রন্ধবিদ্ধান । ত্রের তোরির ক্রের্মাং অন্তর্ক্রর্মণ ক্রমণ জ্বান এব ব্যবাধত। স্প্র প্রাপ্রাহিভিপেংস্যং রবং। অর্লন্টিরির সম্পন্ন স্থাত্ত্রভানিকং
ত্বর্মেরা পৃথ্মিতি। অরমর্থ:।বীরং শ্রীক্রফো জন্ধানো জাভমাত্র এব ম্পৃধং ম্পর্কানান্ব হ্রর্থ:।কিঞ্চ।ক্রপাংলাং ব্রব্যের গোবং

ক্রমসন্দর্জঃ।

পুনস্তামের লীলাং তারন্তিম দর্শিতগোকুলরপাতিশয়ং শ্রীকৃষ্ণং অরংস্তংরূপামের অপুরুষার্থত্বন প্রার্থয়মানস্তমের নিজেই-

ত্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

ভো রাজয়িজকোপোখিতাবজ্ঞান্তর্বাদিকান্ত্যান্ত্টাদেগাবর্জনমূত্তা তদাজিতং গোষ্ঠং রক্ষ্ তন্মথপ্রবর্জনপথিতঃ ক্ষো বধা স্বলোকগর্জহয়া প্রীণাতি তথৈব ত্রন্ধলোপের্ম্বরাদিদং জীভাগবতং বেদোদিখিতা উচ্চুতা বাং রক্ষ্ তৎপরারণমধ্পর্বর্জনপথিতঃ ক্ষো ভক্তিরহিতদার্শনিকভূম্রলোকগর্মহজ্ঞা প্রীণাম্বিত্যাশ্যেন পরীক্ষিতঃ স্বাভ্যাতং মানরন্ কৃষ্ণপ্রীতিং প্রার্থিরত। বেবে ইতি বজ্ঞবিপ্লবেন বা কট্তরা দেবে ইত্রে ব্বতি সতি বজ্লৈর্ম্ভিশ্চ পঞ্চানিলৈশ্চ সীদংপালপভ্জি সীদ্ভঃ পালাঃ পশবজ্লিকভ্ মন্ত্রিক আছা স্বর্থের শর্ণং ব্যা ভ্রেদাঙিং তৃত্ব। অন্তশ্লী কুপাল্কংস্বরন্প্রীভ্নবিভ্র্মন্ স্বলো বালো লীলরা বধা উচ্ছিলীজু-

অহো। যজ্ঞব্যাঘাত-জনিত কোথে উদ্দীপ্ত হইয়া দেবরাজ যোরতরবর্ষণ করিতে থাকিলে বক্ত, করকা, তথা প্রবল পবনে গোষ্ঠত্ব পশু, পশুপাল তথা অবলাসকল অবসন্ধ হুইতেছিল, তাহা অবলোকন করিয়া হাস্ত করিতে করিতে যিনি গোবর্জন উৎপাটন করেন এবং অবল বালক যেমন লীলার্থ উচ্ছিলীকু ধারণ করে তাহার ন্যায় এক হতে দেই গিরি ধারণ পুরংগর গোষ্ঠ রক্ষা করিয়াছিলেন,

উৎপাট্টেকেক্রেরণ শৈলমবলো লীলোচ্ছিলীক্ষুং যথা বিজ্ঞান্তিমপাশ্মহেন্দ্রমদ্ভিৎ প্রীয়ার ইল্লোগবা॥ং১৫

॥ # ॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং দশমক্ষে নন্দব্যোপসন্থাদঃ ষড়্বিংশোধ্যায়ঃ॥ # ॥ ২৬ ॥ # ॥

শ্রীবাদরায়ণিরুবাচ॥

গোবর্দ্ধনে ধতে শৈলে আসারাদ্রক্ষিতে ভ্রম্ভে। গোলোকাদাভ্রজৎ কৃষ্ণং হুর্ভিঃ শক্র এব চ ।১

श्रीधत्रवामी ।

স্কৃত: শ্রীক্লকো নোহস্মান্ প্রতি শ্রীয়াৎ শ্রীয়তাং। বড়বিংশে দশমে ব্যক্তঃ ষড়বিংশো দশমো হরি:। ব্যনক ু পঞ্বিংশং মাং চড়-ব্রিংশতিতঃ পৃথক্॥ ১৫॥

॥ 🕶 ॥ ইতি দশমে বড়্বিংশঃ ॥ 🛊 ॥

সপ্তবিংশে তদালক্য কৃষ্ণস্য প্রাভবং পরং। বর্ণাতে হ্রতীক্রাভ্যামভিবেকমহোৎসব:॥ •॥

গোবন্ধনে ধৃতে শৈলে ইতি শক্ষ্যা ভাষেনাগমনে হেতু:। আসারাদ্রক্ষিতে ব্রঞ্জে ইতি হুরভেহ র্বেণাগমনে ॥ ১ ॥

বৈঞ্চবজোষণী।

রূপেণ অব অনায়াদেন সম্পদ: গোপৈর্দপ্তমন্নদিকং ভক্ষিতবান্। কিঞ্চ। স্পৃধৎ স্পর্কমানং নাকং তৎপতিং নাকস্থং মেঘচক্রং চারভাৎ গুপুরামাস যতঃ পৃথুং অক্রিং অবৃশ্চৎ উৎপাট্য ধৃতবানিত্যর্থ:। স্বরস্যা সীলয়া এবেতি ॥ ১৫॥

॥ •॥ ইতি শ্রীবৈঞ্বতোষণ্যাং দশমটিপ্পন্যাং ষড়্বিংশ: ॥ •॥

গা নিতাং বর্দ্ধরতি তথা তন্মিরিতি তৎসাহায্যেন মহার্ষ্ট্যাহিশি তয়া গবাং হংথশকা নিরন্তা প্রত্যুত তৃণাদধিক সম্পত্যা সমৃদ্ধিরেব ক্ষিতা। ব্রহ্ম শব্দেন ডব্রত্যা মানুষাঃ পশুপক্ষাদর্শত গোলোকাৎ প্রাক্ততাৎ নম্প্রাক্ততাৎ শ্রীগোকুলপ্রকাশবিশেষাং। ইক্সস তদীয়মুরভিস্কাসন্তাবাং। অপ্রাক্তগোলোকস্ব অষ্টাবিংশাধ্যায়াস্তে দশ্রিষ্যতে। ইক্সন্ত তয়া সহাগমনং শ্রীকৃষ্ণত গোপ্রিয়তাজ্যানাং। তব্রাপি তস্যা আদ্যাম্বাং। অব্যাক্তি বিদ্যাম্বাহি ত্রাপা ত্রাপি তস্যা আদ্যাম্বাং। অব্যাক্তি বিদ্যাম্বাহি ত্রাপ্রাক্তানিক সহাগতস্তত্যত প্রস্কালা বিশ্বনিক বিদ্যাম্বাহি ত্রাপ্রাক্তানা ক্ষাপ্রাক্তি ক্ষাপ্রাক্তি বিদ্যা সমং বিদ্যালয় বিশ্বনিক স্বাধান সম্ভবেং তথাপ্যাব্রেদ্দিত্যুর্থঃ। অনন্যাতিকক্তাং। ত্রা হেতুং। ক্লফং স্বয়ং ভগবন্ধ অতঃ শরণাগতবেং-

ক্রমসন্দর্ভ:।

দেবত্বেন ব্যঞ্জয়তি দেব ইতি॥ ১৫॥

॥ 🛊 ॥ ইতি শ্ৰীকীবগোসামিকতে দশমক্রমসন্দর্ভে ষড়্বিংশঃ ॥ 🛊 ॥

গোলোকাং প্রাক্কতাদের নত্তপ্রাক্কতাং। ইন্দ্রস্য তদীয়সঙ্গো ন সন্তবতীতি। ইন্দ্রং নত্তাভিবেক্ষ্যামো ব্রহ্মণ চোদিতা বয়মিতি সুর্ভিবাক্যাচ্চেন্য লভ্যতে। শ্রীব্রহ্মণার্যে ভয়ালগতঃ শত্রুত্বদাজ্ঞয়া গোলোকাং স্থুরভিমানীয় পুনস্তথা তদাজ্ঞয়াগত ইতি॥ ১॥

ত্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

সকেনৈব করেণোৎপাটরতি তথৈবোৎপাট্য যো গোষ্ঠমপাৎ স গবামিক্সেতি ইন্দ্র এবেন্দ্রস্য মদং ভিনতীতি ন্যার:। ক্বঞা নো মাং পরীক্ষিতং এতান্ শ্রোভূংশ্চ প্রতি প্রীরাৎ প্রীণাতু ॥ ১৫ ॥

॥ * ॥ ইতি সারার্থদর্শিন্যাং ছবিণ্যাং ভক্তচেতসাং। বিজ্বংশো দশমেহধ্যার: সক্তঃ সক্তঃ সতাং ॥ • ॥ সপ্তবিংশে ভয়াদিক্রব্যতিস্তত্ত কুপা হুরে: । হুরভ্যা চাভিবেকো যদেগাবিক্রেত্যভিধাভবং ॥ • ॥

স্থাসারাত্রকিতে ত্রন্তে ইতি শক্রস্য ভরেনাগমনে হেছু:। স্থ্রভেক্ত ব্রন্ধাঞ্জয়া ভগবদভিবেকঃ শক্রসাহায্যঞ্চ। ব্রন্ধণা চোদিতা

মহেন্দের মদভেদী গোদকলের ইন্দ্র সেই এক্ত আমাদের প্রতি প্রীত হউন্॥ ১৫॥

॥ *॥ हेि नम्य यष् विश्म ॥ *॥

সপ্তবিংশাধ্যায়ে শ্রীকৃষ্ণের অভ্ত প্রভাব অবুবোকন করিয়া হার্ডি ও হারেন্দ্র কর্তৃক অভিবেক্ত মহোৎসব॥ ॰ ॥

एकरापय कहिरतम रंगायक्त शर्काल श्रुष्ठ अतः ब्रुष्टिभाता रहेरक खब्रमधन तक्तिल स्वरात स्वास्ताक

বিবিক্ত উপসংগম্য ত্রীড়িতঃ কৃতহেলনঃ। পস্পর্শ পাদয়োরেনং কিরীটেনার্কবর্চসা । ২ ॥ দৃষ্টপ্রতামুভাবোহস্থ কৃষ্ণস্থামিততেজনঃ। নফজিলোকেশমদ ইদমাহ কৃতাঞ্জলিঃ॥ ৩॥

अध्वयामा ।

তত্ত্বেক্ত আগত্য কিং ক্লতবান্ তদাহ বিবিক্ত উপসন্ধন্যত্যাদিনা অধাহ অরভিরিত্যতঃ প্রাক্তনেন গ্রন্থেন। বিবিক্তে একাঙে পাদয়োঃ পশ্পর্শ নমশ্চকার ॥ ২॥

ষদ্য একিক্সা শ্ৰুত্তাবাৰ্যভাবত শ্ৰুতামূভাৰ: দৃষ্ট: শ্ৰুতামূভাৱে। বেন স ইন্ত: নইন্তিলোকেশোহহ্মিতি মদো যস্য সং ॥ ৩॥

देवक वरकावना।

নাব্ৰদ্বিত্যৰ্থ:। স্ব্রভিপক্ষে কৃষ্ণং স্বসন্তানপ্রিব্রভাশুনোকর্বকং। এবশব্দেন শক্রন্ত কৈবল্যং বোধ্যতে। বাহনাদি-পরিবারভ্যাগেনাগমনাং ব্রদ্ধনিবেশাভূগাং চাভিসংঘট্টভরা দূরে স্থিত্তয়াং। অত্র বিশেবং প্রীবৈশন্পায়নেনোক্তঃ। স দদর্শোপবিষ্টং বৈ গোবর্জনশিলাভলে। কৃষ্ণমন্তিইকর্মাণং পুরুত্তং পুরন্ধর:। তং বীক্ষ্য বালং মহভা ভেজসা দীপুমব্যয়ং। গুণোপবেশধরং বিষ্ণুং প্রীভিং লেভে পুরন্ধর:। তং সামুক্তশদ্দায়ং কৃষ্ণং শ্রীবংসলকণং। পর্যাপ্তনরন: শক্রং পুনক্ষেক্ত। অতঃ প্রীভিং লেভ ইভি পূর্বং প্রীকৃষ্ণকৈত্যতাত্তে দর্শনাসন্তাবনারাসীৎ ভক্তাপ্যাপমাদিভি ভাবং। কিষ্ণ ভব্রে । ভক্তোপবিষ্টিভ মুধং পক্ষাভ্যাং পক্ষিক্ত প্রকালগতং বিজ্ঞান ক্রিছা ক্রভচ্ছারং হরে মূর্দ্ধি পক্ষাভ্যাং পক্ষিপ্সব্যাভিত্য স্বান্তাভাব ইভি। প্রীপরাশরেণাপি। গ্রুত্বক দর্শেটিচেরস্কর্মানগতং বিজ্ঞান ক্রিছার ক্রভচ্ছারং

বিবিক্তে বিশ্বর ইতি গোক্লে তেবাং প্রকটাগমনবাবহারাভাবাং। ক্ষমাপণার একান্তে ব্যবহারশিদ্ধখাচ শ্রীক্ষাইশ্যকাকিখেন ভতা স্থিতিক নভিসি দ্রতগুৎস্বভিসহিতং তং দৃষ্ট্। কেনাপি ব্যাদ্ধেনাগৃমনাং বিবিক্ত উপসন্ধ্যাতি স্থরভিং বিনেতি গমাতে ভচ্চ স্থর্মবাসাবেকাকিতরা দীনো ভূখা প্রথমং মিলন্নিতি স্থরভা এব প্রেরণরেভি জ্বেরং। ততা হেখন্তরং ব্রীড়িভঃ প্রাপ্তশক্ষঃ কূড়ঃ কুড়ং হেলনং হ্রুক্ত্যাদিনা ভগবদবক্তা বেন কিরীটেন্তি দশ্বংপ্রণামং বোধন্বতি অর্কবর্চসৈতি ভস্য ভংপাদরোক্রপবোজিভস্য শোডাং বর্ণরতি ৪ ২ ৪

অস্য বালগোপালরপ্র্যা কৃষ্ণস্য নরাকৃতিপ্রয়ন্ধণঃ। দৃষ্টঃ ঐগোবর্দ্ধনোদ্ধগেন শ্রন্তঃ শ্রীরন্ধানিমুখেনামুভাবো বেন সঃ। অমিতঃ অনবং তেলো য্যা তভেতি। অর্কত্লাকিরীটতেলোব্কোপাসাবর্ককোট্যথিকতেলঃপুঞ্জ লাজ্লামান ঐপদাল্পন্ধাগ্রাংভ-

ক্রমসন্দর্ভ:।

বিবিক্তে বিজ্ञনে শ্ৰীবৈশপায়নেন স্থানং চোক্তং। সাম্পর্শোপবিষ্টং বৈ গোবর্জনশিলাতলে ইভি। বিবিক্তম্প দূর্ততং দৃষ্ট্ব বহুলপুশাহরণাদিকমিৰেণ সধীনাং দূর্ত প্রস্থাপনাং। শ্ৰীরামস্য চ তন্ধিনে কথ্ঞিং আনাগমনাদিতি জ্ঞেরং॥ ২ ॥ ৩ ॥

श्रीविधनाथहळ्वा ।

বর্ষিতি তত্তি:। সোলোকাং আক্তাদেব নম্বপ্রাকৃতাবৈকুঠবিশেষাং ভদীর কুরতেরিপ্রসাহিত্যাসুপপত্তে: ॥ ১॥

বিবিক্ত ইতি হস্ত হস্ত শক্রহতকস্য বস্তপ্রহারৈর ব পোবর্জনপূর্জং কীলৃশং অর্জ্জরমভূদিতি দিলৃক্যা কদাচিং প্রাতরেকাকিনৈৰ ক্ষেত্রন তার প্রমনান্তনৈবেলেণাপ্যাপমনাদিতি ব্ধাতে দর্শনস্থানক হরিবংশে ব্যক্তং! স পদর্শোপনিটং বৈ গোবর্জনশিলাতল ইতি। পূর্ জোঃ শক্র বং প্রথমবেকক এব বর্হিনাধিয়ণরিচ্ছাং পরিত্যক্তা দীনো ভূবা স্থাপরাধং ক্ষমন্ত্রিক্তংগ্রভোশ্চরণাপ্রস্থাদ গুরারপত্তিতি স্থরভাগ প্রেরণাহ্পনক্ষয়। হস্ত ভো দেবেল কিনিদং তে মহাপারং বাংসল্যং দৃশুতে ধ্বাল্যাদ্ভাবাং ভল্পহস্তারং সাগসম্পি মামস্ক্রন্শিভ্যারাসীতি স্থিসিতেনোক্তে সভি ব্রীড়িতঃ ॥ ২ ৪

আছো ভৃষ্ট: বনেঅভ্যানের পশ্চালপরাধিবং অসা নিশ্চিতা পরিত্রাগোপায় জিজ্ঞাসরা নেরুপৃষ্ঠং গছা প্রভার ব্রহ্মুধানমুভাব:

হইতে হয়তি এবং ইক্স জীকৃষ্ণের সমীপে খাগমন করিলেন ॥ ১॥

দেবরাজ অবহেলন জন্ম লক্ষায় লক্ষিত হইয়া, নির্জনে সমিধান গমনপূর্বক আপনার যে কিরী-টের কিরণ অর্কভূল্য সেই কিরীট নারা জীক্ককের চরণবয় স্পর্শ করিলেন ॥ ২ ॥

শ্মিততেকা ভগৰানের অনুভান যের্প ঞ্চত ছিল প্রত্যক্ষে সেইরূপ নিরীক্ষিত হওয়াতে শামি

'ইন্দ্ৰ উবাচ।

বিশুদ্ধসন্ত্র তব ধান শান্তং তপোমরং ধান্তরজন্তসন্ত্র ।
মানামনোহনং গুণসংপ্রবাহো ন বিদ্যুতে তেহগ্রহণাত্রবন্ধঃ ॥ ৪ ॥

टी धत्रशामी

তত্ত্ব মমাপরাধং ক্ষমন্থেতি বক্তুং তব তাবদপরাধো নাল্ডেব দ্বাল্থাই এব ক্বত ইত্যাই চতুর্জি: বিশুদ্ধমতি ধাম দ্বরণং শাস্ত-মেকরপং অতএব তপোময়ং প্রেচ্রকানং সর্বজ্ঞমিতার্থ: কুতঃ ধ্বন্তরন্তমন্থ ধ্বন্তেইবিদ্যমানে রক্ত্তমসী ধন্মিন্ অতএবায়মন্ত্রানিষ্ দৃশ্যমানঃ মায়াকার্যারপো গুণসংপ্রবাহঃ গুণৈঃ সন্তোহ্বত ইতি তথা সংসার ইত্যর্থ:। স তে তব ন বিদ্যুতে বতঃ অপ্রহণেন অক্তামেন অহবণ্যত ইতি তথা সং সর্বজ্ঞসা তে নাজীতার্থ: অজ্ঞানস্থ্যমোধ্যা ৪ ॥

বৈষ্ণবভোষণী।

শহরীকভা ভভাগ্রে দিবা ধন্যোতারমান ইব বৃত্ত ইতি স্চরতি। অতএব চ সন্যোনষ্ট জ্রিলোকেশ্যদ:। অমিততেজন ইতি পঞ্চয়তঃ বার্তিভাবর্থ: সূত্র ॥ ৩॥

ভত্ত মহাপরাধিন্তহণি স্বন্ধিন্ শ্রীভগবতঃ স্বাভাবিক শ্রীম্থপ্রসন্তা। কোপাভাবমবধার্যাস্থ্যঃ সন্ তং ন্তবল্লান নিজ্ঞাপরাধ্য ক্ষমাপ্রিছ্ণ প্রমেশ্বস্য তবাস্থাস্থ কোপাদিকং ন ঘটতে বয়ন্ত ত্রায়ামোহিতাঃ সংসারিশো বহুধা নিত্যাপরাধিন এবেভ্যাহ বিশুদ্ধস্মিতি বিশুদ্ধস্ব কর্ম প্রায়াম্য ক্ষিত্র ক্ষম্পর্কি বিশুদ্ধস্ব কর্ম প্রায়াম্য হিতায়াং। সন্ধাবলন্ধি প্রসন্ধবিশুদ্ধস্বং গোবিন্দমান্তিপ্রস্থাই তমহং ভল্পামীতি। অন্যক্তঃ। তত্র বিশুদ্ধস্বাত্মকং স্বর্গমিত্যর্থঃ। যহা। তব ধামপ্রকাশোহয়ং বিশুদ্ধস্বং তদাধ্যং স্থেকাশতা রাগমিত্যর্থঃ। বিশুদ্ধপদ্য জাড়াংশপরিত্যাগেছপি হেতৃহাং। সন্তপদ্যাবিভাবার্থহাং। তচ্চ শান্তং ক্ষোভরহিতং। কিঞ্চ। তপোময়ং জ্ঞানাতিশ্যরপ্র। জ্ঞানশক্তিবলৈর্থ্যবার্যাগ্রেজাংস্যশেষতঃ। ভগবচ্ছন্বাচ্যানি বিনা হেইয়েগুলানিভিরিতি শ্রীবিষ্ণুপ্রণাথ। ক্রান্তর্কিক শান্তবে হেতৃঃ ধ্বন্তরজ্ঞসন্ধং বিক্লেপাবরণশৃত্যং। অয়মান্মাপহতপাপ্যেতি শ্রুতঃ। প্রান্তবিত। আরুভসন্মন্ত তাল নিষিদ্ধং। শ্রীবিষ্ণুপ্রণাণ। হ্রাদ্যোন সন্তীশে যত্র চপ্রান্তভাগুণাঃ। স্তন্ধং সর্ক শুদ্ধভাগুণানাদ্য প্রসীদন্তিত। জ্লাদিনী সন্ধিনী সন্ধিনী সন্ধিনী সন্ধিনী সন্ধিনী সন্ধিনী সন্ধিনী সন্ধিনী সন্ধিনী সাম্বান্ত ইতি তথা সংলাব নিন্তেন ভবতি। কুতঃ গ্রহণেন ছং স্বীকারেনের অগ্রহণেন ইন্তিন্ধক্রণকপরি-ক্রেন্টাভাবেনের বাছ্ম্বর্ধ্যতে প্রাণ্যত ইতি তথা সংল ৪ ॥

ক্রমন্দর্ভঃ

বিশুদ্ধং সন্থমিতি ব্যাখ্যা ॥৪॥৫॥৬॥

শ্ৰীবিশ্বনাখচক্রবর্তী।

প্রভাবো যেন সঃ॥৩॥

গৰ্জাদেব স্বন্ধং বিধপ্তা লোভাদেব স্বংশন্তাদানীয়ং নৈবেদাং ভোকুং গোবৰ্জনম্পং মিবমেবাকরবমহমিতি মন্তন্তং স্থং জানাস্যেবিতি স্বিদ্ধি বিজে বিশ্বিদ্ধি বিশ্ব

ত্রিলোকের ঈশ্বর এই বলিয়া দেবরাজের যে অহন্ধার ছিল তাহা বিন্ট হইল। একণে কৃতাঞ্চলি হইয়া বক্ষ্যমাণ বিনীত বাক্য বলিতে লাগিলেন ॥ ৩॥

ইন্দ্র কহিলেন ভগবন্ ! আপনকার স্থান শান্ত অর্থাৎ একরপ তপোমর এবং জানপ্রচুর অর্থাৎ সর্বজ্ঞ, তাহাতে রজ ওাতনোওণ থাত হইরাছে, ছতরাং তাহা বিভাগনত অভএব অস্থাদৃশ জন সমি-ধানে-দৃত্যমান এই যে নারাময় সংসার যাহা অজ্ঞানে অনুবন্ধ, (মোহন্ত) ইহা আপনকার নাই দিও ॥ কুতো মু তদ্ধেতৰ ঈশ তৎকৃতা লোভাদয়ো বৈহৰুইনিকভাষী:।
তথাপি দণ্ডং ভগৰান্ বিভৰ্তি ধৰ্মত গুইণ্ডা ইনানিকছার ।
পিতা গুরুন্তঃ জগতামধীশোচ্রতায়ঃ কাল উপাত্তদণ্ডঃ।
হিতায় চেচ্ছাতমুভিঃ সমীহদে মানং বিধুল্ল জগদীশ্মানিনাং॥ ৬॥

श्रीशत्यामी।

বদা অজ্ঞানতংক্তদেহসম্মে নতঃ তাৰ তংক্তানাং লোভাদীনাং কা বার্কেতা। কুতোহৰিতি তংক্তা দেহসম্মক্তাঃ তবেতবঃ পুনরপানাস্য দেহস্য হেতবং নমু জ্ঞানিনামপি তে দৃশাতে অভএবাই অবুধ্বিস্তাবাঃ অজ্ঞানিনাং গমকাঃ যাবজাগাদিমস্য তবিজ-জ্ঞানিত্যের ন সিন্ধমিতার্থঃ। বোভাদাভাবেহপি মন্মান্ডকো দঙার্থমিত্যাই অধাপীতি ॥ ৫॥

নমু জ্বতে মম গোপবালকত কা শক্তি: কিঞ্চ কারণং কো বা দণ্ডো ময়া কৃত ইতাত আহ পিতেতি। অগ্তাঃ বং পিতা জনক:। গুরুত্বপদেষ্টা অধীশে। নিয়তা ইতি দণ্ডধারণে হেতু য়য়:। কালভাং সমর্থ:। তত্মাত্পাত্তদণ্ডো লীলাবতারৈ: সমীহদে তব সমীতা লীলৈব জগ্লীশমানিনামত্মাকং মানধুননমিতার্থ:। ৬ ॥

বৈক্ষবভোষণী।

অত: কৈমৃতিক্সায়েনাই কুতোৰিতি। যদি তে গুণা মায়াময়া ন ভবন্তি তহি তদ্বেতবা মায়াহেত্কা দোষা: কুত ইতাৰ্থ:। তান হৈত্বীল হে বহামায়ানিয়ন্ত:। নম্বর্টভোজন স্মাণাস্থনাদিনা ময়ি তে ভবন্তিববগতা এব কথমধুনা ভয়েনাপলপাতে তানাই স্থান্ত কাই স্থান্ত লোভাদরে৷ যেহব্ধলিকভাবা ইতি। যে ব্ধলিকভাবা ভক্তভিনাহাস্থাগমকা ভক্তনতভোজন সমাস্থাদাদ্যাস্থকা লোভাদয়তে তু স্থাক্ত হৈতি ন মায়াকতা: কিন্তু কুপামাত্রকতা ইতার্থ:। পত্রং পূপাং ফলং তোয়মিতাদি। নম্থ ভবতু তাদ্শো লোভঃ ভক্তম্থকর্ত্বাদন্যেমাহঃথ ক্রব্যাত। কোণ্ড স্বিষ্ধ হঃধকর এব দণ্ডাস্থাক্তাং। কথং তাহি ত্তান কণা তাবাহ স্থাপীতি। ধর্মপ্ত গুইয়ো যং থলনিতাই: তমা ইতি থলানাং স্থাপি ধ্যালিক্তাপত্রা স্থামের স্থাদিত। সোহলি কুপামাত্রকত এবেতি ভাব:। তথা-পীতি পাঠ: ক্রিং। ভগবান্ বিভ্রীভাপরোক্ষেহণি প্রোক্ষব্যক্তির্গার্যাদিনা। কিশ্মহালোভাদ্য ইতি পাঠ:। চিচ্ফুকাদীনাং পাঠে মহালোভাদীনাঞ্চ কুতোমিত্যাবিত্যনিব্যাহাণ ॥ ৫॥

অতোমম হিতমেবাক্রোদিত্যাহ পিতাচ গুরুল্চ ইত্যাদির্ব্য:। সম্গীহদে বিচিত্রলীলাং ভত্তে। অতাতৈ:। তার মানধুন-ন্মিতাতিশ্ব বিবক্ষধৈবাভেদনির্দেশ:॥ ৬॥

बीविश्वनाथहळवर्षो ।

জন্ত: কৈমৃতিক্সায়েনাহ কুত ইতি। মু ভো ঈশ যদি তব গুণপ্ৰবাহে জিল্পাপি নাতি তহি কুতত্ত্বা গুণপ্ৰবাহ্বা হেতবোগুণাঃ হা:। তংক্তা গুণপ্ৰবাহকাৰ্যাভূতা লোভাদয় চ যে হব্ধন্য লিঙ্গং চিহুং ভাবন্নতংপাদয়ত্ত্বীতি তে। নতু তহি কথং ক্ষমণ্ডক্ষকরবং তত্ত্বাহ অধাণীতি লোভকোপাদ্যভাবেহপি॥ ৫॥

ধর্ণগোপনথলনি এহা জ্যাং পূর্ণজ্ঞ পরনে খবস্য মন কিং ফসমিতি চেৎ জগভাং মঙ্গলমেবেক্তাই পিতেতি। তব সাই লিক্কারুপাইং জগভাং মধ্যে বে ধার্মিকাডেবু স্থং পিতা যথা প্রস্ত কেইবরে বংসলঃ গুজর্বথা নিব্যক্ত নীবাস্থানি বংসলঃ। অধীশক্তক বুধবাশ-অধ্পঞ্জানসম্বা:। যে তু ধ্রাতেবু স্থং ছবতারো ছবারঃ কালঃ স ইব উপাত্তদগুঃ দওপ্রদানেন্দ্র তচ্ছোবক ইতার্থঃ। অনু উদ্ভবেদাং

হে ঈশ। যদি অজ্ঞান ও তৎকৃত দেহদখন না থাকিল তবে দেহদখন কৃত যে দকল লোভাদি, যাহারা পুনরায় অন্যদেহোৎপত্তির কারণ এবং অজ্ঞানিদিপের ব্যক্ত সে দকল কোথা ইইতে ইইবে অর্থাক ক্ষুত্র সকলের কথা কি ? পর্যন্ত লোভাদি না থাকিলেও আপনি ধর্মারকা এবং ধলনিএই নিমিত্র কথারণ করিতেহের অতএব স্তার্থ কোনার এই নান তদ্ধ করিলেন। ৫।

ভগবন্। আপনি গোপবালক নহেন, জগতের জনক; উপদেক। ইত্রিং নিয়ন্তা অর্থাৎ দশুধারী । অপুর আপুনিংকালকরণ শ্রকারণ সমর্থ অত্যবস্থিধারণ করিয়াজীলগবতারখারা এইরপ চেফা করিয়া যে মৰিধাজ্ঞা জগদীশমানিনস্তাং বীক্ষ্য কালে হভয়মাণ্ড তম্মদং। হিছার্যামার্গং প্রভক্ত্যপক্ষ্মা কৈছা ধলানামপি তেহকুশাসনং॥৭॥ স জং মমৈম্ব্যমদপ্প তম্ম কৃতাগসন্তে হবিছ্যং প্রভাবং। ক্ষন্তং প্রভো হথার্হসি মৃচচেত্রে মৈবং পুনস্থাতিরীশ মেহস্তী॥৮॥

जीधवन्त्रामी ।

কথমেতদিতাত আহ পিতেতি যে ইতি মহিধাক তে অজ্ঞাকেতি অতোজগদীশমানিন: কালে তরকালেহপি বথাধুনৈৰাতিরটো ভাষভয়ং ভরমণণরস্কং বীক্ষা আঞ্ ভন্মদং জগদীশা ইতি মদং হিছা বিগতগর্কা: সম্ভ: আগ্নীমার্গং স্বত্তকলকণং ভজ্জি অভতাব ঈহৈব খলানাম্মশাসনং দণ্ড ইতার্থ: ॥ ৭॥

এবং ভগবতঃ অরপমভিপ্রায়ং চাফুবর্ণা ক্ষমাপয়তি স ছমিতি। এবছুতা অসতী মতি মেপুনম ভিদিতি প্রার্থনা তরং ॥৮॥

देवक्षवरज्ञावनी ।

মানভল্পনপূর্বক হি তৎপ্রবর্ত্তন প্রকারমেবাহ য ইতি হিতমাহ আর্থ্যেতি বদ্যপি ভক্তানন্দনার্থমেব তথাপি তবেহা লীলা মহি-ধানাং ধলানামণি অনুশাসনং শিকাকরণং ভবতীত্যর্থঃ ॥ ৭ ॥

প্রভা হে মদাদিস্কলেবেশর হে ক্ষমাসমর্থেতি বা । অথান্দাছ্কাদ্বেতা:। স অগদ্ধিতকারী ক্বতাগদোহণি দদ ক্ষমইিদ্ বোপ্যোহিদি। ক্বতাগদ্ধে হেতু: তব প্রভাবং মাহান্ম্যমবিহ্নং অন্ধানতত্তৎকুতো মৃচ্চেতসঃ বিচাররহিতত্বেতাইং। তদপি কৃতঃ ঐশ্ব্যমদ্ব্যাপ্তত । বলা তব প্রভাবং বিহ্বোহণি ক্বতাগস ইতাধিক্মাগোহভিপ্রেতং। তথাণি ক্ষন্তমহাসি কৃতঃ মৃচ্চেতসঃ বিশ্বতপ্র-ভাবতা। অক্সদ্বোপ্রাক্ষাপ্রাধ্বাদিতি ভাবঃ। কিঞ্চ। সকল অগদ্ধিতাথিবতীর্বত্ব প্রমদ্যালোক্ষারশিরোমণেক্তব দ্বীবৈতৎসক্ষ-প্রাধ্বদ্যাপণং কিয়ন্ত্রাম কিন্তু তথা কৃত্ব যথা পুনন্ত্রি দ্বণীরেষ্ট্র কোপ্যপ্রাধোন ভাদিতাহে মৈব্যাতি। এতাদৃশী দ্বি তাবকের চ

ক্রম্পর্কঃ।

'ঐবিশ্বনাপচক্রবর্তী।

हिভাবিৰ ইচ্ছা তমুতিঃ বেচ্ছাময়াকতারৈঃ স্নীহসে চেইসে তব সমীহা গীলৈব পূতনাবধাদিকা ছইসংহারিকা শিষ্টপালিকা চেতার্থঃ। বে অধিয়তভক্তা ব্রহ্মান্যাক্ষত বং কিঞিলৈথর্যোগৈব মতা ভবস্তি তেখামপি মদনিরসিনী ব্রীলৈবেত্যাহ মানমিতি ॥ ৬ ॥

তের জগদীশম্মিছিণ মধ্যে হরতাধন ইত্যাহ। মহিধাশ্চ তে অজ্ঞাশ্চেতি তেন অজ্ঞানাদপুগপনান বাদহনত্যক্ত ইতি ভাবেঃ। কালে ভরকালেছণি বগা অধুনৈবাতিবৃত্তী অভরং ভরমগণরস্তং বীক্ষ্য। বহা। ন জানে প্রভ্রেরং মাং কীদৃশং দণ্ডরিবাতীতি বস্য ভরং ভরতেত্বং বীক্ষ্য ভক্ষাং অগ্রন্থের বহং ভারতেত্ব আর্থ্যাশাং দণ্ডজানাং মার্সং ভক্কি গত স্বরা নইগর্কা অভত্তবেরং গোবর্জনধারণ নীলৈব ধলানামস্থাক্ষম্পাদনং দণ্ডঃ ॥ १॥

নম গোবৰ্দ্ধনধারণেন ব্ৰহ্মা রক্ষামেবাক্রবং নতু তব দণ্ডং। তব দণ্ডত সাম্প্রতং বৈবস্থতমাহর সমীচীনতবৈধ কার্দ্ধিয়ানীত্যা-পত্য সহাজ্ঞরবিহনে আহু সংশ্লেক্ষ্ণ পিতা চে গুলুল্ডাঃ কুপানুবাং ক্ষমাসিক্ষাক্ত ঐপর্যামদাসিক্ষাে প্রুল্য নিমন্ত্রা অতএব তব প্রভাবেং অবিহ্রো হ্লানতঃ ম্মাপরাধং ক্রম্বর্গি। বতো মৃচ্চেড্সঃ পশুস্থভাবিস্য পশুহি স্থামিনাদ্রদণ্ডপ্রহারেহিণি ক্ষণান্তরে তম্বোপরাধং বেড়ান, ফ্লতঃ আপনার চেইট্রালীলামাত্রে, কিন্তু আমরা মনে করি আপনি জগদীশার বলিরাজভিন্নন-কারি অক্ষ্ণাদির সান বিনাশ করিতেছেন ॥ ৬ ॥

প্রতিতা যে সকল ব্যক্তি আমার সদৃশ অক্স, অতএব আপনাদিগকে জগদীশর বলিয়া মানে, তাহারা আপনাকে ভরকালেও নির্ভয় নিরীকণ করিয়া একণে আপনাদের মদ অর্থাৎ "আমরা অগতে ক্রিশ্বর,, এই অভিমান পরিত্যাণ পূর্বক বিগভগর্ব হওত ক্রাপনার ভক্তিস্বরূপ আর্যাবন্ধ নেবা করিভেছে, না করিবে কেন ? আপন্কার চেউটি ধলব্যক্তিদিখের দও ॥ ৭ ॥

सार्छ। आप्ति क्षेत्रकी महत्त मह हरेताहिलाम, अधनकात स्राधान सानि मारे क्षेत्रकात अश्रीम कित-

তবাবতারোহয়মধোক্ষজেহ ভূবোভরাণামুরুভারজন্মনাং। চমূপতীনামভবায় দেব ভবায় যুখ্মচ্চরণানুবর্তিনাং॥ ৯ । নমস্তভ্যং ভগবতে পুরুষায় মহাত্মনে। বাস্থদেবায় কৃষ্ণায় সাত্মতাং পতয়ে নমঃ॥ ১০॥

वीधतवामी।

মহানরমপরাধঃ কথং ক্ষত্তব্য ইতি চেদত আহ তবেতি। স্বর্থেব ভরাণাং পুনশ্চ উক্তারজন্মনাং বহুনাং ভারাণাং জন্ম বেভা-তেরামভবার নাশার যুল্লচরণদেবিনায় ভবার অতো মম তৎদেবকত্বাৎ অত্যন্তাপরাধিনোহণি ক্ষত্তব্যমিতি ভাবঃ॥ ১॥

ক্ষমাপ্ররম্ভরোতি নম ইতি। তুজাং ভগবতে শ্রীমংক্ষায় নমঃ পুরুষায় অন্তর্গামিণে মহাত্মনে অন্তঃছবেছপাপরিচিছ্লায় কুতঃ

বৈঞ্চবতোষণী।

মহাগদাং জননী অতএবাদতী মৃঢ়চেতদ ইতাজাত্রৈবাধয়:। যংকিঞ্চিংজ্ঞানরহিত্তাপি দতো মে। নবৈশ্বর্থে দতি কণং নাম ন ভবেং তত্ত্বাহ হে ঈশ তত্ত্বাপি দ্বয়া তথা কর্ত্তুং শক্যত ইত্যর্থ:। এতচ্চ নাতিশুদ্ধেন চেতদা প্রাথিতমিতি জ্ঞেয়ং। দাং বীক্ষ্য কালে ভয়-মিত্যুক্তেরক্ষমতহৈয়ব তদমুগতে:। অতএব পুন: পারিস্থাতহ্বণাদাবিপ বিশ্ববিষ্যতে ॥ ৮॥

অধোকজ হে ইন্দ্রিজ্ঞানাগোচর ইতি প্রমাদৃশ্যতোকা। তথাপী সৃথীতলে তবাবভার: প্রাকট্যং ভবায় মললায়। বেব ছে পূলা ইতি অসা সেবকভাং সাধরতি যুখাদিতি। বহুছেন তদীয়ান্ শ্রীব্রজনাদীনিপি সংগৃহাতি। অনাতৈ:। যধা। অসা তৎপ্রভাববিদ্দ্রোমেবাভিব্যঞ্জয়ন্ মূঁচচেতত্বমেব দর্শয়ন্ সাম্তাপমাহ তবেতি। অমাকং প্রার্থনয় অমাকমেব হিতার্থং অমবতীর্ণোহনীত্যমাভিক্রায়ত এব তথাপোত্যাদৃশোহপরাধঃ ক্লভ: আহো বত মূচ্চেতত্বং অতঃ ক্লন্তমর্হ সৈয়েবৈতি ভাবঃ॥ ৯॥

ভগবতে সাক্ষাং প্রমেশবার তত্তাপি ক্লঞার অশেধৈশব্যপ্রকটনেন সর্ব্ধিভাকর্ষকার তৃত্যং নমঃ। এবং বৃহ্ধিরশ্ব্যমুক্ত্রান্তর-মপ্যাহ পুরুষায়েতি। লীলরা তৃ সাত্তাং প্তয়ে। অন্যাত্তঃ। যথা। সর্ব্ধাবতারেলপোব্যেবং তং যথাপি করোবি তথাপাত্র সর্ব্বভো মহাবিশেষ ইত্যাহ নম ইতি তৃত্যং ক্লঞার সর্ব্ধচিত্তাকর্ষকার নমঃ। ক্লফ্ডমেব স্তেম্বতি ভগবতে সর্ব্বৈশ্বাপ্রিপূর্ণার কুতঃ পুরুষার

बीविश्वनाथहळावळी ।

করোত্যতোহহং দণ্ডপ্রাদানেন ন শোধনমহ মি। কিন্ত ক্লপরা তথা মাং শোধর বথা মে মৃচ্চেতজং নশাতীত্যাহ মৈবমিতি। এতচ্চ নাতিশুদ্ধেন চেতদা প্রার্থিতমিতি জ্রেয়ং। স্বাং বীক্ষ্য কালে ভয়মিত্যুকেরক্ষমতীয়ের ভদহুগ্রে:। স্বতঃ পুনঃ পারিজাতহরণাদাবপি বিশ্ববিধ্যত ইতি বৈঞ্চবতোষ্ণী ॥৮॥

অহো মে মৃচ্চেত্রত্বং যদস্মাকং প্রার্থনয়াক্ষাক্ষেব হিতার্থার স্বান্তবীর্ণোহনীতি পশ্যমপ্যক্ষোহ্যমন্তবং। সম্প্রতি লব্ধ ও: প্রাপ্তচকুরেবং তবং তে জানামীত্যাহ তবেতি। স্বয়মেব ভরাণাং ভারক্ষপাণাং প্নশ্চ উক্লভারজ্মনাং বহুনাং ভারাণাং জন্ম যেভ্যতেবাং চম্পতীনাং অভবার নাশ্র যুল্লচেরণদেবিনাস্ক ভবার মল্লার। স্বাহ্ত উভয়েবাং মধ্যে ন কোহণীতি মম নাভবো নাণি ভব ইতি মধ্যদাসীন এব ত্বং বর্ত্তবে ইতি ধিগ্রামিতি ভাবং ॥ ১ ॥

তক্ষাং যুদ্মজরণাত্মবর্তিখং মমাপাছিতি প্রণমরাশাতে নমন্তভামিতি ছাতাং। পরাবরেশো মহনংশগুরু ইত্যুদ্ধবোকেঃ সর্বাংশসাহিত ভোনৈবাবতীর্ণসা প্রথমমংশান্ প্রণমতি ভগবতে মহাবৈকুঠনাধার প্রক্ষার মহংল্পট্টে। মহান্মনে সমন্তান্তর্যামিণে। আংশান্ প্রণমা

য়াছি আমি ষ্ট্মতি, আমাকে ক্ষমা করুন,আর প্রার্থনা করি, এতাদৃশী অসতী মতি পুনরায় যেন আমার উপস্থিত না হয়॥৮॥

হে আধাকজ ! যে সকল ব্যক্তি স্বয়ং পৃথিবীর ভার স্বরূপ এবং যাহাদের হইতে বহুতর ভারের উৎপ্রতী হয় সেই সকল সেনাপতির বিনাশ ও সেবকদিগের মঙ্গলের নিমিত্তই আপানকার এই অব-তার, অতএব আমি আপানার সেবক, যদিও অত্যন্ত অপরাধী হইয়া থাকি, ক্ষমা করুন ॥ ১॥

প্রভো ! জাপনি ভগবান্ অর্থাৎ জীমান্ কৃষ্ণ এবং অন্তর্যামী তথা মহাস্থা অর্ধাৎ অন্তঃস্থ হইয়াও অপরিচিছন। অপর আপনি বাহুদেব অর্থাৎ সকলের নিবাস স্থান এবং যাদবদিগের পতি, আপনাকে

স্বিছেন্দোপাত্তদেহায় বিশুদ্ধজ্ঞানমূর্ত্তরে। সর্ববৈশ্ব সর্ববীজায় সর্বস্থৃতাত্মনে নমঃ ॥ ১১ ॥
ময়েদং ভগবন্ গোষ্ঠনাশায়াসারবায়ুভিঃ। চেষ্টিতং বিহতে যজ্ঞে মানিনা তীত্রমস্যুনা ॥ ১২ ॥

श्चीधवयामी ।

ৰাস্ক্রেবার সর্ক্রিবাসায় সাজতাং যাদবানাং পত্তয়ে॥১•॥

৪৯•

তহি কিমহং যাদব: ন অচ্ছলোপাতদেহায় স্বেষাং ভক্তানাং ছন্দেন ইচ্ছয়া স্বীকৃতদেহায় তত্রাপি বিশুদ্ধং জ্ঞানমেব মুর্ভিবস্য তথ্য মায়য়া সর্কব্যি জগদ্ধপায় কুতঃ সর্কাস্য বীজায় কারণায় অতএব সর্কান্তনামাত্মনে নশ্বঃ ॥ ১১ ॥

ক্বতাগদ ইত্যানেন উক্তং অপরাধং নিবেদয়তি ময়েদমিতি। আদারবায়্ভির্ণোষ্ঠনাশার ময়েদমক্বত্যং চেষ্টিতং কুক্তং ॥ ১২॥

বৈষ্ণবতোষণী।

নিজাশেষপুরুষার্থবাঞ্চকায়েতার্থ:। অতএব মহামানেহপরিচ্ছিন্নাহাম্মায়েতার্থ:। ক্রফত্বনেব স্পট্রতি বহুদেবস্থতারেতি। অতঃ সাত্তাং যাদবানাং সর্কোবাং পরিপালকায়॥ > ।॥

অতস্বনেব সর্ক্ষিত্যাহ স্বচ্ছনেতি। বৈভিক্তিঃ কর্ত্তিঃ ছন্দেনেচ্ছ্যা করণরূপয়া উপ সমীপে আতা আরুষ্টা দেহাঃ শ্রীমৎস্যকৃষ্মান্দ্যোহিপি বিগ্রহা যেন তলৈ। তেবাং দেহানাং স্বর্গজ্ঞানার্থং পুনরাহ বিশুক্জানমূর্ত্যে বিশুক্ষা মায়াতীতাঃ স্বপ্রকাশতরা জ্ঞানরূপান্দ্র মূর্ত্যো দেহা ব্যাতি তল্মা ইতি। অন্যত্তঃ। তত্র সর্ক্ষের জগজ্ঞপায় সর্ক্ষ্য বীজায় কারণায় মহাপুক্ষরূপায় সর্ক্জ্ঞান্মূর্ত্যে তদস্ক্র্যামিনে ইতি। যথা। স্বচ্ছন্দং যথা স্যাত্তথা উপাত্তা অন্তর্যামিত্বন স্বীকৃতা দেহাঃ সমষ্টিব্যক্তিরূপা যেন স্বয়ন্ত্র বিশুক্ষজ্ঞানমূর্ত্যে ইতি তু পূর্ক্বিং॥ ১১॥

কিঞ্চ। মহাপরাধিনাপি পরমায়গ্রহোহয়ং সর্কতো মহাবিশেষ ইত্যাহ ময়েতি সার্দ্ধেন। ময়া স্বয়মেবেদং সাক্ষাদিদানীমেবেত্যর্থং। গোষ্ঠস্য নাশারেতি পরমারুত্যত্মফুকং। যতো মানিনা অতএব তী এমহানা। ভগবন্ হে সর্কজ্ঞ তল্মম তুইতার্ত্তং ত্বমা জ্ঞায়ত এব কিং ময়া য়ৢটেন বিভার্যমিতি ভাবং। যদা। হে ভগবলিতি সবৈশ্বগ্পরিপূর্ণে ত্বি সাক্ষান্তনিশ্বেশি ক্ষান্তন্ত্র লাশারেত্যপরাধাধিক্যং স্চিতং॥ ১২॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

ত্বাং বীক্ষ্য কালে ভয়মিত্যগতৈয়বাহুগড়েশ্চ স্বেষাং ভব্জানাং ছন্দেনাভিলাষেণ উপাত্তঃ তৎসমীপে গৃহীত আনীতঃ প্রকটীক্বতো-দেহো যেন তল্মৈ ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥

ত্ৰীবিখনাপচক্ৰবৰ্তী।

সাক্ষাত্তমংশিনং প্রণমতি বাস্থদেবারেতি। পিতৃনামোল্লেথেন ক্ষণায়েতি তল্মামোল্লেথেন সাৰতাং প্তয়ে ইতি পার্ধদনামোল্লেথেন ॥১০ অনেকবিধপ্রেমবিষয়ভাৎ বৈওঁকৈশ্ছন্দেন প্রতিব্যেজ্যা দান্তেন সংখ্যান বাংসল্যান রমণেন চ স্থপ্রদানার্থং উপাত্তো গৃহীতো দেহো যুস্যেতি ওলৈ। দেহস্যাপ্রাকৃতভাৎ বিশুদ্ধং মায়াতীতং জ্ঞাননেব মূর্তির্যস্য তল্ম। মায়াদিশক্তিমভাৎ সর্বব্যে। অতএব সর্বস্তান্থনে॥ ১১॥

ভো: শক্র ত্বং মন্তক্ত ইত্যানরা স্থাতৈয়ব জ্ঞারনে কিন্ত বিনৈব 'ছদাজ্ঞাং হটা মেঘা মন্ত্রমধিকং যং কদর্থরস্তি শ্ব তদিমে ত্বয়া দণ্ড-নীয়া ইতি পবিত্রভং সনমাশব্য হস্ত হস্তাশিরস্তর্যামিণি কপটং ন ঘটত ইতি বিমৃশ্য স্বচেষ্টিতং যথার্থমেবাহ ময়েতি নবেতর্মন্তক্তে ত্রি কথং সম্ভবেত্তবাহ। বিহতে যজ্ঞে ইপ্তি নহু ত্বংপ্রভুনা মহৈব বিহতেহিপি দাসস্য তবৈতাবদক্তত্যং ন প্রত্যেমি তত্তাহ মানিনা।

নমস্কার করি॥ ১০॥

ভগবন্! আপনি যতুদিগের পতি বটেন কিন্তু স্বয়ং যাদব নহেন, তথাচ এই মূর্ত্তি বিশুদ্ধ ক্রান-মাত্র। অপর আপনি মায়া দারা জগজ্ঞাপ, যে হেছু আপনি সকলের বীজ, অতএব আশনি সক্ষেত্তর আত্মা, আপনাকে নমস্কার॥ ১১॥

্ভগবন্ ! যজ্ঞ বিহত হওয়াতে আমি অভিমান বশতঃ তীত্রমন্যু 'অতিকুদ্ধ' হইয়া ,গোষ্ঠ বিনাশ নিমিত্ত বারি বর্ষণ ও বায়ু প্রেরণ করিয়া অত্যন্ত অকার্য্য করিয়াছি ॥ ১২ ॥ ছয়েশাকুস্হীতোহস্মি ধ্বস্তস্তম্ভো রুথোদ্যমঃ। ঈশ্বরং গুরুমাত্মানং দ্বামহং শরণং গতঃ ॥ শ্রীশুক উবাচ॥

এবং সংকীর্ত্তিঃ কুফো মঘোনা ভগবানমুং। মেঘগম্ভীরয়া বাচা প্রহুসন্নিদমত্রবীৎ॥ ১৩॥ জীভগবাসুবাচ॥

ময়া তেহকারি মঘবন্ মথভঙ্গোহসুগৃহ্লতা। মদসুস্মৃতয়ে নিত্যং মন্তস্মেন্দ্রপ্রা ভূশং। মামৈশ্ব্যমদান্ধ্যে হি দণ্ডশ্বীণিং ন পশ্যতি। তং ভ্রংশয়ামি সম্পদ্ধ্যা যস্ত বাঞ্চাম্যুক্তাহং॥ ১৪॥

श्री धतुत्रामी ।

তথাপি ভো ঈশ দ্বাদুগৃহীতোহম্মি অনুগ্রহং দর্শন্তি ধ্বস্তস্তম্ভ ইতি বুথোদাম ইতি চ॥ ১০॥ ইক্ষেণ স্বাভিপ্রায়ে নিবেদিতে ভগবানপি তণৈবাহ ময়েতি ইক্ষ্যম্প্রায়ে নিবেদিতে ভগবানপি তণৈবাহ ময়েতি ইক্ষ্যমিন দেবরাকোন॥ ১৪॥

रेनकवटकावनी ।

ঈশ হে সর্কনিয়ত্বঃ যদাপি সদ্য এব ময়ি দত্তং কর্ত্তুং সমর্থত্বং তথাপি ত্বামুগৃহীতোহত্তি এবেতার্থঃ। নচ বাছামুগ্রহ ইত্যাহ্
ধ্বস্তত্ত্বঃ নষ্টমদো যত্ত্বিন্ যতো হতোদামঃ। ধ্বংসিরআন্তর্তুতণার্থঃ। যতত্ত্বির ক্তত্তো নাশিতঃ উদ্যমণ্চ হত ইত্যর্থঃ। অতা গুলং
তামেব মহাপরাধ্যতং শরণং গতঃ। অত্তবান্যদ্পি হেত্ত্বয়ং ঈশবং নিয়ন্তারং আত্মানং রশ্মীনাং ক্র্যামিব সর্কোষাং মূলক্ষরপং ত্রিধাপাননাগতিকতাদিতি ভাবঃ॥

সন্ধীর্তিত অতঃ ভগবানিতি প্রমপ্রভুজং বোধয়ন্ অপ্রাধিন্যপি তার্দে কুল্রেখনভিনিবেশং বোধয়তি অত্এব মেছেভি মেঘ্-গজ্জিতং লক্ষ্যতি অনেন ত্স্য মহাসন্থতাং প্রহ্মত্নিতি মহাশয়তাঞ্চ ব্যানজ্জি অম্মিত্যেক্বচননিশিষ্টাদংশব্দন লৌকিক্রীত্যা ম্বোনস্ত কুল্রতামিতি ॥ ১০ ॥

মংয়েমত্যাদি তদাক্যামুদ্ধণং প্রভূত্তোচিত্মেবাই অমুগৃহুতৈব নতু কুধাতেত্যর্থ:। ক্রোধবিষয়েষেইপি তদিধস্যাবোগ্যছাদিতি ভাব:। নিত্যং মম অমু বারম্বারং যা স্থতিত্তদর্থং অন্যথা বিপথগামী স্যাতি। হি যত:। ঐমর্থোণ প্রভূত্বন প্রিয়া ধনাদিসম্পাদা চ মদ্তেনাদ্ধ: গতাশেষজ্ঞান: সন্নিত্যর্থ:। দণ্ডপাণিং মদীরোপাসকান্ প্রতি গোপবেশোচিত স্থতগ্যশিক্ষাল তাসমানত্যের তদিধান্ প্রতি পু ব্যক্তিত্তপাণিদ্দেশি ন পশ্রতি নাবগচ্তীতি গোপলীলায়াং নিজপ্রভূত্বিশেষমূক্য তদ্ভরক্পরিক্রেস্ শ্রীগোপরাজাদিদ্পি

ক্রম্বা গর্মদা কিমশক্যমিতি ভাব:। নমু দৈবাছখিতা অপি গর্মাদয়ো ভাবা মন্তকৈর্বিবেকেনৈব তিরোধাপ্যয়ে ইতি তত্রাহ ভীত্র-মহানা। তীত্র: ক্রোধো হি বিবেকম্পি বলাদশু সভীতি ভাব:॥ ১২॥

শ্ৰীবিশ্বনাপচক্রবর্তী।

তদপি তিরস্কতেনাপি ভিষলা কুণালুনা চিকিৎসিতো রোগীব স্বয়াহং অমুগৃহীতঃ অতএব সম্প্রতি ধ্বত্তস্তরোগঃ। বতো হতা উদ্যান বন্ধনিকেপাদয়ো "স্যু সঃ। অতো নিরস্কৃত্বাদীশ্বং হিতকারিত্বাদাকুং প্রেমাম্পদত্বাদাস্থানং॥ ১৩॥

•ইক্রেণ নিক্ষপটমুক্তে ভগবানপি তথৈবাহ ময়া তে ইতি॥ ১৪॥

হে ঈশ ! তথাপি আপনি আমার প্রতি অমুগ্রহ দর্শাইয়াছেন, কারণ আপনা হইতে আমার এই স্তব্ধতা বিধ্বস্ত এবং উদ্যম ব্যর্থ হইল, আর ঈশ্বর গুরু এবং আজ্বরণী যে আপনি আপনকার শ্রণাগত হইলাম ॥

শুকদেব কহিলেন, দেবন্দ্রকর্ত্ক এই প্রকারে সংস্তত হইয়া ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ হাস্ত করিতে ২ নেঘবৎ গম্ভীরস্বরে তাঁহার প্রতি নিম্নলিখিত বচনপ্রয়োগ করিলেন॥ ১০॥

ভগবান্ কহিলেন হে মহেন্দ্র ! তুমি দেবরাজ্য প্রাপ্ত হইয়া অত্যন্ত হইয়াছিলে, আমি অমুগ্রহ করিয়া আমার স্মরণ নিমিত্ত তোমার যজ্ঞভঙ্গ করিয়াছি। যে ব্যক্তি ঐশ্বর্য মদে অন্ধ হয়, দে দণ্ডপাণি যে আমি আমাকে দেখিতে পায় না, অতথ্য যাহার প্রতি অমুগ্রহ করিতে আমার বাসনা হয়, আমি তাহাকে অগ্রে ঐশ্বর্য সম্পদ্ হইতে এই করিয়া থাকি ॥ ১৪ ॥

গম্যতাং শক্ত ভদ্রং বঃ ক্রিয়তাং মেহমুশাসনং। স্থীয়তাং স্বাধিকারের যুক্তৈর্প্রঃ স্তম্ভবর্জিতৈঃ॥১৫ অথাহ স্করভিঃ কৃষ্ণমভিবন্দ্য মনস্বিনী। স্বসন্তানৈরূপামন্ত্র্য গোপরূপিণমীশ্বরং॥ ১৬॥ স্করভিরূবাচ॥

श्रीभतवाभी।

নো মুমাভি:। বছৰচনং বরণাদ্যভিপ্রায়েণ। ক গস্কবাং অর্গেংপি তবৈবেশবরাদিতি চেত্তবাহ ক্রিয়তামিতি। মদমুশাসনেন যথা-পূর্বং তব্র স্থীয়তামিত্যর্থ:। যুক্তব্রপ্রমধ্রে: অন্তবজ্জিতৈনি বহকারে:॥ ১৫॥

শ্বসন্তানৈর্নোভি: সহ উপামস্ত্রা কৃষ্ণকৃষ্ণেত্যাদিনা সংখাধ্য ॥ ১৬ ॥

🕝 বৈষ্ণৎতোষণী।

ভক্তিরমুশিষ্টা যতো ন পশ্রতি অতএব চ যাগামুগ্রহমিজামি যমমুগ্রহীতুমিজামীতার্থ:। তং সম্পান্তো লংশরামি তদ্যৈষ্ঠাতেতুক ধনাদিসম্পত্তীর্হ্রামীতার্থ:। ভবতস্ত ত্রাসহিফ্তাং দৃষ্ট্য ন তাদৃশমপ্যকরবং কিন্তু যংকিঞ্জিম্পভঙ্গমেবেতি ভাব:॥ ১৪॥

নম্ তহি মমাণি তাদৃশমেবাম্গ্রহং কুক ময়াতৈব স্থীয়তাং তত্তাহ গম্যতামিতি। বো যুম্মাকং যন্তপ্রং ক্ষেমং তদন্ধিতাতরদানং বন্ধতন্তর ন মদেকাম্বত্তকানাং তত্ত্বসমৃত্যুক্তিপরিপাট্যা তদক্ষেমেবাভিপ্রেতং। অন্ধিগমিবতং প্রত্যাহ ক্রিয়তামিতি। গণা চ মদাজ্ঞা পরিপাল্যতামিত্যথা। অনধিকারিণস্তেহত্তাবস্থিত্যপরাধ এব ভাবীতি গমনমেব যুক্তমিতি ভাবং। যথা। নমু ভগবন্ তত্ত গততাপ্রের্থায়ে বভাবেনাবভ্যমপরাধে ভবিতৈব তত্তাহ ক্রিয়তামিতি মদমুশাদনং মছিক্ষিত্মিত্যর্থা। তদেবাহ স্থীয়তামিতি স্বল্যেব নতু পরভাধিকারের কিং প্রমাদ দত্তরক্ষপরিকর প্রত্তন্তবাদ্যাদিন্বিত্যর্থা। তত্তাপি যুক্তরপ্রমতৈউজিযোগবন্ধিকা তত্তাপি নিশ্বদৈশ্চ সন্তির্ব্বে। যুম্বাভিং স্থীয়তাং। ইক্ষ বরপ্রদানরূপেহিত্যহো ন ক্রতঃ কিন্ত কেবলমসমর্থেনৈব যুক্তিপূর্বকশিক্ষারূপ এব ক্রতঃ। সমাক্ প্রদাদাপ্রবৃত্তঃ। অতএব তদমুশাদনাপালনেন পশ্চাদপরাধান্তর্মপি জাতং তচ্চ পারিজাতহরণাদৌ ব্যক্তং ভাবি॥১৫৪

ভথান স্বর্মি ত্রু গাভিপ্রারন্থবিকি ইত্যা পূর্ব্ধেষে ব্যাধ্যাতঃ। স্বসন্তানৈঃ চন্দ্রবংশে শ্রীকৃষ্ণবং স্বস্য বংশে প্রাহ্রভূ তৈনি ব্যতদীর-গোধনর পৈত্তৈর পলিক ভিত্তা বন্দিবাহ স্বভিপ্রকং নিবেদিতবতী। অভিনন্দ্যতি পাঠে স এবার্থঃ। ন কেবলমভিনন্দ্যাহ কিন্তৃপামন্ত্র বক্ষামানসন্মোধনৈঃ আল্বন্যবধানং প্রার্থ্য চাহ। স্বাভীষ্টনিবেদনে হেতুঃ গোপরপিন্মীশ্রমিতি। অভিনন্দনে হেতুঃ রীশ্বর্মিতি। নিবিক্ষমানীয় প্রথমং স্বয়ং কথং তৎসাহাঘ্যার্থমিপি ন কিঞ্চিরিবেদিতবতী তত্তাহ মনস্বিনী ধীর্চিতা তত্তো ভগবতঃ স্ক্তিজ্বস্ক্হিতকার্থিছে ইক্সন্ত চোভানিচিত্ত স্বর্থেষ ব্রবিধিষ্তাং স্বস্ত নিবেদনীয়ং বিশেষং বিচার্য্য প্রথমন্ত নোক্রভীভার্থঃ॥১৬

क्रममन्द्रः।

অধানস্তরং স্বসন্তানে: সহ তদীর পোধনক্ষপৈত্তৈ: সহাভিবন্দিরা তথোপামন্ত্রা বক্ষ্যমাণসম্বোধনৈরাক্ষন্যবধানং প্রার্থোত্যর্থ: ॥ ১৬॥

श्चीविश्वनाथठवावर्धी।

ব ইতি বরুণাদ্যভিপ্রারেণ। বুকৈরপ্রমধ্তঃ শুস্তবর্জিতৈনি রহজারৈঃ স্থীরভাননাথা পুনরপি দণ্ডং প্রাপ্যাতীতি ভাবঃ। জন্ত পুনত্তে শুদ্যো ন ভবিষাতীতি ভগবতা নাক্তদতএব পারিজাতহরণেন পুন শুদ্রোহদ্য ভবিষাহীতি তাদৃশ দীবাসিদ্ধার্থমিতি জ্ঞোঃ॥>৫ স্বস্থানৈত্র জিলৈগোভিঃ সহেতি প্রকৃত্যা অপি তস্যা অপ্রাকৃত্যার তার ক্ষাপ্রিক্রস্তার স্বস্থানাভিমানতাসাং স্বভিবংশো-ভূত্তাং। যথা চক্রবংশোদ্ধতে ক্ষেও প্রাকৃত্যাপি চক্রদ্য স্বস্থানাভিমানঃ। উপামন্ত্রা সংবাধ্য ॥>৬॥

হে শক্র । একণে গমন কর, তোমার মঙ্গল হউ্ক, আমার আজ্ঞা পালন করিও, স্বর্গে গিয়া নিরহ-কার ও অপ্রমত হইয়া নিজ নিজ অধিকারে পূর্ববং অবস্থিতি কর॥ ১৫॥

তদনস্তর মনস্বিনী স্থারভি শ্রীকৃষ্ণকৈ অভিবাদন করিয়া তমুজ গো সমূহ সহ সম্বোধন পূর্বক গোপ-রূপি সেই ঈশ্বরের প্রতি এই বাক্য প্রয়োগ করিলেন ॥ ১৬॥ कृष्ण कृष्ण महारयांशिन् विश्वाञ्चन् विश्वमञ्जय । ভবতা লোকনাথেন সনাথা বর্মচ্যুত ॥ ১৭ ॥ ছং মঃ পরমকং দৈবং ছং ম ইচ্ছো জগৎপতে । ভবার ভব গোবিপ্রদেবানাং যে চ সাধবং ॥১৮ ইদ্রং নস্তাভিষেক্যামো ত্রক্ষণা চোদিতা বরং। অবতীর্ণোছিসি বিশাত্মন্ ভ্রেজারাপমুক্তরে ॥১৯

श्रेषत्रवामो ।

ইন্দ্রেণ হতা অপি ভবতা সনাধা বয়ং ক্বভরক্ষিতা ইত্যর্থ: ॥ ১৭ ॥

স্থং নঃ পর্মকং দৈবং দেবতা জতঃ হে **জুঁ**গংপতে গোবিপ্রদেবানাং বেহন্যে চু সাধবঃ তেবাঞ্চ ত্বাগাভ্যুদরার স্বমেবেক্রোত্ব ॥ ১৮ ॥ নমু তব্তামিক্রোহত্তীতি চেদতজাহ ইক্রমিতি অলং পুরন্দরতেক্রতরা ইত্যর্থঃ। নমু দেব এব ইক্রো তবতি কথমহং ভবেরমিতি

देवकवरकावनी।

শ্বাধ গোপত্রপত্তেনেশ্বর্থেনচ সংখাধ্য তত্ত্তর্থা প্রকাশমানেন শ্বরা ধ্যবামসাধারণেন নাথেন সর্কতোহণি বরং পূর্ণা ইতি ব্যশ্বরতি।
তত্ত্ব কৃষ্ণকৃষ্ণেতি গোপত্রপিত্বগ্রন্ধক অত্ত্বেব বীক্ষাচ নিজকচাতিশবেন। ঈশ্বর্থেন সংখাধরতি হে মহাযোগিন্ সর্কোত্ত্যাণিমাদিবোগৈশ্বগ্নিত্যপ্রকাশ। বিশ্বেষামপ্রাক্ত প্রাকৃত বংকিঞ্ছিৎপদার্থানাং মূল্ত্রপ। তত্ত এব হে বিশ্বস্তর তৎকারণত্রপ। বিশ্বতাবনৈতি পাঠে
তথৈবার্থ:। তথৈব স্কৃতকৃত্যতা সুধং নিবেদয়তি লোকনাথেনাপি তবতা বয়মেব সনাধা ইত্যর্থ:। প্রকৃক্যা বৈশিষ্ট্যাপজেঃ।
লোকৈন থিয়মানমাত্রেণেতি বা। শ্বোচ্যতেতি সংখাধ্য তথৈব নিতাজং চ দশ্বতি॥ ১৭॥

বৈশিষ্ট্যে হেতৃ: খং নঃ পরমকং দৈবমিতি। নীতৌ চ ভদ্দু ক্তাদিতি কন্। জন্মজরাড্যাং ভিন্ন: স্থাপ্রন্ধমজেল্যাহনং। বোহসৌ গোৰু তিঠতি গোপান্ পালন্নতি বোহসৌ সর্বের্ তিঠতি যোহসৌ সুবৈবিদৈলীয়তে বোহসৌ সর্বের্ কুতেছাবিছ কুতানি বিদ্যাতীত্যাদি তাপনীক্রতে। অতো নোহম্মাকমিজস্বনের ভব। জগংগতে ইতি যদ্যপি জগভামিপ পতিছং তথাপীতি পূর্বেরং। গবৈজ্ঞ-বেছপি বিপ্রাদীনামভ্যাদরং। গোভোগ যজাং প্রবর্তত্তে পোজ্যো দেবাং সমুখিতাং। গোভির্বেদাং সমৃদুগীর্ণাং স বড়লপদক্রমা ইতি গোল্ডাং ॥ ১৮ ॥

তৎপ্রকারমেৰ ভক্তিবিশেষেণ সনিশ্চরং বিজ্ঞাপরতি ইক্সমিতি। শ্বভাবত এব নোহশ্বাকমিক্সং দামধুনা মহুবালোকে প্রচারার

ক্ষ্মগন্ধ:।

এবং শ্রীক্লম্ব এলগ্রীনামণি তাদৃশত্বং দর্শিতং। লোকনাথেনাপি ভবতা ব্যমণি স্নাথা ইত্যর্থঃ। প্নক্লজ্যা বৈশিষ্ট্যপ্রাথেঃ অচ্যুত্তেতি ত্রাপি নিত্যবং নিশ্চিনোতি বৈশিষ্ট্যে হেছুঃ॥ ১৭ ॥

দ্বং নঃ পরমকং দৈবমিতি কাগংপতেরিতি যদাপি কাগংপতিদ্বং তথাপীতি। পূর্ববং গবেক্তদেহপি বিপ্রাদীনামভাদরঃ। গোডো বক্তাঃ প্রবর্ততে গোভো দেবাঃ সমুখিতাঃ। গোভির্বেদাঃ সমুদ্দীর্ণাঃ স বড়ক্সপদক্রমা ইতি শ্রুতেঃ॥ ১৮॥

প্রমগোলোকে স্বভাবত এব নোহস্মাকমিলং স্থানধুনা মন্ত্রালোকে প্রচারার কেবলং স্বভিবেক্ষ্যাম: ॥ ১৯ ॥

श्चिवनाथहळवळी।

কৃষ্ণকুষ্ণেতি হর্নে বিষয়। মহাবোগিরিতি বোগবলেটনৰ গোবর্জনমুদ্তা মংসভানীনি ঘমরক ইতি ভাবঃ। ভবতা সনাধা-ইতি মংসভানান্ বিষয়ংখনা ইব্রেশ নাথেনালমিতি ভাবঃ॥ ১৭॥

প্রমং কং সুধং বন্ধান্ত। অভব্যেবাদাকমিলো ভব। অগৎপতে ইতি তব অগংপতিলোহপি সম্প্রতি গোণজাতিবাৎ গোপ-বেহপি ইল্লেম্ববিধিবাদিলগুৱাভাবক্যান্ত তবেল্লেম্পুফুক্মেবেতি ভাবঃ। যে চান্যে সাধ্বত্যেবাক ॥ ১৮॥

্নোহস্বাকং সা সাং ইঞা। নতু ক্স্যাপ্যাদেশেন স্বাভজ্ঞেটিণৰ বা ভঞাহ এক্শণেতি। যদা মহাভর্বিহ্বলেনেজেণ স্বসাহায্যাৰ্থং

হুরভি কহিলেন ছে কৃষ্ণ ! হে কৃষ্ণ ! হে মহাযোগিন্ ! ছে বিশ্বান্থ ! আমর। ইস্ত্র কর্তৃক হত হইয়াও লোকনাথ আপনা কর্তৃক রক্ষিত হইলাম ॥ ১৭ ।

হে অচ্যত। আপনি আমাদের পরম দেবতা, হে জগৎপতে। গো বিশ্র দেব তথা অভাভ সাধু-জনের অভ্যুদরার্থ আপনিই আমাদের ইক্ত হউন॥ ১৮॥

चामता चार्रानाटक चामारतत रेखर बिचिक कतिष, खेबी चामापिशरक अलेबिसरात निमिक्टर

এবং কৃষ্ণমূপামন্ত্র্য হারভিঃ পয়সাত্মনঃ ॥ ২০ ॥ জলৈশ্চাকাশগঙ্গায়া ঐরাবতকরোজ্তৈঃ। ইন্দ্রঃ হারধিভিঃ সাকং চোদিতো দেবমাতৃভিঃ।

2 वत्रवामी।

চেদত আহ অবতীর্ণোহসীন্তি॥ ১৯॥

স্থ্রভিরাম্বনঃ পর্যা অভ্যবিঞ্ধ। ২০॥

ইক্র-তাকাশগঙ্গারা জনৈরভাবিঞ্চ দেবমাভ্ভিরদিভ্যাদিভিঃ দেবৈম ভিভিডেভি বা। গাং পশুন্ গাং স্বর্গং বা ইক্রছেন বিস্কৃতীভি

বৈষ্ণ বতোষণী।

কেবলমভিবেক্যাম:। নমু তহি ইপ্রাদ্যধিকারদাত্র ক্লণেছবমান: ভাতত্রাই বন্ধণেতি অভো বন্ধবাক্যাপেক্রাপি ত্বা সক্ষতিঃ কার্য্যেতি ভাল:। নমু তহি সএব কথং নাগভত্তত্রাই ব্যক্তিত্যান্মাক্ষেবাধিকার:। ত্বদীরগোবংশভাদিমাতৃত্বন তত্রান্তরক্ত্বাই ত্যা তু প্রপঞ্চাধিকারতেন বহিরক্তাদিতি ভাব:। অতো বহুত্মপ্যাত্মনো বহুমানেন। যহা। বংসলত্রা ত্বস্কাগত্যিক্রং তদীয়াংক কুতার্থরিত্বং বহুত্বন তান্ সর্বান্ গৃহাতি। ততক কুতাপরাধেন বেন মহাপরাধিন ইক্রস্যাপ্যপরাধক্ষমাপণে পূর্ববিলপরাধন্দ্র্যা বন্ধানাগ্যদিতি ভেরং। অবতীর্ণোহ্পতি তৈর্যঞ্জিতং। বহা। নহুহং শ্রীনক্ষগোপনক্ষন: কথং যুদ্ধক্ষিবং ততো যুরং বন্ধান্প্যমন্দ্রীক্ষা কারিণ এবেত্যাপক্য ন মুহুরত্মান প্রতার্যরহত্যাই অবেতি শ্রীমতি প্রমধ্যোলাকে বিরাভ্যানো নিভ্যমত্মপ্রমদৈবতক্ষপ্রব তং অবতীর্ণোহিসি শ্রীনক্ষাদি নিক্সরিকরৈঃ সহ কেবলং ভূয়াং প্রকটোহসি নতু জীববজ্জাতোহসীত্যর্থ:। নমু ভূডারাপনাদনেন মম কিং তত্তাহ বিশ্বাহান্ধিতি অতো বিশ্বসাপি। স্থিতিত্বত্ব এব যুজ্যত এবেতি ভাব:। তত্ত্রৈব যথা তরোম্বানিষেচনেন ইত্যাদি ভারেন সর্বোধানেব্যত্র ত্বাভিবেকে জার্মানং স্থাং তদর্থনবতীর্থন ভ্রতান্ত্রান্ধনাদনীর্যমেবেতি ব্যঞ্জিতং ॥ ১৯ ॥

এবমিতি যুগ্মকং উপামস্ত্রা নিভ্রেক্সস্থলীকারার প্রার্থোত্যর্থ:। সঙ্গাদিনা শ্রীভগবতা সাক্ষাদক্ততেংপি স্থীকারে যৌনং সম্মতি-লক্ষণং ইতি স্থায়েন স্থরভিঃ স্বর্থমেবাভ্যবিঞ্চং ॥ ২০ ॥

ইক্স: স্বয়মপ্রবুত্তঃ কিন্তু তদভিষেকার্থমের স্থর্রবিভি: সাকং তত্ত্র সাক্ষাদাগতাভি: দেবমাতৃভি: প্রেষিভ: যথা শ্রীক্লফোহয়ং ভগবান্

ক্রমসন্দর্ভ:।

উপামন্ত্র নিজৈক্রস্বীকারায় প্রার্থ্যেত্যর্থ:। প্রচোদিত: প্রেরিত:॥ ২০॥

ভয়াৎ স্বয়মপ্রবৃত্তে: ঐরাবত ইতি। গজেক্রদ্বারা তদ্বিধানাৎ। গবামিক্রো গোবিন্দ: তৎপদেনৈর গবেক্রতারা বাচ্যদ্বাৎ।

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্ত্তী।

গদা ব্ৰহ্মানিবেদিভক্তদা ভেনাপি ভূতপূৰ্বস্থাপরাধস্বতা। ভীতেন বিমৃশ্য অহৰাদিষ্টা প্রতে বংসন্তানপালকস্য প্রভোৱনতিপ্রীতিপাত্রী ভব্দি তং অমেব গদা ক্রপাদিক্রো ত্রেক্সাপরাধং ক্ষময় গবেক্সছেন তমভিষ্কি চেতি। কিঞ্চ। ব্রহ্মাণ্ডকোটীক্সস্য ব্রহ্মজাদিছ্র ভিচ্বণপরিচরণস্য তব গবেক্সছেনাভিষেকো নাম কঃ ধলুংকর্ষঃ ৷ ক্রিছভিবিক্সতামস্মাক্মেবোংকর্ষার্থমস্থাক্ময়ং প্রযন্ধ ইত্যাহ অব-তীর্ণোহসীতি বিশ্বাস্থায়িতি বিশ্বাস্থাত্বন সর্কাধৈবাদৃশ্য এব ত্বং যদি নাবাত্তিকাত্বদ্যোক্মেতাব্রহাগ্যং ক্থমভবিষ্যাদিতি ভাবঃ॥ ১২॥

প্রদা ছ্দ্ধেন। দেবমাত্ভিরদিত্যাদিভি: প্রেরিত ইক্রশ্চাভাষিঞ্চ আত্মনো তগবরিক্ট্রাসত্মননেনাভিষেককর্মণাভাহিতি অয়মপ্রইত: প্রথমং স্থগিত এবেক্র আসীৎ পশ্চাদদিত্যাদিভি: প্রেরিততদাজ্ঞাবশার জ্বাধিকারসভাবন এব অভাষিঞ্চিত্যর্থ:।
দাশাহিমিতি নশাহ বংশ্যত্মেন জ্ঞাত্যাশি তদ্য গোপস্বদ্যৈব স্পৃহণীয়ত্বাধিক্যাৎ। গাং পশূন্ বিক্তি গাং স্কৃত্তেক্রিয়াণ্যাকর্ষকত্মেন বিক্তিতি বা গোবিক্ ইত্যভাধাৎ নান ক্রতবানিত্যর্থ:। ২০॥

দেবনিকায়ের কেতব ইব মুখ্যা বরুণাদয়:। অত্তপুলার্টিভিবি শৈবেণ অবাকিরন্ আবক্তরিত্যর্থ:। গাং পূথ্বীং পয়োডিপাঠাইয়া দিলেন। তে বিশ্বমূর্তে ! আপনি মানব নছেন, ভূমির ভার হরণ নিমিত অবতীর্ণ
হইরাছেন ॥ ১৯ ॥

ৈ হে রাজন্ ! এই প্রকারে সম্ভাষণ করিয়া হ্রান্ত স্বীয় ত্রা ছারা ভগবাদ্কে ইন্দ্রত পদে অভিবিক্ত করিলেন ॥ ২০॥

্তদন্ত্য দেবেক্তও দেবমাত্দিগের উত্তেজনায় দেব ও ঋষিগণ সহিত ঐরাৰত করোজ্ত সাকাশ

অভাসকত দাশার্থং গোবিন্দ ইতি চাভ্যধাৎ।
ভত্তাগতান্তপুরুলারদাদয়ো গন্ধবিদ্যাধরসিদ্ধচারণাঃ।
অপতর্বশো লোকমলাপহং হরেঃ স্থরাঙ্গনাঃ সংনন্তু মুদান্বিতাঃ॥ ২১॥
তং তুই বুদেবিনিকায়কেতবো হ্বাকিরংশ্চান্ত্তপুষ্পর্ম্ভিভিঃ।
লোকাঃ পরাং নির্তিমাপ্রুবংস্তয়ো গাবস্তদা গামনয়ন্ পয়োক্রতাং॥ ২২॥

শ্রীধরস্বামী

কৃষা পোবিন্দ ইভ্যভাষাৎ নাম কৃতবানিভার্থ:॥ ২১॥

নেৰনিকালেৰু কেতৰ ইব দৰ্শনীয়া মুধ্যা ইতাৰ্থ:। গাব: গাং পৃথুীং পলোভিজ তাং আজা: অননন্ অকুৰ্বনিতাৰ, ॥১২॥

বৈষ্ণবড়োবণী।

ক্বপার্জ চিত্তঃ শরণাগভবংদলঃ বিশেষভণ্চ তৎপ্রেয়জনসক্ষতা। ত্বমাগতোহিদ সমরোহয়মপ্যতিপ্রশিক্তত্বামা ভয়ং কার্বী ম হোৎসবং ভক্তা বিধংবেতি অতবৈধ্বের সহিতোহভাষিঞ্চদিতার্থঃ। ঐরাবভত্ত করেণ করে। রত্বকুলাদিবার। উদ্ধৃতিরানীতৈঃ তদীয়রত্বমর ঘণ্টয়েতি। বিষ্ণুপুরাণে। তচ্চ গলেক্সবারা তিবিধানাং সংলাগাহিতভীপ্পকালাজাক্ত গণামিক্সো গোবিদ্দঃ তৎপদেনৈব গবেক্সভারা বাচ্যতাং। প্রীয়াল ইক্রোগবামিতি তদর্থনির্দেশন তলায়ঃ স্চিতভাং। ইতি গোগোকুলপতিং গোবিদ্দমতিবিচ্য স ইতি বক্ষ্যমাণাক। প্রোদরাদিপাঠ ইতি দাশার্হ মিতি দাশার্হ হৈছি গোগবিদ্দমত্বিহিত্য প্রতিহিত্য গোবিদ্দমত্বিহিত্য স্থাবিদ্দমত্বিহিত্য স্থাবিদ্দমত্বিদ্দমত্বিহিত্য স্থাবিদ্দমত্বিহিত্য স্থাবিদ্দমত্বিহিত্য স্থাবিদ্দমত্বিহিত্য স্থাবিদ্দমত্বিহিত্য স্থাবিদ্দমত্বিহিত্য স্থাবিদ্দমত্বিদ্দমত্বিহাল স্থাবিদ্দমত্বিদ্দমত্বিদ্দিল স্থাবিদ্দমত্বিহাল স্থাবিদ্দমত্বিহাল স্থাবিদ্দমত্বিহাল স্থাবিদ্দমত্বিদ্দাল স্থাবিদ্দমত্বিদ্দাল স্থাবিদ্দাল স্

ততক মহোৎসবো জগদানশকরো বৃত্ত ইত্যাহ তত্ত্রেতি। ত্রিভি: তশ্মন্ শক্রকৃশুমিতি শ্রীবারাহতঃ গোবিশকুশুমিতি স্বান্দতঃ প্রসিদ্ধে শ্রীবারাহিক। গোবিশকুশুমিতি স্বান্দতঃ প্রসিদ্ধে শ্রীবারাহিক। সর্ব্যান্দ্র হৈছু: মুদাবিতাঃ। অত ইন্ধাজ্ঞাপেকাপি তৈন ক্রতেট্রিড ভাবঃ। তুলুরোরাদৌ নির্দেশঃ পূর্বং নারদাদিপি তত্ত্ব সানে জৈট্যাং। তচ্চ বিঙ্গপুরাণে ব্যক্তং। শ্রীনারদক্ষায়ং নিত্যপার্ষদঃ শ্রীগক্ষাদীনাং শ্রীবৈনতেয়াদিরিব ভগব-দবতারতৎপার্শদপ্রবর্গীনারদক্ষিবাবতারো গীতাদিকোতুকেন গন্ধবাদিয় বর্গত ইতি। আদিশক্ষাচ্চিত্ররপাদয়ঃ। যহা। তুলুকনারদাবাদাবিত্রতো যেবাং তে গন্ধবাদয়ঃ লোকানাং সর্বেষাং মশং তত্ত্বেজী দোষং মোক্ষাভিসন্ধিপর্যক্তং॥ ২১॥

দেবনিকায়কেতবং বরুণাদ্যা: । পূস্পাণাং স্বরূপেণ বৃষ্টীনামপার্মিত্যনেনচ অস্কৃতাভি: পূস্পাণাং বৃষ্টিভি: ব্যাপয়ামাস্ম:। প্রাং যতোহিভিশ্বিতা নাঞ্চান্তি তাং॥ ২২॥

ক্ৰমনন্ত:।

প্রীয়ার ইক্রোগবামিত্যুক্তভাৎ ত্বল্ল ইক্রো অগংপতেরিতি। ইতি গোগোকুলপতিং গোবিন্দমভিবিচ্য স:। ইতি বক্ষানাগাং॥ ২১॥ ২২॥

শ্ৰীবিশ্নাপচক্ৰবৰ্তা।

ক্র'তাং আর্দ্রাং অনয়ন্ অকুর্বলিভার্থ: ॥ ২১॥

নানারদৌবাং ক্লীরাদিবাহিন্য অক্টপ্রচাং কর্ষণং বিনৈব পকা ওবধরো মতা তে গিরর:। উন্মণীন্ উৎক্টামণীন অবিজ্ঞন্ অবিভক্ষঃ॥ ২২ ॥

গলার জল বাইয়া ভগবানের অভিষেক করিলেন, তাহার পর গোবিন্দ এই নাম রাখিলেন, কারণ ইত্রছক্ষপে অর্থনাভ করিয়াছিলেন। রাজন্। সেই সময় সেখানে তুমুক্ত, নারদ প্রভৃতি দেবর্ধি তথা গল্পর্ব বিদ্যাধর, সিদ্ধ ও চারণগণ উপনীত হইয়া ভগবানের লোকমলাপ্ত অমল যশ গান, আর দেবালনা সকল হর্যান্তিক হইয়া মৃত্যু করিতে লাগিলেক।॥ ২১,॥

শুপার, দেবরুদ্দ মধ্যে ধ্রকৃবৎ দুর্শনীয় অর্থাৎ প্রধান ২ দেবগণ টাছার স্তব এবং আশ্চর্য্য পুষ্পার্ষ্টি মারা তাঁহাকে আছেন করিলেন। অপিচ লোকপালদিগের সহিত তিন লোক পরম স্বস্থুকা লাভ করিল, আর গাভী সকল স্ব ২ পয়োধারার এরাজুরুকে স্মার্ক করিয়া তুলিল। ২২। নানারসৌঘা: সরিতো রক্ষা আসন্ মধুত্রবাঃ। অক্উপচ্যোবধরো গিরব্রোহবিজ্ঞসুন্দীন্।
কৃষ্ণেহভিষক্ত এতানি সর্বাণি ক্রনন্দন। নির্বৈরাণ্যভবং স্তাত জুরাণ্যপি নিসর্গতঃ।
ইতি গোগোকুলপতিং গোবিন্দমভিষিচ্য সঃ। অসুজ্ঞাতো যর্যো শক্রো রতো দেবাদিভিদিবং ॥২০
॥ * ॥ ইতি আভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং দশমক্ষকে জীকৃষ্ণাভিষেকঃ সপ্তবিংশোধ্যায়ঃ ॥ * ॥ ২৭ ॥ * ॥

श्रीधवयामी।

নানারদোষা ক্লীরাদিবাহিত্র:অক্টণচ্যাঃ কর্ষণং বিনৈব পকা ওবধরো খ্রীকাদর আসন্। বছা। অক্টণচ্যা ওবধরো বেবু তে গিরর উন্মান্ত্রগতান্ মনীন্ উৎ উদগতান্ বহিঃ প্রকটান্ অবিদ্রন্ অবিভক্ষ: ॥ ২৩ ॥

॥ * ॥ ইতি দশমে সপ্তবিংশ:॥ *॥

देवक्षवरकावनी।

নানারদেত্যাদাবেবং ভেষং। পূর্কং বৃন্দাবনে বৃদ্দেশিষ্ট্যমাসীৎ তদপ্যধুনাধিকতরা তত্ত ভূতা তৈলোক্যমণি ব্যাপ্লোদিতি। অক্ষ্ট-পচ্যোবধয় ইতি মধ্যে অপূলুক্ ছান্দম: সন্ধিকা॥

নচ কেবলং গুণা এব সম্পন্না: স্বাভাবিকদোৰা অপি বিনষ্টা ইত্যাহ ক্লফ ইতি। এতানি প্ৰসিদ্ধান সন্থানি নিস্পৃত: জাতিসভাবেন জুরাণি পরস্পারং হিংসাপরাণ্যপি অহিনকুলাদীনি সর্বাণি সর্বাণি বানিকরাণি মিআণীবাভবন্। জারমানে জনার্দন ইতি বস্তুদানীমিতি জ্ঞেরং। বৃন্ধাবনে সর্বাদৈবেতি শেব:। হে কুরুনন্দন ইতি তত্ত তবাস্থ্যোদনেন হে তাত্তেতি প্রমশ্চার্ব্যেণ প্রেম-বৈবঞ্জেন বা পুন: পুন: সংখাধনং ॥

সঃ অপরাধ্যণি এজগবতা বীক্তভোপচারঃ গোগোকুলপতিবেন বত এব তং গোবিন্দমভিবিচ্যেতি তেন তক্ত নাতিশরঃ কিন্ত তেন কর্মণা লোকস্থেব বহঁতেব হিতং চকারেতি ভাবঃ। তক্ত ছিতমেব দর্শরিতি তক্তঃ শ্রীগোবিন্দেনাস্প্রভাতঃ সন্ পূর্বং তদপরাধিত্বাং প্রায়ন্ত্যান্তান্ধণি প্নর্দেবাদিভির্বতঃ। বীক্ততো ভূবা দিবং ববাবিতি লীলেরং স্থিতিঃ স্থানবেশাদি বৈশিষ্টোনেব আভ্যাৎ দ্রতো বা নিহু তা দৃষ্টবাৎ পশ্চাদেব ব্রজে কথিতেতি জ্বেরং। ইতি গোগোকুলপতিং গোবিন্দমভিবিচ্যেতি গোগোকুলয়ে ত্বদীশিতবারো নিজিশিভ্যেন তক্ত জ্ঞান এব স্থেচমংকারাৎ। পাদ্যোত্তর্বতে তু। গোপর্কাশ্চ গোপাশ্চ দৃষ্ট্য তত্র শতক্রত্বং। তেন সংপ্লিভান্তিব প্রহ্মতুলাং ব্যুরিতি শ্রীনন্দ্রশোদাদীনামণি ভ্রোগমনং বর্ণিতং। তকু বিবিক্ত উপসংগ্রেছিত বিরোধাৎ কলাব্ররে জ্বেরং॥ ২৩॥

n + n हेन्डि बैटिवक्षवरकावनार मनविश्वनार मश्रनिःनः # + i

ক্রমসন্দর্ভ:।

নির্কৈরাণীতি সর্বভূডান্যেব তদানীমিতি শেষ:॥ ২০॥

। 🛊 ॥ দৰমে শ্ৰীজীবগোহামিক্বতে ক্ৰমসন্বৰ্জে সপ্তবিংশঃ॥ 🗢 ॥

এ বিশ্বনাথচক্রবর্তী।

এতানি ভূতানীতি শেব: ॥ ২৩॥ ।

॥ • ইভি সারার্থদর্শিনায়ুং হর্বিণাং তক্তচেত্রসাং। দশমে সপ্তবিংশোহরং সঙ্গতঃ সভাঃ সভাঃ ॥ • ॥

ছে কুরুনন্দন! রুষ্ণ অভিষিক্ত হইলে পর, নদ নদী সকল ক্ষীরাদি বিবিধ রুসবাহিনী হইয়াছিল, বৃক্ষ সকলে মধুক্ষরণ করিতে আরম্ভ করে, ত্রীহি প্রভৃতি ওয়ধি সকল কর্ষণ ব্যতিরেকে পরিপক হইয়া উঠে। আর পর্বত সকল স্বং গর্ভিছিত মণিসমূহ বাহিরে প্রকৃতি করিয়া ধারণ করিয়াছিল। অধিক্স যে সকল প্রাণী সভাবতঃ জুর, তাহারা পরক্ষার ধেষভাব পরিত্যাস করিয়া সকলে নির্কৈত্ম হইয়াছিল। দেবরাজ এই প্রকারে গোও গোকুলপতি গোবিদ্ধকে অভিষিক্ত করিয়া দেবরুক্তে পরিকৃত্ত স্থর্গে গমন করিলেন ॥ ২০॥

॥ • ॥ वन्दि मेखिरम ॥ • ॥

শ্রীবাদরায়ণিরুবাচ ॥

একাদশ্যাং নিরাহারঃ সমভ্যর্ক্য জনার্দনং। স্নাভুং নন্দস্ত কালিন্দ্যাং দ্বাদশ্যাং জলমাবিশৎ। তং গৃহীস্থানয়স্ভূত্যো বরুণস্যান্তরোহন্তিকং। অবজ্ঞায়ান্তরীং বেলাং প্রবিষ্টমুদকং নিশি। চুকুগুস্তমপশ্যস্তঃ কৃষ্ণরামেতি গোপকাঃ॥ ১॥

ञीगतवामी।

অষ্টাবিংশে ততোনন্দানরনং বরুণালয়াঙু। বৈকুঠদর্শনাঞাথ গোপানামহবণাতে। গোবর্জনং সম্জ্তা বশে কভাছমরেশবং। নন্দানয়নতঃ ক্লেষা বরুণঞ্চ বশেহনয়ং॥ • ॥

কলামাত্রাগাং বাদশ্যাং পারণাদরাভিনিবেশেন আহ্বরীং বেলামবজ্ঞায় অকণোদরাং পূর্বনেব শাস্ত্রবলেন নিশি উদকং প্রবিষ্টং তদনভিজ্ঞো বরণদ্য ভৃত্যোহনয়দিতি। তথাচ শাহ্রং। কলার্দ্ধাং দুধ্ব নিশীপাদ্র্দ্ধমেব হি। আস্থ্যান্তাঃ ক্রিয়াঃ সর্কাঃ কর্ত্তব্যাঃ শস্তুশাসনাদিত্যাদি। বক্ষাতি চ বরুণঃ অজানতা মামকেনেতি ভগদ্ধমিলানতেত্যর্থঃ॥১॥

বৈক্ষবতোষণী।

প্রসাদান্ত চিরতিনেবাম্বর্ণয়ালো ঐবর্গমদানর্থতানের দর্শয়িজ্ঞতের বরণজ্ঞাপপ্রাধং বক্তুং তৎপ্রসদ্মারস্ততে একাদশ্রাবিত্যাদিনা মুদ্মিত্যভেন। একাদশ্রাং বুদ্ধা হ্রাসেন বা কিঞ্জিয়ার নিজ্ঞায়াং তঞ্জাং। বট্পার্রাবের তদ্যুতনকালং ব্যাপ্যেত্যর্থং
বাদশ্রাং পারণাহ নিজ্ঞাত্তে কিঞ্জিদ্বাদশ্রাদি প্রহরন্ধাবসর্ভদ্যতনকাল ইত্যর্থ:। কিঞ্চ। সম্গাভিত্যাহর্তনির্ধা প্রমণ্ডাগবতাগ্রাহ্মেন যথাবিধিসঞ্জাগরপ্প্রাবিশেবং রুদ্ধা ইত্যর্থ:। জনৈ উক্তৈর্দ্ধাতেহত্ত্পতারা নিত্যং ভক্তার্থং যাচ্যতে ইতি তথা তং। ইতি
পরমন্ধ্রতার্বস্থাপি তক্ত নিরাহারত্বন সমভ্যর্কনে হেছু:। জতএব কার্লিক্যাং ভগবস্থাতিবির্দ্ধন্যাং লল্মাবিশং তুশক্ষেনাজ্ঞানা
বিশং কিন্তু গৃহ এব সন্নাবিতি ব্যঞ্জিদ্বা তক্ত যমুনালানাগ্রহং বোধস্বতি ॥

শ্বস্থা ইতি জাতৈয়ৰ বৈষ্ণৰধৰ্মাজ্যমূকং। তথাস্থাং বেলারাং জনরক্ষণে ব্লিচন্ত তত্তৈৰ বৌগ্যস্থ দশিতং। বৰুণত ভূত্য ইতি ততাপি দোৰাপতিঃ। অবজ্ঞায় অনাদৃত্য।

চুকুত্রিভার্মকং গোপকা মহারাজ্ঞ তন্ত চতুর্দিগ্রক্কা জনাঃ॥১॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

একাদশ্যাং শ্বর্মাঝৈকাদশুগুণশক্ষিত বট্প্রহর তত্ত্তর তদদাতন কালং ব্যাপ্যেত্যর্থ:। ছাদশ্যাং পারণাহনিজ্ঞান্ত বিধিদ্ধান্থাদি প্রহরম্বরারক তদদাতন কাল ইতার্থ:। তু শব্দেনান্যো নাবিশদিতি ব্যস্তা তাদৃশতগ্রক্ষ্মত্ত বোধ্যতি। অবজ্ঞার অনাদৃত্য তৎক্রোশনমুশশ্রুত্য পিতর্ক্ষ বরণাস্ত্তং বিজ্ঞায়েতি শেবঃ ॥ ১ ॥ ২ ॥ ৩ ॥

श्रीविधनाषहत्ववर्षी।

অষ্টাবিংশেছভবরন্দানরণং বরণস্বতিঃ। গোগানাং বিজয়েবিজ্ঞাৰ্জবৈক্ঠদর্শনং। ইন্তস্যাগত তৎকান্তিম্কৃ। সম্তিমাগতে। বরণস্যাপি তে বকুমাহ লীলান্তরং মুনিঃ ॥ • ॥

क्रमानिभनिতाक्रत्यापद्यापि পূর্বং ক্রমানাতাবশিষ্টায়াং ছাদশ্যাং পারণাপ্রাপ্তার্থং শাল্লীক্রাবলেনৈবেতি জ্ঞেয়ং। তথাচ শাল্লং। ক্রসান্ধাং ছাদশীং দৃষ্ট্র নিশীপাদৃর্দ্ধমেন হি। আনধ্যায়াং ক্রিয়াং স্বর্ধাং ক্তব্যাং শক্ত্শাসনাদিতি য়

বঙ্গণা ভ্তােহিস্বঃ। বঞ্গাাভিক্মনরং তত্ত্ব হেতুং আস্ত্রীং বেলামবজ্ঞার উদক্ষ প্রবিটমিতাজানেনৈব তত্মিন্ দোহ-ক্রনং। শ্রীনক্ষেন ভুশাল্রাজ্ঞাবলেনৈবাদকে প্রবিষ্টবাং। অতএবাগ্রে বক্ষাতে অজ্ঞানতা মামকেন মুঢ়েনেতি ॥

পোপকা: স্থানার্থং রাত্রো গভন্য ভদ্য রক্ষকা: ॥ ১ ॥

ष्यक्वोतिः भाषात्रा वक्रगालम् रहेरङ नम्मानम्न अवः त्यां प्रमित्यत्र विक्षेप्रमर्गन ॥ ० ॥

শুক্ক বাদনীতে স্নান নিমিন্ত যমুনার জলে প্রবিষ্ট ইইলেন। আহ্নরীবেলা না মানিয়া শাস্ত্রবলে অরু-পূর্কক বাদনীতে স্নান নিমিন্ত যমুনার জলে প্রবিষ্ট ইইলেন। আহ্নরীবেলা না মানিয়া শাস্ত্রবলে অরু-লোদম্বের পূর্কেই রাজিতে জল মধ্যে প্রবেশ করেন, অতএব বরুণের একজন ভূত্য তাঁহাকে ধরিয়া আপনার প্রভূপ সনিধানে লইয়া গেল। নন্দকে না দেখিয়া গোপসকল অতিশয় ব্যাক্ল হইলেন এবং হে রাম! হে কুফা! বলিয়া চীৎকার করিতে আরম্ভ করিলেন॥ ১॥ ভ স্থাংস্ত জ্পঞ্চত্য পিতরং বরুণাহতং। তদন্তিকং গতে বাজান্ স্থানামভয় দোবিছু: ॥ ২ ॥
প্রাপ্তং বীক্ষ্য হ্যীকেশং লোকপালঃ সপর্যয়া। মহত্যা পূজ্যিছাত্ তদ্দর্শনমহোৎসবঃ॥ ৩ ॥
শ্রীবরুণ উবাচ॥

অদ্য মে নিভূতো দেহো অদ্যার্থোহ্ধিগতঃ প্রভো। ছৎপাদভাজী ভগবন্নবাপুঃ পারমধ্বনঃ ॥৪

श्रीधत्रचामी।

স্থানাং ভগবদ্ধপরারণানাং অভরদঃ মাটেডটেত্যভরং দদৎ ॥ ২ ॥ পপর্যারা অহ'ণেন ॥ ৩ ॥

জ্বদ্য ইদানীং মে মরা দেহো নিভ্ত: ধৃত: যদা ভদ্দনিং জাতং তদৈব দেহসাফলাং প্রাপ্তমিভ্যর্থ:। যদা। নিভ্ত: পূর্ণমনোরথ-ইভ্যর্থ:। কিঞা। জাদ্যবার্থোহধিগত: সর্প্রক্লাকরণতিনাপি ইতঃপূর্বং মৈব্যিধোহর্থ: প্রাপ্ত ইত্যর্থ:। কিঞ্চ সংসারোহপি নির্ভ

देवक्षवरकावनी ।

তৎক্রোশনং দ্রগোহণি উপ সমীপ এব শ্রন্থা পিতরং বরুণাত্তক জ্ঞান্থেতি শেষং তদন্তিকং গতঃ তত্ত কৈম্ত্যেন হেড্: বিভ্র্যা-পক ইতি স্থানাং গোণজাতিমাত্রাণামভয়প্রদঃ কিং পুনঃ পিত্রিতার্থঃ ॥ ২ ॥

ষ্বীকেশং সর্বেজিরপ্রবর্ত্তকং ইতীজিরবৃত্তাগোচরমপি প্রাপ্তং বীক্ষা নিকটমাগতং জ্ঞাব্বেতার্থঃ। ততশ্লোপত্রজ্ঞাতি জ্ঞেরং লোক-পাল ইতি মহাসপর্যারা সামর্থাং দ্যোতিতং। ততত্তলৈব লোকপালত্বং সফলং বৃত্তং ইতি চ। তদ্দর্শনেন মহামুৎসব জানলো বত্তেতি তাল্শ পূজনে হেতুং এতহুক্তং ভবতি পূর্বং শ্রীভগ্বতো হর্জনাম্চরে তিমিন্ ক্রোধ এব জাতঃ সঙ্গতাত্ তং সভয়তারামপি নাতিবার্প্রং সদগুবরভিত্যোপত্রক্তং চ দৃষ্ট্য নিশ্তিত্বাভীইপদ্ধিত্র। তত্ত তল্প ক্মাব্লিভদৃষ্টির্জাতা। তত্ত তল্পন্মহোৎসবো জাতঃ ভত্ত অভিস্কাদিকং তেনার্দ্ধিতি॥ ৩॥

প্রতো হে অগদীশর ইতি পরমদোর্শভাদিকমুক্ত:। অবাপু: অবহেলনেন লেভিরে। অন্তব্যৈ তত্ত্র পূর্ণমনোরথ ইতি পক্ষে।
মে মমেতি পূর্ণো মনোরথো যত্ত্তে চ ব্যাখ্যের:। বলাপি পূর্বজ্ঞ হেতু: বাক্যমুত্তরার্দ্ধ: তথাপ্যস্থাপি লাভাদিত্যভিপ্রায়েশাহ
কিঞ্চ। সংসারোহপীতি। বরা। নিতরা: ভৃত: মুহর্দেইধারণক্ত ফলমদৈত্র সমায়ান্ধবিত্যর্থ:। কুত: অর্থ: পরমবিচারেণার্থো নাম বঃ
সোহদৈত্ব মরা প্রাপ্ত: ত্বংপাদভাজত্বতরণক্ষন: প্রাপ্তবন্ধ এবাধ্বন: প্রাণ্য পরস্পররা অস্তং অব সমস্তালাপুরিতি। তদৈব ত্বরং ভগ-

ক্রমসন্দর্ভ:।

নিতরাং ভূতঃ অত্তৈব সম্যক্ সাফল্যাৎ কুতঃ অর্থঃ পরমবিচারেণার্থো নাম যং সোহদৈয়ব মরা প্রাপ্তঃ তত্ত্ব হৈতুঃ। তৎপাদভাজ তচ্চরণক্মলং প্রাপ্তবন্তঃ এবাধ্বনঃ পারং প্রাপ্য পরম্পররা অন্তঃ অব সমস্তাৎ আপুরিতি। তবৈব স্বরং ভগবন্ধাদিতি ভাবঃ॥৪॥৫॥

🛢 বিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

তৎক্রোশনং উপশ্রত্য তদানীং দূরতঃ পূল্পশ্যারাং শয়ানোহপি উপু নিকট এব শ্রাছেতি তস্য সর্বাদেশবর্তিছাৎ পিতরং বরুণাত্তং জাছেতি শেবং। তদানীযেব রক্ষকগোপানাং নিকটমেত্য ক্ মে তাতো নিমমজ্জেতি দৃষ্ট্য তত্ত্বৈব তটাৎ সক্ষশং নিমজ্জা তদজিকং বরুণাত্তিকং গতং। স্থানামভয়দং। তত্তং সকাশারন্দমানীয় জ্ঞাতীনামভয়ং দাস্যরিত্যর্থং ॥২॥৩॥

অন্য নিতরাং ভৃতো ধৃতঃ এতাবদ্দিনপর্যন্তং সহস্রশো দেহা বুথৈব ধৃতা ওদ্দর্শনলাভাভাবাদিতি ভাবঃ। অর্থোহপাইদাবাধিগতঃ। সর্ব্বিত্রাকরপতিনাপি ইতঃপুর্বং নৈব্দিংগাহর্থং প্রাপ্ত, ইতি ভাবঃ। বংপাদৌ তদ্ধন্ত এবাধ্বনঃ সংসারস্য পারমবাপুঃ। অহতেতা-

পিতাকে বরুণ হরণ করিয়া লইয়া গিয়াছেন ইহা শুনিয়া ভগবান্ ভগবদ্ধ পরায়ণ জনগনের অভয় দান করত অর্থাৎ ভয় করিও না, ভয় করিও না এই বাক্য বারস্থার উচ্চারণ করিতে ২ তৎক্ষণাৎ বরুণ সিল্লধানে গমন করিলেন ॥ ২॥

লোকপাল বরুণ ঐ কৃষ্ণকে আপনার আলয়ে উপনীত দেখিয়া মছোৎসবপূর্বক মহতী সপর্যা।
খারা পূজা করিয়া নিম্নলিখিত বচন বলিতে লাগিলেন, ॥ ৩ ॥

.বরুণ কহিলেন, প্রভো। অদ্য আমার দেহধারণ সফল হইল, অদ্যই আমি প্রম পদার্থ প্রাপ্ত হইলাম,ইহার অগ্রে সর্বর্ত্তাকরের অধিপতি হুইয়াও এব্যিধ অর্থ প্রাপ্ত হুই নাই। ভগবন্। যে সকল নমস্তভ্যং ভগৰতে ব্ৰহ্মণে পরমান্ধনে। ন যত্র জায়তে মায়া লোকস্প্তিবিকল্পনা ॥ ৫ ॥ অজানতা মামকেন মৃঢ়েনাকাগ্যবেদিনা। আনীতোহয়ং তব পিতা তৎপ্রভো ক্ষস্তমর্হ সি॥ ৬॥

श्रिश्त्रवामी ।

ইত্যাপদ্বেনাহ স্বৎপাদভাজ ইতি অধ্বন: পারং মোকং ॥ ৪ ॥

ভগৰতে নিরতিশহৈশব্যার অন্ধণে পূর্বার পরমান্ধনে বর্জজীবনিয়ন্তে তত্ত্ব হৈতেতি লোকস্টাং বিকরয়তি বা মারা না ন বত্ত আবিদ্যমানেব তিঠতীতার্থঃ ॥ ৫॥

অজানতা মন্ত্রেন স্বংপিত্রাহরণং ষংক্ষতং তদিতি ॥ ৬॥

देवकवरकावनी ।

ৰস্বাদিতি ভাব:॥ ৪॥

অতক্ষাহাত্মঃ বর্ণয়ন্ ভক্তা প্রণমতি নম ইতি ভগবতে পূর্ণইড়গুণৈখর্যেণ খলোকানৌ বিরাশমানার প্রমাত্মনে সঁকান্ধর্যামিরপার ব্রহণে ক্চিদ্ধিকারিণি অপ্রকাশিততভক্তেরে সতাং জানমনন্ধমিতোবং কেবলং প্রকাশমানার। নচ মায়য় তত্তজ্পদ্মিতাহি ন ব্রেতি। তত্ত হেতুমাই লোকেতি। শীবানামেবং স্টিং বিবিধতয়া কর্মিতুং শক্ষোতি ন চেখরে স্বিপ্রভবতীতার্থঃ। এবকৈখ্যাত্মপ গুণাদিতেদ্বিক্রিকা স্বর্গশক্তিরন্যান্তি ইতি দর্শিতং। অতএব তাদৃশ্য তব নিজগৃহাত্যন্তর এব সন্পন্ননান্য প্রমক্তার্থেহিত্মীতি তাৎপর্যঃ॥ ৫ ॥

অতো মহাপরাধোহিপি মে স্বরা করং যুদ্ধাত এবেত্যাই অজানতেতি যতো মুদেন মুর্থেন নমু কথং তহি রাজিমানদোরং আছা মংশিতানীতত্ত্বাই অকার্য্য কর্ত্ মযোগামের বেদিকুং শীলমদ্যেতি তথা তেন। যহা স্বংশিতেত্যজানতা। কিঞ্চ। মুদ্দন তগবহর্ষ-জানহীনেন চেত্যার্থ:। ন কেবলং মুদ্দেন পরমহর্জ্ হিনা চেত্যাই অকার্য্যেতি অকার্য্য অসংকার্যাং। অসমিতি স্বগৃহে রক্ষিতমঞ্জীনপ্রান্যা নিকটনের তং নির্দ্ধিতি স্বগৃহ এব রক্ষিত্তরে হেডুং তব পিতেতি। যহকং হিতীরে। নলঞ্চ মোক্ষাতি ভয়াং বরুণ্য পাশাদিতি। অত চ পাশাদ্বত্তরং তত্মাহিমাক্ষাতি নতু পাশাদিতি পাশস্বহো নিরত্তঃ। তদানস্থায়া। নমু মহাপরাধোহয়ং ক্ষরবাে ন স্যাত্তরাহ প্রতো হে পর্যস্মর্থ হারা সোহিশি ক্ষরং শক্ষতে ইতি ভাবঃ। যহা। হে অসংস্থামিন্ অতো দাসানামস্থাকং অপরাধঃ স্বর্থ এব হুরা ক্ষর্ভ যুক্তাত এবেতি ভাবঃ। তত্তবানু ক্ষর মহ তি ভিচৎ পাঠঃ॥ ৬॥

ক্রমসন্দর্ভ:

অষ্মাদ্রণীয়ত্ত্বন নিজাগ্রত এব বক্ষ্মাণ:। নল্প মোক্ষতি ভয়াং বরুণ্স্য পাশাদিতি পাশাং ভরং যত্মাং নতু পাশাদিত্য্ব:॥৬॥१॥

🕏 বিশ্বনাথচক্ৰ বৰ্তী।

দৃশং দর্শনমপি প্রাপ্ত ইত্যাহো মন্তাগ্যস্য পরাকাঠেতি ভাব: ॥ । ॥ ॥

ভক্তা জ্ঞানেন যোগোন চ প্ৰেবোপাস্য ইত্যাহ নম ইতি। মায়াশাবল্যাদেব তব তগৰ্বাদীত্যাচক্ষাণা ভ্ৰান্তা এবৈত্যাহ ন ষ্ত্ৰেতি। পোকস্টেবিবিধক্ষনং যতঃ সা॥ ৫ ॥

কিং ভো মামেবং গুবন্ লক্ষ্যে সভাং মহাপরাধো মে জাত এবেভাাই জ্ঞানতা হাদিনা আর্থে অরুণোদরাং পূর্ক্মণি জ্ঞানে প্রথমিতি ভক্তিশাল্লাভিজ্ঞেন। মামকেনেতি ভ্তাপরাধেন মমৈবাপরাধ ইতি ভাবঃ। জতএব মৃদ্নে জ্ঞাব্যদিনা মম ভ্তোহিশি মংকার্গং ন জানাতীভার্থঃ। তব পিতা জানীতঃ জর্মিতি রন্ধচ্ছ্রিকা মধ্যাসীনং খেন পূজিতং খেইদেবল্পরণ-রভং শ্রীনক্ষং বাঞ্জানা দর্শরতি। কর্মহাসীতি তব ক্মাসিক্ষাং মমন্বণরাধ্যিক্ষাং দওরিবাসি চেং বংগ্রং দওরেতি ভাবঃ ॥ ৬॥
ব্যক্তি জ্ঞাপনকার পাদপল্ল সেবা করে তাহাদের মোক্ষ প্রাপ্তি হয়, আমিও চরণসেবক, আমার সংসার নির্ভি ইইল ॥ ৪ ॥

প্রভো ! আপনি নিরতিশর ঐশর্য্যরূপী পূর্ণস্বরূপ এবং দর্ব্ব জীবের নিরস্তা, কারণ যে মায়া লোকস্তি বিকল্লিত করে তাহাও আপনাকে আশ্রের করে না অতএব আপনাকে নমস্কার করি॥ ৫॥ ভগবন্ ! আমার একটা মৃঢ় ভ্ত্য কার্য্যাকার্য্য কিছু বোঝে না, সে যে আপনকার এই পিতাকে

स्त्रण कतिया चानियारह, चालनि **अक्छ चलत्राथ क**मा कतिर्छ स्थाना हरेयन ॥ ७ ॥

গৌবিন্দ নীয়তামেষ পিতা তে পিতৃবৎসলঃ॥

প্রীশুক উবাচ ॥

এবং প্রসাদিতঃ ক্লফো ভগবানখিলেখরঃ। আদায়াগাৎ স্বপিতরং বন্ধুনাঞ্চাবহন্মুদং॥ ৭॥ নন্দস্ত উদ্রিয়ং দৃষ্ট্বা লোকপালমহোদয়ং। কুম্ফে চ সন্নতিং তেষাং জ্ঞাতিভ্যো বিস্মিতোহত্ত্রবীৎ ॥৮ তে চৌৎস্ক্যধিয়ো রাজন্ মন্বা গোপাস্তমীখরং। অপি নঃ স্বগতিং সূক্ষামুপাধাস্যদধীখরঃ ।৯॥

वी धतवाभी।

নলং বিমুচ্য সমর্পন্নতি গোবিলেতি॥ १॥

অতীজ্রিষং অদৃষ্টপূর্বাং লোকপাল্য্য মহোদয়ং ঐথর্যাং ॥ ৮ ॥

উৎস্কাৰ্ক। ধীৰ্যেৰাং তে অপি কিং স্বগতিং স্বস্থানং স্ক্ৰাং ঐক্ষাধ্যাং উপাধাস্যৎ উপধাস্যতি নোহস্থান্ প্ৰাপন্নিষ্যতীতি সঙ্কিত-বস্ত ইত্যুৰ্থ: ॥ ৯ ॥

देवकवरकामगी।

ততক তদৈব গৃহমানীয় তং দর্শদাহ গোবিক্ষেতার্ককেন। তত্র গোবিক্ষেতি মহাপরাধীনাপীক্রেণ রুতস্য গোবিক্ষতরাভিষেকস্য স্বীকারেণ পরমকারণাদিকং স্টতং কে পিতৃবৎসলেতি পিতাপুত্রী তোষয়তি। তথা বর্ষেতজ্ঞানীয় এব স্বগৃহে পরমীদৃশভাগধেয়াকাজ্ঞানৈব তাবস্তং কণং রক্ষিত আসীদিতি চ ব্যঞ্জরতি। এবমুক্তপ্রকারেণ ব্যবহারেণ বচনেন ব্যবসায়েন চ। নিষ্ততাবন্মহাপরাধে তাবনাত্রেণৈব কথং প্রসমোহভূত্ততাহ ভগবান্ সর্ক্জঃ তত্তত্ত্বেদোষো নান্তি ইতি বিজ্ঞানাদেব ইতি ভাব:। ভগবত্বে হেতুং অধিলানামীশবঃ প্রবর্তক:। ঈশবেশ্বর ইতি গাঠঃ ক্তিৎ॥ ৭॥

এবং যদেগাবিলদ্ধং দর্শিতং তেস্যৈর মহিমদর্শনায় তদাম্পদস্য মহিমানং দর্শয়তি নল্পন্বিতাদিনা। তুশলো ভিন্নক্রমে। তেষাং বরুণস্য তল্লোক্রাসিনাঞ্চ। বিশ্বিত ইতি কেবল মধুরনরলীলাবেশাদিতি সিদ্ধান্তিতমেব। শ্রীকৃষ্ণপ্রেমিব হি সর্কোংকর্ষ্থেত্ব ন সম্পদাদ্য ইতি। তদপেকা চেত্তেহপি হি দর্শন্তিয়ন্ত ইতি ভাবং॥৮॥

তে তাদৃশ তরিতাপরিকরা অপি প্রেমবিশেষেণ গোপা: কেবল তথাস্কবগোপডাভিমানিন: অত ঔৎস্কাধিয়: লোকপালমাত্রস্য তাদৃশং লোকাদিবৈভবং অস্ত বাস্থানীয় রূপস্যাপ্যধীষ্বস্য কীদৃশং স্যাৎ ইত্যুৎকণ্ঠিতধিয়: অতঃ স্বগতিশব্দেনাত্র প্রস্থানমিত্যের

ক্রমসকর্ড:।

বিশ্বিত ইতি কেবলমধুরনরলীলাবেশাদিতি সিদ্ধান্তিতং নন্দল্বিত্যাদিনা ॥ ৮ ॥ ৯ ॥ ১ ० ॥

ঐবিশনাথচক্রবন্তী।

আগাদিতি স্ব্যোদয়াৎ পূর্ব্নেবেতি জ্ঞেয়ং । १॥

অতীক্রিরং অতিচমৎকার বৃত্তি ইক্রিরাণি ষততাং মহোদরং মহৈশ্ব্যাং তেষাং লোকপালানাং অত্রবীদিতি ছাদশীমধ্য এব পারণং কুষা আন্থান্যাং উপবেশ্যের ইতি জ্ঞেরং ৮৮॥

ঔৎস্কাযুক্তা ধীর্ষেষাং তে স্থাতিং স্বোপাসকানাং গতিং ক্সাং মারাভীতাং ব্রহ্মানস্বরূপাং বৈকুঠপ্রাপ্তিরূপাঞ্চ। উপাধাস্যৎ উপ-ধাস্যতি নোপধাস্যতি নোহম্মান্ প্রাপয়িষ্যতে ভো বন্ধরাজ ছয়ৈব পূর্বং পর্গোক্ত্যা অক্স নারায়ণসাম্যমূক্তং নতু নারায়ণহং। সম্প্রকি তু বরণপ্ততাঃ সাক্ষাদৃষ্টয়া বদি নারায়ণহমেব শৈকিরিয়াসি তদা বন্ধুনাম্মাকং সাংসারিকানামপ্যবক্তমেব মনোর্থময়ং প্রয়িষ্যভ্যেব

হে গোবিন্দ! হে পিতৃবৎসল! আপনকার এই পিতাকে লইরা যাউন। শুকদেব কহিলেন, অথি-লেখর ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ এই প্রকারে প্রসাদিত হইয়া আপনার পিতাকে লইয়া গেলেন এবং বন্ধুদিগের আফলাদ উৎপাদন করিলেন॥ ৭॥

লোকপাল বরুণের অদৃষ্ট পূর্বে ঐশ্বর্য এবং প্রীকৃষ্ণের প্রতি ভাহাদিগের সম্যক্ নমক্রিয়া অবলো-কন.করিয়া নন্দ বিশ্বিত হইয়া জ্ঞাতিগণ সন্নিধানে আসিয়া ঐ সকল বৃত্তান্ত বলিলেন ॥ ৮॥ হে রাজন্! সেই সকল গোপও প্রীকৃষ্ণকে ঈশ্বর মানিয়া উৎস্কৃচিন্তে চিন্তা করিতে লাগিলেন ইতি স্বানাং স ভগবান্ বিজ্ঞায়াখিলদৃক্ স্বয়ং। সকলসিদ্ধায়ে তেষাং কুলাইছতদ্চিত্তরং ॥ ১০ ॥ জনো বৈ লোক এতিম্মিবিদ্যাকামকর্মভিঃ। উচ্চাবচাল্ল গতিয়ু ন বেদ স্বাং গতিং অমন্॥ ১১ ॥

শীধরস্বামী

ইত্যেবং ভূতং বানাং বেষাং সংকল্প: অধিলদৃক্ সর্বজ্ঞ:,অন্নমেব বিজ্ঞান তেষাং সকলসিক্তর বক্ষ্যমাণমিদমচিভারং ॥ ১০ ॥ অবিদ্যা দেহাদ্যহংবৃদ্ধি: ততঃ কাম: ততঃ কর্ম তৈঃ উচ্চাবচাত্ম অরতির্বাগাদিবু ভ্রমন্ স্বীরাং গতিং ন বেদ ॥ ১১ ॥

देवकवरकावनी ।

ব্ৰহ্মাখা। ক্ল্মামিত্যনেন চ ন সা প্ৰোচাতে। স্বগতিমিতালৈ বিশেষণদ্ধেন প্ৰতীতে: শলবুদ্ধিকৰ্মণাং বিরম্য ব্যাপারাভাব ইতি ন্যায়বিরোধাদলৈত্ব পুনরার্ভিশ্চ ন স্যাদিতি স্মাং ছক্তেরাং তদেবনেবাং তাদৃশস্বগতিদিদৃক্ষা চ তৎপ্রেইয়ব। অধীখরতাজ্ঞানে হপি স্বাভাবিকপুত্রতাদিবিজ্ঞানামূপ্যদিং ॥ ১॥

স্থানাং জাতীনাং। স্বমজাতিধনাথ্যায়ামিতি শক্ষতে:। ইতি এক্কড তথৈব তৎপ্রেমময়াভিমানং দর্শরতি স একজনাধিলমনো-রপপরিপ্রণে ব্যগ্রঃ। স্বমতি তৈর্শজ্ঞাদিনা সাকাদবিজ্ঞাপিত্যপি স্বয়মেব বিজ্ঞায়॥ ১০॥

ৰূপ ইত্যত্ৰ বাং বীরাং গতিং ব্যৱপমিত্যুচাতে চেৎ পূর্বোক্তবগতিমিত্যক্রাম্বাদো ন তাৎ ব্যৱপং জ্ঞানমিতি পক্ষেচ ব্যশবদাত্ৰ নাঝোচাতে তত্ৰ তত্ত্ব নপুংসক্ষাৎ গতিশব্দেন জ্ঞানং নোচাতে বেদেতানেন পৌনক্ষজ্যাৎ। তথাচক্ষে হি বং ন বেদেডোবাচক্ষ্যত সংক্রসিদ্ধরে তেথামিত্যুক্তাচ্চ ন তদর্থতা ঘটতে। নক্ষতীব্রিরং দৃষ্ট্ব ইত্যত্ত হি তেথাং লোকপালত লোকাদিমহোদয়স্য তথাপি ক্লক্ষে সমতেশ্চ প্রবণেন তল্লোকাদিমহোদরদর্শনক্ত বিবক্ষিত্যাৎ। বৃগ্তিং ক্ষাং ইত্যত্তচ হলোঃ সামানাধিকরণামেবারগমাতে।

ক্ৰসন্ধৰ্ভ:।

ৰৰা জনো এজবাসী মদীরত্বজনোহরং। এতত্মিন্ সম্প্রতি ত্মাবতারাদীক্কতে লোকে প্রাণঞ্চিকে। অবিদ্যা মলীলাবেশেনান্যানন্থ-সন্ধানং। কাম: মহিবরকবিচিঅমনোরথ: কর্ম দদীরামূকুলা ক্রিয়া। নাবিন্দন্ ভববেদনাং। বদ্ধামার্থস্থৎপ্রিয়াজ্বেত্যাদিদর্শনাৎ তৈক্ষচাবচাস্ত্র নানাবিধাস্থ গতিষু প্রেমজবেষু ত্মাং গতিং অনাদিসিদ্ধাং পরমধ্যোলোকাদিবৈভবন্ধণাং ক্রমন্ বিত্মরন্ তামেব ত্মগতিং

থ্ৰীবিশ্বনাধচক্ষবর্তা।

যতকৰ পূত্ৰ এব মম ত্ৰাতৃপুত্ৰ:। অত ভগিনীপুত্ৰোহ্স্য দৌহিতঃ প্ৰমেশবোহ্যমন্ত্ৰিছেত বহং বিজ্ঞান এবায়মপ্যশাৰাসক্ষতি ভঙো গোপা: প্ৰমেশবাদশাৎ অঅবাজনীবং যথেষ্টং গৃত্তীতেতৃত্তে কেচিদাহৰ হং মুকা এব বৃত্বাম ইভান্যে বন্ধং বৈক্ঠবাদিন এব বৃত্বামেতি পৃথক্ পৃথক্ বিবিধমতয়ো বিবিধসকল্পবন্ধো বভূব্ ন তৃ যুবাং ন নং হতে সাক্ষাৎ প্ৰধানপুক্ষেশবাবিভি ভত্তে গতোহশালগদা পদা-রবিশ্বমিতি সংখতি মভা প্রসভং যত্তক্ষিত্যাছাক্তিমভো বহুদেবার্জ্নাদল ইব ঐশব্যজ্ঞানোপরাগাৎ স্বাহন্ধশৈধিলাবজ্ঞা বভূব্-রিভার্থ: ॥ ৯ ॥

ইত্যেবভ্তং বানাং ভাতীনাং সভনং বিভাগ বন্ধ অথিকং ব্যান্ত্তবং পুথং বৈতৃষ্ঠবাসপথং ব্ৰজ্মিপ্ৰেমপ্ৰথ পণাতি জানা-তীতাথিলদৃক্। প্ৰপানিকরপ্ৰেমতারতম্যেন তংসানিধ্য ঐপব্যাবরণতারতম্যবন্ধেংলি তুলানীং লীলাশজ্বিপ্ৰেমণৰশাদের সম্পূৰ্ব-সর্প্ৰভাগনাং। গোপানাং তেবাভ তংপ্রেমমাধুর্য্যক্ষিকরালি ব্রক্ত্রপ্র্বেশিনিটানীকৃত্যেহলি তেবাং নরলীল্যেন মুখানাং সঞ্জাসিদ্ধরে তংসভানিতঃ ব্রক্ত্রপ্রথ বিকৃষ্ঠিপ্রথক ভানকুভাব্যিব্যাধিক্ষিতিশ্বং ॥ > ॥

শ্বমঃ প্রস্কৃত্যারৎপিত্রাদি ব্রজনাগী এত ছিন্ ভূলে তিক জনিলা আশ্বরপ্রজানং ভতঃ ক্ষীনততঃ কর্ম তত উজানচাল গতির বর-গারিদেবলাকগতর্বেশ্বর্মারীর ভূলে কিগতমহ্বাতিব্যগানিহঃখানৈশ্ব্যারীর চ চ্টাত্র প্রমন্ নরলীলভাবের ছেবাং সাংসারিকত্ বুজা অনং প্রাপ্ত্রন্ খাং গতিং সর্কৈরপি ছর্লভাং বর্তমানাং খণদনীং ন বেদ। বদরং মৎপিতা বরুপলোকং গভত্তভাঃ মারিকীবের সম্পাধং দৃষ্টা নিশিশনৈক্ষ্ঠসার্মণি বুন্দাননং তত্মাদিপি ন্নেং মন্তে। যথা মুক্তা ক্ষিত্র ভালাকার আকারতেজঃসোটবন্ট্যা স্কচমংকারো বাভবানব্যস্কাং ততো ন্নোং বেভি। অধৈব ব্রশানিহ্র ভচরপ্রেণ্নপাাদ্ধনো ব্রাক্ষাক্ষণারণি নিক্টানের সম্ভেত।

गान् व्यक्त कामानिगटक उत्तावा जीत मृक्त कात जाश करारेटवर ॥ ৯ ॥

সর্বজ্ঞ ভর্মান্ আতিদিগের সংকল নিজির নিজিত কুপাবশভঃ চিন্তা করিতে লাগ্নিদেন । ১০ ॥ े ইহ লোকে জীব সকল অবিদ্যা (বেহাবিতে অহং বৃদ্ধি) এবং কার কর্ম দারা দেব ও তির্যাপাদি

ইর্জি সংচিন্ত্য ভগবান্ মহাকারুণিকো বিভূ:। দর্শয়াশাস স্বং লোকং গোপানাং ভ্রমসঃ পরং॥১২

সং বন্ধবরূপং লোকঞ্চ বৈকুষ্ঠাধ্যং তমস: প্রস্তুতেঃ পরং । ১২ ।

বৈক্ষবতোষণী ৷

হক্ষাং হজে রাং। তত্মাজ্বনশবেনাপি ন প্রাক্তলন উচ্যতে। তেবাং সংসার এব গতি ন ত্রোকাদিরিতি। যদি চ স এবােচ্ছে তির্ সর্বসাপি তত্ত তথা ক্লপাপ্রাপ্তিপ্রসন্ধান আবে৷ কিন্তু তজ্জ্বনে তদীয়ত্মকন এব উচ্যতে। তর্বি সর্বস্যাপি তস্য তথা ক্লপাপ্রাপ্তিপ্রসন্ধান সাং সাবােলাক্যসার্গি ত্যাদি পদ্যে জনা ইচিবং। জত্র তু প্রস্তাববলাং ব্রজবাসিলন এবােচ্যতে অন্ত হি তদীয়পরমত্মনত্মং ত্বর-মেব প্রি ভগবতা বিভাবিতঃ। তত্মাত্মজ্বনং গােষ্ঠং মরাথং মংপরিপ্রহং। গােপায়ে ত্বাত্মবােগেন সােহরং মে ব্রজ আহিত ইতি। উক্তে চ তদীয়ত্মনে তথ্য অবিদ্যাদিময়ােজাবচগতেঃ সিদ্ধান্তাবিদ্যাদি তথ্য তত্মনে বার্থ:। জনাে ব্রজবাসিলকণাে মদীয়ত্মজনসমূহােহয়মবিদ্যাদিতি হৈ কুভি বা উচ্চাবচা গতরাে দেবতিব্যগাদয়তাত্মভিব্যক্তবের বাং গতিং ক্রমন্ তরির্বিশেষ তরা জানন্ তামেব ত্বাং গতিং ন বেদ ন জানাভাহে। কটমিতি। যােধ্রাবিদেশন জানাংশাবরণাদিতি ভাব:। যহা। জনাে ব্রজবাসী মদীয়ত্মজনাহয়ং এতিমিন্ স্ত্রাত্ম বাবাতারাক্ষীকতে লােকে প্রাণ্ডিককৈ অবিদ্যামন্ত্রীলাবেশাল্যানহাক্ষানং। কাম মহিষ্যবিচিত্রমনােরথ:। কর্ম মদীয়াত্ম ক্ল্যময় ক্রিয়া নাবিন্দন্ ভববেদনাং যদ্ধার্থ হিছদিত্যাদি দর্শনাং। তৈরু জাবেচাহ্ম নানাবিধাহ্ম গতির্ প্রেমজবেষ্ ত্বাং গতিং আনািদিনিকাং প্রমণােলােকাদিবৈভ্ররণাং ক্রমন্ বিস্করন্ তানেব ত্বাং গতিং ন বেদ ন জানাতীভার্থ:। অবিদ্যাদিশকনােগাদানঞ্চ কারণ্যক্রতাহ্লাপেনাধিকেপাদেব # >> ॥

গোপানাং সম্বন্ধি স্বং লোকং শ্রীগোলোকমিত্যর্থ:। তত্ত প্রকৃতিবিকারেছভিব্যক্তত্মপি নিষেধতি তমসং পরমিতি। কাহং তম-

ক্রমসন্দর্ভ:।

ন বেদ ন জানাতীত্যর্থ:। অত্যেষ্ট্রং বিবেচনীয়ং। অত্য স্বশক্ষেন স্বরূপং নোচ্যতে। তত্ত তস্য মপুংসক্তাৎ গতিশব্দেন চ জানং নোচ্যতে বদেত্যনেন পৌনরুক্ত্যাৎ তথাচকত্বে হি স্থং ন বেদেত্যেব বক্ষাতে। সঙ্করসিদ্ধরে তেথামিত্যুক্তথান্ত ন তদর্থতা ঘটতে। নদম্বতীন্দ্রিয়ং দৃষ্ট্রেত্যত্ত হি তেথাং লোকপালস্য লোকপালাদিমহোদয়স্য তথাপি ক্লক্ষে সন্নতেশ্চ শ্রবণেন তল্লোকাদিমহোদয়দর্শ-

ত্ৰীবিশনাপচক্ৰবন্তী।

তথৈব নিতামাশাদ্যমান মহামাধুর্যায়বিষয়কপুঞাদিভাবময় প্রেমবতোহিণি সুক্তিবৈকুর্গলোকাব্ধিকে। নুমনাতে তৌ ধলু মদ্ধীনাবেৰ নত্ তয়োরহমধীন: কেনচিং কচিদ্ই: প্রেমন্ত্রমধীন এব সর্কৈর্ভামান এবাসীতাপি বিবেকং ন ভলতে। কিল । সুকৌ ধলু এইন্ধনাবাদ্যতে। তচ্চ ব্রন্ধ বদ্য প্রভাগভবত ইতাত্র তন্ত্রন্ধ নিজদমনস্কামিতি ব্রন্ধসংহিতোক্তের্ক্রন্ধণা হি প্রতিষ্ঠাহমিতি মহন্তেম দীরং মহিমানক পরব্রেক্রতি শ্বিতমিতি মদাশমৎসাদেবোক্তেশ্চ মদীরং নির্কিশেষং ব্যাপক্ষতীব্রিষং জ্যোতিরের সোহত্যমের বস্য প্রেমন্তর্কারাদ্বিষয়ী ভূতমাধুর্যাঃ প্রাদিরপত্যা সদা বর্ত্তে এব তথা অহা মধুপুরী ধন্যা বৈকুঠাচে গরীয়নীতি পালোক্তেম পুরামক্তন্মধারতীদং কুলাবনং বৈকুঠাদি শ্রেঠং বস্য নিবাসভ্যা সদা বর্ত্তে এব নচ মহাপ্রসাদেহপ্যস্য কাচিং ক্লতি ভূর্গোল্ডকে স্থাপ্র্যোগ্রন্থ অবাধ্য মধ্যে সাক্ষান্ত ক্লেগোণালপুরী দ্লীতি যথা সরসি পক্ষং তিঠিতি তথা ভূম্যামিতি গোপালতাপনীপ্রত্তঃ। প্রান্ধতে প্রাণ্ডে ক্রেক্রির ব্রন্ধনি চিয়াত্রে কালমারাতিগেংকরে। ব্রন্ধানন্দমরের লোকো ব্যাণী বৈকুঠগঞ্জিতঃ। নিশুলোদানভ্যত বর্ততে কেবলেহক্ষরে ইতি বৃহ্বামনবাক্যাচে। তদপি মুক্তিবৈকুঠলোকাদ্ইচরত্বাদেব ব্রন্ধ প্রাদ্ধি তাদান্ত ক্রেক্রিরাদির ক্রমন্ত্র্যানিক্র ক্রান্ধি দাস্যামান্ত ক্রেক্রিরাদির ক্রমন্ত্রমানিক্র ক্রমন্তি ভাবা ক্রিক্রেক্রিরাদ্যাক্রামকর্মানিক্র ক্রমন্ত্রমান্ত ক্রিক্রিরাদির ক্রমন্ত্রমান্ত কর্মান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্তর্বরান্তর্বন্তর্বন্তর্বান্তর্বান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্তর্বান্তর্বান্তর্বন্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বন্ত্রমান্তর্বর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বলান্ত্রমান্তর্বলন্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্তর্বান্তর্বন্তর্বন্তর্বন্তর্বির্বান্তর্বন্তর্বন্তর্বন্ত্

ইতি সংচিত্তা স নিত্যাম্পদ্য শ্রীর্নাবন্দা মুর্কোৎকর্ম কুন্ধু কুত্রসূত্রসূত্রস্থারভাষনীকে সাল্পভাষাকি বিচার্য ক্ষান্ত্রশালনীক বিচার ক্ষান্ত্রশালনীক বিচার

সত্যং জ্ঞানমনস্তঃ যদ্ধ কা জ্যোতিঃ সনাতনং। যদ্ধি পশুস্তি মূনয়ো গুণাপারে সমাহিতাঃ॥ ১০॥ তেতু ত্রক্ষত্রদং নীতা মগ্নঃ কৃষ্ণেন চোদ্ধৃতাঃ। দদৃশু ত্র ক্ষণো রূপং যত্তাক্রুরো হধ্যগাৎ পুরা।

श्रीश्रवणामी।

দেহাদিপিহিভানাং তদর্শনমশকামিতি প্রথমং দেহাদিব্যতিরিক্তং ব্রহ্মস্বরপং দর্শরামাস তদাহ সত্যমিতি। সত্যমবাধাং ক্সানমজড়ং অনস্তমপরিচ্ছিলং জ্যোতি: স্বপ্রকাশং সনাতনং শবংসিদ্ধ গুণাপারে গুণাপোহে ক্রানিনো যৎ পশ্চন্তি তৎরূপরৈব দর্শরামাস॥ ১৩ ॥ এবং ব্রহ্মহুদং ব্রহ্ম এব হুদ ইব হুদঃ গুত্র মধস্য বিশেষজ্ঞানাভাবাৎ। তংব্রদ্ধহুদং তে তু নীতা: প্রাপিতাঃ তন্মিন্মগ্রাশ্চতুঃ-

বৈষ্ণবতোষণী।

ইত্যাদৌ তমংশব্দেন প্রকৃতিনির্দেশাং। বিভূরিতি তস্য তাদৃশবৈভবস্য সদা সর্বত্ত সিদ্ধাদিত্যর্থ: ॥ ১২ ॥ নমু তমসং পরং কিং নাম ৰশ্বিত্যপেকারাং তত্তাবং সামাগুতো নির্পয়তি সত্যমিতি ॥ ১০ ॥

৫ কথি বিশেষতোহপি তল্লিরপয়ংভাদৃশং তদ্শনিমাহ তে খিতি । ত্রন্ধ পুর্বোক্তপ্রক্তানভিব্যক্তং প্রকাশং বং তদেব হ্রবগাহখাদিন।

ক্রমসন্দর্ভঃ।

নস্য বিবক্ষিতথাৎ স্বগতিং স্ক্রামিত্যতা চ হরো: সামানাধিকরণামেবাবগমাতে স্ক্রাং ছপ্তের্মাং ভস্মাজনশব্দেনাপি ন প্রাক্ততো জনএব উচ্যতে। তেবাং সংসার এব গতি: নতু ভল্লোকাদিরিতি। কিছু ভচ্ছবেদন ভাগবতো জন উচ্যতে। সালোক্যসাহী-ভ্যাদিপদ্যে জনা ইতিবং। উক্তক ভাগবতে। জনে তস্যাবিদ্যাদিময়োচ্চাবচগতেরসিদ্ধান্তহাত্ক এবার্থ: সমঞ্জস:॥

অত্যাবিদ্যাদিশস্ব প্রয়োগস্ত কারুণাতো নির্ফোদাদেবেতি জ্ঞেয়ং। গ্রোপানাং সম্বন্ধি স্বলোকং তস্য প্রকৃতিময়ন্তং নিবেধতি তম্স ইতি ॥ >২ ॥

নমু তম্য: পর: কিং নাম বন্ধিত্যপেক্ষারাং তত্তাবং সামান্যতো নিরপরতি সত্যমিতি 🛭 ১০ 🖡 🔒

অথ বিশেষতোহণি তল্লিকপনং তাদৃশং তদ্শননাহ তে বিতি। ত্রন্ধ প্রেণিজদানানাকারাৎ। নীতা অনুসন্ধাণিতা মগ্লাআন্ত্র্বং গতাঃ অন স্বর্মুজ্ তাঃ বিশেষাকারতংক্ র্ত্তাপ্যংক্ষিতাঃ সন্ধো দদৃশঃ। ত্রন্ধণ ইত্যাদি যত্র প্রকৃতেঃ পরেহিত্য অকুরেহিণ্যধ্যগাং

बैविश्वनाथहक्तवर्षी ।

লোকঞ বৈকুঠাথাং দৰ্শবামাস। বুলাবনাদিবোলা পঞ্চবান্ কণান্ তে এব প্রাপঘামাসেতি ভাব:। যতো মহাকাদণিক: বাতিরে-কেন্যে বুলাবনস্য মাধুর্যাং তাভ্যামপুণে কুইং জ্ঞাপনিত্ ভাব:। নহু বক্ষদশ্নৈব অক্ষপ্রাপণা। দৈব সাযুল্যমুক্তিতেবাং ততো নিক্ষমণাস্থ্যবাং। কথং তেবাং পুনর্কাবনীয়মাধুর্যাংহতাবনা ইত্যত আহ বিভূ: সাযুল্যমোক্ষাং বৈকুঠাত নিক্ষমিয়পুমণি সমর্থ-ইত্যথ:। বং লোকঞ বিশিন্তি। তমসং প্রকৃতে: পরং ॥ ১২ ॥

সভ্যমবাধ্যং জ্ঞানমন্ত্ৰস্থান স্তমপরিচ্ছিল্লং সনাজনং শবংসিদ্ধং। যথ মুনরো জ্ঞানিনঃ গুণাপারে গুণাভীতত্বে সভি পণ্যবি। বৃন্ধান্নসাপি ত্রন্ধানন্ত্রস্থান ক্রিন্তাল্য ক্রিন্তালয় ক

এবং ব্রম্মণ ব্রক্ষিব হল ইব্ হলতার নিমগ্রস্য বিশেষজ্ঞানাভাষাৎ তং ব্রম্মণণ তে ব্রম্বাসিনো নীভাং প্রাণিভাং তদা তে ত্মিন্ এবং বৈক্তাখ্য লোক, তাহা দুর্শন করাইলেন ৪ ১২.॥

দেহাবিছিত্র ব্যক্তিদিশের তদ্দর্শন স্থসাধা নয় একারণ প্রথমে অক্ত অপরিচ্ছিন্ন,নির্গুণ এবং সনাতন যে ব্রহ্ম, মুনিশ্বৰ গুণাপায়ে সমাহিত হইয়া মাহা দুর্শন করেন তাহাই প্রদর্শন করিলেন ॥ ১৩॥

ट्र त्राक्षन् ! अकृत शृटक्त त्युशान भिन्ना खन्ना प्रतिशाहित्यन, नन्मापि त्याश्यक त्यहे खन्न-

নন্দাদয়স্ত তং দৃষ্ট্বা পরমানন্দনির তাঃ। কৃষ্ণঞ্চ তত্র চ্ছন্দোভিঃ স্তৃয়মানং স্থবিন্মিতাঃ॥ ১৪॥

श्रीभन्नभो।

শব্দোক্তং বিশেষমাহ পুনঃ ক্লেনোদ্ভাঃ সমাধেরিবোখাপিতাঃ সস্তঃ এদ্ধণস্তক্তিব লোকং হৈকুণ্ঠাব্যং দদ্ভরিতি। নমু এদ্ধণি মঞ্চানাং পুনবেশিকদর্শনমন্টিতমিত্যাশবেনাহ বত্তেতি। যত্ত শ্রীকৃকে নিমিত্তে সতি পূর্ব্যক্রোহধ্যগাৎ দৃষ্টবান্। ভক্পরীক্ষিৎসন্থাদাৎ প্রাক্ত-

देवक वरकावनी।

হদ ইব হদতং নীতাঃ অপক্যা তদমুসদানং গমিতান্তত এব তে মধাঃ তথাত্তাক্তবাবস্থামপি প্রাপ্তাঃ পুনন্তখাদি তেনোদ্তাঃ প্রথম্মধাং সামান্যাকারতংক্ বিশ্বিক্রম্য অরপপক্যাভিব্যক্তবিশেষকারতংক্ ব্যাপ্ত্রে বিভাঃ সন্তো ব্রদ্ধনা নরাক্তিপরব্রদণ্ডগৈর বাবং দদ্ভঃ চক্ষ্বাপি সাক্ষাংক্তবন্ধঃ ন চাশ্রুতচরমেতদিতাাহ বত্র প্রকাশেংক্র্রোহণি অধ্যাগং বৈষ্ঠ্বোকং দৃইবান্ তং অতবান্ বা। , হিতীরে চ তল্প অবর্গতে বতাকং ভগবান্ সভাজিতঃ সন্দ্র্যামাস পরং ন বং পরং। ব্যপেতসংক্রেপবিমোহসাধ্বসং অদৃইবন্ধিঃ পুরুব্রিরিট্ডেং। প্রবর্গতে বত্র বজ্বতমন্তরাে সন্ত্রে মুক্লালোপাধ্যানে ব্রদ্ধঃ ন বত্র মারা কিম্তাপরে হরেরিত্যাদি তরােমিশ্রং রক্তবন্ধিত্যকা
রক্তবন্ধিত্যকা
রক্তবন্ধিত্যকা
রক্তবন্ধিত পরং বক্ষেতি তি ভিষাদৃদ্ধঃ আর্তিরহিতে দেশ ইত্যর্থঃ। শীনারদপঞ্চরাে । জিতত্তে তােতাে। লোকং বৈর্ক্তনামানং দিবাং বড় গুণসংবৃত্তং। অবৈক্রবানামপ্রাপ্যং গুণতারবিবর্জিত্মিতি। ব্রদ্ধান্তবা্র বিশন্তীত্যাদ্যাঃ। অথবা
বক্ষহ্বমক্র্রতীর্থ নীতান্তেরীর্থমিহিমজ্ঞাপনার কোতৃকার বা প্রাপিতাঃ। তত্তত্বপ্রেরণরা মধাঃ পুনত্তেনৈ ব তথাছদ্বতা উথাপিতা
দদ্ভঃ শীর্কাবন্দেব বিলক্ষণদেবাপ্যশ্রনিত্যাদি। যত্র তীর্থে। তদেবং সর্বপ্রমাণচ্ডামণিনা শীমন্তাগ্রতেন প্রোক্তেনাত্র প্রসিদ্ধানার্বনেক্রয়া। ক্রমব্যাধ্যানাচন ন পরত্র ব্যবিভিত্যাক্রনা চাপতভনীতি গম্যং।

তথাপ্যক্রতঃ শ্রীমন্ত্রনাদীনীং দর্শনবৈশিষ্ট্যবদানন্দবৈশিষ্ট্যমণি জাতমিত্যাছ নন্দেতি। তং তেবামের সম্বন্ধিনং শ্রিরফলোকং আতঃ স্বভাবতঃ এর পরমানন্দনির্ব্ ব্ ব্ভূর্ঃ। ক্ষণেতি ভথাপ্যব্যতিচারিপুদ্রভাববতো বিদ্বিতাশ্চ বভূর্রিতি। ছলোভিঃ কর্ভূত্তঃ করণভূতির্বা উভয়ভূতিরের বা শ্রীগোপালতাপজাদিভিঃ। অত্র স্বগতিমিতি তৈঃ স্বান্ধস্য শ্রীরুইফক্যাভিপ্রায়েগৈবোক্তিঃ গতিদক্ষত চ বন্ধণলোকদর্শনেন তলোকদর্শনাভিপ্রায়েগোক্তিঃ। তথাচ শ্রীক্ষেন চ স্বাং গতিমিতি শ্রীগোপসম্বন্ধিতা নির্দেশঃ শ্রীমূনীক্রেণ চ গোপানামিতি ষঠ্যা সাক্ষাদের তৎসম্বন্ধনির্দেশঃ। ক্ষণেত্বতি সাক্ষাং শ্রীকৃষ্ণনির্দেশঃ বৈকুঠান্তরং ব্যবচ্ছিদ্য পরমগোলোকমের
ছাপয়তি। অত্যবে অহ্যাপৃতং নিশি শরানমতিশ্রমণ লোকং বিকুঠমুপনেব্যতি গোকুলং স্বেতি শ্রীক্রম্বাক্তাহণি বক্ষর্দ্বভাকুরতীর্বন্ধিন
পক্ষে। বন্ধামার্থপ্রহংগ্রিয়ান্বতনর ইতি ভারেন দিবসে তদেকার্থব্যাপারযুক্তং তৎপরিশ্রমণে রাত্রৌ চ তদেকসমাধিরপনিত্রাপন্নং।
বন্ধাম্ভবুপক্ষে শ্রীব্রক্রেরান্ত্রির ভারিরু নানাব্যাপারযুক্তং তৎপরিশ্রমণে রাত্রৌ শরানং সং গোকুলং ত্বাস্ক্রিরং বিকুঠং
গোলোকাথ্যং উপ স্মীপে তত্রৈর দর্শবিষ্যভীত্যর্থঃ। স যথা ব্রন্ধসংহিতায়াং ঈশ্বরং পরমঃ কৃষ্ণঃ সচিদানন্দবিশ্রহঃ। অনাদিরাদির্গোবিন্দং স্বর্কারকার্যার্থং কমলং গোকুলাথ্যং মহৎপদং। তৎকর্ণিকারং তদ্ধাম তদনন্ত্রাংশসন্ত্রমিত্যাদি। তথাপ্রে ব্রন্ধত্রের।
চিত্তামণিপ্রক্রসন্ত্রের্ক্রেরাজ্যরুক্রের্ক্রলকার্যারতের্ব্ স্থান্ত্রীরপি পালরন্তঃ। লন্ধীসহন্তপত্রশ্বতসন্ত্রমসেব্যানাং গোবিন্দমাদিপুক্রং তমহং ভজামি।

এবিশ্বনাপচক্রবর্তী।

মগাঃ ক্লফেন উদ্ তাঃ স্বাতর্কাশক্যা ব্ন্ধসাযুক্তাদিপি উদ্ তান্তস্মাত্থাপিতাঃ সম্ভাইস্ব ব্রন্ধণে লোকং বৈকুঠক দদ্ভঃ। লোকং বিকুঠমপনেষ্তি গোকুলং শ্বেতি বিতীরোক্তেঃ। উদ্ তা ইতি বথানো সংসারহদাত্দ্ভাঃ সংখ্য ব্রন্ধস্তবন্ধি তথৈবামী প্রেমবন্ধে। গোপাঃ ব্রন্ধহদাত্দ্ভাঃ বিকুঠলোকং দদ্ভরিতি সর্ব্বনাশবত্যাঃ সাযুক্তা বিপদঃ সকাশাৎ বৈকুঠো নির্বৃতিকরঃ ইতি ভাবঃ। প্রেমবৃহিতানু ক্ষম্বান্তবাং প্রেমবৃহিতানু ক্ষম্বান্তবাং প্রেমবৃহিতা বৈকুঠম্বান্তবাঃ শ্রেকতভোহপি প্রেমব্রা গোকুলম্বান্তবাং শ্রেক ইতি সিদ্ধান্তাঃ। ব্রুঠে পুরা ক্ষম্বাহ্যগাং গতবান্ স্বাভীইদেবং দুইবানিতি বাঃ ভক্পরীক্ষিৎস্থাদ্ধ প্রাক্তন্যাহ্যতনির্দেশঃ॥

তং বৈক্ঠলোকং দুই। তু প্রমানকনির তাং। বৈক্ষাপোলোকর ব্লাবন্দ্য ব্লাবন্দ্যবিদ্ধানিতি ভাবং। যথাই কেটিক্রদ সংজ্ঞক যমুনায় নীত হইয়া তাছাতে মজ্জনানকার ব্লালোক দর্শন করেন। তদনকার প্রিক্ত তাহাদিগকৈ পুনরায় উদ্ধৃত করিলে পূর্ববিৎ ভাঁছাকে নিরীক্ষণ করিয়া ভাঁহাকের বিশ্বয় হর্ম, তাহার পর
স্বলে প্রম আনক্ষে নির্ভ ইইয়া বিবিধ বেশবাক্ষে তব করেন। ১৪।

विश्वत्यामी।

নম্বাৎ ভ্তনির্দেশঃ। নহাতকৈ ধর্ব্য ভগৰতি কি ঞিদপাসস্তাবিতমিতি ভাবঃ। অথবা হকুরো বতা দৃইবান্ তল বমুনা এদত একাছদ-

देवकवरकावनी।

গোলোকনামি নিজধামি তলে চ তত দেবীমহেশহরিধামত্ব তেবু তেবু। তে তে প্রভাবনিচরা বিহিতাশ্চ যেন গোবিদ্ধমাদিপুরুষং তমহং ভলামীতি। গোলোক এব নিবসভাগিলাত্মভূত ইত্যাদি চ। অত্তে চ। প্রিয়ং কান্তাং কারুং পরমপুরুষং করতরবো ক্রমা ভূমি-শিক্তামণিগণমনী ভোরমমূতং। কথা গানং নাটাং গ্যানমণি বংশী প্রিয়্রগণী চিদানন্দং জ্যোতিঃ প্রমণি তদাখাদ্যমণি চ। স্ব্র ক্ষীনুষ্ঠিনঃ সরতি স্থরভিভ্যশ্চ স্থমহান্নিমেবার্দ্ধাথ্যো বা বন্ধতি নহি যত্তাপি সমন্নঃ। ভঙ্গে খেডহীপং ভ্যাহমিই গোলোক্ষিতি যং বিদ্তুত্তে সস্তঃ ক্ষিতিবিরলচরাঃ কতিপয়ে ইতি। এবং স্বান্দে মোক্ষধর্মস্য নারাগণীয়োপাধ্যানে চ। এবং বছবিধৈ রূপৈন্চরামী বস্তুদ্ধরাং। এক্ষ-লোকঞ্চ কৌত্তের গোলোকঞ্চ সনাতনমিতি। তথাচ হরিবংলে। বিথাহ শক্রঃ। স্বর্গাদুর্জং ব্রন্ধলোকো ব্রন্ধরিগণসেবিতীঃ। তত্র সোমগতি কৈব জ্যোতি যাঞ্চ মহাত্মনাং। তস্যোপরি গবাং লোক: সাধ্যান্তং পালমন্তি হি। স হি সর্বগতঃ ক্লঞ: মহাকাশগতো-ম হান্। উপর্তির তত্তাপি গভিস্তব তপোময়ী। যাং ন বিল্লোবয়ং সর্বে পৃক্তভোহপি পিতামহং। গভি: সমদ্যাচ্যানাং স্বর্গ: কুফুডকর্মণাং। ব্রাক্ষ্যে তপসি যুক্তানাং বন্ধানাক: পরা গতি:। গবামের তু গোলোকো ছরারোহা হি সা গতি:। সভু লোকস্বয়া ক্লফ সীদমানঃ ক্লতাত্মনা। ধুতো ধুতিমতা বীর নিমতোপদ্রবান গ্রামিতি। অস্যার্থঃ। স্বর্গশব্দেন স্বর্লোকমার্চ্য সভালোকপর্যান্তঃ লোকপঞ্চকুম্চাতে "ভূলোক: কল্লিভ: পদ্ধাং ভূবলোকোহ্য্য নাভিড:। খর্লোক: কল্লিভো মূৰ্ছু । ইতি বা লোককল্পনা ইভি দ্বিতীয়াং। তমাদুর্মমুপরি ব্রহ্মণোক: পরব্রমণো ভগবতো লোক:। দদুও ব্রহ্মণোলোকমিত্যকরাং। এবং বিতীয়ে মুর্ছভি: সত্যদোকস্ব একলোকং সনাতন ইতি। ব্যাধাতিক তৈ:। একলোকো বৈকুঠাথা: সনাতনো নিত্য: নতু স্ব্যাপ্রপঞ্চাম্বর্ক ঐত্যর্থ:। একাণি মূর্ত্তিনকো বেদাঃ অধরণত জীনারদাদয়ঃ। গণাশ্চ জীগরজ্বিষক্ষেনাদয়ঃ তৈনি ঘৈৰিতঃ। এবং ৹নিত্যালিভাত্তা ভলগ্যনাধি-কাার্থ আহ তত্ত্র ব্রমদোকে উময়া সহ বর্ত্ত ইতি সোম: শ্রীশিবতত গতি: জ্যোতিশ্বরণাভিধানাদিতি নাচ্ছেন জ্যোতিব্র ক্ তলৈকাল্ম ভাবানাং জ্ঞানিজীবমুক্তানামিতার্থ:। অত সমাদপ্রবিষ্টিশ্যাপি গতিশব্দগাকর্ষ আর্থ:। সোমেতি ছাল্দ এব বা ষ্ঠা। व्यनुक नज् जानृगानायि परर्क्सः এरबज्ञार मराञ्चनाः मराग्यानाः साक्यनितापत्रज्या ७८ जाः वीपनकापिज्नानायिज्ञर्थः । मुक्ता-নামপি সিন্ধানাং নারায়ণপরায়ণ:। তুত্রভ: প্রশান্তায়া কোটিবপি মহামুনে ইত্যাদৌ তেবেব মহতাপর্যাবসানাং। তত চ ত্রন্ধ লোকভোপরি সর্কোর্ম প্রদেশে গ্রাং লোক ইতার্থ:। তং ত্রীগোলোকং সাধ্যা অত্মাকং প্রাণঞ্চিকদেবানাং প্রাপ্তবাসাযুদ্ধামূলরপা নিতাতদীয়দেবগণাঃ পালয়ন্তি তত্র দিক্পালভেনাবরণরপা বর্ততে। তেহ নাকং মহিমানঃ সচন্ত যত্র পূর্বে বেচ সাধাাঃ সন্তি বিখেদেবা ইতি ফ্রন্ডে:। তত্র পুর্বের যে চ সাধ্যা বিবেদেবা: সনাতনা:। তেহ নাকং মহিমান: সচম্ব শুভদর্শনা ইতি বৈকুঠবর্ণনে পালোত্তর-খণ্ডাক্ত। হি প্রেসিছো দ স্রীগোণোক: দর্বগত: স্রীকৃঞ্বং নর্বপ্রাপঞ্চিকাপ্রাপঞ্চিবস্বব্যাপক: অত এব মহান্ভগবজ্ঞপ এব। মহাস্ত-মাখ্মানং বিভূমিতি ঐতে:। তর হেতুম হাকাল: পরব্যোমাধ্যং বন্ধবিশেষণলভাং। আকাশস্তরিকাদিতি ন্যায়প্রসিন্ধেল্চ। তং কুজ: ব্রহ্মাকারেদিয়ান তারং তৎপ্রাপ্তে:। বরা। মহাকাশ: পরবোমাথো। মহাবৈক্ঠাথা: ত্রুকাত: তদ্ধ্ ভাগস্থিত:। তলে চ তত দেবীমতেশহরিধামস্থিতি এলাদংহিতালাং তত্বনৈ ব্যুৎক্রমোজে:। এবমুপ্র্গিরি সর্ব্রোপর্যাপি বিরাজসানে তত্ব প্রীগোলোকেংপি তব গতিঃ। নানারপেণ বৈকুঠানৌ জীড়তত্তব তজাপি জীগোবিশারপেণ জীড়া বিদাত ইতার্থঃ। সাকীদৃশী তপোমগী অনব-চ্ছিলৈখব্যমরী। প্রমং বো মহন্তপ ইতিবং অভএব ব্রহ্মাদি ছর্মিতর্ক্যত্বমপ্যাহ ঘানিতি। অর্থনা তথ্য গোলোক ইত্যাথ্যা জীবমতি-বাঞ্চরিত গতিরিতি ত্রান্ধ্যে ত্রন্ধলোকপ্রাপকে তপদি বিফ্বিবরকমন:প্রণিধানে যুক্তানাং রতচিত্তানাং প্রেমভকানামিতার্থ:। ত্রন্ধ লোকো বৈক্ঠলোকঃ পরা প্রকৃত্যতীভা। প্রামিতি মোচরন্ এলপ্রাং দিনতাপমিত্যকাছ্দারেণ পোকুল্বাসিমাত্রাণাং প্রত্তত্তা বানাঞ্চ সাধনবলেকেতার্থঃ। অভত্তব ভত্তাবস্থাস্পতিশাৎ ছ্রারোছা ধুতো রক্ষিতঃ শ্রীগোবর্দ্ধনোদ্ধরণেনেত্রি। অত্যাধান্তরে সপ্তবো-

ই বিশ্বনাৰ্গচক্ৰবৰ্তী।

খনাং ক্লাটিন্ত স্ম্ৰনাং স্বেঃ দৈনাং ক্ৰিট্টবধনচিলাং প্রসাস্থানির তাং তবতি ত্থেতাবং। তত্তাসং প্রাণ্কোটনির্প্রনীয়-স্থানবিদ্ধান্ত ক্রিট্ট ক্রিট তদ্বেষণাগ্সভানবজে স্তি তথা দদ্তবিত্যতি ক্রমং তত্তি গ্রুল্লোতিস্তিবতি ত্যমানং পুই। স্বিভিতাং। হং হো কাগজাকতবিদভে ক্যোতিস রাং ভাবকা অভ বুলাবদে একণ্রিচীয়সালাং প্রই, স্থাভিরণত্যাং কে

व्यिधव्यामी ।

ইতি নাম তং হুদং নীতাঃ মগ্রাশ্চ সঙ্গো ব্রহ্মলোকং দদ্ভঃ পুনঃ ক্ষেনোক্ তাঃ পূর্ববিৎ তং দৃষ্ট্র বিশ্বিতো বভূৰ্রিভি ব্যবহিতা**ধরঃ।** অপ্রসিদ্ধকরনাচ সোদ্বোতি ॥ ১৪ ॥

दिक्षवरकावनी ।

কতা চেত্রহি অর্গাদেবোর্দ্ধং সত্যলোকো ন ভবতি মহল্লোকাদিব্যবধানাৎ তথা সোমগতিরিত্যাদিকং ন সম্ভবতি ধ্রুবলোকাধতাদেব তদগতে:। অবরসাধ্যগণানাং তৃদ্ধ্বাং। সত্যলোকপালনেহপানহাং। তথা প্রাক্তর্ত্ত্বালোকস্ত সর্ধগতন্ত্বং চাসম্ভাবাং। অভএছ ত্রুপি তব গতিরিত্যপিশকোবিম্বরে প্রযুক্তঃ যাং নবিম্ম ইত্যাদিকঞ্চ। তন্মাৎ প্রাক্ত্রিদন্ত এবাসৌ গোলোকঃ। য এব পূতনা-মোক্ষাদৌ নিরূপিতঃ। য এব চ প্রাপিশকজীবরুপয়া বৃন্দাবনাদিরপেণ প্রপঞ্চেভিব্যক্তঃ সদা বিরাজতে। স্তু লোকল্বা বীর নিমতোপদ্রবান্ গবাং। ধৃত ইত্যভেদেনোক্তবাং ভগবন্ধচিন্তাশক্তিময়ন্ত্রেন তত্ত্বিক্স্যাপ্যেক্রাপ্যনন্ত্রধাপ্রকাশসামর্থাচ্চ। বোগনার্বাবিভ্তিবর্ণনে যুগপৎপ্রাত্রাদিনানাসময়াদিবর্ণনময়ন্ত্রেন তথ্বৈ বার্কায়া অপি দর্শিত্মিতি। গোলোকস্তোদ্ধ্রতাকোপরিজনন্ত্র মহিনদৃষ্ট্যপেক্ষয়াবিভাবাং। বস্তুতস্ত্ব স হি সর্ব্বগত ইত্যেবাক্তং। অতো বারাহেছপ্যস্তামেব বৃন্দাটব্যাং প্রাপঞ্জিকজিয়মাত্রৈ-ভল্পাইতিদিক্সমাবিভাবাং। প্রত্তাপ্রাপ্তি প্রতিভাবিষ্যাপ্তি বিশালাক্ষি প্রত্তা বিশ্বাপ্যক্ষিত্র বিশালাক্ষি প্রতা। যথা। ত্রোপি মহদাশ্র্যাং প্রভাবিত্তা:। পুশায়তি বিশালাক্ষি প্রভাবতা দিশো দশ ইতি। শতশাধ্যিতি দিশুঃ। তদ্যে বর্গত ইত্যর্থঃ প্রভাসন্তর প্রভাসম্বিত্যিং।

তত্ত্বৈব ব্ৰহ্মকুগুমাহান্ম্যে। তত্রাশ্চর্য্যং প্রবক্ষামি তচ্ছুণু বং বহুদ্বরে। লভত্তে মহুজা: সিদ্ধিং মম কর্মপরায়ণা:। তস্য তত্তোত্তরে পার্দেইশোকবৃক্ষ: সিতপ্রভ:। বৈশাধত্ত তুমাসস্য শুরুপক্ষস্য খাদনী। স পুশতি চমধ্যাক্তে মম ভক্তস্থাবহ:। ন কশ্চিদ্পি জানাতি বিনা ভাগবতং শুচিমিত্যাদি। আদিবারাহে চ। ফ্লফটীড়া সেতুবরংণ মহাপাতকনাশনং। বলভীং তত্ত ক্রীড়ার্থং ক্রন্বা দেবো গদাধর: ১ গোপকৈ: দহিতত্তত ক্রণমেকং দিনে দিনে। তত্তৈব রমণার্থ হি নিত্যকাশং স গচ্ছতীর্ডি। তত্ত্বৈব গোলোক এব নিবসতাথিলামূভূত ইতি নিয়ম: শ্রারতে। স্কান্দে মথুরামাহান্ম্যে। ততো বৃন্দাবনং পুণাং বৃন্দাদেবীসমাল্লিতং। হরিণাধিষ্ঠিতং তচ্চ ব্রহ্মক্রজাদিদেবিতমিতি চ শ্রন্নতে। বৃহদেগাভমীন্নে চ। শ্রীকৃষ্ণবাক্যং। ইদং বৃন্দাবনং রম্যং মম ধানৈব কেবলং। অঅলু যে পুশ্বঃ পৃক্ষিমুগাঃ কীটা নরামরাঃ। যে বৃস্তি মুমাধিষ্ঠে মুভা'্যান্তি মুমালরং। তত্ত যা গোপকন্যাক্ত নিবৃস্তি মুমালরে। (वाजिनाखाः मत्रा निखाः मम (मनाभनावणाः। अकरवाजनयाचि तनः म (महक्रभकः। कानिस्नीवः ऋवृञ्चाका भन्नमाम्ख्वाहिनी। অত্র দেবাশ্চ ভূতানি বর্ত্তক্তে স্ক্ররপতঃ। সর্কদেবময়শ্চাহং ন ডাজামি বনং কচিৎ। আবির্ভাবন্তিরোভাবো ভবেক্সেইত্র যুগে যুগে। তেজোময়মিদং রম্যং অদৃশ্যং চর্মচকুষেতি। তত্মাৎ সদা প্রক্ষতাবনভিব্যক্তে শ্রীরন্দাবনস্থাকাশবিশেষে গোলোকাথ্যে বো নিত্যং তৈরেব নিত্যপরিকরৈ: সহ বিহরতি স এব শ্রীক্লঞ্চ: প্রাপঞ্চিক নিজ্বভক্তরুণয়া প্রাক্তাভিব্যক্তেহশ্বিংস্তৎপ্রকাশে তৈরেব সহ কদা-চিছ্যকীভব্তি তত্তৎপরিকর্ত্বনিয়ম্স তৎপরিক্রত্তেনৈবোপাসনাশাল্তাদি দর্শনাৎ। এবং বোড়শস্হশ্রবিবাহে 🕮বস্থদেবাদি-বদ্মদা তে প্রপঞ্চাতিব্যক্তপ্রকাশেহপি প্রকাশান্তরেণ ব্যক্তীভবস্তি। তদা দীলারসপোষায় দীলাশক্তিরেব প্রেমবৈবশ্যাদিবারা তত্ত্ব তত্ত্ব প্রকাশে পূণগভিমানং পরম্পরমন্তুসন্ধানঞ্চ সম্পাদয়তি যতো নিত্যসিদ্ধমপি তং নি**জবৈভবাদিকং তদা তেনাত্বসন্দধিরে। তদে**-ব্যবৈত্র স্থিতমধ্যৈর প্রীবৃন্ধাবনস্য প্রকাশবিশেষং প্রীগোলোকং দর্শশ্বামাস। প্রকাশতেদেপ্যতেদেন তান্ বিনা মান্যাংশ্চান্তরক্পরিক-রান্ দর্শযামাদ ছন্দদান্ত বহিরঞ্জমেব,। বন্দিজনদাধর্মাৎ। ছন্দোভি: ছতৈদ্র্শনঞ্চেদং প্রামাণ্যার্থমেবেভি সর্বাং শাস্তং ॥ ১৪ ॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

বৈকুঠং দৃষ্টবান্। ছন্দোভি: শ্রীগোপালভাপন্যাদিভি: ॥ ১৪ ॥

श्रीविधनाथठकवर्जी। .

তল্মধ্যৰতী ক্ষশাৰ্ষণাননৈকান্ পিআদীন্ দৃষ্ট্ৰপি বাদ্যবিদাসং প্ৰপঞ্চর সন্নিধন্তে নাপি তৃত্বাত্যাং নঃ কঠং বছে ব্যমপি সনিধাত্যেনম্থসক্ষাবোহৰিতৃক সভ্চামঃ কিমনেনাদ্য কুংপিপাসাবৈক্ষয়ং বিশ্বতং। মাতাদ্য ক্ৰমেনৰভোদ্যকী জীবিবাতীভোৰবিবিধান্ বিশ্বয়ান্ দ্ধানাভে সীশাশজিপ্রেরিভয়া বোগমার্রেরৰ পুনর্শাব্যমানিন্যিরে ইভি শেষঃ। এতংগ্রহ্মধ্যার্দেবার্থঃ
শীমংপ্রভ্ববৈ রপগোশামিচরগৈঃ তব্যালারাম্পলোকিতঃ। স চ লোকো বথা। লোকো রষ্যঃ কোহণি বৃশ্চিকীভো নাভি কালীতাঞ্সাবস্বৰ্গং। বৈকৃতিং বং অত্ সন্ধা ভূবো গোঠং নিন্যে পাড় স খাং মৃত্ত্ব ইভি ৪ > ৪ ৪

১০ক। ২৮জ]

॥ # ॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংল্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং দশমক্ষমে নন্দনোক্ষণমন্তাবিংশোহধ্যায়: ॥ # ॥ ২৮ ॥ # ॥

॥ • ॥ ইতি লশনে অটাবিংশ: ॥ • ॥

বৈষ্ণবভাগণা

॥ • ॥ ইতি শ্রীবৈক্ষরতোষণাাং হশমটিপ্রভাষটাবিংশ: ॥ • ॥

ক্রমসন্দর্ভ: ।

॥ • ॥ ইতি শ্রীবিক্ষরতোষণাাং হশমটিপ্রভাষটাবিংশ: ॥ • ॥

শ্রীবিধনাধ্যক্রতে ক্রমসন্দর্ভে ইটাবিংশ: ॥ • ॥

। ॥॥ ইতি দশমে অফীবিংশ ॥#॥

बीवापतात्रागिकवाठ ॥

ভগবানপি তা রাজী: শারদোৎফুলমলিকা:। বীক্ষ্য রস্তং মনশ্চক্রে যোগমারামুপাঞ্জিত: ॥ ১॥

द्यीधवयामी।

উনতিংশে তুরাদার্থস্থিত প্রত্যুক্তরো হরে:। গোপীতী-রাদদং রজে তদ্য চান্তর্জিকৌতুকং। ত্রজাদিকরসংক্রচনপকন্দর্পদর্শন। ক্রাতি শ্রীপতির্গোদীরাদমগুলমঞ্জিত:। নতুবিপরীতমিদং পরদারবিনোদেন কন্দর্পক্তেগুপ্তপ্রতীতে মৈবং বোগমায়ামুপালিছ:। আত্মারামোহপ্ররীরমৎ দাক্ষাত্রবাধমার্থ:। আত্মারামোহপ্ররীরমৎ দাক্ষাত্রবাধমার্থ:। আত্মারামেরিজ্বনং কামক্রবাধ্যানিজ্বনং কামক্রবাধ্যাপনার্থেত তথা। কিঞা। শৃক্ষারক্থাপনশেন বিশেষতোনিত্তিপরেয়ং গঞাধায়ীতি ব্যক্তীকরিয়াম:॥ •॥

তা রাত্রীরিতি যাতাহবলা ইতানেন প্রতিশ্রতা ইতার্থ: ॥ ১ ॥

বৈষ্ণাৰতে হাৰণী।

নমঃ শ্রীরাসরসিকেভাঃ। আন টাকারাং রাসসংবস্থ ইতি। তারিনিত্তে রাসারস্কসন্থানিং মানং নীক্ষ্যতার্থং। কর্মপ্রেভ্রপ্রতীতেরিতি কন্দর্শকত্ ক্সৈরে কেতৃত্বস প্রত্যরাদিত্যথং। অথ মূলে শ্রীবাদরারনিক্ষবাচেতি বক্ষ্যমাণমহামহিয়ঃ প্রসক্ষ্যাস্য
বলাত্তিনিং লক্ষয়তি বদরিকাশ্রমে মহাতপশ্চরণাৎ ভগবান্ শ্রীবাদরারণঃ তচ্চ তপঃ শ্রীক্রফোশাসনলকণ্মের সর্বজ্ঞস্য তন্য প্রমোত্তমে
তন্মিরের ব্যবসারোচিত্তাং। তভ্তচ তাদৃশত্পঃফলরূপপুত্র ইতি সর্বজ্ঞ শ্রীজ্ঞপ্রংপ্রেমরসময়ভাদিকং তত্তাধিকং যদাপি ক্ষুবিতি
তথাপি তরামনিক্রক্রমাহাত্মপর্যবসানমত্ত্রের জাতং তত্ত্বাদৃশতক্তিরেইবভজ্ঞোত্ব্যমিতি ব্যক্তিহা। শ্রীভক উবাচেতি পাঠে তু
প্রমোজ্যুক্রসন্বাভাব্যেন প্রমকোমলালাপতা দশিতা। তত্ত্বাদৃশচিত্তিইয়র শ্রোভ্রামিতি ব্যক্তিহা। তথাছি। সর্বাভিশরিপ্রেম-

ক্রমদন্ত: ১

ভগবানপীতাপি শব্দেন তৎপ্রেরভোৎপীতি সমুচ্চীরস্তে। তাং নিজমাধুর্য্যেশাদ্যাপ্যক্ষরনোহারিণীঃ শরদাপি মলিকোৎক্রতা-তাদৃশরসমর্লীলাসমর্ম্পতাং। যোগমায়াং হুর্ঘটবটনাশক্তিং উপ সমীপে আপ্রিতঃ। তাদৃশ তৎসের্ব্বসরাপেক্ষরা নিকটত্বে তাদৃশ -শক্তিরিত্যর্থ: ॥ > ॥

श्रीविधनायहज्जवखी।

শীরামকৃষ্ণগলাচরণারত্বা শুরত্বক্ষপ্রেয়:। শ্রীলনরোভ্রমনাথ শ্রীগোরালপ্রস্থা নৌমি। প্রশ্য শ্রীশুকং ভূন: শ্রীকৃষ্ণ কর্ম-পার্থবং। লোকনাথং লগচক্ষু: শ্রীশুকং তমুপাশ্রের। গোপরামাজনপ্রাগপ্রেরসেইতিপ্রভূক্তবে। তদীরপ্রিয়ালায়ার মাং মদীয়মহং ছলে। অব পঞ্চন্তির্যাহিঃ পঞ্জাবিম্পুনিঃ। রাসং প্রাহ হরেঃ সর্বাদীলাসম্পদ্ধিরোমণিং। রাসো জয়তি যদন্তসৌভাগ্যা গোপ-বোবিতঃ। ধরাত্বা অধ্রীচকুং, সর্বোজ্তাং রমামপি। উনবিংশে বেণুনাদপাক্ষর্যবিষ্বর্ষণং। গোপিকাচাতকীত্বাভিঃ ক্রীড়ান্তর্জিন্ট বর্ণাতে ।

ইছ খলু সপ্তবৰ্ষবন্ধনি বৰ্তমানেন ভগৰতা কাৰ্তিকস্যামাৰভাৱাং কৰ্মবাদোধাণনেন ইক্সমণতলঃ কৃতঃ। তজুক্পতিপদি
পোৰ্থনিমধােৎসবঃ। বিভীয়ারাং যমুনাভীরে আত্ৰিতীয়াভোজনােৎসবঃ শ্রীমুনীক্রেণাবর্ণিতােছপি জ্ঞোঃ। তত্ত্বৈ বর্ণিতা ইক্র-কোনোজন্ত । তৃতীয়ামারভ্য নবনীপর্যক্তং গোবর্জনিধারণং। দশম্যাং গোপানাং বিশ্বরক্ষধাবাছল্যং একাদশ্যাং গোবিন্দাভিবেকঃ
বাদশ্যাং বন্ধণলােকগমনং পৌর্ধমাসাাং ব্রহ্মলােকগমনং। তভ্তত শ্রদং স্মাপ্তছাং তছ্ত্বে বুর্বে অন্তব্ধব্যুক্তিমণিতং বক্তুমারভতে। ভগবানপি বড়েখ্যুপ্রােছপি রহু মনশ্চকে র্মণ্সােদীপনাল্ছনানাং

ব্রহ্মাদি দেববৃদ্দকে জয় করিয়া কন্দর্প অতিশয় দর্পাদিত হইয়াছিল,ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ গোপীদিগের রাদমণ্ডলে মণ্ডিত হইয়া তদীয় দর্প সংহার করত জয়য়ুক্ত হয়েন ॥

উনত্রিংশ অধ্যারে রাসবিহারার্ধ গোপীগণ সহ উক্তি প্রত্যুক্তি এবং রাসারস্কে শ্রীকৃষ্ণের অন্তর্দ্ধান রূপ কৌতুকের বর্ণন ॥ • ॥

শুকদেব কহিলেন হে রাজন্! ভগবান্ যড়েশ্ব্য পরিপূর্ণ হইয়াও বস্তহরণ কালীন যে প্রতিশ্রুত শুর্বাৎ পোপ্রুমারীদিপের নিক্ট যে অঙ্গীকার করিয়াছিলেন "ছে শ্বলাগণ তোমরা নিদ্ধ ইইয়াছ,

देवस्वंदङावनी ।

বতীনাং শ্রীব্রজ্পরীণাং মনোরপপরিপ্রণ্মেব। প্রিয়বাত্ত্ত্থার্থং সর্ব্বং কুর্ব্বতঃ শ্রীভগবতো মুধাতর প্রয়োজনমিতি দর্শরংক্তদেব ভদ্য দর্কাভিশারিম্থাত্রথমিতি চ প্রকটরংন্তত্ত চ দাক্ষারারথমূল্য ইতি তৈলোকালক্ষ্যেকণুদং বপুর্বধদিতি গোপ্যন্তপঃ কিম্চর্ল্লিভি দৃট্টা সর্কায়ারানৈরপি জ্লুজানাং ভগবদ্ধপর্দগর্মপর্শশশানাং বৈশিষ্টোনাল্পভবাৎ। তদীয়র্দ্দাাধ্রাযুভদা ডু সর্ক্রিথবান্যআসম্ভবাৎ। প্রেমবিশেষবিস্তার স্থাসিদ্ধা তদেবাগাভিস্তাভিঃ সহ রাসক্রীড়াং পঞ্চেরতুল্যপ্রিয়েঃ পঞ্চিরধ্যারৈ বর্ণরতি। যত্র, পীদা মুকুন্ধ-मुथनात्रयगक्तिकृतेकातिना लाभीनाः शत्रमानम कानीत्नातिकात्मन्न हेळातिन। हेथः नतः व्यक्कनमिळातिना इम्रास्त अथरम মানীত্যাদিনা চ তাদাং ত্স্য চ নবরাগং বিশিষ্য স্থেন বর্ণিভচরং শর্জ্বদাশ্যে সাধুলার্ভসং সর্বিজেত্যাদিনা প্রহৃদিতং প্রিয় প্রেমে-ত্যাদিনা রহসি স্বিদং হৃচ্ছয়োদ্যমিত্যাদিনা চ তাভিঃ স্বয়ং বর্ণয়িষ্যমাণ্ঞ। স্বুড়াতিবিশিষ্টতয়া বর্ণয়িতব্যস্থেন নবস্কুমং স্বর্লাহ ভগবা-নপীতি। অপিশব্দেন তাসাং পূর্ব্বপূর্ব্বর্ণিতং নবরাগং স্মারয়তি পূর্বেণ বাক্যেন তু সঙ্গমদ্যাদ্য নবত্বমেবাবগময়তি এতাবৃত্তং কালং তা অমুরাগর্চপলচিত্ততয়া রন্তং মন: কুর্বভা এবাসন্। ভগবাংস্ত জাতামুরাগবেহপি ধৈর্যোণ সময়বিশেষং প্রতীক্ষমণো ন চক্রে সম্প্রতি তাঃ কৈশোরমধ্যপ্রাপ্তাঃ সর্বায়প্রদত্ত্বা সর্বায়লতয়া প্রকৃতিতবেণুশিকাদিবিশেষতয়া চ বিলক্ষণাঃ কুমারীযু চ ময়েমা-রংস্যথ ক্ষপা ইতি প্রতিশ্রতা রাত্রীবীক্ষ্য ডতাপি রাকা রাত্তেরাগমনারস্তে দীপ্তাস্থরাগত্বেন গলিতধৈর্য্যতমা তচ্চক্র এবেতি প্রতিপত্তে:। শ্লেষেণাত্মারামাশ্চ মূনর ইত্যাদিবৎ ভগবান সর্বার্থপরিপূর্ণোহপি তা রাত্রীবীক্ষা উদ্দীপনবেনাম্ভূয়েতি কৈমুভ্যেনালম্বনরপাণাং তাগাং প্রেমমহিমা দর্শিতঃ। তত্তএব ব্যক্তসর্ব্বার্থং তস্য কৈশোরমপি মানিতং লাতমিতি প্রীবিষ্ণুপ্রাণে দর্শিতং। সোহপি কৈশো-রকবলো মানরন মধুস্দনঃ। রেমে ভাভিরমেয়াঝা ক্ষপাস্থ ক্ষপিতাহিত ইতি। হরিবংশেচ। যুবভীর্গোপকন্যা"চ রাজীে সংকালা কালবিং। কৈশোরকং মানয়ান: সহ তাভিমুমোণ হ ইতি। অত কালবিদিভাস্য ব্যাখ্যানং তা রাত্রীবী ক্ষেতি। সহ তাভি মুমোণ হ ইত্যাস্য স্কুচকং। রস্কুং মনশ্চক্রে ইতি আত্মনেপদনির্দেশঃ থবরং সার্থঃ। ক্রিয়তাং বোধয়তি স্বরিত্তঞিতোঃ কর্ত্র ভিপ্রায়ে ক্রিয়াফলে ইতি বিশেষবিধ্যাশ্রষণাৎ। তদেরং ভা ইত্যানেন অস্যাপি চমৎকারকরং কালবৈশিষ্টাং ব্যক্ষ্য তত্ত্বজ্ঞলিতাং শ্রীরন্দাবনশোভামপি দর্শরতি শরদেতি শরদা থেতুনা উচ্চৈ: ফুল্লা মল্লিকা যাত্র তাঃ পরস্পর্যোগাপ্রসিদ্ধেরনেনাদ্যাঃ শরদো মল্লিকানাঞ্গপুর্বেতং ব্যঞ্জিতং তেন চ সর্বাণ্যের পুষ্পাণি লক্ষ্যন্তে ইত্যালম্বনকালনেশানাং একফার প্রেমময়পরমন্ত্রপপ্রদত্তং দর্শিতং। যত্মাৎ জ্লাদিনীশক্তিবিলাগলক্ষণ তংপ্রেমবিশেষময়েবৈষা বিরংদা নতু প্রাকৃতকামময়ীতি তেষাং কন্দর্পদর্পহেতি ব্যাখ্যানমপি তথা যুক্তমেব নিবৃত্তিপরেরং পঞ্চাধ্যায়ী-ত্যপি অৱমেৰ চ ৰক্ষাতে ছাত্ৰিংশে বিৱহালাপৰিক্লিল্ডৰয়ো হরি:। ততাৰিভূষি গোপীতা: সাভ্যামাস মানয়ন্। অপ্ৰেমামৃত-কল্লোলবিহ্বলীকৃতচেতস:। সদয়ং নন্দয়ন্ গোপীকৃদ্যতো নন্দনন্দন ইতি। শ্রীমূনীজেণাপীদমেব বক্ষাতে। বিক্রীড়িতং এদবধু-

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তা।

কালদেশপাত্রাণাং শরদ্বামিনী বৃন্দাবনব্রজ্বনিভানাং সর্কোৎকৃষ্টমাধুর্য্যেগাকৃষ্টবাদিতি ভাবঃ। শতকোটবিলাদিনীনামুজ্ঞলরণচিছা মনীনাং সৌহ্ব্যসৌন্ধ্যসৌন্ধ্যাগ্রসৌর্ভ্যমাধুর্যবৈদ্যাভৌর্যাত্রিকানি বছবিধানি প্রমন্ত্রিরানি স্বীরশ্রোত্রালীজিরৈর্জিছুকুং সীষ্ট্রাদিনি ভদীরশ্রোত্রাদিভিত্তা জিগ্রাহ্যমূল্ভ বভ্ব প্রেমবশ্রবাদেকগ্যামের রজ্ঞামব্যবধানেন যদা ভদা সভ্যসম্বল্লভাগা প্রেরিভয়া বোগনাররা তুর্ঘটনাপটীরস্যা শক্ত্যা প্রহর্চভূইরবভ্যান্তস্যা এব রাত্রেম ধ্যে ভাববিশাসসমাপরিত্রাঃ পরং শতকোটরাত্র্য আনীর দর্শিভাং অভএব ভা রাত্রীবিক্ষ্যভিত বন্ধচনং । ব্রহ্মরাত্র উপার্ত্ত ইত্যগ্রেছিনি বক্ষ্যভে প্রান্ধিবিত্তংগদোপন্যাসান্ধান্তগ্রহিত রাত্রীবিদ্যাত্র বিভাগ শরদারামিনি উৎপুরা মিরিকা বাস্থ ভাং। শরদানি মিরিকাং কুন্দপ্রক্ষ কুলপভেরিই বাত্রিগদ্ধ ইভি কুন্দার্যনি বিশ্ব ভারবিদ্যালিক ক্ষানার প্রত্যাত্র ইভি কুন্দারনান্ত তা উৎকুন্মির্কালিক রাত্রাবিশি রাত্রাবিশি ক্ষনানি পৃশ্যক্তি ইভি বৃন্দারনান্তাংকর্ম। শারদোৎক্রমারিকা ইভি পাঠে। শারদান্ত তা উৎকুন্মির্কালেভিতি ভাং রন্ধনারেভে রেমে ইভ্যাক্তে শীষ্মারাম্য্য স্থত্রব পূর্ণকাম্যা ভগবতন্ত্রিয়া বন্ধনিভাই রমণং বাহুং নরবিভ্যনমেবেতি কনিছাচিকীতেভাতের রন্ধং মনশ্যক ইভ্যান্ধ্যন ক্রমণ্ড প্রেরিভিন্ত ক্ষেত্রাধান ব্রহ্মন্তর্তির ক্ষিত্র ভারতভাত ক্রিরিভিন্ত ক্রেরাণো ব্রহ্মস্বর্ত্তর বিভাক ভারবাদ্যান্ত ভারতভাত করিরিভিন্ত ক্রেরাণা ব্রহ্মস্থলিয়ার ভারত ভগবান্ত ক্রেরানান্ত ক্রেরাইনিভাই ক্রেরা হারিভিন্ত ভারত প্রস্থানা বিদ্যান্দির স্বর্মানাত্র ক্রাইনিভাই ক্রেরা হারিভিন্ত ভারতভাত ব্রহ্মস্বর্যান্ত ক্রাইনিভাই ক্রেরার বিভাক ভগবান্ত্র ইল্যভাত ভারত ব্যাহান্তির ক্রমন্ত্র ব্যাহানিত ক্রাইনিভাই করেরা ব্যাহান্ত ক্রাইরিভিন্ত করেরা ব্যাহান্ত ব্যাহানি স্বর্যান্ত ক্রাইরিভিন্ত করেরা ব্যাহান্ত ব্যাহানি স্বর্যান্ত ক্রাইরিভিন্ত করেরা ব্যাহান্ত ব্যাহানিকর্য হারান্ত ক্রাইরিভিন্ত করেরা ব্যাহান্ত ক্রাইনিভিন্ত করেরা ব্যাহান্ত ক্রাইনিভাইনিকর করেরা ব্যাহান্ত ক্রাইনিকর্য করেরা ব্যাহান্ত ক্রাইনিকর করেরা ব্যাহান্ত ক্রাইনিকর করেরা ব্যাহান্ত ক্রাইনিকর করেরা ব্যাহান্ত ক্রাইনিকর করেরা ব্যাহান্ত করেরাইনিকর করেরা ব্যাহান্ত করেরাইনিকর করেরাইনি

ত দোড় রাজঃ ককুভঃ করৈমু খং প্রাচ্যা বিলিম্পদ্দরুণেন শস্তুনৈঃ।

धीयत्रवाशी।

ভদা ভামিলেৰ কণে তংশ্ৰীভৱে উড়ুৰাজণজ উদগাং উদিতঃ কিং কুৰ্বন্দীৰ্ঘকালেন দৰ্শনং ৰদ্য সাধিবঃ অপিৰালাঃ মুধং অকণেন কুছুমেন যথা দিম্পতি তথা প্ৰাল্যাঃ কুকুজ দিলে৷ মুধং শস্তমৈঃ স্থভটমঃ করে রাখিভিঃ অকণেন উদ্যৱাগেণ বিদিম্পন্ অকণীকুৰ্বন

देवकवरकावनी।

ভিরিদক্ষেতাদৌ। তত্র হুর্যট্নাং সমাদ্ধনার বোগমারা পরাধাচিত্তাশক্তি তামুপ সামীপ্রেনাপ্রিতং যত্র যত্র বিহরতি তত্র ওঠিত্রব ক্র্যাং অদীধিতিমিব সলা প্রাপ্ত ইতি আভাবিক তার্শক্তিবং বাঞ্জিতং । তেন চ হুর্যটত ত্তরীলা চ সেংজ্ঞীতি ভাবং। শ্লেবেণ বোগং সংযোগং তদর্বং মারা কুপা। মারা দত্তে কুপারাক্ষেতি বিশং। তামুপ আধিক্যোপ্রিতং। কিঞ্চ। তা বীক্ষা কুমেণ রাকাপ্রিত্তমধিকমধিকং মনোর্থং চক্র ইত্যর্বন্ধে লক্ষে বিশেষেছ্রমণি জ্ঞেয়ং। তস্যাং রাকারাং সাহং প্রহমাগতো ভোলনাদিকং বিধার মাতৃং স্থানাং শ্রাগৃহচক্রশালিকা ভারমাগতঃ সন্ স্বায়ং সম্পাদ্ধেন নিশ্চিত্বানিত্রর্থং॥১॥

এবং নিজ্বিরংসয়া চক্রমণি প্রাচী দিশা সহ প্রিয়ঃ প্রিয়য়েব রঙ্কম্লাজং মন্তমানত শ্রীভগবতো ভাবমভিবাঞ্জয়ন্ তাসাং রাজীণাম্বমালনারপায়াময়ামভিবাজ সর্বমল্লস্চকময়লপাচি তদেতি। উজ্নাং রালেভি তা অপি তৎপরিবার্রেন উদগুরিতি ধ্বনিজং। রিফিভির্বেনে ইতি ক্রণর্ম্যং উভরেষামণি সাধকভমত্বাং রিফিগ্রেন রাণেণেত্যর্থ:। বিশেবেণ লিম্পান্ ইতি পূর্বচ্ছাত্রিপ্রামেণিব ততো রাকৈবেয়ং ভিথিং। উৎজ্লমলিকা রাজীর্বিক্যোভিবত্তরাপান্দীপনত্বেন সহলোলগমৌচিত্যাং। রাকেশকররিজিতমিতি বক্ষামাণাম্পারেণ ততিথাবের তাৎপর্যাং। স ইতি তা ইতিবং। ন কেবলমেবময়্না প্রাচী দিশ এব তাপোপজ্জঃ কিন্ত সর্বেয়াং জনানামণীত্যাহ চর্বণীনাং ইতি গুচঃ শরদর্ককলসন্তাপত্তথানি। যতা। মনোত্থানি। তগবতঃ সর্বাণ্ডগালায়বস্বমশক্তিরপাণাং তাসাং অফ্লান্তানা ভাগত স্বাণ্ডালায়ব্যাং তত্তবাবাং শ্রীকৃক্তল্মদিনাদিবং। প্রিয়ঃ প্রিয়ায়া ইবেতি সরাগন্ধসাধ্রান্তরাদিনান্যান্তং ক্রির-বিশেবাদ্শিতঃ। অভ্যান্ত তথেতি ব্যাজিজানাং শোকাশ্রাণি মার্জরন্ যথাহসৌ পরমন্ত্রণকরণ করেণ গিলেতি তথেতি ব্যাজিজং। দীর্ঘণনিন

बिविश्वनाथहळावळी।

ভাত্তিরমেয়ায়া ক্ষপাস্থ ক্ষণিতাহিত ইতি। যুবতীর্গোপকন্যাশ্চ রাজৌ স্কাল্য কাল্বিং। কৈশোরকং মান্রানান সহ তাতিমুমাদ হৈতি বিষ্ণুপ্রাণহরিবংশরোমানিয়ন্ আদৃত্তং কুর্করিতার্থা। তাজিঃ সহ বিহারাভাবে স্বীষ্টকশোরবয়োহপ্যবমানিতং স্যাল্ত এবোক্ত-মভিযুক্তমহাস্থভাবৈঃ। কৈশোরং স্ফলীকরোতি ক্লয়ন্ কুঞ্চে বিহারং হরিবিভি স্র্রিথব এলবনিতানামপুংকর্ষো ধ্বনিতঃ। ভল্প চোক্তাস্ক্রসর্ক্ষেত্তি ক্লয়্সমাধানার্থনাহ বোগনায়াং স্বীয়াচিস্তাচিচ্ছক্তির্বিং উপ স্বাধিক্যেন আশ্রিত ইতি স্বাশ্রিভাবানামপি ভাষাশ্রিত ইতি প্রেরোগান্তস্যা অপ্যত্র সৌভাগ্যাধিকাং॥ > ॥

উদৈবোদ্দীপনান্তর্ক প্রাত্ব ভ্বেত্যাহ। তদা উড়্রাজশ্জ উদগাং। কিঞা ন কেবলমর্ম্দীপন এব অপি তু গোপজীরমণ্য তক্ত প্রমাণীভূত ইত্যাহ কক্ত ইতি। দীর্ঘকালেন দর্শনং যক্ত স প্রিয়ো রমণং প্রিয়ায়া স্বমণ্যা মুধং অকণেন কুক্নেন অকরধৃতেন যথা বিলিপতি তথা প্রাচ্যাঃ ককুভো দিশঃ মুধং শস্তবৈঃ অধতনৈঃ করৈঃ কির্পের্ডন অকণেন উদ্রহাগেণ লিপ্দর্কণীক্র্মিন্ত্রিং। স প্রসিদ্ধ এব চর্ণীনাং অর্থায়ে। মাতৃকা পদ্মী তরোশ্রেণিয়ঃ হতাঃ। যক্ত বৈ নাহ্যা জাতীর ক্লা পরিক্রিতেতি
বিটোকেম ফ্রিলাভীনাং ভচঃ সন্তাপান্ মূজন্ অপনরন্। অরম্বং। ক্ষুস্য স কুলান্তিপ্নক্ত স প্রাতনোহপি বিজ্বাজোহণি রমগাহ বহুত্রম্ভীমানন্সি প্রাচ্যা দিশঃ ইক্তভার্যাছাং পর্জিরো মুধং অক্রৈঃ প্রতি প্রাত্র ব্যাং ত্যামন্রক্তভাষণান্যা

এখন ব্রক্তে গমন কর, আগামিনী রক্ত্নীসমূহে আমার সহিত ক্রীড়া করিতে পাইবে) সেই সকল রক্তনী শরৎকালীন উৎফুল্ল মলিকায় স্থাশেভন অবলোকন করিয়া যোগমায়া অবলম্বন পূর্বেক ক্রীড়া করিতে মন করিলেন ॥ ১॥

তাঁহার প্রীতি নিমিত্ত তৎক্ষণাৎ নক্ষত্রকান্ত চন্দ্র গগনমগুলে উদিত ছইয়া দীর্ঘকালের পর স্মা-গত প্রিয় যেঁমন স্থাপন প্রেয়সীর বদনক্ষল অরুণবর্ণ কুরুমে বিলিপ্ত করেন, তেমনি পূর্বাদিকের মুখ স চর্ষণীনামুদগাচছুচো মুজন প্রিয়ঃ প্রিয়ায়া ইব দীর্ষদর্শনঃ ॥ ২ ॥ দৃষ্ট্রা কুমুবস্তমথশুমগুলং রমাননাভং নবকুঙ্গুমারুণং।

श्चिभवत्रामौ ।

विভার্থ: স প্রসিদ উজুরাজ: তথা চর্বনীনাং শুচ: তাপগ্লানী: মূজন্ অপয়নয়ন্ ॥ ২ ॥

কুমুং কুমুখং বিক্সনীয়ং বিদ্যতে ৰস্য তং কুমুখন্তং ন খণ্ডং মণ্ডলং যস্য তং রমারা আননস্তাভেব আভা বস্ত। নবং কুমুম্মিব অরুণং

বৈশ্বভোষণী।

ইত্যানেন প্রমোৎকণ্ঠাং স্চিতং। এবং সর্বামিদং প্রীভগবতো ব্লিরংসাবিভাবনমেবোক্তং॥ २ ॥

ভত্ত তং দৃষ্ট্ । ভাববিশেষাবিভাবেন বন্দাগতা তচ্চ তদ্ধশিলীরঞ্জিতং দৃষ্ট্ । তত্র যমুনাতীরভাগং অদ্যাণি রাসৌনীতি প্রসিদ্ধর্মধান্ত চাকর্ষণবেশুনা কিমপি প্রীভনগায়দিতি পূর্ববিদ্ধাং রাজৌ প্রকটিতবেশুশিক্ষাবিশেষস্থমপাহ দৃষ্ট্ ভি। তঞ্চ রমানসাজং রময়ন্তীতি রমাণাং পরমরমারপাশামেব তালাং তংগ্রেয়শীনাং মধ্যে পরমপ্রেয়শী যা রাধা বং প্রাপ্তার্থমেব বেণুশিক্ষাবিশেষ প্রকটিরিত্ব নুন্দেতাবন্তং কালং তালামপি সলমে শিথিলোহত্ত্ব। তল্যা যৎ আননং তলাতং দৃষ্ট্ । তত্তরা বিতর্কা তেন তৎস্থা কলং জগাবিত্যবন্ধঃ। বিতর্কাগ্রপণাদনার সাম্যেন বিশেষণানি কুমুৎ কুমুদং। তথাচ বিশ্বঃ। কুমুদেহপি কুমুৎ প্রোক্ষমিতি তছস্তমিতি বা স্প্রকাশনায় কুমুদানি চ তদানীং বিক্সিতানীতি ধরপ্তর্থঃ। অত্র বিশেষপৈরেব বিশেষাক্ষান্তে। ক্রমুদ্রিতি মুদ্রাভন্তন পির্নানীমিতিবং। আননক্ত পক্ষে কোঃ পৃথিব্যা মুৎকর্ত্বান্থেন বিদ্যাতে যক্ত। তদিভি বিশেষবিশাং লিকপরিণামেন ভ্রেয়ং। পরমরমারপ্রাত্তিয়াঃ। অথপ্তমন্ত্রগং বেড্লকলং। পক্ষে ব্রধান্ত বিদ্যালয় লিভং মপ্তলমবর্বক্ষং যত্ত নবকুম্মপিপ্তবদকণং। পক্ষে নবকুম্মরাপেণার্কাং। এবং কালক্ত রতিযোগ্রতাং প্রদর্গা স্থানস্থাপি দর্শন্তি বনঞ্চেতি। তক্ত প্রথমোদ্রেনাল্পমাত্র ক্রপান্থতির জিতং দীর্ঘণ্ডাবন্ধনান। এবং ভাবোদ্দীলনমেব দর্শিতং। কলং মধুরাক্ষ্ট্ ধ্বনিং জ্বগৌ বেণুনেতি জ্বেয়ং। কাল্যলতে কলপদাম্তবেণ্গীতেতাাদিবক্ষানাণ। তেত্র মধুর্বং স্থানে অক্ট্রন্ধ সর্কাসমাপি তালাং স্বনামমরন্ধাদিন্ত্রমার বামদৃশাং মনোহরমিতি তাদৃশ ভাববতীনান

ক্রম্পন্দর্ভঃ।

करेत्रत्रकृत्वन जम्मत्जामम्बर्गारान्। २ ॥

মহাললীরপ্তেম বা। রমা অন্ত শ্রীরাধা। ইতি বেপুরবং রাজন্ সর্প্তমনোহরমিতি পুর্পোক্তাৎ বৈশিষ্ট্যমাহ বামল্শাং শ্রীবিখনাধচক্রবর্তী।

বতীং। করোতি যদি তদা ক্লফ্স্য তথংশ্যস্য নবীনবয়সো গোপজাতেরলত্তবিবাহখাৎ স্বীয় স্ত্রীরহিতস্যাধ্য অসেক্ত্রেণ মাহ্যজাতী-রানন্দয়তো গোপস্ত্রীরমণে কঃ ধনু দোব ইতি ॥ ২ ॥

ভগবান দেখিলেন কুমুদবিকাশীল নিশানাথ অথগুমগুল হইয়া গগণসগুলে উদিত হইয়াছেন, লক্ষীর বদনপ্রভার স্থায় তাঁহার প্রভা প্রকাশ পাইতেছে এবং নবীনকুত্ববং অরুণবর্গ হইয়া উঠি-য়াছে, অপর তদীয় কোমল কিরণে সমস্ত বনস্থী স্কুর্ঞিত হইয়াছে অতএব ফ্রীড়ার উপ্রুক্ত স্কুর বন তেওঁ কোননালে বিঞ্জিতং জগো কলং বামদৃশাং মনোহরং॥ ৩॥ নিশম্য গীতং জনস্বর্জনং ব্রজস্তিয়ঃ কৃষ্ণগৃহীতমানসাঃ।

श्रीभव्यामी।

দৃষ্ট্য তথা বনঞ্ তদ্য কোমলৈর্গোভিঃ রশ্মিভিঃ রশ্ধিভঃ রশ্ধিভঃ বৃদ্ধি কলং মধুরং জ্বগৌ অগারং। কথং বামা বরা দৃশো যাসাং ভাসাং মনো-হরং যথা॥ ৩॥

অসাপত্নাম অন্যোন্যমলক্ষিতো ন অপুপিত উদ্যমো যাভিতা: স কাত্তো যত্ত তত্ত্ব গীতধ্বনিমার্গেণাজ্য । • • •

মেব মনোহরং যথা ভারথেতি। আদিরসমাত্রোদ্দীপনং রাগবিশেষং জগাবিত্যর্থ:। বল্যতে চ জনকবর্দ্ধনমিতি। সচ নৃনং মধ্যমদিনাদ
যত উক্তং নোউররাগভেদে। মধ্যমদিম গ্রহারো মধ্যমগ্রামরাগলঃ। অরং সারং তু গাতবাঃ শৃলারে ধ্ববর্জিত ইতি। বৈতি মধাই
ধ্বৈতি ধ্বতধিবতৌ অরৌ। গ্রহং অরস ইত্যুকো যো গীতাদৌ সমর্পিত ইতি। প্র্রুছ ইতি বেগুরবং রাজনু সর্বভূতমনোহন্দিতি
সামান্ত্রিব্যুক্তরাং অভাবাল্নসারেণ তাসাং মোহনমাত্রং জাতঃ অধুনা তু রসবিশেবাদীপনস্থাদাকর্ষণমিতি তত্র তত্র বংল্ঞা আন্বৈশিইয়মন্তি। যথোক্তং। অর্দ্ধান্ত্রান্ধানং তারাদিবিবরাইকং। ততো হলুনান্তরে যত্র মুখরদ্ধুং তথাসূলং। শিরো বেদাসূলং পুদ আলুলং
সা তু বংশিকা। নবরদ্ধা শ্বতা সপ্তদশালুলমিতা বুধিং। দশালুলান্তরা ভাচেহে সা তারম্থরদ্ধুং হোং। মহানন্দেতি বিখাত তথা সংমাহিনীতি চ। ভবেহ প্র্যান্তরা সা চেহ তত্র আকর্ষণী মতা। আনন্দিনী তদা বংশী ভবেদিক্রান্তরা যদি। গোপাং বল্লভা সেবং
বংশুলীতি চ বিশ্রতা। ক্রমান্ধামিতি স্থেবণ স্থান্ধন্ কুটিলমেব পশ্রন্তীনাং তাসাং মনোরপ্রনান্তরী। দৃই্যাদিলনে বিশ্বাক্তরী
বৈশ্বীক্র রেশ্যেবণ কামবীকং জগাবিতি রহজং। যতো বামদৃক্রশদ্দি বৃত্তং ক্লমিতি প্রথম্মান্ধন্ধর বাজিত। নাদ্র্কেশ্যেবাক্তরং
মনোহরং মনংশবেন তদ্ধিন্তাতা চক্ত উচ্যতে। সচ তদাকারন্থন লবকং তং হরতীতি আকর্ষতীত তংগ্রহিতিমিত্যর্থ:। নাদ্র্কেশ্যেবাত্র মুর্থিং ক্লকণ্ডেগ্র্নিনাদ্বম্য ইতি॥ ৩

শত্যেতৃ তদগীতং ন শতবন্তঃ কিন্তু তেন তা এবার্ক্টা ইতি তক্ত শক্তিবিশেষং দ্যোতররাহ নিশম্যেতি তৎপূর্ব্বোকপ্রকারং শ্রীকৃষ্ণ-বেণ্ দাতং। অনলং শ্রীভগবিষ্বিষ্কং কামং প্রাথত্তমানমেবাধুনা বর্দ্ধরতীতি তথা তং। যদ্যপি বামদৃগং মনোহরমিতানেনানলবর্দ্ধন-ঘমারাত্যেব তথাপীরম্ক্তিন্তদ্বিশ্ববিক্ষরা। অনলশন্ত প্রোগশ্চ পূর্বং বীজাত্মর সেণেবৈ স্থিতঃ প্রতি তৃ পর্বতি ইত্যর্থং বোধ-স্বতি। এতেন তদগানভামৃতসেক্ত্মপূর্ণপ্রেক্যতে সদ্যন্ত পাদ্ধাধাবাং। ব্রক্ত ব্রিয়ন্ত বিশ্বতিশ্বাং প্রকশ্বলাৎ অতএব ক্ষেন প্রমাকর্ষ-

ক্রমসন্দর্ভ:।

মনোহরমিতি। আদিরসোদীপনগানবিশেষাদিতি ভাব:॥ ৩॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্ত্তী।

ৰামা মনোহরা দৃশো যাসাং তাসাং যুবতীনামেৰ মনোহরং যথা ভাতথা। গায়ত্তং দ্বিয়ং গামরত ইতি শ্রুতে:। শ্লেবেণ কলং ককার লকারং বামদৃশামিতি সুপ্তবিভক্তিকং পদং বামদৃক্ চতুর্থং খরং। তরা সহ পঞ্চদশস্বরং কুমবীজং লগাবিতি রহস্যং মনোহরং মনস-আকর্ষকশ্বাৎ স্বস্ত্রপভূতমহামন্মথমন্ত্রমিতার্থ:॥ ৩॥

কলনীত হত্ত গুলিকা: গঞালিকা ইব তাঃ ক্ঞাতিক নামাত। ইত্যাহ তৎ গীতং মনোহরমধি মনোজবর্ধনং। কিঞা ক্রমোহি বেণ্গীতাথাং মহাটোরং ব্রন্ধে প্রেষিতবাংতেন চ ব্রজ্ঞাণাং নিজপাটেন কর্ণহাটোরংকরণ গোগারং প্রেরিশ্য মনসা সহ বৈর্যালক্ষাভ্যবিবেকাণীনি মহাধনানাপক্তা কটিছোবানীর ক্ষাম দভানীতাহ ক্ষেত্রগৃহীতানি মানসানি মনাংসি চ মানসানি মনংস্ব্দীনি বিবেচনা করিয়া বামলোচনাদিগের মুনোহর যে প্রকারে হয় তজ্ঞাপ বেণু ঘারা মধুর গীত গান করিলেন। পক্ষান্তরে, ক ল পদে ক,ল, বামদৃক পদে চতুর্ধর (ঈ) এবং মনঃপদে মনের অধিষ্ঠাতী দেবতা চল্দে অর্ধাৎ তদাকারবর্গ চল্দ্রবিন্দু (৬) এই সমন্ত্রিতে মহামন্মথমন্ত্র অর্ধাৎ কামবীজ (ক্লীটা) ইহাই গান করিলেন। ৩।

ব্ৰজাসনাদি গের চিত একে প্রিকৃষ্ণ কর্তৃক পরিগৃহীত হইরাছিল ততুপরি আবার তাঁহারা কাম-বৰ্ষক তদীয় গীত ভাষণ করিলেন, অতএব সাপদ্যাভাষ পরিহার পূর্বক কছলে বিহার বাসনায় পরস্পর আৰ্জীয়ু রন্যোন্যমলক্ষিভোদ্যমাঃ স যত্ত্ৰ কান্তো জবলোলকুগুলাঃ ॥ ৪ ।
ছহস্তোহভিষয়ঃ কাশ্চিদ্দোহং হিছা সমূৎস্থকাঃ । প্রোহধিঞ্জিত্য সংখ্যা

व्यिधवचामी।

চঞ্চানি কুওলানি যাগাং ডা: ॥ ৪॥

- শ্রীকৃষ্ণস্তকশব্দরনে তথপ্রবণচিন্তানাং তথক্ষণমেব ত্রৈবর্গিককর্মনিবৃত্তিং দোভম্ম ইব অস্কাবশিষ্ঠং কর্ম বিহায় যযুং তদাহ

देवकवरकावगी ।

কেণ পূর্কমেব গৃহীতঃ আকৃষ্টং মানসং মনন্তদীয়াশেষং বা যাসাং তাঃ বিশেষতকেদানীং গীতং শ্রুদা আৰুমা; । অভোভালকিত্বে ক্রের্যাখ্যাতঃ । বহা। স্বযুধে মিধঃ সধ্যবতীনামপি ভাসাং তত্ত্ব হেতৃঃ ক্ষেত্তি ভদানীং ক্ষাকৃষ্টিভিছেন বিচারাপগমাদিতি ভা
া অভুত্র ক্ষবেতি আৰুমা বিতি শ্রীবাদরায়ণেঃ শ্রীকৃষ্ণান্তিকে সদৈব ক্রেঃ কিবা ভাসাং ভদামনবার্ত্তরা ভাববিশেষাদ্যেন ভাসাছি স্বামান্ত ক্রামান্ত ক্রামান্ত ক্রামান্ত ক্রামান্ত ক্রামান্ত ক্রিক্তা ক্রিক্তা ক্রামান্ত ক্রমান্ত ক্রামান্ত ক

এবং ব্রাপ্তিমূক্রাণি পরমমোহনতদগীতেনাবেগারিজদেহদৈহিকাছাপেকরায়কর্মলোকধর্মাদিকং পরিতাক্তা চলিতানাং ক্লোক্রবা! কিরপ্রতিপররে পুন: প্রস্থানোদামমের বর্ষঃস্করানৌ কালাফিং স্থলাতিকর্মপরিত্যাগমাহ ছহস্তা ইতি যুগ্যকমিদং ছহস্তা গাং অস্ত ভেগ্রপ্রি পেইরন্তা ইত্যর্থ:। অভিষযুর্বেণুগীতাভিমূধং বযু:। কাল্চিদিত্যাদিকং বছরু যুগেরু কালাফিং এক-ক্রিমানংঘটনাং। ক্লাভত্বপ ইতারো বক্ষমাণ্ডাং। 'লোহং দোহনং ছগ্যং বা তথাভিযানে হেতুং সমুৎস্থকাং কালবিলস্বসংনাদ্যমর্থা:। এব ক্রেপ্রেছিণ সর্ব্রান্থবর্ত্তা:। অপরা ইত্যক্ত পুর্বেণ পরেণাপার্য়:। এবমপ্রেছিণ। অত্তি:। যথা। পরশ্চ ল্ল্যাম্বিভিয়াহ্যান্ত প্রকাশ ততা 'হনবতার্তা সংযাবঞ্চাহিশিভান্ত্রাত্তি। এবং কালাফিং সামন্ত্রম্প্রক্ত্রাগ্রস্থান্ত তবৈর কালাফিং লোকধন্দাগং পাদ্রব্যা বদন্ ত্রাদৌ কালাফিং সামান্যবন্ধ্ত্রাদিপরিত্যাগ্যাহ পরীতি পাদেন। পরিবেশমস্তাঃ বন্ধ্ত্যাদিভা ইতি শেষ:। ২পরিবেশনং হিছা যযুরিতি পুর্বেণেবাদ্য:। অভিনেহান্স্লণপরিত্যাগ্যণি কালাফিদহ পায়রন্ত্র ইতি।

ক্রমসন্দর্ভ:।

আৰগ্যু: প্ৰাপ্তব্ভ্য:॥ ৪ 🛭

ছহস্তঃ দোহয়ত্তঃ অভিষয়: চাত্তৰতাঃ। শিশূন্ ভণিনীয়াতৃপ্তালীন পরো গবাং অভান্ অনমিত্যকেরালমনবৈরপ্যাৎ সর্কাঃ

ত্ৰীবিশ্বনাপচক্ৰবৰ্তী।

ধৃতিস্বৃতিবিবেকলক্ষাভীতিমত্যাদীনি বাশ তাঃ আজ্বা; মহাচৌরচক্রবর্তিনঃ কৃষ্ণাৎ তানি স্বস্থনানি প্রার্থিরিত্মিবেতি ভাবঃ। তদৈব মন্যে তং মহাচৌরং ধর্তুং ব্যপ্রাণামনে নাং ন লক্ষিত উদ্যানে যাসাং তাঃ। চৌরস্য পশ্চাৎ পশ্চাদেবাজ্বয়ুঃ। ক স কাজো বর্ত্ত। জবেন বেগেন লোগানি কৃপ্তশানি কৃপ্তলোপ ক্লভানি কৃষ্ণাকিছিণ্যাদীন্যণি যাসাং তাজেন সহ তাসাং বহিষ্করণগৃহস্থিতানি ধনান্ত্রন্ত্রা চৌরেণ তেন নাপজ্তানীতি ভাবঃ। । ।

তানাং তৎপার্থগমনকালে পরমোর্থকার বিল দ্যাদহ্বাং মমভাহয়াম্পদকর্মাণেকাভাবং স্নোক্র্যা বদন কাদাঞ্চিৎ শ্বনাতি-ধর্মপরিত্যাগমাহ। ছহন্তাঃ গা দোহুর উত্তং দোহং দোহনকর্ম হিছা অভিবয়ং অভিনক্ষঃ। পরো হৃদ্ধং পাত্রহং চুল্লামধিত্রিত্য

কেহ কাহাকেও স্বং উদ্দিম জ্ঞাপন না করিও যে স্থানে সেই কান্ত অবস্থিতি করিতেছেন তথার সম্মর আসিতে লাগিলেন, বেগে আগমন করাতে অহাদের কর্ণকুণ্ডল সাতিশর চঞ্চল হইল ॥ ৪॥

কোন কোন গোপাপনা দোহন করাইছেছিলেন তাঁহারা দোহন পরিত্যাগ পূর্বক সমূহত্ব হইয়া গমন করিলেন। অন্যান্য গোপী ছগ্ধ আবর্ত্তন করিতেছিলেন তাহা চুলীর উপরই থাকিল কাথ (উথিত হইয়া উঠা —উইলান) প্রতীক্ষা করিতে পারিলেন না। অপরা গোপী গোধ্রকণাম রক্ষন করিতেছিলেন, পক অন্ন নামাইয়াই চলিলেন। কোন ২ গোপী গৃহে অন্নাদি পরিবেশন করিতে

🗐 মন্তাগৰতম্।

পরিত্রকার জিলারয়ন্তাঃ শিশ্ন পয়:। শুক্রাবন্তাঃ পতীন কাশ্চিদশ্বন্ত্যোহপাদ্য ভোজনং ॥৫
লিম্পন্তাঃ কাশ্চ লোচনে। ব্যত্যন্তবন্ত্রাভরণাঃ কাশ্চিৎ কৃষণন্তিকং যয়: ॥৬॥
তা বাহানাল পতিভিঃ পিতৃভিত্র ত্রদ্ধভিঃ। গোবিন্দাপন্ততাত্মানো ন শ্বর্তন্ত মোহিতাঃ ॥৭॥

ছ্ৰত্তা ইতি। পরা স্থানীস্থা চুলামিধিপ্রিতা তংকাথমপ্রতীক্ষমাণাঃ কাশ্চিন্দব্য়। সংঘাবং গোধ্যকণালং পকা অনুহান্য অনবতার্যাঞ অন্যাঃ প্রযুক্ত অক্ষোহর্তনাদিকং কুর্বত্যা কাশ্চ কাশ্চিৎ প্রীকৃষ্ণভূতার্থং কর্ম তদাসক্ষমনসাং অন্যথা কৃতমণি ফলভ্যেবৈতঃ দ্যোত্যবাহ ব্যতাত্তেতি। স্থানতঃ স্বরূপত্ত উর্জ্বাধারণেন বিপর্যারং প্রাপ্তানি ব্যাভ্যণানি যাসাং তাঃ ॥ ৬ ॥,

নচ এক্সিকাক্টমনদাং বিমাঃ প্রভবস্তীভাবি তা বার্যামাণা ইতি ॥ १ ॥ .

देवश्वद्यावनी ।

পাদেন হিজেতাত্বর্ত্ততে। বক্ষামাণাত্মনারেণ ভগিনীযাতৃপুলাদীন হিছাৎনাপা রসাভাসাপতে:। এবং লোকপরিত্যাগম্জা খুর্পরিত্যাগমাহ শুক্ষবস্তা: শুক্ষবমাণা: স্থানাদ্রবেধিকাদকার্পণাদিনা সেবমানা:। কাসাঞ্চিকেহাপেকা ভ্যাগমাহ অল্পন্ত ইতি অল্পতেই ভূঞানা:। অনেন তৎপ্রেমাবিষ্টেষ্ দৈহিকশুদ্ধাশুদ্ধিবিচারো নান্তীতি গমাতে ॥ ৫ ॥

কানাকিচাহরহ তথপ্রত্যাপরা বিরহেহপ্যকেষাভরণং করোতি বহুণ ইতি গীতগোবিশ্বরীত্যা প্রভগবংপ্রেমবিশ্বিশ্বীণ নিজালবেশস্ত পরমোৎকঠরা পরিত্যাগমাহ লিম্পন্তঃ ইত্যাদিনা লিম্পন্তঃ অকরাগং কুর্ক্ত্যঃ লেপনাদিকমপ্যপাতেতি জ্বেয়ং। অন্যাইত্যক্ত
লিম্পন্তঃ ইতি পদব্যেনাঘরঃ। ভবৈত্রব হেতুং দর্শরন্ কিং বক্তব্যং দৈহিকদেহান্যপেকা পরিত্যক্তেতি কানাকিংহাবর্যবিশেবানম্বসন্ধানমপি লাতমিতি ব্যানক্তি ব্যান্তেতি। পূর্ব্বোক্তন্মর্ক্ত্যাগায়ভাবকদ্যোগংস্ক্র্য্য বিভ্রমাথোরহমন্থতার:। হথাকাং। বন্ধত্যান্তিবেলায়াং মদনাবেশসম্বমাথ। বিভ্রমো হার্মাল্যাদিভ্রান্থানবিপর্যার ইতি। অনেন ত্রিধানাং প্রেম যথা ভগতেহিপেকিতংন তথা
বেশাদি, ইতি গম্যতে। কিন্তু পশ্চাতেনৈর পরিহিত্ত স্বয়ং তথাবৎ পরিধাপিতমিতি জ্বেয়ং। এবং দোহনাদীনামন্তেরামব্র্যাপেক্যান্তেন
যথোতরং লৈছিস্কুং। তদেব প্রব্রা ক্রপি ক্রন্ধ্যান্তিকং প্রতিষ্ত্রঃ এক্ত্রতাঃ ॥ ৬ ॥

অধুনা স্বীবৈর্বলাংকারিতবাহান্তসন্ধানানাং অপি ভাগাং কুলবধ্সাভাবিকত্বেন প্রমত্ত্যক্ত লজ্ঞান্দেশি ভ্যাগমাহ ভা ইভি। সর্বা

ক্রমসন্ত:।

শরংকার্যকথারদাশ্রয়া ইতি বক্ষামাণরদাশ্রয়বিরোধান্ত। শুশ্রমন্ত্র ইতান্তর্গ্রনীতিকাঃ কালিদেব জেয়াঃ আনাাদাং বং পত্য-পতাস্থলামিত্যাদিনা তদবীকারাং॥ ৫॥ ৬॥ ৭॥ ৮॥ *

वीविषनाथठव्यवे।

অধ্যান্ত্রেষ্ঠ এতৎ কাথমপ্রতীক্ষমাণাঃ কাল্চিৎ সংযাবং গোৰ্মকণারং প্রমণ্যসূত্রাদ্য অনবভাগ। জীমাত্রর্পত্যাগমাহ পরিবেবনজ্য তৎপরিবেশণং গতীসুফোদকপ্রদানাদিনা ভঞ্জান্তঃ ॥ ৫ ॥

কাসাঞ্চিদাবশ্যকদৈহিকবেশত্যাগমাহ নিশ্পস্তা: দেহে অন্তলেণং ক্রদানিনা দুর্বতা: প্রমৃত্তর প্রমৃত্তর উত্তলাদিকং কুর্বতা:। কাসাঞ্চিদাবেগবশাদেহাবশ্ববিশেষপরিচরস্যাপ্যভাবশ্বহ ব্যতান্তেতি। বিভ্রমাণ্যাহ্মুতাবেহির:। বছকে:। বলভ্রমাণ্ডিবেশারাং মদনাবেশসন্ত্রমাণ্ডাবিস্কৃষাস্থানবিপ্রায় ইতি ॥ ৩ ॥

নত্ব তাঃ প্রেমপ্রাবল্যাৎ সর্বাপেকাং তত্যকুরিভাচিত্তমের ভাষামপেকাং তৎপ্রাাদয়ঃ কথং চত্যকুল্ভভাছ। তাঃ কুলব্ধঃ পতিভিঃ

ছিলেন তাঁহারা তত্তৎ কর্ম পরিত্যাগ করিয়া গমন করিলেন। অন্য গোপীগণ ভোজন করিতেছিলেন, গীত আবণ মাত্র ভোজন বিদর্জন করিয়া প্রস্থান করিলেন। ৫ ॥

আর ২ অঙ্গনা অঙ্গরাগ লেপন করিতেছিলেন,আর কতকগুলি গোপী অঙ্গোষর্তনাদি কর্ম করিতেছিলেন, আর কতিপর গোপী লোচনে অঞ্জন দিতেছিলেন তাঁহারাও গীত প্রবণে সেই সকল কর্ম পরিত্যাগ করিয়া শ্রীকৃষ্ণসমীপে সম্বর গমন করিলেন,ব্যস্ততা প্রযুক্ত তাঁহাদিগের বসন ও ভূষণ উর্দ্ধ ও শীচে ধারণ ছারা স্থানতঃ ও স্বরূপতঃ বিপর্যায় প্রাপ্ত ইইল ॥ ৬ ॥

्र ताखन् । साहासिरात मनः श्रीकृत्क मनर्भिक छाड़ीरात कार्या cकान विष्ठे घरि ना, थे मकन

অন্তৰ্গু হগতাঃ কাশ্চিদেসাপ্টোহলৰবিনিৰ্গমাঃ। কৃষ্ণং তন্তাবনাযুক্তা দুখ্য কি বিশ্ববৈশ্বনাটনাঃ॥ ৮ ॥

देवकदर्जावनी।

ন লক্ষা বিনির্গমো বাভিতাঃ প্রাণণি ভয়াবনীযুক্তাঃ তদা নিতরাং দধ্যবিত্যর্থঃ ॥ ৮ ॥ •

অপি তাঃ পত্যাদিভিঃ ক মু রাত্রৌ বহির্গমাত ইত্যাদিনির্ক্ষেন মুহ্র্মার্থমাণা অপি ন স্তবর্ত্ত কিছু যযুর্ক্ষেত্যর্থঃ । কৃতঃ মোহিতাঃ
হতবিবেকাঃ তৎ কৃতঃ গোবিদ্দেনাপস্থত আত্মা চিত্তং যাসাং তাঃ । অয়ং পত্যাদীনামণি শৈথিল্যে হেতুপ্তেরঃ । তত্ত জিমাত্রত সর্ক্বিমা
কার্মিপ্রভাবছাৎ । তত্তদত্তিকবর্ত্তিঃ পতিভিঃ কাশ্চিৎ পিত্রাদিভিশ্চ কাশ্চন । তত্ত্ব চ্প্রিতাদিভিরবিবাহিতাঃ স্ববাসিস্তশ্চেতি ।
য়েত্র ক্রাং পিতা ইন্সাঢ়াং পতিঃ প্ত্রেপ্ত বার্ছকে । অভাবে জ্ঞাতরত্বেবং ন স্বাতন্ত্রাং কচিৎ দ্রিয়া ইতি স্বতেঃ ॥ ৭ ॥

খি টিই ক্রান্থন বারিতা অভবিষ্যন্ তর্হি সদ্য এব দশনীদশানিব দশানগনিষান্নিতি তাদাং সর্বাদানেব ভাববিশেষং দৃষ্টান্তেন প্রদান্ত্য অনুস্থান প্রস্থিতবতীনানেব মধ্যে কাসাঞ্চিদ্দবস্থাবিশেষমান অন্তর্মিত ত্রিভি:। অয়সর্থ:। শ্রীকৃষ্ণস্থ ব্রন্ধপ্রেরজ্ঞাবৎ দিবিধাঃ নিভাসিখাং সাধনসিদ্ধান্ত। তত্রেকাসাং নিভাসিদ্ধান্তরাদানাভিবিশিষ্ট্র্নের তদারাধনবিধানান্ত্যকং। তচ্চুতীনাং তদারাধনানাং চামানজ্ঞাবিত্যাৎ। অতো ব্রহ্মগৃহিতায়াং। চিন্তামণিপ্রক্রসন্মান্ত কল্পকাল্যতে হিতি। আনন্দচিন্মন্ত্রসপ্রতিভাবিতাতিরিতি। শ্রিং কান্তঃ প্রমণ্ড ক্রেপ্রতাতি ব্রিভি। শ্রিং কান্তঃ প্রমণ্ড ইত্যেতা এব তদীয়লক্ষীছেনোক্তাঃ। তত্র চ শ্রীরাধিকায়া বৈশিষ্টাং বৃহদ্ধোত্তমীয়ে। দেবী কৃষ্ণারী প্রাপ্তি রাধিকা প্রদেবতা। সর্বালন্ধীমন্ত্রী সর্বালভিঃ সন্মোহিনী পরেতি। অতএব অক্পরিশিষ্টে চ। পরম্পর্মান্তিচালিছাং প্রোক্তঃ রাধার্য রাধার্য নাধবো দেবো মাধবেনৈর রাধিকা। বিলাজত্তে জনেরা ইতি। অতো মাৎজালো ক্রিণী হারবত্যান্ত রাধা বৃন্ধাবনে বনে ইতি শক্তিম্বাদানানেরার্গণনেহিলি বৈশিষ্টাং, জ্ঞেরং। অথাবরাসাং সাধনসিদ্ধত্বং যথা পান্মোভ্রমণ্ড। পুরা মহর্ষন্ন: সর্বের্গণ্ডকাল্যবাসিনঃ। দৃষ্ট্। রামং হরিং ভত্র ভৌজু মৈছন্ স্ববিগ্রহং। তে সর্ব্বে প্রামণ্ডাং সম্ভূভাল্য গোকুলে। হরিং সংপ্রাণ্য কামেন ততে মুক্তা ভ্রাণ্বাং ইতি। গোকুল ইত্যস্য হরিং সংপ্রাণ্যেত্যনেনাপ্যন্থাং। যে ম্বর্ণ মাং প্রপদ্যন্ত ইতি জারাচ্ছ।

• द्यीविचनाष्ठव्यवर्धी।

কুলকন্যাশ্চ ডাঃ পিত্রাদিভিবী দুমাণা অপি ন ন্যবর্ত্ত । তত্ত্ব হেতুর্গোবিন্দেতি ভয়লজ্ঞাদীনাং কা বার্ত্তা তাসামাত্মনামণি গ্রেন্ত্রিক ক্ষেন্ত্রিক ক্ষেত্রিক ক্ষেত্রিক ক্ষেত্রিক ক্ষেত্রিক ক্ষেন্ত্রিক ক্ষেত্রিক ক্ষেন্ত্রিক ক্ষেত্রিক ক্ষেত্রিক ক্ষেন্ত্রিক ক্ষেত্রিক ক্যেন্ত্রিক ক্ষেত্রিক ক্যেন্ত্রিক ক্ষেত্রিক ক্ষেত্রিক ক্ষেত্রিক ক্ষেত্রিক ক্ষেত্রিক ক্ষেন্ত্রিক ক্ষেত্রিক ক্ষেত্রিক ক্ষেত্রিক ক্ষেত্রিক ক্ষেত্রিক ক্ষেত্র ক্ষেত্র ক্ষেত্রিক ক্ষেত্র ক্ষেত্র ক্ষেত্র ক্ষেত্র ক্ষেত্র ক্ষেন্ত ক্ষেত্র ক্ষেন

অত্যোজ্ঞননীলমণ্যক্তরীত্যা বিবিচতে। গোপ্তাবন্ধিবিধাঃ। নিতাসিদ্ধাঃ নাধনসিদ্ধাক্ত। সাধনসিদ্ধাক্ত বিবিধাঃ। কেতিবৃধত্তবাৎ প্রতিচর্বাঃ অবিষ্ণুত্তবাদ্বিচর্বাক্ত। ততক্ষাসাং চতুর্বিধ্বমুক্তং পাল্লে হোথিক্যক। কেবিধাঃ। প্রতিবৃধত্তবাৎ প্রতিচর্বাঃ অবিষ্ণুত্তবাদ্বিচর্বাক্ত। ততক্ষাসাং চতুর্বিধ্বমুক্তং পাল্লে গোপ্যক্ত প্রত্যাক্ত করে করিব নাম্বরে করেবি গোপ্যক্ত প্রতান্ধিকা গোপ্ত প্রতান্ধিকা গাধনাপ্রবাহ। করেবি নাম্বরে করেবি গোপ্ত প্রতান্ধিকা প্রতান্ধিকা প্রতান্ধিকা প্রতানিকা করেবি কর্মান্ধিকা প্রতানিকা করেবি করেবি কর্মান্ধিকা কর্মান্ধিকা প্রতানিকা করেবি কর্মান্ধিকা প্রতানিকা করেবি কর্মান্ধিকা প্রতানিকা কর্মান্ধিকা প্রতানিকা করেবি কর্মান্ধিকা প্রতানিকা কর্মান্ধিকা ক্রান্ধিকা কর্মান্ধিকা ক্রান্ধিকা ক্রান্ধিকা

ব্রজ্মশরীগণকে পতি, পিতৃ, ভাতৃ ও বন্ধুবর্গ যাইও বার্ম্বার নিবারণ করিল তথাচ আপনাদের চিং গোবিন্দ কর্তৃক অপরত হওয়াতে মোহিত হইয়া চলিলেন, কোন মতেই নিবৃত হইলেন না । বুরুলি বে সকল গোপী নির্গমন লাভ করিতে পারিলেন না, তাঁছারা পূর্বেও ব্রক্তিভার্ক নিস্ক্রিলেন এবং এ সময়েও নিমীলিত লোচন হইরা ভাতাই চিতা করিতে লাগিলেন। ৮ ।